६ भारत सरकार के निर्माण एवं आवास मंत्रालय के सहयोग से कम खर्च के सफाई कार्यक्रम पर राष्ट्रीय स्तर के रिफ्रेशर पाठ्यक्रम का आयोजन करना।

७ निर्धूम चूल्हों का निर्माण एवं प्रशिक्षण।

वित्तीय व्यवस्था

संस्था के संस्थापकों और नीति-निर्माताओं ने प्रारम्भ से ही इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि इसके संचालन के लिए किसी सरकार अथवा संस्था का परमुखापेक्षी नहीं बनना पड़े। अतः इसे न तो केन्द्र से, न राज्य सरकार से और न किसी अन्य संस्थान से वित्तीय सहायता प्राप्त होती है। इसके वित्तीय स्रोत सदस्य नगर पालिकाओं/नगर परिषदों से प्राप्त वार्षिक सदस्यता-शुल्क तथा इसके द्वारा संचालित किये जाने वाले पाठ्यक्रमों अथवा अन्य कार्यक्रमों से प्राप्त होने वाली आय तक सीमित है।

प्रगति के सोपान

संस्था द्वारा संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में गत दो दशकों में कई गुना वृद्धि हुई है। इन कार्यक्रमों से न केवल राजस्थान अपितु मध्यप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, हिमाचल प्रदेश, केरल और असम जैसे दूरस्थ प्रदेशों के लोग भी निरन्तर लाभान्वित हो रहे हैं। देश की अनेक राज्य सरकारों ने संस्था द्वारा दिये जाने वाले डिप्लोमा प्रमाणपत्रों को मान्यता प्रदान कर रखी है। संस्था द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त अनेक छात्रों ने परीक्षाओं में राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किये हैं। गत वर्ष ही लोकल सेल्फ-गवर्नमेंट डिप्लोमा कोर्स में संस्था के छात्र ने प्रथम स्थान प्राप्त किया था। इसी प्रकार सेनेट्री इन्सपेक्टर्स प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में गत वर्ष ९५ प्रतिशत छात्रों ने सफलता प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया है। इन परीक्षाओं का आयोजन आल इंडिया इन्स्टीट्यूट आफ लोकल सेल्फ-गवर्नमेंट बम्बई द्वारा किया जाता है।

निर्धूम चूल्हा योजना

भारत सरकार द्वारा वर्ष १९८३-८४ में प्रारम्भ उन्नत चूल्हा योजना का संस्था ने राज्य के ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग के सहयोग से वर्ष १९८४ में जयपुर जिले के मोटवाडा एवं सांगानेर पंचायत समिति क्षेत्र में प्रसार करने का कार्य हाथ में लिया। तत्पश्चात् भारत सरकार के गैर पारम्परिक ऊर्जा स्रोत विभाग की ओर से राजस्थान स्वायत शासन संस्था को १९८५-८६ में क्रियान्वयन इकाई (सी.ओ.एस.यूनिट) के रूप में मान्यता प्रदान की गई। इसके फलस्वरूप संस्था प्रदेश के नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में पिछले पांच वर्षों में उन्नत चूल्हों का निर्माण कार्य कर रही है। संस्था की निर्धूम चूल्हा इकाई ने अब तक प्रदेश के एक हजार से अधिक व्यक्तियों को प्रशिक्षण प्रदान किया है तथा ४०,५४३ उन्नत चूल्हों का निर्माण कर प्रदेश में योजना की सफलता को सुनिश्चित किया है। देश में यही एकमात्र ऐसी संस्था है जिसने इस कार्यक्रम को चलाने में पहल की है और राज्य के ६० नगरपालिका क्षेत्रों में कार्य संपादन किया है।

इसके अतिरिक्त संस्था ने नागौर नगरपालिका क्षेत्र में लगभग आठ सौ सस्ते फ्लश शौचालयों का निर्माण भी कराया है।

प्रकाशन

संस्था द्वारा स्थानीय इकाइयों के लिए समय-समय पर आवश्यक साहित्य के साथ ही मासिक पत्रिका "राजस्थान स्वायत शासन" का प्रकाशन भी पिछले कई वर्षों से नियमित रूप से किया जा रहा है। यह एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा एक ओर जहां इन इकाइयों की प्रगति से जन-साधारण को अवगत कराया जाता है वहां दूसरी ओर इनकी समस्याओं और कठिनाइयों की ओर सरकार तथा जन प्रतिनिधियों का ध्यान आकृष्ट किया जाता है। इसके अतिरिक्त पालिका कानूनों/नियमों व अन्य विषयों पर अधिकृत विद्वानों द्वारा पुस्तकें तथा नियमोपनियमों के मॉडल भी प्रकाशित किये जाते हैं।

न्यायपालिका

राजस्थान निर्माण से पूर्व इसकी घटक रियासतों में विभिन्न स्तरों के न्यायालय कार्यरत थे और अधिकांश मुकदमों का निपटारा रियासतों में ही हो जाता था। कतिपय रियासतों में चीफकोर्ट भी थे। कुछ गिने-चुने मामले संघीय न्यायालय अथवा प्रिवी कौंसिल तक जाते थे। राजस्थान निर्माण के बाद अन्य सेवाओं की तरह न्यायिक सेवाओं तथा न्यायालयों का भी पुनर्गठन किया गया। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 214 के अन्तर्गत राजस्थान उच्च न्यायालय की स्थापना की गई तथा श्री कमलाकान्त वर्मा प्रथम मुख्य न्यायाधिपति नियुक्त किये गये। 29 अगस्त, 1949 को राजप्रमुख ने जोधपुर में राजस्थान उच्च न्यायालय का उद्घाटन किया। इसके बाद जुलाई 1950 से सिविल न्यायालयों की नई व्यवस्था लागू की गई और विभिन्न स्थानों पर सत्र न्यायालय, अतिरिक्त सत्र न्यायालय, व्यवहार न्यायालय तथा मुंसिफ न्यायालय स्थापित किये गये।

राजस्व मंडल

इसी क्रम में राजस्व सम्बन्धी मामलों के निपटारे तथा राजस्व सम्बन्धी प्रशासन के लिए एक नवम्बर,1949 को राजस्व मंडल की स्थापना की गई।

2 अक्टूबर, 1959 को लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण योजना लागू होने के फलस्वरूप राज्य में पांच-पांच ग्राम पंचायत क्षेत्रों पर एक-एक न्याय पंचायत स्थापित की गई जिसके पांच न्याय पंचों का चयन संबंधित ग्राम पंचायतों के पंचों द्वारा किया जाता था तथा निर्वाचित पंचों में से ही एक अध्यक्ष चुना जाता था। ऐसी न्याय पंचायतों की संख्या राज्य में 1369 थी। इन पंचायतो को 250 रुपये तक की डिक्रियाँ देने तथा एक निश्चित सीमा तक न्यायिक और फौजदारी अधिकार प्रदान किये गये थे। इनके निरीक्षण और नियन्त्रण का कार्य संबंधित मुंसिफ न्यायालयों को सौंपा गया था। बाद में यह व्यवस्था समाप्त कर हर ग्राम पंचायत क्षेत्र में एक न्याय उप समिति का प्रावधान किया गया जिसमें सरपंच पदेन अध्यक्ष तथा अनुसूचित जाति तथा जनजाति का एक-एक और एक महिला पंच चुनी जाती है। लेकिन यह व्यवस्था भी कारगर सिद्ध नहीं हुई।

एक सितम्बर, 1962 से राज्य में कार्यपालिका से न्याय पालिका का पृथक्कीकरण हो गया जिसके फलस्वरूप न्यायपालिका का क्षेत्र राज्य में पूर्वापेक्षा अधिक व्यापक बन गया।

राज्य कर्मचारियों के विवादों के निपटारे के लिए राजस्थान सिविल सर्विसेज अपीलीय अधिकरण स्थापित किया गया है। वर्तमान में इसके अध्यक्ष भारतीय प्रशासनिक सेवा के श्री राजेन्द्र जैन तथा सदस्य राजस्थान उच्च न्यायिक सेवा के श्री मगनलाल व्यास और भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी श्री प्रकाशचन्द्र जैन है।

इसी प्रकार राज्य में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के कर्मचारियों के विवादों के निपटारे हेतु जोधपुर में अपीलीय न्यायाधिकरण कार्यरत है।

उच्च न्यायालय

राजस्थान उच्च न्यायालय प्रारंभिक वर्षों में एकीकृत रूप से जयपुर में रहा लेकिन एक नवम्बर, 1956 को राज्यों के पुनर्गठन के फलस्वरूप अजमेर का राजस्थान में विलय होने पर राज्य की राजधानी का प्रश्न पुनः उत्पन्न हो गया। एक ओर जहां अजमेर के नेता और वहाँ की जनता अजमेर को नयी राजधानी बनाने का दावा करने लगे तो दूसरी ओर जोधपुर और उदयपुर वालों ने जोधपुर और उदयपुर के लिए जोर डाला। इस पर भारत सरकार ने श्री सत्यनारायण राव की अध्यक्षता में एक त्रि-सदस्यीय राजधानी जांच समिति बनाई जिसने राज्य के विभिन्न स्थानों का दौरा करने तथा विभिन्न पक्षों की दलीलें सुनने के बाद

जयपुर को ही राज्य की राजधानी यथावत रखने, अजमेर के महत्व को बनाये रखने के लिए राजस्व मण्डल, लोकसेवा आयोग और आयुर्वेद विभाग तथा जोधपुर में एकीकृत उच्च न्यायालय स्थानांतरित किये जाने की सिफारिश की। अतः राज्य सरकार ने जयपुर की जनता के प्रबल विरोध और लम्बे आन्दोलन के बावजूद 1958 में उच्च न्यायालय जोधपुर में स्थानांतरित कर दिया।

इसके बाद भी पूर्वी राजस्थान की जनता को शीघ्र और सस्ता न्याय सुलभ कराने के लिए वर्षों तक समय-समय पर जयपुर में उच्च न्यायालय की खंडपीठ स्थापित करने की मांग उठती रही जिसकी जोधपुर में प्रतिकूल प्रतिक्रिया भी होती रही। अन्त में 1976-77 में केन्द्र सरकार ने जयपुर में उच्च न्यायालय की खण्डपीठ स्थापित करने की मांग स्वीकार करली और 31 जनवरी, 1977 से जयपुर में खंडपीठ ने विधिवत कार्य प्रारम्भ कर दिया।

क्षेत्र-विभाजन

उच्च न्यायालय की वर्तमान व्यवस्था के अनुसार जयपुर खण्डपीठ के अन्तर्गत जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, अलवर, भरतपुर, धौलपुर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, कोटा, बूंदी, झालावाड़ और टोंक जिले आते हैं।

इसी प्रकार उच्च न्यायालय जोधपुर के क्षेत्राधिकार में जोधपुर, पाली, नागौर, बाड़मेर, सिरोही, जालौर, जैसलमेर, चूरू, गंगानगर, बीकानेर, उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिले आते हैं।

अब तक रहे न्यायाधिपति

राजस्थान उच्च न्यायालय के स्थापनाकाल से अब तक रहे न्यायाधिपतियों तथा मुख्य न्यायाधिपतियों का विवरण इस प्रकार है

संख्या 1	न्यायाधिपति 2	जन्म तिथि 3	नियुक्ति तिथि 4	कार्यावधि 5
1	श्री कमलाकांत वर्मा	अप्राप्य	29 अप्रैल 1949	24 जनवरी 1950
2	श्री नवलकिशोर	अप्राप्य	29 अगस्त 1949	1 जनवरी 1951
3	श्री कंवरलाल बापना	अप्राप्य	29 अगस्त 1949	4 जनवरी 1950
4	श्री मोहम्मद इब्राहिम	अप्राप्य	29 अगस्त 1949	15 जुलाई 1950
5	श्री के. एस. राणावत	1 जून 1903	26 जनवरी 1950	30 मई 19[illegible]
6	श्री कुमारकृष्ण शर्मा	13 मार्च 1899	26 जनवरी 1950	12 मार्च 19[illegible]
7	श्री दुर्गाशंकर दवे	18 दिसम्बर 1906	26 जनवरी 1950	17 दिसम्बर 19[illegible]
8	श्री इन्द्रनाथ मोदी	1 मार्च 1905	29 जनवरी 1953	28 फरवरी 19[illegible]
9	श्री दौलतमल भंडारी	16 दिसम्बर 1907	26 जुलाई 1955	15 दिसम्बर 19[illegible]
10	श्री जगतनारायण	14 फरवरी 1911	24 अप्रैल 1959	13 फरवरी 19[illegible]
11	श्री लक्ष्मीनारायण ढाभाई	13 अक्टूबर 1910	1 सितम्बर 195[illegible]	12 अक्टूबर 19[illegible]
12	श्री चन्द्रभान भार्गव	13 नवम्बर 1909	1 फरवरी 1960	12 नवम्बर 19[illegible]
13	श्री भगवतीप्रसाद बेरी	17 फरवरी 1913	16 अगस्त 19[illegible]	16 फरवरी 19[illegible]
14	श्री प्रकाशनारायण सिन्हा	15 अक्टूबर 1915	21 जून 19[illegible]	5 नवम्बर 19[illegible]
				(इस्तीफा [illegible])
15	श्री वेदपाल त्यागी	28 दिसम्बर 1915	13 सितम्बर 19[illegible]	27 दिसम्बर 19[illegible]
16	श्री कानसिंह	30 अगस्त 1913	8 अगस्त 19[illegible]	29 अगस्त 19[illegible]
17	श्री लालसिंह मेहता	11 अगस्त 1911	1 मार्च 19[illegible]	10 अगस्त 19[illegible]
18	श्री चांदमल लोढ़ा	10 जुलाई 1918	22 नवम्बर 19[illegible]	9 जुलाई 19[illegible]
19	श्री [illegible] मेहता	9 जून 1914	23 नवम्बर 19[illegible]	3 सितम्बर 19[illegible]

क्रमशः

1	2	3	4
11	श्री प्रकाशनारायण सिंघल	17 फरवरी 1975	5 नवम्बर 1975
			(उच्चतम न्यायालय में न्यायाधिपति)
12	श्री वेदपाल त्यागी	6 नवम्बर 1975	27 दिसम्बर 1977
13	श्री [illegible]	27 अप्रैल 1978	22 सितम्बर 1978
14	श्री चांदमल लोढ़ा	12 दिसम्बर 1979	9 जुलाई 1980
15	श्री [illegible] शर्मा	10 जुलाई 1981	22 अक्टूबर 1983
16	श्री प्रफुल्लकुमार बनर्जी	23 अक्टूबर 1983	30 सितम्बर 1985
17	श्री द्वारकाप्रसाद गुप्त	1 अक्टूबर 1985	31 जुलाई 1986
18	श्री जगदीशशरण वर्मा	1 सितम्बर 1986	22 मई 1989
			(उच्चतम न्यायालय में न्यायाधिपति पद पर स्थानांतरण)
19	श्री मिलापचन्द जैन	23 मई 1989	वर्तमान में कार्यवाहक मुख्यन्यायाधिपति

वर्तमान मुख्य न्यायाधिपति एवं न्यायाधिपति

वर्तमान में उच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधिपति तथा पांच अतिरिक्त न्यायाधिपतियों सहित न्यायाधिपतियों के 29 पद स्वीकृत हैं जिनमें 8 पद रिक्त हैं। कार्यरत मुख्य न्यायाधिपति एवं न्यायाधिपतियों का विवरण इस प्रकार है —

क्र सं 1	नाम 2	जन्म तिथि 3	नियुक्ति तिथि 4	पद स्थापन 5
1.	मिलापचन्द जैन, कार्यवाहक मुख्य न्यायाधिपति	21 जुलाई 1929	15 जून 1978	जोधपुर/जयपुर
2	सुरेशचन्द्र अग्रवाल न्यायाधिपति	5 सितम्बर 1933	15 जून 1978	जयपुर
3	सुश्री कान्ता भटनागर, न्यायाधिपति	15 नवम्बर 1930	26 सितम्बर 1978	जोधपुर
4	श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव न्यायाधिपति	11 फरवरी 1934	29 अक्टूबर 1982	जयपुर
5.	श्री दिनेशलाल मेहता, न्यायाधिपति	3 फरवरी 1930	29 अक्टूबर 1982	जयपुर
6	श्री गोपालकृष्ण शर्मा	7 फरवरी 1928	4 अप्रैल 1983	जयपुर
7	श्री किशोरसिंह लोढ़ा न्यायाधिपति	30 जून 1928	4 अप्रैल 1983	जोधपुर
8.	श्री श्यामसुन्दर ब्यास, न्यायाधिपति	1 मई 1928	9 मई 1983	जोधपुर
9.	श्री विनोदशंकर दवे, न्यायाधिपति	1932	12 जुलाई 1984	जयपुर
10	श्री महेन्द्रभूषण शर्मा, न्यायाधिपति	30 सितम्बर 1931	13 जुलाई 1985 (द्वितीय बार)	जयपुर
11.	श्री जसराज चौपड़ा, न्यायाधिपति	20 अगस्त 1933	13 जुलाई 1985	जोधपुर
12	श्री पानाचन्द जैन न्यायाधिपति	अप्राप्य	13 जुलाई 1985	जयपुर
13	श्री सौभागमल जैन न्यायाधिपति	अप्राप्य	13 जुलाई 1985	जोधपुर
14	श्री इन्द्रसेन इसरानी, न्यायाधिपति	अप्राप्य	13 जुलाई 1985	जयपुर
15	श्री फारुख हसन, न्यायाधिपति	1 जनवरी 1932	13 जुलाई 1985	जयपुर
16	श्रीमती मोहिनी कपूर, न्यायाधिपति	18 नवम्बर 1933	13 जुलाई 1985	जयपुर
17.	श्री अशोकुमार माथुर, न्यायाधिपति	अप्राप्य	23 जुलाई 1985	जोधपुर
18	श्री नवीनचन्द्र शर्मा, न्यायाधिपति	10 सितम्बर 1930	23 जुलाई 1985	जोधपुर
19.	श्री रणवीरसहाय वर्मा, न्यायाधिपति	8 जनवरी 1933	23 जुलाई 1985	जोधपुर
20	श्री मिलापचन्द जैन न्यायाधिपति	29 दिसम्बर 1932	23 जुलाई 1985	जोधपुर
21	श्री एन सी कोठोड़, न्यायाधिपति			जयपुर

1	2	3	4	5
20	श्री ए पी सेन	20 सितम्बर 1923	20 जून 1976	27 फरवरी 1978 (स्थानान्तरण)
21	श्री सोहननाथ मोदी	8 नवम्बर 1915	1 मार्च 1969	7 नवम्बर 1977
22	श्री राजेन्द्र सच्चर	22 दिसम्बर 1923	10 मई 1976	8 जुलाई 1977 (स्थानांतरण)
23	श्री रणछोड़दास गट्टानी	14 अगस्त 1917	26 फरवरी 1970	31 जनवरी 1977 (त्यागपत्र)
24	श्री मोहनलाल जोशी	1 जुलाई 1917	22 नवम्बर 1971	30 जून 1979
25	श्री जगदीशप्रसाद जैन	11 नवम्बर 1915	12 अगस्त 1970	17 सितम्बर 1975 (मृत्यु)
26	श्री कल्याणदत्त शर्मा	23 अक्टूबर 1921	20 जुलाई 1973	22 अक्टूबर 1983
27	श्री द्वारकाप्रसाद गुप्ता	1 अगस्त 1924	24 सितम्बर 1973	31 जुलाई 1986
28	श्री मोहनलाल श्रीमाल	4 जनवरी 1923	7 अक्टूबर 1974	3 जनवरी 1985
29	श्री मांगीलाल जैन	22 जुलाई 1922	1 जुलाई 1975	22 जुलाई 1978 (स्थानान्तरण)
30	श्री पुरुषोत्तमदासकुदाल	20 अक्टूबर 1920	1 जुलाई 1975	19 अक्टूबर 1982
31	श्री रामजीलाल गुप्ता	5 अक्टूबर 1921	2 सितम्बर 1976	9 अगस्त 1978 (मृत्यु)
32	श्री गुमानमल लोढ़ा	15 मार्च 1926	1 मई 1978	28 फरवरी 1988 (असम उच्चन्यायालय, गौहाटी में मुख्यन्यायाधीश पद पर स्थानांतरण)
33	श्री कृष्णमल लोढ़ा	28 जुन 1924	1 मई, 1978	27 जुन, 1986
34	श्री नरेन्द्रमोहन कासलीवाल	4 अप्रेल 1928	15 जून, 1978	18 मार्च, 1989 (हिमाचल प्रदेश उच्चन्यालय में मुख्य न्यायाधीश पद पर स्थानातरण)
35	श्री कश्मीरासिंह सिद्दू	8 मार्च1923	25 जुलाई 1978	7 मार्च 1985
36	श्री महेन्द्रभूषण शर्मा	30 सितम्बर 1931	25 नवम्बर 1978	2 अप्रेल 1982 (अवधि नहीं बढ़ाई गयी)
37	श्री सूरजनारायण डिडवानिया	27 अक्टूबर 1923	25 नवम्बर 1978	26 अक्टूबर 1985

अब तक रहे मुख्य न्यायाधिपति

क्र. सं. 1	नाम 2	नियुक्ति तिथि 3	कार्यकाल 4
1.	श्री कमलाकान्त वर्मा	29 अप्रेल 1949	24 जनवरी 1950
2.	श्री नवलकिशोर	25 जनवरी 1950	1 जनवरी 1951
3.	श्री कैलाशनाथ वांचू	2 जनवरी 1951	10 अगस्त 1958
4.	श्री कंवरलाल बापना	11 अगस्त 1958	27 फरवरी 1959
5.	श्री सरजूप्रसाद	28 फरवरी 1959	10 अक्टूबर 1961
6.	श्री जवानसिंह राणावत	11 अक्टूबर 1961	31 मई 1963
7.	श्री दुर्गाशंकर दवे	1 जून 1963	17 दिसम्बर 1968
8.	श्री दौलतमल भंडारी	18 दिसम्बर 1968	15 दिसम्बर 1969
9.	श्री जगतनारायण (आई सी. एस.)	19 दिसम्बर 1969	13 फरवरी 1973
10.	श्री भगवतीप्रसाद बेरी	14 फरवरी 1973	16 फरवरी 1975

1	2	3	4
11.	श्री प्रकाशनारायण सिन्हा	17 फरवरी 1975	5 नवम्बर 1975
			(उच्चतम न्यायालय में न्यायाधिपति)
12	श्री वेदपाल त्यागी	6 नवम्बर 1975	27 दिसम्बर 1977
13	श्री [illegible]	27 अप्रैल 1978	22 सितम्बर 1978
14	श्री चन्द्रमल लोढा	12 दिसम्बर 1979	9 जुलाई 1980
15	श्री [illegible] शर्मा	10 जुलाई 1981	22 अक्टूबर 1983
16	श्री प्रफुल्लकुमार बनर्जी	23 अक्टूबर 1983	30 सितम्बर 1985
17	श्री द्वारकाप्रसाद गुप्ता	1 अक्टूबर 1985	31 जुलाई 1986
18	श्री जगदीशशरण वर्मा	1 सितम्बर 1986	22 मई 1989
		(उच्चतम न्यायालय में न्यायाधिपति पद पर स्थानांतरण)	
19	श्री मिलापचन्द जैन	23 मई 1989	वर्तमान में कार्यवाहक मुख्यन्यायाधिपति

वर्तमान मुख्य न्यायाधिपति एवं न्यायाधिपति

वर्तमान में उच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधिपति तथा पांच अतिरिक्त न्यायाधिपतियों सहित न्यायाधिपतियों के 29 पद स्वीकृत है जिनमें 8 पद रिक्त हैं। कार्यरत मुख्य न्यायाधिपति एवं न्यायाधिपतियों का विवरण इस प्रकार है —

क्र. सं. 1	नाम 2	जन्म तिथि 3	नियुक्ति तिथि 4	पद स्थापन 5
1.	मिलापचन्द जैन, कार्यवाहक मुख्य न्यायाधिपति	21 जुलाई 1929	15 जून 1978	जोधपुर/ जयपुर
2	सुरेशचन्द्र अग्रवाल, न्यायाधिपति	5 सितम्बर 1933	15 जून 1978	जयपुर
3	सुश्री कान्ता भटनागर न्यायाधिपति	15 नवम्बर 1930	26 सितम्बर 1978	जोधपुर
4	श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव न्यायाधिपति	11 फरवरी 1934	29 अक्टूबर 1982	जयपुर
5	श्री दिनकरलाल मेहता न्यायाधिपति	3 फरवरी 1930	29 अक्टूबर 1982	जयपुर
6	श्री गोपालकृष्ण शर्मा	7 फरवरी 1928	4 अप्रैल 1983	जयपुर
7	श्री किशोरसिंह लोढ़ा न्यायाधिपति	30 जून 1928	4 अप्रैल 1983	जोधपुर
8.	श्री श्यामसुन्दर व्यास, न्यायाधिपति	1 मई 1928	9 मई 1983	जोधपुर
9	श्री विनोदशंकर दवे, न्यायाधिपति	1932	12 जुलाई 1984	जयपुर
10	श्री महेन्द्रभूषण शर्मा, न्यायाधिपति	30 सितम्बर 1931	13 जुलाई 1985 (द्वितीय बार)	जयपुर
11.	श्री जसराज चोपड़ा, न्यायाधिपति	20 अगस्त 1933	13 जुलाई 1985	जोधपुर
12	श्री पानाचन्द जैन न्यायाधिपति	अप्राप्य	13 जुलाई 1985	जयपुर
13	श्री सौभागमल जैन, न्यायाधिपति	अप्राप्य	13 जुलाई 1985	जोधपुर
14	श्री इन्द्रसेन इसरानी, न्यायाधिपति	अप्राप्य	13 जुलाई 1985	जयपुर
15.	श्री फारुख हसन न्यायाधिपति	1 जनवरी 1932	13 जुलाई 1985	जयपुर
16	श्रीमती मोहिनी कपूर, न्यायाधिपति	18 नवम्बर 1933	13जुलाई 1985	जयपुर
17	श्री अशोकुमार माथुर, न्यायाधिपति	अप्राप्य	23 जुलाई 1985	जोधपुर
18	श्री नवीनचन्द्र शर्मा, न्यायाधिपति	10 सितम्बर 1930	23जुलाई 1985	जोधपुर
19.	श्री रणवीरसहाय वर्मा, न्यायाधिपति	8 जनवरी 1933	23जुलाई 1985	जोधपुर
20	श्री मिलापचन्द जैन न्यायाधिपति	29 दिसम्बर 1932	23जुलाई 1985	जोधपुर
21	श्री एन सी कोठोह न्यायाधिपति			जयपुर

प्रशासनिक व्यवस्था

उच्च न्यायालय एवं अधीनस्थ न्यायालयों की प्रशासनिक व्यवस्था मुख्य न्यायाधिपति के निदेशन में रजिस्ट्रार देखते हैं। वर्तमान में उच्च न्यायालय जोधपुर में श्री रमेशचन्द्र सूद रजिस्ट्रार, श्री हरबंसलाल अतिरिक्त रजिस्ट्रार (प्रशासन), श्री मंगल प्रसाद बोहरा अतिरिक्त रजिस्ट्रार (न्यायिक), और श्री ओमप्रकाश बिश्नोई मुख्य न्यायाधिपति के प्रिंसीपल प्राइवेट सेक्रेटरी के पद पर कार्यरत हैं। ये सभी अधिकारी राजस्थान उच्च न्यायिक सेवा के हैं। इनकी सहायता के लिए न्यायिक सेवा के तीन अन्य अधिकारी उप रजिस्ट्रार पदों पर कार्यरत हैं।

इसी प्रकार जयपुर स्थित उच्च न्यायालय में राजस्थान उच्च न्यायिक सेवा के सर्व श्री सतीशचन्द्र मित्तल, गुलाम हुसैन और अनूपचंद गोयल क्रमशः प्रशासन, न्यायिक और सतर्कता विषयक अतिरिक्त रजिस्ट्रार पदों पर कार्यरत हैं।

न्यायिक सेवाऐं

वर्तमान में राजस्थान उच्च न्यायिक सेवा में 119 पद हैं। राजस्थान न्यायिक सेवा के अधीन व्यवहार न्यायाधीश-कम-मुख्य न्यायिक दण्डनायक तथा व्यवहार न्यायाधीश-कम-अतिरिक्त मुख्य न्यायिक दण्डनायक के 86 और मुंसिफ एवं न्यायिक दण्डनायक के 284 पद हैं।

महाधिवक्ता

महाधिवक्ता राजस्थान के पद पर 30 मई, 1988 से श्री दिनेशचन्द्र स्वामी कार्यरत हैं। इनके सहयोग के लिए जयपुर में दो और जोधपुर में एक अतिरिक्त महाधिवक्ता के पद हैं। जयपुर में श्री एम.आई. खान और श्री दिलीपसिंह तथा जोधपुर में श्री जे.पी. जोशी कार्यरत हैं।

निर्णयाधीन वाद

उच्च न्यायालय में गत 31 मार्च, 1989 को कुल 59 हजार 374 मुकदमें निर्णयाधीन थे।

लोक अदालत

वर्ष 1985 में श्री गुमानमल लोढ़ा ने अपने कार्यवाहक मुख्य न्यायाधिपति के कार्यकाल में लोक अदालतों के माध्यम से मुकदमों के त्वरित गति से निपटारे की योजना तैयार की जिसे न्यायाधिपति श्री दिनकरलाल मेहता के सहयोग से 30 नवम्बर, 1985 से कार्यान्वित किया गया। इस व्यवस्था में खुली अदालत में दोनों पक्षों को समझा-बुझाकर हाथों हाथ समझौता कराया जाता है। 30 नवम्बर, 1985 से

अब तक राज्य के विभिन्न भागों में लोक अदालत के 252 शिविर आयोजित कर तीन लाख 45 हजार 154 मुकदमों का निस्तारण किया जा चुका है। इन मुकदमों में 90 हजार 275 वर्ष 1987–88 में तथा 30 हजार 478 मुकदमे वर्ष 1988–89 में निर्णीत हुए जिनके लिए क्रमश: 70 और 18 लोक अदालत शिविर आयोजित किये गये। वर्ष 1987–88 में निर्णीत मुकदमों में फौजदारी के 11 हजार 676, मोटर व्हीकल सम्बन्धी 36 हजार 922, दीवानी 2019, ट्रिब्यूनल के हर्जाना सम्बन्धी 1111 राजस्व सम्बन्धी 4539 तथा अन्य मुकदमे 34 हजार 8 शामिल हैं।

राज्य स्तर पर लोक अदालत सम्बन्धी कोई कानून व नियम नहीं बनाये गये हैं। अभी तक राजस्थान विधिक सहायता बोर्ड ने ही लोक अदालतों के गठन व कार्यकलापों के सम्बन्ध में समय-समय पर आदेश-निर्देश जारी किये हैं। केन्द्र सरकार द्वारा पारित लीगल सर्विस अथारिटी अधिनियम तथा तत्सम्बन्धी नियम राज्य में लागू किये जाने के लिए अभी तक कोई तिथि घोषित नहीं हुई है।

नि:शुल्क विधिक सहायता

समाज के कमजोर और निर्धन वर्गों, अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के लोगों को न्याय-प्राप्ति में धन की कमी बाधक नहीं हो, इस दृष्टि से सरकार ने उन्हें नि:शुल्क कानूनी सहायता उपलब्ध कराने का कार्यक्रम चालू किया है। इसका प्रावधान 6 हजार रुपये वार्षिक से कम आय वाले लोगों के लिए किया गया है लेकिन अनुसूचित जातियों को आय-सीमा से मुक्त रखा गया है। इस व्यवस्था में राजस्थान विधिक सहायता बोर्ड सहायता के लिए पात्र व्यक्तियों के लिए वकील की सहायता उपलब्ध कराता है।

अधीनस्थ न्यायालय

राज्य में 31 दिसम्बर, 1988 को अधीनस्थ न्यायालयों की कुल संख्या 444 थी। इनमें जिला एवं सत्र न्यायालय 27, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायालय 44, विशिष्ट न्यायाधीश (अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश) 1, विशिष्ट न्यायाधीश (आतंककारी मामले) 2, विशिष्ट न्यायाधीश (डाकू-उन्मूलन)) 3 न्यायाधीश मोटर दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण तथा भ्रष्टाचार-निरोधक मामले 1, न्यायाधीश औद्योगिक श्रम एवं विशिष्ट न्यायाधीश भ्रष्टाचार निरोधक 1, न्यायाधीश पारिवारिक न्यायालय 1, विशिष्ट न्यायाधीश (एस.पी. ई.मामले) 1, विशिष्ट न्यायाधीश(भ्रष्टाचार निरोधक) 1, विशिष्ट न्यायाधीश (सतीनिवारण) 1, विशिष्ट न्यायाधीश केन्द्रीय जांच ब्यूरो(एस पी ई. मामले) 1, न्यायाधीश औद्योगिक श्रम, मोटर-दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण एवं विशिष्टन्यायाधीश (भ्रष्टाचार निरोधक मामले) विशिष्ट न्यायाधीश (आवश्यक वस्तु अधिनियम 1981)2, अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश (मानसिंह हत्याकांड) 1, विशेष न्यायालय न्यायिक दण्डनायक (आर्थिक अपराध) 1, व्यवहार न्यायाधीश एवं मुख्य न्यायिक दण्डनायक 27, व्यवहार न्यायाधीश एवं अतिरिक्तमुख्य न्यायिक दण्डनायक 27, अतिरिक्त व्यवहार न्यायाधीश एवं अतिरिक्त मुख्य न्यायिक दण्डनायक 31, अतिरिक्त मुख्य न्यायिक दण्डनायक (एस.पी.ई.मामले) 1, मुंसिफ एवं न्यायिक दण्डनायक 146, अतिरिक्त मुंसिफ एवं न्यायिक दण्डनायक 47, न्यायिक दण्डनायक54, न्यायिक दण्डनायक (टोडनेज)4, न्यायिक दण्डनायक (रेलवे) 6, हरिजनों पर अत्याचार सम्बन्धी मामलों की सुनवाई हेतु न्यायिक दण्डनायक तथा विशेष वन न्यायिक दण्डनायक 3-3 तथा विशेष चल न्यायालय 2शामिल हैं।

विभाजनः

राज्य के उपरोक्त अधीनस्थ न्यायालयों का विभाजन इस प्रकार है:–

(1) जिला एवं सत्र न्यायालय:–

1. अजमेर
2. अलवर
3. बांसवाड़ा
4. बालोतरा (बाड़मेर)
5. भरतपुर
6. भीलवाड़ा
7. बीकानेर
8. बूंदी
9. चूरू
10 धौलपुर
11. डूंगरपुर
12. गंगानगर
13. जयपुर नगर
14. जयपुर जिला
15. जालौर
16. झुन्झुनूं
17. झालावाड़
18. जोधपुर
19. कोटा
20. मेड़ता (नागौर)
21. पाली
22. प्रतापगढ़ (चित्तौड़गढ़)
23. सवाईमाधोपुर
24. सीकर
25. सिरोही
26. टोंक
27. उदयपुर

(2) न्यायाधीश (औद्योगिक, श्रम, मोटर-दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण एवं विशिष्ट न्यायाधीश भ्रष्टाचार-निरोधक मामले) :–

(1) जोधपुर (2) कोटा (3) उदयपुर

(3) न्यायालय विशिष्ट न्यायाधीश न्यायाधीश पारिवारिक मामले:–

(1) जोधपुर (2) अजमेर (3) जयपुर

(4) न्यायाधीश-औद्योगिक, श्रम एवं विशिष्ट न्यायाधीश भ्रष्टाचार-निरोधक मामले:

(1) बीकानेर

(5) न्यायाधीश-मोटर दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण तथा भ्रष्टाचार-निरोधक मामले:

(1) भरतपुर

(6) विशिष्ट न्यायाधीश (आतंककारी मामले):–

(1) अजमेर (2) जोधपुर

(7) विशिष्ट न्यायाधीश (डाकू-उन्मूलन मामले):–

(1) भरतपुर (2) धौलपुर (3) करौली

(8) विशिष्ट न्यायाधीश (एस.पी.ई. मामले):–

(1) जयपुर

(9) विशिष्ट न्यायाधीश-केन्द्रीय जांच ब्यूरो (एस.पी.ई. मामले): –

(1) जोधपुर

(10) विशिष्ट न्यायाधीश (भ्रष्टाचार-निरोधक मामले):–

(1) जयपुर

(11) विशिष्ट न्यायाधीश (सती-निवारण) —

(1) जयपुर

(12) विशिष्ट न्यायाधीश (आवश्यक वस्तु अधिनियम 1981) —

(1) जयपुर, (2) जोधपुर

(13) अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश:

1. अजमेर सं. एक
2. अजमेर सं. दो
3. ब्यावर
4. अलवर सं. एक
5. अलवर सं. दो
6. किशनगढ़बास
7. बाड़मेर
8. भरतपुर सं. एक
9. भरतपुर सं. दो
10. डीग
11. भीलवाड़ा
12. बीकानेर
13. बूंदी
14. जोधपुर
15. गंगानगर सं. एक
16. गंगानगर सं. दो
17. हनुमानगढ़ सं. एक
18. हनुमानगढ़ सं. दो
19. नोहर
20. रायसिंह नगर
21. जयपुर नगर सं. एक
22. जयपुर नगर सं. दो
23. जयपुर नगर सं. तीन
24. जयपुर नगर सं. चार
25. जयपुर नगर सं. पांच
26. जयपुर जिला
27. दौसा
28. झालावाड़
29. जोधपुर सं. एक
30. जोधपुर सं. दो
31. जैसलमेर
32. कोटा सं. एक
33. कोटा सं. दो
34. बारां
35. नागौर
36. पाली
37. चित्तौड़गढ़
38. गंगापुरसिटी
39. करौली
40. सीकर
41. नीम-का-थाना
42. उदयपुर सं. एक
43. उदयपुर सं. दो
44. राजसमंद

(14) विशिष्ट न्यायाधीश (अतिरिक्त सत्र न्यायालय): —

(1) अजमेर

(15) अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश (मानसिंह हत्याकांड) : —

(1) जयपुर

(16) व्यवहार न्यायाधीश एवं मुख्य न्यायिक दंडनायक: —

(समस्त जिला मुख्यालयों पर)

(17) न्यायिक दण्डनायक का विशेष न्यायालय (आर्थिक अपराध) : —

(1) जयपुर नगर

(18) व्यवहार न्यायाधीश एवं अतिरिक्त मुख्य न्यायिक दंडनायक: —

1. ब्यावर
2. किशनगढ़
3. किशनगढ़बास
4. बालोतरा
5. डीग
6. शाहपुरा (भीलवाड़ा)
7. मांडलगढ़
8. रतनगढ़
9. हनुमानगढ़

10. रायसिंहनगर
11. नोहर
12. जयपुर जिला
13. सांभर लेक
14. दौसा
15. बारां
16. मेड़ता सिटी
17. परबतसर
18. सोजत
19. पाली
20. प्रतापगढ़
21. गंगापुर सिटी
22. करौली
23. नीम-का-थाना
24. आबूरोड
25. मावली
26. राजसमंद
27. कानोड़

(19) अतिरिक्त व्यवहार न्यायाधीश एवं अतिरिक्त न्यायिक दण्डनायक:-

1. अजमेर सं. एक
2. अजमेर सं.दो
3. अलवर सं. एक
4. अलवर सं. दो
5. भरतपुर सं. एक
6. भरतपुर सं. दो
7. बीकानेर
8. बूंदी
9. बूंदी (सांप्रदायिक दंगे)
10. धौलपुर
11. गंगानगर
12. जयपुर नगर सं. एक
13. जयपुर नगर सं. दो
14. जयपुर नगर सं. तीन
15. जयपुर नगर सं. चार
16. जयपुर नगर सं. पांच
17. जयपुर नगर सं. छः
18. जयपुर नगर सं. सात
19. जयपुर जिला सं. एक
20. जयपुर जिला सं. दो
21. झुंझुनूं
22. जोधपुर सं. एक
23. जोधपुर सं. दो
24. जोधपुर सं. तीन
25. जोधपुर सं. चार
26. कोटा सं. एक
27. कोटा सं. दो
28. कोटा सं. तीन
29. उदयपुर सं. एक
30. उदयपुर सं. दो
31. उदयपुर सं. तीन

(20) अतिरिक्त मुख्य न्यायिक दंडनायक (एस.पी.ई.):-

(1) जयपुर जिला

(21) मुंसिफ एवं न्यायिक दंडनायक:-

1. अजमेर पूर्व
2. अजमेर पश्चिम
3. अजमेर जिला
4. ब्यावर
5. नसीराबाद
6. केकड़ी
7. किशनगढ़
8. अलवर
9. बहरोड़
10. किशनगढबास
11. लक्ष्मणगढ़
12. राजगढ़
13. थानागाजी
14. बांसूर
15. तिजारा
16. बांसवाड़ा
17. कुशलगढ़
18. बागीदोरा
19. बालोतरा
20. बाड़मेर
21. सिवाना
भरतपुर
23. बयाना
24. डीग
. वैर
26. कामां
27. भीलवाड़ा
28. गंगापुर
29. गुलाबपुरा
30. जहाजपुर
31. मांडल
32. बिजौलिया
33. बीकानेर
34. लूणकरणसर
35. नोखा
36. बूंदी
37. नैनवा
38. चूरू
39. रतनगढ़
40. सरदारशहर
41. राजगढ़
42. सुजानगढ़
43. तारानगर
44. धौलपुर
45. बाड़ी

46. डूंगरपुर
47. सागवाड़ा
48. गंगानगर
49 हनुमानगढ़
50 रायसिंहनगर
51. करणपुर
52. भादरा
53. सूरतगढ़
54 नोहर
55. अनूपगढ़
56. पदमपुर
57. संगरिया
58. सादुलपुर
59. जयपुर नगर (पूर्व)
60. जयपुर नगर (पश्चिम)
61. जयपुर जिला
62. सांभरलेक
63. शाहपुरा
64 कोटपूतली
65. बांदीकुई
66 चौमूं
67. दौसा
68 जालोर
69. भीनमाल
70. सांचोर
71. झुन्झुनूं
72. चिड़ावा
73. नवलगढ़
74. खेतड़ी
75 झालावाड़
76. भवानीमंडी
77 खानपुर
78. अकलेरा
79. जोधपुर नगर
80. जोधपुर जिला
81 बिलाड़ा
82. फलौदी
83. पोकरण
84 ओसियां
85. पीपाड़
86. कोटा (उत्तर)
87 कोटा (दक्षिण)
88. बारां
89 रामगंजमंडी
90. छबड़ा
91. अटरू
92 इटावा
93. सांगोद
94. मेड़ता सिटी
95. नागौर
96. नावां
97. डीडवाना
98. मकराना
99. डेगाना
100. लाडनूं
101. पाली
102. सोजत
103. जैतारण
104. देसूरी
105. वैर
106. सुमेरपुर
107. प्रतापगढ़
108. बड़ी सादड़ी
109. छोटी सादड़ी
110. कपासन
111. चित्तौड़गढ़
112. निम्बाहेड़ा
113. बेगूं
114. डूंगला
115. सवाईमाधोपुर
116. गंगापुरसिटी
117. हिण्डौन
118. करौली
119. सीकर
120. फतहपुर
121. नीम-का-थाना
122. श्रीमाधोपुर
123. दांतारामगढ़
124. सिरोही
125. आबूरोड
126. शिवगंज
127. टोंक
128. मालपुरा
129. निवाई
130. उणियारा
131. उदयपुर नगर (उत्तर)
132. उदयपुर नगर (दक्षिण)
133. सलूम्बर
134. नाथद्वारा
135. भीम
136. राजसमन्द
137. कोटड़ा
138. गोगुंदा
139. मावली
140. खेरवाड़ा
141. धरियावाद
142. रेलमगरा
143. वल्लभनगर
144 आमेट
145. देवगढ़
146. कुम्भलगढ़

(22) अतिरिक्त मुंसिफ एवं न्यायिक दण्डनायक:-

1. केकड़ी
2. अजमेर-पूर्व
3. अजमेर-पश्चिम
4. अलवर सं. एक
5. अलवर सं. दो
6. बहरोड़

7. किशनगढ़ बास
8. बाड़मेर
9. भरतपुर सं. एक
10. भरतपुर सं.2
11. बयाना
12. डीग
13. बीकानेर
14. बूंदी सं. एक
15. बूंदी सं. दो
16. धौलपुर
17. डूंगरपुर
18. गंगानगर
19. जयपुर नगर (पूर्व)
20. जयपुर नगर पश्चिम
21. जयपुर नगर सं. एक
22. जयपुर नगर सं. दो
23. जयपुर नगर सं. तीन
24. जयपुर नगर सं. चार (नगरपरिषद मामले)
25. जयपुर नगर सं. पाँच
26. जयपुर जिला सं. एक
27. जयपुर जिला सं. दो
28. दौसा
29. जालौर
30. भवानीमंडी
31. जोधपुर नगर सं. एक
32. जोधपुर नगर सं. दो
33. कोटा सं. एक (उत्तर)
34. कोटा सं. दो (उत्तर)
35. कोटा सं. एक (दक्षिण)
36. कोटा सं. दो (दक्षिण)
37. डीडवाना
38. पाली
39. प्रतापगढ़
40. कपासन
41. सवाईमाधोपुर
42. हिण्डौन
43. करौली
44. सीकर
45. टोंक
46. उदयपुर नगर (उत्तर)
47 उदयपुर नगर (दक्षिण)

(23) न्यायिक दण्डनायक:-

1. अजमेर सं. एक
2. अजमेर सं. दो
3. अजमेर सं. तीन
4. अजमेर सं. चार
5. अजमेर सं. पाँच
6. ब्यावर
7. अलवर
8. बांसवाड़ा
9. बाड़मेर
10. भीलवाड़ा सं. एक
11. भीलवाड़ा सं. दो
12. बीकानेर सं. एक
13. बीकानेर सं. दो
14. बूंदी
15. धौलपुर
16. गंगानगर
17. हनुमानगढ सं. एक
18. हनुमानगढ़ सं. दो
19. जयपुर नगर सं. एक
20. जयपुर नगर सं. दो
21. जयपुर नगर सं. तीन
22. जयपुर नगर सं. चार
23. जयपुर नगर सं. पांच
24. जयपुर नगर सं. छः
25. जयपुर नगर सं. सात
26. जयपुर नगर सं. आठ
27. जयपुर नगर सं. नौ
28. जयपुर नगर सं. दस
29. जयपुर नगर सं. ग्यारह
30. जयपुर नगर सं. बारह
31. जयपुर नगर सं. तेरह
32. जयपुर नगर सं. चौदह
33. जयपुर जिला सं. एक
34. जयपुर जिला सं. दो
35. जयपुर जिला सं. तीन
36. झालावाड़
37. जोधपुर सं. एक
38. जोधपुर सं. दो
39. जोधपुर सं. तीन
40. कोटा सं. एक
41. कोटा सं. दो
42. कोटा सं. तीन
43. बारां सं. एक
44. बारां सं. दो
45. रामगंजमंडी
46. मेड़ता
47. नागौर
48. पाली
49. चित्तौड़गढ़
50. हिण्डौन
51. सीकर
52. आबूरोड
53. उदयपुर सं. एक
54. उदयपुर सं. दो

(24) न्यायिक दण्डनायक (रोड़वेज):

(1) अजमेर (2) बीकानेर (3) जयपुर (4) जोधपुर

(25) न्यायिक दण्डनायक (रेलवे)·

(1) अजमेर (2) बीकानेर (3) जयपुर (4) जोधपुर (5) कोटा (6) उदयपुर

(26) विशिष्ट चल न्यायिक दण्डनायक (हरिजनों पर अत्याचारों सम्बन्धी मामलों की सुनवायी हेतु):

(1) राजगढ़ (अलवर) (2) बारां (3) अटरू

(27) न्यायिक दण्डनायक (हरिजनों पर अत्याचारों सम्बन्धी मामलों की सुनवाई हेतु) -

(1) अलवर (2) कोटा 3(नागौर)

(28) विशिष्ट चल दंडनायक:

(1) जयपुर सं. एक (2) जयपुर सं. दो (जिला)

राजस्थान
वार्षिकी

राजस्थान
वार्षिकी

पंचम खण्ड

राजस्थान
वार्षिकी

शिक्षा

राजस्थान में शिक्षा का योजनाबद्ध एवं सर्वांगीण प्रसार स्वाधीनता के बाद हुआ। इसके परिणामस्वरूप 1981 की जनगणना के अनुसार देश का साक्षरता प्रतिशत जहां 36.17 एवं महिलाओं का 23.30 प्रतिशत था वहां राजस्थान का यह प्रतिशत क्रमशः 24.38 एवं 11.42 रहा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के दिशा-निर्देश के अनुसार राज्य में 1990 तक 6-11 आयु वर्ग के 1.20 लाख बालकों तथा 12 लाख बालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा की परिधि में लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। राज्य में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के लिए समाज कल्याण विभाग द्वारा आंगनबाड़ी केन्द्र तथा शिक्षा-विभाग द्वारा 734 शिशु क्रीड़ा केन्द्र चलाये जा रहे हैं।

प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक शिक्षा

राज्य में वर्ष 1988–89 तक 6–11 आयु वर्ग के 47.81 लाख तथा 11–14 आयु वर्ग के 14.32 लाख बालक-बालिकाओं को नामांकित किया जा चुका है। वर्तमान में राज्य में 30 हजार 810 प्राथमिक तथा 8 हजार 955 उच्च प्राथमिक विद्यालय कार्यरत हैं। इस वर्ष के दौरान तीन हजार नये प्राथमिक विद्यालय खोले गए तथा 600 प्राथमिक विद्यालयों को उच्च प्राथमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत किया गया। बालिकाओं में शिक्षा-प्रसार को प्रोत्साहन देने हेतु जैसलमेर, बाड़मेर तथा जालौर जिलों के ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में 50 प्रतिशत बालिकाओं को उपस्थिति छात्रवृत्ति देना प्रारंभ किया गया।

ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड:– शिक्षा के गुणात्मक स्तर को समुन्नत करने के उद्देश्य से प्रारम्भ किये गये ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्य के 12 हजार 187 विद्यालयों को लिया गया। 6919 एकल अध्यापकीय विद्यालयों को दो अध्यापकीय विद्यालयों में परिवर्तित किया गया। इस योजनान्तर्गत सभी विद्यालयों में 797.80 लाख रुपये की राशि से न्यूनतम आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाई जा रही है। इन सभी विद्यालयों को औसत रूप से लगभग 7200 रु० की न्यूनतम आवश्यक सामग्री एवं फर्नीचर उपलब्ध करवाया जायेगा।

सीमान्त क्षेत्र विकास कार्यक्रम- वर्ष 1987–88 में सामान्य शिक्षा में सीमान्त क्षेत्र के चारों जिलों यथा जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर व श्रीगंगानगर की 13 पंचायत समितियों के प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं सीनियर हायर सैकेण्डरी विद्यालयों के भवन निर्माण कार्य एवं अन्य न्यूनतम आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराये जाने हेतु भारत सरकार से 565.09 लाख रुपये की राशि प्राप्त हुई थी। आलोच्य वर्ष में 438.78 लाख रुपये की राशि विभिन्न कार्यक्रमों हेतु प्राप्त हुई है। सीमान्त क्षेत्र के 396 नये प्राथमिक विद्यालयों में दो-दो कक्षा कक्ष, इनमें न्यूनतम आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराने तथा इनमें 792 अध्यापकों की नियुक्ति हेतु541.32 लाख रुपये के प्रस्ताव भारत सरकार के विचाराधीन हैं। इन जिलों में चार कन्या छात्रावासों के निर्माण एवं सामग्री हेतु 60 लाख रुपये प्राप्त होने की आशा है।

विज्ञान सुधार योजना- वर्ष 1987–88 में विज्ञान सुधार योजनान्तर्गत भारत सरकार से 359.18 लाख रुपये प्राप्त हुए हैं। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों की प्रयोगशालाओं के सुदृढ़ीकरण हेतु उपकरण उपलब्ध कराने, उच्च प्राथमिक विद्यालयों को विज्ञान-किट दिलाये जाने की व्यवस्था की जायेगी। विज्ञान एवं गणित शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। इस योजना का लाभ राज्य के 9 जिलों को मिल सकेगा।

आलोच्य वर्ष में विज्ञान सुधार योजनान्तर्गत 9 और जिलों के लिए 414.30 लाख रुपये की राशि के प्रस्ताव भारत सरकार को भेजे जा चुके हैं जिसकी शीघ्र ही स्वीकृति मिलने की संभावना है।

कम्प्यूटर शिक्षा- क्लास प्रोजेक्ट के अन्तर्गत राज्य के 71 माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कम्प्यूटर की शिक्षा उपलब्ध करा दी गई है।

नवोदय विद्यालय- प्रतिभावान छात्रों को उनकी आर्थिक स्थित चाहे जैसी भी हो उन्हें अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराकर तेजी से आगे बढ़ने के अवसर दिये जाने की दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के अन्तर्गत वर्ष 1990 तक राज्य के प्रत्येक जिले में एक नवोदय विद्यालय केन्द्र सरकार की ओर से खोले जाने की योजना है। इन विद्यालयों में 75 प्रतिशत सीटें ग्रामीण क्षेत्र के लिए आरक्षित हैं। अब तक राज्य के 20 जिलों में नवोदय विद्यालयों खोले जा चुके हैं। चार जिलों में नवोदय विद्यालय खोले जाने हेतु प्रस्ताव भारत सरकार को भेजे जा चुके हैं तथा शेष जिलों के प्रस्ताव शीघ्र ही भिजवाये जायेंगे।

माध्यमिक शिक्षा

राज्य में 2171 माध्यमिक विद्यालय तथा 892 उच्च/उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कार्यरत हैं जिनके माध्यम से 14–17 आयु वर्ग के 6.18 लाख छात्र-छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आलोच्य वर्ष में राज्य के सभी राजकीय 671 उच्च माध्यमिक विद्यालयों को सीनियर हायर सैकेण्डरी स्कूलों में क्रमोन्नत कर दिया गया है। इसके अलावा गैर सरकारी 133 उच्च माध्यमिक विद्यालयों को भी सीनियर हायर सैकेण्डरी में क्रमोन्नत किया गया है। इससे राज्य में शिक्षा का ढांचा राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा प्रतिपादित ढांचे के अनुरूप हो गया है।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड- माध्यमिक शिक्षा आयोग की सिफारिश पर राज्य में माध्यमिक शिक्षा को आधुनिक, वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील बनाने के लिए राज्य सरकार द्वारा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा अधिनियम 1957 के तहत 1 अगस्त, 1957 को बोर्ड की स्थापना के गई। बोर्ड ने अपनी स्थापना के तीन दशक में परीक्षा के साथ-साथ शैक्षिक उन्नयन तथा शिक्षा को आधुनिक एवं वैज्ञानिक ढंग से अग्रसर करने में महती भूमिका निभाई है।

जुलाई, 1986 से बोर्ड द्वारा कक्षा नवम् से दस जमा दो शिक्षा प्रणाली आरम्भ कर दी गई थी। राज्य में वर्ष 1989 में इस प्रणाली के अन्तर्गत प्रथम बार बोर्ड द्वारा बारहवीं कक्षा की परीक्षा ली गई।

वर्ष 1988में बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षा में सैकेण्ड्री स्कूल परीक्षा में तीन लाख 12 हजार 874, हायर सैकेण्ड्री स्कूल परीक्षा में एक लाख 72 हजार 954, प्रवेशिका परीक्षा में 2806 तथा उपाध्याय परीक्षा में 1205 छात्र-छात्राएँ बैठे।

उच्च शिक्षा

वर्ष 1988–89 के दौरान राज्य में 6 विश्वविद्यालय, तीन विश्वविद्यालय मानी गई संस्थाएँ, 9 विश्वविद्यालयों के संगठक महाविद्यालय तथा 2 विश्वविद्यालय मानी गई संस्थाओं के संगठक महाविद्यालय कार्यरत थे। इनके अलावा 59 राजकीय महाविद्यालय, 45 राजकीय अनुदान प्राप्त शिक्षण संस्थाएं तथा 33 गैर अनुदान प्राप्त शिक्षण संस्थाएं भी इस क्षेत्र में कार्यरत थे। कला के क्षेत्र में राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स व राजस्थान संगीत संस्थान भी महाविद्यालय शिक्षा निदेशालय के अधीन कार्यरत थे।

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्रों की संख्या 1 लाख 74 हजार 198 रही जिसमें राजकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत 80 हजार 464 छात्र भी शामिल हैं। इनके अतिरिक्त राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में 154 और राजस्थान संगीत संस्थान में 413 छात्र अध्ययनरत थे।

राज्य के विश्वविद्यालय

राजस्थान विश्वविद्यालय- जयपुर में स्थित यह विश्वविद्यालय राज्य में स्थापित प्रथम विश्वविद्यालय है जो 8 जनवरी, 1947 को अस्तित्व में आया। उस समय इसका नाम राजपूताना विश्वविद्यालय था। सन् 1962 में जोधपुर विश्वविद्यालय और उदयपुर विश्वविद्यालय के अस्तित्व में आने से पूर्व इसका क्षेत्राधिकार सम्पूर्ण राज्य पर था। इसके बाद सत्र 1986–87 तक इसका क्षेत्र उदयपुर एवं जोधपुर विश्वविद्यालयों के क्षेत्र के अतिरिक्त पूरे राजस्थान तक फैला हुआ था। सत्र 1987–88 में अजमेर विश्वविद्यालय एवं कोटा खुला विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ राजस्थान विश्वविद्यालय का क्षेत्र इसके संघटक महाविद्यालयों एवं विभागों तथा आयुर्विज्ञान, आयुर्वेद एवं अभियान्त्रिकी संकायों के सम्बद्ध महाविद्यालयों तक सीमित रह गया था, परन्तु जन आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए सत्र 1988–89 में जयपुर संभाग के जयपुर, अलवर, भरतपुर, धौलपुर, सीकर एवं झुंझुनूं जिलों में स्थित सभी महाविद्यालयों को पुनः इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध किया गया है। उपरोक्त जिलों के स्वयंपाठी छात्रों को भी इस विश्वविद्यालय की विभिन्न परीक्षाओं में बैठने की सुविधा प्रदान की गई है। विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों की संख्या अब लगभग 110 हो गई है तथा यह विश्वविद्यालय पुनः प्रदेश का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय हो गया है।

वर्तमान में डॉ. एस एन. सिन्हा विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर कार्यरत हैं। सत्र 1988–89 के दौरान इस विश्वविद्यालय में-

1–नयी शिक्षा नीति के अनुरूप 10 जमा2 जमा3 प्रणाली के अन्तर्गत एक नये पाठ्यक्रम ''प्री डिग्री कोर्स'' की संरचना की गयी तथा छात्रों की सुविधा के लिए इस ब्रिज कोर्स को लागू किया गया।

2–शैक्षणिक विभागों में विविध स्तरों पर परिवर्तित, संशोधित पाठ्यक्रम लागू करने के अतिरिक्त समाजशास्त्र के अन्तर्गत एक नया स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम–Anthropology (मानवशास्त्र) प्रारम्भ किया गया।

3–वर्तमान ''इन्दिरा गाँधी जैविक एवम् मानविकी परिस्थीकरण अध्ययन केन्द्र में इस वर्ष 3 नये सहायक प्रोफेसर नियुक्त कर अध्ययन एवम् अनुसन्धान की गति में वृद्धि की गयी।

4–इस वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से महिला अध्ययन केन्द्र की स्थापना कर महिलाओं के उत्थान कार्यों में योगदान किया गया।

5– राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के अध्यापकों के प्रशिक्षणार्थ एक ''एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज'' की स्थापना की गई जिसमें अब तक लगभग 140 अध्यापकों को गहन प्रशिक्षण दिया गया।

6– विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से एक कम्प्यूटर सेन्टर प्रारंभ किया गया जिसमें शोध कार्य में सहायता मिल सकेगी।

अजमेर विश्वविद्यालय- अजमेर विश्वविद्यालय की स्थापना जुलाई १९८७ में की गई। पूर्व में राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध (विश्वविद्यालय के संघटक कॉलेजों को छोड़कर) अधिकांश महाविद्यालयों को राजस्थान विश्वविद्यालय से हटाकर अजमेर विश्वविद्यालय के क्षेत्राधिकार में लिया गया। किन्तु वर्ष 1988 में विश्वविद्यालयों के क्षेत्राधिकार का पुनर्निर्धारण किया गया जिसमें

फलस्वरूप जयपुर संभाग के 6 जिलों (जयपुर, अलवर, धौलपुर, झुन्झुनूं, भरतपुर एवं सीकर) के महाविद्यालयों को वापिस राजस्थान विश्वविद्यालय के क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत लिया गया।

अजमेर विश्वविद्यालय ने छात्रों को विभिन्न विषयों में शोध की सुविधा उपलब्ध कराने की दृष्टि से वर्ष 1988-89 में 6 महाविद्यालयों में कुल 19 विषयों में एम.फिल. कक्षाएं प्रारम्भ करने की स्वीकृति दी तथा इस कार्य हेतु 6 प्रोफेसर एवं 12 रीडर के पद भी विश्वविद्यालय को स्वीकृत किए गए। इन 6 महाविद्यालयों में से एक महाविद्यालय आर.आर. कॉलेज, अलवर बाद में राजस्थान विश्वविद्यालय के क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत कर दिया गया।

वर्तमान में डॉ० रामबली उपाध्याय इस विश्वविद्यालय के कुलपति हैं।

कोटा खुला विश्वविद्यालय- नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत उदार एवं लचीली शिक्षा पद्धति विकसित करने के उद्देश्य से 23 जुलाई, 1987 को इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। यह विश्वविद्यालय पूर्ण रूप से दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था द्वारा श्रमिकों, खेतिहर मजदूरों, विभिन्न व्यवसायों में संलग्न व्यक्तियों एवं गृहणियों में शिक्षा सुविधा उपलब्ध कराने, उनकी कार्य-दक्षता में वृद्धि करने तथा उन्हें कैरियर डवलपमेन्ट के लिए आवश्यक औपचारिक उपाधियाँ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कार्यरत है।इस विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्रदान कर दी गई है।

विश्वविद्यालय को परिसर निर्माण हेतु रावतभाटा रोड पर 75 एकड़ भूमि आवंटित हो गई है। इसके पुस्तकालय में लगभग 40 हजार पुस्तकों का संग्रह हो चुका है। इसके क्षेत्रीय एवं अध्ययन केन्द्रों में भी पुस्तकालयों का प्रावधान किया जा रहा है। विश्वविद्यालय ने कोटा में एक कम्प्यूटर सेन्टर की भी स्थापना कर ली है।

वर्ष 1988-89 में बीकानेर और जोधपुर में दो नये क्षेत्रीय केन्द्रों के और खोले जाने से अब इनकी संख्या चार हो गई है। इसके अध्ययन केन्द्रों की संख्या अब 21 हो गई है। वर्ष के दौरान निम्नलिखित नये पाठ्यक्रम प्रारंभ किये गए-

1. बी.ए./बी.काम. प्रारम्भिक पाठ्यक्रम
2. बी.ए./बी.काम. आधारभूत पाठ्यक्रम
3. डिप्लोमा इन मैनेजमेन्ट (मोड्यूल-1)
4. बी एड.
5. डिप्लोमा इन लाइब्रेरी साइन्स एण्ड इनफोरमेशन सर्विस
6. बैचलर्स डिग्री इन जरनलिज्म एण्ड मास कम्यूनिकेशन
7. डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन

जोधपुर विश्वविद्यालय- यह विश्वविद्यालय शैक्षणिक सत्र 1962-63 से अस्तित्व में आया। स्थापना के समय इस विश्वविद्यालय को जोधपुर में स्थित पाँच महाविद्यालयों का हस्तान्तरण राजस्थान विश्वविद्यालय से किया गया।

सत्र 1988-89 में इस विश्वविद्यालय में निम्नलिखित नये पाठ्यक्रम प्रारंभ किये गए-

1. मास्टर ऑफ कम्प्यूटर ऐप्लीकेशन
2. पोस्ट बी. एससी. डिप्लोमा कोर्स इन कन्जूमर इलेक्ट्रोनिक्स एण्ड टी.वी. टेक्नोलॉजी
3. भूगर्भ शास्त्र में एम.एससी.
4. एम.फिल. (12 विषयों में)

वर्तमान में श्री एस.एन. सिंह इस विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में कार्यरत है।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय- इस विश्वविद्यालय की स्थापना 6 जून 1962 को उदयपुर में की गई। उस समय इसका नाम उदयपुर विश्वविद्यालय रखा गया लेकिन अगले ही साल इसका नाम बदलकर राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय कर दिया गया। 1982 में फिर इसका नाम बदलकर राज्य के स्वर्गीय मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया के नाम पर कर दिया गया।

वर्तमान में श्री के.एन. नाग इस विश्वविद्यालय के कुलपति हैं।

वनस्थली विद्यापीठ- इस विद्यापीठ की स्थापना राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री स्वर्गीय हीरालाल शास्त्री द्वारा जयपुर से 45 मील दूर (वर्तमान टोंक जिले में) वनस्थली नामक स्थान पर अपनी दिवंगत पुत्री की याद में की गई। देश-विदेश में विख्यात इस नारी शिक्षा केन्द्र में कक्षा शिशु से स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षा दी जाती है। कुछ विषयों में शोध कार्य की सुविधा भी यहाँ उपलब्ध है। वर्ष 1983 में इसे विश्वविद्यालय के समकक्ष संस्था (डीम्ड यूनिवर्सिटी) का दर्जा प्रदान किया गया।

प्रावैधिक शिक्षा

राज्य में प्रावैधिक या तकनीकी शिक्षा तीन स्तरों पर प्रदान की जाती है:-

(1) अभियान्त्रिकी स्नातक एवं स्नातकोत्तर (इंजीनियरिंग ग्रेजुएट एवं पोस्ट ग्रेजुएट)

(2) अभियान्त्रिकी डिप्लोमा एवं पोस्ट डिप्लोमा

(3) दस्तकार प्रशिक्षण

अभियान्त्रिकी संस्थान

अभियान्त्रिकी स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए राज्य में 5 अभियान्त्रिकी महाविद्यालय क्रमशः जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, कोटा तथा पिलानी में विद्यमान हैं। ये सभी महाविद्यालय स्वायत्तशासी अथवा निजी संस्थान के रूप में कार्यरत हैं। इनके अतिरिक्त भीलवाड़ा में स्थित माणिक्यलाल वर्मा टैक्सटाइल संस्थान, जो कि डिप्लोमा स्तर के पाठ्यक्रम चलाता था, को वर्ष 1988–89 में क्रमोन्नत कर स्नातक स्तर का बना दिया गया। इसी वर्ष जयपुर के मालवीय रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज में केमिकल (रसायन) तथा आर्किटेक्चर (वास्तुशिल्प) के स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ किये गए जो इससे पूर्व राज्य के किसी भी संस्थान द्वारा नहीं चलाए जा रहे थे।

पॉलिटेकनिक संस्थान

अभियान्त्रिकी डिप्लोमा एवं पोस्ट डिप्लोमा तकनीकी शिक्षा प्रदान कराने के लिए वर्तमान में राज्य में कुल 21 पॉलिटेकनिक संस्थान कार्यरत हैं जिनमें 17 राजकीय (13 लड़कों के एवं 4 लड़कियों के), 2 अनुदानित तथा 2 निजी क्षेत्र के हैं। इनमें वर्ष 1988–89 में राज्य में सिरोही, पाली, चित्तौड़गढ़, सवाईमाधोपुर, बीकानेर तथा अजमेर में खोले गए नए पॉलिटेकनिक संस्थान सम्मिलित हैं।

राज्य में लड़कों के लिए चलाये जाने वाले पॉलिटेकनिक संस्थानों में प्रत्येक कोर्स की प्रवेश क्षमता निम्नानुसार है-

क्र सं	कोर्स का नाम	प्रवेश क्षमता
1	सिविल इंजीनियरिंग	465
2	मेकेनिकल इंजीनियरिंग	340
3	इलेक्ट्रीकल इंजीनियरिंग	225
4	इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियरिंग	175
5	इलेक्ट्रोनिक्स (टेलीकम्युनिकेशन) इंजीनियरिंग	15
6	इन्स्ट्रुमेंटेशन इंजीनियरिंग	20
7	ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग	15
8	आर्किटेक्चर इंजीनियरिंग	15
9.	केमिकल इंजीनियरिंग	20
10.	माईनिंग इंजीनियरिंग	20
11	प्रोडक्शन इंजीनियरिंग	15
12	रेफ्रीजरेशन एण्ड एयर कण्डीशनिंग इंजीनियरिंग	15
13	मशीन टूल टेक्नोलोजी	15
14.	फार्मेसी	80

राज्य में लडकियों के लिए चलाये जाने वाले पॉलिटेकनिक संस्थानों मे प्रत्येक कोर्स की प्रवेश क्षमता निम्नानुसार है-

1	इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियरिंग	60
2	कॉस्ट्यूम डिजाइन एवं ड्रेस मेकिंग	60
3	टेक्सटाइल डिजाइनिंग	45
4	इन्टीरियर डेकोरेशन	15
5	ब्यूटी कल्चरल	15

वर्ष 1988-89 के दौरान जोधपुर पॉलिटेकनिक में इलेक्ट्रीकल इंजीनियरिंग से इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियरिंग का एक वर्षीय अवधि का परिवर्तित पाठ्यक्रम चालू किया गया। खेतान पोलीटेकनिक जयपुर में इलेक्ट्रोनिक्स (टेलीकम्युनिकेशन) एवं भरतपुर पोलीटेकनीक में इलेक्ट्रीकल इंजीनियरिंग का पाठ्यक्रम माह अगस्त 88 से प्रारम्भ किया गया।

आद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान

दस्तकारों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए वर्तमान में राज्य में 63 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तथा 102 निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान कार्यरत हैं। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में 20 लघु संस्थान भी सम्मिलित हैं। इनमें से 18 राजकीय (8 लघु संस्थानों सहित) तथा 30 निजी संस्थान वर्ष 1988-89 के दौरान ही खोले गए। वर्तमान में राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में छात्रों की संख्या 5732 तथा निजी संस्थानों में लगभग 4000 है।

खाद्य कला संस्थान

राज्य में पर्यटन एवं होटल उद्योग के लिए प्रशिक्षित कर्मचारियों की मांग को पूरा करने के लिए जयपुर में खाद्य कला संस्थान चल रहा है। संस्थान में पर्यटन एवं होटल उद्योग से सम्बन्धित विभिन्न

व्यवसायों में कुल 140 छात्रों को एक वर्षीय अवधि का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस संस्थान को क्रमोन्नत करने हेतु प्रस्ताव भारत सरकार के विचाराधीन है, जिसका कार्य प्रगति पर है।

सामुदायिक पॉलिटेकनिक प्रकोष्ठ

वर्तमान में सामुदायिक पॉलिटेकनिक प्रकोष्ठ राजकीय पॉलिटेकनिक अजमेर, जोधपुर, बीकानेर तथा विद्या भवन रूरल संस्थान उदयपुर में चल रहे है जिसका शत प्रतिशत व्यय भारत सरकार वहन करती है। इस योजना का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में तकनीकी ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार करना है। जहाँ पॉलीटेकनीक संस्थान अजमेर अल्पसंख्यक समुदाय के व्यक्तियों के उत्थान में लगा है वहां जोधपुर बीकानेर एवं विद्या भवन रूरल संस्थान उदयपुर ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। जनशक्ति के विकास के लिए गांवों में विभिन्न व्यवसायों में जैसे मोटर वाइन्डिंग, टेलरिंग, स्कूटर रिपेयर, हाउस वायरिंग जनरल मैकेनिक तथा स्टेनोग्राफी हिन्दी व्यवसायों में लघु अवधि का अनौपचारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

संस्कृत शिक्षा

समूचे भारत में संस्कृत के प्रचार प्रसार हेतु राजस्थान को विशेष गौरव प्राप्त है। राजस्थान भारतीय संस्कृति की सुरक्षा एवं संस्कृत के प्रचार प्रसार हेतु सतत प्रयत्नशील रहा है। इसके लिए पृथक से संस्कृत शिक्षा निदेशालय की व्यवस्था हुई है।

राज्य में संस्कृति की आधार स्वरुप संस्कृत शिक्षा में निरन्तर प्रगति हो रही है। आलोच्य वर्ष में निम्नानुसार 643 संस्कृत संस्थाएँ विभिन्न स्तरों पर शिक्षण प्रदान कर रही है:-

स्तर	राजकीय	अराजकीय
आचार्य महाविद्यालय	4	13
शास्त्री महाविद्यालय	9	6
उपाध्याय विद्यालय	19	30
प्रवेशिका विद्यालय	31	16
उच्च प्राथमिक विद्यालय	96	83
प्राथमिक संस्कृत विद्यालय	269	60
शिक्षा शास्त्री	–	4
एस.टी सी.	1	–
छात्रावास	–	3
	426	215
	कुल	643

इस प्रकार वर्ष 1987–88 की अपेक्षा 88–89 में 198 राजकीय संस्थाओं की वृद्धि हुई है।

इन संस्थाओं में कुल छात्र/छात्रायें 87580 अध्ययनरत है जिसमें अनुसूचित जाति के छात्र/छात्राओं की संख्या 9919 एवं अनुसूचित जनजाति के 4268 है।

राजस्थान
वार्षिकी

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम

देश के सामाजिक एवं आर्थिक सर्वांगीण विकास के लिये जन प्रतिशत साक्षरता नितान्त आवश्यक है। 15-35 आयु वर्ग के प्रौढ़ों को साक्षर करने हेतु राज्य में केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। वर्तमान में राज्य में 14602 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चल रहे हैं जिनके माध्यम से 4.45 लाख प्रौढ़ों को साक्षर किया जा रहा है। इनमें 0.81 लाख अनुसूचित जाति एवं 0.67 लाख अनुसूचित जनजाति के प्रौढ़ लाभान्वित हो रहे हैं। सम्पूर्ण ग्राम साक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रत्येक जिले में एक-एक गाँव का चयन कर समस्त बच्चों एवं प्रौढ़ों को साक्षर किया जा रहा है।

नगर पालिका/परिषदों के निरक्षर कर्मचारियों को साक्षर करने के लिये 100 नगर पालिका एवं नगर परिषदों में 145 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र प्रारम्भ कर 4155 प्रौढ़ों को नामांकित कर लाभान्वित किया जा रहा है।

भारत सरकार की सहायता से राज्य के सभी 27 जिलों में नेहरू युवक केन्द्रों की सहायता से 3500 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के माध्यम से 1.05 लाख प्रौढ़ों को साक्षर किया जा रहा है। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को आकर्षक बनाने के लिए राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अन्तर्गत तकनीकी साधनों का प्रयोग बढ़ाया जा रहा है। नव साक्षर प्रौढ़ों को सतत शिक्षा प्रदान करने के तहत भारत सरकार के सहयोग से राज्य में 1200 जन शिक्षण निलियम स्थापित किये जा चुके हैं जिनके माध्यम से प्रौढ़ों को अनुवर्ती साहित्य एवं उपयोगी सामग्री देकर लाभान्वित किया जा रहा है।

इस योजनान्तर्गत 23 कारागृहों में 30 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र संचालित हैं जिनमें 851 निरक्षर कारागृहवासी लाभान्वित हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त खान श्रमिकों के लिए भी साक्षरता कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

व्यापक साक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत एन.एस.एस. तथा एन.सी.सी. स्कूल छात्र/छात्राएँ व स्काउटों के सहयोग से आगामी ग्रीष्मावकाश में गत वर्ष की भाँति प्रौढ़ों को साक्षर किये जाने की योजना है। इसमें सेवा निवृत्त कर्मचारियों एवं रेलवे कर्मचारियों को भी सम्मिलित किया जायेगा।

राज्य के सीमावर्ती जिलों (बाड़मेर, श्रीगंगानगर एवं जैसलमेर) में, प्रत्येक में 300-300 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चल रहे हैं। इस क्षेत्र में कुल 100 जन शिक्षण निलियम केन्द्र भी स्थापित किये गये हैं।

राज्य में साक्षरता कार्यक्रम को अधिक संगठित एवं चुस्त बनाने हेतु दिनांक 19 नवम्बर, 1988 से राज्य साक्षरता प्राधिकरण का गठन किया जा चुका है।

अकादमियां

राज्य के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत निम्न अकादमियाँ भी कार्यरत हैं-

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

राजस्थान के साहित्यिक विकास तथा साहित्यकारों को संरक्षण एवं सहयोग देने के उद्देश्य से राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर की स्थापना 28 जनवरी, 1958 को की गई। नवम्बर, 1962 में इसे स्वायत्तता प्रदान की गई।

वर्ष 1988–89 की उपलब्धियाँ- वर्ष के दौरान अकादमी द्वारा 5 ग्रंथ प्रकाशित किये गए। इस दौरान अकादमी की पत्रिका 'मधुमति' के 11 स्तरीय अंक प्रकाशित किये गए तथा स्व० जैनेन्द्रकुमार की स्मृति में इस पत्रिका का एक वृहदाकार विशेषांक प्रकाशित किया गया।

साहित्य अकादमी द्वारा इस वर्ष 11 पुरस्कारों की घोषणा की गई है। अकादमी का सर्वोच्च 11,000 रु. का मीरा पुरस्कार श्री ईश्वरचन्दर को, पांच-पांच हजार रुपये के पुरस्कार क्रमशः श्री योगेन्द्र दवे, डा. रमा सिंह, डा. रामगोपाल शर्मा "दिनेश" व श्री गोपालदास को तथा बाल साहित्य 2100 रु. के पुरस्कार श्री दीनदयाल शर्मा व श्री सवाईसिंह शेखावत को तथा महाविद्यालय व विद्यालय स्तरीय पुरस्कार सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ, श्री घनश्याम दास, श्री ओमप्रकाश तथा कु. इन्दिरा सांखला को दिया गया।

राजस्थान संस्कृत अकादमी

राज्य में संस्कृत साहित्य के प्रचार-प्रसार एवं संस्कृत साहित्यकारों को संरक्षण एवं सहयोग के लिए 1982 में इस अकादमी की स्थापना की गई।

कार्यक्रम- (1) वेद संरक्षण योजना के अन्तर्गत नौ वेद विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है जिनमें 84 छात्र वेद-अध्ययन कर रहे हैं। इस कार्य हेतु शत-प्रतिशत अनुदान केन्द्र सरकार देती है।

(2) प्रायोगिक प्रशिक्षण केन्द्र योजना के अन्तर्गत अकादमी द्वारा दो शिविर—कर्मकाण्ड प्रशिक्षण शिविर तथा पाण्डुलिपि पढ़ने व मुद्रण कला प्रशिक्षण शिविर चलाये जाते हैं। ये दोनों शिविर केन्द्र सरकार से प्राप्त शत-प्रतिशत अनुदान से चलाये जाते हैं।

(3) संस्कृत ग्रंथों के प्रकाशन कार्यक्रम के अन्तर्गत अकादमी स्वयं अपने स्तर पर तथा लेखक स्तर पर ग्रंथों का प्रकाशन करती है।

(4) अकादमी प्रतिवर्ष वेद सम्मेलनों का आयोजन करती है, जो प्रादेशिक और अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित किये जाते हैं।

(5) अकादमी समय-समय पर प्रान्तीय एवं देश के प्रसिद्ध संस्कृत विद्वानों का सम्मान करती है।

(6) संस्कृत प्रचार हेतु अकादमी द्वारा त्रैमासिक संस्कृत पत्रिका 'स्वरमंगला' का प्रकाशन किया जाता है।

(7) अकादमी द्वारा प्रतिवर्ष अखिल भारतीय स्तर पर संस्कृत कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाता है, जिसमें देश के मूर्धन्य कवियों को आमंत्रित किया जाता है।

पुरस्कार- अकादमी की ओर से प्रतिवर्ष निम्न पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं:-

(1) माघ पुरस्कार- संस्कृत के सर्वोत्कृष्ट काव्य पर 6,000/- रुपये का पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

(2) आचार्य नवल किशोर कांकर वेद-वेदांग पुरस्कार:-
वेद व वेदांग विषय पर अखिल भारतीय स्तर पर संस्कृत में लिखी पुस्तक पर 6,000/- रु. का पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

(3) पण्डितपन्ना लाल जोशी पुरस्कार—वेद विषय में लिखी पुस्तक पर यह पुरस्कार 1,000/- रुपये का प्रदान किया जाता है।

(4) अम्बिकादत्त व्यास पुरस्कार—सर्वश्रेष्ठ संस्कृत गद्य लेखन पर यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इसकी राशि 500/- रुपये है।

(5) मधुसूदन ओझा पुरस्कार—वेद विषयक प्रचार करने वाले विद्वान को 1,000/- रुपये प्रदान कर पुरस्कृत किया जाता है।

राजस्थान उर्दू अकादमी

राज्य सरकार द्वारा उर्दू के प्रचार-प्रसार हेतु 12 फरवरी, 1979 को राजस्थान उर्दू अकादमी का गठन किया गया। वर्ष 1988–89 के दौरान अकादमी की प्रमुख गतिविधियाँ इस प्रकार रही-

(1) अखिल भारतीय प्रान्तीय उर्दू अकादमी की प्रकशित पुस्तकों एवं राजस्थान उर्दू अकादमी द्वारा संचालित उर्दू किताबत प्रशिक्षण केन्द्र तथा अरबी—फारसी शोध संस्थान, टोंक की हस्तलिखित कला प्रतियों की प्रदर्शनी लगाई गई।

(2) उर्दू की समस्याओं पर अखिल भारतीय सेमीनार दिनांक 28.8.88 को आयोजित किया गया।

(3) उर्दू अध्यापकों का अखिल राजस्थान सेमीनार दिनांक 27 व 28 नवम्बर 1988 को आयोजित किया गया जिसमें राजस्थान के विभिन्न जिलों से आये 110 अध्यापकों ने भाग लिया।

(5) उर्दू की विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से विभिन्न समारोह आयोजित किये गये। जैसे—कौमी एकता मुशायरा, शाम-ए-गजल, अखिल भारतीय मौ० आजाद सेमीनार इत्यादि।

इनके अतिरिक्त अन्जुमन तरक्की-ए-उर्दू, सीकर तथा बजमें फरोगे उर्दू मकराना द्वारा साहित्यिक समारोह आयोजन करने हेतु चार हजार रुपये की आर्थिक सहायता स्वीकृत की गई।

(6) विद्यार्थियों से सम्बन्धित गतिविधियाँ–

पं० जवाहर लाल नेहरू एवं मौ० अबुल कलाम आजाद पर अखिल राजस्थान निबन्ध की निम्न प्रतियोगितायें आयोजित की गई-

(क) आजाद भारत के निर्माता पं० जवाहर लाल नेहरू विषय पर माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर की प्रतियोगिता में राज्य के विभिन्न जिलों के 200 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया।

(ख) हमारे चाचा नेहरू विषय पर प्रा एवं उच्च मा. स्तर के विभिन्न जिलों के 129 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया।

(ग) कौमी एकता के आलम्बरदार विषय पर महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के 26 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया।

राजस्थान सिंधी अकादमी

राज्य में सिंधी साहित्यकारों को प्रोत्साहन देने के लिए सिंधी अकादमी की स्थापना की गई है। अकादमी इस वर्ष से द्विमासिक "सिन्धु दूत" बुलेटिन प्रकाशन के साथ-साथ साहित्यकार सम्मान सहायता के अलावा सिंधी साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों के संचालन के लिए कृत संकल्प है।

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी की स्थापना 25 जनवरी, 1983 को की गई। अकादमी के वर्तमान अध्यक्ष श्री वेद व्यास हैं।

अकादमी अपनी प्रवृत्तियों की जानकारी कराने के लिए अकादमी समाचार बुलेटिन तथा साहित्यक सामग्री के लिए "जागती जोत" का प्रकाशन करती है। इस वर्ष इसके दो विशेषांक- "एकाकी विशेषांक तथा" बीकानेर पंचशती विशेषांक "प्रकाशित किये गए।

इस वर्ष बीकानेर में "टैस्सीटोरी जन्म शताब्दी समारोह" 13-14 दिसम्बर को आयोजित हुआ। इस समारोह में 22 साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। इसके अलावा बिसाऊ (झुंझुनूं), कोटा, उदयपुर में आंचलिक समारोह हुआ। जोधपुर में 5-6 मार्च को राजस्थानी कथाकार समारोह हुआ।

अकादमी द्वारा 28 पांडुलिपियों को पांडुलिपि सहायता दी गई। 10 हजार रुपये पोथी प्रकाशन सहायता दी गई। 10 साहित्यकारों को रचनाकार सम्मान सहायता तथा पाँच हजार रुपये चिकित्सा सहायता दी गई।

अकादमी का सर्वोच्च 11 हजार रुपये का "सूर्यमल्ल मिश्रण शिखर पुरस्कार" डॉ. नृसिंह राजपुरोहित की कृति "नागपूजा", पाँच हजार रुपये का राजस्थानी गद्य पुरस्कार श्री यादवेन्द्र शर्मा "चन्द्र" की कृति "जमारो" को तथा राजस्थानी पद्य पुरस्कार श्री बद्रीनाथ गाडणा की कृति "गीतां रो झूमको" को दिया गया।

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, भरतपुर

अकादमी की स्थापना 19 जनवरी, 86 को हुई। अकादमी ने चालू सत्र में तीन उपनिषद्, चार ब्रजभाषा कवि सम्मेलन, एक हवेली संगीत आयोजन, सात साहित्यकारों का सम्मान, त्रैमासिक पत्रिका ब्रज शत दल का प्रकाशन किया।

राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर

विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रमानुसार उत्कृष्ट, मानक एवं कम मूल्य पर पुस्तकें उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 15 जुलाई, 1968 को राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी की स्थापना की गई। वर्तमान में शिक्षा सचिव इसके पदेन अध्यक्ष हैं।

वर्ष 1988–89 अकादमी द्वारा पुस्तकों का प्रकाशन किया गया तथा 2 मुद्रणाधीन है। इस वर्ष में अकादमी ने विक्रय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की। फरवरी, 89 तक कुल बिक्री राशि लगभग 9 लाख रुपये थी। माह मार्च, 89 में 6 लाख रुपये मूल्य की और पुस्तकें बिकना अनुमानित था।

गुरु नानक भवन संस्थान, जयपुर

गुरु नानक के 500 वें जन्म दिवस पर 30 मई, 1969 को राज्य सरकार द्वारा इस भवन की आधारशिला रखी गई। वर्ष 1977 से इसमें छात्र सेवा प्रवृत्तियां शुरु हुई। गत एक दशक में लगभग 22,000 छात्र-छात्राएं इससे लाभान्वित हुए।

संस्थान द्वारा अल्पावधि के प्रशिक्षण, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान विषयों में निःशुल्क कोचिंग तथा ग्रीष्मावकाश में शिविरों का आयोजन कर विभिन्न प्रवृत्तियों का संचालन करवाया जाता है।

(5) कार्यरत सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में 100 अतिरिक्त शैय्याएँ बढ़ाने सम्बन्धी कार्यवाही प्रगति पर थी।

(6) सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर 85 रोगी वाहन, 30 एक्स-रे मशीनें तथा 86 ई.सी.जी. मशीनें उपलब्ध कराने की कार्यवाही भी प्रगति पर थी।

(7) धौलपुर एवं ब्यावर में एक-एक जिला क्षय निवारण केन्द्र खोले गए।

(8) जिला अस्पतालों में आधुनिकीकरण के अन्तर्गत आधुनिक उपकरणों की स्वीकृति जारी कर इनको उपलब्ध कराए जाने की कार्यवाही प्रगति पर थी। इसी प्रकार "अ" श्रेणी के 9 अस्पतालों में गहन चिकित्सा कक्ष (इन्टेन्सिव केयर यूनिट) स्थापित किये जाने व आवश्यक उपकरण आदि उपलब्ध कराए जाने की कार्यवाही भी की जा रही थी।

(9) कुष्ठ निवारण कार्यक्रम के अन्तर्गत फरवरी, 89 तक 820 नवीन कुष्ठ रोगियों की खोज की गई।

(10) अन्धापन रोकथाम एवं नियन्त्रण कार्यक्रम के तहत फरवरी, 89 तक 60 हजार 657 मोतियाबिंद के आपरेशन किये गए।

(11) क्षय नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत दिसम्बर, 88 तक 33 हजार 936 नवीन क्षय रोगियों की खोज की गई।

चिकित्सा शिक्षा

राज्य में चिकित्सा शिक्षा के लिए जयपुर, अजमेर, जोधपुर, उदयपुर और बीकानेर में एक-एक चिकित्सा महाविद्यालय स्थापित हैं। इन पाँचों महाविद्यालयों में प्रतिवर्ष कुल 550 छात्रों को एम.बी.बी.एस. पाठ्यक्रम हेतु प्रवेश दिया जाता है। पाँचों महाविद्यालयों का प्रशासन अलग-अलग प्राचार्य द्वारा संचालित किया जाता है। इनका विवरण इस प्रकार है-

1. सवाई मानसिंह मेडीकल कॉलेज, जयपुर– जयपुर स्थित इस कॉलेज की अन्तर्ग्रहण क्षमता स्नातक एम.बी. बी.एस. पाठ्यक्रम के लिए 150 है। वर्ष 1987-88 में इसमें 176 छात्रों को प्रवेश दिया गया। इस वर्ष इस पाठ्यक्रम के लिए 162 छात्रों के सफल होने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था लेकिन सफल छात्रों की संख्या 34 रही।

इस कॉलेज से निम्न चिकित्सालय संबद्ध हैं—

(i) सवाई मानसिंह चिकित्सालय, जयपुर
(ii) पुनर्वास अनुसंधान केन्द्र, जयपुर
(iii) जनाना अस्पताल, जयपुर
(iv) न्यू जनाना अस्पताल, सांगानेरी गेट, जयपुर
(v) वक्ष एवं क्षय रोग चिकित्सालय, जयपुर
(vi) संक्रामक रोग चिकित्सालय, जयपुर
(vii) सर पदमपत मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संस्थान, जयपुर
(viii) मानसिक चिकित्सालय, जयपुर

2. जवाहरलाल नेहरू आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, अजमेर-इस महाविद्यालय की अन्तर्ग्रहण क्षमता एम.बी. बी.एस. पाठ्यक्रम के लिए 100 छात्रों की है। वर्ष 1987-88 में इसमें 100 छात्रों को प्रवेश दिया गया तथा वर्ष के दौरान 100 छात्रों के सफल होने के लक्ष्य के विरुद्ध 88 छात्र इस पाठ्यक्रम में सफल हुए।

राजस्थान

कार्यालय जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, अलवर

जिले में गरीबी उन्मूलन हेतु निम्न कार्यक्रम अभिकरण द्वारा संचालित हैं:-

1.	एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम	·	चयनित परिवारों को ऋण/अनुदान के आर्थिक संबल।
2.	ट्राईसम/स्काईट योजना	:	ग्रामीण एव शहरी क्षेत्र के बेरोजगार युवक/युवतियों को प्रशिक्षण एव रोजगार
3.	माडा योजना	:	जन जाति बाहुल्य ग्रामो में व्यक्तिगत लाभ एवं संसाधन विकास।
4.	राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार एव ग्रामीण भूमिहीन रोजगार गारंटी कार्यक्रम		ग्रामीण क्षेत्रो मे बेरोजगार को रोजगार एवं संसाधन विकास।
5.	गोबर गैस सयन्त्रो की स्थापना	:	ऊर्जा समस्या समाधान/उन्नत खाद।
6.	शहरी क्षेत्र के चयनित अनु० जाति के विकास हेतु	:	ऋण सुलभ कराना व उत्पादन में योगदान।
7.	वृहद कृषि उत्पादन कार्यक्रम	:	लघु/सीमान्त कृषकों को लघु सिंचाई पर अनुदान/ऋण, सुलभ कराना व उत्पादन में योगदान।
8.	सीलिंग से अवाप्त भूमि आवंटियो को सहायता	:	कृषकों को कृषि विकास हेतु आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना।
9.	बंधक श्रमिक उन्मूलन	:	बंधक श्रमिक मुक्त कराना एवं पुनर्वास।
10.	जीवन-धारा	:	अनु० जाति/अनु० जनजाति के गरीबी की रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लघु सीमान्त कृषकों के खेतों पर कुएं निर्माण।
11.	ड्वाकरा	:	महिलाओं के समूह गठितकर प्रशिक्षित कराना एवं रोजगार दिलाना

रतनसिंह सिंधी
आई०ए०एस०
जिलाधीश एवं अध्यक्ष

पी.एन. शर्मा
आई०ए०एस०
अतिरिक्त कलेक्टर विकास

इस महाविद्यालय से निम्न चिकित्सालय संबद्ध है-

(i) जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय, अजमेर
(ii) जनाना चिकित्सालय अजमेर
(iii) पुनर्वास अनुसंधान केन्द्र, अजमेर

3. महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, जोधपुर- इस महाविद्यालय की वार्षिक अन्तर्ग्रहण क्षमता एम.बी., बी.एस. पाठ्यक्रम के लिए 100 छात्रों की है। वर्ष 1987-88 में इसमें 65 छात्रों को प्रवेश दिया गया तथा वर्ष के दौरान 100 छात्रों के सफल होने के लक्ष्य के विरुद्ध 90 छात्र इस पाठ्यक्रम में सफल रहे।

इस महाविद्यालय से निम्न चिकित्सालय संबद्ध है-

(i) महात्मा गांधी चिकित्सालय, जोधपुर
(ii) उम्मेद चिकित्सालय, जोधपुर
(iii) क्षय रोग चिकित्सालय, जोधपुर
(iv) संक्रामक रोग चिकित्सालय, जोधपुर
(v) मानसिक चिकित्सालय, जोधपुर
(vi) न्यू टीचिंग चिकित्सालय, जोधपुर

4. रविन्द्रनाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, उदयपुर- इस महाविद्यालय की वार्षिक अन्तर्ग्रहण क्षमता एम.बी.,बी.एस. पाठ्यक्रम के लिए 105 छात्रों की है। इस महाविद्यालय से निम्न चिकित्सालय सम्बद्ध हैं-

(i) सामान्य चिकित्सालय, उदयपुर
(ii) जनाना चिकित्सालय, उदयपुर
(iii) एस.आर.बी. मुफतलाल यक्ष्मा आरोग्य सदन, बाड़ी उदयपुर
(iv) पुनर्वास अनुसंधान केन्द्र, उदयपुर
(v) शहरी स्वास्थ्य प्रशिक्षण केन्द्र, उदयपुर
(vi) ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केन्द्र, उदयपुर

5. एस.पी. मेडीकल कॉलेज, बीकानेर-इस महाविद्यालय की वार्षिक अन्तर्ग्रहण क्षमता एम.बी. बी.एस. पाठ्यक्रम के लिए 110 छात्रों की है। इस महाविद्यालय से निम्न चिकित्सालय सम्बद्ध है-

(i) पी.बी.एम. मैन्स अस्पताल, बीकानेर
(ii) पी.बी.एम. जनाना अस्पताल, बीकानेर
(iii) जे.जे.जे. विशेष रोग अस्पताल, बीकानेर
(iv) मानसिक चिकित्सालय

[illegible]

परिवार कल्याण कार्यक्रम

परिवार कल्याण कार्यक्रम को जन-कल्याण का कार्यक्रम बनाने के लिए माताओं एवं बच्चों के लिए स्वास्थ्य से सम्बन्धित विशेष कार्यक्रम का समावेश इसके अन्तर्गत किया गया है। इसके सम्बन्ध में सरकार की नीति पूर्णतः प्रशिक्षण, प्रेरणा और स्वैच्छिक स्वीकृति पर आधारित है। इसके लिए व्यापक रूप से स्वास्थ्य शिक्षा, प्रचार एवं प्रसार माध्यमों से कार्यक्रम को जन साधारण तक पहुँचाए जाने का कार्यक्रम चल रहा है। वर्ष 87–88 के दौरान राज्य में 232 ग्रामीण परिवार कल्याण केन्द्र 4690 उपकेन्द्र, 158 नगर परिवार कल्याण केन्द्र तथा 107 प्रसवोत्तर सेवा केन्द्र कार्यरत थे। इनके साथ ही सभी जिला स्तर के जनरल चिकित्सालयों, उप जिला स्तर के चिकित्सालयों, शहरी एवं ग्रामीण चिकित्सालयों, डिस्पेन्सरियों, मातृ एवं शिशु कल्याण केन्द्रों तथा आयुर्वेदिक चिकित्सालयों पर भी ये सुविधायें उपलब्ध है।

आयुर्वेद

राज्य का आयुर्वेद विभाग, जिसका मुख्यालय अजमेर में है, आयुर्वेदिक, यूनानी, होम्योपैथिक तथा प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सालयों/औषधालयों का संचालन करने के साथ ही औषध-उत्पादन, निर्माण एवं वितरण, शिक्षण-व्यवस्था, अनुसंधान और परिवार-कल्याण कार्यक्रम में सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहा है। वर्तमान में विभाग द्वारा कुल 3228 चिकित्सालय/औषधालय संचालित किये जा रहे हैं जिनमें पांच चल-चिकित्सालय 261 नगरीय क्षेत्रों में तथा 2962 ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित है। इनके अलावा एक चल शल्य-चिकित्सा इकाई भी कार्यरत है।

उपरोक्त चिकित्सालयों/औषधालयों में सर्वाधिक 3071 आयुर्वेदिक है जिनमें शैय्याओं सहित अ श्रेणी चिकित्सालय 48 नगरीय और 32 ग्रामीण क्षेत्रों में, शैय्याओं रहित अ श्रेणी चिकित्सालय 66 नगरीय और 501 ग्रामीण क्षेत्रों में, ब श्रेणी औषधालय 59 नगरीय और 2370 ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित है। पांच चल चिकित्सालय है। इस प्रकार 173 नगरीय और 2893 ग्रामीण क्षेत्रों में आयुर्वेदिक चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध है। इसी प्रकार होम्योपैथी के कुल 80 चिकित्सालयों/औषधालयों में अ श्रेणी का शैय्याओं सहित एक और शैय्याओं रहित 6 चिकित्सालय नगरीय क्षेत्रों में, ब श्रेणी के 41 नगरीय और 32 ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित है। यूनानी पद्धति के कुल 74 में से अ श्रेणी के शैय्याओं सहित तीन और शैय्याओं रहित 6 चिकित्सालय नगरीय और तीन ग्रामीण क्षेत्रों में तथा ब श्रेणी के 28 औषधालय नगरीय क्षेत्रों में तथा 34 ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित है। प्राकृतिक चिकित्सालय दो अ और एक ब श्रेणी का है जो तीनों नगरीय क्षेत्रों में है।

जहां तक रोगी शैय्याओं का प्रश्न है 1988-89 मे इनकी संख्या 1123 थी जिनमें 622 अ श्रेणी आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में दो सौ चल शल्य चिकित्सा इकाई में 156 राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान जयपुर में, 50 महामना मदन मोहन मालवीय राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय उदयपुर में तथा 20-20 राजकीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र उदयपुर और डा० अम्बालाल राजकीय नर्स/ कम्पाउण्डर प्रशिक्षण केन्द्र अजमेर शामिल है। यूनानी, होम्योपैथी और प्राकृतिक चिकित्सालयों की शैय्याओं की संख्या क्रमशः 30, 5 और 20 है।

लाभान्वित रोगी- उपरोक्त चिकित्सालयों एवं औषधालयों से वर्ष 1985-86 में 4 करोड 49 लाख 26 हजार 126 रोगियों ने, जिनमें 1 लाख 47 हजार 414 अंतरंग और 4 करोड 47 लाख 78 हजार 712 बहिरंग रोगी शामिल है, लाभ उठाया वहीं 1986-87 में यह संख्या 4 करोड 59 लाख 95 हजार 578 (1 लाख 37 हजार 637 अंतरंग व 4 करोड 58 लाख 57 हजार 941 बहिरंग) रही। 1987-88 में कुल रोगियों की अनुमानित संख्या 4 करोड 65 लाख 90 हजार 414 रही।

शिक्षा एवं प्रशिक्षण

(क) आयुर्वेद शिक्षा

वर्तमान में राज्य में पांच आयुर्वेद महाविद्यालय-जयपुर, उदयपुर, सीकर, सरदारशहर एवं सादुलपुर में संचालित है जहां प्री-आयुर्वेद सहित साढे छः वर्षीय स्नातक स्तर की कक्षाएं चल रही है। राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर में 9 विषयों में तथा राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, उदयपुर में 3 विषयों में तीन वर्षीय स्नातकोत्तर अध्ययन की सुविधा भी उपलब्ध है।

राज्य में आयुर्वेद शिक्षा राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है, जहां पृथकशः आयुर्वेद संकाय की स्थापना की हुई है एवं सेन्ट्रल कौंसिल ऑफ इण्डियन मेडिसिन, नई दिल्ली द्वारा स्वीकृत पाठ्यक्रम जुलाई, 1978 से लागू किया हुआ है।

उपरोक्त महाविद्यालयों की प्रवेश क्षमता निम्न प्रकार है:-

क्रम संख्या	महाविद्यालय का नाम	प्रवेश क्षमता आयुर्वेदाचार्य (स्नातक परीक्षा) (स्नातकोत्तर परीक्षा)	आयुर्वेद बृहस्पति
1.	महामना मदनमोहन मालवीय राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, उदयपुर	60	15
2.	राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर	60	45
3.	श्री परशुरामपुरिया आयुर्वेद महाविद्यालय, सीकर	60	—
4.	श्री भंवरलाल दुग्गड, आयुर्वेद विश्वभारती, सरदारशहर (चुरू)	50	—
5.	मोहता आयुर्वेद महाविद्यालय, सादुलपुर (चुरू)	50	—

(ख) होम्योपैथिक

वर्तमान में राज्य में चार होम्योपैथिक महाविद्यालय संचालित हैं। इनमें से एक जयपुर स्थित होम्योपैथिक महाविद्यालय शिक्षा सत्र 1986-87 से राजस्थान विश्वविद्यालय से मान्यता व सम्बद्धता प्राप्त है, शेष तीनों महाविद्यालय पूर्व की भांति अभी भी राजस्थान होम्योपैथिक चिकित्सा बोर्ड, जयपुर से मान्यता व सम्बद्धता प्राप्त हैं।

इन महाविद्यालयों में पढ़ाये जा रहे पाठ्यक्रमों का विवरण निम्न प्रकार है:-

क्रम संख्या	नाम महाविद्यालय	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि इन्टर्नशिप सहित
1.	मदनप्रताप सूटेडा राजस्थान होम्यो. मेडिकल कालेज, जयपुर	बी.एच.एम. एस. (डी.डी.)	5 वर्ष 6 माह
2.	बुधराज प्रतापसिंह मेमोरियल होम्योपैथी मेडिकल कालेज, अलवर	बी.एच.एम.एस. (डी डी.)	5 वर्ष 6 माह
		बी.एच.एम.एस. (डी.डी.बी.)	2 वर्ष

3.	भारतीय होम्योपैथिक मेडिकल कालेज, भरतपुर	बी.एच.एम.एस. (डी.डी.)	5 वर्ष 6माह
		बी.एच.एम.एस. (जी.डी.सी.)	२ वर्ष
4.	होम्योपैथी मेडिकल कालेज, अजमेर	बी.एच.एम.एस. (डी.डी.)	5 वर्ष6 माह

अजमेर स्थित महाविद्यालय को वर्ष 1986–87 के बाद नवीन प्रवेश के लिये मान्यता नहीं दी गयी है।

सभी महाविद्यालयों की प्रवेश क्षमता 45 छात्र प्रति महाविद्यालय है।

(ग) यूनानी

यूनानी शिक्षा हेतु राज्य में तीन महाविद्यालय है, जो कि सभी निजी क्षेत्र में संचालित है। इनमें से जयपुर स्थित दोनों यूनानी महाविद्यालय राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से मान्यता व सम्बद्धता प्राप्त है, जहां पर वर्ष 1986–87 में यूनानी संकाय की स्थापना की जा चुकी है। जोधपुर स्थित महाविद्यालय को भी राजस्थान विश्वविद्यालय से मान्यता देने का मामला विश्वविद्यालय के विचाराधीन है। इन महाविद्यालयों में एक वर्षीय प्री-तिब्बी पाठ्यक्रम तथा 5 वर्ष 6 माह का बी.यू.एम.एस. डिग्री पाठ्यक्रम (इन्टर्नशिप सहित) संचालित है। महाविद्यालयों के नाम निम्न प्रकार है:-

1. राजपूताना यूनानी तिब्बी कालेज, जयपुर.
2. राजस्थान यूनानी तिब्बी कालेज, जयपुर.
3. जुबेरिया तिब्बिया कालेज, जोधपुर.

पंजीकृत चिकित्सक- राज्य में 31 दिसम्बर, 1987 को भारतीय चिकित्सा पंजीयन मंडल जयपुर से पंजीकृत आयुर्वेद चिकित्सक 19 हजार 677, यूनानी हकीम 815 तथा धात्री (नर्स) 84 थे। राजस्थान होम्योपैथी चिकित्सा पंजीयन मंडल, जयपुर से पंजीकृत चिकित्सकों की संख्या 15 दिसम्बर, 1987 को 3564 थी।

औषध-निर्माण- विभाग द्वारा संचालित औषधालयों एवं चिकित्सालयों में उपयोग हेतु आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषधियों का शास्त्रोक्त विधि से निर्माण राजकीय आयुर्वेदिक रसायनशाला अजमेर के नियंत्रण में भरतपुर, जोधपुर, अजमेर और उदयपुर स्थित रसायन शालाओं में किया जाता है। होम्योपैथिक औषधियां निविदा प्रणाली से क्रय की जाती है। इन औषधियों के वितरण हेतु राज्य के विभिन्न स्थानों पर 7 औषध वितरण केन्द्र कार्यरत है।

अनुसंधान कार्य-राजकीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र उदयपुर में 1975–76 से आन्त्रिक ज्वर, उदर कृमि, प्रदर एवं बाल-पक्षाघात रोगों की विभिन्न औषधियों का परीक्षण कार्य किया जाता है।

प्रशासनिक व्यवस्था- विभाग के निदेशक आयुर्वेद सेवा के अधिकारी होते है जबकि अतिरिक्त निदेशक राजस्थान प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के। क्षेत्रीय स्तर पर पांच उपनिदेशक कार्यालय जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा एवं उदयपुर में कार्यरत है। इसके साथ ही जैसलमेर, बाड़मेर और धौलपुर को छोड़कर राज्य के शेष सभी 24 जिलों में जिला आयुर्वेद अधिकारी कार्यालय स्थापित है। जयपुर जिले में अधिक औषधालय होने के कारण दो जिला आयुर्वेद अधिकारी है।

राजस्थान
वार्षिकी

परिवहन

राज्य में मोटर गाड़ी अधिनियम व राजस्थान मोटर गाड़ी नियम के अन्तर्गत मोटर वाहनों के पंजीयन नियमन नियन्त्रण, परमिट प्रमाण पत्र जारी करने, उनका नवीनीकरण, वाहन-चालकों तथा परिचालकों को लाइसेंस देने एवं राजस्थान मोटर वाहन कराधान अधिनियम व उसके अधीन बनाये गये नियमों के अनुसार पथकर व विशेष पथकर की वसूली का कार्य परिवहन विभाग करता है। इसका मुख्यालय जयपुर में है तथा विभागाध्यक्ष का पदनाम परिवहन आयुक्त है जो विभाग का पदेन शासन सचिव भी होता है। यह भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला का अधिकारी होता है जिसकी सहायतार्थ मुख्यालय पर तीन अपर आयुक्त, दो-दो उपायुक्त एवं सहायक आयुक्त 6 प्रादेशिक परिवहन अधिकारी, प्रत्येक जिले में एक-एक जिला परिवहन अधिकारी तथा अन्य अधिकारी होते हैं।

परिवहन प्राधिकार

परिवहन सम्बन्धी अधिनियमों एवं नियमों के मामलों पर निर्णय करने हेतु राज्य परिवहन प्राधिकार तथा प्रादेशिक परिवहन प्राधिकार कार्यरत है। राज्य प्राधिकार के अध्यक्ष परिवहन आयुक्त तथा सदस्य मुख्य अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग (पथ), श्री पी के श्री कुरूप (गैर सरकारी) तथा अपर परिवहन आयुक्त (प्रशासन) सदस्य सचिव हैं। सम्पूर्ण राज्य 6 क्षेत्रों में विभाजित है और प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक प्रादेशिक परिवहन प्राधिकार होता है जिसके सदस्य राज्य के परिवहन आयुक्त अथवा राज्य सरकार द्वारा नियुक्त अन्य अधिकारी होते हैं।

वाहन पंजीयन- 31 दिसम्बर, 1988 तक राज्य में पंजीकृत सभी प्रकार के वाहनों की कुल संख्या 8 लाख 21 हजार 103 है। इनमें मोटराइज्ड रिक्शा 84, ऑटो/मोटरसाईकिल व स्कूटर 5,02,204 ऑटो रिक्शा 14 हजार 87, टैम्पो 2,645 (यात्री व भारवाहन), निजी कारें एवं स्टेशन वेगन 42 हजार 919, निजी जीपें 31 हजार 122, ट्रैक्टर एक लाख 6हजार 449, ट्रेलर 32 हजार 651, टैक्सी उपयोगी की कारें, जीपें एवं स्टेशन वैगन 6 हजार 966, बसें (मिनी बसों सहित) 20 हजार 727, ट्रक एवं भार-वाहन 58 हजार 885 तथा विविध वाहन 2,364 हैं। समस्त वाहनों में 25 हजार 458 सरकारी व 7लाख 95 हजार 645 निजी है। इन वाहनों में वर्ष 1988–89 के दौरान 31 दिसम्बर, 1988 तक पंजीकृत वाहनों की संख्या 78 हजार 290 हैं।

राजस्व प्राप्ति-मोटर कराधान अधिनियम के अन्तर्गत वित्त वर्ष 1988–89 में दिसम्बर, 1988 तक मोटर वाहन कर के रूप में 6,046.74 लाख रु० एवं यात्री व माल कर के रूप में 288.28 लाख रु० की राजस्व प्राप्ति हुई।

चालकों-परिचालकों के लाईसेंस-वाहन-चालकों एवं परिचालकों को लाईसेंस देने का कार्य जिला परिवहन अधिकारियों द्वारा किया जाता है। वर्ष 1988–89 में दिसंबर, 1988 तक राज्य में 45 हजार 502 अव्यावसायिक, 16 हजार 616 व्यावसायिक तथा 678 लोक वाहन हेतु अधिकृत व्यावसायिक लाईसेंस जारी किये गए। इसी अवधि में 1443 परिचालक लाईसेंस भी जारी किये गए।

परिवहन व्यवस्था

यात्रियों की सुविधा हेतु राज्य सरकार का दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश तथा गुजरात राज्यों से अन्तर्राज्यीय परिवहन समझौता है। इसके अन्तर्गत कुल 457 मार्गों पर यात्री बसें चलाने

का प्रावधान है जिनमें राजस्थान-मध्यप्रदेश के बीच 127, हरियाणा 167, गुजरात 74 उत्तरप्रदेश 33, दिल्ली 30 तथा पंजाब के बीच 26 मार्ग निर्धारित है।

इसी प्रकार पर्यटन-विकास हेतु केन्द्र द्वारा बनाई गई अखिल भारतीय पर्यटन वाहन योजना के अन्तर्गत मोटर कैब के चार सौ तथा बसों के 50 अनुज्ञापत्र स्वीकृत करने का प्रावधान है। इसमें अब तक 250 मोटर कैब तथा बसों के 58 अनुज्ञापत्र जारी किये जा चुके हैं। आठ बसें न्यायालय के आदेशानुसार पृथक रूप से चल रही हैं।

राज्य के विभिन्न मार्गों पर यात्री वाहनों के संचालन हेतु 8958 अनुज्ञापत्र स्वीकृत हैं जिनमें 2889 राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम तथा शेष 6069 निजी वाहन स्वामियों के शामिल हैं। इसी क्रम में दिसम्बर 1988 तक संविदा वाहन (कांट्रेक्ट कैरियर) के रूप में18 हजार 127 अनुज्ञापत्र जारी किये जा चुके हैं जिनमें 588 बस और मिनी बसें, 4674 टैक्सी कैब एवं 12 हजार 867 अन्य वाहन शामिल हैं।

भार वाहन

भार वाहनों की राष्ट्रीय परमिट योजना के अन्तर्गत केन्द्रीय परिवहन विकास परिषद की सिफारिश पर भारत सरकार द्वारा कोटा निर्धारण प्रणाली समाप्त कर दिए जाने के फलस्वरूप अन्य राज्यों की तरह राज्य परिवहन अधिकरण ने भी नियमानुसार आवश्यक शर्तें पूरी करने पर किसी भी संख्या में परमिट देना शुरू कर दिया है। अतः योजना के तहत दिसम्बर 1988 तक राष्ट्रीय परमिट-धारियों की संख्या 9950 हो गई।

राष्ट्रीय परमिट के अतिरिक्त राजस्थान सरकार ने दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात तथा महाराष्ट्र आदि पड़ौसी राज्यों से समझौते कर रखे हैं। इसके अन्तर्गत कुल 2204 भारी वाहनों के चलने का प्रावधान है। वर्तमान में 2105 वाहन अन्य राज्यों से राजस्थान में आ रहे हैं तथा 1998 वाहन राजस्थान से बाहर जा रहे हैं।

सड़क मार्ग

राज्य में 31 मार्च, 1987 को सड़कों की कुल लम्बाई 51 हजार 690 किलोमीटर थी जिनमें राष्ट्रीय उच्च मार्ग 2521 कि.मी., राज्य उच्च मार्ग 7460 कि.मी., मुख्य जिला सड़कें 3616 कि.मी. तथा शेष अन्य सड़कें थीं।

राजस्थान से होकर पाँच राष्ट्रीय उच्च मार्ग गुजरते हैं, जो इस प्रकार हैं-

क्रम सं.	मार्ग का नाम	संख्या	राजस्थान में दूरी
1.	आगरा - धौलपुर- बम्बई	5	28 कि.मी.
2.	दिल्ली- जयपुर- अजमेर- उदयपुर- अहमदाबाद - बम्बई	8	685 कि.मी.
3.	आगरा- भरतपुर-जयपुर-बीकानेर	11	521 कि.मी.
4.	जयपुर- टोंक -बूंदी-कोटा- झालावाड़ अक्लेरा- भोपाल	12	412 कि.मी.
5.	पठानकोट- श्रीगंगानगर- बीकानेर- जैसलमेर- बाड़मेर- कांडला	15	875 कि.मी.
		योग	2521 कि.मी.

राज्य की कुल 51 हजार 690 किलोमीटर लम्बी सड़कों में से 36 हजार 369 कि.मी. डामर की सड़कें, 4159 कि.मी. डब्ल्यू. बी एम. सड़कें, 10 हजार 326 कि.मी. ग्रेवल्ड सड़कें तथा 836 कि.मी. मौसमी सड़कें थीं।

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम

राजस्थान निर्माण के समय राज्य की परिवहन व्यवस्था निजी हाथों में थी। वर्ष 1952 में प्रथम बार रोड में राजकीय बस सेवा प्रारंभ हुई। इस कार्य के गति देने के लिए 1959 में राजस्थान स्टेट रोडवेज (राजकीय विभाग) तथा एक अक्टूबर, 1964 को राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की स्थापना की गई। उस समय निगम के पास 421 यात्री वाहनें थीं जो प्रतिदिन औसतन 45 हजार किलोमीटर चलकर 29 हजार यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाती थीं।

वित्तीय वर्ष 1987-88 के अन्त में आठ संभागों के अन्तर्गत 38 आगार कार्यालय कार्यरत थे। निगम में कार्यरत कुल कर्मचारियों की संख्या 21 हजार 869 थी। 3148 यात्री वाहनें, जिनमें से 174 बसें निजी बस मालिकों से अनुबन्ध पर ली हुई थीं, द्वारा 1830 मार्गों पर वर्ष के दौरान औसत 7 87 लाख कि. मी. प्रतिदिन की यात्रा कर 6 42 लाख यात्रियों को उनके गन्तव्य तक पहुंचाया गया। वर्ष के दौरान निगम को 134.08 करोड़ रुपये की कुल आय हुई जो 465 पैसे प्रति किलोमीटर रही। निगम द्वारा 182 सुपर डीलक्स तथा डीलक्स सेवायें, 240 रात्रि सेवायें तथा 904 अन्तर्राज्यीय सेवायें उपलब्ध कराई जा रही थीं।

प्रशासनिक व्यवस्था

निगम का संचालन एक संचालक मण्डल द्वारा किया जा रहा है जिसमें एक अध्यक्ष और ग्यारह सदस्य हैं। इनमें 6 सदस्य शासकीय, 3 गैर शासकीय तथा 2 सदस्य कर्मचारी प्रतिनिधियों के रूप में शामिल किये गए हैं। वर्तमान में श्री डी.आर. पुरी इसके अध्यक्ष और श्री आर एन मीणा प्रबन्ध संचालक हैं। शासकीय संचालकों में राज्य के परिवहन आयुक्त एवं शासन सचिव श्री के.के सक्सेना, वित्त आयुक्त एवं शासन सचिव श्री यतीन्द्रसिंह, सार्वजनिक निर्माण विभाग (पथ) के मुख्य अभियन्ता श्री पी.के. लोरिया, पश्चिमी रेलवे के मुख्य विपणन अधीक्षक श्री एच.एल. बरुआ, केन्द्रीय भूतल परिवहन मंत्रालय के मुख्य लेखा नियन्त्रक श्री एन.सी. अग्रवाल, गैर शासकीय संचालकों में श्री पंकज पंचोली विधायक, श्री सी.पी. जोशी विधायक एवं श्री पंकज मेहता शामिल हैं। कर्मचारी प्रतिनिधि संचालकों के पद रिक्त हैं।

रेल विकास

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व राजस्थान में रेल लाइनों का निर्माण एक अंग्रेज कम्पनी और पांच देशी रियासतों द्वारा करवाया गया। उस समय दिल्ली- अहमदाबाद, दिल्ली- बम्बई, अजमेर- खंडवा तथा कोटा- बीना मार्ग एक अंग्रेज कम्पनी मैसर्स बी.बी. एण्ड सी आई. रेलवे के आधिपत्य में थे। इनके अतिरिक्त जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर तथा धौलपुर रियासतों ने भी अपने-अपने राज्य में रेल-मार्गों का निर्माण कराया।

धौलपुर इनमें सबसे छोटी रियासत थी। इसने धौलपुर से बाड़ी होते हुए एक ओर तांतपुर और दूसरी ओर सरमथुरा स्टेशन तक नैरोगेज लाइन का निर्माण कराया। 1908 में इस मार्ग पर कनाडा में

निर्मित इंजन द्वारा एक छोटी रेल का संचालन प्रारम्भ किया गया जो आज भी जारी है। देश के मैदानी क्षेत्र में नैरोगेज पर चलने वाली यह राजस्थान में एकमात्र रेल है।

जयपुर रियासत में स्वतंत्रता प्राप्ति के समय लुहारू-सवाईमाधोपुर, सीकर-फतेहपुर तथा जयपुर-टोडारायसिंह के मध्य मीटरगेज रेल लाइनें थी। इनकी कुल लम्बाई 253 मील थी।

जोधपुर में फुलेरा से गडरा रोड, फलौदी से मारवाड-जंक्शन, समदडी से भीलडी, पीपाड रोड से बिलाडा, मेडता रोड से मेडता सिटी, कमराणा से परबतसर, डेगाना से सुजानगढ़ तथा मेडता रोड से चता जंक्शन तक मीटरगेज रेल लाइनें थीं जिनकी कुल लम्बाई 808 मील थी।

बीकानेर रियासत में उस समय चीलो जंक्शन से बीकानेर, बीकानेर से रतनगढ, चूरू, राजगढ, नौहर, हनुमानगढ, श्रीगंगानगर, सूरतगढ होते हुए बीकानेर, अर्थात पूरी रियासत में घूमती हुई रेल लाइन थी। इसके अतिरिक्त रतनगढ से सुजानगढ, रतनगढ से सरदारशहर, राजगढ से लुहारू तथा बीकानेर से श्री कोलायतजी तक मीटरगेज रेल-मार्ग थे। बीकानेर रियासत के रेल- मार्गों की कुल लम्बाई 884 मील थी।

उदयपुर रियासत में उदयपुर से चित्तौड तथा बडी सादडी से कामलीघाट तक कुल 298 मील लम्बे रेलमार्ग थे।

नये रेल मार्ग

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राजस्थान में जिन नये रेल मार्गों का निर्माण हुआ उनका विवरण इस प्रकार है.

क्रम संख्या	रेल मार्ग	प्रकार	दूरी
1.	फतेहपुर - चूरू	मीटरगेज	43कि.मी.
2.	श्रीगंगानगर -हिन्दूमलकोट	ब्रॉडगेज	26 कि.मी.
3.	पोकरण - जैसलमेर	मीटरगेज	106 कि.मी.
4.	उदयपुर- हिम्मतनगर	मीटरगेज	209 कि.मी.
5.	श्रीगंगानगर -दिल्ली		
6.	लालगढ- सूरतगढ-हनुमानगढ	ब्रॉडगेज	

इनके अतिरिक्त कोटा-चित्तौडगढ-नीमच मार्ग पर ब्रॉडगेज लाइन का निर्माण कार्य चल रहा है। इस मार्ग पर कोटा से चन्देरिया तक 31 मार्च, 1989 से यातायात प्रारंभ हो गया है।

दूसरा निर्माण कार्य राज्य में अलवर -मथुरा बड़ी लाइन का चल रहा है। जैसलमेर- जयपुर-सवाईमाधोपुर ब्रॉड गेज लाइन की भी घोषणा हो चुकी है। इसे दो चरणों में पूरा किया जाएगा और इस पर शीघ्र ही निर्माण कार्य प्रारंभ होने को है। इस लाइन के बन जाने से राज्य के दो बड़े नगर- जयपुर और जोधपुर देश के शेष भागों से बड़ी लाइन द्वारा जुड़ जाएंगे।

संचार सेवायें

भारतीय संविधान के अनुसार राज्यों की संचार सेवाओं पर केन्द्रीय सरकार के संचार मंत्रालय का सीधा नियंत्रण होता है। अतः राजस्थान में डाक सेवाओं का मुख्य पोस्टमास्टर जनरल तथा तार, टेलीफोन और टेलेक्स सेवाओं का मुख्य महाप्रबन्धक दूरसंचार द्वारा संचालन किया जाता है। इन दोनों के कार्यालय राज्य की राजधानी जयपुर में स्थित है।

डाक सेवायें

राजस्थान में 31मार्च 1989 की स्थिति के अनुसार कुल 9,635 डाकघर हैं जिनमें 55 प्रधान डाकघर, 1358 मार्च विभागीय उपडाकघर, 111 अतिरिक्त विभागीय उपडाकघर तथा 8111 अतिरिक्त विभागीय शाखा डाकघर शामिल हैं। अतिरिक्त विभागीय से तात्पर्य ऐसे डाकघरों से है जिनमें पूर्णकालिक के बजाय अंशकालिक कर्मचारी कार्य करते हैं। इस तिथि तक सम्पूर्ण राज्य में 24 हजार 606 लैटर बाक्स थे जिनमें से 9973 ऐसे गावों के भी शामिल हैं जिनमें कोई डाकघर नहीं है। इस दृष्टि से राजस्थान में 35 27 वर्ग कि.मी. क्षेत्र के लिए एक डाकघर उपलब्ध है जो औसतन 3553 व्यक्तियों की सेवा करता है।

वित्त वर्ष 1988-89 के दौरान 175 नए शाखा डाकघर और 5 उपडाकघर खोलने का लक्ष्य था। 28 फरवरी 89 तक 98 अतिरिक्त विभागीय शाखा डाकघर खोलने के आदेश जारी किये जा चुके थे।

सर्किल में लाईसेंस शुदा 37 डाक एजेन्ट पहले से ही कार्य कर रहे हैं। इसके साथ ही डाक विभाग ने 'पंचायत डाक सेवक' नामक एक नई योजना भी शुरू की है। प्रारंभ में इस योजना को राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले में शुरू किया गया है। 15 फरवरी 89 तक 10 पंचायत डाक सेवकों की नियुक्ति की जा चुकी थी।

अभी हाल ही में जयपुर नगर की मानसरोवर तथा जैसलमेर की [illegible] भी [illegible] नए डाकघर खोले गए हैं।

प्रशासनिक व्यवस्था

राजस्थान में डाक सेवाओं का विभागाध्यक्ष मुख्य पोस्टमास्टर जनरल है जो आई पी एस (भारतीय डाक सेवा) की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला का अधिकारी होता है। [illegible] पोस्टमास्टर जनरल भी है। डाक-सेवाओं के सुचारू संचालन के लिए राज्य को पूर्वी और पश्चिमी दो भागों में विभाजित किया गया है जिनके प्रभारी निदेशक डाक सेवा है। इन निदेशकों के कार्यालय क्रमशः जयपुर और जोधपुर में स्थित है। इनके अधीन 24 मंडल अधीक्षक डाकघर, तीन मंडल अधीक्षक रेल डाक सेवा तथा 190 सहायक अधीक्षक/निरीक्षक डाकघर है। एक मार्च 1989 से श्री [illegible] ने मुख्य पोस्टमास्टर जनरल राजस्थान तथा श्री [illegible] ने पोस्टमास्टर जनरल जयपुर का कार्यभार संभाला है।

डाक व्यवस्था-

(क) डाक वितरण में [illegible] लाने के उद्देश्य से विभाग ने इस वर्ष [illegible] डाक व्यवस्था का [illegible] पुनरीक्षण किया है। इसके परिणाम स्वरूप राज्य मुख्यालय से [illegible] मुख्यालयों तक एक [illegible] मुख्यालय से दूसरे जिला मुख्यालय को डाक प्रेषित करने की तारीख से अगले दिन [illegible] दिन [illegible] हो गया है। इस कार्य के लिए विभाग द्वारा [illegible] के सभी [illegible] का [illegible] उपयोग किया जा रहा है जिसमें [illegible] बसें भी शामिल है। इससे [illegible] में डाक वितरण में [illegible] सुधार हुआ है

डाक टिकटों में राजस्थान का प्रतिनिधित्व

जारी करने का दिनांक	मूल्य	विवरण
15 अगस्त, 1949	एक रुपया	चित्तौड का विजय स्तंभ
1 अक्टूबर, 1952	2 आना	भक्त शिरोमणी मीरा बाई
14 दिसम्बर, 1961	90 पैसे	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सन्दर्भ में कालीबंगा सभ्यता पर
11 जून 1967	15 पैसे	महाराणा प्रताप
4 नवम्बर, 1970	20 पैसे	श्री जमनालाल बजाज
5 मई 1973	20 पैसे	भारतीय लघु चित्रकला पर चार टिकिट जारी किए गए, जिनमें से दो राजस्थान पर थे- 1 किशनगढ़ शैली की कृति -राधा (बणी-ठणी) 2 संगीत मंगिमा मारु रागिनी में ऊंट पर सवार प्रेमी-युगल ढोला-मारु
3 जुलाई, 1974	25 पैसे	श्री जयनारायण व्यास
10 फरवरी, 1976	25 पैसे	घना पक्षी विहार
15 मई, 1976	50 पैसे	एफ 1 मीटर गेज (अजमेर लोकोमोटिव पर)
24 नवम्बर, 1976	25 पैसे	श्री हीरालाल शास्त्री
1 नवम्बर, 1980	2.30रु.	हुकना (गोडावण)
30 दिसम्बर, 1980	1 रु.	राजस्थानी वधू
30 मई, 1981	1 रु.	राजस्थान की भील जनजाति की युवती
25 नवम्बर, 1982	2.85 रु०	नवम् एशियाई खेल दिल्ली-1982 के दौरान रामगढ (जयपुर) मे नौकायन प्रतियोगिता
7 फरवरी, 1983	2.85 रु०	साईबेरियन सारस (जो हर वर्ष घना पक्षी विहार में आते हैं।)
11 जून, 1984	50 पैसे	श्री घनश्यामदास बिडला
3 अगस्त, 1984	2 रु	जोधपुर का किला
14 फरवरी, 1986	50 पैसे एवं 2 रु.	इन्पैक्स-1986 पर जारी दो टिकट 1. चल ऊँट डाकघर 2. जयपुर का हवामहल एवं जयपुर रियासत का प्रतीक चिन्ह सूर्यरथ
12 अप्रेल, 1986	1 रु.	मेयो कॉलेज अजमेर
29 दिसम्बर, 1986	50 पैसे	श्री सागरमल गोपा
2 फरवरी, 1988	60 पैसे	श्री मोहनलाल सुखाडिया
5 जून, 1988	60 पैसे	खेजडी का पेड
26 अगस्त 1988	60 पैसे	वीर दुर्गादास राठौड
17 जनवरी, 1989	60 पैसे	श्री बल्देवराम मिर्धा
13 फरवरी, 1989	एक रु.	दरगाह शरीफ अजमेर
30 मार्च 1989		राव गोपाल सिंह खरवा

तथा शाखा डाकघरों द्वारा डाक वस्तुओं का वितरण उसी दिन कर दिया जाता है, जिस दिन वे उपडाकघरों से प्राप्त होती है। यह सब हरकारों के मार्गों का व्यापक मशीनीकरण करने के कारण ही संभव हुआ है।

स्पीड पोस्ट—

(ख) यह सेवा राज्य की राजधानी जयपुर में गत 15 नवम्बर 86 से चालू है। यह एक द्रुत सुरक्षित और अति विश्वसनीय सेवा है जो गारण्टीशुदा समयबद्ध वितरण की सुविधा प्रदान करती है। जयपुर से यह सेवा भारत के 42 शहरों और विश्व के 34 देशों के लिए उपलब्ध है। इसके अलावा 19 देशों के लिए मकेण्डाइज स्पीड पोस्ट सेवा भी उपलब्ध है। इस सेवा के अंतर्गत देश के सभी 42 शहरों के लिए मनीआर्डर भी भेजे जा सकते हैं। यह सेवा प्राप्तकर्ता को 24 घंटे के भीतर उसके घर पर मनीआर्डर का गारण्टीशुदा भुगतान सुनिश्चित करती है परन्तु अगरतल्ला मदुरै नागपुर सलेम और त्रिवेन्द्रम शहरों में यह भुगतान तीसरे दिन संभव हो पाता है।

दूरसंचार सेवायें

31 मार्च 1989 को राजस्थान में कुल एक लाख 25 हजार 806 टेलीफोन कार्यरत थे जबकि इस दिन चालू कुल 784 एक्सचेंजों की कुल क्षमता एक लाख 50 हजार 159 टेलीफोनों की थी। कार्यरत टेलीफोनों में 80 हजार 412 स्वचालित 27 हजार 226 मैनुअल तथा 18 हजार 168 इलेक्ट्रॉनिक एक्सचेंजों से संबंधित थे जबकि इनकी क्षमता क्रमशः 95 हजार 740, 32 हजार826 तथा 21 हजार 593 टेलीफोनों की थी।

एक्सचेंज

उपरोक्त तिथि को राज्य में कार्यरत 784 एक्सचेंजों में सर्वाधिक 627 स्वचालित थे जिनमें 624 स्ट्राउजर तथा तीन क्रोसबार सम्मिलित हैं। इनकी क्षमता क्रमशः 71 हजार 740 और 24 हजार के विपरीत क्रमशः 58 हजार 328 तथा 22 हजार 84 टेलीफोन कार्यरत थे। इसी प्रकार कार्यरत 28 इलेक्ट्रोनिक एक्सचेंजों में 18 इलेक्ट्रोनिक तथा 10 डिजीटल सम्मिलित थे जिनकी क्षमता क्रमशः 12 हजार411 और 9182 के विपरीत क्रमशः 11 हजार 291 और 6877 टेलीफोन कार्यरत थे। शेष 129 मैनुअल एक्सचेंजों की क्षमता 32 हजार 826 टेलीफोनों के विपरीत 27 हजार 226 टेलीफोन कार्यरत थे।

राज्य के कुल 27 में से केवल दो जिलों-बांसवाड़ा और बाड़मेर में ही अभी मैनुअल एक्सचेंज हैं जबकि शेष सभी 25 जिलों-अजमेर, अलवर भरतपुर भीलवाड़ा बूंदी बीकानेर चित्तौड़गढ़ चूरू धौलपुर, डूंगरपुर, जयपुर झुंझुनूं जोधपुर कोटा नागौर पाली सीकर श्रीगंगानगर टोंक उदयपुर सवाईमाधोपुर, जैसलमेर जालौर झालावाड़ और सिरोही में स्वचालित एक्सचेंज कार्यरत हैं।

इसी प्रकार राज्य में 9 टेलेक्स एक्सचेंजों की 1170 की क्षमता की तुलना में 31 मार्च 1989 को 738 टेलेक्स कनेक्शन कार्यरत थे तथा 64 आवेदक प्रतीक्षा सूची में थे।

एस टी डी सुविधा

राज्य के 17 नगरों-अजमेर, अलवर, बीकानेर, ब्यावर, भरतपुर, कोटा, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, धौलपुर, नागौर, श्रीगंगानगर, सिरोही, झुंझुनूं, बूंदी, सीकर और पाली के टेलीफोन उपभोक्ताओं को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय एस टी डी. सुविधा प्राप्त है। इसके अतिरिक्त श्रीगंगानगर से हनुमानगढ़ व अबोहर के लिए प्वाइंट-टू-प्वाइंट एस टी डी सुविधा भी उपलब्ध है।

प्रतीक्षा सूची

राज्य के विभिन्न भागों में उक्त अवधि में 65 हजार 445 आवेदक टेलीफोन प्राप्ति के लिए प्रतीक्षा सूची में थे। इनमें 53 हजार 759 सामान्य वर्ग के 7084 विशिष्ट वर्ग के तथा 4602 ओ वाई.टी. वर्ग के शामिल हैं।

प्रशासनिक व्यवस्था

राजस्थान के दूर-संचार कार्यालय का विभागाध्यक्ष मुख्य महाप्रबंधक, दूरसंचार होते हैं जो आई टी. एस. (भारतीय दूरसंचार सेवा) का वरिष्ठ अधिकारी होते है। उनकी सहायता के लिए एक महाप्रबंधक दूर-संचार (विकास) तथा एक उपमहाप्रबंधक (प्रचालन) होता है। प्रदेश की राजधानी जयपुर की दूर-संचार सेवाओं के संचालनार्थ महाप्रबंधक कार्यालय पृथक रूप से कार्यरत है। इसके अतिरिक्त दूर-संचार की दृष्टि से राज्य को तीन क्षेत्रों में विभक्त किया गया है जो पूर्वी दूर-संचार क्षेत्र पश्चिमी दूर-संचार क्षेत्र तथा दक्षिणी दूर-संचार क्षेत्र कहलाते हैं। इनके मुख्यालय क्रमशः जयपुर, जोधपुर और उदयपुर में हैं तथा इन क्षेत्रों की सेवाओं के निदेशक दूरसंचार देखते हैं।

बैंकिंग

जुलाई 1969 में राष्ट्रीयकरण के समय राजस्थान में सहकारी बैंकों को छोड़कर वाणिज्यिक बैंकों की मात्र 369 शाखायें कार्यरत थी जो लगभग 70 हजार जनसंख्या पर एक बैंक शाखा का अनुपात था। इसके विपरीत 31 दिसम्बर, 1988 को प्रदेश में सहकारी बैंकों को छोड़कर अन्य बैंकों की शाखाओं की संख्या 2843 तक पहुंच गई जिसमे लगभग 12 हजार जनसंख्या पर एक बैंक शाखा का अनुपात हो गया। इन बैंक शाखाओं में भारतीय स्टेट बैंक समूह के पांच वाणिज्यिक बैंकों की 703 राष्ट्रीयकृत 20 बैंकों की 887, निजी क्षेत्र के दो बैंकों की 214 तथा 14 आंचलिक अथवा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की 1039 शाखायें शामिल है।

विचाराधीन अनुज्ञापत्र

इसके साथ ही भारतीय रिजर्व बैंक की शाखा-विस्तार योजना के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में नई शाखायें स्थापित करने हेतु विभिन्न बैंकों के 116 आवेदन पत्र उपरोक्त तिथि को विचाराधीन थे।

अग्रणी बैंक योजना

भारतीय रिजर्व बैंक के निर्देशानुसार राज्य के सभी 27 जिले अग्रणी बैंक योजना के अन्तर्गत निम्न प्रकार से आवंटित हैं-

क्रमांक	बैंक	आवंटित जिले
1.	बैंक आफ बड़ौदा	(1) अजमेर (2) बांसवाड़ा (3) भीलवाड़ा (4) बूंदी (5) चित्तौड़गढ़ (6) चूरू (7) डूंगरपुर (8) झुंझुनू (9) सवाई माधोपुर (10) टोंक
2	स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर	(1) बीकानेर (2) बाड़मेर (3) जैसलमेर (4) सिरोही (5 पाली (6) उदयपुर (7) जालौर
3	यूको बैंक	(1) जयपुर (2) जोधपुर (3) नागौर
4.	पंजाब नेशनल बैंक	(1) भरतपुर (2) धौलपुर (3) सीकर
5	सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया	(1) झालावाड़ (2) कोटा
6	न्यू बैंक आफ इंडिया	(1) अलवर
7.	ओरियंटल बैंक आफ कामर्स	(1) श्रीगंगानगर

अमानतें

जुलाई 1969 में बैंकों के राष्ट्रीयकरण के समय सहकारी बैंकों को छोड़कर राज्य के अन्य सभी बैंकों में 93.5 करोड़ रुपये जनता के अमानतों के रूप में जमा थे। इसके विपरीत 31 दिसम्बर 1955 को यह राशि 4009.85 करोड़ तक पहुंच गई इसमें 27 वाणिज्यिक बैंकों की 1804 शाखाओं के 3831.32 तथा 14 ग्रामीण बैंकों की 1039 शाखाओं के 178 53 करोड़ रुपये शामिल है।

उपरोक्त अमानतों में 566 47 करोड़ रुपये वर्ष 1988 में जमा हुये है जो वर्ष 1987 की जमाओं की तुलना में 16 45 प्रतिशत वृद्धि है।

ऋण वितरण

इसी प्रकार बैंक राष्ट्रीयकरण से पूर्व जून 1969 तक जहां विभिन्न ऋणों के रूप में प्रदेश में करीब 46 करोड़ रुपये वितरित किये गये थे वहां दिसम्बर 1988 तक कुल [illegible] करोड़ रुपये विभिन्न

खण्ड-5

ऋणों के रूप में वितरित किये जा चुके हैं। इस राशि में 146.96 करोड़ प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र में 736.93 करोड़ प्रत्यक्ष कृषि कार्यों हेतु 541.12 करोड़ बीस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत, 144 21 करोड़ एकीकृत ग्रामीण-विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत, 509.12 करोड़ समाज के आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों के लोगों को, 221.81 करोड़ अनुसूचित जातियों और जनजातियों के परिवारों को, 26.64 करोड़ विभेदात्मक ब्याज दर योजना के अन्तर्गत तथा 2288.88 करोड़ रुपये अन्य कार्यों के लिये शामिल है।

वर्ष 1988 की प्रगति

जहाँ तक वर्ष 1988 का प्रश्न है-इस अवधि में प्रदेश के बैंकों ने विभिन्न ऋणों के रूप में 9630.76 करोड़ रुपये वितरित किये है। इस राशि में 252.34 करोड़ प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों को 178.74 करोड़ प्रत्यक्ष कृषि कार्यों हेतु, 142.18 करोड़ बीस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत तथा 39 29 करोड़ रुपये एकीकृत ग्रामीण-विकास योजना के अन्तर्गत वितरित ऋण शामिल हैं जो वर्ष 1987 की तुलना में क्रमशः 20.84, 32 02, 35 64 तथा 37 45 प्रतिशत अधिक है। इसके अतिरिक्त समाज के आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों को 90 95 करोड़ अनुसूचित जातियों जनजातियों को 36 11 करोड़ विभेदात्मक ब्याजदर योजना के अन्तर्गत 0 78 करोड़ तथा अन्य ऋणों के रूप में 223 37 करोड़ रुपया वितरित किया गया जो वर्ष 1987 की तुलना में क्रमशः 21 75, 19 45, 3 41 तथा 10 81 प्रतिशत अधिक है।

सहकारी बैंकिंग

राजस्थान के 27 में से दो जिलों धौलपुर और जैसलमेर को छोड़कर शेष सभी 25 जिलों में 30 जून 1988 को केन्द्रीय सहकारी बैंक कार्यरत थे। वर्ष 1989 में जैसलमेर जिले में भी केन्द्रीय सहकारी बैंक की स्थापना हो जाने से अब इनकी संख्या 26 हो गई है। इन बैंकों की भी राष्ट्रीयकृत और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की तरह राज्य के आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इनका मुख्य कार्य राजस्थान स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक लि० जयपुर (शीर्ष बैंक) के माध्यम से राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) से ऋण प्राप्त कर प्राथमिक ग्रामीण सहकारी समितियों के माध्यम से उनके सदस्य कृषकों को कृषि एवं पशुपालन आदि कार्यों हेतु वितरण करना है। इसी के साथ केन्द्रीय सहकारी बैंक अन्य वाणिज्यिक बैंकों की तरह अमानतें जमा कर जन-साधारण को विभिन्न कार्यों के लिए ऋण सुविधायें प्रदान करते हैं। इन बैंकों का संचालन सदस्य सहकारी समितियों के प्रतिनिधियों द्वारा निर्वाचित संचालक मण्डल करते हैं। इन पर प्रशासनिक नियन्त्रण राज्य के सहकारिता विभाग का तथा वित्तीय एवं आर्थिक प्रशासन राजस्थान स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक एवं राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) का रहता है। इन बैंकों के अंकेक्षण हेतु अंकेक्षकों की नियुक्ति भी सहकारिता विभाग करता है।

संचालक मंडलों का चुनाव

राज्य की ग्रामीण प्राथमिक सहकारी समितियों, क्रय विक्रय सहकारी समितियों, भूमि विकास बैंकों के साथ ही केन्द्रीय सहकारी बैंकों के संचालक मण्डलों के चुनाव भी [illegible] तीसरे वर्ष होना आवश्यक है। वर्ष 1974 75 के बाद अब मई-जून 1987 में सम्पन्न हुए हैं। इन चुनावों में निर्वाचित केन्द्रीय सहकारी बैंकों के अध्यक्षों के नाम इस प्रकार हैं-

1- अजमेर - श्री रमजानखाँ निर्वाचित
2- अलवर - श्री महेन्द्र [illegible] निर्वाचित
3- बाँसवाड़ा - श्री दिनेश [illegible]
4- बाड़मेर - श्री हेमाराम चौधरी निर्वाचित

5- भरतपुर- श्री नत्थीसिंह, विधायक
6-भीलवाड़ा-श्री नानूराम कुमावत, विधायक
7- बीकानेर- श्रीमती कांता खतूरिया
8- बूंदी- श्री चौथमल माहेश्वरी
9- चित्तौड़गढ़- श्री जे० ए० आजम
10- चूरू- श्री दानाराम मांभू
11- डूंगरपुर- श्री बल्लभराम पाटीदार
12- जयपुर- डा० हरिसिंह
13- जालौर- राजा गोपालसिंह
14- झालावाड़- श्री कृपाराम रोझा
15- झुंझुनूं- श्री बीरबल सिंह
16- जोधपुर- श्री परसराम मदेरणा
17- कोटा- श्री तेजकरणसिंह
18- नागौर- श्री प्रफुल्ल रिणवा
19- सवाईमाधोपुर- श्री गंगासहाय त्रिवेदी
20- सिरोही- श्री रामलाल सोलंकी
21- श्रीगंगानगर- श्री महेन्द्रसिंह मांभू
22- टोंक- श्री राजेन्द्र चौधरी
23- उदयपुर- श्री मोहनलाल चौहान
24- जैसलमेर- श्री किशनसिंह भाटी
25- पाली- श्री भवानी सिंह
26- सीकर- श्री रामेश्वर सिंह

सहकारी वर्ष 1987–88 की प्रगति

30 जून, 1988 को उपरोक्त 25 केन्द्रीय सहकारी बैंकों की 375 शाखायें कार्यरत थीं तथा सदस्य संख्या 11 हजार 118 थी जिसमें 10 हजार 89 सहकारी समितियाँ तथा 1029 व्यक्तिगत एवं अन्य प्रकार के सदस्य शामिल हैं। इसी प्रकार इस तिथि को बैंकों की हिस्सा राशि 4368.55 लाख रुपये थी जिसमें 1347.66 लाख राज्य सरकार के तथा 3020.89 लाख रुपये सहकारी समितियों तथा अन्य संस्थाओं के थे। इन बैंकों में 19हजार 929.55 लाख रुपये अमानतों के रूप में जमा थे जिनमें 5124.88 लाख सहकारी समितियों के, 2374 24 लाख स्थानीय संस्थाओं के तथा 12 हजार 430.47 लाख रुपये निजी अमानतदारों के शामिल हैं।

इसी प्रकार इन बैंको के पास उपरोक्त तिथि को वहां संचित कोष 2543.08 लाख तथा निजी कोष 6911.63 लाख रुपये के थे वहां 24 हजार 417.04 लाख रुपये का ऋण बकाया तथा 53 हजार 918.53 लाख रुपये कार्यशील पूंजी के थे। इन बैंकों ने सहकारी वर्ष 1987–88 में 25 हजार 642.41 लाख रुपये ऋण के रूप में वितरित किये जिसमें 20 हजार 901.21 लाख रुपये कृषि कार्यों तथा 4741.20 लाख रुपये अन्य ऋणों के शामिल हैं। कृषि ऋण में 12 हजार 650.03 लाख अल्पकालीन तथा 4741.20 लाख रुपये मध्यकालीन ऋण के शामिल हैं।

सहकारी वर्ष 1987–88 में कृषि ऋणों की 24 हजार 711.32 लाख रुपये की वसूली का लक्ष्य था जिसके मुकाबले 10 हजार 364.50 लाख रुपये की अर्थात 42 प्रतिशत वसूली हुई।'

राजस्थान में जीवन बीमा

भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा किये गये सर्वेक्षण के अनुसार राजस्थान की कुल 3 करोड 42 लाख 61 हजार जन संख्या में 80 97 लाख अर्थात 23 6 प्रतिशत जनसंख्या बीमा योग्य है। 31 मार्च 1988 को राज्य में जीवन बीमे की कुल 13 09 लाख पालिसियाँ प्रभावी थीं जिनकी कुल बीमित राशि 2331 करोड रुपये थी तथा निगम को इनमें प्रीमियम के रूप में कुल 9299 लाख रुपये की प्राप्ति हुई। इनमें से वित्तीय वर्ष 1987-88 की अवधि में कुल 2.05 लाख पालिसियाँ निर्गमित की गई जिनकी बीमित राशि 528 करोड रुपये और प्रथम प्रीमियम के रूप में प्राप्ति 2216 लाख रुपये हुई।

विनियोजन

जीवन बीमा निगम अपनी जमा राशि को विभिन्न औद्योगिक और सामाजिक योजनाओं में विनियोजित करता है। 31 मार्च 1988 तक निगम ने राजस्थान राज्य विद्युत मंडल को 16 हजार 9 लाख तथा आवासन योजनाओं के लिए राज्य सरकार को 8506 लाख रुपये का ऋण दिया तथा स्टाक एक्सचेंज में 15 हजार 333 लाख रुपये का विनियोजन किया। निगम की लेखा-पुस्तकों में उपरोक्त निधि को राज्य में कुल बकाया ऋण तथा विनियोजित राशि 33 हजार 793 लाख रुपये अंकित थी।

सामूहिक बीमा योजना

भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा प्रारंभ भूमिहीन कृषकों के लिए सामूहिक बीमा योजना को उत्तर भारत में अपनाने वाला राजस्थान प्रथम प्रदेश है जहाँ इसका प्रारंभ 15 अगस्त, 1987 को हुआ। यह किसी भी बीमा कम्पनी द्वारा संचालित विश्व की सबसे बड़ी सामूहिक जीवन बीमा योजना है जिसके अन्तर्गत 18 से 60 वर्ष की आयु वर्ग के सभी भूमिहीन कृषि-मजदूर शामिल किये गये हैं। इसमें प्रति सदस्य एक हजार रुपये का बीमा किया जाता है तथा योजना में शामिल प्रत्येक कृषि मजदूर के लिए केन्द्र सरकार दस रुपये प्रीमियम के रूप में देती है तथा जीवन बीमा निगम दावों का भुगतान करता है।

प्रशासनिक व्यवस्था

31. दिसम्बर, 1988 को राजस्थान में भारतीय जीवन बीमा निगम के तीन मंडल कार्यालय जयपुर अजमेर और जोधपुर में कार्यरत थे जिनके अन्तर्गत क्रमश 31, 22 और 18 शाखा कार्यालय कार्यरत थे। इनमें जोधपुर मंडल कार्यालय वित्तीय वर्ष 1988-89 में ही स्थापित किया गया है। इससे पूर्व जयपुर और अजमेर मंडल कार्यालयों के अन्तर्गत क्रमश: 35 और 34 शाखा कार्यालय थे। दो शाखायें वित्तीय वर्ष 1988-89 में स्थापित की गई हैं।

गत वित्तीय वर्ष के अन्त में राज्य में निगम के 471 विकास अधिकारी तथा 10 हजार 18 अभिकर्ता थे जिनमें 291 विकास अधिकारी तथा 4637 अभिकर्ता ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत थे। वर्तमान, में राज्य में कार्यरत निगम के विभिन्न कार्यालयों में 2406 अधिकारी व कर्मचारी सेवारत हैं।

कृषि
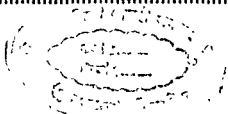
राजस्थान का भौगोलिक क्षेत्रफल 3 लाख 42 हजार 239 वर्ग किलोमीटर, अर्थात् 3 करोड 42 लाख हैक्टेयर है। इसमें से लगभग आधा क्षेत्र ही खेती के काम में आता है। वर्ष 85-86 में सम्मलित बोया गया क्षेत्रफल 181.37 लाख हैक्टेयर रहा। वर्ष 86-87 में वर्षा की स्थिति सन्तोषजनक न रहने के कारण यह घटकर 167.87 लाख हैक्टेयर ही रह गया। इसमें से द्विफसली क्षेत्रफल वर्ष 85-86 में 25.74 लाख हैक्टेयर रहा।

राज्य में भूमि-उपयोग की जानकारी निम्न तालिका से स्पष्ट होती है-

क्षेत्रफल : लाख हैक्टेयर में

विवरण	1951–52	1981–82	1985–86
भौगोलिक क्षेत्रफल	342.81	342.34	342.37
जंगल	11 59	20.78	22.28
कृषि अयोग्य क्षेत्रफल	89.81	44.71	43.38
जोत रहित भूमि पड़त भूमि के अलावा	90.03	80.75	78 62
पड़त भूमि	58.25	40.32	42.45
वास्तविक बोया हुआ क्षेत्र	93.13	155.78	155.64
सकल बोया हुआ क्षेत्र	97.55	185.97	181.37
दुफसा क्षेत्रफल	4.42	30.19	25.74

कृषि की दृष्टि से राज्य को दो भागों- सूखे व आर्द्र में बांटा जा सकता है। इसके कुल कृषि योग्य क्षेत्र का लगभग 46 प्रतिशत भाग पश्चिमी व उत्तर-पश्चिमी सूखे भाग में है और इसके केवल 6 प्रतिशत भाग में ही सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है। राज्य के पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी आर्द्र भाग में कृषि योग्य भूमि का प्रतिशत 54 है, जिसके 26 प्रतिशत भाग में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है।

राजस्थान में दो प्रमुख फसलें है :

(I) खरीफ की जिसे 'सावणु' भी कहते है (II) रबी की, जिसे 'उनालु' भी कहा जाता है। खरीफ की फसलों की बुवाई जून-जुलाई में तथा कटाई सितम्बर-अक्टुबर में होती है। रबी की फसलों की बुवाई अक्टुबर-नवम्बर में तथा कटाई मार्च-अप्रेल में होती है।

खरीफ की फसलों में मुख्य है : बाजरा, ज्वार, मक्का, मूंग, मोठ, ग्वार, मूंगफली, चावल, कपास और गन्ना। जबकि रबी में गेहूँ, जौ, चना और सरसों की मुख्य फसलें होती है।

राज्य में खरीफ की फसलें समान्यतः 120 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में बोई जाती हैं। इसमें से 70 प्रतिशत क्षेत्र में खाद्यान्न, सात प्रतिशत क्षेत्र में तिलहन, चार प्रतिशत क्षेत्र में कपास एवं गन्ना तथा शेष में अन्य फसलें बोई जाती है। वर्ष 1987–88 में शताब्दी के भीषण सूखे एवं अकाल का प्रभाव खरीफ की बुवाई एवं उत्पादन पर भी पड़ा। इस वर्ष 123.35 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में खरीफ फसलों की बुवाई का लक्ष्य रखा गया था, जिसके मुकाबले 83.44 लाख हैक्टेयर में ही बुवाई की जा सकी।

राज्य में रबी की फसलों की बुवाई समान्यतः 55 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में की जाती है, जिसमें लगभग 30 लाख हैक्टेयर क्षेत्र सिंचित है। वर्ष 1987–88 में अकाल और अनावृष्टि से एक ओर जहाँ सिंचाई माध्यमों पर विपरीत प्रभाव पड़ा, वहीं दूसरी ओर भूमि में नमी की उपलब्धता में भी लगातार सूखे से बहुत कमी आई। वर्ष 1987–88 में 58.15 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में रबी की फसलों की बुवाई के लक्ष्य के मुकाबले मात्र 64 प्रतिशत क्षेत्र में ही बुवाई हो सकी।

राज्य में कृषि उत्पादन की निम्नलिखित प्रमुख विशेषतायें हैं :

(अ) प्रकृति आधारित- वर्षा और सिंचाई-साधनों की कमी के कारण राज्य के एक बड़े भाग में कृषि प्रकृति-प्रदत्त यत्किंचित् वर्षा पर निर्भर है। जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर, बीकानेर, चूरू, सीकर व झुंझुनूं जिले की अधिकांश कृषि जो मुख्यतया बाजरा, मूंग-मोठ, ग्वार आदि है, पूर्णतया वर्षा पर आधारित है। कहीं-कहीं सिंचाई से कृषि कार्य होता है।

(ब) रेगिस्तानी भूमि- राज्य का लगभग 3/5 पश्चिम-उत्तरी भाग रेतीला है। फलतः यहां कृषि कार्य कम होता है। इन क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि के दसवें भाग पर भी खेती नहीं हो पाती।

(स) एक फसल एवं कम उपज- सिंचाई साधनों के अभाव में राज्य के अधिकांश भागों में एक ही फसल उगाई जाती है। बोई हुई भूमि के केवल 8 प्रतिशत भाग में ही दोहरी फसलें उगाई जाती हैं। यहां कृषि उत्पादन भी कई अन्य राज्यों की अपेक्षा प्रति हैक्टेयर कम है।

राज्य की प्रमुख फसलें हैं :—

गेहूँ- राजस्थान में मध्यम एवं धनी वर्ग के लोगों का मुख्य भोजन गेहूँ है। यह राजस्थान में रबी की फसल है। राज्य में गेहूँ प्रायः अक्टूबर के अन्त अथवा नवम्बर के आरम्भ में बोया जाता है एवं मार्च के अन्त तक तैयार हो जाता है। राज्य में गेहूँ जलवायु की विभिन्न दशाओं में उत्पन्न होता है। यहां यह ठंडी व नम जलवायु में सफलतापूर्वक उत्पन्न हो जाता है किन्तु पकते समय गरम व शुष्क मौसम अनुकूल होता है। शीतकाल में 10° से. से 15° से. और पकते समय 20° से. से 25° से. तापमान आदर्श होता है। इसके लिए 50 से.मी. से 75 से.मी. तक वर्षा आदर्श होती है। राजस्थान में गेहूँ की खेती सर्वत्र सिंचाई की सहायता से होती है। भारत के अन्य भागों की भांति इस राज्य में भी गेहूँ शीतकालीन फसल है।

गेहूँ का क्षेत्र- राजस्थान में कुल कृषि के क्षेत्र के लगभग 10 प्रतिशत भाग में गेहूँ की खेती होती है। सबसे अधिक गेहूँ बीकानेर संभाग के गंगानगर जिले में उत्पन्न होता है। गंगानगर को राजस्थान का 'अन्न-भंडार' भी कहते हैं। यहां गंगनहर द्वारा सिंचाई की जाती है। गेहूँ उत्पादन का दूसरा प्रमुख क्षेत्र पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी राजस्थान है। राज्य में गेहूँ का लगभग 70 प्रतिशत क्षेत्र लूनी की घाटी, अरावली क्षेत्र और मारवाड़ के मैदान में है। इस क्षेत्र में प्रायः 50 से.मी. से अधिक वर्षा हो जाती है, जो कि गेहूँ के लिए आदर्श है।

राजस्थान के पूर्वी भागों–जयपुर, अलवर, भरतपुर, कोटा, बून्दी आदि में गेहूं प्रमुख उपज है। राजस्थान नहर बन जाने पर राज्य में गेहूं के क्षेत्र व उपज में बहुत वृद्धि हुई है।

भारत में, गेहूं के उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान का पांचवां स्थान है- प्रथम उत्तरप्रदेश, द्वितीय पंजाब, तृतीय मध्यप्रदेश व चौथा स्थान हरियाणा का है।

जौ- जौ भी गेहूँ की भांति रबी की फसल है। यह अपने क्षेत्र के निर्धन व्यक्तियों का मुख्य भोजन है। विदेशों में जौ का उपयोग मुख्यतः शराब बनाने तथा पशुओं को खिलाने में होता है। जौ की उपज के लिए वे दशाएं ही आदर्श हैं जो कि गेहूँ के लिए आवश्यक हैं। यह विभिन्न प्रकार की जलवायु एवं मिट्टियों में उत्पन्न किया जा सकता है। यह शीघ्रता से पकता है अतः यह कम तापमान तथा कम वर्षा वाले भागों में भी उत्पन्न हो जाता है। जौ में शुष्कता सहन करने की बड़ी शक्ति होती है। जौ को मध्य अक्टूबर से दिसम्बर तक बोते हैं व मार्च-अप्रैल तक इसे काट लेते हैं।

राजस्थान में कुल कृषि-क्षेत्र के लगभग 5 प्रतिशत भाग में जौ की खेती हो रही है। इस राज्य में शुष्क व रेतीले भागों में, जहां सिंचाई की पर्याप्त सुविधाएं नहीं है, जौ उत्पन्न हो जाता है। जौ का लगभग 90 प्रतिशत क्षेत्र उदयपुर, भीलवाड़ा, अजमेर, पाली, टोंक, जयपुर, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, अलवर व गंगापुर जिलों में है। आजकल राजस्थान में जौ का कुल उत्पादन 12 लाख टन से भी अधिक हो रहा है।

बाजरा–यह राजस्थान के शुष्क प्रदेशों की उपज एवं उन प्रदेशों में निर्धन व्यक्तियों का मुख्य भोज्य-पदार्थ है। बाजरा के बोए गये क्षेत्र एवं इसके उत्पादन की मात्रा की दृष्टि से इसका राजस्थान में प्रथम स्थान है। राज्य में कृषि की जाने वाली भूमि के लगभग 33 प्रतिशत में बाजरे की खेती होती है।

बाजरे के लिए कम पानी की आवश्यकता होती है। इसकी खेती वर्षा पर निर्भर है, सिंचाई की इसे आवश्यकता नहीं होती। अतः जिस वर्ष वर्षा अच्छी हो जाती है, उस वर्ष बाजरे का उत्पादन भी अधिक होता है। इसकी फसल तीन महीने में तैयार हो जाती है। बाजरा रेतीली भूमि में भी उत्पन्न हो जाता है।

राजस्थान में इसका सबसे अधिक क्षेत्र जोधपुर, बीकानेर, नागौर, चूरू, सीकर बाड़मेर व जालौर में है। इनके अतिरिक्त यह जयपुर, अलवर, भरतपुर, गंगानगर आदि में भी उत्पन्न किया जाता है।

आजकल राज्य में संकर-बाजरे का उत्पादन भी बढ़ रहा है। सन् 1961 में पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पटियाला) ने अनेक अनुसंधान करके इस नए किस्म का उन्नत बाजरा निकाला। इसके उत्पादन के लिए रासायनिक खाद व अपेक्षाकृत अधिक पानी की आवश्यकता होती है। देश में उपभोग एवं उन्नत बीज के रूप में इसकी काफी मांग है।

ज्वार–ज्वार भी राजस्थान में निर्धन व्यक्तियों का भोजन है। इसके डंठल को पशुओं के चारे के लिए प्रयोग करते हैं। यह खरीफ की फसल है। वैसे तो इसे अधिक पानी की आवश्यकता होती है किन्तु जिन भागों में कम वर्षा होती है, वहां भी उत्पन्न हो जाती है। इसकी खेती के लिए सिंचाई आवश्यक नहीं है। राज्य में ज्वार की खेती के लिए पर्याप्त संभावनाएं हैं, क्योंकि यह अनेक किस्म की होती है और नम एवं शुष्क भागों में हो जाती है।

राजस्थान के मध्यवर्ती एवं पूर्वी भागों में ज्वार विशेष रूप से होती है। पश्चिमी भागों में ज्वार प्रायः नहीं होती। अजमेर, उदयपुर, झालावाड़, प्रतापगढ़ और टोंक में राज्य के कुल ज्वार-क्षेत्र का लगभग 50 प्रतिशत भाग है। यह जून-जुलाई में बो दी जाती है और नवम्बर-दिसम्बर में तैयार हो जाती है।

मक्का–राजस्थान में मक्का खरीफ की फसल है। यह भी एक घटिया अनाज माना जाता है। यह खाने एवं पशुओं के चारे दोनों ही काम में आती है। विदेशों में इसका उपयोग मुख्यतः स्टार्च बनाने अथवा पशुओं के खिलाने में होता है। इसे खाकर पशु मोटे हो जाते हैं। इसके लिए अपेक्षाकृत अधिक पानी व उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता पड़ती है। यदि वर्षा देर से आती है तो फसल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसे मध्य जून से मध्य जुलाई तक (विशेषतः प्रथम ग्रीष्म वर्षा के साथ) बो देते हैं और अक्टूबर-नवम्बर में फसल काट लेते हैं।

राजस्थान में कृषि के कुल क्षेत्र के लगभग 4 प्रतिशत भाग में मक्का की खेती होती है। राज्य में मक्का के प्रमुख क्षेत्र अरावली पर्वत, पहाड़ी प्रदेश और बनास नदी की घाटी में है जहाँ राज्य के कुल मक्का-क्षेत्र का 90 प्रतिशत क्षेत्र है। कुल मक्का-उत्पादन का लगभग 75 प्रतिशत भाग उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़ और अजमेर जिलों से प्राप्त होता है। गंगानगर, कोटा, अलवर, जयपुर व टोंक अन्य उत्पादक जिले हैं। पिछले कुछ वर्षों से संकर-मक्का भी उन्नत किस्म के रूप में तैयार की जा रही है।

चावल–भारत के दक्षिणी व पूर्वी भागों में चावल अत्यन्त प्रिय भोज्य पदार्थ है। इसके लिए ऊँचे तापमान व अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है। चावल के लिए सस्ते श्रमिकों की भी आवश्यकता होती है।

राज्य में रबी की फसलों की बुवाई सामान्यत: 55 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में की जाती है, जिसमे लगभग 30 लाख हैक्टेयर क्षेत्र सिंचित है। वर्ष 1987–88 में अकाल और अनावृष्टि से एक ओर जहां सिंचाई माध्यमों पर विपरीत प्रभाव पड़ा, वहीं दूसरी ओर भूमि में नमी की उपलब्धता में भी लगातार सूखे से बहुत कमी आई। वर्ष 1987–88 में 58.15 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में रबी की फसलों की बुवाई के लक्ष्य के मुकाबले मात्र 64 प्रतिशत क्षेत्र में ही बुवाई हो सकी।

राज्य में कृषि उत्पादन की निम्नलिखित प्रमुख विशेषतायें हैं :

(अ) प्रकृति आधारित- वर्षा और सिंचाई-साधनों की कमी के कारण राज्य के एक बड़े भाग में कृषि प्रकृति-प्रदत्त यत्किंचित् वर्षा पर निर्भर है। जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर, बीकानेर, चूरू, सीकर व झुंझुनूं जिले की अधिकांश कृषि जो मुख्यतया बाजरा, मूंग-मोठ, ग्वार आदि है, पूर्णतया वर्षा पर आधारित है। कहीं-कहीं सिंचाई से कृषि कार्य होता है।

(ब) रेगिस्तानी भूमि- राज्य का लगभग 3/5 पश्चिम-उत्तरी भाग रेतीला है। फलत: यहां कृषि कार्य कम होता है। इन क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि के दसवें भाग पर भी खेती नहीं हो पाती।

(स) एक फसल एवं कम उपज- सिंचाई साधनों के अभाव में राज्य के अधिकांश भागों में एक ही फसल उगाई जाती है। बोई हुई भूमि के केवल 8 प्रतिशत भाग में ही दोहरी फसलें उगाई जाती हैं। यहां कृषि उत्पादन भी कई अन्य राज्यों की अपेक्षा प्रति हैक्टेयर कम है।

राज्य की प्रमुख फसलें हैं :—

गेहूं- राजस्थान में मध्यम एवं धनी वर्ग के लोगों का मुख्य भोजन गेहूं है। यह राजस्थान में रबी की फसल है। राज्य में गेहूं प्राय: अक्टूबर के अन्त अथवा नवम्बर के आरम्भ में बोया जाता है एवं मार्च के अन्त तक तैयार हो जाता है। राज्य में गेहूं जलवायु की विभिन्न दशाओं में उत्पन्न होता है। यहां यह ठंडी व नम जलवायु में सफलतापूर्वक उत्पन्न हो जाता है किन्तु पकते समय गरम व शुष्क मौसम अनुकूल होता है। शीतकाल में 10° से. से 15° से. और पकते समय 20° से. से 25° से. तापमान आदर्श होता है। इसके लिए 50 से.मी. से 75 से.मी. तक वर्षा आदर्श होती है। राजस्थान में गेहूं की खेती सर्वत्र सिंचाई की सहायता से होती है। भारत के अन्य भागों की भांति इस राज्य में भी गेहूं शीतकालीन फसल है।

गेहूं का क्षेत्र- राजस्थान में कुल कृषि के क्षेत्र के लगभग 10 प्रतिशत भाग में गेहूं की खेती होती है। सबसे अधिक गेहूं बीकानेर संभाग के गंगानगर जिले में उत्पन्न होता है। गंगानगर को राजस्थान का 'अन्न-भंडार' भी कहते हैं। यहां गंगनहर द्वारा सिंचाई की जाती है। गेहूं उत्पादन का दूसरा प्रमुख क्षेत्र पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी राजस्थान है। राज्य में गेहूं का लगभग 70 प्रतिशत क्षेत्र लूणी की घाटी, अरावली क्षेत्र और मारवाड़ के मैदान में है। इस क्षेत्र में प्राय: 50 से.मी. से अधिक वर्षा हो जाती है, जो कि गेहूं के लिए आदर्श है।

राजस्थान के पूर्वी भागों–जयपुर, अलवर, भरतपुर, कोटा, बून्दी आदि में गेहूं प्रमुख उपज है। राजस्थान नहर बन जाने पर राज्य में गेहूं के क्षेत्र व उपज में बहुत वृद्धि हुई है।

भारत में, गेहूं के उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान का पांचवां स्थान है- प्रथम उत्तरप्रदेश, द्वितीय पंजाब, तृतीय मध्यप्रदेश व चौथा स्थान हरियाणा का है।

जौ– जौ भी गेहूं की भांति रबी की फसल है। यह अपने क्षेत्र के निर्धन व्यक्तियों का मुख्य भोजन है। विदेशों में जौ का उपयोग मुख्यत: शराब बनाने अथवा पशुओं को खिलाने में होता है। जौ की उपज के लिए वे दशाएं ही आदर्श हैं जो कि गेहूं के लिए आवश्यक हैं। यह विभिन्न प्रकार की जलवायु एवं मिट्टियों में उत्पन्न किया जा सकता है। यह शीघ्रता से पकता है अत: यह कम तापमान तथा कम वर्षा वाले भागों में भी उत्पन्न हो जाता है। जौ में सूखा सहन करने की बड़ी शक्ति होती है। जौ को मध्य अक्टूबर से दिसम्बर तक बोते हैं व मार्च-अप्रैल तक इसे काट लेते हैं।

राजस्थान में कुल कृषि-क्षेत्र के लगभग 5 प्रतिशत भाग में जौ की खेती हो रही है। इस राज्य में शुष्क व रेतीले भागों में, जहां सिंचाई की पर्याप्त सुविधाएं नहीं हैं, जौ उत्पन्न हो जाता है। जौ का लगभग 90 प्रतिशत क्षेत्र उदयपुर, भीलवाड़ा, अजमेर, पाली, टोंक, जयपुर, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, अलवर व गंगापुर जिलों में है। आजकल राजस्थान में जौ का कुल उत्पादन 12 लाख टन से भी अधिक हो रहा है।

बाजरा-यह राजस्थान के शुष्क प्रदेशों की उपज एवं उन प्रदेशों में निर्धन व्यक्तियों का मुख्य भोज्य-पदार्थ है। बाजरा के बोए गये क्षेत्र एवं इसके उत्पादन की मात्रा की दृष्टि से इसका राजस्थान में प्रथम स्थान है। राज्य में कृषि की जाने वाली भूमि के लगभग 33 प्रतिशत में बाजरे की खेती होती है।

बाजरे के लिए कम पानी की आवश्यकता होती है। इसकी खेती वर्षा पर निर्भर है सिंचाई की इसे आवश्यकता नहीं होती। अतः जिस वर्ष वर्षा अच्छी हो जाती है उस वर्ष बाजरे का उत्पादन भी अधिक होता है। इसकी फसल तीन महीने में तैयार हो जाती है। बाजरा रेतीली भूमि में भी उत्पन्न हो जाता है।

राजस्थान में इसका सबसे अधिक क्षेत्र जोधपुर, बीकानेर नागौर चूरू सीकर बाड़मेर व जालौर में है। इनके अतिरिक्त यह जयपुर, अलवर, भरतपुर, गंगानगर आदि में भी उत्पन्न किया जाता है।

आजकल राज्य में संकर-बाजरे का उत्पादन भी बढ़ रहा है। सन 1961 में पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पटियाला) ने अनेक अनुसंधान करके इस नए किस्म का उन्नत बाजरा निकाला। इसके उत्पादन के लिए रासायनिक खाद व अपेक्षाकृत अधिक पानी की आवश्यकता होती है। देश में उपभोग एवं उन्नत बीज के रूप में इसकी काफी मांग है।

ज्वार-ज्वार भी राजस्थान में निर्धन व्यक्तियों का भोजन है। इसके डंठल को पशुओं के चारे के लिए प्रयोग करते हैं। यह खरीफ की फसल है। वैसे तो इसे अधिक पानी की आवश्यकता होती है किन्तु जिन भागों में कम वर्षा होती है, वहां भी उत्पन्न हो जाती है। इसकी खेती के लिए सिंचाई आवश्यक नहीं है। राज्य में ज्वार की खेती के लिए पर्याप्त संभावनाएं हैं क्योंकि यह अनेक किस्म की होती है और नम एवं शुष्क भागों में हो जाती है।

राजस्थान के मध्यवर्ती एवं पूर्वी भागों में ज्वार विशेष रूप से होती है। पश्चिमी भागों में ज्वार प्रायः नहीं होती। अजमेर, उदयपुर, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़ और टोंक में राज्य के कुल ज्वार-क्षेत्र का लगभग 50 प्रतिशत भाग है। यह जून-जुलाई में बो दी जाती है और नवम्बर-दिसम्बर में तैयार हो जाती है।

मक्का-राजस्थान में मक्का खरीफ की फसल है। यह भी एक पौष्टिक [illegible] है। यह खाने एवं पशुओं के चारे दोनों ही काम में आती है। विदेशों में इसका उपयोग मुख्यतः [illegible] पशुओं के खिलाने में होता है। इसे खाकर पशु मोटे हो जाते हैं। इसके लिए अपेक्षाकृत अधिक पानी व उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता पड़ती है। यदि वर्षा देर से आती है तो फसल पर दुष्प्रभाव [illegible] है। इसे मध्य जून से मध्य जुलाई तक (विशेषतः प्रथम ग्रीष्म वर्षा के बाद) बो देते हैं और अक्टूबर-नवम्बर में फसल काट लेते हैं।

राजस्थान में कृषि के कुल क्षेत्र के लगभग 4 प्रतिशत भाग में मक्का की खेती होती है। राज्य में मक्का के प्रमुख क्षेत्र अरावली पर्वतीय प्रदेश और बनास नदी की घाटी में हैं जहाँ राज्य के कुल मक्का-क्षेत्र का 90 प्रतिशत क्षेत्र है। कुल मक्का-उत्पादन का लगभग 75 प्रतिशत भाग उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़ और अजमेर जिलों से प्राप्त होता है। [illegible] जयपुर व टोंक अन्य उत्पादक जिले हैं। पिछले कुछ वर्षों से संकर-मक्का की उन्नत किस्म के रूप में तैयार की जा रही है।

चावल-भारत के दक्षिणी व पूर्वी भागों में चावल अत्यन्त लोकप्रिय खाद्य है। इसके लिए [illegible] तापमान व अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है। चावल के लिए [illegible] की भी आवश्यकता होती है।

कपास के उत्पादन की दृष्टि से भारत में राजस्थान का कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं है। कुछ वर्षों पूर्व से राज्य में कपास का कुल उत्पादन होने लगा है। राजस्थान में उत्पन्न होने वाला कपास मोटा होता है [illegible]। राजस्थान में [illegible] लाख टन कपास का वार्षिक उत्पादन हो रहा है।

राजस्थान की कुल बोई हुई भूमि के लगभग एक प्रतिशत भाग में कपास की खेती की जाती है। कपास की खेती [illegible] की जाती है जहाँ [illegible] अधिक होती है अथवा जहाँ सिंचाई की व्यवस्था [illegible] है।

राजस्थान में कपास का अधिकांश उत्पादन उदयपुर, डूंगरपुर व बांसवाड़ा जिले में होता है। थोड़ा-बहुत कपास कोटा, बूंदी, जयपुर, गंगानगर, सवाईमाधोपुर आदि जिलों में भी उत्पन्न होता है।

चना-चना रबी की फसल है। चने की खेती के लिए अधिक पानी व ऊंचे तापमान की आवश्यकता नहीं होती। इसकी खेती शुष्क-खेती (Dry farming) प्रणाली से भी की जाती है। यह राजस्थान के कुल कृषि क्षेत्र के लगभग 11 प्रतिशत भाग में उत्पन्न किया जाता है।

चने का उत्पादन एवं सिंचाई क्षेत्र मुख्य रूप से गंगानगर जिले तक सीमित है। राजस्थान नहर परियोजना से प्राप्त सिंचाई सुविधाओं के कारण ही चने के क्षेत्र का यहाँ भारी केन्द्रीयकरण हुआ है। गंगानगर में इसे सिंचाई की व्यवस्था से उत्पन्न किया जाता है। सबसे अधिक चना गंगानगर में होता है। भरतपुर, अलवर, जयपुर, अजमेर, कोटा, टोंक, सवाईमाधोपुर आदि चना उत्पादक अन्य क्षेत्र हैं। वर्तमान राज्य में लगभग 12 लाख टन वार्षिक चना उत्पन्न हो रहा है।

दालें-दालों का महत्व काफी अधिक है। यह हमारे भोजन का प्रमुख अंग है। चने को छोड़कर राजस्थान के कुल कृषि क्षेत्र के लगभग 12 प्रतिशत भाग में दालें उत्पन्न की जाती हैं। मूंग, मोठ, अरहर व उड़द आदि दालों की खेती राजस्थान के विभिन्न भागों में की जाती है। सबसे अधिक मूंग व मोठ का उत्पादन होता है। मूंग व मोठ की खेती मुख्यतः शुष्क भागों में की जाती है। प्रायः मूंग व मोठ के उत्पादन-क्षेत्र वही हैं जो बाजरे के हैं। अरहर की खेती पूर्वी राजस्थान में व उड़द की खेती दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान में की जाती है।

तिलहन-राजस्थान में कृषि-उपज में तिलहन का भी प्रमुख स्थान है। सरसों की उपज मध्य राजस्थान, पूर्वी व दक्षिणी राजस्थान और उत्तर में गंगानगर जिले में की जाती है। तिल के उत्पादन में राजस्थान का भारत में महत्वपूर्ण स्थान है। अनुमान है कि भारत के कुल तिल के उत्पादन का लगभग 10 प्रतिशत भाग राजस्थान से ही प्राप्त होता है। अजमेर, पाली, सिरोही, गंगानगर व जालौर आदि जिलों में तिल का काफी उत्पादन होता है। इसके अतिरिक्त राई (अलवर, भरतपुर, व गंगानगर), अलसी (उदयपुर, कोटा व टोंक), मूंगफली (सवाईमाधोपुर, उदयपुर, भीलवाड़ा, भरतपुर आदि) अन्य प्रमुख तिलहन हैं।

गन्ना-गन्ना का उपयोग मुख्यतः चीनी व गुड़ बनाने में होता है। यह उष्ण कटिबन्ध का पौधा है। इसकी खेती के लिए ऊंचे तापमान की आवश्यकता होती है जो कि प्रायः 15° से० और 25° से० तक रहना चाहिये। गन्ने की खेती के लिए अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है। इसकी खेती के लिए 125से.मी. से 175 से.मी. तक वार्षिक वर्षा चाहिए। कम वर्षा वाले भागों में सिंचाई की सहायता से कृषि की जाती है।

यद्यपि विश्व में सबसे अधिक गन्ना उत्पन्न करने वाला देश भारत ही है किन्तु राजस्थान इसके उत्पादन की दृष्टि से महत्वशील नहीं है। राजस्थान में कुल कृषि भूमि के लगभग 0.5 प्रतिशत भूमि पर गन्ने की खेती होती है। उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, गंगानगर, बूंदी व टोंक

आदि गन्ने के प्रमुख उत्पादक जिले हैं। राजस्थान का गन्ना स्थानीय चीनी मिलों व गुड बनाने के काम आता है। राजस्थान में लगभग 4.5 लाख टन गन्ना वार्षिक उत्पन्न हो रहा है।

कपास–कपास की खेती के लिए ऊंचे तापमान, कम वर्षा व उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता होती है। कपास के रेशे तो वस्त्र बनाने के काम आते हैं और बिनौले पशुओं को खिलाने व वनस्पति-घी तैयार करने में काम आते हैं। अब राजस्थान में भी वनस्पति-घी बनाने के कारखाने हो गए हैं। राजस्थान में कपास की खेती सिंचाई के द्वारा ही होती है।

राजस्थान में कुल कृषि-भूमि के लगभग दो प्रतिशत भाग पर ही कपास की खेती की जाती है। सबसे अधिक गंगानगर जिले में होती है। भीलवाडा, चित्तौडगढ, उदयपुर, अजमेर, कोटा, भरतपुर, पाली, बांसवाडा व झालावाड आदि जिलों में भी कपास का उत्पादन होता है। यह ध्यान रहे कि ब्यावर, पाली आदि में सूती वस्त्र मिलें हैं।

तम्बाकू–तम्बाकू उष्ण कटिबन्ध का पौधा है। यह विभिन्न प्रकार की जलवायु में उत्पन्न हो जाती है। इसके लिए काली मिट्टी की आवश्यकता होती है। इसकी खेती राजस्थान में सिंचाई की सहायता से की जाती है। इसकी कृषि पर कर लगता है। जयपुर, भरतपुर, अलवर, उदयपुर, कोटा, बूंदी, सवाईमाधोपुर आदि तम्बाकू के प्रमुख उत्पादक क्षेत्र हैं।

अफीम–इसकी खेती भारत सरकार के नियंत्रण में होती है। चित्तौडगढ, बूंदी, कोटा व उदयपुर जिलों के कुछ भागों में इसकी खेती की जाती है।

मसाले–राजस्थान के अनेक भागों में जीरा, धनिया, मिर्च, मेथी, हल्दी आदि मसाले उत्पन्न किये जाते हैं। जयपुर, उदयपुर व कोटा में जीरा, धनिया, मिर्च आदि विशेष रूप से होते हैं। नागौर में मेथी के पत्तों में एक विशेष सुगन्ध होती है अतः वहां मेथी के पत्तों को सुखाकर बाहर भेजा जाता है।

फल व सब्जियां–राजस्थान में प्रायः सभी प्रकार की सब्जियां उत्पन्न की जाती हैं। उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान में सब्जियों का अपेक्षाकृत कम उत्पादन होता है। आलू, बैंगन, टमाटर, भिण्डी, तुरई, लौकी, कद्दू, अरबी, रतालू, मिर्च, गोभी, बन्द गोभी आदि अनेक प्रकार की सब्जियां उत्पन्न की जाती हैं। राजस्थान में विभिन्न प्रकार के फलों का उत्पादन भी होता है। प्रमुख फल आम है। जयपुर, कोटा, उदयपुर में विभिन्न प्रकार के आम उत्पन्न किए जाते हैं। राजस्थान के आमों की किस्म बहुत बढ़िया नहीं होती। इसके अतिरिक्त अनार, पपीते, सीताफल, सिंघाडे, फालसे, नारंगी, नींबू, माल्टे, चीकू, तरबूज, मतीरे, खरबूजे, बेर आदि अनेक प्रकार के फल राजस्थान में उत्पन्न किए जाते हैं। जोधपुर के अनार, बीकानेर के मतीरे व तरबूज, टोंक, सांभर व पाली के खरबूजे, उदयपुर के पपीते, शरीफे व ककडी, धौलपुर के नींबू प्रसिद्ध हैं। गंगानगर फलों के उत्पादन के लिए काफी प्रसिद्ध हो गया है। यहां के माल्टे (रक्त के रंग के रसफले) सारे भारत में प्रसिद्ध है। पिछले कुछ वर्षों से राजस्थान के विभिन्न भागों में अंगूर का उत्पादन बडे पैमाने पर हो रहा है।

राज्य कृषि विभाग द्वारा संचालित विकास कार्यक्रम

कृषि विस्तार योजना

किसानों को कृषि सम्बन्धी नवीनतम जानकारी देने, योजनाबद्ध तरीके से कृषि करने तथा कृषि बढ़ाने के उद्देश्य से वर्ष 1977 से प्रशिक्षण एवं भ्रमण पर आधारित कृषि-विस्तार एवं अनुसंधान परियोजना शुरू की गई। इस योजना के पहले दौर में अधिक कृषि क्षमता वाले 18 जिलों तथा वर्ष 1984–85 में छः और जिलों को शामिल किया गया।

योजना के फलस्वरूप राज्य में प्रति हेक्टेयर उर्वरकों की खपत दुगुनी हो गई है। इसी प्रकार जहां वर्ष 1976–77 में 31,220 क्विन्टल उन्नत बीजों का प्रयोग किया गया वहां यह बढ़कर वर्ष

1985-86 में 2,29,599 क्विन्टल तक पहुँच गया। वर्ष 1986-87 मे यह 1,13,400 क्विन्टल रहा।

बीज वितरण–अधिक उपज देने वाले व अन्य उन्नत किस्मों के 1 29 लाख क्विन्टल प्रमाणित बीजों का वर्ष 1987–88 में वितरण किया गया। वर्ष 1988–89 के लिये 2 79 लाख क्वि० के वितरण का लक्ष्य रखा गया।

बीस सूत्री कार्यक्रम-राज्य में बीस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत दलहन व तिलहन की फसलों का उत्पादन बढ़ाने फल-सब्जी की खेती को बढ़ावा देने तथा बारानी कृषि में कृषि विकास के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न योजनाओं व कार्यक्रमों के माध्यम से विशेष प्रयास किये जा रहे हैं।

राष्ट्रीय दलहन विकास परियोजना के अन्तर्गत वर्ष 1986–87 में कुल 8 79 लाख टन दलहन का उत्पादन हुआ। वर्ष 1987–88 में अकाल के कारण यह उत्पादन घटकर 5 50 लाख टन ही रह गया।

इसी प्रकार राष्ट्रीय तिलहन विकास परियोजना के अन्तर्गत वर्ष 1986–87 में कुल 8 81 लाख टन तिलहन का उत्पादन हुआ। वर्ष 1987-88 में यह घटकर 11 62 लाख टन रह जाने का अनुमान था।

शुष्क खेती कार्यक्रम – नये बीस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत सूखी खेती वाले क्षेत्रों में शुष्क खेती की उन्नत तकनीक अपनाये जाने पर विशेष बल दिया जा रहा है। इसमें उन्नत बीजों का प्रयोग मिश्रित-कृषि उर्वरक प्रयोग पौध संरक्षण उपाय व उचित पौध संख्या बनाए रखने की तकनीक अपनाई जाती है।

उर्वरक वितरण–निरन्तर विषम परिस्थितियों के बावजूद राज्य में उर्वरकों का उपयोग बढ़ा है। वर्ष 1985–86 में 2.21 लाख टन तथा 1986–87 में 2.47 टन उर्वरकों का वितरण किया गया। वर्ष 1987–88 में अत्यन्त विषम परिस्थितियों के बावजूद 2.13 लाख टन उर्वरकों की खपत हुई।

वर्ष 1985–86 में उर्वरकों की खपत प्रति हैक्टेयर 12.18 किलोग्राम रही। वर्ष 1986–87 में यह 14.72 और वर्ष 1987–88 में 17.68 (अनुमानित) किलोग्राम प्रति हैक्टेयर रही।

पौध संरक्षण–फसलों को कीड़ों व बीमारियों से बचाने के लिए कीटनाशक औषधियों का प्रयोग राज्य में निरन्तर बढ़ रहा है। वर्ष 1986–87 में 3238 टन औषधियों का वितरण किया गया तथा वर्ष 1987–88 में 58 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में पौध संरक्षण उपाय अपनाये गए। वर्ष 1987–88 में दिसम्बर, 1987 तक 36.50 लाख हैक्टेयर में ये उपाय अपनाये गए।

प्रदर्शन एवं मिनीकिट–कृषि अनुसंधान का किसानों को सीधा साक्षात्कार कराने के लिए वर्ष 1986–87 में, 1,28,923 तथा 1987–88 में 66,335 (अनुमानित) मिनीकिट प्रदर्शनों का आयोजन किया गया।

भू-संरक्षण–बीस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत शुष्क खेती को सम्बल प्रदान करने के उद्देश्य से राज्य में भू-संरक्षण कार्यों की क्रियान्विति पर विशेष जोर दिया जा रहा है। राज्य में विभिन्न भू-संरक्षण कार्यों का क्रियान्वयन विभिन्न योजनाओं-ग्रामीण भूमिहीन रोजगार कार्यक्रम, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम, सूखा संभाव्य क्षेत्र कार्यक्रम तथा मरु विकास कार्यक्रम आदि के अन्तर्गत किया जा रहा है।

कृषि विपणन बोर्ड एवं निदेशालय

किसानों को उनके परिश्रम का उचित मूल्य दिलाने तथा उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर कृषि उपजें उपलब्ध कराने हेतु राज्य सरकार द्वारा 1963 में कृषि उपज मण्डी नियम बनाए गए। इसके

आदि गन्ने के प्रमुख उत्पादक जिले हैं। राजस्थान का गन्ना स्थानीय चीनी मिलों व गुड़ बनाने के काम आता है। राजस्थान में लगभग 4.5 लाख टन गन्ना वार्षिक उत्पन्न हो रहा है।

कपास–कपास की खेती के लिए ऊंचे तापमान, कम वर्षा व उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता होती है। कपास के रेशे तो वस्त्र बनाने के काम आते हैं और बिनौले पशुओं को खिलाने व वनस्पति-घी तैयार करने में काम आते हैं। अब राजस्थान में भी वनस्पति-घी बनाने के कारखाने हो गए हैं। राजस्थान में कपास की खेती सिंचाई के द्वारा ही होती है।

राजस्थान में कुल कृषि-भूमि के लगभग दो प्रतिशत भाग पर ही कपास की खेती की जाती है। सबसे अधिक गंगानगर जिले में होती है। भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, अजमेर, कोटा, भरतपुर, पाली, बांसवाडा व झालावाड आदि जिलों में भी कपास का उत्पादन होता है। यह ध्यान रहे कि ब्यावर, पाली आदि में सूती वस्त्र मिलें हैं।

तम्बाकू–तम्बाकू उष्ण कटिबन्ध का पौधा है। यह विभिन्न प्रकार की जलवायु में उत्पन्न हो जाती है। इसके लिए काली मिट्टी की आवश्यकता होती है। इसकी खेती राजस्थान में सिंचाई की सहायता से की जाती है। इसकी कृषि पर कर लगता है। जयपुर, भरतपुर, अलवर, उदयपुर, कोटा, बूंदी, सवाईमाधोपुर आदि तम्बाकू के प्रमुख उत्पादक क्षेत्र हैं।

अफीम–इसकी खेती भारत सरकार के नियंत्रण में होती है। चित्तौड़गढ़, बूंदी, कोटा व उदयपुर जिलों के कुछ भागों में इसकी खेती की जाती है।

मसाले–राजस्थान के अनेक भागों में जीरा, धनिया, मिर्च, मेथी, हल्दी आदि मसाले उत्पन्न किये जाते हैं। जयपुर, उदयपुर व कोटा में जीरा, धनिया, मिर्च आदि विशेष रूप से होते हैं। नागौर में मेथी के पत्तों में एक विशेष सुगन्ध होती है अतः वहां मेथी के पत्तों को सुखाकर बाहर भेजा जाता है।

फल व सब्जियां–राजस्थान में प्रायः सभी प्रकार की सब्जियां उत्पन्न की जाती हैं। उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान में सब्जियों का अपेक्षाकृत कम उत्पादन होता है। आलू, बैंगन, टमाटर, भिण्डी, तुरई, लौकी, कद्दू, अरबी, रतालू, मिर्च, गोभी, बन्द गोभी आदि अनेक प्रकार की सब्जियां उत्पन्न की जाती हैं। राजस्थान में विभिन्न प्रकार के फलों का उत्पादन भी होता है। प्रमुख फल आम है। जयपुर, कोटा, उदयपुर में विभिन्न प्रकार के आम उत्पन्न किए जाते हैं। राजस्थान के आमों की किस्म बहुत बढ़िया नहीं होती। इसके अतिरिक्त अनार, पपीते, सीताफल, सिंघाडे, फालसे, नारंगी, नींबू, माल्टे, चीकू, तरबूज, मतीरे, खरबूजे, बेर आदि अनेक प्रकार के फल राजस्थान में उत्पन्न किए जाते हैं। जोधपुर के अनार, बीकानेर के मतीरे व तरबूज, टोंक, सांभर व पाली के खरबूजे, उदयपुर के पपीते, शरीफे व ककड़ी, धौलपुर के नींबू प्रसिद्ध हैं। गंगानगर फलों के उत्पादन के लिए काफी प्रसिद्ध हो गया है। यहां के माल्टे (रक्त के रंग के रसवाले) सारे भारत में प्रसिद्ध हैं। पिछले कुछ वर्षों से राजस्थान के विभिन्न भागों में अंगूर का उत्पादन बड़े पैमाने पर हो रहा है।

राज्य कृषि विभाग द्वारा संचालित विकास कार्यक्रम

कृषि विस्तार योजना

किसानों को कृषि सम्बन्धी नवीनतम जानकारी देने, योजनाबद्ध तरीके से कृषि करने तथा कृषि बढ़ाने के उद्देश्य से वर्ष 1977 से प्रशिक्षण एवं भ्रमण पर आधारित कृषि-विस्तार एवं अनुसंधान परियोजना शुरू की गई। इस योजना के पहले दौर में अधिक कृषि क्षमता वाले 18 जिलों तथा वर्ष 1984–85 में छः और जिलों को शामिल किया गया।

योजना के फलस्वरूप राज्य में प्रति हैक्टेयर उर्वरकों की खपत दुगुनी हो गई है। इसी प्रकार जहां वर्ष 1976–77 में 31,220 क्विन्टल उन्नत बीजों का प्रयोग किया गया वहां यह बढ़कर वर्ष

1985-86 में 2,29,599 क्विन्टल तक पहुँच गया। वर्ष 1986-87 में यह 1,13,400 क्विन्टल रहा।

बीज वितरण-अधिक उपज देने वाले व अन्य उन्नत किस्मों के 1 29 लाख क्विन्टल प्रमाणित बीजों का वर्ष 1987-88 में वितरण किया गया। वर्ष 1988-89 के लिये 2 79 लाख क्वि० के वितरण का लक्ष्य रखा गया।

बीस सूत्री कार्यक्रम-राज्य में बीस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत दलहन व तिलहन की फसलों का उत्पादन बढ़ाने, फल-सब्जी की खेती को बढ़ावा देने तथा बारानी कृषि में कृषि विकास के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न योजनाओं व कार्यक्रमों के माध्यम से विशेष प्रयास किये जा रहे हैं।

राष्ट्रीय दलहन विकास परियोजना के अन्तर्गत वर्ष 1986-87 में कुल 8 79 लाख टन दलहन का उत्पादन हुआ। वर्ष 1987-88 में अकाल के कारण यह उत्पादन घटकर 5 50 लाख टन ही रह गया।

इसी प्रकार राष्ट्रीय तिलहन विकास परियोजना के अन्तर्गत वर्ष 1986-87 में कुल 8 81 लाख टन तिलहन का उत्पादन हुआ। वर्ष 1987-88 में यह घटकर 11 62 लाख टन रह जाने का अनुमान था।

शुष्क खेती कार्यक्रम:- नये बीस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत सूखी खेती वाले क्षेत्रों में शुष्क खेती की उन्नत तकनीक अपनाये जाने पर विशेष बल दिया जा रहा है। इसमें उन्नत बीजों का प्रयोग मिश्रित-कृषि उर्वरक प्रयोग, पौध संरक्षण उपाय व उचित पौध संख्या बनाए रखने की तकनीक अपनाई जाती है।

उर्वरक वितरण-निरन्तर विषम परिस्थितियों के बावजूद राज्य में उर्वरकों का उपयोग बढ़ा है। वर्ष 1985-86 में 2.21 लाख टन तथा 1986-87 में 2 47 टन उर्वरकों का वितरण किया गया। वर्ष 1987-88 में अत्यन्त विषम परिस्थितियों के बावजूद 2.13 लाख टन उर्वरकों की खपत हुई।

वर्ष 1985-86 में उर्वरकों की खपत प्रति हैक्टेयर 12.18 किलोग्राम रही। वर्ष 1986-87 में यह 14.72 और वर्ष 1987-88 में 17.68 (अनुमानित) किलोग्राम प्रति हैक्टेयर रही।

पौध संरक्षण-फसलों को कीड़ों व बीमारियों से बचाने के लिए कीटनाशक औषधियों का प्रयोग राज्य में निरन्तर बढ़ रहा है। वर्ष 1986-87 में 3238 टन औषधियों का वितरण किया गया तथा वर्ष 1987-88 में 58 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में पौध संरक्षण उपाय अपनाये गए। वर्ष 1987-88 में दिसम्बर, 1987 तक 36.50 लाख हैक्टेयर में ये उपाय अपनाये गए।

प्रदर्शन एवं मिनीकिट-कृषि अनुसंधान का किसानों को सीधा साक्षात्कार कराने के लिए वर्ष 1986-87 में, 1,28,923 तथा 1987-88 में 66,335 (अनुमानित) मिनीकिट प्रदर्शनों का आयोजन किया गया।

भू-संरक्षण-बीस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत शुष्क खेती को सम्बल प्रदान करने के उद्देश्य से राज्य में भू-संरक्षण कार्यों की क्रियान्विति पर विशेष जोर दिया जा रहा है। राज्य में विभिन्न भू-संरक्षण कार्यों का क्रियान्वयन विभिन्न योजनाओं-ग्रामीण भूमिहीन रोजगार कार्यक्रम, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम, सूखा संभाव्य क्षेत्र कार्यक्रम तथा मरु विकास कार्यक्रम आदि के अन्तर्गत किया जा रहा है।

कृषि विपणन बोर्ड एवं निदेशालय

किसानों को उनके परिश्रम का उचित मूल्य दिलाने तथा उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर कृषि उपजें उपलब्ध कराने हेतु राज्य सरकार द्वारा 1963 में कृषि

ला ग्रामीण विकास अभिकरण, अजमेर द्वारा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के लिए विभिन्न विकास योजनाओं की क्रियान्विति :—

निर्धनतम परिवारों को लाभान्वित कराना — चयनित निर्धनतम परिवारों को स्वरोजगार उपलब्ध कराने हेतु ई आर डी पी) योजना में बैंक से ऋण उपलब्ध कराके संसाधन उपलब्ध कराना व अभिकरण द्वारा अधिकतम अनुदान राशि 3000 00 अनु जाति व जन जाति हेतु 5000 00 तक देय है।

जीवनधारा — एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम में चयनित अनु जाति व जनजाति के कृषकों को भूमि पर पूर्व में कूप नहीं होने पर युक्त नाबार्ड इकाई लागत के अनुसार कूप निर्माण को सिंचाई हेतु सुविधा उपलब्ध करवाना।

ट्राइसम व स्काइट योजना — शहरी क्षेत्र में अनुसूचित जाति के एवं ग्रामीण क्षेत्र में चयनित परिवारों के नवयुवकों, नवयुवतियों को ग्रह का प्रशिक्षण दिलाकर स्वरोजगार के लिए बैंक से ऋण उपलब्ध कराके स्वावलम्बी बनाना।

जवाहर रोजगार योजना — प्रत्येक ग्राम पंचायत में ग्रामीण निर्धनतम परिवारों को रोजगार के साधन उपलब्ध कराके ग्राम विकास ाना।

मैमित्र योजना — लघु एवं सीमान्त कृषकों को कृषि उत्पादन बढ़ाने हेतु नलकूप निर्माण, कूप गहरा कराना, फव्वारों से सिंचाई ाना एवं भूमि सुधार नाली निर्माण विद्युत व डीजल पम्प सेट आदि के लिए बैंकों से ऋण स्वीकृत कराके अनुदान उपलब्ध करवाना, ोकिटस का वितरण सामूहिक एवं व्यक्तिगत भूमि विकास की सुविधा उपलब्ध कराना।

बायोगैस — इस योजना में ईंधन खाद बनाना तथा रोशनी के लिए बायोगैस संयंत्रों का निर्माण किया जाता है एवं आकार के अनुसार ान देय है।

कुटीर ज्योति कार्यक्रम — ग्रामीण क्षेत्र में गरीब चयनित अनु जनजाति एवं अन्य जाति के घरों में विद्युत कनेक्शन कराके बिजली सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।

सामाजिक सुरक्षा एवं बीमा योजना — अभिकरण के माध्यम से राज्य सरकार द्वारा जनता को लाभ व सुरक्षा प्रदान करने हेतु निम्न योजना सम्पादित की जा रही है —

भूमिहीन खेतीहर श्रमिकों की बीमा योजना — समस्त खेतीहर भूमिहीन खेतीहर श्रमिकों के मुखिया का बीमा 15 अगस्त 1987 से किया है। मृत्यु पर 1000 की राशि भारतीय जीवन बीमा निगम से देय है।

आई आर डी सामूहिक बीमा योजना — 1 4 88 से एग्राविका अन्तर्गत लाभान्वित परिवारों की मृत्यु होने पर बीमित के वारिश को 0/- एवं दुर्घटना पर 6000 की राशि भारतीय जीवन बीमा निगम से देय है।

सामाजिक दुर्घटना योजना .— 7500/- से कम की वार्षिक आय वाले व्यक्ति की दुर्घटना में मृत्यु पर 3000/- तक की राशि का ान ओरियन्टल बीमा कम्पनी द्वारा देय है।

झोंपड़ी व कुटीर उद्योग बीमा योजना .— ग्रामीण क्षेत्र में गरीब परिवार जो झोंपड़ीनुमा मकान में निवास करते हैं अथवा कुटीर उद्योग ते हैं झोंपड़ी में प्राकृतिक विपदाओं एवं अग्नि में नष्ट हो जाने पर 9000/-झोंपड़ी हेतु व 500/- सामान हेतु क्षतिपूर्ति नेशनल बीमा ना द्वारा देय है।

एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम में उपलब्ध पशुओं का बीमा :— एग्राविं में उपलब्ध कराये गये पशुओं का तीन वर्ष का बीमा दानित राशि पर देय है। मृत्यु पर बीमा कम्पनी द्वारा क्लेम निर्धारण कराके पुनः पशु क्रय कराया जाता है।

सीलिंग आवंटियों को भूमि सुधार :— सीलिंग में सरप्लस हुई भूमि के लघु सीमान्त कृषकों को भूमि सुधार हेतु अधिकतम 0/- तक की राशि देय है।

बंधक श्रमिक मुक्ति कार्यक्रम :— किसी व्यक्ति को जमींदार, जागीरदार, ठेकेदार द्वारा बन्धक श्रमिक बनाये रखने का पता लगने बन्धक श्रमिक को मुक्ति की कार्यवाही कर ऋण व अनुदान उपलब्ध कराके स्वरोजगार के लिए लाभान्वित कराया जाता है।

उपरोक्त योजनाओं में लाभान्वित हेतु विकास अधिकारी अथवा अभिकरण कार्यालय में निजी सम्पर्क करें।

अजीत कुमार सिंह	बी.डी. जोशी
आई.ए.एस.	आई.ए.एस.
अतिरिक्त जिलाधीश (विकास)	अध्यक्ष एवं कलक्टर
जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, अजमेर	जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, अजमेर

अन्तर्गत अप्रैल 1964 में कोटा, सिरोही, पाली तथा श्रीगंगानगर जिलों में नौ कृषि उपज मण्डी समितियों का गठन किया गया।

मण्डी नियमन कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए आगे चलकर 6 जून, 1974 को कृषि विपणन बोर्ड तथा फरवरी 1980 में कृषि विपणन निदेशालय की स्थापना की गई। बोर्ड और निदेशालय द्वारा निम्न कार्य किये जाते हैं–

कृषि विपणन बोर्ड द्वारा	कृषि विपणन निदेशालय द्वारा
1. मण्डी समितियों का निर्माण	1. मण्डी नियमन
2. मण्डी समितियों की बजट स्वीकृतियां एवं अंकेक्षण अनुपालना	2. एगमार्क प्रयोगशालाओं की स्थापना एवं व्यावसायिक वर्गीकरण
3. मण्डी समितियों के कर्मचारियों एवं सचिवों को प्रशिक्षण	3 मण्डी परिज्ञान सेवा
4. प्रचार एवं प्रसार कार्य	4 प्रशासन एवं प्रशिक्षण
5. कृषि विपणन का अनुसंधान	

गत पाँच वर्षों में मण्डी शुल्क से आय

वर्ष	आय (करोड़ रु० में)
1983–84	14 46
1984–85	15 82
1985–86	18 29
1986–87	24 37
1987–88	21.07 (5 जनवरी 88 तक)

राज्य कृषि विपणन विभाग के अन्तर्गत वर्ष 1987–88 के अन्त में 138 मुख्य मंडी प्रांगण एवं 241 गौण मण्डी प्रांगण कार्यरत थे। विपणन बोर्ड द्वारा मंडी प्रांगणों के विकास पर अपनी स्थापना से लेकर वर्ष 1987–88 तक कुल 6310.91 लाख रुपये खर्च किये गए। 31 मार्च 1987 तक बोर्ड द्वारा 3152 कि०मी० लम्बी सम्पर्क सड़कों का निर्माण भी 3505 55 लाख रु० खर्च कर करवाया गया।

राजस्थान राज्य बीज निगम

किसानों को उचित कीमत एवं सही समय पर उन्नत किस्मों का बीज उपलब्ध कराने के ध्येय के साथ वर्ष 1978 में राष्ट्रीय बीज परियोजना के द्वितीय चरण में "राजस्थान स्टेट सीड्स कार्पोरेशन लि०" की स्थापना भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 के अन्तर्गत की गई। इस निगम की अधिकृत पूंजी 4 करोड़ रुपये है। वर्तमान में निगम के कुल 2117 अंशधारी सदस्य हैं। [illegible] इसके अध्यक्ष हैं।

यह निगम प्रमुख खाद्यान्नों, दलहन, तिलहन, रेशेदार एवं अन्य फसलों की उन्नत एवं अधिसूचित किस्मों का बीज उत्पादन अपने अंशधारी बीज उत्पादकों, स्वयं के बीज गुणन केन्द्रों एवं केन्द्रीय फार्म निगम के माध्यम से, कृषि विभाग द्वारा दर्शाई गई विभिन्न किस्मों की मांग के अनुसार करता है।

खरीफ 1987 में निगम द्वारा कुल 3210 हेक्टेयर भूमि में बीज उत्पादन कार्यक्रम हाथ में लेकर कुल 10,500 क्विन्टल प्रमाणित बीज प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया। रबी 1987-88 में 3900 हेक्टेयर क्षेत्र में बुवाई कर 60,000 क्विन्टल विभिन्न किस्मों के बीज प्राप्त करने का अनुमान था।

विपणन–राजस्थान स्टेट सीड्स कार्पोरेशन लि०, अपने 25 हैण्डलिंग एजेन्ट एवं स्वयं के 12 यूनिट तथा 3 होलसेलर के माध्यम से 131 सहकारी समितियों एवं 546 अधिकृत बीज विक्रताओं के सहयोग से राज्य के कोने कोने में प्रमाणित एवं उन्नत बीज उपलब्ध कराता है। हालांकि वर्ष 87–88 में राज्य में भंयकर सूखे का सामना करना पडा किन्तु निगम द्वारा इन विषम परिस्थितियों में भी राज्य कृषि विभाग की मांग के अनुसार आवश्यक मात्रा में वांछित किस्मों का बीज उपलब्ध कराया गया।

वर्ष 87 में निम्न मात्रा में बीज वितरण निगम के माध्यम से किया गया:–

खरीफ–	
बाजरा	6180 क्विन्टल
ज्वार	2390 क्विन्टल
मक्का	1934क्विन्टल
धान	1320 क्विन्टल
दलहन	660 क्विन्टल
तिलहन	2642 क्विन्टल
अन्य फसल	6000 क्विन्टल

रबी	
गेहूं	22116 क्विन्टल
सरसों	3372 क्विन्टल

सिंचाई

क्षेत्रफल के आधार पर भारतवर्ष में राजस्थान दूसरा सबसे बडा राज्य है। लेकिन राजस्थान में ही थार के बाद संसार का दूसरा सबसे बडा मरुस्थल भी है। इस राज्य में वर्षा अनिश्चित एवं असमान होती है तथा यहां उपलब्ध दुर्लभ एवं सीमित भूजल स्रोत राज्य की सिंचाई आवश्यकता की पूर्ति हेतु पर्याप्त नहीं है।

राज्य में योजनाकाल से पहले कुल चार लाख हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध थी। इसमें 3.2 लाख हैक्टेयर में वृहद एवं मध्यम परियोजनाओं से तथा 0 8 लाख हैक्टेयर में लघु परियोजनाओं से सिंचाई होती थी।

क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान देश का 10 44 प्रतिशत तथा कृषि योग्य क्षेत्र की दृष्टि से 13 8 प्रतिशत है जबकि देश में होने वाली वर्षा का मात्र 1 1 प्रतिशत पानी राजस्थान में बरसता है। अत प्रारम्भ से ही इस राज्य की सिंचाई क्षमताओं के विस्तार के लिए बाहरी पानी की आवश्यकता होती है।

सिंचाई सुविधाओं का विस्तार

राज्य में छठी पंचवर्षीय योजना के अंत तक 19 95 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई क्षमता सृजित की जा चुकी थी। सातवीं योजना के अन्तर्गत वर्ष 1986-87 में सिंचाई एवं बाढ नियन्त्रण के लिए 110.31 करोड रुपये योजना मद में से खर्च किये गए। इनमें से इन्दिरा गांधी नहर परियोजना पर लगभग 50 38 करोड रु० व माही परियोजना पर लगभग 17 56 करोड रु० व्यय किये गए। इस वर्ष इन्दिरा गांधी नहर से 18 10 हजार हैक्टेयर, माही परियोजना से 11.57 हजार हैक्टेयर तथा सिंचाई विभाग के मुख्य अभियन्ता द्वारा नियन्त्रित परियोजनाओं से 17 39 हजार हैक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र में सिंचाई क्षमता सृजित की गई। इस प्रकार वर्ष के दौरान कुल 47 06 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई क्षमता सृजित की गई।

परियोजनाएँ

राज्य में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के लिए जो परियोजनाएं प्रारंभ की गई है वे दो प्रकार की है- (I) बहुउद्देशीय परियोजनायें व (II) सिंचायी परियोजनाये। बहुउद्देशीय परियोजनायें सिंचायी के साथ-साथ अन्य उद्देश्यों को भी ध्यान में रखते हुए बनाई गई हैं तो सिंचायी परियोजनाओं का उद्देश्य कृषि कार्य हेतु सिंचाई सुविधा प्रदान करना है। ये परियोजनाएँ इस प्रकार है-

(I) बहुउद्देशीय परियोजनाएँ
(क) चम्बल परियोजना
(ख) व्यास परियोजना
(ग) भाखड़ा-नांगल परियोजना
(घ) माही बजाज सागर परियोजना
(II) अन्य सिंचाई परियोजनाएँ
(क) इन्दिरा गांधी नहर परियोजना
(ख) जाखम परियोजना
(ग) मेजा फीडर
(घ) गुडगांव नहर एवं ओखला परियोजना

चम्बल परियोजना

चम्बल परियोजना राजस्थान तथा मध्यप्रदेश का संयुक्त उपक्रम है। यह एक बहुउद्देशीय परियोजना है जिस पर राजस्थान एवं मध्यप्रदेश का बराबर व्यय हुआ है तथा दोनों ही राज्य समान अनुपात में सिंचाई एवं विद्युत लाभ प्राप्त कर रहे हैं। राजस्थान का कोटा जिला इससे मुख्य रूप से लाभान्वित हो रहा है। इसके प्रथम चरण में गांधी सागर, कोटा बैराज, बायीं तथा दाहिनी मुख्य नहरें हैं।

इन दोनों नहरों में प्रथम बार पानी 1960-61 में छोड़ा गया था। द्वितीय चरण में राणा प्रताप सागर आता है जो कि वर्ष 1970 में राष्ट्र को समर्पित किया गया था। तृतीय चरण में जवाहर सागर बांध व विद्युत गृह हैं। इस परियोजना पर ये सभी कार्य पूर्ण हो चुके हैं जिन पर राज्य के कुल 65 करोड रु० खर्च हुए।

व्यास परियोजना

रावी और व्यास नदियों के जल का उपयोग करने के लिए पंजाब, हरियाणा और राजस्थान द्वारा संयुक्त रूप से यह बहुउद्देशीय परियोजना प्रारंभ की गई। इस परियोजना को दो चरणों में पूरा किया गया। प्रथम चरण में व्यास-सतलज लिंक नहर का निर्माण किया गया और द्वितीय चरण में पोंग बांध का निर्माण किया गया है। इस परियोजना पर राज्य द्वारा कुल 150 करोड रु० खर्च किये गए।

रावी-व्यास जल विवाद- सन् 1955 के समझौते के आधार पर उस समय उपलब्ध कुल 15.85 मिलियन एकड फीट पानी में से पंजाब को 3.5 मिलियन एकड फीट, हरियाणा को 3.5 मिलियन एकड़ फीट, राजस्थान को 8.0 मिलियन एकड फीट व शेष 0.85 मिलियन एकड फीट जम्मू व कश्मीर तथा दिल्ली को देना तय हुआ।

1981 में जब इन नदियों में जल बढ़ा हुआ (17.17 मिलियन एकड फीट) पाया गया तो इस समझौते के अनुसार राज्यों के हिस्से को पुनर्निर्धारित करके पंजाब को 4.2 मिलियन एकड फीट, हरियाणा को 3.5 मिलियन एकड फीट तथा राजस्थान को 8.6 मिलियन एकड फीट पानी आवंटित किया गया।

24 जुलाई, 1985 को प्रधानमंत्री राजीव गांधी और संत हरचन्दसिंह लोंगोवाल के मध्य पंजाब में शांति के लिए जो समझौता हुआ उसमें पुनः इस विवाद को घसीट लिया गया। इस समझौते की धारा 9.1 के अनुसार पंजाब, हरियाणा और राजस्थान को मिलने वाले जल की मात्रा 1.7.85 को इन राज्यों द्वारा इस परियोजना से लिये जाने वाले जल के आधार पर तय की जाने वाली थी। समझौते के क्रियान्वयन में सहयोग देने के लिए 24 जनवरी, 1986 को भारत सरकार द्वारा न्यायमूर्ति इराडी की अध्यक्षता में एक न्यायाधिकरण का गठन किया गया। राजस्थान द्वारा 1.7.85 को इस परियोजना से केवल 5.5 मिलियन एकड फीट पानी ही उपयोग में लिया जा रहा था। अपने हिस्से के आधिक्य का उपयोग करने की अनुमति राजस्थान ने पंजाब को तब तक के लिए दे रखी थी, जब तक कि इन्दिरा गांधी नहर क्षेत्र में इस पानी के उपयोग के लिए यह आधारभूत ढांचा तैयार नहीं कर लेता।

अतः उपरोक्त समझौता की धारा 9.1 के अनुसार राजस्थान का चिन्तित होना स्वाभाविक था। लेकिन मई, 1987 में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में इराडी न्यायाधिकरण ने राजस्थान के पूर्वतन हिस्से 8.6 मिलियन एकड फीट को बरकरार रखा।

भाखड़ा-नांगल परियोजना

यह बहुउद्देशीय परियोजना भी पंजाब, हरियाणा और राजस्थान की संयुक्त योजना है। इस परियोजना पर राजस्थान का कुल 27.90 करोड रु० खर्च हुआ है। इस परियोजना में राजस्थान को नांगल बांध पर सतलज नदी के कुल उपलब्ध पानी का 15.22 प्रतिशत मिलना तय है।

माही-बजाज सागर परियोजना

माही-बजाज सागर परियोजना गुजरात एवं राजस्थान के सहयोग से निर्माणाधीन एक प्रमुख सिंचाई एवं जल विद्युत परियोजना है। इस परियोजना से मुख्य रूप से बांसवाडा जिला लाभान्वित होगा। प्रारम्भ में यह परियोजना एक मध्यम सिंचाई परियोजना के रूप में स्वीकृत हुई थी, जिसका शिलान्यास वर्ष 1960 में हुआ था। इसके पश्चात परियोजना के परिवर्तित स्वरूप की स्वीकृति योजना आयोग से नवम्बर 1971 में प्राप्त हुई तथा तीव्र गति से निर्माण कार्य वांछित धनराशि उपलब्ध होने पर 1971-75 में प्रारम्भ हुआ।

इस परियोजना के स्वीकृत अनुमानों के अनुसार कुल 80 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जानी थी लेकिन अब संशोधित अनुमान के अनुसार कुल एक लाख 44 हजार 500 हैक्टेयर क्षेत्र में यह सुविधा उपलब्ध कराया जाना सम्भव है। परियोजना द्वारा सिंचाई का शुभारंभ नवम्बर 1983 में किया गया। मार्च 1988 को अंत तक कुल 71 हजार 200 हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध करा दी गई।

इस परियोजना को तीन भागों में विभक्त किया गया-

(1) **इकाई प्रथम (बांध)**- बांसवाडा शहर से 16 कि.मी. दूर बोरखेडा ग्राम के पास बनाया गया यह बांध 3109 मीटर लम्बा है। इसकी उपयोगी जल ग्रहण क्षमता 1830 लाख घन मीटर है।

(2) **इकाई द्वितीय (नहरें)**- सिंचाई के लिए बांसवाडा के पास कागदी पिकअप वियर से दो नहरें (दाईं व बाईं मुख्य नहरें) निकाली गई हैं, जिनकी लम्बाई क्रमशः 71.72 किमी. व 36.12 किमी. है तथा इनकी वितरिकाओं की कुल लम्बाई 854 किमी. है।

(3) **इकाई तृतीय (विद्युत उत्पादन सम्बन्धी)**- परियोजना की इकाई तृतीय में विद्युत उत्पादन किया जाना है। इसमें विद्युत गृह की दो इकाईयों द्वारा विद्युत उत्पादन कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है तथा दूसरे विद्युत गृह का निर्माण कार्य किया जा रहा है।

इस परियोजना के पूर्ण होने पर बांसवाडा जिले का सिंचित क्षेत्र समृद्ध बन जायेगा तथा वार्षिक खाद्य उत्पादन में व्यापक वृद्धि होगी। वर्तमान में इस पर 29 हजार श्रमिक कार्यरत हैं।

इन्दिरा गांधी नहर परियोजना

इस परियोजना का विस्तृत विवरण आगे के पृष्ठों पर दिया जा रहा है।

जाखम परियोजना

यह एक वृहद् वाणिज्यिक सिंचाई परियोजना है जिसके अन्तर्गत 253 मीटर लम्बे एवं 81 मीटर ऊंचे बांध का निर्माण किया जा रहा है। परियोजना पर कार्य वर्ष 1969 में प्रारम्भ हो गया था। मुख्य बांध चित्तौडगढ जिले की प्रतापगढ तहसील के अनूपपुरा ग्राम के समीप स्थित है एवं पिक-अप वियर उदयपुर जिले की धारियावाद तहसील के नागलिया ग्राम में स्थित है। इस परियोजना के पूर्ण होने पर आदिवासी क्षेत्र की धारियावाद तहसील के 67 गांवों की लगभग 21 हजार हैक्टेयर भूमि पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

मेजा फीडर परियोजना

इस योजना के अनुसार बनास नदी के पानी को मेजा जलाशय में, जो कि भीलवाडा जिले में स्थित है, लाने हेतु एक फीडर नहर, जिसकी आंकलित लम्बाई 58.14 कि० मी० है, का निर्माण किया जा रहा है। परियोजना को दो मुख्य भागों, पिक-अप वियर व फीडर नहर, में विभाजित किया गया है। पिक-अप

वियर चित्तौडगढ जिले की राशमी तहसील के मात्रीकुंडिया ग्राम में है। इस परियोजना की अनुमानित मूल लागत 1967 लाख रुपये है तथा इससे भीलवाड़ा जिले की 12514 हैक्टेयर अतिरिक्त भूमि में सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

गुड़गांव नहर एवं ओखला बैराज

वर्षा ऋतु में यमुना के अधिशेष पानी में से 500 क्यूसेक्स पानी को उपयोग में लाने हेतु भरतपुर जिले में उक्त वृहद् सिंचाई परियोजना निर्माणाधीन है। गुडगांव नहर उत्तरप्रदेश की आगरा नहर से 4.5 मील पर निकलती है और 47.6 मील दूरी तक हरियाणा में बहने के पश्चात् भरतपुर जिले की कामां तहसील के जुरहरा ग्राम के पास राजस्थान में प्रवेश करती है। राजस्थान में इसकी लम्बाई 35 मील है और इससे भरतपुर जिले की कामा व डीग तहसील में 28,200 हैक्टेयर भूमि पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

पांचना बांध

सवाईमाधोपुर जिले के गुडला ग्राम के पास गंभीरी नामक स्थान पर पांच छोटी नदियों के मिलन स्थल पर यह 85 फीट ऊँचा और 2400 फीट लम्बा बांध बनाया जा रहा है। इस बांध से अधिकतम 1.34 लाख क्यूसेक्स पानी छोड़ा जा सकेगा जिससे इस जिले की गंगापुर, हिण्डौन, नादौती तथा टोडाभीम तहसीलों के 35 गांवों की 20,100 एकड़ भूमि में सिंचाई हो सकेगी।

मात्र ही निपजा पाती है। यही कारण रहा है कि इस क्षेत्र के निवासी सदा सूखा, अभाव और अकाल का सामना करते आ रहे हैं।

आजादी के बाद इस रेगिस्तानी क्षेत्र में पानी पहुंचा कर इसे हरा-भरा बनाने और विकास की धारा के साथ जोड़ने की दिशा में सोच-विचार आरंभ हुआ। इसके फलस्वरूप वर्ष 1948 में तत्कालीन बीकानेर रियासत के सचिव एवं मुख्य अभियंता स्वर्गीय कंवर सेन द्वारा एक योजना तैयार की गई जिसके तहत नहर का निर्माण कर हिमालय का पानी इस भू-भाग में पहुंचाने का प्रस्ताव किया गया। पंजाब में व्यास और सतलज नदी के संगम पर "हरिके" बैराज बन कर तैयार हो जाने पर केन्द्रीय जल एवं विद्युत आयोग द्वारा इस परियोजना की रूपरेखा तैयार की गई। वर्ष 1955 एवं 1981 में हुए नदीजल वितरण समझौते के अनुसार रावी एवं व्यास नदियों के राजस्थान के लिए आबंटित 86 लाख एकड़ फीट पानी में से इंदिरा गांधी नहर के लिए 75.9 लाख एकड़ फीट पानी का उपयोग प्रस्तावित है। अन्ततः इस सोच-विचार की परिणिति इंदिरा गांधी नहर के रूप में हुई।

वृहद् परियोजना

राष्ट्र की महत्वपूर्ण और राजस्थान की जीवनदायिनी इंदिरा गांधी नहर विश्व की एक वृहद् और अपने प्रकार की पहली सिंचाई परियोजना है। "हरिके" बैराज से उद्घाटित इंदिरा गांधी नहर के शीर्षस्थल पर इसके तल व ऊपरी सतह की चौड़ाई क्रमशः 134 फीट तथा 218 फीट तथा पानी की गहराई 21 फीट है और जल प्रदाय विसर्जन क्षमता 18,500 घन फुट प्रति सैकेण्ड है।

संशोधित योजना के अनुसार लगभग 1675 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत की इस परियोजना के अंतर्गत 204 किलोमीटर लम्बी फीडर सहित 649 किलोमीटर लम्बी मुख्य नहर, लगभग 7875 किलोमीटर लम्बी शाखाओं व वितरिकाओं, सात जलोत्थान नहरों और सिंचाई खालों का निर्माण कर मरु क्षेत्र की 15.37 लाख हेक्टेयर भूमि में सिंचाई सुविधा एवं पेयजल उपलब्ध कराने का प्रस्ताव है।

रेगिस्तानी क्षेत्र में सिंचाई व पीने का पानी सुलभ कराने वाली इंदिरा गांधी नहर को यद्यपि नहर का नाम दिया गया है किन्तु इसकी विशालता को देखते हुए वस्तुतः यह बारहों महीने बहने वाली नदी है। यही कारण है कि इस नहर को प्राचीन समय में इस क्षेत्र में बहने वाली "सरस्वती" नदी के पुनः अवतरण की संज्ञा दी गई है।

निर्माण गाथा

राज्य का भूगोल बदलने वाली इंदिरा गांधी नहर के निर्माण का शुभारंभ 31 मार्च, 1958 को भारत के तत्कालीन गृह मंत्री स्वर्गीय गोविन्द बल्लभ पंत के हाथों हुआ और तत्कालीन उप-राष्ट्रपति स्वर्गीय डा० एस. राधाकृष्णन ने 11 अक्टूबर, 1961 को "नौरंगदेसर" वितरिका में सर्व प्रथम जल प्रवाहित किया।

इस वृहद् सिंचाई योजना का कार्य दो चरणों में हुआ है। प्रथम चरण में 204 किलोमीटर फीडर तथा इससे आगे 189 किलोमीटर लम्बी मुख्य नहर और 3,075 किलोमीटर लम्बी शाखाओं एवं वितरिकाओं का निर्माण कार्य सम्मिलित है। प्रथम चरण पर मार्च 1989 तक 255.77 करोड़ रुपये व्यय हो चुके हैं। प्रथम चरण में निर्मित नहर एवं वितरिकाओं से लगभग 5.25 लाख हेक्टेयर कृषि योग्य क्षेत्र में 110 प्रतिशत सिंचाई त्वरिता से लगभग 5.78 लाख हेक्टेयर भूमि में सिंचाई हो सकेगी। इस चरण में लूणकरणसर-बीकानेर जलोत्थान नहर का भी निर्माण कराया गया है जिससे बीकानेर व उसके आसपास के क्षेत्रों में सिंचाई, पेयजल व उद्योगों के लिए पानी उपलब्ध हो रहा है।
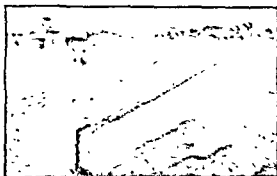
हिमालय का जल मरु प्रदेश में खेतों और घरों तक पहुंचा

परियोजना के दूसरे चरण में 256 किलोमीटर लम्बी मुख्य नहर एवं लगभग 4800 किलोमीटर लम्बी शाखाओं व वितरिकाओं का निर्माण प्रस्तावित है। इस चरण में नहर के सतही फ्लो क्षेत्र के अतिरिक्त 6 जलोत्थान नहरों का निर्माण भी कराया जायेगा ताकि ऊँचे तथा दूरस्थ क्षेत्रों को भी नहर के पानी से सिंचाई व पेयजल सुविधा मिल सके। इस चरण में कुल 10.12 लाख हेक्टेयर कृषि योग्य क्षेत्र में 80 प्रतिशत सिंचाई त्वरिता से सामान्य 8 10 लाख हेक्टेयर भूमि में सिंचाई प्रस्तावित है।

द्वितीय चरण में सिंचित क्षेत्र विकास कार्यों को भी सुनियोजित ढंग से आरंभ किया गया है। इन विकास कार्यों के अंतर्गत खेतों तक पानी पहुँचाने के लिए जहां सिंचाई खालों का निर्माण व्यापक स्तर पर किया जा रहा है वहीं चारागाह एवं सघन वन विकास की व्यापक योजना भी क्रियान्वित की जा रही है। द्वितीय चरण पर मार्च, 1989 तक 405.42 करोड़ रुपये व्यय हो चुके हैं। परियोजना के इस चरण पर कुल 1420 करोड़ रुपये व्यय होने का अनुमान है।

जलोत्थान योजनाएँ

जलोत्थान योजनाओं का निर्माण इस परियोजना का एक विशिष्ठ पहलू और इंजीनियरिंग कौशल का अद्भुत चमत्कार है। इस परियोजना का लाभ नहर के दूरस्थ एवं ऊँचे भू-भाग को भी मिले और उपलब्ध पानी का भरपूर उपयोग हो सके, इस ध्येय से नहर के बहाव क्षेत्र में जलोत्थान नहरों को भी शामिल किया गया है। संशोधित प्रारूप के अनुसार प्रथम चरण में निर्मित लूणकरणसर-बीकानेर जलोत्थान नहर के अतिरिक्त द्वितीय चरण में 6 जलोत्थान नहरों का निर्माण कराया जाना है। साहवा, गजनेर, कोलायत, बांगड़सर, फलौदी एवं पोकरण जलोत्थान नहरों में पम्पों की सहायता से 60 मीटर की ऊँचाई तक पानी ले जाकर 3.12 लाख हेक्टेयर भूमि को सिंचित किया जा सकेगा जबकि प्रथम चरण में बनी बीकानेर-लूणकरणसर जलोत्थान नहर का सिंचाई योग्य क्षेत्र 0.46 लाख हेक्टेयर है।

जय यात्रा

इंदिरा गांधी नहर परियोजना के तहत मार्च, 1989 तक 661.19 करोड़ रुपये की लागत से 204 किलोमीटर फीडर सहित 649 किलोमीटर लम्बी मुख्य नहर, बीकानेर-लूणकरणसर जलोत्थान नहर और 3800 किलोमीटर लम्बी वितरिकाओं का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। साहवा, फलौदी व बांगड़सर जलोत्थान नहरों का कार्य प्रगति पर है।

राज्य के इतिहास में 1 जनवरी, 1987 का दिन स्वर्णिम अक्षरों में अंकित रहेगा जब इंदिरा गांधी नहर ने विशाल एवं दुर्गम मरुस्थल को भेदते हुए 649 किलोमीटर की जय-यात्रा पूरी की। इस दिन

हिमालय के पावन जल ने एक लम्बा सफर तय कर जैसलमेर जिले के मोहनगढ़ को पवित्र किया। नहर निर्माण की यह जय यात्रा अभी जारी है। इंदिरा गांधी नहर निर्माण विकट परिस्थितियों में प्रकृति से जूझ कर मानवीय प्रयासों की सफलता की एक ज्वलन्त गाथा है। पहाड़ जैसे रेत के ऊँचे टीलों से घिरे "थार" मरुस्थल के दुर्गम और जल विहीन क्षेत्र में नहर का निर्माण अपने आप में दुःसाहस है। किन्तु परियोजना में जुटे हजारों श्रमिकों व इंजीनियरों के सतत् परिश्रम एवं लगन ने रेगिस्तान को हरा-भरा बनाने हेतु अब से कोई 30 वर्ष पहले संजोये गये सपने को साकार करने में असाधारण सफलता प्राप्त की है। यथार्थ में निर्माण और सृजन की यह यात्रा मानवीय कौशल, सूझबूझ, परिश्रम और जीवट की एक बेजोड़ मिसाल है।

महती उपलब्धि

इंदिरा गांधी नहर वस्तुतः एक महत्वाकांक्षी एवं बहु आयामी परियोजना है। नहर निर्माण से पूर्व इस क्षेत्र में जहां कई-कई मीलों चलकर मुश्किल से पीने का पानी जुटाया जाता था वहीं नहर से आज लोगों

रेगिस्तानी क्षेत्रों में पेयजल भी सुलभ हुआ

के घरों-खेतों तक हिमालय का पवित्र जल स्वयं पहुँच रहा है। नहर से उपलब्ध पानी से इस क्षेत्र में व्यापक रूप से सिंचाई होने लगी है। मार्च, 1987 तक इस नहर से 5.27 लाख हेक्टेयर भूमि में सिंचाई सुविधा उपलब्ध की जा चुकी है। सिंचाई सुविधा के कारण इस रेतीले भू-भाग में जो उर्वरक और उपजाऊ है, खाद्यान्न के साथ-साथ कपास, मूंगफली, दालें, [illegible] और गन्ना जैसी व्यावसायिक उपज

इन्दिरा गांधी नहर से उपलब्ध सिंचाई सुविधा [illegible]
[illegible] 12 [illegible]

कोई जा कर भरपूर फसलें ली जा रही है। अब तक उपलब्ध की गई सिंचाई सुविधा से इस क्षेत्र में मोटे अनुमान के अनुसार लगभग 275 करोड़ रुपयों की लागत की कोई 12 लाख टन उपज प्रति वर्ष ली जा रही है। नहर के द्वितीय चरण के पूरा होने पर इस क्षेत्र में कृषि उत्पादन कई गुना और बढ़ जाना सुनिश्चित है। कृषि के साथ-साथ इस क्षेत्र में सघन वृक्षारोपण एवं सेवण घास तथा दूसरे किस्म के चारे के उत्पादन की व्यापक योजनाएं भी क्रियान्वित की जा रही हैं। इस प्रयास से जहां पशुओं को चारा मिलेगा वहीं अकाल की विभीषिका को भी कम किया जा सकेगा।

परियोजना में पेय जल व औद्योगिक कार्यों के लिए 1200 क्यूसेक्स पानी अलग से आरक्षित किया गया है। कुल मिलाकर जहां पेयजल की किल्लत वाले चूरू, गंगानगर, बीकानेर, नागौर, जैसलमेर, बाड़मेर और जोधपुर जिलों को नहर से पानी मिल सकेगा, वहीं जल उपलब्धि के कारण इन क्षेत्रों में तापबिजली घर प्रस्तावित है एवं औद्योगिक विकास की संभावनाएं प्रबल होती जा रही हैं।

नहर निर्माण इस क्षेत्र के लोगों को व्यापक रूप से रोजगार उपलब्ध कराने में भी कारगर साबित हुआ है। कुल मिलाकर नहर निर्माण तथा इससे संबद्ध कार्यों पर आज लाखों लोगों को रोजगार प्राप्त है।

अतिरिक्त मदद जरूरी

इंदिरा गांधी नहर निर्माण से निकले इन सुखद परिणामों को देखते हुए नहर को जितना जल्दी पूरा किया जाए उतना ही राष्ट्रीय हित में है। विगत अवधि में यद्यपि नहर निर्माण के लिए संसाधन जुटाने की दिशा में पूरे प्रयास किये गये हैं किन्तु इतनी वृहद परियोजना के लिए सीमित वित्तीय साधनों से नहर को शीघ्र पूरा करने में गतिरोध पैदा होता है। इस दृष्टि से नहर निर्माण के लिए राज्य योजना मद की राशि के अलावा अतिरिक्त सहायता नितान्त आवश्यक है। इस दिशा में किये गये प्रयासों के फलस्वरूप सातवीं पंचवर्षीय योजना में इस परियोजना के लिए 262.50 करोड़ रुपयों का प्रावधान किया गया। वर्ष 1987–88 में राज्य योजना मद में उपलब्ध राशि के अतिरिक्त सीमावर्ती क्षेत्र विकास कार्यक्रम के तहत 15 करोड़ रुपये तथा अकाल सहायता मद में 9 करोड़ रुपयों का योगदान भारत सरकार से प्राप्त हुआ। इसी प्रकार वर्ष 1988–89 में इस परियोजना के लिए केन्द्रीय सहायता एवं राज्य योजना में स्वीकृत 61 करोड़ रुपयों सहित कुल 115 करोड़ रुपयों का प्रावधान किया गया है जो विगत 30 वर्षों की तुलना में सर्वाधिक है।

खुशहाली का नया संबल

वस्तुतः इंदिरा गांधी नहर के निर्माण से राज्य के रेगिस्तानी इलाके में सिंचाई व पेयजल सुविधा, कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी और लोगों को रोजगार जैसी सहूलियतें मिल रही हैं। इस परिप्रेक्ष्य में इंदिरा गांधी नहर राष्ट्र की एक महत्वपूर्ण परियोजना है जो राजस्थान के साथ-साथ पूरे देश के लिए समृद्धि व कल्याणकारी सिद्ध होगी। इस परियोजना के शीघ्र निर्माण से जहां अकाल की विभीषिका और इसकी भावी संभावना तिरोहित होती चली जायेगी वहीं इसके पूरा होने से राज्य की प्रगति एवं खुशहाली के क्षेत्र में एक नया अध्याय जुड़ जायेगा।

हिमालय के पावन जल ने एक लम्बा सफर तय कर जैसलमेर जिले के मोहनगढ़ को पवित्र किया। नहर निर्माण की यह जय यात्रा अभी जारी है। इंदिरा गांधी नहर निर्माण विकट परिस्थितियों में प्रकृति से जूझ कर मानवीय प्रयासों की सफलता की एक ज्वलन्त गाथा है। पहाड़ जैसे रेत के ऊँचे टीलों से घिरे "थार" मरुस्थल के दुर्गम और जल विहीन क्षेत्र में नहर का निर्माण अपने आप में दुःसाहस है। किन्तु परियोजना में जुटे हजारों श्रमिकों व इंजीनियरों के सतत परिश्रम एवं लगन ने रेगिस्तान को हरा-भरा बनाने हेतु अब से कोई 30 वर्ष पहले संजोये गये सपने को साकार करने में असाधारण सफलता प्राप्त की है। यथार्थ में निर्माण और सृजन की यह यात्रा मानवीय कौशल, सूझबूझ, परिश्रम और जीवट की एक बेजोड़ मिसाल है।

महती उपलब्धि

इंदिरा गांधी नहर वस्तुतः एक महत्वाकांक्षी एवं बहु आयामी परियोजना है। नहर निर्माण से पूर्व इस क्षेत्र में जहां कई-कई मीलों चलकर मुश्किल से पीने का पानी जुटाया जाता था वहीं नहर से आज लोगों

रेगिस्तानी क्षेत्रों में पेयजल भी सुलभ हुआ

के घरों-खेतों तक हिमालय का पवित्र जल स्वयं पहुंच रहा है। नहर से उपलब्ध पानी से इस क्षेत्र में व्यापक रूप से सिंचाई होने लगी है। मार्च, 1987 तक इस नहर से 5.27 लाख हैक्टेयर भूमि में सिंचाई सुविधा उपलब्ध की जा चुकी है। सिंचाई सुविधा के कारण इस रेतीले भू-भाग में, जो उर्वरक और उपजाऊ है, खाद्यान्न के साथ-साथ कपास, मूंगफली, दालें, तिलहन और गन्ना जैसी वाणिज्यिक उपज

इन्दिरा गांधी नहर से उपलब्ध सिंचायी सुविधा के फलस्वरूप प्रतिवर्ष 275 करोड़ रुपयों की लागत की कोई 12 लाख टन उपज ली जा रही है

बोई जा कर भरपूर फसलें ली जा रही है। अब तक उपलब्ध की गई सिंचाई सुविधा से इस क्षेत्र में मोटे अनुमान के अनुसार लगभग 275 करोड़ रुपयों की लागत की कोई 12 लाख टन उपज प्रति वर्ष ली जा रही है। नहर के द्वितीय चरण के पूरा होने पर इस क्षेत्र में कृषि उत्पादन कई गुना और बढ़ जाना सुनिश्चित है। कृषि के साथ-साथ इस क्षेत्र में सघन वृक्षारोपण एवं सेवण घास तथा दूसरे किस्म के चारे के उत्पादन की व्यापक योजनाएं भी क्रियान्वित की जा रही हैं। इस प्रयास से जहां पशुओं को चारा मिलेगा वहीं अकाल की विभीषिका को भी कम किया जा सकेगा।

परियोजना में पेय जल व औद्योगिक कार्यों के लिए 1200 क्यूसेक्स पानी अलग से आरक्षित किया गया है। कुल मिलाकर जहां पेयजल की किल्लत वाले चूरू, गंगानगर, बीकानेर, नागौर, जैसलमेर, बाड़मेर और जोधपुर जिलों को नहर से पानी मिल सकेगा, वहीं जल उपलब्धि के कारण इन क्षेत्रों में तापबिजली घर प्रस्तावित है एवं औद्योगिक विकास की संभावनाएं प्रबल होती जा रही हैं।

नहर निर्माण इस क्षेत्र के लोगों को व्यापक रूप से रोजगार उपलब्ध कराने में भी कारगर साबित हुआ है। कुल मिलाकर नहर निर्माण तथा इससे संबद्ध कार्यों पर आज लाखों लोगों को रोजगार प्राप्त है।

अतिरिक्त मदद जरूरी

इंदिरा गांधी नहर निर्माण से निकले इन सुखद परिणामों को देखते हुए नहर को जितना जल्दी पूरा किया जाए उतना ही राष्ट्रीय हित में है। विगत अवधि में यद्यपि नहर निर्माण के लिए संसाधन जुटाने की दिशा में पूरे प्रयास किये गये हैं किन्तु इतनी वृहद परियोजना के लिए सीमित वित्तीय साधनों से नहर को शीघ्र पूरा करने में गतिरोध पैदा होता है। इस दृष्टि से नहर निर्माण के लिए राज्य योजना मद की राशि के अलावा अतिरिक्त सहायता नितान्त आवश्यक है। इस दिशा में किये गये प्रयासों के फलस्वरूप सातवीं पंचवर्षीय योजना में इस परियोजना के लिए 262.50 करोड़ रुपयों का प्रावधान किया गया। वर्ष 1987-88 में राज्य योजना मद में उपलब्ध राशि के अतिरिक्त सीमावर्ती क्षेत्र विकास कार्यक्रम के तहत 15 करोड़ रुपये तथा अकाल सहायता मद में 9 करोड़ रुपयों का योगदान भारत सरकार से प्राप्त हुआ। इसी प्रकार वर्ष 1988-89 में इस परियोजना के लिए केन्द्रीय सहायता एवं राज्य योजना में स्वीकृत 61 करोड़ रुपयों सहित कुल 115 करोड़ रुपयों का प्रावधान किया गया है जो विगत 30 वर्षों की तुलना में सर्वाधिक है।

खुशहाली का नया संबल

वस्तुतः इंदिरा गांधी नहर के निर्माण से राज्य के रेगिस्तानी इलाके में सिंचाई व पेयजल सुविधा, कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी और लोगों को रोजगार जैसी सहूलियतें मिल रही हैं। इस दृष्टिकोण से इंदिरा गांधी नहर राष्ट्र की एक महत्वपूर्ण परियोजना है जो राजस्थान के साथ-साथ पूरे देश के लिए लाभप्रद व कल्याणकारी सिद्ध होगी। इस परियोजना के शीघ्र निर्माण से जहां अकाल की विभीषिका और इसकी भावी संभावना तिरोहित होती चली जायेगी वहीं इसके पूरा होने से राज्य की प्रगति एवं खुशहाली के क्षेत्र में एक नया अध्याय जुड़ जायेगा।

राजस्थान भूमि विकास निगम

के

बढ़ते चरण

राज्य में कृषि भूमि और उसकी उत्पादन क्षमता में होने वाली हानि को रोकने तथा भूमि एवं जल साधनों के उचित एवं अधिकतम उपयोग हेतु निगम इन्दिरा गांधी नहर, चम्बल एवं माही सिंचित क्षेत्र विकास परियोजनाओं में किसानों को व्यावसायिक बैंकों तथा केन्द्र एवं राज्य सरकार के सहयोग से आवश्यक धनराशि उपलब्ध कराने में एक प्रमुख वित्तीय माध्यम की भूमिका निभा रहा है। वर्तमान में निगम के प्रयासों के फलस्वरूप पक्के खालों के निर्माण में आर्थिक मितव्ययिता, लागत न्यूनतमकरण एवं तकनीकी दृष्टि से निष्पादन क्षमता में सुधार आदि लक्ष्यों की प्राप्ति में काफी सफलता प्राप्त हुई है।

उपलब्धियां

जून, 1988 तक 4.92 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में भूमि विकास कार्य सम्पादित कर 71 हजार काश्तकारों को लाभान्वित किया गया जिन पर कुल 107 करोड़ रुपये व्यय किये गये।

आर.के. अग्रवाल
प्रबन्ध निदेशक

सिंचित क्षेत्र विकास

सिंचित क्षेत्र विकास एवं जल उपयोगिता विभाग के अन्तर्गत सिंचित क्षेत्र के विकास के लिए इंदिरा गांधी नहर परियोजना क्षेत्र तथा चम्बल परियोजना क्षेत्र में क्षेत्रीय विकास आयुक्तों के कार्यालयों की स्थापना की गई है जबकि माही परियोजना क्षेत्र में यह कार्य परियोजना के मुख्य अभियन्ता के अन्तर्गत है।

इंदिरा गांधी नहर परियोजना क्षेत्र

इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में भूमि विकास, सडकें, पीने का स्वच्छ पानी, वन विकास चारागाहों का एवं अन्य समन्वित विकास करने तथा कृषकों को कृषि की उत्तम तकनीक व पानी के अधिकतम सदुपयोग की जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से आयुक्त क्षेत्रीय विकास का कार्यालय स्थापित किया गया है।

इस परियोजना के अन्तर्गत स्टेज प्रथम के प्रथम फेज की विकास योजना विश्व बैंक की सहायता से पूर्ण की जा चुकी है जिसके अन्तर्गत 2.42 लाख हैक्टेयर कुल क्षेत्र में पक्के खालों का निर्माण, सड़कों के माध्यम से आवागमन की सुविधाएँ, ग्रामीण पेयजल प्रदाय योजनाएँ, समग्र वन विकास आदि योजनाओं के अन्तर्गत कुल 143.13 करोड रुपये व्यय किए गए।

स्टेज प्रथम के फेज द्वितीय के समग्र विकास की योजना वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय कृषि विकास कोष की सहायता से चलाई जा रही है। 2.37 लाख हैक्टेयर सिंचित क्षेत्र में फेज द्वितीय की विकास योजना पर भी कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। इस पर अनुमानतः 110 करोड़ रुपये व्यय हुए हैं।

स्टेज द्वितीय का विकास कार्य वर्ष 1987-88 से हाथ में लिया गया। वर्ष 1988-89 में इसके लिए राज्य योजनान्तर्गत 36.11 करोड़ रुपये तथा केन्द्रीय सहायता के अन्तर्गत 22 करोड़ रुपये के प्रावधान से 70 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में खालों का निर्माण, 90 कि.मी. लम्बी सड़कों का निर्माण/सुधार, पेयजल के लिए 18 स्वच्छ डिग्गियों का निर्माण, वन विकास के अन्तर्गत 11,950 रो० कि०मी० नहरों/सड़कों के किनारे वृक्षारोपण, 2,000 हैक्टेयर में चारागाह विकास, 3,800 हैक्टेयर में टिब्बा स्थिरीकरण तथा पर्यावरण सुधार हेतु 49,000 पौधे लगाये जाने जैसे मुख्य कार्य प्रस्तावित थे।

चम्बल परियोजना क्षेत्र

इस परियोजना क्षेत्र में जल निकास एवं सेम सुधार की कमी, असमतल सड़कें व अपर्याप्त रख-रखाव तथा प्रभावहीन समर्थन सेवाओं के कारण परियोजना के निर्धारित लक्ष्य एवं कृषि उत्पादन निर्धारित सीमाओं तक नहीं बढ़ पाया। इससे मुख्यतः भूमि की काफी हानि हुई एवं कृषि उत्पादन पर भी प्रभाव पड़ा। इन दोषों को दूर करने एवं क्षेत्र का सुधार करने की दृष्टि से वर्ष 1974 में कोटा में क्षेत्रीय विकास आयुक्त कार्यालय की स्थापना की गई।

वर्ष 1974 से इस परियोजना के अन्तर्गत विश्व बैंक की सहायता से सिंचित क्षेत्र विकास

परियोजना का प्रथम चरण प्रारंभ हुआ जो जून 1982 में समाप्त हो गया। प्रथम चरण के अन्तर्गत कुल 66.44 करोड रुपये व्यय हुए। परियोजना कार्यों में नहरों को पक्की करने एवं जलोत्सरण के कार्यों के अतिरिक्त 33,503 हैक्टेयर क्षेत्र में भूमि सुधार का कार्य किया गया।

प्रथम चरण की समाप्ति के बाद परियोजना का द्वितीय चरण प्रारंभ किया जाना था। द्वितीय चरण के स्वरूप का प्रतिवेदन भारत सरकार को प्रेषित किया जा चुका है किन्तु अभी तक स्वीकृति प्राप्त न होने के कारण कार्य प्रारंभ किया जाना संभव नहीं हो सका। अतः परियोजना का कार्यक्रम प्रतिवर्ष की वार्षिक योजना में उपलब्ध धनराशि के अनुरूप चलाया जा रहा है।

माही बजाज सागर परियोजना

माही बजाज सागर परियोजना क्षेत्र में इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कच्चे धोरों के निर्माण से सिंचाई एवं खाद्यान्न उत्पादन क्षमता बढ़ाई जा रही है। इस परियोजना क्षेत्र में कुल 80 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचित क्षेत्र विकास हेतु कार्य मई, 1983 में प्रारंभ हुआ। मार्च 1988 तक यहाँ लगभग 65 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में 3644 कि.मी. कच्चे धोरों का निर्माण कराया जा चुका था।

राजस्थान भूमि विकास निगम

राजस्थान भूमि विकास निगम की स्थापना, राजस्थान भूमि विकास अधिनियम, 1975 के तहत की गई। इस निगम की स्थापना राज्य में भूमि की हानि, कृषि की उत्पादन क्षमता में होने वाली हानि को रोकने, भूमि और जल साधनों के अधिकतम उपयोग को सुनिश्चित करने की दृष्टि से भूमि विकास से सम्बन्धित परियोजनाओं के निष्पादन करने के लिए की गई है।

निगम वर्तमान में निम्न परियोजनाओं में भूमि विकास कार्यों हेतु वित्तीय व्यवस्था उपलब्ध करा रहा है:-

1. विश्व बैंक आई.एफ.ए.डी. से सहायता प्राप्त इंदिरा गांधी नहर परियोजना सिंचित क्षेत्र विकास स्टेज-I, फेज-II में सिंचाई हेतु पक्के खालों का निर्माण।
2. चम्बल सिंचित क्षेत्र विकास परियोजनाओं में भूमि विकास कार्य।
3. बंजड भूमि विकास कार्यक्रम के तहत ग्राम अचरोल (जिला जयपुर) में भूमि विकास कार्य।

इस प्रकार निगम द्वारा वर्तमान में सिंचित क्षेत्र विकास परियोजनाओं में खालों के निर्माण के अतिरिक्त बंजड भूमि विकास की महत्वपूर्ण परियोजना को प्रारंभ कर अपनी गतिविधियों में विस्तार करने का प्रयास किया गया है।

निगम द्वारा सिंचित क्षेत्र विकास परियोजना क्षेत्रों के अन्तर्गत भूमि विकास कार्यों का क्रियान्वयन सम्बन्धित क्षेत्रीय विकास आयुक्त/मुख्य अभियंता के माध्यम से कराया जाता है।

खनिज

आधुनिक औद्योगिक युग में खनिजों का विशेष महत्व है। जहां तक राजस्थान का संबंध है- खनिज-उत्पादन की दृष्टि से यह देश में बिहार और मध्यप्रदेश के बाद तीसरा स्थान रखता है। राजस्थान में अभी तक 46 प्रकार के खनिजों का पता लगाया जा चुका है जिनमें से लगभग 34 खनिजों का दोहन छोटे-बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। सम्पूर्ण राज्य में लगभग 2500 खानें है जिन पर लगभग सवा लाख व्यक्ति कार्यशील है।

राज्य में तीन प्रकार के खनिज पाए जाते है:-

(अ) ऐसे खनिज जिनके उत्पादन में राज्य का एकाधिकार है।

(ब) ऐसे खनिज जो राजस्थान के अलावा अन्य राज्यों में भी मिलते है किन्तु राजस्थान के लिए उनका महत्वपूर्ण स्थान है।

(स) ऐसे खनिज जिनकी राज्य में बहुत कमी है।

अ- एकाधिकार वाले खनिजों में जस्ता, सीसा, संगमरमर, चांदी, तामड़ा (गार्नेट) पन्ना, राकफास्फेट, तथा कैडमियम प्रमुख है।

ब- राज्य के लिए महत्वपूर्ण खनिजों में जिप्सम (खड़िया मिट्टी) एस्बेस्टस, सिलिका, वॉलेस्टोनाइट, टंगस्टन, तांबा, इमारती पत्थर, तथा बिरिल प्रमुख है।

स- राज्य में लोहा, मैगनीज, कोयला और पैट्रोलियम जैसे खनिजों की कमी है।

खनिजों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

(i) धात्विक, (ii) अधात्विक तथा (iii) ईंधन खनिज।

(i) धात्विक- खनिज है- जस्ता, सीसा, सोना, चांदी, कैडमियम, तांबा, मैगनीज, टंगस्टन उत्पन्न करने वाला वुल्फ्रामाइट। इन खनिजों के अयस्कों से रासायनिक प्रक्रिया द्वारा मूल खनिज अलग किये जाते है।

(ii) अधात्विक -वे खनिज है जिनको रासायनिक प्रक्रिया से परिष्कृत कर उनके मूल खनिज अलग नहीं किये जाते। इनका उपयोग प्राकृतिक रूप में ही किया जाता है। इनमें से अधिकतर औद्योगिक प्रक्रियाओं में प्रयुक्त होते है, अतः इन्हें "औद्योगिक खनिज" भी कहा जाता है। इन खनिजों में प्रमुख है- एस्बेस्टस, बैराइटस, बैण्टोनाइट, वोलेस्टोनाइट, चाइना क्ले, डोलोमाइट, फेल्सपार एवं फ्लोराइट, पन्ना (एमराल्ड), मुल्तानी मिट्टी, खड़िया मिट्टी एवं क्वार्ट्ज, चूना पत्थर

संगमरमर, अभ्रक, क्वार्ट्ज (स्फटिक), सिलिका, घीया पत्थर, पाइरोफिलाइट व वरमीक्यूलाइट

इनके अलावा ग्रेफाइट, काइनाइट, लाल-पीली आकर्स, स्लेट स्टोन व टुरमेलाइन का खनन भी होता है।

(iii) ईंधन खनिजों मे कोयला व पैट्रोलियम आते है।

राज्य के प्रमुख खनिज

राजस्थान में अनेक खनिज होते हुए भी उनके सम्पूर्ण उपभोग तथा विस्तृत सर्वेक्षण में वांछनीय सफलता अभी तक नहीं मिलने के कारण देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का भाग अल्प ही है। राजस्थान के प्रमुख खनिज पदार्थों का संक्षिप्त विवरण यहां दिया जा रहा है:-

1. **अभ्रक**-अभ्रक के उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान का भारत में दूसरा स्थान है। प्रथम स्थान बिहार का है। पाए जाने वाले अभ्रक के क्षेत्र की दृष्टि से राजस्थान का प्रथम स्थान है।

आधुनिक विद्युत सम्बन्धी उद्योगों के लिए अभ्रक एक अनिवार्य पदार्थ है तथा इसका उपयोग इन्सूलेटर के लिए किया जाता है। यह ऐसा खनिज है जिसे किसी भी स्मेल्टर में सीधा काम में लिया जा सकता है। सामरिक दृष्टि से भी इसका महत्व है। वायुयानों, ट्रांसफारमरों व बिजली के जैनरेटरों आदि के बनाने में इसका उपयोग होता है। राजस्थान के लिए यह गर्व का विषय है कि आज के अन्तरिक्ष यानों में राजस्थान का अभ्रक प्रमुख भूमिका निभाता है। इसका कारण यह है कि इसकी पतली से पतली परतें निकाली जा सकती हैं और पतली परतें भी बिजली के लिए उत्तम अवरोधक होती हैं।

राजस्थान में अभ्रक का उत्पादन गत लगभग 55 वर्षों से हो रहा है। राजस्थान में भारत के कुल अभ्रक उत्पादन का लगभग 28 प्रतिशत भाग उत्पन्न होता है। हमारे राज्य में अभ्रक की छोटी-मोटी खानें लगभग 225 हैं। राजस्थान में कुल अभ्रक-क्षेत्र लगभग 12 हजार वर्ग मील में विस्तृत है। अभ्रक-उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित है-

(अ) उत्तर-पूर्वी अभ्रक पेटी-इस पेटी में दक्षिणी जयपुर व टोंक जिला प्रमुख है। कुछ खानों में मशीनों व विद्युत की सहायता से यह खनिज निकाला जाता है। इन खानों से 12 से 30 मीटर गहराई तक अभ्रक निकाला जाता है। टोडारायसिंह रेलवे स्टेशन से मुख्यतः अभ्रक भेजा जाता है।

(ब) दक्षिण-पश्चिमी अभ्रक पेटी-यह अभ्रक के उत्पादन की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। इस पट्टी में मुख्यतः भीलवाड़ा और उदयपुर जिलों की खानें है। अभ्रक भंडार की दृष्टि से भीलवाड़ा जिला सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यहां की कुछ खानों से 60 मीटर की गहराई तक खुदाई की जा चुकी है। यहां का अभ्रक हल्के काले धब्बेदार होता है। उदयपुर जिले की अभ्रक की खानें उत्तरी-पूर्वी किनारे पर है।

(स) अभ्रक के अन्य क्षेत्र हैं-सीकर, अजमेर, किशनगढ़, ब्यावर, अलवर, पाली आदि की छोटी खानें। कुछ खानों में हरा अभ्रक निकलता है।

राजस्थान में प्रतिवर्ष लगभग सात सौ टन अभ्रक का उत्पादन होता है। राज्य का प्रायः पूरा अभ्रक बिहार राज्य को भेज दिया जाता है, अतः राज्य के अभ्रक का व्यापार बिहार द्वारा नियन्त्रित होता है। बिहार से अभ्रक को अलग-अलग पर्तों में काटके विदेशों को भेज दिया जाता है।

2. **मैंगनीज**- यह महत्वपूर्ण खनिज बांसवाड़ा, उदयपुर, [illegible], अजमेर व जयपुर जिलों की खानों से प्राप्त होता है। राजस्थान में मैंगनीज उत्पादन [illegible] जिले अत्यन्त महत्वपूर्ण है। राज्य

में यही एक मात्र प्रमुख क्षेत्र है जहां व्यापारिक दृष्टि से मैंगनीज खोदा जाता है। सन् 1945 से इस क्षेत्र में मैंगनीज की खानों से खुदाई होती रही है। खानों में खुदाई के बाद खनिज मैंगनीज को हाथ से छंटाई करनी पड़ती है, इसलिए इस पर खर्चा अधिक होता है। ये खानें आदिवासी क्षेत्रों में हैं, इसलिए इनका महत्व और भी अधिक है क्योंकि उन लोगों को रोजगार मिल जाता है जिनके पास और कोई काम-धन्धा नहीं है।

मैंगनीज सर्वोच्च कोटि का सामरिक-महत्व का खनिज है। प्रतिरक्षा की तैयारियों में इसका महत्वपूर्ण योग होता है। इस्पात के बनाने में इसका मिश्रण अनिवार्य तौर पर किया जाता है। प्रति टन इस्पात के लिए 12 पौंड मैंगनीज मिलाया जाता है। इस्पात उद्योग के अतिरिक्त सूखी बैटरियों में, पेन्ट व वार्निश में इसका उपयोग किया जाता है।

मैंगनीज उत्पादन करने वाले देशों में भारत का प्रमुख स्थान है। भारत में इस खनिज के मुख्य स्त्रोत- मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, मैसूर, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश तथा राजस्थान की खानें हैं।

3.लौह खनिज:-प्राचीन काल से ही लौह-खनिज यहां निकाला जा रहा है, किन्तु बहुत ही कम मात्रा में। लौह-खनिज की दृष्टि से राजस्थान निर्धन है। राज्य में लोहे की खानें छोटी और बिखरी हुई हैं। बढ़िया किस्म का लोहा भी नहीं है। प्राय: पूरा लौह हैमेटाइट किस्म का है, कुछ लोहा मैगनेटाइट किस्म का भी पाया जाता है।

राजस्थान में संगठित रूप से लोहा सन् 1953 से निकाला जा रहा है, जबकि इसी वर्ष (सन् 1953 में) लगभग 7.5 हजार टन लौह-खनिज बम्बई तथा कांदला बंदरगाहों से विदेशों को भेजा गया था। आजकल लगभग 15 हजार टन से अधिक लोहा निकाला जा रहा है।

लोहे की प्राय: समस्त खानें अरावली पर्वत के निकट हैं अथवा इसके पूरब में हैं। दूसरे शब्दों में राजस्थान में लौह-खनिज की खानें राज्य के उत्तरी-पूरबी और दक्षिणी-पूरबी भागों में स्थित हैं।

उत्तरी-पूरबी क्षेत्र में तीन प्रमुख लौह-क्षेत्र हैं:-

(i) चौमूं-सामोद के निकट :—चौमूं-सामोद रेलवे-स्टेशन (जयपुर जिले में, जयपुर-सीकर रेलमार्ग पर) से लगभग 8–10 किलोमीटर पूरब की ओर मोरीजा की खानें स्थित हैं। यह राज्य का सबसे महत्वपूर्ण लौह-खनिज क्षेत्र है। यहां हैमेटाइट किस्म का लोहा मिलता है। मोरीजा में लगभग 10 मीटर मोटी व एक किलोमीटर लम्बी पट्टी में लौह-खनिज है। यह लोहा अच्छी किस्म का है और लगभग 68 प्रतिशत शुद्धता का है। पर यहां लोहे के बहुत बड़े भंडार नहीं हैं।

(ii)नीमला क्षेत्र की खानें:- जयपुर से लगभग 24 किलोमीटर उत्तर की ओर नीमला गांव व निकटवर्ती क्षेत्रों में लोहे की खानें हैं। प्रमुख लौह क्षेत्र नीमला से लगभग एक किलोमीटर पूरब में है। अधिकांश खानें तीन से पांच मीटर गहरी हैं। यह लोहा भी अच्छी किस्म का है व लगभग 67.5 प्रतिशत शुद्धता का है। यहां लगभग 10 लाख टन लौह खनिज के भण्डार होने के अनुमान हैं।

(iii) डाबला-नीम का थाना क्षेत्र – रिवाड़ी-फुलेरा रेलवे मार्ग पर स्थित डाबला रेलवे स्टेशन के 10–12 किलोमीटर पश्चिम में लोहे की अनेक छोटी-छोटी खानें हैं। कली पहाड़ी के निकट लोहे की बड़ी खानें हैं। सीकर जिले में नीम-का-थाना रेलवे स्टेशन से लगभग 11 किलोमीटर पश्चिम में और 18 से 30 किलोमीटर पूरब में लोहे की खानें हैं। यहां लोहा निम्न किस्म का है इसमें फास्फोरस का अंश अधिक है।

(iv) दक्षिण-पूरबी क्षेत्र:-दक्षिणी-पूरबी क्षेत्र की खानें अरावली शृंखला के दक्षिण-पूरब में बिखरी हुई हैं। यदि एक सीधी रेखा बूंदी से भीलवाड़ा, कांकरोली, उदयपुर और डूंगरपुर होती हुई

बांसवाड़ा तक खींची जाये तो इस क्षेत्र में ही प्रायः सभी लोहे की खानें होंगी। उदयपुर नगर से लगभग 60 किलोमीटर दक्षिण-पूरब में और देबर झील से 12 किलोमीटर पश्चिम में थाना गांव (सारदा तहसील) के निकट प्रमुख खानें हैं। इस क्षेत्र में लगभग 30 मीटर गहराई तक 20 लाख टन लौह खनिज के भंडार हैं। दूसरा क्षेत्र उदयपुर रेलवे स्टेशन से 20 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में है।

लौह-खनिज के अन्य क्षेत्र-बूंदी (लोहारपुरा और इन्द्रगढ़), भीलवाड़ा (कमलपुरा और लाम्बा), बांसवाड़ा (तलवाड़ा, लोहारिया), डूंगरपुर (पदरपल) और दक्षिण झालावाड़ (हग) में स्थित हैं।

4. कोयला:- कोयले की दृष्टि से राजस्थान निर्धन है। राज्य में भूरे रंग का कोयला जिसे लिग्नाइट कहते हैं मिलता है। इसमें सल्फर की अधिकता होती है। लिग्नाइट कोयले में 30 प्रतिशत से अधिक आर्द्रता निहित होती है। यह रद्दी किस्म का होता है और कोक बनाने के लिए अनुपयुक्त है।

लिग्नाइट कोयला उत्पादन की पट्टी बीकानेर विभाग में पूरब से पश्चिम तक विस्तृत है जो कि बीकानेर नगर से दक्षिण की ओर है। बीकानेर पट्टी में कोयला उत्पादन क्षेत्र पलाना, खारी, चनेरी, गंगा-सरोवर और मुढ हैं।

पलाना की खानें बीकानेर नगर के निकट स्थित हैं और भारत की टरशरी युग की कोयले की खानें हैं। पलाना की खानें बीकानेर से लगभग 23 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में हैं। पलाना एक छोटा रेलवे स्टेशन है जो बीकानेर के आगे बीकानेर-जोधपुर रेलमार्ग पर स्थित है।

पलाना की कोयले की खान का पता सन् 1898 में लगा जबकि कुछ लोग पानी के लिए कुंआ खोद रहे थे। भूमि की सतह से कोयला लगभग 61 मीटर की गहराई पर मिला (जबकि पानी लगभग 350 फुट की गहराई पर है)।

पलाना रेगिस्तानी क्षेत्र में है। लगभग 10 फुट तक रेत, बाद में लगभग 65 फुट तक रेत व कंकड़ हैं तथा इसके पश्चात 20 से 40 फुट तक चूना व चूने के पत्थर हैं। इसके बाद लगभग 85 से 100 फुट के बाद लिग्नाइट कोयले की पट्टियां आरम्भ होती हैं। पलाना में औसत रूप से 20 फुट मोटी कोयले की पर्तें हैं। पलाना की कोयले की खानों में कोयले का अनुमानित भंडार 2.25 करोड़ टन है।

इनके अतिरिक्त अभी हाल ही में पलाना से मात्र चार किलोमीटर दूर बरसिंहपुर एवं गुढ़ा में भी कोयले के विशाल भण्डारों का पता चला है। नागौर जिले के मोकाला-मेड़तारोड व कसनाऊ इग्यार क्षेत्रों में भी लिग्नाइट के भण्डारों का पता चला है। राज्य में लिग्नाइट के अनुमानित भंडार लगभग तीस करोड़ टन के हैं। लिग्नाइट के भंडारों की दृष्टि से राज्य का स्थान देश में तमिलनाडु के बाद दूसरा हो गया है।

5. जिप्सम या खड़िया:- भारत में सबसे अधिक जिप्सम राजस्थान में मिलता है। एक अनुमान के अनुसार भारत के कुल जिप्सम उत्पादन का 90 प्रतिशत से भी अधिक भाग राजस्थान में ही मिलता है।

राजस्थान में जिप्सम उत्पादन के तीन प्रमुख क्षेत्र हैं-

(क) बीकानेर चूरू क्षेत्र

(ख) नागौर क्षेत्र

(ग) जैसलमेर-बाड़मेर-जोधपुर क्षेत्र

(क) बीकानेर-चूरू क्षेत्र :- इस क्षेत्र में बीकानेर नगर के निकट जामसर गांव में राज्य के सबसे बड़े जिप्सम भंडार हैं। जामसर में जिप्सम की पट्टी लगभग चार किलोमीटर पूरब से पश्चिम की ओर जाती है और लगभग 920 मीटर से 1225 मीटर उत्तर से दक्षिण तक जाती है। बीकानेर से [illegible] दूर, जामसर एक छोटा रेलवे स्टेशन है जो बीकानेर-[illegible] रेल मार्ग पर स्थित है। [illegible] जिप्सम [illegible] ([illegible]) के [illegible] है।

जामसर से लगभग 52 किलोमीटर उत्तर में लूणकरणसर (बीकानेर) में दूसरा महत्वपूर्ण जिप्सम उत्पादक क्षेत्र है। जिप्सम की यह पट्टी लगभग पांच वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है।

चूरू में प्रमुख पट्टी 104 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में, तारानगर के उत्तर-पूरब से दक्षिण-पूरब तक, है किन्तु यहां जिप्सम की मात्रा कम है।

(ख) नागौर क्षेत्र - अनुमान है कि इस क्षेत्र में लगभग 85 करोड टन जिप्सम के भंडार हैं जो देश में जिप्सम के कुल भंडारों का लगभग दो तिहाई है। यहां जिप्सम 60 मीटर से 125 मीटर की गहराई तक मिलता है। नागौर से लगभग 45 किलोमीटर दूर गोठ-मांगलोद में जिप्सम निकालने का कार्य सन् 1965 से प्रारम्भ किया गया।

(ग) जैसलमेर-बाड़मेर-जोधपुर क्षेत्र:—जैसलमेर में मोहनगढ़, मीरवाली, ढाणी और लाखा में जिप्सम की खानें हैं जो लगभग एक मीटर गहरी पट्टी में हैं।

जोधपुर में पोकरण से लगभग 50 किलोमीटर दक्षिण में फलसूंड में एक मीटर मोटी जिप्सम की पट्टी है। पाली जिले में (सूटानी में) जिप्सम की एक छोटी खान है।

बाड़मेर में भी (कवास, कुर्ला, श्योकर आदि में) जिप्सम की छोटी खानें हैं। जिप्सम का उपयोग मुख्यतः रासायनिक खाद, प्लास्टर आफ पैरिस, विशेषतः शल्य-चिकित्सा एवं नकली दांतों के प्लास्टर आदि में किया जाता है।

6-तांबा - तांबा अलौह-धातु पदार्थों में सबसे महत्वपूर्ण है। आज के युग में इसका उपयोग बिजली के तारों व अन्य वैज्ञानिक उपकरणों में भारी मात्रा में होने लगा है। राजस्थान में प्राचीन काल से ही अनेक स्थानों पर खुदाई की जा रही है। तांबे की खानें वैसे तो राजस्थान में अनेक स्थानों पर हैं, किन्तु दो खानें ही महत्वपूर्ण हैं- प्रथम, झुंझुनूं जिले में खेतड़ी-सिंघाना क्षेत्र और द्वितीय, अलवर जिले में खो-दरीबा।

(i) खेतड़ी-सिंघाना क्षेत्र:- तांबे की ये खानें मावंडा स्टेशन से लगभग 23 किलोमीटर दूर चिड़ावा तहसील में स्थित हैं। यहां तांबे की खानें उत्तर-पूरब से दक्षिण-पश्चिम की ओर लगभग 25 किलोमीटर दूरी में व तीन से पांच किलोमीटर चौड़ाई में विस्तृत हैं। तांबे की प्रमुख खान खेतड़ी के निकट सिंघाना में है। सरकारी नवीनतम अनुमान के अनुसार यहां 1200 फुट गहराई तक तांबा है।

खेतड़ी ठिकाने में सर्वप्रथम 1915 और 1918 के बीच तांबे की खुदाई का काम हुआ। उसके पश्चात 1923-27 के बीच में हुआ। एक निजी उद्योग 'जयपुर माइनिंग कारपोरेशन' ने यहां तांबे की खुदाई का एक महत्वपूर्ण कार्य सन् 1944 से 1955 के बीच किया। परन्तु इस कार्य का भी परित्याग करना पड़ा क्योंकि तांबा कम मात्रा में प्राप्त हुआ। फिर खेतड़ी के तांबे की परियोजना को 'राष्ट्रीय खनिज विकास निगम' के अन्तर्गत कर दिया गया। खुदाई के नवीनतम साधन अपनाये गये ताकि इस उद्योग से लाभ हो सके। इस कार्य के लिए अमेरिका के प्रसिद्ध माईनिंग-ज्योलोजिस्ट श्री ओरेल्मोन्स को भी आमन्त्रित किया गया। अमेरिका ने सहायता देने का आश्वासन दिया। इसके पश्चात फ्रांस के बेनेट ग्रुप के साथ अंतिम इन्जीनियरिंग समझौता सन् 1967 में हुआ।

खेतड़ी तांबा परियोजना से प्रतिवर्ष निम्नलिखित उत्पादन की आशा की जाती है-

(क) विद्युदंशिक तांबा	31 हजार टन
(ख) सल्फ्यूरिक एसिड	600 टन (प्रतिदिन)
(ग) सोना	8 हजार औंस
(घ) चांदी	64 हजार औंस

राजस्थान
वार्षिकी

इसी क्षेत्र में मतुरई, अकवाली और पापरवा में भी तांबे की छोटी-छोटी खानें हैं। हाल ही में यहां प्रदूषण निवारण के लिए 3 करोड़ की लागत से एक संयंत्र कायम किया गया है। यहां एक तांबा शोधक संयंत्र भी स्थापित किया गया है जहां प्रति वर्ष 30-45 हजार टन तांबा साफ होता है। आशा है कि वर्ष 87-88 तक यहां 10 लाख टन तांबा उत्पादन किया जा सकेगा।

(ii) अलवर जिले में खो-दरीबा क्षेत्र–अलवर से लगभग 50 किलोमीटर दूर दक्षिण-पश्चिम में कुछ पहाड़ियों के पास तांबे की खानें हैं। इन खानों का दोहन करने के लिए सन 1941 में एक लाइसेंस दिया गया था किन्तु देश विभाजन के बाद यहां कार्य बन्द कर दिया गया था। अलवर जिले में ही थानागाजी, कुशलगढ़, सेनपुरी, भगत-का-बास नामक गांवों के पास भी तांबे की खानें मिली हैं। भारत सरकार इस क्षेत्र का भूतात्विक सर्वेक्षण करा चुकी है।

(iii) तांबे की अन्य खानें–उदयपुर रेलवे स्टेशन से लगभग 40 किलोमीटर दूर देलवाड़ा गांव के निकट तांबा पाया गया है। इसके अतिरिक्त देबारी स्टेशन के निकट भी सीसे की खानों के साथ तांबा पाया गया है। भूपालसागर से लगभग 20 किलोमीटर दूर रेलमगरा और दरीबा गांवों के निकट भी तांबा मिलता है। बीकानेर (बीदासर गांव), झालावाड़, डूंगरपुर व कोटा जिलों में भी तांबे की बहुत छोटी-छोटी खानें हैं।

7. सोप-स्टोन अथवा घीया पत्थर–भारत के कुल सोप-स्टोन उत्पादन का लगभग 90 प्रतिशत भाग राजस्थान से ही प्राप्त होता है। राजस्थान में सोप-स्टोन की लगभग 140 छोटी-मोटी खानें हैं। वैसे तो राज्य के अनेक भागों में सोप-स्टोन की खानें हैं किन्तु तीन प्रमुख उत्पादक क्षेत्र हैं–जयपुर, भीलवाड़ा और उदयपुर।

(i) जयपुर क्षेत्र–इस क्षेत्र में प्रमुख खान दौसा रेलवे स्टेशन (जयपुर-दिल्ली रेलमार्ग पर) से लगभग 25 किलोमीटर उत्तर की ओर (डगोता झरना गांव के निकट) है। यह स्थान दौसा से पक्की सड़क द्वारा जुड़ा हुआ है।

(ii) भीलवाड़ा क्षेत्र–इस क्षेत्र में–घेवरिया और चांदपुरा–दो प्रमुख खानें हैं। घेवरिया की खानें भीलवाड़ा रेलवे स्टेशन से लगभग 32 किलोमीटर पूर्व की ओर हैं। चांदपुरा की खानें भीलवाड़ा से लगभग 50 किलोमीटर उत्तर-पूर्व की ओर हैं। ये दोनों खानें पर्याप्त बड़ी हैं। इनमें सोप-स्टोन के भंडारों का अभी तक अनुमान नहीं लगाया गया है।

(iii) उदयपुर क्षेत्र–इस क्षेत्र में देवपुरा की खानें हैं जो उदयपुर से लगभग 50 किलोमीटर दक्षिण में हैं। ये खानें राजस्थान में सोप-स्टोन की सबसे बड़ी खानें हैं। उदयपुर के दक्षिण-पूर्व में लोहागढ़ और सलोज की खानें हैं जो उदयपुर से क्रमशः 130 और 135 किलोमीटर दूर हैं।

राजस्थान में सोप-स्टोन के उत्पादन में प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही है। इसका उपयोग टैल्कम पाउडर, कीटनाशक पदार्थों व अन्य अनेक वस्तुओं के उत्पादन में किया जाता है। उदयपुर में आयुर्वेद सेवाश्रम (प्रा०) लि० द्वारा भी टैल्कम पाउडर का उत्पादन कुछ वर्षों पूर्व आरम्भ किया गया है।

अधिकांश सोप-स्टोन इंग्लैंड, फ्रांस व यूरोप के अन्य देशों तथा जापान, बर्मा, मलाया आदि अनेक देशों को भेजा जाता है।

8. सीसा और जस्ता–भारत में सीसा व जस्ता केवल राजस्थान में ही निकलता है, अतः इन खनिजों पर भारत में राजस्थान का ही एकाधिकार है। उदयपुर से लगभग 40 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व की ओर जावर गांव है जिसके बिल्कुल निकट ही इनकी अनेक खानें हैं। ये राष्ट्रीय महत्व की खानें हैं। उदयपुर से अहमदाबाद जाने वाला राष्ट्रीय राज मार्ग वर्तमान खानों से लगभग आठ किलोमीटर की दूरी से निकलता है। यहां सबसे बड़ी खान मोचिया-मगरा पहाड़ी के निकट है जहां 200-300 टन सीसा व जस्ता

प्रतिदिन निकाला जाता है। पहले 14वीं शताब्दी में राणा लाखा के समय तक यहां सीसा पिघलाने का काम होता था किन्तु बाद में अकाल और युद्ध की अनिश्चित स्थितियों के कारण यह काम धीरे-धीरे बंद हो गया।

आजकल यहां सीसा व जस्ते का खनन कार्य सार्वजनिक क्षेत्र में स्थापित निगम द्वारा हो रहा है। इससे पूर्व 70 प्रतिशत सीसा व सात प्रतिशत जस्ता वाले खनिजों को धनबाद (बिहार) स्थित स्मैल्टर को भेजा जाता रहा और 50 प्रतिशत जस्ता व पांच प्रतिशत सीसा वाले कच्चे माल को भारत से बाहर भेजा जाता था। अब जावर में ही जस्ता गलाने का संयंत्र लगा दिया गया है। अब उदयपुर में भी एक जिंक स्मैल्टर काम करने लगा है।

इसके अतिरिक्त सवाईमाधोपुर जिले (चौथ-का-बरवाड़ा) में और अलवर जिले (थानागाजी और गुढ़ा किशोरीदास) में भी इन खनिजों की छोटी-छोटी खानें हैं।

9. संगमरमर-राजस्थान अपने संगमरमर पत्थरों के लिए शताब्दियों से प्रसिद्ध है। नागौर जिले के मकराना कस्बे के निकट भारत में सबसे अच्छे किस्म का संगमरमर पत्थर मिलता है। मकराना कस्बा नागौर के उत्तर-पूरब में है। यह कस्बा जयपुर-फुलेरा-जोधपुर रेलवे लाइन पर स्थित है।

मकराना का संगमरमर भारत में सर्वश्रेष्ठ है अतः मकराना और संगमरमर पर्यायवाची हो गये हैं। मकराना में संगमरमर की पहाड़ी लगभग एक सौ फुट ऊंची है जो उत्तर-पूरब से दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर जाती है। दूसरे शब्दों में यह पहाड़ी पूरब में माताजी के मंदिर से पश्चिम में काली डूंगरी की ओर जाती है। यह पहाड़ी रेलवे लाइन के समानान्तर करीब 20 किलोमीटर तक जाती है।

मकराना में संगमरमर की लगभग 355 खानें हैं जिनमें से दो सौ खानों पर ही काम हो रहा है। कहीं-कहीं तो खानें 100 फुट से 150 फुट तक गहरी हो गई हैं। यहां संगमरमर के भंडार अनन्त प्रतीत होते हैं। अच्छे मौसम में इन खानों पर लगभग 15 हजार व्यक्ति काम करते हैं। मकराना कस्बे की जनसंख्या लगभग तीस हजार है और प्रायः सभी की जीविका उपार्जन का साधन संगमरमर ही है।

10-अणु-शक्ति के खनिज:-बिरल अथवा बेरिलियम धातु अणु-शक्ति उत्पन्न करने के काम में आती है। इस धातु को खरीदने का एकाधिकार भारत सरकार को ही है। बेरिलियम धातु का महत्व इन दिनों काफी बढ़ गया है। आणविक-शक्ति आयोग द्वारा बेरिलियम खरीदे जाने के कारण इसके खनन को काफी प्रोत्साहन मिला है। राजस्थान की गणना भारत के प्रमुख बेरिलियम उत्पादक राज्यों में की जाती है।

बेरिलियम हरा, हल्का हरा, पीला और सफेद रंग का होता है तथा तोड़ने पर पारदर्शी जैसा दिखाई देता है। इसकी उपलब्धि ग्रेनाइट और पेगमेटाइट श्रेणी की चट्टानों में होती है। राजस्थान में अच्छे किस्म का बेरिलियम पाया जाता है, जिसमें 11.5 प्रतिशत से 14 प्रतिशत तक बेरिलियम आक्साइड पदार्थ मिलता है। बेरिलियम मिश्रित पदार्थ इस्पात के सदृश मजबूत और साथ ही वजन में हल्के व अचुम्बकीय होते है। विश्व में संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत रूस, ब्राजील, रूमानिया व भारत में बेरिलियम की खानों से इसका उत्पादन होता है। भारत में राजस्थान व बिहार में इसका नियमित उत्पादन होता है। राजस्थान में अजमेर व जयपुर संभागों में मुख्यतः यह खनिज मिलता है।

भीलवाड़ा में देवड़ा गांव के पास एक पहाड़ी पर बने मंदिर के निकटवर्ती भाग में यह पदार्थ पाया जाता है। वर्षों तक धार्मिक कारणों से गांव वालों ने उसको छूने नहीं दिया लेकिन इसका महत्व व मूल्य ज्ञात हो जाने से इसका खनन शुरू किया गया। यहां तो मंदिर की दीवारें [illegible] से बनी है तथा मंदिर की हर सीढ़ी में इमारती पत्थर की तरह इसका उपयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त [illegible] गांव में, जो भीलवाड़ा से लगभग 34 किलोमीटर दूर [illegible] सड़क पर है [illegible] बेरिल निकाला जाता रहा है। इसी प्रकार [illegible] नामक गांव में भी [illegible] बेरिल के बड़े-बड़े टुकड़े प्राप्त हुये है। [illegible] जाता है।

उदयपुर में चार-भुजा रेलवे स्टेशन से लगभग पांच किलोमीटर पश्चिम में बड़ी शिकारबाड़ी नामक स्थान पर सन् 1950 में मशीनों से बेरिल प्रभूत मात्रा में निकाला गया। डूंगरपुर की सागवाडा तहसील के पदेरी क्षेत्र में माइका के साथ बेरिल प्राप्त हुआ।

जयपुर विभाग में- किशनगढ़ रेलवे स्टेशन से लगभग 50 किलोमीटर दक्षिण-पूरब में गूजरवाडा में 50 फुट गहरी खान है। नीम-का-थाना से लगभग40 किलोमीटर पूरब के कुछ गांवों में यह खनिज पाया जाता है।

यूरेनियमः- यह भी अणु-शक्ति संबंधी खनिज है। इसकी खानें डूंगरपुर, बांसवाडा और किशनगढ़ में है। ये खानें बहुत छोटी है व उत्पादन बहुत ही कम होता है।

11-अन्य खनिज- तामड़ा:- तामडा को रक्तमणि या गारनेट भी कहते हैं। अनेक शताब्दियों से जयपुर के राजमहल व किशनगढ़ के सरवाड से प्राप्त तामडा संसार में प्रसिद्ध रहे हैं। इनका उपयोग पहले गहनों की तरह होता था किन्तु अब यह उपयोग बन्द हो गया है। यह वास्तव में लोहा और एल्यूमिनियम का एक प्रकार का मिश्रण होता है। इनमें पारदर्शी किस्म के भी पदार्थ मिलते हैं जो लाल रंग के सुन्दर व आकर्षक होते हैं। तामडा की खानें छोटी है। ये खानें अजमेर जिले के किशनगढ़ (सरवाड) तथा टोंक जिले के टोडारायसिंह में है। भीलवाड़ा जिले में भी इसकी खानें मिली हैं। यह ध्यान रहे कि भारत में राजस्थान के अतिरिक्त और कहीं तामड़ा की खानें नहीं है।

(ii)- पन्ना:-इसके उत्पादन में भी भारत में राजस्थान को ही एकाधिकार प्राप्त है। पन्ना एक प्रकार का जवाहरात है जो हरे रंग का होता है। भारत में सर्वप्रथम सन् 1943 में राजस्थान के उदयपुर जिले के कालागुमान गांव के निकट पन्ने की खान का पता लगा। इसके पश्चात् उदयपुर जिले के टिक्की में पन्ना मिला। कालागुमान चारभुजा रेलवे स्टेशन से लगभग 11 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। टिक्की गांव चारभुजा रेलवे स्टेशन से लगभग24 किलोमीटर उत्तर-पूरब में स्थित है। सन् 1952 में पन्ने की नई खान गमगुधा गांव में प्राप्त हुई। गमगुधा गांव नाथद्वारा से लगभग 25 किलोमीटर दूर खमनोर तहसील में है। अजमेर जिले में भी पन्ने की खानें मिली है।

(iii) टंगस्टन :-भारत में केवल एक खान जोधपुर के डेगाना क्षेत्र में रेलवे-स्टेशन के निकट स्थित एक पहाडी (रेवत पहाडी में) के पास है। डेगाना स्टेशन जोधपुर-फुलेरा रेलमार्ग पर जोधपुर से लगभग 150 किलोमीटर पूरब में स्थित है।

यह भी सामरिक महत्व का खनिज है। इसके मिश्रण से मजबूत इस्पात बनता है जो अस्त्र-शस्त्र बनाने के काम आता है। हीरे के पश्चात् टंगस्टन कड़ी से कड़ी वस्तु को काटने वाला दूसरा पदार्थ है।

(iv) बेराइट्जः- यह खनिज मुख्यतः अलवर जिले में पाया जाता है। थोडा बेराइट्ज भरतपुर जिले में भी पाया जाता है। अलवर के अनेक गांवों में (जामरौली, ग्वारा-मीना व ग्वारा-गूजर गांवों में) यह खनिज मिलता है। अलवर नगर से लगभग तीन किलोमीटर दूर मूरासिंह नामक स्थान पर भी एक छोटी खान है।

(v) बेन्टोनाइट :- वनस्पति तेलों व खनिज-तेलों को साफ करने के लिए भारी मात्रा में विदेशों से ब्लीचिंग पाउडर मंगाया जाता है जिसके स्थान पर बेन्टोनाइट अच्छा काम दे सकता है। देश के मिट्टी सिरेमिक (चीनी मिट्टी के बर्तन आदि) बनाने वाली कम्पनियों के लिये यह पालिश आदि के काम आता है।

राजस्थान में यह पदार्थ बाड़मेर व सवाईमाधोपुर जिलों में मिलता है। बाड़मेर में उत्तरलाई रेलवे स्टेशन से लगभग 50 किलोमीटर दूर हाथी की ढाणी में 20 फुट घनी परतों में अच्छे किस्म तक इसकी खानें फैली हुई है। उत्तरलाई से लगभग 35 किलोमीटर दूर गिरल नामक स्थान पर और 33 किलोमीटर दूर अकली गांव के निकट यह पदार्थ पर्याप्त मात्रा में मिलता है। बाड़मेर जिले में लगभग 110 लाख टन

बेन्टोनाइट के भंडार हैं। सवाईमाधोपुर जिले में दरगावन गाव के निकट इसकी खानें लगभग दस एकड़ भूमि में फैली हुई है।

(vi) केलसाइट- राजस्थान में इस रासायनिक पदार्थ को अभी व्यवस्थित रूप से निकालने का काम नहीं हुआ है। सीकर जिले के मोन्डा गांव में लगभग 50फीट गहरी दो खानें हैं। झुंझुनूं जिले में पापरना स्थान पर छोटे से स्थान पर छोटे से क्षेत्र में, सिरोही जिले के राजपुरा गांव व पिंडवारा में भी खानें हैं।

केलसाइट का उपयोग कांच और सिरेमिक के सामान बनाने में होता है। इससे कैलशियम कारबाइड, कार्बन-डाई-आक्साइड, ब्लीचिंग पाउडर तथा विस्फोटक पदार्थ भी बनाये जाते हैं।

(vii) फ्लोराइट- यह खनिज मुख्यत: इस्पात उद्योगों में काम आता है। इसकी खानें उदयपुर विभाग के डूंगरपुर जिले से पूरब की ओर लगभग 36 किलोमीटर की दूरी पर मांडव-की-पाल नामक पर्वत-श्रृंखलाओं के पास है। इसके निकटवर्ती कुछ गांवों में इसकी छोटी खानें हैं। ये खानें लगभग 10 वर्ग मील क्षेत्र में फैली हुई है। अनुमान है कि इन सब खानों में लगभग 150 लाख टन फ्लोराइट खनिज प्राप्त हो सकेगा।

(viii) राक फास्फेट- रासायनिक खाद के लिए यह खनिज बहुत महत्वपूर्ण है। अभी तक भारत में राक फास्फेट विदेशों से आयात किया जाता रहा है। इसकी खानें मुख्य रूप से उदयपुर जिले में झामर-कोटड़ा नामक स्थान पर मिली हैं। अनुमान है कि इन खानों में 8करोड मीट्रिक टन यह खनिज है। आजकल यहां से प्रतिदिन लगभग 2000 टन फास्फेट निकाला जा रहा है। खरवा-चांदा निकटवर्ती रेलवे स्टेशन है। सन् 1971 में उदयपुर जिले के मींडर, कटार तथा बैलागढ (त्रिदौली गांव) के निकट इस खनिज का पता चला था।

(ix) एसबेस्टस- यह एक प्रकार का रेशेदार नरम पत्थर है। इस पत्थर के रेशे निकालकर अनेक कामों में लेते है; इससे चादरें(टीन की चादरों के समान) व पाइप बनाये जाते हैं। यह जलता नहीं, इसलिये इसका प्रयोग सीमेण्ट का सामान बनाने में अधिक किया जाता है।

भारत में एसबेस्टस के कुल उत्पादन का लगभग 85 प्रतिशत भाग राजस्थान से ही प्राप्त होता है। राजस्थान में इसकी लगभग 30 खानें हैं। इसकी खानें उदयपुर, डूंगरपुर भीलवाडा और अजमेर जिलों में हैं। अलवर के निकट भी इसकी खानों का पता लगा है।

(x) कांच की मिट्टी- उत्तर प्रदेश के पश्चात् कांच की मिट्टी का सबसे बड़ा उत्पादक क्षेत्र राजस्थान ही है। यह राजस्थान में अनेक स्थानों पर मिलती है। जयपुर व कोटा जिलों में अच्छी किस्म की तथा बीकानेर, जोधपुर व उदयपुर में अपेक्षाकृत घटिया किस्म की मिट्टी मिलती है। धौलपुर के कांच के कारखाने में यही मिट्टी काम में आ जाती है। बूंदी व सवाईमाधोपुर में भी यह मिट्टी मिलती है। उत्तर प्रदेश में मुख्यत: फिरोजाबाद की चूड़ियों के कारखानों को यह मिट्टी भेजी जाती है।

(xi) मुल्तानी मिट्टी- यह मिट्टी बीकानेर जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में पाई जाती है। राजस्थान में मुल्तानी मिट्टी के लगभग20 करोड़ टन अनुमानित भंडार हैं।

(xii) चूने का पत्थर- जोधपुर क्षेत्र में सोजत और गोटन, उदयपुर में चित्तौड़गढ़ कोटा में लाखेरी, जयपुर में सवाईमाधोपुर आदि में चूने के पत्थर की अनेक खानें हैं। सवाईमाधोपुर, लाखेरी और चित्तौड़ के चूने के पत्थर का उपयोग वहां के सीमेंट के कारखाने कर रहे हैं। हाल ही में जैसलमेर जिले में लगभग 600 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले हुये 800मिलियन टन स्टील ग्रेड चूना पत्थर के भंडार का पता चला है।

(xiii) इमारती पत्थर- राजस्थान भारत में इमारती पत्थर उतत्पन्न करने वाला सबसे बड़ा राज्य है। यहां अनेक प्रकार के इमारती पत्थर मिलते हैं। जोधपुर में गुलाबी व भूरे रंग के इमारती पत्थरों की खानें हैं। जोधपुर व मीनावाड़ा की पत्थर की पट्टियां प्रसिद्ध हैं जिनका उपयोग मकान की छतों को तैयार करने में किया जाता है। उदयपुर व डूंगरपुर में काला-पत्थर और जैसलमेर में पीले व छींटदार पत्थर मिलते हैं। करौली धौलपुर व भरतपुर के निकट भी लाल रंग का इमारती पत्थर निकाला जाता है।

(xiv) अन्य पत्थर- अलवर जिले में स्लेट के पत्थर की अनेक खानें हैं। स्लेट का पत्थर चिकना और काले रंग का होता है। गेरू मिट्टी की खानें अलवर सवाईमाधोपुर और जैसलमेर में पाई जाती हैं।

राजस्थान राज्य खनिज विकास निगम लि०

राजस्थान में खनिज सम्पदा के दोहन एवं विपणन कार्य को समुचित गति देने तथा वैज्ञानिक रीति से उसके विक्रय के उद्देश्य से एक नवम्बर 1979को कम्पनी अधिनियम, 1956 के अन्तर्गत राजकीय कम्पनी के रूप में इस निगम की स्थापना की गई। सात करोड़ रुपये की अधिकृत पूंजी वाले इस निगम की कुल चुकता अंश पूंजी 31 मार्च,1988को 5 करोड़ 42 लाख रु० थी।

वर्ष 1988-89के दौरान निगम को राज्य सरकार द्वारा 16 विभिन्न परियोजनाओं के अन्तर्गत 43 खनन पट्टे व कार्यानुमति तथा 14 पट्टे सरकारी अभिकर्त्ता के रूप में खनन करने हेतु प्रदत्त किये गये। निगम द्वारा मुख्यत: रॉक फास्फेट जिप्सम एवं चूना पत्थर का उत्पादन किया गया। वर्ष 1988-89 में दिसम्बर, 1988तक 49 हजार 968मै. टन रॉक फास्फेट, चार लाख 31 हजार मै टन जिप्सम तथा तीन लाख मै टन चूना पत्थर का उत्पादन निगम द्वारा किया गया। जिप्सम उत्पादन में तो निगम देश की सबसे बड़ी कम्पनी के रूप में उभरकर सामने आया है।

निगम का कारोबार वर्ष 1980-81 में 1.71 करोड़ रुपये का था जो बढ़कर 1987-88 में 17 48 करोड़ रुपये हो गया। वर्ष 1987-88 में निगम को एक करोड़ छः लाख रुपये काशुद्ध लाभ हुआ जिसमें से 16 लाख 28 हजार रुपये राज्य सरकार को लाभांश के रूप में दिये गये हैं।

राजस्थान राज्य टंगस्टन-विकास निगम लि०

इस निगम का गठन रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अनुरोध पर राजस्थान राज्य खनिज विकास निगम की सहायक कम्पनी के रूप में 22 नवम्बर, 1983 को किया गया। इसके मूल उद्देश्यों में डेगाना(जिला नागौर) की टंगस्टन खान को आधुनिकतम तकनीक से विकसित करना, नये भण्डारों की खोज करना तथा राजस्थान व भारतवर्ष के किसी भी भाग में पाये जाने वाले टंगस्टन एवं इसके साथ पाये जाने वाले सभी खनिज पदार्थों का सर्वेक्षण, गवेषण, खनन, दोहन व परिष्करण एवं उक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अनुसंधान एवं विकास योजनायें बनाकर क्रियान्वित करना है। वर्तमान में निगम की दो परियोजनायें डेगाना कस्बे के निकट ग्राम रेवत (जिला नागौर) तथा ग्राम बाल्दा(जिला सिरोही) में कार्यरत हैं।

वर्ष 1988-89 में जनवरी, 1989 तक डेगाना इकाई से 70% श्रेणी का 15.60 मै टन तथा बाल्दा इकाई से 1.18 मै.टन टंगस्टन का उत्पादन हुआ।वर्ष 1987-88के दौरान निगम को 10 25 लाख रुपये का घाटा हुआ।

राजस्थान राज्य खान एवं खनिज निगम लि०

भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 के अन्तर्गत स्थापित राज्य सरकार का यह उपक्रम मुख्यत: उदयपुर जिले के झामरकोटड़ा क्षेत्र में रॉक फास्फेट के खनन, परिशोधन तथा विपणन का कार्य करता है।

इसके साथ ही पश्चिमोत्तर राजस्थान के चूरू, बीकानेर, श्रीगंगानगर एवं पाली जिलों में जिप्सम एवं सेलेनाइट के खनन एवं विक्रय का कार्य भी निगम द्वारा किया जाता है। देश में काम आने वाले उच्च श्रेणी के प्लास्टर ऑफ पेरिस की पूर्ति इसी निगम द्वारा दोहित सेलेनाइट द्वारा की जाती है।

वर्ष 1988-89 के दौरान निगम द्वारा रॉक फास्फेट क्षेत्र में 34.50 लाख मैट्रिक टन ओवर बर्डन हटाने तथा 2.50 लाख मैट्रिक टन रॉक फास्फेट उत्पादन के लक्ष्य निर्धारित किये गये थे।इनमें माह दिसम्बर, 1988 तक 24.50 लाख मैट्रिक टन ओवर बर्डन हटाने व 2.20लाख टन रॉक फास्फेट उत्पादन का कार्य सम्पन्न हो चुका था। जिप्सम एवं सेलनाइट क्षेत्र में इस वर्ष के दौरान4.65लाख टन जिप्सम उत्पादन के लक्ष्य के विरुद्ध माह नवम्बर, 1988 तक 2.80 लाख टन जिप्सम का उत्पादन हुआ।

पैट्रोलियम की संभावनाएं

जैसलमेर के भूतपूर्व महारावल के अनुरोध पर डा. सिरिल एस. फोक्स ने इस क्षेत्र की अध्ययन-यात्रा की थी तथा उन्होंने अपनी रिपोर्ट में इस क्षेत्र में पैट्रोलियम पाये जाने की संभावनाओं को बतलाया था, किन्तु उस समय इस दिशा में कोई कार्य नहीं किया जा सका।

भारत सरकार ने इस क्षेत्र की विस्तृत जांच का निर्णय लिया तथा मार्च 1955 में एक दल ने इस संबंध में खोज भी की। तृतीय पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भ में तेल और प्राकृतिक गैस कमीशन को यह कार्य सौंपा गया। इस कमीशन ने जोधपुर में अपना कार्यालय स्थापित किया तथा एक फ्रांसीसी कम्पनी के सहयोग से1964 में जैसलमेर में लोंगेवाला नामक स्थान पर ड्रिलिंग का कार्य शुरू किया। यह उल्लेखनीय है कि भूगर्भीय मानचित्र के अनुसार इन्हीं अक्षांशों पर स्थित पाकिस्तान के सुई नामक स्थान पर गैस प्राप्त हुई है जो सुई-गैस के नाम से विख्यात है। यह भी संभावना है कि जैसलमेर में तेल और गैस दोनों बहुतायत से उपलब्ध हो सकें।

सन् 1965 में व फिर सन् 1971 में पाकिस्तान द्वारा इस क्षेत्र पर भी आक्रमण किया गया जिससे कार्य में कुछ अवरोध-सा उत्पन्न हो गया था। यदि जैसलमेर में पैट्रोलियम प्राप्त होने की संभावनाएं बढ़ी तो यह निर्जन मरुस्थल प्रदेश के लिए वरदान सिद्ध होगा। सन् 1983 में आयोग ने जैसलमेर के घोटारू व मनिहारी टिब्बा नामक स्थानों पर प्राकृतिक गैस के विशाल भंडार का पता लगाया। यहां अनुमानतः 10 अरब घन मीटर प्राकृतिक गैस है। इन दोनों स्थानों पर चार-चार कुओं में गैस मिली है। मनिहारी टिब्बा के चार कुओं में प्रतिदिन 50 हजार घनमीटर की दर से गैस उपलब्ध होने का अनुमान लगाया गया है। इसमें 60 प्रतिशत मिथेन है तथा 0.02 प्रतिशत बहुमूल्य हीलियम गैस की मात्रा है। घोटारू के कुओं में 20 हजार घनमीटर प्रतिदिन के हिसाब से गैस उपलब्धि की क्षमता है। इसमें मिथेन 20 प्रतिशत तथा हीलियम 0.12 प्रतिशत है।

भारत सरकार की एक अन्य कम्पनी ऑयल इण्डिया लि० भी 1984 से यहां पैट्रोलियम की खोज में संलग्न है। जैसलमेर जिले के तनोट और रामगढ़ में इसने तीन कुओं की खुदाई पूरी कर ली है। इन तीनों में गैस के भण्डार मिले हैं। अब तक किये गए सर्वेक्षण से इस क्षेत्र में लगभग एक अरब घनमीटर गैस होने की पुष्टि हुई है। 14 मई, 1989 को इस कम्पनी द्वारा तनोट से 17 कि०मी० दूर चौथे कुएं की खुदाई भी प्रारंभ कर दी गई। यह कुआं अब तक का सबसे गहरा लगभग 5 हजार मीटर तक खोदा जाएगा। यहाँ तेल मिलने की काफी संभावना है। अगले वित्तीय वर्ष (1990-91) से ऑयल इण्डिया तनोट व रामगढ़ के गैस कुओं से एक लाख घन मीटर गैस की आपूर्ति प्रतिदिन की जा सकेगी।

आठवीं पंचवर्षीय योजना में ऑयल इण्डिया राजस्थान की परियोजना पर 115 करोड़ रुपये खर्च करेगा। इस अवधि में राजस्थान में तेल और गैस के लिए बीस कुएं खोदे जाने का प्रस्ताव है। इस योजनाकाल में इस क्षेत्र में [illegible] गैस और तेल की [illegible] स्थापना करना भी प्रस्तावित है।

उद्योग - धन्धे

उद्योगों को मोटे रूप में तीन श्रेणियों में बांटा गया है—

(1) कुटीर उद्योग—जो पूर्ण रूप से प्राय श्रमिक द्वारा अपने परिवार के सदस्यों की मदद से अपने ही घर या किसी अन्य स्थान पर चलाया जाता है और जिस पर कारखाना अधिनियम-1948 लागू नहीं होता। इसमें अन्य उद्योगों के अतिरिक्त मुर्गी-पालन डेयरी तथा मधुमक्खी पालन भी आ जाते है।

(2) लघु उद्योग—ऐसे उद्योग को कहते हैं जो श्रमिक के घर पर नहीं चलाए जाते और जिनमें 35 लाख रुपयों से कम की पूंजी का विनियोग हो।

(3) वृहद उद्योग—इन्हें बड़े उद्योग या भारी उद्योग भी कहते हैं। इनमें पूंजी विनियोग 35 लाख रुपयों से अधिक होता है और मजदूरों की संख्या भी अपेक्षाकृत अधिक होती है।

कुछ उद्योग ऐसे भी है जो कुटीर या लघु या वृहद तीनों ही श्रेणियों में आ जाते हैं। उदाहरण के लिए सूती वस्त्र उद्योग या लोहा उद्योग। यदि सूती वस्त्र घर पर ही बनाये जाते हैं तो वे कुटीर उद्योगों मे सम्मिलित होंगे किन्तु यदि बड़ी-बड़ी मिलें स्थापित की जाती है तो वे बड़े उद्योगों में गिनी जाएगी। इसी प्रकार यदि लुहार अपने घर पर लोहे के घरेलू सामान बनाता है तो वह कुटीर उद्योग है किन्तु बड़े-बड़े कारखाने लघु या वृहद उद्योग की परिभाषा में आ जायेंगे।

राज्य में जितने भी उद्योग पनप रहे है उनको निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है —

1 कृषि आधारित उद्योग
2 वन आधारित उद्योग
3 पशु आधारित उद्योग
4 खनिज आधारित उद्योग
5 रासायनिक उद्योग
6 धात्विक उद्योग
7 इंजीनियरिंग उद्योग

राजस्थान के प्रमुख उद्योग इस प्रकार है —

1. सूती वस्त्र उद्योग
2 सीमेण्ट उद्योग
3 चीनी उद्योग
4 नमक उद्योग
5. ऊन उद्योग
6 धातु उद्योग
7. इंजीनियरिंग उद्योग
8. वनस्पति उद्योग
9. उर्वरक उद्योग

राजस्थान

1. सूती वस्त्र उद्योग—भारत में जिस तरह सूती वस्त्र उद्योग अत्यन्त प्राचीन और महत्वपूर्ण है उसी तरह राजस्थान में भी सूती वस्त्र उद्योग प्राचीन और महत्वपूर्ण है। सूती वस्त्र की मिलों की स्थापना के पूर्व यह उद्योग कुटीर उद्योगों के रूप में ही था और कई रूपों में आज भी है लेकिन मिलों की स्थापना से राज्य के इस कुटीर उद्योग को धक्का लगा और अब तो सूती वस्त्र कुटीर उद्योग के नाम पर प्रायः दरी-निवाड़ तक ही सीमित रह गया है। यद्यपि राज्य में बड़े उद्योगों में प्रमुख स्थान सूती वस्त्र उद्योग का ही है किन्तु उत्पादित वस्त्र की श्रेष्ठता की दृष्टि से अभी राजस्थान काफी पीछे है।

राजस्थान में सर्वप्रथम सूती मिल ब्यावर (अजमेर के निकट) सन 1889 में (दी कृष्णा मिल्स लि०) स्थापित की गई। इसके पश्चात दूसरी मिल (एडवर्ड मिल्स लि०) सन 1906 में ब्यावर में ही स्थापित की गई। इसके पश्चात तीसरी मिल (श्री महालक्ष्मी मिल्स लि०) भी ब्यावर में (स्टेशन के निकट) सन 1925 में स्थापित की गई। इस प्रकार सन 1925 तक केवल ब्यावर में ही सूती वस्त्र मिलें स्थापित हुई।

इसके पश्चात भीलवाड़ा में मेवाड़ टैक्सटाइल मिल्स के नाम से एक मिल सन 1938 में स्थापित की गई। सन 1942 में पाली (जोधपुर) में महाराजा श्री उम्मेद मिल्स स्थापित की गई। इसके पश्चात किशनगढ़, विजयनगर (अजमेर) जयपुर गंगानगर भवानीमंडी कोटा उदयपुर आदि में सूती मिलें स्थापित हुई। कुछ मिलों के नाम ये हैं—सार्दुल टैक्सटाइल्स लि० (स्थापित सन 1946—गंगानगर) कोटा टैक्सटाइल्स (सन 1956 से श्रीनिवास कॉटन मिल्स, बंबई की सहायक कम्पनी के रूप में कार्य कर रही है), राजस्थान स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० (1960—भीलवाड़ा) आदित्य मिल्स (1960—किशनगढ़), पोद्दार मिल्स, जयपुर (यह बम्बई में स्थित पोद्दार मिल्स लि० की इकाई है जयपुर स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स भी इसकी सहायक कम्पनी के रूप में कार्यरत रही) उदयपुर कॉटन मिल्स (1961—उदयपुर, यह स्वदेशी कॉटन मिल्स कानपुर की इकाई के रूप में कार्य कर रही है)। भवानीमंडी में सन् 1968 में एक सूती मिल स्थापित की गई।

वर्तमान में राज्य की प्रमुख सूती वस्त्र की मिलें इस प्रकार है—आदित्य मिल्स किशनगढ़ बांसवाड़ा फैब्रिक्स बांसवाड़ा बांसवाड़ा सिन्थेटिक्स बांसवाड़ा पोद्दार मिल्स जयपुर एडवर्ड मिल्स ब्यावर, कृष्णा मिल्स ब्यावर महाराजा श्री उम्मेद मिल्स-पाली महालक्ष्मी मिल्स ब्यावर मार्डन सिन्थेटिक्स अलवर, मेवाड़ टैक्सटाइल्स भीलवाड़ा राजस्थान स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स भीलवाड़ा राजस्थान स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स खारी-ग्राम (भीलवाड़ा) राज० को-आपरेटिव स्पिनिंग मिल्स गुलाबपुरा, राज० टैक्सटाइल मिल्स-भवानीमंडी विजय कॉटन मिल्स विजयनगर सुदर्शन टैक्सटाइल्स कोटा सार्दुल टैक्सटाइल्स श्रीगंगानगर मार्डन वूलन्स [illegible] (भीलवाड़ा) उदयपुर कॉटन मिल्स उदयपुर हर्षा टैक्सटाइल्स जोधपुर।

मोटे रूप से सूती वस्त्र उद्योग ब्यावर पाली जयपुर भीलवाड़ा किशनगढ़ श्रीगंगानगर विजयनगर, उदयपुर, भवानीमंडी व कोटा में स्थित है।

सिन्थेटिक फाइबर की एक मिल बारोड़ में भी खोली गई है।

2. सीमेण्ट उद्योग—सीमेण्ट बनाने के लिए चूने का पत्थर, जिप्सम और [illegible] की आवश्यकता होती है। राज्य में चूने के पत्थर और जिप्सम के विशाल भण्डार है। [illegible] मंगाया जाता है।

राजस्थान में सीमेंट बनाने का प्रथम कारखाना बूंदी के निकट लाखेरी में सन 1915 में स्थापित किया गया था। यह ए० सी० सी० ग्रुप का है। इसके पश्चात जयपुर उद्योग लिमिटेड ने सन 1953 में

सवाईमाधोपुर में सीमेंट बनाने का एक कारखाना स्थापित किया। यह कारखाना साहू-जैन उद्योग समूह का है तथा वर्तमान में यह राज्य सरकार के आधिपत्य में है। तीसरा कारखाना उदयपुर में बिड़ला ब्रदर्स का बिड़ला सीमेंट वर्क्स है। सीमेंट का चौथा कारखाना उदयपुर में चित्तौड़गढ़ सीमेंट वर्क्स है। सवाईमाधोपुर का कारखाना 'त्रिशूल' छाप सीमेंट का व चित्तौड़गढ़ का कारखाना 'मेवाड़' छाप सीमेंट का निर्माण करता है। बिड़लाओं का एक अन्य कारखाना मोडक में मंगलम सीमेंट्स तथा बांगड़ प्रतिष्ठान का ब्यावर में श्री सीमेंट्स के नाम से चल रहा है।

इस तरह इस समय सीमेंट के कारखाने लाखेरी, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़, उदयपुर मोडक (कोटा) ब्यावर और निम्बाहेड़ा में स्थापित है। मिनी सीमेंट प्लान्ट सिरोही, नीम-का-थाना (सीकर) तथा बहरोड़ (अलवर) में स्थापित किये जा रहे हैं।

3. चीनी उद्योग—राज्य में चीनी-उत्पादन के कुल तीन कारखाने है जो भोपाल-सागर (चित्तौड़), केशोरायपाटन (बूंदी) तथा श्रीगंगानगर में स्थित है।

राज्य में चीनी बनाने का सबसे पहला कारखाना चित्तौड़गढ़ जिले के भोपालसागर में सन 1932 में स्थापित किया गया। इस कारखाने का नाम मेवाड़ शुगर मिल्स है। उदयपुर संभाग में उत्पादित गन्ने का उपयोग इस कारखाने में चीनी बनाने के काम में होता है।

चीनी का दूसरा कारखाना सन 1937 ई० में श्रीगंगानगर में स्थापित किया गया। इसका नाम गंगानगर शुगर मिल्स है। इस कारखाने को बीकानेर के लाभचन्द ब्यास व पोखरदास ने प्रारम्भ में तीन लाख रुपयों की पूंजी से स्थापित किया था। 8 वर्षों तक इस कारखाने में उत्पादन नहीं होने के बाद सन 1946 में इसे 'बीकानेर इण्डस्ट्रियल कारपोरेशन' ने खरीद लिया। तब से चीनी का उत्पादन तो होने लगा लेकिन कार्य सन्तोषजनक ढंग से नहीं चल पाया। सन 1953 के आखिरी दिनों में राजस्थान सरकार ने कारपोरेशन से इस कारखाने को लीज पर ले लिया और इस तरह अब इस पर राज्य सरकार का नियंत्रण है।

इसके अतिरिक्त बूंदी जिले के केशोरायपाटन में सन 1970 में सहकारी क्षेत्र में चीनी का तीसरा कारखाना स्थापित किया गया। अकाल के कारण वर्ष 87-88 में इस कारखाने में चीनी का उत्पादन बन्द रहा, क्योंकि चारे के लिए गन्ना ऊंची कीमत पर खरीद कर पशु सम्पदा को बचाया गया।

इनके अतिरिक्त भारत सरकार के सहयोग से गंगानगर शुगर मिल्स में चुकन्दर से चीनी बनाने की योजना सन 1968 में प्रारम्भ की जा चुकी है। यह प्रयोग काफी सफल रहा और चुकन्दर से चीनी बनाने का कार्य प्रति वर्ष बढ़ता जा रहा है। इसके लिए आसपास के क्षेत्रों में जापान, जर्मनी, युगोस्लाविया आदि से चुकन्दर के उन्नत किस्म के बीज मंगाए गए है। चुकन्दर की खेती अब काफी की जाने लगी है।

4. नमक उद्योग—नमक का उद्योग राज्य के प्रमुख बड़े उद्योगों में से है। वस्तुतः यह एक प्रकार की खेती है। वर्षा या खारे कुओं के जल को क्यारियों में एकत्र किया जाता है। पानी तो भाप बनकर उड़ जाता है और पपड़ी के रूप में गन्दा नमक जम जाता है जिसे साफ कर शुद्ध किया जाता है। शुद्ध नमक मनुष्यों के काम आता है जबकि गंदा नमक पशुओं एवं अन्य कार्यों के लिए काम में लिया जाता है।

नमक का उत्पादन यहां सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में किया जाता है। सार्वजनिक क्षेत्र में नमक का उत्पादन सांभर झील, पचभद्रा और डीडवाना में किया जाता है। निजी क्षेत्र में फलौदी, पोकरण, कुचामन सिटी और सुजानगढ़ इसके प्रमुख स्थान हैं।

राजस्थान में सबसे अधिक नमक सांभर झील से प्राप्त किया जाता है। सांभर झील जयपुर-जोधपुर रेलमार्ग पर जयपुर से लगभग 60 किलोमीटर दूर है। फुलेरा से यह झील काफी निकट है। यह झील

कारपोरेशन जयपुर (लोहे के टावर तथा इमारती खिड़कियां आदि), केबल इण्डस्ट्री कोटा, सिमको वैगन फैक्ट्री भरतपुर जो रेलवे के डिब्बे बनाती है, नेशनल इन्जीनियरिंग कम्पनी जयपुर जो विभिन्न प्रकार के बियरिंग बनाती है और इस क्षेत्र में एशिया की सबसे बडी कम्पनी है, राज० इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन जयपुर (टी० वी०), फ्लोसेपर संयंत्र डूंगरपुर-जहां इस्पात, एल्यूमीनियम व फ्लोराइड बनाने के लिए फ्लोसेपर तैयार किया जाता है।

औद्योगिक विकास के साथ ही राज्य में अन्य प्रमुख उद्योगों की स्थिति इस प्रकार है:—

राजस्थान जिंक लि०—उदयपुर। कृत्रिम रेशम के कारखाने-कोटा, गुलाबपुरा, जयपुर बांसवाडा। हिन्दुस्तान कापर लि०—खेतड़ी नगर (झुंझुनूं)। लोको एण्ड कैरिएज वर्कशाप अजमेर (इंजनों की मरम्मत तथा मालगाड़ी के डिब्बे)। एलाय स्टील-जयपुर, उदयपुर में। वैगन फैक्ट्री कोटा (बड़ी लाइन के वैगन), सल्फ्यूरिक एसिड प्लाण्ट-अलवर। नाप-तौल यंत्र-कोटा। खेलकूद का सामान-हनुमानगढ। घीया पत्थर के कारखाने-दौसा, भीलवाडा, उदयपुर। माचिस के कारखाने-कोटा, उदयपुर, फतेहगढ (उदयपुर)। टायर उद्योग-कोटा, कांकरोली में। उर्वरक-कोटा, देवली (उदयपुर में)।

राज्य के कुछ अन्य प्रमुख कारखाने है—एच०एम०टी० अजमेर, जे०के० सिन्थेटिक्स कोटा, श्रीराम रेयन्स कोटा, जयपुर सिन्थेटिक्स लि० जयपुर, अवन्ती स्कूटर्स अलवर, ओरियण्टल पावर केबल्स कोटा, लेलैण्ड ट्रक कारखाना अलवर, जामेटिया पेपर मिल्स, भीलवाडा।

औद्योगिक बस्तियाँ

उद्योग-धन्धों के विकास के लिए राज्य सरकार ने कई कदम उठाए हैं। इन्ही के अन्तर्गत निम्नलिखित औद्योगिक बस्तियों को विकसित किया जा रहा है:—

जयपुर में—सुदर्शनपुरा, मालवीय नगर व विश्वकर्मा, अजमेर मे लालूपुरा व परबतपुरा, भीलवाडा, इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र कोटा, जोधपुर, भरतपुर, उदयपुर, श्रीगंगानगर, सुमेरपुर, बीकानेर, पाली व भिवाडी (अलवर)।

इसके अतिरिक्त सवाईमाधोपुर, सीकर, पिलानी, खेतडी, टोंक, किशनगढ और शाहपुरा में भी औद्योगिक क्षेत्रों का विकास किया जा रहा है।

औद्योगिक सम्भावनाओं के आधार पर सम्पूर्ण राज्य (27 जिलों) को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है:—

विशिष्ट श्रेणी में केवल जयपुर जिला है।

'ए' श्रेणी में—अलवर, जोधपुर भीलवाडा, उदयपुर, कोटा, अजमेर, पाली जिले आते हैं।

'बी' श्रेणी के जिले हैं—बांसवाडा, नागौर, टोंक, सीकर, झुंझुनू, भरतपुर, बीकानेर, चित्तौडगढ, गंगानगर, सवाईमाधोपुर।

'सी' श्रेणी में आते हैं—चूरू, झालावाड, बूंदी, सिरोही, डूंगरपुर, बाडमेर, जैसलमेर, जालौर, धौलपुर।

उद्योगों के विकास के लिए सात उप जिला केन्द्र भी भिवाडी, ब्यावर, आबूरोड मकराना बालोतरा फालना तथा हनुमानगढ में खोले गए हैं।

औद्योगिक विकास के लिए राज्य सरकार ने लीड बैंक योजना भी चलाई है। इस योजना के तहत निम्न प्रकार बैंकों को जिले संभलाये जा रहे हैं —

बैंक आफ बड़ौदा—अजमेर भीलवाड़ा बूंदी चित्तौड़गढ़ बांसवाड़ा चूरू डूंगरपुर टोंक, झुंझुनू एवं सवाईमाधोपुर।

पंजाब नेशनल बैंक—भरतपुर, अलवर, सीकर, धौलपुर।

राजस्थान बैंक—उदयपुर।

यूको बैंक—जयपुर, जोधपुर, नागौर।

सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया—कोटा झालावाड़।

स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर—बाड़मेर, बीकानेर, गंगानगर जैसलमेर, नागौर पाली व सिरोही।

सहकारी क्षेत्र के प्रमुख उद्योग

1. केशोरायपाटन शुगर मिल्स—केशोरायपाटन (बूंदी)।
2. राजस्थान सहकारी स्पिनिंग मिल्स—गुलाबपुरा (भीलवाड़ा)।
3. पशु आहार कारखाना—जयपुर।
4. चावल मिलें—जो बारां, उदयपुर बूंदी, बांसवाड़ा कोटा और हनुमानगढ़ में लगाई जा रही है।
5. शीत भण्डार—जयपुर और अलवर।
6. कीटनाशक—जयपुर।

वित्तीय संस्थाएँ

औद्योगिक विकास के लिए राज्य मे 6 वित्तीय संस्थाएं हैं जो उद्योगों को वित्तीय साधन उपलब्ध कराती हैं :—

1. राजस्थान लघु उद्योग निगम।
2. रीको (राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास व विनियोजन निगम)।
3. राजस्थान वित्त निगम।
4. राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड।
5. राजस्थान कृषि उद्योग निगम।
6. राजस्थान स्वकर्मी विकास निगम।

अप्रैल, 1987 में राज्य में उद्योगों की स्थिति इस प्रकार थी—
उद्योगों की संख्या—128970
विनियोजित पूंजी—51
श्रमिकों की
औद्योगिक
जिला

लघु एवं कुटीर उद्योग

राज्य के प्रमुख लघु एवं कुटीर उद्योग निम्न प्रकार हैं :—

1. **सूती वस्त्र उद्योग**—यह राजस्थान का सबसे पुराना और सबसे बड़ा कुटीर व लघु उद्योग है। वैसे तो प्रत्येक गांव में ग्रामीणों की आवश्यकतानुसार थोड़ा-बहुत कपड़ा बनाया जाता है। किन्तु कुछ क्षेत्रों ने विशेष प्रकार के वस्त्र-निर्माण में विशिष्टता प्राप्त कर ली है। उदाहरण के लिये—कोटा की मसूरिया साड़ी, जोधपुर व जयपुर की चुनरियाँ व लहरिये प्रसिद्ध हैं। गोविन्दगढ़, करौली व जालौर का बना हुआ कपड़ा भी प्रसिद्ध है। गुढ़ा, बालोतरा, फालना, सुमेरपुर आदि स्थानों में खेसला, धोती व टुकड़ी अच्छी बनती है। उदयपुर व जयपुर में पगड़ियाँ व पेचे अच्छे बनते हैं।

हजारों व्यक्ति हाथकर्घे पर कार्य करते हैं। हाथकर्घे के द्वारा मोटा कपड़ा, साड़ियां, चादरें, तौलिये आदि अनेक प्रकार के वस्त्र तैयार किये जाते हैं।

महात्मा गांधी ने भारत में खादी का प्रचार बढ़ाया। सभी कांग्रेसी नेता व प्रायः अन्य नेता आवश्यक रूप से बढ़िया व कीमती खादी ही पहनते हैं। अन्य अनेक लोग मोटी खादी पहनते हैं। गांवों के निर्धन लोग प्रायः मोटी खादी पहनते हैं। जुलाहे खादी का कपड़ा अपने घरों पर ही तैयार करते हैं। राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड खादी बनाने में महत्वपूर्ण योग देता है। यह एक प्रमुख कुटीर उद्योग है।

2. **बंधाई, छपाई व रंगाई**—यह राजस्थान की प्राचीन कला है। यह उद्योग प्रायः सभी नगरों व बड़े गांवों में होता है। जयपुर, जोधपुर, चित्तौड़ व भरतपुर में कपड़ों पर बढ़िया छपाई होती है। पाली और पीपाड़; जयपुर के सांगानेर व बगरू तथा कोटा की रंगाई-छपाई प्रसिद्ध है। जयपुर, कुचामन, नागौर, उदयपुर व कोटा में बंधाई का काम अच्छा होता है। बंधाई का काम प्रायः स्त्रियां करती हैं और रंगाई का पुरुष।

3. **ऊनी वस्त्र उद्योग**—राजस्थान में भारत की कुल ऊन का एक प्रमुख भाग उत्पन्न होता है। थोड़ा ऊन तो राज्य में काम आ जाता है और शेष बाहर भेजा जाता है। बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर व जयपुर इस उद्योग के प्रमुख केन्द्र हैं। ऊन के नमदे, कम्बल, आसन, घोड़े व ऊंट की जीनें व मोटा कपड़ा बनाया जाता है। बीकानेर, चूरू, लाडनूं आदि में ऊनी मिलें लघु-उद्योग के क्षेत्र में स्थापित की गई हैं।

4. **गोटा उद्योग**—अजमेर, जयपुर और खंडेला इस कार्य के लिए प्रसिद्ध हैं। यह एक व्यवस्थित उद्योग है।

5. **दरी व निवाड़ उद्योग**—पहले दरी बनाने का कार्य अधिकतर मुसलमान किया करते थे जिनमें से बहुत से पाकिस्तान चले गये। राजस्थान की जेलों में भी सुन्दर, मजबूत व बढ़िया दरियां बनाई जाती हैं। निवाड़ बनाने का कार्य अनेक नगरों व कस्बों में होता है। निवाड़ उद्योग में मुख्यतः स्त्रियां लगी हुई हैं।

6. **चर्म उद्योग**—राजस्थान में पशुओं की संख्या अधिक होने से चमड़ा भी बहुत प्राप्त होता है। चमड़े को साफ करके बाहर—कानपुर, आगरा, मद्रास भेज देते हैं। गांवों में चमड़े के जूते, मशक, चड़स, घोड़े की जीनें व बटुए आदि बनाये जाते हैं। चमड़ा पकाने के पदार्थ राजस्थान में उपलब्ध हैं। चर्म उद्योगों में जूतियां महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। जयपुर व जोधपुर इसके लिए प्रमुख दो केन्द्र हैं।

7. **लकड़ी का काम**—कोटा, उदयपुर, बांसवाड़ा व उदयपुर जिलों में घने जंगल हैं, जिनसे लकड़ी प्राप्त करके निकट के नगरों को भेज देते हैं। नगरों में विशेषतः फर्नीचर, किवाड़, पलंग आदि

करोड़ रुपये तथा प्रदत्त पूंजी 3.85 करोड़ रुपये थी। वर्ष 1987-88 में निगम का टर्न ओवर 2064 लाख रुपये था। निगम द्वारा किये जाने वाले प्रमुख कार्य निम्न प्रकार हैं—

1. राज्य की लघु उद्योग इकाइयों के लिए विभिन्न प्रकार के कच्चे माल का उपार्जन एवं वितरण।

2. राज्य के हस्त-शिल्प के प्रचार-प्रसार व विपणन की व्यवस्था अपने एम्पोरियमों द्वारा करना।

3. सांगानेर हवाई अड्डे पर स्थित एयर कार्गो काम्पलेक्स का संचालन कर हस्तशिल्पियों को सीधे निर्यात की सुविधा करना।

4. उत्पादन इकाइयों का संचालन करना।

5. हस्तशिल्पियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करना तथा नये डिजायन विकसित करवाना।

राजकीय उपक्रम

राजकीय उपक्रम विभाग की स्थापना सन् 1964 में की गई। वर्तमान में विभाग द्वारा तीन विभागीय उद्योग तथा दो सरकारी कम्पनियां संचालित की जा रही हैं।

राजकीय लवण स्रोत, डीडवाना—इस स्रोत को भारत सरकार ने सन् 1960 में उद्योग विभाग को तथा उद्योग विभाग ने सन् 1964 में इस विभाग को हस्तान्तरित किया। यह स्रोत 1910 एकड़ में फैला हुआ है। क्षेत्र में पुश्तैनी देशवालों द्वारा 400 क्यारे तथा 800 क्यारे विभाग द्वारा दी गई लीज के तहत कार्यरत हैं। क्यारों का एकत्र पानी रिस कर नमक उत्पादन क्षेत्र में आता है जिसे ब्राईन कहते हैं। डीडवाना क्षेत्र में इस ब्राईन से नमक के अलावा प्रचुर मात्रा में सोडियम सल्फेट भी प्राप्त होने से इसका अधिकांश उपयोग खाने में नहीं किया जाता। वर्तमान में स्रोत पर 80 से 85 प्रतिशत अखाद्य नमक ही बनाया जाता है। भारत सरकार ने खाद्य नमक की शुद्धता को 92 प्रतिशत से बढ़ाकर 96 प्रतिशत कर दी है जिससे अखाद्य नमक का उत्पादन बढ़ा है।

विभाग द्वारा वर्ष 86-87 में 14.53 लाख क्विंटल, 87-88 में 11.03 लाख क्विंटल 1988-89 में (दिसम्बर तक) 6.24 लाख क्विंटल उत्पादन तथा क्रमशः 40.53 लाख क्विंटल, 46.80 लाख क्विंटल एवं 43.55 लाख क्विंटल का स्टाक तथा 5.66 लाख क्विंटल, 4.76 लाख क्विंटल एवं 9.49 लाख क्विंटल का विक्रय किया गया।

राजकीय लवण स्रोत, पचपदरा—बाड़मेर जिले की पचपदरा तहसील के 32 वर्ग मील क्षेत्र में फैले इस स्रोत की उत्पादन क्षमता 6 लाख क्विंटल वार्षिक है। नमक उत्पादन पुश्तैनी रूप से खारवाल करते हैं।

वर्ष 1986-87 में 2.87 लाख क्विंटल, 1987-88 में 2.59 लाख क्विंटल एवं दिसम्बर,88 तक 1.23 लाख क्विंटल उत्पादन, क्रमशः 2.96 लाख क्विंटल, 1.75 लाख क्विंटल एवं 2.04 लाख क्विंटल विक्रय तथा क्रमशः 5.92 लाख क्विंटल, 6.75 लाख क्विंटल एवं 5.94 लाख क्विंटल स्टाक रहा।

राजकीय ऊनी मिल— राजकीय उपक्रम विभाग की इकाई के रूप में 11 अप्रेल, 1968 से कार्यरत ऊनी मिल बीकानेर घाटे में रहने के कारण जून, 1976 से मैसर्स जगन्नाथ जीवनमल वूलन मिल्स प्रा. लि. को 10 वर्ष के लिए 18.12 लाख रुपये वार्षिक लाइसेंस राशि पर पट्टे पर दे दिया गया था। पट्टा धारक द्वारा राशि न दिये जाने के कारण अप्रेल 1986 से इसे न्यायालय के आदेश से अधिग्रहीत कर लिया गया। अब इसके विक्रय की कार्यवाही जारी है।

गृह उद्योग—वर्ष 1974 में प्रारम्भ इस योजना में सिलाई, बुनाई, गोटा-किनारी, आरी-तारी चमड़ा, रेगजीन आदि के कार्य हाथ में लिये गये। इनमें 3425 के लक्ष्य की तुलना में दिसम्बर 88 तक 1920 महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया तथा 1247 महिलाएं प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थीं।

अनुदान—वर्ष के दौरान विनियोजन अनुदान 200 के लक्ष्य की तुलना में दिसम्बर, 88 तक 126 इकाइयों को, राज्य विनियोग अनुदान 40 इकाइयों को, परीक्षण यंत्र अनुदान 51 इकाइयों को, आई. एस. आई. अनुदान 14 इकाइयों को दिया गया।

राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं विनियोजन निगम (रीको)

राजस्थान में औद्योगिक प्रोत्साहन एवं औद्योगीकरण को गति प्रदान करने के लिए वर्ष 1969 में इस निगम की स्थापना की गई। यह निगम औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना करता है, मध्य एवं वृहद श्रेणी के उद्योगों को स्थापित करने मे उद्यमियों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है, सार्वजनिक, संयुक्त एवं सहायता प्राप्त क्षेत्र में उद्योग स्थापित करने हेतु भारत सरकार से अनुमति-पत्र/ अनुज्ञा-पत्र प्राप्त करता है तथा साथ ही उद्यमियों और उद्योगों को तकनीकी परामर्श भी देता है।

अपनी स्थापना से जनवरी 1989 तक निगम ने 24210 एकड़ भूमि अवाप्त की, 17865 भूखंड विकसित किये तथा 13813 भूखंड आवंटित कर दिये। आवंटित भूखंडों पर इस अवधि तक 6754 इकाइयां उत्पादनरत थीं।

घड़ी फैक्टरी—अजमेर स्थित घड़ी फैक्ट्री में मुख्यतः हिन्दुस्तान मशीन टूल्स के लिए घड़ियां बनाई जाती हैं। कल-पुर्जे आदि एच. एम. टी. से प्राप्त कर उन्हें असेम्बल करके घड़ियों में परिवर्तित कर पुनः एच. एम. टी को विक्रय हेतु भेज दिया जाता है। वर्ष 1988-89 के दौरान उत्पादन लक्ष्य 3.50 लाख रखा गया था जिसके विरुद्ध दिसम्बर, 1988 तक 2.26 लाख घड़ियों का उत्पादन किया जा चुका था।

राजस्थान वित्त निगम

राजस्थान वित्त निगम की स्थापना वित्त निगम अधिनियम, 1951 के अन्तर्गत वर्ष 1955 में हुई। यह निगम राज्य में उद्योग लगाने के लिए 60 लाख रुपये तक की लघु एवं मध्यम इकाइयों के लिए ऋण स्वीकृत करता है। वर्ष 1988-89 में निगम ने जनवरी 1989 तक 71.03 करोड़ रुपये के ऋण स्वीकृत एवं 53.58 करोड़ रुपये के ऋण वितरित किये। इनको शामिल करते हुए इस वर्ष सकल ऋणों की कुल राशि 650 करोड़ रुपये को पार कर गई। वर्ष के दौरान निगम द्वारा 39.41 करोड़ रुपये की वसूली भी की गई।

राजस्थान राज्य लघु उद्योग निगम

राजस्थान राज्य लघु उद्योग निगम लि. का गठन राज्य की लघु इकाइयों एवं हस्तशिल्पियों को सहायता, प्रोत्साहन तथा उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं के समुचित विपणन को ध्यान में रखते हुए भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 के तहत 3 जून 1961 को किया गया तथा एक फरवरी 1975 को इसे सार्वजनिक कम्पनी का स्वरूप प्रदान किया गया। 31 मार्च 1988 को निगम की अधिकृत पूंजी 5

सहकारिता

राजस्थान में सहकारी आन्दोलन की जड़ें काफी गहरी हैं। राज्य में प्रथम सहकारी समिति 1905 में भिनाय में स्थापित की गई। स्वाधीनता से पूर्व सहकारिता के विकास का काल 1910 से 1918 तक रहा है। 1918 में यहाँ 362 सहकारी समितियाँ थीं जिनकी सदस्य संख्या 12 हजार 595 थी। देशी रियासतों में सर्वप्रथम भरतपुर और कोटा में सहकारी कानून बने। सहकारिता का योजनाबद्ध विकास स्वतंत्रता के पश्चात योजनाकाल में ही संभव हो सका।

30 जून 1988 को राज्य में कुल 19 हजार 379 विभिन्न प्रकार की सहकारी समितियाँ कार्यरत थीं जिनकी कुल सदस्य संख्या 64 69 लाख थी।

राज्य में सहकारिता के विभिन्न कार्यक्रमों का विस्तृत लेखा-जोखा यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है —

सहकारी उपभोक्ता कार्यक्रम

राज्य में सहकारिता उपभोक्ता कार्यक्रम के अन्तर्गत शीर्ष स्तर पर राज्य स्तर की संस्था "राजस्थान राज्य सहकारी उपभोक्ता भंडार" कार्यरत है। इसके अन्तर्गत राज्य में कुल 31 उपभोक्ता होलसेल भंडार कार्यरत हैं। इनमें से दो होलसेल भंडारों—बारां तथा हनुमानगढ़ का गठन वर्ष 1988–89 के दौरान किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक भंडार भी कार्यरत हैं। वर्ष 1988–89 के दौरान विभिन्न भंडारों द्वारा कुल 280 13 करोड़ रुपये मूल्य की उपभोक्ता सामग्री वितरित करने का लक्ष्य रखा गया।

क्रय-विक्रय सहकारी समितियाँ

इस क्षेत्र में राज्य में शीर्ष स्तर पर "राजस्थान राज्य सहकारी क्रय-विक्रय संघ" कार्यरत है। इसके अन्तर्गत कार्यरत सहकारी क्रय-विक्रय समितियों की संख्या 30 जून 1988 को 162 थी। वर्ष 1988–89 में कृषि-उपज के व्यवसाय के लिए 50 करोड़ रुपये, कृषि-आदान के व्यवसाय के लिए 70 करोड़ रुपये तथा उपभोक्ता वस्तुओं के वितरण के लिए 185 करोड़ रुपये का व्यवसाय करने का लक्ष्य रखा गया।

गृह निर्माण सहकारी समितियाँ

गृह निर्माण हेतु "दी राजस्थान स्टेट को-आपरेटिव हाऊसिंग फाइनेन्स सोसायटी लि " द्वारा सहकारी क्षेत्र में प्राथमिक गृह निर्माण सहकारी समितियों एवं ग्राम सेवा सहकारी समितियों के माध्यम से आवासीय ऋण उपलब्ध कराये जाते हैं। सोसायटी द्वारा जीवन बीमा निगम एवं स्वयं के साधनों से अधिकांश ऋण ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसूचित जाति अनुसूचित जन जाति के परिवारों को उपलब्ध कराया जाता रहा है। वर्ष 1988–89 में वित्त समिति द्वारा 3 करोड़ रु के ऋण गृह निर्माण सहकारी समितियों के माध्यम से अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के सदस्यों को उपलब्ध कराने का लक्ष्य था। इस योजना के अन्तर्गत माह अप्रेल 88 से जनवरी 89 तक 172 भवनों के निर्माण हेतु 39 60 लाख रुपये के ऋण स्वीकृत किये गए। समिति द्वारा अब तक 30758 भवनों के लिये 2778 91 लाख रु के ऋण स्वीकृत किये जा चुके हैं। इस प्रकार अब तक पूर्ण निर्मित भवनों की संख्या 15699 पहुंच गई है।

राजकीय उपक्रम ब्यूरो—इसका गठन 1984 में किया गया। ब्यूरो द्वारा 26 राजकीय उपक्रमों का मूल्यांकन किया जा चुका है। सूचना संग्रहण एवं प्रसारण, उपयोगी प्रकाशन, मार्गदर्शी सिद्धान्त जारी करने, कार्मिकों को प्रशिक्षण देने तथा प्रकीर्ण मामलों में निर्दिष्ट कार्यवाही की गई।

गंगानगर शूगर मिल्स लि.—इस मिल की स्थापना 1 जुलाई, 1956 को राजकीय उपक्रम के रूप में हुई। इसमें 97 % अंश राज्य सरकार के तथा शेष निजी अंश हैं। विभाग के आयुक्त एवं सचिव इसके प्रभारी संचालक का कार्य देखते हैं।

मिल द्वारा गंगानगर में चीनी मिल, अटरू एवं श्रीगंगानगर में डिस्टलरीज, कोटा एवं उदयपुर डिवीजन के जनजाति क्षेत्र में देशी मदिरा की दूकानों का संचालन तथा धौलपुर में हाइटेक ग्लास फैक्ट्री का संचालन किया जाता है।

वर्ष 1986-87 के प्रथम सात माह में 4.50 लाख क्विंटल गन्ना एवं 3 लाख क्विंटल चुकन्दर की पेराई, अप्रेल से अगस्त तक 33 दारू की खुदरा दूकानों का संचालन तथा 36.50 लाख बोतलों का उत्पादन हुआ।

दी राजस्थान स्टेट टैनरीज लिमिटेड—सन् 1971 में पंजीकृत इस कम्पनी का कार्यालय जयपुर में तथा फैक्ट्री टोंक में है। इसकी उत्पादन क्षमता 2,500 खालें प्रतिदिन एवं 28.12 लाख वर्ग फुट प्रति वर्ष है। मुख्य उत्पाद चमड़े के वस्त्र, हाथ के दस्ताने, बैग्स आदि हैं तथा उत्पादन का 50% माल निर्यात होता है।

सहकारिता

राजस्थान में सहकारी आन्दोलन की जड़ें काफी गहरी हैं। राज्य में प्रथम सहकारी समिति 1905 में भिनाय में स्थापित की गई। स्वाधीनता से पूर्व सहकारिता के विकास का काल 1910 से 1918 तक रहा है। 1918 में यहाँ 362 सहकारी समितियाँ थीं जिनकी सदस्य संख्या 12 हजार 595 थी। देशी रियासतों में सर्वप्रथम भरतपुर और कोटा में सहकारी कानून बने। सहकारिता का योजनाबद्ध विकास स्वतंत्रता के पश्चात योजनाकाल में ही संभव हो सका।

30 जून, 1988 को राज्य में कुल 19 हजार 379 विभिन्न प्रकार की सहकारी समितियाँ कार्यरत थीं जिनकी कुल सदस्य संख्या 64.69 लाख थी।

राज्य में सहकारिता के विभिन्न कार्यक्रमों का विस्तृत लेखा-जोखा यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है —

सहकारी उपभोक्ता कार्यक्रम

राज्य में सहकारिता उपभोक्ता कार्यक्रम के अन्तर्गत शीर्ष स्तर पर राज्य स्तर की संस्था "राजस्थान राज्य सहकारी उपभोक्ता भंडार" कार्यरत है। इसके अन्तर्गत राज्य में कुल 31 उपभोक्ता होलसेल भंडार कार्यरत हैं। इनमें से दो होलसेल भंडारों—बारां तथा हनुमानगढ़ का गठन वर्ष 1988–89 के दौरान किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक भंडार भी कार्यरत हैं। वर्ष 1988–89 के दौरान विभिन्न भंडारों द्वारा कुल 280.13 करोड़ रुपये मूल्य की उपभोक्ता सामग्री वितरित करने का लक्ष्य रखा गया।

क्रय-विक्रय सहकारी समितियाँ

इस क्षेत्र में राज्य में शीर्ष स्तर पर "राजस्थान राज्य सहकारी क्रय-विक्रय संघ" कार्यरत है। इसके अन्तर्गत कार्यरत सहकारी क्रय-विक्रय समितियों की संख्या 30 जून, 1988 को 162 थी। वर्ष 1988–89 में कृषि-उपज के व्यवसाय के लिए 50 करोड़ रुपये, कृषि-आदान के व्यवसाय के लिए 70 करोड़ रुपये तथा उपभोक्ता वस्तुओं के वितरण के लिए 185 करोड़ रुपये का व्यवसाय करने का लक्ष्य रखा गया।

गृह निर्माण सहकारी समितियाँ

गृह निर्माण हेतु "दी राजस्थान स्टेट को-आपरेटिव हाऊसिंग फाइनेन्स सोसायटी लि." द्वारा सहकारी क्षेत्र में प्राथमिक गृह निर्माण सहकारी समितियों एवं ग्राम सेवा सहकारी समितियों के माध्यम से आवासीय ऋण उपलब्ध कराये जाते हैं। सोसायटी द्वारा जीवन बीमा निगम एवं स्वयं के साधनों से अधिकांश ऋण ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसूचित जाति अनुसूचित जन जाति के परिवारों को उपलब्ध कराया जाता रहा है। वर्ष 1988–89 में वित्त समिति द्वारा 3 करोड़ रु. के ऋण गृह निर्माण सहकारी समितियों के माध्यम से अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के सदस्यों को उपलब्ध कराने का लक्ष्य था। इस योजना के अन्तर्गत माह अप्रेल 88 से जनवरी 89 तक 172 भवनों के निर्माण हेतु 39.60 लाख रुपये के ऋण स्वीकृत किये गए। समिति द्वारा अब तक 30758 भवनों के लिये 2778.91 लाख रु. के ऋण स्वीकृत किये जा चुके हैं। इस प्रकार अब तक पूर्ण निर्मित भवनों की संख्या 15699 पहुंच गई है।

ऊर्जा

भौगोलिक विभिन्नता वाले इस प्रदेश के पिछड़ेपन का अनुमान इसी एक तथ्य से हो जाता है कि आजादी के समय यहां कुल 13 मेगावाट बिजली पैदा होती थी एवं उस समय केवल 42 बस्तियों में ही बिजली थी। तब बिजली का उपयोग विलासिता के रूप में माना जाता था, विकास के रूप में नहीं। आजादी के बाद बिजली को विकास के लिए बहुत जरूरी समझा गया और एक जुलाई 1957 को राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल के गठन के बाद प्रदेश में बिजली का विकास कार्यक्रम शुरू हुआ।

वर्तमान में राजस्थान में विद्युत उत्पादन तीन प्रकार से किया जाता है-

(1) अणु शक्ति द्वारा (राजस्थान अणु बिजली घर कोटा)

(2) जल शक्ति द्वारा (जवाहर सागर एवं राणा प्रताप सागर पन बिजली घर कोटा एवं माही पन बिजलीघर बांसवाड़ा)

(3) तापीय शक्ति द्वारा (कोटा तापीय परियोजना एवं अन्य लघु परियोजनायें)

राज्य की परियोजनाओं के अतिरिक्त भाखड़ा-नांगल पन बिजली परियोजना, व्यास-इकाई प्रथम व द्वितीय परियोजना, सतपुड़ा तापीय विद्युत परियोजना गांधी सागर पन बिजली परियोजना और सिंगरौली सुपर तापीय विद्युत परियोजना के विद्युत उत्पादन में से भी राजस्थान का हिस्सा निर्धारित किया गया है।

विद्युत उपलब्धि

मार्च, 1989 के अन्त तक राज्य को विभिन्न परियोजनाओं से सामान्यतः कुल 295 80 लाख यूनिट बिजली प्रतिदिन उपलब्ध हो रही थी। परियोजना वार इसका विवरण इस प्रकार है-

परियोजना	उपलब्धि
भाखड़ा व व्यास	44.30 लाख यूनिट
सिंगरौली	59 50 लाख यूनिट
राजस्थान अणु बिजलीघर	44 00 लाख यूनिट
कोटा तापीय बिजलीघर	80 00 लाख यूनिट
चम्बल परियोजना	38 00 लाख यूनिट
मध्य प्रदेश	15.00 लाख यूनिट
माही परियोजना	10 00 लाख यूनिट
अन्ता गैस परियोजना	5 00 लाख यूनिट

वितरण

राज्य में उपलब्ध कुल विद्युत का लगभग 85 प्रतिशत भाग कृषि व उद्योगों के लिये वितरित कर दिया जाता है। वर्ष 1986–87 में कृषि कार्यों के लिए कुल उपलब्ध विद्युत का 56 65 प्रतिशत तथा उद्योगों को 29.35 प्रतिशत भाग वितरित किया गया।

गोदाम निर्माण परियोजना

सहकारी गोदाम निर्माण परियोजना का उद्देश्य मुख्यत: दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में मण्डियों में सहकारी समितियों के माध्यम से किसानों को कृषि उपज के भंडारण की सुविधा उपलब्ध कराना है तथा इन गोदामों के जरिये सहकारी समितियों को उन्नत बीज, कीटनाशक दवाइयों, रासायनिक खाद, उपभोक्ता सामग्री आदि की स्थानीय स्तर पर व्यवस्था करना है। सहकारिता क्षेत्र में गोदाम एक ऐसी केन्द्रीय धुरी है जिसके चारों ओर सहकारिता के विकास का चक्र गतिशील रहता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए राज्य में राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम की सामान्य गोदाम निर्माण परियोजना, टी. ए. डी. योजना तथा विश्व बैंक की सहायता से चलाई जा रही गोदाम निर्माण परियोजना के अन्तर्गत सहकारी गोदाम निर्माण का व्यापक कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा रहा है।

सहकारी प्रशिक्षण

विभागीय अधिकारियों, कर्मचारियों एवं संस्थाओं में कार्यरत पदाधिकारियों की कार्यक्षमता बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। वरिष्ठ अधिकारियों के लिए बैकुण्ठ मेहता राष्ट्रीय सहकारी प्रशिक्षण संस्थान पूना तथा हरिश्चन्द्र माथुर लोक प्रशासन संस्थान जयपुर में प्रशिक्षण की व्यवस्था है। मध्यम एवं कनिष्ठ श्रेणी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए सहकारी प्रशिक्षण महाविद्यालय जयपुर, जो कि राष्ट्रीय सहकारी प्रशिक्षण परिषद द्वारा संचालित है, में प्रशिक्षण की व्यवस्था है। वर्ष 1988–89 में 500 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य था।

सहकारी बैंकिंग

सहकारी क्षेत्र के बैंकों के बारे में विस्तृत विवरण "बैंकिंग व्यवस्था" के अध्याय में दिया गया है।

ऊर्जा

भौगोलिक विभिन्नता वाले इस प्रदेश के पिछड़ेपन का अनुमान इसी एक तथ्य से हो जाता है कि आजादी के समय यहां कुल 13 मेगावाट बिजली पैदा होती थी एवं उस समय केवल 42 बस्तियों में ही बिजली थी। तब बिजली का उपयोग विलासिता के रूप में माना जाता था, विकास के रूप में नहीं। आजादी के बाद बिजली को विकास के लिए बहुत जरूरी समझा गया और एक जुलाई, 1957 को राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल के गठन के बाद प्रदेश में बिजली का विकास कार्यक्रम शुरू हुआ।

वर्तमान में राजस्थान में विद्युत उत्पादन तीन प्रकार से किया जाता है-

(1) अणु शक्ति द्वारा (राजस्थान अणु बिजली घर कोटा)

(2) जल शक्ति द्वारा (जवाहर सागर एवं राणा प्रताप सागर पन बिजली घर कोटा एवं माही पन बिजलीघर बांसवाड़ा)

(3) तापीय शक्ति द्वारा (कोटा तापीय परियोजना एवं अन्य लघु परियोजनायें)

राज्य की परियोजनाओं के अतिरिक्त भाखड़ा-नांगल पन बिजली परियोजना, व्यास-इकाई प्रथम व द्वितीय परियोजना, सतपुड़ा तापीय विद्युत परियोजना गांधी सागर पन बिजली परियोजना और सिंगरौली सुपर तापीय विद्युत परियोजना के विद्युत उत्पादन में से भी राजस्थान का हिस्सा निर्धारित किया गया है।

विद्युत उपलब्धि

मार्च, 1989 के अन्त तक राज्य को विभिन्न परियोजनाओं से सामान्यतः कुल 295.80 लाख यूनिट बिजली प्रतिदिन उपलब्ध हो रही थी। परियोजना वार इसका विवरण इस प्रकार है-

परियोजना	उपलब्धि
भाखड़ा व व्यास	44 30 लाख यूनिट
सिंगरौली	59.50 लाख यूनिट
राजस्थान अणु बिजलीघर	44 00 लाख यूनिट
कोटा तापीय बिजलीघर	80 00 लाख यूनिट
चम्बल परियोजना	38.00 लाख यूनिट
मध्य प्रदेश	15.00 लाख यूनिट
माही परियोजना	10 00 लाख यूनिट
अन्ता गैस परियोजना	5 00 लाख यूनिट

वितरण

राज्य में उपलब्ध कुल विद्युत का लगभग 85 प्रतिशत भाग कृषि व उद्योगों के लिये वितरित कर दिया जाता है। वर्ष 1986-87 में कृषि कार्यों के लिए कुल उपलब्ध विद्युत का 56 65 प्रतिशत तथा उद्योगों को 29.35 प्रतिशत भाग वितरित किया गया।

गोदाम निर्माण परियोजना

सहकारी गोदाम निर्माण परियोजना का उद्देश्य मुख्यतः दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में मण्डियों में सहकारी समितियों के माध्यम से किसानों को कृषि उपज के भंडारण की सुविधा उपलब्ध कराना है तथा इन गोदामों के जरिये सहकारी समितियों को उन्नत बीज, कीटनाशक दवाइयों, रासायनिक खाद, उपभोक्ता सामग्री आदि की स्थानीय स्तर पर व्यवस्था करना है। सहकारिता क्षेत्र में गोदाम एक ऐसी केन्द्रीय धुरी है जिसके चारों ओर सहकारिता के विकास का चक्र गतिशील रहता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए राज्य में राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम की सामान्य गोदाम निर्माण परियोजना, टी. ए. डी. योजना तथा विश्व बैंक की सहायता से चलाई जा रही गोदाम निर्माण परियोजना के अन्तर्गत सहकारी गोदाम निर्माण का व्यापक कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा रहा है।

सहकारी प्रशिक्षण

विभागीय अधिकारियों, कर्मचारियों एवं संस्थाओं में कार्यरत पदाधिकारियों की कार्यक्षमता बढाने हेतु प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। वरिष्ठ अधिकारियों के लिए बैकुण्ठ मेहता राष्ट्रीय सहकारी प्रशिक्षण संस्थान पूना तथा हरिश्चन्द्र माथुर लोक प्रशासन संस्थान जयपुर में प्रशिक्षण की व्यवस्था है। मध्यम एवं कनिष्ठ श्रेणी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए सहकारी प्रशिक्षण महाविद्यालय जयपुर, जो कि राष्ट्रीय सहकारी प्रशिक्षण परिषद् द्वारा संचालित है, में प्रशिक्षण की व्यवस्था है। वर्ष 1988-89 में 500 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य था।

सहकारी बैंकिंग

सहकारी क्षेत्र के बैंकों के बारे में विस्तृत विवरण ''बैंकिंग व्यवस्था'' के अध्याय में दिया गया है।

कोटा तापीय परियोजना : एक महत्वाकांक्षी कदम

ऊर्जा उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के उद्देश्य से कोटा नगर में राज्य की प्रथम तापीय विद्युत योजना परिकल्पित की गई। इस परियोजना के लिये कोटा नगर का चुनाव सदानीरा चम्बल नदी पर स्थित कोटा बैराज में आवश्यक मात्रा में जल की उपलब्धि, रेलवे की बड़ी लाइन लोड सेन्टर का सामीप्य और उत्पादित विद्युत वितरण हेतु विद्यमान प्रसारण तंत्र को देखते हुए किया गया।

तीन चरणों में विभाजित इस परियोजना की कुल नियोजित क्षमता 850 मेगावाट है—

प्रथम चरण	2x110 मेगावाट
द्वितीय चरण	2x210 मेगावाट
तृतीय चरण	1x210 मेगावाट

प्रथम चरण- सितम्बर 1976 में स्वीकृत इस परियोजना के प्रथम चरण में 143 करोड़ रुपये की लागत से 110–110 मेगावाट क्षमता की दो इकाइयां स्थापित की गई। प्रथम इकाई ने 17 जनवरी, 1983 को तथा द्वितीय इकाई ने 13 जुलाई, 1983 को उत्पादन आरम्भ किया। 1984 और 1987 में कोटा तापीय विद्युत गृह ने भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय से 'श्रेष्ठ उत्पादकता पुरस्कार' व क्रमश: 2 लाख व 5.94 लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि प्राप्त की।

द्वितीय चरण- परियोजना के द्वितीय चरण को योजना आयोग द्वारा अक्टूबर 1980 में स्वीकृति मिली। इसके अंतर्गत 439.57 करोड़ रुपये की लागत से 210–210 मेगावाट क्षमता की दो इकाइयों की स्थापना का प्रस्ताव रखा गया। द्वितीय चरण की प्रथम इकाई ने 25 सितम्बर 1988 को उत्पादन प्रारंभ किया। द्वितीय इकाई का कार्य भी लगभग सम्पन्न होने को है।

राजस्थान ऊर्जा विकास अभिकरण

ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों के विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों जैसे- निर्धूम चूल्हा, बायोगैस प्लांट, सौर कुकर, सौर ऊर्जा से संचालित लाइटें पवन चक्की पवन ऊर्जा से बिजली उत्पादन आदि कार्यक्रमों के विकास तथा उपयोग को बढ़ावा देने के लिए ऊर्जा मंत्रालय में सितम्बर 1982 में अपारम्परिक ऊर्जा स्रोत विभाग की स्थापना की है। यह विभाग प्रदूषण रहित एवं असीमित भंडार वाले गैर पारम्परिक ऊर्जा स्रोतों तथा सौर ऊर्जा पवन ऊर्जा और गोबर आदि से ऊर्जा प्राप्त करने की दिशा में सतत प्रयत्नशील है। इस प्रकार की ऊर्जा से एक ओर जहां बिजली व जलने वाले ईंधन की बचत होती है वहां दूसरी ओर वातावरण भी दूषित नहीं होता।

राजस्थान में पवन व सौर ऊर्जा के विकास की संभावनाएं अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक है क्योंकि यहां वर्ष के 365 दिनों में से 300 से अधिक दिन अच्छी प्रकार से सूर्य की रोशनी उपलब्ध रहती है। इसी प्रकार पवन वेग भी इतनी अच्छी मात्रा में उपलब्ध है कि पवन ऊर्जा से भी काफी बिजली पैदा की जा सकती है। राजस्थान में ऊर्जा के गैर पारंपरिक एवं नए स्रोतों के समन्वित विकास हेतु 21 जनवरी 1985 को "राजस्थान ऊर्जा विकास अभिकरण" का राज्य के मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में गठन किया गया है।

ग्रामीण विद्युतीकरण कार्यक्रम

राजस्थान राज्य की भौगोलिक विशालता एवं विषमताओं को देखते हुए दूरस्थ गांवों में बिजली पहुंचाना एक दुष्कर कार्य है। राज्य के सामाजिक एवं आर्थिक विकास की नीति को दृष्टिगत रखते हुए राज्य विद्युत मंडल ने ग्रामीण विद्युतीकरण का कार्य ग्रामीण विद्युतीकरण निगम के साथ मिलकर प्रारंभ किया है। फरवरी 1988 तक राज्य में 23 हजार 387 गांव,तीन लाख 1696 कुएँ तथा 11 हजार 655 हरिजन बस्तियों का विद्युतीकरण किया गया। राज्य में वर्ष 1988–89 में 17 हजार कुओं को विद्युतीकृत करने के संशोधित लक्ष्य के मुकाबले फरवरी 1989 तक 14 हजार 499 कुओं का विद्युतीकरण किया गया।

विद्युत दरें

राज्य विद्युत मंडल के सचिव द्वारा 28 नवम्बर,1988 को एक अधिसूचना जारी कर विद्युत दरों का पुनर्निधारण किया गया। नई दरें इस प्रकार है-

उपभोक्ता श्रेणी	दर
व्यावसायिक उपभोक्ता	1.10 रु. प्रति यूनिट
कृषि उपभोक्ता	0.37 रु. प्रति यूनिट
लघु उद्योग	0.80 रु. प्रति यूनिट
मध्यम उद्योग	0.95 रु.प्रति यूनिट
वृहद उद्योग	1.00 रु. प्रति यूनिट

नई परियोजनाऐं

मार्च 1989 के अंत में राज्य की निम्न परियोजनाएं राज्य सरकार/केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण के समक्ष विचाराधीन थीं—

क्रम.सं.	परियोजना का नाम	क्षमता	आधार
1.	सूरतगढ तापीय योजना	2x210मे.वा.	कोयला
2.	चित्तौडगढ तापीय योजना	2x210 मे.वा.	कोयला
3.	मांडलगढ तापीय योजना	3x210 मे.वा.	कोयला
4.	धौलपुर तापीय योजना	3x210 मे.वा.	कोयला
5.	राहूघाट पन विद्युत योजना	4x40 मे.वा.	जल
6.	जाखम पन विद्युत योजना	1x5.5 मे.वा.	जल
7.	माउन्ट आबू लघु पन विद्युत योजना	2x5 मे.वा.	जल
8.	जवाहर सागर पम्प स्टोरेज योजना	2x100 मे.वा.	जल
9.	जवाई लघु पन विद्युत योजना	2x4 मे.वा.	जल
10.	अनास पन विद्युत योजना	(क्षमता जल अनुसंधान कार्य पूर्ण होने पर निश्चित की	

कोटा तापीय परियोजना : एक महत्वाकांक्षी कदम

ऊर्जा उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के उद्देश्य से कोटा नगर में राज्य की प्रथम तापीय विद्युत योजना परिकल्पित की गई। इस परियोजना के लिये कोटा नगर का चुनाव सदानीरा चम्बल नदी पर स्थित कोटा बैराज में आवश्यक मात्रा में जल की उपलब्धि, रेलवे की बड़ी लाइन लोड सेन्टर का सामीप्य और उत्पादित विद्युत वितरण हेतु विद्यमान प्रसारण तंत्र को देखते हुए किया गया।

तीन चरणों में विभाजित इस परियोजना की कुल नियोजित क्षमता 850 मेगावाट है—

प्रथम चरण	2x110 मेगावाट
द्वितीय चरण	2x210 मेगावाट
तृतीय चरण	1x210 मेगावाट

प्रथम चरण- सितम्बर 1976 में स्वीकृत इस परियोजना के प्रथम चरण में 143 करोड़ रुपये की लागत से 110-110 मेगावाट क्षमता की दो इकाइयां स्थापित की गई। प्रथम इकाई ने 17 जनवरी 1983 को तथा द्वितीय इकाई ने 13 जुलाई, 1983 को उत्पादन आरम्भ किया। 1984 और 1987 में कोटा तापीय विद्युत गृह ने भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय से 'श्रेष्ठ उत्पादकता पुरस्कार' व क्रमशः 2 लाख व 5.94 लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि प्राप्त की।

द्वितीय चरण- परियोजना के द्वितीय चरण को योजना आयोग द्वारा अक्टूबर 1980 में स्वीकृति मिली। इसके अंतर्गत 439.57 करोड़ रुपये की लागत से 210-210 मेगावाट क्षमता की दो इकाइयों की स्थापना का प्रस्ताव रखा गया। द्वितीय चरण की प्रथम इकाई ने 25 सितम्बर 1988 को उत्पादन प्रारंभ किया। द्वितीय इकाई का कार्य भी लगभग सम्पन्न होने को है।

राजस्थान ऊर्जा विकास अभिकरण

ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों के विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों जैसे- निर्धूम चूल्हा, बायोगैस प्लांट, सौर कुकर, सौर ऊर्जा से संचालित लालटेन, पवन चक्की, पवन ऊर्जा से बिजली उत्पादन आदि कार्यक्रमों के विकास तथा उपभोग को बढ़ावा देने के लिए ऊर्जा मंत्रालय में सितम्बर, 1982 में अपारम्परिक ऊर्जा स्रोत विभाग की स्थापना की है। यह विभाग प्रदूषण रहित एवं असीमित भंडार वाले गैर पारम्परिक ऊर्जा स्रोतों तथा सौर ऊर्जा पवन ऊर्जा और गोबर आदि से ऊर्जा प्राप्त करने की दिशा में सतत प्रयत्नशील है। इस प्रकार की ऊर्जा से एक और जहां बिजली व जलने वाले ईंधन की बचत होती है वहां दूसरी ओर वातावरण भी दूषित नहीं होता।

राजस्थान में पवन व सौर ऊर्जा के विकास की संभावनाएं अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक है क्योंकि यहां वर्ष के 365 दिनों में से 300 से अधिक दिन अच्छी प्रकार से सूर्य की रोशनी उपलब्ध रहती है। इसी प्रकार पवन वेग भी इतनी अच्छी मात्रा में उपलब्ध है कि पवन ऊर्जा से भी काफी बिजली पैदा की जा सकती है। राजस्थान में ऊर्जा के गैर पारंपरिक एवं नए स्रोतों के समन्वित विकास हेतु 21 जनवरी 1985 को "राजस्थान ऊर्जा विकास अभिकरण" का राज्य के मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में गठन किया गया है।

विद्युत निरीक्षणालय

विद्युत निरीक्षणालय का गठन भारतीय विद्युत अधिनियम 1910 एवं उसके अधी निर्मित नियमों के प्रशासन एवं पर्यवेक्षण के लिए किया गया है। विद्युत निरीक्षणालय का मुख्य उद्दे लोक सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए शर्तों का प्रवर्तन करना है। विद्युत प्रदाय अधिनियम 1948 व प्रावधानों के अन्तर्गत प्रत्येक राज्य में विद्युत मण्डल स्वशासी निकाय के रूप में तथा विद्युत निरीक्षणाल संगठन राज्य सरकारों के अधीन कार्य कर रहे है।

विद्युत निरीक्षणालय विभाग के विभागाध्यक्ष मुख्य विद्युत निरीक्षक हैं जिनकी सहायतार्थ 3 उप विद्युत निरीक्षक, 14 सहायक विद्युत निरीक्षक, 56 निरीक्षण सहायक तथा 167 अन्य कर्मचारी कार्यरत हैं।

निरीक्षणालय द्वारा किये जाने वाले मुख्य कार्य निम्न हैं-

1. भारतीय विद्युत अधिनियम 1910 एवं उसके अधीन निर्मित नियमों का प्रशासन
2. विद्युत दुर्घटना के मामलों की जांच
3. विद्युत संस्थानों का सावधिक निरीक्षण
4. राजस्थान सिनेमा (विनियम) नियम 1959 का प्रशासन
5. तकनीकी समिति द्वारा राज्य में विद्युत ठेकेदारों को लाईसेंस देना तथा विद्युत पर्यवेक्षकों एवं वायरमैनों को प्रमाण पत्र देना।

पशुपालन एवं मत्स्य पालन

राजस्थान में कृषि के बाद पशुपालन दूसरा प्रमुख व्यवसाय है। ऊंट, बैल, भेडें तथा बकरियां यहां मुख्य रूप से पाले जाते हैं। राज्य के नागौरी बैल, गीर, राठी एवं थारपारकर गायें, मालानी घोडे, बीकानेरी ऊंट तथा जखराना, सिरोही एवं मारवाडी नस्लों की बकरियाँ अपने आप में विशिष्टता रखती हैं।

वर्ष 1983 की पशुगणना के अनुसार प्रदेश में 496.50 लाख पशुधन तथा 22 19 लाख कुक्कुट सम्पदा है।

पशु स्वास्थ्य कार्यक्रम – राज्य में पशुधन की विभिन्न बीमारियों की चिकित्सा करने और रोगों से बचाने के लिए पशुपालन विभाग के अन्तर्गत वर्तमान में राज्य में कुल 1135 संस्थाएँ पशु चिकित्सा क्षेत्र में कार्यरत हैं। इन संस्थाओं द्वारा पशुओं का उपचार, बधियाकरण, टीका-करण व औषधियों का वितरण किया जाता है।

पशु संवर्धन कार्यक्रम – इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रख्यात पशु नस्लों के विकास एवं संवर्धन हेतु विभिन्न कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। विभाग के अधीन राज्य में 22 ग्राम आधार केन्द्र, एक जिला वीर्य संकलन केन्द्र तथा उससे संबद्ध 200 उपकेन्द्र कार्य कर रहे हैं जहाँ कृत्रिम गर्भाधान की सेवायें उपलब्ध करवाई जा रही हैं। कृत्रिम गर्भाधान की यह सेवायें उपरोक्त केन्द्रों के अतिरिक्त रेगिस्तानी क्षेत्रों तथा अन्यत्र 378 पशु चिकित्सालयों पर भी सुलभ कराई जा रही हैं।

खाद्य एवं चारा विकास कार्यक्रम:– पशुधन विकास में नस्ल सुधार के बाद पौष्टिक आहार व्यवस्था का विशेष महत्व है। इस हेतु विभाग द्वारा इस कार्यक्रम के अन्तर्गत पशुपालकों को अपने पशुओं के लिए पौष्टिक एवं संतुलित आहार एवं चारा उत्पादन के संबंध में जानकारी कराकर उनके पशुओं से अधिक उत्पादन कम खर्च में प्राप्त कर उनको आर्थिक दृष्टि से ऊपर उठाने के लिए कार्य किया जाता है। इसके साथ ही विभाग द्वारा उन्नत किस्म का चारा बीज, बिना हानि-लाभ के, क्रय मूल्य पर पशुपालकों को उपलब्ध कराया जाता है। 1988–89 के दौरान दिसम्बर 88 तक 283.00 क्विन्टल चारा बीज का वितरण विभाग द्वारा किया गया।

कुक्कुट विकास कार्यक्रम:–कुक्कुट विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत 2 राज्य-स्तरीय कुक्कुट शालायें, तीन ब्रायलर फार्म, एक लेयर फार्म तथा तीन चूजा पालन केन्द्र वर्ष 1988–89 में कार्यरत थे। इस दौरान कुक्कुट रोग निदान एवं आहार विश्लेषण हेतु चार प्रयोगशालायें-अजमेर, जोधपुर, कोटा तथा उदयपुर में कार्यरत थीं। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 1988–89 में माह दिसम्बर, 1988 तक 1.57 लाख चूजों एवं 4.18 लाख अण्डों का उत्पादन हुआ।

20 सूत्री/विशिष्ट पशुपालन कार्यक्रम:–समाज के पिछडे एवं कमजोर वर्ग, विशेषकर अनुसूचित जाति के व्यक्तियों का आर्थिक स्तर उठाकर उन्हें आत्म-निर्भर बनाकर व्यवसायोन्मुख करने के उद्देश्य से कुक्कुट पालन एवं शूकर पालन कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

राज्य-स्तरीय पशु मेले तथा विपणन सुविधाएँ–पशुधन की महत्ता को बनाये रखने, उनके विकास तथा पशुपालकों को आर्थिक दृष्टि से ऊपर उठाकर उन्हें विपणन की सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रदेश के विभिन्न भागों में प्रतिवर्ष 250 से भी अधिक पशु मेलों का आयोजन नगरपालिकाओं,

नगर परिषदों, ग्राम पंचायतों एवं पंचायत समितियों द्वारा किया जाता है जबकि दस राज्य-स्तरीय मेलों का आयोजन राज्य पशुपालन विभाग द्वारा किया जाता है।

भेड़-पालन

जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है, राजस्थान में ग्रामीण जनता का कृषि कार्य के साथ एक अन्य मुख्य व्यवसाय पशुपालन है। राजस्थान में पाले जाने वाले पशुओं में भेड़ों का प्रमुख स्थान है। वर्तमान में लगभग एक करोड़ चौबीस लाख भेड़ें राजस्थान में हैं जो देश की कुल भेड़ों का 25% है। इन भेड़ों से लगभग 16 हजार टन ऊन का उत्पादन प्रतिवर्ष होता है। लगभग पच्चीस से तीस लाख भेड़ों का माँस भी प्रतिवर्ष विक्रय हेतु उपलब्ध होता है। ऊन व मांस की बिक्री से प्रतिवर्ष क्रमशः 20 करोड़ व 90 करोड़ रु० का व्यवसाय होता है। राज्य के लगभग 2 लाख परिवार भेड़-पालन के व्यवसाय में संलग्न हैं।

राज्य में इस बड़े पैमाने पर होने वाले भेड़पालन व्यवसाय को देखते हुए इस व्यवसाय से अधिकतम लाभ प्राप्त करने, भेड़ों की नस्ल, ऊन की किस्म तथा भेड़पालकों की आर्थिक दशा सुधारने हेतु राज्य में पृथक रूप से भेड़ व ऊन विभाग की स्थापना सन् 1963 में की गई।

वर्तमान में इस विभाग द्वारा निम्न कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है-

1. भेड़ों की समुचित सार-संभाल हेतु प्रसार एवं स्वास्थ्य-रक्षा कार्यक्रम।
2. नस्ल सुधार हेतु संकर प्रजनन कार्यक्रम।
3. एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत गरीबी की रेखा के नीचे जीवन-यापन करने वाले व्यक्तियों को भेड़ इकाइयां देने का कार्यक्रम।
4. निष्क्रमित भेड़ों के नियन्त्रण एवं सार-संभाल की व्यवस्था।
5. अनुसूचित जाति एवं जनजाति परिवारों के लिए भेड़ विकास सुविधा।
6. मरु-विकास व सूखा-संभावित क्षेत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत-

   (अ) भेड़ चरागाह विकास।
   (ब) भेड़-पालक प्रशिक्षण।
   (स) भेड़ प्रदर्शनी।
   (द) चर्म रोग अनुसंधान प्रयोगशाला।
   (य) चयनित प्रजनन।

7. ऊन विश्लेषण प्रयोगशाला का संचालन।
8. भेड़ व ऊन प्रशिक्षण संस्थान का संचालन।

सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985-90)

सातवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत कुल 352 लाख रु० का प्रावधान राज्य सरकार द्वारा भेड़ विकास हेतु किया गया है। इस राशि से मुख्यतया 20 नई सुरक्षा चौकियां स्थापित करने 650 विदेशी भेड़ें तथा 800 विदेशी भेड़े आयात करने की योजना है। [illegible] भवन के निर्माण के लिए भी प्रावधान इसी राशि में से किया गया है।

राजस्थान राज्य सहकारी भेड़ व ऊन विपणन फैडरेशन

राज्य भेड़ व ऊन विभाग के अन्तर्गत इस फैडरेशन का गठन राजस्थान सहकारी [illegible] के अन्तर्गत किया गया है। फैडरेशन का मुख्य कार्य [illegible]

उनका मूल्य प्रदान कर बिचौलियों के शोषण से मुक्त कराना है। फेडरेशन ने वर्ष 1988-89 में दिसम्बर 1988 तक 13.81 लाख रु० मूल्य की ऊन का विक्रय किया। इसके साथ ही 682 लाख रु० मूल्य के 1112 मीट्रिक टन डिब्बा बंद मांस का उत्पादन किया गया।

मत्स्य-पालन

राजस्थान में बड़े एवं मध्यम जलाशय, झीलें, बन्ध एवं तालाबों के रूप में लगभग 3 लाख हैक्टेयर जल-क्षेत्र उपलब्ध है। ये सभी जल-क्षेत्र मछली उत्पादन की दृष्टि से बहुत उपयोगी हैं। राज्य सरकार का मत्स्य विभाग इनके वैज्ञानिक प्रबंध एवं विकास हेतु कार्यरत है। यह विभाग प्रेरित एवं शुष्क बंध प्रजनन विधि से मत्स्य बीज का उत्पादन करके तथा मत्स्य अंगुलिकों को संचय करके मत्स्य उत्पादन को प्रोत्साहित करता है। यह विभाग मत्स्य पालक विकास अभिकरणों के माध्यम से गरीब आदिवासियों का चयन कर उन्हें मत्स्य पालन का प्रशिक्षण देता है और आर्थिक सहायता उपलब्ध कराता है जिससे वे स्वावलम्बी बन सकें।

मत्स्य उत्पादन- मत्स्य उत्पादन का सीधा सम्बन्ध राज्य में होने वाली वर्षा से है। पिछले कई वर्षों से राज्य में निरंतर पड़ रहे सूखे से मत्स्य उत्पादन पर भी विपरीत असर पड़ा है। वर्ष 1987-88 के दौरान राज्य में मत्स्य उत्पादन 7313 मीट्रिक टन ही संभव हो सका। 1987-88 के भयंकर सूखे का असर 1988-89 के उत्पादन पर भी पड़ा है।

राजस्थान
वार्षिकी

दुग्ध विकास

ग्रामीण पशुपालकों के वर्ग के आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाने हेतु उत्पादित दूध के सुनियोजित ढंग से विपणन करके तथा दुग्ध पदार्थों का नव तकनीकी रूप से उत्पादन करके पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने तथा नगरीय उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर शुद्ध दूध एवं दुग्ध पदार्थ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राज्य में सहकारिता के क्षेत्र में समूल पद्धति पर डेयरी विकास कार्यक्रम स्वीकार कर उसकी सघन क्रियान्विति हेतु राज्य सरकार द्वारा चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के अन्तिम चरण में डेयरी विकास का संगठित एवं सुव्यवस्थित कार्यक्रम हाथ में लिया गया। कार्यक्रम की क्रियान्विति हेतु प्रारंभ में राज्य के विशिष्ठ योजना संगठन द्वारा डेयरी विकास की कई योजनायें तैयार की गई। वर्ष 1975 में राजस्थान राज्य डेयरी विकास निगम की स्थापना की गई। वर्ष 1978–79 से राज्य में डेयरी विकास कार्यक्रम राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन लि० के अन्तर्गत संचालित है। कार्यक्रम के लिये, भारतीय डेयरी निगम, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, केन्द्रीय समवर्ती योजना, सूखा संभावित क्षेत्रीय परियोजना, मरुस्थलीय विकास कार्यक्रम एवं राज्य योजना आदि से आवश्यक वित्तीय व्यवस्था की गई है।

संगठन

कार्यक्रम के अन्तर्गत दुग्ध उत्पादकों से दुग्ध संकलन करने के साथ-साथ उन्हें तकनीकी आदान यथा उन्नत पशु प्रजनन, उन्नत चारा बीज, संतुलित पशु आहार एवं पशु चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिये ग्राम स्तर पर प्राथमिक दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों का गठन किया गया है। इन समितियों द्वारा दुग्ध उत्पादकों को दूध का भुगतान वसा (फैट) की मात्रा के आधार पर किया जाता है। इन दुग्ध समितियों के सफल एवं सुनियोजित संचालन हेतु दुग्ध प्राप्ति क्षेत्र (मिल्क शैड) के आधार पर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघों का गठन किया गया है। इन संघों द्वारा पशु स्वास्थ्य एवं पशु नस्ल सुधार हेतु तकनीकी आदान कार्यों का गठन एवं संचालन किया जाता है एवं दुग्ध समितियों को ये आदान सुविधायें उपलब्ध कराई जाती है। इन संघों द्वारा गठित चल पशु चिकित्सा इकाई द्वारा प्रति सप्ताह दुग्ध समितियों में पहुंचकर दुग्ध उत्पादकों के पशुओं की देखभाल की जाती है। इसके अतिरिक्त आपात स्थिति में दुग्ध उत्पादकों के लिये संघ मुख्यालयों से रियायती शुल्क पर पशु चिकित्सा हेतु पशु चिकित्सकों को बुलाने की सुविधा भी उपलब्ध है। राज्य में दिसम्बर 1988 तक 4308 दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों का गठन किया जाकर 3.10 लाख दुग्ध उत्पादकों को इन समितियों का सदस्य बनाया गया। राज्य में 16 जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ गठित किये जाकर राज्य के सभी 27 जिलों को डेयरी विकास कार्यक्रम का लाभ मिल रहा है। राज्य में डेयरी विकास कार्यक्रम की क्रियान्विति एवं दुग्ध उत्पादक सहकारी संघों में समन्वय हेतु शीर्षस्तर पर राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन कार्यशील है जिसके द्वारा विभिन्न स्थानों पर डेयरी संयंत्रों, अवशीतन केन्द्रों एवं पशु आहार संयंत्रों के संचालन के अलावा दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों के उत्पादन एवं विपणन की व्यवस्था करना भी है।

डेयरी संयंत्र एवं अवशीतन केन्द्र: राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन दुग्ध उत्पादन व्यवसाय में लगे हुये सहकारी क्षेत्र में देश के सबसे बड़े प्रतिष्ठानों और तेजी से उभर रहे फैडरेशनों में एक है जो सूखे एवं अकाल से उत्पन्न परिस्थितियों के बावजूद दुग्ध संकलन करते हुये राज्य में डेयरी विकास कार्यक्रम

राजस्थान
वार्षिकी

को गति दिये हुये है। फैडरेशन द्वारा दुग्ध समितियों से संकलित दूध को कीटाणु रहित करने एवं दुग्ध पदार्थों के उत्पादन हेतु राज्य में 9 लाख लीटर दूध प्रतिदिन क्षमता के 10 विशाल डेयरी संयंत्र एवं संकलित दूध को ठंडा करने हेतु 4 लाख लीटर दूध प्रतिदिन क्षमता के 24 दुग्ध अवशीतन केन्द्र विभिन्न स्थानों पर संचालित हैं। जयपुर डेयरी में एक लाख लीटर दूध प्रतिदिन क्षमता का टेट्रापेक संयंत्र कार्यशील है। इन संयंत्रों में दुग्ध विपणन एवं पाश्चरीकरण के अलावा घी, मक्खन, पनीर, दुग्ध पाउडर आदि दुग्ध पदार्थों का उत्पादन किया जाता है जबकि बीकानेर में सरस रसगुल्ले का उत्पादन होने लगा है। सभी डेयरी संयंत्रों में दुग्ध संग्रह से लेकर दूध उत्पादों के पैकिंग तक दुग्ध उत्पादनों पर नियंत्रण रखा जा सकने के लिये प्रत्येक संयंत्र में आधुनिक प्रयोगशाला स्थापित है तथा इन पदार्थों के प्रत्येक बैच की गुणवत्ता की दृष्टि से पूर्ण परीक्षण के बाद इन्हें उपभोक्ताओं में वितरण हेतु भेजा जाता है। डेयरी संयंत्रों में सफाई शुद्धिकरण की सभी सुविधायें सुलभ की गई है तथा मानकीकरण उपकरण भी लगे हुये है।

पशु आहार संयंत्र : डेयरी फैडरेशन द्वारा दुग्ध उत्पादकों को उचित मूल्य पर संतुलित पशु आहार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से तबीजी (अजमेर), नदबई (भरतपुर), जोधपुर एवं बीकानेर में पशु आहार संयंत्र संचालित हैं। प्रतिदिन 400 मैट्रिक टन उत्पादन क्षमता के इन चारों पशु आहार संयंत्रों में उत्पादित पशु आहार सस्ता एवं पौष्टिक होने के साथ-साथ पशुओं की दूध देने की क्षमता बढ़ाता है। जुलाई 1988 में अजमेर में 3250 यूरिया सीरा ईंटें प्रतिदिन उत्पादन क्षमता का भी एक संयंत्र स्थापित किया गया है।

दुग्ध उत्पादन वर्धन कार्यक्रम : उन्नत पशु प्रजनन के लिये विदेशी सांडों के वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान क्रियान्वित किया जा रहा है। इस हेतु बस्सी (जयपुर) में हिमिकृत वीर्य बैंक की स्थापना की गई है जहां से कृत्रिम गर्भाधान हेतु हिमिकृत वीर्य विभिन्न दुग्ध समितियों को भेजा जाता है। यहां एक फार्म भी कार्यशील है जहां अच्छी नस्ल के सांडों के वीर्य द्वारा अच्छी नस्ल के पशुओं का उत्पादन किया जाता है। राजस्थान नहर क्षेत्र में बीज उगाने और उत्तम नस्ल के सांड पैदा करने का एक राठी नस्ल पशु प्रजनन फार्म कार्यशील है। दुधारू पशुओं की देखभाल के लिये लगभग 3 हजार दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों पर पशुओं के प्राथमिक उपचार की सुविधा के अलावा 56 आपात एवं चल पशु चिकित्सा इकाईयों की सेवायें पशु पालकों को उपलब्ध हैं। दुग्ध समितियों के माध्यम से पशुपालकों को उचित मूल्य पर उन्नत चारा बीज एवं संतुलित पशु आहार का भी वितरण किया जाता है।

विशेष पशुपालन कार्यक्रम : लघु एवं सीमान्त काश्तकारों तथा खेतिहर भूमिहीन कृषकों के विकास के लिये डेयरी फैडरेशन द्वारा विशेष पशु पालन कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत इन वर्गों के कृषकों की संकर बछड़ियों को 32 माह की आयु तक रियायती दर पर संतुलित पशु आहार दिया जाता है। प्रत्येक बछड़ी को 1 से 2 किलो पशु आहार दिया जाता है। इन वर्गों को मंहगा संतुलित पशु आहार हेतु 50 से 66 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है। इसके अतिरिक्त दुग्ध संघ स्तर से पशु चिकित्सकों द्वारा इनके पशुओं की समय समय पर जांच की जाती है। पशुओं के मुंह एवं खुर रोग की रोकथाम हेतु निःशुल्क टीके लगाये जाते है।

प्रशिक्षण : किसानों को सहकारिता, दुग्ध सहकारी समितियों में उनकी भूमिका तथा उन्नत पशु पालन के तौर तरीकों की जानकारी देने हेतु दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों एवं दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ स्तर पर प्रशिक्षण दिया जाता है। इसी प्रकार महिला एवं दुग्ध उत्पादकों को [illegible] एवं अन्य डेयरी परियोजनाओं पर ले जाकर डेयरी विकास कार्यक्रम की प्रत्यक्ष जानकारी कराई जाती है ताकि वे अपने अनुभव से डेयरी विकास कार्यक्रम को गति दे सकें। दुग्ध समितियों के सचिवों के प्रशिक्षण हेतु [illegible]

सात प्रशिक्षण केन्द्र जयपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, अलवर, बीकानेर, उदयपुर एवं जोधपुर में चलाये जा रहे हैं।

दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों का विपणन एवं वितरण: डेयरी फैडरेशन द्वारा अपने सभी उत्पादन सरस ब्रान्ड से विपणन किये जाते हैं। उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर शुद्ध दूध उपलब्ध कराने के लिये राज्य के बडे शहरों में प्रीपैक मशीनें लगाई गई हैं तथा दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों के वितरण के लिये 600 से भी अधिक डेयरी बूथ स्थापित हैं तथा 200 से अधिक बूथ और स्थापित किये जा रहे हैं। जयपुर में कार्यशील लगभग 300 डेयरी बूथों मे 23 स्वाचालित बूथ हैं जिनमें खुला दूध विक्रय होता है। दूध के अतिरिक्त विभिन्न दुग्ध पदार्थ जैसे:- घी, मक्खन, पनीर, रसगुल्ले, सुगंधित दूध, छाछ, लस्सी एव दुग्धचूर्ण का वितरण किया जाता है। फैडरेशन द्वारा रक्षा विभाग को भी दुग्धचूर्ण, एवं टेट्रापेक दूध की मांग की पूर्ति के अलावा दिल्ली दुग्ध वितरण योजना एवं मदर डेयरी को भी दूध भेजा जाता है। फैडरेशन के दुग्ध उत्पादों का राजस्थान एवं दिल्ली के अलावा अन्य प्रदेशों में भी विपणन होता है।

विस्तार कार्यक्रम: ऑपरेशन फ्लड कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्य में वर्ष 1992 तक दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों की संख्या बढ़ाकर 5800 करने तथा सदस्य संख्या 5.48 लाख करने का लक्ष्य है। इस कार्यक्रम की क्रियान्विति के बाद डेयरी फैडरेशन की प्रतिदिन की दुग्ध संकलन क्षमता 9 लाख लीटर प्रतिदिन से बढ़ाकर 15 लाख लीटर प्रतिदिन हो जायेगी। दुग्ध पाउडर उत्पादन की क्षमता 50 मैट्रिक टन प्रतिदिन से बढ़ाकर 93 मैट्रिक टन प्रतिदिन हो जायेगी। भरतपुर, धौलपुर, चितौड़गढ़,टोंक, उदयपुर, श्रीगंगानगर एवं सीकर में नये अवशीतन केन्द्र स्थापित किये जायेंगे। इसके साथ ही श्रीखंड, मावा एवं लम्बी अवधि तक रखे जा सकने वाले पनीर के उत्पादन का भी लक्ष्य है।

षष्ठ खण्ड

सात प्रशिक्षण केन्द्र जयपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, अलवर, बीकानेर, उदयपुर एवं जोधपुर में चलाये जा रहे हैं।

दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों का विपणन एवं वितरण: डेयरी फैडरेशन द्वारा अपने सभी उत्पादन सरस ब्रान्ड से विपणन किये जाते हैं। उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर शुद्ध दूध उपलब्ध कराने के लिये राज्य के बड़े शहरों में प्रीपैक मशीनें लगाई गई हैं तथा दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों के वितरण के लिये 600 से भी अधिक डेयरी बूथ स्थापित हैं तथा 200 से अधिक बूथ और स्थापित किये जा रहे हैं। जयपुर में कार्यशील लगभग 300 डेयरी बूथों में 23 स्वचालित बूथ हैं जिनमें खुला दूध विक्रय होता है। दूध के अतिरिक्त विभिन्न दुग्ध पदार्थ जैसे:- घी, मक्खन, पनीर, रसगुल्ले, सुगंधित दूध, छाछ, लस्सी एवं दुग्धचूर्ण का वितरण किया जाता है। फैडरेशन द्वारा रक्षा विभाग को भी दुग्धचूर्ण, एवं टेट्रापेक दूध की मांग की पूर्ति के अलावा दिल्ली दुग्ध वितरण योजना एवं मदर डेयरी को भी दूध भेजा जाता है। फैडरेशन के दुग्ध उत्पादों का राजस्थान एवं दिल्ली के अलावा अन्य प्रदेशों में भी विपणन होता है।

विस्तार कार्यक्रम: ऑपरेशन फ्लड कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्य में वर्ष 1992 तक दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों की संख्या बढ़ाकर 5800 करने तथा सदस्य संख्या 5.48 लाख करने का लक्ष्य है। इस कार्यक्रम की क्रियान्विति के बाद डेयरी फैडरेशन की प्रतिदिन की दुग्ध संकलन क्षमता 9 लाख लीटर प्रतिदिन से बढ़ाकर 15 लाख लीटर प्रतिदिन हो जायेगी। दुग्ध पाउडर उत्पादन की क्षमता 50 मैट्रिक टन प्रतिदिन से बढ़ाकर 93 मैट्रिक टन प्रतिदिन हो जायेगी। भरतपुर, धौलपुर, चित्तौड़गढ़, टोंक, उदयपुर, श्रीगंगानगर एवं सीकर में नये अवशीतन केन्द्र स्थापित किये जायेंगे। इसके साथ ही श्रीखंड, मावा एवं लम्बी अवधि तक रखे जा सकने वाले पनीर के उत्पादन का भी लक्ष्य है।

26.5.90

षष्ठ खण्ड

खेल-जगत

शौर्य, साहस और सहिष्णुता से भरी-पूरी वीर-भूमि राजस्थान के श्रेष्ठ खिलाड़ियों और उत्तम टीमों ने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहनीय प्रदर्शन कर यशकीर्ति अर्जित की है। देश में खेले जाने वाले लगभग सभी खेलों में राजस्थानी खिलाड़ियों ने अपने हाथ दिखाए हैं। विभिन्न खेलों में राजस्थान की उपलब्धियों का विस्तृत लेखा-जोखा यहाँ दिया जा रहा है -

बास्केटबाल

एक ही प्रकार के व्यायाम से ऊबे युवा जिमनास्टों की व्यायाम में रुचि बनाये रखने के लिए अमरीका के प्राध्यापक डा० जेम्स स्मिथ की कल्पना ने बास्केटबाल के खेल को जन्म दिया। भारत में इसकी शुरुआत लगभग सत्तर वर्ष पूर्व मद्रास के वाई०एम०सी०ए० कालेज आफ फिजीकल एजूकेशन से हुई। सन् १९५० में भारतीय बास्केटबाल संघ की स्थापना हुई और अजमेर के सरदार मेहरसिंह इसके संस्थापक सदस्य बने।

राजस्थान में इस खेल की शुरुआत 1948 में हुई। 1950 में बम्बई में आयोजित राष्ट्रीय बास्केटबाल प्रतियोगिता में राजपूताना (राजस्थान) की टीम विजेता रही। इससे प्रोत्साहन पाकर राजस्थान में बास्केटबाल की लोकप्रियता में प्रसार प्रारम्भ हुआ।

राजस्थान में प्रतिवर्ष राज्य स्तर पर पुरुष वर्ग, महिला वर्ग, जूनियर लड़के, जूनियर लड़कियां, सब-जूनियर लड़के व लड़कियां तथा मिनी लड़के व लड़कियों की बास्केटबाल प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं।

राजस्थान के बास्केटबाल खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छाप छोड़ी है। यहां के जूनियर लड़कों की टीम राष्ट्रीय प्रतियोगिता में कई बार विजयी रही है। पुरुष वर्ग की टीम भी वर्ष 1970-71, 1971-72, 1979 तथा 1980 में राष्ट्रीय उपविजेता रही तथा 1981 में इसने राष्ट्रीय विजेता का खिताब हासिल किया। 1986-87 में भी यह टीम विजेता रही। श्री [illegible] को सन 1970 में मनीला में आयोजित एशियाई खेलों में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया। श्री [illegible] को 1980 के मास्को ओलम्पिक में भारतीय टीम का सर्वश्रेष्ठ [illegible] घोषित किया गया। [illegible] बास्केटबाल खिलाड़ियों को अब तक अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

पोलो

पौराणिक एवं ऐतिहासिक ओजस्वी खेल पोलो में राजस्थान के [illegible] ने विश्व-स्तर पर अपना डंका बजाया है। भारतीय पोलो का अर्थ यदि राजस्थान के [illegible] अतिशयोक्ति नहीं होगी। राजस्थान में पोलो की शुरुआत हुए [illegible] है। उस समय यह राजाओं का खेल [illegible] है।

सन 1887 से 1901 तक जोधपुर नरेश [illegible] की टीम [illegible]। 1902 में [illegible] की टीम ने दिल्ली में [illegible] कर दिया। 1905 में [illegible] टीम ने [illegible]।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद कुछ समय [illegible] राजस्थान [illegible]। सन [illegible] तीन वर्षों तक [illegible] टीम से [illegible]। लेकिन सन 1922 में [illegible]

जोधपुर टीम के राव राजा हणूतसिंह, ठाकुर पृथ्वीसिंह, ठाकुर दलपतसिंह और ठाकुर रामसिंह ने कडे मुकाबले में पटियाला को मात दे दी। इस हार ने पटियाला में पोलो का अन्त कर दिया। इसके बाद इन नौजवानों की टीम ने 1925 तक बढ़त बनाए रखी। 1927 में भोपाल के नवाब की सशक्त टीम बनी, जिसके अन्य सदस्य थे- ठाकुर पृथ्वीसिंह, कैप्टन डी. हे तथा राव राजा हणूतसिंह। 1930 में जयपुर की टीम ने खिताब जीता जो नौ वर्षों तक बरकरार रहा। 1933 में इस टीम ने इंग्लैण्ड का अपराजेय दौरा कर अनेक कप जीते। इस टीम में महाराजा मानसिंह, राव राजा हणूतसिंह, ठाकुर पृथ्वीसिंह और राव राजा अभयसिंह शामिल थे। यह टीम विश्व में अब तक की सर्वश्रेष्ठ टीम मानी गई है।

1957 में भारतीय टीम के रूप में खेलते हुए राजस्थान टीम के सदस्यों—राव राजा हणूतसिंह,कैप्टन किशनसिंह, कैप्टन विजयसिंह और महाराजा मानसिंह ने विश्व चैम्पियनशिप पर कब्जा जमाया। राव राजा हणूतसिंह को पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। इन सहित श्री प्रेमसिंह तथा श्री किशनसिंह को अर्जुन पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

वर्तमान में राजस्थान में पोलो की निम्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं:-

(1) मैसूर कप, (2) कोटा कप, (3) सवाई मानसिंह स्वर्ण कप (4) सिरमौर कप, (5) राव राजा हणूतसिंह चैलेन्ज कप तथा (6) बृजमोहन बिड़ला मैमोरियल कप।

साईकिल पोलो

राजस्थान में साईकिल पोलो संघ की स्थापना जोधपुर के महाराजा श्री रघुनाथसिंह व सुल्तानसिंह तथा उणियारा के राव राजा श्री राजेन्द्रसिंह और श्री राघवेन्द्रसिंह डूंडलोद के तत्वाधान में सन् 1975 में हुई। वर्तमान में इस खेल को खेलने वाले राजस्थान में लगभग 500 खिलाडी क्रियाशील हैं।

क्रिकेट

राजस्थान में क्रिकेट का प्रारम्भ अजमेर मे हुआ जो तत्कालीन राजपूताना के मध्य मे स्थित एकमात्र ब्रिटिश शासित राज्य था। यहाँ का मेयो कालेज मैदान उन दिनों क्रिकेट के केन्द्र था। राजपूताना क्रिकेट क्लब ने 1933 में भ्रमणकारी एम.सी.सी टीम के विरुद्ध मैच का आयोजन किया।

1934-35 में क्रिकेट की राष्ट्रीय प्रतियोगिता राणजी ट्राफी प्रारंभ हुई और राजपूताना (राजस्थान) ने अगले वर्ष से ही इसमें भागीदारी की। राजपूताना ने इस प्रतियोगिता में अपनी प्रथम विजय सन् 1939 मे दिल्ली के विरुद्ध दर्ज की। वित्तीय स्रोतों और संगठन की कमी के कारण सन् 1940-41, 41-42,43-44, 44-45, 46-47, 48-49, और 54-55 में हमारी टीम इस प्रतियोगिता में भाग नही ले सकी। 1955-56 में उत्तर प्रदेश के विरुद्ध राणजी मैच का मेजबान राजस्थान था। लेकिन धनाभाव के कारण इसके लिए मैच आयोजन सम्भव नही था। इसी समय राजस्थान के क्रिकेट इतिहास में एक परिवर्तन आया और महाराणा उदयपुर श्री भगवतसिंह ने मैच का आयोजन, अपने संरक्षण में, उदयपुर में करवाया। 1956 में महाराणा सर्वसम्मति से राजस्थान क्रिकेट संघ के अध्यक्ष चुने गए। महाराणा के प्रयासों से स्वर्गीय वीनू मांकड और जी. रामचन्द राजस्थान की ओर से खेलने आये। आगे चलकर सलीम दुर्रानी और हनुमन्तसिंह भी राजस्थान की ओर से खेलने लगे। अगले वर्ष से किशन रूंगटा राजस्थान क्रिकेट से जुडे और राजस्थान टीम एक शक्तिशाली टीम के रूप में उभरकर आई।

1961 में एम.सी.सी. टीम जयपुर आई और महाराजा कॉलेज मैदान पर इसका मुकाबला राजस्थान टीम से हुआ। इसी मैच में सलीम दुर्रानी ने राजस्थान की ओर से यादगार पारी खेली जिसे याद

कर जयपुर के दर्शक आज भी रोमांचित हो उठते है।

राजस्थान को यह भी सौभाग्य प्राप्त है कि यहां के श्री पुरुषोत्तम रूंगटा तीन वर्षों तक भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष रह चुके हैं। यहां के श्री राजसिंह डूंगरपुर क्रिकेट बोर्ड की चयन समिति के अध्यक्ष हुए हैं।

वर्तमान में राजस्थान टीम रणजी ट्राफी, कूचबिहार ट्राफी, सी के नायडू ट्राफी, विजय मर्चेन्ट ट्राफी आदि राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेती है। रणजी ट्राफी में यह टीम आठ बार राष्ट्रीय उपविजेता रह चुकी है जबकि मध्य क्षेत्र की अनेक बार विजेता रह चुकी है। राजस्थान क्रिकेट संघ स्वयं अपने स्तर पर सीनियर लड़कों के लिए डूंगरपुर शील्ड प्रतियोगिता का आयोजन करता है।

यहां के श्री सलीम दुर्रानी व श्री विजय मांजरेकर को इस खेल हेतु अर्जुन पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

एथलेटिक्स प्रतियोगिताएं

1956-60 में दिल्ली मे आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में राजस्थान की डेविन पोर्ट ने भाला फैंक में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 1967 में कोटटायम में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में राजस्थान टीम 17 स्वर्ण, 13 रजत तथा 12 कास्य पदक प्राप्त कर पहले स्थान पर रही। 1968 की मद्रास प्रतियोगिता में यह दूसरे स्थान पर रही। 1969 मे जालंधर में 17 स्वर्ण, 13 रजत तथा 13 कास्य पदक प्राप्त कर फिर यह दूसरे स्थान पर रहा। 1970 की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में राजस्थान लगातार तीसरी बार दूसरे स्थान पर रहा। 1971 की अहमदाबाद प्रतियोगिता में एक बार फिर यह दूसरे स्थान पर रहा। 1971-72 में राजस्थान के हरभजन ने म्यूनिख में आयोजित प्री- ओलम्पिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया। इसी वर्ष कोटटायम मे आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में राजस्थान की लड़कियों ने द्वितीय अखिल भारतीय ग्रामीण खेल कूद प्रतियोगिता की चैम्पियनशिप जीती। 1973 में धावक श्रीरामसिंह को अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

फरवरी, 1974 में जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम पर राष्ट्रीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 1976 के मान्ट्रियल ओलम्पिक मे धावक श्रीरामसिंह ने 800 मीटर दौड़ में सातवां स्थान प्राप्त किया। धावक गोपाल सैनी ने तेहरान एथलेटिक्स में स्वर्ण पदक जीता।

बैंकाक में दिसम्बर, 1978 मे आयोजित एशियाई खेलों मे 800 मीटर दौड में धावक श्रीरामसिंह ने प्रथम रहकर स्वर्ण पदक जीता। इसी प्रतियोगिता में 300 मीटर स्टीपलचेज में गोपाल सैनी ने रजत पदक जीता। 1979-80 में गोपाल सैनी ने मास्को में आयोजित प्री-ओलम्पिक में भारत का तथा मान्ट्रियल मे सम्पन्न विश्व कप एथलेटिक्स में एशिया का प्रतिनिधित्व किया। 1980-81 में श्री गोपाल सैनी को अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1981-82 में टोकियो में सम्पन्न एशियाई प्रतियोगिता में गोपाल सैनी ने स्वर्ण तथा सुश्री हमीदा बानू ने रिले में कांस्य पदक जीता। ब्रिस्बेन में सम्पन्न प्री-राष्ट्रमंडलीय खेलों में गोपाल सैनी ने कांस्य पदक जीता। इसी वर्ष रोम में सम्पन्न विश्व कप मुकाबला में गोपाल सैनी ने एशिया का प्रतिनिधित्व किया।

1982 में दिल्ली में सम्पन्न एशियाई खेलों मे राजस्थान के दो एथलीटों ने रजत व एक ने कास्य पदक प्राप्त किया। गोपाल सैनी ने 300 मीटर स्टीपलचेज मे रजत पदक प्राप्त किया। हमीदा बानू ने भी रजत पदक जीता जबकि 5000 मीटर की दौड में राजकुमार ने कांस्य पदक जीता। राजकुमार ने 1986 में सियोल के एशियाई खेलों में भी 5000 मीटर की दौड मे चौथा स्थान प्राप्त किया। 1987 में सिंगापुर में

आयोजित विश्व कप मैराथन प्रतियोगिता में राजस्थान के हरीसिंह एवं हरफूलसिंह ने भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया। हरीसिंह ने सितम्बर 87 में रोम में आयोजित विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया।

महिला हाकी

महिला हाकी में राजस्थान से सर्वप्रथम अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर अजमेर की कुमारी मारग्रेट मार्क्स को 1956 में मिला जब वे सिडनी में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महिला हाकी प्रतियोगिता में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुई। वर्ष 1959-60 में राजस्थान खेल परिषद ने राजस्थान महिला हाकी संघ को मान्यता दी। इसी वर्ष से राज्य की सीनियर व जूनियर महिला हाकी टीमें राज्य स्तर पर प्रतियोगिता आयोजन कर राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेती है।

वर्ष 1966 मे यहां की हाकी खिलाड़ी सुनीता पुरी को अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1980 में मास्को ओलम्पिक में यहां की वर्षा सोनी एवं गंगोत्री भण्डारी ने भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया। 1982 में दिल्ली के एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक विजेता भारतीय टीम मे भी ये दोनो शामिल थी। वर्षा सोनी को 1981 में अर्जुन पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। यहाँ की स्व० श्रीमती रीना मुकर्जी राष्ट्रीय महिला हाकी संघ की अनेक वर्षों तक अध्यक्षा भी रही है।

अर्जुन पुरस्कार

विशिष्ट खिलाड़ियों को दिया जाने वाला यह पुरस्कार 1961 में भारत सरकार द्वारा प्रारम्भ किया गया। पहले ही वर्ष राजस्थान के तीन खिलाड़ियों को यह पुरस्कार प्राप्त हुआ। राजस्थान को निशानेबाजी में देश के प्रथम चार, पोलो में प्रथम तीन तथा क्रिकेट व घुड़सवारी के प्रथम अर्जुन पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ है।

राजस्थान के अर्जुन पुरस्कार विजेता

क्र. सं.	नाम	खेल	वर्ष
1.	डा० कर्णी सिंह	निशानेबाजी	1961
2.	श्री प्रेमसिंह	पोलो	1961
3	श्री सलीम दुर्रानी	क्रिकेट	1961
4.	श्री किशनसिंह	पोलो	1963
5.	रावराजा हणूत सिंह	पोलो	1964
6.	श्री विजय मंजरेकर	क्रिकेट	1965
7.	सुश्री रीमा दत्ता	तैराकी	1966
8	श्रीमती सुनीता पुरी	महिला हाकी	1966
9	श्री खुशीराम	बास्केटबाल	1967
10.	श्रीमती राज्यश्री कुमारी	निशानेबाजी	1968
11.	श्रीमती भुवनेश्वरी कुमारी	निशानेबाजी	1969
12.	महाराव भीमसिंह	निशानेबाजी	1971
13.	श्री भंवरसिंह शेखावत	तैराकी (गोताखोरी)	1971
14.	श्री रामसिंह	एथलेटिक्स	1973
15.	श्री सुरेन्द्र कटारिया	बास्केटबाल	1973
16	श्री खान मोहम्मद खान	घुड़सवारी	1973
17.	श्री मगनसिंह राजवी	फुटबाल	1973
18.	श्रीमती मंजरी भार्गव	तैराकी (गोताखोरी)	1974
19	श्री श्यामसुन्दर राव	वालीबाल	1974
20.	श्री हनुमान सिंह	बास्केटबाल	1975
21.	श्री सुरेश मिश्रा	वालीबाल	1979-80
22.	श्री गोपाल सैनी	एथलेटिक्स	1980-81
23.	सुश्री वर्षा सोनी	महिला हाकी	1981
24.	श्री अजमेर सिंह	बास्केटबाल	1982
25.	श्री रघुवीरसिंह	घुड़सवारी	1982
26	श्री लक्ष्मणसिंह	गोल्फ	1982
27.	सुश्री भुवनेश्वरी कुमारी	स्क्वेश	1982
28.	श्री आर.के. पुरोहित (लालजी)	वालीबाल	1983
29.	श्री राजकुमार	एथलेटिक्स	1984
30	श्री राधेश्याम	बास्केटबाल	1984
31.	श्री गुलाम मो० खान	घुड़सवारी	1984
32.	श्री मेहरचन्द भास्कर	भारोत्तोलन	1985

राजस्थान खेल जगत के विशिष्ट व्यक्ति

अजमेरसिंह:- अन्तर्राष्ट्रीय बास्केटबाल खिलाड़ी श्री अजमेरसिंह ने 1980 में मास्को ओलम्पिक और 1982 में दिल्ली के एशियाई खेलों सहित अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। मास्को ओलम्पिक और दिल्ली के एशियाई खेलों में ये चोटी के स्कोरर रहे। 1982 में आपको अर्जुन पुरस्कार और 1984-85 में महाराणा प्रताप पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अनिल सिंह:- बैडमिन्टन के अन्तर्राष्ट्रीय अम्पायर श्री अनिलसिंह ने राष्ट्रीय बैडमिन्टन चैम्पियनशिप में राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया। ये देश के तीसरे व्यक्ति है जिन्हें अन्तर्राष्ट्रीय अम्पायर चुना गया है।

आपजी कल्याणसिंह:- राजस्थान खेल परिषद के उपाध्यक्ष मेजर आपजी कल्याणसिंह अन्तर्राष्ट्रीय निशानेबाज रहने के साथ ही राष्ट्रीय निशानेबाजी संघ में विभिन्न पदों पर कार्य कर चुके हैं। आपने 1962 में केरो में आयोजित निशानेबाजी प्रतियोगिता में गोल्ड बैज जीता। आप भारतीय निशानेबाजी टीम के मैनेजर की हैसियत से अनेक देशों का दौरा कर चुके हैं।

कर्णीसिंह (स्व०) - बीकानेर के पूर्व महाराजा और अन्तर्राष्ट्रीय निशानेबाज डा० कर्णीसिंह का जन्म 21 अप्रेल, 1924 को हुआ। आपने बी.ए. (आनर्स) व पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। 1952 से 1971 तक लगातार आप बीकानेर से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में लोकसभा के लिए चुने गये। आपने 1960 से 1972 तक लगातार चार ओलम्पिक निशानेबाजी प्रतियोगिताओं में भाग लिया। 1976 के मॉन्ट्रियल ओलम्पिक में आप स्वास्थ्य ठीक नहीं होने से भाग नहीं ले सके। 1980 में आपने पुनः मास्को ओलम्पिक में भाग लिया। 1982 के दिल्ली एशियाड में आपने रजत पदक जीता। 1961 में अर्जुन पुरस्कार की शुरुआत होने पर आपको निशानेबाजी के प्रथम अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1982-83 में आपको राज्य-स्तरीय महाराणा प्रताप पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जनवरी 1989 में आपका निधन हो गया

किशनसिंह (लेफ्टि० कर्नल)- पालो के खेल के लिए अर्जुन पुरस्कार प्राप्त करने वाले ले. कर्नल ठाकुर किशनसिंह 1957 में विश्व पोलो चैम्पियनशिप जीतने वाली टीम के सदस्य थे।

खान मोहम्मद खान (कैप्टन):- झुंझुनूं जिले के निवासी 61 वीं कैवलरी के कैप्टन खान मोहम्मद खान (खानू खान) ने मास्को ओलम्पिक सहित विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में घुड़सवारी टीम में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1973 में आपको घुड़सवारी के लिए देश का प्रथम अर्जुन पुरस्कार प्रदान किया गया।

खुशीराम:- बास्केटबाल के खेल के लिए 1967 में अर्जुन पुरस्कार प्राप्त करने वाले श्री खुशीराम को 1970 में मनीला में आयोजित एशियाई प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ शूटर घोषित किया गया। आपने कई अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देश का प्रतिनिधित्व किया।

गुलाम मोहम्मद खान (कैप्टन):- घुड़सवारी के लिए 1984 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित कैप्टन जी.एम. खान 1982 के दिल्ली एशियाड में स्वर्ण पदक विजेता भारतीय टीम के कप्तान थे। इसी प्रतियोगिता में आपने एकल स्पर्धा में रजत पदक प्राप्त किया। 1986 के सियोल एशियाड में आप दोहरे कांस्य पदक हासिल करने वाली टीम के सदस्य थे। 1982-83 में आपको राज्य-स्तरीय महाराणा प्रताप पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

गोपाल सैनी- विख्यात एथलीट और 1980-81 के अर्जुन पुरस्कार विजेता गोपाल सैनी का जन्म 18 अप्रेल, 1954 को एक गरीब शिक्षक के यहाँ हुआ। आप विज्ञान स्नातक है। आपने

3000 मीटर स्टीपलचेज में 1978 में बैंकाक एशियाड तथा 1982 के दिल्ली एशियाड में रजत पदक प्राप्त किये। 1980 के मास्को ओलम्पिक में भी आपने भाग लिया। इसके अतिरिक्त आपने अन्य अनेक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक जीते। सम्प्रति स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर में अधिकारी हैं।

गंगोत्री (भंडारी) - 1982-83 में राज्य-स्तरीय महाराणा प्रताप पुरस्कार से सम्मानित अन्तर्राष्ट्रीय महिला हाकी खिलाडी श्रीमती गंगोत्री का जन्म 13 अगस्त, 1956 को हुआ। आपने 1980 के मास्को ओलम्पिक तथा 1982 के दिल्ली एशियाड सहित अनेक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व किया। दिल्ली एशियाड में स्वर्ण पदक जीतने वाली हाकी टीम की आप सदस्या थी। सम्प्रति पश्चिम रेलवे में कार्यरत हैं।

चन्द्रिका गिताई - पिछले नौ वर्षों से राज्य स्तरीय साईकलिंग चैम्पियन चन्द्रिका गिताई अनेक राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में विजय हासिल करने के साथ ही 1983 में मनीला में आयोजित एशियाई साईकलिंग प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। 1984-85 में आपको राज्य-स्तरीय महाराणा प्रताप पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

चांदराम - भारतीय सेना से सेवानिवृत्त कैप्टन चांदराम झुंझुनूं जिले के निवासी हैं। आपने एथलीट के रूप में 1956 में मेलबोर्न ओलम्पिक और 1958 में टोकियो में आयोजित एशियाई खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

जे सी. पालीवाल:- विगत तीन दशकों से भी अधिक समय से खेलों से सम्बद्ध 53 वर्षीय श्री जे सी पालीवाल प्रदेश के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खेल पदाधिकारी हैं। आप भारतीय ओलम्पिक संघ के महासचिव रह चुके हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एशियाई बास्केटबाल संघ के उपाध्यक्ष, संयुक्त सचिव तथा तकनीकी समिति के सभापति रहे हैं। इसके साथ ही आप अन्तर्राष्ट्रीय बास्केटबाल संघ की तकनीकी समिति के सदस्य एवं बैंकाक के एशियाई खेलों के निर्णायक मण्डल में भी रह चुके हैं।

जरनैलसिंह:- पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय हाकी खिलाडी जरनैलसिंह का जन्म 14 दिसम्बर, 1939 को भरतपुर में हुआ। आपने 1958 तथा 1962 के एशियाई खेलों सहित अनेक अन्तर्राष्ट्रीय हाकी प्रतियोगिताओं में भाग लिया। सम्प्रति सवाई मानसिंह स्टेडियम पर हाकी प्रशिक्षक हैं।

हेविन पोर्ट:- विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली हेविन पोर्ट ने 1962 में जकार्ता में आयोजित एशियाई खेलों में भाला फैंक में कांस्य पदक जीता। आपने अपने समय में भाला-फैंक का राष्ट्रीय कीर्तिमान भी स्थापित किया।

पार्थसारथी शर्मा:- 1983 84 में महाराणा प्रताप पुरस्कार विजेता पार्थसारथी शर्मा टैस्ट-क्रिकेटर और मध्यक्षेत्र व राजस्थान के कप्तान रह चुके हैं।

पुरुषोत्तम रूंगटा - राजस्थान क्रिकेट संघ के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम रूंगटा अखिल भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

प्रहलादसिंह :- दिल्ली एशियाड में घुड़सवारी की एकल स्पर्द्धा में कांस्य पदक विजेता प्रहलादसिंह को 1982-83 में राज्य-स्तरीय महाराणा प्रताप पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रेमसिंह:- पोलो के लिए देश के प्रथम अर्जुन पुरस्कार विजेता (1961) महाराजा प्रेमसिंह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के पोलो खिलाड़ी रहे हैं।

भंवरसिंह शेखावत :- सीकर जिले के निवासी बड़ी ग्राम में 7 नवम्बर, 1936 को जन्मे श्री भंवरसिंह शेखावत 1964 से 1971 तक लगातार आठ बार गोलाफेंकी के राष्ट्रीय चैम्पियन रहे। 1971 में आपको अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

84 में महाराणा प्रताप पुरस्कार और 1986-87 में अरावली पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

राज्यश्री :- विख्यात निशानेबाज और पूर्व बीकानेर रियासत के महाराजा स्व० डा० कर्णीसिंह की पुत्री श्रीमती राज्यश्री भी जानी-मानी निशानेबाज हैं। आपका जन्म 4 जून, 1953 को हुआ और मात्र सात वर्ष की आयु में आप 12 वर्ष से कम आयु वर्ग की निशानेबाज चैम्पियन बन गई। आपने 1968 में मैक्सिको ओलम्पिक और 1974 में तेहरान में आयोजित सातवें एशियाई खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1968 में आपको मात्र 16½ वर्ष की आयु में अर्जुन पुस्कार से सम्मानित किया गया। इतनी कम आयु में यह सम्मान प्राप्त करने वाली आप देश की प्रथम खिलाडी हैं।

राजकुमार (अहलावत) : अन्तर्राष्ट्रीय एथलीट और झुंझुनूं जिले के मनोहरपुरा निवासी राजकुमार का जन्म 2 मार्च, 1962 को हुआ। आपने 1982 के दिल्ली एशियाड में 5000 मीटर में कांस्य पदक हासिल किया। 1986 के सियोल एशियाड में भी आपने भाग लिया। आपने अनेक अन्य अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी भाग लेकर पदक जीते। 1982-83 में आपको राज्य स्तरीय महाराणा प्रताप पुरस्कार से और 1984 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

राजसिंह डूंगरपुर :- विख्यात क्रिकेटर श्री राजसिंह पूर्व डूंगरपुर रियासत के राजपरिवार के सदस्य हैं। अपने समय के जाने-माने आलराउण्डर राजसिंह ने राजस्थान की ओर से खेलते हुए अनेक रणजी ट्राफी एवं दिलीप ट्राफी मैचों में भाग लिया। रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में आपने राजस्थान का नेतृत्व भी किया। आप भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की चयन समिति के सदस्य एवं राजस्थान खेल परिषद के अध्यक्ष रहने के साथ ही एक कुशल खेल पत्रकार एवं आकाशवाणी दूरदर्शन के जाने-माने "एक्सपर्ट-कमेंटेटर" भी हैं।

रामफल:- 1983-84 में महाराणा प्रताप पुरस्कार विजेता पहलवान रामफल ने तेहरान में सम्पन्न एशियाई कुश्ती स्पर्दा में रजत, हिसार में सम्पन्न जूनियर एशियाई स्पर्दा में स्वर्ण तथा लाहौर में सम्पन्न सीनियर एशियाई दंगल में कांस्य पदक जीते।

रीना मुकर्जी :- अखिल भारतीय महिला हाकी संघ की लगभग 12 वर्षों तक अध्यक्षा रही स्व० श्रीमती रीना मुकर्जी राजस्थान के पूर्व मुख्य सचिव स्व० श्री मोहन मुकर्जी की सहधर्मिणी थी। आप पूर्व में राजस्थान महिला हाकी संघ की अध्यक्ष तथा 1958 से 76 तक अखिल भारतीय महिला हाकी संघ की उपाध्यक्षा रही। 1979 से मृत्युपर्यन्त इसकी अध्यक्षा रहीं। 1989 के प्रारंभ में एक सडक दुर्घटना से विदेश में आपकी मृत्यु हुई।

रीमा दत्ता:- अपने समय में "जल परी" के नाम से विख्यात रीमा दत्ता को 1966 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपने तैराकी के अनेक राष्ट्रीय कीर्तिमान स्थापित किये। 1966 के बैंकाक एशियाई खेलों के लिए भी आपका टीम में चयन हुआ।

लिम्बाराम:- तीरंदाज लिम्बाराम ने 1988 के सियोल ओलम्पिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

वर्षा सोनी:- अन्तर्राष्ट्रीय महिला हाकी खिलाडी सुश्री वर्षा सोनी का जन्म 12 मार्च, 1957 को ... आपने 1980 के मास्को ओलम्पिक एवं 1982 के दिल्ली एशियाड (स्वर्ण पदक विजेता) सहित अनेक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व एवं नेतृत्व किया। 1981 में आपको अर्जुन ... 2-83 में महाराणा प्रताप पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

विशाल सिंह:- घुड़सवारी के लिए 1982-83 के महाराणा प्रताप पुरस्कार से सम्मानित रिसालदार विशालसिंह 1982 के एशियाड में स्वर्ण पदक विजेता भारतीय टीम के सदस्य थे। आपने 1980 के मास्को ओलम्पिक में भी भाग लिया था।

श्यामलाल:- तीरंदाज श्यामलाल ने 1988 के सियोल ओलम्पिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

श्रीरामसिंह:- भारतीय एथलेटिक्स टीम के कप्तान रहे श्रीरामसिंह को 1973 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपने 1972 के म्यूनिख ओलम्पिक और 1976 के मांट्रियल ओलम्पिक में देश का प्रतिनिधित्व किया। 1970 के बैंकाक एशियाई खेलों में आपने 800 मीटर में रजत व 1974 के तेहरान एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीता।

सलीम दुर्रानी- पूर्व टैस्ट आलराउण्डर सलीम दुर्रानी को 1961 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपने रणजी ट्राफी मैचों में राजस्थान का व अनेक अन्तर्राष्ट्रीय मैचों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। आप एक आक्रमक बल्लेबाज रहे।

सुनीता पुरी :- अनेक अन्तर्राष्ट्रीय हाकी मैचों में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली सुनीता पुरी को 1966 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सुरेन्द्र कटारिया:- 1973 में अर्जुन पुरस्कार विजेता अन्तर्राष्ट्रीय बास्केटबाल खिलाड़ी सुरेन्द्र कटारिया ने अनेक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

सुरेश मिश्रा:- लक्ष्मणगढ़ (सीकर) निवासी वालीबाल खिलाड़ी श्री सुरेश मिश्रा ने 1974 में तेहरान एशियाड व 1978 के बैंकाक एशियाड सहित अनेक अन्तर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1979 में आपने कुछ मैचों में भारत का नेतृत्व भी किया।

हणूतसिंह (राव राजा) - पद्मभूषण से सम्मानित विख्यात अन्तर्राष्ट्रीय पोलो खिलाड़ी स्व० राव राजा हणूतसिंह जोधपुर के निवासी थे। आप 1933 में इंग्लैण्ड का दौरा करने वाली भारतीय टीम के सदस्य थे। 1957 में विश्व चैम्पियन जीतने वाली टीम के भी आप सदस्य थे। 1964 में उन्हें अर्जुन पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

हनुमन्तसिंह :- पूर्व टैस्ट क्रिकेटर हनुमन्तसिंह ने अनेक रणजी व दिलीप ट्राफी मैचों में राजस्थान व मध्य क्षेत्र का प्रतिनिधित्व व नेतृत्व किया।

हनुमान (गुरु) - बिड़ला व्यायामशाला दिल्ली में कुश्ती के प्रशिक्षक गुरु हनुमान का जन्म झुंझुनूं जिले में हुआ। आपके द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त पहलवानों ने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय कुश्ती में नाम कमाया है।

हनुमानसिंह - 1975 में अर्जुन पुरस्कार प्राप्त अन्तर्राष्ट्रीय बास्केटबाल खिलाड़ी हनुमानसिंह ने कई प्रतियोगिताओं में भारत का नेतृत्व भी किया। 1983-84 में उन्हें महाराणा प्रताप पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

हमीदा बानू - 1981 में टोकियो में आयोजित एशियाई स्पर्धा में कांस्य पदक 1982 में दिल्ली में आयोजित एशियाई खेलों में रजत पदक विजेता एथलीट हमीदा बानू को 1982-83 में महाराणा प्रताप पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जयपुर जिले की ग्रामीण जनता को गरीबी के अभिशाप से मुक्ति दिलाने एवं विभिन्न योजनाओं तथा कार्यक्रमों के माध्यम से आर्थिक कायाकल्प के लिए

कृत संकल्प

जिला ग्रामीण- विकास अभिकरण

जयपुर : राजस्थान:

बालकृष्ण मीणा
आई.ए.एस.
अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) एवं
पदेन परियोजना निदेशक

धर्मवीर
आई.ए.एस
अध्यक्ष एवं
जिला कलक्टर

जयपुर जिले की ग्रामीण जनता को गरीबी के अभिशाप से

मुक्ति दिलाने एवं विभिन्न योजनाओं तथा कार्यक्रमों के

माध्यम से आर्थिक कायाकल्प के लिए

कृत संकल्प

जिला ग्रामीण- विकास अभिकरण

जयपुर : राजस्थान:

बालकृष्ण मीणा
आई.ए.एस.
अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) एवं
पदेन परियोजना निदेशक

धर्मवीर
आई.ए.एस
अध्यक्ष एवं
जिला कलक्टर

राजस्थान
वार्षिकी

सप्तम खण्ड

राजस्थान के ''पद्म अलंकरण'' प्राप्त व्यक्तियों की सूची

भारत सरकार ने राजस्थान के जिन सपूतों को विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट सेवाओं के लिए ''पद्म अलंकरण'' से विभूषित किया है, उनकी वर्षवार सूची इस प्रकार है-

क्र	नाम	वर्ष	कार्यक्षेत्र	अलंकरण
1	श्रीमती रतन शास्त्री	1955	महिला शिक्षा में उल्लेखनीय योगदान- वनस्थली विद्यापीठ की संस्थापिका	पद्मश्री
2	श्री कंवर सेन	1956	विख्यात इंजीनियर- इंदिरा गांधी नहर के योजनाकार	पद्मभूषण
3	राव राजा हणूतसिंह	1958	प्रसिद्ध पोलो खिलाड़ी- राज्य की प्रथम- शास्त्री सरकार में स्वास्थ्य मंत्री	पद्मभूषण
4	प्रो० पावला तिरुपति राजू	1958	दर्शनशास्त्र के विद्वान -राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक	पद्मभूषण
5	श्री भगवतसिंह मेहता	1961	राजस्थान के पूर्व मुख्य सचिव तथा पंचायतीराज के सूत्रधार	पद्मश्री
6	श्री घनश्यामदास बिड़ला	1961	प्रख्यात उद्योगपति	पद्मविभूषण
7	श्री मुनि जिन विजय	1961	विख्यात पुरातत्वविद- राज्य के पुरातत्व विभाग के प्रथम निदेशक	पद्मश्री
8	श्रीयुत श्रीधर शर्मा	1962		पद्मश्री
9.	श्री सीताराम सेकसरिया	1962		पद्मभूषण
10	श्री शुकदेव पांडे	1964	शिक्षा-शास्त्री-बिड़ला एजुकेशन ट्रस्ट, पिलानी के पूर्व सचिव	पद्मश्री
11	श्री जोहन टेवर्स मेंड्स गिब्सन	1965		पद्मश्री
12	श्री माणिक्यलाल वर्मा	1965	राज्य के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी तथा 1948 में गठित संयुक्त राजस्थान के प्रधानमंत्री	पद्मविभूषण
13	श्री हरिभाऊ उपाध्याय	1966	राज्य के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी अजमेर-मेरवाड़ा के पूर्व मुख्यमंत्री तथा राजस्थान के पूर्व मंत्री	पद्मभूषण
14.	श्री चण्डीदान	1967	प्रगतिशील कृषक तथा बोरूंदा (जोधपुर) के पूर्व सरपंच	पद्मश्री
15.	श्री देवीलाल सामर	1968	विख्यात कलाकार-भारतीय लोक कला मंडल उदयपुर के संस्थापक निदेशक	पद्मश्री

1	2	3	4	5
16.	श्री शीशराम ओला	1968	सैनिक-कल्याण में उल्लेखनीय योगदान-वर्तमान में राज्य मंत्रिमंडल के सदस्य	पद्मश्री
17	डा० मोहनसिंह मेहता	1969	विख्यात शिक्षा-शास्त्री, सेवा मन्दिर उदयपुर के संस्थापक और राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति	पद्मविभूषण
18.	श्री नारायणसिंह माटी	1970	डाकू- उन्मूलन में उल्लेखनीय कार्य-भारतीय पुलिस सेवा के पूर्व अधिकारी	पद्मश्री
19.	मिस विलियम जी० लूटर	1970	महिला शिक्षा में उल्लेखनीय सेवाएं-एम.जी. डी. स्कूल, जयपुर की पूर्व प्राचार्य	पद्मश्री
20.	श्री खेलशंकर दुर्लभजी	1971	प्रमुख रत्न व्यवसायी और समाजसेवी	पद्मश्री
21.	श्री सूर्यदेवसिंह	1971	अलवर जिले के प्रगतिशील कृषक-रैणी पंचायत समिति के पूर्व प्रधान	पद्मश्री
22.	श्री गोकुल भाई दौ० भट्ट	1971	प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और विख्यात सर्वोदयी नेता	पद्मभूषण
23.	श्री विजयसिंह	1972	भारत-पाक युद्ध के दौरान श्रीगंगानगर जिले के जिलाधीश के रूप में उल्लेखनीय सेवाएं	पद्मश्री
24.	डा० नगेन्द्र सिंह	1973	विख्यात न्यायविद्- अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के पूर्व अध्यक्ष	पद्मविभूषण
25.	डा० दौलतसिंह कोठारी	1973	विख्यात शिक्षा शास्त्री- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व अध्यक्ष	पद्मविभूषण
26.	श्रीमती रतन शास्त्री	1975	महिला शिक्षा में उल्लेखनीय योगदान-वनस्थली विद्यापीठ की संस्थापक उपाध्यक्ष	पद्मभूषण
27.	श्री भोगीलाल पंड्या	1976	प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, आदिवासी नेता और राज्य के पूर्व मंत्री	पद्मभूषण
28	डा० कालूलाल श्रीमाली	1976	प्रमुख शिक्षा शास्त्री- पूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री	पद्मविभूषण
29.	श्री कृपालसिंह शेखावत	1976	प्रमुख चित्रकार (ब्लू पॉटरी)	पद्मश्री
30.	श्री सीताराम लालस	1977	राजस्थानी साहित्यकार और राजस्थानी शब्दकोष के निर्माता	पद्मश्री

1	2	3	4	5
31.	डा० प्रमोदकरण सेठी	1981	प्रमुख अस्थि-रोग विशेषज्ञ और "जयपुर-पैर" के निर्माता	पद्मश्री
32	श्री झाबरमल्ल शर्मा	1981	मनीषी साहित्यकार और पत्रकार	पद्मभूषण
33	श्रीमती अल्लाह जिलाई-बाई	1982	प्रमुख मांड गायिका	पद्मश्री
34.	श्री कोमल कोठारी	1983	राजस्थानी लोक-साहित्य और लोक-कलाओं के उन्नायक	पद्मश्री
35.	श्री रामगोपाल विजयवर्गीय	1984	अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार	पद्मश्री
36	श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत	1984	प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार तथा पूर्व सांसद और विधायिका	पद्मश्री
37.	श्री तिलकायत गोस्वामी गोविन्दलाल जी नाथद्वारा	1984		पद्मश्री
38	डा० शीतलराज मेहता	1985	प्रमुख चिकित्सक और सवाई मानसिंह मेडीकल कॉलेज जयपुर के पूर्व प्राचार्य	पद्मश्री
39	श्री हिसामुद्दीन उस्ता	1986	ऊंट की खाल पर सोने की नक्काशी	पद्मश्री
40	श्री नारायणसिंह माणकलाव	1986	नशाबंदी अभियान में उल्लेखनीय योगदान	पद्मश्री
41.	सरदार कुदरतसिंह	1988	प्रमुख शिल्पी- मीनाकारी में दक्ष	पद्मश्री
42.	प्रो० एम वी माथुर	1989	प्रमुख शिक्षा शास्त्री- राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति	पद्मभूषण
43	श्री मेघराज जैन	1989	जयपुर जिले के [illegible] क्षेत्र में [illegible] अभियान में उल्लेखनीय योगदान	पद्मश्री

दिवंगत प्रतिभायें

अगरचंद नाहटा

श्री अगरचंद नाहटा उन गिने चुने सौभाग्यशालियों में से थे जिन्हें लक्ष्मी और सरस्वती की कृपा आजीवन समान रूप से प्राप्त होती रही। चैत्र कृष्णा चतुर्दशी सम्वत् 1967 को बीकानेर के एक सम्पन्न जैन परिवार में जन्मे श्री नाहटा जी की औपचारिक शिक्षा यद्यपि पांचवीं श्रेणी तक ही रही लेकिन उनका सान्निध्य पाकर पता नहीं कितने लोग लेखक और विद्वान बन गये तो कितनों ने पीएच डी और डी लिट आदि उपाधियाँ प्राप्त की।

श्री नाहटा लगभग आधी सदी तक पुरानी पोथियों मौन पाषाणों और हस्त लिखित ग्रंथों को खोजकर उन्हें प्रकाश में लाये तथा राजस्थान के साहित्य और संस्कृति की अभिवृद्धि में अद्वितीय योगदान किया। पृथ्वीराज रासो ''बीसलदेव रासो ढोला मारू-रा-दोहा'' और 'वेलि क्रिसन रुकमणिरी'' आदि साहित्य की अमूल्य निधि को प्रकाश में लाने का श्रेय आपको ही है। उन्होंने अपने अग्रज के नाम पर अभय जैन ग्रंथालय और अभय जैन ग्रंथमाला की स्थापना की जिसमें विविध भाषाओं के लगभग 65 हजार हस्तलिखित ग्रंथों और पत्र-पत्रिकाओं का संग्रह किया। उनके पुस्तकालय में विभिन्न विषयों के पचास हजार से अधिक ग्रंथ थे। उन्होंने लगभग दो दर्जन शोध ग्रंथों का लेखन और सम्पादन तथा ''राजस्थान भारती' 'विश्वंभरा' परम्परा मरुवाणी वरदा और ''वैचारिकी आदि पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। सच्चे अर्थों में वे चलते-फिरते विश्व-कोश थे। 12 जनवरी 983 को बीकानेर में उनका निधन हुआ।

अचलेश्वरप्रसाद शर्मा

राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम में जिन तेजस्वी पत्रकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी उनमें जोधपुर के श्री अचलेश्वरप्रसाद शर्मा का जिन्हें लोग मामा के नाम से अधिक जानते थे अग्रणी स्थान है।

8 जून 1908 को जोधपुर के पुष्करणा परिवार में जन्मे श्री शर्मा ने 1928 से 37 तक ब्यावर से प्रकाशित तरुण राजस्थान' और बाद में आगरा के विख्यात दैनिक 'सैनिक' में तीन वर्ष तक कार्य किया। 1935 में उन्होंने भरतपुर क्षेत्र के क्रांतिकारी श्री गोकुलजी वर्मा की पुत्री कृष्णा से अन्तरजातीय विवाह किया। 1928 से 37 तक 9 वर्ष की अवधि में पांच वर्ष उनके कारावास में बीते। 1930 में उन्हें नमक सत्याग्रह में डेढ़ वर्ष और 1932 में ब्यावर कांग्रेस के डिक्टेटर के रूप में कार्य करने पर एक वर्ष की सजा हुई। 1937 में जोधपुर राज्य प्रजामंडल के अध्यक्ष के रूप में आपको अकाल की स्थिति का अध्ययन कर गिरदीकोट मैदान में सरकार विरोधी भाषण करने पर ढाई वर्ष की सजा दी गयी। 1940 में दौलतपुर किले में पुन एक वर्ष तक नजरबंद रहे।

1940 में ही जेल से रिहा होने के बाद आपने साप्ताहिक ''प्रजासेवक'' का जोधपुर से प्रकाशन शुरू किया जिसने रियासती जनता में आजादी के प्रति चेतना का संचार करने में अहम् भूमिका निभायी। 1942 में लोकपरिषद के आन्दोलन में आपको दो वर्ष का कठोर कारावास पुन भुगतना पड़ा। वे वर्षों तक हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष तथा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी रहे। 1971 में उनकी तीस वर्षीय सेवाओं के उपलक्ष में आयोजित नागरिक-अभिनंदन में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती

इंदिरा गांधी ने तीस हजार रुपये की थैली भेंट कर उन्हें सम्मानित किया। 14 सितम्बर 1975 को उनका जयपुर में निधन हुआ।

अम्बिकादत्त व्यास

42 वर्ष के अल्प जीवन में ही हिन्दी और संस्कृत साहित्य में अपनी बहुमूल्य कृतियों के कारण अनुपम स्थान बनाने वाले पं. अम्बिकादत्त व्यास का जन्म वि. सम्वत् 1915 की चैत्र शुक्ला अष्टमी को जयपुर में तथा निधन वि. सम्वत् 1957 मार्गशीर्ष कृष्णा त्रयोदशी को हुआ। कविता के संस्कार उन्हें अपने प्रतिभा सम्पन्न कवि पिता पं. दुर्गादत्त से विरासत में प्राप्त हुए। यही कारण था कि ग्यारह वर्ष की आयु में जब उन्होंने बनारस में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा आयोजित एक कवि गोष्ठी में उन कवि द्वारा रखी गई कठिन समस्या "मूंदु देखु नहीं सके घुग्घू" की चमत्कारित तात्कालिक पूर्ति कर सभी उपस्थित लोगों को चमत्कृत कर दिया तो भारतेन्दु जी को अपनी पत्रिका "कवि वचनसुधा" में यह टिप्पणी करनी पड़ी कि इस विलक्षण बालक की कवि-प्रतिभा भी विलक्षण ही है। उनका हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, मिथिला और बंगला आदि भाषाओं के साथ ही कथा-प्रवचन और संगीत-वादन पर भी समान अधिकार था।

श्री व्यास द्वारा वीर शिवाजी को चरित्र नायक मानकर लिखा गया "शिवराज विजय" संस्कृत का प्रथम उपन्यास माना जाता है। अन्य संस्कृत ग्रंथों में "कथा कुसुम", "द्रव्यस्तोत्रम", "रत्न पुराणम" तथा हिन्दी ग्रंथों में "प्रस्तार दीपक" "सुकवि सतसई," "भारत-सौभाग्य," "साहित्य नवनीत", "पद्दित प्रपञ्च" एवं "बिहारी-विहार" आदि प्रमुख है। उनकी प्रतिभा और विद्वतता से प्रभावित होकर काशी के विद्वानों ने उन्हें "घटिकाशतक" की उपाधि प्रदान की। बाद में अन्य अवसरों पर उन्हें "सुकवि", "विहार-भूषण", "भारत भूषण" "भारत भास्कर", "कवि मार्तण्ड" तथा "भारत मार्तण्ड" आदि उपाधियां विभिन्न सभा-सम्मेलनों में प्राप्त हुई।

अमीनुद्दीन अहमद (नवाब लुहारू)

पंजाब तथा हरियाणा के पूर्व राज्यपाल श्री अमीनुद्दीन अहमद का जन्म मार्च 1911 में हुआ। 1926 में आप लुहारू रियासत के नवाब बने। आपकी शिक्षा लाहौर में हुई। अपने मामा स्वर्गीय फखरुद्दीन अली अहमद से सम्पर्क के कारण आप 1962 में प्रथम बार राजस्थान कांग्रेस से जुड़े और 1962 के चुनाव में जयपुर के जौहरी बाजार क्षेत्र से आपने विधान सभा का चुनाव लड़ा। इस चुनाव में तो आप सफल नहीं हुए लेकिन 1967 में आप अलवर जिले के तिजारा क्षेत्र से विधायक चुन लिए गये। उसी वर्ष आप सुखाड़िया मंत्रिमंडल मे सार्वजनिक निर्माण मंत्री बनाये गये। 1972 में आपको राजस्थान राज्य कृषि-उद्योग निगम का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। बाद में आप हिमाचलप्रदेश के उपराज्यपाल और पंजाब तथा हरियाणा के राज्यपाल रहे। 12 जून 1983 को जयपुर में आपका निधन हुआ।

अर्जुनलाल सेठी

राजस्थान में राष्ट्रीय जनजागरण के अधिष्ठाता श्री अर्जुनलाल सेठी का जन्म 9 सितम्बर 1880 को जयपुर में श्री जवाहरलाल सेठी के यहाँ हुआ। 1902 में आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी० ए० की उपाधि प्राप्त की। आप हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी, अरबी और पाली के अच्छे ज्ञाता होने के साथ ही उच्चकोटि के कवि, लेखक और वक्ता भी थे।

शिक्षा समाप्ति के बाद महाराजा जयपुर ने आपको राज्यसेवा के लिए आमंत्रित किया जिसका आपने उत्तर दिया- "अर्जुनलाल यदि सरकार की नौकरी करेगा तो भारत माता को आजाद कौन करायेगा ?"

इसके द्वारा क्रान्तिकारी शिक्षा के देने के कारण सेठी जी ने 1907 में जयपुर में वर्धमान जैन विद्यालय की स्थापना की जो धीरे-धीरे राष्ट्रीय विचारों के युवकों का प्रशिक्षण-स्थान बन गया। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी मोतीचन्द और माणकचन्द भी इस विद्यालय में पढ़ने आये थे जिनमें मोतीचन्द को तो बाद में नीमेज हत्याकांड में फांसी की सजा तक हुई। 1905 से 1912 तक आप विभिन्न आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेते रहे। 1914 में आपको नीमेज कांड के सिलसिले में बंदी बनाकर मद्रास प्रेसीडेंसी की वेलूर जेल में निरुद्ध किया गया जहाँ से आपको 1920 में मुक्ति मिली। इसके बाद आपने अपना कार्य क्षेत्र अजमेर को बना लिया। उक्त दिल्ली हत्याकांड में आप मुख्य अभियुक्त थे जो दिल्ली षड़यंत्र के नाम से विख्यात है और जिसमें लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया था।

राजनैतिक दलबंदी और अप्रिय घटनाओं से क्षुब्ध होकर आप कुछ अर्से के लिए जब निष्क्रिय हो गये तो 5 जुलाई 1934 को स्वयं महात्मा गांधी अजमेर में आपसे मिलने घर आये और राजनीति में पुनः सक्रिय होने का अनुरोध किया। गांधी जी का आदेश मानकर आप पुनः राजनीति में कूद पड़े। 9 सितम्बर 1934 को आपको राजपूताना व मध्यभारत प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का प्रांतपति चुना गया। सेठी जी को न केवल तिलक, नेहरू, सुभाष भी आदर की दृष्टि से देखते थे वरन विख्यात क्रांतिनायक चन्द्रशेखर आजाद तक उनसे विचारविमर्श करने आया करते थे। मेरठ कांड के मुख्य अभियुक्त शौकत उस्मानी और काकोरी षड़यंत्र केस के अभियुक्त अशफाक उल्ला तक को आपने शरण दी थी।

हिन्दू-मुस्लिम एकता के आप प्रबल पक्षधर थे। यही कारण था कि आपका अंतिम समय मस्जिद में गुजरा और मृत्यु से पूर्व आपने अंतिम इच्छा जलाने के बजाय दफनाने की प्रकट की। राजस्थान के इस गौरवशाली पुत्र का स्वर्गवास 23 दिसम्बर 1941 को अजमेर में हुआ।

ईश्वरमल बापना

श्रमजीवी पत्रकारों के राष्ट्रीय नेता श्री ईश्वरमल बापना का जन्म बीकानेर में हुआ। आपने राजस्थान तथा कलकत्ता विश्वविद्यालयों से क्रमशः बी० काम० और एल०एल० बी० किया। छात्र जीवन से ही प्रगतिकारी विचारों के धनी श्री बापना ने समाज में व्याप्त रूढ़ियों, कुरीतियों और परम्पराओं के नाम पर ढकोसलेबाजी का जमकर विरोध किया। समाज के भारी विरोध के बावजूद उन्होंने अन्तरजातीय विवाह किया।

श्री बापना ने 1947 में कलकत्ता से "[illegible]-का-बीकानेर" का प्रकाशन किया। 1949 में आपने साप्ताहिक "लोकजीवन" जोधपुर में कार्य किया और 1950 में बीकानेर से "लोकजीवन" का प्रकाशन शुरू किया। 1954 में आप स्थायी रूप से जयपुर आ गये और दैनिक "राष्ट्रदूत" में उप सम्पादक बन गये। वहाँ श्रमजीवी पत्रकारों के हितों को लेकर आप प्रबंधकों से सीधे टकरा गये और 1955 में "नवयुग" दैनिक का प्रकाशन शुरू होने पर आप इसके "मुख्य उप सम्पादक" बन गये। यहां भी आपकी श्रमजीवी पत्रकारों के हितों पर प्रबंधकों से टकराहट शुरू हो गई और आप सेवामुक्त कर दिए गये। तत्पश्चात आपने "लोकजीवन" के जयपुर संस्करण के प्रकाशन का दायित्व संभाला।

श्री बापना राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के संस्थापकों में थे और इसके वर्षों तक कार्यकारिणी के सदस्य और महामंत्री रहे। मार्च 1958 में जयपुर में आयोजित भारतीय श्रमजीवी पत्रकार महासंघ के चौथे अधिवेशन में आपको मंत्री और जून 1960 में त्रिवेन्द्रम में आयोजित छठे अधिवेशन में महासचिव नियुक्त किया गया। आपने जीवन में श्रमजीवी पत्रकारों, प्रेस तथा प्रकाशन से संबद्ध अन्य मजदूरों के हितों

मुक्ति मिली। जेल से छूटने के बाद भी पुलिस ने जब आपका पीछा नहीं छोड़ा तो आप सन्यासी के वेश में कन्याकुमारी पहुंच गये। सन् 1920 में स्वामी जी नागपुर गये जहाँ आपकी महर्षि अरविन्द से भेंट हुई। 1921 में आप ब्यावर आये और एक विशाल किसान सम्मेलन का आयोजन किया। काकोरी षड़यंत्र केस में पुलिस जब महान क्रांतिकारी बटुकेश्वरदत्त को पकड़ने आई तो उन्होंने पुलिस को चकमा देकर श्री दत्त को बचाने में सहायता की। स्वामी जी का सुभाष बोस से भी निकट का सम्पर्क रहा। 1939 में उन्हें पुन: गिरफ्तार कर जेल भिजवा दिया गया जहाँ से 1945 में छूटे। इस समय राजस्थान की रियासतों में स्वामी जी के प्रवेश पर पाबंदी लगा दी गई। किन्तु आपका वेश बदल कर छद्म नामों से रियासतों में आना-जाना और क्रांतिकारियों से सम्पर्क बराबर बना रहा। 1945 में आपने राजपूताना मध्यभारत ट्रेड यूनियन कांग्रेस का विशाल सम्मेलन आयोजित किया। 1948 में आपको पुन: गिरफ्तार कर अजमेर जेल में नजरबंद रखा गया।

1962 के आम चुनाव में आप भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार के रूप में ब्यावर क्षेत्र से विधायक चुने गये। 29 दिसम्बर 1971 को आपका दिल्ली में स्वर्गवास हुआ।

के. माधवकृष्ण शर्मा

विख्यात संस्कृति सेवी श्री के माधवकृष्ण शर्मा का जन्म 29 मार्च, 1912 को यद्यपि केरल में हुआ था तथापि कर्मभूमि उनकी राजस्थान रही और अपने को राजस्थानी कहने-कहलाने में उन्हें गौरव अनुभव होता था। अपनी कुशाग्र बुद्धि के कारण उन्होंने एण्ट्रेंस परीक्षा आठों ऐच्छिक विषयों में एक साथ उत्तीर्ण की जो आज भी अपने आप में एक कीर्तिमान है। बाद में आपने व्याकरण शिरोमणि तथा इंडोयूरोपियन तुलनात्मक भाषा परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी दौरान आपने प्राचीन प्रकांड विद्वानों से न्याय, मीमांसा, वेदांत, ज्योतिष एवं साहित्य का गहन अध्ययन किया और मद्रास विश्वविद्यालय में स्वर्गीय कुन्दन राजा के मार्ग-दर्शन में पाणिनीय व्याकरण में शोध कार्य किया। 1940 में आपको मद्रास विश्वविद्यालय ने ''मास्टर आफ ओरियंटल लर्निंग की उपाधि तथा लेडी श्री निवास आयंगर पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। पाणिनी पर आपका शोधकार्य अभूतपूर्व था जिसकी तत्कालीन देशी-विदेशी विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। एक अंग्रेज विद्वान ने तो यहाँ तक कह डाला कि मुझे सन्तोष है कि जीते जी मैंने यह कार्य देख लिया। सरदार के ए पणिक्कर ने जो उनके अच्छे मित्रों में भी थे, कहा कि इस तरह का विद्वान मिलना यद्यपि असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

श्री शर्मा 14 भाषाओं के ज्ञाता होने के साथ ही वेद, पुराण व्याकरण, इतिहास ज्योतिष तथा भारतीय और पाश्चात्य दर्शन के अधिकारी विद्वान थे। उनके विद्वतापूर्ण सैकड़ों लेख देश-विदेश की अनेक प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित हुए।

पंडितजी को राजस्थान में लाने का श्रेय बीकानेर के गुण-ग्राही महाराजा श्री गंगासिंह को जाता है जिन्होंने उन्हें अनूप शोध पुस्तकालय एवं ओरियण्टल सिरीज का निदेशक नियुक्त किया। वहाँ रहकर आपने अनेक प्राचीन दुर्लभ और अज्ञात ग्रंथों को प्रकाश में लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। राजस्थान में संस्कृत शिक्षा का पृथक निदेशालय स्थापित होने पर आप उसके निदेशक नियुक्त किये गये और इस पद पर ग्यारह वर्षों तक निरन्तर रहकर आपने राज्य में संस्कृत शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार का कार्य किया। 14 दिसम्बर 1969 को आपका जयपुर में स्वर्गवास हुआ।

केशवानन्द (स्वामी)

मरुभूमि में ज्ञान की गंगा बहाने वाले स्वामी केशवानन्द का जन्म सन 1883 में सीकर जिले के मंगलूणा ग्राम में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। उनका बचपन का नाम बीरमा था जो 'ब्रह्मा' का अपभ्रंश है। बाल्यकाल में ही पड़े छप्पनियां के भीषण अकाल में पहले पिता और कुछ वर्षों बाद मां स्वर्ग सिधार गई। तब निराश्रित बालक कुछ समाज-सेवी लोगों की सहायता से फिरोजपुर के अनाथालय में पहुंच गया। बाद में कुछ वर्षों तक चरवाहे के रूप में भेड़-बकरियों के पीछे जंगलों में भटकता रहा।

बताया जाता है कि जंगल में ही एक दिन उसे कुछ साधू मिले जो संस्कृत में बतिया रहे थे। उनकी बातचीत से बीरमा के पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा। पूछने पर साधुओं ने उसे जब संस्कृत का महत्व बताया तो 16 वर्षीय बीरमा के मन में संस्कृत पढ़ने की ललक पैदा हुई। 1898 में वह गांव छोड़कर पैदल फाजिल्का पहुंचा और महंत कुशलदास जी का शिष्यत्व स्वीकार कर संस्कृत पढ़ने लगा। वहां से आगे पढ़ने की लालसा से पहले काशी और फिर प्रयाग पहुंचा जहां महात्मा हीरानन्द से उसकी भेंट हुई। वे बालक की कुशाग्र बुद्धि से काफी प्रभावित हुए और उन्होंने उसे बीरमा से केशवानन्द बना दिया।

1907 में केशवानन्द ने लाला लाजपत राय से प्रभावित होकर खादी पहिनना शुरू कर दिया तथा राष्ट्रीय आन्दोलन से सक्रिय रूप से जुड़ गये। 1918 में उनकी मालवीय जी से भेंट हुई और वे कांग्रेस में शामिल हो गये। उन्हें दो बार में तीन वर्ष की सजा हुई।

1925 में स्वामी जी ने अबोहर में साहित्य सदन की स्थापना की और 1932 में संगरिया की एक माध्यमिक शाला के संचालन का जिम्मा ले लिया जो अर्थाभाव से बन्द होने वाली थी। आपके चार दशकों के अथक प्रयास से इस शाला ने कला, कृषि, विज्ञान, वाणिज्य और शिक्षा के महाविद्यालय का रूप ले लिया है। इसके साथ ही संगरिया में दो उच्च माध्यमिक विद्यालय, एक शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय, विशाल पुस्तकालय और सार्वजनिक औषधालय स्थापित हो गये। इन सबसे बढ़कर उन्होंने इस पिछड़े मरुभाग के 285 गांवों में पाठशालायें स्थापित कीं। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा ने उन्हें "राष्ट्रभाषा गौरव" तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने "साहित्य वाचस्पति" की उपाधियों से विभूषित किया। वे 1952 से 64 तक दो बार राज्य सभा के सदस्य चुने गये। 12 सितम्बर 1972 को दिल्ली में तालकटोरा के निकट पैदल चलते समय गिर जाने से आपका देहावसान हुआ।

ठा० केसरीसिंह बारहठ

राजस्थान के अमर स्वतंत्रता सेनानी ठा० केसरीसिंह बारहठ का जन्म भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा कस्बे में ठा० कृष्णसिंह बारहठ के घर 21 नवम्बर 1872 को हुआ। आपके पिता उच्चकोटि के विद्वान और इतिहास के अच्छे ज्ञाता थे। आप स्वयं हिन्दी, संस्कृत, बंगला, पाली, मराठी, गुजराती, ज्योतिष, दर्शन और राजनीति के उद्‌भट विद्वान और ओजस्वी कवि थे। आपको युवावस्था में ही महाराणा उदयपुर ने अपना परामर्शदाता नियुक्त किया। बाद में सम्वत 1926 में आपको कोटा नरेश ने बुला लिया और आप वहीं रहने लगे। 1911 में आपने राजपूत समाज के नाम एक अपील निकाली जिससे अंग्रेज सरकार कुपित हो गयी और बिना कोई अभियोग लगाये 31 मार्च 1914 को आपको बंदी बना लिया। बाद में सम्राट का तख्ता उलटने के झूठे अभियोग में आपको बीस वर्ष की सजा दी गयी। जिस दिन आपने गिरफ्तारी के बाद शाहपुरा छोड़ा उसी दिन से अन्न का परित्याग कर केवल दूध पीना शुरू कर दिया। आपको कोटा से

बिहार की हजारीबाग जेल भेज दिया गया जहां दूध नहीं दिये जाने पर आपको अनशन शुरू करना पड़ा। 18 दिन बाद थोड़ा दूध दिया जाने लगा लेकिन एक सप्ताह बाद फिर अनशन करना पड़ा। जेल अधिकारियों ने इस स्थिति में आपको महीनों तक रबर की नली से पानी में चावल का मांड मिलाकर जबरन पिलाया। अन्त में बिहार व उड़ीसा की जेलों के प्रधान ने हजारीबाग आकर श्री बारहठ को नियमित रूप से दूध देने का आदेश दिया।1919 में आपको जेल से मुक्त किया गया।

आपके जीवन की 1902 की एक घटना अविस्मरणीय है जब लार्ड कर्जन ने दिल्ली में राजाओं के एक दरबार का आयोजन किया। इस दरबार में भाग लेने के लिये उदयपुर के महाराणा भी जाने को तैयार हो गये। पता चलने पर श्री बारहठ ने उनके पास ''चेतावणी-रा-चूंगटिया'' नामक तेरह सोरठे लिख कर भेजे जिन्हें पढ़ने पर महाराणा का सोया अभिमान जाग उठा और उन्हें दरबार में सम्मिलित नहीं होने का निर्णय लेने को विवश होना पड़ा। इस महान कवि व स्वतंत्रता सेनानी का निधन 14 अगस्त 1941 को हुआ।

गवरी देवी (श्रीमती)

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मांड गायिका श्रीमती गवरी देवी का जन्म सन् 1920 में जोधपुर में हुआ। गायकी उन्हें विरासत में मिली क्योंकि उनके पिता बंसीलाल बेड़ा बीकानेर के तत्कालीन महाराजा गंगासिंह के दरबारी कवि थे तथा उनकी माता भी अच्छी मांड गायिका थीं। उन्होंने 20 वर्ष की आयु में मांड गायन शुरू किया और सर्वप्रथम जोधपुर महाराजा उम्मेदसिंह के समक्ष अपनी गायन कला का प्रदर्शन किया। 14 वर्ष की आयु में उनका विवाह हो गया था। लेकिन एक पुत्री के जन्म के कुछ अर्से बाद ही उनके पति की मृत्यु हो गई। लेकिन इस सदमे के बावजूद उनकी गायकी का जोश बरकरार रहा। 1957 में उन्होंने विख्यात संगीत मर्मज्ञ श्री दामोदर लाल काबरा के परामर्श पर सार्वजनिक समारोहों तथा आकाशवाणी पर अपनी विशिष्ट गायन शैली का प्रदर्शन शुरू किया। 42 वर्ष की आयु तक पहुंचने-पहुंचते वे गायकी की ऊंचाइयां छूने लगी। उन्हें अनेक पदक, ताम्रपत्र और सम्मान मिलना शुरू हो गया। उनकी मांड गायकी के प्रशंसकों में डा. राधाकृष्णन, डा. जाकिर हुसैन, ज्ञानी जैलसिंह, श्री लाल बहादुर शास्त्री और श्रीमती इंदिरा गांधी भी शामिल रहे हैं।

1980 में प्रकाशित 'एशिया-कौन क्या है' तथा 'बायोग्राफी इंडिया' में गवरी देवी का सचित्र परिचय प्रकाशित हुआ। 1982 में मद्रास संगीत-नाटक संगत द्वारा तथा 1965 व 1983 में गणतंत्र दिवस के लोक नृत्य उत्सव में पदक प्रदान किये गये। 1975 में राजस्थान संगीत-नाटक अकादमी और 1986 में केन्द्रीय संगीत-नाटक अकादमी ने सर्वोच्च पुरस्कार प्रदान किया। आपने 1987 में सोवियत रूस में आयोजित भारत महोत्सव में भाग लिया। एच.एम.वी. ने उनके गायन के 6 रिकार्ड जारी किये हैं। करुणा, विरह, प्रेम, मस्ती और समर्पण को अपने स्वरों में अद्भुत सामंजस्य प्रदान करने वाली मरु प्रदेश की इस कोकिला का निधन 28 जून 1988 को जोधपुर में हुआ।

गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

'महामहोपाध्याय' पंडित श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी का जन्म विक्रम संवत् 1938 में जयपुर के माथुर चतुर्वेदी परिवार में हुआ था। आप देश के उन सुविख्यात विद्वानों में से थे जिन्होंने भारत में संस्कृत की उन्नति एवं संस्कृत भाषा के विकास के लिये केवल लिखा ही नहीं, अपितु उसे जनमानस तक पहुंचाने के लिये क्रियाशील आंदोलनों को जन्म भी दिया। आपकी शिक्षा जयपुर के महाराजा संस्कृत कॉलेज में हुई थी। विद्याध्ययन पूर्ण करने के पश्चात आप अनेक संस्कृत शिक्षण संस्थानों में अध्यापक तथा प्राचार्य रहे।

संस्कृत भाषा में आपके प्रकाण्ड पाण्डित्य से प्रभावित होकर ब्रिटिश सरकार ने आपको "महामहोपाध्याय" की उपाधि से विभूषित किया था। 1961 में आपकी कृति "वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति" पर आपको केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपके द्वारा की गई हिन्दी भाषा की सेवा के लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने आपको "साहित्य वाचस्पति" की उपाधि से विभूषित किया।

प्राचीन शैली के विद्वान श्री चतुर्वेदी को आधुनिक पत्रकारिता से भी बहुत लगाव था। 1904 में आपने जयपुर से "संस्कृत-रत्नाकर" नामक मासिक संस्कृत पत्र का संपादन किया। "ब्रह्मचारी", "चतुर्वेदी" तथा "वैष्णव धर्म पताका" नामक हिन्दी मासिक पत्रों का भी आपने सम्पादन किया था। 10 जून 1966 को वाराणसी में चतुर्वेदी जी का देहान्त हुआ।

गुरमुख निहाल सिंह (सरदार)

राजस्थान के प्रथम राज्यपाल सरदार गुरमुख निहाल सिंह ने रियासतों के पुनर्गठन के बाद एक नवम्बर 1956 को पदभार संभाला तथा 15 अप्रेल 1962 तक इस पद पर रहे। आपका जन्म 14 मार्च 1895 को अविभाजित पंजाब में हुआ। आपकी शिक्षा रावलपिण्डी और लन्दन में हुई। लन्दन विश्वविद्यालय से आपने बी. एससी. और एम. एससी. (अर्थशास्त्र) की उपाधियां प्राप्त की। 1920 में आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र और राजनीति-विज्ञान के प्राध्यापक नियुक्त हुए। बाद में आप कला संकाय के अधिष्ठाता बनाये गये। 1939 से 43 तक आप अहमदाबाद स्थित एच. एल. वाणिज्य महाविद्यालय, 1943 से 49 तक रामजस कालेज दिल्ली तथा जनवरी 1950 से श्रीराम कालेज दिल्ली के प्रिन्सीपल रहे।

1952 के प्रथम आमचुनाव में आप दिल्ली विधानसभा के सदस्य तथा 7 मई 1952 को विधान सभा अध्यक्ष चुने गये। 1955 में दिल्ली के तत्कालीन मुख्यमंत्री चौधरी ब्रह्मप्रकाश और मंत्री डा. सुशील नैयर के आपसी विवाद के कारण कांग्रेस उच्च सत्ता के परामर्श पर आपको कांग्रेस विधायक दल का सर्व-सम्मति से नेता चुन लिया गया। अतः 13 फरवरी 1955 से 31 अक्टूबर 1956 को दिल्ली विधानसभा का अस्तित्व समाप्त होने तक आप मुख्यमंत्री पद पर रहे।

श्री सिंह अपने शैक्षिक सेवा काल में बनारस-इलाहबाद, लखनऊ और दिल्ली सहित देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों की अनेक महत्वपूर्ण समितियों के सदस्य तथा अध्यक्ष रहे। आपने राजनीति विज्ञान विषय में अनेक पुस्तकें लिखी।

पं गिरिधर शर्मा "नवरत्न"

राजस्थान के जिन हिन्दी साहित्यकारों ने राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान प्राप्त किया उनमें पं. गिरिधर शर्मा "नवरत्न" का नाम अग्रणी है। आपका जन्म ज्येष्ठ शुक्ला अष्टमी सम्वत 1938 को झालावाड़ जिले के झालरापाटन कस्बे में उस समय के मध्य भारत और राजस्थान के विख्यात विद्वान पं. ब्रजेश्वर भट्ट के यहाँ हुआ। प्रारम्भ में आपने अपने पिताश्री से संस्कृत का, फिर जयपुर में पं. वीरेश्वर शास्त्री से [illegible] का और तत्पश्चात काशी में अध्ययन किया। सन् 1900 में आपने झालावाड़ से "विद्या भास्कर" नामक मासिक पत्र निकाला। इस पत्र के कारण ही उनका बंग साहित्य की ओर ध्यान आकृष्ट [illegible] और उन्होंने बंगला का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। रवि ठाकुर की अमर कृति "[illegible]" का भा[illegible]

प्रथम हिन्दी अनुवाद आपने ही किया जिसकी स्वयं रवि बाबू तक ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। बाद में आपने उमर खैयाम की रुबाइयों का हिन्दी तथा गोल्ड स्मिथ की "हरमिट" नामक प्रसिद्ध कृति का संस्कृत श्लोकों में अनुवाद किया। आपके रचित ग्रंथों की संख्या लगभग साठ है। संस्कृत में आपकी मौलिक रचनायें "गिरिधर सप्तशती" के नाम से छपी हैं। उनका स्वाध्याय और स्मरण शक्ति विलक्षण थी। उनके जीवन के अंतिम तीस वर्षों काफी कष्ट में बीते। उनकी नेत्र ज्योति जाती रही थी फिर भी आपने अपने परिजनों की सहायता से पढ़ने-लिखने का क्रम निरन्तर जारी रखा। आपका निधन एक जुलाई 1961 को झालरापाटन में हुआ।

गोकुलजी वर्मा

भरतपुर रियासत के स्वतंत्रता संघर्ष-काल में भीष्म पितामह के रूप में पहिचाने जाने वाले श्री वर्मा ने अपने प्रारंभिक जीवन में सरकारी ठेकेदारी शुरू की लेकिन अपने स्वतंत्र और अक्खड़ स्वभाव के कारण वे शीघ्र ही राजनीति के मैदान में कूद पड़े। जनता के अभाव अभियोगों से अवगत कराने के लिए वे एक बार तत्कालीन नरेश कृष्णसिंह के महकमा खास में बिना किसी पूर्व सूचना के संतरियों की निगाह बचा कर पहुंच गये और निर्भीकता से अपनी बात कहकर ही लौटे। उन्होंने रियासती अत्याचारों और अन्याय के विरुद्ध डटकर लोहा लिया और अनेक बार जेल गये। 1939 में उत्तरदायी शासन की मांग को लेकर प्रारंभ किये गये सत्याग्रह आन्दोलन के वे प्रमुख संचालकों में थे और उन्हीं के निवास पर कार्यकर्ताओं की गुप्त बैठकें होती थी। वे जब-जब भी जेल में रहे अपने उग्र स्वभाव के कारण अधिकारियों की नींद हराम किये रखते थे। अस्सी वर्ष की आयु में उनका भरतपुर में निधन हुआ।

गोकुलभाई भट्ट

राजस्थान के गांधी के नाम से पहिचाने जाने वाले श्री गोकुलभाई दौ० भट्ट का जन्म सन 1898 में सिरोही जिले के हाथल ग्राम में हुआ। 1917 में छात्र-जीवन से ही वे सार्वजनिक क्षेत्र में आ गये और 1919 में कांग्रेस के असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के लिए सैंट जेवियर कालेज बम्बई की पढ़ाई छोड़ दी। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया जिसमें तीन वर्ष के कारावास की सजा भुगतनी पड़ी। आपने सरदार पटेल के साथ भी कार्य किया और गुजरात विद्यापीठ के ट्रस्टी मंडल के सदस्य रहे। अखिल भारतीय देशी राज लोक-परिषद की स्थापना पर आप प्रान्तीय अध्यक्ष बनाये गये। 1948 में जयपुर में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस के 55 वें महाधिवेशन के आप स्वागताध्यक्ष थे।

1948–49 में आप तत्कालीन सिरोही रियासत के प्रधानमन्त्री रहे जिसमें वेतन और भत्ता नहीं लिया। राजस्थान का निर्माण होने पर आप प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बनाये गये और 1955 तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य रहे। आप जीवन भर राजनीति में रहते हुए भी कभी किसी पद के पीछे नहीं दौड़े। अपितु आपको जब भी कोई पद दिया गया, सिद्धान्तों और मान्यताओं से टकराहट होते ही उसे छोड़ने में कोई देर नहीं लगायी। वे सरलता और सादगी की प्रतिमूर्ति थे। उनकी आवश्यकतायें काफी सीमित थी। दिखने में वे जितने सरल और सीधे थे, सिद्धान्तों और आदर्शों के उतने ही पक्के थे। विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन और सर्वोदय से वे प्रारम्भ से ही जुड़ गये थे।

श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा 1975 में देश में आपात स्थिति लागू करने पर श्री भट्ट भी 19 माह तक कारावास में रहे। प्रदेश की जनता सरकार ने उन्हें राजस्थान खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड का अध्यक्ष मनोनीत किया जिस पर वे जीवन के अन्तिम दिन तक रहे। प्रदेश में शराबबंदी को लेकर उन्होंने दो बार लम्बे अनशन

लिए गए जिनमें से कई हस्त [illegible] अमूल्य पैसे और अन्य सामान जब्त कर नीलाम कर दिए। 12 जुलाई 1914 को राव साहब की कैद पर टाडगढ़ दुर्ग से फरार होकर जंगलों में चले गये। इसके बाद पुनः एक योजना बनाई जिसके अनुसार पूर्व निश्चित तिथि 21 फरवरी 1915 को सशस्त्र क्रान्ति कर राव गोपालसिंह व दामोदरदास राठी का ब्यावर तथा गोपालसिंह को अजमेर व नसीराबाद पर कब्जा करना था किन्तु योजना की भनक सरकार को लग जाने के कारण यह प्रयत्न सफल नहीं हो सका। फरारी की अवस्था में आप खिरवाड़ के निकट एक गुप्तचर द्वारा पहचान लिए गये जिसकी सूचना पर किशनगढ़ के दीवान पेनस्यान पाँच सौ घुड़सवारों के साथ मौके पर आ पहुंचे और इतनी ही संख्या में अंग्रेज सैनिकों सहित अजमेर से मेजेस्ट्री जनरल मि. [illegible] ही वहां पहुंच गये। आप बंदी बना लिए गये और बाद में 1920 में छोड़े गये। 1939 में आपका स्वर्गवास हुआ।

गौरीशंकर उपाध्याय

बागड़ के प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी तथा दलितों व शोषितों के मसीहा श्री उपाध्याय का जन्म 3 मई 1910 को बाँसवाड़ा में ब्राह्मण कुल में हुआ। उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से साहित्य व आयुर्वेद विशारद की उपाधियाँ पास की। वे एक श्रेष्ठ लेखक भी थे। स्वदेश-प्रेम के परिणामस्वरूप आपने 1929 से ही खादी पहिननी प्रारंभ कर दी तथा अपने क्षेत्र में विचार-क्रांति फैलाने के लिए वाचनालयों की स्थापना करना शुरु किया। आपने "सेवा-आश्रम" नामक संस्था की स्थापना भी की जिसका कार्य जन-शिक्षण एवं जन-जागरण के कार्यक्रम आयोजित करना था। इन्हीं दिनों श्री उपाध्याय ने "सेवक" नामक एक हस्तलिखित पत्र भी निकाला। आपने लम्बे अर्से तक साबरमती आश्रम में गांधीजी के सान्निध्य में रहकर राष्ट्रीय आन्दोलनों एवं रचनात्मक कार्यों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1934 में आपने सागवाड़ा में हरिजन आश्रम की स्थापना की और हरिजन पाठशालाएँ स्थापित करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

सन् 1935 में श्री उपाध्याय डूंगरपुर के नेता और बागड़ प्रदेश के गांधी श्री भोगीलाल पंड्या के सम्पर्क में आए। आप दोनों ने मिलकर यहाँ बागड़ सेवा मन्दिर की स्थापना की। इस संस्था ने हरिजनों, आदिवासियों तथा अन्य पिछड़े जनों के सर्वांगीण विकास एवं उत्थान के लिए अनेक कार्य किए। इसकी बढ़ती लोकप्रियता देखकर डूंगरपुर रियासत को चिन्ता होने लगी। इसके बाद तो समय-समय पर आपको डूंगरपुर रियासत से टक्कर लेनी पड़ी। अनेक बार आप गिरफ्तार किए गए, निर्मम पिटाई की गई तथा गोलियाँ भी चलाई गईं। आजादी के बाद डूंगरपुर रियासत में लोकप्रिय सरकार के आप मुख्यमन्त्री बने। संयुक्त राजस्थान में डूंगरपुर का विलय होने पर आप डूंगरपुर के दो बार निर्विरोध जिला प्रमुख बने। अनेक वर्षों तक आप डूंगरपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे। 9 नवम्बर, 1965 को आपका देहावसान हुआ।

गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (डा.)

मरु प्रदेश के अमर इतिहासकार महामहोपाध्याय साहित्यवाचस्पति डा. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा का जन्म 15 सितम्बर 1863 को सिरोही जिले के रोहेड़ा ग्राम में औदिच्य ब्राह्मण परिवार में हुआ।आपकी प्रारंभिक शिक्षा बम्बई में हुई। बाद में भारत मार्तण्ड आशुकवि पं. गट्टूलाल शास्त्री के सान्निध्य में आपने संस्कृत और प्राकृत का गहन अध्यन किया और अतिरिक्त समय में रायल एशियाटिक सोसायटी के पुस्तकालय में इतिहास का अध्यन शुरू किया। आप यूनान और रोम की गौरव गाथाओं से प्रभावित हो राजपूताने के इतिहास की ओर आकृष्ट हुये। इसी दौरान आप गुजरात के विख्यात इतिहासकार डा. भगवान इन्द्रलाल के सम्पर्क में आये और वहां के प्राचीन इतिहास के लेखन में सहयोग

तक अनशन किये। पिछले पैंतीस वर्षों से अधिक समय से वे ग्राम-स्वराज्य की आशा में एक समय का उपवास कर रहे थे। 6 अक्टूबर 1986 को जयपुर में आपका स्वर्गवास हुआ।

गोकुललाल असावा

राजस्थान के गौरवशाली पुत्र श्री असावा का जन्म 2 अक्टूबर 1901 को टोंक जिले के देवली कस्बे में एक सामान्य माहेश्वरी परिवार में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा भीलवाडा जिले के शाहपुरा कस्बे में हुई। सन् 1926 में हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस से बी० ए० और 1928 में दर्शनशास्त्र में एम० ए० करने के बाद आपने हर्बर्ट कालेज कोटा में अध्यापन का कार्य शुरु किया लेकिन राष्ट्रीय गतिविधियों में सक्रिय रुचि के कारण उन्हें कालेज सेवा से पृथक् कर दिया गया। बाद में आप कोटा से अजमेर आ गये और नमक सत्याग्रह में सक्रिय भाग लिया। यहीं से असावा जी का जेल जाने का सिलसिला शुरु हुआ जिसमें आपको 1930 से 32 के बीच चार बार जेल जाना पडा। अब असावा जी का अधिकांश समय अजमेर में ही व्यतीत हुआ। आप अजमेर-मेरवाडा कांग्रेस कमेटी तथा राजस्थान-मध्यभारत कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रहे। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के 1949 से 51 तक और अक्टूबर 1950 से सितम्बर 52 तक आप कांग्रेस की केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य रहे।

श्री असावा संविधान निर्मात्री परिषद् के सदस्य तथा शाहपुरा रियासत की प्रथम लोकप्रिय सरकार के प्रधानमन्त्री रहे। 1945 में बने प्रथम संयुक्त राजस्थान के आप प्रधानमंत्री और अप्रेल 1948 में द्वितीय संयुक्त राजस्थान का निर्माण होने पर आप उप प्रधानमन्त्री नियुक्त हुए। 1952 के प्रथम आम चुनाव में आप जहाजपुर क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव हार गये। बाद में आप अपने डाक्टर पुत्र के पास स्थायी रूप से जयपुर आ गये और पांचवें दशक के मध्य से सक्रिय राजनीति से अपने आपको बिल्कुल अलग कर लिया। 20 नवम्बर 1981 को आपका जयपुर में निधन हुआ।

गोपालसिंह खरवा (राव)

अजमेर जिले के खरवा ग्राम के राव गोपालसिंह का समूचा जीवन आजादी की लडाई में सतत संघर्ष, यातनाओं और कष्टों का पर्याय कहा जा सकता है। कार्तिक कृष्णा नवमी सम्वत 1944 को अपने पिता की मृत्यु के बाद आप खरवा की गद्दी पर बैठे। बचपन से ही साहसी और इतिहास-प्रेमी होने के कारण आपने महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी और वीर दुर्गादास की गाथाओं से प्रेरणा लेकर अंग्रेज सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए तत्कालीन राजपूताने में "वीर भारत सभा" के नाम से गठित गुप्त सैनिक संगठन के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। आपने प्रदेश के अनेक राजपूतों को न केवल इस सभा में सम्मिलित किया अपितु उनके मन में आजादी प्राप्त करने के लिए क्रांतिकारी गतिविधियों से जुडने और भारत में फिर से अपना राज्य कायम करने की महत्वाकांक्षा जागृत की। उन्होंने क्रांतिकारियों और रियासतों के राजाओं के बीच एक महत्वपूर्ण कडी का कार्य किया और राजाओं से क्रांतिकारियों को धन और शस्त्र दिलवाये।

1906 में आप कलकत्ता गये और विपिनचन्द्रपाल, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी तथा "अमृत बाजार पत्रिका" के सम्पादक के साथ भावी योजनाओं के बारे में विचार-विमर्श किया। शीघ्र ही पुलिस को पता लगने पर आप और जोरावरसिंह बारहठ तो बच निकले लेकिन अर्जुनलाल सेठी और केसरीसिंह बारहठ बंदी बना लिए गये। आपने तमाम विस्फोटक नष्ट करवा दिए लेकिन 29 जून 1944 को 400 सैनिकों ने खरवा दुर्ग को घेर लिया। तलाशी लेने पर कोई आपत्तिजनक सामग्री प्राप्त नहीं हुई। सरकार ने राव साहब और उनके चाचा मोडसिंह को 15 अन्य साथियों के साथ बंदी बनाकर टाडगढ़ दुर्ग में भिजवा

लिए तथा ठिकाने के सभी शस्त्र, राजकोष, आभूषण, घोड़े और अन्य सामान जब्त कर नीलाम कर दिए। 12 जुलाई 1914 को आप तलवार की नोक पर टाडगढ़ दुर्ग से फरार होकर जंगलों में चले गये। इसके बाद पुनः एक योजना बनाई जिसके अनुसार पूर्व निश्चित तिथि 21 फरवरी 1915 को सशस्त्र क्रान्ति कर राव गोपालसिंह व दामोदरदास राठी को ब्यावर तथा गोपालसिंह को अजमेर व नसीराबाद पर कब्जा करना था किन्तु योजना की भनक सरकार को लग जाने के कारण यह प्रयास सफल नहीं हो सका। फरारी की अवस्था में आप किशनगढ़ के निकट एक गुप्तचर द्वारा पहचान लिए गये जिसकी सूचना पर किशनगढ़ के दीवान पेनाम्बर पांच सौ घुड़सवारों के साथ मौके पर जा पहुंचे और इतनी ही संख्या में अंग्रेज सैनिकों सहित अजमेर से सेक्रेटरी जनरल मि. बेई वहाँ पहुंच गये। आप बंदी बना लिए गये और बाद में 1920 में छोड़े गये। 1939 में आपका स्वर्गवास हुआ।

गौरीशंकर उपाध्याय

बागड़ के प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी तथा दलितों व शोषितों के मसीहा श्री उपाध्याय का जन्म 3 मई 1910 को बाँसवाड़ा में ब्राह्मण कुल में हुआ। उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से साहित्य व आयुर्वेद विशारद की परीक्षाएँ पास की। वे एक दक्ष लेखक भी थे। स्वदेश-प्रेम के परिणामस्वरूप आपने 1929 से ही खादी पहिननी प्रारंभ कर दी तथा अपने क्षेत्र में विचार-क्रांति फैलाने के लिए वाचनालयों की स्थापना करना शुरू किया। आपने ''सेवा-आश्रम'' नामक संस्था की स्थापना भी की जिसका कार्य जन-शिक्षण एवं जन-जागरण के कार्यक्रम आयोजित करना था। इन्हीं दिनों श्री उपाध्याय ने ''सेवक'' नामक एक हस्तलिखित पत्र भी निकाला। आपने लम्बे अर्से तक साबरमती आश्रम में गांधीजी के सान्निध्य में रहकर राष्ट्रीय आन्दोलनों एवं रचनात्मक कार्यों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1934 में आपने सागवाड़ा में हरिजन आश्रम की स्थापना की और हरिजन पाठशालाएँ स्थापित करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

सन् 1935 में श्री उपाध्याय डूँगरपुर के नेता और बागड़ प्रदेश के गांधी श्री भोगीलाल पंड्या के सम्पर्क में आए। आप दोनों ने मिलकर यहाँ बागड़ सेवा मन्दिर की स्थापना की। इस संस्था ने हरिजनों आदिवासियों तथा अन्य पिछड़े जनों के सर्वांगीण विकास एवं उत्थान के लिए अनेक कार्य किए। इसकी बढ़ती लोकप्रियता देखकर डूँगरपुर रियासत को चिन्ता होने लगी। इसके बाद तो समय-समय पर आपको डूँगरपुर रियासत से टक्कर लेनी पड़ी। अनेक बार आप गिरफ्तार किए गए, निर्मम पिटाई की गई तथा गोलियाँ भी चलाई गई। आजादी के बाद डूँगरपुर रियासत में लोकप्रिय सरकार के आप मुख्यमन्त्री बने। संयुक्त राजस्थान में डूँगरपुर का विलय होने पर आप डूँगरपुर के दो बार निर्विरोध जिला प्रमुख बने। अनेक वर्षों तक आप डूँगरपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे। 9 नवम्बर, 1965 को आपका देहावसान हुआ।

गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (डा.)

मरु प्रदेश के अमर इतिहासकार महामहोपाध्याय साहित्यवाचस्पति डा. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा का जन्म 15 सितम्बर 1863 को सिरोही जिले के रोहेड़ा ग्राम में औदिच्य ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा बम्बई में हुई। बाद में भारत मार्तण्ड आशुकवि पं. गट्टूलाल शास्त्री के सान्निध्य में आपने संस्कृत और प्राकृत का गहन अध्ययन किया और अतिरिक्त समय में रायल एशियाटिक सोसायटी के पुस्तकालय में इतिहास का अध्ययन शुरू किया। आप यूनान और रोम की गौरव गाथाओं से प्रभावित हो राजपूताने के इतिहास की ओर आकृष्ट हुये। इसी दौरान आप गुजरात के विख्यात इतिहासकार डा. भगवान इन्द्रलाल के सम्पर्क में आये और यहाँ के प्राचीन इतिहास के लेखन में सहयोग

किया। प्राचीन शिला लेखों तथा ताम्रपत्रों की लिपियां पढ़ने में आपको विशेष सफलता प्राप्त हुई।

सन 1887 में आप बम्बई से वापस अपने गांव आये और विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों के अध्ययन के साथ ही कविराजा श्यामलदास के नेतृत्व में ''वीर-विनोद'' नामक इतिहास तैयार किया। 1890 में आपको उदयपुर के विक्टोरिया पुस्तकालय तथा संग्रहालय का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। 1894 में आपने भारत की प्राचीन लिपियों का अध्ययन सुगम बनाने के लिये भारतीय प्राचीन लिपिमाला ग्रन्थ का प्रकाशन किया। 1908 में आपको भारत सरकार ने अजमेर स्थित राजपूताना म्यूजियम नामक पुरातत्व संग्रहालय का अध्यक्ष नियुक्त किया। 1911 में आपने सिरोही राज्य का इतिहास प्रकाशित किया जिस पर 1924 में आपको हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद ने 1200 रुपये का मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया।

श्री ओझा ने 1920 से 33 तक शोध सम्बन्धी विख्यात ''नागरी-प्रचारिणी पत्रिका'' का सम्पादन किया। आपको 1914 में ''रायबहादुर'', 1928 में ''महामहोपाध्याय'' तथा 1938 में ''डाक्टर आफ लैटर्स'' की उपाधि से सम्मानित किया गया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने आपको ''साहित्यवाचस्पति'' की उपाधि प्रदान की। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, पाली, प्राकृत, गुजराती और मराठी के असाधारण ज्ञान के बावजूद आपने सर्वाधिक लेखन हिन्दी भाषा में किया। 27 मई 1948 को आपका निधन हुआ।

घनश्यामदास बिड़ला

भारतीय व्यापार एवं उद्योग-जगत में एक लम्बे समय तक पितामह और पथप्रदर्शक की भूमिका निभाने वाले श्री घनश्यामदास बिड़ला का जन्म सन् 1894 में रामनवमी के दिन पिलानी में श्री बल्देवदास बिड़ला के घर हुआ। 13 वर्ष की अल्पायु में आढतिये के रूप में अपना व्यापारिक जीवन प्रारम्भ करने वाले श्री बिड़ला ने शीघ्र ही औद्योगिक-जगत में प्रवेश किया और वे इसमें उत्तरोत्तर प्रगति करते चले गये। भगवत् गीता का स्वाध्याय करने वाले श्री बिड़ला अपने स्वभाव में भी कर्मयोगी थे। काम से उन्हें गहरा लगाव था। सन् 1915 में आप गांधीजी के सम्पर्क में आये और शीघ्र ही इनका साहचर्य अत्यधिक घनिष्ठ हो गया। 1924 में गांधी जी ने श्री बिड़ला को लिखा था कि वे उन्हें अपने परामर्शदाताओं में से एक समझते हैं। स्वाधीनता संग्राम में जब भी कांग्रेस को धन की आवश्यकता होती तो इसे पूर्ण करने में श्री बिड़ला सदैव अग्रणी रहते थे। जब श्री बिड़ला 32 वर्ष के थे तभी उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। सर्वसम्पन्न होने के बावजूद श्री बिड़ला ने अपनी 6 सन्तानों के भविष्य को देखते हुए दुबारा विवाह न करने का निश्चय कर लिया था।

तीसरे दशक के अन्त में आप भारतीय विधानसभा के लिए चुने गए, लेकिन साम्राज्यिक पूर्वाधिकार अधिनियम के विरोधस्वरूप 1930 में त्यागपत्र दे दिया। आप सार्वजनिक कार्यों में भी उदारतापूर्वक दान देते थे। उन्होंने अनेक मन्दिरों, शिक्षण संस्थानों, सांस्कृतिक केन्द्रों तथा अस्पतालों की स्थापना की। पिलानी में उनके द्वारा स्थापित बिड़ला प्रौद्योगिक एवं विज्ञान संस्थान आज देश के महत्वपूर्ण वैज्ञानिकी संस्थानों में से एक है। इस प्रकार आप एक महान् चिन्तक, कला के संरक्षक, मोहक संवादपटु, प्रफुल्ल वक्ता तथा महान् देशभक्त व राष्ट्रवादी थे। आपकी सेवाओं के लिए भारत सरकार ने आपको ''पद्मविभूषण'' अलंकरण से सम्मानित किया। ग्यारह जून, 1983 को लन्दन में प्रातःकालीन भ्रमण पर जाते समय आपका देहान्त हो गया। प्रख्यात कवयित्री महादेवी वर्मा ने आपकी मृत्यु पर कहा था- ''दास अपने घनश्याम में विलीन हो गया''।

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

हिन्दी के अमर कथाकार श्री गुलेरी जयपुर के महान प्रतिभावान पुत्र थे जिनका जन्म 7 जुलाई 1883 को जयपुर में हुआ। उन्होंने सन् 1898 में महाराजा कालेज के स्कूल विभाग से तत्कालीन एण्ट्रेंस (हाई स्कूल) परीक्षा तीन हजार छात्रों में प्रथम स्थान प्राप्त कर तथा 1903 में स्नातक परीक्षा पूरे उत्तर प्रदेश तथा राजपूताना के 228 छात्रों में सर्वोच्च अंकों से उत्तीर्ण की थी। उनकी इस सफलता पर प्रमुख समाचार पत्रों ने न केवल समाचार के रूप मे अपितु सम्पादकीय टिप्पणियों के रूप में भी प्रशंसा की थी।

गुलेरी जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनका व्यक्तित्व-पत्रकार, निबन्धकार, आलोचक, पत्र-लेखक और शोधकर्ता के विभिन्न आयामों को छूता हुआ सर्वथा नवीन परिवेश में उसे प्रदीप्त करता था। उनकी प्रतिभा का सबसे बडा प्रमाण उनकी एक मात्र कहानी-''उसने कहा था''- है जो आज वर्षों बाद भी तरोताजा है और जिसने उन्हें हिन्दी के अमर कथाकारों में स्थान दिला दिया है। गुलेरी जी के विविध विषयों पर शोधपूर्ण और विचारोत्तेजक लेख उस समय के ''समालोचक'', ''वैंकटेश्वरसमाचार'' ''सरस्वती'', ''नागरी-प्रचारिणी पत्रिका'', ''मर्यादा'', ''इन्दु-प्रतिभा'' तथा ''विद्यार्थी'' आदि में प्रकाशित होते थे। उन्होंने 1920 से 1922 तक काशी नागरी प्रचारिणी सभा के मुख्य पत्र ''नागरी-प्रचारिणी पत्रिका'' का सम्पादन तथा जयपुर से ''समालोचक'' का प्रकाशन किया। वे हिन्दी, संस्कृत, पाली, प्राकृत, अंग्रेजी, मराठी, बंगला, फ्रैंच और जर्मन आदि भाषाओं के प्रकांड विद्वान थे। 12 सितम्बर 1922 को उनका स्वर्गवास हुआ।

चैनसुखदास न्यायतीर्थ (पंडित)

जैन दर्शन के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान पंडित चैनसुखदास न्यायतीर्थ का जन्म 22 जनवरी 1900 को जयपुर जिले के भादवा ग्राम में एक सामान्य जैन परिवार में हुआ। आप उच्चकोटि के विद्वान, शास्त्रमर्मज्ञ वक्ता, व्याख्याता, लेखक, समाज-सुधारक और सच्चे अर्थों में समाज-सेवा के लिए समर्पित व्यक्ति थे। वे यद्यपि जैन धर्मावलम्बी थे किन्तु उनमें धार्मिक कट्टरता जैसी कोई चीज नहीं थी। वे सभी धर्मों का आदर करते थे और सभी के मूल तत्वों की एकता पर जोर देते थे। इस दृष्टि से वे जैन धर्म के मूल सिद्धान्त स्याद्वाद के प्रतीक माने जाते थे।

वे आजीवन अविवाहित रहे। श्री दिगम्बर जैन संस्कृत कालेज जयपुर के आप आचार्य थे। उन्होंने जैन-दर्शन सार, भावना-विवेक, पावन-प्रवाह आदि जैन दर्शन और सिद्धान्तों पर अनेक विद्वत्तापूर्ण ग्रंथों की रचना की जो अनेक विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल किए जा चुके हैं। उन्होंने ''वीरदर्शन'' (मासिक), ''जैनबंधु'' (पाक्षिक) तथा ''वीरवाणी'' (पाक्षिक) का सम्पादन भी किया। 23 जनवरी 1969 को आपका जयपुर में देहावसान हुआ।

छगन मोहता (डा०)

राजस्थान के विख्यात चिन्तक, विचारक और दार्शनिक डा० छगन मोहता का जन्म विक्रम सम्वत 1964 की भादपद कृष्ण द्वादशी को बीकानेर में हुआ। उन्होंने मात्र दूसरी कक्षा तक [illegible] की [illegible] अनौपचारिक पढ़ाई बहुत पढ़ी। बचपन में ही उन्ह कलकत्ता चले गये जहाँ दुकानों के [illegible] पढ़ते-पढ़ते बंगला सीख गये और अंग्रेजी के ''रीडर'' तथा उसके हिन्दी संस्करण ''भारत'' के [illegible] का मिलान करते-करते अंग्रेजी सीख गये। अनौपचारिक रूप से ही उन्होंने दर्शन, [illegible] [illegible]

और मनोविज्ञान का गहरा अध्ययन किया। आप बाल्यकाल से ही रूढ़ियों और परम्पराओं के घोर विरोधी थे। बालविवाह, छुआछूत, पर्दाप्रथा और मृत्युभोज का उन्होंने जमकर विरोध किया। नारी-शिक्षा और नारी-स्वतंत्रता के वे प्रबल पक्षधर थे।

डा० मोहता के मौलिक और क्रांतिकारी विचारों की छाप जनसाधारण पर नहीं थी अपितु अज्ञेय, जैनेन्द्रकुमार, आचार्य तुलसी, लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, पंडित सुन्दरलाल, इलाचन्द्र जोशी और मन्मथनाथ गुप्त जैसी हस्तियां भी उनसे विचार-विमर्श कर मार्ग-दर्शन प्राप्त करती थीं।

स्वतंत्रता संघर्ष में डा० मोहता ने सक्रिय भाग लिया। वे बीकानेर राज्य प्रजा परिषद की गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे लेकिन सत्ता में भागीदार बनना उन्होंने कभी पसंद नहीं किया। उन्हें बीकानेर रियासत के मंत्रिमंडल में शामिल होने के लिए आमन्त्रित किया गया लेकिन उन्होंने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। 18 सितम्बर 1986 को बीकानेर में आपका स्वर्गवास हुआ।

ज्वालाप्रसाद शर्मा

राजस्थान के प्रमुख क्रांतिकारी श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा अजमेर के निवासी थे जिनका हाई स्कूल के विद्यार्थी जीवन में ही उत्कट राष्ट्रीय भावना का उदय हो जाने से क्रांतिकारियों से सम्पर्क हो गया। सन् 1931 में उन्होंने रेल का खजाना लूटने की योजना बनाई लेकिन इसमें सफल नहीं हो सके। इसके बाद अजमेर नाजरात से रुपया उड़ाने की योजना भी बनाई। क्रान्तिकारियों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए मध्यभारत से आये एक पुलिस अधिकारी प्राणनाथ डोगरा और एक अन्य भेदिए पर अपने प्राणों की परवाह किये बिना आपने गोलियाँ दाग दीं। आपने बम भी बनाये।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप काफी सक्रिय रहे जिससे आपको जेल में बन्द कर दिया गया। वहाँ से आप फरार हो गये और भारत के स्वाधीन होने तक पुलिस की पकड़ में नहीं आये।

1952 के प्रथम आम चुनाव में आप अजमेर क्षेत्र से सांसद और 1957 और 1962 के चुनावों में नसीराबाद क्षेत्र से विधायक चुने गये। आप प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामन्त्री तथा मई 1972 तक राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के अध्यक्ष भी रहे। जून सन् 1974 में आपका एक सड़क दुर्घटना में घायल हो जाने के कारण जयपुर में देहावसान हुआ।

जमनालाल बजाज

महात्मा गांधी के पाँचवें पुत्र के रूप में विख्यात सेठ जमनालाल बजाज का जन्म 4 नवम्बर 1889 को सीकर जिले के काशी-का-बास ग्राम में हुआ। गांधी जी के आह्वान पर जो उद्योगपति स्वतंत्रता आन्दोलन में अंग्रेजी राज की परवाह किये बिना आर्थिक सहयोग के लिए खुले आम आगे आये उनमें बजाज और बिड़ला परिवारों का नाम सदैव स्मरणीय रहेगा। उन्होंने युवावस्था में ही अंग्रेजों द्वारा प्रदत्त रायबहादुर के खिताब को वापस लौटाकर अपनी निष्ठा का परिचय दिया। जमनालालजी विचारधारा से पूरे राष्ट्रवादी और गांधीवादी थे। उन्होंने सैकड़ों राजनैतिक कार्यकर्ताओं को अपने उदरपूर्ति के लिए उदारतापूर्वक आर्थिक सहयोग दिया। गांधीजी ने जब अपने "नवजीवन" का हिन्दी संस्करण प्रारम्भ किया तो उसका सम्पूर्ण वित्तीय भार आपने वहन किया। इसके अलावा "राजस्थान केसरी", "प्रताप" तथा "कर्मवीर" आदि राष्ट्रीय विचारों के पोषक पत्रों को भी भरपूर आर्थिक सहायता प्रदान की। अजमेर

में श्री हरिभाऊ उपाध्याय के सम्पादकत्व में प्रकाशित "त्याग-भूमि" को भी आपने आर्थिक सम्बल प्रदान किया।

जयपुर राज्य प्रजामण्डल के श्री बजाज संस्थापकों में से थे और 1938 से 1942 तक उसके अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने न केवल जयपुर रियासत में राजाशाही और सामन्तशाही के विरुद्ध बगावत का झण्डा उठाया बल्कि पूरे भारत की देशी रियासतों की शोषित और पीड़ित जनता को नागरिक अधिकार प्रदान कराने और उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए निरन्तर संघर्ष किया। गांधीजी के अनुरोध पर उन्होंने जीवन के अन्तिम दिनों में अपने आपको गौ-वंश की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। 11 फरवरी 1942 को 53 वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हुआ।

जयनारायण व्यास

राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के उद्भट योद्धा श्री जयनारायण व्यास का जन्म 18 फरवरी 1899 को जोधपुर में एक साधारण पुष्करणा ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनका समूचा जीवन अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न और परतंत्रता के विरुद्ध संघर्ष करने में ही बीता। सन् 1920 में जब वे हाई स्कूल की परीक्षा देने दिल्ली गये तब उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द को एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए देखा जिसमें वे एक अंग्रेज फौजी अफसर की संगीन के सामने अपने कुर्ते के बटन खोलकर उसे संगीन मारने के लिए ललकार रहे थे। यह वह समय था जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में विदेशी हुकूमत के खिलाफ और जलियांवाला बाग के नृशंस हत्याकाण्ड के विरुद्ध सारे देश में जनता एकजुट हो गई थी। युवा व्यासजी भी दिल्ली से यह संकल्प मन में लेकर लौटे कि वे भी अपना जीवन रियासती प्रजा को राजाशाही और सामंती जुल्मों से मुक्त कराने तथा आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक दमन व शोषण का अन्त कराने के संघर्ष में अर्पित कर देंगे। फलत: 1921 से 46 तक का उनका जीवन इस मुक्ति संघर्ष में ही खप गया।

जोधपुर रियासत से निष्कासन और निरन्तर आर्थिक अभावों से जूझते रहने के कारण उन्होंने एक बार फिल्म उद्योग में जाने का भी विचार किया लेकिन इसी समय प्रिन्सेस चैम्बर के अध्यक्ष बीकानेर नरेश का एक पत्र जोधपुर रियासत के तत्कालीन प्रधान मंत्री सर डोनाल्ड फील्ड को मिला जिसमें उन्होंने लिखा था कि यद्यपि जयनारायण व्यास मेरा परम विरोधी और कटु आलोचक है पर उस जैसा पवित्र और ईमानदार व्यक्ति दूसरा मिलना कठिन है। निकट भविष्य में जब कि यह सत्ता प्रजा के प्रतिनिधियों को सौंपनी पड़ेगी तब हमें जयनारायण व्यास जैसे व्यक्ति को ही यह दायित्व सौंपना पड़ेगा क्योंकि यही एक मात्र व्यक्ति है जो रियासती प्रजा का सच्चे अर्थों में मार्ग-दर्शक बन सकता है और रियासती प्रजा इनके नेतृत्व में आगे बढ़ सकती है। अपने सबसे बड़े विरोधी से ऐसा प्रमाण पत्र संभवत: किसी भी राजनेता को अपने जीवन में नहीं मिला होगा।

व्यास जी को उनकी राजनीतिक गतिविधियों के कारण पांच बार जेलयात्रा करनी पड़ी। 1939 से 49 तक आप अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के महामंत्री रहे जिसके श्री जवाहरलाल नेहरू अध्यक्ष थे। 1948 में आप जोधपुर रियासत की लोकप्रिय सरकार के मुख्यमंत्री बनाये गये। राजस्थान बनने पर श्री हीरालाल शास्त्री की सरकार के पतन के बाद 26 अप्रेल 1951 को मुख्यमंत्री बने लेकिन 1952 के प्रथम आम चुनाव में दो स्थानों पर एक साथ लड़ने के बावजूद आप विधान सभा का चुनाव हार गये। लेकिन अगस्त 1952 में ही आप किशनगढ़ से उपचुनाव जीत गये और एक नवम्बर 1952 को पुन: मुख्यमंत्री चुन लिए गये। कोई एक वर्ष बाद ही श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने उनके नेतृत्व को चुनौती दी जिसमें उन्हें पद के सीधे चुनाव में 6 नवम्बर 1954 को पराजय का मुंह देखना पड़ा। 1956 में उन्होंने

रहते हुए उन्हें राजस्थान आने और यहाँ के जन-जीवन को निकट से देखने का अवसर मिला। 1817 में वे जब पश्चिमी राजस्थान के पोलीटिकल एजेन्ट बनाये गये तो उन्होंने "एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" तथा "पश्चिमी राजस्थान की यात्रा" नामक दो ग्रन्थ लिखे। प्रथम ग्रन्थ के दो भाग हैं जिनमें 85 अध्याय हैं। पहले भाग में राजपूताना की भौगोलिक स्थिति, राजाओं की वंशावलियाँ, शासन-व्यवस्था और मेवाड़ की स्थिति तथा दूसरे भाग में मारवाड़, आमेर, बीकानेर, जैसलमेर व हाड़ौती आदि राज्यों का वर्णन है। दूसरे ग्रंथ में राजपूतों की मान्यताओं, परम्पराओं, मन्दिरों और आदिवासी जन-जीवन का चित्रण है।

कर्नल टाड के इस कथन को पढ़कर समूचा यूरोप आश्चर्यचकित हो गया कि "राजस्थान का कोई छोटा सा राज्य भी ऐसा नहीं है, जिसमें थर्मोपोली जैसी रणभूमि नहीं हो और शायद ही कोई ऐसा नगर मिले जहाँ लियानीडास जैसा वीर पुरुष उत्पन्न न हुआ हो।" 1835 में श्री टाड का निधन हुआ।

जोगेन्द्रसिंह (सरदार)

एक जुलाई 1972 से 14 फरवरी 1977 तक राजस्थान के (चतुर्थ) राज्यपाल पद पर रहे सरदार जोगेन्द्रसिंह का जन्म 30 अक्टूबर 1903 को उत्तर प्रदेश के रायबरेली नगर में एक प्रतिष्ठित जमींदार परिवार में हुआ। 34 वर्ष की आयु में आपने सक्रिय राजनीति में भाग लेना शुरू किया और केन्द्रीय धारा सभा के सदस्य चुने गये। अपने सार्वदेशिक और समाजवादी दृष्टिकोण तथा विनोदप्रियता के कारण आप पक्ष-विपक्ष दोनों में लोकप्रिय हो गये तथा सर्वसम्मति से विपक्ष के मुख्य सचेतक चुन लिये गये। इससे आपको श्री भूला भाई देसाई और श्री सत्यमूर्ति जैसे दिग्गज नेताओं के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। पं. गोविन्द वल्लभ आपके राजनीतिक गुरु थे। यही कारण था कि आप एक निडर, दूरदर्शी और प्रखर राष्ट्रवादी के रूप में ढल गये। यह आपकी सूझबूझ का ही परिणाम था कि केन्द्रीय धारासभा में कांग्रेस दल के अल्पमत में होने के बावजूद सरकार को बजट के मतदान पर पराजित कर दिया।

श्री सिंह 1934 से 1971 तक अस्थायी संसद, लोकसभा और राज्य सभा के निरन्तर सदस्य रहे। बीच में कुछ अर्से के लिए 1963–64 में भारतीय तेल-शोधक कारखाने के अध्यक्ष नियुक्त हो जाने के कारण इस क्रम में व्यतिक्रम हुआ। 1962 में आप राष्ट्रीय रायफल एसोसियेशन के महामंत्री, राष्ट्रीय कृषि आयोग के सदस्य तथा राज्य सभा की गृह समिति के अध्यक्ष रहे। भारत सरकार ने आपको दिल्ली सिख गुरुद्वारा बोर्ड का अध्यक्ष भी नियुक्त किया।

राजस्थान के राज्यपाल पद पर नियुक्त होने से पूर्व श्री जोगेन्द्रसिंह 20 सितम्बर 1971 से 30 जून 1972 तक उड़ीसा के राज्यपाल रहे। 14 फरवरी 1977 को आपने राज्यपाल पद से त्याग पत्र देकर कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में उत्तर प्रदेश से लोकसभा का चुनाव लड़ा जिसमें आप पराजित हो गये।

जोरावरसिंह बारहठ

आप राजस्थान केसरी ठा० केसरीसिंह के अनुज और अमर शहीद प्रतापसिंह बारहठ के चाचा थे। आपका जन्म 12 सितम्बर 1883 को उदयपुर में हुआ तथा बाल्यकाल शाहपुरा, उदयपुर और जोधपुर में बीता। पिता की मृत्यु के बाद कुछ अर्से तक आपने जोधपुर राज-परिवार में काम किया। किन्तु अटूट देशभक्ति के कारण वहाँ अधिक नहीं टिक सके और क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़ गये।

12 दिसम्बर 1911 को दिल्ली दरबार के अवसर पर लार्ड हार्डिंग पर बम फैंककर आपने

श्री कावरा ने जिन्हें प्यार से लोग दादा के आत्मीय नाम से संबोधित करते थे, 1955 में कलकत्ता में अलाउद्दीन संगीत समाज द्वारा आयोजित सम्मेलन में प्रथम बार भाग लेकर सरोद-वादन से श्रोताओं को मोर-विहोर कर दिया। बाद में 1958में बम्बई में आकाशवाणी द्वारा आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष सरोद-वादन कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसे काफी पसंद किया गया। मई1959 में आकाशवाणी द्वारा उनका अ.मा. कार्यक्रम रखा गया तभी से वे आजीवन देश के विभिन्न भागों में आयोजित होने वाले संगीत कार्यक्रमों में निरन्तर भाग लेते रहे। एच एम वी ने उनका 'लांगप्लेरिकार्ड' बनाया। 'न्यू आक्सफोर्ड-कंपेनियन' नामक संदर्भ कोष में भी आपका उल्लेख हुआ है। राजस्थान संगीत-नाटक अकादमी के आप वर्षों तक उपाध्यक्ष रहे। उनके प्रिय रागों में देस हेमविहाग मारुबिहाग, गमन, पीलू, किरवानी, थी जिन्हें वे कुशलता से बजाते थे। 4 अगस्त 1979 को उनका जोधपुर में निधन हुआ।

दामोदर व्यास

श्री व्यास का जन्म 9 नवम्बर 1909 को टोंक जिले के मालपुरा कस्बे में धनाढ्य दाधीच ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा मालपुरा और बी०ए० तथा एलएल० बी० की क्रमश: जयपुर और लखनऊ में हुई।

व्यवसाय से वकील श्री व्यास ने 1937 में प्रजामंडल की सदस्यता ग्रहण की और 1937 से 47 तक मालपुरा जिला प्रजामंडल के अध्यक्ष रहे। 1948 में मालपुरा में आयोजित जयपुर राज्य प्रजामंडल के अधिवेशन के आप स्वागताध्यक्ष रहे। 1947 से श्री व्यास राजस्थान प्रदेश कांग्रेस तथा 1956 से 62 तक अखिल भारतीय कांग्रेस के सदस्य रहे। 1945 से 49 तक आप जयपुर रियासत की धारा सभा के सदस्य तथा 1950 से 54 तक टोंक जिला बोर्ड (मुख्यालय मालपुरा) के अध्यक्ष रहे।

1952 में आप मालपुरा क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये और नवम्बर 1954 में राज्य में सुखाडिया सरकार बनने पर आप राजस्व तथा पुनर्वास मंत्री नियुक्त किये गये। 1957 में आप मालपुरा क्षेत्र से ही विधान सभा के लिए निर्विरोध चुने गये और पुनः मंत्री पद पर नियुक्त किये गये। 1962 में आप मालपुरा से स्वतंत्र पार्टी के प्रत्याशी जयपुर राजपरिवार के महाराजकुमार श्री जयसिंह से चुनाव हार गये लेकिन मई 1965 में राजाखेड़ा क्षेत्र से उप चुनाव में पुनः विधायक चुने गये और दो जुलाई 1965 को सामुदायिक विकास मंत्री नियुक्त किये गये। 1967 में आप मालपुरा और टोंक दो विधान सभा क्षेत्रों से एक साथ चुने गये और जून 1967 में बनी सुखाडिया सरकार में गृहमंत्री नियुक्त हुए। जुलाई 1971 में श्री सुखाडिया के मुख्यमंत्री पद से त्याग पत्र देने पर आप सरकार से पृथक हो गये। आपके राजस्व मंत्री काल में प्रदेश में जागीरदारी प्रथा समाप्त होने के साथ ही किसानों के हित में भूमि-सुधार के अनेक कार्य संपन्न हुए। 14 जनवरी 1976 को आपका जयपुर में देहान्त हुआ।

देवीलाल सामर

भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर के पूर्व अध्यक्ष ''पद्मश्री'' देवीलाल सामर का जन्म 30 जुलाई 1911 को उदयपुर में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम०ए० करने के बाद आप उदयपुर की सुप्रसिद्ध शिक्षण संस्था विद्या भवन में हिन्दी तथा संगीत के शिक्षक रहे। 1952 में आपने जनरल करिअप्पा के सहयोग से उदयपुर में लोक कला मण्डल की स्थापना की जो आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर

पर लोक-कलाओं एवं लोक-संस्कृति का विख्यात अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र है। 1967 में आ राजस्थान संगीत-नाटक अकादमी के अध्यक्ष मनोनीत किए गए। 1968 में भारत सरकार द्वारा आपक ''पदमश्री'' से सम्मानित किया गया। 3 दिसम्बर 1983 को बम्बई में आपका देहावसान हुआ

नरसिंहदास (बाबाजी)

बाबा नरसिंहदास किसी साधु-सन्यासी का नाम नहीं, बल्कि एक ऐसी धधकती ज्वाला का नाम है जो किसी भी अन्याय अथवा अत्याचार के प्रतिकार के लिये हमेशा छटपटाती रहती थी। मद्रास में एलोपैथिक दवाओं के लाखों रुपये के अपने चालू कारोबार को लात मारकर सन् 1921 में सारी सम्पत्ति गाँधी जी के चरणों में समर्पित कर आजीवन बाबाजी बन जाने वाले श्री नरसिंहदास का जन्म 31 जुलाई 1890 को नागौर में एक प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में हुआ। शिक्षा के नाम पर आपने नागौर, बीकानेर और हैदराबाद में महाजनी पढ़ी।

महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन में कूदने से पूर्व आपने अपने तथा अपनी पत्नी के विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। गाँधी जी ने बाबाजी बनने पर आपको एक विशेष दायित्व स्वतंत्रता-सेनानियों और क्रांतिकारियों के परिजनों की देखभाल, बच्चों की शिक्षा-दीक्षा और विवाह-शादी आदि का सौंपा जिसे उन्होंने आजादी आने तक बखूबी निभाया।1930 में अजमेर में नमक सत्याग्रह के दौरान सबसे पहले सरकार ने पथिक जी और बाबाजी को ही गिरफ्तार कर मुकदमा चलाया जिसमें उन्हें दो वर्ष के कठोर कारावास की सजा हुई। तब बाबाजी ने न्यायालय में गरजकर कहा कि मेरा पेशा विदेशी सरकार को नष्ट करना है इसलिये मुझे दो वर्ष की सजा के बजाय फांसी की सजा दी जाय अन्यथा मैं जेल से बाहर आते ही फिर यही काम करूंगा। इसके बाद तो बाबाजी का आजादी आने तक जेल में जाने-आने का सिलसिला चलता रहा। लेकिन 1930 के बाद बाबाजी का कार्यक्षेत्र खासकर मध्यप्रदेश और राजस्थान ही रहा।

बाबाजी ने मद्रास में हिन्दी प्रचार के लिये प्रथम साप्ताहिक ''भारत तिलक''का और दिल्ली से ''प्रभात'' तथा ''नेताजी'' दैनिक का आर्थिक सहायता देकर प्रकाशन कराया।वे राजनीति में दलबंदी तथा राष्ट्रीय व रचनात्मक कार्यों में पक्षपात अथवा आदर्शहीनता सहन नहीं करते थे। अपनी मान्यताओं और सिद्धांतों के लिये गांधी जी तक से भिड़ने में वे नहीं चूकते थे। आजादी के बाद पुराने देशभक्तों और नेताओं की पद और धन लिप्सा से बाबाजी अपने अंतिम दिनों में काफी क्षुब्ध रहे। 22जुलाई 1957 को आपका अजमेर में देहपात हुआ।

नरोत्तमदास स्वामी

राजस्थानी भाषा के उन्नायक प्रो० नरोत्तमदास स्वामी का जन्म बीकानेर में रांकावत ब्राह्मण परिवार में हुआ। आप बीकानेर से बी० ए० कर बनारस चले गये जहाँ से हिन्दी व संस्कृत में एम० ए० किया। आप गुजराती, मराठी, बंगला, रूसी, जर्मन, अपभ्रंश व प्राकृत आदि कई भाषाओं के पंडित थे। आपकी साहित्य-साधना मुख्यतः तीन रूपों में रही-मौलिक साहित्य सृजन, ग्रंथ-सम्पादन एवं अनुवाद, आलोचना और निबंध-लेखन। आपके द्वारा लिखित और सम्पादित पुस्तकों की संख्या एक सौ से अधिक है। राजस्थानी भाषा और साहित्य, अपभ्रंश व्याकरण, अलंकार रत्नाकर, रूसी भाषा का स्वयं शिक्षक, राजस्थान-रा-दूहा, ढोला मारू-रा-दूहा, राजस्थान के लोकगीत, ग्रामगीत, वीर गीत, पृथ्वीराज रासो, राजिया-रा-दूहा, कबीरदास, तुलसीदास और सूर-संग्रह जैसी अनेक पुस्तकें उनके विविध विषयक

साहित्य की द्योतक है। पांडित्य और सहृदयता का स्वामी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व में मणिकांचन संयोग था।

स्वामीजी की यह हार्दिक तमन्ना थी कि वे राजस्थानी साहित्य के लिए उतना ही कार्य करें जितना रामचन्द्र शुक्ल और श्यामसुन्दरदास ने हिन्दी के लिए किया था। राजस्थानी भाषा और साहित्य को समृद्ध बनाने के लिए उन्होंने राजस्थानी पीठ की स्थापना की। 13 अगस्त 1981 को आपका निधन हुआ।

नाथूराम खड़गावत

राजस्थान के लब्ध प्रतिष्ठ इतिहासज्ञ तथा राजस्थान पुरा लेखागार के पूर्व निदेशक प्रो खड़गावत का जन्म सन् 1920 में जोधपुर में हुआ था। आपने अथक परिश्रम कर प्रदेश के कोने-कोने में बिखरी पांडुलिपियां पोथियां, पट्टावलियों, फरमानों और बातों का वैज्ञानिक पद्धति से वर्गीकरण किया। यह आपकी ही सूझबूझ थी कि पुरालेखागार में माइक्रो फिल्म कैमरे और माइक्रो फिल्म प्रोजेक्टर पर पांडुलिपियों के चित्र लेने की व्यवस्था हो सकी। आपकी महत्वपूर्ण कृति ''राजस्थान-थ्रो-दी एजेज'' का प्रकाशन पुरालेखागार द्वारा किया गया है। राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम का सांगोपांग इतिहास भी आपने मृत्यु से पूर्व तैयार किया था। आपका निधन जयपुर के एक न्यायालय में बयान देते समय 3 अप्रेल 1970 को हुआ।

नारायण चतुर्वेदी

राजस्थान के जाने-माने पत्रकार और सहकारिता क्षेत्र के राष्ट्रीय स्तर के नेता श्री नारायण चतुर्वेदी का जन्म 12 जनवरी 1920 को जयपुर जिले के भांडारेज ग्राम में हुआ। प्रारंभ से ही राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत होने के कारण आपका सम्पर्क प्रजामंडल के नेताओं से रहा और आप श्री हीरालाल शास्त्री के निजी सचिव बन गये। 15 अगस्त 1948 से आपने जयपुर से साप्ताहिक ''अमर ज्योति'' का प्रकाशन शुरु किया। 1952 में आप जयपुर-चाकसू निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये। 1959 में राज्य में पंचायतीराज की स्थापना होने पर आप जयपुर जिला-परिषद के प्रमुख चुने गये। इस पद पर आप 1965 तक रहे। जयपुर जिला देहात कांग्रेस की कार्य समिति तथा प्रदेश कांग्रेस कमेटी की कार्य समिति के भी आप सदस्य रहे।

सहकारिता क्षेत्र में श्री चतुर्वेदी जयपुर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक, राजस्थान राज्य सहकारी भूमि-विकास बैंक और राजस्थान स्टेट इंडस्ट्रियल को-आपरेटिव बैंक के अध्यक्ष, राजस्थान स्टेट को-आपरेटिव बैंक के उपाध्यक्ष, राजस्थान राज्य सहकारी क्रय-विक्रय संघ के संचालक मंडल के सदस्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न सहकारी संगठनों के पदाधिकारी रहे। भारत सरकार ने आपको स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर तथा ग्रामीण विद्युतीकरण निगम के संचालक मंडल का सदस्य मनोनीत किया। आप कुशल वक्ता, श्रेष्ठ लेखक, चिंतक और विचारक थे। सितम्बर 1979 में एक आपसी झगड़े में आपकी मृत्यु हुई।

निरंजननाथ आचार्य

राजस्थान विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री आचार्य का जन्म एक फरवरी 1911 को उदयपुर जिले

के ओड़ी ग्राम में हुआ तथा 1938 से उदयपुर में आपने वकालत प्रारंभ की। सार्वजनिक कार्यों में आपकी छात्र जीवन से ही रुचि रही और 1944 से 53 तक आप मेवाड़ राज्य रेलवे मजदूर संघ के अध्यक्ष 1950 में उदयपुर अभिभावक संघ के अध्यक्ष तथा 1954 से 57 तक उदयपुर नगर परिषद के अध्यक्ष रहे। 1957 में प्रथम बार आप कांग्रेस टिकिट पर राजसमंद क्षेत्र से विधायक चुने गये और राज्य विधान सभा के उपाध्यक्ष बनाये गये। 1962 में इसी क्षेत्र से पुनः विजयी हुए और सुखाड़िया मंत्रिमंडल में गृह तथा शिक्षा उपमंत्री नियुक्त किये गये। 1966 में आपको कैबिनेट मंत्री के रूप में पदोन्नत कर विधि, न्याय, भाषा, कारागार तथा कुछ अर्से तक गृहमंत्री का दायित्व सौंपा गया। 1967 में आप मावली क्षेत्र से विधायक चुने गये और राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष बनाये गये। 1972 में आप कांग्रेस टिकिट नहीं मिलने पर निर्दलीय रूप से मावली क्षेत्र से पुनः विजयी हुए। श्री हरिदेव जोशी की सरकार ने बाद में आपको राजस्थान राज्य सहकारी उपभोक्ता संघ का अध्यक्ष मनोनीत किया।

श्री आचार्य ख्याति प्राप्त लेखक, साहित्यकार, चिन्तक और विचारक थे। देश की शीर्ष पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनायें प्रमुखता के साथ प्रकाशित होती थी। प्रकाशित पुस्तकों में "विद्यालयों ने कहा", "आस्ट्रेलिया के आंचल में", "गुरु पूर्णिमा", "ग्राम की ज्योति", "गांव की जोत", "जानी-अनजानी तस्वीर" और "धरती के गीत" आदि मुख्य हैं। आपने विश्व के अनेक देशों का भ्रमण किया। 1976 में आपका जयपुर में निधन हुआ।

पीरूसिंह (हवलदार मेजर)

राजस्थान से प्रथम "परमवीर चक्र" विजेता हवलदार मेजर पीरूसिंह शेखावत का जन्म विक्रम संवत् 1974 में झुंझुनूं जिले के बेरी ग्राम (रामपुरा) में हुआ था। भारत की स्वतंत्रता के तुरंत बाद विभाजन के समय कश्मीर में हमारी सेना को कबायलियों से मोर्चा लेना पड़ा था। इस युद्ध मे श्री पीरूसिंह राजपूताना राइफल्स की छठी बटालियन के साथ टीथवाल की दुर्गम घाटियों में मोर्चे पर तैनात थे। शत्रु ने पहाड़ी पर से मोर्चा ले रखा था और मीडियम मशीनगनों से गोलियों की बौछार हो रही थी। हवलदार पीरूसिंह गोलियों की परवाह न करते हुए आगे बढ़े और एक बाद एक, शत्रु की तीन खन्दकों को शान्त कर दिया तथा वहाँ स्थित शत्रु सैनिकों को मार गिराया। लेकिन इस समय तक स्वयं उनका शरीर भी शत्रु की गोलियों से छलनी हो चुका था जिसके परिणामस्वरूप वे वहीं गिरकर वीरगति को प्राप्त हुए।

भारत सरकार ने 1948 में उन्हें मरणोपरान्त सर्वोच्च सैनिक सम्मान "परमवीर-चक्र" से सम्मानित किया

प्रतापसिंह बारहठ

"मेरी माँ को रोने दो जिससे अन्य किसी माँ को न रोना पड़े। अपनी माँ को हंसाने के लिए मैं हजारों माताओं को रुलाना नहीं चाहता।" यह उत्तर क्रांतिकारी युवक कुंवर प्रतापसिंह बारहठ का था जो उन्होंने सरचार्ल्स को दिया। उनका जन्म 24 मई 1893 को उदयपुर में उस वीर परिवार में हुआ जिसकी तीन पीढ़ियों ने आजादी की लड़ाई में एक से बढ़कर एक कुर्बानियाँ दी। वे बारहठ परिवार के गौरव ठा० केसरीसिंह के पुत्र थे जिससे देशभक्ति का पाठ उन्हें माँ के गर्भ में ही पढ़ने को मिल गया था।

अभी वे पूरे वयस्क भी नहीं हुए थे कि उन्हें क्रांतिकारी दल में कार्य करने के लिए मास्टर अमीचन्द के पास दिल्ली भेज दिया गया। उन्होंने महान विप्लवी रासबिहारी बोस से युवा प्रतापसिंह का परिचय कराते हुए बताया कि इन पर पूरा भरोसा किया जा सकता है। इस पर श्री बोस ने कुछ दिनों इन्हें प्रशिक्षण

के लिए अपने पास रखा और फिर राजपूताना की सैनिक छावनियों में भारतीय सैनिकों तथा अन्य युवकों को मातृभूमि की रक्षा के लिए स्वतंत्रता संग्राम में सशस्त्र क्रांति के लिए तैयार करने हेतु भिजवा दिया। श्री बोस ने जब लार्ड हार्डिंग पर बम फैंकने की योजना बनायी तो प्रतापसिंह ने अपने चाचा जोरावरसिंह के साथ महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उन्हें गिरफ्तार किया गया लेकिन प्रमाण के अभाव में छोड दिया गया। उन्हें जोधपुर राज्य में आशानाडा स्टेशन पर पुनः पकड लिया गया और बनारस षड्यंत्र केस में पाँच वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी गयी।

भारत सरकार के गुप्तचर निदेशक सर चार्ल्स क्लीवलैंड ने बरेली सेन्ट्रल जेल में पहुंचकर उनसे भेंट की और उन्हें रासबिहारी बोस की गतिविधियों की जानकारी देने के लिए अनेक प्रलोभन दिए लेकिन उन्होंने सबको ठुकरा दिया। उन्हें दी गयी अनेक यातनाओं के कारण बरेली जेल में ही सात मई 1918 को प्राणों का उत्सर्ग करना पडा।

ब्रह्मानन्द गोस्वामी

राजस्थान में शास्त्रीय संगीत के उन्नायक ग्वालियर घराने के विख्यात संगीतज्ञ पं. ब्रह्मानन्द गोस्वामी का जन्म 8 फरवरी 1907 को सिंध हैदराबाद (पाकिस्तान) में हुआ। लेकिन देश-विभाजन के बाद उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र जयपुर को बनाया और जीवन के अंतिम दिनों तक शास्त्रीय संगीत के विकास में लगे रहे। संगीत विद्या उन्हें विरासत में प्राप्त हुई। मात्र 18 वर्ष की आयु में एक संगीत सम्मेलन में उनका गायन सुनकर सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ पं० विष्णु दिगम्बर पलुस्कर इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्हें आचार्य और "प्रोफेसर आफ म्यूजिक" की उपाधि दे डाली। अपने पिताश्री से उन्होंने शास्त्रीय संगीत के साथ ही सितार तथा मृदंग-वादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया और ग्वालियर घराने के सुप्रसिद्ध बाबा दीक्षित नील कंठ, नाना साहब पांसे तथा अष्टेकर का शिष्यत्व ग्रहण किया। 1925 में आपने सिंध में नाद ब्रह्म विद्यालय की स्थापना कर संगीत का प्रचार-प्रसार शुरु किया जिसकी देश के विभाजन तक सात शाखायें चालू हो गई थीं। 1928 से आपने अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनों में भाग लेना शुरु किया।

भारत-विभाजन के बाद श्री गोस्वामी ने पहले जैसलमेर महाराजा के यहाँ संगीत-प्रशिक्षण का कार्य किया और बाद में जयपुर आ गये। तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री हीरालाल शास्त्री के अनुरोध पर आपने जयपुर को अपना स्थायी निवास बना लिया। राज्य सरकार ने 1950 में जब राजस्थान कला संस्थान स्थापित किया तो आप उसके प्रथम आचार्य नियुक्त किये गये। 1953 में आपने जयपुर में अ० भा० संगीत सम्मेलन का सफल आयोजन किया। आप राजस्थान संगीत-नाटक अकादमी के साथ ही अखिल भारतीय संगीत नाटक अकादमी के भी संस्थापक सदस्य रहे। वे हिन्दी संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, सिंधी तथा फारसी के अच्छे ज्ञाता थे। आपने संगीत शिक्षा से संबन्धित अनेक पुस्तकों की रचना की तथा संगीत को प्राथमिक पाठशाला से विश्वविद्यालय तक पाठ्क्रमों में शामिल कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। आपको महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन ने 1987 में डागर घराना पुरस्कार से सम्मानित किया। एक सितम्बर 1988 को जयपुर में आपका निधन हुआ।

बद्रीनारायण "खोराजी"

धन, धरती और धर्म की ठेकेदारी को दुनिया के दुःखों का मूल कारण समझने वाले निस्पृह लोकसेवी श्री बद्रीनारायण खोराजी का जन्म जयपुर जिले के खोराबीसल ग्राम में 26 सितम्बर सन् 1900

को हुआ। जयपुर के महाराजा हाई स्कूल में नवीं कक्षा तक पढ़े खोराजी ने आजीविका के लिए प्रारंभ में अजमेर में नौकरी की। बाद में गोविन्दगढ़ में अध्यापकी और रींगस में खादी का कार्य किया। आपके जीवन में 1923 में क्रांतिकारी मोड़ आया जब देशभक्त सेठ जमनालाल बजाज से आपकी भेंट हुई और उनसे प्रेरणा प्राप्त कर आप जनसेवा के कठोर मार्ग पर निकल पड़े। 1935 में आपका पंडित हीरालाल शास्त्री से सम्पर्क हुआ और उनके साथ आप देश-सेवकों की फक्कड़ मंडली में शामिल हो गये।

मोटी खादी की घुटनों तक ऊंची धोती, घुंडी लगा कुर्ता, देशी चमड़े की जूतियाँ और हाथ में छोटा थैला-यही बस खोराजी का लिबास था जिसे उन्होंने आजीवन नहीं छोड़ा। ठेठ जयपुरी उनकी न केवल बोल-चाल और भाषण की भाषा थी बल्कि वे लिखते भी इसी में थे। उनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं था। वे सच्चे अर्थों में धुन के धनी थे। उन्होंने देशी रियासतों के कस्बों और गांवों में जागीरदारों के अत्याचारों के विरुद्ध प्रबल जनमत जागृत किया। वे गांव-गांव और ढाणी-ढाणी में पैदल घूमे तथा किसानों, हरिजनों, मजदूरों और अन्य शोषित वर्गों को उनकी ही भाषा में उनके अधिकारों को समझाया और अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध संगठित होने व आवाज बुलन्द करने के लिए तैयार किया। उन्होंने 1929 में अपने गांव में हरिजनों को पढ़ाने के लिए जब पाठशाला खोली तो समाज के लोगों ने उनका जातीय बहिष्कार किया। इस पर गांधी जी ने उन्हें पत्र लिखकर कर्तव्य पथ पर डटे रहने की प्रेरणा दी।

खोराजी ने आजादी के बाद पद और प्रभुता से दूर रहकर रचनात्मक कार्यों को अपनाया और खोरा बीसल ग्राम पंचायत के सरपंच के रूप में अपने सपनों को साकार कर दिखाया। 28 जनवरी 1986 को 86 वर्ष की आयु में आपका खोरा ग्राम में निधन हो गया।

बद्रीनारायण सोढाणी

समाज-सेवा और रचनात्मक कार्यों के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले श्री बद्रीनारायण सोढाणी का जन्म सीकर के एक प्रतिष्ठित माहेश्वरी परिवार में सन् 1917 में हुआ। उच्च शिक्षा के लिए आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया लेकिन गांधी की आंधी के कारण वे जन-सेवा के मैदान में कूद पड़े। कुछ अर्से तक आप वर्धा में गांधी जी के और बाद में विनोबाजी के साथ नालवाड़ी आश्रम में रहे। सन् 1948 से मृत्युपर्यन्त शेखावाटी उनका कार्य क्षेत्र रहा जिसके ग्राम-ग्राम और ढाणी-ढाणी में उनके सेवा कार्य मील के पत्थरों की तरह हर कहीं देखने को मिल जायेंगे।

सीकर से 6 किलोमीटर दूर सांवली ग्राम में उनके द्वारा संस्थापित श्री कल्याण आरोग्य सदन समूचे देश में क्षय-रोगियों के लिए तीर्थस्थल बन गया है। इसमें रोग-निदान और उपचार के साथ ही गो-शाला, धर्मशाला, अनुसंधान केन्द्र, पाचनालय, पुस्तकालय, विद्यालय, तरणताल, मंदिर और उद्यान आदि सभी आधुनिक सुविधायें रोगियों को सुलभ है। इसका उद्घाटन स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री ने किया था और जयप्रकाश नारायण ने इसका अवलोकन कर सोढाणी जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। इसी प्रकार जन-कल्याण समिति के माध्यम से उन्होंने ग्रामीण जनता में चेतना का अलख जगाया और विभिन्न राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के सहयोग से गांव-गांव में सड़कों और पाठशाला भवनों का निर्माण तथा पेयजल और पोषाहार की सुविधायें उपलब्ध करायीं। सीकर के राजकीय कल्याण अस्पताल की परिधि में आपके प्रयत्नों से टोडी विश्रामगृह का निर्माण हुआ और सीकर में ही राजस्थान हेल्थ मेडीकल रिसर्च सेन्टर की स्थापना संभव हुई। वे सच्चे अर्थों में हरिजनों व अन्य पिछड़े वर्गों के हितैषी थे। उनका निधन 14 मार्च 1983 को सीकर में हुआ।

बरकतुल्लाह खाँ

राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री बरकतुल्लाह खाँ का जन्म 25 अगस्त 1920 को जोधपुर में हुआ था। आपने प्रारंभिक शिक्षा जोधपुर में प्राप्त की तथा बी०ए० व विधि स्नातक परीक्षा लखनऊ से उत्तीर्ण की।

स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले बरकतुल्लाह 1952 से 1957 तक राज्य सभा सदस्य तथा 1957 से मृत्यु पर्यन्त राजस्थान विधानसभा के सदस्य रहे। 1962 से आप राजस्थान मंत्रिमंडल के सदस्य रहे तथा 9 जुलाई, 1971 को मुख्यमंत्री बने। स्व० जयनारायण व्यास के राजनीतिक शिष्य श्री बरकतुल्लाह उन्हीं की भाँति एक जिन्दादिल इन्सान थे। 11 अक्टूबर 1973 को हृदयगति रुक जाने से उनका जयपुर में देहावसान हो गया।

बसंतराव बांडूजी पाटिल

राजस्थान के पूर्व राज्यपाल श्री पाटिल का जन्म 13 नवम्बर 1917 को महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले में हुआ। आपने स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और लगभग तेरह वर्ष तक कठोर कारावास की यातनाएं भोगी। स्वतंत्रता के बाद 1952 से 1980 तक ये महाराष्ट्र विधानसभा के निरन्तर सदस्य तथा महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे। महाराष्ट्र मंत्रिमंडल में वर्षों तक मंत्री और चार बार मुख्यमंत्री के रूप में विभिन्न विभागों का कार्यभार संभाला। 1980 से 82 तक आप अखिल भारतीय कांग्रेस (इ) के महासचिव तथा लोकसभा के सदस्य रहे।

श्री पाटिल महाराष्ट्र में सहकारी आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधारों में थे। वे वर्षों तक महाराष्ट्र राज्य चीनी मिल संघ, महाराष्ट्र राज्य सहकारी [illegible] एण्ड [illegible] लि० महाराष्ट्र सहकारी बैंक और राष्ट्रीय सहकारी चीनी मिल आदि के अध्यक्ष रहे। महाराष्ट्र में शिक्षा प्रसार में भी आपका सक्रिय योगदान रहा। वे स्वामी विवेकानन्द शिक्षण संस्थान और [illegible] शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष तथा शिवाजी विश्वविद्यालय की सीनेट के सदस्य रहे।

20 नवम्बर 1985 को आपने राजस्थान के राज्यपाल पद का कार्य ग्रहण किया और 10 नवम्बर 1987 को पद-त्याग कर महाराष्ट्र चले गये। एक मार्च 1989 को उनका बम्बई में स्वर्गवास हुआ।

बालमुकुन्द बिस्सा

स्वतंत्रता के मौन साधक श्री बालमुकुन्द बिस्सा का जन्म 1908 में [illegible] ग्राम में एक सामान्य पुष्करणा ब्राह्मण परिवार में हुआ। [illegible] इसलिए इनकी प्रारंभिक शिक्षा भी [illegible] में हुई। [illegible] 1934 में उन्होंने [illegible] राजस्थान [illegible] खादी भंडार [illegible] खादी [illegible] और [illegible] किया। [illegible] हुए [illegible] उन्होंने [illegible] खादी भंडार [illegible]

और कार्यकर्ताओं का संगम-स्थल बन गया।

1942 में श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में शुरु हुए जनान्दोलन के दौरान श्री बिस्सा को 9 जून 1942 को भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत बंदी बनाकर जेल में डाल दिया गया। जेल में बंदियों के दमन और दुर्व्यवहार के कारण अन्य साथियों के साथ उन्होंने भूख हड़ताल की। 15 जून तक चली इस भूख हड़ताल में बिस्सा जी काफी कमजोर हो गये और उन पर लू का भी प्रकोप हो गया। 19 जून को उन्हें वार्ड से जेल-अस्पताल भिजवाया गया। वहाँ के चिकित्सक ने मामले की गंभीरता को देखते हुए उन्हें अस्पताल पहुंचा दिया जहाँ अधिकारियों की लापरवाही के कारण उनका इसी दिन निधन हो गया।

श्री बिस्सा के निधन का समाचार समूचे नगर में बिजली की तरह फैल गया और देखते-देखते अस्पताल के सामने हजारों लोगों की भीड़ जमा हो गई। उपस्थित नेताओं ने श्री बिस्सा की शव-यात्रा जुलूस के रूप में नगर में घुमाने का निश्चय किया जिस पर प्रशासन ने पाबंदी लगा दी। उस दिन नगर के दरवाजे बंद कर दिए गये और भीड़ को तितर-बितर करने करने के लिए पुलिस ने भारी लाठी चार्ज किया लेकिन उस जमाने में लगभग एक लाख लोगों ने मीलों पैदल चलकर उनकी अन्त्येष्टि में भाग लिया।

भगवतसिंह मेहता

पद्मश्री भगवतसिंह मेहता स्वतंत्रता के बाद 1958 में जहां देश के किसी राज्य में मुख्य सचिव पद पर नियुक्त होने वाले भारतीय प्रशासनिक सेवा के प्रथम अधिकारी थे वहां साढ़े आठ वर्षों तक निरन्तर इस पद पर सफलतापूर्वक कार्य करने का देश में अब तक का कीर्तिमान स्थापित करने वाले भी संभवतः वे ही एक मात्र अधिकारी थे। 30 अक्टूबर 1908 को उदयपुर में आपका जन्म हुआ और बी.ए. तथा कानून की उपाधि प्राप्त करने के बाद कुछ दिनों तक अजमेर में आपने वकालत की। 1933 में आपने तत्कालीन मेवाड़ रियासत की सेवा में प्रवेश किया और मुख्य सचिव सहित विभिन्न पदों पर कार्य किया। आपकी योग्यता, कार्यकुशलता और प्रशासनिक क्षमता से प्रभावित होकर मेवाड़ सरकार ने ''राजनीति प्रवीण'' और ब्रिटिश सरकार ने ''राव बहादुर'' की उपाधियां प्रदान की। 1948 में छोटे राजस्थान का निर्माण होने पर आप पुनर्गठन आयुक्त तथा मुख्य सचिव बनाये गये। वर्तमान राजस्थान में आपने बीकानेर और जयपुर संभागों के आयुक्त तथा कृषि, अकाल और बाढ़ राहत आदि विभागों में शासन सचिव के रूप में कार्य किया। 9 मई 1958 को राज्य के मुख्य सचिव पद पर नियुक्ति से पूर्व आपने अतिरिक्त मुख्य सचिव तथा विकास आयुक्त पद पर कार्य किया।

मुख्य सचिव के रूप में श्री मेहता ने जहां राज्य के आर्थिक और सामाजिक विकास को नई गति दी वहां प्रशासनिक स्थायित्व कायम करने में महत्वपूर्ण योगदान किया। 2 अक्टूबर 1959 को राजस्थान में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की शुरुआत करने और पंचायतीराज संस्थाओं को पुनर्जीवन प्रदान करने के साहसिक कदम के पीछे तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया के साथ श्री मेहता की ही लगन, सूझबूझ और संकल्प-शक्ति थी। इसीलिए श्री नेहरू ने नागौर के उस ऐतिहासिक समारोह में कहा था कि ''हम लोग जो राजनीति में हैं, वे तो विकेन्द्रीकरण के बारे में सोचते हैं, यह समझ में आता है लेकिन आपके मुख्य सचिव भी पंचायतीराज की स्थापना में इतनी सक्रियता दिखायें, यह वास्तव में तारीफ की बात है।'' भारत सरकार ने 26 जनवरी 1961 को ''पद्मश्री'' से अलंकृत कर उनकी सेवाओं का सम्मान किया।

29 अक्टूबर 1966 को मुख्य सचिव पद और राज्य सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद राज्य

सरकार ने आपको रीको का प्रथम अध्यक्ष नियुक्त किया। जयपुर का विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र, जो एशिया में लघु उद्योगों का सबसे बड़ा औद्योगिक क्षेत्र कहा जाता है, श्री मेहता के कार्यकाल की ही देन है।

भरत व्यास

भारतीय सिने-जगत में हिन्दी को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने वाले राजस्थानी सपूत श्री भरत व्यास का जन्म 17 सितम्बर 1917 को बीकानेर में हुआ। छायावादी कविता की सुसंस्कृत और विशिष्ट अर्थयुक्त शब्दावली को फिल्मी गीतों में लोकप्रिय बनाने का श्रेय पं० नरेन्द्र और प्रदीप के साथ श्री भरत व्यास को ही जाता है। गीतों में आध्यात्मिक भावना की अभिव्यक्ति उनकी मुख्य विशेषता है।

श्री व्यास ने एक सौ से अधिक फिल्मों के गीत लिखे जिनमें रामराज्य, दो आँखें बारह हाथ, परिणिता, चैतन्य महाप्रभु, तूफान और दिया, नवरंग, जन्माष्टमी, भोलाशंकर, रिमझिम, मुकद्दर और राजमुकुट आदि मुख्य हैं। कवि कालीदास, दो आँखें बारह हाथ, स्त्री, और रानी रूपमती पर आपको पुरस्कार मिले।

श्री व्यास ने गीत-लेखन के साथ ही अभिनय, गायन और निर्देशन भी किया। उन्होंने "रंगीला राजस्थान" का सफल निर्देशन और "गुलामी" में अभिनय किया। 4 जुलाई 1982 को 64 वर्ष की आयु में बम्बई में आपका निधन हुआ।

भंवरमल सिंघी

देश के जाने-माने समाज-सुधारक, विचारक, साहित्य-सेवी और स्वतंत्रता सेनानी श्री भंवरमल सिंघी का जन्म 9 अगस्त 1914 को नागौर जिले के बद नामक ग्राम में हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर में हुई लेकिन कार्य क्षेत्र जीवन भर कलकत्ता में रहा। प्रारंभ से ही क्रांतिकारी विचारों के होने के कारण आप शीघ्र ही स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियों से जुड़ गये। फलतः 1942 से 44 तक आप जेल में रहे।

श्री सिंघी कलकत्ता में सर्वश्री भागीरथ कानोडिया, सीताराम सेकसरिया तथा बसन्त लाल मुरारका आदि शीर्ष राजस्थानी उद्योगपतियों के सम्पर्क में आये जो गांधीजी से प्रभावित होकर स्वयं स्वतंत्रता संघर्ष में सक्रिय थे। उन्होंने समाज के सड़े-गले ढांचे को बदलने और उसमें समय के साथ क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए आजीवन संघर्ष किया। अपनी प्रथम पत्नी के देहान्त के बाद आपने समाज के भारी विरोध के बावजूद विधवा से विवाह किया और अपनी सभी सन्तानों के अन्तरजातीय विवाह किये। वे परिवार-नियोजन के प्रबल पक्षधर थे और उसे उस समय अपनाया जब अन्य नेता सोच भी नहीं सकते थे। आपने अनेक ग्रन्थों की रचना के साथ ही अनेक पत्रों का सम्पादन भी किया। 13 नवम्बर 1986 को आपका जयपुर में निधन हुआ।

भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी

स्वतंत्रता से पूर्व अखबार पढ़ने के अभियोग में झाबुआ (म.प्र.) सरकार की नौकरी से हाथ धोने और बाद में स्वयं का अखबार निकाल कर घर-फूंक तमाशा देखने वाले श्री त्रिवेदी का जन्म 27 नवम्बर 1908 को बांसवाड़ा जिले के तलवाड़ा ग्राम में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा अपने ननिहाल झाबुआ (म.प्र.) में हुई और प्रारम्भ में वहीं न्याय विभाग में नौकरी की। 1939 में आपने बम्बई से "संग्राम"

और कार्यकर्ताओं का संगम-स्थल बन गया।

1942 में श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में शुरु हुए जनान्दोलन के दौरान श्री बिस्सा को 9 जून 1942 को भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत बंदी बनाकर जेल में डाल दिया गया। जेल में बंदियों के दमन और दुर्व्यवहार के कारण अन्य साथियों के साथ उन्होंने भूख हड़ताल की। 15 जून तक चली इस भूख हड़ताल में बिस्सा जी काफी कमजोर हो गये और उन पर लू का भी प्रकोप हो गया। 19 जून को उन्हें वार्ड से जेल-अस्पताल भिजवाया गया। वहाँ के चिकित्सक ने मामले की गंभीरता को देखते हुए उन्हें अस्पताल पहुंचा दिया जहाँ अधिकारियों की लापरवाही के कारण उनका इसी दिन निधन हो गया।

श्री बिस्सा के निधन का समाचार समूचे नगर में बिजली की तरह फैल गया और देखते-देखते अस्पताल के सामने हजारों लोगों की भीड़ जमा हो गई। उपस्थित नेताओं ने श्री बिस्सा की शव-यात्रा जुलूस के रूप में नगर में घुमाने का निश्चय किया जिस पर प्रशासन ने पाबंदी लगा दी। उस दिन नगर के दरवाजे बंद कर दिए गये और भीड़ को तितर-बितर करने करने के लिए पुलिस ने भारी लाठी चार्ज किया लेकिन उस जमाने में लगभग एक लाख लोगों ने मीलों पैदल चलकर उनकी अन्त्येष्टि में भाग लिया।

भगवतसिंह मेहता

पद्मश्री भगवतसिंह मेहता स्वतंत्रता के बाद 1958 में जहां देश के किसी राज्य में मुख्य सचिव पद पर नियुक्त होने वाले भारतीय प्रशासनिक सेवा के प्रथम अधिकारी थे वहां साढ़े आठ वर्षों तक निरन्तर इस पद पर सफलतापूर्वक कार्य करने का देश में अब तक का कीर्तिमान स्थापित करने वाले भी संभवतः वे ही एक मात्र अधिकारी थे। 30 अक्टूबर 1908 को उदयपुर में आपका जन्म हुआ और बी.ए. तथा कानून की उपाधि प्राप्त करने के बाद कुछ दिनों तक अजमेर में आपने वकालत की। 1933 में आपने तत्कालीन मेवाड़ रियासत की सेवा में प्रवेश किया और मुख्य सचिव सहित विभिन्न पदों पर कार्य किया। आपकी योग्यता, कार्यकुशलता और प्रशासनिक क्षमता से प्रभावित होकर मेवाड़ सरकार ने "राजनीति प्रवीण" और ब्रिटिश सरकार ने "राव बहादुर" की उपाधियां प्रदान की। 1948 में छोटे राजस्थान का निर्माण होने पर आप पुनर्गठन आयुक्त तथा मुख्य सचिव बनाये गये। वर्तमान राजस्थान में आपने बीकानेर और जयपुर संभागों के आयुक्त तथा कृषि, अकाल और बाढ़ राहत आदि विभागों में शासन सचिव के रूप में कार्य किया। 9 मई 1958 को राज्य के मुख्य सचिव पद पर नियुक्ति से पूर्व आपने अतिरिक्त मुख्य सचिव तथा विकास आयुक्त पद पर कार्य किया।

मुख्य सचिव के रूप में श्री मेहता ने जहां राज्य के आर्थिक और सामाजिक विकास को नई गति दी वहां प्रशासनिक स्थायित्व कायम करने में महत्वपूर्ण योगदान किया। 2 अक्टूबर 1959 को राजस्थान में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की शुरुआत करने और पंचायतीराज संस्थाओं को पुनर्जीवन प्रदान करने के साहसिक कदम के पीछे तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया के साथ श्री मेहता की ही लगन, सूझबूझ और संकल्प-शक्ति थी। इसीलिए श्री नेहरू ने नागौर के उस ऐतिहासिक समारोह में कहा था कि "हम लोग जो राजनीति में हैं, वे तो विकेन्द्रीकरण के बारे में सोचते हैं, यह समझ में आता है लेकिन आपके मुख्य सचिव भी पंचायतीराज की स्थापना में इतनी सक्रियता दिखायें, यह वास्तव में तारीफ की बात है।" भारत सरकार ने 26 जनवरी 1961 को "पद्मश्री" से अलंकृत कर उनकी सेवाओं का सम्मान किया।

29 अक्टूबर 1966 को मुख्य सचिव पद और राज्य सेवा से

1952 में आप रामगढ़ तथा 1957 में लक्ष्मणगढ़ क्षेत्र से विधायक चुने गये और श्री टीकाराम पालीवाल और श्री जयनारायण व्यास के मंत्रिमंडलों में शिक्षा, सार्वजनिक निर्माण, रसद एवं आपूर्ति आदि विभागों के मंत्री रहे। 1967 में आप अलवर क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य चुने गये।

मथुरानाथ भट्ट (शास्त्री)

राजस्थान के लब्ध प्रतिष्ठ संस्कृति विद्वान कवि शिरोमणि भट्ट मथुरानाथ शास्त्री का जन्म जयपुर में सन् 1889 में हुआ। आपने जयपुर के संस्कृत कालेज में मधुसूदन ओझा, लक्ष्मीनाथ शास्त्री और श्रीकृष्ण शास्त्री जैसे दिग्गज संस्कृत विद्वानों के पास पढ़कर व्याकरण, शास्त्री और साहित्याचार्य परीक्षायें उत्तीर्ण की। 1906 में आपने पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री परीक्षा सर्वोच्च अंकों से सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की।

भट्टजी ने विविध आधुनिक छन्दों में संस्कृत के तीन काव्य ग्रन्थ लिखे-जयपुर वैभवम्, साहित्य वैभवम् और गोविन्द वैभवम्। इन ग्रन्थों के प्रकाशन की देश के संस्कृत-जगत में काफी चर्चा हुई। इसी के साथ आपने संस्कृत भाषा की जीवंतता सिद्ध करने के लिए बिहारी सतसई के दोहों का संस्कृत में अनुवाद किया जिसकी साहित्य-जगत में काफी ख्याति हुई। इसके अलावा आपने संस्कृत में सात उपन्यास तथा शताधिक लघु कथायें लिखीं जो तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई।

पत्रकारिता के क्षेत्र में सन् 1904 में भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने "संस्कृत रत्नाकर" मासिक का सफल संपादन किया जिसे बाद में अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन ने अपना मुखपत्र घोषित कर दिया। भट्ट जी लगभग अर्द्ध शती तक इसके सम्पादक रहे। 1952 से मृत्यु पर्यन्त आपने "भारती" मासिक का सम्पादन किया। आप 1924 से 26 तक संस्कृत कालेज जयपुर में प्राध्यापक तथा 1934 से 44 तक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष रहे। 1961 में राज्य सरकार ने उन्हें विशिष्ट साहित्यकार के रूप में पुरस्कृत किया। 4 जून 1964 को आपका जयपुर में निधन हुआ।

मथुरालाल शर्मा (डा.)

जाने-माने इतिहासकार और प्राइमेरी स्कूल के साधारण अध्यापक से विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद तक पहुंचने वाले डा. मथुरालाल शर्मा का जन्म कोटा जिले के समसपुर ग्राम में सम्वत 1953 में एक पटवारी के घर हुआ। आपने हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कर अध्यापक के रूप में जीवन प्रारम्भ किया लेकिन उच्च शिक्षा की ललक के कारण आगे चलकर काशी विश्वविद्यालय से प्राचीन शिलालेखों और दुर्लभ सिक्कों पर शोध कर डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। आपने जयपुर और कोटा रियासतों का प्रथम बार प्रामाणिक इतिहास लिखा। आप हर्बर्ट कालेज कोटा और महाराजा कालेज जयपुर के प्राचार्य, शिक्षा विभाग के निदेशक तथा राजस्थान विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रहे।

डा. शर्मा ने इतिहास सम्बन्धी दो दर्जन पुस्तकें लिखी जिनमें मराठों का इतिहास, मुगल साम्राज्य का वैभव एवं अभ्युदय, प्राचीन भारत आदि मुख्य हैं। इसके साथ ही अंग्रेजी के तीन ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद किया। इतिहासकार के नाते आपका डा. राधाकृष्णन और पं. जवाहरलाल नेहरू से भी सम्पर्क रहा 1963 से 1966 तक आप स्वतंत्रपार्टी के टिकट पर जयपुर नगर परिषद के सदस्य तथा उपाध्यक्ष रहे। एक अगस्त 1982 को आपका जयपुर में निधन हुआ।

नामक साप्ताहिक का प्रकाशन किया जिसमें राजस्थान और मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में तत्कालीन राजाशाही द्वारा किये जाने वाले जुल्मों का खुलकर पर्दाफाश किया जाता था। इसी के साथ आपने प्रेस में आप स्वाधीनता आन्दोलन से सम्बन्धित साहित्य भी प्रकाशित करते थे। इससे एक बार अचानक प्रेस पर पुलिस का छापा पड़ा जिसमें डा. राममनोहर लोहिया के हस्ताक्षरों वाली हुंडियां पकड़ी गयीं जिनमें लिखा था कि स्वाधीन होने पर भारत द्वारा इनका पैसा चुकाया जायेगा। पुलिस ने इस पर श्री त्रिवेदी और उनकी पत्नी को गिरफ्तार कर लिया। चार माह बाद आप जब छूट कर आये तो उनका 12 वर्षीय पुत्र सतीन्द्र घर से गायब मिला जिसका बाद में भी कभी पता नहीं चला।

1944 में आपने बांसवाड़ा में प्रजामंडल की स्थापना में योग दिया और राजाशाही द्वारा आदिवासियों से ली जाने वाली बेगार तथा अन्य अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठायी। अप्रेल 1948 में जब बांसवाड़ा में उत्तरदायी लोकप्रिय सरकार का गठन हुआ तो आप मुख्यमंत्री बनाये गये। 1962 में आपने बांसवाड़ा से साप्ताहिक "धनुर्धर" का प्रकाशन शुरू किया।

भोगीलाल पंड्या

राजस्थान में बागड के गांधी कहे जाने वाले श्री भोगीलाल पंड्या का जन्म 13 नवम्बर 1904 को डूंगरपुर जिले के सिमलवाड़ा ग्राम में एक अत्यन्त गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपने डूंगरपुर के महंत तथा राजगुरु सरयूदासजी के मठ में आश्रय पाकर आपने अध्ययन शुरू किया। अभाव और साधन-हीनता की स्थिति में आपने हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की। वे आदिवासियों के मसीहा थे। डूंगरपुर और बांसवाड़ा के आदिवासी बहुल क्षेत्र को आजादी की लड़ाई से जोड़ने और आदिवासियों को सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से आगे लाने में उन्होंने अपना समूचा जीवन कुर्बान कर दिया। डूंगरपुर के राज परिवार ने उन्हें नाना प्रकार की यातनायें दी। वे अनेक बार जेल गये।

श्री माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व में बनी संयुक्त राजस्थान की सरकार में आप चिकित्सा मंत्री और 1952 के प्रथम आम चुनाव में सागवाड़ा से विधायक चुने जाने पर श्री टीकाराम पालीवाल के मंत्रिमंडल में उद्योग और समाज-कल्याण मंत्री बनाये गये। 1952 और 1957 के विधान सभा चुनाव में आपने सागवाड़ा निर्वाचन क्षेत्र में डूंगरपुर के महारावल लक्ष्मणसिंह को पराजित किया। 1962 के चुनाव में आप स्वयं पराजित हुए। इसके बाद आप राजस्थान खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष मनोनीत किये गये। 31 मार्च 1981 को आपका जयपुर में देहावसान हुआ।

भोलानाथ (मास्टर)

मत्स्य क्षेत्र के अग्रणी कांग्रेस नेता मास्टर भोलानाथ का जन्म जून 1911 में अलवर में हुआ। आपने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए 1938 में अलवर रियासत की सेवा से त्यागपत्र दिया। अलवर राज्य प्रजामंडल के आप संस्थापकों में से थे और इसके महामंत्री तथा अध्यक्ष भी रहे। बाद में आप राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य तथा महामंत्री भी रहे। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान आपको तीन बार कारावास की सजा हुई। मत्स्य प्रदेश का निर्माण होने पर आप प्रथम बार सिंचाई व निर्माण मंत्री बनाये गये। आपने "स्वतंत्र भारत" और "कांग्रेस संदेश" का सम्पादन भी किया। शिक्षा के क्षेत्र में आपने अलवर में हैप्पी स्कूल तथा गांधी विद्यालय स्थापित किया।

1952 में आप रामगढ़ तथा 1957 में लक्ष्मणगढ़ क्षेत्र से विधायक चुने गये और श्री टीकाराम पालीवाल और श्री जयनारायण व्यास के मंत्रिमंडलों में शिक्षा, सार्वजनिक निर्माण, रसद एवं आपूर्ति आदि विभागों के मंत्री रहे। 1967 में आप अलवर क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य चुने गये।

मथुरानाथ भट्ट (शास्त्री)

राजस्थान के लब्ध प्रतिष्ठ संस्कृति विद्वान कवि शिरोमणि भट्ट मथुरानाथ शास्त्री का जन्म जयपुर में सन् 1889 में हुआ। आपने जयपुर के संस्कृत कालेज में मधुसूदन ओझा, लक्ष्मीनाथ शास्त्री और श्रीकृष्ण शास्त्री जैसे दिग्गज संस्कृत विद्वानों के पास पढ़कर व्याकरण, शास्त्री और साहित्याचार्य परीक्षायें उत्तीर्ण की। 1906 में आपने पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री परीक्षा सर्वोच्च अंकों से सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की।

भट्टजी ने विविध आधुनिक छन्दों में संस्कृत के तीन काव्य ग्रन्थ लिखे-जयपुर वैभवम, साहित्य वैभवम् और गोविन्द वैभवम्। इन ग्रन्थों के प्रकाशन की देश के संस्कृत-जगत में काफी चर्चा हुई। इसी के साथ आपने संस्कृत भाषा की जीवंतता सिद्ध करने के लिए बिहारी सतसई के दोहों का संस्कृत में अनुवाद किया जिसकी साहित्य-जगत में काफी ख्याति हुई। इसके अलावा आपने संस्कृत में सात उपन्यास तथा शताधिक लघु कथायें लिखीं जो तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई।

पत्रकारिता के क्षेत्र में सन् 1904 में भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने "संस्कृत रत्नाकर" मासिक का सफल संपादन किया जिसे बाद में अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन ने अपना मुखपत्र घोषित कर दिया। भट्ट जी लगभग अर्द्ध शती तक इसके सम्पादक रहे। 1952 से मृत्यु पर्यन्त आपने "भारती" मासिक का सम्पादन किया। आप 1924 से 26 तक संस्कृत कालेज जयपुर में प्राध्यापक तथा 1934 से 44 तक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष रहे। 1961 में राज्य सरकार ने उन्हें विशिष्ट साहित्यकार के रूप में पुरस्कृत किया। 4 जून 1964 को आपका जयपुर में निधन हुआ।

मथुरालाल शर्मा (डा.)

जाने-माने इतिहासकार और प्राइमेरी स्कूल के साधारण अध्यापक से विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद तक पहुंचने वाले डा मथुरालाल शर्मा का जन्म कोटा जिले के समसपुर ग्राम में सम्वत 1953 में एक पटवारी के घर हुआ। आपने हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कर अध्यापक के रूप में जीवन प्रारम्भ किया लेकिन उच्च शिक्षा की ललक के कारण आगे चलकर काशी विश्वविद्यालय से प्राचीन शिलालेखों और दुर्लभ सिक्कों पर शोध कर डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। आपने जयपुर और कोटा रियासतों का प्रथम बार प्रामाणिक इतिहास लिखा। आप हर्बर्ट कालेज कोटा और महाराजा कालेज जयपुर के प्राचार्य, शिक्षा विभाग के निदेशक तथा राजस्थान विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रहे।

डा. शर्मा ने इतिहास सम्बन्धी दो दर्जन पुस्तकें लिखी जिनमें मराठों का इतिहास, मुगल साम्राज्य का वैभव एवं अभ्युदय, प्राचीन भारत आदि मुख्य है। इसके साथ ही अंग्रेजी के तीन ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद किया। इतिहासकार के नाते आपका डा. राधाकृष्णन और पं. जवाहरलाल नेहरू से भी सम्पर्क रहा 1963 से 1966 तक आप स्वतंत्रपार्टी के टिकट पर जयपुर नगर परिषद के सदस्य तथा अध्यक्ष रहे। एक अप्रेल 1982 को आपका जयपुर में निधन हुआ।

पं० मधुसूदन शर्मा ओझा

वैदिक विज्ञान के अन्वेषण में अपना जीवन समर्पित कर देने वाले महान् वेदशास्त्री पं० मधुसूदन ओझा का जन्म विक्रम संवत् 1923 की कृष्ण-जन्माष्टमी को मिथिला के मुजफ्फरपुर जिले के गादा ग्राम में पं० वैद्यनाथ ओझा के यहां हुआ। आपके चाचा पं० राजीवलोचन ओझा को जयपुर महाराजा ने धर्म व्यवस्थापक परीक्षा (मौज मंदिर) का प्रधान नियुक्त किया। चूंकि उनके कोई संतान नहीं थी अतः वे मधुसूदन जी को 8 वर्ष की आयु में वि०सं० 1932 में जयपुर लिवा लाए। यहाँ आपकी शिक्षा महाराजा संस्कृत कालेज के प्राध्यापक श्री रामभजन द्वारा हुई। वि०सं० 1935 में अपने चाचा की मृत्यु के बाद आप अपने गांव लौट गये। वहां से आपने काशी आकर पं० शिवकुमार शर्मा के पास व्याकरण, न्याय, साहित्य, मीमांसा, वेदान्त आदि विषयों पर आठ वर्षों तक गहन अध्ययन कर पूरा अधिकार जमा लिया।

वि० सं० 1946 में आप पुनः जयपुर आ गए। यहाँ आप महाराजा संस्कृत कालेज में प्राध्यापक नियुक्त हुए। जब महाराजा माधोसिंह जी ने इनके पाण्डित्य की चर्चा सुनी तो वि० सं० 1951 में इन्हें मौज मन्दिर (धर्म सभा) का सभापतित्व तथा अपने निजी पुस्तकालय की देखरेख का भार सौंप दिया। तत्पश्चात् आपको रियासत का 'सर्व-प्रधान-पंडित' बना दिया गया। आप केवल शास्त्रों में ही नैपुण्यता नहीं रखते थे वरन् शासन नीति में भी गहन अध्ययन रखते थे। सन् 1906 में कांग्रेस अधिवेशन काशी में किए गए आपके प्रवचनों की व्यापक चर्चा हुई थी।

आपने अपने हाथों से ही अपने समग्र लेखन की पाण्डुलिपि तैयार की तथा उनकी प्रतिलिपि भी तैयार की। आपके लिखे 125 से भी अधिक ग्रंथ प्रकाशित हैं। भारत धर्म महामंडल ने आपकी अद्भुत प्रवचन शैली पर आपको 'महामहोपदेशक' की उपाधि से विभूषित किया था। भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा वि० सं० 1996 (27 सितम्बर 1939) को आपका जयपुर में निधन हो गया।

माणिक्यलाल वर्मा

राजस्थान में जन-चेतना के जनक श्री माणिक्यलाल वर्मा का जन्म 4 दिसम्बर 1897 को भीलवाड़ा जिले के बिजौलिया ग्राम में हुआ। आपने प्रारम्भिक जीवन शिक्षक के रूप में शुरू किया [illegible] श्री विजयसिंह पथिक के सम्पर्क में आने के बाद बिजौलिया में सामन्ती शोषण व उत्पीड़न के विरुद्ध जन-जागरण अभियान में जुट गये। आप उच्च कवि के साथ ही उच्च गायक भी थे। उन्होंने अपनी प्रभावशाली कविताओं और ओजस्वी वाणी से बिजौलिया के ऐतिहासिक किसान-आन्दोलन में नव प्राणों का संचार किया। इसी के परिणामस्वरूप शोषित और पीड़ित किसान सामन्ती जुल्मों के विरुद्ध [illegible] के लिए मैदान में कूद पड़े।

1918 में बेगार प्रथा के विरुद्ध सत्याग्रह के कारण आपको 1919 से 1922 तक और 1927 में [illegible] बार कारावास की सजा हुई। 1932-33 में आपको कुम्भलगढ़ में नजरबन्द किया गया तथा उदयपुर रियासत से निष्कासित किया गया। 1938 में प्रजामण्डल की स्थापना करने पर पुनः गिरफ्तार किया गया और 1939 में एक वर्ष के कारावास की सजा दी गई।

[illegible] 1945 में [illegible] 1948-49 में संयुक्त राजस्थान के [illegible] 1951 में [illegible] 1952 से 54 तक [illegible]

इसके अलावा राजस्थान भील-सेवा मण्डल और विमुक्त जाति सेवक संघ के अध्यक्ष तथा 1954-56 में अखिल भारतीय गाडिया लुहार सम्मेलन चित्तौड़गढ़ के संयोजक रहे। 1947 से 50 तक संविधान सभा के तथा 1950 से 52 तक कार्यकारी संसद के सदस्य रहे।

1952 के प्रथम आम चुनाव में आप चित्तौड़गढ़ से लोकसभा का चुनाव हार गये लेकिन उसी वर्षटोंक क्षेत्र के उपचुनाव में आप लोकसभा सदस्य चुन लिए गये। 1957 में आप उदयपुर तथा 1962 में चित्तौड़गढ़ क्षेत्र से लोकसभा सदस्य चुने गये। 1967 में आप राजस्थान खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष बनाये गये। 24 जनवरी 1969 को वर्माजी का स्वर्गवास हुआ।

मातादीन भगेरिया

देश के जाने-माने कवि और पत्रकार तथा 'नवभारत टाइम्स' के भूतपूर्व सम्पादक श्री भगेरिया का जन्म ज्येष्ठ कृष्णा एकम सम्वत 1969 को झुंझुनूं जिले के बिहावा कस्बे में हुआ। आपने 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने के लिए कालेज की पढ़ाई अधूरी छोड़ दी। सन 1933 में 'तरुण तपस्वी' नामक काव्य लिखा जिस पर दिल्ली में आपको 101 रुपये का पुरस्कार तथा सम्मान पत्र भेंट किया गया। इसके बाद 'प्रेम की वेदी पर' नाटिका, 'दिव्य कुमार का देशाटन', 'बन्धन' 'प्रश्न' और पथेर दावी का पाठक नामक एकांकी और 'कमला-जवाहर' खंड काव्य लिखा। आजादी की लड़ाई के दौरान जेल-यात्रा के समय 'गांधी मानस महाकाव्य की रचना की। शेखावाटी के जयपुर राज्य प्रजामण्डल की गतिविधियों में आपने सक्रिय भाग लिया।

स्वतंत्रता के बाद आपने दिल्ली से प्रकाशित दैनिक 'नवभारत टाइम्स' का वर्षों तक सम्पादन किया। सातवें दशक के मध्य में आप अ भा कांग्रेस के मुखपत्र 'सोशलिस्ट भारत' के भी सम्पादक रहे।

मानसिंह (महाराजा सवाई जयपुर)

जयपुर के पूर्व महाराजा तथा राजस्थान के पूर्व राजप्रमुख सवाई मानसिंह का जन्म 21 अगस्त 1911 को भूतपूर्व जयपुर रियासत के ईसरदा ठिकाने में हुआ था। आपको तत्कालीन जयपुर महाराजा सवाई माधोसिंह ने गोद (दत्तक) लिया था। आपकी शिक्षा अजमेर के मेयो कालेज तथा वूलविच की रायल मिलिट्री अकादमी में हुई थी। आप भारतीय सेना के मानद लेफ्टिनेंट जनरल तथा ब्रिटिश सेना के कैप्टन थे। 61 वीं कैवलरी तथा राजपूताना राइफल्स (सवाई मान गार्ड) के भी आप मानद कमांडर थे। 7 अप्रेल 1949 से 31 अक्टूबर 1956 तक आप राजस्थान के राजप्रमुख रहे। फरवरी 1962 में आप राज्यसभा के सदस्य चुने गए तथा 1965 में स्पेन में भारत के राजदूत नियुक्त हुए। आप एक विश्व प्रसिद्ध पोलो खिलाड़ी भी थे।

जून 1970 में पोलो खेलते हुए घोड़े से गिर जाने से लन्दन में आपका निधन हुआ।

मेहता लज्जाराम शर्मा

राजस्थान के जिस सरस्वती पुत्र को प्रदेश का प्रथम हिन्दी गद्य-निर्माता प्रथम उपन्यासकार और प्रथम पत्रकार होने का सौभाग्य प्राप्त है उसका नाम मेहता लज्जाराम शर्मा है। आपका जन्म प्रथम चैत्र

कृष्णा द्वितीया, वि. सम्वत 1920 अर्थात अप्रेल 1863 में बूंदी में हुआ था। उन्होंने 20 फरवरी 1890 को बूंदी के राजकीय प्रेस से "सर्वहित" नामक पाक्षिक पत्र का प्रकाशन शुरू किया जिसे राजस्थान का प्रथम समाचार पत्र माना जाता है। इसमें देश-विदेश के समाचार, सम्पादकीय टिप्पणियां और पाठकों के पत्र प्रकाशित होते थे। लगभग साढे तीन वर्षों बाद आप उस समय के विख्यात श्री वैंकटेश्वर प्रेस बम्बई के संस्थापक श्री खेमराज के अनुरोध पर बम्बई चले गये और "वैंकटेश्वर समाचार" की स्थापना में सहयोगी बने। 1905 तक आपने इसके प्रधान सम्पादक के रूप में बहुजन हिताय के सिद्धान्त पर संचालन किया।

श्री लज्जाराम मेहता ने "विपत्ति की कसौटी", "धूर्त रसिकलाल", "हिन्दू गृहस्थ", "स्वतंत्र रमा", "परतंत्र लक्ष्मी", "आदर्श दम्पत्ति", "सुशीला विधवा" और "बिगड़े का सुधार" आदि उपन्यास लिखे जिनमें कुछ वैंकटेश्वर प्रेस से छपे। उनके एक प्रसिद्ध जीवनी ग्रंथ "जुझारतेजा" को बाबू श्याम सुन्दर दास ने नागरी प्रचारिणी सभा काशी से प्रकाशित कराया। बाद में द्वितीय संस्करण दुलारे लाल भार्गव ने गंगा-पुस्तक माला लखनऊ से प्रकाशित कराया। इसके बाद आपने "कपटी मित्र", "विचित्र स्त्री चरित्र", "शराबी-की-खराबी", "धूर्त चरित्र" और "पन्द्रह लाख पर पानी" आदि उपन्यास, पराक्रमी हाडशिव, अमीर अब्दुर्रहमान, उम्मेदसिंह चरित्र, विक्टोरिया चरित्र, पं गंगा सहाय का चरित्र तथा जीवनियां तथा स्वयं की आत्म कथा "आपबीती" भी लिखी।

सन् 1929 के हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति पद के लिए मुंशी प्रेमचन्द और "माधुरी" सम्पादक श्री कृष्ण बिहारी मिश्र ने आपके नाम का प्रस्ताव किया जिसे काफी समर्थन भी मिला लेकिन आपने अस्वस्थता के कारण क्षमा मांग ली। आपका निधन 29 जून 1931 को बूंदी में हुआ।

मोतीलाल तेजावत

राजस्थान में भील जाति के उद्धारक श्री मोतीलाल तेजावत का जन्म मेवाड़ के कोलियारी ग्राम में विक्रम सम्वत् 1944 की ज्येष्ठ शुक्ला एकम को हुआ। उदयपुर जिले के झाड़ोल ठिकाने में काम करने के कारण भील, गरासिया और अन्य कृषकों पर होने वाले अत्याचारों को निकट से देखने का आपको अवसर मिला जिसके फलस्वरूप आपने नौकरी छोड़ दी और सम्वत् 1977 में चित्तौड़गढ़ जिले के मातृकुंडिया नामक स्थान पर मेवाड़ राज्य के जुल्मों के खिलाफ "एकी" नामक आन्दोलन का श्रीगणेश किया।

तेजावत जी के नेतृत्व में यह भील आन्दोलन धीरे-धीरे अन्य रियासतों में भी फैल गया। सामन्ती तत्वों ने उन्हें मारने के अनेक प्रयास किये लेकिन वे सदैव बचते रहे। विजयनगर रियासत के नीमड़ा गांव में बेगार को लेकर चल रही सुलह की बातचीत के दौरान मशीनगनों से गोली चलाये जाने के कारण उनके पैर में भी गोली लगी। भील उसी समय उन्हें उठाकर भूमिगत हो गये। आठ वर्षों तक आप भूमिगत रह कर भीलों को संगठित करने के कार्य में जुटे रहे। सन् 1929 में आपको गिरफ्तार कर सात वर्ष के लिए जेल भेज दिया गया। 1938 में प्रजामंडल द्वारा शुरू किये गये आन्दोलन और उसके बाद उन्हें अनेक बार जेल जाना पड़ा। उनके दिल में शोषित-पीड़ित आदिवासियों के प्रति काफी दर्द था। यही कारण था कि वे जीवन-पर्यन्त सामन्ती अत्याचारों और जुल्मों के खिलाफ निरन्तर लड़ते रहे। 5 दिसम्बर 1963 को श्री तेजावत का निधन हुआ।

मोतीलाल शास्त्री

वैदिक साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान पं. मोतीलाल शास्त्री का जन्म जयपुर में पं. बालचन्द्र शास्त्री के घर श्रावण शुक्ला तृतीया सम्वत् 1965 को हुआ। संस्कृत विद्या केन्द्र से शास्त्री की उपाधि प्राप्त कर आपने वेदों के मूर्धन्य ज्ञाता प० मधुसूदन ओझा के सान्निध्य में वैदिक साहित्य के विविध अंगों का गहन अध्ययन किया।

अपने जीवन का अधिकांश भाग आपने वेदों की व्याख्या में लगाया और दिन-रात कठोर परिश्रम कर लगभग अस्सी हजार पृष्ठों में वैदिक साहित्य को परिभाषित किया। इनमें अधिकांश अभी भी अप्रकाशित हैं।

आपने वैदिक साहित्य के प्रकाशन के लिए जयपुर में बहुत पहले श्री बालचन्द्र यन्त्रालय और दुर्गापुरा में मानवाश्रम की स्थापना की। 20 सितम्बर 1960 को आपका स्वर्गवास हुआ।

मोहनलाल सुखाड़िया

आधुनिक राजस्थान के निर्माता श्री मोहनलाल सुखाड़िया का जन्म झालावाड़ जिले के झालरापाटन कस्बे में 31 जुलाई 1916 को श्री पुरुषोत्तमदास सुखाड़िया के यहां हुआ। आपकी माताजी का नाम श्रीमती रमचन्दी बाई था। आपकी शिक्षा नाथद्वारा, उदयपुर और बम्बई में हुई तथा आपने इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा प्राप्त किया। 11 जून 1938 को आप श्रीमती इन्दुबाला के साथ आर्य समाज मन्दिर में वैदिक विधि से विवाह सूत्र में बंधे। आपका राजनीतिक जीवन श्री माणिक्यलाल वर्मा के सान्निध्य में प्रारंभ हुआ और 1939 में मेवाड़ राज्य प्रजामण्डल की गतिविधियों से आप सक्रिय रूप से जुड़ गये। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपको बंदी बना कर [illegible] दिया गया।

1947 में सर्वप्रथम सुखाड़िया श्री टी. विजय राघवाचार्य के प्रधानमंत्रित्व में बनी सरकार में खाद्य व आपूर्ति मंत्री बनाये गये। तत्पश्चात् 18 अप्रैल 1948 से एक [illegible] 49 तक श्री माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व में बने मंत्रिमंडल में विकास एवं श्रम मंत्री, 26 [illegible] 1951 से 4 जनवरी 52 तक वर्तमान राजस्थान में श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में बनी सरकार में कृषि और सिंचाई मंत्री, 3 मार्च 1952 से 31 अक्टूबर 52 तक प्रथम आम चुनाव के बाद बने टीकाराम [illegible] मंत्रिमंडल में [illegible] नवम्बर 52 से 6 नवम्बर 54 तक जयनारायण व्यास मंत्रिमंडल में राजस्व, [illegible], कृषि और सिंचाई मंत्री रहे।

6 नवम्बर 1954 को आपने नेता पद के चुनाव में श्री जयनारायण व्यास को पराजित कर 13 नवम्बर 54 को मात्र 38 वर्ष की आयु में राज्य का मुख्यमंत्री पद सम्भाला। [illegible] 1967 के 47 दिन को छोड़कर 8 जुलाई 1971 तक विद्यमान रहे। उनके [illegible] मुख्यमंत्रित्वकाल की [illegible] एकीकरण की विभिन्न समस्याओं के हल के साथ ही राजस्थान नहर [illegible] परियोजना, चम्बल परियोजना, राजस्थान भूदान मंडल की स्थापना, [illegible] पंचायती राज की स्थापना, जागीरी उन्मूलन और [illegible] उल्लेखनीय है।

श्री सुखाड़िया 1952 से 1967 तक उदयपुर विधान सभा क्षेत्र से विधायक चुने गये और 1 जनवरी 1972 से 9 जनवरी 76 तक कर्नाटक, 10 जनवरी 76 से 15 जून 76 तक [illegible] और 16

जून 1976 से 9 अप्रेल 77 तक तमिलनाडु के राज्यपाल रहने के बाद जनवरी 1980 में उदयपुर क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य चुने गये। 21 दिसम्बर 1981 को आपको बिक्री-कर के बजाय अन्य वैकल्पिक कर लगाने के लिए नियुक्त समिति का अध्यक्ष नियुक्त कर कैबिनेट मंत्री के समकक्ष पद देकर सम्मानित किया गया। 2 फरवरी 1982 को प्रातः बीकानेर में हृदयगति रुक जाने से आपका देहावसान हुआ।

मोहनसिंह मेहता (डा०)

राजस्थान के जाने-माने शिक्षा शास्त्री और राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा० मोहनसिंह मेहता का जन्म 20 अप्रेल, 1895 को भीलवाडा में हुआ था। एम.ए. और एलएल. बी. करने के बाद आपने लन्दन से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की तथा आगरा महाविद्यालय में अर्थशास्त्र के व्याख्याता बने। 1922 में आपने मेवाड राज्य सेवा में प्रवेश किया। 1937–40 के दौरान आप बांसवाडा के दीवान बने तथा 1941–44 में मेवाड मंत्रिमंडल के सदस्य रहे। 1944–47 में आप बासवाडा के मुख्यमंत्री रहे।

श्री मेहता नीदरलैंड तथा स्विट्जरलैंड में भारत के राजदूत तथा पाकिस्तान में उच्चायुक्त भी रहे। 1960–65 के दौरान आप राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। आपने शिक्षा के सर्वांगीण विकास के लिए उदयपुर में सेवा मंदिर की स्थापना की। 1986 में आपका उदयपुर में निधन हुआ।

याज्ञवल्क्य गुरु

स्वतन्त्रता सेनानी और मूक जनसेवी गुरु याज्ञवल्क्य का जन्म सन् 1910 के आसपास वैसे तो उत्तरप्रदेश के अलीगढ शहर में हुआ था, लेकिन अपने जीवन काल के 75 में से 39 वर्ष उन्होंने राजस्थान की जनता की सेवा में समर्पित किये। गुरुजी के पिताजी के इर्द-गिर्द आर्य समाज और कांग्रेस का वातावरण था इसलिए इनके संस्कृत के विद्वान पिता ने इनका नाम यज्ञ रखा। मात्र पांच वर्ष की आयु में आपका यज्ञोपवीत कर दिया गया और 9 वर्ष तक पहुंचते-पहुंचते गुरुजी कौमुदी और अष्टाध्यायी के अध्ययन के साथ ही वैदिक साहित्य के जानकार हो गये। 1921 में उनके पिता ने अमृतसर के निकट गंडावाला स्थित विरजानन्द आश्रम में उन्हें भिजवा दिया जहां उन्होंने अपने अध्ययन के साथ ही पंजाबी बालकों को हिन्दी पढ़ाने और आश्रम में आने वाले सेठों को गीता सुनाने का काम किया। यहीं से उनका नाम ''गुरुजी'' हुआ। 1925 में आश्रम बंद होने पर उन्हें पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के पास पढ़ने बनारस भिजवाया गया जहां उनका नाम यज्ञ से याज्ञवल्क्य हो गया।

बनारस में गुरुजी का सम्पर्क मार्कण्डेय और चन्द्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों से हुआ और बम आदि बनाने शुरु कर दिए। काकोरी केस के बाद आजाद का वारंट निकलते ही गुरुजी को अमृतसर भेज दिया गया। वहां गुरुजी ने विजयकुमार के नाम से क्रांतिकारी गतिविधियाँ शुरु की और मार्च 1929 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुए ऐतिहासिक कांग्रेस अधिवेशन में आपने भाग लिया। इस बीच गुरुजी ने कई बार जेल-यात्रायें की। पांचवें दशक में गुरुजी लाहौर जेल से छूटने के बाद अजमेर आ गये। बाद में गुरुजी कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गये और सदा-सर्वदा के लिए उन्होंने जयपुर को अपना कार्य क्षेत्र बना लिया। उन्हें हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, गुजराती मराठी, राजस्थानी, बंगला आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान था। आजीविका के लिए उन्होंने कलम का सहारा लिया और जयपुर के कई समाचार पत्रों में सम्पादन और स्तंभ लेखन का कार्य किया। वे आजीवन अविवाहित रहे। 7 अक्टूबर 1985 को आपका जयपुर में निधन हुआ।

रमेश स्वामी

बेगार प्रथा के विरोध में शुरू किये गये सत्याग्रह के दौरान भरतपुर जिले के भुसावर कस्बे में 5 फरवरी 1947 को बस स्टैण्ड पर बस के सामने लेट कर अपने प्राणों की बलि देने वाले श्री रमेश स्वामी का जन्म सन 1904 में भुसावर में हुआ और वहीं से मिडिल पास कर सरकारी पाठशाला में अध्यापक नियुक्त हुए। स्वामी जी पर आर्य समाज और वैदिक धर्म का काफी प्रभाव रहा जिससे वे अध्यापक की नौकरी में अधिक नहीं निभ सके और ज्ञान की पिपासा में घूमते हुए लाहौर जा पहुंचे। सार्वदेशिक सभा की ओर से सन 1935 में आपको वैदिक धर्म और हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए बर्मा, मलाया, सियाम तथा दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में भेजा गया।

भरतपुर राज्य प्रजामंडल की स्थापना के बाद आपने गांव-गांव में घूमकर जन-चेतना का संचार किया और 1939 में हुए सत्याग्रह में गिरफ्तारी देकर जेल में पंहुच गये। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन और 1945 में भी आपको गिरफ्तार कर नजर बंद किया गया।

रमेशचन्द्र व्यास

प्रदेश के जाने माने श्रमिक नेता श्री व्यास का जन्म 1915 में भीलवाड़ा जिले के आमली ग्राम में हुआ। छात्र जीवन में ही आप क्रांति-मार्ग के पथिक बन गये और 17 वर्ष की अल्पायु में तो आपने आजादी की लड़ाई में कूद कर जेल-यात्रा शुरू कर दी। यह सिलसिला वर्षों तक चलता रहा। जेल में आपने अनेक बार भूख हड़ताल की। इसी दौरान आप प्रसिद्ध श्रमिक नेता स्वामी कुमारानन्द के सम्पर्क में आये और ब्यावर के मिल-मजदूरों की मांगें मनवाने के लिए संघर्ष में कूद पड़े। 1938 में भीलवाड़ा की मेवाड़ टैक्सटाइल मिल के मजदूरों को दो आने प्रतिदिन की मजदूरी पर दस घंटे रोज काम लिया जाता था- यह श्री व्यास का सहन नहीं हुआ और उन्होंने श्रमिक संघ का गठन कर पहले 22 रुपये और फिर 54 रुपये प्रतिमास करवाये।

1957 के लोक सभा चुनाव में आपने भीलवाड़ा क्षेत्र से टाटा समूह से संबद्ध प्रसिद्ध उद्योगपति श्री होमी मोदी को पराजित किया। 1967 में आप पुन: इसी क्षेत्र से लोक सभा सदस्य चुने गये। राज्य सभा के भी आप सदस्य रहे। 28 दिसम्बर 1974 को आपका निधन हुआ। गत 4 जनवरी को भीलवाड़ा में उप राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा ने आपकी मूर्ति का अनावरण किया।

1948 में जब देश में राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक) की स्थापना हुई और 1949 में राजस्थान में इसकी शाखा खुली तो श्री व्यास प्रथम अध्यक्ष बनाये गये। 1952 में आपने गांधी मजदूर सेवादल बनाया। आप मिल मजदूर संघ, खान मजदूर संघ, सार्वजनिक निर्माण मजदूर संघ, राष्ट्रीय नगरपालिका कर्मचारी संघ, सिंचाई कामगार संघ, खेतीहर मजदूर संघ तथा बीड़ी मजदूर संघ आदि संगठनों के साथ ही वर्षों तक भीलवाड़ा जिला कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। भीलवाड़ा में सर्वप्रथम मजदूर सहकारी समिति भी आपने बनाई तथा भीलवाड़ा सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के आप पांच वर्षों तक अध्यक्ष रहे।

रामकरण जोशी

श्री जोशी का जन्म 2 अक्टूबर 1912 को दौसा जिले के दौसा कस्बे में हुआ। आपने अध्यापक के रूप में कार्य शुरू किया लेकिन राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत होने के कारण अधिक समय तक इसमें नहीं

रह सके और राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पडे। आपने जयपुर राज्य प्रजामंडल द्वारा शुरु किये गये 1939 और 42 के आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया। आप वर्षों तक जयपुर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे।

1952 के आम चुनाव में श्री जोशी सवाईमाधोपुर क्षेत्र से लोकसभा और दौसा क्षेत्र से विधान सभा के लिए एक साथ चुने गये। बाद में आपने लोकसभा से त्याग पत्र दिया और राज्य की प्रथम निर्वाचित पालीवाल सरकार में श्रम, स्वायत्त शासन और पंचायत मंत्री नियुक्त किये गये। एक नवम्बर 52 को बने जयनारायण व्यास मन्त्रिमंडल में भी आप इन्हीं विभागों के मंत्री बने रहे। 1956 में आप कुछ महीनों के लिए सुखाडिया मन्त्रिमंडल में चिकित्सा मंत्री नियुक्त किये गये। 1957 और 1962 के विधान सभा चुनावों में पराजय के बाद दिसम्बर 1966 में *श्री कुंभाराम आर्य और महाराजा हरिश्चन्द्र झालावाड* के साथ आपने कांग्रेस छोडकर भारतीय क्रांतिदल की सदस्यता स्वीकार कर ली। 1971 में आपने लोकसभा का मध्यावधि चुनाव लडा लेकिन सफल नहीं हो सके। श्री जोशी ने कुछ वर्षों तक "सुराज्य" साप्ताहिक का सम्पादन भी किया। 17 जनवरी 1983 को आपका दौसा में देहावसान हुआ।

रामकिशोर व्यास

श्री रामकिशोर व्यास का जन्म 8 मई 1908 को जयपुर में हुआ। बी०ए०, एलएल०बी० करने के बाद आपने जयपुर में वकालत शुरु करने के साथ-साथ समाज सेवा और शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेना शुरु कर दिया। तीसरे दशक में श्री व्यास जयपुर राज्य प्रजामण्डल और बाद में कांग्रेस से जुड़ गये तथा 1938 और 1942 के आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया। आप 1938 से 51 तक जयपुर नगरपरिषद् के सदस्य और 1952 में विधायक चुने जाने तक इसके अध्यक्ष भी रहे।

1952 में श्री व्यास जयपुर के हवामहल क्षेत्र से विधायक चुने गये और श्री टीकाराम पालीवाल के मन्त्रिमण्डल में उद्योग और कानून मंत्री बनाये गये। नवम्बर 1954 में सुखाड़िया मन्त्रिमंडल में आप गृहमंत्री नियुक्त किये गये। 1957 में आप हवामहल क्षेत्र से ही पुनः विधायक चुन गये और गृह मंत्री पद पर यथावत बने रहे। 1962 में श्री व्यास किशनपोल और 1967 में चौमूं क्षेत्र से विधान सभा के चुनाव में पराजित हो गये। 1962 में आप शहर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष के साथ ही जयपुर नगर-निगम न्यास के अध्यक्ष मनोनीत किये गये। दिसम्बर 1966 में आप प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये और अप्रेल 1968 में चौमूं क्षेत्र से उपचुनाव में पुनः विधायक चुने जाकर राजस्व मंत्री नियुक्त किये गये। जुलाई 1971 में श्री बरकतुल्लाह खां की सरकार में आप चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री नियुक्त किये गये। 1972 में चौमूं क्षेत्र से पुनः विधायक चुने जाने के बाद आप 20 मार्च 1972 को राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष चुने गये। इस पद पर आप 17 जुलाई 1977 तक रहे।

1977 के आम चुनाव में आप खड़े नहीं हुए और जनवरी 1978 में कांग्रेस का विभाजन होने पर आप श्रीमती इन्दिरा गांधी की अध्यक्षता वाली कांग्रेस के प्रथम प्रदेशाध्यक्ष मनोनीत किये गये। जनता राज में श्रीमती गांधी की गिरफ्तारी के विरोध में बन्दी बनाये गये थे। [illegible] राजस्थान में [illegible] किया। 1980 के विधान सभा चुनाव में आप जयपुर [illegible] से पराजित हो गये। [illegible] 1981 में [illegible] ने राज्य का [illegible] नियुक्त किया। [illegible] 16 [illegible] 1981 को [illegible] मनोनीत किये गये [illegible] में अचानक हृदयगति से देहावसान हो गया।

रामनारायण चौधरी

राजस्थान के विख्यात राष्ट्र सेवी श्री रामनारायण चौधरी का जन्म सन् 1895 में सीकर जिले के नीम-का-थाना में एक संभ्रांत अग्रवाल परिवार में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा नीम-का-थाना और बाद में महाराजा कालेज जयपुर में हुई। 1914 में आप लोकमान्य तिलक के विचारों से प्रभावित होकर महान देशभक्त पं० अर्जुन लाल सेठी के क्रांतिकारी दल में शामिल हो गये और बाद में उन्हीं के साथ अजमेर चले गये।

1917 में आपकी महात्मा गांधी से भेंट हुई और उनकी प्रेरणा से दलित और शोषित वर्ग की आजीवन सेवा का व्रत लेकर आपने पैतृक संपत्ति का परित्याग कर दिया। 1920 में आपकी केसरीसिंह बारहठ और विजयसिंह पथिक से भेंट हुई तथा उन्हीं के साथ साप्ताहिक "राजस्थान केसरी" के सम्पादन में सहयोग करने लगे। इसी समय एक लेख के कारण आपको तीन माह का कारावास भुगतना पड़ा। 1921 में आपने अजमेर में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना की तथा 1931 तक समूचे प्रदेश में घूम-घूम कर जन-जागरण किया। इस दौरान मेवाड़, बूंदी और जयपुर के किसान आन्दोलनों में सक्रिय रहने पर आप सवा वर्ष तक उदयपुर और 6 माह तक जयपुर जेल में रहे तथा 15 वर्ष के लिए जयपुर से निष्कासित कर दिए गये। 1924 में आप अजमेर के "तरुण राजस्थान" के सम्पादक बनाये गये जिसमें एक लेख पर पुनः आपको तीन माह तक जेल में बंद रहना पड़ा। 1926 में आपने ब्यावर से अंग्रेजी साप्ताहिक "यंग राजस्थान" का प्रकाशन किया। 1932 में आपको अखिल भारतीय कांग्रेस का महामन्त्री नियुक्त किया गया। 1933 से 36 तक आप राजपूताना हरिजन सेवक संघ के पहले मन्त्री और फिर अध्यक्ष रहे। 1940-41 में आप वर्धा में गांधीजी के हिन्दी सचिव रहे। 1942 45 तक भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण आप अजमेर कारावास में बंद रहे। 1945 से 64 तक गांधी साहित्य के लगभग अस्सी हजार पृष्ठों का गुजराती से हिन्दी-अंग्रेजी में अनुवाद किया। 1945 में ही जयपुर से "नया राजस्थान" निकाला। 1950 में श्री रफी अहमद किदवई ने आपको ईरान का राजदूत, 1957 में पं० नेहरू ने केन्द्रीय मन्त्री तथा 1977 में जनता राज में श्री मोरारजी देसाई ने आपको राज्यपाल नियुक्त करने का प्रस्ताव किया। लेकिन आपने सभी पदों को अस्वीकार कर रचनात्मक कार्यों को ही अधिक वरीयता दी। 1955-56 में आप पं० नेहरू द्वारा भारत सेवक समाज के सूचना मन्त्री बनाये गये। 1960 में आपने ग्राम-सहयोग समाज की स्थापना की।

श्री चौधरी ने 1980 में "बीसवीं सदी का राजस्थान", 1987 में "नेहरू जी के साथ दस वर्ष" तथा "नेहरू जी मेरी नजर में" पुस्तकें लिखी। इनसे पूर्व "आधुनिक राजस्थान का उत्थान" तथा अंग्रेजी में "रिफ्लेक्स आफ ए सोशल वर्कर" प्रकाशित हुई 1989 के प्रारंभ में आपका निधन हुआ।

रांगेय राघव (डा०)

हिन्दी-जगत को डेढ़ सौ के लगभग ... ...ले सरस्वती के वरद पुत्र डा० रांगेय राघव का जन्म यद्यपि आगरा में हुआ ... ...पिता तमिल भाषी थे फिर भी भरतपुर जिले के वैर नामक ... उनके जीवन के अनेक वर्ष राजस्थान में बीते और ... ही हुआ।

... आपका मूलनाम टी० ... कारण उनके ... करने के बाद ... की

उपाधि प्राप्त की। 1937 में चौदह वर्ष की अल्पायु में उन्होंने लिखना प्रारंभ किया जो 12 सितम्बर 1962 को मुम्बई में अंतिम क्षणों तक जारी रहा। वह एक साथ पांच-पांच और सात-सात ग्रन्थों तक का लेखन चालू रखने में सिद्धहस्त थे। उनका सबसे पहला उपन्यास "घरौंदे" था जो 1946 में प्रकाशित हुआ। उन्होंने कुल 150 के लगभग ग्रन्थों की रचना की जिनमें उपन्यासों की संख्या लगभग पचास है। सन् 1944 में मात्र 21 वर्ष की आयु में लिखित आपकी काव्य कृति "मेधावी" पर जहां 1200 रुपये का हिन्दुस्तानी एकेडमी पुरस्कार प्राप्त हुआ वहां इसकी प्रशंसा समस्त साहित्य-जगत में हुई।

डा० राघव उच्च कोटि के कवि और साहित्यकार के साथ चित्रकार भी थे। अपने जीवन के अन्तिम वर्ष उन्होंने जयपुर में बिताये जबकि निधन उनका कैंसर रोग की चिकित्सा के दौरान 12 सितम्बर 1962 को मुम्बई में हुआ।

ऋषिदत्त मेहता

बूंदी निवासी श्री ऋषिदत्त मेहता ने महात्मा गांधी के आह्वान पर कालेज की पढ़ायी छोड़ दी और आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। उन्होंने अपने पैतृक ठाठ-बाट को छोड़कर खादी पहिनना शुरु कर दिया। 1928 में उन्होंने मुम्बई से ब्यावर आकर राजस्थान सेवा संघ का कार्य और "तरुण राजस्थान" का सम्पादकीय दायित्व सम्भाला। नमक सत्याग्रह में उन्हें बन्दी बनाकर जेल भिजवा दिया गया। 1932 में उन्हें पुनः दो वर्ष की जेल की सजा दी गई। कुछ अर्से बाद उनकी पत्नी को भी बंदी बनाकर 6 माह के कठोर कारावास की सजा दी गयी। उनके पुत्र श्री स्वाधीन मेहता का जन्म कारावास में ही हुआ।

श्री मेहता ने जेल से छूटने के बाद "राजस्थान" साप्ताहिक का सम्पादन किया। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप पुनः नजरबंद कर दिए गये। रिहाई के बाद अपने बूंदी राज्य लोक परिषद का गठन किया और उत्तरदायी शासन की मांग को लेकर आन्दोलन शुरु किया। 6 जनवरी 1973 को आपका देहावसान हुआ।

लक्ष्मणसिंह (महारावल)

राजस्थान विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष तथा डूंगरपुर रियासत के पूर्व नरेश महारावल लक्ष्मणसिंह का जन्म सात मार्च, 1908 को मध्यप्रदेश के रतलाम जिले के सैलाना ग्राम में हुआ। आपने मेयो कालेज अजमेर में शिक्षा तथा इंग्लैंड में प्रशासनिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। 15 नवम्बर, 1918 को आपका राज्यारोहण हुआ और 16 फरवरी, 1928 को पूर्ण शासनाधिकार प्राप्त हुए। 1931 से 47 तक आप नरेन्द्र मंडल की स्थायी समिति के सदस्य रहे। 1946 में ब्रिटिश कैबिनेट मिशन से मिलने [illegible]।

आपने 1952 में डूंगरपुर और 1957 में आसपुर तथा चित्तौड़गढ़ [illegible] से विधान सभा के चुनाव लड़े लेकिन दोनों क्षेत्रों में ही पराजित हुए। 1952 से 58 तक राज्यसभा के सदस्य रहे। राजस्थान में स्वतंत्र पार्टी की स्थापना होने पर आप 1961 से 69 तक प्रादेशिक इकाई के अध्यक्ष तथा 1961 से 72 तक राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी की कार्यसमिति के सदस्य रहे। 1962 में आप प्रथम बार आसपुर क्षेत्र से [illegible] पार्टी के प्रत्याशी के रूप में विधायक चुने गये और विधान सभा में [illegible] बनाये गये। 1967 और 72 के चुनावों में पुनः आप डूंगरपुर क्षेत्र से विधायक चुने गये। 1977 के चुनाव में [illegible] पर चित्तौड़गढ़ क्षेत्र से विधायक और 13 जुलाई, 1977 को विधानसभाध्यक्ष चुने गये। 24 [illegible] 1979 को आपने त्यागपत्र दे दिया। [illegible] और 1980 के चुनाव में भाग नहीं लिया। 1985 के चुनाव में पुनः आप [illegible] पर चित्तौड़गढ़ क्षेत्र से पुनः विधायक चुने गये। [illegible] को आपका देहावसान हुआ।

लालचन्द्र पुरोहित

पाश्चात्य-जगत को वेदों के ज्ञान भंडार से प्रथम बार अवगत कराने वाले प्रसिद्ध जर्मन विद्वान मैक्समूलर मरुभूमि की जिस विलक्षण प्रतिभा से अत्यन्त प्रभावित थे उसका नाम गुरु लालचन्द्र पुरोहित है। उनका जन्म जोधपुर के एक सामान्य पुष्करणा ब्राह्मण परिवार में सन् 1846 में हुआ। प्रारम्भिक 19 वर्षों में उन्होंने तत्कालीन स्थानीय विद्वानों से संस्कृत का ज्ञानार्जन किया और बाद में 14 वर्षों तक काशी में कठोर परिश्रम के साथ वेदों की भाषा का गहन अध्ययन कर पांडित्य प्राप्त किया। जोधपुर लौटने पर आपका जो भव्य स्वागत किया गया उसमें आपको जिस पालकी में बिठाया गया उसे स्वयं जोधपुर-नरेश ने आगे आकर उठाया।

पंडित लालचन्द्र द्वारा लिखित लगभग बीस ग्रंथ ही उनके जीवनकाल में प्रकाशित हुए लेकिन रचना उन्होंने लगभग एक सौ ग्रंथों की की। वे पं मैक्समूलर के पत्र-मित्र थे और दोनों मित्र एक-दूसरे की विद्वता से अभिभूत थे। उनका अनेक देशी-विदेशी संस्थाओं से सक्रिय जुड़ाव रहा, जिनमें लन्दन की रायल एशियाटिक सोसायटी, थियो सोफिकल सोसायटी, इंडियन आयर सोसायटी, लिटरेरी सोसायटी कलकत्ता, डिप्ली केन लिटरेरी सोसायटी मद्रास, ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन कलकत्ता तथा कलकत्ता सोसायटी फार दी प्रिवेंशन आफ क्रुएल्टी टू एनीमल्स आदि प्रमुख है। आप जोधपुर राज परिवार सहित देश की 49 रियासतों के राज गुरु रहे। उनकी स्मृति में बनारस में आज भी संस्कृत में श्रेष्ठता पाने वाले छात्रों को स्वर्णपदक दिया जाता है।

एल पी टैस्सीटोरी (डा०)

राजस्थानी साहित्य और संस्कृति को विश्व-व्यापी ख्याति दिलाने वाले विदेशी विद्वान और साहित्य-मर्मज्ञ डा० एल पी टैस्सीटोरी का जन्म सन 1887 में इटली के उदीने नामक ग्राम में हुआ था। वे अपने छात्र-जीवन में ही संस्कृत के अध्ययन की ओर आकृष्ट हुए और 1910 में स्नातक की उपाधि के बाद वाल्मीकि रामायण और तुलसीकृत राम-चरित मानस के तुलनात्मक अध्ययन पर शोध-ग्रन्थ प्रस्तुत कर डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की।

सुप्रसिद्ध भाषा शास्त्री डा० ग्रियर्सन डा० टैस्सीटोरी की विद्वता से काफी प्रभावित हुए और उन्होंने कलकत्ता की एशियाटिक सोसायटी के अन्तर्गत राजपूताना के ऐतिहासिक सर्वेक्षण के कार्य के लिए उन्हें भारत बुलवा लिया। आप प्रथम बार 8 अप्रेल 1914 को भारत आये। प्रारम्भ में आप तीन माह कलकत्ता रहे और बाद में अपने साहित्यिक कार्यक्रम को गति देने के लिए जोधपुर आ गए। यहां उनकी श्री रामकरण आसोपा से भेंट हुई जिन्होंने राजस्थानी ग्रन्थों के संकलन कार्य में उनकी काफी सहायता की। डा० टैस्सीटोरी इसके बाद बीकानेर पहुंचे और वहां चारणी और ऐतिहासिक हस्तलिखित ग्रन्थों की एक विवरणात्मक सूची तैयार की। टैस्सीटोरी की बीकानेर में जैन आचार्य विजय धर्म सूरी जी से भी मुलाकात हुई जिससे उन्होंने अनेक जैन धर्म ग्रन्थों का अध्ययन किया। इसी दौरान आपने अनेक राजस्थानी ग्रन्थों का इटेलियन में अनुवाद भी किया।

साहित्य-साधना के साथ ही डा० टैस्सीटोरी ने पुरातत्व के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया। उन्होंने घग्घर नदी के तल में बीकानेर के समस्त प्राचीन टीले और स्थानों की खुदाई कराई जिसमें बहुत से सिक्के, मिट्टी के भांडों के टुकड़े, टेराकोटा और दुर्लभ वस्तुएं मिलीं। जहां कहीं भी उन्हें दर्शनीय कीर्तिस्तम्भ व शिलालेख आदि की जानकारी मिलती—वे स्वयं ही वहां पहुंच जाते थे। डा० टैस्सीटोरी के रग-रग में राजस्थान और राजस्थानी के प्रति प्रेम भरा हुआ था। उन्होंने डिंगल साहित्य की अमूल्य सेवा की।

उपाधि प्राप्त की। 1937 में चौदह वर्ष की अल्पायु में उन्होंने लिखना प्रारंभ किया जो 12 सितम्बर 1962 को बम्बई में अंतिम क्षणों तक जारी रहा। वह एक साथ पांच-पांच और सात-सात ग्रन्थों तक का लेखन चालू रखने में सिद्धहस्त थे। उनका सबसे पहला उपन्यास "घरोंदे" था जो 1946 में प्रकाशित हुआ। उन्होंने कुल 150 के लगभग ग्रन्थों की रचना की जिनमें उपन्यासों की संख्या लगभग पचास है। सन् 1944 में मात्र 21 वर्ष की आयु में लिखित आपकी काव्य कृति "मेधावी" पर जहां 1200 रुपये का हिन्दुस्तानी एकेडमी पुरस्कार प्राप्त हुआ वहां इसकी प्रशंसा समस्त साहित्य-जगत में हुई।

डा० रांगेय राघव उच्च कोटि के कवि और साहित्यकार के साथ चित्रकार भी थे। अपने जीवन के अन्तिम वर्ष उन्होंने जयपुर में बिताये जबकि निधन उनका कैंसर रोग की चिकित्सा के दौरान 12 सितम्बर 1962 को बम्बई में हुआ।

ऋषिदत्त मेहता

बूंदी निवासी श्री ऋषिदत्त मेहता ने महात्मा गांधी के आह्वान पर कालेज की पढ़ाई छोड़ दी और आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। उन्होंने अपने पैतृक ठाठ-बाट को छोड़कर खादी पहिनना शुरु कर दिया। 1928 में उन्होंने बम्बई से ब्यावर आकर राजस्थान सेवा संघ का कार्य और "तरुण राजस्थान" का सम्पादकीय दायित्व सम्भाला। नमक सत्याग्रह में उन्हें बन्दी बनाकर जेल भिजवा दिया गया। 1932 में उन्हें पुनः दो वर्ष की जेल की सजा दी गई। कुछ अर्से बाद उनकी पत्नी को भी बंदी बनाकर 6 माह के कठोर कारावास की सजा दी गयी। उनके पुत्र श्री स्वाधीन मेहता का जन्म कारावास में ही हुआ।

श्री मेहता ने जेल से छूटने के बाद "राजस्थान" साप्ताहिक का सम्पादन किया। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप पुनः नजरबंद कर दिए गये। रिहाई के बाद आपने बूंदी राज्य लोक परिषद् का गठन किया और उत्तरदायी शासन की मांग को लेकर आन्दोलन शुरु किया। 6 जनवरी 1973 को आपका देहावसान हुआ।

लक्ष्मणसिंह (महारावल)

राजस्थान विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष तथा डूंगरपुर रियासत के पूर्व नरेश महारावल लक्ष्मणसिंह का जन्म सात मार्च, 1908 को मध्यप्रदेश के रतलाम जिले के सैलाना ग्राम में हुआ। आपने मेयो कालेज अजमेर में शिक्षा तथा इंगलैंड में प्रशासनिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। 15 नवम्बर, 1918 को आपका राज्यारोहण हुआ और 16 फरवरी, 1928 को पूर्ण शासनाधिकार प्राप्त हुए। 1931 से 47 तक आप नरेन्द्र मंडल की स्थायी समिति के सदस्य रहे। 1946 में ब्रिटिश कैबिनेट मिशन से मिलने इंगलैण्ड गये।

आपने 1952 में डूंगरपुर और 1957 में आसपुर तथा चित्तौड़गढ़ के क्षेत्रों से विधान सभा का चुनाव लड़ा लेकिन दोनों क्षेत्रों में ही पराजित हुए। 1952 से 58 तक राज्यसभा के सदस्य रहे। राजस्थान में स्वतंत्र पार्टी की स्थापना होने पर आप 1961 से 69 तक प्रादेशिक इकाई के अध्यक्ष तथा 1961 से 72 तक राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी की कार्यसमिति के सदस्य रहे। 1962 में आप प्रथम बार डूंगरपुर क्षेत्र से स्वतंत्र पार्टी के प्रत्याशी के रूप में विधायक चुने गये और विधान सभा में प्रतिपक्ष के नेता बनाये गये। 1967 और 72 के चुनावों में पुनः आप डूंगरपुर क्षेत्र से विधायक चुने गये। 1977 के चुनाव में जनता पार्टी के टिकट पर चित्तौड़गढ़ क्षेत्र से विधायक और 18 जुलाई 1977 को विधानसभाध्यक्ष चुने गये। 24 [illegible] 1979 को [illegible] त्यागपत्र दे दिया। [illegible] 1980 के चुनाव में भाग नहीं लिया। 1985 के चुनाव में पुनः [illegible] पर चित्तौड़गढ़ क्षेत्र से पुनः विधायक चुने गये। [illegible]

विचारों के धनी श्री जोशी ने 1944 में प्रजामंडल की सदस्यता ग्रहण की तथा इसकी गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़ गये। आप बी०बी० एण्ड सी०आई० रेलवे कर्मचारी संघ के संस्थापक अध्यक्ष रहे।

1952 से 1972 तक के आम चुनावों में केवल 1967 को छोड़कर आप चार बार कांग्रेस टिकिट पर विधायक और 1952 में विधान सभा कांग्रेस दल के सचिव चुने गये। 1954 से 57 तक आप जयपुर जिला देहात कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा 1975–76 में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री रहे। 1967 से 71 तक सुखाड़िया मंत्रिमंडल में वित्त और समाज-कल्याण विभाग के राज्य मंत्री भी आप रहे।

1978 में कांग्रेस का विभाजन होने पर आप संगठन कांग्रेस में रहे। 10 मार्च 1985 को जयपुर में आपका देहावसान हुआ।

वेदपाल त्यागी

श्री वेदपाल त्यागी का जन्म हाड़ौती के मांगरोल गांव में सन् 1915 में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एलएल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

तीन वर्ष तक पण्डित नेहरू के व्यक्तिगत सम्पर्क में रहकर श्री त्यागी ने स्वतंत्रता संग्राम में खून भाग लिया। कोटा में वकालत करते हुए आपने किसानों की समस्याओं को प्रभावी ढंग से उठाया।

1949–51 के दौरान आप श्री हीरालाल शास्त्री के मंत्रिमंडल में वृहत राजस्थान के विधि मंत्री रहे। 1952 के प्रारंभ में आपने श्री हीरालाल शास्त्री के साथ मिलकर जनता पार्टी का गठन किया लेकिन शीघ्र ही पंडित नेहरू के अनुरोध पर उसे भंग कर दिया। 1952 में आप छबड़ा क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधानसभा सदस्य चुने गये। उसी वर्ष आप राजस्थान विधान सभा कांग्रेस दल के सचिव चुने गये।

1962 में श्री त्यागी को राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद पर नियुक्त किया गया। आगे चलकर आप इसके मुख्य न्यायाधीश बने। 1978 में आप राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति बने।

शंभूदयाल सक्सेना

हिन्दी के विख्यात साहित्यकार और पत्रकार श्री सक्सेना का जन्म सन् 1901 में यद्यपि उ.प्र. के फर्रुखाबाद नगर में हुआ लेकिन उनकी कर्मभूमि बीकानेर रही। शिक्षा समाप्ति के बाद आपने प्रयाग की विख्यात मासिक पत्रिका "चांद", हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा इण्डियन प्रेस में कार्य किया। आपकी रचनायें "माधुरी", "सरस्वती" तथा "विशाल भारत" आदि प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में छपी। प्रयाग में रहते हुए ही आपने 'मीठी चुटकी' तथा 'बहूरानी' उपन्यास लिखा। एक कहानी संग्रह 'सिगरेट' पटना से प्रकाशित हुआ।

1931 में आप स्थायी रूप से बीकानेर आ गये तथा सेठिया संस्थानों में 16 वर्ष तक अध्यापकी की। इसी के साथ आपकी साहित्य साधना भी निरन्तर चलती रही। आपने उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक,एकांकी, खंड काव्य और आलोचना आदि पर लगभग एक सौ पुस्तकें लिखी हैं जिनमें अनेक बहुचर्चित रही है। 1950 से 1960 तक आपने साप्ताहिक 'सेनानी' का संपादन किया।

शिशुपालसिंह (लान्स हवलदार)

लान्स हवलदार श्री शिशुपालसिंह का जन्म नागौर जिले की लाडनूं तहसील के [illegible] ग्राम में हुआ था। 18 दिसम्बर 1961 को आप गोआ में एक कम्पनी के प्लाटून का कमाण्ड कर रहे थे। इस समय आपको द्वीप को मुख्य द्वीप से अलग करने वाली एक खाड़ी को पार करने का आदेश मिला। किनारे से कुछ दूर आगे चलने पर उन्होंने देखा कि उनके [illegible]

1919 में अपनी माता की गम्भीर बीमारी का समाचार मिलने पर वे स्वदेश गये। लेकिन उनके वहाँ पहुँचने से पूर्व ही वे स्वर्ग सिधार चुकी थी। इससे उन्हें बड़ा आघात लगा। अतः लगभग 6 माह वहाँ रहकर पहली नवम्बर को आप वापस भारत आ गये। सफर की थकान और माँ के सदमे से आप आते ही बीमार हो गये और 22 नवम्बर 1919 को बीकानेर में ही परलोक सिधार गये। इस प्रकार राजस्थानी साहित्य का यह विदेशी गुण-ग्राहक यहाँ के धोरों की धरती में सदैव के लिए समा गया।

विजयसिंह पथिक

राजस्थान में किसान आन्दोलन के जनक श्री विजयसिंह पथिक का जन्म यद्यपि उत्तरप्रदेश के बुलन्दशहर जिले के गुठवाली ग्राम में एक गूजर-परिवार में हुआ तथापि उनका कार्यक्षेत्र राजस्थान रहा। इनका वास्तविक नाम भूपसिंह था किन्तु आजादी की लड़ाई के दौरान जब ये टाडगढ़ में नजरबंदी से वेश बदल कर भागे तो अपना नाम भी भूपसिंह से विजयसिंह पथिक कर लिया। भीलवाड़ा जिले के बिजौलिया नामक स्थान पर तत्कालीन सामंती अत्याचारों के विरुद्ध पथिक जी ने किसानों में जन-चेतना का जो अलख जगाया और बिजौलिया किसान आन्दोलन का जिस योग्यता और कुशलता से संचालन किया, वह राजस्थान के स्वतन्त्रता संग्राम का गौरवपूर्ण अध्याय बन गया।

श्री पथिक स्वतंत्रता संग्राम के साहसी योद्धा के साथ-साथ कुशल साहित्यकार और पत्रकार भी थे। उन्होंने वर्धा से "राजस्थान केसरी" का प्रकाशन करने के साथ ही राष्ट्रीय-चेतना से संबद्ध अन्य पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भी लोगों को जागृत किया।

28 मई, 1954 को पथिकजी का देहावसान हुआ।

विद्याधर शास्त्री (पं०)

संस्कृत-जगत के शीर्ष व्यक्तित्वों में से एक राष्ट्रीय पंडित विद्याधर शास्त्री का जन्म एक अगस्त 1901 को बीकानेर में हुआ। इनके पिता पं० देवीप्रसाद शास्त्री और पितामह पं० हरनामदत्त- [illegible] व्याकरण, वेद, धर्मशास्त्र और ज्योतिष के माने हुए विद्वान थे। आपका बचपन [illegible] और चूरू में बीता और बाद में ब्रह्मचर्य आश्रम भिवानी चले गये जहाँ वैदिक विद्वान पं० सीताराम [illegible] में अध्ययन प्रारम्भ हुआ। बाद में आपने सुप्रसिद्ध ब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वार में पं० गिरधर शर्मा से तर्क-न्याय, साहित्य, कौमुदी और दार्शनिक ग्रन्थों का अध्ययन किया। यहाँ आपने [illegible] और [illegible] के अन्तराल में प्रकृष्ट रूप से अनेक परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। बाद में आगरा विश्वविद्यालय से [illegible] एम०ए० किया। 1928 में आप डूंगर महाविद्यालय बीकानेर में व्याख्याता नियुक्त हुए।

शास्त्री जी की विद्वता के कारण अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन के [illegible] अवसर पर तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन ने "विद्यावाचस्पति" की उपाधि से सम्मानित किया। [illegible] संस्कृत प्रचारक [illegible] ने आपको "[illegible]" और राजस्थान साहित्य अकादमी ने सर्वोच्च उपाधि "मनीषी" से भी अलंकृत किया। 1972 में तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि ने आपको [illegible] भारतीय [illegible] के [illegible] और केन्द्र सरकार ने [illegible] 15 [illegible] रुपया इनके सम्मानार्थ भेंट करने की घोषणा की। [illegible] "विद्यारत्न" की उपाधि प्रदान की। 24 [illegible] 1983 को [illegible] निधन हुआ।

विश्वम्भरनाथ जोशी

[illegible] 11 जनवरी 1921 को [illegible] में हुआ। [illegible]
और [illegible] 1944 में [illegible]
[illegible] 1941 में [illegible]

विचारों के धनी श्री जोशी ने 1944 में प्रजामंडल की सदस्यता ग्रहण की तथा इसकी गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़ गये। आप बी०बी० एण्ड सी०आई० रेलवे कर्मचारी संघ के संस्थापक अध्यक्ष रहे।

1952 से 1972 तक के आम चुनावों में केवल 1967 को छोड़कर आप चार बार कांग्रेस टिकिट पर विधायक और 1952 में विधान सभा कांग्रेस दल के सचिव चुने गये। 1954 से 57 तक आप जयपुर जिला देहात कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा 1975-76 में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री रहे। 1967 से 71 तक सुखाड़िया मंत्रिमंडल में वित्त और समाज-कल्याण विभाग के राज्य मंत्री भी आप रहे।

1978 में कांग्रेस का विभाजन होने पर आप संगठन कांग्रेस में रहे। 10 मार्च 1985 को जयपुर में आपका देहावसान हुआ।

वेदपाल त्यागी

श्री वेदपाल त्यागी का जन्म हाड़ौती के मांगरोल गांव में सन् 1915 में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एलएल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

तीन वर्ष तक पण्डित नेहरू के व्यक्तिगत सम्पर्क में रहकर श्री त्यागी ने स्वतंत्रता संग्राम में खुल भाग लिया। कोटा में वकालत करते हुए आपने किसानों की समस्याओं को प्रभावी ढंग से उठाया।

1949-51 के दौरान आप श्री हीरालाल शास्त्री के मंत्रिमंडल में वृहत राजस्थान के विधि मंत्री रहे। 1952 के प्रारंभ में आपने श्री हीरालाल शास्त्री के साथ मिलकर जनता पार्टी का गठन किया लेकिन शीघ्र ही पंडित नेहरू के अनुरोध पर उसे भंग कर दिया। 1952 में आप छबड़ा क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधानसभा सदस्य चुने गये। उसी वर्ष आप राजस्थान विधान सभा कांग्रेस दल के सचिव चुने गये।

1962 में श्री त्यागी को राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद पर नियुक्त किया गया। आगे चलकर आप इसके मुख्य न्यायाधीश बने। 1978 में आप राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति बने।

शंभूदयाल सक्सेना

हिन्दी के विख्यात साहित्यकार और पत्रकार श्री सक्सेना का जन्म सन् 1901 में यद्यपि उ.प्र. के फर्रुखाबाद नगर में हुआ लेकिन उनकी कर्मभूमि बीकानेर रही। शिक्षा समाप्ति के बाद आपने प्रयाग की विख्यात मासिक पत्रिका "चांद", हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा इंडियन प्रेस में कार्य किया। आपकी रचनायें "माधुरी", "सरस्वती" तथा "विशाल भारत" और प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में छपी। प्रयाग में रहते हुए ही आपने 'मीठी चुटकी' तथा 'बहूरानी' उपन्यास लिखा। एक कहानी संग्रह 'निर्माल्य' पटना से प्रकाशित हुआ।

1931 में आप स्थायी रूप से बीकानेर आ गये तथा सादुल संस्थान में 16 वर्ष तक अध्यापक रहे। इसी के साथ आपकी साहित्य साधना भी निरन्तर चलती रही। आपने उपन्यास, कहानी, काव्य, नाटक,एकांकी, बाल काव्य और आलोचना आदि पर लगभग एक सौ पुस्तकें लिखी हैं जिनमें अनेक पुरस्कृत रही हैं। 1950 से 1960 तक आपने साप्ताहिक 'सेनानी' का संचालन किया।

शिशुपालसिंह (लान्स हवलदार)

लान्स हवलदार श्री शिशुपालसिंह का जन्म नागौर जिले की लाडनूं तहसील के [illegible] गांव में हुआ था। 18 दिसम्बर 1961 को आप गोआ में एक कम्पनी के प्लाटून की कमाण्ड कर रहे थे। इस कम्पनी को आदेश हुआ कि शत्रु के मुख्य ठिकाने पर आक्रमण करना है [illegible] [illegible] बढ़ते हुए आगे बढ़ने पर उन्होंने देखा कि उनके [illegible] [illegible]

गोली का शिकार होकर डूब रहे हैं। यह देखकर शिशुपालसिंह अपने जीवन की परवाह न करते हुए पानी में कूद पड़े और अपने आदमियों को बचा लिया। लेकिन इसी समय उन्हें विपक्षियों की मशीनगन की गोली लगी जो उनके लिए प्राणघातक साबित हुई। उनके इस अदम्य साहसपूर्ण कृत्य ने सैनिकों में एक नया साहस फूंका जिससे वे द्वीप पर अपने पैर फिर जमा सके।

इस वीरतापूर्ण कृत्य के लिए उन्हें मरणोपरान्त "अशोक-चक्र" से सम्मानित किया गया।

शैतानसिंह (मेजर)

"परमवीर-चक्र" विजेता मेजर शैतानसिंह का जन्म 1 दिसम्बर 1924 को जोधपुर जिले की फलौदी तहसील के बाणासर ग्राम में हुआ था। 1962 के भारत-चीन युद्ध में कुमाऊँ रेजीमेन्ट के कम्पनी कमाण्डर के रूप में आप लद्दाख के चुशूल क्षेत्र में तैनात थे। 18 नवम्बर 1962 को चीनी सैनिकों ने भारी तोपों, मोर्टारों और बन्दूकों से हमारी कम्पनी पर भारी हमला बोल दिया। इस आक्रमण के समय मेजर शैतानसिंह ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए घूम-घूम कर सारी स्थिति को काबू में रखा और सैनिकों को जोश दिलाते रहे। इस दौरान वे गंभीर रूप से घायल हो गए। अन्त में जब बचे हुए दो सैनिकों ने उन्हें [illegible]
[illegible]
पर वीर गति को प्राप्त हुए।

भारत सरकार ने उनकी इस बहादुरी के लिए उन्हें मरणोपरान्त सर्वोच्च सैनिक सम्मान "परमवीर-चक्र" से सम्मानित किया।

शोभाराम

राजस्थान में मत्स्य क्षेत्र के नेता श्री शोभाराम का जन्म 7 जनवरी, 1914 को अलवर में हुआ। लखनऊ से एलएल.बी. करने के बाद आपने अलवर में ही वकालत शुरू की लेकिन 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान आप वकालत छोड़ कर स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े। 1943 में महात्मा गांधी ने जब आमरण अनशन शुरू किया तो उनके समर्थन में आपने भी 17 दिन का अनशन किया। इसके बाद अलवर रियासत में जितने भी जनान्दोलन हुए उनमें आपने सक्रिय भाग लिया।

श्री शोभाराम अलवर राज्य प्रजामंडल के चार वर्ष तक अध्यक्ष रहे। [illegible] ग्राम में आपने बुनियादी शिक्षा और खादी तथा रचनात्मक कार्यों के शिक्षण के लिए [illegible] की। 1946 से 48 तक आप अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद [illegible] के सदस्य रहे।

18 मार्च 1948 को मत्स्य संघ का निर्माण होने पर [illegible] 1949 में संयुक्त राजस्थान बनने पर [illegible] 1952 से 62 तक [illegible] राजस्थान में [illegible] 1962 में [illegible] [illegible] 1967 और 1972 [illegible] 1980 में [illegible] [illegible] अलवर में [illegible]

स्वरूप व्यास

भारतीय वृत्त चित्रों के प्रसिद्ध वाणीकार श्री स्वरूप व्यास का जन्म सन 1925 में उदयपुर में हुआ। आपने लगभग पांच हजार वृत्त चित्रों में अपनी वाणी दी जिनमें तीन हजार वृत्त चित्रों का लेखन भी सम्मिलित है। उन्होंने कई लघु नाटकों के अतिरिक्त नृत्य-नाट्यों का लेखन भी किया। इनमें अशोक मर्यादित, डिस्कवरी आफ इण्डिया, आजादी और इन्सान, पत्थर और पायल, जीवन ज्योति, स्वप्न दर्शन एवं कीर्ति कलश प्रमुख हैं।

श्री व्यास का निधन 25 अगस्त 1984 को उदयपुर म हुआ।

सम्पूर्णानन्द (डा.)

16 अप्रेल, 1962 से 15 अप्रेल 1967 तक राजस्थान के (द्वितीय) राज्यपाल पद पर रहे डा० सम्पूर्णानन्द का जन्म एक जनवरी 1890 को काशी में एक संभ्रान्त कायस्थ परिवार में हुआ। बी एससी और एल. टी की उपाधियाँ प्राप्त करने के बाद लगभग दस वर्षों तक काशी, वृन्दावन, इन्दौर और बीकानेर के डूंगर महाविद्यालय में अध्यापन किया। 1920 में महात्मा गांधी के आह्वान पर बीकानेर में ही राज्य सेवा से त्यागपत्र देकर आप असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े और काशी को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। इसके बाद विभिन्न आन्दोलनों में कुल मिलाकर सात बार में आपको साढ़े बारह वर्षों तक कठोर कारावास की यातनाऐं सहनी पड़ीं। इन्हीं दिनों आचार्य नरेन्द्र देव के साथ आपने कांग्रेस-सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की और बम्बई में आयोजित द्वितीय वार्षिक अधिवेशन का सभापतित्व किया। 1934 में हुए प्रान्तीय धारा सभा के चुनाव में आप विजयी हुए और पं गोविन्द वल्लभ पंत के मंत्रिमंडल के शिक्षा मंत्री नियुक्त हुए। 1939 में कांग्रेस के साथ तत्कालीन शासन के मतभेद बढ़ जाने पर मंत्रिमंडल के त्यागपत्र दे दिया। 1946 में पुनः धारा सभा के चुनाव में कांग्रेस के विजयी होने पर पं पंत के नेतृत्व में बने मंत्रिमंडल में आप शिक्षा, सूचना और श्रम आदि विभागों के मंत्री बनाये गये। बाद में आपने गृह और वित्त विभाग भी संभाले। 1954 से 1959 तक आप उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे।

डा. सम्पूर्णानन्द राजनीति में अत्यधिक व्यस्त रहने के बावजूद सरस्वती के आजीवन उपासक रहे। वे हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, ज्योतिष, दर्शन, खगोल शास्त्र, इतिहास और विज्ञान के प्रकाण्ड पंडित थे। उन्होंने विभिन्न विषयों पर 63 ग्रंथों की रचना की जो सभी अपने विषय के सर्वोत्तम ग्रंथों की श्रेणी में माने जाते हैं। आपके राज्यपाल काल में 1967 के विधानसभा चुनावों के उपरांत सरकार के गठन के प्रश्न को लेकर राज्य में तीव्र विवाद उत्पन्न हो गया जिसके फलस्वरूप 19 मार्च 1967 से 28 अप्रेल 1967 तक राष्ट्रपति शासन लागू रहा। 10 जनवरी 1969 को वाराणसी में आपका स्वर्गवास हुआ।

समर्थदान (मनीषी)

मनीषी समर्थदान राजस्थान के प्रथम हिन्दी पत्रकार तथा उनका पत्र "राजस्थान समाचार" राजस्थान का प्रथम हिन्दी दैनिक समझा जाता है। आपका जन्म सन् 1857 में सीकर जिले के नेछवा ग्राम में हुआ था। सन 1880 में महर्षि दयानन्द ने उन्हें मनीषी की उपाधि से अलंकृत किया तथा वेद-साहित्य के मुद्रण हेतु अजमेर में पहला मुद्रण प्रेस वैदिक यंत्रालय खुलवाकर आपको उसका प्रबंधक नियुक्त किया। बाद में आपने इससे पृथक हो राजस्थान यंत्रालय के नाम से स्वयं का प्रेस स्थापित किया और सन् 1889 में इसी से "राजस्थान समाचार" साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारम्भ किया। कुछ विद्वान इस पत्र का प्रकाशन

अभी दूर है। तुम्हें बात कम और काम अधिक करना चाहिए।" बस यही सीख उनके जीवन का मूलमंत्र बन गयी और मन-ही-मन यह संकल्प ले बैठे कि उन्हें राजस्थानी का एक ऐसा शब्द कोश तैयार करना है जिसमें राजस्थानी का कोई भी शब्द नहीं छूटने पाये।

अपने इस संकल्प को मूर्तरूप देने में लालस जी अपना परिवार, व्यक्तिगत जीवन और सुख-सुविधायें सब भूल गये और लगभग आधी सदी तक कठोर साधना कर जो कोश तैयार किया उसे देखकर आने वाली पीढ़ियां सचमुच आश्चर्य करेंगी कि कैसे एक मामूली और साधन-विहीन व्यक्ति ने दस जिल्दों में दो लाख से अधिक शब्दों का यह अमर ग्रंथ तैयार किया होगा। वास्तव में वे शब्द-पुरुष थे जिनका समूचा जीवन ही शब्दमय हो गया था। इस महान उपलब्धि के कारण ही "इंसायक्लोपीडिया ब्रिटेनिया" ने श्री लालस को राजस्थानी जुबां की मशाल कह कर सम्बोधित किया। उनके कृतित्व को मान्यता स्वरूप राजस्थान साहित्य अकादमी ने 1973 में उन्हें "मनीषी", 1976 में जोधपुर विश्वविद्यालय के डा. लिट की मानद उपाधि तथा भारत सरकार ने 26 जनवरी 1977 को "पद्मश्री" के अलंकरण से विभूषित किया। 29 दिसम्बर 1986 को उनका जोधपुर में स्वर्गवास हुआ।

सुधीन्द्र (डा०)

हिन्दी के जाने-माने प्रगतिवादी कवि डा. सुधीन्द्र का जन्म कोटा जिले के खेराबाद ग्राम में कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी सम्वत 1972 को हुआ। आपने आगरा विश्वविद्यालय से बी.ए. नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. करने के बाद पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। प्रारम्भ में आपने कुछ दिनों कोटा में काम किया और 1937 में श्री हरिभाऊ उपाध्याय के निजी सचिव बनकर हटूंडी चले गये। दो वर्ष बाद आप दिल्ली चले गये जहां 'जीवन साहित्य' के सम्पादन में योग दिया। 1942 से 52 तक वनस्थली विद्यापीठ में अध्यापन किया।

डा. सुधीन्द्र की राष्ट्रीयता से ओतप्रोत प्रारंभिक कवितायें तत्कालीन प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकायें यथा 'चांद', 'सुकवि', 'प्रताप', 'अर्जुन' और 'सैनिक' में प्रकाशित हुई। 'शंखनाद', 'मेरे गीत', 'प्रलय वीणा', 'जौहर', 'अमृतलेखा' और 'प्रेयध' आदि आपके प्रकाशित कविता संग्रह हैं। आपका निधन 15 जून 1954 को आगरा में हुआ।

सुमनेश जोशी

राजस्थान के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, कवि एवं पत्रकार श्री सुमनेश जोशी का जन्म 3 सितम्बर 1916 को जोधपुर में हुआ। 16 वर्ष की आयु में ही आपने राष्ट्र-प्रेम से ओत-प्रोत कविताएँ लिखना प्रारंभ कर दिया था जो आगरा के "सैनिक", कानपुर के "प्रताप" तथा इलाहाबाद के "अभ्युदय" आदि पत्रों में प्रकाशित होती थीं। लोकनायक जयनारायण व्यास के सान्निध्य में आपने सामाजिक उत्थान के कार्य भी किये। जोधपुर में कन्या पाठशाला खोलने के लिए धन जुटाने का एक अद्भुत तरीका आपने खोजा। नगर के विभिन्न इलाकों में आपने घड़े रखवा दिए तथा स्त्रियों से आग्रह किया कि वे इनमें एक-एक मुट्ठी आटा प्रतिदिन डाला करें। इस प्रकार तीन-चार साल में एकत्रित आटे की बिक्री से पाठशाला का निर्माण हुआ।

1938 में आप जोधपुर रियासत के प्रचार अधिकारी नियुक्त हुए लेकिन फिर भी आपकी क्रांतिकारी कविताओं में कोई कमी नहीं आई जिससे जोधपुर राजघराना आपसे सदा सशंकित रहने लगा। 1940 में जोधपुर में लोक परिषद् आन्दोलन जब तेज हुआ तो आपने उसके मंच से कविताएँ पढ़नी शुरु कर दीं। आपको राजघराने से समय-समय पर चेतावनी दी गई लेकिन आप उसकी अनदेखी करते रहे।

1885 में मानते हैं। बाद में यह पत्र अर्द्ध-साप्ताहिक और रूस-जापान युद्ध के दौरान दैनिक हो गया। 1914 में मनीषी जी का देहावसान हुआ लेकिन यह पत्र भारी घाटे के कारण उनके जीवन काल में ही बंद हो गया।

सागरमल गोपा

अमर शहीद सागरमल गोपा का जन्म जैसलमेर के एक सम्पन्न पुष्करणा ब्राह्मण परिवार में 3 नवम्बर 1900 को हुआ। उनके पिता का नाम अखैराज था जो स्वयं जैसलमेर रियासत में अच्छे पद पर नियुक्त थे। इस समय जैसलमेर में महारावल जवाहरसिंह का निरंकुश शासन था जो समय की नब्ज को नहीं पहचान कर अपनी प्रजा के प्रति रूढ़ व्यवहार के कारण काफी कुख्यात हो गये थे। उन्होंने अपने इर्द-गिर्द स्वार्थी और चापलूस लोगों की फौज एकत्रित कर ली थी। गोपाजी ने इस स्थिति से दुखी होकर "जैसलमेर राज्य का गुण्डा शासन" नामक एक पुस्तक लिखी जिसमें महारावल की तानाशाही पर खुलकर प्रकाश डाला गया था। उन्होंने 16 नवम्बर 1930 को श्री रघुनाथसिंह और श्री आइदानसिंह के साथ मिलकर श्री जवाहरलाल नेहरू के आरोग्य लाभ के लिए भी ईश्वर से प्रार्थना का एक पर्चा प्रकाशित किया जिसे सरकार सहन नहीं कर सकी और तीनों जनों पर मुकदमा चलाया गया। श्री गोपा ने 1921 में असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और और देशी रियासतों के बारे में खास ध्यान दिया जिससे उनका न केवल जैसलमेर वरन् हैदराबाद तक में प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया।

1939 में जब श्री गोपा के पिताजी का निधन हुआ तब वे जैसलमेर में नहीं थे। जैसलमेर जाना उनके लिए तब खतरे से खाली नहीं था। उनके शुभचिन्तकों ने उन्हें जैसलमेर नहीं जाने का परामर्श दिया, लेकिन उन्हें यह परामर्श कायरतापूर्ण लगा। मित्रों के अनुरोध पर वे जोधपुर जाकर रेजीडेंट से मिले और उन्हें सारी स्थिति बताकर यह आश्वासन चाहा कि उनके जैसलमेर जाने पर किसी प्रकार का दुर्व्यवहार नहीं हो। रेजीडेंट ने जैसलमेर के दीवान से पत्र-व्यवहार कर पहले मौखिक और फिर लिखित रूप में यह स्पष्ट आश्वासन दिया कि जैसलमेर में तुम्हारे विरुद्ध कोई मामला नहीं है और वहाँ जाने पर सरकार की तरफ से किसी प्रकार के दुर्व्यवहार की आशंका नहीं करनी चाहिए। रेजीडेंट का यह लिखित आश्वासन [illegible] उन्हें फँसाने की एक चाल थी। 25 मई, 1941 को जब वे जैसलमेर छोड़ने ही वाले थे कि उन्हें [illegible] कुएँ पर [illegible] करते समय पीठ से लाठी मारकर राजद्रोह का गिरफ्तार कर लिया और फिर [illegible] घसीट दिया गया। उन्हें दो अपराधों में तीन-तीन वर्ष के कठोर कारावास की सजा तथा 250-250 रुपये का अर्थदण्ड दिया गया। जुर्माना राशि जमा नहीं कराने पर 6-6 माह का कारावास की सजा भुगतने का आदेश दिया गया।

25 मई, 1941 से लम्बी सजा काटने के बाद 3 अप्रैल, 1946 को [illegible] के [illegible] तेल डालकर [illegible] कर दिया गया जिससे 4 अप्रैल को उनका देहावसान हो गया। उन्हें [illegible] शारीरिक अत्याचार दिये गये [illegible] के राजनीतिक इतिहास में [illegible] है।

[illegible] (डा.)

राजस्थानी भाषा के [illegible] जोधपुर जिले के [illegible] जन्म उनके ननिहाल [illegible] जिले के [illegible] ग्राम में 23 नवम्बर 1912 को हुआ। [illegible] 1912 में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अभी दूर है। तुम्हें बात कम और काम अधिक करना चाहिए।" बस यही सीख उनके जीवन का मूलमंत्र बन गयी और मन-ही-मन यह संकल्प ले बैठे कि उन्हें राजस्थानी का एक ऐसा शब्द कोश तैयार करना है जिसमें राजस्थानी का कोई भी शब्द नहीं छूटने पाये।

अपने इस संकल्प को मूर्तरूप देने में लालस जी अपना परिवार, व्यक्तिगत जीवन और सुख-सुविधायें सब भूल गये और लगभग आधी सदी तक कठोर साधना कर जो कोश तैयार किया उसे देखकर आने वाली पीढ़ियां सच्मुच आश्चर्य करेंगी कि कैसे एक मामूली और साधन-विहीन व्यक्ति ने दस जिल्दों में दो लाख से अधिक शब्दों का यह अमर ग्रंथ तैयार किया होगा। वास्तव में वे शब्द-पुरुष थे जिनका समूचा जीवन ही शब्दमय हो गया था। इस महान उपलब्धि के कारण ही "इंसाक्लोपीडिया ब्रिटेनिया" ने श्री लालस को राजस्थानी जुबां की मशाल कह कर सम्बोधित किया। उनके कृतित्व को मान्यता स्वरूप राजस्थान साहित्य अकादमी ने 1973 में उन्हें "मनीषी", 1976 में जोधपुर विश्वविद्यालय के डा लिट. की मानद उपाधि तथा भारत सरकार ने 26 जनवरी 1977 को "पद्मश्री" के अलंकरण से विभूषित किया। 29 दिसम्बर 1986 को उनका जोधपुर में स्वर्गवास हुआ।

सुधीन्द्र (डा०)

हिन्दी के जाने-माने प्रगतिवादी कवि डा. सुधीन्द्र का जन्म कोटा जिले के खैराबाद ग्राम में कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी सम्वत 1972 को हुआ। आपने आगरा विश्वविद्यालय से बी.ए. नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम ए. करने के बाद पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। प्रारम्भ में आपने कुछ दिनों कोटा में काम किया और 1937 में श्री हरिभाऊ उपाध्याय के निजी सचिव बनकर हटूंडी चले गये। दो वर्ष बाद आप दिल्ली चले गये जहां 'जीवन साहित्य' के सम्पादन में योग दिया। 1942 से 52 तक वनस्थली विद्यापीठ में अध्यापन किया।

डा. सुधीन्द्र की राष्ट्रीयता से ओतप्रोत प्रारंभिक कवितायें तत्कालीन प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकायें यथा 'चांद', 'सुकवि', 'प्रताप', 'अर्जुन' और 'सैनिक' में प्रकाशित हुई। 'शंखनाद', 'मेरे गीत', 'प्रलय वीणा', 'जौहर', 'अमृतलेखा' और 'प्रेयच' आदि आपके प्रकाशित कविता संग्रह हैं। आपका निधन 15 जून 1954 को आगरा में हुआ।

सुमनेश जोशी

राजस्थान के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, कवि एवं पत्रकार श्री सुमनेश जोशी का जन्म 3 सितम्बर 1916 को जोधपुर में हुआ। 16 वर्ष की आयु में ही आपने राष्ट्र-प्रेम से ओत-प्रोत कविताएँ लिखना प्रारंभ कर दिया था जो आगरा के "सैनिक", कानपुर के "प्रताप" तथा इलाहाबाद के "अभ्युदय" आदि पत्रों में प्रकाशित होती थी। लोकनायक जयनारायण व्यास के सान्निध्य में आपने सामाजिक उत्थान के कार्य भी किये। जोधपुर में कन्या पाठशाला खोलने के लिए धन जुटाने का एक अद्भुत तरीका आपने खोजा। नगर के विभिन्न इलाकों में आपने घडे रखवा दिए तथा स्त्रियों से आग्रह किया कि वे इनमें एक-एक मुट्ठी आटा प्रतिदिन डाला करें। इस प्रकार तीन-चार साल में एकत्रित आटे की बिक्री से पाठशाला का निर्माण हुआ।

1938 में आप जोधपुर रियासत के प्रचार अधिकारी नियुक्त हुए लेकिन फिर भी आपकी क्रांतिकारी कविताओं में कोई कमी नहीं आई जिससे जोधपुर राजघराना आपसे सदा सशंकित रहने लगा। 1940 में जोधपुर में लोक परिषद आन्दोलन जब तेज हुआ तो आपने उसके मंच से कविताएँ पढ़नी शुरु कर दी। आपको राजघराने से समय-समय पर चेतावनी दी गई लेकिन आप उसकी अनदेखी करते रहे।

इतना ही नहीं, बल्कि आप अपनी कविताओं को सरकारी लिफाफे में रखकर तथा उन पर सर्विस स्टाम्प लगाकर दूर के पत्रों में प्रकाशनार्थ भेजते थे, जिससे वे मार्ग में सेन्सर से बच जाती थी।

जुलाई 1942 में आपने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया तथा पूर्णरूप से सक्रिय राजनीति में भाग लेने लगे। इस पर जोधपुर की रियासती सरकार ने 14 जुलाई, 1942 को आपको गिरफ्तार कर लिया। सितम्बर 1943 में पेट की गम्भीर बीमारी के कारण आपको रिहा कर दिया गया तथा आप स्वास्थ्य लाभ के लिए कलकत्ता चले गए। 1944 में आप जोधपुर वापस लौटे। 1945 में आपने जोधपुर से दैनिक ''रियासती'' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। 26 मई 1948 के अंक में श्री जोशी ने ही सबसे पहले जोधपुर नरेश के पाकिस्तान में मिलने के इरादे का भण्डाफोड किया था। इसके लिए आपको अनेक प्रकार से प्रताडित किया गया।

1950 में आप जयपुर आए और 1951 में यहाँ से 'राष्ट्रदूत' का प्रकाशन प्रारम्भ होने पर इसके प्रथम प्रधान सम्पादक बने। 1956 से 1962 तक आपने अपने स्वयं के साप्ताहिक 'आयोजन' का भी प्रकाशन किया। ''राजस्थान के स्वतन्त्रता सेनानियों का सचित्र इतिहास'' का भी आपने सम्पादन किया।

सूर्यमल्ल मिश्रण (महाकवि)

महाकवि सूर्यमल्ल राजस्थानी काव्याकाश के सूर्य थे जिन्होंने तत्कालीन बूंदी नरेश रामसिंह के राज्याश्रित कवि होते हुये भी 1857 की प्रथम जनक्रांति में जनकवि के रूप में शंखनाद कर जड़ताग्रस्त सामन्तों को जागरण की बेला में संगठित होकर मातृभूमि पर सर्वस्व अर्पित कर देने के लिये ललकारा। उनका जन्म 19 अक्टुबर 1815 को कला नगरी बूंदी में हुआ और 30जून 1886 को स्वर्गारोहण हुआ। वे कलम और तलवार दोनों के धनी थे। 19वीं सदी के प्रारंभिक काल में उन सरीखा महाकवि समूचे देश में कोई नहीं था। वे स्वाधीनता संग्राम के केवल मूकदर्शक ही नहीं थे वरन हाथी पर बैठकर युद्ध भूमि में जाते थे और रण क्षेत्र में रणभेरी व तलवारों की खनखनाहट के बीच भी कविता लिखा करते थे।

महाकवि 15से अधिक महाकाव्यों के रचनाकार, आठ भाषाओं के पंडित और हाडा वंश के प्रामाणिक इतिहासकार थे। उनकी कीर्ति ''वीर सतसई'' प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम की लिखित साक्षी होने के साथ ही राजस्थानी साहित्य की श्रद्धांजलि भी है। उनकी अन्य प्रमुख रचनायें, ''वंशभास्कर'', ''सतीरासो'' ''रामरंजाट'', ''धातुरूपावली'' तथा ''छंदोमयूख ''बलवद विलास'' आदि हैं जिनमें उनकी निर्भीकता और स्वाभिमान कूट-कूटकर भरा है। ''वीर सतसई'' में कवि अपने संकल्प के अनुसार सात सौ दोहे पूरे नहीं लिख सके क्योंकि 287 दोहे लिखते- लिखते ही बूंदी के राजाओं ने अंग्रेजों के सामने अपनी पराजय स्वीकार कर ली थी।

हरविलास शारदा

भारत में बाल विवाह-निरोधक कानून के जन्मदाता श्री शारदा का जन्म 8 जून 1867 को अजमेर में हुआ। वे न्यायिक अधिकारी, विधिवेत्ता, इतिहासकार और समाज-सुधारक थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके आर्य समाज ने उन्हें जीवन में सर्वाधिक प्रभावित किया। स्वामी जी से उनका अनेक बार सम्पर्क हुआ तथा 1883 में अजमेर में स्वामी जी का निर्वाण होने पर शवयात्रा में शामिल होने का भी उन्हें अवसर मिला। 1933 में अजमेर में आयोजित स्वामी जी के निर्वाण के अर्द्धशती समारोह पर बनी समिति के आप मंत्री थे।

1906 में श्री शारदा ने ''हिन्दू सुपीरियोरिटी'' का प्रकाशन किया जिसमें देश की नयी पीढ़ी और विदेशियों को यह बताने का आपने प्रयास किया कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति विश्व की अन्य

सम्पादनियों में अग्रणी हैं। 1911 में आपने "अजमेर हिस्टोरीकल एण्ड डेस्क्रिप्टिव" पुस्तक का प्रकाशन किया जिसका परिवर्तित विशाल संस्करण 1941 में प्रकाशित हुआ। इसके अलावा महाराणा कुम्भा (1915) महाराणा सांगा(1918), हमीर आफ रणथंभोर (1921), स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स आफ हरविलास शारदा (1936), वर्क्स आफ महर्षि दयानन्द एण्ड परोपकारिणी सभा (1942), शंकराचार्य एण्ड दयानन्द तथा लाइफ आफ स्वामी विरजानन्द सरस्वती (1944), परोपकारिणी सभा और सत्यार्थ प्रकाश (1945) आदि उनके अन्य प्रकाशन रहे। आपका निधन 20जनवरी1955को अजमेर में हुआ।

हरिभाऊ उपाध्याय

श्री हरिभाऊ उपाध्याय का जन्म यद्यपि तत्कालीन ग्वालियर राज्य के भौरासा ग्राम में हुआ तथापि उनका अधिकांश जीवन राजस्थान में ही व्यतीत हुआ। 9 मार्च 1892 को जन्मे श्री उपाध्याय की प्रारंभिक शिक्षा अपने ग्राम में और उच्च शिक्षा वाराणसी में हुई। सन् 1916 से 1919 तक आपसे श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ "सरस्वती" का सम्पादन किया। इसी दौरान आपका श्री गणेशशंकर विद्यार्थी और श्री माखनलाल चतुर्वेदी से भी सम्पर्क हुआ।

प्रारंभ से ही राष्ट्रीय विचारधारा से ओतप्रोत श्री उपाध्याय को 1920 से 26 तक महात्मा गांधी के सान्निध्य में रहने का अवसर मिला जिससे उनकी राजनीतिक विचारधारा और परिपक्व हो गयी। गांधी जी के इसी सम्पर्क के कारण गांधीवाद की छाप उन पर आजीवन रही। 1925 तक आपने "नवजीवन" का सम्पादन किया। 1926 में आप स्थायी रूप से राजस्थान आ गये और अजमेर को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। महिला शिक्षा से आपको विशेष लगाव था जिसकी परिणति हटूण्डी में महिला शिक्षा सदन के रूप में हुई। यह आपका अमर स्मारक कहा जा सकता है। 1930 में आपको नमक सत्याग्रह में भाग लेने के कारण दो साल के कारावास की सजा हुई।

1952 में प्रथम आम चुनाव के बाद आप तत्कालीन अजमेर राज्य के प्रथम लोकप्रिय मुख्यमंत्री बने। एक नवम्बर 1956 को अजमेर राज्य का राजस्थान में विलय होने पर आप 1957 से 1965 तक श्री मोहनलाल सुखाड़िया के मंत्रिमंडल में शिक्षा, वित्त, समाज-कल्याण, देवस्थान, खादी-ग्रामोद्योग, पंचायतीराज तथा योजना आदि विभागों के मंत्री रहे। 1966 में भारत सरकार ने आपको "पद्मभूषण" अलंकरण से सम्मानित किया। 25 अगस्त 1972 को आपका हटूण्डी में स्वर्गवास हुआ।

हरिश्चन्द्रसिंह (झालावाड़)

राजस्थान के पूर्व मंत्री तथा झालावाड़ रियासत के पूर्व नरेश श्री हरिश्चन्द्र का जन्म 27 सितम्बर 1921 को आक्सफोर्ड (इंगलैण्ड) में हुआ और उनकी शिक्षा इंगलैण्ड व भारत में हुई। 1943 में वे झालावाड़ रियासत के नरेश बने और 1948 में रियासत का संयुक्त राजस्थान में विलय हो गया। इसके बाद आप भारत की विदेश-सेवा में चले गये। आपकी प्रथम नियुक्ति इटली दूतावास में और फिर बर्मा में हुई। इस दौरान आपने बर्मा स्थित भारतीय मूल के नागरिकों की अनेक समस्याओं का वहाँ की सरकार से समाधान कराया।

1955 में आपने पं नेहरू के आमंत्रण पर विदेश-सेवा छोड़कर कांग्रेस के माध्यम से राजनीति में प्रवेश किया। 1957 के द्वितीय आम चुनाव में आप कांग्रेस टिकट पर विधायक चुने गये और 10 फरवरी 1960 का सुखाड़िया मंत्रिमंडल के उद्योग मंत्री नियुक्त हुए। 1962 में पुनः विधायक चुने जाने पर मंत्री बनाये गये लेकिन 25 दिसम्बर 1966 को आपने श्री सुखाड़िया से मतभेद बढ़ जाने से श्री कुम्भाराम आर्य के

साथ मंत्रिमंडल और कांग्रेस दल दोनों से त्यागपत्र दे दिया। 1967 के आम चुनाव से पूर्व आपने श्री आर्य
साथ मिलकर जनता पार्टी का गठन किया और कांग्रेस के विरोध में चुनाव लडकर गैर कांग्रेसी दलों व
संयुक्त विधायक दल बनाया। 17 मार्च 1967 को आपका दिल्ली में अचानक निधन हो गया।

पं० हीरालाल शास्त्री

राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री पं० हीरालाल शास्त्री का जन्म 24 नवम्बर 1899 को जयपुर जिले के जोबनेर कस्बे में हुआ था। 1920 में साहित्य शास्त्री तथा 1921 में महाराजा कालेज से बी ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात आप 6 वर्षों तक राजकीय सेवा में रहे जहाँ से 1927 में त्यागपत्र दे दिया। इसी दौरान 1925 में आपका विवाह श्रीमती रतन शास्त्री के साथ सम्पन्न हुआ। राजकीय सेवा त्यागने के पश्चात आपने जयपुर राज्य के वनस्थली ग्राम (अब टोंक जिले में) को अपना कार्य क्षेत्र बनाया तथा 1929 में वहां जीवन कुटीर नामक संस्था की स्थापना कर वस्त्र स्वावलंबन की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया। 1935 में आपने अपनी पुत्री कुमारी शान्ता के निधन पर इसी ग्राम में नारी शिक्षा की विश्वप्रसिद्ध संस्था वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना की। 1937–41 के दौरान आप जयपुर राज्य प्रजामंडल के महामंत्री बने तथा 1941–43 में इसके अध्यक्ष रहे। 1948–49 में आप तत्कालीन जयपुर रियासत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री नियुक्त किये गये।

30 मार्च 1949 को 22 रियासतों के एकीकरण से बने वर्तमान राजस्थान के आप प्रथम मुख्यमंत्री बनाये गये। 22 माह पश्चात आपने श्री जयनारायण व्यास तथा अन्य कांग्रेस नेताओं से मतभेद हो जाने के कारण अपने पद से त्याग पत्र दे दिया। 1957–62 में आप सवाईमाधोपुर क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर लोकसभा के सदस्य चुने गये।

28 दिसम्बर 1974 को आपका जयपुर में निधन हुआ। वनस्थली विद्यापीठ आपका अमर स्मारक है।

हुकमसिंह (सरदार)

16 अप्रेल 1967 से 30 जून 1972 तक राजस्थान के (तृतीय) राज्यपाल पद पर रहे सरदार हुकमसिंह का जन्म 30 अगस्त 1895 के मांटगुमरी में हुआ। आपने अमृतसर और लाहौर में शिक्षा प्राप्त की तथा विधि-स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद मांटगुमरी में वकालत प्रारंभ की। दिसम्बर 1947 से नवम्बर 1948 तक आप कपूरथला उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रहे तथा बाद में संविधान सभा, अस्थायी संसद तथा प्रथम, द्वितीय और तृतीय लोकसभा के सदस्य रहे। 1957 के चुनाव के बाद आप लोकसभा के उपाध्यक्ष तथा 1962 के चुनाव के बाद अध्यक्ष चुने गये।

सरदार हुकमसिंह प्रारंभ में अकाली दल के सदस्य तथा तीन वर्ष तक शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष रहे। सिंह सभा तथा मांटगुमरी अभिभावक संघ के भी आप अध्यक्ष रहे। आपने विभिन्न देशों का भ्रमण किया तथा 1963 में अमरीका जाने वाले संसदीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। दो वर्ष तक आप राष्ट्रमंडलीय संसदीय सम्मेलन की सामान्य परिषद के सदस्य भी रहे। 27 मई 1983 को आपका दिल्ली में निधन हुआ।

व्यक्ति परिचय: कौन - कहां

अजीतसिंह मेहता - भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी और वर्तमान में जोधपुर संभाग के आयुक्त एवं पदेन मरु-विकास आयुक्त श्री ए० एस० मेहता का जन्म 11 अगस्त, 1938 को उदयपुर में हुआ। 1961 में सेवा में चयन के बाद आप डूंगरपुर और सिरोही के जिलाधीश, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर गृह मंत्रालय में संयुक्त सचिव, भारतीय दूतावास लन्दन में प्रथम सचिव, केन्द्रीय सतर्कता आयोग के सचिव राजस्व मंडल के सदस्य, राज्यपाल के सचिव तथा राजस्थान राज्य कृषि-उद्योग निगम के प्रबंध निदेशक आदि प्रमुख पदों पर कार्य कर चुके हैं।

अतुलकुमार गर्ग - भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में उदयपुर के जिला कलक्टर श्री ए.के. गर्ग का जन्म 2 मार्च, 1950 को इलाहाबाद में हुआ। प्रारंभ में आप कुछ अर्से तक बैंक सेवा में रहे। 1976 में सेवा में चयन के पश्चात आपने कोटा में अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) एवं पदेन परियोजना निदेशक जिला कलक्टर चूरू तथा पाली, राजस्थान वित्त निगम के महाप्रबन्धक तथा गुलाबपुरा सहकारी सूती मिल के प्रबन्ध निदेशक आदि पदों पर कार्य किया।

अतुलकुमार गुप्ता - भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी और वर्तमान में बूंदी के जिला कलक्टर श्री ए के गुप्ता का जन्म 30 जून, 1956 को अजमेर में हुआ। 1980 में सेवा में चयन के पश्चात आप अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) एवं पदेन परियोजना निदेशक भरतपुर तथा डूंगरपुर, गंगापुर सहकारी सूती मिल के प्रबन्ध निदेशक,सचिव जयपुर विकास प्राधिकरण तथा जिलाधीश पाली आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

अदिती मेहता (श्रीमती) - भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला की अधिकारी तथा वर्तमान में सांस्कृतिक मंत्रालय में पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर की निदेशक श्रीमती मेहता का जन्म 17 जून,1953 को कलकत्ता में हुआ। 1979 में सेवा में प्रवेश के बाद आप अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) एवं पदेन परियोजना निदेशक कोटा, अतिरिक्त आयुक्त, चम्बल क्षेत्र विकास तथा अतिरिक्त विकास आयुक्त जनजाति क्षेत्रीय विकास उदयपुर आदि पदों पर कार्य कर चुकी हैं।

अनिल कुमार - भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर वाशिंगटन स्थित भारतीय दूतावास में आर्थिक मामलों के सचिव श्री अनिल कुमार का जन्म एक जनवरी 1942 को कानपुर में हुआ। इलाहाबाद विश्व विद्यालय से गणित में एम.ए. करने के बाद 1965 में आपने सेवा में प्रवेश किया। आप चित्तौड़गढ़ भरतपुर, कोटा तथा जयपुर के जिलाधीश, सहकारिता विभाग के रजिस्ट्रार, उद्योग विभाग के निदेशक, खाद्य एवं सहायता विभाग में शासन विशिष्ट सचिव, राजस्थान वित्त निगम तथा रीको में प्रबन्ध निदेशक, केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति पर मंत्रिमंडल सचिवालय में संयुक्त सचिव तथा वित्त मंत्रालय में संयुक्त सचिव एवं निदेशक प्रवर्तन आदि महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं।

अनिल खन्ना - भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सीकर जिले के पुलिस अधीक्षक श्री खन्ना का जन्म 6 फरवरी, 1957 को पंजाब में हुआ। 1981 में चयन के बाद आप जैसलमेर और टोंक के पुलिस अधीक्षक तथा सी.आई.डी (अपराधशाखा III) में सहायक महानिरीक्षक रह चुके हैं।

अनिल बोर्दिया - भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भारत सरकार के शिक्षा सचिव श्री बोर्दिया का जन्म 5 मई, 1934 को राजस्थान के सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री केसरीलाल बोर्दिया के यहाँ उदयपुर में हुआ। 1957 में सेवा में प्रवेश के बाद आप शिक्षा और उद्योग आदि विभागों के निदेशक, अजमेर के जिलाधीश तथा केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति पर विभिन्न मंत्रालयों में निदेशक और संयुक्त सचिव, राजस्थान के विकास आयुक्त एवं शासन सचिव विकास विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा केन्द्रीय श्रम और शिक्षा आदि मंत्रालयों में संयुक्त एवं अतिरिक्त सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

अनिल वैश्य - भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान खान एवं खनिज विकास निगम लिमिटेड उदयपुर में प्रबंध निदेशक श्री वैश्य का जन्म 12 मई 1947 को राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व कुलसचिव श्री एल.पी. वैश्य के यहां जयपुर जिले के जोबनेर कस्बे में हुआ। 1970 में सेवा में प्रवेश के पश्चात आप जिलाधीश जैसलमेर, शिक्षा विभाग के निदेशक, केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति पर जहाजरानी विकास कोष समिति बम्बई में अतिरिक्त अधिशासी निदेशक एवं अधिशासी निदेशक तथा वस्त्र-उद्योग समिति के सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके है।

अब्दुल अजीज - राजस्थान विधान सभा के लिए दूसरी बार निर्वाचित सदस्य श्री अजीज का जन्म 12 जुलाई 1937 को मकराना में हुआ। विधि स्नातक तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप संगमरमर के अपने पैतृक व्यवसाय में लग गये। 1977 में आप कांग्रेस (अर्स) के टिकिट पर प्रथम बार मकराना से विधायक चुने गये। 1980 में आप इसी क्षेत्र से मात्र 33 मतों से पराजित हो गये लेकिन 1985 में लोकदल के टिकिट पर पुनः विधायक चुन लिए गये।

अब्दुल रहमान चौधरी - राजस्थान के पूर्व उपमंत्री श्री अब्दुल रहमान चौधरी का जन्म 15 जून, 1932 को नागौर जिले के मकराना कस्बे में हुआ। आप अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के वाणिज्य स्नातक हैं। आप राजस्थान में संगमरमर के प्रमुख व्यवसाइयों में से हैं। संगमरमर के खनन का प्रशिक्षण आपने इटली में प्राप्त किया। सार्वजनिक जीवन में आप मकराना नगरपालिका के दो बार सदस्य तथा 1964 तक इसके अध्यक्ष रह चुके हैं। 1980 में आप मकराना से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गए तथा जून 1980 से जुलाई 1981 तक पहाडिया मंत्रिमंडल में उपमंत्री रहे। वर्तमान में आप राजस्थान मार्बल-ऑनर्स एसोसियेशन के अध्यक्ष हैं।

अब्दुल हादी - राजस्थान विधान सभा के लिए पांचवी बार निर्वाचित सदस्य श्री अब्दुल हादी का जन्म बाडमेर जिले के बुरहान-का-तला ग्राम में सन् 1927 में हुआ। आप व्यवसाय से कृषक हैं और 1959 से 77 तक बुरहान-का-तला ग्राम पंचायत के सरपंच तथा 1962 से 71 तक सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि०, बाडमेर के अध्यक्ष रह चुके है। श्री हादी सर्वप्रथम 1953 में एक उपचुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में विधायक चुने गये। तत्पश्चात् 1967 में चौहटन क्षेत्र से निर्दलीय, 1972 और 1977 में कांग्रेस तथा 1985 में लोकदल प्रत्याशी के रूप में चुने गये हैं।

अभिमन्युसिंह - भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग में निदेशक श्री सिंह का जन्म 10 दिसम्बर, 1951 को जालोर जिले में हुआ। 1974 में सेवा में प्रवेश के बाद आप टोंक तथा अलवर के ..., राजस्थान विश्वविद्यालय के कुल सचिव तथा शिक्षा विभाग में शासन विशिष्ट सचिव आदि कार्यकर चुके है।

अमृत नाहटा - पूर्व सांसद श्री अमृत नाहटा का जन्म मई 1928 में जोधपुर में हुआ। आपकी शिक्षा सरदार हाई स्कूल जोधपुर तथा बम्बई विश्वविद्यालय में हुई। अपने छात्र जीवन से ही क्रांतिकारी श्री नाहटा प्रारंभ में कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे। 1962 में आप कांग्रेस पार्टी के सदस्य बने और 1967 तथा 1971 में बाड़मेर से लोकसभा के सदस्य चुने गये। 1977 के प्रारंभ में आपने कांग्रेस से त्याग पत्र देकर जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की तथा इसके टिकिट पर पाली क्षेत्र से लोकसभा सदस्य चुने गये। जनता राज में अपनी एक विवादास्पद फिल्म "किस्सा-कुर्सी-का" के कारण आप काफी चर्चित रहे।

अमृतलाल यादव - राजस्थान के सुखाड़िया मंत्रिमंडल में वर्षों तक विभिन्न विभागों के मंत्री रहे श्री यादव का जन्म 9 जनवरी *1919* को छोटीसादड़ी कस्बे में हुआ। *1938* में आप मेवाड़ प्रजामंडल के सदस्य बने और स्वतंत्रता संघर्ष की गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़ गये। इसमें आप को कारावास सहित अनेक यातनायें सहनी पड़ी। *1947* में आपने राजस्थान दलित जाति संघ की स्थापना की।

26 अप्रेल, 1951 को जब प्रदेश में श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में कांग्रेस दलीय मंत्रिमंडल का गठन हुआ तो आप उसमें पिछड़ी जातियों के प्रतिनिधि के रूप में उप मंत्री बनाये गये। 1952 के प्रथम आम चुनाव में आप राजसमंद (सु.) क्षेत्र से विधायक चुने गये और श्री टीकाराम पालीवाल के मंत्रिमंडल में केबिनेट मंत्री के रूप में शामिल किये गये। 1957 में आप प्रतापगढ़ क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव हार गये लेकिन 1958 में जालौर (सु.) क्षेत्र से उपचुनाव में पुनः चुन लिए गये। 1962 के तृतीय आम चुनाव में आप भोपालगढ़ से विधायक चुने गये और जून 1965 में सुखाड़िया मंत्रिमंडल में शामिल किये गये। *1967* में आप पुनः राजसमंद (सु.) क्षेत्र से विजयी हुए और सितम्बर *1967* में मंत्री नियुक्त हुए। जुलाई *1971* में श्री सुखाड़िया के त्याग पत्र के साथ ही आप भी सरकार से अलग हो गये। बाद में आपने कोई चुनाव नहीं लड़ा।

अमरचन्द - राजस्थान विधानसभा के लिए दूसरी बार निर्वाचित सदस्य श्री अमरचन्द का जन्म 14 अक्टूबर, 1926 को चित्तौड़गढ़ जिले के बल नामक ग्राम में हुआ। आपकी शिक्षा प्राथमिक स्तर तक है तथा आप व्यवसाय से कृषक हैं। *1980 और 1985 के आम चुनावों में आप गंगरार (सु०अ०जा०)* क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायक चुने गये हैं।

अमरजीत आहूजा कौर (सुश्री) - भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला की अधिकारी तथा वर्तमान में उदयपुर संभाग की आयुक्त एवं पदेन आयुक्त जनजाति क्षेत्रीय विकास सुश्री कौर का जन्म 4 मई, 1948 को बरेली में हुआ। 1972 में सेवा में प्रवेश के बाद आप बूंदी में जिलाधीश, भूमि *एवं भवन कर विभाग की निदेशक तथा केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर वित्त मंत्रालय तथा ग्रामीण-विकास* मंत्रालय में उप सचिव रह चुकी हैं।

अमरजीतसिंह गिल - भारतीय पुलिस सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जयपुर रेंज के उप महानिरीक्षक श्री ए.एस. गिल का जन्म 28 जनवरी, 1950 को पंजाब में हुआ। 1972 में सेवा में चयनित होने के बाद आप नागौर, भीलवाड़ा और जोधपुर के जिला पुलिस अधीक्षक, पुलिस अधीक्षक कम्प्यूटर (चतुर्थ) तथा केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर गृह मंत्रालय में शाह जांच आयोग में पुलिस अधीक्षक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

अमरसिंह राठौड़ - भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में इन्दिरा गांधी पंचायती राज प्रतिष्ठान के निदेशक श्री ए.एस. राठौड़ का जन्म 12 जुलाई, 1938 को जोधपुर जिले में हुआ। 1960 में सेवा में प्रवेश के बाद आप झुंझुनूं और भरतपुर

में जिलाधीश राजस्व मंडल के सदस्य परिवहन आयुक्त राजस्थान सिविल सेवा अपील न्यायाधिकरण के अध्यक्ष तथा राजस्थान भूमि-विकास निगम के प्रबन्ध निदेशक आदि प्रमुख पदों पर कार्य कर चुके हैं।

अमिताभ गुप्ता - भारतीय पुलिस सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति पर सीमा-सुरक्षा बल में गुजरात और राजस्थान के महानिरीक्षक श्री गुप्ता महाराजा कालेज जयपुर के पूर्व प्राचार्य डा० सोमनाथ गुप्ता के पुत्र हैं। आपका जन्म 7 सितम्बर, 1940 को जोधपुर में हुआ। 1964 में सेवा में प्रवेश के बाद आप टोंक, जालौर, सवाईमाधोपुर तथा जयपुर जिले के पुलिस अधीक्षक, गुप्तचर शाखा मे अधीक्षक, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर पाकिस्तान स्थित भारतीय उच्चायोग मे मुख्य सुरक्षा अधिकारी तथा बीकानेर, कोटा और जयपुर रेंज में दो बार उप महानिरीक्षक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

अरविंदकुमार जैन - भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी और वर्तमान में बीकानेर के जिला पुलिस अधीक्षक श्री ए के जैन का जन्म 15 जुलाई, 1953 को सहारनपुर (उ.प्र.) में हुआ। 1978 में सेवा मे प्रवेश के बाद आप बूंदी अलवर, कोटा (नगर) और गंगानगर के जिला पुलिस अधीक्षक रह चुके हैं।

अरविन्द मायाराम - भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर वित्त मंत्रालय में आर्थिक मामलों के विभाग में उपसचिव श्री अरविन्द मायाराम राजस्थान संवर्ग के अवकाश प्राप्त प्रशासनिक अधिकारी श्री मायाराम के पुत्र हैं। आपका जन्म 13 अक्टूबर 1955 को जयपुर में हुआ। 1978 में सेवा में प्रवेश के बाद आप बूंदी तथा अलवर के जिला कलक्टर और कुछ अर्से के लिए राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड के प्रशासक रह चुके हैं।

अरुणकुमार (माथुर) - भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के शासन सचिव श्री अरुण कुमार का जन्म 14 अप्रेल, 1941 को लखनऊ में हुआ। 1963 में सेवा में प्रवेश के बाद आप जालौर, बीकानेर और चूरू के जिलाधीश, सहकारी विभाग के रजिस्ट्रार,कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग के शासन विशिष्ट सचिव, राजस्व मंडल के सदस्य, परिवहन आयुक्त तथा राजस्थान वित्त निगम के प्रबन्ध निदेशक रह चुके हैं।

अरुण दुगड़- भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भ्रष्टाचार निरोधक विभाग में उपमहानिरीक्षक श्री दुगड़ का जन्म 7 सितम्बर, 1945 को जोधपुर में हुआ। 1969 में सेवा में प्रवेश के बाद आप टोंक, चित्तौड़गढ़, सवाईमाधोपुर, पाली, उदयपुर और अलवर के जिला पुलिस अधीक्षक, गुप्तचर पुलिस में अपराध शाखा के अधीक्षक, ए.पी.सी.पी. एवं आर.ए.सी. प्रशिक्षण केन्द्र जोधपुर के प्राचार्य, आर.ए.सी. की जयपुर स्थित तीसरी बटालियन के कमांडेंट, भरतपुर रेंज तथा पुलिस मुख्यालय में उप महानिरीक्षक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

अलका काला (श्रीमती)- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला की अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्व मंडल की सदस्य श्रीमती काला का जन्म 16 नवम्बर, 1949 को दिल्ली में हुआ। 1974 में सेवा में प्रवेश के बाद आप केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति पर गृह मंत्रालय के कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग में शासन उप सचिव, राज्य के विशिष्ट योजना संगठन में उप सचिव, जिला कलक्टर बूंदी तथा पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग की निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुकी हैं।

अलखाराम - अनुसूचित जनजातियों के लिए सुरक्षित [illegible] क्षेत्र से 1984 के चुनाव में कांग्रेस (इ) प्रत्याशी के रूप में निर्वाचित श्री अलखाराम की आयु 52 वर्ष है तथा उनका जन्म

उदयपुर जिले के कांडी नामक ग्राम में हुआ। मिडिल तक शिक्षित श्री अलखराम 1965 में कोटा ग्राम पंचायत के सरपंच तथा 1972 और 1980 के चुनावों में क्रमशः गोगूंदा और फलासिया (सुरक्षित) क्षेत्रों से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये थे। 1977 में आप फलासिया क्षेत्र से पराजित हो गये थे।

अविनाशचन्द्र बधावन- देश के जाने-माने धातु विशेषज्ञ तथा वर्तमान में केन्द्रीय सरकार के राजस्थान स्थित उपक्रम हिन्दुस्तान जिंक लि. के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री ए.सी. बधावन का जन्म 27 जनवरी, 1938 को हुआ। आपने दिल्ली से बी.एससी. खड़गपुर स्थित आई.आई.टी. से मेटालर्जी में विशेष योग्यता के साथ प्रथम श्रेणी में बी. टेक. तथा फ्रांस से मिश्र धातु और विशेष इस्पात उत्पादन में डिप्लोमा प्राप्त किया। 1973 में हि.जि.लि. में नियुक्ति से पूर्व आपने महिन्द्रा यूजीन स्टील कं. लि. के स्पेशल एण्ड एलाय स्टील प्लांट में तथा एच. ई. सी. और मार्टिन बर्न ग्रुप में भी कार्य किया।

श्री बधावन 1973 में देबारी स्थित जस्ता प्रदावक में उपमहाप्रबंधक, 1976 में कंपनी के सभी प्रदावकों के उपमहाप्रबंधक और मई 1977 में निदेशक (प्रदावक) बने। वर्तमान पद पर आपकी नियुक्ति 21 नवम्बर, 1985 को हुई। हिन्दुस्तान जिंक के विकास में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आपने धातु सम्बंधी अनेक अन्तर्राष्ट्रीय बैठकों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है तथा देश में धातु व्यवसाय से सम्बद्ध अनेक संगठनों के पदाधिकारी रहे हैं। आपको नवम्बर 1988 में अलौह धातुओं में महत्वपूर्ण योगदान के लिए देश के व्यावसायिक धातु विशेषज्ञों के शीर्ष संस्थान इंडियन इंस्टीटयूट आफ मेटलस द्वारा "कन्वो स्वर्ण पदक" से सम्मानित किया जा चुका है। यह पदक तीन वर्ष में एक बार दिया जाता है।

अश्कअली टाक - राजस्थान के सूचना एवं जन-सम्पर्क तथा भाषायी अल्पसंख्यक आदि विभागों के प्रभारी राज्य मंत्री श्री टाक का जन्म 7 जुलाई, 1958 को श्रीगंगानगर जिले के नोहर कस्बे में हुआ। एम.ए. तक शिक्षित श्री टाक राष्ट्रीय छात्र संगठन की राज्य शाखा के अध्यक्ष रह चुके हैं। 1985 के आम चुनाव में आप सीकर जिले के फतहपुर क्षेत्र से विधायक चुने गये तथा 17 अक्टूबर, 1985 को आपको शासक दल का उप मुख्य सचेतक नियुक्त किया गया।

26 जनवरी, 1988 को श्री टाक श्री शिवचरण माथुर के मंत्रिमंडल में राज्य मंत्री के रूप में शामिल किये गये तथा खेलकूद विभाग का स्वतंत्र प्रभार सौंपा गया। 12 जून, 1989 को आपको उपरोक्त दो विभागों के स्वतंत्र प्रभार के साथ इंदिरा गांधी नहर परियोजना, उपनिवेशन तथा सिंचित क्षेत्र विकास विभाग का भी राज्य मंत्री बनाया गया।

अश्विनीकुमार कानोड़िया *- राजस्थान के प्रमुख उद्योगपति श्री ए० के० कानोड़िया का जन्म 7* अप्रेल, 1935 को मुकुन्दगढ़ (झुंझुनूं) के विख्यात कानोड़िया परिवार में श्री भागीरथ कानोड़िया के यहां कलकत्ता में हुआ। आपकी शिक्षा भी कलकत्ता में हुई जहां आपने स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की।

श्री कानोड़िया आदित्य मिल्स लि० किशनगढ़ के प्रबन्ध निदेशक होने के साथ ही कानोड़िया और बिड़ला घरानों के अनेक औद्योगिक संस्थानों में निदेशक रहे हैं। राजस्थान सूती मिल संघ, राजस्थान चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री तथा राजस्थान नियोजक संघ की कार्यकारिणी के आप सदस्य रह चुके हैं। वर्तमान में आप बाम्बे अस्पताल बम्बई के न्यासी मंडल के सदस्य हैं।

अशोककुमार पाण्डे - भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्व मंडल के सदस्य श्री ए.के. पाण्डे का जन्म एक जनवरी, 1950 को उ० प्र० के अल्मोड़ा नगर में हुआ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने 1973 में सेवा में प्रवेश किया। आप अब तक टोंक और चूरू के जिलाधीश, शिक्षा, मत्स्य, पशुपालन तथा ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज आदि विभागों के निदेशक तथा खाद्य एवं नागरिक रसद विभाग में शासन विशिष्ट सचिव रह चुके हैं।

अशोक के० भंडारी - भारतीय पुलिस सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सी० आई०डी० (गुप्तचर शाखा) के उप महानिरीक्षक श्री ए० के० भंडारी भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी श्री सत्यप्रसन्नसिंह भंडारी के पुत्र हैं। आपका जन्म 4 जून, 1943 को उदयपुर में हुआ। 1966 में सेवा में चयन होने के बाद आप जयपुर और अजमेर के जिला पुलिस अधीक्षक, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर लन्दन स्थित दूतावास में सुरक्षा अधिकारी, सहायक महानिरीक्षक (प्रथम) पुलिस मुख्यालय तथा भरतपुर, जोधपुर और जयपुर रेंज में उप महानिरीक्षक आदि पदों पर कार्यकर चुके हैं।

अशोक गहलोत - राजस्थान के गृह तथा इंदिरा गांधी नहर परियोजना क्षेत्र में जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी से सम्बद्ध योजनाओं के मंत्री श्री गहलोत का जन्म 3 मई, 1951 को जोधपुर नगर में एशिया के विख्यात जादूगर और समाज- सेवी बाबू लक्ष्मणसिंह गहलोत के यहां हुआ। आपने अर्थशास्त्र में एम.ए. और एलएल.बी. की उपाधियां प्राप्त की। आपके सार्वजनिक जीवन का प्रारंभ जोधपुर विश्वविद्यालय में छात्र नेता के रूप में हुआ और आप 1974 से 1979 तक भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन की प्रदेश शाखा के अध्यक्ष रहे। 1977 में आप जोधपुर नगर कांग्रेस के महामंत्री तथा 1978 से 1983 तक अध्यक्ष रहे।

1980 में आप जोधपुर क्षेत्र से प्रथम बार लोकसभा सदस्य चुने गये तथा 1982 में प्रदेश कांग्रेस (इ) के महामंत्री मनोनीत किये गये। इसी वर्ष, 2 सितम्बर को आप श्रीमती गांधी की मंत्रिपरिषद में पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन मंत्रालय में उपमंत्री बनाये गये। 18 फरवरी, 1984 को आपको खेल उप मंत्री नियुक्त किया गया। 1984 में जोधपुर क्षेत्र से ही दूसरी बार लोकसभा सदस्य चुने जाने के बाद श्री गहलोत राजीव गांधी की मंत्रिपरिषद में पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन मंत्रालय में राज्य मंत्री नियुक्त किये गये। सितम्बर 1985 में आपको राजस्थान प्रदेश कांग्रेस (इ) का अध्यक्ष मनोनीत किया गया जहाँ 8 जून, 1989 तक कार्यरत रहे। इसी दिन आपको राजस्थान मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री नियुक्त किया गया।

श्री गहलोत राज्य के ऐसे प्रथम मंत्री हैं जो विधान सभा के सदस्य न होकर लोकसभा के सदस्य हैं।

अशोक जैन- भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जैसलमेर के जिला कलक्टर श्री अशोक जैन का जन्म एक जनवरी, 1958 को उदयपुर में हुआ। 1981 में आपका सेवा में चयन हुआ तथा अब तक आप उप जिलाधीश बीकानेर (उत्तर) तथा उदयपुर, अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) जालोर तथा शासन उपसचिव आयोजना एवं बीस सूत्री कार्यक्रम आदि पदों पर कार्यकर चुके हैं।

अशोक शेखर- भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में ऊर्जा एवं जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में उपसचिव श्री अशोक शेखर का जन्म 28 मार्च, 1958 को अजमेर में हुआ। 1980 में आपका सेवा में चयन हुआ और वर्तमान पद स्थापना से पूर्व आप उपखंड अधिकारी अलवर अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) गंगानगर, अतिरिक्त आयुक्त वाणिज्यिक कर विभाग, अतिरिक्त रजिस्ट्रार सहकारी विभाग तथा जिला कलक्टर चूरू आदि पदों पर रह चुके हैं।

अशोक सम्पतराम - भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग में शासन उप सचिव श्री अशोक सम्पतराम राजस्थान के पूर्व गृहमंत्री श्री सम्पतराम के पुत्र हैं। आपका जन्म 8 अक्टूबर, 1955 को जयपुर में हुआ। 1977 में सेवा में प्रवेश के बाद आप अतिरिक्त आयुक्त क्षेत्रीय विकास (इंदिरा गांधी नहर परियोजना), अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) एवं पदेन परियोजना निदेशक अजमेर तथा सिरोही और भरतपुर के जिला कलक्टर आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

[illegible] - भारतीय प्रशासनिक सेवा की [illegible] के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान [illegible] निगम के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री [illegible] का जन्म एक जून 1937 को उत्तर प्रदेश में हुआ। 1960 में सेवा में प्रवेश के बाद आप [illegible] के जिलाधीश, [illegible] प्रबन्ध निदेशक, उद्योग विभाग के शासन सचिव तथा पदेन अध्यक्ष राजस्थान [illegible] केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर रक्षा मंत्रालय में संयुक्त सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

[illegible] - राजस्थान के पूर्व मंत्री श्री [illegible] का जन्म 7 नवम्बर 1919 को बीकानेर में हुआ। डूंगर कालेज बीकानेर से 1937 में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद कुछ वर्षों तक आपने अध्यापन का कार्य किया। बाद में [illegible] विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र में एम.ए. तथा [illegible] की उपाधि प्राप्त की। 1942 में बीकानेर में वकालत की तथा 1944 से 47 तक डूंगर कालेज में दर्शन शास्त्र के व्याख्याता रहे। 1948 में बीकानेर रियासत में लोकप्रिय सरकार का गठन होने पर आप ग्रामीण-विकास मंत्री मनोनीत किये गये तथा 1949 में आप वकालत करने के लिए जोधपुर चले गये। पिछले तीस वर्षों से आप कांग्रेस के सक्रिय सदस्य हैं तथा वर्षों तक प्रदेश कांग्रेस के निर्वाचन अधिकारी रह चुके हैं।

1980 के आम चुनाव में आप जोधपुर से विधायक चुने गये तथा 1981 में राजस्थान विधानसभा के उपाध्यक्ष बनाये गये। 17 जुलाई 1982 को आप श्री शिवचरण माथुर की सरकार में विधि मंत्री नियुक्त किये गये। 23 फरवरी 1985 तक आपने इस पद पर कार्य किया।

आदर्शकिशोर सक्सेना- भारतीय प्रशासनिक सेवा की पुरानी वेतन शृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर इस्पात मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्री ए.के. सक्सेना का जन्म 4 सितम्बर, 1946 को लाडनूं में हुआ। 1969 में सेवा में प्रवेश के बाद आपने बाड़मेर, अलवर और उदयपुर में जिलाधीश, उद्योग विभाग के निदेशक, मुख्यमंत्री के सचिव, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के शासन सचिव तथा राजस्थान आवासन मंडल के अध्यक्ष आदि पदों पर कार्य किया।

आदित्येन्द्र (मास्टर)- राजस्थान के पूर्व वित्त मंत्री मास्टर आदित्येन्द्र का जन्म जून 1907 में भरतपुर जिले में हुआ। बी.एससी. तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद 1928 में आपने अध्यापक के रूप में कार्य प्रारंभ किया लेकिन स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने हेतु 1938 में त्यागपत्र दे दिया। 1938 से 1947 तक आप भरतपुर जिले के सक्रिय स्वाधीनता सेनानी रहे। इस दौरान आप दो बार जेल गये। 1950-56 के दौरान आप राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा 1954 से 1960 तक राज्य सभा के सदस्य रहे। 1962 में आपने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर संयुक्त समाजवादी दल की सदस्यता स्वीकार की तथा इसके प्रदेशाध्यक्ष बनाये गये। 1967 में आप इस दल के टिकिट पर डीग क्षेत्र से विधायक चुने गये।

1969 में कांग्रेस दल का विभाजन होने पर श्री आदित्येन्द्र प्रदेश कांग्रेस (संगठन) के अध्यक्ष मनोनीत किये गये। 1975 में देश में आपात स्थिति लागू होने पर आप कारावास में रहे तथा 1977 में मुक्त होने के बाद नवगठित जनतापार्टी के प्रदेशाध्यक्ष बनाये गये। जून 1977 में आप नगर क्षेत्र से जनतापार्टी टिकिट पर विधायक चुने गये। बाद में आपने जनता विधायक दल के नेता पद के लिए श्री भैरोंसिंह शेखावत से मुकाबला किया लेकिन असफल रहे। श्री शेखावत ने आपको 27 जून, 1977 को वित्त मंत्री पद पर नियुक्त किया जिससे आपने श्री शेखावत से मतभेद होने पर 18 मई, 1979 को

त्यागपत्र दिया। बाद में जनतापार्टी का विभाजन होने पर आप लोकदल में चले गये और उसके प्रदेशाध्यक्ष मनोनीत हुए। वर्तमान में आप जयपुर में अवकाश प्राप्त जीवन बिता रहे हैं।

आदित्येन्द्र चतुर्वेदी- राजस्थान के वरिष्ठ पत्रकार तथा वर्तमान में "नवभारत टाइम्स" दिल्ली के सम्पादकीय परामर्शदाता श्री चतुर्वेदी भरतपुर के सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री सांवलदास चतुर्वेदी के पुत्र हैं। आपका जन्म 10 दिसम्बर, 1933 को भरतपुर में हुआ। पांचवें दशक के प्रारम्भ में आपने पत्रकारिता शुरु की और भरतपुर तथा जयपुर में नई दिल्ली से प्रकाशित समाचार पत्रों के संवाददाता रहे। बाद में जयपुर में दैनिक "लोकवाणी" और "नवयुग" में रिपोर्टर तथा उप सम्पादक के रूप में कार्य किया। 1987 में दिल्ली स्थानांतरित होने से पूर्व आप वर्षों तक जयपुर में "नवभारत टाइम्स" दिल्ली के विशेष संवाददाता रहे। होम्योपैथी चिकित्सा में आपकी विशेष रुचि है।

आनन्दमोहन लाल (सक्सेना)- राजस्थान के पूर्व मुख्य सचिव और राजस्व मंडल के पूर्व अध्यक्ष श्री आनन्दमोहन लाल का जन्म 24 फरवरी, 1931 को उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में हुआ। आपने शेरवुड कालेज नैनीताल से सीनियर कैम्ब्रिज परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त करने के साथ ही सभी दस विषयों में विशेष योग्यता अर्जित की। बाद में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी० एससी० तथा भौतिक शास्त्र में एम०एससी० परीक्षा प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की।

1954 में आपका भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ। आप झालावाड़, पाली व जोधपुर के जिलाधीश, आयोजना, विकास व मंत्रिमंडल सचिवालय में उप सचिव, मुख्य मंत्री के सचिव, राजस्व मंडल के सदस्य तथा राजस्व, उपनिवेशन, वन, सैनिक-कल्याण और देवस्थान विभागों के शासन सचिव एवं आयुक्त रहे। केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति पर आप दिल्ली दुग्ध-वितरण के महाप्रबंधक तथा राजस्थान राज्य दुग्ध-विकास निगम के अध्यक्ष भी रहे। आपने ब्रिटेन, यूगोस्लाविया, अमेरिका, जापान, नीदरलैण्ड, जर्मनी और स्वीडन आदि देशों की यात्रायें भी की हैं। फरवरी 1984 से जुलाई 1985 तक आप राजस्थान के मुख्य सचिव रहे। 28 फरवरी, 1989 को आपने राजस्व मंडल के अध्यक्ष पद से राज्य सेवा से अवकाश ग्रहण किया।

आनन्दस्वरूप गुप्ता- भारतीय जीवन बीमा निगम के पूर्व अध्यक्ष श्री गुप्ता का जन्म 10 दिसम्बर, 1926 को अजमेर के एक सामान्य अग्रवाल परिवार में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा अजमेर में हुई और स्नातकोत्तर उपाधि दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राप्त की। बाद में आपने लन्दन की "इन्स्टीट्यूट आफ एक्चुरीज" से फेलोशिप प्राप्त की।

प्रारंभ में श्री गुप्ता ने एशियन एश्योरेंस कम्पनी में कार्य शुरु किया लेकिन 1956 में जीवन बीमा का राष्ट्रीयकरण होने पर आप भारतीय जीवन बीमा निगम से जुड़ गये। लगभग चौथाई सदी तक निगम के विभिन्न कार्यालयों में विभिन्न पदों पर कार्य करने के बाद 1981 में आप निगम के अध्यक्ष नियुक्त किये गये। दिसम्बर 1986 में आप सेवानिवृत्त हुए। वर्तमान में आप टाटा प्रतिष्ठान, बंबई-सब-अर्बन इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

आनन्दीलाल रूंगटा- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान राज्य औद्योगिक एवं विनियोजन निगम (रीको) के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री ए.एल. रूंगटा का जन्म 15 मार्च, 1933 को झुंझुनूं जिले के बगड़ कस्बे में हुआ। आपने हाई स्कूल, इण्टर, बी.ए. तथा एम.ए. (अर्थशास्त्र) आदि सभी परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की। 1955 में आप सेवा में चयनित हुए तथा डूंगरपुर और भरतपुर के जिलाधीश, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, आयासन, स्वायत्त शासन तथा नगरीय-विकास आदि विभागों के शासन सचिव, पुनर्वास

आयुक्त, राजस्व मंडल के सदस्य, राजस्थान वित्त निगम के प्रबन्ध निदेशक, राजस्थान बिक्री कर अधिकरण के अध्यक्ष तथा पूर्व में भी रीको के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक पद पर कार्य कर चुके हैं।

आसकरण अग्रवाल- भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्व विभाग में शासन उपसचिव श्री अग्रवाल का जन्म 4 मार्च, 1933 को सीकर जिले के भरतली ग्राम में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. और एलएल.बी तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन से "साहित्यरत्न" की उपाधियां प्राप्त की। 1958 में आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये और विभिन्न जिलों में विभिन्न पदों पर कार्य करने के साथ ही उपनिदेशक अल्प बचत, क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी जयपुर, अतिरिक्त परिवहन आयुक्त, भू-प्रबंध अधिकारी जयपुर तथा अतिरिक्त आयुक्त भू-प्रबंध आदि पदों पर रहे।

श्री अग्रवाल की कला, साहित्य, संस्कृति व नाटक में प्रारंभ से ही रुचि रही है और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अब तक काफी कविताओं और लेखों का प्रकाशन हो चुका है। आपकी पिछले तीन वर्षों में राजस्व एवं भू-प्रबंध विषयों पर पाँच पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। श्री अग्रवाल विभिन्न सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी होने के साथ ही राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद के अध्यक्ष पद पर कार्य कर चुके हैं।

आशासिंह (श्रीमती) - भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला की अधिकारी और वर्तमान में शिक्षा विभाग में शासन विशिष्ट सचिव श्रीमती सिंह का जन्म 30 मई, 1953 को अजमेर में हुआ। स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद प्रारंभ में आपने सावित्री कन्या महाविद्यालय अजमेर में व्याख्याता के रूप में कार्य किया और 1976 में आपका वर्तमान सेवा में चयन हुआ। आप वित्त एवं खनिज विभागों में शासन उपसचिव, महिला, बच्चे एवं पोषाहार विभाग की निदेशक तथा टोंक के जिला कलक्टर पद पर कार्य कर चुकी हैं।

इकबाल अहमद- झालावाड़ जिले के पिड़ावा क्षेत्र से 1985 के आम चुनाव में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री इकबाल अहमद का जन्म 5 फरवरी, 1943 को सिरोंज ग्राम में हुआ। श्री अहमद विधि-स्नातक हैं और व्यवसाय से वकील हैं। समाज सेवा और शैक्षणिक गतिविधियों में आपकी विशेष रुचि है। आप झालावाड़ जिला कांग्रेस (इ) कमेटी और राजस्थान प्रदेश कांग्रेस (इ) कमेटी के महामंत्री रह चुके हैं।

इकबाल नारायण (डा०)- शिलांग स्थित उत्तर-पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय के हाल ही में मनोनीत कुलपति डा० इकबाल नारायण का जन्म जयपुर के एक सामान्य कायस्थ परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा आगरा में हुई और प्रारंभ में आप आगरा विश्वविद्यालय में ही राजनीति विज्ञान के व्याख्याता नियुक्त हुए।

राजस्थान विश्वविद्यालय में डा० नारायण राजनीति-विज्ञान विभाग के प्राध्यापक, पत्राचार अध्ययन संस्थान के निदेशक, चीफ प्रोक्टर, दक्षिण-एशिया अध्ययन केन्द्र के निदेशक, समाज-विज्ञान संकाय के डीन तथा सिंडीकेट की एकेडेमिक कौंसिल के सदस्य रह चुके हैं। 1975–76 में आप आस्ट्रेलिया में राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के विजिटिंग एशियायी फैलो रहे। 1964 में राजस्थान में पंचायतीराज संस्थाओं के अध्ययन के लिए बनी सादिक अली समिति तथा 1973 में बनी गिरधारीलाल व्यास समिति के भी आप सदस्य रहे। आपने अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, मलेशिया आदि विभिन्न देशों का भ्रमण किया है। "द्वैध शासन से स्वशासन" नामक पुस्तक आपकी बहुचर्चित रही है जो 1950 में प्रकाशित हुई थी। इसके अलावा "दक्षिण अफ्रीका में अतिभेद की राजनीति", "भारत में राजनीतिक

परिवर्तन'' तथा ''भारत में चुनाव अध्ययन'' आदि ग्रन्थ भारतीय राजनीति के अध्ययन व अनुसंधान के प्रामाणिक ग्रन्थ हैं।

डा० नारायण आठवें दशक प्रारम्भ में राजस्थान विश्वविद्यालय के तथा बाद में पांच वर्षों तक बनारस विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। वर्तमान नियुक्ति से पूर्व आप दिल्ली में सी.एस.आई.आर. से सम्बद्ध रहे।

इन्द्रजीत खन्ना- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर ग्रामीण-विकास मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्री खन्ना का जन्म 10 फरवरी, 1943 को दिल्ली में हुआ। 1966 में सेवा में चयन के बाद आप बाड़मेर, बांसवाड़ा और भीलवाड़ा के जिलाधीश, शिक्षा विभाग के निदेशक, वित्त विभाग में शासन उप सचिव तथा जन जाति क्षेत्रीय विकास आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

इन्द्रसिंह कावड़िया- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जयपुर मैटल्स एण्ड इलेक्ट्रिकल्स लि० जयपुर के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री आई.एस. कावड़िया का जन्म 22 जून, 1941 को उदयपुर में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से एम.ए. किया तथा 1965 में सेवा में चयनित हुए।

श्री कावड़िया बांसवाड़ा और कोटा में जिलाधीश, खनिज विभाग में शासन उपसचिव, गंगानगर शुगर मिल में मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, राजस्थान राज्य भंडारण व्यवस्था निगम में प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय वस्त्र निगम में क्षेत्रीय निदेशक तथा ग्रामीण-विकास एवं पंचायती राज विभाग के निदेशक एवं पदेन शासन विशिष्ट सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

वर्तमान पद पर आप 25 जुलाई, 1983 से कार्यरत हैं। इस राजकीय प्रतिष्ठान को 18 लाख रुपये प्रतिमाह के घाटे से उबार कर करोड़ों रुपये वार्षिक के लाभ में पहुँचा कर श्री कावड़िया ने भारतीय उद्योग -जगत में नया कीर्तिमान स्थापित किया है। राज्य सरकार ने भीलवाड़ा स्थित एक अन्य रुग्ण औद्योगिक इकाई मेवाड़ टैक्सटाइल्स के संचालन का भार भी आपको सौंप दिया है।

इन्दुगोपाल भिंगरन- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर अतिरिक्त सचिव श्री आई.जी. भिंगरन का जन्म एक जनवरी, 1937 को इलाहाबाद में हुआ। आपने अर्थशास्त्र में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की और 1961 में सेवा में चुने गये। आप नागौर व जैसलमेर के जिलाधीश, वाणिज्यिक कर विभाग में उपायुक्त एवं अतिरिक्त आयुक्त, केन्द्रीय सरकार के उर्वरक, पैट्रोलियम और रसायन मंत्रालय में उप सचिव, खनिज मंत्रालय में संयुक्त सचिव, राज्य के स्वायत्त शासन, नगरीय विकास, आवासन तथा खनिज आदि विभागों के शासन सचिव, राजस्थान राज्य खान एवं खनिज निगम लि० के प्रबन्ध निदेशक, रीको के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक तथा राजकीय उपक्रम विभाग के आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

इन्दुबाला सुखाड़िया (श्रीमती)- उदयपुर क्षेत्र से दिसम्बर 1984 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया का जन्म 30 जुलाई, 1921 को हुआ। आपने हिन्दी विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है।

आधुनिक राजस्थान के निर्माता स्वर्गीय मोहनलाल सुखाड़िया की धर्म पत्नी श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया आज़ादी से पूर्व से ही समाज-सेवा के क्षेत्र में सक्रिय रही हैं। आप राजस्थान समाज कल्याण बोर्ड, राजस्थान रैसक्यू होम तथा राजस्थान समाज कल्याण संघ की अध्यक्ष, बाल-कल्याण की भारतीय परिषद की सदस्य तथा राजस्थान प्रदेश कांग्रेस (इ) की दो वर्ष तक उपाध्यक्ष रह चुकी हैं।

इन्दुशेखर (प्रो.)- हिन्दी-संस्कृत के जाने-माने विद्वान प्रो. इन्दुशेखर का वास्तविक नाम देवदत्त शास्त्री है। आपका जन्म एक सितम्बर, 1911 को हरियाणा के गुड़गांव में हुआ। एम. ए. और पीएच डी. की उपाधियां प्राप्त करने के बाद आप वर्षों तक महाराजा कालेज जयपुर में संस्कृत के प्राध्यापक रहे। बाद में आप नेपाल स्थित भारतीय दूतावास में सांस्कृतिक सचिव तथा तेहरान विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे। ''रेखा'' और ''अतीत के गीत'' आपके प्रारंभिक काव्य संग्रह हैं। आपकी रचनायें देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुख रूप से प्रकाशित होती रही हैं। वर्तमान में आप जयपुर में अवकाश प्राप्त जीवन बिता रहे हैं तथा विद्या भवन की स्थानीय संस्था का कार्य देख रहे हैं।

ईश्वरचन्द्र- हिन्दी एवं सिन्धी के जाने-माने कथाकार और राजस्थान साहित्य अकादमी के वर्ष1988–89 के सर्वोच्च मीरा पुरस्कार से सम्मानित श्री ईश्वरचन्द्र का जन्म 30 जुलाई, 1937 को हैदराबाद (सिंध) में हुआ। वर्तमान में आप पश्चिम रेलवे के अजमेर कार्यालय में वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। आपकी हिन्दी में 10, सिंधी में 14 और मलयालम में एक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। इनमें एक कथा कृति ''अन्दर का बौनापन'' पर आपको राजस्थान साहित्य अकादमी पूर्व में भी सुधीन्द्र पुरस्कार प्रदान कर चुकी है। आप केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय तथा सिंधी अकादमी द्वारा भी पुरस्कृत और सम्मानित हो चुके हैं। आप आथर्स गिल्ड आफ इंडिया, केन्द्रीय तथा राजस्थान साहित्य अकादमी के सदस्य रह चुके हैं तथा राजस्थान सिंधी अकादमी की वर्तमान कार्यकारिणी के सदस्य हैं।

ईश्वरचन्द्र श्रीवास्तव- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जयपुर के संभागीय आयुक्त श्री आई सी श्रीवास्तव का जन्म 7 जुलाई, 1943 को अजमेर में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया तथा 1966 में सेवा में चयनित हुए। आप बाड़मेर और गंगानगर के जिलाधीश, सामान्य प्रशासन विभाग में शासन उपसचिव, केन्द्र में गृह मंत्रालय में उपसचिव, अल्पबचत विभाग के निदेशक, राजस्थान के जनगणना निदेशक, आबकारी आयुक्त, राज्यपाल के सचिव, राजस्व मंडल के सदस्य, समाज कल्याण विभाग के शासन सचिव तथा राजस्थान सिविल सेवा अपील न्यायाधिकरण के अध्यक्ष आदि पदों पर कार्य चुके हैं।

ईश्वरलाल सैनी- अलवर जिले के लक्ष्मणगढ़ क्षेत्र से 1980 और 1985 के आम चुनावों में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री सैनी का जन्म 25 अक्टूबर, 1935 को अलवर में हुआ। एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया और 1961 से 69 तक अलवर नगरपरिषद के सदस्य तथा 1969 से 73 तक अध्यक्ष रहे। आप सैनी शिक्षण समिति अलवर द्वारा संचालित विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के भी पदाधिकारी रहे। 9 फरवरी, 1981 से 14 जुलाई, 1981 तक आप पहाड़िया मन्त्रिमंडल में उपमंत्री भी रहे।

उजला अरोड़ा (डा०)- राजस्थान विधानसभा के लिए जयपुर ग्रामीण क्षेत्र से 1977, 1980 और 1985 में लगातार तीसरी बार निर्वाचित भारतीय जनता पार्टी की विधायक डा० उजला अरोड़ा का जन्म 2 दिसम्बर, 1933 को उत्तरप्रदेश के मेरठ नगर में हुआ। आप स्नातकोत्तर उपाधिधारी हैं।

श्रीमती अरोड़ा व्यवसाय की दृष्टि से आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं लेकिन समाज-सेवा, महिलाउत्थान और साहित्य-सृजन में आपकी प्रारम्भ से ही रुचि रही है। ''मेरी धरती-मेरे गीत'' नामक आपका एक काव्य-संग्रह प्रकाशित भी हो चुका है। आप राजधानी में वर्षों से भाजपा की सक्रिय कार्यकर्ता हैं और आपात काल में 19 माह जेल में भी बंद रह चुकी हैं।

उदयराम धाकड़-चित्तौड़गढ़ जिले के छोटी सादड़ी क्षेत्र से 1980 और 1985 के आम चु में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री उदयराम धाकड़ का जन्म फरवरी 1936 में उम्मेद ग्राम में हुआ। आपकी शिक्षा प्राथमिक स्तर तक है। आपकी समाज-सेवा कार्यों में प्रारम्भ से ही रुचि है। आप व्यवसाय से कृषक हैं और डूंगला ग्राम पंचायत के सरपंच तथा 1965 में बड़ी सादड़ी पंचा समिति के उप प्रधान रह चुके हैं।

उम्मेदीलाल- राजस्थान विधानसभा के लिए तीसरी बार निर्वाचित अनुसूचित जाति के उम्मेदीलाल का जन्म 5 जनवरी, 1933 को सवाईमाधोपुर जिले के कचरौली ग्राम में हुआ। आप की शि मिडिल तक है। व्यवसाय से कृषक श्री उम्मेदीलाल सर्वप्रथम 1957 के आम चुनाव में कांग्रेस टिकिट करौली क्षेत्र से, 1972 में भारतीय जनसंघ के टिकिट पर हिण्डौन क्षेत्र से और 1985 के चुनाव में पु कांग्रेस (इ) टिकिट पर हिण्डौन (सुरक्षित) क्षेत्र से ही चुने गये हैं।

उमरावमल चौरड़िया- राजस्थान के प्रमुख जौहरी, समाज-सेवी और फैडरेशन आफ राजस्था ट्रेड एण्ड इण्डस्ट्रीज (फोर्टी) के अध्यक्ष श्री उमरावमल चौरड़िया का जन्म 24 नवम्बर, 1931 को जयपु में हुआ। 1954 में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने जवाहरात के अपने परम्परागत व्यवसा में प्रवेश किया।

प्रारम्भ से ही समाज-सेवा और सार्वजनिक प्रवृत्तियों में सक्रिय श्री चौरड़िया 1961 से 76 तक अमर जैन मेडीकल सोसायटी जयपुर के संयुक्त सचिव, 1976–77 में सचिव तथा 1983 से 86 तक अध्यक्ष, ज्वैलर्स एसोसियेशन जयपुर के 1968 और 71–72 में मन्त्री, महावीर इंटरनेशनल की जयपुर शाखा के 1981 और 84 में अध्यक्ष, अ० भा० साधू मार्गी संघ के 1968 में उपाध्यक्ष, जयपुर चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री के 1971–72 में अध्यक्ष तथा राजस्थान चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री के उपाध्यक्ष, राजस्थान व्यापार-उद्योग मण्डल के 1977–78, 1983–85 और वर्तमान में अध्यक्ष, सुबोध शिक्षण संस्था के 1980–81 में मन्त्री और वर्तमान में अध्यक्ष, जयपुर कैलगिरी अस्पताल के न्यासी मण्डल के सदस्य तथा केन्द्रीय और राज्य सरकार की विभिन्न समितियों के सदस्य रह चुके हैं। वर्तमान में आप प्रदेश कांग्रेस कमेटी (इ) के लघु उद्योग एवं व्यावसायी प्रकोष्ठ के संयोजक तथा जयपुर स्टॉक एक्सचेंज के निदेशक पद पर कार्यरत हैं।

उमराव सालोदिया- भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में विशिष्ट योजना संगठन विभाग में शासन विशिष्ट सचिव श्री उमराव सालोदिया का जन्म 7 जून, 1956 को जयपुर जिले के सांगानेर कस्बे में हुआ। आपने 1978 में सेवा में प्रवेश किया तथा नगर दंडनायक बीकानेर अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) जयपुर, जिलाधीश झालावाड़, अतिरिक्त आयुक्त तथा पदेन शासन उप सचिव खाद्य एवं नागरिक रसद विभाग, शासन उप सचिव जनजाति क्षेत्रीय विकास, सिंचित क्षेत्र विकास तथा ऊर्जा एवं जन-स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

उषा शर्मा (डा.)- बाल-रोग विशेषज्ञ और जयपुर स्थित सवाई मानसिंह मेडीकल कालेज एवं सर पदमपत मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संस्थान में बाल-रोग विभाग की उपाचार्य डा. श्रीमती उषा शर्मा का जन्म 28 नवबर,1942 को हुआ। आपने वर्ष 1965 में एम.बी.,बी.एस. और 1971 में एम.डी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1984 में आप "भारतीय बाल-चिकित्सा अकादमी" की राजस्थान शाखा की अध्यक्ष चुनी गई और इसी वर्ष आपने जयपुर में एक राज्य-स्तरीय बाल-चिकित्सक सम्मेलन का आयोजन किया। व्यवसाय से संबद्ध आपके लेख अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

ऊषा रानी हुजा - राजस्थान की जानी-मानी मूर्तिकार श्रीमती ऊषा रानी हुजा भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी श्री भूपेन्द्र हुजा की पत्नी हैं, जिनका जन्म 18 मई, 1923 को दिल्ली में हुआ। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम. ए. किया तथा रीजेन्ट स्ट्रीट पॉलीटेकनीक लन्दन में 1949 से 54 तक मूर्ति कला का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपके द्वारा निर्मित मूर्तियां जयपुर के रवीन्द्र मंच, पुलिस मेमोरियल, सवाई मानसिंह अस्पताल, संतोकबा दुर्लभ जी अस्पताल, इंदिरा बाजार के साथ ही कोटा, राजसमन्द, ब्यावर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, भीलवाड़ा, रामगंजमंडी और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली में देखी जा सकती हैं।

श्रीमती हुजा को महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन, उदयपुर ने भारतीय परिवेश में चित्रकला और मूर्तिकला पर वर्ष 1984–85 का महाराणा सज्जनसिंह पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया है। इससे पूर्व आपको राजस्थान ललित कला अकादमी का 1963 का मूर्तिकला पुरस्कार तथा 1981 में 'राजस्थानश्री' की उपाधि प्राप्त हो चुकी है।

ए० वी० गणेशन-भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी और वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर औद्योगिक विकास मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव श्री गणेशन का जन्म 7 जून, 1935 को मद्रास में हुआ। 1959 में सेवा में प्रवेश के बाद आप गंगानगर के जिलाधीश, मुख्य मंत्री के सचिव, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर वित्त मंत्रालय में आर्थिक मामलों के संयुक्त सचिव, न्यूयार्क में "यू०एन० सेन्टर आन ट्रांसनेशनल कार्पोरेशन" के तकनीकी परामर्शदाता तथा रीको के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक चुके हैं।

ओतिमा बोर्दिया (श्रीमती)-भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला की अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति पर औद्योगिक विकास सचिव श्रीमती ओतिमा बोर्दिया का जन्म 18 अप्रेल, 1933 को इलाहाबाद में हुआ। 1957 में सेवा में प्रवेश के बाद आप श्री अनिल बोर्दिया के साथ विवाह सूत्र में बंध जाने से आई.ए.एस. के उत्तरप्रदेश संवर्ग से राजस्थान संवर्ग में स्थानांतरित होकर यहाँ आई।

श्रीमती बोर्दिया बीकानेर की जिलाधीश, राजस्थान राज्य सेवा [illegible] की सचिव, वित्त विभाग का शासन विशिष्ट सचिव तथा सचिव, केन्द्रीय वित्त मंत्रालय में व्यय विभाग में तथा [illegible] में अतिरिक्त सचिव पद पर कार्य कर चुकी हैं।

ओमप्रकाश जोशी- भारतीय प्रशासनिक सेवा के [illegible] अधिकारी श्री ओ०पी० [illegible] का जन्म एक जुलाई, 1928 को जयपुर जिले के [illegible] कस्बे में एक [illegible] परिवार में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से एम.कॉम. परीक्षा सर्वोच्च अंकों से उत्तीर्ण कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया तथा प्रारंभ में विभिन्न राजकीय महाविद्यालयों में व्याख्याता रहे। 1957 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन के पश्चात आप सिरोही में अतिरिक्त जिला विकास अधिकारी [illegible] राजस्थान के जनगणना विभाग में उपनिदेशक, राज्य के गृह, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य [illegible] विभागों में शासन उप सचिव तथा परिवहन विभाग में निदेशक रहे।

1976 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति के बाद [illegible] जन सम्पर्क विभाग के दो बार निदेशक, श्रम आयुक्त [illegible] निदेशक तथा गृह, सामान्य प्रशासन, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार [illegible] सचिव आदि के रूप में कार्य किया। आप [illegible] सरकार ने 30 जून, 1986 को सेवा-निवृत्ति के बाद 6 माह की [illegible] राजस्थान सिविल सेवा अपील न्यायाधिकरण का सदस्य [illegible] किया।

ओमप्रकाश मेहरा- राजस्थान के पूर्व राज्यपाल श्री ओमप्रकाश मेहरा का जन्म 19 जनवरी सन 1919 को लाहौर में हुआ और उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से इतिहास विषय में एम.ए. किया। आपको भारतीय वायु सेना में तीस नवम्बर, 1940 को कमीशन मिला और विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए जनवरी 1973 में वायुसेनाध्यक्ष नियुक्त हुए। इस पद पर आपने पूरे तीन वर्ष कार्य किया और 31 मार्च, 1976 को अवकाश ग्रहण किया। आपको जनवरी 1968 में परम विशिष्ट सेवा पदक और जनवरी 1977 में "पद्मविभूषण" की उपाधि से सम्मानित किया गया। वायुसेनाध्यक्ष बनने से पूर्व आपने हिन्दुस्तान एयरोनोटिक्स लि० के अध्यक्ष पद पर ढाई वर्ष तक कार्य किया।

श्री मेहरा ने 6 मार्च, 1982 को राजस्थान के राज्यपाल पद की शपथ ली और इस पद पर 3 नवम्बर, 1985 तक कार्य किया। इससे पूर्व आप महाराष्ट्र के राज्यपाल रहे।

ओमप्रकाश टंडन- भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान के पुलिस महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) श्री ओ०पी० टंडन का जन्म 15 अगस्त, 1934 को अजमेर में हुआ। 1957 में सेवा में चयन के बाद आप विभिन्न जिलों में पुलिस अधीक्षक, उप महानिरीक्षक सी.आई.डी. (गुप्तचर शाखा) तथा बीकानेर रेंज, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर गृह मंत्रालय में उप निदेशक, गुप्तचर ब्यूरो तथा राज्य में विशिष्ट महानिरीक्षक (गुप्तचर) आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

ओमप्रकाश बिहारी-भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर ग्रामीण विकास मंत्रालय में कृषि-विपणन परामर्शदाता श्री ओ०पी० बिहारी का जन्म 4 जनवरी, 1943 को छपरा (बिहार) में हुआ। 1966 में सेवा में चयन के बाद आप जिलाधीश चूरू, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर प्रतिरक्षा मंत्रालय में उप सचिव तथा मुख्य प्रशासनिक अधिकारी एवं निदेशक (सुरक्षा) तथा बीकानेर में क्षेत्रीय विकास आयुक्त इंदिरा गांधी नहर परियोजना आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

ओमप्रकाश शर्मा- राजस्थान के पत्रकार-जगत में ओम जी के नाम से लोकप्रिय श्री ओम शर्मा "राजस्थान पत्रिका" के उदयपुर संस्करण के स्थानीय सम्पादक हैं जिनका जन्म 21 नवम्बर,1938 को अविभाजित भारत के कराची महानगर में हुआ। छठे दशक के प्रारम्भ में आपने जयपुर से प्रकाशित दैनिक "नवयुग" के सम्पादकीय विभाग से पत्रकारिता में प्रवेश किया। बाद में "दैनिक नवज्योति" के अजमेर और जयपुर संस्करणों में, "हिन्दुस्थान समाचार" समिति के दिल्ली स्थित मुख्यालय और "राष्ट्रदूत" में वर्षों कार्य किया।

व्यंग्य-लेखन और विशेषकर राजनीतिक व्यंग्य लिखना ओम जी की विशेष रुचि है। आपने वर्षों तक दैनिक नवज्योति में हजरत अजमेरी के नाम से "पर्दे-के-पीछे" स्तंभ लिखा जो काफी लोकप्रिय सिद्ध हुआ। वर्तमान में आप राजस्थान पत्रिका में "बात-करामात" स्तंभ लिख रहे हैं जिसे पत्रिका के लाखों पाठक नियमित रूप से पढ़ते हैं। राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ की गतिविधियों से आप वर्षों से जुड़े हुए हैं और इसके महामंत्री सहित विभिन्न पदों पर कार्य कर चुके हैं। 30 मार्च, 1988 को राजस्थान दिवस पर आपको राज्य सरकार द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

कृपालसिंह शेखावत (पद्मश्री) - राजस्थान के राष्ट्रीय स्तर के चित्रकार पद्मश्री कृपालसिंह शेखावत का जन्म 12 दिसम्बर, 1924 को सीकर जिले के मऊ नामक ग्राम में हुआ। आपकी शिक्षा पिलानी, लखनऊ और शान्तिनिकेतन में हुई तथा टोकियो (जापान) में आपने चित्रकला का प्रशिक्षण प्राप्त किया। बाद में आप शान्तिनिकेतन में ही कला के प्रोफेसर बन गये और फिर टोकियो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टेडीज में व्याख्याता बनकर चले गये।

श्री शेखावत के चित्रों का प्रकाशन देश-विदेश की अनेक शीर्ष पत्रिकाओं में समय-समय पर होता रहा है। नरेश अभिनन्दन ग्रन्थ, वर्ल्ड कल्चरल एंसाइक्लोपीडिया, इंडियन फॉरेन रिव्यू, बिड़ला हाऊस दिल्ली के भित्ति चित्र, भारतीय संविधान की मूल पाण्डुलिपि की सज्जा और चित्रांकन, जयपुर रेलवे स्टेशन पर गणगौर का भित्ति चित्र तथा शांतिनिकेतन में रामायण का चित्रांकन आदि आपकी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। आल इंडिया फाइन आर्ट एण्ड क्राफ्ट सोसायटी, कालिदास समारोह उज्जैन तथा फाइन आर्ट अकादमी कलकत्ता से आप पुरस्कृत तथा सम्मानित हो चुके हैं। 1950 से आप देश के विभिन्न नगरों और कतिपय विदेशी नगरों में भी अपने चित्रों की प्रदर्शनियाँ आयोजित कर चुके हैं। पिछले कुछ वर्षों से आपका ध्यान ब्लू पॉट्री पर अधिक केन्द्रित है। आपके ही प्रयासों से जयपुर की ब्लू पॉट्री देश-विदेश में दिनोंदिन लोकप्रियता अर्जित कर रही है। आपको इसके लिए राष्ट्रपति से "मास्टर क्राफ्ट मैन" का प्रमाणपत्र भी मिल चुका है। आपने अपने निवास-स्थान को ब्लू पॉट्री का स्कूल बना रखा है जिससे अनेक नयी प्रतिभाओं को कला-प्रतिभा को विकसित होने का अवसर मिला है। कला के क्षेत्र में आपकी उपलब्धियों के लिए भारत-सरकार द्वारा आपको 'पद्मश्री' की उपाधि से सम्मानित किया चुका है।

कृपाशंकर रस्तोगी - भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान वित्त निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के.एस. रस्तोगी का जन्म 15 अक्टूबर, 1934 को फुलसओनगी (महाराष्ट्र) में हुआ। आपने स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के साथ ही फ्रेंच भाषा की प्रमाण पत्र परीक्षा भी उत्तीर्ण की। 1958 में सेवा में प्रवेश के बाद आप जैसलमेर, जालौर, बूंदी और जोधपुर के जिलाधीश, राजस्व मंडल के निबन्धक तथा सदस्य, उपनिवेशन आयुक्त, शिक्षा, स्वायत्तशासन, नगरीय-विकास, आवासन, चिकित्सा तथा स्वास्थ्य आदि विभागों के शासन सचिव तथा केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर गृह मंत्रालय में संयुक्त सचिव और जेल-सुधार समिति के सदस्य-सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

कृष्णकुमार गोयल - कोटा में रियासती काल में रसद विभाग की बाबूगिरी से अपनी जीवन-यात्रा प्रारम्भ कर भारत सरकार के खाद्य मंत्री पद तक पहुंचने वाले श्री कृष्णकुमार गोयल का जन्म सम्वत 1983 के श्रावण मास में कोटा के एक सामान्य अग्रवाल परिवार में हुआ। वकालत के व्यवसाय में प्रवेश से पूर्व श्री गोयल ने दो वर्ष तक हाई स्कूल में अध्यापन भी किया। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से आपका छात्र जीवन से ही गहरा लगाव रहा। यही कारण था कि केन्द्रीय सरकार में अपने मंत्रित्व काल में भी यदा-कदा नेकर पहिन कर शाखा में जाने से नहीं चूकते थे। भारतीय जनसंघ की हाड़ौती अंचल में जड़ें जमाने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ा। भारतीय जनसंघ की प्रदेश शाखा के आप महामंत्री और दो बार अध्यक्ष रहे। 1962 और 1967 के चुनावों में आप कोटा नगर क्षेत्र से जनसंघ टिकिट पर दो बार विधायक चुने गये। 1972 में आप चुनाव हार गये और आपात काल में पूरे 19 महीने जेल में रहने के बाद 1977 के चुनाव में आप जनता पार्टी के टिकिट पर प्रथम बार लोकसभा के सदस्य चुने गये। श्री मोरारजी देसाई ने आपको अपने मंत्रिमंडल में खाद्य तथा नागरिक रसद विभाग के राज्य मंत्री के रूप में शामिल किया। 1980 में आप इसी क्षेत्र से पुनः लोकसभा सदस्य चुने गये लेकिन 1984 में पराजित हो गये। वर्तमान में आप प्रदेश भाजपा के महामंत्री हैं।

कृष्णकुमार बिड़ला - देश के विख्यात उद्योगपति और राजस्थान से राज्यसभा के सदस्य श्री के.के. बिड़ला भारतीय उद्योग-जगत के पितामह श्री घनश्यामदास बिड़ला के पुत्र हैं। आपका जन्म सन् 1918 में पिलानी में हुआ। आप भारतीय चीनी नियंत्रण बोर्ड के सदस्य तथा 1951 में भारी इंजीनियरिंग उद्योग के भारत सरकार के पैनल के अध्यक्ष रह चुके हैं। आप हिन्दुस्तान टाइम्स लि० के अध्यक्ष तथा न्यू इंडिया शुगर मिल्स लि०, अपर गंगेज शुगर मिल्स लि०, दी काटन एजेंट्स लि०, टैक्सटाइल मशीनरी

कारपोरेशन लि०, जयश्री टी० गार्डन लि०, उषा डवलपमेंट कं० लि०, बिड़ला बिल्डिंग लि० तथा राजकमल प्रकाशन लि० आदि अनेक कम्पनियों के निदेशक मंडल के सदस्य तथा पदाधिकारी रहे हैं।

1971 में आपने प्रथम बार झुन्झुनूं क्षेत्र से स्वतन्त्र पार्टी के टिकिट पर लोकसभा का चुनाव लड़ा, लेकिन पराजित हुए। 1984 में आप राजस्थान विधान सभा क्षेत्र से कांग्रेस (इ) के टिकिट पर राज्य सभा के सदस्य चुने गये हैं।

कृष्णकुमार भटनागर- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर नगरीय-विकास मंत्रालय में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रीय आयोजना मंडल के सदस्य सचिव श्री के.के. भटनागर का जन्म 21 अक्टूबर, 1938 को कोटा में हुआ। 1962 में सेवा में चयन के बाद आप बाड़मेर और जोधपुर के जिलाधीश, निर्वाचन विभाग में अतिरिक्त मुख्य निर्वाचनाधिकारी, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में महाप्रबंधक, राजस्व मंडल के सदस्य, शिक्षा विभाग में शासन सचिव, मरु विकास आयुक्त तथा जयपुर विकास प्राधिकरण के आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

कृष्णचन्द्र भाटिया - जोधपुर के प्रमुख व्यवसायी श्री कृष्णचंद्र भाटिया का जन्म 10 सितम्बर, 1922 को सियालकोट (पाकिस्तान) में हुआ। आप स्टैण्डर्ड ऑटो पार्ट्स प्रा० लि० के प्रबन्ध निदेशक हैं। आप राजस्थान ऑटो पार्ट्स मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन तथा मारवाड़ चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष तथा राजस्थान चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज के उपाध्यक्ष रह चुके हैं।

कृष्णचन्द्र विश्नोई- राजस्थान प्रदेश युवक कांग्रेस (इ) के पूर्व अध्यक्ष तथा गंगानगर जिले के सांगरिया निर्वाचन क्षेत्र से मार्च 1985 में निर्वाचित विधायक श्री कृष्णचन्द्र विश्नोई का जन्म 15 जुलाई, 1955 को जिले के रोहिरावाली ग्राम में हुआ। आप बी०ए० तक शिक्षित हैं। प्रदेश युवक कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष बनने से पूर्व आप इसके महामन्त्री भी रह चुके हैं।

कृष्णबिहारी अग्रवाल- राजस्थान इलेक्ट्रॉनिक्स एवं इंस्ट्रूमेंट्स लि० (रील) के महाप्रबंधक श्री के० बी० अग्रवाल का जन्म 20 नवम्बर, 1945 को जयपुर में हुआ। आपने एम० ई० करने के पश्चात् विपणन प्रबन्ध में डिप्लोमा प्राप्त किया है। रील की सेवा में आने से पूर्व आप वैज्ञानिक अधिकारी, व्याख्याता तथा इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग के संयुक्त निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

कृष्णमोहन सहाय - भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में विशिष्ट योजना विभाग में शासन उपसचिव श्री के.एम. सहाय का जन्म 9 दिसम्बर, 1933 को भरतपुर जिले में हुआ। प्रारंभ में आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये और तत्कालीन जयपुर नगर-विकास-न्यास के सचिव, समाज-कल्याण विभाग के निदेशक तथा विभिन्न विभागों में शासन उपसचिव रहे। भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति के बाद आप बांसवाड़ा तथा सीकर के जिला कलेक्टर रहे।

कृष्णलाल गोदारा- भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सी.आई.डी. (अपराध) में पुलिस अधीक्षक (प्रथम) श्री के. एल. गोदारा का जन्म पांच अगस्त, 1933 को गंगानगर जिले के मादरा कस्बे में हुआ। आपने बी.ए. डूंगर कालेज बीकानेर से, एम.ए. (लोक-प्रशासन) तथा एलएल.बी. का पूर्वार्द्ध नागपुर विश्वविद्यालय से और साहित्य रत्न हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से किया। 1956 में आपका रा.पु. सेवा में चयन हुआ और 1969 तथा 1979 में आपको क्रमशः वरिष्ठ वेतन श्रृंखला तथा चयन वेतन श्रृंखला में पदोन्नति मिली। आप जोधपुर, अजमेर, धौलपुर, रेलवे पुलिस कोटा तथा सी.आई.डी. (अपराध-अन्वेषण) में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रहे। 1981 में आपको भा.पु.

सेवा में पदोन्नत किया गया तथा आप मणिपुर और अलीगढ़ में आर.ए.सी. की दसवीं बटालियन के कमांडेंट, टोंक तथा सवाई माधोपुर जिलों और रेलवे पुलिस अजमेर के पुलिस अधीक्षक तथा जयपुर में आर.ए.सी. की दूसरी बटालियन के कमांडेंट के रूप में कार्य कर चुके हैं।

कृष्णा भटनागर (श्रीमती) - भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला की अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर कृषि मंत्रालय में संयुक्त सचिव तथा कृषि-अनुसंधान एवं शिक्षण विषयक वित्तीय परामर्शदाता श्रीमती कृष्णा भटनागर का जन्म 18 दिसम्बर 1943 को पंजाब के होशियारपुर जिले में हुआ। आपकी शिक्षा अजमेर में हुई जहाँ से आपने अंग्रेजी साहित्य में एम०ए० किया। 1967 में सेवा में प्रवेश के बाद आप कार्मिक एवं वित्त विभाग में शासन उपसचिव अजमेर की जिलाधीश, वित्त विभाग (राजस्व) में शासन विशिष्ट सचिव तथा राजस्व मंडल की सदस्य रह चुकी हैं।

कपूरदास गुप्ता- जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग जयपुर के मुख्य अभियन्ता श्री के.डी. गुप्ता का जन्म 11 नवम्बर, 1933 को हरियाणा के रिवाड़ी नगर में हुआ। आपने बी एससी (मैकेनिकल अभियांत्रिकी) एम ई (सिविल एवं पर्यावरण अभियांत्रिकी) तथा एलएल बी (व्यावसायिक) की उपाधियां प्राप्त की। 13 जून 1956 को आपने सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में कनिष्ठ अभियंता के रूप में सेवा प्रारंभ की। 14 नवम्बर 1957 को आपकी सहायक अभियन्ता और जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के पृथक होने के बाद 4 अप्रेल 1963 को अधिशाषी अभियन्ता 18 अगस्त 1971 को अधीक्षण अभियंता और जुलाई 1979 के अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता के पद पर पदोन्नत हुई। 3 अगस्त 89 को वर्तमान पद पर नियुक्ति से पूर्व आप राजस्थान राज्य जल प्रदूषण एवं नियंत्रण मंडल में तकनीकी सदस्य के रूप में कार्यरत थे। श्री गुप्ता ने 1978 में विश्व स्वास्थ्य संगठन की फैलोशिप पर भू-जल विषय में प्रशिक्षण हेतु पश्चिम जर्मनी युगोस्लाविया चैकोस्लोवाकिया तथा स्वीडन और यूरोपीय देशों की यात्रा की।

कन्हैयालाल कोचर - भारतीय प्रशासनिक सेवा के [illegible] श्री क०ला० कोचर का जन्म एक जून 1931 को बीकानेर में हुआ और उनकी शिक्षा बीकानेर तथा [illegible] में हुई। 1956 में आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुन गये और [illegible] जयपुर के अतिरिक्त जिलाधीश, कार्मिक और कृषि विभाग में [illegible] में बीकानेर तथा जयपुर क्षेत्र में उपायुक्त (प्रशासन) तथा राजस्थान लघु उद्योग निगम में प्रबन्ध निदेशक रहे। 1977 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति के बाद [illegible] नियोजन सेवा आदि विभागों के [illegible] निदेशक [illegible] विशिष्ट सचिव आदि पदों पर कार्य किया।

श्री कोचर के सेवा-काल की सबसे बड़ी उपलब्धि राजस्थान लघु उद्योग निगम के प्रबंध निदेशक के पद पर रहकर [illegible] को देश-विदेश में लोकप्रिय बनाने और इस कार्य में [illegible] समझा जाता है। आप हिन्दी के [illegible] लेखक और [illegible] भी हैं।

कन्हैयालाल गुप्ता (डा०)- [illegible] का जन्म दो अगस्त, 1941 को [illegible] में एक [illegible] में हुआ। आप अपनी असाधारण प्रतिभा और कार्य कुशलता के [illegible] के रूप में पदोन्नत हुए और पिछले 6 वर्षों से [illegible] हैं।

डा० गुप्ता अब तक टोंक झुंझुनूं और चित्तौड़गढ़ जिलों के [illegible] तथा [illegible] के [illegible] रह चुके हैं। [illegible]

वर्ष तक लीबिया की राजधानी त्रिपोली के मुख्य अस्पताल में भी कार्य कर चुके हैं। इससे पूर्व 1971 में डा० गुप्ता श्रीलंका में विशेष अध्ययन हेतु गये थे। आप राजस्थान मेडीकल एसोसियेशन की केन्द्रीय परिषद् के सदस्य हैं।

कन्हैयालाल पारीक - भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में विशिष्ट योजनायें एवं एकीकृत ग्रामीण-विकास विभाग में शासन उपसचिव पद पर दूसरी बार पद स्थापित श्री के.एल. पारीक का जन्म 21 मई, 1933 को सीकर जिले के फतहपुर कस्बे में हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम०काम० और हिन्दी साहित्य सम्मेलन से "विशारद" करने के बाद प्रारंभ में आपने कलकत्ता में निजी प्रतिष्ठान बांगड़ ब्रादर्स में काम किया। 1959 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन के बाद आप झुंझुनूं में अतिरिक्त जिला-विकास अधिकारी, राजस्थान लघु उद्योग निगम में वरिष्ठ अधिशासी, वाणिज्यिक कर विभाग में उपायुक्त, अजमेर नगर विकास न्यास में सचिव, राजस्थान पथ परिवहन निगम में महाप्रबन्धक तथा दो बार स्थानीय निकाय विभाग में निदेशक रह चुके हैं। 1988 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति के बाद आप राजस्थान राज्य सहकारी बुनकर संघ लि० जयपुर के प्रबंध निदेशक रहे।

कन्हैयालाल बडाया - भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री के० एल० बडाया का जन्म 13 अप्रेल, 1921 को जयपुर के एक साधारण खंडेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। जयपुर में ही आपकी शिक्षा हुई और बी० कॉम० तथा एलएल० बी० की उपाधि प्राप्त करने के बाद 13 मई, 1944 को आप राजकीय सेवा में प्रविष्ट हुए। विभिन्न पदों पर कार्य करने के बाद 22 जनवरी, 1951 को आपको राजस्थान प्रशासनिक सेवा में तथा 1960 में आपको भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति दी गयी।

श्री बडाया पाली, सिरोही और कोटा के जिलाधीश, सामुदायिक विकास एवं पंचायत विभाग में संयुक्त आयुक्त, अधिकारी प्रशिक्षण महाविद्यालय के आचार्य, राज्य के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, राजस्व, वन तथा देवस्थान आदि विभागों के शासन सचिव, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के अध्यक्ष, परिवहन आयुक्त, मरु-विकास आयुक्त तथा राज्य के औद्योगिक परामर्शदाता एवं जयपुर उद्योग लि० के प्रबन्ध निदेशक आदि महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं। 1979 में सेवा निवृत्ति के बाद आप विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से समाज सेवा कार्यों में भाग ले रहे हैं।

कन्हैयालाल मीणा-भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जोधपुर के जिला कलक्टर श्री के.एल. मीणा का जन्म 15 जुलाई, 1945 को सीकर जिले के नवाबाम ग्राम में हुआ। 1975 में सेवा में प्रवेश के बाद आप अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) एवं परियोजना निदेशक, पाली, भरतपुर के जिलाधीश, पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग के निदेशक, खनिज विभाग में उप सचिव, कृषि-विपणन निदेशक एवं राजस्थान राज्य कृषि-विपणन बोर्ड के पदेन प्रशासक तथा राहत विभाग में शासन विशिष्ट सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

कन्हैयालाल वर्मा-[illegible] उज्जैन द्वारा वर्ष 1985, 1986 और 1988 में तीन बार अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार से सम्मानित राजस्थान के [illegible] चित्रकार श्री वर्मा का जन्म [illegible] में हुआ। आपने राजस्थान की सभ्यता, संस्कृति और [illegible] के गौरव को दर्शाने वाले विषयों को राजस्थान की परम्परागत चित्र शैली में [illegible] कर नया प्रयोग किया है। [illegible] 1967 में राजस्थान के [illegible] आधुनिक शैली में [illegible] बी.ए. तक शिक्षा [illegible] लगभग 50 चित्र बनाकर यहाँ परम्परागत [illegible] दिया। [illegible] वर्ष 1974 में राजस्थान [illegible]

[illegible]

कन्हैयालाल सेठिया- राजस्थान की धरती के यशस्वी गायक श्री सेठिया का जन्म चूरू जिले के सुजानगढ़ कस्बे में सन् 1920 में हुआ। पिछले पांच दशकों से वे राजस्थानी के माध्यम से काव्य-सृजन कर मां भारती का भंडार भर रहे हैं। बाल्यकाल में ही उन्होंने "रमणए-रा-सोरठा" लिखकर अपनी जन्म भूमि के यश का गान किया। उनके "लीलटांस" काव्य संग्रह को 1976 में केन्द्रीय साहित्य अकादमी ने राजस्थानी की सर्वश्रेष्ठ कृति मानते हुए उन्हें पुरस्कृत किया। "म्हारी सीमा पर है जुमरां री देवल्यां", "लोही सूं निरपत आगणियूं", "केशरिया बानां पहर्यां रोहिड़ा", "जौहर रा साखी फोगर खेजड़ा" के साथ उन्होंने शौर्य और बलिदान वाली अपनी "जन्म भौम" का यशोगान किया है।

राजस्थान के प्रतिभावान कलाकार कौशल भार्गव ने "धरती-धोरां-री" नृत्यनाटिका के माध्यम से देश-विदेश में राजस्थान का जो भव्य प्रस्तुतीकरण किया है उसमें "आ तो सुरगां नै सरमावै, ईं पर देव रमण नै आवे, ईं रै सत री आण निभावां, ईं रै पत नै नहीं लजावां, ईं नै माथो भेंट चढ़ावां, ईं री धूल लिलाड़ लगावां, धरती धोरां रीं" सेठिया जी के ही अमर बोल हैं।

"अगिनबीणा" व "किन धाड़ियां में बेसुध सोवे मारवाड़ के सपूत" में उन्होंने सामन्ती युग में जोर जुल्म के खिलाफ लड़ने के लिए युवक शक्ति को ललकारा है। "पातल र पीथल" में सेठिया जी ने न केवल आजादी के बाद राजस्थानियों का उद्बोधन किया है-तुम्हें सौगंध है सांधी सिरोही के शहीदों की, अपितु 'कुण जमीन-रो-धणी' जैसे बुनियादी प्रश्न भी उठाये हैं। सेठियाजी की प्रकाशित रचनायें जहाँ दर्जनों में हैं, वहाँ उनके पुरस्कार भी कम नहीं हैं।

कमर मेवाड़ी-राजस्थान के संघर्षशील कवि एवं कथाकार कमर मेवाड़ी का वास्तविक नाम अब्दुल लतीफ है। आपका जन्म 11 जुलाई 1937 को उदयपुर जिले के कांकरोली कस्बे में हुआ। हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने अध्यापन को आजीविका के रूप में चुना। आपकी प्रथम काव्य-कृति 'चांद के दाग' 1970 में प्रकाशित हुआ। इसके बाद 'आखिर कब तक', 'कदम अभी जारी हैं' तथा 'फैसला होने तक' (सभी काव्य) और 'लाशों का जंगल' तथा 'जिन्दगी की तलाश' (कथा) और 'सब एक' (उपन्यास) प्रकाशित हुए। 1966 से आप "सम्बोधन" नामक त्रैमासिक पत्रिका का सम्पादन भी कर रहे हैं।

कमलचन्द कासलीवाल-जयपुर स्थित प्रमुख ऑटोमोबाइल संस्थान कमल एण्ड कं. के संस्थापक श्री कमल कासलीवाल का जन्म 9 अगस्त, 1914 को हुआ। आपने एक लघु ऑटोमोबाइल विक्रेता के रूप में व्यवसाय प्रारंभ किया और शीघ्र ही आपके संस्थान की गणना राज्य के प्रमुख ऑटोमोबाइल संस्थान के रूप में होने लगी। जयपुर नगर में सिटी बस का काम सर्वप्रथम आपके ही संस्थान द्वारा शुरू किया गया था। राजस्थान ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन के आप वर्षों तक अध्यक्ष रह चुके हैं।

कमला (श्रीमती)-राजस्थान के वर्तमान मंत्रियों में सबसे वरिष्ठ और 1954 के बाद बनी सभी कांग्रेसी मुख्यमंत्रियों की मंत्रिपरिषदों की सदस्य रही वर्तमान कृषि एवं सामुदायिक विकास मंत्री श्रीमती कमला (बेनीवाल) का जन्म 12 जनवरी, 1927 को झुंझुनूं जिले के [illegible] गोरीर ग्राम में स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्री नेतराम चौधरी के यहां हुआ। आपकी शिक्षा वनस्थली और जयपुर में हुई तथा आपने इतिहास में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त कर अध्यापिका के रूप में कार्य प्रारंभ किया।

श्रीमती कमला 1954 में राजसेवा से त्यागपत्र देकर तत्कालीन [illegible] क्षेत्र से उपचुनाव में कांग्रेस के टिकट पर विधायिका चुनी गयी। इससे विधानसभा की आप पहली निर्वाचित महिला सदस्य बनी। नवम्बर 1954 में श्री मोहनलाल सुखाड़िया के मुख्यमंत्री बनने पर आप उनकी [illegible] नियुक्त की

गई। 1957 में आप दूदू क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव हार गयी लेकिन 1962 के चुनाव में बैराठ क्षेत्र से पुनः निर्वाचित हो गयी। श्री सुखाड़िया ने आपको पुनः उपमंत्री नियुक्त किया और योजना, वित्त, अकाल-राहत तथा राजकीय उपक्रम विभाग दिये। जनवरी 1967 में श्री कुंभाराम आर्य के साथ आपने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर 1967 में बैराठ से ही भाक्रांद के टिकिट पर चुनाव लड़ा जिसमें पराजित हो गयी। 1968 में आप राजस्थान राज्य सहकारी संघ की अध्यक्ष मनोनीत की गयी। 1970 में आप कांग्रेस में पुनः शामिल हुई और 1972 के चुनाव में दूदू क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायिका चुनी गयी। मार्च 1972 में श्री बरकतुल्लाह खां की सरकार में आप गृह, जनसम्पर्क एवं उद्योग विभाग की राज्यमंत्री नियुक्त की गयी। अक्टूबर 1973 में श्री खां के निधन के बाद बनी श्री हरिदेव जोशी की सरकार में आपको 16 नवम्बर,1973 को पुनः राज्यमंत्री बनाया गया और आयुर्वेद, जनसम्पर्क, श्रम व नियोजन तथा समाज कल्याण विभाग का कार्य सौंपा गया।

1977 में आपने चुनाव नहीं लड़ा और 1980 में आप बैराठ क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायिका चुनी गयी। जून 1980 में बने जगन्नाथ पहाड़िया मंत्रिमंडल में 18 जून को आप राजस्व मंत्री नियुक्त की गयी तथा जुलाई 1981 में बने शिवचरण माथुर मंत्रिमंडल में आप शिक्षा, भाषा, नियोजन तथा ऊर्जा मंत्री बनाई गई। 1985 के चुनाव में आप बैराठ क्षेत्र से पुनः विधायिका चुनी गयी और 11 मार्च को हरिदेव जोशी मंत्रिमंडल में राजस्व, सिंचायी, पर्यटन, पुरातत्व तथा इंदिरा गांधी नहर परियोजना आदि विभागों की मंत्री नियुक्त की गयी। वर्तमान शिवचरण माथुर सरकार में आप 8 जून, 1989 को शामिल की गयी।

कमला भील (श्रीमती)- राजस्थान की समाज-कल्याण विभाग की प्रभारी राज्य मंत्री श्रीमती कमला भील प्रदेश के प्रमुख आदिवासी नेता तथा विभिन्न सरकारों में वर्षों तक विभिन्न विभागों के मंत्री रहे श्री भीखाभाई भील की पुत्री हैं। आपका जन्म 7 जनवरी,1948 को हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से एम.ए. और एलएल.बी. के साथ डी.यू.सी., डी.एल.एल. की उपाधियां प्राप्त की। प्रारंभ में 1966 में आप श्रम विभाग में श्रम-कल्याण अधिकारी पद पर नियुक्त हुई और 1980 में चुनाव लड़ने के लिये राज्यसेवा से त्यागपत्र देते समय आप सहायक श्रम आयुक्त पद पर कार्यरत थी।

श्रीमती भील 1980 और 1985 के दोनों चुनावों में कांग्रेस (इ) टिकिट पर सागवाड़ा (सु.अ.ज.) क्षेत्र से विधायक चुनी गई।19 जुलाई, 1981 को आप प्रथम बार श्री शिवचरण माथुर के मंत्रिमंडल में उपमंत्री नियुक्त की गई। गत 27 जनवरी,1988 को श्री माथुर के पुनः मुख्यमंत्री बनने पर आप राज्यमंत्री बनाई गई तथा समाज कल्याण विभाग का आपको स्वतंत्र कार्यभार सौंपा गया।

कमलाकर 'कमल' (गुरुजी)- महाकवि पद्माकर के प्रपौत्र और राष्ट्रभाषा हिन्दी के अनन्य सेवक श्री कमलाकर 'कमल' का जन्म यद्यपि मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले के रेवई ग्राम में सम्वत् 1971 की माघ शुक्ला द्वादशी को हुआ तथापि उनका कार्यक्षेत्र जयपुर रहा है। आपके जन्म के पन्द्रह दिन बाद माता का और पन्द्रह वर्ष बाद पिताजी का देहान्त हो गया अतः आपकी औपचारिक शिक्षा तो मात्र पांचवें दर्जे तक ही हो सकी लेकिन अपनी लगन, निष्ठा और अध्यवसाय से उन्होंने जो ज्ञान अर्जित किया उसका प्रसाद उन्होंने हजारों-हजारों लोगों तक पहुंचाया है। महात्मा गांधी की प्रेरणा से राष्ट्रभाषा हिन्दी का निःशुल्क प्रचार-प्रसार उनके जीवन का चरम लक्ष्य हो गया। उन्होंने यह यज्ञ 1935 में शुरू किया था जो आज तक निर्बाध रूप से जारी है। उनकी कर्म भूमि ''साहित्य सदावर्त'' में पढ़कर साहित्यरत्न, विशारद, प्रथमा, प्रभाकर, हिन्दी कोविद, और राष्ट्रभाषारत्न आदि परीक्षायें उत्तीर्ण करने वाले लोग कश्मीर [illegible] में ही नहीं राज्य के कोने-कोने में मिल जायेंगे।

कमलाकर जी को कविता का संस्कार अपने पिता के साथ श्री सुधाकर से मिला था [illegible] के लोकेन्द्र साहित्य मंडल के संस्थापकों में से थे। आपकी सर्व श्री [illegible] माथुर [illegible]

जयशंकरप्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और सुमित्रानन्दन पंत आदि कवियों ने बहुत प्रभावित किया। ब्रज भाषा की काव्य-रचना में बिहारी, भूषण, रत्नाकर और पद्माकर ने प्रेरणा दी। आपकी चार कृतियां कैलाश-कामायनी प्रसंग, मुक्तामणी टीका, त्रिवेणी, प्रसाद भारती और हिन्दी साहित्य के इतिहास की निबन्धात्मक प्रकाशित हो चुकी हैं। कवि और शिक्षक के साथ-साथ गुरुजी अच्छे पत्रकार भी रहे हैं। जयपुर से प्रकाशित मासिक "प्रसंग" का आपने सम्पादन किया था।

कर्णसिंह रन्नू (डा.)- नेफ्रोलॉजी और गुर्दा रोगों के चिकित्सा विशेषज्ञ तथा जयपुर स्थित सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज और सम्बद्ध चिकित्सालय में नेफ्रोलॉजी विभाग के आचार्य और विभागाध्यक्ष डा. कर्णसिंह रन्नू का जन्म 12 अक्टूबर 1941 को अलवर में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा अलवर और जयपुर में हुई। आपने वर्ष 1964 में एस एम एस मेडीकल कालेज जयपुर से ही एम बी बी एस किया और विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान तथा स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 1964 में आपने मेडीसिन में एम डी परीक्षा उत्तीर्ण की। नेफ्रोलॉजी में आपने इंग्लेण्ड से विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आप अपने व्यवसाय से सम्बद्ध अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग ले चुके हैं।

कर्पूरचन्द्र कुलिश- देश के प्रख्यात पत्रकार, लेखक, कवि और राजस्थान के प्रमुख हिन्दी दैनिक "राजस्थान पत्रिका" के संस्थापक-सम्पादक श्री कर्पूरचन्द्र कुलिश का जन्म 20 मार्च, 1926 को टोंक जिले के सोडा नामक ग्राम में एक साधारण खेतवाल परिवार में हुआ। आपकी औपचारिक रूप से यद्यपि कोई शिक्षा नहीं हुई लेकिन जीवन में आपने जो कुछ पढ़ा और सीखा वह सब जन-जीवन के विश्वविद्यालय में ही पढ़ा।

वयस्क होते ही कुलिश जी जयपुर आ गये और जीवन-यापन के लिए कुछ फुटकर काम किये। आप प्रारंभ में ही साहित्य सदावर्त नामक शिक्षण संस्था के सम्पर्क में आ गये, जिससे एक ओर जहाँ आपको अपनी शैक्षणिक योग्यता बढ़ाने का अवसर मिला वहाँ दूसरी ओर यहाँ के साहित्यिक वातावरण से आपकी काव्य-प्रतिभा को विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ। आपने कुछ दिनों अध्यापन किया और फिर राजकीय सेवा में चले गये। अगस्त 1951 में जब जयपुर से दैनिक "राष्ट्रदूत" का प्रकाशन प्रारंभ हुआ तो आप राज्य सेवा से त्याग पत्र देकर पत्रकारिता में आ गये। यहाँ कुलिश जी ने पहले साहित्य-सम्पादक और फिर नगर संवाददाता के रूप में जयपुर के पत्रकार-जगत में शीघ्र ही अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया।

मार्च 1956 में आपने "राष्ट्रदूत" से त्याग पत्र देकर स्वयं का सायंकालीन पत्र "राजस्थान पत्रिका" शुरु किया जो आज न केवल राजस्थान का अपितु समूचे देश का जाना-माना प्रतिष्ठित प्रातः-कालीन दैनिक है और जिसके जयपुर के साथ ही जोधपुर, कोटा, उदयपुर और बीकानेर से संस्करण प्रकाशित होते हैं। "राजस्थान पत्रिका" प्रतिष्ठान ने गत वर्षों में अंग्रेजी "राजस्थान पत्रिका", साप्ताहिक "इतवारी पत्रिका" और बच्चों का पाक्षिक "बालहंस" भी शुरु किया है। 20 मार्च, 1986 को कुलिश जी ने 60 वर्ष की आयु होते ही पत्रिका के सम्पादक पद से स्वेच्छा से अवकाश ग्रहण कर लिया और अब अपना सम्पूर्ण समय वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रकाशन में दे रहे हैं। आपके सक्रिय प्रयासों से ही वेदों के भाष्य सम्बन्धी हजारों पृष्ठों का प्रकाशन हो सका है।

कुलिश हिन्दी के उत्कृष्ट कवि, गीतकार और लेखक भी हैं। आपने अपनी प्रथम अमरीका यात्रा के बाद "अमरीका-एक विहंगम दृष्टि" और आपात काल में सम्पूर्ण राजस्थान की यात्रा के बाद "मैं देखता चला गया" नामक यात्रा वर्णन प्रकाशित किया है। आप विश्व के अनेक देशों की यात्रायें कर चुके हैं।

कर्पूरचन्द पाटनी- जयपुर के प्रमुख कर सलाहकार तथा सार्वजनिक कार्यकर्ता श्री कर्पूरचन्द पाटनी का जन्म 8 फरवरी, 1927 को जयपुर जिले के जोबनेर कस्बे में हुआ। आपने एम कॉम.,

गई। 1957 में आप दूदू क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव हार गयी लेकिन 1962 के चुनाव में बैराठ क्षेत्र से पुनः निर्वाचित हो गयी। श्री सुखाड़िया ने आपको पुनः उपमंत्री नियुक्त किया और योजना, वित्त, अकाल-राहत तथा राजकीय उपक्रम विभाग दिये। जनवरी 1967 में श्री कुंभाराम आर्य के साथ आपने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर 1967 में बैराठ से ही माक्रांद के टिकिट पर चुनाव लड़ा जिसमें पराजित हो गयी। 1968 में आप राजस्थान राज्य सहकारी संघ की अध्यक्ष मनोनीत की गयी। 1970 में आप कांग्रेस में पुनः शामिल हुई और 1972 के चुनाव में दूदू क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायिका चुनी गयी। मार्च 1972 में श्री बरकतुल्लाह खां की सरकार में आप गृह, जनसम्पर्क एवं उद्योग विभाग की राज्यमंत्री नियुक्त की गयी। अक्टूबर 1973 में श्री खां के निधन के बाद बनी श्री हरिदेव जोशी की सरकार में आपको 16 नवम्बर,1973 को पुनः राज्यमंत्री बनाया गया और आयुर्वेद, जनसम्पर्क, श्रम व नियोजन तथा समाज कल्याण विभाग का कार्य सौंपा गया।

1977 में आपने चुनाव नहीं लड़ा और 1980 में आप बैराठ क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायिका चुनी गयी। जून 1980 में बने जगन्नाथ पहाड़िया मन्त्रिमंडल में 18 जून को आप राजस्व मंत्री नियुक्त की गयी तथा जुलाई 1981 में बने शिवचरण माथुर मन्त्रिमंडल में आप शिक्षा, भाषा, नियोजन तथा ऊर्जा मंत्री बनाई गई। 1985 के चुनाव में आप बैराठ क्षेत्र से पुनः विधायिका चुनी गयी और 11 मार्च को हरिदेव जोशी मन्त्रिमडल में राजस्व, सिंचायी, पर्यटन, पुरातत्व तथा इंदिरा गांधी नहर परियोजना आदि विभागों की मंत्री नियुक्त की गयी। वर्तमान शिवचरण माथुर सरकार में आप 8 जून, 1989 को शामिल की गयी।

कमला भील (श्रीमती)- राजस्थान की समाज-कल्याण विभाग की प्रभारी राज्य मंत्री श्रीमती कमला भील प्रदेश के प्रमुख आदिवासी नेता तथा विभिन्न सरकारों में वर्षों तक विभिन्न विभागों के मंत्री रहे श्री भीखाभाई भील की पुत्री हैं। आपका जन्म 7 जनवरी,1948 को हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से एम.ए. और एलएल.बी. के साथ डी.यू.सी., डी.एल.एल. की उपाधियां प्राप्त की। प्रारंभ में 1966 में आप श्रम विभाग में श्रम-कल्याण अधिकारी पद पर नियुक्त हुई और 1980 में चुनाव लड़ने के लिये राज्यसेवा से त्यागपत्र देते समय आप सहायक श्रम आयुक्त पद पर कार्यरत थी।

श्रीमती भील 1980 और 1985 के दोनों चुनावों में कांग्रेस (इ) टिकिट पर सागवाड़ा (सु.अ.ज.) क्षेत्र से विधायक चुनी गई।19 जुलाई, 1981 को आप प्रथम बार श्री शिवचरण माथुर के मंत्रिमंडल में उपमंत्री नियुक्त की गई। गत 27 जनवरी,1988 को श्री माथुर के पुनः मुख्यमंत्री बनने पर आप राज्यमंत्री बनाई गई तथा समाज कल्याण विभाग का आपको स्वतंत्र कार्यभार सौंपा गया।

कमलाकर 'कमल'(गुरुजी)- महाकवि पद्माकर के प्रपौत्र और राष्ट्रभाषा हिन्दी के अनन्य सेवक श्री कमलाकर 'कमल' का जन्म यद्यपि मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले के रेवई ग्राम में सम्वत 1971 की माघ शुक्ला द्वादशी को हुआ तथापि उनका कार्यक्षेत्र जयपुर रहा है। आपके जन्म के पन्द्रह दिन बाद माता का और पन्द्रह वर्ष बाद पिताजी का देहान्त हो गया अतः आपकी औपचारिक शिक्षा तो मात्र पांचवें दर्जे तक ही हो सकी लेकिन अपनी लगन, निष्ठा और अध्यवसाय से उन्होंने जो ज्ञान अर्जित किया उसका प्रसाद उन्होंने हजारों-हजारों लोगों तक पहुंचाया है। महात्मा गांधी की प्रेरणा से राष्ट्रभाषा हिन्दी का निःशुल्क प्रचार-प्रसार उनके जीवन का चरम लक्ष्य हो गया। उन्होंने यह यज्ञ 1935 में शुरू किया था जो आज तक निर्बाध रूप से जारी है। उनकी कर्म भूमि "साहित्य सदावर्त" में पढ़कर साहित्यरत्न, विशारद, प्रथमा, प्रभाकर, हिन्दी कोविद, और राष्ट्रभाषारत्न आदि परीक्षायें उत्तीर्ण करने वाले लोग केवल जयपुर में ही नहीं राज्य के कोने-कोने में मिल जायेंगे।

कमलाकर जी को कविता का संस्कार अपने पिता के साथ श्री पुष्कर से मिला था तथा वे लोकेन्द्र साहित्य मंडल के कर्णधारों में से थे। आपके साथ श्री गोपाल प्रसाद गुप्त, माधवाचार्य चतुर्वेदी,

क्रमशः /

जयशंकरप्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और सुमित्रानन्दन पंत आदि कवियों ने बहुत प्रभावित किया। बृज भाषा की काव्य-रचना में बिहारी, भूषण, रत्नाकर और पद्माकर ने प्रेरणा दी। आपकी चार कृतियां कैमास-करनाटी प्रसंग, सुबोधिनी टीका, त्रिवेणी,प्रताप बावनी और हिन्दी साहित्य के इतिहास की विशेषतायें प्रकाशित हो चुकी हैं। कवि और शिक्षक के साथ-साथ गुरुजी अच्छे पत्रकार भी रहे हैं। जयपुर से प्रकाशित मासिक "प्रकाश" का आपने सम्पादन किया था।

करणीसिंह रत्नू (डा.)- नेफ्रोलॉजी और गुर्दा रोगों के चिकित्सा विशेषज्ञ तथा जयपुर स्थित सवाई मानसिंह मेडीकल कालेज और संबद्ध चिकित्सालय में नेफ्रोलॉजी विभाग के आचार्य और विभागाध्यक्ष डा. करणीसिंह रत्नू का जन्म 12 अक्टूबर, 1941 को अलवर में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा अलवर और जयपुर में हुई। आपने वर्ष 1964 में एस.एम.एस मेडीकल कालेज जयपुर से ही एम.बी.,बी.एस. किया और विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान तथा स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 1964 में आपने मेडीसिन में एम.डी. परीक्षा उत्तीर्ण की। नेफ्रोलॉजी में आपने इंग्लैण्ड से विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आप अपने व्यवसाय से सम्बद्ध अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग ले चुके हैं।

कर्पूरचन्द्र कुलिश- देश के प्रख्यात पत्रकार, लेखक, कवि और राजस्थान के प्रमुख हिन्दी दैनिक "राजस्थान पत्रिका" के संस्थापक-सम्पादक श्री कर्पूरचन्द्र कुलिश का जन्म 20 मार्च, 1926 को टोंक जिले के सोडा नामक ग्राम में एक साधारण ओसवाल परिवार में हुआ। आपकी औपचारिक रूप से यद्यपि कोई शिक्षा नहीं हुई लेकिन जीवन में आपने जो कुछ पढ़ा और सीखा वह सब जन-जीवन के विश्वविद्यालय में ही पढ़ा।

वयस्क होते ही कुलिश जी जयपुर आ गये और जीवन-यापन के लिए कुछ फुटकर काम किये। आप प्रारंभ में ही साहित्य सदावर्त नामक शिक्षण संस्था के सम्पर्क में आ गये, जिससे एक ओर जहाँ आपको अपनी शैक्षणिक योग्यता बढ़ाने का अवसर मिला वहाँ दूसरी ओर यहां के साहित्यिक वातावरण से आपकी काव्य-प्रतिभा को विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ। आपने कुछ दिनों अध्यापन किया और फिर राजकीय सेवा में चले गये। अगस्त 1951 में जब जयपुर से दैनिक "राष्ट्रदूत" का प्रकाशन प्रारंभ हुआ तो आप राज्य सेवा से त्याग पत्र देकर पत्रकारिता में आ गये। यहां कुलिश जी ने पहले साहित्य-सम्पादक और फिर नगर संवाददाता के रूप में जयपुर के पत्रकार-जगत में शीघ्र ही अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया।

मार्च 1956 में आपने "राष्ट्रदूत" से त्याग पत्र देकर स्वयं का सायंकालीन पत्र "राजस्थान पत्रिका" शुरु किया जो आज न केवल राजस्थान का अपितु समूचे देश का जाना-माना प्रतिष्ठित प्रातः-कालीन दैनिक है और जिसके जयपुर के साथ ही जोधपुर, कोटा, उदयपुर और बीकानेर से संस्करण प्रकाशित होते हैं। "राजस्थान पत्रिका" प्रतिष्ठान ने गत वर्षों में अंग्रेजी "राजस्थान पत्रिका", साप्ताहिक "इतवारी पत्रिका" और बच्चों का पाक्षिक "बालहंस" भी शुरु किया है। 20 मार्च, 1986 को कुलिश जी ने 60 वर्ष की आयु होते ही पत्रिका के सम्पादक पद से स्वेच्छा से अवकाश ग्रहण कर लिया और अब अपना सम्पूर्ण समय वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रकाशन में दे रहे हैं। आपके सक्रिय प्रयासों से ही वेदों के भाष्य सम्बन्धी हजारों पृष्ठों का प्रकाशन हो सका है।

कुलिश हिन्दी के उत्कृष्ट कवि, चितकार और लेखक भी हैं। आपने अपनी प्रथम अमरीका यात्रा के बाद "अमरीका-एक विहंगम दृष्टि" और आपात काल में सम्पूर्ण राजस्थान की यात्रा के बाद "मैं देखता चला गया" नामक यात्रा वर्णन प्रकाशित किया है। आप विश्व के अनेक देशों की यात्रायें कर चुके हैं।

कर्पूरचन्द्र पाटनी- जयपुर के प्रमुख कर सलाहकार तथा सार्वजनिक कार्यकर्ता श्री कर्पूरचन्द्र पाटनी का जन्म 8 फरवरी, 1927 को जयपुर जिले के सांभर कस्बे में हुआ। आपने एम.कॉम.

एलएल.बी. और साहित्यरत्न परीक्षायें उत्तीर्ण की। श्री पाटनी छात्र जीवन से ही राष्ट्रीय विचारधारा के थे और 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान जोधपुर लैटर बाक्स कांड के प्रमुख कर्त्ताधर्त्ता थे। 1950 से आप जयपुर में आयकर और वाणिज्यिक कर के सलाहकार का कार्य कर रहे हैं। 1956 में जयपुर नगर परिषद के सदस्य चुने गये। आप जयपुर कर सलाहकार संघ, राजस्थान कर सलाहकार संघ, राजस्थान जैन सभा और विभिन्न धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं में पदाधिकारी रह चुके हैं।

कल्याणदत्त शर्मा- राजस्थान उच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधिपति तथा पूर्व कार्यवाहक राज्यपाल श्री शर्मा का जन्म 23 अक्टूबर, 1921 को अलवर में हुआ। 1947 में आपने अलवर में वकालत प्रारम्भ की और 1949 में राजस्थान उच्च न्यायालय में एडवोकेट पंजीकृत हुये। मई1965 में आपका उच्च न्यायिक सेवा में चयन हुआ। जुलाई 1967 में आपकी जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में पदोन्नति हुई तथा 1972 में राज्य के विधि सचिव व विधि परामर्शी आदि पदों पर कार्य किया।20 जुलाई,1973 को उच्च न्यायालय में अतिरिक्त न्यायाधिपति तथा 2अप्रेल, 1975 को स्थायी न्यायाधिपति बने।

10 जुलाई 1980 से 6 जनवरी, 81 तक आपने कार्यवाहक मुख्य न्यायाधिपति तथा 7 जनवरी,81 से स्थायी मुख्य न्यायाधिपति के रूप में कार्य किया। आपने 1980 में 8 से 29 अक्टूबर तक तथा 8 अगस्त,1981 से6 मार्च, 1982तक कार्यवाहक राज्यपाल के पद पर भी कार्य किया। 22 अक्टूबर,1983 को आपने अवकाश ग्रहण किया।

कल्याणसिंह कालवी- राजस्थान प्रदेश जनता दल विधायक दल के नेता तथा वर्तमान में डेगाना क्षेत्र के विधायक श्री कल्याणसिंह कालवी का जन्म 3दिसम्बर,1930 को नागौर जिले के कालवी ग्राम में हुआ। व्यवसाय से कृषक और पशुपालक श्री कालवी छठे दशक के मध्य में स्वतंत्र पार्टी से जुड़े और जयपुर की राजमाता गायत्री देवी के प्रमुख सहयोगी रहे। 1977 में आपने मकराना क्षेत्र से प्रथम बार जनता पार्टी के टिकिट पर विधानसभा का चुनाव लड़ा जिसमें पराजित हो गये। बाद में 22मई,1978 को आप भीलवाड़ा जिले के बनेड़ा क्षेत्र से हुये उपचुनाव में जनता पार्टी के टिकिट पर विधायक चुने गये और भैरोंसिंह शेखावत मंत्रिमंडल में 5 नवम्बर, 1978 को कृषि एवं पशुपालन मंत्री नियुक्त किये गये।

1980 में जनता पार्टी का विभाजन होने पर आप मूल जनता पार्टी में ही रहे और नये जनता दल का गठन होने तक इसके प्रदेशाध्यक्ष रहे। 1980 में आपने विधान सभा का चुनाव नहीं लड़ा और 1984 के लोकसभा चुनाव में नागौर से भाग्य आजमाया लेकिन सफल न हो सके।

कलानाथ शास्त्री- राजस्थान के प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान और भाषा विभाग के निदेशक श्री कलानाथ शास्त्री संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री के पुत्र हैं। आपका जन्म 15 जुलाई 1936 को जयपुर में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से अंग्रेजी और संस्कृत में एम.ए. तथा जयपुर से हिन्दी और वाराणसी से संस्कृत में साहित्याचार्य की उपाधि प्राप्त की। 1957 से 64 तक आप महाराजा कालेज जयपुर तथा कल्याण कालेज सीकर में अंग्रेजी के व्याख्याता रहे तथा 1965 में राज्य में भाषा विभाग की स्थापना होने पर सहायक निदेशक नियुक्त हुये। 1971 में आपकी उपनिदेशक तथा एक जुलाई, 1976 को निदेशक पद पर पदोन्नति हुई।

आपका संस्कृत भाषा में उपन्यास और कहानी संकलन "कथानकवल्ली", राजस्थान के संस्कृत विद्वानों की जीवनियों पर "विद्वज्जन चरितामृतम्" और हिन्दी भाषा में "हिन्दी संस्कृति के वातायन" आदि ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा दास गुप्ता कृत "भारतीय दर्शन का इतिहास" का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद तथा "दर्शन के सौ वर्ष" अनुवाद भी प्रकाशित हो चुके हैं।

कस्तूरचन्द कासलीवाल (डा.)- जैन शास्त्र और साहित्य के मूर्धन्य विद्वान डा. कासलीवाल का जन्म 8 अगस्त,1920 को जयपुर जिले के सैंथल ग्राम में हुआ। आप जैन दर्शन के प्रकांड विद्वान

पं. चैनसुखदास न्यायतीर्थ के सान्निध्य में रहकर एम.ए. और शास्त्री के बाद "राजस्थान जैन ग्रंथ भंडार" विषयक शोध प्रबन्ध पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। जैन शास्त्रों और ग्रंथों की खोज, शोध और सम्पादन को आपने अपने जीवन का प्रमुख क्षेत्र बना रखा है। इस दिशा में आपने अपभ्रंश राजस्थानी और हिन्दी के पचासों अज्ञात एवं अचर्चित ग्रंथों की खोज कर प्रकाश में लाने में सफलता प्राप्त की है। आपके साहित्यिक कृत्यों की महापंडित राहुल सांकृत्यायन, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और डा. सत्येन्द्र जैसे विद्वानों ने भी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

कांता भटनागर (सुश्री)- राजस्थान उच्च न्यायालय की न्यायाधिपति सुश्री भटनागर का जन्म 15 नवम्बर, 1930 को उदयपुर में हुआ और वहीं शिक्षा प्राप्त कर 1951 से 70 तक वकालत की। 6 अप्रेल 1970 को आपने अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में उच्च न्यायिक सेवा में प्रवेश किया। वर्तमान पद पर आपकी नियुक्ति 26 सितम्बर, 1978 को हुई। आप तीन वर्ष तक राजस्थान न्यायिक सेवा अधिकारी संघ की अध्यक्ष भी रह चुकी हैं।

कान्तिकुमार आर. पोद्दार- प्रमुख उद्योगपति श्री कान्तिकुमार पोद्दार का जन्म 12 अप्रेल, 1935 को बम्बई में प्रमुख उद्योगपति श्री रामनाथ पोद्दार के यहां हुआ। बी कॉम करने के बाद औद्योगिक-जगत में प्रविष्ट होने वाले श्री पोद्दार वर्तमान में पोद्दार समूह की कम्पनियों के उपाध्यक्ष हैं। आप राजस्थान इन्डस्ट्रियलिस्ट एसोसियेशन के अध्यक्ष पद सहित अनेक व्यावसायिक एवं सामाजिक संस्थाओं में विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं।

कांतिचन्द्र भारद्वाज - चित्रकला की बूंदी शैली को समर्पित प्रदेश के प्रमुख चित्रकार श्री कांतिचन्द भारद्वाज का जन्म 2 जुलाई, 1936 को बूंदी में हुआ। आपने विज्ञान विषय छोड़कर उदयपुर से चित्रकला में एम.ए. किया और इसके बाद जयपुर स्थित राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स से डिप्लोमा प्राप्त किया। व्यवसाय से कला-अध्यापक श्री भारद्वाज ने बूंदी शैली को राग-रागिनियों से हटकर भारतीय संस्कृति इतिहास और कथाओं के समृद्ध संसार से जोड़ा है। आपने राजस्थान की शौर्य गाथाओं जैसे पदमिनी पन्नाधाय, हाडीरानी, तथा हमीर-हठ आदि को अपने चित्रों में अभिव्यक्ति दी है। इसके अतिरिक्त सवाई-माधोपुर के एक मंदिर में 300 वर्गफुट क्षेत्र में महाभारत तथा कृष्ण की समस्त लीलाओं और कोटा में 36 वर्ग फुट के एक ही पैनल में सम्पूर्ण रामायण को चित्रित किया है। मेघदूत और ध्रुव-स्वामिनी जैसी अमर रचनाओं और दीपावली तथा गणगौर जैसे पर्वों को भी आपने कला के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। आपके चित्रों में मौलिकता का स्पष्ट आभास होता है।

कानसिंह परिहार- राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री कानसिंह का जन्म 30 अगस्त, 1913 को जोधपुर में हुआ। 1936 में आपने जोधपुर राज्य में वकालत प्रारंभ की और 1952 में राजकीय अधिवक्ता नियुक्त किये गये। 1964 में आपको राजस्थान उच्च न्यायालय का न्यायाधीश बनाया गया जहां से 1974 में आप सेवानिवृत्त हुए। इसके बाद आपको जोधपुर विश्वविद्यालय का उपकुलपति बनाया गया। श्री भैरोंसिंह शेखावत की सरकार द्वारा नियुक्त एक सदस्यीय जांच आयोग के भी आप अध्यक्ष रहे।

कमलाख्यालाल कमल (डा.)- राजस्थान लोक-सेवा आयोग के सदस्य डा. के.एल. कमल का जन्म 25 मार्च, 1931 को सीकर जिले के खाचरियावास ग्राम में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य एवं राजनीतिशास्त्र में एम.ए., एलएल.बी. तथा पीएच.डी. की उपाधियां प्राप्त की और राजस्थान विश्वविद्यालय में राजनीतिशास्त्र में व्याख्याता नियुक्त हुये। बाद में आप विश्वविद्यालय के पत्रकार अध्ययन संस्थान के निदेशक तथा राजनीतिशास्त्र के विभागाध्यक्ष रहे।

डा. कमल ने विश्व के अनेक देशों का भ्रमण किया है। आपके देश-विदेश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित होने के साथ ही राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर दस पुस्तकें छप चुकी हैं।

कालीचरण सर्राफ- जयपुर शहर के जौहरी बाजार निर्वाचन क्षेत्र से 1985 के विधानसभा चुनाव में निर्वाचित भारतीय जनता पार्टी के विधायक श्री कालीचरण सर्राफ का जन्म 7 अगस्त,1951 को जयपुर में हुआ। एलएल.बी. तक शिक्षित श्री सर्राफ राजस्थान विश्वविद्यालय छात्र-संघ के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। वर्तमान में आप भारतीय जनता युवा मोर्चा की राज्य इकाई तथा जयपुर शहर भाजपा के अध्यक्ष हैं।

कालूलाल श्रीमाली (डा.)- भारत के पूर्व शिक्षामंत्री तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. कालूलाल श्रीमाली का जन्म 30 दिसम्बर, 1909 को उदयपुर में हुआ। आपने दर्शनशास्त्र और मनोविज्ञान में एम.ए. करने के बाद विद्या भवन शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय उदयपुर में 1942 से 54 तक प्राचार्य के रूप में कार्य किया। 1953 में भारत सरकार ने आपको माध्यमिक शिक्षा आयोग का सदस्य नियुक्त किया।1955 से 57 तक आप केन्द्रीय शिक्षा मंत्री के संसदीय सचिव, शिक्षा उपमंत्री, 1957-58 में शिक्षा राज्य मंत्री और 1958 से 63 तक केन्द्रीय शिक्षा मंत्री रहे। अगस्त 1963 में कामराज योजना के अन्तर्गत आपने शिक्षा मत्री के पद से त्यागपत्र दे दिया।

डा. श्रीमाली 1964से69 तक मैसूर विश्वविद्यालय के कुलपति रहे तथा 1958 से 70 तक राष्ट्रमंडलीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष रहे। आप 1952से 62 तक राज्यसभा सदस्य रहे तथा 1962 के आम चुनाव में भीलवाडा क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर लोकसभा सदस्य चुने गये लेकिन 1964 में सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया।

किशन मोटवानी - राजस्थान विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री किशन मोटवानी का जन्म एक मार्च, 1936 को पाकिस्तान के नवाबशाह जिले में हुआ। आप विधिस्नातक है और व्यवसाय से वकील हैं। 1969 में आप अजमेर नगर परिषद के सदस्य तथा 1972 और 1985 में अजमेर पश्चिम क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायक चुने गये।

किशनलाल मेहता - भारतीय सिविल सेवा (आई.सी.एस.) के लिए चुने गए दो राजस्थानियों में से एक श्री के.एल. मेहता का जन्म 15 मार्च, 1913 को उदयपुर में हुआ। आपकी शिक्षा उदयपुर तथा लन्दन स्कूल आफ इकोनॉमिक्स में हुई। अपने सेवाकाल में आप विदेश मंत्रालय में संयुक्त सचिव तथा अनेक देशों में भारत के राजदूत रह चुके है। सेवानिवृत्त होने के बाद आप राजस्थान राज्य उद्योग व खनिज निगम के अध्यक्ष भी रहे।

किशोरसिंह लोढ़ा- राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री लोढ़ा का जन्म 30 जून, 1928 को जोधपुर में हुआ। 31 मई, 1965 को आपने वकालत छोडकर अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में उच्च न्यायिक सेवा में प्रवेश किया। 21 जुलाई, 1967 को आपकी जिला एवं सत्र न्यायाधीश पद पर पदोन्नति हुई। बाद में आप राजस्व मंडल के सदस्य रहे। उच्च न्यायालय में आपकी नियुक्ति 4 अप्रेल, 1983 को हुई।

कीर्तिकुमार चौधरी - राजस्थान प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में स्थानीय निकाय विभाग के निदेशक श्री के.के. चौधरी का जन्म 15 जनवरी, 1936 को पंजाब में हुआ। 1960 में सेवा में प्रवेश के बाद आप जयपुर नगर विकास न्यास के सचिव, जयपुर नगर परिषद के आयुक्त तथा प्रशासक, राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के सचिव, भूमि-रूपान्तरण विभाग के निदेशक तथा राजस्व विभाग में शासन उपसचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

कुम्भाराम आर्य - राजस्थान के प्रमुख किसान नेता, पूर्व मंत्री और पूर्व सांसद श्री कुम्भाराम आर्य का जन्म सम्वत 1971 के ज्येष्ठ मास में हुआ। आपकी औपचारिक रूप में कोई शिक्षा नहीं हुई। प्रारंभ में

कुछ वर्षों तक आप पूर्व बीकानेर रियासत की पुलिस सेवा में रहे, लेकिन बाद में त्याग पत्र देकर प्रजा परिषद की गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़ गये। स्वतंत्रता से पूर्व बीकानेर रियासत में बनी लोकप्रिय सरकार में आप मंत्री रहे। राजस्थान के निर्माणोपरांत अप्रेल 1951 से जनवरी 1952 तक आप जयनारायण व्यास मंत्रिमंडल में गृह मंत्री बनाये गये। 1952 के प्रथम आम चुनाव में चूरू विधान सभा क्षेत्र से नामांकन पत्र प्रस्तुत करने के बाद कांग्रेस दल ने आपका टिकिट वापस ले लिया लेकिन निर्धारित अवधि में आप नामांकन पत्र वापस नहीं ले सके। इस स्थिति में दल के निर्देशानुसार आप चुनाव प्रचार के लिए एक बार भी चुनाव क्षेत्र में नहीं गये लेकिन इसके बावजूद मतदाताओं ने आपको विजयी बना कर आप में विश्वास प्रकट किया। 1954 में सुखाड़िया सरकार बनने पर आप स्वास्थ्य मंत्री नियुक्त किये गये लेकिन 1956 में कांग्रेस उच्च सत्ता के निर्देश पर आपने त्याग पत्र दे दिया। छठे दशक के प्रारंभ में आप राज्यसभा के सदस्य चुने गये लेकिन अक्टूबर 1964 में हनुमानगढ़ क्षेत्र से उपचुनाव में पुनः विधायक चुन लिए गये और 14 नवम्बर 1964 को राज्य मंत्रिमंडल में राजस्व, उपनिवेशन तथा अकाल राहत मंत्री नियुक्त किये गये। दिसम्बर 1966 में श्री सुखाड़िया से तीव्र मतभेदों के कारण मंत्री पद से और जनवरी 1967 में कांग्रेस दल की सदस्यता से त्याग पत्र देकर जनता पार्टी का गठन किया।

श्री आर्य 1968 में विपक्षी दलों की ओर से राज्यसभा के सदस्य चुने गये। आपातकाल में जेल में रहे और आपात स्थिति की समाप्ति के बाद कुछ अर्से के लिए पुनः कांग्रेस में आ गये। 1980 के लोकसभा के चुनाव में सीकर क्षेत्र से आप लोकदल के टिकिट पर सांसद चुने गये। दिसम्बर 1984 में आपने बीकानेर लोकसभा क्षेत्र से भाग्य आजमाया लेकिन सफल नहीं हो सके। आप सहकारी क्षेत्र में भी काफी सक्रिय रहे हैं। आप राजस्थान स्टेट को-आपरेटिव बैंक एवं राजस्थान राज्य सहकारी क्रय-विक्रय संघ के अध्यक्ष तथा अ० भा० सहकारी संघ के उपाध्यक्ष रह चुके हैं।

कुमार शिव - हिन्दी में नयी पीढ़ी के सशक्त गीतकार कुमार शिव का जन्म 24 सितम्बर 1945 को कोटा में हुआ। एम ए और एलएल बी की उपाधियां प्राप्त कर आजीविका के लिए यद्यपि आप वकालत कर रहे हैं लेकिन कथ्य की नवीनता, शैली की प्रेषणीयता और ललित कंठ स्वर ने आपको बहुत कम समय में लोकप्रिय गीतकार के रूप में प्रतिष्ठापित कर दिया है। 1973 में प्रकाशित 'शंख रेत के चेहरे' आपकी बहु प्रशंसित कृति है। 1977 में "पंख धूप के" का प्रकाशन हुआ।

कुशालसिंह (श्रीमती) - भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला की अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर महिला एवं बाल-विकास विभाग की निदेशक श्रीमती के सिंह का जन्म 11 अक्टूबर, 1949 को हरियाणा राज्य के रोहतक जिले में हुआ। 1974 में सेवा में प्रवेश के बाद आप खाद्य एवं नागरिक रसद विभाग में अतिरिक्त आयुक्त, कोटा में जिलाधीश, शिक्षा विभाग में विशिष्ट शासन सचिव तथा केन्द्र में ही श्रीमती मारग्रेट अल्वा, राज्य मंत्री महिला एवं बाल-विकास की विशेष सहायक रह चुकी हैं।

कुशालसिंह गलूंडिया- भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में चित्तौड़गढ़ के जिला कलेक्टर श्री के. एस. गलूंडिया का जन्म 3 जनवरी, 1939 को अजमेर में हुआ। आपने अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. तथा विधि स्नातक की उपाधि प्राप्त की तथा 1961 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये। 1963 से 70 तक आप राजस्थान उच्च न्यायालय में प्रतिनियुक्ति पर विद्यावा और जयपुर में मुंसिफ मजिस्ट्रेट रहे। बाद में रीको में मुख्य प्रबन्धक, राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड के प्रशासक तथा राज्य के कृषि-विपणन निदेशक, राजस्थान राज्य बीज निगम के प्रबन्ध निदेशक, वाणिज्यिक कर विभाग में उपायुक्त (प्रशासन) तथा देवस्थान विभाग में आयुक्त आदि पदों पर रहे। श्री गलूंडिया महावीर इंटरनेशनल के सदस्य तथा मोहन ज्ञान मंदिर उदयपुर के अध्यक्ष भी हैं।

कुसुमप्रसाद (श्रीमती)- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला की अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर श्रम मंत्रालय में कर्मचारी राज्य बीमा निगम की महानिदेशक

श्रीमती कुसुमप्रसाद का जन्म 14 दिसम्बर,1936 को नई दिल्ली में हुआ।1960 में सेवा में चयन के बाद आप रीको में क्रियाधीश, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग में शासन विशिष्ट सचिव, राजस्थान कृषि उद्योग निगम में प्रबन्ध निदेशक, केन्द्रीय सतर्कता आयोग में सचिव तथा राजस्थान लघु उद्योग निगम में प्रबन्ध निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुकी है।

केदारनाथ (प्रो.)- गंगानगर विधानसभा क्षेत्र से 1980 के चुनाव को छोड़कर 1962 से 1985 तक के पांच चुनावों में निरन्तर विधायक रहे प्रो. केदार का जन्म 17 जुलाई, 1919 को गंगानगर में हुआ। आपने एम. ए. तक शिक्षा प्राप्त की।

श्री केदारनाथ छात्र जीवन से ही राजनीति से सक्रिय रूप से जुडे हुये है। आजादी से पूर्व आपने तत्कालीन बीकानेर रियासत में प्रजा परिषद् की आन्दोलनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भाग लिया। 1962 में आप प्रथम बार निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में गंगानगर क्षेत्र से विधानसभा के लिये चुने गये। तत्पश्चात 1967 में संयुक्त सोशलिस्ट, 1972 में सोशलिस्ट और 1977 में जनता पार्टी प्रत्याशी के रूप में विजयी हुए। 1980 में चुनाव नहीं लडा और 1985 में पुनः जनता पार्टी के टिकिट पर विजयी हुये। आप 1977 में प्रदेश में बनी प्रथम गैर कांग्रेसी सरकार में भैरोंसिंह शेखावत मन्त्रिमंडल में गृह,श्रम,यातायात, उपनिवेशन और राजस्थान नहर मंत्री बनाये गये।

केवलकृष्ण खन्ना- राजस्थान लेखा सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में रीको में कार्यकारी निदेशक (वित्त) श्री के.के. खन्ना का जन्म 29 जुलाई, 1938 को लाहौर में हुआ। देश विभाजन के पश्चात आपका परिवार दिल्ली आ गया। आपने पंजाब विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. तथा राज्य सेवा में आने के बाद राजस्थान विश्वविद्यालय से एलएल.बी. किया।

श्री खन्ना प्रारंभ में पत्रकारिता से जुडे और अंग्रेजी दैनिक 'हिन्दुस्तान स्टेण्डर्ड' और आल इण्डिया मैनेजमेन्ट एसोसिएशन दिल्ली की मासिक पत्रिका 'इण्डियन मैनेजमेंट' के सम्पादकीय विभाग में कार्य किया।1962 में राजस्थान लेखा सेवा में चयन के बाद आप चित्तौडगढ, जयपुर जिला तथा शासन सचिवालय में कोषाधिकारी रहे। तत्पश्चात जयपुर नगर परिषद् में वित्तीय सलाहकार, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में लेखाधिकारी, राजस्थान राज्य सहकारी क्रय-विक्रय संघ में महाप्रबन्धक (वितीय), राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड में वित्तीय सलाहकार, जयपुर विकास प्राधिकरण में निदेशक (वित्त) तथा वित्त विभाग में शासन उपसचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

केशवदेव मोदी- नीम-का-थाना क्षेत्र के प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्ता तथा पूर्व नगरपालिकाध्यक्ष श्री केशवदेव मोदी सीकर जिले के यशस्वी पुत्र स्वर्गीय श्री कपिलदेव अग्रवाल के पुत्र है। आपका जन्म 21 अगस्त, 1943 को हुआ। आपकी शिक्षा नीम-का-थाना और जयपुर में हुई तथा विधि स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने नीम-का-थाना में ही वकालत प्रारंभ की। आपकी सार्वजनिक प्रवृतियों में प्रारंभ से ही रुचि रही है और नीम-का-थाना के जनजीवन से सक्रिय रूप से जुडे हुए है। सितम्बर, 1984 में आप पालिकाध्यक्ष निर्वाचित हुये। वर्तमान में आप फाइन मार्बल्स प्रा.लि. के निदेशक मंडल के सदस्य तथा कपिल स्मारक समिति के सचिव हैं।

कैलाशचन्द्र गंगवाल (डा.)- जयपुर के सवाई मानसिंह चिकित्सालय में यूरोलॉजी विभाग के प्रमुख डा. के.सी. गंगवाल का जन्म जयपुर के जाने-माने डा. ताराचन्द गंगवाल के यहां हुआ। आप देश के ख्याति प्राप्त मूत्र रोग विशेषज्ञ है। सवाई मानसिंह चिकित्सालय में स्थित यूरोलॉजी रिसर्च सेन्टर आप ही की देन है।

कैलाश चन्द्र बाकींवाला- राजस्थान में बैंकिंग के जाने-माने विशेषज्ञ और प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता श्री कैलाश बाकींवाला का जन्म 16 जनवरी 1920 को जयपुर में हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर में हुई और बी.कॉम, एलएल.बी. के साथ आपने सी.ए. आई.आई.बी. का पाठ्यक्रम किया। छात्र जीवन में ही क्रान्तिकारी विचारों के श्री बाकींवाला स्वतंत्रता संघर्ष में कूद गये और 1942 के आन्दोलन में कालेज छोड दिया। आप प्रजामंडल के अधीन यंगमेन सोसायटी का गठन कर उसके सचिव बने जिसे बाद में सरकार ने गैरकानूनी घोषित कर दिया। आप शुरू में कांग्रेस और 1946 में समाजवादी दल के सदस्य बने। 1948 में समाजवादी दल जयपुर के सचिव नियुक्त हुये और 1958 तक राजस्थान प्रजा समाजवादी दल के संयुक्त सचिव रहे। 1952 में चुंगी विरोधी आन्दोलन में आप जेल गये। राजस्थान बैंक कर्मचारी संघ के आप संस्थापकों में हैं और प्रारंभिक 6 वर्षों तक इसके सचिव रह चुके हैं। छठे दशक के प्रारंभ में आप राजस्थान विश्वविद्यालय की सीनेट के सदस्य निर्वाचित हुए। बाद में सिण्डीकेट के भी सदस्य रहे।

व्यवसाय के क्षेत्र में आप प्रारंभ में हिन्द बैंक लि. की सेवा में रहे जो बाद में बैंक आफ बड़ौदा में शामिल हो गया। श्री बाकींवाला इस बैंक की जयपुर और कोटा स्थित मुख्य शाखाओं के प्रबंधक तथा बाद में राजस्थान के क्षेत्रीय प्रबंधक रहे। बैंक सेवा से आपने मुख्य कार्यालय बम्बई से सहायक महाप्रबंधक के रूप में अवकाश ग्रहण किया। श्री बाकींवाला का जयपुर के सार्वजनिक जीवन में विशिष्ट स्थान है। आप दर्जनों संस्थाओं के पदाधिकारी रहे। बैंक से सेवा-निवृत्ति के बाद तत्कालीन केन्द्रीय वित्त मंत्री श्री प्रणव मुकर्जी ने देश के बैंकिंग व्यवसाय के अध्ययन हेतु श्री बाकींवाला की अध्यक्षता में एक सदस्यीय समिति नियुक्त की थी।

कैलाशदान उज्जवल - भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी श्री कैलाशदान उज्जवल का जन्म 7 सितम्बर, 1921 को जैसलमेर जिले के ऊजली ग्राम में हुआ। आप एम.एससी. और एलएल.बी. करने के बाद प्रारंभ में कुछ वर्षों तक मुन्सिफ मजिस्ट्रेट रहे। 1958 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में आपका चयन हुआ। जोधपुर संभाग से सीधी प्रतियोगिता में आने वाले आप प्रथम व्यक्ति थे। आप बाड़मेर और झुंझुनूं में जिलाधीश, राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में सचिव, राजस्थान जेल सुधार आयोग के सदस्य सचिव तथा राजस्व विभाग में शासन सचिव रहे। सेवा-निवृत्ति के बाद आप कांग्रेस (इ) के सदस्य बने तथा अक्टूबर1985 में जयपुर में आयोजित कांग्रेस शताब्दी समारोह के आप प्रमुख कर्ता-धर्ताओं में थे।पिछले तीन वर्षों तक आप राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के अध्यक्ष रहे।

कैलाश मिश्र - प्रदेश के जाने-माने पत्रकार और वर्तमान में "राजस्थान पत्रिका" के संयुक्त सम्पादक और "इतवारी पत्रिका" के सम्पादक श्री कैलाश मिश्र का जन्म 20 जुलाई 1934 को जयपुर में हुआ। आपने बी.ए. और प्रभाकर की उपाधियां प्राप्त की लेकिन पत्रकारिता से आप छात्र-जीवन में ही सक्रिय रूप से जुड गये। फरवरी 1955 में जयपुर से "नवयुग" दैनिक का प्रकाशन शुरू होने पर आप रिपोर्टर और उप सम्पादक रहे। छठे दशक के प्रारंभ में "मशाल" साप्ताहिक जब दैनिक रूप में प्रकाशित हुआ तो आपने सम्पादक का दायित्व संभाला। बाद में "राष्ट्रदूत" में मुख्य उप सम्पादक रहे।

वैसे तो हिन्दी पत्रकारिता की कोई ऐसी विधा नहीं है जिस में श्री मिश्र की गति नहीं हो लेकिन हास्य और व्यंगात्मक लेखन में आपकी विशेष रुचि है। 30 मार्च 1988 को राजस्थान दिवस के अवसर पर राज्य सरकार द्वारा आपको सम्मानित किया जा चुका है।

कैलाश मेघवाल - राजस्थान के पूर्व पंचायत एवं खनिज मंत्री तथा प्रदेश भाजपा के महामंत्री श्री कैलाश मेघवाल का जन्म 22 मार्च, 1934 को उदयपुर में पिछडे वर्ग के एक सामान्य परिवार में हुआ। आपने महाराणा भूपाल कालेज से एम.ए. एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद उदयपुर में ही वकालत प्रारंभ की। छात्र जीवन में ही राजनीति में सक्रिय रुचि के कारण प्रारंभ में आप स्टूडेन्टस फेडरेशन

श्रीमती कुसुमप्रसाद का जन्म 14 दिसम्बर,1936 को नई दिल्ली में हुआ।1960 में सेवा में चयन के बाद आप टोंक में जिलाधीश, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग में शासन विशिष्ट सचिव, राजस्थान कृषि उद्योग निगम में प्रबन्ध निदेशक, केन्द्रीय सतर्कता आयोग में सचिव तथा राजस्थान लघु उद्योग निगम में प्रबन्ध निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुकी है।

केदारनाथ (प्रो.)- गंगानगर विधानसभा क्षेत्र से 1980 के चुनाव को छोडकर 1962 से 1985 तक के पाच चुनावों में निरन्तर विधायक रहे प्रो. केदार का जन्म 17 जुलाई, 1919 को गंगानगर में हुआ। आपने एम ए. तक शिक्षा प्राप्त की।

श्री केदारनाथ छात्र जीवन से ही राजनीति से सक्रिय रूप से जुड़े हुये हैं। आजादी से पूर्व आपने तत्कालीन बीकानेर रियासत में प्रजा परिषद् की आन्दोलनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भाग लिया। 1962 में आप प्रथम बार निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में गंगानगर क्षेत्र से विधानसभा के लिये चुने गये। तत्पश्चात 1967 में संयुक्त सोशलिस्ट, 1972 में सोशलिस्ट और 1977 में जनता पार्टी प्रत्याशी के रूप में विजयी हुए। *1980 में चुनाव नहीं लडा और 1985 में पुनः जनता पार्टी के टिकिट पर विजयी* हुये। आप 1977 में प्रदेश में बनी प्रथम गैर कांग्रेसी सरकार में भैरोसिंह शेखावत मंत्रिमंडल में गृह,श्रम,यातायात, उपनिवेशन और राजस्थान नहर मंत्री बनाये गये।

केवलकृष्ण खन्ना- राजस्थान लेखा सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में रीको में कार्यकारी निदेशक (वित्त) श्री के.के. खन्ना का जन्म 29 जुलाई, 1938 को लाहौर में हुआ। देश विभाजन के पश्चात आपका परिवार दिल्ली आ गया। आपने पंजाब विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम ए. तथा राज्य सेवा में आने के बाद राजस्थान विश्वविद्यालय से एलएल.बी. किया।

श्री खन्ना प्रारंभ में पत्रकारिता से जुडे और अंग्रेजी दैनिक 'हिन्दुस्तान स्टेण्डर्ड' और आल इण्डिया मैनेजमेन्ट एसोसिएशन दिल्ली की मासिक पत्रिका 'इण्डियन मैनेजमेंट' के सम्पादकीय विभाग में कार्य किया।1962 में राजस्थान लेखा सेवा में चयन के बाद आप चित्तौड़गढ, जयपुर जिला तथा शासन सचिवालय में कोषाधिकारी रहे। तत्पश्चात जयपुर नगर परिषद में वित्तीय सलाहकार, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में लेखाधिकारी, राजस्थान राज्य सहकारी क्रय-विक्रय संघ में महाप्रबन्धक (वित्तीय), राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड में वित्तीय सलाहकार, जयपुर विकास प्राधिकरण में निदेशक (वित्त) तथा वित्त विभाग में शासन उपसचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

केशवदेव मोदी- नीम-का-थाना क्षेत्र के प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्ता तथा पूर्व नगरपालिकाध्यक्ष श्री केशवदेव मोदी सीकर जिले के यशस्वी पुत्र स्वर्गीय श्री [illegible] के पुत्र है। आपका जन्म 21 अगस्त, 1943 को हुआ। आपकी शिक्षा नीम-का-थाना और जयपुर में हुई तथा [illegible] स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने नीम-का-थाना में ही वकालत प्रारंभ की। आपकी सार्वजनिक गतिविधियों में प्रारंभ से ही रुचि रही है और नीम-का-थाना के जनजीवन में सक्रिय रूप से जुड़े हुए है। सितम्बर, 1984 में आप पालिकाध्यक्ष निर्वाचित हुये। वर्तमान में आप [illegible] के सदस्य तथा [illegible] स्मारक समिति के सचिव है।

कैलाशचन्द्र अग्रवाल (डा.)- जयपुर के [illegible] मानसिक [illegible] के प्रमुख डा. के.सी. अग्रवाल का जन्म जयपुर के [illegible] डा. [illegible] के घर हुआ। [illegible] मानसिक [illegible] की देन है।

कैलाश चन्द्र बाकीवाला- राजस्थान में बैंकिंग के जाने-माने विशेषज्ञ और प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री कैलाश बाकीवाला का जन्म 16 जनवरी, 1920 को जयपुर में हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर में हुई और बी कम ,एलएल बी के साथ आपने सी ए आई आई बी का पाठ्क्रम किया। छात्र जीवन में ही क्रांतिकारी विचारों के श्री बाकीवाला स्वतंत्रता संघर्ष में कूद गये और 1942 के आन्दोलन में कालेज छोड दिया। आप प्रजामंडल के अधीन यंगमैन सोसायटी का गठन कर उसके सचिव बने जिसे बाद में सरकार ने गैरकानूनी घोषित कर दिया। आप शुरू में कांग्रेस और 1946 में समाजवादी दल के सदस्य बने। 1948 में समाजवादी दल जयपुर के सचिव नियुक्त हुये और 1958 तक राजस्थान प्रजा समाजवादी दल के संयुक्त सचिव रहे। 1952 में चुंगी विरोधी आन्दोलन में आप जेल गये। राजस्थान बैंक कर्मचारी संघ के आप संस्थापकों में है और प्रारंभिक 6 वर्षों तक इसके सचिव रह चुके है। छठे दशक के प्रारंभ में आप राजस्थान विश्वविद्यालय की सीनेट के सदस्य निर्वाचित हुए। बाद में सिण्डीकेट के भी सदस्य रहे।

व्यवसाय के क्षेत्र में आप प्रारंभ में हिन्द बैंक लि की सेवा में रहे जो बाद में बैंक आफ बड़ौदा में शामिल हो गया। श्री बाकीवाला इस बैंक की जयपुर और क्षेत्र स्थित मुख्य शाखाओं के प्रबंधक तथा बाद में राजस्थान के क्षेत्रीय प्रबंधक रहे। बैंक सेवा से आपने मुख्य कार्यालय बम्बई से सहायक महाप्रबंधक के रूप में अवकाश ग्रहण किया। श्री बाकीवाला का जयपुर के सार्वजनिक जीवन में विशिष्ट स्थान है। आप दर्जनों संस्थाओं के पदाधिकारी रहे। बैंक से सेवा-निवृत्ति के बाद तत्कालीन केन्द्रीय वित्त मंत्री श्री प्रणव मुकर्जी ने देश के बैंकिंग व्यवसाय के अध्ययन हेतु श्री बाकीवाला की अध्यक्षता में एक सदस्यीय समिति नियुक्त की थी।

कैलाशदान उज्ज्वल - भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी श्री कैलाशदान उज्ज्वल का जन्म 7 सितम्बर 1921 को जैसलमेर जिले के ऊजली ग्राम में हुआ। आप एम एससी और एलएल बी करने के बाद प्रारंभ में कुछ वर्षों तक मुन्सिफ मजिस्ट्रेट रहे। 1958 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में आपका चयन हुआ। जोधपुर संभाग से सीधी प्रतियोगिता में आने वाले आप प्रथम व्यक्ति थे। आप बाड़मेर और झुंझुनूं में जिलाधीश, राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में सचिव, राजस्थान जेल सुधार आयोग के सदस्य सचिव तथा राजस्व विभाग में शासन सचिव रहे। सेवा-निवृत्ति के बाद आप कांग्रेस (इ) के सदस्य बने तथा अक्टूबर1985 में जयपुर में आयोजित कांग्रेस शताब्दी समारोह के आप प्रमुख कर्ता-धर्ताओं में थे।पिछले तीन वर्षों तक आप राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के अध्यक्ष रहे।

कैलाश मिश्र - प्रदेश के जाने-माने पत्रकार और वर्तमान मे ''राजस्थान पत्रिका'' के संयुक्त सम्पादक और ''इतवारी पत्रिका' के सम्पादक श्री कैलाश मिश्र का जन्म 20 जुलाई, 1934 को जयपुर में हुआ। आपने बी ए और प्रभाकर की उपाधियां प्राप्त की लेकिन पत्रकारिता से आप छात्र-जीवन मे ही सक्रिय रूप से जुड गये। फरवरी 1955 में जयपुर से ''नवयुग ' दैनिक का प्रकाशन शुरू होने पर आप रिपोर्टर और उप सम्पादक रहे। छठे दशक के प्रारंभ में ''मशाल'' साप्ताहिक जब दैनिक रूप मे प्रकाशित हुआ तो आपने सम्पादक का दायित्व संभाला। बाद मे ''राष्ट्रदूत'' में मुख्य उप सम्पादक रहे।

वैसे तो हिन्दी पत्रकारिता की कोई ऐसी विधा नहीं है जिस में श्री मिश्र की गति नहीं हो लेकिन हास्य और व्यंगात्मक लेखन में आपकी विशेष रुचि है। 30 मार्च, 1988 को राजस्थान दिवस के अवसर पर राज्य सरकार द्वारा आपको सम्मानित किया जा चुका है।

कैलाश मेघवाल - राजस्थान के पूर्व पंचायत एवं खनिज मंत्री तथा प्रदेश भाजपा के महामंत्री श्री कैलाश मेघवाल का जन्म 22 मार्च, 1934 को उदयपुर में पिछडे वर्ग के एक सामान्य परिवार म हु... आपने महाराणा भूपाल कालेज से एम ए एलएल बी की उपाधि प्राप्त करने के ... वकालत प्रारंभ की। छात्र जीवन में ही राजनीति में सक्रिय रुचि के कारण प्रारंभ में ...

और युवक कांग्रेस के कार्यकर्त्ता रहे लेकिन बाद में आपने भारतीय जनसंघ की सदस्यता स्वीकार की। आपने जनसंघ और कांग्रेस दोनों दलों के प्रत्याशी के रूप में ही विधान सभा के चुनाव लड़े। लेकिन प्रथम बार सफलता 1977 के चुनाव में जनता प्रत्याशी के रूप में उदयपुर जिले के राजसमंद (सुरक्षित) क्षेत्र से प्राप्त हुई। आप श्री भैरोसिंह शेखावत के नेतृत्व में बनी प्रदेश की प्रथम गैर कांग्रेस सरकार में 27 जून, 1977 को राज्य मंत्री और 7 फरवरी, 1978 को कैबिनेट मंत्री बनाये गये। 1980 में आपने उदयपुर जिले के बजाय अजमेर जिले के अजमेर पूर्व (सुरक्षित) क्षेत्र से भाजपा टिकिट पर चुनाव लड़ा और विजयी हुए। दिसम्बर 1984 के लोकसभा चुनाव में अजमेर सामान्य क्षेत्र से और मार्च 1985 के विधान सभा चुनाव में अजमेर पूर्व (सुरक्षित) क्षेत्र से आपने भाग्य आजमाया लेकिन दोनों में ही सफल नहीं हो सके।

कैलाशसिंह सांखला - देश के जाने-माने वन्य जीव विशेषज्ञ श्री कैलाश सांखला का जन्म 30 जनवरी, 1925 को जोधपुर में हुआ और वहीं से एम०एससी० की उपाधि प्राप्त करने के बाद एक जनवरी, 1953 को आपने राज्य के वन विभाग की सेवा में प्रवेश किया। आप दिल्ली की जन्तुशाला के पांच वर्षों तक निदेशक रहे। इस अवधि में आपने प्रमुख समाचार पत्रों के प्रथम पृष्ठों पर जगली जानवरों के चित्र प्रकाशित कर दुनिया का ध्यान मूक प्राणियों की ओर आकृष्ट किया। जब आप दिल्ली की सडकों पर शेर के दो बच्चों को दोनों बगलों में दबाये चलते थे तो इस अनोखे व्यक्तित्व की ओर लोगों का ध्यान बरबस चला जाता था। बाद में भारत सरकार के टाइगर प्रोजेक्ट के निदेशक के रूप में आपने फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेजी मे शेर पर चार पुस्तकें प्रकाशित की। जंगलों और जंगली जानवरों पर लिखे आपके सैकडों लेख, आकाशवाणी वार्तायें और अनुसंधान पत्र आज भी सदर्भ के रूप में उपयोग लिए जाते हैं। जंगली जानवरों पर हुए विश्व के अनेक सम्मेलनों में आपने भारत का प्रतिनिधित्व किया और 1976 में लन्दन में आयोजित एक विश्व सम्मेलन की अध्यक्षता की।

श्री सांखला का जीवन में लगभग 50 से अधिक बार जंगलों में शेरों से आमना-सामना हुआ है और वह भी बिना बन्दूक के। देश में शेरों के शिकार पर प्रतिबन्ध लगवाने में आपका सर्वाधिक योग रहा है।

कोमल कोठारी - राजस्थान की लोक-कलाओं और लोक-संस्कृति के उन्नायक श्री कोमल कोठारी का जन्म 4 मार्च, 1928 को चित्तौड़गढ जिले के कपासन कस्बे में हुआ। आपकी शिक्षा जोधपुर और उदयपुर मे हुई। एम ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद आप पत्रकारिता की ओर आकृष्ट हुए और 1952 में जोधपुर से प्रकाशित मासिक "प्रेरणा" का सम्पादन किया। 1953-54 में आपने हिन्दी के प्रतिष्ठित मासिक कलकत्ता के "ज्ञानोदय" का सम्पादन किया और 1955 में जयपुर से प्रकाशित साप्ताहिक "ज्वाला" का कार्य किया। छठे दशक में राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के सचिव नियुक्त किये गये। इस पद पर रह कर आपने प्रदेश के विभिन्न अंचलों में फैले हजारों लोक-कलाकारों से साक्षात्कार कर उन्हे व्यवस्थित रूप देने का प्रयास किया।

पिछले लगभग ढाई दशकों से आपका कर्म-स्थल जोधपुर जिले का बोरूंदा ग्राम है जहा "रूपायन सस्थान" के निदेशक के रूप में आप लोक-जीवन में बिखरे विभिन्न कला रूपों को तलाशने और वैज्ञानिक ढग से व्याख्यायित कर उन्हें दार्शनिक धरातल देने का विधिवत कार्य कर रहे हैं। आपने अब तक सैकडों की सख्या में लोकवाद्यों को ढूंढने और हजारो वादकों और गायकों की रिकार्डिंग करने में सफलता प्राप्त की है। ग्राम्य कलाकारों की खोज में आपको गांव-गांव और ढाणी-ढाणी की खाक छाननी पडी। उनसे सम्पर्क स्थापित किया, रात-रात भर रिकार्डिंग की और फिल्माया। राजस्थान का लोक-सगीत आपके ही प्रयासों से समूचे विश्व में समादृत हुआ है। आपके ही अनुरोध पर जोधपुर विश्वविद्यालय ने लोकवार्ता को अपने पाठ्यक्रम में शामिल किया है। समय-समय पर विश्व के विभिन्न देशों की यात्रा कर राजस्थान की कला और संस्कृति को प्रचारित करने में अभी भी आप प्राणपण से जुटे हुए

है। भारत सरकार ने आप को "पद्मश्री" अलंकरण से सम्मानित कर आपकी सेवाओं को मान्यता प्रदान की है।

कौशलकिशोर सक्सेना - भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राज्य के परिवहन विभाग के आयुक्त एवं शासन सचिव श्री के.के. सक्सेना का जन्म 29 मई, 1940 को उ० प्र० के दतिया कस्बे में हुआ। लखनऊ से एम०ए० करने के बाद 1964 में आपने सेवा में प्रवेश किया तथा झालावाड़, चित्तौड़गढ़ और अजमेर के जिलाधीश, सार्वजनिक निर्माण, शिक्षा, ऊर्जा, खाद्य एवं राहत आदि विभागों के शासन विशिष्ट सचिव, समाज-कल्याण, स्वायत्त शासन, नगरीय-विकास एवं आवासन आदि विभागों के शासन सचिव, राजस्थान आवासन मंडल के अध्यक्ष, राजस्व मंडल के सदस्य,राजस्थान राज्य विद्युत मंडल के प्रशासनिक सदस्य तथा अजमेर के संभागीय आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

श्री सक्सेना के "महान भारत" पर शोध सम्बन्धी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख तथा "एन एप्रोच टू लाइफ आफ सम पोएट्स" नामक पुस्तक छप चुकी है।

के.एन. भार्गव - भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्व मंडल के सदस्य श्री के एन भार्गव का जन्म 7 जनवरी, 1940 को जयपुर में हुआ। 1964 में सेवा में प्रवेश के बाद आप झालावाड़ के जिलाधीश, हरिश्चन्द्र माथुर राजकीय लोक- प्रशासन संस्थान के निदेशक, जन-अभियोग निराकरण विभाग के शासन सचिव, विभागीय जांच आयुक्त तथा चम्बल क्षेत्रीय-विकास आयुक्त आदि पदों पर कार्य चुके हैं।

के.एस. मोनी - भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में ब्रिटेन में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे श्री के एस मोनी का जन्म 6 फरवरी, 1951 को केरल प्रदेश में हुआ। 1976 में सेवा में प्रवेश के बाद आप अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) तथा पदेन परियोजना निदेशक जोधपुर, बाड़मेर में जिलाधीश, कृषि विभाग में निदेशक तथा सहकारी विभाग में पंजीयक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

खेतसिंह राठौड़ - राजस्थान के पूर्व मंत्री श्री राठौड का जन्म 11 दिसम्बर, 1924 को जोधपुर जिले की शेरगढ़ तहसील के चौरडिया कलां ग्राम में हुआ। आपने एम ए और एलएल.बी तक शिक्षा प्राप्त की है। 1952 के प्रथम आम चुनाव में आप शेरगढ क्षेत्र से निर्दलीय रूप से विधायक चुने गये और 1954 में श्री जयनारायण व्यास की पहल पर कांग्रेस में शामिल हो गये। 1957 में आपने चुनाव नहीं लड़ा और 1962 में पराजित हो गये। 1959 से जनवरी 65 तक आप जोधपुर जिला परिषद के प्रमुख रहे। इसके बाद 1967 से 1980 तक सभी चारों चुनावों में आप कांग्रेस टिकिट पर शेरगढ़ क्षेत्र से विजयी हुए। 5 सितम्बर, 1967 को आप प्रथम बार सुखाडिया मंत्रिमंडल में उप मंत्री बनाये गये। तत्पश्चात 12 नवम्बर, 1973 को जोशी मन्त्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री नियुक्त किये गये। 1982 में आप माथुर मंत्रिमंडल में पुनः मंत्री रहे। 1985 में टिकिट नहीं मिलने के कारण आपने चुनाव नहीं लड़ा।

खेलशंकर दुर्लभजी (पद्मश्री) - राजस्थान के प्रमुख जौहरी और समाज-सेवी श्री दुर्लभजी का जन्म सन् 1912 में गुजरात के मोरवी कस्बे में हुआ। आपका परिवार 70 वर्ष से भी अधिक वर्षों पूर्व स्थायी रूप से जयपुर आ गया था, इसलिए 1936 में लखनऊ विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद आपका कार्य क्षेत्र भी जयपुर हो गया। आपने अपने पैतृक व्यवसाय जवाहरात को अपनाया और पन्नों की कटायी तथा पालिशिंग के कार्य में दक्षता प्राप्त की। आपकी फर्म मै० आर० वाई० दुर्लभजी ने निर्यात के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की तथा जयपुर के जवाहरात व्यवसाय को विश्व में स्थान दिलाया।

जवाहरात के क्षेत्र में आपकी सेवाओं को दृष्टि में रखते हुए भारत सरकार ने आपको आल इंडिया जैम एण्ड ज्वैलरी एक्सपोर्ट प्रमोशन कौंसिल का 1966 से 1968 तक प्रथम अध्यक्ष मनोनीत कर सम्मानित किया। इस पद पर रहकर आपने 1966 में जहाँ केवल दस करोड़ रुपये वार्षिक का निर्यात था उसे 1968 में तेईस करोड तक पहुंचाया।

श्री दुर्लभजी ने माता-पिता की स्मृति में सन्तोकबा दुर्लभजी मेमोरियल अस्पताल एवं अनुसंधान संस्थान चालू किया जो राजस्थान में अपने प्रकार का प्रथम संस्थान है। आप अब तक राजस्थान चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री, जयपुर चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री, ज्वैलर्स एसोसियेशन जयपुर, गुजराती समाज तथा सुबोध कालेज की संचालन समिति के अध्यक्ष एवं अमर जैन मेडीकल रिलीफ सोसायटी के उपाध्यक्ष और विभिन्न राजकीय और गैर राजकीय संस्थाओं के सदस्य तथा पदाधिकारी रह चुके हैं।

खंगारसिंह चौधरी - पाली जिले के खारची विधानसभा क्षेत्र से 1985 के आम चुनाव में निर्वाचित भारतीय जनता पार्टी के विधायक श्री खंगारसिंह चौधरी का जन्म जनवरी 1928 में देवली ग्राम में हुआ। मिडिल तक शिक्षित श्री चौधरी 1955 से 64 तक अपनी ग्राम पंचायत के सरपंच भी रह चुके हैं। 1977 में भी आप इसी निर्वाचन क्षेत्र से जनता पार्टी के टिकिट पर चुने गए थे।

गजसिंह (जोधपुर) - जोधपुर के पूर्व महाराजा श्री गजसिंह का जन्म 13 जनवरी, 1948 को हुआ। आपने अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र में एम०ए० की उपाधि इंगलैण्ड से प्राप्त की। आप त्रिनिदाद एवं तोबेगो, बारबाडोस, ग्रेनाडा, डोमिनिका, सेन्ट लुसिया तथा सेन्ट विन्सेन्ट आदि देशों में भारत के उच्चायुक्त रह चुके हैं। वर्तमान में आप जोधपुर नागरिक एसोसिएशन तथा अखिल भारतीय साइकिल पोलो संघ के अध्यक्ष हैं।

गजेन्द्रनाथ हल्दिया - भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर वित्त मंत्रालय के व्यय विभाग में उपसचिव श्री जी.एन. हल्दिया का जन्म जयपुर के जाने-माने हल्दिया परिवार में 29 जनवरी, 1949 को हुआ। कानून में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद कुछ अर्से तक आपने श्री मरुधर मृदुल के साथ वकालत की और बाद में भारतीय राजस्व सेवा में चयन होने पर आयकर अधिकारी नियुक्त हुए। 1973 में आपका वर्तमान सेवा में चयन होने पर शासन उप सचिव कृषि विपणन तथा राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड के प्रशासक नियुक्त हुए। बाद में पाली और भरतपुर के जिलाधीश, समाज-कल्याण विभाग के निदेशक, जयपुर-विकास प्राधिकरण के सचिव तथा सामान्य प्रशासन विभाग में शासन विशिष्ट सचिव रहे।

गणपतराम यादव - भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राज्य के भू-प्रबन्ध आयुक्त श्री गणपतराम यादव का जन्म अलवर जिले के उलाहेडी ग्राम में पांच जून, 1934 को हुआ। आपने बी०ए० और एलएल० बी० की उपाधियां रिवाडी और दिल्ली में पढ़ कर प्राप्त की। 1957 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन होने के बाद आपने उपजिलाधीश भीलवाडा, अतिरिक्त जिलाधीश भरतपुर एवं जयपुर, उपायुक्त वाणिज्यिक कर विभाग, शासन उपसचिव गृह, कृषि तथा विशिष्ट योजना संगठन और प्रशासक राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड आदि पदों पर कार्य किया। 1984 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति के बाद आप शासन उपसचिव राजस्व, जिलाधीश डूंगरपुर तथा राजस्थान राज्य सहकारी क्रय-विक्रय संघ लि. के दो बार प्रबंध निदेशक रहे।

गणपतराय शर्मा - भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान स्वायत्त शासन संस्थान के निदेशक श्री गणपतराय शर्मा का जन्म 25 अगस्त, 1925 को जयपुर में हुआ। बी.एससी. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद प्रारम्भ में आपने जयपुर रियासत की

न्यायिक सेवा में प्रवेश किया। बाद में आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये और विभिन्न स्थानों पर विभिन्न पदों पर कार्य किया। 1973 में आपकी भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति हुई और आपने सीकर तथा जोधपुर के जिलाधीश, भू-प्रबन्ध आयुक्त, रजिस्ट्रार सहकारी विभाग तथा कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग में विशिष्ट सचिव आदि पदों पर कार्य किया। अगस्त 1983 में सेवा निवृत्ति के बाद राज्य सरकार ने 29 सितम्बर, 1983 को आपको राजस्थान सिविल सेवा अपील अधिकरण का सदस्य मनोनीत किया।

गणपतसिंह भंडारी- *राजस्थान उच्च न्यायिक सेवा के अधिकारी श्री गणपतसिंह भंडारी का* जन्म 6 दिसम्बर, 1937 को जोधपुर में हुआ। 1 अगस्त, 1960 को मुंसिफ एवं न्यायिक अधिकारी के रूप में राजस्थान न्यायिक सेवा में प्रवेश करने के बाद आप विभिन्न स्थानों पर सिविल जज, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा जिला एवं सत्र न्यायाधीश के पदों पर कार्य कर चुके हैं।

गणपतिचन्द्र भंडारी (प्रो.)- राजस्थान में पुराना पीढ़ी के प्रतिनिधि कवि प्रो. भंडारी का जन्म *14सितम्बर,1913 को जोधपुर में हुआ। आपके काव्य की पृष्ठभूमि में जन-आन्दोलन का प्रेरक स्वर* और आततायी के प्रति प्रबल जनरोष की अभिव्यक्ति है। आप एक समर्पित अध्यापक और सफल कवि हैं। आपकी एक मात्र काव्यकृति ''रक्तदीप'' है जिसमें कवि ने युगीन समस्याओं और सामयिक प्रश्नों को जागरूक कलाकार की दृष्टि से देखा है। आप वर्षों तक प्रादेशिक और अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में अपनी काव्य प्रतिभा के कारण छाये रहे। 'नाट्य-कथा कुंज', 'पंचरगिनी' (नाट्य संकलन), हमारा राष्ट्र (नाटक), 'ज्येतिर्मय जीवन' आदि आपके अन्य प्रकाशित ग्रंथ हैं।

गणेशनारायण पोद्दार- राजस्थान के प्रमुख उद्योगपति और व्यवसायी श्री गणेशनारायण पोद्दार का जन्म 11मई, 1930 को हुआ। आप पोद्दार समूह की विभिन्न कम्पनियों सहित अनेक प्रमुख औद्योगिक प्रतिष्ठानों के निदेशक मंडल के सदस्य, 1973 में इन्डियन मर्चेन्ट्स चैम्बर के उपाध्यक्ष तथा 1974 में अध्यक्ष रह चुके हैं। आप क्रिकेट क्लब आफ इन्डिया, विलिंगडन स्पोर्ट्स क्लब इन्डो-अमेरिकन सोसायटी बम्बई तथा इन्डियन चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री, लंदन के सदस्य रहे हैं।

गणेशप्रसाद नागर- भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जयपुर के राजस्व अपील अधिकारी (प्रथम) श्री जी. पी. नागर का जन्म उत्तर प्रदेश के इटावा कस्बे में 28 जून, 1936 को हुआ। आपकी शिक्षा झांसी में हुई और आपने अर्थशास्त्र, इतिहास और अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया।1958 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने जाने के बाद आप अलवर और धौलपुर में उपजिलाधीश, धौलपुर में ही अतिरिक्त जिलाधीश, बीकानेर में जिला आबकारी अधिकारी, परियोजना निदेशक डी पी.ए.पी. तथा सिंचित क्षेत्र विकास, स्वायत्त शासन, नगरीय विकास, आवासन तथा चिकित्सा एवं स्वास्थ्य आदि विभागों में उपसचिव, भू-प्रबन्ध अधिकारी बीकानेर तथा जयपुर रह चुके है। प्रशासनिक दायित्वों के निर्वहन के बाद आपका अधिकांश समय साहित्य सृजन में बीतता है। आपने अब तक पांच सौ से अधिक लेख एवं लघुकथायें लिखी है जो देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। आकाशवाणी से भी आपकी गजलें तथा नाटक प्रसारित हो चुके हैं।

गणेश मन्त्री- विख्यात पत्रकार और 'धर्मयुग' के सम्पादक श्री गणेश मंत्री राजस्थान के जाने-माने समाजवादी नेता स्व पुरुषोत्तमदास मंत्री के पुत्र हैं। आपका जन्म 8 दिसम्बर, 1938 को कोटा में हुआ। आपने *समाजशास्त्र में एम ए. तथा एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त कर स्वतंत्र लेखन और पत्रकारिता शुरू* की। आपकी रचनायें 'जन' 'लहर', 'वातायन', 'धर्मयुग' तथा 'बिन्दु' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। आपकी रूस-चीन सीमा विवाद, समता का दर्शन, विषमता आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

गणेशलाल बैरागी- बूंदी जिले के हिंडोली क्षेत्र के भाजपा विधायक श्री गणेशलाल बैरागी का जन्म 7 जुलाई,1940 को नीम-का-खेड़ा ग्राम में हुआ। विधि-स्नातक श्री बैरागी सर्वप्रथम 1977 में जनता पार्टी के टिकिट पर इसी निर्वाचन क्षेत्र से चुने गये। 1980 के चुनाव में आप कांग्रेसी प्रत्याशी के मुकाबले पराजित रहे थे।

गायत्री देवी (राजमाता)- जयपुर के पूर्व राजपरिवार की राजमाता गायत्री देवी का जन्म कूचबिहार (बंगाल) के पूर्व महाराजा श्री जितेन्द्रनारायण भूप-बहादुर के यहां 23मई,1919 को लन्दन में हुआ। आपकी शिक्षा शान्तिनिकेतन, लंदन और स्विट्जरलेण्ड में हुई तथा आपका विवाह सन् 1940 में जयपुर के पूर्व नरेश सवाई मानसिंह से हुआ।

सन् 1962 में आपने सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया और स्व. राजगोपालाचार्य द्वारा संस्थापित स्वतंत्र पार्टी की राज्य शाखा की अध्यक्ष बनीं 1962,1967 और 1971 के चुनावों में आप जयपुर क्षेत्र से स्वतंत्र पार्टी के टिकिट पर लोकसभा की सदस्य चुनी गईं। 1962 के चुनाव में आपको समूचे देश में सर्वोच्च बहुमत से चुनाव में विजयी होने का गौरव प्राप्त हुआ।1967 में आपने जयपुर क्षेत्र से लोकसभा के साथ टोंक जिले के मालपुरा क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव भी लड़ा लेकिन उसमें आप कांग्रेस के श्री दामोदर व्यास के मुकाबले पराजित हुई। 1977 में राज्य में गैर कांग्रेस सरकार बनने पर आपको राजस्थान पर्यटन-विकास निगम का अध्यक्ष मनोनीत किया गया।

राजमाता जयपुर के महारानी गायत्री देवी पब्लिक स्कूल की संस्थापक अध्यक्ष होने के साथ ही महाराजा सवाई जयसिंह बेनीवोलेंट ट्रस्ट, महारानी गायत्री देवी सैनिक कल्याण कोष, सवाई मानसिंह पब्लिक स्कूल और सवाई रामसिंह कला मन्दिर की अध्यक्ष हैं। इसके अलावा आप अ.भा.लान टेनिस एसोसियेशन व अ.भा. स्वतंत्र पार्टी की उपाध्यक्ष रह चुकी हैं। महाराजा जयपुर म्यूजियम ट्रस्ट की ट्रस्टी हैं। आपकी अब तक "ए प्रिंसेस रिमेम्बर्स" तथा "ए गवर्नमेंट्स गेट वे"नामक पुस्तकें अंग्रेजी में प्रकाशित हो चुकी हैं।

गिरधारीलाल भार्गव- राजस्थान की राजधानी जयपुर के जाने-माने भाजपा कार्यकर्ता और 1972 में हवामहल तथा 1977 और 1985 के चुनावों में किशनपोल क्षेत्र से निर्वाचित विधायक श्री गिरधारीलाल भार्गव का जन्म 4नवम्बर, 1938 को जयपुर में हुआ। आपने विधि-स्नातक की उपाधि धारण कर कुछ दिनों के लिये काला कोट पहिना लेकिन वह आपके स्वभाव को रास नहीं आया। आप मूलतः समाज-सेवी हैं राजनीति तो जबरन गले पड़ गई है। छात्र जीवन से ही पास-पडौस की गलियां साफ करना, वाचनालय चलाना, बीमार की तीमारदारी करना और जरूरत होने पर अस्पताल पहुंचाना, किसी की मौत पर चाल-चलावे की व्यवस्था करना और दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति के लिये, जिस हालत में भी बैठे हों, भाग कर जाना आपके स्वभाव का अंग बन गया है। इन दिनों तो आप उन सब मृतकों की अस्थियां को भी हरिद्वार ले जाकर गंगा में विसर्जित करने लगे हैं-जिनके परिजन हरिद्वार तक जाने-आने का खर्चा वहन करने में समर्थ नहीं है अथवा जो अपने पीछे कोई वारिस छोड़कर नहीं गये है।

आप राजधानी के नागरिकों की निगाह में सबसे पहले सन् 1956 में अचानक तब चढ़े जब आप महाराजा कालेज के छात्र थे और जयपुर नगर परिषद् के चुनाव में चौकड़ी पुरानी बस्ती वार्ड से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में उस समय के बड़े-बड़े दिग्गजों को अपने पीछे धकेल दिया था। इसके बाद 1972 में विधायक बनने से पूर्व जितनी बार नगर परिषद् के चुनाव हुए- आप बराबर विजयी हुए। 1957 और 1962 के विधानसभा चुनावों में भी आपने हवामहल क्षेत्र से भाग्य आजमाया लेकिन सफल नहीं हो सके। 1967 में आपने चुनाव नहीं लड़ा और 1972 के चुनाव में इंदिरा गांधी की प्रबल आंधी के बावजूद आप न केवल विजयी हुये अपितु कांग्रेसी प्रत्याशी की जमानत तक जब्त करवा दी। 1977,1980 और 1985 में

आपने विजयनगर क्षेत्र से चुनाव लड़ा जिसमें 1980 को छोड़कर शेष दोनों में विजयी हुए। जनता राज में आप जयपुर नगर-विकास न्यास के अध्यक्ष भी रहे।

गिरधारीलाल व्यास- भीलवाड़ा क्षेत्र से जनवरी 1980 और दिसम्बर1984 में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित लोकसभा सदस्य श्री गिरधारीलाल व्यास का जन्म 10 जनवरी 1924 को जिले के बदनोर ग्राम में हुआ। आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम ए और एलएल बी करने के बाद वकालत प्रारम्भ की और 1951-52 में बदनोर ग्राम पंचायत के सरपंच के रूप में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। तदन्तर आप 1954 से 59 तक आसींद तहसील पंचायत के सरपंच,1959 से 62 तक पुन सरपंच 1962 से 1967 तक जिला परिषद भीलवाड़ा के उप-प्रमुख 1962 एवं1967 के आमचुनाव तथा 1973 के उपचुनाव में आसींद क्षेत्र से विधायक 1978 में राजस्थान इंटक के उपाध्यक्ष, 1972 से 1977 तक राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष तथा 1969 से 72 तक राजस्थान विधान सभा कांग्रेस दल के मुख्य सचेतक रहे।

गिर्राजप्रसाद तिवाड़ी- राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष श्री गिर्राजप्रसाद तिवाड़ी का जन्म 5 दिसम्बर 1920 को भरतपुर जिले के बिदयारी ग्राम में हुआ। विधि स्नातक होने के बाद आपने भरतपुर में वकालत प्रारम्भ की। राजनीति के प्रति आपकी प्रारम्भ से ही सक्रिय रुचि रही। आप भरतपुर पंचायत समिति के प्रधान 1972 में कांग्रेस टिकिट पर बयाना क्षेत्र से विधायक तथा 1982 में भरतपुर जिला परिषद के प्रमुख चुने गए थे।वर्तमान में आप भरतपुर क्षेत्र का विधान सभा में प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

श्री तिवाड़ी 29मार्च 1985 को विधान सभा के उपाध्यक्ष चुने गये। 31जनवरी,1986 को इस पद से त्यागपत्र दिया तथा इसी दिन सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित हुये।

गिरिजा व्यास (डा)- राजस्थान के पर्यटन भाषा महिला-शिशु एवं पोषाहार आदि विभागों की प्रभारी राज्य मंत्री डा गिरिजा व्यास का जन्म 8 जुलाई 1946 को नाथद्वारा में हुआ। शिक्षा समाप्ति के पश्चात उदयपुर विश्वविद्यालय में व्याख्याता नियुक्त हुई और अध्यापन एवं शोधकार्यों के सिलसिले में अमेरिका व कनाडा की यात्रायें कीं। आप उदयपुर विश्वविद्यालय शिक्षक संघ की उपाध्यक्ष भी रही तथा अब तक आपके अनेक प्रकाशन निकल चुके हैं।

सुश्री व्यास 1985 में उदयपुर क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकट पर विधायक चुनी गई। आप नगर विकास न्यास उदयपुर, राजस्थान दूर-संचार परामर्शदात्री समिति तथा राजस्थान पथ परिवहन निगम के निदेशक मंडल की सदस्य भी रह चुकी हैं। 6 फरवरी 1988 को आप माथुर मंत्रिमंडल में राज्य मंत्री नियुक्त की गयी।

गुमानमल लोढ़ा- देश के जाने-माने न्यायविद् तथा असम उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधिपति श्री गुमानमल लोढ़ा का जन्म 15 मार्च,1926 को नागौर जिले के डीडवाना कस्बे में हुआ। आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन से विशारद तथा जसवंत कालेज जयपुर से विधि-स्नातक की उपाधि प्राप्त की और 1951 में जोधपुर में ही वकालत प्रारम्भ की। छात्र जीवन में आपने श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में लोक परिषद की गतिविधियों में भाग लिया तथा 1947 में देश विभाजन के फलस्वरूप जोधपुर में आने वाले शरणार्थियों की दिन रात सेवा की। इसी समय आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से सक्रिय रूप से जुड़े।

श्री लोढ़ा ने 1962 और 1967 के विधान सभा चुनावों में जोधपुर नगर क्षेत्र से भारतीय जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में भाग लिया लेकिन दोनों बार पराजित हुए। 1972 में प्रथम बार इसी क्षेत्र से विधायक चुने गये और विधान सभा जनसंघ दल के नेता बनाये गये। 1977-78 में आप राजस्थान हाईकोर्ट एडवोकेट्स एसोसियेशन के अध्यक्ष चुने गये और एक मई, 1978 को राजस्थान उच्च न्यायालय में

न्यायाधिपति नियुक्त किये गये। उन्होंने नवम्बर 1985, अगस्त 1986 तथा अक्टूबर 1987 से 20 फरवरी 1988 तक कार्यवाहक मुख्य न्यायाधिपति के रूप में भी कार्य किया। इस अवधि में उन्होंने न्याय व्यवस्था में [illegible] 26 फरवरी 1988 को आप आसाम उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति नियुक्त किये गये। आप [illegible] और न्यायिक विषयों के श्रेष्ठ लेखक भी हैं जिनकी हिन्दी [illegible] में अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। [illegible] मार्च 1988 में [illegible] ग्रहण करने के पश्चात जून 1988 में [illegible] भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी के रूप में [illegible] का चुनाव लड़ा [illegible] नहीं हो सके।

गुरदेवसिंह- भारतीय प्रशासनिक सेवा की [illegible] वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में [illegible] के सचिव श्री गुरदेवसिंह का जन्म 15 अगस्त 1945 को [illegible] (पंजाब) में हुआ। 1973 में सेवा में प्रवेश के बाद आप आर्थिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग में उप निदेशक, [illegible] तथा जिलों के जिलाधीश, समाज कल्याण एवं पुनर्वास [illegible] विभाग के निदेशक तथा जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में शासन विशिष्ट सचिव, राजस्व मंडल के सदस्य आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

गुरदयालसिंह संधू — भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भरतपुर के जिला कलक्टर श्री जी. एस. संधू का जन्म 11 सितम्बर, 1955 को पंजाब में हुआ। 1980 में आपका सेवा में चयन हुआ तथा आप नगर [illegible] जोधपुर, सचिव नगर-विकास न्यास जोधपुर, शासन उपसचिव [illegible]-(ग्रुप द्वितीय) तथा जिला कलक्टर डूंगरपुर आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

गुलाबचन्द कठोतिया- राज्य सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियन्ता श्री गुलाब चन्द कठोतिया का जन्म 23 सितम्बर, 1930 को कोटा जिले के बड़ोद ग्राम में हुआ। आपने 1950 में बी.एससी. तथा1954 में बी.ई. (सिविल) की उपाधि प्राप्त की। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से आपने 'साहित्यरत्न' परीक्षा उत्तीर्ण की। श्री कठोतिया 1954 से 58 तक सहायक अभियन्ता, 1958 से 70 तक अधिशाषी अभियन्ता, 1970 से 79 तक अधीक्षण अभियन्ता, 1979से 84 तक अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता तथा 4 जून,1984 को मुख्य अभियन्ता नियुक्त हुए।

गुलाब बत्रा- जोधपुर से प्रकाशित ''जलते दीप'' दैनिक के समाचार सम्पादक श्री बत्रा राजस्थान के प्रथम पत्रकार हैं जिन्हें भारतीय प्रेस परिषद का सदस्य बनने का गौरव प्राप्त है। आपका जन्म 21 जून, 1950 को भरतपुर में हुआ और इतिहास और राजनीति शास्त्र में आपने एम.ए. किया। छात्र जीवन में ही आप पत्रकारिता से जुड़ गये और प्रारंभ में ''समाचार भारती'' का भरतपुर में प्रतिनिधित्व करने के साथ ही 1968 से 1972 तक वहां के दैनिक ''पूर्वी राजस्थान'' के सम्पादकीय विभाग में कार्य किया। 1973से 1978 तक ''हिन्दुस्थान समाचार समिति''के जयपुर ब्यूरो में रहे। 1978 में आप जोधपुर चले गये जहां 1983 तक हि.स. के और 1984–85 में यूनीवार्ता के ब्यूरो प्रमुख रहे। बाद में आप जलते दीप से जुड़ गये।

श्री बत्रा नेशनल यूनियन आफ जर्नलिस्ट्स के राष्ट्रीय सचिव तथा राजस्थान बृजभाषा अकादमी के सदस्य हैं।

गुलाबसिंह शक्तावत- राजस्थान के स्वायत्त शासन, आवासन एवं नगरीय विकास, नगर आयोजना, श्रम एवं नियोजन आदि विभागों के मंत्री श्री गुलाबसिंह शक्तावत का जन्म तीन मई,1929 को

उदयपुर जिले के भिण्डर कस्बे में हुआ। आपने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की और स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान मेवाड़ प्रजामंडल द्वारा शुरू किये गये आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया। 1953 से 56 तक आप भिण्डर ग्रामपंचायत के सरपंच, 1964से 66 तक भिण्डर नगरपालिका के अध्यक्ष और 1953से 59 तक "प्रगति" साप्ताहिक के सम्पादक रह चुके हैं। सहकारी क्षेत्र में आपकी विशेष रुचि रही है। आप उदयपुर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक तथा राजस्थान स्टेट को-आपरेटिव बैंक के अध्यक्ष भी रहे हैं।

श्री शक्तावत 1957,1967,1972 और 1985 के विधान सभा चुनावों में जहां कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में वल्लभनगर क्षेत्र से विजयी हुए वहां 1962 में लसाडिया तथा 1977 और 1980 के चुनावों में वल्लभनगर क्षेत्र से पराजित भी हुए। आप प्रथम बार नवम्बर 1973 में जोशी मंत्रिमंडल में राज्य मंत्री नियुक्त किये गये और वर्तमान स्वायत्त शासन, आवासन नगरीय विकास तथा नगर आयोजना आदि विभागों के स्वतंत्र रूप से प्रभारी मंत्री रह चुके हैं। 1982 में आप उदयपुर के जिला प्रमुख चुने गये तथा मार्च 1985 में श्री हरिदेव जोशी के पुनः मुख्यमंत्री बनने पर 11 मार्च 1985 को सिंचाई ऊर्जा सार्वजनिक निर्माण, बाढ़ एवं अकाल सहायता विधि एवं न्याय तथा संसदीय मामलात आदि विभागों के कैबिनेट मंत्री नियुक्त किये गये। बाद में 3 जनवरी 1987 को आपको सिंचाई ऊर्जा सार्वजनिक निर्माण, बाढ़ एवं अकाल सहायता आदि विभागों से बदलकर गृह (विशेष शाखा के अतिरिक्त) भ्रष्टाचार निरोधक तथा विशिष्ट योजना संगठन आदि विभाग दिये गये। 18 जनवरी 1988 को जोशी सरकार के पद त्याग के कारण आप भी मंत्री पद से हट गये लेकिन 8 जून 1989 को शिवचरण माथुर मंत्रिमंडल में पुनः शामिल कर लिये गये।

गोपालकृष्ण गोस्वामी- राजस्थान प्रशासनिक सेवा की वर्तमान [illegible] के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड के सचिव श्री जी. के. गोस्वामी का जन्म 12 जनवरी 1936 को अजमेर में हुआ। आपकी शिक्षा बीकानेर में हुई और 1961 में आपने सेवा में प्रवेश किया। वर्तमान पद-स्थापन से पूर्व आप मुख्य रूप से जयपुर नगर परिषद के [illegible] जयपुर के [illegible] जिला विकास अधिकारी, राजस्थान पर्यटन विकास निगम के [illegible] [illegible] विभाग में शासन उपसचिव तथा ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग में [illegible] [illegible] कर चुके हैं।

गोपालकृष्ण भणोत- राजस्थान सरकार के पूर्व मुख्य सचिव श्री जी. के. भणोत का जन्म 12 मार्च, 1927 को जयपुर में हुआ। 1949 में सेवा में प्रवेश के बाद राज्य और केन्द्र में विभिन्न [illegible] पदों पर कार्य करने के बाद आप 28 नवम्बर 1977 को मुख्य सचिव और 25 [illegible] [illegible] को राजस्व मंडल के अध्यक्ष नियुक्त किये गये।

गोपालकृष्ण शर्मा- राजस्थान उच्च न्यायालय के [illegible] [illegible] का जन्म [illegible] फरवरी, 1928 को अजमेर में हुआ। [illegible] 1952 [illegible] [illegible] [illegible] आपने [illegible] [illegible] [illegible] रूप में [illegible] [illegible]। [illegible] 1957 [illegible] मजिस्ट्रेट, 8 जनवरी 1967 को [illegible] 11 [illegible] 1970 को [illegible] न्यायाधीश तथा 7 मई 1973 को [illegible] न्यायाधीश नियुक्त हुए। [illegible] 4 अगस्त 1983 को हुई।

गोपालकृष्ण सिहानिया- [illegible] [illegible] गोपालकृष्ण सिहानिया का जन्म [illegible] 1933 में [illegible] में हुआ। [illegible] [illegible] परिवार से सम्बद्ध हैं। [illegible]

जयपुर के निदेशक तथा भारतीय ऊनी मिल संघ के अध्यक्ष भी आप रह चुके हैं। आप भारत सरकार की भेड़ व ऊन उद्योग विकास समिति के अध्यक्ष भी रहे हैं।

गोपालनारायण बहुरा- प्राच्य विद्या के सुप्रसिद्ध विद्वान तथा जयपुर स्थित पोथीखाना के पूर्व अधीक्षक श्री गोपाल नारायण बहुरा का जन्म 14 मई, 1911 को जयपुर में हुआ। संस्कृत में एम.ए. करने के बाद आपने कुछ अर्से तक पारीक पाठशाला में अध्यापन किया लेकिन साहित्य में शोध और अनुसंधान में विशेष रुचि होने के कारण आप तत्कालीन जयपुर रियासत के पोथीखाना और शस्त्रागार की सेवा में चले गये। बाद में 1951 में राजस्थान में प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान की स्थापना होने पर आप उपनिदेशक बनकर जोधपुर चले गये जहां निदेशक मुनि जिनविजय के नेतृत्व में आपने 14वीं और 15वीं शताब्दी के अनेक ग्रंथों का सम्पादन किया। इनमें राज विनोद, कर्ण कुतूहल, श्रीकृष्णलीलामृतम तथा कर्नल जेम्स टॉड कृत अप्राप्य ग्रंथ ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इंडिया, का हिन्दी अनुवाद मुख्य है।

श्री बहुरा मुनि जिनविजय के अवकाश ग्रहण करने के बाद प्रतिष्ठान के निदेशक बनाये गये। आपने अपने कार्यकाल में लगभग 22 हजार प्राचीन ग्रंथों का सूचीकरण तथा अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुवाद और सम्पादन किया। सेवा निवृत्ति के पश्चात आप पोथीखाना के पुनः अधीक्षक बनाये गये जहां लगभग दस हजार ग्रंथों का आपने सूचीकरण किया। आपको मेवाड़ फाउण्डेशन उदयपुर द्वारा सम्मानित भी किया जा चुका है।

गोपालप्रसाद नाग- भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भ्रष्टाचार निरोधक विभाग में अधीक्षक श्री जी.पी. नाग का जन्म दो फरवरी, 1934 को जयपुर में हुआ।1955 में आप राजस्थान पुलिस सेवा में चुने गये तथा 1981 में आपकी भारतीय पुलिस सेवा में पदोन्नति हुई। आप जैसलमेर में जिला पुलिस अधीक्षक तथा गुप्तचर विभाग की अपराध शाखा में अधीक्षक रह चुके हैं।

गोपाललाल गुप्ता- राजस्थान उच्च न्यायिक सेवा के अधिकारी तथा वर्तमान में बीकानेर के जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री गुप्ता का जन्म 9 नवम्बर 1938 को सीकर जिले के दांतारामगढ़ ग्राम में एक सामान्य खंडेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से विधि स्नातक परीक्षा सर्वोच्च अंकों से उत्तीर्ण कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 23 सितम्बर, 1963 को आपने राजस्थान न्यायिक सेवा में प्रवेश किया। 1973 में आपको सिविल जज, 1976 में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा 1983 में जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में पदोन्नति मिली। वर्तमान पदस्थापन से पूर्व आप राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में निदेशक (विधि), धौलपुर में डकैती उन्मूलन न्यायालय के न्यायाधीश तथा भरतपुर में जिला एवं सत्र न्यायाधीश रह चुके हैं।

गोपाललाल नाग— सार्वजनिक निर्माण विभाग के अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता तथा वर्तमान में जयपुर-विकास विकास प्राधिकरण में निदेशक अभियांत्रिकी श्री जी. एल. नाग का जन्म 15 नवम्बर, 1932 को टोंक जिले के निवाई कस्बे में हुआ। आपने बी. ई. सिविल की उपाधि प्राप्त करने के बाद 22 नवम्बर 1955 को सहायक अभियन्ता के पद पर विभाग की सेवा में प्रवेश किया। सितम्बर 1962 में आपको अधिशाषी अभियन्ता 1978 में अधीक्षण अभियन्ता तथा फरवरी 1989 में अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता के रूप में पदोन्नति हुई। आपने भवनों के मूल्यांकन और नगरीय विकास कार्यों में विशेषज्ञता प्राप्त की तथा सार्वजनिक निर्माण और भूमि-भवन कर आदि विभागों में भवनों के मूल्यांकन और स्थानीय स्वशासन विभाग में नगरीय-विकास कार्यों की योजना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गोपाललाल शर्मा- राजस्थान लेखा सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में स्थानीय लेखा परीक्षण विभाग के निदेशक श्री शर्मा का जन्म 18 सितम्बर, 1931 को जयपुर में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से बी.काम. और विधि परीक्षायें प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। 1958 में सेवा में प्रवेश के बाद विभिन्न पदों पर कार्य किया। वर्तमान पद-स्थापन से पूर्व भी आप इस पद पर लगभग आठ वर्षों तक कार्य कर चुके हैं।इससे पूर्व आप इंदिरा गांधी नहर मंडल में वित्तीय परामर्शदाता पद पर कार्यरत थे।

गोपालसिंह (आहोर)- राजस्थान विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री गोपालसिंह आहोर का जन्म सन् 1927 में जोधपुर में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा मेयो कालेज अजमेर और सरदार हाई स्कूल जोधपुर में हुई तथा कृषि विषय में एम एससी आपने आगरा कालेज आगरा से की। प्रारंभ में आप अपने गांव जालौर जिले की भाद्राजून ग्राम पंचायत के दायी वर्ष तक सरपंच और फिर तेरह वर्षों तक आहोर पंचायत समिति के प्रधान रहे। 1977 में प्रथम बार जनता पार्टी के टिकिट पर आहोर क्षेत्र से विधायक चुने गये।

श्री सिंह ने परम्परागत कृषि व्यवसाय को अपनाया और राजनीति को सदैव तटस्थ भाव से देखा। सामाजिक रूढियों के आप प्रबल विरोधी हैं। अपने पिता के स्वर्गवास पर आपने समाज की मान्यताओं के विरुद्ध मृत्युभोज करना स्वीकार नहीं किया और उस राशि से अपने गांव में अस्पताल भवन का निर्माण कराया। आप 25 सितम्बर, 1979 को राजस्थान विधान सभा के सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये। 1980 और 1985 के विधान सभा चुनावों में आपने भाग नहीं लिया।

गोपीनाथ गुप्ता- राजस्थान के प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्त्ता और वरिष्ठ पत्रकार श्री गोपीनाथ गुप्ता का जन्म 17दिसम्बर, 1924 को जयपुर जिले के महारकलां ग्राम में एक सामान्य खंडेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। आपने अर्थशास्त्र में एम ए और एलएल बी की उपाधि प्राप्त की। प्रारंभ में आप साम्भोद मिडिल स्कूल और जयपुर के खंडेलवाल विद्यालय में कुछ अर्से तक अध्यापक रहे। 1946 में साप्ताहिक "लोकवाणी" के सहायक सम्पादक 1947 में "विश्वमित्र" दैनिक के बम्बई में वाणिज्य सम्पादक 1948–49 में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री हीरालाल शास्त्री के निजी सचिव तथा 1950 में राजस्थान किसान मंडल के मन्त्री रहे। 1952 में आपने वकालत शुरू की लेकिन प्रकृति से मेल नहीं खाने के कारण दो वर्ष बाद छोड दी। 1953 में हरिजन सेवक संघ के संयुक्त मन्त्री चुने गये तथा उसके मुख पत्र "हरिजन वार्त्ता" का सम्पादन किया। इसी के साथ श्री हीरालाल शास्त्री और श्री प्रेमनारायण माथुर के साथ "जीवन सन्देश" और "नव जीवन सन्देश" का सम्पादन किया।1954–55 में दैनिक "लोकवाणी" के सम्पादक नियुक्त हुये। 1955 में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यालय सचिव बनाये गये तथा 1956 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के उत्तर प्रदेश (मुख्यालय लखनऊ) के और 1957 से59 तक तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती इंदिरा गांधी के क्षेत्रीय प्रतिनिधि रहे जिसमें उ प्र और दिल्ली राज्य शामिल थे। 1964–65 में आप नवजागरण सोसायटी के मन्त्री चुने गये और उसके मुख पत्र "जागरण पथ" का सम्पादन किया। 1977–79 में राजस्थान किसान यूनियन के मंत्री बने और उसके मुख पत्र "जागृत किसान" का सम्पादन किया। राजस्थान पंचायतराज परिषद् के मुख पत्र साप्ताहिक "पंच" का भी आपने वर्षों तक सम्पादन किया।

गोपीनाथ शर्मा (डा)- प्रख्यात इतिहासविद 90 वर्षीय, डा गोपीनाथ शर्मा का जन्म उदयपुर में हुआ। शिक्षा समाप्ति के बाद आप प्रारंभ में सरकारी विद्यालय में अध्यापक और बाद में मेवाड राज्य में विद्यालयों के निरीक्षक बन गये। इतिहास के प्रति आपका रुझान प्रारंभ से ही था, इसलिये आपने इसका गहन अध्ययन जारी रखा और 1937 में उदयपुर के राजकीय महाविद्यालय में इतिहास के प्राध्यापक बन

गये। इस पद पर कार्य करते हुये आपने राजस्थान और विशेषकर मेवाड़ के इतिहास को अपने शोध और अनुसंधान का केन्द्र बना लिया। आपने पहले मेवाड़ और मुगल शासकों के सम्बन्धों पर गवेषणात्मक शोध लिखा और बाद में मध्यकालीन राजस्थान की सामाजिक परम्पराओं पर शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया। दोनों ही प्रबन्ध पीएच.डी. और डी.लिट. के लिये स्वीकृत कर लिये गये। आपकी दृष्टि पैनी और व्यापक तथा अध्ययन काफी विस्तृत है। प्राचीन शिलालेखों एवं पुरालेखों पर हस्तलिखित पाण्डुलिपियों पर आपका अध्ययन जितना प्रामाणिक है, उससे कहीं अधिक वैज्ञानिक है। आपने राजस्थान और मेवाड़ के इतिहास के मूल स्रोतों के अतिरिक्त एक सौ से अधिक गवेषणात्मक लेख प्रकाशित किये हैं जिन्हें देश की प्रामाणिक पत्रिकाओं ने छापे हैं। वैसे आपके प्रकाशनों की सूची बहुत लम्बी है।

उदयपुर और जोधपुर विश्वविद्यालयों में इतिहास विभाग के आचार्य के रूप में कार्य करने के बाद 1963 में आप राजस्थान विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष बनकर जयपुर आ गये, जहां से 1974 में सेवानिवृत्त हुए। बाद में आप विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मानद प्रोफेसर तथा राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा संचालित जैन सांस्कृतिक उच्चाध्ययन केन्द्र के निदेशक रहे। आपके शिष्यों की सूची लम्बी है जिसमें आज के शासक, प्रशासक और प्राध्यापक भी शामिल हैं। वर्तमान में आप उदयपुर में अवकाश प्राप्त जीवन बिता रहे हैं।

गोपेश्वर भट्ट- भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री गोपेश्वर भट्ट का जन्म 4 जुलाई, 1930 को उदयपुर में हुआ। आपने महाराणा भूपाल कालेज से प्रथम श्रेणी में एम.ए. करने के बाद कुछ असें तक व्याख्याता के रूप में कार्य किया और 1955 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुन लिए गए। 1976 में आपकी भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति हुई और आप चित्तौड़गढ़ तथा जोधपुर के जिलाधीश, आबकारी विभाग के आयुक्त, सामान्य प्रशासन तथा वित्त (राजस्व) विभागों के विशिष्ट शासन सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं। आपने हिन्दी में कवितायें भी लिखी हैं।

गोवर्धनकुमार असरानी- फिल्म-जगत की जानी-मानी हस्ती असरानी का पूरा नाम गोवर्धन कुमार असरानी है और वे जयपुर की सिंधी कालोनी के मूल निवासी हैं।1943 की पहली जनवरी को जन्मे श्री असरानी पहले सिन्धी पंचायत स्कूल में और फिर सैंट जेवियर स्कूल में पढ़े। उनके जीवन में अभिनय की शुरुआत इन्हीं दिनों स्कूलों की बैंचों पर हुई। स्नातकीय पाठ्यक्रम उनका राजस्थान कालेज में हुआ। प्रारंभ में उन्हें मिर्जा इस्माइल रोड़ स्थित एक जनरल स्टोर पर सेल्समैन का काम भी करना पड़ा।

श्री असरानी 1963 में जयपुर से पूना गये और फिल्म इंस्टीट्यूट के प्रथम बैच में प्रथम पदक प्राप्त करने में सफलता अर्जित की। इसी के साथ आपको इंस्टीट्यूट में जहां व्याख्याता के रूप में नियुक्ति पत्र मिला वहां अपनी ही सहपाठी मंजू बंसल जीवन साथी के रूप में मिल गई। कहने के लिये तो आप इंस्टीट्यूट में व्याख्याता के रूप में छात्रों को विद्या सिखाते रहे लेकिन यथार्थ में आपका मन बम्बई में पर्दे पर आने के लिए लालायित बना रहा। मौका मिलते ही आप बम्बई के चक्कर लगाते रहे। अनायास एक दिन आपकी भेंट किशोर साहू से हो गयी जिन्होंने अपनी फिल्म "हरे कांच की चूड़ियां" में आपको सर्वप्रथम एक छोटा सा रोल दिया। यहीं से आपकी जो शुरुआत हुई उससे आप सफलता की एक-के-बाद एक सीढ़ियां चढ़ते चले गये। जानी वाकर, महमूद और राजिन्दरनाथ की एकरस कामेडी से ऊबे हुए दर्शकों को असरानी से एक नई ताजगी मिली है।

गोवर्धनदास भुखमारिया- प्रमुख समाजसेवी तथा अखिल भारतवर्षीय खण्डेलवाल वैश्य महासभा के पूर्व अध्यक्ष श्री मुखमारिया जयपुर के मूल-निवासी हैं। आपकी औपचारिक रूप में यद्यपि कोई शिक्षा नहीं हुई और बाल्यकाल अत्यन्त निर्धनता में बीता, तथापि लोक-जीवन में गहरी पैठ, अथक परिश्रम, उत्कट लगन और दृढ़ संकल्प के कारण अपने राजधानी के नागरिक जीवन में अपना महत्त्वपूर्ण

स्थान बनाया। आप वर्षों तक भारतीय जनसंघ की नगर शाखा के अध्यक्ष तथा अन्य सामाजिक और व्यावसायिक संगठनों के पदाधिकारी रहे। जयपुर के जवाहरात व्यवसाय में वर्षों तक आपकी धाक रही और आपने न केवल अपने कारोबार को बम्बई, मद्रास और अलप्पी आदि दूरस्थ स्थानों तक फैलाया, अपितु जयपुर में सैकड़ों नये युवकों को इस व्यवसाय में प्रवेश दिलाया। आप श्री खण्डेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा के भी अध्यक्ष रहे जो जयपुर में अनेक शिक्षण संस्थाओं का संचालन करती है। आपने अ.भा. खंडेलवाल महासभा के 1966 में आयोजित उज्जैन अधिवेशन की अध्यक्षता की।

गोवर्धन मेहता (डा)- विश्वस्तरीय वैज्ञानिक प्रतिभा डा गोवर्धन मेहता राजस्थान के ही सपूत हैं, जिनका जन्म जून 1943 में जोधपुर में राज्य के पूर्व कृषि निदेशक श्री किशनमल मेहता के यहां हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा विद्या भवन उदयपुर में हुई। रसायन शास्त्र में एम.एससी आपने पिलानी से तथा पीएच डी नेशनल केमिकल लेबोरेट्री आफ आर्गनिक केमिस्ट्री पूना से प्राप्त की। 1967 में डाक्टरेट लेकर आप अमेरिका चले गये जहां मिशिगन और ओहायो विश्वविद्यालयों में शोधकार्य किया।1976 में वहां से लौटकर इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ टेकनोलोजी कानपुर में प्राध्यापक बन गये। 1976 से आप हैदराबाद विश्वविद्यालय के रसायन विभाग में अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

कार्बनिक रसायन शास्त्र में अपने नवीन प्रयोगों के लिये 1978 में डा मेहता को बीस हजार रुपये का शांतिस्वरूप भटनागर पुरस्कार मिल चुका है। वैसे यह पुरस्कार यद्यपि 1959 में प्रारंभ हुआ है लेकिन यह हर वर्ष नहीं दिया जाकर तभी दिया जाता है जब कोई उपयुक्त वैज्ञानिक प्रतिभा इसके लिये मिले। डा मेहता प्रथम राजस्थानी हैं जिन्हें यह सम्मान प्राप्त हुआ है। इससे पूर्व भी आपको इण्डियन एकेडमी आफ साइन्स ने अपना फैलो मनोनीत कर सम्मानित किया था। आपने नवीन आणविक संरचना से विज्ञान-जगत को अवगत कराया है। अपने विशिष्ट शोध कार्य से आपको सोवियत रूस, अमेरिका,कनाडा और इंगलैण्ड में आयोजित विश्वस्तरीय वैज्ञानिक सेमीनारों में आमन्त्रित किया गया है। अब तक सैकड़ों की संख्या में आपके शोध पत्र रसायन विज्ञान की पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। 1983 में आपको "एक्सीलेंस इन फिजीकल साइन्स" का फिक्की पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। आप देश-विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों के विजिटिंग प्रोफेसर भी हैं।

गोविन्द आमलिया- राजस्थान के पूर्व उपमन्त्री श्री गोविन्द आमलिया का जन्म 20 जनवरी, 1940 को डूंगरपुर में हुआ। बी.ए और एलएल बी करने के बाद आपने राजकीय सेवा में वाणिज्यिक कर अधिकारी के रूप में कार्य शुरू किया लेकिन कुछ अर्से बाद त्यागपत्र देकर आप सार्वजनिक जीवन में आ गये और आदिवासी विकास परिषद् के अध्यक्ष तथा आदिवासी सहकारी निगम के सदस्य बनाये गये। व्यवसाय से वकील श्री आमलिया 1980 के आम चुनाव में डूंगरपुर जिले के चौरासी विधान सभा क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये और 19 जुलाई,1981 को श्री शिवचरण माथुर की सरकार में उपमंत्री बनाये गये। 1985 का चुनाव आपने नहीं लड़ा। वर्तमान में आप डूंगरपुर जिला सहकारी भूमि विकास बैंक और राजस्थान ग्रामोदय संस्थान जयपुर के अध्यक्ष हैं।

गोविन्दकृष्ण पुरोहित—स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर के महाप्रबन्धक (परिचालन) श्री जी के. पुरोहित का जन्म 11 दिसम्बर, 1939 को जोधपुर में हुआ। एम काम की उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने 12 जून, 1962 को इसी बैंक में परिवीक्षा अधिकारी के रूप में सेवा में प्रवेश किया और क्रमश. शाखा प्रबन्धक, मुख्य प्रबन्धक (अन्तर्राष्ट्रीय बैंकिंग प्रभाग कलकत्ता), क्षेत्रीय प्रबन्धक तथा मुख्य प्रबन्धक (वित्तीय एवं लेखा) आदि पदों पर पदोन्नत हुए। महाप्रबन्धक (निरीक्षण एवं वित्तीय) के रूप में आप को 12 जून, 1986 को पदोन्नति मिली और वर्तमान पद पर आप जुलाई, 1987 से कार्यरत है।

गोविन्द जे. मिश्रा- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में आयुक्त एवं शासन सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, तकनीकी शिक्षा, श्रम एवं नियोजन तथा

राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री जी.जे. मिश्रा का जन्म एक सितम्बर, 1935 को उ.प्र. के उन्नाव जिले में हुआ। आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन से "विशारद" की उपाधि प्राप्त की। 1958 में सेवा में प्रवेश के बाद आप बूंदी, कोटा, अलवर और उदयपुर के जिलाधीश, राजस्थान राज्य पथ-परिवहन निगम के महाप्रबन्धक, सचिव एवं महाप्रबन्धक हिन्दुस्तान मशीन टूल कार्पोरेशन अजमेर, राजस्थान भूमि विकास निगम के प्रबन्ध निदेशक, स्वायत्त शासन, नगरीय विकास, आवासन, निर्वाचन, श्रम-नियोजन, जनजाति क्षेत्र-विकास, खाद्य एवं रसद, परिवहन तथा पर्यटन आदि विभागों के शासन सचिव, दिल्ली में राज्य सरकार के आवासीय आयुक्त, केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति पर पुनर्वास मंत्रालय में संयुक्त सचिव एवं मुख्य पुनर्वास आयुक्त तथा परिवहन एवं जहाजरानी मंत्रालय मे संयुक्त सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

गोविन्दलाल माथुर -राजस्थान राज्य जल-प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण मंडल के पूर्व अध्यक्ष श्री जी.एल. माथुर का जन्म एक जुलाई, 1931 को जोधपुर में हुआ। आपने 1954 में मगनीराम बांगड़ इंजीनियरिंग कालेज जोधपुर से बी.ई. (सिविल) करने के बाद 1955 में सहायक अभियन्ता के रूप में राज्य के सार्वजनिक निर्माण विभाग में कार्यारंभ किया। बाद में जनस्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग की पृथक रूप से स्थापना होने पर अधिशासी अभियन्ता, अधीक्षण अभियन्ता और अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता के पदों पर रहने के बाद आपकी मुख्य अभियन्ता के रूप में पदोन्नति हुई। आप अन्तिम पद स्थापना से पूर्व भी प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण मंडल के अध्यक्ष, वाटर रिसोर्सेज एवं सीवरेज बोर्ड के तकनीकी सदस्य तथा विभाग के जोधपुर क्षेत्र के मुख्य अभियन्ता पद पर कार्य कर चुके हैं।

गोविन्दसिंह गुर्जर- राजस्थान के वन, पर्यावरण, भ्रष्टाचार निरोधक गृह रक्षादल एवं नागरिक सुरक्षा आदि विभागों के मंत्री श्री गुर्जर का जन्म 9 मार्च, 1932 को कोटा में हुआ। विधि-स्नातक श्री गुर्जर व्यवसाय से वकील है और 1970 से 77 तक नसीराबाद छावनी मंडल के अध्यक्ष रह चुके हैं। 1980 और 1985 के चुनावों में आप कांग्रेस (इ) टिकिट पर नसीराबाद क्षेत्र से विधायक चुने गये हैं।

श्री गुर्जर प्रथम बार 19 जुलाई, 1981 को श्री माथुर की पिछली सरकार में राज्य मंत्री नियुक्त किये गये तथा वन एवं पर्यावरण आदि विभागों के स्वतंत्र प्रभार सहित गृह एवं भ्रष्टाचार निरोधक विभाग के मंत्री रहे। वर्तमान सरकार में आप 26 जनवरी, 1988 को कैबिनेट मंत्री के रूप में शामिल किये गये तथा कृषि, खाद्य एवं आपूर्ति आदि विभागों का दायित्व संभाला। वर्तमान विभाग आपको 12 जून, 1989 को सौंपे गये हैं।

गौरहरि सिंहानिया (डा.)- प्रसिद्ध उद्योगपति पदमपत सिंहानिया के पुत्र डा. गौरहरि सिंहानिया का जन्म 12 जून, 1935 को हुआ। आपने कानपुर विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। आप प्रसिद्ध जे.के. उद्योग समूह की अनेक कम्पनियों के निदेशक मण्डलों के सदस्य तथा अध्यक्ष हैं। इसके अतिरिक्त आप अनेक सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

गौरीशंकर सर्राफ- राजस्थान उच्च न्यायिक सेवा के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में निदेशक (विधि) श्री जी.एस.सर्राफ का जन्म एक जुलाई 1948 को जयपुर जिले के बस्सी कस्बे में एक सामान्य खंडेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। आपने बी.ए. (आनर्स) तथा एलएल.एम.की उपाधियां प्राप्त करने के बाद 1971 में राजस्थान न्यायिक सेवा में प्रवेश किया। विभिन्न स्थानों पर मुंसिफ एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट रहने के बाद [illegible] उदयपुर में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, भरतपुर में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश [illegible] (विधि) विधि एवं न्याय विभाग में [illegible] उपसचिव [illegible] जयपुर बैंच में अतिरिक्त रजिस्ट्रार तथा [illegible] न्यायाधीश आदि पद पर रह चुके हैं।

गंगाराम चौधरी- राजस्थान के पूर्व राजस्व उपमंत्री तथा वर्तमान में बाड़मेर क्षेत्र के जनता दल विधायक श्री गंगाराम चौधरी का जन्म एक मार्च, 1922 को बाड़मेर जिले के खादिन ग्राम में एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ। आप विधि स्नातक है तथा व्यवसाय से वकील है। आप 1955 से65 तक धोरीमन्ना पंचायत समिति के प्रधान तथा 1965 से 78 तक बाड़मेर के जिला प्रमुख रहे। इसी दौरान 1962, 1967, 1972 और 1977 के आम चुनावों में आप कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में विधायक चुने गये। 1967 से 1971 तक आप सुखाडिया मंत्रिमंडल में राजस्व एवं अकाल-राहत विभाग के उप मंत्री रहे। 1980 में आप गुढ़मलानी क्षेत्र से कांग्रेस (अर्स) के टिकिट पर विधान सभा का चुनाव हार गये लेकिन 1985 में बाड़मेर क्षेत्र से लोकदल टिकिट पर पुन: चुन लिये गये।

जी. एस. संधू— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सवाई माधोपुर के जिला कलक्टर श्री जी. एस. संधू का जन्म 12 जनवरी 1951 को पंजाब में हुआ। 1979 में आपका सेवा में चयन हुआ तथा आप अब तक अतिरिक्त आयुक्त जनजाति क्षेत्र-विकास उदयपुर, शासन उप सचिव चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, जिला कलक्टर चूरू तथा अतिरिक्त रजिस्ट्रार सहकारी विभाग आदि पदों पर कार्य कर चुके है। आप राजस्थान राज्य सहकारी भूमि-विकास बैंक के प्रशासक भी रहे है।

घनश्याम तिवाडी- सीकर क्षेत्र से 1980 और 1985 के चुनावों में निर्वाचित भाजपा विधायक श्री घनश्याम तिवाडी का जन्म 13 मार्च,1948 को सीकर में हुआ। आप एम.ए. तक शिक्षित हैं। विधान सभा में अपनी अध्ययन शीलता, लगन और परिश्रम से जिन युवा विधायकों ने अपना स्थान बनाया है उनमें श्री तिवाडी का नाम अग्रणी है। आपने दिसम्बर 1984 के लोकसभा चुनाव में भी सीकर क्षेत्र से भाग्य आजमाया लेकिन सफल नहीं हो सके। वर्तमान में आप प्रदेश भाजपा के महामंत्री हैं।

घासीराम यादव- राजस्थान के पूर्व खाद्य राज्य मंत्री (प्रभारी) श्री घासीराम यादव को कुल आठ में से पांच विधान सभाओं का सदस्य रहने का गौरव प्राप्त है। अलवर जिले के भूगडा अहीर ग्राम में एक सामान्य कृषक परिवार में 15नवम्बर,1924 को जन्मे और एम.ए. तथा एलएल.बी. तक शिक्षित श्री यादव 1952 के प्रथम आम चुनाव में कांग्रेस टिकिट पर मुंडावर क्षेत्र से निर्विरोध निर्वाचित हुए। तत्पश्चात 1957 में तिजारा-मुंडावर 1962 में बहरोड, 1972 और 1980 में पुन. मुंडावर क्षेत्र से विधायक चुने गये। 1967 में आप पराजित हुए तथा 1985 के चुनाव में टिकिट से वंचित रहने के कारण भाग नहीं लिया। आप सर्वप्रथम 30 अप्रेल, 1966 को सुखाडिया मंत्रिमंडल में उपमंत्री नियुक्त हुए। बाद में 19 जुलाई 1981 को श्री शिवचरण माथुर की सरकार में राज्य मंत्री बने।

घेवरचंद कानूगो- प्रमुख उद्योगपति तथा जोधपुर स्थित एल्काबक्स मेटल्स प्रा. लि. के संचालक श्री घेवरचन्द कानूगो का जन्म 22 फरवरी, 1936 को बाड़मेर जिले के सिवाना ग्राम में हुआ। प्रारंभ में आपने कलकत्ता में उद्योग स्थापित किया, लेकिन कालान्तर में आप अपने गृह प्रदेश लौट आए और यहाँ पर अपने उद्योग की स्थापना की जिसमें वर्तमान में लगभग पांच सौ कर्मचारी नियोजित है। आप जोधपुर उद्योग संघ के अध्यक्ष, मारवाड़ चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्रीज के उपाध्यक्ष तथा अन्य सामाजिक एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के पदाधिकारी रहे है।

चंचलराज मेहता- भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर वस्त्र मंत्रालय में वस्त्र-उद्योग समिति के सचिव (मुख्यालय बम्बई) श्री सी.आर. मेहता का जन्म 7 जून, 1933 को पाली जिले में हुआ। पूर्व में आप राजस्थान लेखा सेवा के अधिकारी थे। 1978 में आपका भा.प्र. सेवा में विशेष चयन हुआ। आप योजना विभाग में शासन

उपसचिव झालावाड़ तथा नागौर के जिलाधीश, राजस्थान विद्युत मंडल में सचिव, वित्त विभाग में वित्त आयोग सम्बन्धी मामलों के शासन विशिष्ट सचिव तथा जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में शासन विशिष्ट सचिव एवं पदेन सचिव वाटर सप्लाई एण्ड सीवरेज मैनेजमेन्ट बोर्ड आदि पदों पर कार्य कर चुके है।

चतराराम जाट- राजस्थान उच्च न्यायिक सेवा के अधिकारी तथा वर्तमान में सीकर के जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री चतराराम जाट का जन्म एक सितम्बर, 1946 को नागौर में हुआ। राजस्थान विश्वविद्यालय से बी.काम. और एलएल.बी. की उपाधियां प्राप्त करने के बाद जून 1971 में आपका राजस्थान न्यायिक सेवा में चयन हुआ। वर्तमान पद स्थापना से पूर्व आप बूंदी में इसी पद पर कार्यरत थे।

चंद्रकान्ता डंडिया (श्रीमती)- प्रमुख शिक्षाशास्त्री और समाजसेवी श्रीमती चन्द्रकान्ता डंडिया का जन्म जयपुर के एक प्रतिष्ठित दिगम्बर जैन परिवार में हुआ। आप वर्षों तक कमला नेहरु राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की प्रधानाध्यापिका रहीं। बाद मे प्रौढ शिक्षा के उच्च प्रशिक्षण के सिलसिले मे कनाडा, अमरीका और इंगलैंड गई तथा राजस्थान विश्वविद्यालयके प्रौढ शिक्षा विभाग के निदेशक का दायित्व सभाला। महिला विकास सम्बंधी विभिन्न गतिविधियों से आप सक्रिय रूप से जुडी हुई हैं तथा नारी-चेतना संगठन जयपुर की आप अध्यक्षा हैं।

चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय- राजस्थान के मूर्धन्य पत्रकार और स्वतन्त्रता सेनानी श्री वार्ष्णेय का जन्म 21 जुलाई, 1904 को अजमेर मे हुआ। विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद कुछ अर्से तक आप वहाँ के दयानन्द हाईस्कूल में शिक्षक रहे लेकिन स्वतंत्रता सघर्ष में सक्रिय रहने के कारण सेवामुक्त कर दिये गये। इस घटना को स्वयं महात्मा गाधी ने गाधी-इर्विन समझौते के भंग होने के कारणों में उदरण के रूप मे प्रस्तुत किया था। 1939-40 में आपने गाधी जी के सेवाग्राम आश्रम में हिन्दुस्तानी तालीमी संघ में कार्य किया जिसकी सराहना स्वय गाधी जी ने आपको एक हस्तलिखित पत्र में की थी। 1942 के भारत छोडो आंदोलन के दौरान दो वर्ष से अधिक समय तक आप नजरबंद रहे। आप तत्कालीन राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मंत्री तथा अजमेर जिला कांग्रेस और नगर परिषद के सदस्य रहे। 1944 से 50 तक आप "हिन्दुस्तान टाइम्स" तथा सबद्ध पांच पत्रों के राजस्थान में कार्यालय संवाददाता रहे। अगस्त 1951 में "राष्ट्रदूत" का प्रकाशन प्रारंभ होने पर आप सम्पादक बनकर जयपुर आ गये लेकिन 1952 में अजमेर राज्य मे प्रथम निर्वाचित सरकार का गठन होने पर लोक-सम्पर्क विभाग के निदेशक बनकर वापस अजमेर चले गये।

नवम्बर 1956 में राजस्थान में अजमेर राज्य का विलय होने पर आप एकीकृत जनसम्पर्क निदेशालय में उपनिदेशक बनाये गये। 1959 में सेवा-निवृत्ति के बाद कुछ अर्से तक सामुदायिक विकास एवं पचायत विभाग के "राजस्थान-विकास" मासिक का सम्पादन किया तथा कुछ अर्से तक तत्कालीन वित्त मंत्री श्री बालकृष्ण कौल के निजी सचिव रहे। बाद में आप "राजस्थान पत्रिका" से जुड़ गये और वर्तमान में इसके स्तम्भ-लेखक हैं। वार्ष्णेय जी को पत्रकारिता सम्बन्धी दीर्घकालीन और विशिष्ट सेवाओं के लिए राजस्थान साहित्य अकादमी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। आपने दर्जनों की सख्या में विख्यात ग्रंथों का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद और मौलिक सृजन किया है। आपकी "चाणक्य सूत्र प्रदीप" पुस्तक पर बिहार सरकार ने पुरस्कार प्रदान किया है।

चन्द्रधर शर्मा (डा.)- दर्शन शास्त्र के भारत विख्यात प्रकाण्ड विद्वान डा. चन्द्रधर शर्मा का जन्म सन् 1920 में खेड़ा के राजगुरु परिवार में हुआ। आपने 1938 से 42 के दौरान इलाहाबाद

विश्वविद्यालय से बी.ए., एम.ए.,एलएल बी., संस्कृत में शास्त्री, हिन्दी में साहित्यरत्न तथा साहित्याचार्य आदि सभी परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। 1945 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ही "बौद्ध दर्शन एवं वेदान्त" में पीएच.डी. तथा कुछ अर्से बाद "डाक्टर आफ लिट्रेचर" की उपाधि प्राप्त की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से यह उपाधि सर्वप्रथम प्राप्त करने का गौरव आपको ही प्राप्त है। 1946 में आप काशी विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक नियुक्त हुए। यहां आपका डा. राधा कृष्णन और डा. अमरनाथ झा जैसे उदभट विद्वानों से जहां निकट सम्पर्क रहा वहां विश्वविद्यालय के उपकुलपति आचार्य नरेन्द्र देव ने आपकी योग्यता और विद्वता से प्रभावित होकर आपको रीडर पद पर पदोन्नति प्रदान की। लगभग 14 वर्षों तक बनारस में रहने के बाद 1960 में आप जबलपुर विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के विभागाध्यक्ष तथा कला संकाय के अधिष्ठाता बनकर चले गए। आपके ही परिश्रम से "सुर्जन चरितम" जैसा दुर्लभ संस्कृत ग्रंथ प्रकाश में आया जिसकी आपने हिन्दी में टीका भी प्रस्तुत की। आप एक सौ से अधिक छात्रों को पीएच.डी. के लिए गाइड कर चुके हैं। एक वर्ष तक आप अमेरिका में विजिटिंग प्रोफेसर रहे। इन दिनों आप कोटा में अवकाश प्राप्त जीवन बिता रहे हैं।

चन्द्रप्रकाश- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राज्यपाल के सचिव श्री चन्द्रप्रकाश का जन्म 16 अगस्त 1937 को झालावाड जिले के चन्दबेला ग्राम में एक सामान्य मीणा परिवार में हुआ। आपने अर्थशास्त्र में एम.ए. करने के बाद कुछ अर्से तक अध्यापन किया। 1964 में भा.प्र. सेवा में प्रवेश के बाद आप बाडमेर, सवाईमाधोपुर और अलवर के जिलाधीश, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर कृषि मंत्रालय में उपसचिव, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में महाप्रबन्धक, राजस्थान राज्य कृषि-उद्योग निगम तथा राजस्थान भूमि-विकास निगम में प्रबंध निदेशक, सदस्य राजस्व मंडल, खाद्य एवं रसद, खनिज, स्वायत्तशासन, नगरीय-विकास, नगरीय-आयोजना एवं आवासन आदि विभागों के शासन सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

चन्द्रप्रकाश जोशी- उदयपुर जिले के नाथद्वारा निर्वाचन क्षेत्र से 1980 और 1985 के आम चुनावों में चुने गए कांग्रेसी विधायक श्री सी.पी. जोशी का जन्म नाथद्वारा में हुआ। भौतिक विज्ञान तथा मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर श्री जोशी उदयपुर विश्वविद्यालय में व्याख्याता हैं। वर्तमान में आप उदयपुर विश्वविद्यालय प्रबन्ध मण्डल के सदस्य तथा राजस्थान प्रदेश कांग्रेस (इ) के महामंत्री है।

चन्द्रप्रकाश मोदानी— फर्टिलाइजर कार्पोरेशन के लखनऊ (उ.प्र.) स्थित क्षेत्रीय प्रबंधक (विपणन विभाग) श्री सी. पी. मोदानी का जन्म 12 जनवरी 1946 को जयपुर जिले के बगरू कस्बे में हुआ। आपने बी. ई. (खान) परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और मई 1969 में धनबाद (बिहार) स्थित निजी क्षेत्र के दो कोयला प्रतिष्ठानों में सहायक प्रबंधक के रूप में कार्य प्रारंभ किया। 1972 से 74 तक आपने जयपुर उद्योग लि. सवाईमाधोपुर में और बाद में पुन. निजी क्षेत्र में कार्य किया। एफ. सी. आई. में गत दिसम्बर 1975 में खान-अभियन्ता के पद पर नियुक्त हुए और बाद में वरिष्ठ खनि-अभियन्ता तथा 1986 में क्षेत्रीय प्रबंधक के रूप में पदोन्नत हुए।

चन्द्रभान (डा.)- जनता दल के राष्ट्रीय सचिव तथा लोकदल (अ) के पूर्व राष्ट्रीय महासचिव डा. चन्द्रभान का जन्म झुन्झुनूं जिले के मंडावा कस्बे में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा मंडावा में हुई और जयपुर के सवाईमानसिंह मेडीकल कालेज से आपने एम.बी.बी.एस. किया। आपकी छात्र जीवन से ही राजनीति में सक्रिय रुचि रही है। प्रारंभ में आप जनता पार्टी और बाद में लोकदल से जुड़ गये।

1980 के विधानसभा चुनाव में आपने टोंक जिले के मालपुरा विधानसभा क्षेत्र से जनता (एस) के टिकिट पर भाग्य आजमाया लेकिन उसमें सफलता नहीं मिली। बाद में आप युवा जनता के प्रदेशाध्यक्ष तथा लोकदल में शामिल होने पर युवा लोकदल के प्रदेशाध्यक्ष और 1986 में युवा लोकदल के राष्ट्रीय

कार्यवाहक अध्यक्ष बने। 1987 मे लोकदल का विभाजन होने पर आप अजीतसिंह के नेतृत्व वाले गुट से जुडे और राष्ट्रीय महासचिव मनोनीत किये गये।

चन्द्रभान शर्मा- जयपुर जिले के पुराने और वरिष्ठ सार्वजनिक कार्यकर्ता श्री चन्द्रभान शर्मा का जन्म सन् 1903 में जिले के सामोद ग्राम में हुआ। 1922 में आप बम्बई चले गये जहां आपने खादी का व्यवसाय प्रारम्भ किया। 1925 में आपने जयपुर में खादी कार्य प्रारम्भ किया। 1926 में आप अखिल भारतीय चर्खा सघ के सदस्य बने। 1927–28 में रीगस में खादी आश्रम के व्यवस्थापक नियुक्त हुए। 1929 में सर्व हितकारिणी सभा जयपुर के सदस्य और 1933 में राजपूताना हरिजन सेवक संघ के संयुक्त मंत्री बने। भारत सेवक समाज के स्थापना काल से ही आप उससे जुड गये और वर्षों तक विभिन्न पदों पर कार्य किया।

चन्द्रशेखर शर्मा- राजस्थान के खेल-कूद एवं कारागृह विभाग के प्रभारी राज्यमंत्री श्री चन्द्रशेखर शर्मा का जन्म 9 सितम्बर, 1957 को दौसा (जयपुर) में हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर में हुई तथा स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के बाद आप कांग्रेस (इ) के माध्यम से राजनीति से सक्रिय रूप से जुड गए। आपने उत्तर प्रदेश में कांग्रेस (इ) के समन्वयक के रूप में कार्य किया। 1985 के विधान सभा चुनाव में बांदीकुई क्षेत्र से आप सदस्य चुने गये तथा 27 जून, 1985 को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी के संसदीय सचिव नियुक्त हुए। 6 फरवरी, 1988 को आप श्री शिवचरण माथुर की सरकार में राज्यमंत्री बनाए गये तथा देवस्थान वक्फ, मुद्रण एवं लेखन सामग्री विभाग का स्वतंत्र प्रभार सौंपा गया।

चन्द्रेश व्यास- उदयपुर के प्रमुख पत्रकार और सार्वजनिक कार्यकर्ता श्री चन्द्रेश व्यास का जन्म 1920 में हुआ। आप प्रारंभ से ही राष्ट्रीय विचारधारा के हैं। सन् 1940 में आपने "लोकपथ" का प्रकाशन किया। 1952 के प्रथम आम चुनाव में आपने प्रदेश कांग्रेस कार्यालय के प्रचार-प्रकाशन विभाग का दायित्व संभाला और "कांग्रेस-सन्देश" साप्ताहिक का सम्पादन किया। बाद में आपने उदयपुर से साप्ताहिक "पन्द्रह अगस्त" का प्रकाशन शुरू किया। पिछले 17 वर्षों से आप "जय राजस्थान" नामक दैनिक पत्र का प्रकाशन कर रहे हैं जो उदयपुर के साथ पाली और बांसवाडा से भी छप रहा है।

चरणदयाल माथुर— राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल के सदस्य (उत्पादन) श्री सी. डी. माथुर का जन्म 25 दिसम्बर 1935 को जोधपुर में हुआ। आपने एम. बी. इंजीनियरिंग कॉलेज जोधपुर से विज्ञान तथा विद्युत अभियांत्रिकी में स्नातक उपाधि प्राप्त की तथा अगस्त 1956 में कनिष्ठ अभियन्ता के रूप में सेवा में प्रवेश किया। आपको मार्च 1957 में सहायक अभियंता जून 1964 में अधिशाषी अभियंता अक्टूबर 1975 में अधीक्षण अभियंता सितम्बर 1981 में उप मुख्य अभियंता तथा 7 जुलाई 1984 को मुख्य अभियंता के रूप में पदोन्नति दी गई। आपका अधिकांश कार्यकाल [illegible] विद्युत परियोजना के निर्माण एवं विकास में बीता है। 21 अक्टूबर 1987 से आप वर्तमान पद पर कार्यरत है।

चांदमल लोढ़ा- राजस्थान उच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त मुख्य-न्यायाधिपति श्री चांदमल लोढ़ा का जन्म 10 जुलाई, 1918 को जोधपुर में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एल.एल. बी. की परीक्षा प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की। 1940 में आपने जोधपुर में वकालत प्रारंभ की। 1957 में आप भारत सरकार के विधि-आयोग के सदस्य बने। 22, नवम्बर 1967 को आप राजस्थान उच्च-न्यायालय के न्यायाधिपति तथा 12 मार्च 1979 को मुख्य न्यायाधिपति बने। 9 जुलाई 1980 को आपने अवकाश ग्रहण किया। वर्तमान में आप सर्वोच्च न्यायालय में वकालत कर रहे हैं।

चन्दनमल बैद- राजस्थान कांग्रेस में श्री चन्दनमल बैद [illegible] [illegible] 1952 में [illegible] [illegible]

मुख्यमंत्रियों की सरकारों में मंत्री के रूप में कार्य करने का अवसर मिला है। आपका जन्म सन 1922 में सरदारशहर में हुआ और एम ए. तथा एलएल बी करने के बाद 1946 में कांग्रेस के माध्यम से आपने राजनीति में प्रवेश किया। 1952, 1957, 1962, 1972 में सरदारशहर क्षेत्र और 1980 में तारानगर क्षेत्र से आप विधायक चुने गये। 1967 और 1985 के चुनावों में सरदारशहर तथा 1977 में तारानगर क्षेत्र से आप पराजित हुए। 1980 के लोकसभा चुनाव में भी आपने चूरू क्षेत्र से भाग्य आजमाया लेकिन सफल नहीं हो सके।

श्री बैद सर्वप्रथम मई 1953 से नवम्बर 1954 तक श्री जयनारायण व्यास की सरकार में उपमंत्री रहे। बाद में 12 मार्च, 1962 को सुखाडिया मंत्रिमंडल में उपमंत्री तथा 30 अप्रैल 1966 को कैबिनेट मंत्री नियुक्त हुए। 1967 में आप राजस्थान राज्य कृषि-उद्योग निगम के अध्यक्ष मनोनीत किये गये। 1972 के चुनावोपरांत बनी श्री बरकतुल्ला खाँ की सरकार में आप 16 मार्च को पुन मंत्री बनाये गये। अक्टूबर 1973 में श्री खाँ के निधन के बाद बनी जोशी सरकार में 25 अक्टूबर को आप पुन मंत्री बनाये गये। इसके बाद 18 फरवरी 1981 को आप पहाडिया मंत्रिमंडल में तथा 19 जुलाई 1981 को श्री शिवचरण माथुर के पिछले मंत्रिमंडल में पुन शामिल किये गये। इस दीर्घ अवधि में आपने शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, वित्त योजना आबकारी जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी ऊर्जा इंदिरा गांधी नहर तथा सिंचित क्षेत्र-विकास आदि विभिन्न विभागों का दायित्व संभाला।

जनवरी 1978 में कांग्रेस का विभाजन होने पर प्रारंभ से ही आप इंदिरा कांग्रेस के साथ रहे तथा तब से अब तक प्रदेश कांग्रेस (इ) का कोषाध्यक्ष पद संभाल रखा है।

चम्पालाल रांका- श्री रांका राजस्थान के जाने-माने प्रकाशक अथवा पुस्तक व्यवसायी ही नहीं वरन स्वतंत्रता सेनानी संगठनकर्त्ता लेखक और सम्पादक भी हैं। आप देशनोक (बीकानेर) के मूल-निवासी हैं लेकिन आपका जन्म एक जनवरी 1927 को कलकत्ता में हुआ और वहीं से आपने बी [illegible] की उपाधि प्राप्त की। प्रारंभ से ही क्रांतिकारी विचारों के होने के कारण आपने 1946 में [illegible] बीकानेर प्रजा-परिषद की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। [illegible] 1950 से 60 बीकानेर के रियासती आन्दोलन में "हरीश" के नाम से सक्रिय भाग लिया। [illegible] तक कम्यूनिस्ट आन्दोलनों में सक्रिय रहकर छात्रों मजदूरों और किसानों में काम किया तथा बीकानेर के [illegible] उनाव-निकासी आन्दोलन और गंगानगर के [illegible] आन्दोलन के [illegible] किया।
1950 में ही घर से अलग होकर अन्तर-प्रान्तीय और अन्तर-[illegible] विवाह किया।

श्री रांका 1953 में राजस्थान लेखक सम्मेलन के सहमंत्री 1965 में [illegible] के दसवें अधिवेशन के स्वागत मंत्री राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ के [illegible] 1976-78 में अध्यक्ष फेडरेशन आफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स [illegible] मंत्री तथा हिन्दी-प्रकाशक संघ के उपाध्यक्ष एवं इसके मुखपत्र [illegible] आपने कलकत्ता और बीकानेर में रहते हुए और पत्र-पत्रिकाओं में [illegible] यहां एक दर्जन से अधिक पुस्तकों का सम्पादन और लेखन भी किया। [illegible] महावीर" पर पांच हजार रुपये का राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।

चांदकरण देथल- राजस्थान प्रशासनिक सेवा [illegible]
में भू-प्रबन्ध विभाग में [illegible] 31 दिसम्बर 1935 [illegible]
जिले में हुआ। बी.ए. और एलएल.बी. करने के बाद [illegible]
1963 में आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन हो गया। [illegible]
महिला बाल एवं पोषाहार विभाग में [illegible] निदेशक पद पर [illegible]

छोगाराम बाकोलिया- राजस्थान के पूर्व मंत्री तथा वर्तमान में रेवदर (सु.) क्षेत्र से विधायक श्री छोगाराम बाकोलिया का जन्म एक जनवरी, 1944 को बाडमेर में हुआ। यांत्रिक अभियांत्रिकी में डिप्लोमाधारी श्री बाकोलिया राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में सितम्बर 1965 से 1975 तक कनिष्ठ और मई 1980 तक सहायक अभियंता रहे। जून 1980 में आप राज्य सेवा से त्यागपत्र देकर रेवदर (सु) क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायक चुने गये। 9 जून, 1981 को जगन्नाथ पहाडिया की सरकार ने आपको राजस्थान हैंडलूम परियोजना मंडल का अध्यक्ष मनोनीत किया। 17 जुलाई, 1982 को आपको माथुर मंत्रिमंडल में उपमंत्री के रूप में शामिल किया गया।

मार्च 1985 के चुनाव में आप इसी क्षेत्र से पुनः विधायक चुने गये और श्री हरिदेव जोशी के मंत्रिमंडल में 11 मार्च को राज्यमंत्री के रूप में शामिल किये गये। बाद में 16 अक्टूबर, 1985 को आपको केबिनेट मंत्री बनाया गया।

छोगालाल कंवरिया- राजस्थान के पूर्व चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री कंवरिया का जन्म 12 अप्रेल, 1922 को ब्यावर में हुआ। बी एससी और एलएल बी करने के बाद आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये और विभिन्न विभागों में विभिन्न पदों पर कार्य करने के बाद 1977 में सेवा-निवृत्त हुए। 1980 के चुनाव में आप जयपुर जिले के दूदू (सु) क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायक चुने गये और जुलाई 1981 में माथुर सरकार में मंत्री नियुक्त किये गये। 1985 के चुनाव में आपने भाग नहीं लिया।

छोटूसिंह भदौरिया- राजस्थान प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्व विभाग में शासन उपसचिव श्री सी एस. भदौरिया का जन्म 13 नवम्बर 1937 को उ.प्र. के कानपुर जिले के गुलौली नामक ग्राम में हुआ। आपने कानपुर से इंटर मीडिएट परीक्षा प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की। बी ए और एम.ए. में सर्वश्रेष्ठ छात्र का कुलपति मैडल प्राप्त हुआ। 1962 में सेवा में चयन होने पर आप समाज-कल्याण तथा पर्यटन विभाग में उप निदेशक, बीकानेर नगर परिषद के प्रशासक, अलवर में राजस्व अपील अधिकारी तथा भू-प्रबंध अधिकारी और खाद्य एवं रसद विभाग में शासन उप सचिव पद पर कार्य कर चुके हैं।

जकिया इनाम (श्रीमती)- राजस्थान के चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की पूर्व (प्रभारी) राज्य मंत्री श्रीमती जकिया इनाम का जन्म 7 जुलाई, 1947 को मध्यप्रदेश के बिलासपुर नगर में हुआ। एम.एससी. तक शिक्षित श्रीमती इनाम ईरान में कृषि विशेषज्ञ के रूप में कार्य कर चुकी हैं। मार्च 1985 के आम चुनाव में आप प्रथम बार कांग्रेस (इ) टिकिट पर टोंक क्षेत्र से विधायक चुनी गयी और 16 अक्टूबर, 1985 को जोशी मंत्रिमंडल में राज्य मंत्री नियुक्त की गई।

जगत मेहता- भारत के पूर्व विदेश सचिव श्री जगत मेहता राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति डा मोहनसिंह मेहता के पुत्र हैं। आपका जन्म उदयपुर में हुआ। भारतीय विदेश सेवा में आपका चयन लगभग चालीस वर्ष पूर्व हुआ। विदेश सचिव बनने से पूर्व आप लन्दन में भारतीय उच्चायुक्त तथा दारू-ए-स्लाम, घाना, बर्न और चीन आदि देशों में भारतीय राजदूत पद पर रह चुके थे। पं जवाहरलाल नेहरू के काल में जब विदेश मंत्रालय में प्रथम बार ''नीति निर्धारण प्रकोष्ठ'' का गठन हुआ तो आपको उसका प्रथम मुखिया और मंत्रालय में पदेन अतिरिक्त सचिव नियुक्त किया गया। बाद में विदेश सचिव का पद संभालने वाले आप प्रथम आई एफ. एस. अधिकारी थे। इन दिनों आप उदयपुर में अवकाश प्राप्त जीवन बिता रहे हैं।

जगदीशचन्द्र शर्मा (गिलूंड)- राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 1987-88 में 210 रुपये के शम्भूदयाल सक्सेना बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित श्री शर्मा पिछले अनेक वर्षों से हिन और राजस्थानी भाषाओं में बाल साहित्य की रचना कर रहे हैं। देश की विभिन्न पत्रिकाओं में आप बालोपयोगी कवितायें, कहानियां और नाटक आदि प्रकाशित होते रहते हैं। यह पुरस्कार आपकी रच "चौके-छक्के" पर दिया गया है। सम्प्रति आप राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गिलूंड (उदयपुर) प्रधानाध्यापक है। आपको शिक्षा विभाग ने भी छात्र-प्रवेश अभियान योजना के अन्तर्गत ढाई हजार रुप का पुरस्कार प्रदान किया है।

जगदीशनारायण भटनागर- भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिका तथा वर्तमान में गंगानगर के जिला कलक्टर श्री जे एन भटनागर का जन्म 11 मई 1934 को सीक जिले के श्रीमाधोपुर कस्बे में हुआ। आपने 1955 में राजकीय महाविद्यालय अजमेर से अर्थशास्त्र एम ए. किया तथा कुछ अर्से तक सिरोही महाविद्यालय में व्याख्याता रहे। 1958 में राजस्थान प्रशासनि सेवा में चयन के बाद प्रारंभिक नियुक्तियों के बाद 1967 में प्रतिनियुक्ति पर दिल्ली प्रशासन में न्यायि दंडनायक, दिल्ली विकास प्राधिकरण में 1968 से 73 तक कार्यकारी अधिकारी राजकीय उपक्र विभाग में शासन उपसचिव, राजस्थान लघु उद्योग निगम में महाप्रबंधक कृषि विपणन विभाग निदेशक व राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड के पदेन प्रशासक गंगानगर शुगर मिल के महाप्रबंधक व स्थानीय निकाय विभाग के निदेशक आदि महत्वपूर्ण पदों पर आप कार्य कर चुके हैं। अप्रेल 1988 भा.प्र सेवा में पदोन्नति के बाद आप निदेशक अल्प बचत विभाग भी रहे।

जगदीशनारायण व्यास (डा)—सवाई मानसिंह मेडीकल कालेज जयपुर म मनोचिकि विभाग के विभागाध्यक्ष तथा मानसिक चिकित्सालय जयपुर के अधीक्षक डा जे एन व्यास का ज जोधपुर में हुआ। आपने जयपुर से एम बी बी एस और राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एव स्नायुविज्ञ संस्थान बंगलौर से डी पी एम किया। आप 1979 से प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष पद पर कार्यरत

जगदीशप्रसाद केडिया- राजस्थान में ओरियंट पंखों के एकल वितरक मेसर्स ओरियण्ट एजेंसीज के प्रबंधक श्री जे पी केडिया का जन्म 22 जून 1937 को झुंझुनूं जिले के चिड़ावा कस्ब हुआ। आपने महाराजा कालेज जयपुर से बी काम की उपाधि प्राप्त की और नेशनल इंजीनियर इंडस्ट्रीज लि जयपुर की सेवा में प्रवेश किया। कुछ अर्से बाद आप ओरियण्टल एजेन्सीज की सेवा म गये। आप जयपुर चेम्बर आफ कामर्स एवं राजस्थान व्यापार-उद्योग मण्डल की कार्यकारिणी क सद तथा रोटरी क्लब के संचालक रह चुके हैं। आप दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देशों तथा जापान की व्यावसा यात्रा कर चुके हैं।

जगदीशप्रसाद तिवाड़ी- जयपुर जिले के बस्सी क्षेत्र स 1980 और 1985 के चुनाव कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री तिवाड़ी का जन्म 15 नवम्बर 1941 को [illegible] हुआ। हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने कुछ वर्षों तक प्रदेश कांग्रेस कार्यालय म [illegible] और 1965 में बस्सी पचायत समिति के प्रधान चुने गये। 1968 में [illegible] 1977 के विधान सभा चुनाव में भी आपने कांग्रेस टिकिट पर भाग्य आजमाया [illegible] सके। 1978 में आप गुडा [illegible] ग्राम पचायत के सरपच चुने गये। 1973 स 75 तक जयपुर [illegible] भूमि-विकास बैंक के संचालक मण्डल के सदस्य चुने गये और जून 1980 म [illegible] अध्यक्ष मनोनीत किये गये। जयपुर देहात जिला कांग्रेस कमेटी [illegible]

जगदीशपाल सिंह- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में खेल एवं पर्यटन विभाग के शासन सचिव श्री जे.पी. सिंह का जन्म 10 जून, 1948 को उ.प्र. के अलीगढ जिले में हुआ। आपने 1971 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान विषय में प्रथम श्रेणी में एम.ए. परीक्षा उत्तीर्ण कर रजत पदक प्राप्त किया। 1985 में आपने अमेरिका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय से लोक-प्रशासन में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की।

1972 में सेवा में प्रवेश के बाद श्री सिंह बाडमेर, भीलवाड़ा तथा उदयपुर के जिलाधीश, सहकारिता विभाग तथा मुद्रांक विभाग के पंजीयक, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के प्रबंध निदेशक, सामान्य प्रशासन विभाग में शासन विशिष्ट सचिव तथा जोधपुर और उदयपुर संभागों के आयुक्त रह चुके हैं।

जगदीश शर्मा—राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के महामंत्री और "राजस्थान पत्रिका" के चीफ रिपोर्टर श्री जगदीश शर्मा का जन्म 20 मई, 1954 को अलवर में हुआ। राजर्षि कालेज अलवर से ही आपने बी. एससी.-किया और कुछ अर्से तक एक औषधि-निर्माता के यहां काम किया। लेकिन अपनी साहित्यिक रुचि और अभिव्यक्ति की अदम्य भावनाओं के कारण आप अधिक समय तक वहां टिक नहीं सके और 1971 में पत्रकारिता से जुड गये। प्रारंभ में "राजस्थान पत्रिका" और "हिन्दुस्तान" का अलवर में प्रतिनिधित्व किया और 1978 में दैनिक "अरानाद" का सम्पादन किया। 1979 में "राजस्थान पत्रिका" के स्टाफ रिपोर्टर बनकर स्थायी रूप से जयपुर आ गये।

श्री शर्मा ने 1985 में भारतीय श्रमजीवी पत्रकार महासंघ की छात्रवृत्ति पर चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग स्थित पत्रकारिता महाविद्यालय से पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम किया तथा यूरोप के 14 अन्य देशों की यात्रा कर पूरब और पश्चिम के प्रमुख दैनिक पत्रों तथा संवाद समितियों की कार्यप्रणाली का अध्ययन किया। सितम्बर 1988 में आप उपराष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा की सूरीनाम, त्रिनिडाड, गोयाना और टोबेगो यात्रा को कवर करने के लिए भारत सरकार के निमंत्रण पर पुनः विदेश गये।

राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ की कार्यकारिणी के आप अप्रेल 1988 में सदस्य चुने गये और अक्टूबर में महामंत्री मनोनीत किये गये।

जगन्नाथ पहाडिया- बिहार के राज्यपाल और राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री जगन्नाथ पहाडिया का जन्म 15 जनवरी, 1932 को भरतपुर जिले के भुसावर कस्बे में पिछड़ी जाति के एक सामान्य परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा भरतपुर, आगरा और जयपुर में हुई तथा आपने एम.ए. और विधि-स्नातक की उपाधियां प्राप्त की।

श्री पहाडिया की छात्र जीवन से ही राजनीति में सक्रिय रुचि रही और आप पांचवें दशक के प्रारम्भ में ही कांग्रेस से जुड गये। 1957 में जब आप प्रथम बार सवाईमाधोपुर क्षेत्र से सुरक्षित सीट पर लोकसभा के लिए चुने गये तो आपकी आयु मात्र पच्चीस वर्ष तीन माह थी और द्वितीय लोकसभा में सर्वाधिक कम आयु के सदस्य थे। 1962 के लोकसभा चुनाव में आप सवाईमाधोपुर क्षेत्र से ही पराजित हो गये लेकिन मार्च 1965 में हुए उप चुनाव में राज्य सभा के सदस्य चुन लिये गये। बाद में आप कांग्रेस संसदीय दल के महामंत्री चुने गये।1967 के लोकसभा चुनाव में आप हिण्डौन (सु) क्षेत्र से पुनः विजयी हुए और श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार में वित्त मंत्रालय में उपमंत्री बनाये गये। जुलाई 1969 में आपको उपमंत्री पद छोड़ना पड़ा लेकिन 1971 के मध्यावधि चुनाव में हिण्डौन क्षेत्र से पुनः विजयी होने पर खाद्य एवं कृषि उपमंत्री नियुक्त किये गये। 1973 में आप संचार उपमंत्री बनाये गये। 1977 में बयाना क्षेत्र से आप लोकसभा का चुनाव हार गये। 1978 में कांग्रेस का विभाजन होने पर आप प्रदेश कांग्रेस (इ) के महामंत्री

नियुक्त किये गये। 1980 के चुनाव में आप बयाना क्षेत्र से पुन: लोकसभा के लिए चुने गये और वित्त मंत्रालय में राज्यमंत्री बनाये गये।

5 जून, 1980 को आप राजस्थान कांग्रेस विधायक दल के सर्वसम्मति से नेता चुने गये और 6 जून, 1980 को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। नवम्बर 1981 में आप वैर क्षेत्र से उप चुनाव में विधायक चुने गये। 13 जुलाई, 1981 को आपने मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र दिया। 1985 के विधान सभा चुनाव में आप वैर क्षेत्र से पुन. चुने गये।

मई 1988 में श्री पहाडिया को अ.भा. कांग्रेस (इ) कमेटी का महामंत्री बनाया गया। राज्यपाल पद पर आपकी नियुक्ति मार्च 1989 में हुई।

जगमोहन भटनागर- भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन शृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में टोंक के जिला कलक्टर श्री जे एम भटनागर का जन्म 15 अक्टूबर, 1935 को कोटा में हुआ। आपने 1958 में सैंट स्टीफंस कालेज दिल्ली से एम एससी की उपाधि प्राप्त की। 1959 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन के बाद आपने अन्य अनेक पदों के साथ अतिरिक्त जिलाधीश बूंदी, सचिव नगर विकास न्यास उदयपुर, जिला रसद अधिकारी अजमेर, प्रादेशिक परिवहन अधिकारी जयपुर, महाप्रबन्धक राजस्थान पर्यटन-विकास निगम, 6 वर्षों तक राजस्व विभाग में शासन उप सचिव तथा राजस्थान औद्योगिक विकास एवं विनियोजन निगम लि. (रीको) के सह-प्रतिष्ठान राजस्थान इलेक्ट्रोनिक्स लि. के प्रबंध निदेशक आदि पदों पर कार्य किया। 1988 में आपकी भा प्र सेवा में पदोन्नति हुई तथा वर्तमान पदस्थापना से पूर्व आप राजस्व (वन) विभाग में शासन उप सचिव नियुक्त किये गये।

जनार्दनराय नागर- राजस्थान के वरिष्ठ साहित्यकार, शिक्षाविद् और किसी समय के राजनेता श्री जनार्दनराय नागर को लोग प्यार से जन्नू भाई कहना अधिक पसन्द करते हैं। आपका जन्म 16 जून, 1911 को उदयपुर में हुआ। आपने एम.ए., एलएल.बी साहित्यरत्न और विद्यालंकार आदि उपाधियां प्राप्त की तथा राष्ट्रीय विचारधारा के होने के कारण कांग्रेस की गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड गये। तीसरे दशक की शुरुआत में ही आपने आदिवासी क्षेत्र के गांव-गांव और ढाणी-ढाणी में घूम कर समाज शिक्षा और प्रौढ शिक्षा का अलख जगाया। आप वर्षों तक उदयपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष तथा प्रदेश कांग्रेस के सदस्य रहे। 1957 में मावली क्षेत्र से विधायक भी चुने गये।

साहित्य के क्षेत्र में श्री नागर ने कविता, गद्य, गीत, नाटक, उपन्यास और कहानी आदि लगभग सभी विधाओं में लिखा है और ढेरों मात्रा में लिखा है। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द ने अपने जीवन काल में ही जिन दो नवोदित कथाकारों को अपना साहित्यिक उत्तराधिकारी घोषित किया था उनमें जैनेन्द्र जी और जन्नू भाई ही थे। राजस्थान सरकार ने दिसम्बर 1957 में जब साहित्य अकादमी की स्थापना की तो आप उसके प्रथम अध्यक्ष मनोनीत किये गये। आप 1970 तक इस पद पर रहे।

श्री नागर ने सर्वांगीण शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए मात्र तीन रुपये की पूंजी से जिस राजस्थान विद्यापीठ की स्थापना की थी वह आज विशाल वटवृक्ष के रूप में सामने है। उसकी विभिन्न शाखायें चारों ओर ज्ञान का प्रकाश फैला रही हैं। उसके अधिकारियों और कर्मचारियों की संख्या सैकडों में है तथा वार्षिक बजट करोड रुपये से अधिक है। उसे अब विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता प्राप्त हो चुकी है। पं. नागर उपकुलपति के रूप में अभी भी इस वृद्धावस्था में इसके कार्य को आगे बढ़ाने के लिये सतत प्रयत्नशील हैं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अप्रेल 1988 में गुडगांव (हरियाणा) में आयोजित अपने 43 वें अधिवेशन में पं. नागर को "साहित्यवाचस्पति", जो साहित्य जगत की सर्वोच्च उपाधि है, से विभूषित

किया है। राजस्थान साहित्य अकादमी अपने सर्वोच्च सम्मान "साहित्य मनीषी" से उन्हें पहले ही सम्मानित कर चुकी है।

जनार्दनसिंह गहलोत- राजस्थान लघु उद्योग-निगम के अध्यक्ष श्री जनार्दनसिंह गहलोत का जन्म चार अक्टूबर, 1944 को जयपुर में हुआ। प्रारंभ में आपने खादी-ग्रामोद्योग कमीशन के जयपुर कार्यालय में कार्य किया। 1966 से 69 तक आप प्रदेश युवक कांग्रेस के महामंत्री तथा बाद में 1975 तक अध्यक्ष रहे। 1970 में आप जयपुर नगर परिषद के उपाध्यक्ष तथा बाद में कुछ अर्से तक कार्यवाहक अध्यक्ष भी रहे। 1972 में आपने प्रथम बार जयपुर के गांधीनगर क्षेत्र से विधानसभा का चुनाव लड़ा और श्री भैरोंसिंह शेखावत को पराजित कर विजयी हुए। 1972 से 75 तक आप जयपुर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रहे।

1975 से 77 तक आप युवक कांग्रेस के राष्ट्रीय महामंत्री तथा बाद में कुछ अर्से तक अध्यक्ष भी रहे। मार्च 1977 में आपने जयपुर क्षेत्र से लोकसभा का और जून 1977 में बनीपार्क क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव लड़ा लेकिन दोनों में ही विफल रहे। जनवरी 1978 में हुए कांग्रेस विभाजन के बाद आप इन्दिरा कांग्रेस में रहे तथा प्रदेश कांग्रेस (इ) के महामंत्री नियुक्त किये गये। 1980 में आप करौली क्षेत्र से पुनः विधायक चुने गये। 1985 के चुनाव में आप दलीय टिकिट प्राप्त करने में विफल रहे।

जयकृष्ण तोसावडा- 1972 में फागी (सु) और 1985 में दूदू (सु) क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री जयकृष्ण तोसावडा का जन्म एक जुलाई, 1935 को जयपुर जिले के मंडावरी ग्राम में हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर में हुई और राजस्थान विश्वविद्यालय से एम.ए. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त की। आप व्यवसाय से वकील हैं और ग्रामीण विकास कार्यों में विशेष रुचि रखते हैं।

जयकृष्ण शर्मा- आयुर्वेद एवं परिवहन विभाग के पूर्व (प्रभारी) राज्य मंत्री तथा वर्तमान में अलवर के जिला प्रमुख श्री जयकृष्ण शर्मा का जन्म 15 अप्रेल, 1925 को अलवर जिले में हुआ। 1948 में आप कांग्रेस के माध्यम से सक्रिय राजनीति से जुड़े। 1951 से 54 तक तहसील कांग्रेस कमेटी के मंत्री, 1954 से 59 तक जिला कांग्रेस कमेटी के महामंत्री और 1959 में ही अध्यक्ष चुने गये। आप चार वर्ष तक थानागाजी पंचायत समिति के प्रधान तथा पूर्व में भी दो वर्ष तक अलवर जिला परिषद के प्रमुख रह चुके हैं।

श्री शर्मा 1962 और 1967 में थानागाजी क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में विधायक चुने गये और 1966 में कांग्रेस विधायक दल के मुख्य सचेतक और जून 1967 में सुखाडिया सरकार में आयुर्वेद विभाग के प्रभारी राज्यमंत्री बनाये गये। 1972 में आप थानागाजी क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव हार गये। इसी समय बरकतुल्लाखां सरकार ने आपको राजस्थान लघु उद्योग निगम का अध्यक्ष मनोनीत कर दिया। 1977 और 1980 के चुनावों में आप रामगढ क्षेत्र से पुनः विधायक चुने गये। 19 जुलाई, 1981 को आप श्री शिवचरण माथुर की पूर्व सरकार में परिवहन विभाग के प्रभारी राज्य मंत्री नियुक्त किये गये। 1985 के चुनाव में दलीय टिकिट न मिलने के कारण आपने चुनाव में भाग नहीं लिया लेकिन 1988 में अलवर जिला परिषद के प्रमुख चुन लिए गये।

जयकुमार अटल- 1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त श्री जे.के. अटल जयपुर के निवासी हैं जो भूतपूर्व जयपुर रियासत के अर्थ मंत्री राजा अमरनाथ अटल के घर जन्मे हैं। 1937 में आपका आई.सी.एस. में चयन हुआ। आपने नागपुर, यवतमाल, चन्दन और सागर आदि विभिन्न स्थानों पर विभिन्न पदों पर कार्य किया। सागर विश्वविद्यालय की स्थापना में भी आपका सक्रिय सहयोग रहा। 1946 से 73 तक आपने परराष्ट्र मंत्रालय में रहकर विभिन्न पदों पर सेवायें दी। पाकिस्तान में युद्ध के दौरान तीन दिसम्बर, 1971 को आपको नजरबंद कर दिया गया था।

श्री [illegible] समाज सेवा और शिक्षा के प्रति कितने समर्पित हैं- यह इसी एक तथ्य से सिद्ध है कि उन्होंने जयपुर की झोटवाड़ा सड़क पर स्थित 80 हजार वर्ग मीटर मूल्यवान निजी भूमि दान देकर वियना स्थित एस.ओ.एस. बाल ग्राम की जयपुर में शाखा स्थापित करवाई है जिसमें अनाथ बच्चों और परित्यक्ता स्त्रियों के लालन-पालन तथा शिक्षा की सुचारू व्यवस्था है।

जयनारायण पूनिया- सार्वजनिक निर्माण एवं राहत विभाग के पूर्व मंत्री तथा वर्तमान में तारानगर क्षेत्र के जनता दल विधायक श्री जयनारायण पूनिया का जन्म 19 अक्टूबर, 1934 को चूरू जिले के [illegible] ग्राम में हुआ। आप विधि स्नातक है और व्यवसाय से वकील तथा कृषक है। 1977 के विधान सभा चुनाव में आप [illegible] क्षेत्र से जनता पार्टी के टिकिट पर विधायक चुने गये और श्री भैरोंसिंह शेखावत की सरकार में 7 फरवरी,1978 से 16 फरवरी 1980 तक उपरोक्त विभागों के मंत्री रहे। 1985 में आप तारानगर क्षेत्र से जनता पार्टी के टिकिट पर पुन: विधायक चुन लिये [illegible]।

जवाहिरलाल जैन- राजस्थान के जाने-माने सर्वोदयी नेता विचारक और [illegible] श्री जवाहिरलाल जैन का जन्म सन 1909 में जयपुर में हुआ। आपने इतिहास और राजनीति विज्ञान में एम.ए. तथा 'विशारद' की उपाधि प्राप्त की। आप प्रारंभ में पोद्दार हाई स्कूल नवलगढ़ में अध्यापक रहे और सन 1934 से 46 तक पोद्दार कॉलेज में प्राध्यापक और आचार्य रहे। 1946 से 48 तक जयपुर ग्लास एण्ड पॉटरीज वर्क्स लि. जयपुर के महाप्रबन्धक तथा 1948 से 53 तक साप्ताहिक "युगान्तर" के सम्पादक, दैनिक "लोकवाणी" के प्रबन्ध सम्पादक तथा युगान्तर प्रकाशन मन्दिर लि. जयपुर के प्रबन्ध संचालक रहे। 1953-54 में गांधी स्मारक निधि की प्रदेश शाखा के मंत्री, 1954 से 59 तक खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय शिवदासपुरा के प्राचार्य 1959-60 में राजस्थान खादी संघ के मंत्री तथा 1960 से 66 तक खादी-ग्रामोद्योग कमीशन के प्रादेशिक निदेशक रहे। आपने राजस्थान खादी संघ द्वारा प्रकाशित "खादी पत्रिका" का सम्पादन भी किया। वर्तमान में आप प्रदेश की विभिन्न खादी तथा रचनात्मक कार्यों में लगी संस्थाओं के सदस्य तथा पदाधिकारी हैं। आपकी खादी, सर्वोदय, और अर्थशास्त्र पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

जसराज चोपड़ा- राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री जसराज चोपड़ा का जन्म 20 अगस्त, 1933 को बाड़मेर जिले के पचपदरा कस्बे में हुआ। बी.कॉम और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद 1956 में आपका राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ जिसमें सितम्बर 1963 तक विभिन्न स्थानों पर विभिन्न पदों पर कार्य किया। इस अवधि में आपको जनगणना में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए राष्ट्रपति से जनगणना का तमगा तथा 1962 के भारत-चीन संघर्ष में स्वर्ण एकत्रित करने के लिए राज्य सरकार से प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ।

25 सितम्बर,1963 से आप न्यायिक सेवा में आ गये तथा मुंसिफ एवं न्यायिक दण्डनायक नियुक्त हुए। 21 जनवरी,1967 को आपको सिविल जज, 5 दिसम्बर,1970 को अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा 2 मार्च,1974 को जिला एवं सत्र न्यायाधीश पद के लिये पदोन्नति हुई। आपने [illegible]

[illegible]

[illegible] ग्रन्थ का गुजराती से हिन्दी में अनुवाद किया है।

जसवंतसिंह- राजस्थान से भाजपा के राज्यसभा सदस्य श्री जसवंतसिंह का जन्म 1938 में बाड़मेर जिले के जसोल ग्राम में हुआ। आपने मेयो कालेज अजमेर से सीनियर कैम्ब्रिज परीक्षा प्रथम श्रेणी

में उत्तीर्ण की। 1953 में आपका चयन भारतीय सेना में प्रशिक्षण के लिये हुआ। इसी दौरान आपने बी.ए. और एम.एससी. परीक्षायें उत्तीर्ण की। 1957 में आपको सेना में कमीशन मिला तथा आपका पदस्थापन टैंक रेजीमेंट में हुआ। 1965 में आपकी पदोन्नति मेजर पद पर हुई तथा आपने 1962 के भारत-चीन युद्ध और 1965 के भारत-पाक युद्ध में सक्रिय भाग लिया। 1966 में आपने सेवा से त्यागपत्र दे दिया और 1967 के विधान सभा चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में ओसियां से चुनाव लडा लेकिन सफल नहीं हो सके। आपने सम्पूर्ण यूरोपीय देशों, अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, नेपाल, बर्मा और इंडो-चायना का भ्रमण किया है। आप 1980 और1986 में भाजपा के टिकिट पर राज्यसभा के सदस्य चुने गये हैं।

जसवंतसिंह बाघेल- दी बैंक आफ राजस्थान लि. के पूर्व अध्यक्ष श्री जसवंतसिंह बाघेल का जन्म 4 जनवरी, 1927 को उदयपुर में हुआ। बी.काम. तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने पहले भारत बैंक लि. तथा 1951 में राजस्थान बैंक लि. की सेवा में सुपरवाइजर के रूप में प्रवेश किया। 1968 में आप राजस्थान बैंक के महाप्रबंधक नियुक्त हुए तथा 9 दिसम्बर, 1986 से दिसम्बर 1988 तक अध्यक्ष पद पर कार्य किया। सामाजिक क्षेत्र में आप लायन्स क्लब जयपुर के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

जान मोहम्मद खाँ- राजस्थान लोक-सेवा आयोग के अध्यक्ष श्री जे.एम. खाँ का जन्म 28 दिसम्बर, 1929 को भीलवाडा जिले के बिजौलियां ग्राम में हुआ। आपने अर्थशास्त्र में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। 1955 में आपका राजस्थान लेखा सेवा में चयन हुआ। 1971 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति के बाद आपने अतिरिक्त मुख्य निर्वाचन अधिकारी, खाद्य एव रसद विभाग में अतिरिक्त आयुक्त, राजस्व मंडल में रजिस्ट्रार, जिलाधीश सिरोही, अतिरिक्त आयुक्त वाणिज्यिक कर विभाग, नगरीय भूमि विभाग के निदेशक तथा ग्रामीण-विकास एवं पंचायती राज विभाग में निदेशक एवं पदेन शासन विशिष्ट सचिव आदि पदों पर कार्य किया।

श्री खाँ जुलाई 1978 में भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर भारतीय दूतावास जेद्दाह में प्रथम सचिव बन कर चले गये जहां से आप अक्टूबर 1981 में लौटे। 1983 में राज्य सरकार ने आपको लोक सेवा आयोग का सदस्य और 7 नवम्बर, 1985 को अध्यक्ष मनोनीत किया।

जीवराजसिंह- श्रीगंगानगर जिले के पीलीबंगा क्षेत्र से 1980 और 1985 के चुनावों में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री जीवराजसिंह का जन्म 5 जून, 1934 को चूरू जिले के कानपुरा ग्राम में हुआ। आप व्यवसाय से कृषक हैं तथा समाज-सेवा कार्यों में विशेष रुचि रखते हैं।

जुगमंदिर तायल- राजस्थान में हिन्दी के प्रतिनिधि कवि श्री तायल का जन्म 16 नवम्बर, 1936 को अलवर में हुआ। आपने हिन्दी में एम.ए. और "साहित्यरत्न" की उपाधि प्राप्त की जिसमें सर्वप्रथम स्थान आने पर श्रीधर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। आप व्यवसाय से अध्यापक हैं। आपकी प्रथम पुस्तक 1957–58 में "आधुनिक कवि-एक अध्ययन" तथा 1964 और 1968 में क्रमशः "रोशनी का रथ" और "सूरज सब देखता है" कविता संग्रह प्रकाशित हुए। इसके बाद "धूप भरी सुबह" और "जंगल से गुजरते हुए" का प्रकाशन हुआ। राजस्थान साहित्य अकादमी ने आपको वर्ष 1983 में विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित किया तथा आपकी नवीन कृति "दर्पण के प्रतिबिम्ब" पर 1987 में सुधीन्द्र पुरस्कार प्रदान किया।

जुझारसिंह- झालावाड क्षेत्र से दिसम्बर 1984 में निर्वाचित कांग्रेस (इ) के सांसद श्री जुझारसिंह का जन्म 26 जनवरी, 1920 को हुआ। आप एम.ए., एलएल.बी. हैं तथा 1942 में महाराजा कोटा के ए.डी.सी. रह चुके हैं। आप सर्वप्रथम रामगंजमंडी क्षेत्र से 1962 में कांग्रेस, 1967 में जनसंघ और 1972 में पुनः कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये। 16 मार्च, 1972 को श्री बरकतुल्ला ने अपने

मन्त्रिमंडल में आपको राज्य मंत्री नियुक्त किया। उनके निधन के पश्चात श्री हरिदेव जोशी के नेतृत्व में बनी सरकार मे भी आपको राज्य मंत्री पद पर यथावत रखा गया तथा खनिज विभाग का स्वतंत्र कार्यभार सौपा गया। 1977 के विधानसभा चुनाव में आप झालरापाटन क्षेत्र से पराजित हो गये।

जुमकी एस कुमार (श्रीमती)—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला की अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्व मंडल की सदस्य श्रीमती जुमकी का जन्म 15 जून 1942 को पश्चिम बंगाल में हुआ। 1966 में सेवा में प्रवेश के बाद आप चित्तौडगढ एव कोटपूतली में उपखंड अधिकारी जिलाधीश टोंक, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार-कल्याण आदि विभागों में शासन विशिष्ट सचिव, यू एन.एफ पी ए परियोजना की आयुक्त एवं शासन सचिव तथा नई दिल्ली में राज्य की आवासीय आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुकी हैं।

टी. श्रीनिवासन—भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सामान्य प्रशासन एवं मन्त्रिमंडल सचिवालय में शासन विशिष्ट सचिव श्री श्रीनिवासन का जन्म 14 अगस्त, 1950 को मद्रास में हुआ। सन् 1975 में सेवा में प्रवेश के बाद आप अतिरिक्त जिलाधीश धौलपुर, वित्त विभाग में शासन उप सचिव, जिलाधीश बीकानेर तथा अजमेर रह चुके है।

टी वी. रमणन—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में ह मा.रा. लोक-प्रशासन संस्थान के निदेशक श्री टी वी रमणन का जन्म 26 सितम्बर 1936 को मद्रास में हुआ। 1959 में सेवा में प्रवेश के बाद आप बाडमेर के जिलाधीश राजस्थान राज्य विद्युत मंडल के सचिव, उद्योग विभाग के निदेशक, भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर गृह मंत्रालय में संयुक्त सचिव (कार्मिक), राजस्व मंडल के सदस्य, वित्त तथा कला एवं संस्कृति आदि विभागों के शासन सचिव एवं आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके है।

टीकमचन्द जैन— राजस्थान राज्य उत्पादकता परिषद के पूर्व सचिव श्री टीकमचन्द जैन का जन्म अप्रेल, 1923 को कोटा में हुआ। आपने अर्थशास्त्र व राजनीति विज्ञान में एम ए करने के बाद श्रम विभाग की सेवा में प्रवेश किया। 1959–60 में श्रम-प्रशासन के प्रशिक्षण के लिए [illegible] योजना के अन्तर्गत इगलैण्ड गये तथा यूरोप के कई देशों का भ्रमण किया। राज्य के श्रम विभाग में संयुक्त श्रम आयुक्त पद से सेवा-निवृत्ति के बाद कुछ वर्षों तक आपने बैंक आफ राजस्थान लि में प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्य किया।

टीकाराम पालीवाल—राजस्थान में 1952 में विधानसभा की स्थापना के बाद प्रथम आम चुनावोपरांत बनी राज्य की प्रथम लोकतांत्रिक सरकार के मुख्यमंत्री श्री टीकाराम पालीवाल का जन्म एक जुलाई, 1909 को सवाईमाधोपुर जिले के मंडावर ग्राम में हुआ। आपने मंडावर [illegible] और [illegible] में अध्ययन कर बी. ए. और एलएल. बी. की उपाधियां प्राप्त की। आपने प्रारंभ में हिण्डौन में वकालत शुरू की लेकिन स्वतंत्रता संघर्ष से जुड जाने के कारण आपको अनेक बार जेल यात्राएँ करना पड़ी। आपने श्री जमनालाल बजाज के नेतृत्व में जयपुर में सत्याग्रह किया। जयपुर राज्य प्रजामंडल की [illegible] सदस्यता के बाद धीरे-धीरे आप संयुक्त मंत्री प्रधानमंत्री और सभापति तक बनाए गए।

1946 में श्री हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व में बनी तत्कालीन जयपुर रियासत की [illegible] में और 1951 में श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में बनी राजस्थान की [illegible] सरकार में [illegible] बनाये गए। 1952 में आपने महुआ और मलारना चौड दो विधानसभा क्षेत्रों से चुनाव लड़ा और दोनों में विजयी रहे। अत: राज्य की प्रथम लोकतांत्रिक सरकार के [illegible] 1952 [illegible]

में उत्तीर्ण की। 1953 में आपका चयन भारतीय सेना में प्रशिक्षण के लिये हुआ। इसी दौरान आपने बी.ए. और बी.एससी. परीक्षायें उत्तीर्ण की। 1957 में आपको सेना में कमीशन मिला तथा आपका पदस्थापन टैंक रेजीमेंट में हुआ। 1965 में आपकी पदोन्नति मेजर पद पर हुई तथा आपने 1962 के भारत-चीन युद्ध और 1965 के भारत-पाक युद्ध में सक्रिय भाग लिया। 1966 में आपने सेना से त्यागपत्र दे दिया और 1967 के विधान सभा चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में ओसियां से चुनाव लड़ा लेकिन सफल नहीं हो सके। आपने सम्पूर्ण यूरोपीय देशों, अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, नेपाल, बर्मा और इंडो-चायना का भ्रमण किया है। आप 1980 और1986 में भाजपा के टिकिट पर राज्यसभा के सदस्य चुने गये हैं।

जसवंतसिंह बाबेल- दी बैंक आफ राजस्थान लि. के पूर्व अध्यक्ष श्री जसवंतसिंह बाबेल का जन्म 4 जनवरी, 1927 को उदयपुर में हुआ। बी.काम. तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने पहले भारत बैंक लि. तथा 1951 में राजस्थान बैंक लि. की सेवा में सुपरवाइजर के रूप में प्रवेश किया। 1968 में आप राजस्थान बैंक के महाप्रबंधक नियुक्त हुए तथा 9 दिसम्बर, 1986 से दिसम्बर 1988 तक अध्यक्ष पद पर कार्य किया। सामाजिक क्षेत्र में आप लायन्स क्लब जयपुर के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

जान मोहम्मद खाँ- राजस्थान लोक-सेवा आयोग के अध्यक्ष श्री जे.एम. खाँ का जन्म 28 दिसम्बर, 1929 को भीलवाड़ा जिले के बिजौलियाँ ग्राम में हुआ। आपने अर्थशास्त्र में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। 1955 में आपका राजस्थान लेखा सेवा में चयन हुआ। 1971 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति के बाद आपने अतिरिक्त मुख्य निर्वाचन अधिकारी, खाद्य एवं रसद विभाग में अतिरिक्त आयुक्त, राजस्व मंडल में रजिस्ट्रार, जिलाधीश सिरोही, अतिरिक्त आयुक्त वाणिज्यिक कर विभाग, नगरीय भूमि विभाग के निदेशक तथा ग्रामीण-विकास एवं पंचायती राज विभाग में निदेशक एवं पदेन शासन विशिष्ट सचिव आदि पदों पर कार्य किया।

श्री खाँ जुलाई 1978 में भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर भारतीय दूतावास जेद्दाह में प्रथम सचिव बन कर चले गये जहां से आप अक्टूबर 1981 में लौटे। 1983 में राज्य सरकार ने आपको लोक सेवा आयोग का सदस्य और 7 नवम्बर, 1985 को अध्यक्ष मनोनीत किया।

जीवराजसिंह- श्रीगंगानगर जिले के पीलीबंगा क्षेत्र से 1980 और 1985 के चुनावों में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री जीवराजसिंह का जन्म 5 जून, 1934 को चूरू जिले के कानपुरा ग्राम में हुआ। आप व्यवसाय से कृषक हैं तथा समाज-सेवा कार्यों में विशेष रुचि रखते हैं।

जुगमदिर तायल- राजस्थान में हिन्दी के प्रतिनिधि कवि श्री तायल का जन्म 16 नवम्बर, 1936 को अलवर में हुआ। आपने हिन्दी में एम.ए. और "साहित्यरत्न" की उपाधि प्राप्त की। प्रथम सर्वप्रथम स्थान आने पर श्रीधर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। आप व्यवसाय से अध्यापक हैं। आपकी प्रथम पुस्तक 1957–58 में "आधुनिक कवि-एक अध्ययन" तथा 1964 और 1968 में क्रमशः "तेवरने के रंग" और "सूरज सब देखता है" कविता संग्रह प्रकाशित हुए। इसके बाद "धूप भरी धुन्ध" और "जंगल से गुजरते हुए" का प्रकाशन हुआ। राजस्थान साहित्य अकादमी ने आपको वर्ष 1983 में विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित किया तथा आपकी नवीन कृति "[illegible]" पर 1987 में सुधीन्द्र पुरस्कार प्रदान किया।

गुरुदर्शनसिंह- [illegible] क्षेत्र से दिसम्बर 1954 में निर्वाचित कांग्रेस (इ) के [illegible] श्री गुरुदर्शनसिंह का जन्म 26 अगस्त, 1920 को हुआ। आप एम.ए. [illegible] बी. हैं तथा 1942 में [illegible] के ए.डी.सी. रह चुके हैं। [illegible] 1962 में कांग्रेस 1967 में [illegible] और 1972 में [illegible] 15 मार्च 1972 को [illegible]

मंत्रिमंडल में उनको राज्य मंत्री नियुक्त किया। उनके निधन के पश्चात श्री हरिदेव जोशी के नेतृत्व में बनी सरकार में भी उनको राज्य मंत्री पद पर यथावत रखा गया तथा खनिज विभाग का स्वतंत्र कार्यभार सौंपा गया। 1977 के विधानसभा चुनाव में आप झालरापाटन क्षेत्र से पराजित हो गये।

जुमकी एम. कुमार (श्रीमती)—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला की अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्व मंडल की सदस्य श्रीमती जुमकी का जन्म 15 जून, 1942 को पश्चिम बंगाल में हुआ। 1966 में सेवा में प्रवेश के बाद आप चित्तौड़गढ़ एवं कोटपूतली में उपखंड अधिकारी, जिलाधीश टोंक, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार, चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार-कल्याण आदि विभागों में शासन विशिष्ट सचिव, यू.एन.एफ.पी.ए. परियोजना की आयुक्त एवं शासन सचिव तथा नई दिल्ली में राज्य की आवासीय आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुकी हैं।

टी. श्रीनिवासन—भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सामान्य प्रशासन एवं मंत्रिमंडल सचिवालय में शासन विशिष्ट सचिव श्री श्रीनिवासन का जन्म 14 अगस्त, 1950 को मद्रास में हुआ। सन 1975 में सेवा में प्रवेश के बाद आप अतिरिक्त जिलाधीश धौलपुर, वित्त विभाग में शासन उप सचिव, जिलाधीश बीकानेर तथा अजमेर रह चुके हैं।

टी. वी. रमणन—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में ह.मा.रा. लोक-प्रशासन संस्थान के निदेशक श्री टी. वी. रमणन का जन्म 26 सितम्बर, 1936 को मद्रास में हुआ। 1959 में सेवा में प्रवेश के बाद आप बाड़मेर के जिलाधीश, राजस्थान राज्य विद्युत मंडल के सचिव, उद्योग विभाग के निदेशक, भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर गृह मंत्रालय में संयुक्त सचिव (कार्मिक), राजस्व मंडल के सदस्य, वित्त तथा कला एवं संस्कृति आदि विभागों के शासन सचिव एवं आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

टीकमचन्द जैन— राजस्थान राज्य उत्पादकता परिषद के पूर्व सचिव श्री टीकमचन्द जैन का जन्म अप्रेल, 1923 को कोटा में हुआ। आपने अर्थशास्त्र व राजनीति विज्ञान में एम. ए. करने के बाद श्रम विभाग की सेवा में प्रवेश किया। 1959–60 में श्रम-प्रशासन के प्रशिक्षण के लिए कोलम्बो योजना के अन्तर्गत इंग्लैण्ड गये तथा यूरोप के कई देशों का भ्रमण किया। राज्य के श्रम विभाग से संयुक्त श्रम आयुक्त पद से सेवा-निवृत्ति के बाद कुछ वर्षों तक आपने बैंक आफ राजस्थान लि. में प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्य किया।

टीकाराम पालीवाल—राजस्थान में 1952 में विधानसभा की स्थापना के बाद प्रथम आम चुनावोपरांत बनी राज्य की प्रथम लोकतांत्रिक सरकार के मुख्यमंत्री श्री टीकाराम पालीवाल का जन्म एक जुलाई, 1909 को सवाईमाधोपुर जिले के मंडावर ग्राम में हुआ। आपने मंडावर, अलवर और दिल्ली में अध्ययन कर बी. ए. और एलएल. बी. की उपाधियां प्राप्त की। आपने प्रारंभ में हिण्डौन में वकालत शुरू की लेकिन स्वतंत्रता संघर्ष से जुड़ जाने के कारण आपको अनेक बार जेल यात्राएँ करनी पड़ी। आपने श्री जमनालाल बजाज के नेतृत्व में जयपुर में सत्याग्रह किया। जयपुर राज्य प्रजामंडल की कार्यकारिणी की सदस्यता के बाद धीरे-धीरे आप संयुक्त मंत्री, प्रधानमंत्री और सभापति तक बनाये गये।

1946 में श्री हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व में बनी तत्कालीन जयपुर रियासत की लोकप्रिय सरकार में और 1951 में श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में बनी राजस्थान की कांग्रेस सरकार में आप राजस्व मंत्री बनाये गये। 1952 में आपने महुआ और मलारना चौड़, दो विधानसभा क्षेत्रों में चुनाव लड़ा और दोनों में विजयी रहे। अतः राज्य की प्रथम लोकतांत्रिक सरकार के आप तीन मार्च, 1952 से . . न

53 तक मुख्यमंत्री रहे। बाद में श्री व्यास की सरकार में 8 जनवरी, 54 से 6 नवम्बर, 54 तक आप वित्त और उपमुख्यमंत्री रहे। 1957 के चुनाव में आप महुआ क्षेत्र से विधायक बने और 1958 में राज्य सभा के सदस्य चुन लिये गये। 1962 में हिण्डौन क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य चुने गये। इस दौरान केन्द्रीय सरकार ने आपको अल्प बचत राष्ट्रीय बोर्ड का अध्यक्ष मनोनीत किया। 1968 में आपने कांग्रेस से त्यागपत्र दिया और चौमूं क्षेत्र से स्वतंत्र पार्टी के टिकिट पर विधानसभा का उपचुनाव लड़ा लेकिन सफल नहीं हो सके। 1977 में आप प्रदेश जनता पार्टी के अध्यक्ष मनोनीत किये गये।

डूंगरराम पवार—श्रीगंगानगर जिले के टीबी (सुर) क्षेत्र से 1977 में जनता पार्टी के और 1985 में लोकदल के टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री डूंगरराम का जन्म एक फरवरी, 1932 को रावतसर कस्बे में हुआ। आप मिडिल तक शिक्षित हैं और तेरह वर्ष तक रावतसर ग्राम पंचायत के पंच रह चुके हैं। 1980 के विधानसभा चुनाव में आप इसी क्षेत्र से हार चुके हैं। हरिजन-कल्याण, कृषि-विकास और ग्रामोत्थान में आपकी विशेष रुचि है। किसानों की विभिन्न समस्याओं को लेकर होने वाले आन्दोलनों में आप सदैव सक्रिय रहे हैं।

डूंगरसिंह पोखरणा (डा.)—जयपुर के सवाई मानसिंह चिकित्सालय एवं मेडीकल कालेज के मेडीसिन विभाग में रीडर डा. डी. एस पोखरणा का जन्म 29 जुलाई, 1936 को उदयपुर जिले के कानोड ग्राम में हुआ। आपने 1959 में इसी कालेज से एम.बी.,बी.एस. की उपाधि प्राप्त कर 1961 में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में सी. ए. एस. के रूप में सेवा में प्रवेश किया। 1985 में आप गैस्ट्रो-एण्ट्रोलॉजी में अध्ययन के लिए राष्ट्रमंडलीय फैलोशिप पर एक वर्ष के लिए इंगलैण्ड गये। आप महावीर इंटरनेशनल तथा एसोसियेशन आफ फिजीशियंस आफ इंडिया के सदस्य हैं। वर्तमान में आप राजधानी की कतिपय स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा कच्ची बस्तियों के अभावग्रस्त और पीड़ित लोगों की स्वास्थ्य-रक्षा के लिये चलाये जाने वाले कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी कर रहे हैं।

ताराचन्द गंगवाल (डा.)—सिद्धहस्त चिकित्सक और रचनात्मक चिंतन करने वाले समाजसेवी डा. ताराचन्द गंगवाल का जन्म 87 वर्ष पूर्व जयपुर जिले के गुढाकदला गांव में एक साधारण परिवार में हुआ। सन् 1928 में आपने एम.बी .बी.एस. परीक्षा उत्तीर्ण कर जयपुर महाराजा के व्यक्तिगत चिकित्सक के रूप में सेवा प्रारंभ की लेकिन इसे आम लोगों की सेवा न समझकर कुछ ही समय बाद छोड़ दिया। आप संभवत: एकमात्र ऐसे चिकित्सक रहे हैं जो जेल के चिकित्सा अधीक्षक, मानसिक चिकित्सालय के अधीक्षक, नाक, कान व आँख के चिकित्सक, फिजीशियन और सर्जन एक साथ रहे। गरीबों को सस्ती दवाईयाँ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से आपने मेडीकल सर्विसेज सोसायटी के तत्वावधान में दवा की दूकानों का संचालन प्रारंभ करवाने में महत्वपूर्ण योगदान किया। गरीब रोगियों को सस्ते से सस्ता अनुसंधान उपलब्ध कराने के उद्देश्य से आपने अनेक वर्षों तक जयपुर में 'सुलभ निदान केन्द्र' का संचालन किया। आपने चिकित्सा व्यवसाय को कभी भी व्यवसाय नहीं समझा और इसे सेवा कार्य के रूप में अपनाया। आप अनेक सामाजिक संस्थाओं से भी सम्बद्ध रहे। जयपुर के सवाई मानसिंह चिकित्सालय के सामने स्थित विशाल धर्मशाला को बनवाने में आपका विशेष योगदान रहा।

ताराचन्द बड़जात्या—जाने-माने फिल्म-निर्माता एवं वितरक श्री ताराचन्द बड़जात्या का जन्म 10 मई, 1914 को नागौर जिले के कुचामन कस्बे में हुआ और आपने कलकत्ता में बी. ए. तक शिक्षा प्राप्त की। प्रारम्भ में आपने बम्बई में एक फिल्म-वितरण संस्थान में नौकरी की और 1942 में "श्री स्क्रीन्स" तथा 1947 में राजश्री पिक्चर्स प्रा. लि. की स्थापना की। बाद में राजश्री प्रोडक्शंस प्रा. लि. की स्थापना की और हिन्दी, तमिल, तेलुगु और कन्नड में अनेक फिल्मों का निर्माण किया। इनमें कुछ फिल्मों को नेशनल तथा फिल्म फेयर अवार्ड भी मिल चुके हैं।

तारादत्त (माथुर) निर्विरोध—राजस्थान के प्रमुख हिन्दी कवि और लेखक श्री तारादत्त निर्विरोध का जन्म 14 जनवरी, 1939 को जयपुर में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम. ए. किया तथा पिछले लगभग 25 वर्षों से साहित्य की विविध विधाओं में निरन्तर लिख रहे हैं। आप [illegible] पत्रिकाओं में प्रकाशित होने के साथ ही आकाशवाणी से भी प्रसारित होती [illegible]

[illegible] व्यक्ति वैशिष्ट्य' पर 15 अगस्त, 1989 को स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर [illegible] पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। सम्प्रति आप राज्य के सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशालय में सहायक निदेशक पद पर कार्यरत हैं।

ताराप्रकाश जोशी (डा.)—विख्यात कवि और भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन [illegible] श्रेणी के अधिकारी, जो वर्तमान में कृषि विभाग में शासन विशिष्ट सचिव तथा प्रशासक राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड हैं, का जन्म 25 जनवरी, 1933 को जोधपुर में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम. ए. तथा पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। प्रारंभ में कुछ वर्षों तक आपने पत्रकारिता की और बाद में राजकीय महाविद्यालय दौसा में व्याख्याता रहे। 1956 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन के बाद आप जमवारामगढ़ में विकास अधिकारी, केकड़ी और जयपुर में उप जिलाधीश, जयपुर में ही नगर [illegible] राजस्व विभाग में शासन उपसचिव, भूप्रबंध अधिकारी जयपुर, आयुर्वेद विभाग में अतिरिक्त निदेशक, समाज-कल्याण विभाग के निदेशक तथा राजस्थान मरुविकास बोर्ड के सचिव रहे।

1981 में भा. प्र. सेवा में पदोन्नति के बाद डा. जोशी राजस्व मंडल के निबन्धक, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के प्रबन्ध निदेशक, शिक्षा निदेशक, विशिष्ट योजना संगठन में शासन उपसचिव तथा परिवहन विभाग में अतिरिक्त आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं। आपके चार [illegible] समाधि-के-प्रश्न, शब्दों-के-टुकड़े, जलते अक्षर तथा कल्पना-के-स्वर प्रकाशित हो चुके हैं।

तुलसी (आचार्य)- जैन धर्म के तेरापंथ सम्प्रदाय के आचार्य श्री तुलसी का जन्म वि. सं. 1971 की कार्तिक शुक्ला द्वितीया को नागौर जिले के लाडनूं कस्बे में हुआ। इस युग के सम्भवतः [illegible] धर्माचार्य हैं जिन्होंने वि.सं. 1982 की पौष कृष्णा पंचमी को मात्र ग्यारह वर्ष की अल्पायु में दीक्षा [illegible] 50 हजार किलोमीटर क्षेत्र की पद-यात्रा की और अपनी असाधारण प्रतिभा के कारण वि. सं. 1993 की भाद्रव शुक्ला नवमी को 22 वर्ष की आयु में धर्म संघ के प्रमुख आचार्य बने। [illegible] आपने पद-यात्रा, साहित्य-सृजन और जनजागरण के क्षेत्र में इतना विपुल कार्य किया है [illegible] और संस्थायें मिलकर भी नहीं कर सकतीं।

आचार्य श्री तुलसी आज जिधर भी निकल जाते हैं, हजारों-हजारों लोग उन्हें सुनने [illegible] हैं। उनके श्रोताओं में केवल जैन अथवा तेरापंथी ही नहीं अजैन भी होते हैं। [illegible] हरिजन-आदिवासी, शिक्षित-अशिक्षित, किसान-मजदूर, आस्तिक-नास्तिक [illegible] न्यायाधीश, डाक्टर-इंजीनियर और यहां तक कि कम्युनिस्ट भी उन्हें सुनने आते हैं और उनके [illegible] शब्द पर चिन्तन-मनन करते हैं। आपके प्रवचन सर्वजन-हिताय होते हैं।

आचार्यश्री और उनका धर्मसंघ देश में बढ़ती हुई हिंसा और अनैतिकता [illegible] प्रयास में जुटा हुआ है। वे प्रतिकूल परिस्थितियों से विचलित [illegible] पर दृढ़ता पूर्वक निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं। उनकी वाणी [illegible] प्रशंसा [illegible] के दर्शन में आपके हैं।

तुलसीराम वर्मा—भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सहकारी समितियों के पंजीयक श्री टी. आर. वर्मा का जन्म 30 जून, 1944 को सवाई माधोपुर जिले के चौथ-का-बरवाडा ग्राम में हुआ। 1975 में सेवा में प्रवेश के बाद आप उप जिलाधीश ब्यावर, जिलाधीश भीलवाडा, जालौर, अजमेर और जोधपुर, पशुपालन एवं मत्स्य पालन तथा ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज आदि विभागों के निदेशक के रूप में कार्य कर चुके हैं।

तेजकरण डंडिया—राजस्थान के प्रमुख शिक्षा शास्त्री तथा श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री तेजकरण डंडिया का जन्म 23 नवम्बर, 1911 को जयपुर में हुआ। एम. ए. और बी. टी. करने के बाद आपने तत्कालीन जयपुर रियासत के शिक्षा विभाग की सेवा में प्रवेश किया तथा वर्षों तक विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के प्रधानाध्यापक रहे। 1967 में बोर्ड आफ सैकेण्डरी एजुकेशन अजमेर के सचिव पद से सेवा-निवृत्त होने के बाद आप विभिन्न सरकारी और गैरसरकारी शिक्षण सम्बन्धी समितियों के सदस्य हैं। आपकी अनेक पुस्तकें पाठ्यक्रमों में अभी भी पढ़ायी जाती हैं।

तेजकुमार—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्व मंडल राजस्थान के अध्यक्ष श्री तेजकुमार का जन्म 9 जुलाई, 1933 को चण्डीगढ में हुआ। 1956 में सेवा में प्रवेश के बाद आप चूरू, बीकानेर, अलवर, अजमेर और जयपुर आदि जिलों के जिलाधीश, भू प्रबन्ध आयुक्त (दो बार), सदस्य राजस्व मंडल, कृषि-उत्पादन आयुक्त एवं शासन सचिव, स्वायत्त शासन, नगरीय-विकास, आवासन, चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, राजस्व, उप निवेशन एवं देवस्थान आदि विभाग के शासन सचिव, राजस्थान सिविल-सेवा अपील न्यायाधिकरण के अध्यक्ष, विकास आयुक्त एवं शासन सचिव ग्रामीण-विकास एव पंचायतीराज विभाग आदि महत्पूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं।

तेजिन्दरसिंह संधू—भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में गृह विभाग में शासन उप सचिव श्री टी. एस. संधू का जन्म 5 मई, 1958 को पंजाब में हुआ। 1981 में आपका सेवा में चयन हुआ तथा आप उप जिलाधीश झालावाड, अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) जोधपुर, सचिव नगर-विकास न्यास एवं पदेन निदेशक राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परियोजना अलवर तथा प्रशासक जयपुर नगर परिषद् आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

थानसिंह जाटव—राजस्थान प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में गृह विभाग में उपसचिव (परिवहन) श्री थानसिंह का जन्म एक अक्टूबर, 1933 को उत्तरप्रदेश के अलीगढ जिले के हाथरस नगर में हुआ। आपने आगरा विश्वविद्यालय से बी.ए. किया तथा लगभग पांच वर्ष तक महालेखाकार कार्यालय में सेवा की। 1961 में आपका राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ। आप उपजिलाधीश छबड़ा, बाड़मेर तथा गंगापुर, अतिरिक्त जिला विकास अधिकारी सवाईमाधोपुर, उप निदेशक एन. सी. सी., अतिरिक्त जिलाधीश भरतपुर, अतिरिक्त आयुक्त परिवहन तथा विभागीय जांच, सचिव राजस्थान आवासन मंडल, अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) झुन्झुनूं, भू-प्रबंध अधिकारी सीकर व जयपुर तथा राजस्थान राज्य खेलकूद परिषद् के सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

थानसिंह मीणा—उदयपुर जिले के सलूम्बर (सु.) क्षेत्र से 1980 और 1985 के चुनावों में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री थानसिंह का जन्म 30 जुलाई, 1946 को जिले के कटेव ग्राम में हुआ। आप विधि स्नातक है और व्यवसाय से वकील है। आप उदयपुर जिला परिषद के उपप्रमुख भी रह चुके हैं।

द्वारकाप्रसाद केडिया—राजस्थान में सड़क और भवनों के प्रमुख ठेकेदार श्री द्वारका प्रसाद केडिया का जन्म झुंझुनू जिले के भाटीवाड ग्राम में एक अप्रेल, 1940 को हुआ। आपने बड़ा गांव राजकीय विद्यालय से हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1961 से 66 तक कृषि विभाग में कार्य किया। 1966 में ही आपने राज्य सेवा से त्याग पत्र देकर ठेकेदारी प्रारम्भ की और राज्य के विभिन्न जिलों में अनेक महत्वपूर्ण निर्माण कार्यों का सम्पादन किया। वर्तमान में आप टैगोर बिल्डर्स तथा मैसर्स द्वारकाप्रसाद केडिया नामक प्रतिष्ठानों में भागीदार हैं और जयपुर-अजमेर राष्ट्रीय राजमार्ग पर सुनियोजित बस्ती टैगोर नगर (प) का निर्माण कर रहे हैं।

द्वारकाप्रसाद गुप्ता- राजस्थान उच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधिपति तथा पूर्व कार्यवाहक राज्यपाल श्री डी.पी. गुप्ता का जन्म 21 जुलाई, 1926 को नसीराबाद में हुआ। बी एससी. और एलएल.बी.की उपाधियां ग्रहण करने के बाद आपने वकालत प्रारंभ की। 1954 में आप राजस्थान विश्वविद्यालय की सीनेट तथा 1962 में राजस्थान बार कौंसिल के सदस्य चुने गये। 24 सितम्बर, 1973 को आप उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति नियुक्त किये गये। 1978–79 में राज्य के लोकायुक्त बनाये गये। बाद में एक अक्टूबर, 1985 से 31 जुलाई 1986 तक आप मुख्य न्यायाधिपति रहे। इसी अवधि में 4 से 19 नवम्बर,1985 तक आपने कार्यवाहक राज्यपाल के रूप में भी कार्य किया।

दयाराम परमार—उदयपुर जिले के खेरवाड़ा (सु अ ज जा) क्षेत्र से 1985 के चुनाव में निर्वाचित निर्दलीय विधायक श्री परमार का जन्म 7 अप्रेल, 1945 को सरेरा ग्राम में हुआ। आपने स्नातकोत्तर तक शिक्षा प्राप्त की है और विधायक बनने से पूर्व 1965 से 81 तक सरेरा ग्राम पंचायत के सरपंच रहे और 1981 में खेरवाड़ा पंचायत समिति के प्रधान चुने गये।

दलजीतसिंह—धौलपुर जिले के बाड़ी क्षेत्र से 1985 के चुनाव में कांग्रेस टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री सिंह का जन्म 29 मई, 1943 को दिल्ली में हुआ। आप दिल्ली विश्वविद्यालय के स्नातक हैं। ग्रामीण-विकास, समाज-कल्याण और खेलकूद में विशेष रुचि रखते हैं।

दाऊदयाल जोशी—कोटा जिले के डीगोद क्षेत्र से 1977 में जनता पार्टी और 1980 तथा 1985 के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी के टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री दाऊदयाल जोशी का जन्म 7 अगस्त, 1931 को कोटा में हुआ। आप स्नातक हैं और व्यवसाय से वैद्य हैं। आप 1967 में कोटा नगर परिषद के अध्यक्ष चुने गये थे।

दामोदर थानवी—राजस्थान के प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्ता तथा राज्य आयोग, उपभोक्ता संरक्षण (उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 के अन्तर्गत स्थापित) के सदस्य श्री दामोदर थानवी का जन्म 2 अगस्त, 1937 को फलौदी में हुआ। आपने एस एम के. कालेज जोधपुर से एम काम की उपाधि प्राप्त की। छात्र जीवन में आप छात्र संघ फलौदी के अध्यक्ष तथा एस एम के. कालेज छात्र वाद-विवाद यूनियन के उपाध्यक्ष रहे। श्री थानवी वर्तमान में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस (इ) के विशिष्ट योजना एवं सूचना प्रकोष्ठ के संयोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा गठित राजस्थान नमक सलाहकार बोर्ड के सदस्य, झोटवाड़ा (जयपुर) औद्योगिक क्षेत्र नियोजक संघ तथा राजस्थान विकास सम्मेलन के मंत्री तथा राज्य देवस्थान बोर्ड के सदस्य हैं। पर्यावरण-सुधार तथा वृक्षारोपण के कार्यों में आपकी सक्रिय रुचि है और विकास सम्मेलन के माध्यम से आपने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण-कार्य किया है।

दामोदर शर्मा—भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला अधिकारी तथा वर्तमान में झालावाड़ के जिला कलक्टर श्री दामोदर शर्मा का जन्म 19 अगस्त, 1953 को जयपुर जिले के इटावा

मोपजी ग्राम में हुआ। आपका 1982 में सेवा में चयन हुआ तथा अब तक उपजिलाधीश सवाई माधोपुर तथा आबूपर्वत, एवं अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) श्रीगंगानगर आदि पदों पर कार्य कर चुके है।

दामोदरदास आचार्य—राजस्थान के प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग तथा महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय से सम्बन्धित शिक्षा के प्रभारी राज्य मंत्री श्री दामोदरदास आचार्य का जन्म 9 अगस्त, 1923 को नागौर जिले के धुरबड़म ग्राम में हुआ। आप एम. ए., एलएल. बी. हैं और व्यवसाय से वकील हैं। आप प्रारंभ से ही कांग्रेस के सक्रिय सदस्य हैं। नागौर नगरपालिका के आप वर्षों तक सदस्य रहे और फरवरी 1982 में अध्यक्ष चुने गये। राज्य सरकार द्वारा आपको नगरपालिकाओं की राजस्व बढ़ाने के लिए वित्तीय साधन जुटाने सम्बन्धी समिति तथा नगरपालिकाओं की विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए सुझाव देने हेतु गठित समिति का सदस्य मनोनीत किया गया। राजस्थान स्वायत्त शासन संस्था संघ के आप पूर्व में उपाध्यक्ष रहे और वर्तमान में अध्यक्ष हैं।

श्री आचार्य मार्च 1985 में प्रथम बार नागौर क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायक चुने गये और 16 अक्टूबर, 1985 को जोशी मंत्रिमंडल में राज्यमंत्री नियुक्त किये गये। 3 जनवरी, 1987 को आपको वर्तमान विभागों सहित संस्कृत शिक्षा, भाषा, पुनर्वास, भाषायी अल्पसंख्यक और निर्वाचन आदि विभागों का स्वतन्त्र रूप से दायित्व सौंपा गया। वर्तमान माथुर मन्त्रिमंडल में आप 11 जून, 1989 को शामिल किये गये।

दिग्विजयसिंह—राजस्थान के पूर्व जागीरदार परिवारों में टोंक जिले के उणियारा ठिकाने को ही एकमात्र यह गौरव प्राप्त है कि उसने 1952 से 1985 तक आठ आम चुनावों में 1980 को छोड़कर शेष सभी में उणियारा विधान सभा क्षेत्र पर अपना वर्चस्व कायम रखा है। 1952 और 1957 के आम चुनावों में जहां श्री दिग्विजयसिंह के पिता राव राजा सरदारसिंह रामराज्य परिषद के टिकिट पर विजयी रहे वहां 1962 और 67 में स्वतंत्र पार्टी और 1977 और 1985 के चुनावों में जनता पार्टी के टिकिट पर दिग्विजयसिंह विजयी रहे। 1972 में जहां श्री सिंह के अग्रज श्री राजेन्द्रसिंह कांग्रेस टिकिट पर सफल रहे वहां 1980 मे श्री दिग्विजयसिंह मामूली अन्तर से कांग्रेस प्रत्याशी के हाथों पराजित हो गये।

23 अप्रेल, 1933 को जन्मे श्री सिंह स्नातकोत्तर है। आप 1957 में बनेठी ग्राम पचायत के सरपंच 1959 में उणियारा पचायत समिति के प्रधान तथा 1962, 1967, 1977 और 1985 के विधान सभा चुनावों में विधायक चुने गये हैं। जून 1977 से फरवरी 1980 तक आप श्री भैरोंसिंह शेखावत की सरकार में कृषि, सामुदायिक-विकास एव पचायतीराज विभाग के मंत्री रहे। आपने 1966 में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में ओटावा (कनाडा) की यात्रा की। आप अजमेर मेयो कालेज के प्रबंध मंडल के सदस्य तथा सवाई मानसिंह पब्लिक स्कूल जयपुर के मंत्री भी है।

दिनकरलाल मेहता- राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री मेहता को वर्तमान पद तक पहुचने में कदम-कदम पर संघर्ष करना पड़ा है। 3 मई, 1930 को बांसवाड़ा जिले में आपका जन्म हुआ और 1950 में स्वयंपाठी छात्र के रूप में बी.ए. और 1953 में एलएल.बी. की उपाधियां प्राप्त करने से पूर्व आपको दो बार बाबूगिरी और दो बार अध्यापक की नौकरी के साथ ही एक बार दूकान भी खोलनी पड़ी। 1954 में आपने उदयपुर में वकालत प्रारंभ की और इसी वर्ष उदयपुर अभिभावक संघ के संयुक्त सचिव चुने गये। 1956 में आप बांसवाड़ा जिला भारत सेवक समाज के मंत्री चुने गये। 1962 से1973 तक आप बांसवाड़ा केन्द्रीय सहकारी बैंक और 1966 से 73 तक नगरपालिका मंडल बांसवाड़ा के अध्यक्ष तथा 1969 से 72 तक राजस्थान राज्य सहकारी संघ की कार्यसमिति के सदस्य रहे। आप बांसवाड़ा के वेद मंदिर तथा स्वामी दयानंद बालमंदिर के न्यासी मंडल के आजीवन सदस्य हैं।

खण्ड 7

श्री मेहता 1974 में राजकीय उप अधिवक्ता और 1975 में अतिरिक्त अधिवक्ता नियुक्त हुए।1977 में आपने त्यागपत्र देकर जयपुर में उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की और 29 अक्टूबर, 1982 को उच्च न्यायालय में न्यायाधिपति नियुक्त किये गये। जुलाई 1983 से आप राजस्थान राज्य विधि सहायता एवं परामर्शदात्री मंडल के कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में भी कार्य कर रहे हैं।

दिनेशकुमार (गोयल)- भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सीकर के जिला कलक्टर श्री दिनेशकुमार का जन्म 25 दिसम्बर, 1953 को अलवर में हुआ। आपने भौतिक शास्त्र में एम.एससी. के बाद आई आई टी नई दिल्ली से इंजीनियरिंग की उपाधि प्राप्त की। 1981 में सेवा में चयन के बाद आप उपखंड अधिकारी बाली, नगर दण्डनायक अजमेर, अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) भरतपुर एवं अजमेर तथा जिला कलक्टर धौलपुर आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं। आपकी एक पुस्तक ''अंडरस्टैंडिंग कम्प्यूटर्स'' प्रकाशित हो चुकी है।

दिनेशचन्द्र गुप्ता—राजस्थान लेखा सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में पेंशन विभाग के निदेशक श्री डी. सी. गुप्ता का जन्म 31 अक्टूबर 1935 को अलवर में एक प्रतिष्ठित खंडेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर में हुई तथा 1960 में आपने राज्य सेवा में प्रवेश किया। आप जिला कोषाधिकारी सीकर, उपायुक्त एवं उप सचिव पुनर्वास विभाग राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में वित्तीय सलाहकार एवं लेखा नियंत्रक, वित्त विभाग में शासन उपसचिव तथा पदेन बजट अधिकारी, निदेशक लेखा एवं कोष आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

दिनेशचन्द्र स्वामी–राज्य सभा के पूर्व सदस्य तथा वर्तमान में राजस्थान के महाधिवक्ता श्री दिनेश स्वामी का जन्म 14 जनवरी,1936 को जयपुर में हुआ। आपने अंग्रेजी साहित्य, अर्थशास्त्र और लोक-प्रशासन विषयों में स्नातकोत्तर तथा विधि स्नातक की उपाधियां प्राप्त की तथा 1961 में वकालत के अपने पैतृक व्यवसाय में प्रवेश किया। 1961 से 76 तक आप राजस्थान विश्वविद्यालय की सीनेट तथा सिण्डीकेट के सदस्य, 1967 से 75 तक राजस्थान विश्वविद्यालय क्रीडा-मंडल के अध्यक्ष 1965 से 70 तक राजस्थान राज्य क्रीडा-परिषद के सदस्य, 1976 से 78 तक भारतीय खेल परिषद के सदस्य अक्टूबर 1970 से 1973 तक जयपुर नगर परिषद के सदस्य, 1973 से 1977 तथा 1986 में जयपुर अभिभावक संघ के अध्यक्ष तथा 1976 से 82 तक राज्य सभा के सदस्य रहे। जनवरी 1980 के लोकसभा चुनाव में जयपुर क्षेत्र से तथा मार्च 1985 के विधान सभा चुनाव में हवामहल क्षेत्र से आप दलीय प्रत्याशी थे लेकिन सफल नहीं हो सके।

जयपुर में उच्च न्यायालय की बैंच स्थापित कराने के लिए श्री स्वामी ने एक लम्बे समय तक संघर्ष किया और शासक दल कांग्रेस तथा भारत सरकार के सामने इस मांग को दृढ़ता से प्रस्तुत किया। 30 मई, 1988 को आप राज्य के महाधिवक्ता नियुक्त किये गये।

दिलीपकुमार दत्ता—भारतीय पुलिस सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी तथा वर्तमान में मुख्यमंत्री कार्यालय में सलाहकार श्री डी. के. दत्ता का जन्म 3 मई, 1930 को जयपुर में हुआ। 1954 में सेवा में प्रवेश के बाद आपने कोटा एवं जयपुर के पुलिस अधीक्षक सी आई डी में उप महानिरीक्षक (इंटलीजेंस), अतिरिक्त महानिरीक्षक, विशिष्ट महानिरीक्षक तथा निदेशक भ्रष्टाचार-उन्मूलन विभाग आदि पदों पर कार्य किया।

दिलीपचन्द्र जैन—भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में गृह विभाग में शासन विशिष्ट सचिव श्री डी. सी. जैन का जन्म 8 दिसम्बर 1934 को किशनगढ़ में

मोपजी ग्राम में हुआ। आपका 1982 में सेवा में चयन हुआ तथा अब तक उपजिलाधीश सवाई माधोपुर तथा आबूपर्वत, एवं अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) श्रीगंगानगर आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

दामोदरदास आचार्य—राजस्थान के प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग तथा महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय से सम्बन्धित शिक्षा के प्रभारी राज्य मंत्री श्री दामोदरदास आचार्य का जन्म 9 अगस्त 1923 को नागौर जिले के घुरवड़ाम ग्राम में हुआ। आप एम. ए., एलएल. बी. हैं और व्यवसाय से वकील हैं। आप प्रारंभ से ही कांग्रेस के सक्रिय सदस्य हैं। नागौर नगरपालिका के आप वर्षों तक सदस्य रहे और फरवरी 1982 में अध्यक्ष चुने गये। राज्य सरकार द्वारा आपको नगरपालिकाओं की राजस्व बढ़ाने के लिए वित्तीय साधन जुटाने सम्बन्धी समिति तथा नगरपालिकाओं की विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए सुझाव देने हेतु गठित समिति का सदस्य मनोनीत किया गया। राजस्थान स्वायत्त शासन संस्था संघ के आप पूर्व में उपाध्यक्ष रहे और वर्तमान में अध्यक्ष हैं।

श्री आचार्य मार्च 1985 में प्रथम बार नागौर क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायक चुने गये और 16 अक्टूबर, 1985 को जोशी मंत्रिमंडल में राज्यमंत्री नियुक्त किये गये। 3 जनवरी, 1987 को आपको वर्तमान विभागों सहित संस्कृत शिक्षा, भाषा, पुनर्वास, भाषायी अल्पसंख्यक और निर्वाचन आदि विभागों का स्वतन्त्र रूप से दायित्व सौंपा गया। वर्तमान माथुर मंत्रिमंडल में आप 11 जून 1989 को शामिल किये गये।

दिग्विजयसिंह—राजस्थान के पूर्व जागीरदार परिवारों में टोंक जिले के उणियारा ठिकाने को ही एकमात्र यह गौरव प्राप्त है कि उसने 1952 से 1985 तक आठ आम चुनावों में 1980 का छोड़कर सभी में उणियारा विधान सभा क्षेत्र पर अपना वर्चस्व कायम रखा है। 1952 और 1957 के आम चुनावों में जहां श्री दिग्विजयसिंह के पिता राव राजा सरदारसिंह रामराज्य परिषद के टिकिट पर विजयी रहे वहीं 1962 और 67 में स्वतंत्र पार्टी और 1977 और 1985 के चुनावों में जनता पार्टी के टिकिट पर दिग्विजयसिंह विजयी रहे। 1972 में जहां श्री सिंह के अग्रज श्री राजेन्द्रसिंह कांग्रेस टिकिट पर [illegible] वहां 1980 में श्री दिग्विजयसिंह मामूली अन्तर से कांग्रेस प्रत्याशी के हाथों पराजित [illegible]।

23 अप्रेल, 1933 को जन्मे श्री सिंह स्नातकोत्तर हैं। आप 1957 में [illegible] ग्राम पंचायत के सरपंच, 1959 में उणियारा पंचायत समिति के प्रधान तथा 1962, 1967, 1977 और 1985 के विधान सभा चुनावों में विधायक चुने गये हैं। जून 1977 से फरवरी 1980 तक आप श्री भैरोंसिंह शेखावत की सरकार में कृषि, सामुदायिक-विकास एवं पंचायतीराज विभाग के मंत्री रहे। आप 1966 में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में [illegible] (कनाडा) की यात्रा की। आप [illegible] प्रबन्ध मंडल के सदस्य तथा सवाई मानसिंह [illegible] जयपुर के [illegible] हैं।

दिनकरलाल मेहता- राजस्थान [illegible] 3 मई, 1930 [illegible] और 1950 में [illegible] 1953 [illegible] 1954 में [illegible] उदयपुर [illegible] 1956 [illegible] 1962 [illegible] 1966 [illegible] 1969 [illegible] 72 [illegible]

हुआ। आपने राजकीय महाविद्यालय अजमेर से बी. कॉम. और अर्थशास्त्र में एम. ए. किया। अगस्त 1953 से नवम्बर, 1957 तक आप शारदा सदन इंटर कालेज मुकुन्दगढ़ और सेठ जी. बी. पोदार कालेज नवलगढ़ में व्याख्याता रहे। 1957 में आपका राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ और जालौर तथा चूरू में अतिरिक्त जिला-विकास अधिकारी, जयपुर और भरतपुर में अतिरिक्त जिलाधीश आदि पदों पर कार्य किया। 1983 में आपकी भारतीय-प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति हुई तथा आपने जिलाधीश डूंगरपुर, उपसचिव लोकायुक्त, गृह, शिक्षा एवं वित्त आदि विभागों में शासन उपसचिव तथा राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में सचिव आदि पदों पर कार्य किया।

दीनबन्धु वर्मा—चित्तौड़गढ़ जिले के कपासन क्षेत्र से 1985 के चुनाव में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री दीनबन्धु वर्मा राजस्थान के अग्रणी नेता श्री माणिक्यलाल वर्मा के पुत्र हैं। आपका जन्म 15 फरवरी, 1938 को अजमेर में हुआ। आपने स्नातकोत्तर तक शिक्षा प्राप्त की है। आपने बचपन से ही अपने माता-पिता के साथ स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और 1938 से 42 तक कई बार जेल-यात्रा की। आप 1982 में उदयपुर क्षेत्र से उपचुनाव में लोकसभा के सदस्य चुने गये थे।

दीपचन्द राठौड़—राजस्थान के भूजल विभाग के प्रभारी राज्य मंत्री श्री दीपचन्द राठौड़ का जन्म 24 अक्टूबर, 1940 को मध्यप्रदेश के मानपुरा ग्राम में हुआ। आप एम.ए. और एलएल.बी. उपाधिधारी हैं और व्यवसाय से व्यापारी हैं। 1974–75 में आप भवानीमंडी नगरपालिका के सदस्य रहे। आपने 1977 और 1980 के विधान सभा चुनावों में कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में डग (सु.) क्षेत्र से भाग्य आजमाया लेकिन सफल नहीं हो सके। मार्च 1985 में इसी क्षेत्र से विधायक चुने गये। 8 फरवरी, 1988 को आपको राजस्थान विधानसभा कांग्रेस (इ) पार्टी का उप मुख्य सचेतक नियुक्त किया गया। 8 जून, 1989 को आप माथुर सरकार में राज्य मंत्री नियुक्त किये गये। आप भूजल विभाग के प्रभारी मंत्री सहित कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार, जन-अभियोग निराकरण, विधि एवं न्याय, संसदीय मामलात तथा निर्वाचन आदि विभागों के भी राज्यमंत्री हैं।

दीपेन्द्रनाथ उपाध्याय—भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री डी एन. उपाध्याय का जन्म 21 नवम्बर, 1929 को भवानीमंडी में हुआ। आपने हर्बर्ट कालेज कोटा से भौतिक शास्त्र में एम. एससी. किया तथा प्रारंभ में वहीं व्याख्याता नियुक्त हुए। 1955 में राज प्र. सेवा में आपका चयन हुआ और आपने नगर दण्डनायक भीलवाड़ा, गृह तथा खनिज आदि विभागों में शासन उप सचिव, राजस्थान लोक सेवा आयोग के सचिव तथा मुख्यमंत्री के उप सचिव आदि पदों पर कार्य किया। 1977 में आपकी भा. प्र. सेवा में पदोन्नति हुई और आप जिलाधीश बीकानेर, जनसम्पर्क निदेशक, कृषि विभाग में शासन उपसचिव, सहकारी विभाग के रजिस्ट्रार, विशिष्ट योजना संगठन में शासन विशिष्ट सचिव तथा राजस्व मंडल के सदस्य रहे।

श्री उपाध्याय ने 1977 में राष्ट्रसंघ की फैलोशिप पर पिछड़े हुए क्षेत्रों के औद्योगिक-विकास के अध्ययन हेतु यूरोपीय देशों की यात्रा की तथा बाद में जापान एवं अन्य पूर्वी देशों में सहकारिता सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। सहकारिता रजिस्ट्रार के आपके कार्यकाल में सोयाबीन परियोजना, सहकारी कताई मिलें, विशाल एवं मझली औद्योगिक योजनाओं का सूत्रपात होने से सहकारिता के माध्यम से ग्रामीण-विकास में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

दुर्गाप्रसाद चौधरी- राजस्थान के जाने-माने स्वाधीनता सेनानी और पत्रकार तथा जयपुर, अजमेर और कोटा से प्रकाशित "दैनिक नवज्योति" के प्रधान सम्पादक श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी का जन्म पौष शुक्ला द्वितीया सम्वत 1963 को नीम-का-थाना में एक प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में हुआ। आपको

उच्च शिक्षा के लिये कानपुर भिजवाया गया जहां कुछ अर्से तक श्रीमती एनीबेसेंट के थियोसोफिकल स्कूल में अध्ययन किया लेकिन शीघ्र ही जलियांवाला बाग हत्याकांड की प्रतिक्रिया स्वरूप पढ़ाई छोड़कर आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े। आपकी प्रारंभिक दीक्षा प्रातः स्मरणीय अर्जुन लाल सेठी जैसे [illegible] क्रांतिकारियों के सान्निध्य में हुई 1930 में आप घर-बार छोड़कर पूरी तरह संघर्ष में सक्रिय हो गये और 1931 में 15 दिनों तक बिजौलिया के किसान सत्याग्रह की बागडोर संभाली। 1932 में इस सिलसिले में आपको 6 माह के कारावास की सजा मिली। बाद में 1939 में आपको अजमेर के नये बाजार की चौपड़ पर अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध भाषण करने पर एक वर्ष की और 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में तीन वर्ष के कारावास की सजायें भुगतनी पड़ी।

स्वतंत्रता संघर्ष में जनता की आवाज को बुलंद करने के लिये आपने अपने ज्येष्ठ भ्राता और वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्री रामनारायण चौधरी के साथ जिस "दैनिक नवज्योति" का प्रकाशन शुरू किया था वह आपकी अटूट लगन, कठोर परिश्रम और दृढ़ संकल्पशक्ति के कारण आज राज्य का प्रमुख संचार माध्यम बन गया है।

दुर्गेश पी. मालू—बिड़ला प्रतिष्ठान मंगलम सीमेंट्स लि. मोड़क (कोटा) के प्रबन्ध निदेशक 60 वर्षीय श्री डी. पी. मालू का जन्म जयपुर जिले के सांभरलेक कस्बे में हुआ। आपने एम. ए. और एलएल. बी. तक शिक्षा प्राप्त की है। जून 1978 में वर्तमान पद पर नियुक्ति से पूर्व आप बिड़ला ग्रुप की ही [illegible] इण्डस्ट्रीज एण्ड काटन मिल्स लि. में परियोजना विभाग के अध्यक्ष थे। श्री मालू के औद्योगिक एवं आर्थिक विषयों पर—विशेषकर सीमेंट उद्योग के बारे में आर्थिक पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित [illegible] रहते हैं।

देवकीनन्दन प्रसाद (डा.)- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में इंदिरा गांधी नहर मंडल के अध्यक्ष डा. डी एन. प्रसाद का जन्म 11 नवम्बर, 1934 को दिल्ली में हुआ। आपने अर्थशास्त्र तथा विकास अर्थशास्त्र में एम ए. तथा पीएच डी. की उपाधि प्राप्त की। 1957 में आपका सेवा में चयन हुआ और प्रशिक्षण के दौरान अलीगढ़ (उ प्र) में कलक्टर तथा बाद में आप राजस्थान में सीकर के जिलाधीश, योजना विभाग में शासन विशिष्ट सचिव, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर खाद्य मंत्रालय में उप सचिव, रक्षा मंत्रालय में संयुक्त सचिव, आपूर्ति मंत्रालय में उच्चाधिकार प्राप्त समिति के अध्यक्ष, खाद्य मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव तथा योजना आयोग के सलाहकार के पद पर कार्य कर चुके हैं। इस बीच 1982–84 में आप राज्य के औद्योगिक सलाहकार तथा जयपुर उद्योग लि. के प्रबन्ध निदेशक भी रहे। आपकी अंग्रेजी में "फूड फार पीस" पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है।

देवदत्त भारद्वाज—*देश में प्रथम श्रेणी के पत्रकार और राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के पूर्व* अध्यक्ष श्री डी. डी. भारद्वाज, जिन्हें लोग श्रद्धावश "पापाजी" के नाम से सम्बोधित करते हैं, का जन्म 5 दिसम्बर, 1895 को उ. प्र. के मेरठ जिले के बुधपुर ग्राम में हुआ। आपने मेरठ, आगरा व लुधियाना में शिक्षा प्राप्त की तथा इलाहाबाद के विख्यात आंग्ल दैनिक "लीडर" में सर सी. वाई. चिन्तामणि जैसे मनीषी सम्पादक के सान्निध्य में 17 वर्षों तक उप सम्पादक के रूप में पत्रकारिता की दीक्षा प्राप्त की। सन् 1938 में आपने श्रमजीवी पत्रकारों को संगठित किया और अपनी मांगों को लेकर हड़तालें की। बाद में आप हिन्दुस्तान टाइम्स में रहे और यहां भी श्रमजीवी पत्रकारों के हितों को लेकर आपके नेतृत्व में लम्बी हड़ताल चली। 1947 के प्रारंभ में आप "सिव्ल आब्जर्वर" छोड़कर "स्टेट्समैन" की सेवा में चले गये। कुछ ही अर्से बाद आप "स्टेट्समैन" के स्टाफ संवाददाता बनकर राजस्थान में आ गये और सेवा-निवृत्त

के बाद स्थायी रूप से यहीं के होकर रह गये। राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के आप संस्थापकों में और वर्षों तक इसके अध्यक्ष रहे हैं। आपके नेतृत्व में संघ ने समाचार पत्र प्रकाशकों की मनमानी के वि बड़ी-बड़ी लड़ाइयां लड़ी हैं।

देवीलाल—भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा (सु) क्षेत्र से 1980 और 1985 के आम चुनावों कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री देवीलाल का जन्म कोछन कलां ग्राम में हुआ। आपकी अ 60 वर्ष है। आप मात्र साक्षर हैं और व्यवसाय से कृषक हैं। आप ग्राम पंचायत कोछन कलां के 15 व तक पंच रह चुके हैं।

देवीशंकर तिवाड़ी—प्रमुख समाजसेवी तथा राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्र देवीशंकर तिवाड़ी का जन्म 27 अक्टूबर, 1903 को हुआ। एम.ए., एलएल.बी. करने के बाद 1930 ं आपने जयपुर में वकालत प्रारम्भ की। 1945 मे आप जयपुर नगर परिषद् के अध्यक्ष तथा 1946 से 4९ तक तत्कालीन जयपुर राज्य की लोकप्रिय सरकार में शिक्षा तथा स्वास्थ्य मन्त्री रहे। 1951 से 58 तव आप लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष रहे। 1947 से 62 तक राजस्थान विश्वविद्यालय की सिंडीकेट के सदस्य तथा 1958 से 62 तक जयपुर नगर विकास न्यास के अध्यक्ष रह चुके हैं। जयपुर स्थित लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय के संस्थापक अध्यक्ष तथा अनेक सामाजिक संस्थाओं से भी आप संबद्ध है।

देवीसिंह भाटी—1980 और 1985 के आम चुनावों में बीकानेर जिले के कोलायत निर्वाचन क्षेत्र से चुने गए जनता पार्टी के विधायक श्री देवीसिंह भाटी का जन्म 15 अप्रेल, 1948 को जिले के बरसालपुर ग्राम में हुआ। हायर सैकेण्ड्री तक शिक्षित श्री भाटी 1978-81 के दौरान अपनी ग्राम पंचायत के सरपंच भी रह चुके हैं।

देवेन्द्रकुमार जगदेव (डा.)—राजस्थान के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अवकाश प्राप्त निदेशक डा. डी.के. जगदेव का जन्म 5 मई, 1931 को वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी नगर में हुआ। देश के विभाजन के बाद आपका परिवार भारत में आ गया। आपने एम.बी.,बी.एस. नागपुर से, 1959 में कलकत्ता से डी. पी. एच. तथा 1969 में केलिफोर्निया से एम. पी. एच. किया। 1959 में आप जयपुर नगर परिषद् में स्वास्थ्य अधिकारी, 1960 चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में सहायक निदेशक, 1968 में उपनिदेशक, 1975 में अतिरिक्त निदेशक और 1984 में निदेशक (परिवार-कल्याण कार्यक्रम) बनाये गये। आपने विश्व स्वास्थ्य संगठन की फैलोशिप पर एक वर्ष तक अमेरिका में रहकर विशेष पाठ्यक्रम किया तथा विश्व बैंक के दल के सदस्य के रूप में वाशिंगटन, चीन इण्डोनेशिया, यूगोस्लाविया और सिंगापुर की यात्रा की।

देवेन्द्र कुमार मीणा—उदयपुर जिले के गोगून्दा (सुरक्षित) क्षेत्र के कांग्रेसी विधायक श्री देवेन्द्रकुमार का जन्म ग्राम खारबर में हुआ। हायर सैकेण्ड्री तक शिक्षित श्री मीणा इससे पूर्व 1967 में इसी निर्वाचन क्षेत्र से तथा 1980 में सराड़ा (सुरक्षित) क्षेत्र से निर्वाचित हो चुके हैं। सराड़ा क्षेत्र से 1977 म चुनाव आप हार गए थे।

देवेन्द्रराज मेहता—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा में भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर प्रधानमंत्री सचिवालय में अतिरिक्त सचिव (आर्थिक मामलात) श्री डी. आर. मेहता का जन्म 25 जून, 1937 को जोधपुर में हुआ। बी. ए. और एलएल.बी के बाद 1961 में आपने सेवा में प्रवेश किया और बाड़मेर जैसलमेर तथा सीकर आदि जिलों के

खण्ड 7

निर्वाचन पर्यटन उद्योग, मन्त्रि प्रशासन एवं वित्त आदि विभागों में शासन उपसचिव, सार्वजनिक उपक्रम तथा खनिज आदि विभागों और मुख्यमंत्री के पृथक-पृथक अवधि में दो बार सचिव, उद्योग, भाषा सूचना एवं जन सम्पर्क योजना तथा संस्थागत वित्त आदि विभागों के शासन सचिव के रूप में कार्य किया। वर्तमान प्रतिनियुक्ति से पूर्व भी आप केन्द्र में वित्त मंत्रालय में संयुक्त सचिव (बैंकिंग) के पद पर कार्य कर चुके हैं।

श्री मन्ना महावीर विकलांग सहायता समिति जयपुर के वर्षों से मंत्री हैं जिसने विकलांगों के पुनर्वास के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है।

देवेन्द्रराव पुरी—भारतीय पुलिस सेवा सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के अध्यक्ष श्री डी. आर. पुरी का जन्म एक सितम्बर, 1932 को हुआ। बी.ए., एलएल.बी. करने के बाद 1956 में आप भारतीय पुलिस सेवा में चयनित हुए। आप राज्य पुलिस प्रशासन में महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं। 1977 से 1982 तक आप प्रतिनियुक्ति पर दिल्ली स्थित सीमा सुरक्षा बल के मुख्यालय में उपमहानिरीक्षक उपनिदेशक (प्रशासन) तथा राज्य पुलिस में विशिष्ट महानिरीक्षक पद पर भी कार्य कर चुके हैं।

देवेन्द्रसिंह—कुकिंग गैस डिस्ट्रीब्यूटर्स एसोसियेशन जयपुर के महामन्त्री श्री देवेन्द्रसिंह शेखावाटी क्षेत्र के विख्यात नवलगढ़ ठिकाने के पूर्व जागीरदार रावल मदनसिंह के पौत्र और कुं. संग्रामसिंह के पुत्र हैं। आपका जन्म 19 अगस्त 1951 को जोधपुर में हुआ और आपने जबलपुर विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। आप जयपुर गैस सर्विस, नम्रता ट्रेडिंग हाउस तथा सुहाता कार्गो मूवर्स आदि व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में भागीदार तथा रूपसिंह मेमोरियल ट्रस्ट नवलगढ़ के न्यासी होने के साथ ही राजपूत समाज के विभिन्न संगठनों से संबद्ध हैं।

देवेन्द्रसिंह (बड़लियास)—राजस्थान के पूर्व कृषि राज्यमन्त्री श्री देवेन्द्रसिंह का जन्म 12 अप्रैल, 1933 को भीलवाड़ा जिले के बड़लियास ग्राम में हुआ। आपने सेंट एंसल्म स्कूल अजमेर में सीनियर कैम्ब्रिज तक शिक्षा प्राप्त की। व्यवसाय से आप कृषक हैं। आप बड़लियास ग्राम पंचायत के 1952 से 1965 तक सरपंच तथा कोटडी पंचायत समिति के 1965 से 1977 तक प्रधान रहे। तीन वर्ष तक आप केन्द्रीय सहकारी बैंक भीलवाड़ा के उपाध्यक्ष भी रहे। 1980 के आम चुनाव में आप मनेडा क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायक चुने गये तथा जून 1980 में गुलाबपुरा सहकारी सूती मिल के अध्यक्ष मनोनीत किये गये। बाद में आप श्री शिवचरण माथुर की सरकार में कृषि विभाग के प्रभारी राज्यमन्त्री नियुक्त किये गये। 1985 के चुनाव में आप दलीय टिकिट प्राप्त करने में विफल रहे।

देवेन्द्रसिंह भाटी—भारतीय पुलिस सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भारत सरकार के मंत्रिमंडल सचिवालय में उपनिदेशक (एसपीजी) श्री देवेन्द्रसिंह का जन्म 31 दिसम्बर, 1938 बीकानेर जिले में हुआ। 1962 में भारतीय पुलिस सेवा में चुने जाने के बाद 1968 से 1982 तक आप केन्द्र सरकार में प्रतिनियुक्ति पर रहे। जनवरी 1983 से मई 1985 तक जयपुर रेंज के उप महानिरीक्षक रहे तथा 7 मई, 1985 से वर्तमान पद पर कार्यरत हैं।

दौलतमल भंडारी—राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य-न्यायाधिपति श्री दौलतमल भंडारी का जन्म 16 दिसम्बर, 1907 को जयपुर में हुआ। आपने जयपुर और लखनऊ में शिक्षा प्राप्त की तथा एम.ए. और एलएल.बी. की उपाधियां प्राप्त करने के बाद 1930 में जयपुर में वकालत प्रारंभ की। छात्र जीवन में राजनीति में सक्रिय रुचि लेने के कारण आप जयपुर राज्य प्रजा मंडल की गतिविधियों से

जुड़ गये और 1945 में जयपुर राज्य की धारा सभा के सदस्य और प्रजामंडल के नेता चुने गये। 1947 में श्री हीरालाल शास्त्री के लोकप्रिय मंत्रिमंडल में आप सार्वजनिक निर्माण,पुनर्वास तथा रसद मंत्री नियुक्त किये गये। देश-विभाजन के फलस्वरूप जयपुर राज्य में आने वाले पाक शरणार्थियों के पुनर्वास की व्यवस्था आपने मुस्तैदी से की। 1952 के प्रथम चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में लोकसभा सदस्य चुने गये।

26 जुलाई,1955 को आप राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति और 18 दिसम्बर,1968 को मुख्य न्यायाधिपति नियुक्त किये गये। इस दौरान आप राजस्थान राजस्व विधि आयोग के 1962 और 1965 में अध्यक्ष रहे तथा राज्य में राजस्व कानूनों के प्रशासन और पुनर्गठन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण प्रतिवेदन प्रस्तुत किये। उच्च न्यायालय से अवकाश ग्रहण करने के बाद आप भारत सरकार द्वारा नर्मदा जल आयोग के अध्यक्ष नियुक्त किये गये।

दौलतराम सारण—पूर्व सांसद और जनता दल नेता श्री दौलतराम सारण का जन्म चूरू जिले की पचेरा ढाणी में सन् 1924 में हुआ। सार्वजनिक कार्यों में आपकी प्रारंभ से ही सक्रिय रुचि रही और आप कांग्रेस से जुड़ गये। 1957 और 1962 के चुनाव में आप कांग्रेस टिकिट पर तथा 1967 में निर्दलीय रूप से डूंगरगढ़ क्षेत्र से विधायक चुने गये। आप प्रथम बार मार्च 1957 में सुखाडिया मंत्रिमंडल में कृषि उपमंत्री नियुक्त हुए तथा दिसम्बर 1966 में मंत्रिमंडल तथा कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता से त्याग-पत्र दे दिया। 1967 से 1972 तक आप विधान सभा में प्रतिपक्ष के सशक्त नेता के रूप में उभरे। 1972 के चुनाव में आप पराजित हो गये और आपातकाल के 19 महीनों में जेल में बंद रहे।

1977 के आम चुनाव में चूरू क्षेत्र से जनता पार्टी और 1980 के चुनाव में लोकदल के टिकिट पर आप लोकसभा सदस्य चुने गये। 1984 के चुनाव में आप इसी क्षेत्र से पराजित हो गये। 1987 में लोकदल का विभाजन होने पर आप अजीतसिंह के नेतृत्व वाले लोकदल में रहे और जनता दल में विलीन होने तक इसके प्रदेशाध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे।

धनराज मीणा—राजस्थान के सहकारिता, सिंचायी, श्रम एवं नियोजन तथा जनजाति क्षेत्रीय विकास आदि विभागों के उप मंत्री श्री धनराज मीणा का जन्म चित्तौड़गढ़ जिले की अरणोद तहसील के बसलाई ग्राम में हुआ। आप स्नातक हैं और व्यवसाय से कृषक हैं। 1981 में ग्राम पंचायत अचल के सरपंच तथा मार्च 1985 में प्रतापगढ (सु.) क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये। 11 जून, 1989 को आप माथुर मंत्रिमंडल में उपमंत्री नियुक्त किये गये।

धर्मवीर—भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जिला कलक्टर जयपुर श्री धर्मवीर भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी स्वर्गीय ताराचन्द, जो जालोर पुलिस अधीक्षक के पद पर रहते हुए डाकुओं से मुठभेड़ में वीरगति को प्राप्त हुए थे, के पुत्र हैं। आपका जन्म 13 जनवरी, 1935 को गंगानगर में हुआ। 1957 में आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये तथा प्रादेशिक परिवहन अधिकारी उदयपुर तथा परिवहन विभाग में उपायुक्त, जयपुर दुग्ध वितरण योजना में महाप्रबन्धक, जनसम्पर्क एवं समाज कल्याण आदि विभागों में निदेशक तथा खाद्य एवं नागरिक रसद विभाग में शासन उपसचिव आदि पदों पर कार्य किया। 1981 में भा. प्र. सेवा में पदोन्नति के बाद आप राज्य के श्रम आयुक्त, निदेशक नियोजन विभाग, जिलाधीश उदयपुर तथा कोटा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में शासन उपसचिव तथा विशिष्ट योजना विभाग में विशिष्ट शासन सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

धर्मसिंह मीणा—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में विशिष्ट योजनाओं, एकीकृत ग्रामीण-विकास, 20 सूत्री कार्यक्रम तथा मरु-विकास विभाग के शासन सचिव श्री डी. एम. मीणा का जन्म 13 जुलाई 1944 को भरतपुर जिले के सूनापुर ग्राम में हुआ। आपने राजस्थान कालेज जयपुर से बी.ए. तथा महाराणा भूपाल कालेज उदयपुर से भूगोल में एम ए. किया। 1970 में सेवा में प्रवेश के बाद और जैसलमेर और नागौर के जिलाधीश उपनिवेशन आयुक्त, राजस्व, कृषि और कार्मिक आदि विभागों में शासन उपसचिव, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में प्रबन्ध निदेशक, कृषि विभाग में शासन विशिष्ट सचिव तथा पदेन प्रशासक राजस्थान राज्य कृषिविपणन बोर्ड, सामान्य प्रशासन एवं मंत्रिमंडल सचिवालय में शासन विशिष्ट सचिव मुख्य निर्वाचन अधिकारी., सदस्य राजस्व मंडल तथा शासन वन एवं पर्यावरण-सुधार आदि विभागों के शासन सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

धर्मसिंह सागर—भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में नागौर के जिला कलक्टर श्री धर्मसिंह सागर का जन्म 3 मई 1945 को भरतपुर जिले में हुआ। प्रारंभ में आप भारत सरकार के दृश्य एवं श्रव्य प्रचार निदेशालय की सेवा में रहे तथा 1976 में भा प्र सेवा में चुने गये। आप बाडमेर सीकर और चित्तौड़गढ के जिला कलक्टर सहित अल्प बचत एवं राज्य लाटरी विभाग के निदेशक रह चुके है।

धीरचन्द्र सामंत—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में योजना विभाग के आयुक्त एवं शासन विशिष्ट सचिव श्री डी सी सामंत का जन्म एक जुलाई 1949 को बस्ती (उ. प्र.) में हुआ। 1972 में सेवा में प्रवेश के बाद आप उप जिलाधीश हिण्डौन, झुंझनूं, सिरोही, कोटा और अजमेर के जिलाधीश, उद्योग तथा कृषि आदि विभागों के निदेशक पद पर कार्य कर चुके है।

धूलेश्वर मीणा—राजस्थान से कांग्रेस टिकिट पर दूसरी बार चुने गये राज्यसभा सदस्य श्री धूलेश्वर मीणा का जन्म 5 अगस्त, 1935 को उदयपुर जिले की खैरवाडा तहसील के खोखदरा ग्राम में हुआ। एम. ए. करने के बाद 1961 में आपने कुछ समय के लिए अध्यापन कार्य किया। 1962 तथा 1967 में आप उदयपुर क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर लोकसभा सदस्य चुने गये लेकिन 1971 में स्वतन्त्र पार्टी के उम्मीदवार से पराजित हो गए। बाद में आप राजस्थान लोकसेवा आयेग के सदस्य मनोनीत किये गये।

नटवरसिंह- भरतपुर क्षेत्र से दिसम्बर 1984 में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित लोकसभा सदस्य तथा वर्तमान मे भारत के विदेश राज्य मंत्री श्री नटवरसिंह का जन्म 16 मई,1931 को भरतपुर में हुआ और बी.ए. की उपाधि ग्रहण करने के बाद 1953 में आपने भारतीय विदेश सेवा में प्रवेश किया।

नवम्बर 1984 में सेवा से त्यागपत्र देकर सार्वजनिक जीवन में प्रवेश से पूर्व आप 1956 से 58 तक चीन में भारतीय दूतावास में तृतीय सचिव, 1961 से 66 तक संयुक्त राष्ट्र संघ में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल के परामर्शदाता, 1966-67 में प्रधानमंत्री के उपसचिव, 1967-70 के बीच प्रधानमंत्री सचिवालय में निदेशक, 1970-71 में प्रधानमंत्री के संयुक्त सचिव,1971 से 73 तक लन्दन में उप उच्चायुक्त, 1973 से 77 तक जाम्बिया और बोत्सवाना में उच्चायुक्त, 1980 से 82 तक पाकिस्तान में राजदूत, 1982 से 84 तक विदेश मंत्रालय में सचिव, मार्च 1983 में दिल्ली में आयोजित सातवें गुट-निरपेक्ष शिखर सम्मेलन के महासचिव तथा नवम्बर 1983 में नई दिल्ली में सम्पन्न राष्ट्रमंडलीय देशों के प्रधानों के सम्मेलन के मुख्य समन्वयक रहे। लोकसभा सदस्य चुने जाने के बाद

राजीव गांधी मंत्रिमंडल में प्रारंभ में आप कृषि एवं ग्रामीण-विकास मंत्रालय में उर्वरक राज्य मंत्री तथा बाद में विदेश राज्य मंत्री नियुक्त किये गये।

नत्थीसिंह—भरतपुर जिले के कुम्हेर निर्वाचन क्षेत्र से 1985 के आम चुनाव में लोकदल टिकिट पर चुने गये विधायक श्री नत्थीसिंह का जन्म 28 दिसम्बर, 1929 को जिले के उसरानी ग्राम में हुआ। प्रारंभ में आपने स्वतंत्रता आन्दोलन में हिस्सा लिया। एम. ए., एलएल. बी. करने के बाद आपने भरतपुर में वकालत शुरू की।

आप 1959 में कुम्हेर पंचायत समिति के प्रथम प्रधान चुने गये। 1962 और 1967 के चुनावों में आप भरतपुर क्षेत्र से क्रमशः निर्दलीय और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के प्रत्याशी के रूप में विधायक चुने गये। 1974 में आप कांग्रेस टिकिट पर राज्य सभा के सदस्य चुने गये। 1979 में आप कांग्रेस छोड़कर लोकदल के सदस्य बन गये। श्री सिंह राज्य के सहकारिता क्षेत्र के शीर्ष नेताओं में हैं, जो भरतपुर जिला सहकारी भूमि-विकास बैंक और भरतपुर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक से लेकर राजस्थान स्टेट को-आपरेटिव बैंक तथा ''नाफेड'' तक के अध्यक्ष और राष्ट्रीय सहकारी यूनियन के उपाध्यक्ष रह चुके हैं।

नन्दकिशोर आचार्य (डा.)—राजस्थान के जाने-माने हिन्दी लेखक और कवि श्री नन्दकिशोर आचार्य का जन्म 31 अगस्त, 1945 को बीकानेर में हुआ। आपने इतिहास और अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. करने के बाद पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त कीं। आप प्रारंभ में पत्रकारिता से जुड़े और लगभग आधी दर्जन साहित्यिक पत्रिकाओं में सम्पादन का कार्य किया। वर्तमान में आप रामपुरिया कालेज बीकानेर में इतिहास के व्याख्याता हैं। आपकी काव्य, नाटक और आलोचना सम्बन्धी लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें 'वह एक समूह था' नामक काव्यकृति पर 1985–86 का राजस्थान साहित्य अकादमी का ग्यारह हजार रुपये का सर्वोच्च मीरा पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

नन्दकिशोर खंडेलवाल—जयपुर के प्रमुख समाज-सेवी श्री नन्दकिशोर खंडेलवाल का जन्म 30 अप्रेल, 1935 को जयपुर के निकट सिरसी ग्राम में वहां के प्रतिष्ठित कट्टा परिवार में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम. ए. और हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से ''विशारद'' की उपाधि प्राप्त की। आपने समाज-सेवा की विभिन्न प्रवृत्तियों में छात्र-जीवन से ही सक्रिय रुचि ली। आप राजस्थान स्टेट इंडस्ट्रियल को-आपरेटिव बैंक लि. जयपुर के अध्यक्ष, खंडेलवाल वैश्य युवक मंडल के मंत्री, जयपुर के खंडेलवाल समाज की प्रमुख संस्था श्री खंडेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा के प्रधानमंत्री तथा लायंस क्लब के संचालक मंडल के सदस्य रहे। आप कनाडा, अमरीका और यूरोप का भ्रमण कर चुके हैं।

नन्दकिशोर जैन—जयपुर के प्रमुख विद्युत मोटर्स एवं पंप सैट्स व्यवसायी श्री जैन का जन्म 15 जून, 1939 को चौमूं में हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर में हुई। 1963 में आपने जयपुर में मैसर्स एलाइड एजेंसीज की स्थापना कर व्यवसाय प्रारम्भ किया। 1980 में आपने उत्पादन के क्षेत्र में प्रवेश किया और जयपुर के विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र में अंकुर इलेक्ट्रिकल्स प्रा. लि. की स्थापना की। 1987 में आपने ग्रेनाइट की कटिंग तथा पालिशिंग का कार्य प्रारम्भ किया तथा ग्लोबल ग्रेनी मार्बल लि. नामक कम्पनी स्थापित की। आप दोनों प्रतिष्ठानों के संचालक मंडल के सदस्य हैं। राजस्थान मशीनरी एवं विद्युतीय व्यापार मंडल जयपुर के आप संस्थापकों में हैं तथा इसकी कार्यसमिति के सदस्य, मंत्री तथा अध्यक्ष रह चुके हैं। आप जयपुर क्लब के सदस्य हैं।

नन्दकिशोर पारीक—राजस्थान के विख्यात पत्रकार और कला, संस्कृति व इतिहास सम्बन्धी विषयों के मर्मज्ञ श्री नन्दकिशोर पारीक का जन्म तीन सितम्बर, 1926 को [illegible] में हुआ। आपने बी ए

एलएल.बी. और विशारद की उपाधियां प्राप्त की। 18 वर्ष की अल्पायु में आपने ''पारीक'' और ''चालनी'' नामक मासिक पत्रों का प्रकाशन और सम्पादन शुरू किया। 1946 में दैनिक ''लोकवाणी'' के सह सम्पादक नियुक्त हुए और साथ ही ''स्टेट्समैन'' नई दिल्ली का जयपुर में प्रतिनिधित्व किया। 1954 में राजस्थान जनसम्पर्क सेवा में प्रवेश से पूर्व कुछ दिनों के लिए आपने ''काला कोट'' भी पहिना लेकिन आपकी साहित्यिक अभिरुचि और अत्यधिक भावना शीलता के साथ तालमेल नहीं बैठा। 1981 में आप इस विभाग के संयुक्त निदेशक के पद से सेवा-निवृत्त हुए। 1979 में राज्य सरकार ने लेखन व पत्रकारिता के क्षेत्र में विशिष्ट योग्यता के लिए पुरस्कृत किया। सेवा-निवृत्ति के बाद लगभग डेढ़ वर्ष तक आप ''राजस्थान पत्रिका'' के जोधपुर संस्करण के स्थानीय सम्पादक रहे।

श्री पारीक को जयपुर के गली-मोहल्लों, साहित्य, संस्कृति, लोक और लीक से गहरा लगाव है। 1972 से ''राजस्थान पत्रिका'' में ''नगर परिक्रमा'' नामक स्थायी स्तंभ के माध्यम से आप जयपुर के अभिन्नभूत जन-जीवन के विविध अनछुए सामाजिक, साहित्यिक, कलात्मक और सांस्कृतिक पहलुओं को उजागर करने के अनुष्ठान में लगे हुए हैं।

नन्दकिशोर बेरवा—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में खनिज विभाग के शासन सचिव श्री एन. के. बेरवा का जन्म एक जनवरी 1943 को टोंक जिले में हुआ। 1967 में सेवा में चयन के बाद आप बूंदी एवं जालोर के जिलाधीश, आबकारी आयुक्त, राजस्थान लोक सेवा आयोग के सचिव, कृषि, उद्योग, सार्वजनिक उपक्रम और कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार आदि विभागों में शासन विशिष्ट सचिव, रीको एवं राजस्थान राज्य खनिज-विकास निगम के प्रबंध निदेशक तथा राज्यपाल के सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

नन्दकिशोर शर्मा—राजस्थान की स्वर्ण नगरी जैसलमेर की कला, संस्कृति और इतिहास को अपने कृतित्व से उजागर करने वाले श्री नन्दकिशोर शर्मा का जन्म 1 जनवरी, 1938 को जैसलमेर में हुआ। आपने इतिहास में एम. ए. करने के बाद बी. एड. का प्रशिक्षण प्राप्त किया और वर्तमान में सागरमल गोपा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्यापन कर रहे हैं। आपके लेख और कविताएं राज्य के पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने के साथ ही समय-समय पर आकाशवाणी से प्रसारित होती रहती है। आपकी पुस्तक ''दी गोल्डन सिटी'' अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन और इटालियन भाषा में प्रकाशित हो चुकी है। अन्य प्रकाशित कृतियों में जैनतीर्थ जैसलमेर, वैल्लमण्डल, जैसलमेर का सम्पूर्ण इतिहास, त्रिकूटगढ़-जैसलमेर, झरोखों-की-नगरी जैसलमेर तथा जैसलमेर की लोक देवियां आदि शामिल हैं।

नन्द चतुर्वेदी- राजस्थान के वरिष्ठ हिन्दी कवि और साहित्यकार श्री नन्द चतुर्वेदी का जन्म चैत्र शुक्ला एकादशी सम्वत 1999 को मेवाड़ के पीपल्या ग्राम में हुआ। आपकी गद्य-पद्य दोनों में समान रूप से गति है। राजस्थान साहित्य अकादमी ने वर्ष 1978-79 मे आपको विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित किया तथा आपकी आलोचना कृति ''शब्द संसार की यायावरी'' पर ग्यारह हजार रुपये का सर्वोच्च मीरा पुरस्कार प्रदान किया।

नन्दलाल कानूनगो—राजस्थान लेखा सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में हरिश्चंद्र माथुर राजकीय लोक प्रशासन संस्थान के अतिरिक्त निदेशक श्री नन्दलाल कानूनगो का जन्म 26 फरवरी, 1935 को जयपुर जिले के नायन ग्राम में एक साधारण खंडेलवाल परिवार में हुआ। आपने नवलगढ़ से बी. काम. और जयपुर से एम. काम. किया। 1958 में राजस्थान लेखा सेवा में चयन के बाद आप चित्तौड़गढ़ और जोधपुर में जिला कोषाधिकारी, राजस्थान विश्वविद्यालय में उप

रजिस्ट्रार (वित्त), गंगानगर शुगर मिल्स में वित्तीय सलाहकार, रीको में निदेशक (वित्त), वित्त विभाग में शासन उप सचिव तथा राजस्थान जल-वितरण एवं सीवरेज प्रबन्ध मंडल के वित्तीय परामर्शदाता एवं मुख्य लेखाधिकारी आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

श्री कानूनगो श्री खंडेलवाल वैश्य शिक्षा समिति जयपुर के अध्यक्ष हैं जो राजधानी में खंडेलवाल कालेज सहित चार शिक्षण संस्थानों का संचालन करती है।

नमोनारायण मीणा— भारतीय पुलिस सेवा की सुपरटाइम-वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में कोटा रेंज के पुलिस उप महानिरीक्षक श्री एन. एन. मीणा का जन्म 24 दिसम्बर, 1943 को सवाईमाधोपुर जिले के बामणवास ग्राम में वरिष्ठ कांग्रेस कार्यकर्ता श्री श्रीनारायण मीणा के यहां हुआ। आपकी शिक्षा राजस्थान कालेज जयपुर तथा महाराणा भूपाल कालेज उदयपुर में हुई। आपने भूगोल में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की है। 1969 में सेवा में प्रवेश के बाद आप डूंगरपुर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, जोधपुर, गंगानगर, उदयपुर, जयपुर जिला और जयपुर नगर के पुलिस अधीक्षक तथा बीकानेर रेंज के उप महानिरीक्षक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

नरपतराम बरवड़— राजस्थान के राजस्व एवं भूमि-सुधार तथा मरु विकास मंत्री श्री बरवड का जन्म 22 जनवरी, 1941 को फलौदी तहसील के पीलवा ग्राम में हुआ। आपने एम. ए. और एलएल. बी. की उपाधियां प्राप्त करने के बाद वकालत शुरू की। सार्वजनिक कार्यों में प्रारंभ से ही सक्रिय रुचि होने के कारण आप नारायण आयुर्वेदिक कालेज जोधपुर के अध्यक्ष हैं तथा जोधपुर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक और जोधपुर जिला सहकारी अनुसूचित जाति सेवा के संघ के अध्यक्ष रह चुके हैं।

श्री बरवड 1977, 1980 और 1985 के तीनों आम चुनावों में जोधपुर नगर के सूरसागर (सु. अ.जा.) निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायक चुने गये हैं। 6 फरवरी, 1988 को श्री शिवचरण माथुर के मंत्रिमंडल में आप राजस्व एवं भूमि-सुधार तथा उपनिवेशन मंत्री नियुक्त किये गये। 12 जून 1989 को आपको उपनिवेशन के स्थान पर मरु-विकास विभाग दिया गया।

नरसिंहदास बांगड़—विख्यात उद्योगपति श्री नरसिंहदास बांगड का जन्म *1913* में हुआ। आपका परिवार राजस्थान के शेखावाटी अंचल से संबद्ध है। आप बांगड समूह की अनेक कम्पनियों के अध्यक्ष एवं निदेशक हैं। कलकत्ता स्टॉक एक्सचेंज से भी आप पिछले लगभग पांच दशकों से जुड़े हुए हैं। बैंकों के राष्ट्रीयकरण से पूर्व आप बैंक आफ बड़ौदा के निदेशक मण्डल के सदस्य भी रह चुके हैं।

नरेन्द्रकुमार बुडानिया—चूरू क्षेत्र से निर्वाचित लोकसभा सदस्य श्री नरेन्द्रकुमार बुडानिया चूरू जिले के मूल निवासी हैं। दिसम्बर, 1984 में इस क्षेत्र से निर्वाचित सदस्य श्री मोहरसिंह राठौड़ के निधन के बाद 16 दिसम्बर, 1985 को हुए उप चुनाव में आप कांग्रेस टिकिट पर चुने गए। इससे पूर्व आप अपनी ग्राम पंचायत के सरपंच भी चुने गए थे। वर्तमान में आप अखिल भारतीय युवक कांग्रेस (इ) के महामंत्री भी हैं।

नरेन्द्रकुमार वर्मा—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में खाद्य एवं नागरिक रसद विभाग के शासन सचिव तथा पदेन आयुक्त श्री एन. के. वर्मा का जन्म 18 अप्रेल, 1940 के उदयपुर जिले में हुआ। आपने उदयपुर में ही बी. ए., एलएल. बी. तक शिक्षा प्राप्त की। आपका 1966 में भारतीय राजस्व सेवा में चयन हुआ और आप कुछ अर्से के लिए जयपुर में आयकर अधिकारी रहे। 1968 में आपका भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ। आप जयपुर में उप जिलाधीश, चित्तौड़गढ, सीकर, गंगानगर, भरतपुर और जयपुर में जिलाधीश, राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल में सचिव, भूमि एवं भवन कर विभाग के निदेशक, गृह और कार्मिक विभागों में उपसचिव, गृह विभाग में

विशिष्ट सचिव, राजस्थान लघु उद्योग निगम में प्रबन्ध निदेशक, राजस्व मण्डल के सदस्य, राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक तथा पूर्व में भी वर्तमान विभाग में शासन सचिव एवं पदेन आयुक्त पद पर कार्य कर चुके हैं।

नरेन्द्रकुमार सिंघी (डा.)—समाज - शास्त्र के जाने-माने विद्वान तथा वर्तमान में ट्रिनिडाड (वेस्ट इंडीज) विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र एवं सामाजिक-सांस्कृतिक मानवशास्त्र के प्रोफेसर डा. एन. के. सिंघी का जन्म सिरोही जिले में हुआ। आप राजस्थान वि. वि. में समाजशास्त्र के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हैं। गत अगस्त 1988 में आपका वेस्ट इंडीज समूह देशों के एक मात्र विश्वविद्यालय ट्रिनिडाड में दो वर्ष के लिए चयन हुआ है। ट्रिनिडाड में यह एकमात्र भारतीय पीठ है।

नरेन्द्र भानावत (डा.)—राजस्थान के प्रमुख साहित्यकर्मी डा. भानावत का जन्म 13 सितम्बर 1934 को उदयपुर जिले के कानोड़ कस्बे में हुआ। आप एम. ए., साहित्यरत्न और पीएच. डी. की

साहित्य (शोध प्रबन्ध), साहित्य के त्रिकोण, राजस्थानी साहित्य–कुछ प्रवृत्तियाँ, राजस्थानी वीर काव्य और सूर्यमल्ल मिश्रण, हिन्दी साहित्य की प्रमुख कृतियाँ और कृतिकार, आदमी, मोहर और कुर्सी, विष से अमृत की ओर, कुछ मणियाँ-कुछ पत्थर तथा पट्टावली प्रबन्ध संग्रह (सम्पादन) आदि शामिल हैं।

नरेन्द्रमोहन कासलीवाल—हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति श्री एन. एम. कासलीवाल का जन्म 4 अप्रेल, 1928 को जयपुर में हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर में हुई और जयपुर में ही आपने वकालत की। 1960 से 72 तक आप जोधपुर विधि महाविद्यालय के अंशकालिक व्याख्याता रहे। 15 जून, 1978 को आपकी राजस्थान उच्च न्यायालय में अतिरिक्त न्यायाधीश के पद पर और 23 नवम्बर, 1978 से न्यायाधिपति के पद पर नियुक्ति हुई।

नरेन्द्रसिंह भाटी—राजस्थान के पूर्व मंत्री श्री नरेन्द्रसिंह भाटी का जन्म 16 सितम्बर 1944 को जोधपुर में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा सैंट जेवियर स्कूल जयपुर में हुई तथा बी. ए. सैंट स्टीफन्स कालेज दिल्ली और एलएल. बी. दिल्ली विश्वविद्यालय से किया। व्यवसाय से आप कृषक हैं और शास्त्रीय संगीत, नृत्य, कला, साहित्य और संस्कृति में विशेष रुचि रखते हैं।

श्री भाटी प्रथम बार कांग्रेस (इ) टिकिट पर जोधपुर जिले के ओसियां क्षेत्र से 1980 में विधायक बने तथा 18 जून, 1980 को पहाडिया मंत्रिमंडल में उप मंत्री बनाये गये। 20 जुलाई, 1981 को श्री शिवचरण माथुर की सरकार में राज्य मंत्री नियुक्त किये गये और राजस्थान नहर, पर्यटन, कारागार तथा उपनिवेशन आदि विभागों के स्वतंत्र प्रभारी रहे। 17 अक्टूबर, 1982 को आपके विभाग बदलकर पुनर्वास, कारागार और मुद्रण एवं लेखन सामग्री विभाग का स्वतंत्र दायित्व सौंपा गया। 1984 में मतभेद उत्पन्न हो जाने पर मुख्यमंत्री ने आपसे त्यागपत्र ले लिया। मार्च 1985 में ओसियां क्षेत्र से ही पुनः विधायक चुने जाने पर श्री हरिदेव जोशी ने अपने मंत्रिमंडल में 11 मार्च, 1985 को आपको कैबिनेट मंत्री के रूप में शामिल किया और 7 फरवरी, 1986 को मतभेद होने पर त्यागपत्र ले लिया।

नरेन्द्रसिंह सिसोदिया—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम स्केल श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर रक्षा मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्री एन. एस. सिसोदिया का जन्म 13 जनवरी, 1945 को जयपुर में हुआ। 1968 में सेवा में चयन के बाद आप योजना विभाग में शासन उपसचिव, सवाईमाधोपुर, नागौर, जोधपुर और जयपुर में जिलाधीश, उदयपुर में

जनजातीय क्षेत्रीय विकास आयुक्त, राजस्थान लघु उद्योग निगम एवं रीको में प्रबन्ध निदेशक, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर में कुलपति तथा उद्योग विभाग में शासन सचिव आदि पदों पर कार्यकर चुके हैं।

नरेशकुमार सेठी— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में विशिष्ट योजना विभाग में शासन उप सचिव श्री एन. के. सेठी का जन्म 8 फरवरी, 1937 को जयपुर में हुआ। जयपुर में ही आपकी शिक्षा हुई और आप प्रारंभ में राजकीय महाविद्यालय में व्याख्याता नियुक्त हुए। रा. प्र. सेवा में प्रवेश के बाद आप ब्यावर में उप जिलाधीश, जयपुर नगर-विकास न्यास के सचिव, अतिरिक्त जिला विकास अधिकारी जयपुर, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में क्षेत्रीय प्रबन्धक तथा महाप्रबन्धक, पर्यटन विभाग में अतिरिक्त निदेशक राजस्थान विश्वविद्यालय में कुलसचिव, राजस्थान आवासन मंडल में सचिव तथा देवस्थान आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

नरेशचन्द्र (सक्सेना)— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी, राजस्थान के पूर्व मुख्य सचिव तथा वर्तमान मे प्रतिनियुक्ति पर भारत के रक्षा सचिव श्री नरेशचन्द्र का जन्म एक अगस्त, 1934 को इलाहाबाद में हुआ और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ही आपने स्नातकोत्तर (गणित) की उपाधि प्राप्त की। 1956 में सेवा में प्रवेश के बाद आपने झुंझुनूं, भरतपुर और जोधपुर के जिलाधीश, राजस्थान राज्य विद्युत मंडल के अध्यक्ष, उद्योग तथा वित्त विभाग के शासन सचिव और 23 जुलाई 1985 से 10मार्च, 1986 तक राज्य के मुख्य सचिव के रूप में कार्य किया।

श्री नरेशचन्द्र केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर श्रीलंका निर्यात विकास निगम के सलाहकार, जम्मू-कश्मीर में राष्ट्रपति शासन की अवधि में राज्यपाल के सलाहकार तथा वर्तमान पद-स्थापन से पूर्व जल-संसाधन मंत्रालय के सचिव रह चुके है।

नरोत्तमलाल जोशी— राजस्थान विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री नरोत्तमलाल जोशी का जन्म 16 दिसम्बर, 1914 को झुंझुनूं में हुआ। आपने एम.ए. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद झुंझुनूं मे वकालत प्रारंभ की। आपने प्रारंभ से ही राष्ट्रीय विचारधारा से जुडे होने के कारण स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया। पूर्व जयपुर रियासत के ग्रामीण क्षेत्रों में जागीरदारों के अन्याय और अत्याचारों के विरुद्ध आपने आवाज उठाई और 1938-39 में नागरिक अधिकारों की मांग को लेकर हुए आन्दोलन के अग्रणी नेता होने के कारण गिरफ्तार किये गये।

जयपुर राज्य प्रजामंडल के आप संस्थापकों में थे और उसकी कार्यसमिति के सदस्य तथा झुंझुनूं जिला प्रजामंडल और झुंझुनू जिला कांग्रेस कमेटी के वर्षों तक मंत्री तथा अध्यक्ष रहे। 1951 में श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में बनी प्रदेश की कांग्रेस सरकार में आप विधि एवं न्याय मंत्री नियुक्त किये गये। 1952 के प्रथम आम चुनाव में आप झुंझुनूं क्षेत्र से विधायक और राजस्थान विधान सभा के प्रथम अध्यक्ष चुने गये। 1957 में भी आप इसी क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुए। इसके बाद आपने निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लडा लेकिन सफल न हो सके।

नवदीपसिंह— भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी और वर्तमान में टोंक के जिला पुलिस अधीक्षक श्री नवदीपसिंह का जन्म 13 जून, 1958 को पंजाब में हुआ। 1981 में भारतीय पुलिस सेवा में चयन के बाद आप कोटा जिले में बारां के सहायक पुलिस अधीक्षक, अगरतल्ला में आर.ए.सी. की आठवीं बटालियन के कमाण्डेंट तथा डूंगरपुर में पुलिस अधीक्षक रह चुके है।

नवरतनमल रांका— राजस्थान के प्रमुख आयकर-सलाहकार श्री एन.एम. रांका का जन्म 29 सितम्बर, 1933 को ब्यावर में हुआ। आपने बी.कम. जयपुर से और एलएल.बी. अजमेर से किया तथा

1953 में जयपुर में वकालत प्रारंभ की। आप दो बार जयपुर टैक्स कंसल्टेंटस एसोसियेशन के तथा तीन बार राजस्थान टैक्स कंसल्टेंटस एसोसियेशन के अध्यक्ष रह चुके है। इसके साथ ही अमर जैन मेडिकल रिलीफ सोसायटी जयपुर के आप संस्थापक सदस्यों में से है तथा 1962 से 75 तक आप इसके सचिव 1975 से 81 तक उपाध्यक्ष तथा 1981 से अब तक पुन सचिव पद पर कार्य कर रहे हैं।

नवरंगसिंह— मार्च1985 के आमचुनाव में झुंझुनूं जिले के नवलगढ़ विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र से लोकदल के टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री नवरंगसिंह का जन्म 7 जून 1928 को [illegible] ग्राम में हुआ। एम.ए. तक शिक्षित श्री सिंह 1977 में पहली बार अविभाजित जनता पार्टी के उम्मीदवार के रूप में इसी निर्वाचन क्षेत्र से विधायक चुने गये थे लेकिन 1980 के आम चुनाव में पराजित हो गये। 1978 से 1980 के दौरान आप राज्य परिवहन निगम के निदेशक मण्डल के सदस्य भी रह चुके है।

नवलकिशोर काकर— प्रमुख साहित्यकार और शिक्षाविद श्री नवलकिशोर कांकर का जन्म आषाढ कृष्णा 13, संवत् 1967 को जयपुर में हुआ। 'साहित्याचार्य' सहित अनेक उपाधियां प्राप्त करने के बाद आपने अध्यापन कार्य प्रारंभ किया और पारीक कालेज जयपुर के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए। हिन्दी, संस्कृत तथा राजस्थानी भाषा में आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। साहित्य के क्षेत्र में आपकी सेवाओं के लिये आपको राष्ट्रपति पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। वैदिक एवं साहित्यिक शोध कार्य में आपकी विशेष रुचि है।

नवलकिशोर शर्मा— राजस्थान की राजधानी जयपुर क्षेत्र के सांसद पं. नवलकिशोर शर्मा का जन्म जयपुर जिले के दौसा कस्बे में 25 जुलाई, 1925 को हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा दौसा में [illegible] जयपुर में और कानून की आगरा में हुई। आपने छात्र जीवन से ही राजनीति में सक्रिय भाग लेना शुरू कर दिया और शीघ्र ही स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड गये। व्यवसाय से वकील श्री शर्मा 1951 से 56 तक दौसा नगर पालिका के अध्यक्ष तथा 1951 से 1959 तक जयपुर जिला बोर्ड के सदस्य रहे। 1961 से 65 तक दौसा पंचायत समिति के प्रधान चुने गये। 1968 में आप जयपुर राज्य [illegible] पृथ्वीसिंह को दौसा क्षेत्र से लोकसभा के उपचुनाव में पराजित कर विजयी हुए। 1971 के [illegible] चुनाव में पुन इसी क्षेत्र से चुने गये। इसी दौरान आप अखिल भारतीय कांग्रेस के [illegible] के मुखपत्र "सोशलिस्ट भारत" (हिन्दी) और "सोशलिस्ट इंडिया" (अंग्रेजी) के सम्पादक मण्डल [illegible] गये। आप संसद की राजकीय उपक्रम समिति तथा कम्पनी कानूनों की संयुक्त प्रवर समिति [illegible] नियुक्त किये गये।

मार्च 1977 के लोकसभा चुनाव में आप दौसा क्षेत्र से पराजित हो गये [illegible] अन्तराल के बाद जनवरी 1980 में ही आप निर्वाचित हो लोकसभा में पहुंच गये। [illegible] के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। नवम्बर1984 में आप राजीव गांधी मंत्रिमण्डल में [illegible] दिसम्बर 1984 के लोकसभा के नये चुनाव में जयपुर से निर्वाचित होने के बाद [illegible] बनाये गये। 1982 से 1985 तक श्री शर्मा राजस्थान प्रदेश कांग्रेस (इ) कमेटी के अध्यक्ष [illegible] जनवरी 1986 से सितम्बर, 1987 तक अखिल भारतीय कांग्रेस (इ) कमेटी के महासचिव रहे।

नवीन शर्मा— भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ [illegible] अजमेर में रेलवे पुलिस के अधीक्षक श्री नवीन शर्मा राजस्थान पुलिस सेवा के [illegible] [illegible] शर्मा के पुत्र है। आपका जन्म 11 अगस्त, 1952 को जयपुर में हुआ। [illegible] जयपुर में हुई और 1975 में सेवा में चयन हुआ। आप टोंक, [illegible] पुलिस अधीक्षक तथा मुख्यमंत्री सचिवालय में पुलिस उपाधीक्षक [illegible] है।

नाथूराम अहारी— 45 वर्षीय श्री नाथूराम डूंगरपुर (सु) निर्वाचन क्षेत्र से 1985 में कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये हैं। आप इससे पूर्व 1980 में भी इसी क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर चुने गये थे।

नाथूराम मिर्धा— प्रदेश के प्रमुख किसान नेता, पूर्व मंत्री और राजस्थान प्रदेश जनता दल के अध्यक्ष श्री नाथूराम मिर्धा का जन्म 20 अक्टूबर, 1921 को नागौर जिले के कुचेरा ग्राम में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ। विधि-स्नातक बनने के बाद व्यवसाय के रूप में यद्यपि आपने वकालत को अपनाया लेकिन यथार्थ में किसानों की समस्याओं ने आपको सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन अपनाने के लिए विवश कर दिया। आपने स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और जोधपुर रियासत की लोकप्रिय सरकार में व्यास मंत्रिमंडल में मंत्री नियुक्त हुए। बाद में राजस्थान का निर्माण होने पर अप्रैल 1951 में गठित श्री जयनारायण व्यास की सरकार में पुनः मंत्री बनाये गये।

1952 और 1962 में आप मेडता तथा 1957 में नागौर क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये। 1967 में मेडता क्षेत्र से पराजित हुए। इसके बाद 1985 के चुनाव में लोकदल टिकिट पर मेडता क्षेत्र से पुनः विधायक चुने गये। बीच की अवधि में 1971 और 1977 में कांग्रेस तथा 1980 में कांग्रेस (अर्स) के टिकिट पर नागौर क्षेत्र से लोकसभा सदस्य चुने गये। 1977 के लोकसभा चुनाव में जहां समूचे उत्तर भारत में कांग्रेस दल का पूर्णतः सफाया हो गया और कांग्रेस को राजस्थान और मध्यप्रदेश में केवल एक-एक स्थान पर सफलता मिली उनमें एक स्थान श्री मिर्धा का था।

श्री मिर्धा 1952 से 54 तक श्री टीकाराम पालीवाल और श्री जयनारायण व्यास तथा 1954 से फरवरी1967 तक श्री मोहनलाल सुखाडिया के मन्त्रिमंडलों में विभिन्न विभागों के मंत्री रहे। 1967 में ही आप प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। अपने लोकसभा सदस्यता काल में श्री मिर्धा ने कृषि मूल्य आयोग के अध्यक्ष के रूप में उल्लेखनीय कार्य किया। बाद में अल्प समय के लिये आप चौधरी चरणसिंह की सरकार में वित्त राज्य मंत्री भी रहे। दिसम्बर 1984 मे आप अपने ही परिवार के सदस्य केन्द्रीय कपड़ा मंत्री श्री राम निवास मिर्धा के मुकाबले लोकसभा का चुनाव हार गये। 1987 में लोकदल का विभाजन होने पर आप श्री बहुगुणा के नेतृत्व वाले लोकदल के प्रदेशाध्यक्ष और विधायक दल के नेता बनाये गये। 1989 में जनता दल का गठन होने पर आप इसके भी अध्यक्ष मनोनीत किये गये।

नाथूलाल जैन— राजस्थान के जाने-माने साहित्य-सेवी लोकसेवा आयोग के पूर्व सदस्य तथा राज्य के पूर्व महाधिवक्ता श्री जैन का जन्म 28 दिसम्बर,1919 को कोटा में हुआ। आपने एम.ए., एलएल.बी. और साहित्यरत्न की उपाधि प्राप्त करने के बाद कोटा में वकालत प्रारंभ की। आपने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। कोटा नरेश द्वारा कोटा राज्य के संविधान निर्माण हेतु न्यायमूर्ति पी. एन. सप्रू की अध्यक्षता में बनायी गयी समिति के आप सदस्य सचिव थे। 1948 में आप कोटा जिला कांग्रेस के अध्यक्ष रहे तथा वर्षों तक अ.भा. कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। कोटा अभिभाषक संघ और हाड़ौती क्षेत्र की प्रमुख साहित्यिक संस्था श्री भारतेन्दु समिति के भी आप अध्यक्ष रहे। भारत सरकार के भाषा आयोग तथा राजस्थान लोक-सेवा आयोग के भी आप सदस्य रहे। श्री जैन हिन्दी के जाने-माने कवि और लेखक भी हैं तथा विश्व के अनेक देशों का भ्रमण कर चुके हैं।

नाथूसिंह— टोंक जिले के टोडारायसिंह क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के विधायक श्री नाथूसिंह एम.एससी.तक शिक्षित हैं। अपने छात्र जीवन से राजनीति में प्रवेश करने वाले श्री सिंह प्रथम बार 1977 के लोकसभा चुनाव में दौसा संसदीय क्षेत्र से जनता पार्टी के टिकिट पर चुने गये थे। छठी लोकसभा में राजस्थान से पहुंचने वाले सांसदों में आप सबसे कम उम्र के सदस्य थे। 1980 तथा 1984 के लोकसभा के चुनावों में आप दौसा संसदीय क्षेत्र से पराजित हो गये लेकिन 1980 और 1985 के विधानसभा चुनाव में आप भाजपा टिकिट पर क्रमशः जयपुर जिले के भांदीकुई और टोंक जिले के टोडारायसिंह क्षेत्र से विजयी

हुए हैं। आप तीन वर्ष तक राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद के उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं। वर्तमान में आप प्रदेश भाजपा के मंत्री भी हैं।

मानालाल (खटीक) -राजस्थान के पूर्व राज्यमंत्री श्री मानालाल का जन्म 1932 में उदयपुर जिले के कुरन ग्राम में हुआ। आप छात्र जीवन से ही कांग्रेस गतिविधियों में शामिल हो गये और 1946 के आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। आप राजसमंद (सु. अ.) क्षेत्र से 1972 में कांग्रेस टिकिट पर प्रथम बार विधायक चुने गये। 1977 में आप इसी क्षेत्र से पराजित हो गये और 1980 में पुनः निर्वाचित होकर पहाडिया मंत्रिमंडल में 18 फरवरी 1981 से13 जुलाई, 1981 तक खनिज विभाग के प्रभारी राज्यमंत्री रहे। 1985 के चुनाव में दलीय टिकिट नहीं मिलने के कारण आपने भाग नहीं लिया।

नारायणराम बेडा— जोधपुर जिले के भोपालगढ क्षेत्र से 1985 के आम चुनाव में लोकदल टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री नारायणराम बेडा ने 1980 के चुनाव में भी इसी क्षेत्र में कांग्रेस के सशक्त प्रत्याशी तत्कालीन मंत्री श्री परसराम मदेरणा के मुकाबले भाग्य आजमाया था लेकिन तब आप पौने तीन हजार मतों से पीछे रह गये थे। 1985 में आप श्री मदेरणा को पराजित करने में सफल रहे। आपका जन्म 10 जनवरी,1951 को जिले के गजसिंहपुरा ग्राम में हुआ और आपने बी ए , एलएल बी तक शिक्षा प्राप्त की है। प्रारम्भ में आप सरपंच चुने गये थे।

नारायण शर्मा— राजस्थान लेखा सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान राज्य बीज निगम में मुख्य लेखाधिकारी श्री शर्मा भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी श्री रामसिंह (शर्मा) के पुत्र है। आपका जन्म तीन फरवरी, 1945 को अलवर में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम ए की उपाधि के साथ ही जर्मन भाषा और व्यावसायिक प्रबन्ध का डिप्लोमा प्राप्त किया है। प्रारम्भ में 1965 से67 तक आप अंग्रेजी के व्याख्याता रहे और 1967 से 70 तक राजस्थान लेखा सेवा में चयन होने तक निजी क्षेत्र के उद्योगों में कार्य किया। आपने जयपुर के कोषाधिकारी सहित राजस्थान राज्य भण्डार व्यवस्था निगम राजस्थान भूमि-विकास निगम, राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड तथा ग्रामीण-विकास एवं पचायती राज विभाग में मुख्य लेखाधिकारी के रूप में कार्य किया है।

नारायणसिंह— राजस्थान के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति तथा बाढ एवं अकाल सहायता मंत्री श्री नारायणसिंह का जन्म 13 मार्च 1934 को सीकर जिले के दूकिया ग्राम में हुआ। आप इंटरमीजिएट तक शिक्षित हैं। प्रारंभ में आप गोवटी पचायत के उपसरपंच, बाद में दूकिया पंचायत के सरपंच, 1959 से 61 तक दातारामगढ पंचायत समिति के प्रधान तथा 1961 से 77 तक सीकर के जिला प्रमुख रहे। आप सीकर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के संचालक मंडल तथा कल्याण-आरोग्य समिति के भी सदस्य रह चुके है।

श्री सिंह दातारामगढ क्षेत्र से 1972, 1980 और 1985 के चुनावों में कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायक चुने जाते रहे है। 1977 के चुनाव में आप पराजित हुए। 6 फरवरी, 1988 को आप माथुर मंत्रिमंडल में वन, पर्यावरण तथा मत्स्य पालन विभाग के मंत्री नियुक्त किये गये। 12 जून, 1989 को आपको वर्तमान विभाग दिये गये।

नारायणसिंह (डिग्गी)— मार्च 1985 के आम चुनाव में टोंक जिले के मालपुरा निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित जनता पार्टी के विधायक और डिग्गी के पूर्व जागीरदार श्री नारायणसिंह का जन्म 1922 में लाम्पा जुनेरदार ग्राम में हुआ। 1957 में आप सर्वप्रथम टोंक निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस के टिकिट पर

विधानसभा के लिये निर्वाचित हुए। 1977 में आप मालपुरा से जनता पार्टी के उम्मीदवार के रूप में चुने गये लेकिन 1980 में इसी क्षेत्र में पराजित हो गये।

नारायणसिंह मसूदा— राजस्थान के पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री नारायणसिंह मसूदा का जन्म 5 अप्रैल,1919 को हुआ। बी.ए. तक शिक्षित श्री नारायणसिंह सर्वप्रथम 1952 में तत्कालीन अजमेर विधानसभा के सदस्य चुने गये। 1957 से 1972 तक लगातार चार विधानसभाओं में आपने राजस्थान विधानसभा में कांग्रेस टिकिट पर मसूदा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। 1962 से 67 तक आप विधानसभा के उपाध्यक्ष तथा 1967 से श्री सुखाड़िया के मन्त्रिमंडल में तथा बाद में श्री बरकतुल्ला खां के मन्त्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री रहे। आप हिन्दी के लेखक भी हैं।

निर्मलाकुमार जैन (डा.)— वक्ष एवं क्षय रोग विशेषज्ञ और जयपुर स्थित सवाई मानसिंह मेडीकल कालेज एवं इससे संबद्ध वक्ष एवं क्षय रोग चिकित्सालय में उपाचार्य डा. निर्मलकुमार जैन का जन्म 3 जून, 1952 को जयपुर में हुआ। एम.बी.,बी.एस. और एम.डी. करने के बाद 1981 में आप सहायक आचार्य बने और 1984 में उपाचार्य पद पर पदोन्नत किये गये। आप नेशनल कालेज ऑफ चेस्ट फिजीशियन्स और इन्डियन चेस्ट सोसायटी के आजीवन सदस्य हैं। व्यवसाय से सबद्ध राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में आपके पचास से अधिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं।

निर्मलाकुमारी शक्तावत (श्रीमती)— चित्तौडगढ़ क्षेत्र से जनवरी 1980 और दिसम्बर 1984 में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित लोकसभा सदस्य श्रीमती निर्मलाकुमारी शक्तावत का जन्म जिले के ओचरी ग्राम मे पाच मई, 1938 को हुआ। आप वर्तमान में चित्तौडगढ जिला कांग्रेस (इ) कमेटी की अध्यक्षा भी हैं।

इससे पूर्व श्रीमती शक्तावत 1972 से 77 तक चित्तौडगढ़ क्षेत्र से कांग्रेस (इ) विधायिका भी रह चुकी है। 1977 मे आप इसी क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव हार गई थी।

निरंजनदेव तीर्थ (जगद्गुरु)— गोवर्धन पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य निरंजनदेव तीर्थ, जिनका पूर्व नाम आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री है, का जन्म टोंक जिले के टोडारायसिंह कस्बे में श्री गणेशलाल द्विवेदी के यहा हुआ। आपके प्रपितामह प. मोतीलालजी ने, जो ज्योतिष के प्रकांड विद्वान थे, आपके बारे मे यह भविष्यवाणी की थी कि 52 वर्ष की आयु मे आपकी गणना विश्व के महापुरुषों में होगी। आपने सन् 1934 में काशी से 'व्याकरणाचार्य' की परीक्षा मे द्वितीय स्थान प्राप्त कर रजत पदक प्राप्त किया। 1935 में कलकत्ता से 'सांख्यतीर्थ', 1936 मे 'न्यायतीर्थ' और 1937 में 'वेदान्ततीर्थ' किया। 'न्यायतीर्थ' में प्रथम स्थान प्राप्त करने के कारण आपको स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। बडौदा विश्वविद्यालय से व्याकरण एवं पुराण में उत्तमा किया। भारत धर्म महामंडल वाराणसी ने आपको विद्याभूषण एवं विद्यालंकार की उपाधि से विभूषित किया। आपको पंडित मार्तण्ड और दर्शनवागीस की उपाधियां भी प्राप्त हुई।

आप सर्वप्रथम बनारस में सांग ब्रह्म विद्यालय में वेदान्त के विभागाध्यक्ष तथा बाद में पेटलाद (गुजरात) में संस्कृत विद्यालय के प्रधानाचार्य रहे। 1940 में आपने ब्यावर मे जगन्नाथ वेद-वेदांग

दे जुलाई,1964 को आपका पदाभिषेक हुआ।

जगद्गुरु के महान पद पर सम्पूर्ण उत्तर भारत स चयनित होने वाले आप प्रथम विद्वान् हैं। गोरक्षा

के प्रश्न पर आपने नई दिल्ली में 1967 में 71 दिन का ऐतिहासिक अनशन कर सारे विश्व का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया था।

निहालचंद जैन -भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी और वर्तमान में कोटा के सम्भागीय आयुक्त श्री निहालचंद जैन का जन्म 20 नवम्बर, 1933 को मुलतान (अब पाकिस्तान) में हुआ। एम ए., एलएल.बी तक शिक्षित श्री जैन प्रारंभ में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गए तथा दिल्ली प्रशासन में प्रतिनियुक्ति पर सेवा करने के साथ ही जयपुर नगर परिषद के प्रशासक तथा राजस्थान राज्य सहकारी क्रय-विक्रय संघ के प्रबन्ध निदेशक आदि पदों पर आपने कार्य किया। 1979 में आप भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नत हुए। आप जैसलमेर और बांसवाड़ा में जिला कलेक्टर, राज्य के विशिष्ट योजना संगठन गृह प्रशासनिक सुधार एवं जन अभियोग निराकरण तथा सामान्य प्रशासन आदि विभागों के विशिष्ट शासन सचिव पर्यटन कला एवं संस्कृति तथा सूचना एवं जन-सम्पर्क विभागों के निदेशक तथा राजस्व मंडल के सदस्य पद पर कार्य कर चुके हैं।

नीलिमा जौहरी (कुमारी)— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला की अधिकारी तथा वर्तमान में पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग की निदेशक कुमारी नीलिमा जौहरी का जन्म 28 मार्च 1957 को नई दिल्ली में हुआ। 1979 में आपने सेवा में प्रवेश किया तथा अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) बीकानेर, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर रक्षा मंत्रालय में अंडर सेक्रेटरी विशिष्ट योजना संगठन में शासन उपसचिव तथा जिला कलक्टर बूंदी आदि पदों पर कार्य कर चुकी हैं।

नेमिचन्द्र जैन 'भावुक'— राजस्थान में पुरानी पीढ़ी के पत्रकार तथा सर्वोदयी कार्यकर्ता श्री भावुक का जन्म सन् 1928 में जोधपुर में हुआ। आप जोधपुर में 1947 से पत्रकारिता में सक्रिय हैं तथा 'नवभारत टाइम्स' दिल्ली और 'हिन्दुस्तान समाचार समिति' सहित देश के विभिन्न भागों से प्रकाशित दर्जनों दैनिक और साप्ताहिक पत्रों का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। आपने अन्तर-प्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद् की स्थापना कर समूचे जोधपुर संभाग में सैंकड़ों युवकों को साहित्य और पत्रकारिता सहित अन्य क्षेत्रों में कार्य करने के लिए दीक्षित किया। इनमें अनेक युवक देश और विदेशों में आज विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण पदों को संभाले हुए हैं। भावुक जी को उनकी साहित्य और पत्रकारिता की दीर्घकालीन सेवाओं के लिए विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक बार सम्मानित किया जा चुका है। राजस्थान साहित्य अकादमी ने 1982-83 में आपको विशिष्ट साहित्यकार के रूप में समादृत किया।

नैनमल जैन- केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा राजस्थानी भाषा के लिए स्थापित पुरस्कार से 1987 में सम्मानित श्री नैनमल जैन व्यवसाय से यद्यपि वकील है लेकिन हिन्दी और राजस्थानी भाषा की सेवा में भी समान रूप से सक्रिय है। वे अन्तर प्रांतीय कुमार साहित्य परिषद की जालोर शाखा के संस्थापक अध्यक्ष होने के साथ ही जालोर नगरपालिका, अभिभावक संघ, रेडक्रास सोसायटी और जनकल्याण सेवा समिति के भी अध्यक्ष रह चुके है। उनकी अब तक 6 कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें दो राजस्थानी और चार हिन्दी में हैं। इनमें राजस्थनी कृति ''सगला-री-पीड़ा स्वात मेघ'' काफी चर्चित रही है।

नौरतमल खण्डेलवाल (डा)— सौराष्ट्र विश्वविद्यालय राजकोट में वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष एवं आचार्य डा. एन.एम. खंडेलवाल का जन्म दो अक्टूबर, 1942 को अजमेर में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से 1966 में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर एम.कॉम. परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1973 में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। दयानंद कॉलेज अजमेर में आपने वर्ष 1965-66 का

सर्वश्रेष्ठ छात्र के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

डा. खंडेलवाल ने 1966 से 77 तक राजस्थान के कालेजीय शिक्षा विभाग में व्याख्याता और अगस्त 1977 से79 तक सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभ विद्यानगर में वाणिज्य विभाग में रीडर पद पर कार्य किया। आपकी वर्तमान नियुक्ति जून 1979 से है। आपके अब तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं मे दर्जनों लेख और अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

प्रकाशचन्द्र जैन—राजस्थान के प्रमुख कर सलाहकार तथा चार्टर्ड एकाउंटेन्ट श्री प्रकाशचन्द्र जैन का जन्म 1 अक्टूबर, 1945 को नागौर जिले के मींडा ग्राम में हुआ। आपने जयपुर जिले के कानोडिया महाविद्यालय से बी.काम तथा कलकत्ता स्थित जी.पी. केजडीवाल एण्ड कं. से सी० ए० किया। 1969 से आप इसी कम्पनी के जयपुर में भागीदार के रूप में कार्यरत हैं। आप शास्त्री नगर जैन मन्दिर प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष रह चुके हैं।

प्रकाशचन्द्र जैन—भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी तथा वर्तमान में राज० सिविल सेवा अपील अधिकरण के सदस्य श्री पी.सी. जैन का जन्म 9 मार्च, 1931 को जयपुर जिले के मौजमाबाद कस्बे में प्रतिष्ठित जैन परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर मे हुई तथा बी.काम. और एलएल.बी. की उपाधियाँ प्राप्त की। 1957 में आपका राजस्थान प्रशासनिक सेवा मे चयन हुआ और आप भीलवाड़ा और भरतपुर में उपखण्ड अधिकारी, उदयपुर में नगर दंडनायक, भीलवाडा में अतिरिक्त जिलाधीश, जयपुर में प्रादेशिक परिवहन अधिकारी, वाणिज्यिक कर विभाग में जयपुर तथा कोटा में उपायुक्त (प्रशासन), राजस्थान राज्य भण्डार व्यवस्था निगम में प्रबन्ध निदेशक, परिवहन विभाग मे अतिरिक्त आयुक्त तथा मुख्यमन्त्री के उपसचिव रहे। 1978 में आपकी भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति हुई तथा आपने जिलाधीश भरतपुर, नागौर, अलवर और उदयपुर, उपनिवेशन आयुक्त बीकानेर, वित्त विभाग में शासन उपसचिव सामान्य प्रशासन एवं मन्त्रिमंडल सचिवालय तथा शिक्षा विभाग में शासन विशिष्ट सचिव आदि पदों पर कार्य किया।

प्रकाशबिहारी माथुर—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राज्य के उद्योग विभाग के शासन सचिव तथा पदेन आयुक्त श्री पी.बी. माथुर का जन्म 26 जून, 1934 को दिल्ली में हुआ। 1958 में सेवा में प्रवेश के बाद आप जिलाधीश जोधपुर, राजस्व मंडल के सदस्य, विदेश में प्रतिनियुक्ति पर अफगानिस्तान सरकार के सामुदायिक विकास परामर्शदाता राजस्थान सहकारी डेयरी फैडरेशन के प्रबन्ध निदेशक, स्थानीय निकाय, नगरीय विकास तथा आवासन नगर आयोजना तथा दो बार शिक्षा विभाग के शासन सचिव रह चुके हैं।

प्रकाशमणि (ब्रह्मकुमारी)—ब्रह्मकुमारी आध्यात्मिक विश्वविद्यालय, माउण्ट आबू की प्रशासनिक प्रमुख राज योगिनी ब्रह्मकुमारी प्रकाशमणि (दादीजी) का जन्म सन् 1922 में हैदराबाद (अब सिंध पाकिस्तान) में हुआ। बचपन से ही आप ब्रह्मकुमारी शान्ति आन्दोलन की तरफ आकर्षित हुई और 1937 में इसकी स्थापना से ही इससे जुड़ गईं।

1945 मे आपने जापान में आयोजित द्वितीय विश्व धार्मिक कांग्रेस में भाग लेने वाले प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया। 1969 में संस्थान के संस्थापक प्रजापति ब्रह्मा की मृत्यु के बाद आप इसकी प्रशासनिक प्रमुख बनी। 1977 में आपने सम्पूर्ण विश्व और सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया और शान्ति सम्मेलनों व आध्यात्मिक सेमीनारों की अध्यक्षता की। अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष के अवसर पर आपको संयुक्त राष्ट्र के वर्ष 1986 के शान्तिदूत पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रणवीर व्यास—1985 के आम चुनाव में भीलवाड़ा निर्वाचन क्षेत्र से चुने गए कांग्रेस (इ) विधायक श्री प्रणवीर व्यास का जन्म 13 नवंबर 1943 को भीलवाड़ा में हुआ। आप हायर सैकेण्ड्री तक शिक्षित है और व्यवसाय में कृषक है।

प्रतापभानु खण्डेलवाल—राजस्थान के प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्ता श्री प्रतापभानु खण्डेलवाल का जन्म जुलाई 1921 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया और छात्रों के जुलूस का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार हुए। इसी सिलसिले में जेल में बन्द रहने के कारण आप बी ए की फाइनल परीक्षा में नहीं बैठ सके। बाद में आपने साहित्यरत्न की उपाधि प्राप्त की। सन् 1951-52 में श्री जयनारायण व्यास की प्रेरणा से कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता बने और आज तक बिना किसी पदलिप्सा और कार्यकर्ताओं की धड़ेबन्दी से दूर रहकर पार्टी की सेवा कर रहे हैं। भारत सेवक समाज की गतिविधियों से आप प्रारम्भ से ही जुड़े रहे तथा अजमेर जिला शाखा के अध्यक्ष बनाये गये। श्री गुलजारीलाल नन्दा द्वारा स्थापित नवजीवन संघ के आप प्रदेश महामन्त्री नियुक्त किये गये। वर्तमान में आप जन सतर्कता समिति ब्यावर के संस्थापक अध्यक्ष हैं और इसके माध्यम से राज और समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का समय-समय पर पर्दाफाश करते रहते हैं।

प्रतापसिंह मुर्डिया—उदयपुर के प्रमुख समाजसेवी और व्यवसायी श्री प्रतापसिंह मुर्डिया का जन्म 26 फरवरी 1926 को उदयपुर में हुआ। आपने बी काम तक शिक्षा प्राप्त की। आप उदयपुर नगर परिषद के आठ वर्षों तक तथा नगर विकास न्यास के छः वर्षों तक सदस्य रहे और 1983-84 में रोटरी इंटरनेशनल के डिस्ट्रिक्ट 305 के गवर्नर चुने गये। आप महाराणा प्रताप स्मारक समिति तथा महावीर स्मारक समिति उदयपुर के सचिव व राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के निदेशक मंडल के सदस्य रह चुके है।

प्रद्युम्नकुमार जैन-भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में झुझुनूं के जिला कलक्टर श्री पी के जैन का जन्म 27 जुलाई, 1933 को कोटा जिले के कुंभेड ग्राम में हुआ। आपने एम ए की उपाधि प्राप्त की और 1958 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये। आपकी महत्वपूर्ण नियुक्तियों में अतिरिक्त निदेशक ह मा रा लोक प्रशासन संस्थान, सचिव बेरी जांच आयोग, रजिस्ट्रार सिविल सर्विसेज अपीलेट ट्रिब्यूनल, उपर सचिव सतर्कता आयोग तथा शासन उपसचिव आदि हैं। आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

श्री जैन की 1988 में भा० प्र० सेवा में पदोन्नति हुई और वर्तमान पदस्थापन से पूर्व आप झालावाड के जिला कलक्टर रहे। आपने "ग्रामीण-विकास-दिग्बोध की तलाश" का सम्पादन किया है जिसे भारत सरकार के ग्रामीण विकास मन्त्रालय ने प्रथम पुरस्कार प्रदान किया है। "दी मार्च" नामक मासिक पत्रिका का भी आपने प्रकाशन किया है।

प्रद्युम्नसिंह—राजस्थान के स्वायत्त शासन, नगरीय-विकास तथा आयोजन आदि विभागों के पूर्व प्रभारी राज्य मंत्री तथा वर्तमान में धौलपुर के जिला प्रमुख श्री सिंह का जन्म 1938 में हुआ। आपने आगरा विश्वविद्यालय से बी ए. और एलएल बी. की उपाधियां प्राप्त की और विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष रहे। 1967 के आम चुनाव में आप प्रथम बार धौलपुर जिले के राजाखेड़ा क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये तथा 4 सितम्बर, 1967 से 8 जुलाई, 1971 तक मुख्यमन्त्री मंत्रिमंडल में उपमंत्री रहे। 1972 और 1977 में क्रमशः कांग्रेस और निर्दलीय तथा 1980 में कांग्रेस (इ) प्रत्याशी के रूप में आप राजाखेड़ा क्षेत्र से ही विधायक चुने जाते रहे। 18 फरवरी, 1981 को आप पहाड़िया और 19 जुलाई, 1981 को माथुर मंत्रिमंडल में राज्यमंत्री बनाये गये। 1985 के चुनाव में आप जहां दलीय टिकिट नहीं

प्रणवीर व्यास—1985 के आम चुनाव में भीलवाड़ा निर्वाचन क्षेत्र से चुने गए कांग्रेस (इ) विधायक श्री प्रणवीर व्यास का जन्म 13 नवंबर 1943 को भीलवाड़ा में हुआ। आप हायर सैकेण्डरी तक शिक्षित हैं और व्यवसाय से कृषक हैं।

प्रतापभानु खण्डेलवाल—राजस्थान के प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्ता श्री प्रतापभानु खण्डेलवाल का जन्म जुलाई 1921 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया और छात्रों के जुलूस का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार हुए। इसी सिलसिले में जेल में बन्द रहने के कारण आप बी ए की फाइनल परीक्षा में नहीं बैठ सके। बाद में आपने साहित्यरत्न की उपाधि प्राप्त की। सन् 1951–52 में श्री जयनारायण व्यास की प्रेरणा से कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता बने और आज तक बिना किसी पदलिप्सा और कार्यकर्ताओं की धड़बन्दी से दूर रहकर पार्टी की सेवा कर रहे हैं। भारत सेवक समाज की गतिविधियों से आप प्रारम्भ से ही जुड़े रहे तथा अजमेर जिला शाखा के अध्यक्ष बनाये गये। श्री गुलजारीलाल नन्दा द्वारा स्थापित नवजीवन संघ के आप प्रदेश महामन्त्री नियुक्त किये गये। वर्तमान में आप जन सतर्कता समिति ब्यावर के संस्थापक अध्यक्ष हैं और इसके माध्यम से राज और समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का समय-समय पर पर्दाफाश करते रहते है।

प्रतापसिंह मुर्डिया—उदयपुर के प्रमुख समाजसेवी और व्यवसायी श्री प्रतापसिंह मुर्डिया का जन्म 26 फरवरी 1926 को उदयपुर में हुआ। आपने बी काम तक शिक्षा प्राप्त की। आप उदयपुर नगर परिषद के आठ वर्षों तक तथा नगर विकास न्यास के छ वर्षों तक सदस्य रहे और 1983–84 में रोटरी इंटरनेशनल के डिस्ट्रिक्ट 305 के गवर्नर चुने गये। आप महाराणा प्रताप स्मारक समिति तथा महावीर स्मारक समिति उदयपुर के सचिव व राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के निदेशक मंडल के सदस्य रह चुके है।

प्रद्युम्नकुमार जैन -भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में झुंझुनूं के जिला कलक्टर श्री पी के जैन का जन्म 27 जुलाई 1933 को कोटा जिले के कुबेड ग्राम में हुआ। आपने एम ए की उपाधि प्राप्त की और 1958 मे राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये। आपकी महत्वपूर्ण नियुक्तियों में अतिरिक्त निदेशक ह मा रा लोक प्रशासन संस्थान सचिव बेरी जांच आयोग, रजिस्ट्रार सिविल सर्विसेज अपीलेट ट्रिब्यूनल, अवर सचिव सतर्कता आयोग तथा शासन उपसचिव आदि हैं। आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

श्री जैन की 1988 में भा० प्र० सेवा में पदोन्नति हुई और वर्तमान पदस्थापन से पूर्व आप झालावाड़ के जिला कलक्टर रहे। आपने ''ग्रामीण-विकास-दिग्बोध की तलाश'' का सम्पादन किया है जिसे भारत सरकार के ग्रामीण विकास मन्त्रालय ने प्रथम पुरस्कार प्रदान किया है। ''दी मार्च'' नामक मासिक पत्रिका का भी आपने प्रकाशन किया है।

प्रद्युम्नसिंह—राजस्थान के स्वायत्त शासन, नगरीय-विकास तथा आयोजन आदि विभागों के पूर्व प्रभारी राज्य मंत्री तथा वर्तमान में धौलपुर के जिला प्रमुख श्री सिंह का जन्म 1938 में हुआ। आपने आगरा विश्वविद्यालय से बी.ए. और एलएल.बी की उपाधियां प्राप्त की और विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष रहे। 1967 के आम चुनाव में आप प्रथम बार धौलपुर जिले के राजाखेड़ा क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये तथा 4 सितम्बर, 1967 से 8 जुलाई, 1971 तक सुखाडिया मन्त्रिमंडल में उपमन्त्री रहे। 1972 और 1977 में क्रमशः कांग्रेस और निर्दलीय तथा 1980 में कांग्रेस (इ) प्रत्याशी के रूप में आप राजाखेड़ा क्षेत्र से ही विधायक चुने जाते रहे। 18 फरवरी, 1981 को आप पहाड़िया और 19 जुलाई, 1981 को माथुर मन्त्रिमंडल में राज्यमंत्री बनाये गये। 1985 के चुनाव में आप जहां दलीय टिकिट नहीं

सर्वश्रेष्ठ छात्र के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

डा खंडेलवाल ने 1966 से 77 तक राजस्थान के कालेजीय शिक्षा विभाग में व्याख्याता और अगस्त 1977 से79 तक सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभ विद्यानगर में वाणिज्य विभाग में रीडर पद पर कार्य किया। आपकी वर्तमान नियुक्ति जून 1979 से है। आपके अब तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में दर्जनों लेख और अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

प्रकाशचन्द्र जैन—राजस्थान के प्रमुख कर सलाहकार तथा चार्टर्ड एकाउंटेन्ट श्री प्रकाशचन्द्र जैन का जन्म 1 अक्टूबर, 1945 को नागौर जिले के मींडा ग्राम में हुआ। आपने जयपुर जिले के कालाडेरा महाविद्यालय से बी.काम. तथा कलकत्ता स्थित जी.पी. केजड़ीवाल एण्ड कं. से सी० ए० किया। 1969 से आप इसी कम्पनी के जयपुर में भागीदार के रूप में कार्यरत हैं। आप शास्त्री नगर जैन मन्दिर प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष रह चुके है।

के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी तथा वर्तमान
का जन्म 9 मार्च, 1931 को जयपुर
जिले ... में हुई तथा बी.काम.
... हुआ और
... भीलवाड़ा में अतिरिक्त
... में जयपुर तथा कोटा में
निदेशक, परिवहन विभाग में
... भारतीय प्रशासनिक सेवा में
उदयपुर, उपनिवेशन आयुक्त
... सचिवालय तथा शिक्षा

... वेतन शृंखला के अधिकारी
... श्री पी.बी. माथुर का जन्म 26
... जोधपुर, राजस्थान ...
... विभाग ...
नगरीय ... तथा आवासन

प्रणवीर व्यास—1985 के आम चुनाव में भीलवाडा निर्वाचन क्षेत्र से चुने गए कांग्रेस (इ) विधायक श्री प्रणवीर व्यास का जन्म 13 नवबर 1943 को भीलवाडा में हुआ। आप हायर सैकेण्ड्री तक शिक्षित हैं और व्यवसाय से कृषक हैं।

प्रतापभानु खण्डेलवाल—राजस्थान के प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्ता श्री प्रतापभानु खण्डेलवाल का जन्म जुलाई 1921 में हुआ। 1942 के भारत छोडो आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया और छात्रों के जुलूस का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार हुए। इसी सिलसिले में जेल में बन्द रहने के कारण आप बी ए. की फाइनल परीक्षा में नहीं बैठ सके। बाद में आपने साहित्यरत्न की उपाधि प्राप्त की। सन् 1951–52 में श्री जयनारायण व्यास की प्रेरणा से कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता बने और आज तक बिना किसी पदलिप्सा और कार्यकर्ताओं की धडेबन्दी से दूर रहकर पार्टी की सेवा कर रहे हैं। भारत सेवक समाज की गतिविधियों से आप प्रारम्भ से ही जुडे रहे तथा अजमेर जिला शाखा के अध्यक्ष बनाये गये। श्री गुलजारीलाल नन्दा द्वारा स्थापित नवजीवन संघ के आप प्रदेश महामन्त्री नियुक्त किये गये। वर्तमान में आप जन सतर्कता समिति ब्यावर के संस्थापक अध्यक्ष हैं और इसके माध्यम से राज और समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का समय-समय पर पर्दाफाश करते रहते हैं।

प्रतापसिंह मुर्डिया—उदयपुर के प्रमुख समाजसेवी और व्यवसायी श्री प्रतापसिंह मुर्डिया का जन्म 26 फरवरी 1926 को उदयपुर में हुआ। आपने बी काम तक शिक्षा प्राप्त की। आप उदयपुर नगर परिषद के आठ वर्षों तक तथा नगर विकास न्यास के छ वर्षों तक सदस्य रहे और 1983–84 में रोटरी इंटरनेशनल के डिस्ट्रिक्ट 305 के गवर्नर चुने गये। आप महाराणा प्रताप स्मारक समिति तथा महावीर स्मारक समिति उदयपुर के सचिव व राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के निदेशक मंडल के सदस्य रह चुके हैं।

प्रद्युम्नकुमार जैन -भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में झुंझुनूं के जिला कलक्टर श्री पी के जैन का जन्म 27 जुलाई, 1933 को कोटा जिले के कुबेड ग्राम में हुआ। आपने एम ए की उपाधि प्राप्त की और 1958 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये। आपकी महत्वपूर्ण नियुक्तियों में अतिरिक्त निदेशक ह मा रा लोक प्रशासन संस्थान सचिव बेरी जांच आयोग, रजिस्ट्रार सिविल सर्विसेज अपीलेट ट्रिब्यूनल, अवर सचिव सतर्कता आयोग तथा शासन उपसचिव आदि हैं। आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

श्री जैन की 1988 में भा० प्र० सेवा में पदोन्नति हुई और वर्तमान पदस्थापन से पूर्व आप झालावाड के जिला कलक्टर रहे। आपने "ग्रामीण-विकास-दिग्बोध की तलाश" का सम्पादन किया है जिसे भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय ने प्रथम पुरस्कार प्रदान किया है। "दी मार्च" नामक मासिक पत्रिका का भी आपने प्रकाशन किया है।

प्रद्युम्नसिंह—राजस्थान के स्वायत्त शासन, नगरीय-विकास तथा आयोजन आदि विभागों के पूर्व प्रभारी राज्य मंत्री तथा वर्तमान में धौलपुर के जिला प्रमुख श्री सिंह का जन्म 1938 में हुआ। आपने आगरा विश्वविद्यालय से बी.ए. और एलएल बी. की उपाधियां प्राप्त की और विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष रहे। 1967 के आम चुनाव में आप प्रथम बार धौलपुर जिले के राजाखेडा क्षेत्र में कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये तथा 4 सितम्बर, 1967 से 8 जुलाई, 1971 तक सुखाडिया मंत्रिमंडल में उपमंत्री रहे। 1972 और 1977 में क्रमश: कांग्रेस और निर्दलीय तथा 1980 में कांग्रेस (इ) प्रत्याशी के रूप में आप राजाखेडा क्षेत्र से ही विधायक चुने जाते रहे। 18 फरवरी, 1981 को आप पहाडिया और 19 जुलाई 1981 को माथुर मंत्रिमंडल में राज्यमंत्री बनाये गये। 1985 के चुनाव में आप जहाँ दलीय टिकिट नहीं

मिलने से विधान सभा में नहीं पहुंच पाये यहां जुलाई 1988 में हुए पंचायती राजसंस्थाओं के चुनाव में धौलपुर जिले के प्रमुख चुन लिए गये।

प्रदीपकुमार देव—भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक प्रशिक्षण सस्थान मसूरी में उप निदेशक श्री पी.के. देव का जन्म 10 सितम्बर, 1953 को कलकत्ता में हुआ। 1977 में सेवा में प्रवेश के बाद आप उप जिलाधीश भरतपुर, अतिरिक्त जिलाधीश धौलपुर, सचिव नगर-विकास न्यास अलवर तथा पाली और उदयपुर के जिलाधीश पद पर कार्य कर चुके हैं।

प्रभातनारायण खन्ना—भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जोधपुर रेंज के पुलिस उप महानिरीक्षक श्री पी.एन. खन्ना का जन्म 8 दिसम्बर, 1942 को उत्तर प्रदेश में हुआ। 1967 में सेवा में प्रवेश के बाद आप सीकर, अलवर और भरतपुर के जिला पुलिस अधीक्षक, भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर केन्द्रीय सुरक्षा बल में सहायक महानिरीक्षक, इंडियन एयरलाइंस में मुख्य सतर्कता अधिकारी तथा अजमेर रेंज के उप महानिरीक्षक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

प्रभुदत्त शर्मा (डा०)—पुलिस विषयों के जाने-माने विशेषज्ञ तथा राजस्थान वि.वि में राजनीति शास्त्र के विभागाध्यक्ष डा० पी.डी. शर्मा का जन्म अलवर जिले में हुआ। आपने राजस्थान वि.वि. से राजनीति शास्त्र में एम.ए. में स्वर्ण पदक प्राप्त किया तथा अमेरिका से डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। मनीला, टोरेंटो व लन्दन में पंचायतीराज पर आपके पेपर छप चुके हैं तथा एक दर्जन के लगभग आपकी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आप अभी भी अमेरिका के नार्थ केरोलिना विश्वविद्यालय के विजिटिंग प्रोफेसर हैं।

प्रभूलाल रावत—अनुसूचित जन-जातियों के लिए सुरक्षित बांसवाडा लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस (इ) के टिकिट पर निर्वाचित श्री प्रभूलाल रावत का जन्म 1935 में बडरेल ग्राम में हुआ। प्रारंभ में आप सोशलिस्ट पार्टी मे शामिल हुए लेकिन 1972 में कांग्रेस में आ गये।

आपने 1971 में भी बांसवाडा क्षेत्र से सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के प्रत्याशी के रूप में लोकसभा का चुनाव लडा लेकिन पराजित हो गये। आप 1981 में बांसवाडा के जिला प्रमुख भी चुने गये।

प्रमिला खन्ना (श्रीमती)—राजस्थान लेखा सेवा की चयन वेतन श्रृंखला की अधिकारी तथा वर्तमान में वित्त विभाग में शासन उपसचिव श्रीमती प्रमिला खन्ना का जन्म 12 जून, 1939 को लुधियाना (पंजाब) में हुआ। आपकी शिक्षा एम ए., बी.एड. तक है। 1972 में सेवा में चयन के बाद आप कोषाधिकारी जयपुर जिला तथा सचिवालय, ग्रमीण विकास एवं पंचायत राज विभाग व वित्त विभाग में वरिष्ठ लेखाधिकारी, राजस्थान सहकारी डेयरी फेडरेशन में मुख्य वित्तीय नियन्त्रक तथा हरिश्चन्द्र माथुर राज्य लोक-प्रशासन संस्थान में अतिरिक्त निदेशक (योजना एवं वित्त) आदि पदों पर कार्य कर चुकी हैं।

प्रमोदकरण सेठी (डा०)—अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अस्थि-रोग विशेषज्ञ डा. पी.के.सेठी का जन्म 23 नवम्बर, 1927 को अजमेर में एक साधारण अध्यापक के घर में हुआ। आपने आगरा विश्वविद्यालय से सात विषयों में सर्वोच्च अंकों के साथ एम.बी.,बी.एस. परीक्षा पास की और स्वर्णपदक प्राप्त किया। इसके बाद आपने लन्दन के रायल कालेज से एफ.आर.सी.एस. किया।

सन् 1954 में डा० सेठी ने शल्य चिकित्सक के रूप में सवाई मानसिंह चिकित्सालय की सेवा में प्रवेश किया। यह आश्चर्य की ही बात थी कि अस्थि रोगों के डाक्टर न होने के बावजूद आपने इस

चिकित्सा जगत में न केवल जयपुर अस्थि-विभाग में अपने को एक विशेषज्ञ के रूप में स्थापित ही नहीं किया वरन् जयपुर फुट को भी विश्व-मानचित्र में स्थान दिलवाया। आपकी इन उपलब्धियों के लिए आपको अन्तर्राष्ट्रीय मैगसेसे पुरस्कार सहित अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। सवाई मानसिंह अस्पताल में स्थित पुनर्वास अनुसंधान केन्द्र (आर आर सी) भी आप ही की देन है। वर्तमान में आप जयपुर में अपना निजी नर्सिंग होम चला रहे हैं।

प्रमोदकुमार त्रिपाठी—भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में बीकानेर रेंज के उप महानिरीक्षक श्री पी के त्रिपाठी का जन्म 5 जून 1949 को राजस्थान में हुआ। 1972 में भारतीय पुलिस सेवा में चयनित होने के पश्चात आप भीलवाड़ा एवं चित्तौड़गढ़ जिलों के पुलिस अधीक्षक, सी आई डी (अपराध शाखा) में पुलिस अधीक्षक, भ्रष्टाचार निरोधक विभाग में पुलिस अधीक्षक, प्रतिनियुक्ति पर केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल में कमांडेंट तथा शाह आयोग में पुलिस अधीक्षक रह चुके हैं।

प्रमोदकुमार लोढ़िया – सार्वजनिक निर्माण विभाग (पथ) के मुख्य अभियन्ता श्री पी के लोढ़िया का जन्म 6 जून 1935 को पंजाब में हुआ। आपने सिविल अभियांत्रिकी में बी ई (ऑनर्स) किया। आप एम आई स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग संस्थान लंदन के व्यावसायिक सदस्य है। आपने अक्टूबर 1955 में सहायक अभियंता के रूप में सेवा प्रारंभ की और 1961 में अधिशासी अभियंता 1974 में अधीक्षण अभियंता,1979 में अतिरिक्त मुख्य अभियंता और 3 अगस्त 1983 को मुख्य अभियंता के रूप में पदोन्नत हुए। आप प्रतिनियुक्ति पर राजस्थान आवासन मण्डल में आवासीय आयुक्त और राजस्थान पुल एवं निर्माण निगम के अध्यक्ष भी रह चुके है।

प्रवीणचन्द्र छाबड़ा—राजस्थान के जाने-माने पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री प्रवीणचन्द्र छाबड़ा का जन्म 26 जुलाई 1930 को जयपुर में संभ्रांत जैन परिवार में हुआ। प्रारंभ से ही साहित्यिक और राजनीतिक अभिरुचि के कारण आप 1952 में 'जयभूमि' के उप सम्पादक नियुक्त हुए और 1953-54 में साप्ताहिक 'भारत' का प्रकाशन और सम्पादन किया। 1954 में आप कलकत्ता चले गये वहाँ दैनिक "लोकमान्य" और "विश्वमित्र" के सम्पादकीय विभागों में कार्य किया। 1956 में आप पुनः जयपुर आ गये और "लोकवाणी" के उप सम्पादक तथा नगर संवाददाता रहे। 1974–75 में आप 'समाचार भारती' के जयपुर ब्यूरो में प्रमुख बनाये गये तथा बाद में कलकत्ता और चण्डीगढ़ शाखाओं में प्रभारी रहे। आप सर्वोदय साहित्य समाज के संस्थापक सदस्य, सवाई जयसिंह स्मारक समिति के मंत्री पदमपुरा (जयपुर) स्थित श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र के संरक्षक तथा अन्य सामाजिक व साहित्यिक संस्थाओं से संबद्ध रहे। श्री छाबड़ा राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के संस्थापक सदस्यों में से हैं। आप वर्षों तक संघ के महामंत्री रह चुके हैं। 1963 में आपने वियना में आयोजित विश्व पत्रकार सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया तथा 13 अन्य भूमध्य सागरीय देशों की यात्रा कर वहाँ की पत्रकारिता की स्थिति का अध्ययन किया। 1964 से 69 तक आप भारतीय श्रमजीवी पत्रकार महासंघ की कार्यसमिति के भी सदस्य रहे।

प्रवीणचन्द्र जैन—भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री प्रवीणचन्द्र जैन का जन्म 4 जुलाई, 1931 को टोंक जिले के टोडारायसिंह कस्बे में हुआ। बी काम तथा एलएल.बी करने के बाद आपने कुछ अर्से तक मालपुरा में वकालत की तथा 1956 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गए। आपने दूदू पंचायत समिति के विकास अधिकारी, दौसा, बूंदी और आमेर में उपजिलाधीश, सवाईमाधोपुर में अतिरिक्त जिलाधीश, समाज कल्याण विभाग में उपनिदेशक, यातायात विभाग में

उपायुक्त एवं अतिरिक्त आयुक्त, सिंचित क्षेत्र विकास विभाग में शासन उपसचिव तथा पचायत राज विभाग में निदेशक (प्रशिक्षण) आदि पदों पर कार्य किया। 1982 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति के बाद आप जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग में उपसचिव, झालावाड के जिलाधीश, नगर परिषद् जयपुर में प्रशासक, वाणिज्यिक कर विभाग में अतिरिक्त आयुक्त तथा नगर भूमि एवं भवन कर विभाग के निदेशक रहे।

प्रवीणचन्द्र जैन—राजस्थान के जाने-माने संस्कृत विद्वान् श्री प्रवीणचन्द्र जैन का जन्म 14 अप्रेल, 1909 को जयपुर में हुआ। आपने संस्कृत और हिन्दी में एम.ए., शास्त्री तथा साहित्यरत्न की उपाधियां प्राप्त की। आप 1942–43 में जी.बी. पोद्दार कालेज नवलगढ में व्याख्याता, 1943 से 47 तक संस्कृत के प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष, 1947 से 50 तक वनस्थली विद्यापीठ, 1953 से 56 तक महारानी श्री जया कालेज भरतपुर के प्राचार्य, 1957–58 में राजकीय महाविद्यालय कोटा के उपाचार्य, 1958 से 65 तक डूंगर कालेज बीकानेर के प्राचार्य तथा सेवा-निवृत्ति के पश्चात वनस्थली विद्यापीठ के पुन. प्राचार्य रहे। आप भंडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट के आजीवन सदस्य है तथा राज्य सरकार की शिक्षा विषयक अनेक समितियों के सदस्य और राजस्थान शिक्षक सघ के सचिव तथा उपाध्यक्ष रह चुके है।

प्रहलादचन्द्र अग्रवाल—राजस्थान प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में वाणिज्यिक कर विभाग में उपायुक्त (प्रशासन) जयपुर, श्री पी.सी. अग्रवाल का जन्म 21 जुलाई, 1939 को सांभरलेक में श्री बिहारीलाल अग्रवाल के यहां हुआ। आपने जयपुर से एम.काम और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त की। 1963 में आपका राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ। श्री अग्रवाल अलवर में सहायक जिलाधीश एवं दंडनायक, राजस्थान उच्च न्यायालय में प्रतिनियुक्ति पर अलवर में ही मुंसिफ मजिस्ट्रेट, वाणिज्यिक कर अधिकारी अलवर एवं विशेष वृत्त कोटा, राज्य बीमा विभाग में उप निदेशक तथा राजस्थान लघु उद्योग निगम मे महाप्रबन्धक रह चुके हैं। जून 1987 में आपने काबुल में आयोजित भारतीय व्यापार प्रदर्शनी में राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया।

प्रागेश्वर तिवाडी—भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में कृषि (विपणन) विभाग में शासन उपसचिव एवं कृषि उपज मंडी समिति (फल-सब्जी) जयपुर के पदेन प्रशासक श्री प्रागेश्वर तिवाडी का जन्म राजस्थान के प्रमुख जनसेवी और राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री देवीशकर तिवाडी के यहा एक जुलाई, 1934 को हुआ। राजस्थान विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. करने के बाद 1957 में आपका राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ। आपने राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में क्षेत्रीय प्रबन्धक एवं अतिरिक्त महाप्रबन्धक तथा राजस्थान भेड-पालन सहकारी फैडरेशन के महाप्रबन्धक आदि पदों पर कार्य किया। 1988 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति के बाद वर्तमान पद स्थापन से पूर्व आप अजमेर में अतिरिक्त कलक्टर (विकास) के पद पर भी कार्य कर चुके हैं।

प्राणनाथ महल—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के वरिष्ठ अधिकारी तथा वर्तमान में नई दिल्ली में राजस्थान सरकार के आवासीय आयुक्त श्री पी.एन. महल का जन्म 23 फरवरी, 1933 को देहरादून (उ० प्र०) में हुआ। 1957 में आपका सेवा में चयन हुआ। वर्तमान पदस्थापना से पूर्व आप राजस्व मंडल के सदस्य, प्रतिनियुक्ति पर प्रधानमंत्री सचिवालय में संयुक्त सचिव, नई दिल्ली नगरपालिका के अध्यक्ष, इंडियन ड्रग्स एण्ड फार्मास्यूटिकल्स लि० तथा राजस्थान एग्रो इण्डस्ट्रीज कार्पोरेशन लि० के अध्यक्ष एव प्रबन्ध निदेशक, राज्य के पर्यटन, कला, संस्कृति एवं

रा ग्रह विभागों के शासन सचिव तथा राजस्थान पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष आदि पदों पर कार्य कर चुके है।

प्रियदर्शी ठाकुर—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राज्य के वाणिज्यिक कर आयुक्त श्री प्रियदर्शी ठाकुर का जन्म 22 अगस्त, 1946 को दरभंगा (बिहार) में हुआ। 1970 में सेवा में चयन के बाद आप डूंगरपुर टौंक तथा पाली के जिलाधीश, विशिष्ट योजना संगठन विभाग में शासन उपसचिव पर्यटन विभाग के निदेशक एवं पदेन प्रबन्ध निदेशक राजस्थान पर्यटन विकास निगम राज्य के आबकारी आयुक्त तथा अजमेर के संभागीय आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके है।

प्रेमकृष्ण गर्ग—भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भूमि एवं भवन कर विभाग के निदेशक श्री पी के गर्ग का जन्म 17 अगस्त 1934 को डूंगरपुर में हुआ। आपने महाराणा भूपाल कालेज उदयपुर से अर्थशास्त्र में एम ए किया तथा प्रारम्भ में कुछ अर्से तक शिक्षा विभाग में वरिष्ठ शिक्षक रहे। 1958 में आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये तथा उपजिलाधीश भीलवाड़ा निदेशक कृषि विपणन अतिरिक्त आयुक्त विभागीय जांच प्रशासक जयपुर नगर परिषद महाप्रबन्धक राजस्थान राज्य सहकारी डेयरी फैडरेशन आदि पदों पर कार्य किया। 1988 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति के बाद वर्तमान पद-स्थापन से पूर्व आप बांसवाड़ा व पाली के जिला कलक्टर भी रहे।

प्रेमनारायण गुप्ता—जयपुर के प्रमुख जौहरी तथा ज्वैलर्स एसोसिएशन के मंत्री श्री प्रेमनारायण गुप्ता का जन्म 5 नवम्बर 1941 को आमेर तहसील के कुण्डा ग्राम के एक साधारण अग्रवाल परिवार में हुआ। आप हायर सैकण्ड्री तक शिक्षित हैं। आप गुप्ता जैम कार्पोरेशन में भागीदार तथा गुप्ता कैमिकल्स प्रा० लि० में संचालक है। आप व्यवसाय के सिलसिले में यूरोप अमरीका तथा एशिया के अनेक देशों की यात्रा कर चुके हैं।

प्रेमनारायण माथुर—देश के जाने-माने शिक्षा और अर्थशास्त्री, चिन्तक और वनस्थली विद्यापीठ के उपाध्यक्ष श्री प्रेमनारायण माथुर का जन्म 15 अक्टूबर, 1912 को उदयपुर जिले के कुरावड ग्राम में हुआ। आपने बी काम और एम ए की उपाधियां प्राप्त की तथा सनातन धर्म कालेज ब्यावर और अग्रवाल कालेज इलाहाबाद में व्याख्याता रहे। आपने स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया तथा संयुक्त राजस्थान के वित्त और शिक्षा मंत्री तथा वृहद राजस्थान के शिक्षा मंत्री रहे। 1950 से आप सक्रिय राजनीति से अलग हो गये और अपना सम्पूर्ण समय वनस्थली विद्यापीठ को दे रहे हैं। आप भारत सरकार द्वारा नियुक्त शिक्षा सम्बन्धी विभिन्न समितियों और शिक्षा संस्थानों के सदस्य रह चुके है। आपकी अर्थशास्त्र विषयक अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

प्रेमलता ऐरन (श्रीमती)--विश्व मानचित्र पर सैकडों प्रकार के गुलाब उत्पादन के लिए जयपुर नगर का नाम अंकित कराने और गुलाबी नगर जयपुर को गुलाबों के बगीचों का नगर बनाने की स्वप्न दृष्टा श्रीमती ऐरन उच्च न्यायिक सेवा के एक अधिकारी की पुत्री और राजस्थान प्रशासनिक सेवा के एक वरिष्ठ अधिकारी की पत्नी हैं। आपका जन्म अजमेर में हुआ और अजमेर में ही आपने बी.एससी. (वनस्पति विज्ञान) की उपाधि प्राप्त की। लगभग 17–18 वर्ष पूर्व एक मित्र द्वारा भेंट किये गये गुलाब के तीन-चार पौधों से कार्यारंभ कर अपनी मात्र साढे तीन एकड क्षेत्रफल की आनन्द नर्सरी में सैकडों किस्मों के रंग-बिरंगे 60–70 हजार पौधों की देखभाल वे अपनी सन्तानों की तरह करती हैं। अमरीका, इंग्लैण्ड, कनाडा, आस्ट्रेलिया न्यूजीलैण्ड और भारत आदि देशों की रोज सोसाइटीज की आप सदस्या हैं तथा "रोज

सोसायटी ग्राफ राजस्थान'' की तो ग्राप सर्वेसर्वा हैं। गुलाब उत्पादन के लिए आपको ग्रब तक ग्रनेक राष्ट्रीय और ग्रन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं।

प्रेमस्वरूप राजवंशी— राजस्थान जल प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण मण्डल के अध्यक्ष श्री पी एस राजवंशी का जन्म 31 दिसम्बर,1935 को बीकानेर में हुआ। आपने सिविल इंजीनियरिंग में बी ई तथा जन-स्वास्थ्य में एम.ई. के साथ ही एम.आई.ई. की उपाधि प्राप्त की। आप दो बार जन-स्वास्थ्य ग्रभियांत्रिकी विभाग के मुख्य अभियन्ता के साथ ही शासन अतिरिक्त सचिव रह चुके हैं। जून 1981 से जून 1982 तक ग्राप राजस्थान वाटर सोर्सेज एण्ड सीवरेज मैनेजमेंट बोर्ड के सदस्य सचिव तथा पूर्व में भी राजस्थान राज्य जल-प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण मंडल के अध्यक्ष रह चुके हैं। आप विश्व स्वास्थ्य-संगठन एवं राष्ट्रमंडलीय फैलोशिप पर क्रमशः अमरीका एवं ब्रिटेन का भ्रमण कर चुके हैं।

पंकज—भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्रीय उर्जा राज्य मन्त्री के निजी सचिव श्री पंकज का जन्म 4 अक्टूबर, 1952 को कानपुर में हुआ। आई०आई० टी० दिल्ली से एम.टेक. किया तथा दूर संचार विभाग में दिल्ली के सहायक डिवीजनल इंजीनियर एवं गाजियाबाद में डिवीजनल इंजीनियर (टेलीफोन्स) रहे। 1979 में आपका भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ। आप अब तक उपजिलाधीश अलवर तथा जयपुर, अतिरिक्त जिला कलक्टर (विकास) जयपुर, भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर अणुशक्ति विभाग बम्बई में अंडर सेक्रेटरी, जिला कलक्टर बाडमेर, अतिरिक्त आयुक्त चम्बल विकास कोटा, निदेशक राजस्थान ऊर्जा-विकास अभिकरण तथा गृह विभाग में शासन उपसचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

पंकज पंचोली—चित्तौडगढ जिले के बेगू निर्वाचन क्षेत्र से 1985 के आम चुनाव में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री पकज पचोली का जन्म 6 अगस्त, 1935 को बेगू में हुआ। प्रारम्भ में आपने मेवाड प्रजामंडल और देशी राज्य लोक परिषद के आन्दोलनों में हिस्सा लिया। बी.ए., एलएल.बी. करने के बाद आपने चित्तौडगढ में वकालत प्रारंभ की. 1964–67 में आप चित्तौडगढ नगर परिषद 1967–71 में नगर विकास न्यास, राजस्थान आवासन मंडल, राजस्थान स्टेट को-आपरेटिव बैंक, राजस्थान राज्य सहकारी भूमि-विकास बैंक तथा चित्तौडगढ जिला सहकारी भूमि-विकास बैंक के संचालक मंडल के व रेलवे उपभोक्ता सलाहकार समिति के सदस्य रहे। वर्तमान में आप राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के संचालक मंडल के भी सदस्य हैं।

पदम मेहता— जोधपुर से प्रकाशित दैनिक ''जलते दीप'' तथा राजस्थानी भाषा के मासिक ''माणक'' के प्रधान सम्पादक श्री पदम मेहता का जन्म 11 मई, 1949 को जोधपुर में हुआ। आपने उच्च माध्यमिक तक शिक्षा प्राप्त की और 1975 में अपने अग्रज तथा ''जलते दीप'' के संस्थापक सम्पादक श्री माणक मेहता के निधन पर पत्र के प्रकाशन तथा सम्पादन का दायित्व संभाला। आपने श्री माणक मेहता की स्मृति में 1983 से राजस्थान में पत्रकारिता के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वाले पत्रकार को प्रति वर्ष पांच हजार रुपये का ''माणक पुरस्कार'' प्रारंभ किया है। आप अ.भा. लघु एवं मध्यम समाचार पत्र संघ की कार्यकारिणी के सदस्य हैं।

पदमपालचन्द्र भंडारी— भारतीय पुलिस सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सी.आई.डी. में पुलिस अधीक्षक श्री पी.पी.सी. भंडारी का जन्म 11 सितम्बर, 1932 को जोधपुर में हुआ। राजस्थान पुलिस सेवा में चयन के बाद मुख्य रूप से आप राज्यपाल के ए.डी.सी. तथा जयपुर देहात क्षेत्र के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रहे। 1978 में आपकी पदोन्नति भारतीय पुलिस सेवा

में हुई तथा आप अब बाड़मेर और बीकानेर के पुलिस अधीक्षक एवं राजस्थान पुलिस अकादमी में उपाचार्य तथा उप निदेशक रह चुके हैं।

पदमसिंह भाटी—प्रमुख पत्रकार, राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के अध्यक्ष और वर्तमान में "दैनिक नवज्योति" के चीफ रिपोर्टर श्री पदमसिंह भाटी का जन्म 5 जून, 1939 को नागौर जिले के छापरी ग्राम में हुआ। आपकी शिक्षा फतहपुर और सरदारशहर में हुई और छात्र जीवन में ही आपने "किशोर" नामक साप्ताहिक बाल पत्र का प्रकाशन किया। 1959 से 1962 तक आप राजस्थान समाज-कल्याण संघ के कार्यालय सचिव और इसकी अध्यक्षा श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया के निजी सचिव रहे। कुछ दिनों सरदारशहर में अध्यापन भी किया और चुरू जिला लघु सिंचाई संघ, चुरू जिला युवक कांग्रेस, जिला भारत सेवक समाज आदि के अध्यक्ष, इंटरनेशनल सोसायटी आफ आर्ट एण्ड कल्चर के सचिव तथा राजस्थान प्रदेश युवक कांग्रेस की कार्यकारिणी के सदस्य रहे। इसी दौरान आपने सरदारशहर में "समाचार भारती" तथा राजधानी के अन्य दैनिक पत्रों का प्रतिनिधित्व किया।

श्री भाटी 1970 में "समाचार भारती" के स्टाफ रिपोर्टर बनकर जयपुर आये और अगस्त 1975 में "दैनिक नवज्योति" के सम्पादकीय विभाग में चले गये। 1975 से 85 तक तीन बार आप राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के महामंत्री तथा अप्रैल 1988 में अध्यक्ष चुने गये।

पन्नालाल नवलखा (डा०)—राजस्थान सरकार की भ्रमणशील चिकित्सा इकाई के निदेशक डा. पी.एल. नवलखा का जन्म 8 जनवरी, 1938 को जयपुर में हुआ। आपने एस.एम.एस. मेडीकल कालेज जयपुर से 1961 में एम.बी. बी.एस. तथा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली से मेडीसन-रेडियोलाजी, रेडियोथेरापी एवं कैंसर में एम.डी. किया। आप 1967 में रेडियोलाजी विभाग में रीडर तथा 1971 में प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत किये गये। आपके अब तक 65 शोध पत्र अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मेडीकल पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आप 1981 में [illegible] एसोसियेशन द्वारा डा. दीवान चन्द मेमोरियल अवार्ड तथा इसी वर्ष राजस्थान के मेडीकल [illegible] में सर्वश्रेष्ठ शोध कार्य के लिए गार्गी देवी शूरवीरसिंह पुरस्कार से सम्मानित किए जा चुके हैं।

डा० नवलखा प्रशिक्षण हेतु तीन बार विदेशों में जा चुके हैं तथा 1982 में [illegible] में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर सम्मेलन के वैज्ञानिक अधिवेशन की अध्यक्षता कर चुके हैं।

परमानन्द चोयल-राजस्थान के परिवेशगत यथार्थ को अपनी तूलिका के माध्यम से उभारने वाले अग्रणी कलाकार श्री चोयल का जन्म 5 जनवरी 1924 को [illegible] में हुआ। आपने 1946 में [illegible] स्कूल आफ आर्ट्स से फाइन आर्ट्स में डिप्लोमा के साथ ही ड्राइंग टीचर्स [illegible] भी [illegible]। 1948 में आप राजकीय महाविद्यालय कोटा में प्राध्यापक नियुक्त हुए और 1953 में [illegible] आफ आर्ट्स बम्बई से फाइन आर्ट्स में डिप्लोमा किया। 1956 में उदयपुर [illegible] विभाग में प्राध्यापक बने जहाँ से 1984 में सेवा-निवृत्त हुए। इस दौरान 1961-62 में [illegible] स्लेड स्कूल में चित्रकला का विशेष अध्ययन किया। [illegible] की स्मृतियां टूटती-दरकती इमारतों के साथ उभरकर [illegible] बिन घरहरों का कोई दावेदार नहीं है। आपके चित्रों का प्रदर्शन [illegible] हुआ है। कला-क्षेत्र में आपके अनेक शिष्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय [illegible]।

परमानन्द रथोया—भारतीय पुलिस सेवा के [illegible] वर्तमान में पुलिस उप महानिरीक्षक (सुरक्षा) श्री परमानन्द [illegible] का जन्म [illegible] 1945 को

दिल्ली में हुआ। सन् 1972 में आपका भारतीय पुलिस सेवा में चयन हुआ और वर्तमान पदस्थापना से पूर्व आपने झालावाड, पाली तथा सीकर में जिला पुलिस अधीक्षक, सी.आई.डी. की अपराध शाखा में हरिजन अत्याचार प्रकोष्ठ के अधीक्षक, भ्रष्टाचार-निरोधक विभाग में पुलिस अधीक्षक (द्वितीय) तथा राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में निदेशक (सतर्कता) आदि पदों पर कार्य किया।

परमेश्वर द्विरेफ—राजस्थान के विख्यात कवि श्री द्विरेफ का जन्म झुंझुनूं जिले के चिड़ावा कस्बे में फाल्गुन कृष्णा अमावस्या वि. सम्वत 1984 को हुआ। आपकी औपचारिक रूप से यद्यपि कोई शिक्षा नहीं हुई लेकिन देश की शायद ही कोई हिन्दी पत्र-पत्रिका ऐसी होगी जिसमें आपकी रचना प्रमुखता से प्रकाशित नहीं हुई हो। आपकी प्रकाशित कृतियों में कमला नेहरू (1952), मरु-के-टीले (1953), धूल-के-फूल (1955), मीरां महाकाव्य (1957) तथा युगदृष्टा-प्रेमचन्द महाकाव्य (1958) प्रमुख हैं। इनमें मीरां महाकाव्य राजस्थान साहित्य अकादमी तथा उत्तर प्रदेश हिन्दी परिषद द्वारा पुरस्कृत है तथा पिछले अनेक वर्षों तक केरल विश्वविद्यालय में बी.ए. के पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाता रहा है। राजस्थान साहित्य अकादमी वर्ष 1972–73 में आपको विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित कर चुकी है।

परमेशचन्द्र—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राज्य के आबकारी आयुक्त श्री परमेशचन्द्र का जन्म एक जुलाई, 1949 को उत्तर प्रदेश में हुआ। 1973 में सेवा में प्रवेश के बाद आप टोंक के उप जिलाधीश, सिरोही, कोटा तथा सीकर जिले के दो बार जिलाधीश, योजना विभाग में शासन विशिष्ट सचिव तथा उद्योग विभाग के निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

परसराम मदेरणा—राजस्थान में 1962 से फरवरी 1985 तक सर्वश्री मोहनलाल सुखाडिया, बरकतुल्ला खां, हरिदेव जोशी और शिवचरण माथुर की सरकारों में विभिन्न विभागों के मंत्री रहे श्री परसराम मदेरणा का जन्म 23 जुलाई, 1926 को जोधपुर जिले के चांदी ग्राम में एक समान्य कृषक परिवार में हुआ। आपने एम.ए. और एलएल.बी. की उपाधियां प्राप्त करने के बाद जोधपुर में वकालत प्रारम्भ की। राजनीति में सक्रिय रुचि होने के कारण आप कांग्रेस दल की गतिविधियों से जुड गये। 1953 से 56 तक आप चादी ग्राम पचायत के सरपच, 1955 से 57 तक जोधपुर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के अध्यक्ष, 1957 से 60 तक राजस्थान भूमि बधक सहकारी बैंक के संचालक मंडल के सदस्य तथा जोधपुर जिला कांग्रेस कमेटी के पहले महामंत्री और बाद में अध्यक्ष रहे। 1962 में आप प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री बनाये गये।

श्री मदेरणा 1957 और 1962 में ओसियाँ तथा 1967, 1972 1977 और 1980 के आम चुनावों में भोपालगढ़ क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये और 1985 के चुनाव में इसी क्षेत्र से पराजित हो गये। आप सर्वप्रथम 12 मार्च, 1962 को सुखाडिया मंत्रिमंडल में उपमंत्री नियुक्त किये गये। तदुपरांत 30 अप्रेल 1966 को आपको पदोन्नत कर कैबिनेट मंत्री बनाया गया। 9 जुलाई, 1971 को श्री बरकतुल्ला खां, 12 नवम्बर, 1973 को श्री हरिदेव जोशी और 19 जुलाई, 1981 को श्री शिवचरण माथुर की सरकार में आप पुनः मंत्री बनाये गये। इस दीर्घ अवधि में आपने कृषि, सहकारिता, सिंचाई, ऊर्जा, राजस्व, जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी, सार्वजनिक निर्माण, खाद्य एवं रसद, राहत, पंचायती राज आदि अनेक महत्वपूर्ण विभागों का दायित्व संभाला।

पवन चौपड़ा—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर केन्द्रीय लोक सेवा आयोग के अतिरिक्त सचिव श्री चौपड़ा का जन्म

22 मई, 1944 को लुधियाना (पंजाब) में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा शिमला में हुई तथा एम० एससी० (भौतिकी) तथा एलएल० बी० परीक्षा सैंट स्टीफन्स कालेज दिल्ली से उत्तीर्ण की। आप जिलाधीश जैसलमेर, शासन उप सचिव विशिष्ट योजना संगठन राजस्थान लघु उद्योग निगम में प्रबन्ध निदेशक, केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति पर वस्त्र मंत्रालय में निदेशक तथा वाणिज्य मंत्रालय में संयुक्त सचिव और हरिश्चन्द्र माथुर राजस्थान राज्य लोक-प्रशासन संस्थान के निदेशक एवं पदेन शासन विशिष्ट सचिव कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग (प्रशिक्षण) आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

पशुपतिनाथ भंडारी—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में स्वायत्त शासन, आवासन एवं नगरीय-विकास तथा नगर आयोजना आदि विभागों के शासन सचिव श्री पी एन. भंडारी का जन्म 7 मार्च, 1941 को पाली जिले में हुआ। 1965 में सेवा में चयन के बाद आप डूंगरपुर, सीकर, भरतपुर उदयपुर और कोटा के जिलाधीश रहे। सीकर जिले को अपने 23 दिसम्बर, 72 से 10 अक्टूबर 73 तक के संक्षिप्त कार्यकाल में राज्य के कृषि-उत्पादन मानचित्र में महत्वपूर्ण स्थान दिलाने का श्रेय आपको है जब आपने पंजाब नेशनल बैंक के आर्थिक सहयोग से गांव-गांव और ढाणी-ढाणी में नये कुओं के निर्माण का सघन अभियान चलाया। उस समय जन-जन की जुबान पर दो पी.एन.बी. छाये हुए थे। एक पी एन बी पंजाब नेशनल बैंक और दूसरा पशुपतिनाथ भंडारी। इसके बाद आप उपनिवेशन आयुक्त, राजस्थान स्टेट माइंस एण्ड मिनरल्स लि० के प्रबन्ध निदेशक आबकारी आयुक्त, कुलपति उदयपुर विश्वविद्यालय जनजाति क्षेत्रीय विकास आयुक्त तथा वाणिज्यिक कर आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

पुखराज सिरवी—भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भरतपुर के जिला पुलिस अधीक्षक श्री पुखराज सिरवी का जन्म 6 मई 1944 को पाली जिले में हुआ। प्रारंभ में आप राजस्थान पुलिस सेवा में रहे और 1986 में आपकी वर्तमान सेवा में पदोन्नति हुई। वर्तमान पदस्थापन से पूर्व आप बांसवाड़ा और बूंदी के पुलिस अधीक्षक रह चुके हैं।

पुरुषोत्तमदास कुदाल-राजस्थान उच्च न्यायालय के [illegible] न्यायाधिपति श्री [illegible] कुदाल का जन्म 20 अक्टूबर 1920 को अजमेर में हुआ। आपने बी एससी और [illegible] उपाधि प्राप्त करने के बाद अजमेर में ही जनवरी 1944 में वकालत शुरू की। 1959 से 67 तक आप [illegible] राजकीय अधिवक्ता रहे और एक जनवरी, 1972 को राजस्व मंडल के सदस्य नियुक्त किये गये। [illegible] जुलाई, 1975 को आप राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति बनाये गये। 19 अक्टूबर 1982 को आपने इस पद से अवकाश ग्रहण किया। आप राष्ट्रीय-सुरक्षा कानून के अन्तर्गत [illegible] तथा राजस्थान हिन्दी विधि प्रतिष्ठान के अध्यक्ष रहे तथा सेवा-निवृत्ति के बाद [illegible] शांति प्रतिष्ठान तथा अन्य संस्थानों के जांच आयोग के अध्यक्ष नियुक्त किये गये।

श्री कुदाल 1948 से कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता रहे और [illegible] प्रदेश कांग्रेस के सदस्य चुने गये। 1965 से 68 तक आप प्रदेश कांग्रेस की [illegible] के सदस्य रहे। आप प्रदेश की अन्य सामाजिक और स्वयंसेवी संस्थाओं से भी [illegible]।

पुरुषोत्तमलाल मेनारिया (डा०)—राजस्थानी भाषा और साहित्य के [illegible] मेनारिया का जन्म 5 नवम्बर, 1923 को उदयपुर में हुआ। आपने राजस्थान [illegible] एम ए. तथा जोधपुर विश्वविद्यालय से [illegible] की उपाधि प्राप्त की। [illegible]

उदयपुर के आचार्य, साहित्य संस्थान उदयपुर की "शोध पत्रिका" के सम्पादक राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर और राजस्थान प्राच्य विद्यापीठ जोधपुर के निदेशक रह चुके हैं। आपने राजस्थान के ग्राम-ग्राम और नगर-नगर के साथ पूना, बम्बई और कलकत्ता आदि नगरों की यात्रा कर हस्तलिखित ग्रन्थों और साहित्य की खोज की तथा उनका प्रकाशन किया। आप हिन्दी, राजस्थानी, संस्कृत, अंग्रेजी और गुजराती के अच्छे ज्ञाता तथा लगभग दो दर्जन ग्रन्थों के रचयिता हैं।

पुष्पा जैन—पाली जिले के पाली विधानसभा क्षेत्र की भाजपा विधायक सुश्री पुष्पा जैन का जन्म 1954 में जयपुर में हुआ। विधि-स्नातक सुश्री जैन ने व्यवसाय के रूप में वकालत प्रारम्भ की लेकिन शीघ्र ही सक्रिय राजनीति में आ गई और 1977 के आम चुनाव में प्रथम बार जयपुर जिले के आमेर क्षेत्र से अविभाजित जनता पार्टी की प्रत्याशी के रूप में विधायक चुनी गई। 1980 में पुनः इसी क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के टिकिट पर निर्वाचित हुई। दिसम्बर 1984 में आपने पाली क्षेत्र से भाजपा टिकिट पर लोकसभा का चुनाव भी लड़ा लेकिन सफल नहीं हो सकी। आप जयपुर अभिभाषक संघ की उपाध्यक्ष, राजस्थान लघु उद्योग निगम के संचालक मण्डल तथा राजस्थान विश्वविद्यालय की सीनेट की सदस्य तथा जयपुर के 250 वी वर्षगांठ समारोह समिति की संयोजक भी रह चुकी हैं।

पूनमचन्द विश्नोई—राजस्थान विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष तथा पूर्व शिक्षा मन्त्री श्री पूनमचन्द विश्नोई का जन्म जोधपुर जिले के फींच ग्राम में 15 मार्च, 1925 को हुआ। आप विधि-स्नातक हैं तथा व्यवसाय से वकील हैं। सार्वजनिक जीवन में प्रारम्भ से ही सक्रिय होने के कारण आप 1946 में मारवाड किसान सभा के मन्त्री चुने गये। 1951 में आप कांग्रेस में शामिल हुए और 1957 के आम चुनाव में लूणी क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये। 11 अप्रेल, 1957 से 30 मार्च, 62 तक आप सुखाडिया मंत्रिमण्डल में शिक्षा एवं स्वायत्त शासन उपमन्त्री रहे। 1957 में ही आप राजस्थान राज्य खेल परिषद् के अध्यक्ष मनोनीत किये गये। 1962 में आप लूणी क्षेत्र से ही विधानसभा का चुनाव हार गये लेकिन 1967 में पुनः इसी क्षेत्र से, 1972 में जालौर जिले के भीनमाल क्षेत्र से और 1980 में जोधपुर जिले के फलौदी क्षेत्र से विधायक चुने गये। 1977 और 1985 के चुनाव में आप फलौदी क्षेत्र से ही पराजित रहे। 1980 में आपने जोधपुर क्षेत्र से कांग्रेस (अर्स) के टिकिट पर लोकसभा का भी चुनाव लड़ा लेकिन उसमें भी सफल नहीं हो सके।

श्री विश्नोई 1967 से 71 तक विधानसभा के उपाध्यक्ष तथा 9 जुलाई, 1971 से 16 मार्च, 72 तक बरकतुल्ला खां सरकार मे शिक्षा मन्त्री रहे। 1980 से 19 मार्च, 85 तक आप विधानसभा के अध्यक्ष रहे। आप जोधपुर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक तथा मरु-विकास आयोग के भी अध्यक्ष रह चुके हैं। वर्तमान में आप राजस्थान सहकारी डेयरी फैडरेशन लि. के अध्यक्ष हैं।

पूर्णचन्द्र जैन—राजस्थान के प्रमुख सर्वोदयी विचारक, चिन्तक और लेखक श्री पूर्णचन्द्र जैन का जन्म भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा, वि.सं. 1966 को जयपुर में हुआ। एम.ए. और साहित्यरत्न परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने के बाद आप 1933 से 37 तक जोबनेर में अध्यापक तथा महाराजा कालेज जयपुर में व्याख्याता रहे। सन् 1938 में सार्वजनिक क्षेत्र में आये तथा जयपुर राज्य प्रजामंडल के विभिन्न आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया। बाद मे प्रजामंडल के मंत्री तथा 1948 में जयपुर कांग्रेस अधिवेशन की स्वागत समिति के सक्रिय कार्यकर्ता रहे। बाद में जयपुर जिला कांग्रेस के मंत्री बनाये गये। साप्ताहिक "लोकवाणी" तथा दैनिक "लोकवाणी" के सम्पादक रहे। 1951 में भूदान आन्दोलन में भाग लिया और राजस्थान भूदान यज्ञ समिति के सहसंयोजक तथा संयोजक और राजस्थान भूदान यज्ञ बोर्ड के मंत्री रहे। 1959 में अ.भा. सर्व सेवा संघ के मंत्री बनकर बनारस चले गये। वर्तमान में राज्य की विभिन्न खादी तथा रचनात्मक संस्थाओं के सदस्य और पदाधिकारी हैं।

पूर्णचन्द्र मिश्र—राजस्थान के पूर्व महानिदेशक पुलिस श्री पी सी मिश्र का जन्म 25 जनवरी 1930 को अलवर जिले में हुआ। आपने एम.ए. तक शिक्षा ग्रहण की और 1954 में भारतीय पुलिस सेवा में चुने गये। आप जयपुर सहित विभिन्न जिलों के पुलिस अधीक्षक रहे। बाद में आप उप महानिदेशक सी.आई.डी. (अपराध एवं रेलवे), अतिरिक्त महानिरीक्षक (प्रधान) [illegible] कमांडेंट जनरल गृह रक्षा तथा निदेशक नागरिक-सुरक्षा निदेशक भ्रष्टाचार-निरोधक विभाग आदि पद पर रहे।

पोकरलाल परिहार—पाली जिले के देसूरी (सु) क्षेत्र से 1985 के उपचुनाव में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री पोकरलाल परिहार का जन्म 14 सितम्बर 1946 को देसूरी तहसील के गजनीपुरा ग्राम में हुआ। आप एम ए , एलएल बी तक शिक्षित हैं और व्यवसाय से [illegible] हैं।

फकीरचन्द जैन—राजस्थान के प्रमुख साप्ताहिक "पूर्वोदय" के सम्पादक श्री [illegible] जैन का जन्म 22 अगस्त, 1939 को श्रीगंगानगर जिले के नोहर कस्बे में हुआ। आपने [illegible] परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1959 में श्रीगंगानगर से तथा 1961–62 में [illegible] "राजस्थान एक्सप्रेस" का प्रकाशन किया। 1963 में आप जयपुर आये तथा दो वर्षों तक साप्ताहिक [illegible] का प्रकाशन किया। 1965 से आप जयपुर से ही "पूर्वोदय" साप्ताहिक का नियमित [illegible] सम्पादन कर रहे हैं। आप 1985 से राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के [illegible] हैं तथा इससे पूर्व [illegible] समिति के सदस्य रह चुके हैं।

फतहसिंह चारण— भारतीय प्रशासनिक सेवा की मुख्य [illegible] वर्तमान में राजस्व मंडल के सदस्य श्री फतहसिंह चारण का जन्म 10 [illegible] हुआ। 1974 में सेवा में चयन के बाद आप बाड़मेर तथा [illegible] उप सचिव, राजस्थान राज्य पथ-परिवहन निगम में प्रबन्ध निदेशक [illegible] आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

फारुख हसन- राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री [illegible] जनवरी, 1932 को टोंक जिले के मालपुरा कस्बे में हुआ। [illegible] एम.ए और एलएल.बी. की उपाधियाँ प्राप्त करने के बाद [illegible] सार्वजनिक कार्यों में आपकी प्रारंभ से ही सक्रिय रुचि रही और [illegible] सदस्य तथा अंजुमन तालीमिया के अध्यक्ष रहे। 1972 में आप [illegible] विधायक चुने गये और श्री बरकतुल्ला खां के निधन के बाद [illegible] 25 अक्टूबर, 1973 को राज्यमंत्री नियुक्त किये गये। 1977 के [illegible] लिया। जनवरी 1978 में कांग्रेस का विभाजन होने पर आप कांग्रेस (इ) [illegible] के संयुक्त मंत्री बनाये गये।

श्री हसन 13 जुलाई, 1985 को राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश नियुक्त [illegible] इससे पूर्व आप राजस्व मंडल के सदस्य भी रहे।

फिरोज खाँ— भारतीय पुलिस सेवा [illegible] जयपुर प्रदेश के पुलिस अधीक्षक श्री फिरोज खाँ का जन्म 13 [illegible] आपने जयपुर में अध्ययन किया और बी.एस., तथा [illegible]

विश्वविद्यालय से प्राप्त की। सन् 1960 में राजस्थान पुलिस सेवा में चयन होने के बाद आपने ब्यावर मकराना, पाली और जालौर में उपअधीक्षक, गुप्तचर विभाग की अपराध शाखा में, जयपुर, बीकानेर हनुमानगढ़, उदयपुर तथा जयपुर देहात क्षेत्र में अतिरिक्त अधीक्षक आदि पदों पर कार्य किया। 1985 में भारतीय पुलिस सेवा में पदोन्नति के बाद आप झालावाड़ के पुलिस अधीक्षक और राजस्थान सशस्त्र पुलिस की छठी बटालियन के धौलपुर में समादेष्टा रह चुके हैं।

फूलचन्द जैन— पूर्व विधायक श्री फूलचन्द जैन का जन्म सन् 1930 में सुजानगढ़ (चूरू) में हुआ। 1945 में आपने प्रजा परिषद् के कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया और जेल गये। आप ग्यारह वर्षों तक युवक कांग्रेस के प्रमुख नेता रहे और दो वर्ष के लिए इसके अखिल भारतीय अध्यक्ष रहे। 1962 और 1972 में आप कांग्रेस टिकिट पर सुजानगढ़ से विधायक चुने गये। आप चूरू जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, राजस्थान कांग्रेस कमेटी के महासचिव एवं राजस्थान विधान सभा में कांग्रेस विधायक दल के सचिव रहे। प्रदेश में जनता पार्टी के सत्तारूढ़ होने पर आप इसके तथा बाद में लोकदल के भी प्रदेश महासचिव रहे। आप राजस्थान विधानसभा की लोक लेखा समिति के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। आप श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पार्श्वनाथ चूलगिरी के अध्यक्ष हैं तथा अन्य अनेक सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं के भी पदाधिकारी तथा सदस्य रहे हैं।

फूलचन्द बाफना— राजस्थान के प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी और वयोवृद्ध राजनेता श्री बाफना का जन्म पाली जिले में हुआ। आप वर्तमान राजस्थान के निर्माणोपरांत 30 मार्च, 1949 से 5 जनवरी, 1951 तक श्री हीरालाल शास्त्री के मन्त्रिमंडल में मंत्री रहे। पंचायतीराज की स्थापना होने पर आप देसूरी पंचायत समिति के प्रधान, पाली के जिला प्रमुख तथा 1967 में स्वतंत्र पार्टी के टिकिट पर विधायक रह चुके हैं।

फूलसिंह यादव— भारतीय पुलिस सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान पुलिस अकादमी के निदेशक श्री पी.एस. यादव का जन्म 7 नवम्बर, 1935 को हरियाणा (तत्कालीन पंजाब) राज्य में हुआ। 1960 में आपका सेवा में चयन हुआ और आप अनेक जिलों में पुलिस अधीक्षक तथा उदयपुर एवं भरतपुर रेन्ज के उप महानिरीक्षक सहित अनेक महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं।

फैयाज अली (डा.)— जन्म से मुस्लिम होने के बावजूद भगवान कृष्ण के अनन्य भक्त और उनकी लीलाओं के विख्यात चितेरे डा. फैयाज अली अजमेर जिले के किशनगढ़ के मूल निवासी हैं। आपके समस्त चित्र अष्टछाप के कवि नागरीदास की रचनाओं पर आधारित हैं जो किशनगढ़ राजपरिवार से सम्बन्धित थे। आपने कला को कभी व्यवसाय नहीं बनाया और जीवन भर स्वान्तः सुखाय ही कला की साधना की। वर्तमान में आप अवकाश प्राप्त अध्यापक का जीवन बिता रहे हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी आपको विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित कर चुकी है।

बृजराजसिंह (कोटा)—1962 से 71 तक लगातार तीसरी, चौथी और पांचवीं लोकसभा के सदस्य रहे, कोटा राजपरिवार से संबद्ध, श्री बृजराजसिंह का जन्म 21 फरवरी, 1934 को कोटा में हुआ। आपने एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की और 1959 से 61 तक कोटा सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के अध्यक्ष रहे। 1962 में प्रथम बार झालावाड़ क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर और 1967 एवं 1971 में भारतीय जनसंघ के टिकिट पर लोकसभा के सदस्य चुने गये। 1977 में आपने पुनः कांग्रेस टिकिट पर झालावाड़ क्षेत्र से भाग्य आजमाया लेकिन जनता पार्टी के प्रत्याशी के मुकाबले में चुनाव हार गये।

बृजसुन्दर शर्मा—राजस्थान में विभिन्न सरकारों में वर्षों तक विभिन्न विभागों के मंत्री रहे श्री बृजसुन्दर शर्मा का जन्म चार अक्टूबर, 1918 को बूंदी में हुआ। आप बी.ए., एलएल.बी. हैं तथा व्यवसाय से वकील हैं। आप छात्र जीवन से ही राजनीति में सक्रिय रहे हैं। प्रारंभ में आप बूंदी नगरपालिका के अध्यक्ष तथा बूंदी राज्य विधान सभा में कांग्रेस पक्ष के नेता रहे। 1948 में बने प्रथम संयुक्त राजस्थान (राजधानी कोटा) तथा 1948–49 में बने द्वितीय संयुक्त राजस्थान (राजधानी उदयपुर) में आप मंत्री नियुक्त किये गये। बाद में वर्तमान राजस्थान का निर्माण होने पर 26 अप्रैल, 1951 से तीन मार्च, 1952 तक श्री जयनारायण व्यास की कांग्रेस दलीय सरकार में आप पुनः मंत्री बनाये गये। 1952 के प्रथम विधानसभा चुनाव में आप बूंदी क्षेत्र से हार गये लेकिन 1954 में हुए उपचुनाव में आप इसी क्षेत्र से निर्वाचित हो गये और सुखाडिया मंत्रिमंडल में मंत्री नियुक्त हुए। 1957 में दलीय टिकिट से वंचित रहने के कारण चुनाव नहीं लड़ सके किन्तु 1961 में बूंदी से ही उपचुनाव में विजयी होकर पुनः मंत्री बनाये गये। 1962 और 67 के चुनाव में भी आप इसी क्षेत्र से विजयी हुए और आठ जुलाई 1971 तक सुखाडिया मंत्रिमंडल में राजस्व और चिकित्सा सहित विभिन्न विभागों के निरन्तर मंत्री रहे। 1972 में पुन. दलीय टिकिट नहीं मिलने पर चुनाव नहीं लड़ सके और 1977 में पराजित हो गये। 1980 के लोकसभा चुनाव में तो कोटा क्षेत्र से आप हार गये लेकिन बूंदी क्षेत्र से पुनः विधायक बने और 14 जुलाई, 1981 से 23 फरवरी, 1984 तक श्री शिवचरण माथुर की सरकार में मंत्री रहे। आप राज्य के जाने-माने श्रमिक नेता हैं और इण्टक की प्रदेश शाखा के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

ब्रह्मदत्त जोशी— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में अजमेर के जिला कलक्टर श्री बी डी जोशी का जन्म 25 जनवरी, 1934 को बाड़मेर में हुआ। आपकी शिक्षा जोधपुर में हुई। 1956 में आपका राजस्थान लेखा सेवा में चयन हुआ और एक वर्ष बाद 1957 में आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुन लिए गये। आप बारां और उदयपुर में उप जिलाधीश, कोटा में अतिरिक्त जिला विकास अधिकारी, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग में अतिरिक्त निदेशक, जयपुर में अतिरिक्त जिलाधीश (प्रशासन), लोकायुक्त सचिवालय में उप सचिव, गृह और चिकित्सा विभागों में शासन उप सचिव तथा स्थानीय निकाय विभाग में निदेशक रहे। 1983 में आपकी भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति हुई और आप विशिष्ट योजना संगठन और उपनिवेशन आदि विभागों में शासन उपसचिव तथा धौलपुर, सवाईमाधोपुर और सीकर में जिला कलक्टर रहे। आप हिन्दी के श्रेष्ठ कवि भी हैं।

बजरंगलाल बजाज— राजस्थान लेखा सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में इंदिरा गांधी नहर परियोजना बीकानेर में मुख्य लेखाधिकारी श्री बी.एल. बजाज का जन्म 12 फरवरी, 1942 को नागौर के संभ्रांत माहेश्वरी परिवार में हुआ। आपने रसायन शास्त्र में एम.एससी. करने के बाद एलएल बी. किया और मैन्चेस्टर (यू के) से प्रशिक्षकों हेतु प्रशिक्षण प्राप्त किया। राजस्थान लेखा सेवा में आपका 1965 में चयन हुआ तथा आप राजस्थान आवासन मंडल, राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड तथा विशिष्ट योजना विभाग में मुख्य लेखाधिकारी रहे। आप उमंग युवा संस्थान के अध्यक्ष तथा राजस्थान फिलेटेलिक एसोसियेशन के सदस्य हैं। आप हिन्दी में विभिन्न विषयों पर लेख आदि लिखते हैं तथा शेक्सपियर के "मिरन्डा" नाटक का अनुवाद किया है।

बजरंगलाल शर्मा— राजस्थान के जाने-माने वकील और राजस्थान हाईकोर्ट बार एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री बजरंगलाल शर्मा का जन्म 19 अगस्त, 1933 को झुंझुनूं जिले के पचेरीकलां ग्राम में हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर में हुई तथा एम.ए. और एलएल.बी. करने के बाद 1965 में आपने जयपुर में

श्वविद्यालय से प्राप्त की। सन् 1960 में राजस्थान पुलिस सेवा में चयन होने के बाद आपने ब्यावर, करौली, पाली और जालौर में उपअधीक्षक, गुप्तचर विभाग की अपराध शाखा में, जयपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, उदयपुर तथा जयपुर देहात क्षेत्र में अतिरिक्त अधीक्षक आदि पदों पर कार्य किया। 1985 में भारतीय पुलिस सेवा में पदोन्नति के बाद आप झालावाड के पुलिस अधीक्षक और राजस्थान सशस्त्र पुलिस की छठी बटालियन के धौलपुर में समादेष्टा रह चुके हैं।

फूलचन्द जैन— पूर्व विधायक श्री फूलचन्द जैन का जन्म सन् 1930 में सुजानगढ़ (चूरू) में हुआ। 1945 में आपने प्रजा परिषद् के कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया और जेल गये। आप ग्यारह वर्षों तक युवक कांग्रेस के प्रमुख नेता रहे और दो वर्ष के लिए इसके अखिल भारतीय अध्यक्ष रहे। 1962 और 1972 में आप कांग्रेस टिकिट पर सुजानगढ से विधायक चुने गये। आप चूरू जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, राजस्थान कांग्रेस कमेटी के महासचिव एव राजस्थान विधान सभा में कांग्रेस विधायक दल के सचिव रहे। प्रदेश में जनता पार्टी के सत्तारूढ होने पर आप इसके तथा बाद में लोकदल के प्रदेश महासचिव रहे। आप राजस्थान विधानसभा की लोक लेखा समिति के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। आप श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पार्श्वनाथ चूलगिरी के अध्यक्ष हैं तथा अन्य अनेक सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं के भी पदाधिकारी तथा सदस्य रहे हैं।

फूलचन्द बाफना— राजस्थान के प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी और वयोवृद्ध राजनेता श्री बाफना का जन्म पाली जिले में हुआ। आप वर्तमान राजस्थान के निर्माणोपरांत 30 मार्च, 1949 से 5 जनवरी, 1951 तक श्री हीरालाल शास्त्री के मन्त्रिमंडल में मन्त्री रहे। पंचायतीराज की स्थापना होने पर आप देसूरी पंचायत समिति के प्रधान, पाली के जिला प्रमुख तथा 1967 में स्वतन्त्र पार्टी के टिकिट पर विधायक रह चुके हैं।

फूलसिंह यादव— भारतीय पुलिस सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान पुलिस अकादमी के निदेशक श्री पी.एस. यादव का जन्म 7 नवम्बर, 1935 को हरियाणा (तत्कालीन पंजाब) राज्य में हुआ। 1960 में आपका सेवा में चयन हुआ और आप अनेक जिलों में पुलिस अधीक्षक तथा उदयपुर एवं भरतपुर रेन्ज के उप महानिरीक्षक सहित अनेक महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं।

फैयाज अली (डा.)— जन्म से मुस्लिम होने के बावजूद भगवान कृष्ण के अनन्य भक्त और उनकी लीलाओं के विख्यात चितेरे डा. फैयाज अली अजमेर जिले के किशनगढ के मूल निवासी हैं। आपके समस्त चित्र अष्टछाप के कवि नागरीदास की रचनाओं पर आधारित हैं जो किशनगढ़ राजपरिवार से सम्बन्धित थे। आपने कला को कभी व्यवसाय नहीं बनाया और जीवन भर स्वान्तः सुखाय ही कला की साधना की। वर्तमान में आप अवकाश प्राप्त अध्यापक का जीवन बिता रहे हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी आपको विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित कर चुकी है।

बृजराजसिंह (कोटा)—1962 से 71 तक लगातार तीसरी, चौथी और पांचवीं लोकसभा के सदस्य रहे. कोटा राजपरिवार से संबद्ध, श्री बृजराजसिंह का जन्म 21 फरवरी, 1934 को कोटा में हुआ। आपने एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की और 1959 से 61 तक कोटा सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के अध्यक्ष रहे। 1962 में प्रथम बार झालावाड क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर और 1967 एवं 1971 में भारतीय जनसंघ के टिकिट पर लोकसभा के सदस्य चुने गये। 1977 में आपने पुनः कांग्रेस टिकिट पर झालावाड से भाग्य आजमाया लेकिन जनता पार्टी के उम्मीदवार के मुकाबले में चुनाव हार गये।

बृजसुन्दर शर्मा—राजस्थान में विभिन्न सरकारों में वर्षों तक विभिन्न विभागों के मंत्री रहे श्री बृजसुन्दर शर्मा का जन्म चार अक्टूबर, 1918 को बूंदी में हुआ। आप बी.ए., एलएल.बी. हैं तथा व्यवसाय से वकील हैं। आप छात्र जीवन से ही राजनीति में सक्रिय रहे हैं। प्रारंभ में आप बूंदी नगरपालिका के अध्यक्ष तथा बूंदी राज्य विधान सभा में कांग्रेस पक्ष के नेता रहे। 1948 में बने प्रथम संयुक्त राजस्थान (राजधानी कोटा) तथा 1948–49 में बने द्वितीय संयुक्त राजस्थान (राजधानी उदयपुर) में आप मंत्री नियुक्त किये गये। बाद में वर्तमान राजस्थान का निर्माण होने पर 26 अप्रैल, 1951 से तीन मार्च, 1952 तक श्री जयनारायण व्यास की कांग्रेस दलीय सरकार में आप पुनः मंत्री बनाये गये। 1952 के प्रथम विधानसभा चुनाव में आप बूंदी क्षेत्र से हार गये लेकिन 1954 में हुए उपचुनाव में आप इसी क्षेत्र से निर्वाचित हो गये और सुखाडिया मंत्रिमंडल में मंत्री नियुक्त हुए। 1957 में दलीय टिकिट से वंचित रहने के कारण चुनाव नहीं लड सके किन्तु 1961 में बूंदी से ही उपचुनाव में विजयी होकर पुन. मंत्री बनाये गये। 1962 और 67 के चुनाव में भी आप इसी क्षेत्र से विजयी हुए और आठ जुलाई 1971 तक सुखाडिया मंत्रिमंडल में राजस्व और चिकित्सा सहित विभिन्न विभागों के निरन्तर मंत्री रहे। 1972 में पुन: दलीय टिकिट नहीं मिलने पर चुनाव नहीं लड सके और 1977 में पराजित हो गये। 1980 के लोकसभा चुनाव में तो कोटा क्षेत्र से आप हार गये लेकिन बूंदी क्षेत्र से पुनः विधायक बने और 14 जुलाई,1981 से 23 फरवरी, 1984 तक श्री शिवचरण माथुर की सरकार में मंत्री रहे। आप राज्य के जाने-माने श्रमिक नेता हैं और इण्टक की प्रदेश शाखा के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

ब्रह्मदत्त जोशी— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में अजमेर के जिला कलक्टर श्री बी डी जोशी का जन्म 25 जनवरी, 1934 को बाड़मेर में हुआ। आपकी शिक्षा जोधपुर में हुई। 1956 में आपका राजस्थान लेखा सेवा में चयन हुआ और एक वर्ष बाद 1957 में आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुन लिए गये। आप बारां और उदयपुर में उप जिलाधीश, कोटा में अतिरिक्त जिला विकास अधिकारी, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग में अतिरिक्त निदेशक, जयपुर में अतिरिक्त जिलाधीश (प्रशासन), लोकायुक्त सचिवालय में उप सचिव, गृह और चिकित्सा विभागों में शासन उप सचिव तथा स्थानीय निकाय विभाग में निदेशक रहे। 1983 में आपकी भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति हुई और आप विशिष्ट योजना संगठन और उपनिवेशन आदि विभागों में शासन उपसचिव तथा धौलपुर, सवाईमाधोपुर और सीकर में जिला कलक्टर रहे। आप हिन्दी के श्रेष्ठ कवि भी हैं।

बजरंगलाल बजाज— राजस्थान लेखा सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में इंदिरा गांधी नहर परियोजना बीकानेर में मुख्य लेखाधिकारी श्री बी.एल. बजाज का जन्म 12 फरवरी, 1942 को नागौर के संभ्रांत माहेश्वरी परिवार में हुआ। आपने रसायन शास्त्र में एम.एससी. करने के बाद एलएल बी. किया और मैन्चेस्टर (यू के) से प्रशिक्षकों हेतु प्रशिक्षण प्राप्त किया। राजस्थान लेखा सेवा में आपका 1965 में चयन हुआ तथा आप राजस्थान आवासन मंडल, राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड तथा विशिष्ट योजना विभाग में मुख्य लेखाधिकारी रहे। आप उमंग युवा संस्थान के अध्यक्ष तथा राजस्थान फिलेटेलिक एसोसियेशन के सदस्य हैं। आप हिन्दी में विभिन्न विषयों पर लेख आदि लिखते हैं तथा शेक्सपियर के "मिरन्डा" नाटक का अनुवाद किया है।

बजरंगलाल शर्मा— राजस्थान के जाने-माने वकील और राजस्थान हाईकोर्ट बार एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री बजरंगलाल शर्मा का जन्म 19 अगस्त, 1933 को झुंझुनूं जिले के पचेरी ग्राम आपकी शिक्षा जयपुर में हुई तथा एम.ए. और एलएल.बी. करने के बाद 1965 में

वकालत प्रारंभ की। आप प्रारंभ से ही सार्वजनिक कार्यों में सक्रिय रुचि लेते रहे हैं। 1969 में कांग्रेस का विभाजन होने पर आप 1973 में संगठन कांग्रेस के जयपुर शहर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष तथा राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के महामन्त्री मनोनीत किये गये। 1977 में आप जयपुर नगर के बनीपार्क क्षेत्र से जनता पार्टी के टिकिट पर विधायक चुने गये। वर्तमान में आप पूर्व विधायक संघ, राजस्थान के संस्थापक अध्यक्ष हैं।

बद्रीनारायण पुरोहित— राजस्थान प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान आवासन मंडल के सचिव श्री बी.एन. पुरोहित का जन्म एक सितम्बर, 1934 को जोधपुर में हुआ। आपने महाराजा कालेज जयपुर से 1955 में बी.ए., विधि महाविद्यालय जयपुर से 1978 में एलएल.बी. और 1981 में एलएल.एम. तथा 1985 में एम.बी.ए. किया। 1965 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन के बाद आप जयपुर में उप जिलाधीश, दो बार जिला रसद अधिकारी, वाणिज्य कर अधिकारी, नगर-विकास न्यास में विशेषाधिकारी तथा भूमि अवाप्ति अधिकारी, गृह रक्षक दल एवं नागरिक-सुरक्षा में कार्मिक अधिकारी, राजस्थान हस्तकर्घा बोर्ड में मुख्य अधिशासी, बीकानेर में उपनिवेशन विभाग के अतिरिक्त आयुक्त और राजस्व अपील अधिकारी, राहत विभाग में शासन उपसचिव और पशुपालन व खादी-ग्रामोद्योग राज्यमंत्री तथा राजस्व और सिंचाई मंत्री के विशिष्ट सहायक आदि पदों पर रहे।

बद्रीप्रसाद गुप्ता— राजस्थान के पूर्व मंत्री श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता का जन्म 30 जनवरी, 1912 को अलवर जिले के रामपुर ग्राम में हुआ। आपने बी.ए. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त कर अलवर में वकालत शुरू की। आप अलवर राज्य प्रजा मंडल की गतिविधियों से प्रारंभ से ही सक्रिय रूप से जुड़ गये और 1948 से 54 तक अलवर नगर परिषद् के अध्यक्ष के साथ ही अलवर जिला कांग्रेस कमेटी और अलवर हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष भी रहे। 1952 और 57 के चुनावों में आप बासूर क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये और नवम्बर 1954 में सुखाडिया मन्त्रिमंडल में सार्वजनिक निर्माण मंत्री बनाये गये। 1962 के आम चुनाव में आप बासूर क्षेत्र से ही चुनाव हार गये लेकिन बाद में चुनाव अवैध हो जाने पर हुए उप चुनाव में आप पुनः निर्वाचित हो गये। 1967 में निर्दलीय तथा 1972 और 80 के चुनावों में पुनः कांग्रेस टिकिट पर बासूर क्षेत्र से विधायक चुने गये। जून 1980 में आप पहाड़िया मन्त्रिमंडल में पुनः चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, खाद्य तथा खादी-ग्रामोद्योग मंत्री बनाये गये। 1977 और 85 के चुनावों में आपने भाग नहीं लिया।

बंशीलाल लुहाड़िया—राजस्थान स्वतंत्रता सेनानी संगठन के अध्यक्ष तथा प्रमुख एडवोकेट श्री लुहाडिया का जन्म 5 फरवरी, 1910 को जयपुर जिले के नरायणा कस्बे में हुआ। आप एम.ए., एलएल.बी. और व्यवसाय से वकील हैं। श्री लुहाडिया प्रदेश के जाने-माने स्वतंत्रता सेनानी हैं जो 1931 में अजमेर-मेरवाड़ा कांग्रेस कमेटी के डिक्टेटर नियुक्त किये गये। 1931 में ही आप अजमेर के केन्द्रीय कारागार में बंदी रहे। स्वतंत्रता से पूर्व जयपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में राजाओं और जागीरदारों के जुल्म और अत्याचारों के विरुद्ध आवाज बुलन्द करने और ग्रामीणों में राजनीतिक चेतना का प्रसार करने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 1952 के विधान सभा चुनाव में फागी क्षेत्र से आपने भाग्य आजमाया लेकिन सफल नहीं हो सके। बाद में आपको जयपुर जिला बोर्ड का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। आप जयपुर देहात जिला कांग्रेस कमेटी के पहले प्रधानमंत्री और बाद में अध्यक्ष भी रहे। 1955 में आप जयपुर क्षेत्र से उपचुनाव में लोकसभा सदस्य चुने गये। वर्तमान में आप राजस्थान स्वतंत्रता सेनानी संगठन, वरिष्ठ नागरिक परिषद् और राजस्थान पूर्व सांसद एसोसियेशन के सदस्य हैं तथा जयपुर बार एसोसियेशन के अध्यक्ष रह चुके हैं। आपने "राजस्थान डाइजेस्ट" का प्रकाशन किया है।

बनवारीलाल गुप्ता—जयपुर के संभागीय आयुक्त राजस्व अपील अधिकारी तथा मोटर दुर्घटना न्यायाधिकरण आदि न्यायालयों में राजकीय अभिभाषक श्री बनवारीलाल गुप्ता का जन्म एक जुलाई 1950 को जयपुर जिले के नूगा ग्राम मे एक सामान्य खंडेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से बी.ए. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त की तथा 1971 में जयपुर के न्यायालयों में वकालत प्रारंभ की। आप जयपुर अभिभाषक संघ की कार्यकारिणी के सदस्य, सांस्कृतिक मंत्रि तथा उपाध्यक्ष रह चुके हैं। वर्तमान में आप कृषि-उपज मंडी समिति (फल-सब्जी) जयपुर तथा चाकसू और नगरपालिका चाकसू के विधि परामर्शदाता भी हैं।

बनवारीलाल गोड— राजस्थान खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष श्री बनवारीलाल गोड प्रदेश के प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ता हैं जो राजस्थान खादी-ग्रामोद्योग संस्था संघ तथा राजस्थान आदिम जाति सेवा संघ के मन्त्री भी हैं।

बनवारीलाल जोशी—भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सी.आई.डी. (अपराध) में पुलिस उप महानिरीक्षक श्री बी एल जोशी का जन्म एक अप्रेल 1934 को नागौर जिले के छोटी खाटू ग्राम में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान में तथा स्नातकोत्तर शिक्षा कलकत्ता स्थित स्कॉटिश चर्च कालेज और एलएल बी की कलकत्ता विश्वविद्यालय में हुई। 1956 में आपका राजस्थान पुलिस सेवा में चयन हुआ। 1962 में भारत सरकार के केन्द्रीय गुप्तचर विभाग में चयन होने पर आप दिल्ली चले गये। 1965 में आपका पद-स्थापन प्रधानमंत्री के सुरक्षा दल में हुआ। 1967 में पुलिस अधीक्षक के रूप में पदोन्नति होने पर 1970 तक आपने प्रधानमन्त्री के मुख्य सुरक्षा अधिकारी का कार्यभार सफलता पूर्वक संभाला।

श्री जोशी की 1970 में पाकिस्तान स्थित भारतीय उच्चायोग में प्रथम सचिव पद पर नियुक्ति हुई जहां से बाद में वाशिंगटन (अमरीका) स्थित भारतीय राजदूतावास में प्रथम सचिव पद पर स्थानांतरित हो गये। 1974 में भारत लौट आये और राजस्थान में डूंगरपुर, सीकर रेलवे पुलिस (मुख्यालय अजमेर) तथा सी.बी.आई. के.राजस्थान क्षेत्र के पुलिस अधीक्षक रहे। 1982 में आप भारत सरकार में पुनः प्रतिनियुक्ति पर चले गये और 1986 तक लन्दन स्थित भारतीय उच्चायोग में प्रथम सचिव रहे। वहां से लौट कर 20 अप्रेल, 86 से दिसम्बर, 1987 तक अजमेर में रेलवे पुलिस अधीक्षक तथा वर्तमान पद-स्थापन से पूर्व सी.आई.डी. में (इंटेलीजेंस) उपमहानिरीक्षक रहे। आपकी यात्राओं अध्ययन लेखन और समाज-सेवा में विशेष रुचि है।

बनवारीलाल बैरवा—टोंक (सुरक्षित) क्षेत्र से जनवरी 1980 और दिसम्बर 1984 में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित लोकसभा सदस्य श्री बनवारीलाल बैरवा का जन्म टोंक जिले के दौलतपुरा ग्राम में 19 जनवरी, 1933 को हुआ। राजस्थान विश्वविद्यालय से एम.ए और एलएल बी परीक्षायें उत्तीर्ण करने के बाद आपने वकालत प्रारंभ की। आप 1966 से 68 तक टोंक नगरपालिका के उपाध्यक्ष रहे।

1972 में श्री बैरवा प्रथम बार निवाई (सुरक्षित) क्षेत्र से राजस्थान विधानसभा के सदस्य चुने गये तथा 1973 से 77 तक श्री हरिदेव जोशी की सरकार में समाज कल्याण और कारागार आदि विभागों के प्रभारी राज्य मंत्री रहे।

बनवारीलाल शर्मा—राजस्थान के पूर्व जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं जन-सम्पर्क राज्य मन्त्री (प्रभारी) श्री बनवारीलाल शर्मा का जन्म 1 दिसम्बर, 1940 को धौलपुर जिले के पचगांव में एक सम्पन्न बोहरा परिवार में हुआ। आपने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की तथा कांग्रेस के सक्रिय सदस्य बन गये। आप 1967, 1972 और 1980 के चुनावों में धौलपुर क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये तथा 18

फरवरी, 1981 से 13 जुलाई, 1981 तक पहाड़िया मंत्रिमंडल में राज्य मन्त्री रहे। 1978 में आ
धौलपुर जिला कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष बनाये गये। 1977 और 1985 के विधानसभा चुनावों में आ
पराजित हो गये।

बनवारीलाल शर्मा— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी त
वर्तमान में राजस्थान को-आपरेटिव डेयरी फैडरेशन के प्रबन्ध निदेशक श्री बी. एल. शर्मा का जन्म चा
सितम्बर, 1941 को ब्यावर में हुआ। स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद आप भारतीय थल सेना
कमीशंड आफिसर के रूप में भर्ती हुए और 1965 तथा 1971 के भारत-पाक युद्धों में भाग लिया।आ
को रक्षा मैडल, समरसेवा स्टार तथा सैन्य सेवा मैडल प्रदान किये गये।

1971 में भा० प्र० सेवा में चयन के बाद श्री शर्मा डीग के उप जिलाधीश, झुंझुनूं, पाली औ
अजमेर के जिलाधीश, सहकारी विभाग के अतिरिक्त रजिस्ट्रार और रजिस्ट्रार, आबकारी आयुक्त,
राजस्थान राज्य सहकारी भूमि-विकास बैंक के प्रबन्ध निदेशक, भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर
ट्रेडफेयर अथारिटी में महाप्रबंधक और अपेरेल्स एक्सपोर्ट प्रमोशन कौंसिल के निदेशक, राज्य के कृषि-
उत्पादन आयुक्त तथा सहकारिता जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी, भूजल एवं ऊर्जा आदि विभागों के शासन
सचिव रह चुके हैं।

बनवारीलाल सारस्वत— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी
तथा वर्तमान में मुख्यमंत्री के साथ दूसरी बार पदस्थापित उपसचिव श्री बी.एल. सारस्वत का जन्म 14
अगस्त, 1936 को भीलवाड़ा जिले के मांडलगढ़ कस्बे में हुआ। आपने जयपुर से बी.ए. तथा उदयपुर से
एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त कर 1957 से 59 तक भीलवाड़ा में वकालत की। 1959 में ही आपका
राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ। आपने अलवर तथा उदयपुर के अतिरिक्त जिलाधीश,
राजस्थान राज्य भंडार-व्यवस्था निगम के प्रबन्ध निदेशक, राज्यपाल के उपसचिव, गृह (कारावास) एवं
सहायता विभागों में शासन उपसचिव, आबकारी विभाग में अतिरिक्त आयुक्त आदि पदों पर कार्य किया
है। आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा परिषद् के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

बलराम जाखड़— लोकसभा के अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ के पूर्वज यद्यपि सीकर जिले के
नीम-का-थाना क्षेत्र से ही पंजाब गये थे इसलिए उनका अब तक का कार्य क्षेत्र पंजाब ही रहा लेकिन 1984
के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस (इ) दल की ओर से सीकर क्षेत्र से निर्वाचित होने के कारण अब वे राजस्थान
का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। 23 अगस्त, 1923 को पंजाब के फीरोजपुर जिले के पंजकोशी ग्राम में जन्मे
श्री जाखड़, शिक्षा की दृष्टि से स्नातक हैं। आप 1972 में पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गये तथा
सिंचायी और सहकारिता विभाग के उपमंत्री नियुक्त किये गये। 1973 से 77 तक आप प्रतिपक्ष के नेता
रहे तथा 1977 से 79 तक पंजाब अंगूर-उत्पादक सहकारी महासंघ के अध्यक्ष रहे। 1979 में ही आप
भारत कृषक समाज के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

जनवरी 1980 में प्रथम बार लोकसभा के सदस्य चुने गये और इसी वर्ष आपको लोकसभा का
अध्यक्ष बनाया गया। तब से आप विश्व के अनेक देशों का भ्रमण करने के साथ ही संसदीय शिष्ट मंडलों का
नेतृत्व कर चुके हैं। आपको हिसार कृषि विश्वविद्यालय ने 1982 में "डाक्टरेट" की उपाधि प्रदान की।

बलवंतसिंह (डा.)— भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा
वर्तमान में पुलिस मुख्यालय में पुलिस महानिरीक्षक श्री बलवंतसिंह का जन्म बीस मार्च, 1937 को
पंजाब में हुआ। 1961 में आप सेवा में चयनित हुए। प्रारंभिक विभिन्न नियुक्तियों के बाद आप सहायक
महानिरीक्षक (यातायात), उपमहानिरीक्षक कम्प्यूटर, जयपुर रेंज, वायरलेस, गृह रक्षक दल तथा डिप्टी

कमांडेंट जनरल गृह-रक्षक दल और नागरिक सुरक्षा तथा वन विभाग में निदेशक (सतर्कता) आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

बशीर अहमद ''मयूख''- राजस्थान के विख्यात हिन्दी कवि श्री मयूख का जन्म सन् 1926 की विजयादशमी को कोटा जिले के गोवर्धनपुरा ग्राम में हुआ। आपकी औपचारिक शिक्षा यद्यपि आठवीं श्रेणी तक ही हुई लेकिन ऋग्वेद की ऋचाओं का जो मर्मस्पर्शी हिन्दी रूपान्तर आपने प्रस्तुत किया है उससे समस्त काव्य-जगत सम्मोहित है। आपकी रचनायें ''साप्ताहिक हिन्दुस्तान'' ''धर्मयुग'' और अन्य शीर्ष पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता के साथ प्रकाशित होती रहती हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी आपको वर्ष 1972-73 में विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित कर चुकी है।

बसंतकुमार बिड़ला— सुप्रसिद्ध बिड़ला परिवार के सदस्य श्री बी.के. बिड़ला 'पद्मविभूषण' स्वर्गीय सेठ घनश्याम दास बिड़ला के पुत्र हैं। आपका जन्म फरवरी, 1921 में कलकत्ता में हुआ। आपने प्रेसीडेंसी कालेज कलकत्ता में शिक्षा प्राप्त की। आप केशोराम काटन मिल्स लि., जियाजी राव काटन मिल्स लि., जयश्री टेक्सटाइल्स लि., जयश्री टी गार्डन लि. तथा कई अन्य कम्पनियों के निदेशक मंडल के सदस्य हैं। 1951 में आप बंगाल मिल आनर्स एसोसियेशन के अध्यक्ष रह चुके हैं। आप साहित्य, कला संगीत और फोटोग्राफी के साथ विभिन्न खेलों में भी सक्रिय रुचि रखते हैं।

बसंतलाल अग्रवाल— राजस्थान प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन शृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में मुख्यमंत्री के उपसचिव श्री बसंतलाल अग्रवाल का जन्म झुंझुनूं जिले के छापोली ग्राम में 15 दिसम्बर,1937 को हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर में हुई और आपने एम.काम. तथा ''विशारद'' की उपाधि प्राप्त की। 1962 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन के बाद विभिन्न विभागों में विभिन्न पदों पर कार्य करने के साथ ही आप तिजारा एवं राजगढ़ (अलवर) में उप जिलाधीश, श्रीगंगानगर में जिला रसद अधिकारी, सहायता विभाग में उपायुक्त, उदयपुर में प्रादेशिक परिवहन अधिकारी तथा अतिरिक्त जिलाधीश, जयपुर में वाणिज्यिक कर अधिकारी (ए वृत्त) तथा खनिज विभाग में शासन उपसचिव रह चुके हैं। आप अमरीका की यात्रा कर चुके हैं।

बाबूलाल गुप्ता— राजस्थान खाद्य पदार्थ व्यापार संघ के संयुक्त मंत्री तथा अखिल भारतीय खाद्य पदार्थ व्यापार महासंघ की कार्यकारिणी के सदस्य श्री बाबूलाल गुप्ता जयपुर के निकटवर्ती हाथोज ग्राम के निवासी हैं जिनका जन्म बीस अक्टूबर, 1945 को एक सामान्य खंडेलवाल परिवार में हुआ। आपने 1967 में राजस्थान विश्वविद्यालय से समाज-शास्त्र में एम.ए. तथा प्रौढ़ शिक्षा में डिप्लोमा पाठ्यक्रम उत्तीर्ण किया। आप मैसर्स बंशीधर रामगोपाल में भागीदार होने के साथ ही जयपुर खाद्य पदार्थ व्यापार संघ के मंत्री तथा उपाध्यक्ष रह चुके हैं। आप 'फिक्की' की कानून एवं कर परामर्शदात्री समिति के भी सदस्य हैं।

बाबूलाल गुप्ता— राजस्थान में औद्योगिक कारखानों में बिजली फिटिंग के प्रथम श्रेणी के ठेकेदार तथा राजस्थान पी.सी.सी. पोल्स मैन्यूफेक्चरर्स एसोसिएशन के महामंत्री श्री बी.एल. गुप्ता का जन्म सात जुलाई, 1946 को जयपुर जिले के लालसोट कस्बे में एक सामान्य खंडेलवाल परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर के महाराजा कालेज तथा मालवीया क्षेत्रीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय में हुई। आपने जयपुर में मैसर्स ''स्वास्तिक इलेक्ट्रिकल्स एण्ड फर्टिलाइजर्स'' नामक प्रतिष्ठान की स्थापना की जो राजस्थान में बिजली की हाईटैंशन लाइन्स खींचने तथा बड़े औद्योगिक कारखानों में बिजली फिटिंग के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

बाबूलाल तोतला— भारतीय जीवन बीमा निगम के ख्याति प्राप्त अभिकर्ता श्री बा तोतला का जन्म दो जनवरी, 1942 को सामरलेक (जिला जयपुर) में हुआ। मूल रूप से आप व्यवसायी हैं लेकिन 1971 से जीवन बीमा के अभिकर्ता के रूप में भी कार्यरत हैं और "करो अभिकर्ता" के रूप में विख्यात हैं। 1982–83 में आपने एक करोड़ रुपये से अधिक का व्यवसा पूरे उत्तर भारत में प्रथम तथा सम्पूर्ण भारत में नवाँ स्थान प्राप्त किया था। इसके बाद आप प्रति वर्ष रुपये से अधिक का व्यवसाय नियमित रूप से दे रहे हैं। आप गुलाबी नगर विचार मंच के सहसंयो और इसके माध्यम से जयपुर शहर की विभिन्न जन समस्याओं पर पिछले लगभग पांच वर्षों से प्र रविवार को विचार गोष्ठी का आयोजन करते हैं। अन्य अनेक सामाजिक और व्यावसायिक संस्थाओं आप विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं।

बालकृष्ण जुत्शी— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी वर्तमान में भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्री जुत्शी का जन्म जनवरी, 1938 को श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) में हुआ। आप 1961 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में गये और जिलाधीश बूंदी एवं जोधपुर, शासन उपसचिव वित्त, भारत के निर्यात आयुक्त, वाणि मंत्रालय में संयुक्त सचिव (वस्त्र), राजस्थान भूमि-विकास निगम के प्रबन्ध निदेशक, राजकीय उप आयुक्त तथा सहकारिता और वित्त आदि विभागों के शासन सचिव रह चुके हैं।

बालकृष्ण व्यास (डा.)— देश के जाने-माने मनो-चिकित्सक और मानसिक अस्पताल जय के अवकाश प्राप्त अधीक्षक डा. बी.के.व्यास का जन्म 1925 में जोधपुर में एक सामान्य पुष्करणा ब्राह्म परिवार में हुआ। आपने इन्दौर से एल.एम.पी. करने के बाद 1945 में जोधपुर के विंढम अस्पताल नौकरी शुरू की। 1952 में एम.बी.बी.एस. की उपाधि मिलने के बाद आपको मनो-चिकित्सा का उ अध्ययन करने के लिए अमरीका भेजा गया। ऊटा विश्वविद्यालय से एम.एस. परीक्षा आपने सर्वाधि अंकों से उत्तीर्ण की और वहीं रेजीडेंट ट्यूटर नियुक्त हो गये। बाद में राष्ट्रकुल कोष की वृत्ति पर ए वर्ष और रहकर आपने पेनसिलवेनिया विश्वविद्यालय से डिप्लोमा पाठ्यक्रम किया। 1956 में आ जयपुर लौटे और मानसिक चिकित्सालय को नया स्वरूप देने के कार्य में जुट गये। 1958 में आ मनोचिकित्सा विभाग में रीडर और 1967 में प्रोफेसर बनाये गये। आप चार वर्षों तक केन्द्रीय स्वास्थ मंत्रालय की मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी सलाहकार समिति के सदस्य रहे तथा देश-विदेश में मनो चिकित्सा सम्बन्धी अनेक गोष्ठियों में महत्वपूर्ण निबन्ध प्रस्तुत किये। राज्य सेवा से अवकाश के बाद आ जयपुर के सोढाला क्षेत्र में निजी मनो-चिकित्सा केन्द्र का संचालन कर रहे हैं।

बालकिशन गोयल (डा.)— अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हृदय रोग विशेषज्ञ डा. बी.के. गोयल (53 वर्ष) का जन्म जयपुर जिले के सामरलेक में हुआ। आपने सवाई मानसिंह मेडीकल कालेज जयपुर से एम.बी.बी.एस. की उपाधि प्राप्त की तथा 1963 में बम्बई में निजी प्रैक्टिस प्रारंभ की। 1976 में आपको "वर्ल्ड कांग्रेस आन कार्डियो एण्ड वस्कूलर" का अध्यक्ष चुना गया था। 1970 से आप "इंडिया हार्ट जर्नल" का प्रकाशन कर रहे हैं तथा "इंडियन प्रैक्टिसनर" के सम्पादक मंडल के अध्यक्ष हैं।

डा. गोयल देश की अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और चिकित्सा सम्बन्धी संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। महाराष्ट्र सरकार ने आपको विश्व प्रसिद्ध "हाफ किन बायो-फार्मा कारपोरेशन" का अध्यक्ष तथा 1980–81 वर्ष में बम्बई का शेरिफ नियुक्त कर सम्मानित किया।

बालूलाल पानगड़िया- राजस्थान के जाने-माने इतिहासवेत्ता, लेखक और विचारक श्री बी.एल. पानगड़िया का जन्म 30 जून,1921 को भीलवाड़ा जिले के सुवाणा ग्राम में हुआ। आप विधि

स्नातक हैं। प्रारंभ में आप पत्रकारिता की ओर आकृष्ट हुए तथा जयपुर के प्रथम दैनिक "लोकवाणी" के सम्पादकीय विभाग से जुड़े। अंग्रेजी दैनिक "बाम्बे क्रानिकल" के राजस्थान प्रतिनिधि तथा मेवाड़ प्रजामंडल के मुखपत्र "प्रजामंडल पत्रिका" के सम्पादक भी आप रहे।

अप्रेल 1948 में संयुक्त राजस्थान का निर्माण होने पर आपने राजकीय सेवा में प्रवेश किया तथा राजस्थान सचिवालय सेवा के अधिकारी के रूप में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। 1976 में राज्य सेवा से अवकाश ग्रहण करने के उपरांत आप पुनः लेखन कार्य में सक्रियतापूर्वक जुटे हुए हैं। देश-प्रदेश के विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में ऐतिहासिक, राजनीतिक और आर्थिक विषयों पर फुटकर लेखों के साथ ही "राजस्थान का इतिहास" और "राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास" नामक महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित इस ग्रंथ पर राज्य सरकार आपको ग्यारह हजार रुपये का पुरस्कार देकर सम्मानित कर चुकी है। "पालिटिक्स पावर इन राजस्थान" तथा "स्टेट पालिटिक्स इन इंडिया" आपके अंग्रेजी प्रकाशन हैं।

विवेकानन्द डोंडियाल— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर संसदीय मामलात मंत्रालय में सचिव श्री वी एन डोंडियाल का जन्म तीन फरवरी 1933 को उत्तर प्रदेश में हुआ। 1957 में सेवा में चयन के बाद आप अजमेर तथा जयपुर के जिलाधीश, राज्यपाल के सचिव राजस्थान राज्य पथ-परिवहन निगम के अध्यक्ष, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, खनिज, श्रम तथा निर्वाचन आदि विभागों में शासन सचिव तथा केन्द्र में वर्तमान पदस्थापना से पूर्व योजना आयोग में सलाहकार के पद पर कार्य कर चुके हैं।

विजयसिंह शेखावत- राजस्थान के राज्य कर्मचारियों, विशेषकर शिक्षकों के जाने-माने नेता लेकिन व्यवसाय से पत्रकार श्री शेखावत का जन्म पांच फरवरी, 1929 को सीकर जिले के खाचरियावास ग्राम में हुआ। आपने 1952 में शिक्षक का कर्म अपनाया जिसे 1977 में श्रीमाधोपुर क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव लड़ने के कारण छोड़ना पड़ा। उसी समय आप पर राज्य सेवा में वापस जाने के लिये यद्यपि काफी दबाव पड़ा लेकिन श्री कर्पूरचन्द्र "कुलिश" के अनुरोध पर आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया और तभी से "राजस्थान पत्रिका" से जुड़े हुए हैं। जीवन के दीर्घ अनुभव, लाखों राज्य कर्मचारियों और अन्य श्रमिकों की समस्याओं के निकट से अध्ययन और जन-सामान्य से जुड़े रहने के कारण आपने अल्प समय में ही राज्य की पत्रकारिता में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। जोधपुर के दैनिक "जलते दीप" द्वारा राज्य में पत्रकारिता के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वाले पत्रकारों के लिये शुरू किया गया "माणक" पुरस्कार 1983 में सर्वप्रथम आपको ही दिया गया था। वर्तमान में यद्यपि आपका शिक्षक संघ और राज्य कर्मचारी संगठनों से सीधा कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है, फिर भी जीवन भर इनकी गतिविधियों में जूझते रहने और बार-बार जेल जाने तथा लम्बी भूख हड़तालों पर बैठते रहने के कारण आप इनकी समस्याओं से दूर नहीं हो पाये हैं और आवश्यकता पड़ने पर किसी भी आन्दोलन में कूद पड़ने को तत्पर रहते हैं। पिछले एक वर्ष से अधिक समय से आप ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा कर पत्रिका में "आओ गांव चलें" नामक दैनिक स्तंभ लिख रहे हैं जिससे एक ओर जहां गांवों की समस्यायें सामने आ रही हैं वहां दूसरी ओर उनके ऐतिहासिक महत्व, विशेषताओं और वहां जन्मे विशिष्ट लोगों से भी पत्रिका के लाखों पाठकों का प्रतिदिन साक्षात्कार करा रहे हैं।

बीना काक (श्रीमती)— राजस्थान के परिवार-कल्याण, कला, संस्कृति एवं पुरातत्व आदि विभागों की प्रभारी राज्यमंत्री श्रीमती बीना काक का जन्म 15 फरवरी, 1954 को भरतपुर में हुआ। आपकी शिक्षा उदयपुर में हुई और विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद आप श्री भरत काक के

साथ विवाह-सूत्र में बंध जाने से बीना मसीन से बीना काक हो गई। अब आपका कार्यक्षेत्र पाली हो गया जहां आप एक गैस एजेंसी के संचालन के साथ ही पाली जिला कांग्रेस (इ) के महिला प्रकोष्ठ की संयोजक बन गई और 1985 के चुनाव में आप सुमेरपुर क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायक चुनी गई और 16 अक्टूबर, 1985 को जोशी मंत्रिमंडल में राजस्व मंत्री श्रीमती कमला के विभागों में सहयोग हेतु उपमंत्री नियुक्त की गई। बाद में तीन जनवरी, 1987 को आपको मुख्यमंत्री के अधीनस्थ कार्मिक एवं प्रशासनिक, सामान्य प्रशासन, राजनैतिक तथा मंत्रिमंडल सचिवालय आदि विभागों के कार्य में सहयोग हेतु उपमंत्री नियुक्त किया गया। 6 फरवरी, 1988 को आपको शिवचरण माथुर की सरकार में राज्यमंत्री के रूप में पदोन्नत किया गया तथा कला, संस्कृति और पुनर्वास आदि विभागों का स्वतंत्र दायित्व सौंपा गया। जून 1989 में हुए मंत्रिमंडलीय परिवर्तन में आपको पुनर्वास के बजाय परिवार-कल्याण विभाग का प्रभारी बनाया गया।

बीरबल— गंगानगर (सुरक्षित) क्षेत्र से लोकसभा सदस्य श्री बीरबल का जन्म मिरजावाली मेर ग्राम में हुआ तथा आपकी शिक्षा केवल मिडिल स्तर तक हुई है। आप 1967 और 1972 में गंगानगर जिले के ही संगरिया (सुरक्षित) क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में राजस्थान विधान सभा के सदस्य चुने गये। 1977 के लोकसभा चुनाव में आप अविभाजित जनता पार्टी के श्री बेगाराम के मुकाबले में पराजित हो गये लेकिन 1980 को चुनाव में कांग्रेस (इ) प्रत्याशी के रूप में आपने श्री बेगाराम (अब जनता एस) को पराजित कर बदला ले लिया। दिसम्बर 1984 में आप पुनः इसी क्षेत्र से कांग्रेस (इ) प्रत्याशी के रूप में विजयी हुए।

बुलाकीदास कल्ला— राजस्थान के सार्वजनिक निर्माण, इंदिरा गांधी नहर, उपनिवेशन तथा सिंचित क्षेत्रीय विकास आदि विभागों के मंत्री श्री बी.डी. कल्ला का जन्म 4 अक्टूबर, 1949 को बीकानेर में हुआ। अर्थशास्त्र में एम.ए. करने के बाद आप रामपुरिया जैन महाविद्यालय बीकानेर में व्याख्याता नियुक्त हुए। प्रारंभ से ही राजनीति में सक्रिय रुचि रखने वाले श्री कल्ला प्रथम बार 1980 के आम चुनाव में कांग्रेस (इ) टिकिट पर बीकानेर क्षेत्र से विधायक चुने गये। जून 1981 में आप राजस्थान आवासन मंडल के अध्यक्ष और जुलाई 81 में श्री शिवचरण माथुर के मंत्रिमंडल में शिक्षा, योजना, आर्थिक और सांख्यिकी विभागों के उपमंत्री नियुक्त किये गये। 17 जुलाई, 1982 को आप राज्यमंत्री के रूप में पदोन्नत हुए और पर्यटन, कला एवं संस्कृति तथा पुरातत्व आदि विभागों के स्वतंत्र प्रभारी रहे। बाद में उच्च शिक्षा का दायित्व भी आपको सौंपा गया।

1985 के आम चुनाव में आप पुनः बीकानेर क्षेत्र से ही विधायक चुने गये तथा 15 मार्च, 1985 से 25 जनवरी, 1988 तक सरकारी दल के मुख्य सचेतक रहे। 26 जनवरी, 1988 को आप माथुर मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री के रूप में शामिल किये गये तथा सार्वजनिक निर्माण, संसदीय मामलात, सूचना एवं जनसम्पर्क, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय तथा प्राविधिक शिक्षा आदि विभागों का दायित्व सौंपा गया। बाद में 8 जून, 1989 को हुए परिवर्तन में आपको उपरोक्त विभाग दिये गये। आप सोवियत रूस, सिंगापुर तथा थाईलैण्ड आदि देशों की यात्रा कर चुके हैं।

बूटासिंह— केन्द्रीय गृह मंत्री श्री बूटासिंह यद्यपि पंजाब में जालंधर जिले के मुस्तफापुर ग्राम में 21 मार्च, 1934 को जन्मे हैं लेकिन दिसम्बर 1984 के चुनाव में जालौर (सु) क्षेत्र से चुने जाने के कारण आप लोकसभा में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं।

एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त श्री बूटासिंह गुरु गोविन्द सिंह फाउण्डेशन की कार्य समिति के सदस्य, 1967-68 में अखिल भारतीय कृषक महासंघ के अध्यक्ष, 1969-70 में पंजाब युवा कृषक संघ के

अध्यक्ष, 1973–74 में अखिल भारतीय कांग्रेस के हरिजन प्रकोष्ठ के संयोजक, 1978 में अ.भा. कांग्रेस कमेटी के महासचिव, 1974 से 80 तक पंजाब विश्वविद्यालय की सीनेट के सदस्य, 1974 से 80 तक राष्ट्रीय अल्प बचत समिति के सदस्य, 1962 से 67 तक तृतीय और 1967 से1971 तक चतुर्थ लोकसभा के सदस्य, *1966–67 और 1967–68 में लोक लेखा समिति के सदस्य*, 1971 में अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति समिति के अध्यक्ष, 1972–73 में संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य, 1974 से 76 तक रेल मंत्रालय तथा1976–77 में वाणिज्य मंत्रालय में उपमंत्री, 1980 में टोंक क्षेत्र से पुन. लोकसभा के सदस्य, 1983 में खेल और संसदीय मामलात के राज्य मंत्री तथा 1984 से केबिनेट मंत्री के रूप में कार्य कर रहे हैं।

बी.एल. मेहरडा— *भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा* वर्तमान में राजस्व मंडल के सदस्य श्री बी.एल. मेहरडा का जन्म 29 मार्च, 1943 को झुंझुनूं जिले में हुआ। 1973 में सेवा में चयन के बाद आप सिरोही और भरतपुर के जिलाधीश, समाज-कल्याण विभाग के निदेशक, कृषि, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, खाद्य एवं नागरिक रसद तथा विशिष्ट योजना आदि विभागों में शासन विशिष्ट सचिव के रूप में कार्य कर चुके हैं।

बी.एस मिन्हास— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सिंचित क्षेत्र विकास विभाग के शासन सचिव श्री मिन्हास का जन्म 16 अक्टूबर, 1944 को पंजाब के जालंधर नगर में हुआ। 1969 में सेवा में चयन के बाद आप जयपुर नगर-विकास न्यास के सचिव, जैसलमेर, बांसवाड़ा, भीलवाड़ा और उदयपुर आदि जिलों के जिलाधीश, भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर परिवहन एवं जहाजरानी मंत्रालय में उप सचिव, *राजस्व मंडल के सदस्य तथा जयपुर-*विकास प्राधिकरण में आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

भंवरलाल पंवार— राजस्थान से कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित राज्य सभा सदस्य श्री भंवरलाल पंवार जोधपुर जिले के मूल निवासी हैं। श्री रामनिवास मिर्धा के इस्तीफे से रिक्त स्थान पर आप 26 जून,1985 को हुए उपचुनाव में प्रथम बार राज्यसभा सदस्य बने तथा 1986 में हुए नियमित चुनाव में पुन. निर्वाचित हुए।

भंवरलाल मदादा— राजस्थान के प्रमुख सर्वोदय कार्यकर्ता श्री मदादा का जन्म 14 अक्टूबर, 1918 को भीलवाड़ा में हुआ। आप 1972 में भीलवाड़ा क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधान सभा सदस्य चुने जाने से पूर्व राजस्थान हरिजन सेवा संघ के [illegible] [illegible] केन्द्रीय सहकारी बैंक तथा राज्य अनुसूचित जाति [illegible] समिति के सदस्य और भीलवाड़ा *नगर-विकास* न्यास के अध्यक्ष रह चुके हैं।

भंवरलाल शर्मा— राजस्थान प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के 31 [illegible] को दूसरी बार निर्वाचित अध्यक्ष तथा स्वायत्त शासन, नगरीय-विकास [illegible] श्री भंवरलाल शर्मा का जन्म [illegible] अक्टूबर 1932 को जयपुर में हुआ। [illegible] उपाधियां प्राप्त कर वकालत शुरू की। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ [illegible] सन 1946 में भाग लेना शुरू किया तथा एक वर्ष तक संघ के प्रचारक और जयपुर विभाग के [illegible] रहे। [illegible] प्रतिबंध के दौरान आप जेल में बन्द रहे। इसके बाद भी जयपुर में [illegible] आपने सक्रिय भाग लिया और जेल गये। आपातकाल के दौरान [illegible] और बाद में जनवरी 1977 तक जेल में बन्द रहे। 1961 में आप प्रथम बार जयपुर नगर परिषद के सदस्य और

उसी वर्ष अध्यक्ष चुने गये। इसके बाद हुए दो चुनावों में भी आप पार्षद चुने गये। आप भारतीय जनसंघ के नगर अध्यक्ष भी रहे। श्री शर्मा ने 1972 के आम चुनाव में भारतीय जनसंघ के टिकिट पर प्रथम बार किशनपोल क्षेत्र से भाग्य आजमाया लेकिन सफल नहीं हो पाये। इसके बाद 1977,1980 और 1985 के तीनों आमचुनावों में आप हवामहल क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी के रूप में निरन्तर निर्वाचित होते रहे हैं। सात फरवरी, 1978 से 16 फरवरी, 1980 तक आप श्री भैरोंसिंह शेखावत की सरकार में मंत्री रहे। भाजपा के आप पूर्व में भी प्रदेशाध्यक्ष रहे चुके हैं।

भंवर शर्मा—जयपुर में सांगानेर के निकट एक ग्राम में सामान्य कृषक परिवार में जन्मे श्री भंवर शर्मा 1962 से सायंकालीन दैनिक "अमर राजस्थान" के प्रकाशक और सम्पादक हैं। आप पिछले कई वर्षों से "अखिल भारतीय समाचार पत्र सम्पादक सम्मेलन" की स्थायी समिति और कार्यसमिति के सदस्य निर्वाचित होते रहे हैं।

भंवरसिंह कोठारी— राजस्थान के प्रमुख समाज-सेवी तथा जौहरी श्री भंवरसिंह कोठारी का जन्म एक जुलाई, 1929 को टोंक जिले के टोडारायसिंह कस्बे में हुआ। आपने 1948 में हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करते ही टोडारायसिंह तहसील में नौकरी शुरू की। 1952 में जयपुर आ गये और दिगम्बर जैन महावीर स्कूल में अध्यापक बन गये। 1953 में महाराजा कालेज से बी.काम. किया तथा 1954–55 में जवाहरात के व्यवसाय में प्रवेश किया। 1961 में जैम्स ट्रेडिंग कार्पोरेशन की स्थापना की जिसमें आप वर्तमान में भागीदार हैं। ज्वैलर्स एसोसियेशन की कार्यकारिणी के सदस्य रह चुके हैं। आप तीन बार अमरीका, यूरोप और इंग्लैण्ड आदि देशों की यात्रा कर चुके हैं।

भंवरसिंह चौहान— भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सी.आई.डी. (सुरक्षा) में पुलिस अधीक्षक श्री बी.एस. चौहान का जन्म 31 मार्च, 1951 को पाली जिले में हुआ। 1977 में सेवा में प्रवेश के बाद आप जयपुर में सी.आई.डी. की अपराध शाखा में सहायक महानिरीक्षक, चूरू, धौलपुर तथा बीकानेर के पुलिस अधीक्षक और आर.ए.सी. प्रशिक्षण केन्द्र जोधपुर के प्राचार्य पद पर कार्य कर चुके हैं।

भंवर सुराणा (डा०)— राजस्थान के प्रमुख पत्रकार तथा वर्तमान में नई दिल्ली से प्रकाशित दैनिक "हिन्दुस्तान" के राजस्थान में विशेष संवाददाता डा० भंवर सुराणा का जन्म 6 मार्च, 1934 को भीलवाडा जिले के मंगरोप ग्राम में हुआ। आपने 'प्रभाकर', 'साहित्यरत्न', 'राष्ट्रभाषारत्न' 'साहित्यरत्लाकर' आदि उपाधियों के साथ ही राजस्थान विश्वविद्यालय से 1961 में हिन्दी साहित्य में एम.ए. और 1974 में "राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता का उद्गम और विकास" विषय पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

जुलाई 1952 में आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया और कई वर्षों तक राष्ट्रदूत, दैनिक नव ज्योति एवं दैनिक लोकवाणी के संवाददाता रहे। 1963 में आप दिल्ली से प्रकाशित दैनिक "हिन्दुस्तान" के राजस्थान में संवाददाता नियुक्त हुए। 1965 और 1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान आप राजस्थान की सीमा पर युद्धकालीन संवाददाता भी रहे। अगस्त 1977 से दिसम्बर 1983 तक राजस्थान विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के मानद परामर्शदाता और अध्यक्ष रहे। 1986 में आपको "माणक पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। वर्तमान में आप राजस्थान विश्वविद्यालय के जन संचार केन्द्र के मानद निदेशक भी हैं।

राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के आप कोषाध्यक्ष, महामन्त्री, उपाध्यक्ष तथा अध्यक्ष रह चुके हैं और पिछले 25 वर्षों से कार्यकारिणी के सदस्य हैं। भारतीय श्रमजीवी पत्रकार संघ के भी आप राष्ट्रीय

परिषद और राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य रह चुके हैं। इसके अतिरिक्त भारत-सोवियत मैत्री संघ और भारत-जर्मन जनवादी गणतंत्र मैत्री संघ की राजस्थान इकाई के आप क्रमश महासचिव और उपाध्यक्ष रह चुके हैं।

भंवरराम सूपका— नागौर जिले के डीडवाना क्षेत्र से 1985 के चुनाव में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री भंवरराम सूपका की आयु 46 वर्ष है। आप हाईस्कूल तक शिक्षित हैं तथा व्यवसाय से कृषक हैं। आप 1978 में ग्राम पंचायत के सरपंच तथा जनवरी 1982 में नागौर के जिला प्रमुख चुने गये। 1980 के विधान सभा चुनाव में भी आपने कांग्रेस (इ) टिकिट पर भाग्य आजमाया था लेकिन सफल नहीं हो सके।

भगतराम सूरी— भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में बीकानेर में गुप्तचर विभाग के पुलिस अधीक्षक श्री बी आर सूरी का जन्म दस अप्रेल, 1937 को होशियारपुर (पंजाब) में हुआ। प्रारंभ में आप रा॰ पु सेवा में चुने गये। 1985 में भा पु. सेवा में पदोन्नति के बाद आप कोटा ग्रामीण क्षेत्र के पुलिस अधीक्षक रहे।

भगराज चौधरी— जालौर जिले के आहोर निर्वाचन क्षेत्र से 1985 के आम चुनाव में लोकदल टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री भगराज चौधरी का जन्म 16 अप्रेल, 1936 को बाडमेर जिले के राखी ग्राम में हुआ। आप 1962 और 1972 में कांग्रेस टिकिट पर रानीवाडा निर्वाचन क्षेत्र से विधायक और विधानसभा की अनेक समितियों के सदस्य रह चुके हैं। जालौर के जिला प्रमुख भी आप रह चुके हैं। आप विधि-स्नातक हैं और पेशे से वकील हैं।

भगवती देवी (श्रीमती) -राजस्थान की पूर्व उपमंत्री श्रीमती भगवती देवी का जन्म 13 मई, 1938 को अजमेर जिले के बालूपुरा ग्राम में हुआ। आपने इंटरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त की और 1953 से 72 तक अध्यापिका और समाज-कल्याण निरीक्षका के रूप में राज्य सेवा की। 1972 में त्यागपत्र देकर भिनाय (सु.अ.) क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधान सभा सदस्या चुनी गई। 1977 में आपने केकडी (सु.अ.) क्षेत्र मे भाग्य आजमाया लेकिन सफल नहीं हो सकी। 1980 में पुन भिनाय क्षेत्र से विधायिका चुनी गई तथा 18 जून, 1980 से 13 जुलाई, 1981 तक पहाडिया सरकार में उपमंत्री रही।

भगवतीप्रसाद आर्य— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में बीकानेर के संभागीय आयुक्त श्री बी.पी. आर्य का जन्म 9 मई,1948 को जयपुर जिले के कोटपूतली कस्बे में हुआ। 1974 में सेवा में चयन के बाद आप बूंदी, चित्तौडगढ और जोधपुर के जिलाधीश, विशिष्ट योजना विभाग में शासन उप सचिव, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा तथा उद्योग आदि विभागों के निदेशक पद पर रह चुके हैं।

भगवतीप्रसाद बेरी— राजस्थान उच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधिपति श्री बी.पी. बेरी का जन्म :" फरवरी, 1913 को अजमेर में हुआ। आपने गवर्नमेंट कालेज अजमेर से बी.ए. तथा आगरा विश्वविद्यालय से एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त की। आपने सभी परीक्षायें प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। किंग जार्ज की रजत जयन्ती समिति के अवसर पर सम्मानित इने-गिने प्रतिभाशाली छात्रों में आप भी शामिल थे। आप 1945 से 54 तक आगरा विश्वविद्यालय की सीनेट के निर्वाचित सदस्य रहे। 1938 में आपने अजमेर में वकालत शुरू की और 1948 में अजमेर नगर परिषद् के निर्विरोध सदस्य चुने गये। बाद में वरिष्ठ उपाध्यक्ष भी रहे। 1960 में आपको राजस्थान उच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त किया गया। 14 फरवरी, 1973 से 16 फरवरी, 1975 तक आप मुख्य न्यायाधीश रहे। आप

सात मार्च, 1967 को जयपुर में हुए गोली कांड की जांच के एक सदस्यीय आयोग के अध्यक्ष थे। 1977 में जनता सरकार ने आपको कांग्रेस शासन में हुए भूमि घोटालों के जांच आयोग तथा राज्य कर्मचारियों के वेतन आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया। 1971 में आप रोटरी इंटरनेशनल के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर भी रह चुके हैं तथा विश्व के अनेक देशों का भ्रमण कर चुके हैं।

भगवतीप्रसाद भटनागर— राजस्थान के सिंचायी विभाग के शासन सचिव श्री बी.पी. भटनागर का जन्म बीस मार्च, 1933 को उज्जैन (म.प्र.) में हुआ। आपने बी.ई. (सिविल) की उपाधि 1952 में बल्लभ विद्यानगर (गुजरात) से प्राप्त की तथा जनवरी 1953 में कनिष्ठ अभियन्ता के रूप में राज्य सेवा में प्रवेश किया। इसी वर्ष के नवम्बर, सितम्बर 1958 और अप्रैल 1970 में क्रमशः सहायक, अधिशासी और अधीक्षण अभियंता के पदों पर पदोन्नत हुए।

श्री भटनागर दिसम्बर 1975 से सितम्बर 1982 तक बर्मा में सिंचायी विभाग के मुख्य अभियंता एवं मुख्य परामर्शदाता रहे। राजस्थान लौटने पर नवम्बर 1982 में आप माही परियोजना के मुख्य अभियन्ता, अगस्त 1984 में सिंचायी विभाग के मुख्य अभियन्ता एवं पदेन शासन अतिरिक्त सचिव तथा फरवरी 1986 में मुख्य अभियन्ता एवं पदेन शासन विशिष्ट सचिव बनाये गये। मार्च 1986 से दो मई, 1988 तक आप इंदिरा गांधी नहर बोर्ड के अध्यक्ष एवं पदेन शासन सचिव रहे। आपको 26 जनवरी, 1984 को गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर राज्यपाल ने योग्यता प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया। आप 1987 में अमेरिका का भ्रमण भी कर चुके हैं।

भगवतीलाल व्यास -राजस्थान में नई हिन्दी कविता के सशक्त कवि श्री व्यास का जन्म 10 जुलाई, 1941 को उदयपुर में हुआ। हिन्दी में एम.ए. के बाद बी.एड. कर आपने शिक्षण क्षेत्र में प्रवेश किया और वर्तमान में लोकमान्य तिलक शिक्षक- प्रशिक्षण महाविद्यालय डबोक (उदयपुर) में अध्यापक हैं। "शताब्दी निरुत्तर है" तथा "फुटपाथ पर चिड़िया नाचती है", आपकी काव्य कृतियां "सूरज लीलती घाटियां" कथा संग्रह, "पौ बारह पच्चीस" व्यंग और "ओलख बेढवो सरूप" राजस्थानी काव्य प्रकाशित हो चुका है। इनमें "फुटपाथ पर चिड़िया नाचती है" पर आपको राजस्थान साहित्य अकादमी सुधीन्द्र पुरस्कार से तथा "अनहद नाद" राजस्थानी काव्य संग्रह पर केन्द्रीय साहित्य अकादमी वर्ष 1988 के पुरस्कार से सम्मानित कर चुकी है।

भगवानदास टिक्कीवाल (डा.)— सांख्यिकी विषय के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान और राजस्थान विश्वविद्यालय में सांख्यिकी विभाग के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर पद से सेवा-निवृत्त डा. बी.डी. टिक्कीवाल का जन्म जयपुर में सन् 1927 में हुआ। असाधारण प्रतिभा के धनी होने के कारण आपने हाईस्कूल से लेकर एम.एससी.तक विश्वविद्यालय की सभी परीक्षाओं में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। दिल्ली विश्वविद्यालय से सांख्यिकी में स्वर्ण पदक के साथ डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद 1952 में आप उच्च अध्ययन और अनुसंधान हेतु अमेरिका गये,जहां से 1955 में नार्थ करोलिना विश्वविद्यालय से डाक्टरेट प्राप्त कर भारत लौटे। 1956 में आप कर्नाटक विश्वविद्यालय के निमंत्रण पर धारवाड़ में सांख्यिकी विभाग के रीडर एवं अध्यक्ष नियुक्त हुए। 1962 में आप राजस्थान विश्वविद्यालय में इसी पद पर नियुक्त होकर जयपुर आये और 1966 में आचार्य तथा 1973 में वरिष्ठ आचार्य के पद पर पदोन्नत हुए। 1977 में आप भारतीय विज्ञान कांग्रेस की सांख्यिकी शाखा के अध्यक्ष चुने गये। यह सम्मान प्राप्त करने वाले आप प्रथम राजस्थानी हैं। आपने अब तक अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। प्रतिदर्श सर्वेक्षण के क्षेत्र में आपका अनुसंधान कार्य देश-विदेश में मान्यता प्राप्त कर चुका है।

भगवानराम— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान राज्य कृषि-उद्योग निगम के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री बी.राम का जन्म तीन अगस्त, 1933 को दिल्ली में हुआ। 1958 में सेवा में प्रवेश के बाद आप राजस्थान नहर परियोजना के बीकानेर में क्षेत्रीय आयुक्त राजस्व मंडल के सदस्य, मरु-विकास आयुक्त, सहकारिता, भूजल, कृषि ग्रामपंचायती सिंचित क्षेत्र विकास, राजस्व उपनिवेशन, देवस्थान तथा वक्फ आदि विभागों के शासन सचिव रह चुके है।

भरतलाल मीणा— राजस्थान के पुनर्वास विभाग के प्रभारी राज्यमंत्री श्री भरतलाल मीणा का जन्म 15 सितम्बर,1937 को सवाईमाधोपुर जिले के बामणवास ग्राम में हुआ। बी.ए. और प्रभाकर की उपाधि प्राप्त श्री मीणा सर्वप्रथम 1962 के आम चुनाव में मलारनाचौड (सु.अ ज.) क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर निर्विरोध विधायक चुने गये। तत्पश्चात 1972 में कांग्रेस टिकिट पर बामणवास (सु अ.ज) और 1980 में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में गंगापुर और 1985 के चुनाव में पुनः कांग्रेस (इ) टिकिट पर बामणवास (सु.) क्षेत्र से ही विधायक चुने गये है। 1967 और 1977 के चुनावों में आप बामणवास क्षेत्र में पराजित हुए। आप प्रथम बार आठ फरवरी, 1988 को माथुर मंत्रिमंडल में उपमंत्री बने तथा 8 जून, 1989 को राज्य मंत्री के रूप में पदोन्नत किये गये। आप राजस्व एवं भूमि-सुधार विभाग के भी राज्य मंत्री हैं।

भवानीमल (माथुर) -भारतीय पुलिस सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी तथा राजस्थान लोकसेवा आयोग के पूर्व सदस्य श्री भवानीमल का जन्म 28 जून, 1926 को जोधपुर में हुआ। आपने इतिहास में एम ए और एलएल.बी की उपाधि प्राप्त की तथा 1948 से 50 तक व्याख्याता के रूप में कार्य किया। 1950 में आपका भारतीय पुलिस सेवा में चयन हुआ। आप जून 1954 से मार्च 1969 तक जयपुर सहित विभिन्न जिलों के पुलिस अधीक्षक रहे। 1969 से 74 तक आप भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर इंटेलीजेंस ब्यूरो में उप निदेशक रहे तथा अप्रैल 1974 से दिसम्बर 74 तक राजस्थान पुलिस के अतिरिक्त महानिरीक्षक, दिसम्बर 1974 से जून 77 तक दिल्ली के पुलिस महानिरीक्षक, जुलाई 1977 से नवम्बर 78 तक भारत सरकार की "इंस्टीट्यूट आफ क्रिमिनोलोजी एण्ड फोरेंसिक साइंस" के निदेशक, नवम्बर 1978 से फरवरी 82 तक नागरिक उड्डयन सुरक्षा के अतिरिक्त महानिदेशक तथा 26 जुलाई, 1982 से 30 जून, 1984 तक राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के अध्यक्ष पद पर कार्य किया। आपके कार्यकाल में निगम का वर्षों से चला आ रहा आर्थिक घाटा समाप्त हुआ। जून 1984 में भारतीय पुलिस सेवा से अवकाश प्राप्त करने के बाद राज्य सरकार ने आपको लोक सेवा आयोग का सदस्य नियुक्त किया। आप इस पद पर जुलाई 1988 तक रहे।

भवानीशंकर शर्मा— राजस्थान प्रदेश कांग्रेस (इ) के महामंत्री श्री भवानीशंकर शर्मा का जन्म बीकानेर में हुआ। आप व्यवसाय से पत्रकार हैं तथा वर्षों तक "राजस्थान पत्रिका" के बीकानेर में कार्यालय संवाददाता रहे है। जून 1980 में आपको राज्य सरकार ने बीकानेर नगर-विकास न्यास का अध्यक्ष मनोनीत किया। सितम्बर 1985 में प्रदेश कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष मनोनीत होने पर श्री अशोक गहलोत ने आपको महामंत्री नियुक्त किया। जुलाई 1988 में आप बीकानेर के जिला प्रमुख चुने गये।

भवानीसिंह (ले.कर्नल)— जयपुर के पूर्व महाराजा लेफ्टी. कर्नल श्री भवानीसिंह का जन्म 22 अक्टूबर, 1931 को जयपुर के राज परिवार में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा दून स्कूल तथा उच्च शिक्षा हेरो (इंग्लेण्ड) में हुई। आपने राजकुमारों के ऐशो-आराम व सुख-सुविधाओं पूर्ण जिन्दगी को ठोकर मारकर देश-हित में सैनिक बनना अधिक उचित समझा और 23 वर्ष तक सैनिक-प्रशिक्षण और युद्ध काल

में सिपाहियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर रहने, उनकी सी रोटी खाने, पहाड़ों और कांटों की धरती पर घुटनों एवं कोहनियों के बल चलने और उनके सुख-दुख में भागीदार बनने में अधिक सुख का अनुभव किया। 1954 में आप भारतीय सेना की तृतीय कैवेलरी में सैकिण्ड लेफ्टीनेंट नियुक्त हुए तथा आपका चयन राष्ट्रपति के अंगरक्षक के रूप में हुआ। आठ वर्षों तक आपको डा० राजेन्द्र प्रसाद तथा डा० एस० राधाकृष्णन जैसे राष्ट्रपतियों के अंगरक्षक रहने का अवसर मिला। 1971 के भारत-पाक युद्ध में बाड़मेर सीमा की ओर छापामार दल का नेतृत्व करते हुए सीमा में आपने मीलों तक अन्दर घुसकर सैकड़ों पाक सिपाहियों को धराशायी किया लेकिन भारतीय सैनिकों को खरोंच तक नहीं आने दिया। शत्रु की छाछरो चौकी पर भारतीय तिरंगा फहराने का आपको गौरव प्राप्त हुआ। इस वीरतापूर्ण कार्य के लिए भारत सरकार ने आपको "महावीर चक्र" से सम्मानित किया। 1975 में आपने स्वेच्छा से भारतीय सेना से अवकाश ग्रहण किया।

भागीरथ शर्मा— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में शिक्षा विभाग के शासन उप सचिव श्री भागीरथ शर्मा का जन्म 29 अक्टूबर, 1936 को नागौर में हुआ। आपने डूंगर कालेज बीकानेर से अर्थशास्त्र में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। 1963 में आपका राजस्थान सहकारिता सेवा में चयन हुआ। 1970 में आप स्थानीय प्रशासन और ग्रामीण-विकास तथा 1983-85 में ग्रामीण अनुसंधान और ग्रामीण नीतियों सम्बन्धी पाठ्यक्रमों के लिए ब्रिटेन गये। 1977 में आप विशिष्ट योजना संगठन में परियोजना निदेशक के रूप में चयनित हुए और ग्रामीण-विकास, गरीबी उन्मूलन, अन्त्योदय तथा समन्वित ग्रामीण-विकास कार्यक्रम सम्बन्धी अनेक पत्र तैयार किये। अप्रेल 1985 में आपका भारतीय प्रशासनिक सेवा में विशेष चयन हुआ और आप विशिष्ट योजना विभाग में शासन उपसचिव तथा समाज-कल्याण विभाग में निदेशक नियुक्त किये गये।

भानु भारती— विख्यात रंगकर्मी और नाट्य-निर्देशक श्री भानु भारती, जिनका मूल नाम भूपमान महर्षि है, का जन्म 16 जुलाई, 1947 को अजमेर में हुआ। आपने नई दिल्ली के नेशनल स्कूल आफ ड्रामा से स्नातक की उपाधि "बेस्ट डाइरेक्टर" के सम्मान के साथ प्राप्त की। आपने जापान सरकार की छात्रवृत्ति पर दो वर्ष जापान विश्वविद्यालय टोकियो में रहकर "जापान की पारंपरिक मंच पद्धतियों का आधुनिक पश्चिमी एवं पूर्वी रंगमंच पर प्रभाव" विषय पर शोध कार्य किया। आप 1976 से 78 तक राजस्थान विश्वविद्यालय के रंगमंच विभाग से सम्बद्ध रहे तथा नेशनल स्कूल आफ ड्रामा के रंगमंच के सदस्य और श्रीराम सेन्टर फार आर्ट एण्ड कल्चर नई दिल्ली के निदेशक रह चुके हैं। [illegible] में उत्तर-मध्य सांस्कृतिक केन्द्र के संचालक मंडल में राज्य सरकार द्वारा मनोनीत सदस्य हैं। [illegible] तक रंगमंच पर पचास से अधिक नाटकों का कुशलतापूर्वक निर्देशन किया है। राजस्थान साहित्य अकादमी ने [illegible] वर्ष आपकी कृति "चन्द्रमासिंह उर्फ चमकू" पर पांच हजार रुपये का [illegible] पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया है।

भारतरत्न भार्गव— राजस्थान के प्रमुख कवि और लेखक तथा वर्तमान में बी.बी.सी. लन्दन के हिन्दी विभाग में उत्पादक श्री भारतरत्न भार्गव का जन्म 25 जनवरी, 1938 को जयपुर में हुआ। आपने बी.एस. के बाद हिन्दी में एम.ए. किया। छठे दशक के प्रारम्भ में आपने दैनिक "नवयुग" के सम्पादकीय विभाग में कार्य किया तथा कुछ समय तक [illegible] महाविद्यालय जयपुर में व्याख्याता रहे। आपकी रचनाएँ देश के प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता से प्रकाशित होती हैं।

भास्कर चटर्जी— भारतीय प्रशासनिक सेवा की [illegible] भारत सरकार में [illegible] निदेशक श्री भास्कर चटर्जी का जन्म [illegible]

22 जनवरी, 1955 को जयपुर में हुआ। 1978 में सेवा में चयन के बाद आप धौलपुर के जिला पुलिस अधीक्षक तथा जयपुर में आर.ए.सी. की द्वितीय बटालियन के कमांडेंट रह चुके हैं।

भीखाभाई (भील)- राजस्थान के प्रमुख आदिवासी नेता, पूर्व मंत्री तथा सांसद श्री भीखाभाई का जन्म 28 अप्रेल, 1916 को डूंगरपुर जिले में हुआ। आपने विधि स्नातक बनने के बाद प्रारंभ में वकालत की और 1942 से 48 तक मुंसिफ मजिस्ट्रेट रहे। 1948 में आप तत्कालीन डूंगरपुर रियासत में कांग्रेस की लोकप्रिय सरकार में शिक्षा मंत्री बनाये गये। 1952 के प्रथम आम चुनाव में आप बांसवाडा (सु) क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर लोकसभा सदस्य चुने गये तथा 1953 से 55 तक पिछड़ा जाति आयोग के सदस्य रहे। 1957 के चुनाव में आप सागवाडा (सु) क्षेत्र से विधान सभा के लिए निर्विरोध चुने गये तथा सुखाडिया सरकार में समाज-कल्याण, सिंचाई और विद्युत उप मंत्री नियुक्त हुए। 1959 में समाज-कल्याण के नवें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में विदेश गये। 1962, 67 और 72 के चुनावों में भी आप सागवाडा (सु.) क्षेत्र से विधान सभा के लिए निरन्तर चुने जाते रहे तथा मार्च 1962 से मार्च 1972 तक सुखाडिया और बरकतुल्ला खां सरकारों में विभिन्न विभागों के मंत्री निरन्तर बने रहे। 1977 के विधान सभा चुनाव में आप पराजित हुए तथा 1980 में बांसवाडा (सु.) क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। 1965 में आपने अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। वर्तमान में आप पिछडा जाति आयोग के अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे हैं।

भीमराज चौधरी — राजस्थान से कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित राज्यसभा सदस्य श्री भीमराज चौधरी गंगानगर जिले की नोहर तहसील के मूल निवासी हैं। 1972 में आप कांग्रेस टिकिट पर नोहर निर्वाचन क्षेत्र से विधायक चुने गये। 1978 में आप प्रथम बार राज्यसभा के लिए निर्वाचित हुए तथा 1984 में पुन: चुने गये।

भीमसिंह (कोटा)— कोटा के पूर्व महाराव ब्रिगेडियर भीमसिंह का जन्म 1909 में कोटा में हुआ। 1940 में आपका राज्यारोहण हुआ। 1949 से 1956 तक आप राजस्थान के उप-राजप्रमुख रहे।

भीमसिंह मंडावा— राजस्थान के पूर्व उप मन्त्री तथा पूर्व सांसद श्री भीमसिंह का जन्म 6 अक्टूबर 1924 को मंडावा में हुआ। आपने भी एससी (कृषि) तक शिक्षा प्राप्त की। 1952 के प्रथम आम चुनाव में राम राज्य परिषद के टिकिट पर नवलगढ़ क्षेत्र से विधायक चुने गये। 1954 में आप कांग्रेस दल में शामिल हो गये। 1957 में आप मंडावा क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर चुनाव हार गये तथा 1962 में नवलगढ़ क्षेत्र से पुन: विधायक चुने गये और सुखाडिया मंत्रिमंडल में गृह, यातायात तथा सहकारिता विभागों के उप मंत्री नियुक्त हुए। दिसम्बर 1966 में श्री सुखाडिया से मतभेद होने पर आपने श्री कुम्भाराम आर्य और श्री हरिश्चन्द्र झालावाड के साथ कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया। 1980 के लोकसभा चुनाव में जनता पार्टी के टिकिट पर झुंझुनूं क्षेत्र से लोकसभा सदस्य चुने गये।

भीमसेन— राजस्थान के पूर्व उप मन्त्री श्री भीमसेन बीकानेर जिले के निवासी हैं जिन्होंने विधि स्नातक बनने के बाद बीकानेर में वकालत शुरू की। 1950 में आपने राजनीति में प्रवेश किया और बीकानेर जिला कांग्रेस कमेटी के महामन्त्री चुने गये। 1952 से 54 तक प्रदेश कांग्रेस की चुनाव अभियान के अध्यक्ष रहे। 1955-56 में तहसील पंचायत के सरपंच चुने गये और 1959 में बीकानेर के जिला प्रमुख चुने गये। आप 1957 से 1972 तक चार चुनावों में लूणकरणसर क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर निरन्तर विधायक रहे। 1967 में सुखाडिया सरकार में उद्योग उप मन्त्री नियुक्त किये गये। 1977 में आपने लोकसभा का चुनाव लड़ा जिसमें पराजित हुए और विधान सभा का चुनाव नहीं लड़ा।

भुवनेश चतुर्वेदी— राजस्थान से कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित राज्यसभा सदस्य श्री भुवनेश चतुर्वेदी कोटा जिले के मूल निवासी हैं। 1972 के आम चुनाव में आप कोटा निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये थे। 1977 और 80 में भी आपने कांग्रेस टिकिट पर विधान सभा चुनाव में भाग्य आजमाया लेकिन असफल रहे। 1982 में आप राज्यसभा के लिए प्रथम बार और 1988 में दूसरी बार चुने गये।

भूपेन्द्र हूजा- भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री बी. हूजा का जन्म 15 दिसम्बर, 1922 को अविभाजित पंजाब (पाकिस्तान) में हुआ। देश का विभाजन होने पर आपका परिवार दिल्ली में आ गया। आपने इतिहास में एम.ए. किया और 1946 से 49 तक आकाशवाणी के पेशावर, दिल्ली, पटना और नागपुर केन्द्रों में विभिन्न पदों पर और 1949 से 54 तक बी.बी.सी. के भारतीय अनुभाग के प्रसारक, उद्घोषक, समाचार-वाचक तथा प्रोड्यूसर के रूप में कार्य किया। 1954 से 58 तक तत्कालीन दिल्ली राज्य में सूचना अधिकारी रहे तथा 1958 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में चुने गये। आप 1959 से 62 तक मुख्यमंत्री के सचिव, 1962-63 में हिमाचल प्रदेश में प्रतिनियुक्ति पर उपायुक्त, बाद में जिलाधीश, शासन उपसचिव, विभिन्न विभागों के शासन सचिव तथा राजस्थान नहर मंडल और राजस्थान राज्य भंडार-व्यवस्था निगम के अध्यक्ष रहे। 1980 में अवकाश ग्रहण करने के बाद आप अधिकांश समय लेखन- अध्ययन में लगा रहे हैं। आपकी कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

भूरमल एन जैन— भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन शृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सी.आई.डी. (सी.बी.) में सहायक महानिरीक्षक (प्रथम) श्री भूरमल एन. जैन का जन्म 15 जून, 1932 को जालौर जिले में हुआ। प्रारंभ में आप राजस्थान पुलिस सेवा में चयनित हुए और 1981 में आपकी वर्तमान पुलिस सेवा में पदोन्नति हुई। आप सी.आई.डी. की सतर्कता तथा अपराध शाखा में, तथा झुंझुनू और चूरू के जिला पुलिस अधीक्षक रह चुके हैं।

भूरेलाल बया -प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी तथा राजस्थान के पूर्व मंत्री श्री भूरेलाल बया का जन्म श्रावण शुक्ला 12, सम्वत 1961 को हुआ। सन् 1928 में आप जब बम्बई में व्यापार कर रहे थे, तभी वहां आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में शामिल हुए और स्वतंत्रता संघर्ष की गतिविधियों से जुड़ गये। बाद में साइमन कमीशन के बहिष्कार तथा नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया। मेवाड़ प्रजामंडल के आप संस्थापक सदस्यों में से है। संयुक्त राजस्थान का निर्माण होने पर माणिक्यलाल वर्मा मंत्रिमंडल में आप जागीर तथा रसद विभाग के मंत्री तथा वर्तमान राजस्थान बनने पर हीरालाल शास्त्री मंत्रिमंडल में निर्माण एवं परिवहन मंत्री बनाये गये। पांचवें दशक के अन्त में आप खादी- ग्रामोद्योग कमीशन के राजस्थान क्षेत्र के निदेशक नियुक्त हुए।

भूषणलाल शिशु— राजस्थान प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन शृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग में शासन उप सचिव श्री बी.एल. शिशु का जन्म एक अगस्त, 1938 को जम्मू- कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में हुआ। आप एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद 1963 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये। अन्य अनेक पदों पर कार्य करने के बाद आप जयपुर के अतिरिक्त जिलाधीश (प्रशासन), नगरीय विकास एवं आवासन, राहत, मन्त्रिमंडल सचिवालय तथा नगरीय आयोजना आदि विभागों में शासन उप सचिव, रीको में प्रबन्धक तथा आबकारी विभाग में अतिरिक्त आयुक्त (जयपुर) आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

भैरवलाल कालाबादल— राजस्थान के पूर्व राज्य मंत्री श्री भैरवलाल कालाबादल का जन्म झालावाड़ जिले में हुआ। 1937 में आपने राजनीति में प्रवेश किया और 1941 में राजनीतिक अपराधी के

रूप में कारावास गये। 1943 में कंजरों और अन्य जरायम पेशा लोगों के सुधार के लिए संगठन बनाया और प्रजामंडल के साथ सक्रिय रूप से जुड़ गये। आप 1952 के प्रथम आम चुनाव में इकलेरा क्षेत्र से साइकिल पर घूम-घूम कर, चने खाकर और राष्ट्रीय गीत गाकर चुनाव जीतने वाले लोकप्रिय कार्यकर्त्ता थे। 1957,62 और 72 के विधानसभा चुनाव आपने मनोहर थाना क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर तथा 1977 का चुनाव खानपुर से जनता पार्टी के टिकिट पर जीता। आप जनता सरकार में आयुर्वेद विभाग के प्रभारी राज्यमंत्री रहे। 1980 और 1985 के चुनावों में आप खानपुर क्षेत्र से पराजित हो गये।

भैरूंलाल भारद्वाज (वैद्य)— राजस्थान के ग्रामीण-विकास एवं पंचायती राज तथा खादी-ग्रामोद्योग विभाग के प्रभारी राज्य मंत्री श्री भैरूंलाल भारद्वाज का जन्म 19 सितम्बर 1925 को जयपुर जिले के मानपुरा कलां ग्राम में सामान्य कृषक परिवार में हुआ। प्रारंभ से ही राष्ट्रीय विचारधारा से जुड़े होने के कारण आपने प्रजामंडल की गतिविधियों तथा स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। बाद में जयपुर देहात जिला कांग्रेस कमेटी के विभिन्न पदों पर कार्य किया और प्रदेश कांग्रेस के सदस्य रहे। आपने 1957 में प्रथम बार कांग्रेस टिकिट पर जमवारामगढ़ क्षेत्र से विधानसभा का चुनाव लड़ा लेकिन सफल नहीं हो सके। 1965 से 77 तक आप जमवारामगढ़ पंचायत समिति के प्रधान तथा 1973 से 77 तक जयपुर की दोनों कृषि-उपज मंडी समितियों (अनाज तथा फल-सब्जी) के संचालक मंडल के सदस्य रहे। 1980 और 1985 के चुनावों में आप जमवारामगढ़ क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायक चुने गये। 1981 से 84 तक आप राजस्थान राज्य कृषि-उद्योग निगम के अध्यक्ष रहे। 26 जनवरी 1988 को आप शिवचरण माथुर सरकार में राज्य मंत्री नियुक्त किये गये। वर्तमान में आप जयपुर देहात जिला कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष भी हैं।

भैरूंलाल मीणा— राजस्थान के जन जाति विकास विभाग के प्रभारी तथा सामान्य प्रशासन, वन पर्यावरण, श्रम एवं नियोजन आदि विभागों के राज्यमंत्री श्री भैरूंलाल मीणा का जन्म उदयपुर जिले की गिरवा तहसील के टिड्डी ग्राम में हुआ। हाईस्कूल तक शिक्षित श्री मीणा व्यवसाय से कृषक हैं। आप 1980 के चुनाव में उदयपुर ग्रामीण क्षेत्र से तथा 1985 में सराड़ा (सु ज.जा.) क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायक चुने गये हैं। आप उदयपुर जिला सहकारी भूमि-विकास बैंक के अध्यक्ष रह चुके हैं तथा इंटक की प्रदेश शाखा के उपाध्यक्ष हैं।

भैरोंसिंह शेखावत— राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री तथा वर्तमान में राज्य विधान सभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री भैरोंसिंह शेखावत का जन्म 23 अक्टूबर 1923 को सीकर जिले के खाचरियावास ग्राम में हुआ। आपने हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त की और तत्कालीन सीकर ठिकाने की पुलिस में थानेदार नियुक्त हुए। आप भारतीय जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में 1952 के आम चुनाव में दांतारामगढ़ 1957 में श्रीमाधोपुर तथा 1962 और 67 के चुनावों में जयपुर नगर के किशनपोल क्षेत्र से विधायक चुने गये। आप 1952 से ही विधानसभा में जनसंघ दल के नेता चुने जाते रहे हैं। 1971 में आप बाड़मेर क्षेत्र से लोकसभा का तथा 1972 में जयपुर के गांधीनगर क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव हार गये। 1974 से 77 तक आप मध्यप्रदेश से राज्यसभा के सदस्य रहे।

22 जून 1977 को आपने राज्य की प्रथम गैर कांग्रेसी जनता सरकार के मुख्यमंत्री के रूप में शासन संभाला जो 16 फरवरी 1980 तक कायम रहा। इस दौरान नवम्बर 1977 में आप कोटा जिले के छबड़ा क्षेत्र से विधान सभा का उपचुनाव लड़कर विजयी हुए। 1980 का चुनाव भी आपने छबड़ा क्षेत्र से ही भारतीय जनता पार्टी के टिकिट पर जीता। 1985 में आपने चित्तौड़गढ़ जिले के निम्बाहेड़ा तथा जयपुर जिले के आमेर क्षेत्र से एक साथ विधान सभा का चुनाव लड़ा और दोनों क्षेत्रों से विजयी हुए। बाद में आपने आमेर क्षेत्र से त्याग पत्र दिया। आप यूरोप और अमरीका का भ्रमण कर चुके हैं।

श्री शेखावत पूर्व में भारतीय जनसंघ के प्रदेशाध्यक्ष रह चुके हैं तथा वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और किसान प्रकोष्ठ के संयोजक भी हैं।

भोलाराम सैनी— झुंझुनूं जिले के गुढा क्षेत्र से 1985 के विधान सभा चुनाव में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री भोलाराम सैनी का जन्म अक्टूबर 1931 में उदयपुरवाटी कस्बे में हुआ। आपने मिडिल तक शिक्षा प्राप्त की तथा 1972 से 75 तक उदयपुरवाटी नगरपालिका के अध्यक्ष रहे। आप व्यवसाय से कृषक हैं तथा सामाजिक रूढियों और फिजूलखर्ची के कट्टर विरोधी हैं।

मंगल बिहारी— राजस्थान के प्रमुख चिन्तक, विचारक और लेखक तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाशप्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री मंगल बिहारी (पाण्डे) का जन्म 11 अप्रैल,1923 को झालावाड जिले में हुआ। आपने आगरा विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में सर्वोच्च अंकों से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की तथा कोटा के हर्बर्ट कालेज में व्याख्याता नियुक्त हुए। 1958 में आप भा.प्र. सेवा में चुने गये और शिक्षा एवं वित्त विभाग में शासन उपसचिव, भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर मुख्य नियन्त्रक चीनी एवं वनस्पति, राज्य के कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग में शासन विशिष्ट सचिव, राजस्थान राज्य पथ-परिवहन निगम तथा राजस्थान राज्य विद्युत मंडल के अध्यक्ष, राजस्व मंडल के सदस्य, पुनर्वास एवं वित्त विभाग के शासन सचिव, तथा भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर अतिरिक्त सचिव रक्षा मंत्रालय आदि पदों पर कार्य किया। राज्य सेवा से अवकाश प्राप्त करने के बाद श्री मंगल बिहारी जन-जीवन की विभिन्न ज्वलंत समस्याओं को अपनी सशक्त लेखनी से पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से वाणी दे रहे हैं।

मंगलसेन मघोक— भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में पुलिस महानिरीक्षक (योजना एवं कल्याण) श्री एम.एस. मघोक का जन्म 30 सितम्बर, 1936 को गंगानगर जिले में हुआ। 1961 में आपने सेवा में प्रवेश किया तथा बीकानेर के जिला पुलिस अधीक्षक भ्रष्टाचार-निरोधक विभाग में पुलिस अधीक्षक (प्रथम) वन विभाग में सतर्कता निदेशक, उदयपुर, जोधपुर एवं कोटा रेंज, पुलिस मुख्यालय तथा सी.आई.डी. में (अपराध एवं रेलवे) उप-महानिरीक्षक तथा वर्तमान पदस्थापना से पूर्व इसी पद पर विशिष्ट महानिरीक्षक भी रह चुके है।

मथुरादास माथुर - राजस्थान के वरिष्ठ कांग्रेस नेता, पूर्व सांसद और प्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष तथा श्री जयनारायण व्यास और श्री मोहनलाल सुखाड़िया की सरकारों में वर्षों तक विभिन्न विभागों के मंत्री रहे श्री मथुरादास माथुर का जन्म 16 सितम्बर, 1918 को जोधपुर में हुआ। लखनऊ विश्वविद्यालय में बी.एससी. और एलएल.बी. के अध्ययन के दौरान ही आप स्वतंत्रता संघर्ष से जुड गये इसलिए पुलिस के डंडे खाने की शुरुआत वहीं से हो गई। डाबडा कांड में आप घायल हुए और तीन वर्ष तक जालौर के किले में नजर बंद रहे। इस अवसर का आपने मार्क्स और लेनिन का साहित्य पढने में लाभ उठाया। 1942 के आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया और पुनः बंदी बनाये गये। 1945 में जोधपुर प्रजा परिषद के अध्यक्ष चुने गये।

1939 में श्री माथुर प्रथम बार जोधपुर नगरपालिका के सदस्य चुने गये। बाद में 1948-49 में श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में बनी जोधपुर रियासत की लोकप्रिय सरकार में शिक्षा मंत्री तथा राजस्थान का निर्माण होने पर 26 अप्रैल, 1951 से 3 मार्च, 1952 तक व्यास मन्त्रिमंडल में शिक्षा एवं चिकित्सा मंत्री रहे। 1952, 1967 और 1977 के चुनावों में आप नागौर जिले के डीडवाना और 1962 के चुनाव में लाडनूं क्षेत्र से विधायक चुने गये। 1957 में आप नागौर क्षेत्र से लोकसभा सदस्य चुने गये लेकिन कुछ अर्से बाद प्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष का पद संभालने के कारण त्यागपत्र दे दिया। इससे पूर्व आप तीन

वर्ष तक प्रदेश कांग्रेस के महामंत्री भी रह चुके थे। आप 12 मार्च, 1962 से 8 जुलाई, 1971 तक मुख्यमंत्री मंत्रिमंडल में शिक्षा, गृह, वित्त, योजना, परिवहन तथा सार्वजनिक निर्माण आदि विभागों के मंत्री रहे। आप अखिल भारतीय नागरिक परिषद के महासचिव भी रहे। 1980 के विधान सभा चुनाव में आपने जयपुर नगर से कांग्रेस (अर्स) प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा लेकिन जीवन में पहली बार पराजय का मुंह देखना पड़ा। 1985 में कांग्रेस (इ) में प्रवेश के बाद आप कांग्रेस शताब्दी समारोह के प्रदेश संयोजक बनाये गये। आप विश्व के अधिकांश देशों का भ्रमण कर चुके हैं।

मदनलाल गुप्ता- भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में बीकानेर के जिला कलेक्टर श्री एम.एल. गुप्ता का जन्म एक नवम्बर, 1933 को झुंझुनूं जिले के बगड़ ग्राम में हुआ। आपने एम कॉम. की उपाधि प्राप्त की और 1958 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये। आप आमेर के उप जिलाधीश जयपुर के अतिरिक्त जिला-विकास अधिकारी, राजस्व विभाग में शासन उप सचिव, राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में उप सचिव, आबकारी विभाग के जयपुर जिला अधिकारी, जालौर के अतिरिक्त जिलाधीश (विकास), जयपुर नगर परिषद् के प्रशासक, भू-प्रबंध विभाग में अतिरिक्त आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं। 1987 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नत होने के बाद वर्तमान पदस्थापना से पूर्व आप उद्योग विभाग में शासन उप सचिव तथा खाद्य एवं आपूर्ति विभाग में अतिरिक्त आयुक्त रहे।

मदनलाल शर्मा -जयपुर के प्रमुख समाज सेवी तथा व्यवसायी श्री मदनलाल शर्मा का जन्म 10 सितम्बर, 1931 को जयपुर जिले के खेजड़ोली ग्राम में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा जयपुर में हुई तथा एम कॉम., एलएल. बी. और साहित्यरत्न कलकत्ता से किया। प्रारंभ में आपने निजी क्षेत्र में नौकरी की तथा कुछ अर्से तक कलकत्ता में ही वकालत की। बाद में होजरी निर्माण के क्षेत्र में प्रवेश किया और वर्तमान में ''सिल्वर स्टार्क'' मार्का भारत विख्यात होजरी की निर्माता कम्पनी नवोदय होजरी वर्क्स कलकत्ता, दिल्ली और जयपुर में आप भागीदार हैं। इसके साथ ही मैसर्स कलकत्ता सैनिटरी स्टोर्स जयपुर में भी आप भागीदार हैं। समाज-सेवा क्षेत्र में आप श्री खाण्डल विप्र उपाध्याय संस्कृत महाविद्यालय जयपुर के प्रारंभ में मंत्री तथा बाद में लगभग दस वर्षों तक अध्यक्ष रहे। वर्तमान में आप श्री खांडल विप्र ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री खांडल विप्र महासभा की कार्यकारिणी के सदस्य तथा बनीपार्क धर्मार्थ संस्थान के ट्रस्टी हैं। राजस्थान में ब्रह्मकुमारी मत के प्रचार-प्रसार में आपकी सक्रिय भूमिका रही है।

मधु भट्ट (सुश्री) -भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार से सम्मानित होने वाली देश की प्रथम महिला लेखिका सुश्री मधु भट्ट उदयपुर की निवासी हैं। पांच हजार रुपये का यह पुरस्कार आपको 1986 में आकाशवाणी, दूरदर्शन, पत्रकारिता, विज्ञापन-प्रसारण तथा फिल्म आदि प्रसार माध्यमों पर हिन्दी में मौलिक लेखन के लिए दिया गया है। सुश्री भट्ट ने भारतीय विज्ञापन एवं नैतिकता'' विषयक पुस्तक लिखी है।

मंडन मिश्र (डा.)— संस्कृत के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली के कुलपति तथा राजस्थान संस्कृत अकादमी के अध्यक्ष डा. मंडन मिश्र का जन्म सात जून, 1929 को जयपुर जिले के हणुतिया ग्राम में हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर में हुई और एम ए., पीएच.डी., साहित्यमीमांसाचार्य तथा साहित्यरत्न आदि उपाधियां प्राप्त करने के बाद आप महाराजा संस्कृत कालेज जयपुर में प्राध्यापक नियुक्त हुए। आप वर्षों तक राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के तथा 1959 से 1967 तक अ.भा. संस्कृत साहित्य सम्मेलन के महामंत्री रहे। 1962 में आप दिल्ली चले गये जहां डा. राजेन्द्र प्रसाद, श्री लालबहादुर शास्त्री और श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व में संस्कृत के व्यापक प्रचार-प्रसार को नई दिशा दी तथा विभिन्न संस्कृत विश्वविद्यालयों और केन्द्रीय

हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से व्यावसायिक प्रशासन में एम.ए. तथा फरवरी 1987 में महाराजा सयाजी विश्वविद्यालय बड़ौदा (गुजरात) से "बैंकिंग एवं व्यावसायिक वित्त" विषय पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

श्री भंडारी 1959-60 में श्री जैन सुबोध महाविद्यालय जयपुर में व्याख्याता, जून 1960 में मर्केन्टाइल को-आपरेटिव बैंक लि० जयपुर में लेखाकार तथा अप्रेल 1963 में अजमेर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक में महाप्रबंधक नियुक्त हुए। फरवरी 1966 में आप भारतीय रिजर्व बैंक में ग्रामीण साख अधिकारी बन कर बम्बई चले गये जहां बाद में आपकी सहायक मुख्य अधिकारी के पद पर पदोन्नति हुई। मई 1973 में आप रिजर्व बैंक की ही एक शाखा कृषि पुनर्वित्त एवं विकास निगम में उपनिदेशक बनाये गये जहां फरवरी 1980 में आप निदेशक के रूप में पदोन्नत हुए। जुलाई 1982 में नाबार्ड में निदेशक नियुक्त हुए। फरवरी 1984 से अगस्त 1988 तक आप जयपुर में नाबार्ड के उप महाप्रबन्धक रहे तथा वर्तमान में इसी पद पर नाबार्ड के बम्बई स्थित मुख्यालय में कार्यरत हैं।

मनोज भट्ट— भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ कानून श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में चित्तौड़गढ़ के पुलिस अधीक्षक श्री मनोज भट्ट भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री गोपेश्वर भट्ट के पुत्र हैं। आपका जन्म 23 जुलाई 1957 को उदयपुर में हुआ। आपने प्रथम श्रेणी में बी एससी परीक्षा उत्तीर्ण की तथा सुखाड़िया विश्वविद्यालय में एलएल बी के द्वितीय वर्ष में अध्ययन कर ही रहे थे कि भारतीय स्टेट बैंक में आपका प्रोबेशनरी अधिकारी के रूप में चयन हो गया। बाद में 1981 में आपका भारतीय पुलिस सेवा में चयन हुआ। आपको वर्ष 1981 की भारतीय पुलिस सेवा की योग्यता सूची में न केवल लिखित परीक्षा में अपितु प्रशिक्षण में भी समूचे प्रशिक्षणार्थियों में प्रथम स्थान प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त है। आप प्रारंभ में अजमेर में वृत्त अधिकारी रहे। तत्पश्चात वर्तमान पदस्थापना से पूर्व सिरोही और अलवर के पुलिस अधीक्षक तथा राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में निदेशक (सतर्कता एवं सुरक्षा) रहे।

मनोहर प्रभाकर (डा.)— राजस्थान के लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यिक पत्रकार तथा वर्तमान में राज्य के सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के निदेशक डा. मनोहर प्रभाकर का जन्म पांच फरवरी 1932 को जयपुर जिले के [illegible] ग्राम में एक सामान्य [illegible] वैश्य परिवार में हुआ। आपने पंजाब विश्वविद्यालय से प्रभाकर, आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी में तथा पूना विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में प्रथम श्रेणी में एम ए. किया। बाद में "स्वाधीनता संघर्ष में राजस्थान के समाचार पत्रों की भूमिका" विषय पर राजस्थान विश्वविद्यालय से पीएच डी. की उपाधि प्राप्त की। 1954 में राज्य सेवा में प्रवेश से पूर्व आपने साप्ताहिक "अमर ज्योति" का सम्पादन किया।

डा. प्रभाकर की अब तक हिन्दी, राजस्थानी और अंग्रेजी में लगभग चार दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें काव्य, नाटक, अनुवाद, अनुशीलन और सम्पादन के साथ ही बाल साहित्य भी शामिल है। आप केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत भारतीय [illegible] परिषद के [illegible] से सम्मानित होने वाले राज्य के एक मात्र साहित्यकार हैं। भारत के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के भारतेन्दु पुरस्कार सहित आप विधि और न्याय मंत्रालय से तथा राज्य सरकार द्वारा उत्कृष्ट लेखन के लिए स्वाधीनता दिवस पर सम्मानित और पुरस्कृत हो चुके हैं। राजस्थान [illegible] अकादमी के [illegible] तथा [illegible] के साथ ही 1985-87 में [illegible] के रूप में सम्मानित भी हो चुके हैं। [illegible] भारतीय विद्या भवन के जयपुर स्थित [illegible] हैं। [illegible] पद पर आप [illegible] सितम्बर 1988 से कार्यरत हैं।

मनोहरलाल— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत श्री मनोहरलाल का जन्म 15 जनवरी, 1947 को दिल्ली में हुआ। 1977 में सेवा में चयन के बाद आप अतिरिक्त जिलाधीश (विकास), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के निदेशक, उद्योग विभाग में शासन उप सचिव तथा जालौर, बीकानेर और बांसवाड़ा के जिला कलक्टर के रूप में कार्य कर चुके हैं।

मनोहर वर्मा— हिन्दी में बाल साहित्य के जाने-माने लेखक और कवि श्री मनोहर वर्मा का जन्म सात अगस्त, 1931 को अजमेर में हुआ। आपकी शिक्षा यद्यपि मात्र दसवीं श्रेणी तक हुई है लेकिन आपकी रचनायें देश की शीर्ष पत्रिकाओं में प्रमुखता के साथ प्रकाशित होती हैं। आपकी प्रकाशित कृतियों में मुख्य 'डाक्टर चम्पक और मचलू' (1961), 'मुलक्कड बिल्ली' (1962), 'हम सब एक हैं' (1962), 'वचन का मोल' (1967) तथा 'लडाई के मैदान से खत' (1969) हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी आपको जहां विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित कर चुकी है वहां भारत सरकार बाल साहित्य प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार से समादृत कर चुकी है।

मनोहरश्याम जोशी— हिन्दी के जाने-माने लेखक और पत्रकार श्री मनोहरश्याम जोशी का जन्म अजमेर में हुआ। आप वर्षों तक "साप्ताहिक हिन्दुस्तान" के सम्पादक रह चुके हैं। दूरदर्शन के अत्यन्त लोकप्रिय सीरियल "बुनियाद" के आप लेखक रहे हैं।

मनोहरसिंह— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राज्य के अल्पबचत निदेशक श्री मनोहरसिंह का जन्म पश्चिमी पाकिस्तान के कैम्बेलपुर जिले के अथवाल ग्राम में 19 सितम्बर 1932 को हुआ। आपने बीकानेर के डूंगर कालेज से बी.ए. और एलएल.बी. किया तथा 1959 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये। अन्य प्रारंभिक नियुक्तियों के बाद आप जयपुर में नगर दंडनायक, अतिरिक्त जिलाधीश (प्रशासन) तथा अतिरिक्त जिला विकास अधिकारी, भारतीय खाद्य निगम में उप प्रबंधक (वाणिज्यिक एवं प्रशासन) मुख्यमंत्री के उप सचिव, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार गृह, सहकारिता तथा राजकीय उपक्रम आदि विभागों में शासन उपसचिव, राजस्थान लघु उद्योग निगम में महाप्रबंधक तथा आबकारी विभाग में अतिरिक्त आयुक्त (जयपुर) आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं। 1988 में आपकी भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति हुई और वर्तमान पदस्थापन से पूर्व आप झुंझुनूं के जिला कलक्टर रहे।

मरुधर "मृदुल"— शोषित-पीडित और सर्वहारा वर्ग के जाने-माने वकील और साहित्यकार श्री मरुधर मृदुल का जन्म 1930 में जोधपुर में हुआ। आपने एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद 1955 में वकालत शुरू की। आपके पास पहुचने वाले मुवक्किलों में अधिकांश सरकार से पीडित कर्मचारी अथवा मालिक से त्रस्त श्रमिक होते हैं। आप के लिए मेहनताना से अधिक महत्व पीडित को न्याय दिलाने से मिलने वाला सन्तोष है। यही कारण है कि आपने उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद के प्रस्ताव को भी अत्यन्त विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। आप कुशाग्र विधिवेत्ता के साथ ही हिन्दी के श्रेष्ठ कवि लेखक और प्रगतिशील चिन्तक व विचारक भी हैं।

महबूब अली— राजस्थान के पूर्व जन-स्वास्थ्य, श्रम एवं जन-सम्पर्क राज्य मंत्री श्री महबूब अली का जन्म सन् 1931 में बीकानेर जिले के मलकीसर ग्राम में हुआ। आपने बीकानेर से बी.ए. तथा जयपुर से एलएल.बी. किया। प्रारंभ में जयपुर में कृषि विभाग में चपरासी और बाद में चार वर्ष तक रेलवे में मालबाबू की नौकरी की। "सप्ताहांत" और "गुरुदीप" नामक पत्रों का वर्षों तक सम्पादन किया। राजनीति में शुरू से ही सक्रिय रुचि होने के कारण आपने कई चुनाव लड़े लेकिन सफल 1977 के जन

चुनाव में भी जनता पार्टी के टिकिट पर बीकानेर से हो गये। श्री भैरोंसिंह शेखावत की जनता सरकार में आप 27 जून 1977 से 16 फरवरी 1980 तक मंत्री रहे। 1985 के विधान सभा चुनाव में भी आपने बीकानेर क्षेत्र से भाजपा टिकिट पर भाग्य आजमाया लेकिन सफल नहीं हो सके। आप प्रदेश भाजपा के उपाध्यक्ष भी रह चुके है। वर्तमान में जयपुर से एक साप्ताहिक पत्र का सम्पादन कर रहे है। गत 17 फरवरी 1988 को आपने कांग्रेस (इ) की सदस्यता स्वीकार कर ली है।

महादेवसिंह- सीकर जिले के खंडेला क्षेत्र से 1980 और 1985 के चुनावों में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री महादेवसिंह का जन्म खंडेला तहसील के दुल्हेपुरा ग्राम में सात दिसम्बर 1947 को हुआ। आपने कालाडेरा से बी ए और ब्यावर से अर्थशास्त्र में एम ए किया। 1978 में आप अपने गांव में सरपंच बने। 1980 में विधायक चुने जाने पर पहाड़िया सरकार ने आपको सीकर जिला सहकारी भूमि विकास बैंक का अध्यक्ष मनोनीत किया।

महावीरप्रसाद केडिया— प्रमुख उद्योगपति श्री महावीरप्रसाद केडिया का जन्म 24 मई 1920 को हुआ। आपने बी एससी (इन्जी) की शिक्षा प्राप्त की। आप श्रीराम ऑफल एक्स्ट्रेशन्स लि के संचालक हैं।

महेन्द्रकुमार परमार— राजस्थान के मुद्रण एवं लेखन सामग्री विभाग के प्रभारी तथा गृह एवं सहकारिता विभाग के राज्य मंत्री श्री महेन्द्रकुमार परमार का जन्म तीन मई 1939 को डूंगरपुर जिले के घुरेला ग्राम में हुआ। आप स्नातक और विशारद तक शिक्षित हैं। आप 1967 और 1972 के आम चुनावों में पदमा (सु) क्षेत्र से तथा 1980 और 1985 के आम चुनावों में आसपुर (सु) क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये हैं। श्री हरिदेव जोशी की सरकार में आप 16 अक्टूबर, 1985 को शामिल किये गये तथा तीन जनवरी, 1987 को आपको खेलकूद, खादी-ग्रामोद्योग नागरिक सुरक्षा तथा गृह रक्षक दल आदि विभागों का स्वतंत्र प्रभारी बनाया गया। 20 जनवरी 1988 को श्री जोशी की सरकार के त्याग पत्र के साथ ही आपका मंत्री पद समाप्त हो गया। आठ जून, 1989 को आप श्री माथुर की वर्तमान सरकार में पुनः शामिल किये गये।

महेन्द्र भानावत (डा)— राजस्थान के जाने-माने लेखक श्री भानावत का जन्म उदयपुर जिले के कानोड कस्बे में 13 नवम्बर, 1937 को हुआ। 1967 में उदयपुर विश्वविद्यालय से ''मेवाड का गवरी नाट्य और उसका साहित्य'' विषयक शोध प्रबंध पर पीएच डी प्राप्त की। आपकी प्रकाशित कृतियों में ब्रजराज काव्य माधुरी, लोक कला निबंधावली, राजस्थान स्वर लहरी, लोकदेवता तेजाजी मेवाड के रासधारी, राजस्थान के रावल, राजस्थान के भवाई, राजस्थान के तुर्रा-कलंगी, रमदला-की-फड, काला-गोरा-रो-भारत, देवनारायण-रो-भारत, लोकनाट्य गवरी उद्भव और विकास आदि शामिल हैं। सम्प्रति आप भारतीय लोककला मंडल से संबद्ध हैं।

महेन्द्र शास्त्री— अलवर जिले के मंडावर क्षेत्र से लोकदल टिकिट पर मार्च 1985 के चुनाव में निर्वाचित विधायक श्री शास्त्री का जन्म 27 अप्रैल, 1932 को किशनगढबास तहसील के कम्बोरा ग्राम में हुआ। पिता की मृत्यु के कारण आठवीं कक्षा में ही आपने पढाई छोडकर दो वर्ष तक गांव में खेती की। बाद में मेरठ जिले की बडोद नगरपालिका में चुंगी चौकी पर चपरासी, कुछ दिनों पुलिस में सिपाही और इसके बाद गुरुकुल में भंडारी का काम किया। इसी दौरान संस्कृत में प्रथमा और पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर खैरथल में अध्यापक बन गये। इसी क्रम में साहित्यरत्न और इण्टर किया तथा बाद में जयपुर रहकर एम.ए. और एलएल बी. की उपाधियां प्राप्त की। राजनीति में शुरू से ही सक्रिय रुचि होने

के कारण प्रारंभ में आप कम्युनिस्ट बने, बाद में कांग्रेसी और अब जनता दल के विधायक हैं। विधानसभा का चुनाव आपने 1962 और 1980 में भी लड़ा लेकिन सफल नहीं हो सके। आप मंडावर पंचायत समिति के प्रधान, अलवर सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के संचालक मंडल के 14 वर्षों तक सदस्य तथा 1969 से 74 तक अध्यक्ष, राजस्थान वित्त निगम के 1973 से 81 तक निदेशक मंडल के सदस्य, राजस्थान राज्य सहकारी क्रय-विक्रय समिति के 1974 से 77 तक अध्यक्ष, कृषि-उपज मंडी समिति अलवर के अध्यक्ष तथा अलवर सहकारी क्रय-विक्रय समिति के संचालक मंडल के सदस्य रह चुके हैं। अलवर सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के आप वर्तमान में भी अध्यक्ष हैं। आप कवि और गीतकार भी हैं तथा फ्रांस जापान, इंगलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया और जर्मनी आदि देशों की यात्रायें कर चुके हैं।

महेन्द्रसिंह— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में वन एवं पर्यावरण विभाग के शासन सचिव श्री महेन्द्रसिंह का जन्म दो जुलाई, 1938 को उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में हुआ। आपकी शिक्षा आगरा में हुई। 1962 में सेवा में प्रवेश के बाद आप जयपुर के उप जिलाधीश तथा जिला रसद अधिकारी, सिरोही, डूंगरपुर, जालौर और चूरू के जिलाधीश, सहकारी विभाग में अतिरिक्त रजिस्ट्रार केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर रक्षा मंत्रालय में उपसचिव, मास्को स्थित भारतीय दूतावास में सलाहकार (समन्वय), राज्यके कृषि-उत्पादन, पशुपालन, भेड़-ऊन तथा डेयरी विकास आदि विभागों के शासन-सचिव तथा राजस्व मंडल के सदस्य आदि पदों पर रह चुके हैं।

महेन्द्रसिंह यादव— राजस्थान प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में ग्रमीण-विकास एवं पंचायती राज विभाग में उपायुक्त तथा पदेन शासन उपसचिव श्री एम.एस. यादव का जन्म 15 सितम्बर, 1935 को अलवर जिले के सानोली ग्राम में हुआ। आपने बी.ए. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त की तथा 1960 में सेवा में प्रवेश किया। 1974 और 1979 में आपको क्रमश: वरिष्ठ और चयन वेतन श्रृंखलाओं में पदोन्नति मिली।

महेशचन्द्र सिंघानिया— गुजरात-नर्मदा वैली फर्टिलाइजर्स कम्पनी लि. के राजस्थान के क्षेत्रीय वरिष्ठ विपणन प्रबंधक श्री महेशचन्द्र सिंघानिया का जन्म एक अक्टूबर, 1947 को जयपुर जिले के साम्भरलेक कस्बे में हुआ। आपने उदयपुर से बी.ई. (कृषि) तथा अहमदाबाद से एम.बी.ए. किया। 1972 से 1980 तक आपने गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स कम्पनी लि. में क्षेत्रीय अधिकारी तथा वरिष्ठ अधिकारी के पदों पर बड़ौदा में और 1980–81 में राष्ट्रीय दुग्ध-विकास बोर्ड, आनन्द (गुजरात) में परियोजना अधिशासी के रूप में कार्य किया। सितम्बर 1981 से आप वर्तमान पद पर कार्यरत हैं। राजस्थान के कृषि-विकास में महत्वपूर्ण योगदान के लिए आपको राजस्थान जेसीज ने "युवारत्न" की उपाधि से सम्मानित किया है। 1984 में आप कम्पनी की ओर से बैंकाक की अध्ययन यात्रा कर चुके हैं।

महेश झालानी— राजस्थान की पत्रकारिता में पिछले कुछ वर्षों में जिन नये और युवा पत्रकारों ने अपना स्थान बनाया है उनमें महेश झालानी का नाम उल्लेखनीय है। वे अलवर जिले के खैरथल कस्बे के एक सामान्य खंडेलवाल वैश्य परिवार में 15 जून, 1956 को जन्मे हैं और स्नातकोत्तर तक शिक्षा ग्रहण करने के बाद राजस्थान विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में डिप्लोमा किया है। आप छात्र जीवन में ही खैरथल और अलवर से जयपुर के विभिन्न समाचार पत्रों और समाचार समितियों का समाचार-प्रेषण का कार्य करते रहे। 1978 से 85 तक आपने सरकारी कार्यालय में नौकरी की और 21 अगस्त, 1985 से जयपुर के "नवभारत टाइम्स" में रिपोर्टर के रूप में कार्यरत हैं।

इस संक्षिप्त [illegible] में आपसे पूर्व-परिचित, [illegible], [illegible] और [illegible] और अनेक कार्यों का उनकी खोजी दृष्टि से [illegible] [illegible] रहे हैं। विभिन्न विषय पर,

अखबार तथा 'धर्मयुग', ''मुक्ता'', ''दिनमान'', ''साप्ताहिक हिन्दुस्तान'', ''भू-भारती'' तथा ''इतवारी पत्रिका'' आदि में प्रकाशित होते रहते हैं। ''जलते दीप'' जोधपुर ने आपकी पत्रकारिता सम्बन्धी उपलब्धियों के लिए 1987 का ''माणक पुरस्कार'' प्रदान किया है।

माणक हाली- अजमेर जिले के ब्यावर क्षेत्र से मार्च 1985 के चुनाव में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित युवा विधायक श्री माणक हाली का जन्म 15 जुलाई, 1954 को ब्यावर में एक सामान्य अग्रवाल परिवार में हुआ। आपने बी.कॉम. तक शिक्षा प्राप्त की है। आप 1976 से 79 तक अग्रवाल महासभा के अखिल भारतीय मंत्री रहे तथा अग्रवाल समाज के युवकों में दहेज के विरुद्ध जागृति पैदा करने के लिये स्वयं ने दहेज-रहित विवाह किया। आप प्रारंभ से ही कांग्रेस संगठन से जुड़ गये और 1978 से अब तक अजमेर जिला कांग्रेस के मंत्री तथा युवक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हैं। आप 1984 तक एडवर्ड मिल ब्यावर में सम्बद्ध रहे तथा ब्यावर में ''राजस्थान पत्रिका'' और ''हिन्दुस्थान समाचार'' का प्रतिनिधित्व किया।

माणिकचन्द सुराणा- राजस्थान के पूर्व वित्त एवं परिवहन मंत्री तथा वर्तमान में लूणकरणसर क्षेत्र के जनता दल विधायक श्री माणिकचन्द सुराणा प्रारंभ में 1962 में प्रजा-समाजवादी दल के प्रत्याशी के रूप में कालायत क्षेत्र से विधायक चुने गये थे। आपका जन्म 31 मार्च, 1931 को कलकत्ता में हुआ और आपकी शिक्षा कलकत्ता तथा बीकानेर में हुई। आपने एम.ए. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद बीकानेर में वकालात शुरू की।

श्री सुराणा छात्र जीवन से ही राजनीति में सक्रिय रहे हैं। 1945 से 48 तक आप प्रजा परिषद् के सदस्य तथा 1948 से 51 तक बीकानेर छात्र संघ के अध्यक्ष रहे। बाद में आप समाजवादी और प्रजा-समाजवादी पार्टी से जुड़ गये। 1977 से आप जनता पार्टी के और अब जनता दल के प्रमुख नेताओं में हैं। आप श्री भैरोसिंह शेखावत की सरकार में 5 नवम्बर 1978 को योजना तथा आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग के मंत्री नियुक्त किये गये। जुलाई 1979 में आपको वित्त तथा अगस्त 79 से परिवहन विभाग भी दिया गया।

माधवप्रसाद चूड़ीवाल— ओरिएण्ट पंखों की राजस्थान, दिल्ली तथा मध्यप्रदेश की वितरक कम्पनी मैसर्स ओरिएण्टल एजेंसीज के भागीदार श्री एम.पी. चूड़ीवाल नेशनल इंजीनियरिंग इण्डस्ट्रीज लि. जयपुर के प्रथम महाप्रबंधक श्री केसरदेव चूड़ीवाल के पुत्र हैं। आपका जन्म 25 दिसम्बर, 1936 को दिल्ली में हुआ। आपने कलकत्ता में अध्ययन किया और बी.कॉम. तक शिक्षा प्राप्त की।

माधवसिंह दीवान- राजस्थान के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री दीवान का जन्म 18 जनवरी, 1943 को जोधपुर जिले के बिलाड़ा ग्राम में हुआ। आपने मेयो कालेज अजमेर से इण्टर परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के साथ ही पूरे बोर्ड में तीसरा स्थान प्राप्त किया तथा 1964 में पिलानी से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बी.ई. की उपाधि प्राप्त की। आपने कलकत्ता की विभिन्न कंपनियों में सात वर्ष तक सेवा की तथा एक वर्ष तक जापान में प्रशिक्षण प्राप्त किया। राजनीति में सक्रिय रुचि होने के कारण 1971 के लोकसभा चुनाव में पाली क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा किन्तु सफल नहीं हो सके। 1977 के विधान सभा चुनाव में आप सोजत क्षेत्र से प्रथम बार कांग्रेस टिकिट पर विधायक बने। 1980 और 1985 के चुनावों में भी आप इसी क्षेत्र से चुने गये। 1983-84 और 1984-85 में आप विधान सभा की जन लेखा समिति के अध्यक्ष रहे। आप जोधपुर विश्वविद्यालय की सिण्डीकेट के भी सदस्य रहे। 26 जनवरी, 1988 को आप श्री शिवचरण माथुर की सरकार में प्रथम बार मंत्री नियुक्त किये गये और इंदिरा गांधी नहर परियोजना, विशिष्ट योजना संगठन, मरु-विकास तथा अकाल एवं बाढ़ सहायता आदि विभागों का दायित्व संभाला। वर्तमान विभाग आपको 12 जून, 1989 को दिया गया है।

माधोसिंह मैंसवाड़ा— राजस्थान के पूर्व उपमंत्री श्री माधोसिंह मैंसवाड़ा ने 1952 के प्रथम आम चुनाव में जालौर 'ए' क्षेत्र से राम राज्य परिषद् के टिकिट पर लोकनायक जयनारायण व्यास को पराजित किया। 1954 में आप कांग्रेस में शामिल हुए और 1957 और 67 के चुनावों में आहोर क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये। चार सितम्बर, 1967 से आठ जुलाई 1971 तक आप सुखाडिया मंत्रिमंडल में उपमंत्री रहे।

मानसिंह देवड़ा— जोधपुर नगर के सरदारपुरा क्षेत्र से 1980 और 1985 के चुनावों में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री देवड़ा का जन्म 15 जुलाई, 1938 को मंडोर के निकट गोपी-का-बेरा नामक स्थान पर हुआ। आप मैट्रिक तक शिक्षित हैं। 1971 में प्रथम बार जोधपुर नगर परिषद् के सदस्य चुने गये तथा 1974 में उपाध्यक्ष बनाये गये। जून 1981 में आप जोधपुर नगर-विकास न्यास के अध्यक्ष मनोनीत किये गये।

मानसिंह राष्ट्रवर— राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी तथा वर्तमान में स्वायत्त शासन, नगरीय-विकास एवं आवासन मंत्री के निजी सचिव श्री मानसिंह राष्ट्रवर का जन्म दो अक्टूबर, 1936 को चूरू जिले के देपालसर ग्राम में हुआ। 1963 में आपका राजस्थान प्रशासनिक सेवा में विशेष चयन हुआ। आप विभिन्न पंचायत समितियों के विकास अधिकारी, उप जिलाधीश, मुख्यमंत्री के उप सचिव, स्वायत्त शासन विभाग में उपनिदेशक, आयुर्वेद एवं पर्यटन विभागों में अतिरिक्त निदेशक, राजस्थान भेड़पालन सहकारी फैडरेशन के महाप्रबंधक तथा राजस्थान राज्य खेल-कूद परिषद् के सचिव आदि पदों पर रहे। आप अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, ब्रिटेन, थाईलैण्ड, और सिंगापुर आदि देशों की यात्रा कर चुके हैं।

मालती गुप्ता (डा.)— भारत की प्रथम महिला प्लास्टिक सर्जन तथा सवाई मानसिंह अस्पताल में प्लास्टिक सर्जरी विभाग की एसोसियेट प्रोफेसर डा. मालती गुप्ता राज्य के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और अलवर क्षेत्र के पूर्व सांसद स्वर्गीय काशीराम गुप्ता की पुत्री हैं। आप जनरल सर्जरी में एम.एस. करने वाली प्रथम महिला डाक्टर और प्लास्टिक सर्जरी में एम.सी.एच. करने वाली राजस्थान की प्रथम डाक्टर हैं। आपने चंडीगढ़ में डा. सी. बालकृष्णन तथा जापान के टोकियो मेट्रोपोलिटन अस्पताल के डा. एस. ओमोरी व डा. के. हैरी, जो माइक्रो वस्कूलर सर्जरी के क्षेत्र में विश्वविख्यात हस्ती हैं, से प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आप अनेक बार राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में प्लास्टिक सर्जरी के बारे में सम्भाषण कर चुकी हैं।

मल्लाराम वर्मा— राजस्थान के जाने-माने चार्टर्ड एकाउन्टेंट तथा समाज-सेवी श्री मल्लाराम वर्मा का जन्म सन् 1926 में झुंझुनूं जिले के गुढ़ा ग्राम में हुआ। 1953 में आपने सी.ए. किया और 1957 में मैसर्स एम.एल. वर्मा एण्ड कम्पनी बम्बई के भागीदार बने। वर्तमान में आप एम.आर. वर्मा एण्ड कम्पनी जयपुर का संचालन कर रहे हैं। आप जयपुर कर सलाहकार संघ तथा राजस्थान [illegible] संघ के विभिन्न पदों में पदाधिकारी तथा कार्यकारिणी सदस्य रह चुके हैं। राजस्थान [illegible] (वर्तमान में फोर्टी) के भी आप सदस्य हैं तथा [illegible] जयपुर [illegible] के अध्यक्ष रह चुके हैं।

मोतीलाल आर्य— राजस्थान के [illegible] का जन्म 25 [illegible], 1925 को [illegible] में हुआ। [illegible]

आपने दो आने प्रतिदिन की मजदूरी से जीवन शुरू किया और बाद में पाली नगरपालिका में आठ रुपये महीने में सफाई मजदूर की नौकरी की। आप 1955 से 79 तक पाली दलित वर्ग संघ के मंत्री तथा अध्यक्ष रहे और वर्तमान में अखिल भारतीय सफाई मजदूर कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष हैं। आप नाडोल ग्राम पंचायत के तेरह वर्षों तक पंच तथा 1957 से 61 तक पाली नगरपालिका के सदस्य तथा 1971 से 77 तक पाली जिला कांग्रेस के महामंत्री रहे। 1977 में आपने भी कांग्रेस छोड़कर जगजीवनराम की सी.एफ.डी. की सदस्यता ग्रहण की और बाद में पाली जिला जनतापार्टी के महामंत्री बने लेकिन कुछ ही अर्से बाद वापस कांग्रेस (इ) में शामिल हो गये। 1980 के चुनाव में आप जालौर (सु) क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विधायक चुने गये और पहाड़िया मंत्रिमंडल में 18 जून, 1980 से 12 जुलाई, 1981 तक राजस्व, कृषि, पशुपालन, भेड़-ऊन तथा वन आदि विभागों के उपमंत्री रहे। वर्तमान माथुर मंत्रिमंडल में आप 6 फरवरी, 1988 को शामिल किये गये।

मिलापचन्द जैन— राजस्थान उच्च न्यायालय के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधिपति श्री जैन का जन्म जयपुर जिले के सामरलोक कस्बे में 15 सितम्बर 1929 को हुआ। आप प्रारम्भ में अजमेर व गंगानगर में अंशकालिक विधि व्याख्याता नियुक्त हुये। 1949 में आपने वकालत प्रारम्भ की और 1953 में राजस्थान उच्च न्यायालय में तथा 1957 में सर्वोच्च न्यायालय में एडवोकेट के रूप में पंजीकृत हुए। 6 अप्रैल, 1970 को आपका उच्च न्यायिक सेवा में चयन हुआ तथा 15 जून 1978 को उच्च न्यायालय में अतिरिक्त न्यायाधीश तथा 23 नवम्बर 1978 को आप न्यायाधिपति बने। मुख्य न्यायाधिपति श्री जे.एस. वर्मा के उच्चतम न्यायालय में पदोन्नत होकर दिल्ली जाने पर 23 मई, 89 से आप उच्च न्यायालय के कार्यवाहक मुख्य-न्यायाधिपति के पद पर कार्य कर रहे हैं।

मिलापचन्द जैन— राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री मिलापचन्द जैन (द्वितीय) का जन्म 19 दिसम्बर 1932 को आगरा (उ.प्र.) में हुआ। आपने एम.एससी. और एलएल.बी. की उपाधियां प्राप्त की तथा एक जुलाई 1959 को राजस्थान न्यायिक सेवा में मुंसिफ एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट के पद पर नियुक्त हुए। 29 जुलाई 1967 को आपको सिविल जज 26 सितम्बर 1970 को वरिष्ठ सिविल जज 25 नवम्बर, 1971 को अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा 21 मई 1975 को जिला जज के पद पर पदोन्नति मिली। 23 जुलाई 1985 को आप न्यायाधिपति नियुक्त हुए।

मिलापचन्द डांडिया— राजस्थान के जाने-माने प्रखर पत्रकार श्री मिलापचन्द डांडिया का जन्म जयपुर के एक संभ्रांत जैन परिवार में 31 अक्टूबर 1931 को हुआ। आपने इंटरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त की है। आपकी पत्रकारिता की शुरुआत 1947 में स्वर्गीय गुलाबचन्द काला के सम्पादकत्व में प्रकाशित दैनिक "जयभूमि" में रिपोर्टर के रूप में हुई। बाद में राजस्थान में पत्रकारिता की नींव का पत्थर कहे जाने वाले दैनिक "लोकवाणी" में आपको सर्वश्री सिद्धराज ढड्ढा, पूर्णचन्द जैन और जवाहरलाल जैन जैसे प्रतिष्ठित विद्वानों और सम्पादकों के सान्निध्य में आपको रिपोर्टर और उप सम्पादक के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। कुछ दिनों के लिए आपने 'राजस्थान समाचार' के नाम से एक समाचार समिति भी शुरू की। 1953 से 59 तक आप जयपुर जिला बोर्ड में प्रचार अधिकारी रहे तथा बोर्ड द्वारा प्रकाशित मासिक "ग्राम-विकास" का सम्पादन किया। आपने "नवभारत टाइम्स," "फ्री-प्रेस जर्नल" बम्बई, "अमर भारत" दिल्ली तथा इकोनोमिक टाइम्स का जयपुर में प्रतिनिधित्व भी किया। 1959 में आपने "समृद्धि" पाक्षिक का प्रकाशन किया।

वर्तमान में आप कलकत्ता से प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक "टेलीग्राफ" के साथ ही साप्ताहिक "संडे" का राजस्थान में प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। राजस्थान की निष्पक्ष पत्रकारिता में विशेष योगदान के लिए आप 1983 के "माणक" पुरस्कार तथा महाराणा मेवाड़ पुरस्कार से सम्मानित

किये जा चुके हैं। आप प्रदेश के एकमात्र पत्रकार हैं जो हिन्दी और अंग्रेजी में एक साथ पत्रकारिता के दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं।

मीठालाल मेहता— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में कृषि-उत्पादन, सहकारिता, चारा-विकास तथा कृषि अभियान्त्रिकी आदि विभागों के शासन सचिव श्री एम.एल. मेहता का जन्म एक जनवरी, 1939 को चित्तौड़गढ जिले के भैंसरोडगढ ग्राम में हुआ। 1963 में सेवा में प्रवेश के बाद आप भीलवाडा में जिलाधीश, पर्यटन एवं नीति निर्धारण सहित मुख्यमंत्री के सचिव, हरिश्चन्द्र माथुर राजस्थान राज्य लोक-प्रशासन संस्थान के निदेशक, जनजाति क्षेत्र विकास विभाग के आयुक्त तथा पदेन शासन सचिव, राजस्थान आवासन मंडल के अध्यक्ष, भेड़-ऊन, पशुपालन तथा जनजाति क्षेत्र विकास आदि विभागों के शासन सचिव पदों पर कार्य कर चुके हैं।

मीनाक्षी हूजा (श्रीमती)— भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला की अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान लघु उद्योग निगम की प्रबंध निदेशक श्रीमती हूजा भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री खेमचन्द माथुर की जहां पुत्री हैं, वहीं इस सेवा के दूसरे अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी भूपेन्द्र हूजा की पुत्रवधू और वर्तमान अधिकारी श्री राकेश हूजा की सहधर्मिणी हैं। आपका जन्म 26 जून, 1952 को जयपुर में हुआ। 1975 में आपका भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ। आप वाणिज्यिक कर अधिकारी कोटा, जनगणना निदेशालय जयपुर में उप निदेशक, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग में शासन उप सचिव, जिलाधीश सिरोही और भरतपुर तथा सिंचायी विभाग में शासन विशिष्ट सचिव रह चुकी हैं।

मीरा महर्षि (श्रीमती)— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला की अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर पर्यटन मंत्रालय में उपसचिव श्रीमती मीरा महर्षि का जन्म 22 मई, 1953 को अजमेर में हुआ। 1979 में आपने सेवा में प्रवेश किया तथा अब तक उप जिलाधीश जयपुर, शासन उपसचिव खनिज, उपसचिव लोकायुक्त, जिलाधीश टोंक, अतिरिक्त आयुक्त क्षेत्रीय-विकास इंदिरा गांधी नहर परियोजना बीकानेर तथा निदेशक महिला, शिशु एवं पोषाहार विभाग आदि पदों पर कार्य कर चुकी हैं।

मुक्तिलाल मोदी- जयपुर जिले के कोटपूतली क्षेत्र से मार्च 1985 में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में निर्वाचित विधायक श्री मुक्तिलाल मोदी का जन्म 19 जनवरी, 1920 को अमरसर ग्राम में सामान्य अग्रवाल परिवार में हुआ। प्राइमरी तक शिक्षित श्री मोदी अविवाहित हैं और आपका समूचा जीवन राजनीतिक संघर्षों और समाजसेवा में बीता है। 1936 में जयपुर राज्य प्रजामंडल के आप संस्थापक सदस्यों में थे। आप प्रथम बार 1952 में बैराठ क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर, 1957 में बैराठ से ही निर्दलीय और 1962 में कोटपूतली क्षेत्र से पुनः कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये। 1967 में श्रीमाधोपुर, 1972 में नीमकाथाना तथा 1977 में बैराठ और कोटपूतली दो क्षेत्रों से एक साथ निर्दलीय रूप से विधानसभा का चुनाव लड़ा लेकिन सभी में विफल रहे। 1956 में आप विश्व शांति सम्मेलन में भाग लेने सोवियत रूस गये और जर्मनी, फ्रांस, चेकोस्लोवाकिया तथा फिनलैण्ड आदि देशों की भी यात्रा की।

मुकुटबिहारी गुप्ता— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में गृह विभाग में शासन उपसचिव (कारागार) श्री एम.बी. गुप्ता का जन्म एक जुलाई, 1932 को उ.प्र. के आगरा जिले के किरावली ग्राम में हुआ। आपने इतिहास में एम.ए. किया और 1958 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये। आपने उप जिलाधीश टोंक, अतिरिक्त जिलाधीश भीलवाडा,

परिवहन विभाग में क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी तथा अतिरिक्त आयुक्त, राजस्व विभाग में शासन उपसचिव राज्य बीमा विभाग के निदेशक तथा राजस्थान आवासन मंडल के सचिव आदि पदों पर कार्य किया। 1988 में आपकी भा.प्र सेवा में पदोन्नति हुई तथा वर्तमान पद-स्थापना से पूर्व आप खाद्य एवं नागरिक रसद विभाग में अतिरिक्त आयुक्त रहे।

मुकुटबिहारी माथुर (प्रो)- देश के सुप्रसिद्ध शिक्षा और अर्थशास्त्री तथा राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो एम.बी. माथुर का जन्म 10 अक्टूबर, 1915 को अलवर में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा जयपुर के खंडेलवाल हाई स्कूल में और उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुई जहां से आपने बी काम. तथा अर्थशास्त्र में एम ए. की परीक्षायें सर्वाधिक अंकों के साथ उत्तीर्ण की। प्रारंभ में 1938–40 में मध्यप्रदेश के रायपुर स्थित छत्तीसगढ़ कालेज में व्याख्याता रहे लेकिन 1940 में आपको महाराजा कालेज जयपुर के वाणिज्य विभाग में प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति मिल गई। 1945 मे आप केन्द्रीय सरकार की छात्रवृत्ति पर व्यापार-प्रशासन में उच्च अध्ययन हेतु अमेरिका के प्रख्यात हार्वर्ड विश्वविद्यालय में गये। कालान्तर में वहीं आपकी संयुक्त राष्ट्र संघ में नियुक्ति हो गई लेकिन देश और माता-पिता का स्नेह उन्हें वापस जयपुर ले आया। यहां आप राजस्थान विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र एवं लोक-प्रशासन विभाग के अध्यक्ष नियुक्त किये गये। 1968–69 में आप विश्वविद्यालय के कुलपति बनाये गये लेकिन यह पद आपको रास नहीं आया और त्याग पत्र देकर दिल्ली स्थित एशियन इंस्टीट्यूट आफ एजूकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन के निदेशक बन गये। आपने तृतीय वित्त आयोग शिक्षा आयोग तथा प्लाटेशन आयोग के सदस्य के रूप में अपनी प्रतिभा और कार्यकुशलता का बखूबी परिचय दिया। केन्द्रीय सरकार के नई दिल्ली स्थित नेशनल कौंसिल फार एप्लाइड एण्ड इकनामिक रिसर्च के निदेशक सहित अन्य अनेक राष्ट्रीय महत्व के विशिष्ट पदों पर भी आपने कार्य किया।

भारत सरकार ने इसी वर्ष आपको "पद्मभूषण" से अलंकृत कर आपकी सेवाओं का सम्मान किया है। इन दिनों आप जयपुर में अवकाश प्राप्त जीवन बिता रहे है।

मुन्नालाल गोयल– भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री एम एल गायल का जन्म बीस जून 1931 को सूरतगढ़ में हुआ। आपने डूंगर कालेज बीकानेर से बी ए और एलएल बी किया तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन से साहित्यरत्न की उपाधि प्राप्त की। 1956 में आप रा प्रशासनिक सेवा में चुने गये तथा सहायक जिलाधीश जयपुर, उप जिलाधीश अजमेर विकास अधिकारी सांगानेर तथा राजस्थान लघु उद्योग निगम में पहले महाप्रबन्धक व बाद में प्रबन्ध निदेशक रहे।

श्री गोयल की 1976 में भा.प्र. सेवा में पदोन्नति हुई और आपने जिलाधीश बीकानेर निदेशक पर्यटन विभाग, शासन उपसचिव कृषि (विपणन) तथा पदेन प्रशासक राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड उद्योग विभाग के निदेशक, आबकारी आयुक्त एवं पदेन मद्य-निषेध आयुक्त तथा ऊर्जा विभाग के शासन सचिव आदि पदों पर कार्य किया। राजस्थान राज्य बुनकर सहकारी संघ के आप प्रशासक भी रहे। आप विश्व के अधिकांश देशों का भ्रमण कर चुके है।

मुनिचन्द्र भंडारी- देश के विख्यात चार्टर्ड अकाउण्टेंट और 'इंस्टीट्यूट आफ चार्टर्ड अकाउण्टेंट्स आफ इंडिया'' के पूर्व अध्यक्ष श्री एम सी भंडारी का जन्म सन् 1935 में नागौर जिले के खोंखाटू ग्राम में हुआ। जब आप पांच वर्ष के थे तभी पितृहीन हो गये और चुनौतियों का मुकाबला करना आपके स्वभाव का अंग हो गया। आप मैट्रिक पास कर कलकत्ता चले गये और 1955 में बी काम. तथा 1958 में सी.ए. कर अपना स्वतंत्र कार्य प्रारंभ कर दिया। इसी के साथ आपने विभिन्न विषयों पर लेखन और प्रकाशन का कार्य चालू किया जिसमें [illegible]

प्रतिभा का पता चला। आपने अपनी लेखनी के माध्यम से गांधीवादी विचारधारा की हिमायत की।

इंस्टीट्यूट के अपने अध्यक्ष काल में आपने सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य युवा और नये चार्टर्ड अकाउण्टेंट्स को आगे लाने और समस्त औद्योगिक और व्यापारिक घरानों पर वर्षों से कुंडली मारे बैठे कतिपय पुरानी चार्टर्ड अकाउण्टेंट कम्पनियों की एकाधिकार प्रवृत्ति को समाप्त कराने में पहल की। आप दर्जनों सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी हैं।

मुरलीधर कोरानी— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जयपुर-विकास प्राधिकरण में जयपुर-विकास आयुक्त श्री एम.डी. कोरानी का जन्म दस नवम्बर, 1946 को हुआ। आपकी शिक्षा किशनगढ़ और अजमेर में हुई। प्रारंभ में आप भारतीय थल सेना में रहे और 1973 में आपका भा.प्र. सेवा में चयन हुआ। आप प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के निदेशक, डूंगरपुर, जालौर एवं गंगानगर के जिलाधीश, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में पहले महाप्रबंधक और बाद में प्रबंध निदेशक, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग में शासन विशिष्ट सचिव (प्रथम), राजस्व मंडल के सदस्य तथा सहायता एवं पुनर्वास विभाग के शासन सचिव तथा पदेन आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

मूलचन्द खण्डेलवाल (डा.)— राजस्थान विश्वविद्यालय में वाणिज्य संकाय के डीन, लेखांकन विभाग के प्राध्यापक तथा कामर्स कालेज के प्रिंसीपल डा. एम.सी. खण्डेलवाल का जन्म 17 सितम्बर, 1933 को सीकर जिले के खंडेला कस्बे में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से 1957 में प्रथम श्रेणी में एम.कॉम. परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1970 में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। वर्तमान में आप विश्वविद्यालय सिण्डीकेट के सदस्य तथा पी.जी. स्कूल आफ कामर्स के निदेशक हैं। आप इण्डियन एकाउंटेंसी एसोसियेशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर, महार्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक तथा सेन्ट्रल बोर्ड आफ सैकेण्डरी एजूकेशन राजस्थान की विषय समितियों के सदस्य हैं। आपके निर्देशन में दस छात्र अब तक पीएच डी. प्राप्त कर चुके हैं और लगभग इतने ही शोधरत हैं। आपकी वाणिज्य और लेखांकन विषयों पर एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

मूलचन्द मीणा (प्रथम)- राजस्थान के पूर्व राज्य मंत्री श्री मूलचन्द मीणा का जन्म 10 मई, 1931 को भीलवाड़ा जिले में हुआ और आपने बी.ए. तथा बी.एड. तक शिक्षा प्राप्त कर 22 वर्ष तक अध्यापन किया। 1972 में प्रथम बार महामपुर (सु.) क्षेत्र से कांग्रेस टिकट पर विधायक चुने गये और श्री बरकतुल्ला खां की सरकार में 16 मार्च को राज्य मंत्री नियुक्त किये गये। अक्टूबर 73 में श्री खां के निधन के बाद बनी जोशी सरकार में भी आप राज्य मंत्री पद पर यथावत रहे। इसके बाद आपने कोई चुनाव नहीं लड़ा।

मूलचन्द मीणा— राजस्थान के [illegible], [illegible] तथा [illegible] और [illegible] सांख्यिकी विभाग के पूर्व प्रभारी राज्य मंत्री श्री मीणा का जन्म [illegible] 14 फरवरी, 1952 को हुआ। आपने अजमेर से एम.ए. तथा जयपुर से [illegible] की [illegible]। [illegible] पद पर कार्य किया। [illegible] 15 [illegible] 1985 के [illegible] (I) [illegible] सरकार में 16 अक्टूबर 1985 से 20 [illegible] 1987 [illegible]।

मुंगालाल सुरेका— भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी श्री सुरेका का जन्म चार नवम्बर, 1921 को चूरू जिले के रतन नगर कस्बे में हुआ। आपने चूरू से हाईस्कूल, डूंगर कालेज बीकानेर से बी.ए. और आगरा कालेज, आगरा से एलएल.बी. आदि सभी परीक्षायें प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आपने अखिल भारतीय स्तर की वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में तीन बार पुरस्कार प्राप्त किये। 1944 से 46 तक तत्कालीन बीकानेर राज्य के उच्च न्यायालय में वकालत की और 1945-46 में तत्कालीन बीकानेर राज्य विधानसभा के दो वर्ष तक निर्वाचित सदस्य रहे। 1946 में ही आप बीकानेर राज्य की प्रशासनिक सेवा के लिए सीधी भर्ती से चुने गये और प्रथम श्रेणी दण्डनायक नियुक्त हुए। 1957 में आपको राजस्थान प्रशासनिक सेवा के लिए नियमित किया गया। 1952 में जब प्रथम बार राज्य में सामुदायिक विकास कार्यक्रम चालू हुआ तो आपका चयन प्रथम चार परियोजना अधिकारियों में किया गया। 1975 में आप भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नत किये गये और 19 सितम्बर 1975 से 29 जुलाई,77 तक झुंझुनूं के जिलाधीश रहे। नवम्बर 1979 में सेवा-निवृति के बाद आप शासक दल कांग्रेस (इ) से जुड़ गये और वर्तमान में राजस्थान के विभिन्न हितों से सम्बन्धित लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लिख रहे हैं।

मेघराज मुकुल- राजस्थान के जाने-माने हिन्दी और राजस्थानी कवि श्री मुकुल का जन्म 17 जुलाई, 1923 को बीकानेर जिले में हुआ। आपने हिन्दी में एम.ए. और साहित्यरत्न किया। प्रारम्भ में आप हिन्दी के व्याख्याता नियुक्त हुए और बाद में राज्य सरकार के विशेषाधिकारी- साहित्य और संस्कृति बनाये गये। 1978 में आप शासन उपसचिव पद से सेवा-निवृत्त हुए। आपकी राजस्थानी कविता "सैनाणी" भारत-विख्यात है। आपके अनेक कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

मेवाराम माहेश्वरी— भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में पुलिस मुख्यालय जयपुर में पुलिस अधीक्षक (सतर्कता) श्री एम आर माहेश्वरी का जन्म 15 अप्रैल 1935 को बाड़मेर में हुआ। आपने जसवंत कालेज जोधपुर से एम.ए (राजनीति विज्ञान) तथा एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त की। 1960 में आपका राजस्थान पुलिस सेवा में चयन हुआ और आप कोटा, जयपुर देहात तथा पुलिस मुख्यालय में अतिरिक्त अधीक्षक ([illegible]) रहे। 1983 में भा.पु. सेवा में पदोन्नति के बाद आपने जालोर, भीलवाड़ा और कोटा (नगर) आदि जिलों में पुलिस अधीक्षक तथा पुलिस मुख्यालय में सहायक महानिरीक्षक ([illegible]) आदि पदों पर कार्य किया।

मोतीचन्द कोचर— वरिष्ठ पत्रकार तथा 'राजस्थान पत्रिका' के जयपुर संस्करण के स्थानीय सम्पादक श्री मोतीचन्द कोचर का जन्म 13 नवम्बर 1930 को जयपुर में हुआ। आपने बी.ए. और एलएल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की तथा 1950 में दैनिक '[illegible]' के उप सम्पादक रहे। 1957 में आप राज्य सरकार के जन-सम्पर्क निदेशालय में सम्पर्क अधिकारी नियुक्त हुए तथा कई वर्ष तक मुख्यमंत्री के प्रेस अटेची रहे। छठे दशक के मध्य में आप राज्य सेवा से त्याग पत्र देकर [illegible] "प्रेस ट्रस्ट आफ इण्डिया" के राज्य ब्यूरो में नियुक्त हुए। [illegible] दशक के अन्त में आप 'राजस्थान पत्रिका' में आ गये और उदयपुर संस्करण के स्थानीय सम्पादक का दायित्व सम्भाला। आपने राजस्थान [illegible] पत्रकार संघ के स्थापना काल से इसकी गतिविधियों में सक्रिय भाग लिया।

मोतीचन्द नवलखा— [illegible] प्राकृतिक गैस आयोग के सदस्य (वित्त) श्री एम सी नवलखा का जन्म [illegible] 1935 [illegible] हुआ। आपने [illegible] चार्टर्ड एकाउन्टेंट का पाठ्यक्रम उत्तीर्ण किया तथा [illegible]

बिड़ला प्रतिष्ठानों में कार्य किया। 1971 में आप तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग में संयुक्त निदेशक (वित्त) नियुक्त हुए और 1975 में आपकी महाप्रबंधक (वित्त) पद पर पदोन्नति हुई। बम्बई हाई के तेल एवं गैस भंडार के विकास की विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन में आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आयोग को विश्व बैंक अन्य अन्तर्राष्ट्रीय बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं से आसान शर्तों तथा कम ब्याज दर पर अन्तर्राष्ट्रीय वित्त बाजार से विदेशी मुद्राओं में विभिन्न ऋण दिलाने में भी आपका विशेष योगदान रहा है।

मोतीलाल जोशी— राजस्थान के प्रमुख संस्कृत-सेवी तथा वर्तमान में राजकीय घूलेश्वर आचार्यसंस्कृत महाविद्यालय मनोहरपुर के प्राचार्य श्री मोतीलाल जोशी का जन्म 14 मई, 1935 को ग्राम बाडी-जोडी, त. बैराठ में हुआ। आपने साहित्याचार्य व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य आदि उपाधियां प्राप्त की। आप अनेक वर्षों तक राजस्थान विश्वविद्यालय की सीनेट और सिंडीकेट के सदस्य रह चुके हैं। संस्कृत. शिक्षा के क्षेत्र में आप अनेक महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके है तथा मनोहरपुर संस्कृत महाविद्यालय के संस्थापकों में हैं। वर्तमान में आप राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के महामंत्री हैं।

मोहन कुमार खन्ना— भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर ग्रामीण-विकास मंत्रालय में निदेशक श्री एम.के. खन्ना का जन्म 25 मार्च 1951 को दिल्ली मे हुआ। 1974 में सेवा में प्रवेश के बाद आप जयपुर में अतिरिक्त जिलाधीश सहकारी विभाग में अतिरिक्त रजिस्ट्रार तथा बाद में दो बार रजिस्ट्रार जिलाधीश बीकानेर, राज्यपाल के सचिव तथा केन्द्र में वर्तमान पदस्थापना से पूर्व आप गृह मंत्रालय में कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग में उप सचिव पद पर रहे।

मोहन छंगाणी— राजस्थान के प्रमुख जनता दल नेता पूर्व मंत्री तथा फलौदी क्षेत्र से 1985 के चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में निर्वाचित विधायक श्री छंगाणी का जन्म चार नवम्बर, 1926 को जोधपुर जिले के फलौदी कस्बे में सम्पन्न पुष्करणा परिवार में हुआ। आप विधि-स्नातक है लेकिन वकालत कभी नहीं की। प्रारंभ से ही क्रांतिकारी विचारों के होने के कारण आप श्री एम.एन. राय की रेडीकल डेमोक्रेटिक पार्टी में रहे। बाद में 1950 से 56 तक कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य रहे। कुछ वर्ष बम्बई में फिल्म-जगत में बिताये लेकिन 1970 में वापस राजस्थान में आ गये और कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। 1972 के विधान सभा चुनाव में आपने फलौदी क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में अपने ही छोटे भाई श्री दीपचन्द छंगाणी को पराजित किया। 12 नवम्बर, 1973 को आप श्री हरिदेव जोशी की सरकार में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य आयुर्वेद परिवहन, समाज-कल्याण और श्रम तथा नियोजन आदि विभागों के मंत्री नियुक्त किये गये। बाद में विभागीय परिवर्तन में आपको कृषि, पशुपालन और शिक्षा विभाग दिये गये। 1977 में केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बनने पर आप मंत्रिमंडल और कांग्रेस की सदस्यता से त्यागपत्र देकर सी.एफ.डी. में शामिल हुए। 1980 में भी आपने फलौदी से चुनाव लड़ा लेकिन सफल नहीं हो सके। 1988 में श्री वी.पी. सिंह द्वारा बनाये गये जनमोर्चा के आप प्रदेश संयोजक नियुक्त किये गये।

मोहनप्रकाश - युवा जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा धौलपुर जिले के राजाखेड़ा क्षेत्र से मार्च 1985 के चुनाव में लोकदल के टिकिट पर निर्वाचित युवा विधायक श्री मोहनप्रकाश डा. मंगलसेन के पुत्र है जो 1952 के प्रथम आम चुनाव में बाड़ी क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये थे। आपका जन्म पांच मई 1949 को अलवर में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा आपकी जयपुर में हुई और 1973 में काशी विद्यापीठ से स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की। छात्र जीवन में ही क्रांतिकारी विचारों के कारण आपका

प्रारंभिक जीवन निरन्तर आन्दोलनों में भाग लेने और जेल की यातनायें सहने में बीता। आप अब तक दिल्ली की तिहाड़, बिहार में पुटना और बीकानेर तथा हि.प्र. की शिमला जेलों में 18 बार बंदी रह चुके हैं। आपातकाल में पूरे 18 महीने आप बंदी रहे। आप बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय छात्रसंघ, समाजवादी युवजन सभा और राष्ट्रीय युवा लोकदल के अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश समाजवादी युवजन सभा, तथा राजस्थान जनता पार्टी के महामंत्री और जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में हुए आन्दोलन के राष्ट्रीय सह-संयोजक रह चुके हैं।

श्री मोहन प्रकाश अविवाहित हैं और जीवन भर अविवाहित ही रह कर युवा शक्ति को देश के नव निर्माण में लगाने के लिए संकल्पबद्ध हैं। आप 1978 में सोवियत रूस में आयोजित विश्व युवा सम्मेलन में भारतीय मंडल के सदस्य के रूप में भाग ले चुके हैं।

मोहन पूनमिया- राजस्थान में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के शीर्ष नेता तथा सीटू के संस्थापक मंत्री कामरेड पूनमिया का जन्म पाली जिले के बाली कस्बे में मार्च 1928 में एक सामान्य जैन परिवार में हुआ। आपने बम्बई के रूइया कालेज से बी.एससी. और विल्सन कालेज से प्रथम श्रेणी में एम एससी परीक्षा उत्तीर्ण की। आप आल इंडिया विद्यार्थी फैडरेशन के सचिव रहे और साम्यवादी नेता बी टी रणदिवे से सम्पर्क के कारण 1949 में साम्यवादी दल के सदस्य बन गये। तभी से सामाजिक विषमता और आर्थिक शोषण की समाप्ति तथा साम्यवाद की स्थापना के लिये सतत संघर्षरत हैं। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के आप तीस राष्ट्रीय नेताओं में से एक हैं जिन्होंने पार्टी की स्थापना की। आपने प्रारंभ में बम्बई में विभिन्न श्रमिक संगठनों का कार्य किया और 1970 में राजस्थान में सीटू की स्थापना की। इसके माध्यम से आपने अब तक मजदूरों की दर्जनों हड़तालों और आन्दोलनों का सफल संचालन किया है और प्रतिष्ठा के अनेक संघर्षों में विजय प्राप्त की है। विधान सभा चुनावों में आपने कई बार भाग्य आजमाया लेकिन अभी तक सफलता प्राप्त नहीं हो सकी।

मोहन महर्षि- देश-विदेश में नाट्य-निर्देशन के लिये विख्यात श्री मोहन महर्षि का जन्म 30 जनवरी, 1940 को अजमेर में हुआ। आप छात्र जीवन से ही नाट्यकला से जुड़ गये जिसके फलस्वरूप कालेज की शिक्षा तो पूरी नहीं हो सकी लेकिन नेशनल स्कूल आफ ड्रामा नई दिल्ली में [illegible] मिल गया। "मेन विदाउट शैडोज" "छायांश [illegible] करो है" "मुद्रा-राक्षस" "तुगलक" "शुतुरमुर्ग", "आषाढ़ का एक दिन", "मरद", "गणदेवता" "[illegible]" "गुड़िया घर" "अन्धा युग", "भूमिका", "घासीराम कोतवाल", "[illegible]" "[illegible]" तथा "[illegible] एक [illegible]" आदि अनेक ऐसे सफल नाटक हैं जिन्होंने महर्षि को नाट्य-जगत में [illegible] है। आप 1966 में अन्तर्राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में [illegible] और विभिन्न यूरोपीय देशों की यात्रा की। 1972 में भारतीय नाट्य [illegible] के रूप में [illegible] पर वहां गये और कुछ ही वर्षों में [illegible] दूरदर्शन और नाट्य-जगत में [illegible]।

मोहनलाल कालिया— भारतीय पुलिस सेवा के [illegible] तथा वर्तमान में गृह रक्षक दल के कमाण्डेंट जनरल तथा नागरिक-सुरक्षा के निदेशक श्री [illegible] का जन्म दस मई 1934 को पंजाब में हुआ। आप 1957 में सेवा में [illegible] और [illegible] विभिन्न प्रारंभिक नियुक्तियों के बाद आप उप महानिरीक्षक [illegible] (मुख्यालय [illegible]) तथा सी आई डी. (गुप्तचर शाखा) [illegible] निदेशक [illegible] में [illegible] उप महानिरीक्षक [illegible] अतिरिक्त महानिरीक्षक पुलिस मुख्यालय में विशिष्ट महानिरीक्षक (मुख्यालय) तथा ([illegible]) [illegible] पदों पर कार्य कर चुके हैं।

मोहनलाल गुप्ता— राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग में अधीक्षक तथा उप निदेशक पद से अवकाश प्राप्त श्री गुप्ता को अपने कलाविद् पिता पद्मश्री राम गोपाल विजयवर्गीय की ही भांति ललित कला के क्षेत्र में पर्याप्त यश प्राप्त हुआ। आप ललित कला के साथ ही साहित्य और पुरातत्व आदि सभी विधाओं में नैपुण्य प्रमाणित कर चुके है। चित्रकला में आपने पारंपरिक तथा आधुनिक शैली में चित्रों की रचना की है जिनका एकल और सामूहिक प्रदर्शनियों में प्रदर्शन हो चुका है। आपके चित्र जहां राजस्थान ललित कला अकादमी से पुरस्कृत हुए है, वहां गत वर्ष गद्य की विविध विधाओं के लिए राजस्थान साहित्य अकादमी ने आपकी पाण्डुलिपि "संस्कृत के स्वर" पर पांच हजार रुपये का डा. कन्हैयालाल सहल पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया है। आप राजस्थान ललित कला अकादमी की कार्यकारिणी के सदस्य भी हैं।

मोहनलाल गुप्ता- राजस्थान के वरिष्ठ पत्रकार तथा वर्तमान में "राष्ट्रदूत" के समाचार संपादक श्री मोहनलाल गुप्ता का जन्म 25 फरवरी, 1925 को जयपुर के एक प्रतिष्ठित खण्डेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। आपने महाराजा कालेज जयपुर से एम.काम. परीक्षा उत्तीर्ण की और 1951 में जयपुर से दैनिक 'राष्ट्रदूत' का प्रकाशन शुरू होने पर "वाणिज्य सम्पादक" नियुक्त हो गये। 1955–56 में आप नगर संवाददाता बने और तब से अब तक एक दैनिक पत्र के सम्पादकीय विभाग का कोई कार्य ऐसा नहीं है, जो आपने सफलतापूर्वक नहीं किया हो। आप राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के स्थापना काल से अब तक कार्यकारिणी सदस्य और विभिन्न पदों पर कार्य कर चुके हैं।

मोहनलाल श्रीमाल- राजस्थान के लोकायुक्त श्री मोहनलाल श्रीमाल का जन्म चार जनवरी, 1923 को उदयपुर में हुआ और शिक्षा उदयपुर तथा इन्दौर में प्राप्त की। 1948 में आपने उदयपुर में वकालत प्रारंभ की। आप उदयपुर अभिभाषक संघ के विभिन्न सत्रों में अध्यक्ष रहे तथा राजस्थान बार कौंसिल के 9 वर्षों तक निरन्तर निर्वाचित सदस्य रहने के बाद उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1966 में जोधपुर में राजकीय उप अधिवक्ता तथा बाद में राजकीय अधिवक्ता व अतिरिक्त महाधिवक्ता नियुक्त हुए। 1974 में उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति तथा 1985 में सेवानिवृत्ति के बाद राजस्थान के लोकायुक्त नियुक्त हुए।

मोहनलाल शर्मा(डा.)— जयपुर स्थित सवाई मानसिंह चिकित्सालय के अधीक्षक एवं सवाई मानसिंह मेडीकल कालेज में विकृति विज्ञान (पैथोलॉजी) विभाग के आचार्य और विभागाध्यक्ष डा. एम.एल. शर्मा का जन्म 23 अगस्त, 1934 को हुआ। 1959 में आपने इसी कालेज से एम.बी.बी.एस., 1962 में एम.एससी. और 1970 में एम.डी. परीक्षा उत्तीर्ण की। 1962 में आप सहायक आचार्य, 1965 में सह आचार्य और 1969 में आचार्य बने। मार्च 1989 से आप अधीक्षक पद पर भी कार्यरत हैं।

मोहनसिंह पारीक— भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जयपुर-विकास प्राधिकरण में निदेशक (सतर्कता) श्री एम.एस. पारीक का जन्म 31 अगस्त 1939 को जयपुर में हुआ। 1964 में भा.पु. सेवा में प्रवेश से पूर्व आप भारतीय थलसेना में रहे। आप सीकर एवं जालौर के पुलिस अधीक्षक, सी.आई.डी. में अधीक्षक, जयपुर में आर.ए.सी. की तृतीय बटालियन तथा जोधपुर में छठी बटालियन के समादेष्टा, सी.आई.डी. की अपराध शाखा में पुलिस अधीक्षक (हरिजन अत्याचार), पुलिस अधीक्षक (द्वितीय) कम्प्यूटर, उप महानिरीक्षक अजमेर रेंज तथा वर्तमान प्रतिनियुक्ति से पूर्व उप महानिरीक्षक सुरक्षा आदि पदों पर रह चुके हैं।

मोहम्मद [illegible] कमल दुर्रानी— [illegible] के मशहूर उर्दू-फारसी शायर [illegible] है। आपका जन्म [illegible] को [illegible] में हुआ। [illegible] 1947 में [illegible] जयपुर में [illegible] उर्दू भाषा की [illegible] के लिए [illegible] की।

कमल दुर्रानी ने 1912 से [illegible] है। आपने जीवन में हजारों [illegible] है। आपके साहित्य में [illegible] दिखाने की [illegible] है। 1978 में राजस्थान उर्दू अकादमी की स्थापना होने पर सरकार ने आपको प्रथम अध्यक्ष नियुक्त किया। [illegible] "राजस्थान रत्न" है।

मोहम्मद अय्यूब खां— [illegible] झुंझुनूं क्षेत्र के [illegible] श्री मोहम्मद अय्यूब खां का जन्म 6 जनवरी 1934 को [illegible] में हुआ। [illegible] शिक्षा ग्रहण करने के बाद आपने सवार के रूप में भारतीय सेना में प्रवेश किया और 18वीं कैवलरी में कैप्टन और नायब रिसालदार रहे। 1965 के भारत-पाक युद्ध में [illegible] टैंक तोड़ने तथा असाधारण वीरता प्रदर्शित करने के लिये आपको नवम्बर 1965 में वीरचक्र से सम्मानित किया गया। राज्य सरकार ने आपको इस बहादुरी के लिए [illegible] भूमि भेंट की।

1984 के दिसम्बर में आप कांग्रेस (इ) प्रत्याशी के रूप में झुंझुनूं क्षेत्र से लोकसभा का चुनाव लड़े और विजयी रहे। आप राजस्थान प्रदेश कांग्रेस (इ) के महामंत्री भी रहे हैं।

मोहम्मद उस्मान आरिफ— उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री आरिफ का जन्म सन् 1926 में बीकानेर में मशहूर शायर श्री अब्दुल [illegible] के घर हुआ। आप शायरी आपको विरासत में मिली है। आपने बीकानेर से बी.ए. तथा अलीगढ़ विश्वविद्यालय से एलएल. बी. की उपाधि प्राप्त कर बीकानेर में वकालत शुरू की। 1964 में आपको राजस्थान बोर्ड ऑफ मुस्लिम वक्फ का सदस्य नियुक्त किया गया। 1966 से 70 तक आप नगर-विकास न्यास बीकानेर और 1973-74 में राजस्थान साहित्य अकादमी के सदस्य रहे। 1970 में प्रथम बार आप कांग्रेस टिकिट पर राज्यसभा के सदस्य चुने गये। वहां आप हाउस कमेटी के अध्यक्ष तथा उप मुख्य सचेतक भी रहे। 1976 में आप राज्यसभा के पुन. सदस्य चुने गये। संयुक्त राष्ट्र संघ में आपने बंगला देश के मामले पर भारतीय प्रतिनिधि के रूप में अपना पक्ष प्रस्तुत किया। 1978 में प्रदेश कांग्रेस (इ) के उपाध्यक्ष बनाये गये और 1980 के विधानसभा चुनावों का आपने राजस्थान में संचालन किया। आठ जून, 1980 को आपको श्रीमती इंदिरा गांधी ने केन्द्रीय सरकार में निर्माण और आवास उपमंत्री नियुक्त किया। 1982 में आप राज्य सभा के लिये पुन. चुने गये और 1984 में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल मनोनीत किये गये। आपकी पुस्तक "नजरे वतन" पर राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कार मिल चुका है।

मोहम्मद सईद— राजस्थान चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री के अतिरिक्त महामंत्री श्री सईद का जन्म 25 जुलाई, 1939 को जयपुर में हुआ। आप "गुडएज" मार्का स्टील फर्नीचर तथा अन्य उपकरणों की निर्माता गुडएज मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी जयपुर के भागीदार हैं। सार्वजनिक कार्यों में आप सदैव रुचि लेते रहे है। वर्तमान में आप राजस्थान लघु उद्योग निगम के निदेशक मंडल सहित राजस्थान राज्य विद्युत मंडल, डाक-तार परिमंडल राजस्थान, पश्चिम रेलवे तथा सैन्ट्रल एक्साइज आदि संस्थानों

की क्षेत्रीय सलाहकार समितियों के सदस्य हैं। साथ ही राजस्थान लघु उद्योग महासंघ के सचिव तथा रोटरी क्लब जयपुर (पूर्व) के वर्तमान सत्र के लिए *अध्यक्ष हैं।*

मोजीराम गर्ग— राजस्थान राज्य विद्युत मंडल के मुख्य अभियन्ता (ओ.एण्ड एम.) श्री एम.आर. गर्ग का जन्म 6 अक्टूबर, 1932 को हरियाणा के रोहतक जिले के बेरी ग्राम में हुआ। आपने सन् 1955 में खड़गपुर से विद्युत अभियांत्रिकी में स्नातक उपाधि प्राप्त की तथा 1955-56 में टाटा स्टील, टाटानगर में सेवा की। मार्च 1957 में आप राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में सहायक अभियन्ता नियुक्त हुए। 1964 में आपको अधिशासी अभियन्ता, 1975 में अधीक्षण अभियन्ता, 1982 में उप मुख्य अभियंता तथा 1983 में अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता के रूप में पदोन्नत किया गया। 18 सितम्बर,1985 से *आप वर्तमान पद पर कार्यरत हैं।*

यतीन्द्रसिंह— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में वित्त विभाग के शासन सचिव तथा आयुक्त श्री वाई. सिंह का जन्म सात अक्टूबर, 1933 को उ.प्र. के उन्नाव नगर में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में एम.एससी. का पूर्वार्द्ध और हिन्दी में विशारद किया। 1957 में सेवा में प्रवेश के बाद आप बूंदी और भीलवाड़ा के जिलाधीश, भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर रक्षा मंत्रालय में उप सचिव तथा भारतीय खाद्य निगम में राजस्थान के क्षेत्रीय प्रबन्धक, क्षेत्रीय विकास आयुक्त कोटा, राजस्थान कृषि-उद्योग निगम के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य तथा जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में एक-एक बार तथा कृषि-उत्पादन एवं सहकारिता विभाग में दो-दो बार शासन सचिव पद पर कार्य कर चुके हैं।
वित्त विभाग में भी आप 1979–80 में शासन सचिव तथा आयुक्त रह चुके हैं।

यदुनाथसिंह— राजस्थान विधान सभा के नापक्ष में पिछले कुछ वर्षों में जिन युवा विधायकों ने अपना स्थान बनाया है उनमें नदबई क्षेत्र के जनता दल विधायक श्री यदुनाथसिंह का नाम प्रमुख है। आपका जन्म 15 जून,1944 को कासगंज में हुआ। आपकी शिक्षा उच्च माध्यमिक तक है तथा व्यवसाय से कृषक हैं। 1978 से 80 तक आप ग्राम पंचायत खांगरी के सरपंच रहे तथा 1980 और 1985 के चुनावों में नदबई क्षेत्र से लोकदल के टिकिट पर विधायक चुने गये हैं। *आप राजस्थान वन्य जीव* सलाहकार मंडल के सदस्य भी रह चुके हैं।

यादवेन्द्र शर्मा ''चन्द्र''— राजस्थान के विख्यात उपन्यासकार श्री यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र का जन्म 15 अगस्त, 1932 को बीकानेर में एक सामान्य पुष्करणा परिवार में हुआ। आपकी प्रथम कहानी ''मैं वही हूँ''बी. के. विद्यालय की हस्त लिखित पत्रिका में तब प्रकाशित हुई जब आप मात्र छठी कक्षा के छात्र थे। आपने हाईस्कूल और प्रभाकर तक शिक्षा प्राप्त की। 1950 में आपने साप्ताहिक 'सेनानी' में कुछ दिनों सम्पादन का कार्य किया। 1951 में कलकत्ता चले गये जहां आपने नाट्य-लेखन का कार्यकिया। 1954 में रमपुरिया प्रकाशन में सम्पादक नियुक्त हुए। उन्हीं दिनों आपके ''सन्यासी और सुन्दरी'' तथा ''दिया जला-दिया बुझा'' उपन्यास प्रकाशित हुए जिन्होंने आपको राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्रदान की। 1955 से आप स्वतंत्र रूप से लेखन का ही कार्य कर रहे हैं। आपने ''रूपलेखा'', ''सिने तस्वीर'', ''सिने संसार'', ''चित्र भारती'' और ''लहर'' आदि फिल्मी पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। आपने हिन्दी और राजस्थानी में एक सौ से अधिक उपन्यास लिखे हैं जिनमें ''आंचल में दूध, आंखों में पानी'', ''ढोलन कुंजकली'', ''एक और मुख्य मंत्री'', ''प्रेस्टमैन'' और ''खम्मा अन्नदाता'' आदि का साहित्य- जगत में अपूर्व स्वागत हुआ है।

श्री चन्द्र को साहित्य-रचना के लिए भारत सरकार, राज्य सरकार और अन्य साहित्य सेवी संस्थाओं द्वारा अनेक बार पुरस्कृत किया जा चुका है। राजस्थान साहित्य अकादमी आपको विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित कर चुकी है।

युगलकिशोर चतुर्वेदी— राजस्थान के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, पत्रकार और पूर्व मंत्री श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी का जन्म 14 अक्टूबर, 1915 को मथुरा जिले के सौंख ग्राम में हुआ। आपने बी.ए. और प्रभाकर परीक्षायें उत्तीर्ण की। आप छात्र जीवन में ही स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ गये और 1930 में मथुरा में हुए सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया। 1939 से 48 तक भरतपुर राज्य प्रजा परिषद् में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए तीन बार जेल-यात्रायें कीं। 1941 में प्रजा परिषद् की ओर से भरतपुर नगर पालिका के और 1944 में भरतपुर राज्य की धारा सभा के सदस्य चुने गये। 17 मार्च, 1948 से 15 मई, 1949 तक मत्स्य प्रदेश के उप प्रधान तथा शिक्षा मंत्री और सितम्बर 1949 से 25 अप्रैल, 1951 तक तत्कालीन राजपूताना प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान मंत्री रहे। 1951 में राजस्थान की कांग्रेस दल की जयनारायण व्यास सरकार में सार्वजनिक निर्माण और पुनर्वास मंत्री रहे। 1952 के चुनाव में आप हार गये और चार वर्षों तक दैनिक "राष्ट्रदूत" के प्रधान सम्पादक तथा राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रधानमंत्री रहे। 1957 में डीग से विधायक चुने गये। सम्प्रति "लोक-शिक्षक" नामक विचार-प्रधान पाक्षिक का सम्पादन कर रहे हैं।

ऋतुराज— कवि और चित्रकार श्री ऋतुराज उन साहित्यकारों में हैं जो हाल के वर्षों में बहुत तेजी से उभरे, चर्चित हुए और राज्य के साहित्य-जगत में जिन्होंने अपना स्थान बनाया। आपका जन्म दस फरवरी, 1940 को भरतपुर में हुआ। आपने एम.ए. तक शिक्षा ग्रहण की। सम्प्रति राजकीय महाविद्यालय बूंदी में अंग्रेजी के प्राध्यापक हैं। आपकी काव्य कृति "अबेकस" पर 1985–86 का पांच हजार का डा. सुधीन्द्र पुरस्कार और 1987–88 का ग्यारह हजार रुपये का मीरा पुरस्कार "नहीं प्रबोध चन्द्रोदय" कविता संग्रह पर प्रदान कर राजस्थान साहित्य अकादमी ने आपको सम्मानित किया है।

ऋषिकुमार मिश्र— देश के जाने-माने पत्रकार और राजस्थान से कांग्रेस के पूर्व राज्यसभा सदस्य श्री आर.के. मिश्रा 1954 में कलकत्ता से दैनिक "विश्वमित्र" के प्रतिनिधि के रूप में जयपुर आये और फरवरी 1955 में जयपुर से प्रकाशित दैनिक "नवयुग" के सम्पादक नियुक्त हुए। छठे दशक के मध्य में आप नई दिल्ली के अंग्रेजी दैनिक "पेट्रियट" के राजस्थान संवाददाता नियुक्त हुए और 1971 के प्रारम्भ में विशेष संवाददाता बनकर नई दिल्ली चले गये।

1974 से 80 तक आप राजस्थान से कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य रहे। इस दौरान आप तत्कालीन कांग्रेसाध्यक्ष श्री देवकांत बरुआ के राजनीतिक परामर्शदाता रहे। राजस्थान विश्वविद्यालय की सिन्डीकेट के भी आप सदस्य रहे। सम्प्रति आप "पेट्रियट" दैनिक "लिंक" साप्ताहिक (दोनों अंग्रेजी) तथा हिन्दी मासिक "गंगा" के सम्पादक हैं। आप अनेक बार विश्व भ्रमण कर चुके हैं।

रघु सिन्हा— जयपुर के सबसे बड़े उद्योग नेशनल इंजीनियरिंग इण्डस्ट्रीज लिमिटेड के मुख्य कार्यकारी श्री आर. सिन्हा का जन्म पांच मई, 1926 को जयपुर में हुआ। स्नातक शिक्षा-समापन के बाद आपका भारतीय रेलवे में चयन हुआ। आपने [illegible] डिप्लोमा प्राप्त किया और लन्दन जाकर [illegible] की लेकिन एन.ई.आई. की सेवा में आने के लिए त्याग पत्र दे दिया। इस संस्थान के स्वतन्त्रता से अब तक के विकास के पीछे श्री सिन्हा की लगन, कठोर परिश्रम और सूझबूझ मानी जाती है। आप अनेक सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं के सदस्य रह चुके हैं।

रघुकुल तिलक— राजस्थान के पूर्व राज्यपाल श्री रघुकुल तिलक का जन्म सात जनवरी, 1900 को उत्तरप्रदेश के मेरठ नगर में एक संभ्रांत अग्रवाल परिवार में हुआ। आपने इतिहास में एम.ए. किया और 1924 से 1926 तक खुरजा कालेज में व्याख्याता तथा 1928 से 32 तक उत्तरप्रदेश विधानसभा में पुस्तकालयाध्यक्ष रहे। 1932 में आपने सरकारी नीतियों के विरोध स्वरूप त्याग पत्र दे दिया और गोलमेज सम्मेलन के बाद गिरफ्तार हो गये। असहयोग आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया और 1932 से 35 तक कारावास में रहे। यहां से छूटने पर 1935 से 38 तक काशी विद्यापीठ में व्याख्याता रहे और 1939 से 46 तक उत्तरप्रदेश विधानसभा के निर्वाचित सदस्य रहे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण 1942 से 44 तक पुनः जेल गये। 1944 में ही आप उत्तरप्रदेश में संसदीय सचिव नियुक्त किये गये। बाद में आपने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया और समाजवादी दल में शामिल हो गये। 1952 से 58 तक रेलवे चयन आयोग के उत्तर क्षेत्र के अध्यक्ष रहे तथा 1958 से 60 तक राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य रहे।1961 तक आप सर्वोदय आंदोलन में सक्रिय रहे तथा दिसम्बर 1971 से अगस्त 74 तक काशी विद्यापीठ के उपकुलपति पद पर कार्य किया। अगस्त 1974 से सितम्बर 76 तक गांधी अध्ययन संस्थान काशी के अवैतनिक कोषाध्यक्ष तथा प्रोफेसर रहे और 12 मई, 1977 से 8 अगस्त, 81 तक राजस्थान के राज्यपाल रहे।

रघुनन्दन खंडेलवाल— राजस्थान में फौजदारी मामलों के जाने-माने वकील श्री खंडेलवाल का जन्म 23 मई, 1937 को जयपुर जिले की दौसा तहसील के मानपुरिया ग्राम में हुआ। आपने बी.काम और एलएल.बी.तक शिक्षा प्राप्त कर जयपुर में वरिष्ठ वकील श्री जुगलकिशोर माथुर के सहयोगी के रूप में 1960 में वकालत प्रारंभ की। दिसम्बर 1974 में आप श्री माथुर से अलग हुए और अपना स्वयं का कार्यालय स्थापित किया। तब से अब तक आपने फौजदारी और भ्रष्टाचार-निरोधक सम्बन्धी अनेक देश और प्रदेश स्तर के बहुचर्चित और प्रतिष्ठा के मुकदमों में विजय प्राप्त की है। आप श्री खण्डेलवाल वैश्य शिक्षा समिति के, जो जयपुर में खण्डेलवाल महाविद्यालय, उच्च माध्यमिक विद्यालय, कन्या माध्यमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालय का संचालन करती है, दो बार सचिव रह चुके हैं। जयपुर अभिभाषक संघ की कार्यसमिति के भी आप दो बार सदस्य रहे हैं।

रघुनाथ परिहार— राजस्थान विधान सभा कांग्रेस (इ) दल के मुख्य सचेतक श्री रघुनाथ परिहार का जन्म चार जुलाई, 1934 को पाली जिले के मुंडारा ग्राम में हुआ। आप विधि-स्नातक हैं और 1961 से वकालत कर रहे हैं। इससे पूर्व 1953 से 61 तक आप भारतीय वायुसेना में दफ्तदार रहे। आप 1982 में बाली पंचायत समिति के प्रधान चुने गये। 1985 के विधान सभा चुनाव में आप कांग्रेस (इ) टिकिट पर बाली क्षेत्र से विजयी हुए। विधान सभा कांग्रेस (इ) दल के नेता श्री शिवचरण माथुर ने आपको 6 फरवरी, 1988 को सत्तारूढ दल का मुख्य सचेतक नियुक्त किया।

रघुनाथ विश्नोई—. राजस्थान के विधि एवं न्याय, संसदीय मामलात एवं निर्वाचन आदि विभागों के मंत्री श्री रघुनाथ विश्नोई का जन्म 15 मई, 1927 को जोधपुर जिले की फलौदी तहसील के भूआसर ग्राम में हुआ। आप विधि-स्नातक हैं तथा व्यवसाय से वकील हैं। आप जालौर केन्द्रीय सहकारी बैंक के अध्यक्ष, राजस्थान स्टेट को-आपरेटिव बैंक के उपाध्यक्ष तथा राजस्थान राज्य सहकारी भूमि-विकास बैंक के संचालक मंडल के सदस्य रह चुके हैं। आप प्रारंभ से ही कांग्रेस संगठन से जुड़े हुए हैं और 1962 से 1985 तक बीच में 1980 को छोड़कर सांचोर क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में निरन्तर चुने जाते रहे हैं।

श्री विश्नोई प्रथम बार श्री शिवचरण माथुर के मंत्रिमंडल में 6 फरवरी, 1988 को मंत्री नियुक्त गये। पूर्व में आपको चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग भी दिये गये थे जो 12 जून, 1989 तक आपके रहे।

रघुवीरसिंह (ब्रिगेडियर)— 1965 के भारत-पाक युद्ध में लाहौर के खेमकरण क्षेत्र में पाकिस्तानी टैंकों का कब्रिस्तान बनाकर भारतीय सेना के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय जोड़ने वाले श्री रघुवीरसिंह का जन्म सन 1923 में टोंक जिले के सोहा ग्राम में एक सामान्य राजपूत परिवार में हुआ। आपने जयपुर के मिशन हाईस्कूल में शिक्षा प्राप्त की और जयपुर की मान गार्ड में सैकिण्ड लेफ्टिनेन्ट के रूप में सेवा प्रारंभ की। बाद में मान गार्ड का भारतीय सेना में विलय होने पर आपकी सेवा भी स्थानांतरित हो गयी। अपने चौंतीस वर्ष के सैनिक जीवन में आपने कश्मीर, पाकिस्तान, कोरिया, और मिस्र आदि की अनेक लड़ाइयों में भाग लिया। संयुक्त राष्ट्रसंघ की सेना में प्रतिनियुक्ति के दौरान आपने नर्म्मा, इंगलेण्ड, हांगकांग, सिंगापुर, सोवियत रूस, आस्ट्रेलिया और अमरीका आदि विभिन्न देशों की यात्रा की। नक्सलवादी गतिविधियों पर नियंत्रण का जोखिम भरा कार्य भी आपने सिलीगुड़ी में मुख्यालय बनाकर अंजाम दिया। बांगलादेश के युद्ध के समय आप मिलिट्री पुलिस के निदेशक रहे और एक लाख पाक सैनिक बंदियों के बंदी शिविर में सार-संभाल का दायित्व निभाया। सैनिक जीवन से अवकाश ग्रहण करने के बाद आप जनता पार्टी में शामिल हुए और टोंक जिला जनता पार्टी के अध्यक्ष तथा सोंहा ग्राम पंचायत के सरपंच चुने गये।

रंगशायी रामकृष्णा— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राज्य के गृह विभाग के आयुक्त एवं शासन सचिव श्री आर. रामकृष्णा का जन्म 15 मार्च, 1934 को हुआ। आपने मद्रास विश्वविद्यालय से एम ए. (अर्थशास्त्र) तथा बी एल. (कानून) की उपाधि प्राप्त की। 1957 में आपका भा प्र. सेवा में चयन हुआ। आप जिलाधीश बीकानेर, डूंगरपुर, अलवर तथा जयपुर, शासन विशिष्ट सचिव वित्त, शासन सचिव वन एवं पर्यावरण, स्वायत्त शासन नगरीय-विकास एवं आवासन,ग्रामीण-विकास एवं पंचायतीराज तथा राज्य के विकास आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

श्री रामकृष्णा ने केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति पर वित्त और जहाजरानी मंत्रालयों में उपसचिव, कपड़ा, वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालयों में संयुक्त सचिव, भारतीय भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण के प्रबन्ध निदेशक तथा चतुर्थ एशियाड के अतिरिक्त महासचिव आदि पदों पर कार्य किया। आपने यूरोपीय आर्थिक आयोग (जेनेवा) में कार्य किया तथा 'अंकटाड' और 'गैट' के परामर्शदाता रहे। आप विश्व के अधिकांश देशों का भ्रमण कर चुके हैं।

रणजीतमल भंडारी— देश के जाने-माने वित्तिय प्रबन्धक तथा हिन्दुस्तान पैट्रोलियम कार्पोरेशन लि. के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री आर एम. भंडारी का जन्म 1925 में जोधपुर में हुआ। आप आगरा वि.वि के स्नातक हैं तथा 22 वर्ष की आयु में चार्टर्ड एकाउण्टेंट का पाठ्यक्रम किया। बाद में अमेरिका में अधिशासी नियंत्रण पाठ्यक्रम पूरा किया। 1947 में आपने नेशनल न्यूज प्रिंट एण्ड पेपर मिल्स में काम शुरू किया और 1955 से 75 तक भारत सरकार के हैवी इंजीनियरिंग कार्पोरेशन में वित्त एवं लेखा-नियंत्रक, कम्पनी मामलात विभाग में निदेशक (अन्वेषण एवं निरीक्षण), सार्वजनिक उपक्रम ब्यूरो में वित्तीय परामर्शदाता तथा वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलात विभाग में पूंजी इश्यूज के निदेशक एवं संयुक्त सचिव आदि पदों पर कार्य किया।

श्री भंडारी 1975 में भारतीय तेल निगम में वित्त निदेशक तथा अप्रैल 1977 में हिन्दुस्तान पैट्रोलियम कार्पोरेशन लि. के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक नियुक्त किये गये। दिसम्बर 1983 में सेवा-निवृत्ति के बाद आप एक मार्च, 1984 को कमानी इंजीनियरिंग कार्पोरेशन लि. के प्रबन्ध निदेशक बनाये गये। अपने कार्यकाल में आपने संयुक्त राष्ट्रसंघ के विभिन्न संगठनों को विभिन्न देशों के सार्वजनिक उपक्रमों के बारे में वित्तीय परामर्श प्रदान किया।

यतीन्द्रसिंह- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राज्य के वित्त आयुक्त एवं शासन सचिव श्री वाई. सिंह का जन्म 7 अक्टूबर, 1933 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव नगर में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में एम.एससी., गणित विषय में एम.एससी. का पूर्वार्द्ध तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन से विशारद की उपाधि प्राप्त की। 1957 में सेवा में चयन के बाद आप बूंदी और भीलवाड़ा में जिलाधीश, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर प्रतिरक्षा मंत्रालय में उपसचिव तथा भारतीय खाद्य निगम के राजस्थान क्षेत्रीय प्रबंधक, क्षेत्रीय विकास आयुक्त कोटा, कृषि, पशुपालन, सहकारिता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी सहित वित्त विभाग में 1979-80 में भी शासन सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

आर.एस. माथुर- केन्द्रीय सरकार के राजस्थान स्थित उपक्रम हिन्दुस्तान जिंक लि. के महाप्रबंधक (वित्त) श्री माथुर का जन्म 17 नवम्बर, 1931 को अलवर में हुआ। आपने राजर्षि कालेज अलवर से 1951 में बी.काम. तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से विधि-स्नातक की उपाधि के साथ ही एम.ए.एस., आर.ए.ई. तथा कास्ट एवं वर्क्स एकाउंटेंट की व्यावसायिक परीक्षायें भी उत्तीर्ण कीं। आपने 1951 में भारतीय आडिट एवं लेखा विभाग में तथा 1967 से 71 तक राजस्थान अणुशक्ति परियोजना में कार्य किया। वर्तमान प्रतिष्ठान में आप 1971 में वरिष्ठ लेखाधिकारी के पद पर आये तथा 1982 से मुख्य प्रबंधक (वित्त) के पद पर कार्य किया। महाप्रबंधक पद पर आपकी नियुक्ति जून 1988 में हुई।

रणजीतसिंह कूमट— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान आवासन मंडल में आवासन आयुक्त श्री आर.एस.कूमट का जन्म एक दिसम्बर, 1937 को अजमेर जिले के विजयनगर कस्बे में हुआ। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से 1959 में अर्थशास्त्र में एम.ए. किया और 1962 में भा.प्र. सेवा में चयन से पूर्व तीन वर्ष तक दिल्ली विश्वविद्यालय में व्याख्याता रहे। आप वाणिज्यिक कर विभाग में उपायुक्त एवं अतिरिक्त आयुक्त, गृह एवं आयोजना आदि विभागों में शासन उपसचिव, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के निदेशक, झालावाड़, अजमेर एवं जयपुर के जिलाधीश, सहकारिता विभाग में शासन विशिष्ट सचिव, चम्बल क्षेत्र विकास आयुक्त, कृषि-उत्पादन, विशिष्ट योजना, अन्त्योदय तथा शिक्षा आदि विभागों के शासन सचिव, राजस्थान सहकारी डेयरी फैडरेशन के प्रबन्ध निदेशक तथा राजस्थान राज्य कृषि-उद्योग निगम के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

श्री कूमट धार्मिक और समाज-सेवा कार्यों में प्रारंभ से ही सक्रिय रुचि रखने के कारण महावीर विकलांग समिति, महावीर इंटरनेशनल और महावीर स्वामी स्मारक समिति आदि कई शिक्षण और सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। आपके धार्मिक चिन्तन से सम्बद्ध हाल ही में प्रकाशित पुस्तक "मुझे दुख नहीं चाहिए" धार्मिक और बौद्धिक-जगत में काफी चर्चित रही है।

रत्नचन्द्र अग्रवाल— राजस्थान के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता और राज्य पुरातत्व विभाग के पूर्व निदेशक श्री अग्रवाल का जन्म 21 अगस्त, 1926 को हरियाणा के सढौरा ग्राम में हुआ। आपने काशी विश्वविद्यालय से भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के विषय में एम.ए. परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर दयाराम साहनी स्वर्णपदक प्राप्त किया। अपनी प्रतिभा और परिश्रम के कारण आपने प्राथमिक कक्षाओं से एम.ए. तक सभी कक्षाओं में शासन व विश्वविद्यालय से छात्र-वृत्ति प्राप्त की। आपने 1953-65 तक राज्य के पुरातत्व विभाग में अधीक्षक और तत्पश्चात् मार्च 1970 तक राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में पुरातत्व अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। अप्रैल 1970 से जून 1981 में सेवा-निवृत्ति तक पुरातत्व विभाग के निदेशक रहे। आपने राज्य के ध्वस्त नगरों, दबी हुई मुद्राओं, खंडित प्रतिमाओं, ताम्बे,

पीतल और मिट्टी के बर्तनों, तीर कमान और छतरियों, शिलालेखों, धरती के गर्भ में जमे लकडी से बने कोयलों, भग्न मंदिरों, जंगलों, पहाडियों और नदियों के किनारों से अवशेषों की खोज कर प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता और इतिहास को उजागर करने में अपना जीवन खपाया है। आपके तत्सम्बन्धी अनुसंधान व लेख, जिनकी संख्या सैकडों में है, देश-विदेश की अनेक शीर्ष पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

रतनलाल ताम्बी— भीलवाडा जिले के जहाजपुर क्षेत्र से 1980 और 1985 के आमचुनावों में निर्वाचित विधायक श्री रतनलाल ताम्बी का जन्म 27 दिसम्बर, 1936 को पण्डेर ग्राम में हुआ। बी.ए तक शिक्षित श्री ताम्बी प्रारम्भ से ही कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता रहे हैं। आप पंडेर ग्राम पंचायत के सरपंच और 1965 में जहाजपुर पंचायत समिति के प्रधान चुने गये। 1977 में आप प्रथम बार कांग्रेस टिकिट पर विधान सभा चुनाव में खडे हुए लेकिन सफल नहीं हो सके। 1980 में टिकिट नहीं मिलने पर आप निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में खडे हुए और भारी बहुमत से विजयी हुए। आप भीलवाडा जिला कांग्रेस कमेटी के महामन्त्री और उपाध्यक्ष, भीलवाडा सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के उपाध्यक्ष तथा राजस्थान राज्य सहकारी भूमि-विकास बैंक के संचालक मण्डल के सदस्य भी रह चुके हैं।

रतन शास्त्री (श्रीमती)— नारी शिक्षा की अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्था वनस्थली विद्यापीठ की अपने पति स्वर्गीय पं. हीरालाल शास्त्री के साथ सह-संस्थापिका श्रीमती रतन शास्त्री का जन्म सन् 1912 की नवरात्रि को मालवा के रतलाम नगर में हुआ। आपने विद्या-विनोदनी तक शिक्षा प्राप्त की और पं हीरालाल शास्त्री के साथ विवाह किया। अपनी स्वर्गीय पुत्री शान्ता बाई की स्मृति में टोंक जिले में निवाई कस्बे के निकट सन् 1929 की अक्षय तृतीया को मात्र चार बालिकाओं को लेकर एक विद्यालय की स्थापना की जो देश-विदेश में वनस्थली विद्यापीठ के नाम से विख्यात है और जिसे अब विश्वविद्यालय का दर्जा भी प्राप्त हो गया है। देश का शायद ही ऐसा कोई राष्ट्रीय नेता अथवा शिक्षा शास्त्री हो जो वनस्थली नहीं आया हो और जिसने प्रभावित होकर मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा न की हो। आप संस्था की वर्षों प्रधानमंत्री रही और अब उपाध्यक्ष हैं। आप राजस्थान की प्रथम महिला हैं जिन्हें भारत सरकार ने 1955 में पद्मश्री और 1975 में पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया है।

रतनसिंह सिंघी- भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में अलवर के जिला कलक्टर श्री आर.एस. सिंघी का जन्म 9 जनवरी, 1934 को जोधपुर में हुआ। आपने एम.ए. और एलएल.बी की उपाधि प्राप्त की तथा 1958 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये। आप पंचायत एवं विकास विभाग में उपायुक्त, कोटा में अतिरिक्त जिलाधीश, जयपुर दुग्ध वितरण योजना के महाप्रबंधक, रीको में प्रबंधक (कार्मिक) तथा दो बार मुख्यमंत्री के उपसचिव रहे। 1987 में भा.प्र. सेवा में पदोन्नति के बाद आपने बांसवाड़ा में जिला कलक्टर, शिक्षा विभाग में शासन उपसचिव तथा समाज-कल्याण विभाग के निदेशक पद पर कार्य किया।

रमनभाई जे. मजीठिया— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं ऊर्जा विभाग के शासन सचिव श्री आर.जे. मजीठिया का जन्म 21 जनवरी, 1924 को गुजरात राज्य के ताम-खंभोलिया नामक स्थान पर हुआ। आपने बी.काम. और एलएल. बी. किया तथा 1957 में सेवा में प्रवेश किया। आप जिलाधीश नागौर एवं सीकर, उपनिवेशन आयुक्त बीकानेर, भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर गोआ में पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष, राजस्थान राज्य दुग्ध-विकास निगम तथा राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के अध्यक्ष, खाद्य एवं नागरिक रसद, वन एवं पर्यावरण, खनिज, श्रम, चुनाव, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य आदि विभागों के शासन

सचिव, राजस्व मंडल के सदस्य तथा जयपुर के संभागीय आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं। आयुक्त के साथ ही आप राजस्थान सहकारी डेयरी फैडरेशन के भी अध्यक्ष रहे। आप अमेरिका, जापान, कोरिया, इंगलैण्ड तथा हांगकांग आदि देशों की यात्रा कर चुके हैं।

रमाकान्त अग्रवाल— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान भूमि-विकास निगम के प्रबंध निदेशक श्री आर.के. अग्रवाल का जन्म 12 मार्च, 1940 को दिल्ली में हुआ। 1964 में आपने सेवा में प्रवेश किया और जिलाधीश पाली, बांसवाडा और कोटा, नियोजन, सामुदायिक विकास एवं पंचायतीराज तथा अल्प बचत आदि विभागों के निदेशक, राज्य के अतिरिक्त मुख्य निर्वाचन अधिकारी, सदस्य राजस्व मंडल, विभागीय जांच आयुक्त तथा वर्तमान पद पर पूर्व में भी एक बार कार्य कर चुके हैं।

रमाकान्त शर्मा— भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री रमाकांत का जन्म एक फरवरी, 1930 को अलवर जिले के नारायणपुर ग्राम में एक संभ्रांत ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपने मैकेनिकल में बी.ई. किया तथा राज्य-सेवा में प्रवेश से पूर्व 1953–54 में रस्टर्न एण्ड हार्नस्बाय (इंडिया) लि. बम्बई में अभियन्ता तथा 1954–55 में इंडियन ह्यूम पाइप कंपनी लि. जयपुर में प्रबन्धक एवं अभियन्ता प्रभारी के रूप में कार्य किया। 1955 में आप जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में सहायक अभियन्ता नियुक्त हुए तथा 1960 से 63 तक अधिशासी अभियन्ता के रूप में कार्यकिया। 1957–58 में आप एक वर्ष के लिए प्रशिक्षण हेतु जर्मनी गये और वहां से लौटने पर सोडियम सल्फेट संयन्त्र डीडवाना के महा अधीक्षक बनाये गये।

श्री शर्मा का 1970 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ। आप जिलाधीश भीलवाडा, सवाईमाधोपुर और बीकानेर, दो बार प्रबन्ध निदेशक रीको, निदेशक भेड-ऊन विभाग, शासन विशिष्ट सचिव सहकारिता,सिंचित क्षेत्र-विकास, संस्थागत वित्त तथा जनसम्पर्क, जनजाति विकास आयुक्त तथा पदेन अध्यक्ष राजस्थान जनजाति क्षेत्रीय विकास सहकारी महासंघ तथा राजस्थान राज्य कृषि उद्योग निगम के प्रबंध निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं। 31 जनवरी, 1988 को सेवा-निवृत्ति के समय आप राज्य के कृषि-उत्पादन एवं सहकारिता विभाग के शासन सचिव तथा राजस्थान स्टेट को-आपरेटिव बैंक, राजस्थान राज्य भंडार व्यवस्था निगम तथा राजस्थान राज्य बीज निगम के पदेन अध्यक्ष थे। सेवा निवृत्ति के बाद आपने भारतीय जनता पार्टी के माध्यम से राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया है और अलवर जिले को अपना कार्य क्षेत्र बनाया है।

रमाकान्त सक्सेना— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान राज्य खनिज-विकास निगम के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री आर.के. सक्सेना का जन्म 24 दिसम्बर, 1932 को उत्तरप्रदेश के इटावा नगर में हुआ। आपने एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और 1955 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में चुने गये। आपने वित्त विभाग में विशेषाधिकारी तथा उपसचिव, जिलाधीश बीकानेर, अलवर और जयपुर, भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर कृषि और सिंचायी मंत्रालय में संयुक्त सचिव, राज्य के राजस्व, समाज कल्याण, नियोजन, तकनीकी शिक्षा, बीस सूत्री कार्यक्रम, संस्थागत वित्त, ग्रमीण-विकास एवं पंचायती राज विभागों के शासन सचिव तथा राजस्व मंडल के अध्यक्ष पद पर कार्य किया।

रमेश के. अरोडा (डा.)— राजस्थान विश्वविद्यालय में लोक-प्रशासन के प्राध्यापक एवं समाज विज्ञान अनुसंधान केन्द्र तथा स्कूल आफ सोशल साइंस के निदेशक श्री रमेश के. अरोड़ा का जन्म 28 नवम्बर, 1940 को लाहौर (पाकिस्तान) में हुआ। 1947 में भारत विभाजन के बाद आपके पिता, जयपुर

में ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकों की पहली दुकान मैसर्स उषा बुक एजेंसी के संस्थापक स्वर्गीय शांतिनाथ अरोड़ा, अपने परिवार के साथ जयपुर आ गये। अतः आपकी शिक्षा जयपुर में हुई। आपने बी काम.,एम.ए.,एम.पी.ए.,एम.फिल.तथा पीएच.डी. (केंसस, संयुक्त राज्य अमेरिका) किया।

डा. अरोड़ा 1967 से 75 तक राजस्थान विश्वविद्यालय में व्याख्याता रहे और 1975 से 80 तक हरिश्चन्द्र माथुर राजकीय लोक प्रशासन संस्थान जयपुर में प्राध्यापक रहे। आप भारतीय लोक-प्रशासन संस्थान तथा भारतीय प्रशिक्षण एवं विकास संस्थान की जयपुर शाखा के उपाध्यक्ष तथा सेन्टर फार एडमिनिस्ट्रेटिव चेंज के सचिव हैं। आपकी अब तक एक दर्जन से अधिक पुस्तकें तथा अनेक लेख देश-विदेश की पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इसी के साथ आप अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका ''एडमिनिस्ट्रेटिव चेंज'' के सम्पादक हैं। आप अमेरिका, ब्रिटेन, बेल्जियम, फ्रांस, इटली मलेशिया, सिंगापुर और ईरान आदि देशों का भ्रमण कर चुके हैं।

रमेशचन्द्र घीया— राजस्थान के प्रमुख समाज-सेवी, प्रमुख चार्टर्ड अकाउन्टेंट तथा जयपुर शहर जिला कांग्रेस (इ) कमेटी के अध्यक्ष श्री रमेश घीया का जन्म 16 अक्टूबर, 1932 को अजमेर जिले के नसीराबाद कस्बे में हुआ। आपने बी काम तथा सी ए.कलकत्ता में किया और प्रारंभिक वर्षों में वहीं प्रेक्टिस की। बड़ा बाजार युवक सभा कलकत्ता के आप उपाध्यक्ष रहे। 1962 में आप जयपुर में आये और अपनी मिलनसारिता तथा सेवा-भावना के कारण जन-जीवन में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया। आप पूर्व में जयपुर नगर युवक कांग्रेस अध्यक्ष, राजस्थान व्यापार-उद्योग मंडल की कार्यकारिणी के सदस्य टैक्स कंसल्टेंट्स एसोसियेशन जयपुर के उपाध्यक्ष तथा श्री खण्डेलवाल वैश्य शिक्षा समिति के अध्यक्ष रहे। इंस्टीट्यूट आफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स आफ इंडिया की मध्य क्षेत्र कौंसिल के भी आप अध्यक्ष रहे तथा डा मदनगोपाल सूंटेटा होम्योपैथी चैरिटेबल ट्रस्ट के आप वर्तमान में सचिव हैं। 1985 के विधान सभा चुनाव में आपने सांगानेर क्षेत्र से कांग्रेस (इ) प्रत्याशी के रूप में भाग लिया लेकिन सफल नहीं हो सके।

रमेशचन्द्र दवे— विद्युत अभियांत्रिकी के जाने-माने विशेषज्ञ तथा राजस्थान राज्य विद्युत मंडल के पूर्व अध्यक्ष श्री आर.सी. दवे का जन्म 12 दिसम्बर, 1927 को झालावाड़ जिले में हुआ। आपने बिड़ला इंजीनियरिंग कालेज पिलानी से विद्युत अभियांत्रिकी में स्नातकीय उपाधि प्राप्त की और 1950 में राज्य सरकार के तत्कालीन इलेक्ट्रिकल एण्ड मैकेनिकल विभाग में सहायक अभियंता के रूप में सेवा में प्रवेश किया। 1957 में राजस्थान राज्य विद्युत मंडल की स्थापना होने पर आपको अधिशासी अभियन्ता (निर्माण) के पद पर पदोन्नति हुई। 1964 में आप अधीक्षण अभियन्ता और 1976 में मुख्य अभियन्ता (परिचालन एवं संधारण) के रूप में पदोन्नत हुए। बाद में विद्युत मंडल के तकनीकी सदस्य और 11 अगस्त, 1982 को अध्यक्ष नियुक्त किये गये। श्री दुर्गासिंह के बाद आप ऐसे दूसरे तकनीकी व्यक्ति हैं जिन्हें मंडल का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। आपकी तकनीकी कुशलता, दक्षता और [illegible] को मान्यता स्वरूप राज्य सरकार ने 1985 और 1987 में [illegible] की। जून 1987 में आप उत्तर क्षेत्र विद्युत परिषद के अध्यक्ष भी चुने गये। [illegible] गंभीर विद्युत संकट को चुनौती के रूप में लिया और [illegible]।

रविप्रकाश नाग— राजस्थान प्रशासनिक सेवा के [illegible] वर्तमान में अजमेर में अतिरिक्त सम्भागीय आयुक्त श्री आर.पी. नाग का जन्म 15 जून 1937 को [illegible] के एक सम्भ्रान्त कायस्थ परिवार में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से इतिहास में एम ए. की उपाधि स्वर्ण पदक के साथ प्राप्त की तथा [illegible] वर्ष तक राजकीय महाविद्यालय [illegible] में व्याख्याता रहे। 1959 में आपका आर.ए.एस. में चयन हुआ और [illegible] तक [illegible] जिलाधीश टोंक, पाली [illegible] का [illegible] तथा उपायुक्त [illegible]

राजस्व आदि विभागों में शासन उप सचिव, राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड में कार्यकारी निदेशक तथ टोंक में अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) एवं पदेन परियोजना निदेशक के रूप में कार्य किया है।

श्री नाग अपने प्रशासनिक दायित्वों के निर्वहन के साथ ही राजस्थानी लोकगीतों के विख्यात गायक हैं। आकाशवाणी के विभिन्न समारोहों में लोकगीतों के प्रस्तुतीकरण के साथ ही आपने एच.एम.वी. के लिए रिकार्ड तैयार किये हैं। 1982 में "राजस्थानश्री" की मानद उपाधि प्राप्त करने के साथ ही आप दिल्ली स्थित प्रवासी राजस्थानियों की संस्था राजस्थान रत्नाकर द्वारा 1986 में सम्मानित हो चुके हैं

रवि माथुर— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में निदेशक उद्योग विभाग श्री रवि माथुर का जन्म बीस सितम्बर, 1954 को अजमेर में हुआ। 1979 में आपने सेवा में प्रवेश किया तथा अब तक अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) उदयपुर, जिलाधीश डूंगरपुर तथा निदेशक विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी तथा कंम्प्यूटर आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

रवीन्द्रनाथ चतुर्वेदी— राजस्थान प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान अनुसूचित जाति विकास निगम में महाप्रबन्धक श्री आर.एन. चतुर्वेदी का जन्म एक जनवरी, 1944 को उ० प्र० के फर्रुखाबाद जिले के तिखा ग्राम में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से लोक-प्रशासन में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। 1967 में आपने सेवा में प्रवेश किया और उपजिलाधीश कोटपूतली एवं आमेर, जिलाआबकारी अधिकारी अजमेर, जयपुर में अतिक्ति जिलाधीश (नगर) तथा जिलारसद अधिकारी ग्रामीण-विकास एवं पंचायतीराज विभाग में उपायुक्त, राजस्थान भूमि-विकास में मुख्य अधिकारी तथा भू-प्रबन्ध विभाग में भू-प्रबन्ध अधिकारी जयपुर तथा अतिरिक्त आयुक्त आदि पदों पर कार्य किया।

रश्मिकांत दुर्लभजी— जवाहरात के क्षेत्र में विख्यात प्रतिष्ठान मैसर्स आर.वाई.दुर्लभजी जयपुर के भागीदार श्री रश्मिकांत दुर्लभजी जाने-माने समाज-सेवी पद्मश्री खेलशंकर दुर्लभजी के पुत्र हैं। आपका जन्म बीस नवम्बर, 1936 को दिल्ली में हुआ। आप विधि स्नातक हैं तथा विश्व के अधिकांश देशों का भ्रमण कर चुके हैं। आपको निर्यात-प्रोत्साहन के लिए अनेक बार भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है। वर्तमान में आप अपने दादा-दादी की स्मृति में निर्मित सन्तोकबा दुर्लभजी अस्पताल की संचालन समिति के अध्यक्ष हैं।

राकेश वर्मा— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में वित्त विभाग में शासन उप सचिव (करारोपण) श्री राकेश वर्मा का जन्म तीस अगस्त, 1956 को हुआ। 1981 में आपका सेवा में चयन हुआ तथा आप उपजिलाधीश भीलवाड़ा, अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) जयपुर, निदेशक (प्रशासन) राजस्थान सहकारी डेमरी फैडरेशन जयपुर तथा जिला कलक्टर झुंझुनूं आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं। आप जयपुर जिला सहकारी भूमि-विकास बैंक के प्रशासक भी रहे हैं।

राकेश हूजा- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में क्षेत्रीय विकास आयुक्त बीकानेर श्री राकेश हूजा इसी सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री भूपेन्द्र हूजा और ख्यातिप्राप्त मूर्तिकार श्रीमती ऊषारानी हूजा के पुत्र हैं। आपका जन्म 24 नवम्बर, 1950 को लन्दन में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा सेंट जेवियर स्कूल जयपुर में और बाद में राजस्थान कालेज में हुई जहां से एम.ए. (राजनीतिशास्त्र) परीक्षा में स्वर्णपदक प्राप्त किया। आप 1974 में भा.प्र. सेवा में चयन से पूर्व दो वर्ष तक राज.विश्वविद्यालय में व्याख्याता रहे। सेवा में चयन के पश्चात भी आपका अध्ययन जारी रहा और आपने 1981 में मैसूर विश्वविद्यालय से "माइक्रो लेवल प्लानिंग" में स्नातकोत्तर

डिप्लोमा तथा 1986-87 में ब्रिटिश स्टेडी कौंसिल की फैलोशिप पर यूनिवर्सिटी आफ ईस्ट एंजिला के स्कूल आफ डवलपमेंट स्टेडीज से ग्रामीण-विकास योजना विषय में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम उत्तीर्ण किया।

श्री हूजा अन्य प्रारंभिक नियुक्तियों के बाद चम्बल क्षेत्र विकास परियोजना के अतिरिक्त आयुक्त, जिलाधीश सीकर, कृषि (विशिष्ट योजनायें) विभाग में शासन उपसचिव तथा विशिष्ट सचिव, निदेशक कृषि विपणन विभाग एवं पदेन प्रशासक राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड तथा शिक्षा विभाग में शासन विशिष्ट सचिव, जयपुर में जिला कलक्टर आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं। आपने जयपुर प्रोफाइल आफ वॉलिंग सिटी, डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग-कन्सेप्ट, सेटिंग एण्ड स्टेट लेवल एप्लीकेशंस और एडमिनिस्ट्रेटिव इंटरवेंशन इन रूरल डवलपमेंट आदि पुस्तकें भी लिखी हैं। राज्य सरकार ने गत वर्ष स्वाधीनता दिवस समारोह के अवसर पर आपको सम्मानित भी किया।

राघव प्रकाश(डा.)— राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी के निदेशक डा. राघव प्रकाश का जन्म आठ जुलाई, 1947 को जयपुर जिले की बस्सी तहसील के दीपपुरा ग्राम में हुआ। आपने राजस्थान वि.वि. से हिन्दी में एम.ए. की उपाधि स्वर्णपदक सहित प्राप्त की। बाद में पीएच.डी. कर 13 वर्षों तक विभिन्न राजकीय महाविद्यालयों में व्याख्याता एवं विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर रहे। आपकी शैली विज्ञान और पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्यशास्त्र, पाश्चात्य एवं भारतीय शैली विज्ञान, आलोचना-की-नयी तलाश, अन्त-का-नाटक तथा तीसरा मकान आदि कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।

राजकुमार काला— जयपुर शहर जिला कांग्रेस (इ) कमेटी के महामंत्री तथा राजधानी के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता श्री राजकुमार काला का जन्म 22 अगस्त, 1940 को जयपुर में हुआ। आपने अजमेर से समाजशास्त्र में एम.ए., विधि महाविद्यालय जयपुर से एलएल.बी. कर 1967 से वकालत का अपना पैतृक व्यवसाय प्रारंभ किया। वर्तमान में आप श्रमिक विवादों के जाने-माने वकील हैं।

श्री काला ने छठे दशक के मध्य में राजधानी की कांग्रेस गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना प्रारंभ किया और विभिन्न पदों पर कार्य करने के बाद 1981 से जयपुर शहर जिला कांग्रेस (इ) के महामंत्री पद पर कार्यरत हैं। इसके साथ ही आप जैन समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था राजस्थान जैन सभा जयपुर के दिसम्बर 1975 से अध्यक्ष, संगीता बाल निकेतन जयपुर के अध्यक्ष श्री महावीर दिगम्बर जैन विद्यालय, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र समिति श्री महावीरजी तथा श्री हिन्दु अनाथाश्रम जयपुर की कार्यकारिणी के सदस्य और थर्ड वर्ल्ड एसोसियेशन के पूर्व कोषाध्यक्ष और वर्तमान में सचिव हैं।

राजकुमार जयपाल (डा.)— अजमेर पूर्व (सु.) क्षेत्र से 1985 के चुनाव में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक डा. राजकुमार जयपाल श्री जसराज और श्रीमती भगवती देवी के पुत्र हैं जो दोनों क्रमशः 1967 और 1980 में क्रमशः सुखाडिया और पहाडिया की सरकारों में उपमंत्री रह चुके हैं। आपका जन्म दो अप्रैल, 1956 को ब्यावर में हुआ। आप एम.बी.बी.एस. और एम.एस. हैं और चिकित्सा व्यवसाय से संबद्ध हैं।

[illegible]

1936 को मेरठ (उत्तरप्रदेश) में हुआ। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से इतिहास में एम.ए. और एलएल.बी. किया। 1960 में आपका राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ। आप उपजिलाधीश भरतपुर, जिला रसद अधिकारी जयपुर, अतिरिक्त जिलाधीश मुद्रांक एवं पंजीयन जयपुर, उप विकास आयुक्त ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज, सचिव राजस्थान पंचायत समिति एवं जिला परिषद सेवा चयन आयोग तथा अतिरिक्त परिवहन आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

राजबहादुर— केन्द्रीय सरकार में जवाहरलाल नेहरू, श्री लालबहादुर शास्त्री और श्रीमती इन्दिरा गांधी के मन्त्रिमंडलों में विभिन्न मन्त्रालयों में वर्षों तक उपमंत्री, राज्यमंत्री और कैबिनेट मंत्री रहे श्री राजबहादुर का जन्म 21अगस्त, 1912 को भरतपुर में एक प्रतिष्ठित कायस्थ परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा भरतपुर, जयपुर और आगरा में हुई और आपने बी.एससी., एम.ए. तथा एलएल.बी. की उपाधियां प्राप्त की। व्यवसाय से आप वकील हैं।

श्री राजबहादुर ने छात्र जीवन में ही 1930 के सिविल अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया तथा 1939 में प्रजा परिषद् में शामिल हुए। 1939 से 42 तक भरतपुर राज्य की केन्द्रीय परामर्शदात्री समिति तथा 1941–42 में भरतपुर नगरपालिका के सदस्य रहे। 1942 के भारत छोड़ो आदोलन में भाग लेने के लिए आपने दोनों पदों से त्यागपत्र दे दिया और भूमिगत होकर कार्य किया। 1942 से 47 तक का अधिकांश समय दो बार जेलों में बीता। 1943 से 48 के दौरान तत्कालीन भरतपुर राज्य की विधान सभा के सदस्य तथा प्रजा परिषद के मंत्री रहे। 1948–49 में मत्स्य संघ कांग्रेस कमेटी.के महामंत्री, भरतपुर जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष तथा 1948 से 51 तक भरतपुर अभिभावक संघ के अध्यक्ष रहे। 1952 में प्रदेश कांग्रेस तथा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य बने। 1948 से 50 तक सविधान सभा, 1950 से 52 तक कार्यकारी ससद के सदस्य तथा संसदीय कांग्रेस दल के सचिव रहे। 1951 से 56 तक सचार उप मन्त्री रहे।

1952 के प्रथम आम चुनाव में आप भरतपुर क्षेत्र से लोकसभा का चुनाव हार गये लेकिन तत्काल बाद सवाई माधोपुर क्षेत्र से उप चुनाव में निर्वाचित हो गये। दिसम्बर 1956 से अप्रेल57 तक आप संचार राज्य मंत्री रहे। 1957 के आम चुनाव में भरतपुर से लोकसभा के लिए पुनः चुने गये तथा 57 से 62 तक नेहरू मंत्रिमंडल में संचार और परिवहन राज्यमंत्री रहे। 1962 में भी भरतपुर से पुनः चुने गये और 1962–63 में जहाजरानी, 1963 से 65 तक परिवहन तथा 1966–67 में सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री रहे। 1967 में आप अपने गृह क्षेत्र भरतपुर में पराजित हो गये लेकिन इस अवधि में 1968से 71 तक नेपाल में भारत के राजदूत रहे। 1971 के लोकसभा के मध्यावधि चुनाव में पुनः विजयी हुए और श्रीमती गांधी के मन्त्रिमंडल में पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन विभाग के कैबिनेट मंत्री नियुक्त किये गये। 1977 और 1980 के लोकसभा चुनावों में आप क्रमशः अविभाजित कांग्रेस और कांग्रेस (अर्स) के टिकिट पर खड़े हुए लेकिन दोनों बार ही विफल रहे। जून 1980 में कांग्रेस (अर्स) प्रत्याशी के रूप में भरतपुर क्षेत्र से प्रथम बार विधायक चुने गये। 1984 के लोकसभा चुनाव में भी आपने भाग्य तो आजमाया लेकिन सफलता नहीं मिली।

राजमल कासलीवाल (डा.)— नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के सहयोगी, सवाई मानसिंह मेडीकल कालेज के पूर्व प्रिंसीपल तथा चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के पूर्व निदेशक डा. आर.एम कासलीवाल का जन्म बीस नवम्बर, 1906 को टोंक जिले के देवली कस्बे में हुआ। आपने 1929 में लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.बी.बी.एस. किया तथा कुछ अर्से तक वहीं सेवा की। 1935 में आप भारतीय सेना में भर्ती हुए तथा लेफ्टिनेंट कर्नल के पद तक पहुंचे। द्वितीय विश्वयुद्ध में मलाया में आप युद्धबंदी बनाये गये। बाद में आजाद हिन्द फौज में डी.एम.एस.बनाये गये। आगरा मेडीकल कालेज में कार्यवाहक प्रधानाचार्य भी आप रहे तथा 1948 में तत्कालीन जयपुर रियासत की चिकित्सा सेवाओं के निदेशक नियुक्त हुए। राजस्थान निर्माण के बाद 1951 तक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य निदेशक रहे। लगभग 15 वर्षों तक मेडीकल कालेज के प्रधानाचार्य और डीन तथा बीस वर्षों तक मेडिसन के प्रोफेसर रहे। आपकी विशिष्ट सेवाओं के लिए आपको विदेशों की विभिन्न संस्थाओं से दर्जनों पदक, स्वर्णपदक और प्रशंसा पत्र प्राप्त हो चुके हैं। राज्य सेवा से अवकाश प्राप्त करने के बाद आपने 1962 में जयपुर क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर लोकसभा का चुनाव भी लड़ा लेकिन सफल नहीं हो सके।

राजमल संघी— राजस्थान के वरिष्ठ पत्रकार श्री राजमल संघी का जन्म सन् 1923 में जयपुर में हुआ। आपने राजनीति व इतिहास से एम.ए. तथा साहित्यरत्न परीक्षा उत्तीर्ण की और 1945 में जयपुर में पत्रकारिता में प्रवेश किया। ''लोकवाणी'' में दो वर्ष तक उप सम्पादक रहे तथा ''टाइम्स आफ इंडिया'', ''हिन्दुस्तान स्टेण्डर्ड'', ''इंडियन एक्सप्रेस'', ''अमृत बाजार पत्रिका'', ''बाम्बे क्रोनिकल'', ''स्क्रीन'' और ''हिन्दुस्थान समाचार'' के जयपुर में संवाददाता रहे। बाद में आप जयपुर में ''समाचार भारती'' के राजस्थान ब्यूरो के प्रमुख रहे तथा सातवें दशक के अन्त में महाप्रबन्धक पद से सेवा-निवृत्त हुए। आप राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के संस्थापक महामंत्री और अध्यक्ष भी रहे।

राजसिंह निर्वाण— राष्ट्रीय वस्त्र निगम (दिल्ली, पंजाब एवं राजस्थान) के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री राजसिंह निर्वाण राजस्थान के मूल निवासी हैं। आप प्रारंभ में राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी तथा छठे दशक में तत्कालीन गृह एवं वित्त मंत्री श्री मथुरादास माथुर के निजी सचिव रहे। बाद में आपने निजी क्षेत्र में श्री दिग्विजय सीमेंट कम्पनी में कार्य किया। जून 1987 में राष्ट्रीय वस्त्र निगम की सेवा में आने से पूर्व हिन्दुस्तान कापर लि. कलकत्ता में निदेशक (कार्मिक) तथा दरीबा स्थित शाखा के प्रबन्धक थे। जनवरी 1989 में वर्तमान नियुक्ति से पूर्व आप राष्ट्रीय वस्त्र निगम (मध्यप्रदेश) में ही अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक पद पर कार्यरत थे।

राजीव महर्षि— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में प्रतिनियुक्ति पर राष्ट्रपति सचिवालय में उपसचिव श्री राजीव महर्षि का जन्म आठ अगस्त 1955 को जयपुर में हुआ। 1978 में आपका सेवा में चयन हुआ और अब तक आप नगर दंडनायक अजमेर, गृह विभाग (सुरक्षा) तथा वित्त विभाग (आबकारी) में शासन उपसचिव, जिलाधीश बीकानेर तथा कृषि विभाग के निदेशक रह चुके हैं।

राजीवलोचन मिश्र— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर वस्त्र मंत्रालय के सचिव श्री आर एल मिश्र का जन्म 25 जनवरी,1936 को उत्तरप्रदेश में हुआ। 1958 में सेवा में चयन के बाद आप अजमेर के जिलाधीश, निदेशक उद्योग विभाग, रीको के प्रबन्ध निदेशक, वाशिंगटन स्थित भारतीय दूतावास में आर्थिक मामलों के सचिव, राज्य के उद्योग एवं राजकीय उपक्रम विभाग के शासन सचिव तथा केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर मुख्य नियंत्रक आयात-निर्यात रह चुके है।

राजीव शर्मा— भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में अजमेर के जिला कलक्टर श्री राजीव शर्मा का जन्म 9 जुलाई 1952 को उत्तरप्रदेश में हुआ। 1976 में आपका सेवा में चयन हुआ और अब तक आप उप जिलाधीश ब्यावर, उत्तरप्रदेश सरकार में प्रतिनियुक्ति पर, जालौर में जिला कलक्टर तथा राजस्थान राज्य पथ-परिवहन निगम के प्रबन्ध निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुके है।

राजेन्द्रकुमार अग्रवाल— राजस्थान लेखा सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के विशेष चयन में वर्तमान अधिकारी श्री आर के अग्रवाल का जन्म 7 अगस्त 1939 को जयपुर जिले के [illegible] कस्बे में हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर में हुई तथा [illegible] की उपाधि प्राप्त करने के साथ ही कम्पनी सचिव की [illegible] किया। 1963 में आप राजस्थान लेखा सेवा में चुने गये। वर्तमान में आप राजकीय उपक्रम विभाग में [illegible] पद पर कार्यरत है। [illegible] योजना के अन्तर्गत आप [illegible] में प्रशिक्षण भी प्राप्त कर चुके हैं।

राजेन्द्रकुमार जसोरिया— राजस्थान के प्रमुख पुस्तक-प्रकाशक एवं व्यवसायी श्री राजे जसोरिया का जन्म एक जनवरी, 1939 को भरतपुर में हुआ। आपने कामर्स कालेज जयपुर से बी.का किया। आप "राजस्थान प्रकाशन" नामक प्रतिष्ठान के स्वामी तथा त्रिपोलिया बाजार व्यापार संघ के म हैं। श्री खंडेलवाल वैश्य शिक्षा समिति के आप अध्यक्ष तथा राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ के संग मंत्री, वित्त मंत्री तथा महामंत्री और राजस्थान कापी मैन्यूफैक्चरर्स संघ के उपाध्यक्ष रह चुके हैं

राजेन्द्र चौधरी— राजस्थान के वक्फ एवं देवस्थान आदि विभागों के प्रभारी राज्य मंत्री राजेन्द्र चौधरी का जन्म 25अगस्त, 1955 को जोधपुर में हुआ। आपने बी.एससी., एम.ए. अं एलएल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की और छात्र जीवन से ही कांग्रेस की गतिविधियों में सक्रिय भाग लेना शु कर दिया। आप जोधपुर जिला युवक कांग्रेस के अध्यक्ष, जोधपुर-नागौर क्षेत्र के किसान प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रदेश युवक कांग्रेस के संगठन मंत्री और प्रदेश कांग्रेस (इ) के संयुक्त मंत्री भी रह चुके हैं। मार्च 1985 आप बिलाडा क्षेत्र से प्रथम बार विधायक चुने गये और 6 फरवरी, 1988 को माथुर मंत्रिमंडल में स्वाय शासन विभाग के प्रभारी तथा यातायात, आवासन एवं नगरीय विकास तथा नगर आयोजना विभाग राज्य मंत्री नियुक्त किये गये। वर्तमान विभाग आपको 12 जून, 1989 को दिये गये।

राजेन्द्र जैन— भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमा में राजस्थान सिविल-सेवा अपील अधिकरण के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जैन का जन्म पांच अक्टूबर, 193 को उत्तरप्रदेश के सहारनपुर नगर में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.एससी. (गणित परीक्षा सर्वोच्च अंकों से उत्तीर्ण की तथा प्रथम स्थान के साथ ही स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इसके साथ ही फ्रैंच भाषा में और लन्दन स्कूल आफ इकोनामिक्स से अर्थशास्त्र में डिप्लोमा पाठ्यक्रम किया। 1957 में आपका सेवा में चयन हुआ और आप बाड़मेर, कोटा और सवाई माधोपुर के जिलाधीश, शिक्षा विभाग में शासन उप सचिव, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर अतिरिक्त जिला दण्डनायक दिल्ली तथा रक्षा मंत्रालय में उप सचिव, खाद्य एवं राहत विभाग में शासन विशिष्ट सचिव, राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में सचिव, भू-प्रबन्धक आयुक्त, मरु-विकास आयुक्त जोधपुर तथा जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति रहे।

श्री जैन सिंचाई और सहकारिता आदि विभागों के दो-दो बार तथा कृषि-उत्पादन, सहायता, ऊर्जा, विशिष्ट योजनायें तथा बीस सूत्री कार्यक्रम आदि विभागों के शासन सचिव सहित राजस्थान राज्य सहकारी भूमि-विकास बैंक, राजस्थान स्टेट-को-आपरेटिव बैंक तथा राजस्थान राज्य बीज निगम के पदेन अध्यक्ष भी रह चुके हैं। वर्तमान पद-स्थापन से पूर्व आप इंदिरा गांधी नहर मंडल के अध्यक्ष एवं शासन सचिव पद पर कार्यरत थे।

राजेन्द्रप्रसाद जैन— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान राज्य विद्युत मंडल के सचिव श्री आर. पी. जैन यद्यपि चूरू जिले के सुजानगढ़ के मूल निवासी हैं लेकिन आपके परिजनों का असम में कारोबार होने के कारण आपका जन्म सात जुलाई, 1952 को गोहाटी में हुआ। गोहाटी विश्वविद्यालय से ही आपने एम.काम और एलएल.बी. किया। 1980 में आपने सेवा में प्रवेश किया तथा अब तक उप जिलाधीश रोहट, कोटा में क्षेत्र-विकास कमाण्ड परियोजना के अतिरिक्त आयुक्त तथा अतिरिक्त जिलाधीश (विकास), वित्त विभाग में शासन उपसचिव तथा जिला कलक्टर बाड़मेर के रूप में कार्य किया है। इस पद पर रहकर आपने बाड़मेर जिले में भीषण अकाल की स्थिति का जिस सूझबूझ, साहस और कठोर परिश्रम से सामना कर [illegible] उसके लिए राज्य सरकार ने 15 अगस्त, 1987 को आपको प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। आपने इसी दौरान "[illegible]" की भी रचना कर हजारों की जिस देश-विदेशी पर्यटकों ने भारी सराहना किया।

राजेन्द्रप्रसाद बटवाड़ा—युवा उद्यमी तथा प्रमुख समाज-सेवी श्री राजेन्द्र बटवाड़ा का जन्म 25 फरवरी, 1944 को अलवर में एक सामान्य खंडेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। आप सामाजिक कार्यों में प्रारंभ से ही सक्रिय रुचि लेते रहे हैं। वर्तमान में आप राजस्थान चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री के संयुक्त मंत्री, राजस्थान लघु उद्योग महासंघ तथा जयपुर नगर लघु उद्योग संघ के सचिव राजस्थान राज्य उत्पादकता परिषद की कार्यकारिणी तथा सेन्ट्रल एक्साइज की जयपुर जिला सलाहकार समिति के सदस्य, अखिल भारतीय खंडेलवाल वैश्य महासंघ के संयुक्त मंत्री तथा रोटरी क्लब जयपुर (पूर्व) के उपाध्यक्ष तथा आगामी सत्र के लिए निर्वाचित अध्यक्ष हैं।

राजेन्द्रप्रसाद सक्सेना—राजस्थान उच्च न्यायिक सेवा के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्व मंडल के सदस्य श्री आर.पी. सक्सेना का जन्म एक जून, 1936 को जयपुर में हुआ। आप बी.ए. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद जुलाई 1959 में राजस्थान न्यायिक सेवा में चुने गये। तीन अगस्त, 1967 को आपको सिविल जज, 12 मई, 1971 को वरिष्ठ सिविल जज 8 जून 1972 को अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा 22 अगस्त, 1975 को जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में पदोन्नति दी गई। वर्तमान पद-स्थापन से पूर्व आप अजमेर में जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा न्याय विभाग में संयुक्त विधि परामर्शी तथा निदेशक वादकरण के पद पर कार्यरत थे। आप छात्र जीवन में 1950 से 1958 तक महाराजा कालेज जयपुर के छात्र संघ के विविध पदों पर निर्वाचित हुए तथा 1957-58 में विश्वविद्यालय कालेज के सर्वोत्तम छात्र घोषित किये गये।

राजेन्द्रपालसिंह—भारतीय प्रशासनिक सेवा की [illegible] के अधिकारी तथा वर्तमान में अयुक्त विभागीय जांच श्री राजेन्द्रपालसिंह का जन्म 1 अक्टूबर 1931 को [illegible] में हुआ। आपने महाराजा कालेज से एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की और 1955 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में [illegible] गये। श्री हरिश्चन्द्र माथुर की अध्यक्षता में गठित राजस्थान प्रशासनिक सुधार समिति के सहायक सचिव के रूप में आपने उल्लेखनीय कार्य किया। 1976 में [illegible] और आपने पर्यटन विभाग के निदेशक, सामान्य प्रशासन विभाग में [illegible] सचिव, राजस्थान भंडार व्यवस्था निगम एवं राजस्थान लघु उद्योग निगम में [illegible] एवं पर्यटन विभाग के महानिरीक्षक, राजस्व मंडल के सदस्य [illegible] कला एवं संस्कृति विभाग के शासन सचिव आदि पदों पर कार्य किया।

राजेन्द्रशंकर भट्ट—विख्यात पत्रकार तथा राजस्थान [illegible] का जन्म 11 जून, 1921 को अजमेर में हुआ। [illegible] जुड़ गये। प्रारंभ में आप "राजस्थान" [illegible] सम्बद्ध रहे तथा "एसोसियेटेड न्यूज आफ इंडिया" [illegible] प्रतिनिधित्व किया। 28 सितम्बर 1946 को आप जयपुर [illegible] किये गये तथा राजस्थान का निर्माण [illegible] जनवरी 1955 को निदेशक बना दिये गये। [illegible] आप [illegible] निदेशक नियुक्त हुए। [illegible] स्थानान्तरित हुए तथा जुलाई 1974 से 30 जून 1975 [illegible] भाषा विभाग के निदेशक रहे।

[illegible]

एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में शामिल किया गया। भारत सरकार ने आपको पत्रकारिता के प्रतिमान (दो भाग) पुस्तक के लिये वर्ष 1984 का 'भारतेन्दु' पुरस्कार प्रदान किया तथा राजस्थान साहित्य अकादमी और उत्तर प्रदेश हिन्दी समिति भी आपको पुरस्कृत कर चुकी है।

राजेन्द्र शेखर—भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भ्रष्टाचार-निरोधक विभाग में महानिदेशक श्री राजेन्द्र शेखर का जन्म 7 अक्टूबर, 1934 को भरतपुर में हुआ। आपने एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की और 1957 में सेवा में चुने गये। अन्य विभिन्न पदों पर कार्यकरने के साथ ही आपने उप महानिरीक्षक केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (एस.पी.ई.), अतिरिक्त महानिरीक्षक पुलिस (प्रशासन राजस्थान), विशिष्ट महानिरीक्षक पुलिस (अपराध) तथा महानिदेशक गृह रक्षक दल के रूप में भी कार्य किया।

राजेश्वरप्रसाद तिवाड़ी—भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में श्रम आयुक्त तथा नियोजन विभाग के निदेशक एवं पदेन शासन विशिष्ट सचिव श्री आर.पी. तिवाड़ी का जन्म एक जून, 1935 को जयपुर में हुआ। आप पहले रा० प्र० सेवा में चुने गये और मुख्य रूप से अतिरिक्त जिलाधीश अलवर तथा सचिव, नगर-विकास न्यास जयपुर रहे। 1983 में आपकी भा० प्र० सेवा में पदोन्नति हुई और आपने जिलाधीश सिरोही तथा सीकर, निदेशक समाज-कल्याण विभाग तथा शासन उपसचिव विशिष्ट योजना संगठन आदि पदों पर कार्य किया।

राजेश पायलट—दौसा क्षेत्र के कांग्रेस (इ) सांसद तथा केन्द्रीय भूतल परिवहन राज्य मंत्री (प्रभारी) श्री राजेश पायलट का जन्म 10 फरवरी, 1945 को यद्यपि उ० प्र० के गाजियाबाद जिले के वैदपुरा ग्राम में हुआ लेकिन 1980 के लोकसभा चुनाव में भरतपुर क्षेत्र से तथा 1984 में दौसा क्षेत्र से चुने जाने के बाद राजस्थान और यहां के सार्वजनिक जीवन से आप का निकट का और जीवंत सम्पर्क बना हुआ है। आपने बी.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद भारतीय वायुसेना में प्रवेश किया और स्क्वाड्रन लीडर के पद तक पहुँचे लेकिन 1979 में श्रीमती गांधी की प्रेरणा से आपने त्यागपत्र देकर राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया।

राधा-रुक्मणि हल्दिया—भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला की अधिकारी तथा वर्तमान में प्रतिनियुक्ति पर भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय में निदेशक श्रीमती आर.आर. हल्दिया मद्रास के विख्यात कुमार मंगलम परिवार की पुत्री हैं जिनका जन्म 30 दिसम्बर, 1949 को बंगलौर में हुआ। आप 1974में भारतीय प्रशासनिक सेवा में चुनी गई और राजस्थान के श्री गजेन्द्रनाथ हल्दिया के साथ विवाह सूत्र में बंध जाने से राजस्थान सरकार की सेवा में आ गई। आप जयपुर की उपजिलाधीश, उद्योग विभाग में शासन उप सचिव, जिलाधीश टोंक तथा निदेशक महिला कार्यक्रम आदि पदों पर कार्यकर चुकी हैं।

राधेश्याम अग्रवाल—जयपुर के प्रसिद्ध एल.एम.बी. होटल एवं लक्ष्मी मिष्ठान भण्डार के भागीदार श्री राधेश्याम अग्रवाल का जन्म 9 सितम्बर, 1944 को जयपुर में हुआ। आप अनेक व्यावसायिक और सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं तथा राज्य सरकार के पर्यटन सलाहकार मंडल के सदस्य रह चुके हैं।

राधेश्याम डंगायच- भारतीय जीवन बीमा निगम की टोंक शाखा में वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्री आर.एस. डंगायच का जन्म तीन अप्रैल,1937 को जयपुर जिले के बिचूण ग्राम में एक सामान्य खंडेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से बी.काम. तथा एलएल.बी. की

उपाधि प्राप्त कर प्रारंभ में एक निजी व्यावसायिक प्रतिष्ठान में कार्य किया। 1958 में निगम की सेवा में सहायक के रूप में प्रवेश किया। 1961 में आपकी जयपुर में विकास अधिकारी तथा 1972 में चण्डीगढ़ में सहायक शाखा प्रबंधक पद पर पदोन्नति हुई। वर्तमान पदस्थापना से पूर्व आप उदयपुर, कोटा और झालावाड़ में शाखा व्यवस्थापक तथा वरिष्ठ शाखा व्यवस्थापक के पद पर कार्य कर चुके हैं। लायंस क्लब कोटा और झालावाड़ की समाजसेवा सम्बंधी गतिविधियों में आपने सक्रिय भाग लिया है।

राधेश्याम दुसाद—जयपुर के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता तथा पत्रकार श्री राधेश्याम दुसाद का जन्म 30 नवम्बर, 1944 को जयपुर जिले के चौप ग्राम में एक सामान्य खण्डेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। आप प्रारम्भ से ही सामाजिक कार्यों में सक्रिय रुचि लेते रहे हैं। आप जयपुर सहकारी क्रय विक्रय समिति लि० जयपुर के निदेशक मंडल के 6 वर्ष तक तथा जयपुर कृषि-उपज मंडी समिति (अनाज) के निदेशक मंडल के चार वर्ष तक सदस्य रहे। शास्त्री नगर विकास समिति जयपुर के आप उपाध्यक्ष रह चुके हैं। वर्तमान में आप "इकोनामिक टाइम्स" के प्रादेशिक वाणिज्य संवाददाता हैं।

राधेश्याम राजोरिया—राजस्थान प्रशासनिक सेवा की चयन श्रेणी के अधिकारी तथा वर्तमान में वाणिज्यिक कर विभाग जयपुर में उपायुक्त (प्रशासन) श्री राधेश्याम राजोरिया का जन्म एक नवम्बर, 1938 को जयपुर जिले के मानपुर (सिकराय) ग्राम में एक सामान्य खण्डेलवाल परिवार में हुआ। आपने जयपुर से एम.काम. और एलएल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की। 1962 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन के बाद आप क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी उदयपुर, वाणिज्य कर अधिकारी (निरोधक) जयपुर, महाप्रबन्धक राजस्थान पर्यटन विकास निगम, अतिरिक्त जिलाधीश (प्रशासन) जयपुर, [illegible] परिषद जयपुर, विशिष्ट सहायक ऊर्जा एवं सार्वजनिक निर्माण मंत्री, जयपुर-विकास प्राधिकरण में अतिरिक्त सचिव तथा महाप्रबन्धक (योजना) एवं [illegible] निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

राधेश्याम रावत—राजस्थान खाद्य-पदार्थ व्यापार संघ के [illegible] 1924 को टोंक जिले के [illegible] ग्राम में हुआ। [illegible] उपाधि प्राप्त की तथा जयपुर में अपना व्यापार शुरू किया। आप राजस्थान खाद्य पदार्थ व्यापार संघ के संस्थापकों में हैं और 1964 से 1974 तक इसके मंत्री तथा 1975 से अध्यक्ष हैं। [illegible] जयपुर मंडल की रेल उपयोगकर्ता सलाहकार समिति, राजस्थान [illegible] परिमंडल की राजस्थान डाक सलाहकार समिति, राजस्थान उपभोक्ता संरक्षण समिति तथा [illegible] उपभोक्ता संरक्षण समिति के सदस्य हैं।

राधेश्याम डा० मुरारका—1952 से 62 तक [illegible] पर [illegible] सदस्य रहे श्री आर. आर. मुरारका का जन्म 1924 में [illegible] में हुआ। [illegible] विश्वविद्यालय के [illegible] शोषण एवं शोषण-हीन के स्वामलम्बन [illegible] है। 1942 के [illegible] आन्दोलन में [illegible] भागीदारी के साथ अपने राजनीति में प्रवेश किया। 1952 से 62 तक [illegible] संसद में [illegible] [illegible] सदस्य के रूप में जो कार्य किया उसकी सराहना करते हुए [illegible] मुरारका ने जो उन्नत समाज और सम्बन्ध का कार्य [illegible] है [illegible] के सम्पादक रहे हैं और उन्होंने [illegible] है।

श्री मुरारका ने 1967 में झुन्झुनूं से कांग्रेस और 1971 में सीकर से भारतीय क्रांति द
टिकिट पर पुन: लोकसभा का चुनाव लडा लेकिन दोनों बार विफल रहे। बाद में 1978 से 84 तक उ
पार्टी की ओर से राज्य सभा सदस्य रहे। आप देश के जाने-माने उद्योगपति हैं और अनेक प्रति
कंपनियों के पदाधिकारी हैं।

रामकृष्ण नायर—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी
वर्तमान में प्रतिनियुक्त पर भारत सरकार में कार्यरत-श्री आर.के. नायर विख्यात इतिहासकार
राजनयिक श्री के.एम. पणिक्कर के दौहित्र हैं आपका जन्म एक मई, 1945 को बंगलौर में हुआ। 19
में आपका सेवा में चयन हुआ। और आप जयपुर नगर-विकास न्यास के सचिव, नागौर, जालौर, भरत
और भीलवाडा के जिलाधीश, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर अणुशक्ति आयोग बम्बई में पहले उपसचिव
बाद में निदेशक, मरु-विकास आयुक्त जोधपुर, रजिस्ट्रार स्टाम्प्स एवं पंजीयन, आबकारी आयु
सदस्य राजस्व मंडल, क्षेत्र विकास आयुक्त इंदिरा गांधी नहर परियोजना तथा बीकानेर के संभाग
आयुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

रामकृष्ण बजाज— देश के प्रमुख उद्योगपति तथा बजाज उद्योग समूह से संबद्ध श्री रामकृ
बजाज राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के भामाशाह सेठ जमनालाल बजाज के पुत्र हैं। आपका जन्म 2
सितम्बर, 1923 को वर्धा में हुआ। आपने स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। वर्तमान
आप अनेक प्रमुख उद्योगों के अध्यक्ष, संचालक मंडलों के सदस्य तथा औद्योगिक, व्यावसायिक
साहित्यिक संस्थाओं के पदाधिकारी हैं।

रामकल्याण गुप्ता (एडवोकेट)—सिविल मामलों के ख्याति प्राप्त वकील तथा जयपुर बा
एसोसियेशन के पूर्व अध्यक्ष श्री गुप्ता का जन्म चार अगस्त, 1926 को जयपुर जिले के भूला ग्राम
सामान्य खंडेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। आपने जयपुर में अध्ययन किया और एम.काम., एलएल.बी
तथा साहित्यरत्न आदि परीक्षाएं उत्तीर्ण की। 1949 में आपने जयपुर में वकालत प्रारंभ की।

रामकिशन वर्मा—राजस्थान के परिवहन, मोटर गैरेज तथा राजकीय उपक्रम आदि विभागों के
मन्त्री श्री रामकिशन वर्मा का जन्म 24 अगस्त, 1941 को कोटा में हुआ। आपने बी.काम., एलएल.बी.
तक शिक्षा प्राप्त की है। आप 1970 से 73 तक कोटा नगर परिषद् के सदस्य तथा कोटा नगर-सुधार
न्यास के सदस्य रहे। कोटा जिला कांग्रेस के आप महामन्त्री भी रहे। 1980 के विधानसभा चुनाव में आप
प्रथम बार कांग्रेस टिकिट पर लाडपुरा क्षेत्र से विजयी हुए।

श्री वर्मा 9 फरवरी, 1981 से पहाड़िया मंत्रिमंडल में और 1 जुलाई, 1982 से माथुर मंत्रिमंडल
में भेड व ऊन, खेलकूद, तथा मत्स्य विभाग के प्रभारी राज्य मंत्री रहे। 1985 के चुनाव में पुन: लाडपुरा
क्षेत्र से ही विधायक बनने पर हरिदेव जोशी मंत्रिमंडल में आप 16 अक्टूबर, 1985 को शामिल किये
गये। 8 अगस्त, 1986 को आपको मुद्रण एवं लेखन सामग्री तथा आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग का
स्वतन्त्र कार्यभार सौंपा गया। बाद में तीन जनवरी, 1987 को आप स्वास्थ्य, परिवार और आयुर्वेद विभाग
के प्रभारी राज्य मंत्री बनाये गये। शिवचरण माथुर मंत्रिमंडल में आप 6 फरवरी, 1988 को कैबिनेट मंत्री के
रूप में शामिल किये गये और आप को नगरीय-विकास एवं आवासन, नगर-आयोजना, परिवहन तथा
मोटर गैरेज आदि विभागों का दायित्व दिया गया।

रामकिशन (शर्मा)—राजस्थान के पूर्व विधायक और पूर्व [illegible] का जन्म 14
मई, 1925 को भरतपुर जिले के [illegible] ग्राम में हुआ। [illegible]
भरतपुर [illegible]

भरतपुर के मंत्री तथा चार वर्ष तक अध्यक्ष रहे। 1948 में समाजवादी दल के सदस्य बने। दो बार दल की प्रादेशिक शाखा के अध्यक्ष तथा 1960 से 64 तक अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य रहे। 1962 और 67 के आम चुनावों में वैर क्षेत्र से संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के टिकिट पर विधायक चुने गये तथा विधायक दल के नेता रहे। 1965 में भरतपुर के जिला प्रमुख चुने गये। 1972 के विधान सभा चुनाव में आप पराजित हो गये लेकिन 1974 में भरतपुर क्षेत्र से जनता पार्टी के टिकिट पर लोकसभा सदस्य चुने गये। 1980 के लोकसभा और विधानसभा, दोनों चुनावों में आप भरतपुर क्षेत्र से तथा 1985 के विधानसभा चुनाव में बयाना क्षेत्र से पराजित हो गये।

रामकुमार मीणा—सवाईमाधोपुर (सुरक्षित) क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य श्री मीणा की आयु 55 वर्ष है। आपकी शिक्षा साधारण है तथा व्यवसाय से कृषक हैं। आप प्रारम्भ में सपोटरा (सुरक्षित) क्षेत्र से 1967 में भारतीय जनसंघ तथा 1972 में कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में विधायक चुने गये। 1977 के विधान सभा चुनाव में आप इसी क्षेत्र से पराजित हो गये। 1980 और 1984 के लोकसभा चुनाव में आप सवाईमाधोपुर (सुरक्षित) क्षेत्र से कांग्रेस दल के टिकिट पर लोकसभा सदस्य चुने गये।

रामकुमारसिंह—भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राज्य बीमा विभाग के निदेशक श्री रामकुमारसिंह का जन्म 13 मई, 1936 को सीकर जिले के गोयरा-मूकरान ग्राम में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया तथा कुछ अर्से तक राजकीय महाविद्यालय किशनगढ़ में व्याख्याता रहे। 1959 में आपका राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ और 1973 में वरिष्ठ वेतन श्रृंखला तथा 1980 में चयनित वेतन श्रृंखला में पदोन्नति हुई। आप समाज-कल्याण विभाग में उप निदेशक, श्रीगंगानगर तथा जयपुर में अतिरिक्त जिलाधीश (प्रशासन), जयपुर में ही राजस्व अपील अधिकारी तथा दिसम्बर 1988 में भा० प्र० सेवा में पदोन्नति से पूर्व भी आप इसी विभाग में निदेशक रह चुके हैं। वर्तमान पदस्थापना से पूर्व आप जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग में शासन उपसचिव रहे।

रामगोपाल विजयवर्गीय— अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार पद्मश्री रामगोपाल विजयवर्गीय का जन्म नवम्बर 1906 में जयपुर जिले के बालेर ग्राम में हुआ। आपकी यद्यपि कोई औपचारिक शिक्षा तो नहीं हुई लेकिन आप हिन्दी, संस्कृत, उर्दू और फारसी के अच्छे ज्ञाता हैं तथा हिन्दी के श्रेष्ठ कवि और लेखक भी हैं। आपका सबसे पहला चित्र आज से लगभग 50 वर्ष पूर्व उस समय के सर्वाधिक प्रतिष्ठित अंग्रेजी मासिक "मॉडर्न रिव्यू" में प्रकाशित हुआ। इसके बाद "विशाल भारत", "चांद", "माधुरी", "प्रवासी", "हंस", "वसुमति", "साप्ताहिक हिन्दुस्तान" और "धर्मयुग" आदि विभिन्न पत्रिकाओं में वर्षों तक आपके चित्र निरन्तर प्रकाशित हुए। आपके ढेरों चित्र आज भी जयपुर, बनारस, बड़ौदा तथा इलाहाबाद के अजायबघरों में सुरक्षित हैं।

कला के क्षेत्र में "विजयवर्गीय स्कूल" की अपनी अलग पहिचान है जिससे दीक्षित होकर निकले लगभग चार-पांच हजार कलाकार देश के विभिन्न भागों में अपनी रोटी-रोजी कमाने के साथ-साथ कला की समृद्धि में योग दे रहे हैं। आपके चित्रों की प्रदर्शनियां लाहौर, कलकत्ता, बम्बई और दिल्ली आदि नगरों में लगी हैं जिनकी कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर, कमला नेहरू और सर तेजबहादुर सप्रू जैसी हस्तियां प्रशंसा कर चुकी हैं। आपके चित्र कलकत्ता की फाइन आर्ट इन्स्टीट्यूट, कलकत्ता की ही आर्ट अकादमी तथा राजस्थान ललित कला अकादमी से पुरस्कृत हो चुके हैं। आपकी एक दर्जन से अधिक कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।

रामगोपाल शर्मा (डा०)— नेत्र रोग विशेषज्ञ एवं जयपुर स्थित सवाई मानसिंह मेडीकल कालेज एवं संबद्ध चिकित्सालय में नेत्र विभाग के आचार्य डा० आर.जी. शर्मा का जन्म फरवरी, 1932 को नागौर में एक पुष्करणा ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपने वर्ष 1956 एम.बी.बी.एस. और 1964 में एम.एस. परीक्षा उत्तीर्ण की। 1967 में व्याख्याता पद पर चयन से आप सी.ए.एस. रहे। 1974 में उपाचार्य और 1977 में आचार्य के रूप में आप पदोन्नत हुए। आप अखिल भारतीय नेत्र चिकित्सा सोसायटी और राजस्थान नेत्र सोसायटी के आजीवन सदस्य हैं और राजस्थान नेत्र सोसायटी की पत्रिका के चार वर्षों तक प्रधान सम्पादक रह चुके हैं। अन्धापन निवारण लिए बनी राज्य सरकार की सलाहकार समिति के भी आप सदस्य हैं।

रामगोपाल सिसोदिया— सवाईमाधोपुर जिले के खण्डार (सु.) क्षेत्र से 1985 के चुनाव कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री रामगोपाल सिसोदिया 1972 के चुनाव में भी इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। आपका जन्म 6 मार्च, 1920 को भगवतगढ़ ग्राम में हुआ और आपने मिडिल तक शिक्षा प्राप्त की। आपने 1941 से 47 तक स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लिया। आपने 1977 में भी इसी क्षेत्र से चुनाव लडा लेकिन सफल नहीं हुए। आप सवाईमाधोपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

रामचन्द्र चौधरी— राजस्थान में सुखाडिया और बरकतुल्ला खां सरकारों में विभिन्न विभागों के वर्षों तक मंत्री रहे तथा लोक-सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री रामचन्द्र चौधरी का जन्म 21 जुलाई, 1912 को गंगानगर जिले में हुआ। बी.ए. और एलएल.बी. करने के बाद आप तत्कालीन बीकानेर रियासत में मुसिफ तथा प्रथम श्रेणी दण्डनायक नियुक्त हुए। 1948 में आपने जिला एवं सत्र न्यायाधीश पद से स्वेच्छा से त्यागपत्र देकर वकालत शुरू की और बीकानेर राज्य प्रजा परिषद् की सदस्यता ग्रहण की। 1952 में आप कांग्रेस टिकिट पर शादूलगढ़ क्षेत्र से विधायक चुने गये और 1956 में सुखाड़िया मन्त्रिमंडल में सार्वजनिक निर्माण मंत्री बनाये गये। 1954 में आप कांग्रेस के प्रदेश निर्वाचनाधिकारी रहे। 1957 के आम चुनाव में आप हार गये लेकिन 1958 में हुए उपचुनाव में आप हनुमानगढ़ से पुनः विधायक चुन लिये गये। छठे दशक के अन्त में आप राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य नियुक्त किये गये। बाद में आप अध्यक्ष बने लेकिन त्यागपत्र देकर 1972 में पुनः हनुमानगढ़ क्षेत्र से विधायक चुने गये और बरकतुल्ला खां मन्त्रिमंडल में राजस्व मंत्री रहे।

रामचन्द्र जाट— राजस्थान विधान सभा के पूर्व उपाध्यक्ष तथा वर्तमान में भीलवाड़ा जिले के बनेडा क्षेत्र के जनता पार्टी विधायक श्री रामचन्द्र जाट का जन्म सात जून, 1929 को उदयपुर में हुआ। श्री जाट विधि-स्नातक हैं तथा व्यवसाय से वकील हैं। 1977 में आप सहाड़ा क्षेत्र से विधायक चुने गये और जनता सरकार के दौरान आठ सितम्बर, 1977 को विधान सभा के उपाध्यक्ष बनाये गये थे। 1980 में आप इस क्षेत्र में श्री रामपाल उपाध्याय के मुकाबले पराजित हो गये। आप 1974 में भीलवाड़ा अभिभावक संघ के अध्यक्ष रहे। आपने स्वतंत्रता से पूर्व अखिल मेवाड़ जाट सभा और अखिल मेवाड़ किसान सभा का गठन किया था। इन दिनों जाट समाज-सेवा नामक संस्था के माध्यम से भीलवाड़ा में छात्रावास का निर्माण करा रहे हैं। आप जाट समाज में कुरीतियों के उन्मूलन और जागृति का प्रसार करने में सक्रिय कार्य कर रहे हैं।

रामजीवण मीणा— भारतीय पुलिस सेवा की चयन काल श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जयपुर नगर के पुलिस अधीक्षक श्री रामजीवण मीणा का जन्म एक अक्टूबर, 1947 को जयपुर जिले के बांदीकुई कस्बे में हुआ। 1974 में आप सेवा में चयनित हुए तथा अब तक बाड़मेर, भरतपुर, झुंझुनूं और

नागौर के जिला पुलिस उपाधीक्षक, पुलिस मुख्यालय में विशेषाधिकारी तथा सी.आई.डी. (सुरक्षा) में पुलिस उपाधीक्षक आदि पदों पर कार्य कर चुके है।

रामजीवण मीणा— राजस्थान प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में ग्रामीण-विकास एवं पंचायतीराज विभाग में उपायुक्त श्री रामजीवण मीणा का जन्म दस अक्टूबर, 1949 को जयपुर जिले के बगरू कस्बे में हुआ। आपने अर्थशास्त्र में एम ए किया तथा1972 में सेवा में चयनित हुए। 1981 में आपकी वरिष्ठ वेतन श्रृंखला तथा 1986 में चयन वेतन श्रृंखला में पदोन्नति हुई। आप मुख्य रूप से वाणिज्यिक कर अधिकारी सिरोही, जिला आबकारी अधिकारी जयपुर प्रर्वाता सहायक आयुक्त खाद्य एवं नागरिक रसद, अतिरिक्त जिलाधीश (भूमिरूपांतरण) जयपुर, भू-प्रबन्ध अधिकारी जयपुर तथा भरतपुर अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) सवाईमाधोपुर तथा जयपुर विकास प्राधिकरण में उपायुक्त (कच्चीबस्ती) आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

रामदास सौंकिया— राजधानी के प्रमुख जवाहरात व्यवसायी, समाज-सेवी तथा ज्वैलर्स एसोसियेशन जयपुर के अध्यक्ष श्री रामदास सौकिया का जन्म दस अगस्त, 1942 को जयपुर में एक प्रतिष्ठित खंडेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। शिक्षा-समाप्ति के बाद आपने जवाहरात के अपने पैतृक व्यवसाय में प्रवेश किया तथा समुद्रों पार तक इसे पहुंचाया। आप उद्योग और व्यवसाय से सम्बद्ध सात-आठ कंपनियों के अध्यक्ष तथा निदेशक मंडलों के सदस्य है।

ज्वैलर्स एसोसियेशन की गतिविधियों से आप प्रारंभ से ही सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं तथा वर्षों से कार्यकारिणी सदस्य, कोषाध्यक्ष और मंत्री रहने के बाद आजकल अध्यक्ष हैं। आप अखिल भारतीय खंडेलवाल वैश्य महासभा के वर्षों तक कोषाध्यक्ष और सहकारी मंत्री तथा जयपुर की श्री खंडेलवाल वैश्य शिक्षा समिति के तीन वर्षों तक अध्यक्ष रहे जो राजधानी में एक डिग्री कालेज सहित अनेक शिक्षण संस्थाओं का संचालन करती है।

रामदेव चौधरी— नागौर जिले के मूंडवा क्षेत्र से 1985 के आम चुनाव में लोकदल के टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री रामदेव 1977 के चुनाव में इसी क्षेत्र से कांग्रेस के टिकिट पर चुने गये थे। आपका जन्म माघ शुक्ला चतुर्थी सम्वत् 1988 को बारां गांव में हुआ। आप मिडिल तक शिक्षित हैं तथा कृषि और व्यापार आपका धन्धा है। आप 1957 से बारां ग्राम पंचायत के सरपंच चले आ रहे हैं।

रामदेवसिंह महरिया— राजस्थान के वरिष्ठ कांग्रेस विधायक तथा पूर्व सहकारिता, पशुपालन एवं कृषि मंत्री श्री रामदेवसिंह का जन्म सीकर जिले के कूदन ग्राम में सन् 1927 में हुआ। आपने बी.काम. और एलएल बी. करने के बाद 1949 में सीकर में वकालत प्रारंभ की। 1954 में आप तहसील पंचायत सीकर के सरपंच निर्वाचित हुए और 1957 में प्रथम बार कांग्रेस टिकिट पर सिंगरावट क्षेत्र से विधायक चुने गये। 1962 के चुनाव में पुनः सिंगरावट से तथा 1967 में सीकर क्षेत्र से विधायक चुने गये। 1972 में आप सीकर क्षेत्र से विधान सभा के चुनाव में पराजित हुए और 1977, 80 और 85 के चुनाव में धोद क्षेत्र से निरन्तर विजयी होते रहे हैं। 1959 में आप सीकर के जिला प्रमुख चुने गये तथा चार सितम्बर,1967 से आठ जुलाई, 1971 तक सुखाडिया मंत्रिमंडल में वित्त, खाद्य, कृषि एवं सहकारिता आदि विभागों के उपमंत्री रहे। 1972 से 77 तक आप राजस्थान राज्य सहकारी गृह-निर्माण वित्त दात्री समिति के अध्यक्ष रहे तथा 1972 से ही सीकर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। 1978 से 80 तक प्रदेश कांग्रेस (इ) के मंत्री रहे। जून 1981 में पहाडिया सरकार ने आपको राजस्थान राज्य सहकारी भूमि-विकास बैंक का अध्यक्ष मनोनीत किया। ग्यारह मार्च, 1985 से बीस जनवरी, 1988 तक आप हरिदेव जोशी मन्त्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री रहे।

रामनाथ आनन्दीलाल पोद्दार (डा.)— विख्यात उद्योगपति और समाजसेवी तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से डाक्टर आफ लॉ (मानद) की उपाधि प्राप्त श्री पोद्दार का जन्म 21 जनवरी, 1910 को नवलगढ़ में हुआ। 17 वर्ष की आयु में पारिवारिक व्यवसाय में प्रविष्ट होने वाले श्री पोद्दार प्रसिद्ध पोद्दार उद्योग समूह से संबद्ध रहे हैं। आपको राजस्थान चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री (1950-52), राजस्थान वित्त निगम (1955-68), डवलपमेंट काउन्सिल आफ सिल्क एण्ड आर्ट (1955-59), एक्सपोर्ट क्रेडिट एण्ड गारन्टी कार्पोरेशन (1962-64) इत्यादि संस्थाओं के प्रथम अध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त है। इसके साथ ही आप स्टेट बैंक आफ इण्डिया के निदेशक (1955-67), बाम्बे मिल ओनर्स एसोसियेशन के अध्यक्ष (1957-58/1960-61), फिक्की के अध्यक्ष (1969-70) तथा औद्योगिक सुरक्षा परिषद् के अध्यक्ष (1969-73) पद पर भी कार्य कर चुके हैं। आप बम्बई, आगरा तथा राजस्थान विश्वविद्यालय में सीनेट के सदस्य भी रह चुके हैं। आप आनन्दीलाल पोद्दार चैरिटेबल सोसाइटी के अध्यक्ष हैं जो रामनाथ आनन्दीलाल पोद्दार इन्स्टीट्यूट आफ मैनेजमेन्ट सहित अनेक शैक्षणिक संस्थानों से संबद्ध है। खेल, धर्म तथा राजनीति आपके रुचिकर विषय हैं। आप बम्बई विधानसभा (1946-52) तथा राज्यसभा (1952-54) के भी सदस्य रह चुके हैं। आप सम्पूर्ण विश्व का भ्रमण कर चुके हैं।

रामनारायण चतुर्वेदी (डा०)—राजस्थान के प्रमुख संस्कृत विद्वान तथा राज्य संस्कृत शिक्षा विभाग के अवकाश प्राप्त निदेशक डा० रामनारायण चतुर्वेदी वैदिक साहित्य के जाने-माने विद्वान हैं जिनका जन्म जयपुर में सन् 1931 में हुआ। आपने वाराणसी संस्कृत विद्यालय से वेदाचार्य और दरभंगा से पूर्व मीमांसाचार्य की उपाधि प्राप्त की। वाराणसी में शास्त्री परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर आप स्वर्णपदक से सम्मानित हुए। संस्कृत के अध्ययन और अध्यापन को ही अपने जीवन का प्रमुख उद्देश्य मानने वाले डा० चतुर्वेदी 1957 से 1965 तक महाराजा संस्कृत कालेज जयपुर में और बाद में जोधपुर संस्कृत कालेज के प्राचार्य रहे। आपकी विद्वतता के कारण विभिन्न संस्थाओं ने आपको भागवतालंकरण, महामहोपदेशक तथा पुराण वाचस्पति आदि उपाधियों से विभूषित किया है।

रामनारायण चौधरी—राजस्थान के पूर्व मंत्री तथा प्रदेश कांग्रेस (इ) के पूर्व अध्यक्ष श्री रामनारायण चौधरी का जन्म 22 फरवरी, 1928 को झुंझुनूं जिले के हेमतसर ग्राम में हुआ। आपने इंटरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त की है। आप 1949 में विद्यार्थी भवन सोसायटी के संचालक, 1951 से 57 तक झुंझुनूं जिला बोर्ड के सदस्य, 1953 से 56 तक जिला भारत सेवक समाज के संयोजक तथा 1961 से 67 तक झुंझुनूं पंचायत समिति के प्रधान रहे। आपने अलसीसर में पिछड़ी जातियों के छात्रों के लिए नेहरू छात्रावास की स्थापना की। आप 1952 से 63 तक झुंझुनूं जिला कांग्रेस कमेटी के महामन्त्री रहे तथा बाद में अध्यक्ष चुने गये। 1967 में आप प्रथम बार मंडावा क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये और नवम्बर 1971 से 19 मार्च, 1972 तक विधान सभा के उपाध्यक्ष रहे। 1972 में आप पुनः मंडावा से विधायक चुने गये और 12 नवम्बर, 1973 को श्री हरिदेव जोशी के मन्त्रिमण्डल में सहकारिता, स्वायत्त शासन, नगर आयोजन, पंचायतीराज, जेल और मुद्रण एवं लेखन सामग्री आदि विभागों के मन्त्री नियुक्त किये गये। 1977 के चुनाव में आप कांग्रेस टिकिट पर मण्डावा क्षेत्र से पुनः चुने गये और जनता सरकार के दौरान विधान सभा में कांग्रेस (इ) दल और विपक्ष के नेता रहे। 1980 में आप चुनाव हार गये और कुछ अर्से बाद प्रदेश कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष मनोनीत किये गये। 1982 में आपको राजस्थान आवासन मण्डल का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। 1983 में आप मण्डावा क्षेत्र के उप चुनाव में पुनः विधायक चुन लिए गये और आवासन मण्डल से त्याग पत्र दे दिया। 1985 के चुनाव में आप दलीय टिकिट प्राप्त करने में विफल रहे ।

रामनारायण बैरवा—भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में उपमहानिरीक्षक (पुलिस मुख्यालय) श्री रामनारायण बैरवा का जन्म 11 नवम्बर, 1932 को टोंक में हुआ। आपका 1962 में सेवा में चयन हुआ तथा आप उदयपुर और जयपुर के जिला पुलिस अधीक्षक, सी.आई.डी. में अधीक्षक, दो बार अजमेर और एक बार उदयपुर रेंज के उप महानिरीक्षक, निदेशक राज्य पुलिस वायरलैस तथा जयपुर-विकास प्राधिकरण में मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं प्रवर्तन निदेशक रह चुके हैं।

रामनारायण मीणा—भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के प्रबंध निदेशक श्री आर.एन. मीणा का जन्म जयपुर जिले की जमुआरामगढ़ तहसील के लांगडियावास ग्राम में 10 अगस्त 1954 को हुआ। 1977 में आपने सेवा में प्रवेश किया और उपजिलाधीश हनुमानगढ़, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार, सिंचाई एवं ऊर्जा आदि विभागों के शासन उपसचिव, झालावाड़, बीकानेर एवं अजमेर के जिला कलेक्टर आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

रामनिवास मिर्धा—केन्द्रीय कपड़ा मन्त्री श्री रामनिवास मिर्धा का जन्म 24 अगस्त 1924 को नागौर जिले के कुचेरा ग्राम में श्री बल्देवराम मिर्धा के यहाँ हुआ। आपने एम.ए. और एलएल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की है। प्रारम्भ में आप राज्य सेवा में रहे लेकिन 1953 में त्यागपत्र देकर [illegible] क्षेत्र में उपचुनाव में कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुन लिये गये। नवम्बर 1954 में सुखाड़िया सरकार बनने पर आप प्रथम बार कृषि, सिंचाई एवं यातायात मन्त्री बनाये गये। 1957 में आप लाडनूं क्षेत्र से पुनः विधायक बनने के साथ ही 25 मार्च, 1957 को विधानसभा के अध्यक्ष चुने गये। 1962 के चुनाव में तीसरी बार नागौर क्षेत्र से विधायक बने और विधानसभाध्यक्ष पद पर 2 मई 1967 तक निरन्तर कार्य करते रहे। 1967 के चुनाव में आप लाडनूं क्षेत्र से पराजित हो गये लेकिन कुछ महीनों के बाद ही राज्यसभा के सदस्य चुन लिये गये। 1972 से 1974 तक आप श्रीमती इन्दिरा गांधी के मन्त्रिमण्डल में गृह राज्य मन्त्री रहे तथा कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग का कार्य किया। 1974-75 में [illegible] उत्पादन और 1975 से 1977 तक रसद और पुनर्वास मन्त्रालयों में राज्य मन्त्री रहे। 1977 से 1980 तक केन्द्र में जनता सरकार के दौरान आप राज्य सभा के उपसभापति रहे।

1984 में आप विदेश राज्य मन्त्री 1985 में राजीव गांधी मन्त्रिमण्डल के [illegible] राज्य मन्त्री और कैबिनेट मंत्री बनने से पूर्व कपड़ा राज्य मन्त्री के रूप में [illegible] थे। 14 फरवरी 1988 को आपको कैबिनेट मन्त्री का दर्जा प्रदान किया गया। वर्तमान में आप [illegible] मंत्री का कार्य भी देख रहे हैं।

श्री मिर्धा भारतीय यूथ होस्टल्स एसोसियेशन के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। राजस्थान [illegible] अकादमी के आप पूर्व में भी अध्यक्ष थे और वर्तमान में भी हैं। आपने 1968 में [illegible] और 1972 में म्यूनिख में आयोजित ओलंपिक खेलों तथा 1974 में तेहरान में हुए [illegible] में [illegible] के रूप में भाग लिया।

रामप्रसाद लड्ढा—राजस्थान के पूर्व राजस्व [illegible] और [illegible] मंत्री श्री रामप्रसाद लड्ढा का जन्म सन् 1917 में भीलवाड़ा जिले के [illegible] में हुआ। आपने [illegible] के बाद 1942 में भीलवाड़ा में वकालत प्रारम्भ की। 1950 से 1954 तक आप [illegible] के अध्यक्ष रहे। 1957 में आपने भीलवाड़ा क्षेत्र से [illegible] नहीं हो सके। 1962 में कांग्रेस टिकट पर [illegible] क्षेत्र से विधायक चुने गये और 12 [illegible] 1962 को सुखाड़िया मन्त्रिमण्डल में [illegible] बनाये गये। 30 [illegible] 1966 को आपको कैबिनेट मंत्री के रूप में [illegible]। 1967 में आप

भीलवाड़ा क्षेत्र से विधायक चुने गये तथा चार सितम्बर, 1967 से 8 जुलाई, 71 तक राजस्व, सिंचाई और यातायात आदि विभागों के मंत्री रहे। 1972 में आपको दलीय टिकिट नहीं दिया गया। 1977 में आपने कांग्रेस टिकिट पर भीलवाड़ा क्षेत्र से लोकसभा का चुनाव लड़ा लेकिन सफल नहीं हो सके। आप कई बार भीलवाड़ा केन्द्रीय सहकारी बैंक के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

रामपाल उपाध्याय—राजस्थान में पहाड़िया, माथुर और जोशी मन्त्रिमण्डलों में क्रमशः उपमन्त्री, राज्य मन्त्री और कैबिनेट मन्त्री रहे श्री रामपाल उपाध्याय का जन्म 24 जुलाई, 1934 को भीलवाड़ा जिले के रेवाड़ा ग्राम में हुआ। आपने साहित्यरत्न और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. परीक्षा सर्वाधिक अंकों से उत्तीर्ण की। आप प्रारम्भ से ही राजनीतिक, शैक्षणिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय रुचि लेते रहे हैं। आप सहाड़ा नगरपालिका के सदस्य, सहाड़ा पंचायत समिति के प्रधान, गंगापुर सहकारी क्रय-विक्रय समिति के अध्यक्ष तथा भीलवाड़ा जिला सहकारी भूमि विकास बैंक के संचालक मण्डल के सदस्य रहे। भीलवाड़ा जिला कांग्रेस कमेटी के विभिन्न पदों पर रहे और 10 वर्ष तक आप इसके अध्यक्ष रहे।

1980 के चुनाव में आप सहाड़ा क्षेत्र से राज्य में सर्वाधिक बहुमत से विधायक चुने गये। पहाड़िया मन्त्रिमण्डल में आप 18 जून, 1980 से 13 जुलाई, 1981 तक उपमन्त्री तथा माथुर मन्त्रिमण्डल में 14 जुलाई 1981 से 1983 तक राज्य मन्त्री रहे। इसके बाद आप 11 मार्च 1985 को जोशी मन्त्रिमण्डल में कैबिनेट मंत्री के रूप में शामिल किए गए। 3 सितम्बर, 1986 को आपने त्यागपत्र दे दिया।

राममोहन (जैन)—भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी [illegible] वर्तमान में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के निदेशक श्री राममोहन का जन्म 22 [illegible] 1935 को भरतपुर में हुआ। आपने बी.एससी. [illegible] [illegible] किया। [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हरियाणा में हिसार जिले के खावडा ग्राम में हुआ। आपने बी ए. की उपाधि प्राप्त की और 1960 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये। आप उप जिलाधीश नीम-का-थाना, अतिरिक्त जिलाधीश सीकर, रजिस्ट्रार राजस्थान हेल्थ-पैथी बोर्ड, वाणिज्यिक कर अधिकारी भरतपुर उपायुक्त (प्रशासन तथा अपील) वाणिज्यिक कर विभाग, उपायुक्त पंचायतीराज विभाग, वित एवं राजस्व विभाग में शासन उपसचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

रामस्वरूप गुप्ता—भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान ऊर्जा-विकास एजेंसी (रेडा) के मुख्य अधिशासी एवं निदेशक श्री आर एस गुप्ता का जन्म 22 मई, 1935 को भरतपुर जिले के कामां कस्बे में हुआ। आपने महाराजा कालेज जयपुर से एम काम. की उपाधि प्राप्त की तथा 1955 में राज्य की सांख्यिकी सेवा में प्रवेश किया। 1961 में आप सांख्यिकी अधिकारी बने तथा धीरे-धीरे संयुक्त निदेशक तथा विशिष्ट योजना संगठन में परियोजना निदेशक पद तक पहुंचे। 1978 में आपने लन्दन विश्वविद्यालय से तीन माह का स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम किया। आपने ग्रामीण-विकास पर एशिया और प्रशांत देशों के बांगलादेश स्थित केन्द्रीय संस्थान की ओर से नेपाल में आयोजित राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

श्री गुप्ता का 1978 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में विशेष चयन हुआ और वर्तमान पद-स्थापन से पूर्व आपने मुख्यमन्त्री के उपसचिव तथा प्रधान निजी सचिव और खाद्य एवं रसद विभाग में अतिरिक्त आयुक्त के रूप में कार्य किया।

रामसिंह (चौहान)—भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी तथा राजस्थान लोक-सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री रामसिंह का जन्म 11 सितम्बर, 1918 को बांसवाड़ा जिले के गढी ग्राम में हुआ। जून 1945 में आप राज्य-सेवा में आये और रियासतों के विलीनीकरण के बाद पूर्व में राजस्थान प्रशासनिक सेवा और 1957 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नत किये गये। आप समाज-कल्याण विभाग के निदेशक, चूरू और जयपुर के जिलाधीश, सामुदायिक विकास एवं पंचायत विभाग में संयुक्त आयुक्त अधिकारी प्रशिक्षण विद्यालय के प्राचार्य, कार्मिक विभाग के विशिष्ट सचिव तथा गृह विभाग के आयुक्त एवं शासन सचिव रहे। राज्य सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद सितम्बर 1976 में आप राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य नियुक्त किये गये जहाँ से 10 सितम्बर, 1980 को आप अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए।

रामसिंह यादव—अलवर क्षेत्र के कांग्रेस (इ) सांसद श्री रामसिंह यादव का जन्म 30 जुलाई 1928 को कौशलपुरा ग्राम में हुआ। एम.ए., एलएल.बी. तक शिक्षा ग्रहण करने के बाद आपने वकालत प्रारम्भ की। 1972 में प्रथम बार मंडावर क्षेत्र से कांग्रेस दल के टिकिट पर विधायक चुने जाने के बाद आप 25 मार्च, 1972 से 30 अप्रेल, 77 तक विधान सभा के उपाध्यक्ष रहे। 1977 में आप इसी क्षेत्र से चुनाव हार गये लेकिन जनवरी 1980 में हुए लोकसभा चुनाव में अलवर क्षेत्र से विजयी हो गये। दिसम्बर 1984 में आप पुनः इसी क्षेत्र से कांग्रेस (इ) प्रत्याशी के रूप में लोकसभा के लिए चुने गये हैं।

इससे पूर्व श्री यादव 1959 से 65 तक किशनगढ़ पंचायत समिति के प्रधान, 1971 से 75 तक खैरथल कृषि-उपज मंडी समिति के उपाध्यक्ष तथा अलवर केन्द्रीय सहकारी बैंक के अध्यक्ष रहे।

रामसिंह विश्नोई—राजस्थान के सहकारिता राज्यमंत्री (प्रभारी) श्री रामसिंह विश्नोई का जन्म 20 अक्टूबर, 1935 को जोधपुर जिले की बिलाड़ा तहसील के तिलवासिनी ग्राम में हुआ। आप विधि स्नातक हैं। 1958 से 63 तक आप तिलवासिनी ग्राम पंचायत के सरपंच तथा 1963 से 72 तक बिलाड़ा पंचायत समिति के प्रधान रहे। बिलाड़ा सहकारी भूमि विकास बैंक के आप अध्यक्ष तथा राजस्थान

राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक के संचालक मंडल के सदस्य भी रहे। 1972 से 85 तक चारों चुनावों में आप लूणी क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर निरन्तर विधायक चुने जाते रहे हैं। 1985 के चुनाव में तो आप प्रदेश में सर्वाधिक बहुमत से विजयी हुए हैं। जून 1981 से 84 तक आप राजस्थान राज्य सहकारी डेयरी फैडरेशन लि० जयपुर के अध्यक्ष रहे। आप जोशी मन्त्रिमंडल में 16 अक्टूबर, 1985 को राज्य मंत्री के रूप में शामिल किये गये और पशुपालन, दुग्ध-विकास, भेड़-ऊन तथा मत्स्य आदि विभागों का स्वतन्त्र रूप से दायित्व संभाला। सात फरवरी, 1986 को आप मंत्री पद से त्याग पत्र देकर सरकार से अलग हो गये। 8 जून, 1989 को आप वर्तमान माथुर सरकार में राज्यमंत्री नियुक्त किये गये।

रामानन्द तिवारी ''भारतीनंदन'' (डा.)- प्रसिद्ध कवि और दार्शनिक डा. तिवारी का जन्म 3 अगस्त, 1919 को उत्तर प्रदेश के एटा जिले के सौरो तीर्थस्थल में हुआ। आपने एम.ए., डी.फिल., पीएच.डी.और दर्शनशास्त्री की उपाधियां प्राप्त की। आपका सर्वाधिक चर्चित महाकाव्य ''पार्वती'' है जिसका सृजन 1955 में हुआ। इसके अलावा सत्यम् शिवम् सुन्दरम् (1963), काव्य का स्वरूप (1968), हमारी जीवंत संस्कृति (1959) तथा साहित्यकला (1969) में प्रकाशित हुए। आपको राजस्थान साहित्य अकादमी ने ''मनीषी'' और विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित करने के साथ ही मीरा पुरस्कार प्रदान किया है। इसके बाद आप डालमिया पुरस्कार, केन्द्रीय साहित्य अकादमी तथा उत्तर प्रदेश सरकार से भी पुरस्कृत हो चुके हैं। वर्तमान में आप महारानी श्री जया कालेज भरतपुर से दर्शन विभाग के अध्यक्ष पद से सेवा-निवृत्ति के बाद भरतपुर में अवकाश प्राप्त जीवन बिता रहे हैं।

रामेश्वर अग्रवाल—खादी-जगत के जाने-माने कार्यकर्ता श्री रामेश्वर अग्रवाल का जन्म सीकर जिले के रींगस कस्बे में हुआ। आपने सन् 1928 में ही चर्खा संघ में खादी का कार्य शुरू किया। 1933 में स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने के कारण 9 माह तक अजमेर जेल बंद रहे। 1945 में राजपूताना उद्योग के नाम से ऊनी खादी का कार्य शुरु किया। 1948 से 59 तक आप राजस्थान खादी संघ के मंत्री रहे। 1957 में राजस्थान खादी संस्था संघ की स्थापना की। 1958 से 60 तक अ० भा० खादी समिति के अध्यक्ष रहे।

रामेश्वरदयाल यादव—जयपुर जिले के चौमूं क्षेत्र से 1985 के चुनाव में लोकदल के टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री रामेश्वरदयाल यादव 1977 के चुनाव में भी जनता पार्टी के टिकिट पर इसी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। आप 1972 और 1980 में भी इसी क्षेत्र से भाग्य आजमा चुके हैं लेकिन दोनों बार असफल रहे। श्री यादव का जन्म एक जुलाई, 1944 को कानडपुरा ग्राम में एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ। आप विधि स्नातक हैं तथा व्यवसाय से कृषक और वकील हैं। आप हस्तेड़ा ग्राम सेवा सहकारी समिति के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

रामेश्वरनाथ गौड़—भारतीय पुलिस सेवा की चयन वेतन शृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सी.आई.डी. (अपराध शाखा) में पुलिस अधीक्षक श्री आर.एन. गौड़ का जन्म एक अक्टूबर, 1936 को जयपुर जिले के भादीकुई कस्बे में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया और प्रारम्भ में डेढ़ वर्ष तक शाहजहांपुर और तुंगा के राजकीय विद्यालयों में वरिष्ठ शिक्षक रहे। 1958 में आपका राजस्थान पुलिस सेवा में चयन हुआ और आप डीग तथा सामरलेक में उप अधीक्षक और जयपुर नगर में अतिरिक्त अधीक्षक रहे। 1977 में भारतीय पुलिस सेवा में आपकी पदोन्नति हुई। आप अब तक सीकर जिले के दो बार तथा नागौर, जोधपुर, भरतपुर, पाली, सवाईमाधोपुर, चूरू और जयपुर नगर के पुलिस अधीक्षक, पुलिस ट्रेनिंग स्कूल जोधपुर के प्राचार्य तथा गुप्तचर पुलिस की विशेष और अपराध शाखाओं के अधीक्षक रह चुके हैं।

रामेश्वरप्रसाद खूंटेटा— भारतीय जीवन बीमा निगम को राजस्थान में सबसे पहले 1974 में एक करोड रुपये से अधिक का व्यवसाय देकर "करोडपति विकास अधिकारी" बनने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले श्री रामेश्वरप्रसाद खूंटेटा का जन्म 26 जून, 1937 को जयपुर जिले के चौमूं कस्बे में एक प्रतिष्ठित खंडेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। शिक्षा समाप्ति के बाद प्रारंभ में आपने चौमूं में ही व्यापार किया लेकिन छठे दशक के प्रारंभ में जयपुर आ गये और दो अप्रेल, 1962 से जीवन-बीमा निगम में कार्यरत किया। अपनी मिलनसारिता, व्यावहारिक कुशलता और कार्य के प्रति निष्ठा के कारण आपने 1974 से जयपुर मंडल कार्यालय (द्वितीय) में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना रखा है। आपके नेतृत्व में आपके सहकर्मी अभिकर्ताओं द्वारा वर्ष-प्रति-वर्ष बीमित किये जाने वाले व्यक्तियों और बीमित राशि में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। वित्त वर्ष 1988–89 में 4 करोड 13 लाख रुपये का व्यवसाय देकर आपने नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

रामेश्वरलाल तोषनीवाल— राजस्थान के जाने-माने उद्योगपति और बांसवाड़ा सिंटेक्स लि० के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री आर.एल. तोषनीवाल का जन्म नवम्बर 1933 में हुआ। आपने बम्बई से बी.एससी. तथा लीड्स (इंगलैण्ड) से वस्त्र निर्माण तकनीक में एम.एससी. किया। प्रारंभ में बिड़ला समूह के टैक्समाको लि० कलकत्ता में तथा बाद में इसी समूह के भवानीमंडी स्थित राजस्थान टैक्सटाइल मिल्स तथा चेनाब टैक्सटाइल मिल्स कठुआ में परियोजना प्रबन्धक के रूप में कार्य किया। 1964 में आप कानोड़िया समूह की किशनगढ़ स्थित आदित्य मिल्स लि० में मुख्य कार्यकारी नियुक्त हुए। बाद में आपको इसी समूह की अन्य मिलों का परामर्शदाता भी बनाया गया। आपने किशनगढ़ में पावरलूमों की स्थापना में पहल की जहां आज इनका जाल बिछ गया है और हजारों लोगों को रोजगार मिला हुआ है। बाद में आप ओ.सी.एम. (इंडिया) लि. के मुख्य कार्यकारी बनाये गये। आप रीको के साथ संयुक्त क्षेत्र में सफल उद्योग लगाने वाले प्रथम उद्योगपति हैं।

रामेश्वरसिंह— भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री सिंह का जन्म 31 जुलाई, 1929 में झुन्झुनूं जिले के भौजासर ग्राम में हुआ। आपने चमडिया कालेज फतहपुर से इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण की जिसमें तत्कालीन राजपूताना विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। इसके बाद बिड़ला कालेज पिलानी से बी.ए. तथा महाराजा कालेज जयपुर से एम.ए. किया जिनमें दोनों में सर्वोच्च अंक प्राप्त होने पर स्वर्णपदकों से सम्मानित किये गये। 1955 में प्रथम श्रेणी में कानून की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1955 में ही आप राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चुने गये और 1977 में आपको भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति दी गई। आपने जिलाधीश बांसवाडा तथा सवाईमाधोपुर, राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में सचिव तथा भू-प्रबन्ध आयुक्त आदि पदों पर कार्य किया। शेखावटी के अमर शहीद करणीराम के जीवन पर आपकी पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है।

रावत सारस्वत— राजस्थानी भाषा और साहित्य के विकास के लिए समर्पित मूर्धन्य विद्वान् श्री रावत सारस्वत का जन्म सन् 1922 में चूरू में हुआ। आपने एम.ए. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त की तथा 1941 से 44 तक राजस्थानी पांडुलिपियों का सूची पत्र तैयार कर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त "अनूप संस्कृत पुस्तकालय" बीकानेर को भेंट किया। पांचवें दशक के प्रारम्भ में आप जयपुर आ गये और 1950 से 53 तक साप्ताहिक "अमर ज्योति", 1953–54 में राज्य पंचायत विभाग के मासिक "पंचायत" और 1953 से 79 तक राजस्थानी भाषा के प्रथम और प्रतिष्ठित मासिक "मरुवाणी" का सम्पादन किया। पिछले लगभग 25 वर्षों में आपने दो दर्जन से अधिक प्राचीन एतिहासिक ग्रन्थों तथा काव्य और लोक साहित्य सम्बन्धी गवेषणात्मक प्रकाशनों का सम्पादन, लेखन और अनुवाद किया।

श्री सारस्वत राजस्थान भाषा-प्रचार सभा और राजस्थान लेखक सहकारी समिति जयपुर के मानद मन्त्री, राजस्थान साहित्य अकादमी की कार्यकारिणी के सदस्य, राजस्थानी भाषा साहित्य संगम अकादमी के अध्यक्ष, राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति अकादमी के उपाध्यक्ष, केन्द्रीय साहित्य अकादमी के राजस्थानी सम्बन्धी सलाहकार पैनल और राजस्थानी के प्रतिनिधि के रूप में अकादमी की कार्यकारिणी के सदस्य और राजस्थान सरकार की जवाहर कला केन्द्र की साहित्य सम्बन्धी समिति के संयोजक हैं। आपने ''मरुवाणी'' के सम्पादक और अन्य राजस्थानी पत्रिकाओं 'वरदा', 'विश्वंभरा', 'राजस्थानी गंगा' तथा 'मरुश्री' आदि के परामर्शदाता के रूप में प्रदेश के लगभग एक सौ लेखकों और कवियों को राजस्थानी में साहित्य-सृजन के लिए तैयार किया। आपको छात्र जीवन में 1934 से 41 तक सर्वोत्तम छात्र का पुरस्कार और गंगा स्वर्ण जयन्ती पुरस्कार तथा स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। राजस्थान साहित्य अकादमी ने 1976–77 में आपको श्रेष्ठ साहित्यकार का पुरस्कार प्रदान किया और राजस्थान रत्नाकर दिल्ली की ओर से 1988 में आपको उप राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा ने सम्मानित किया।

राहुल बजाज— बजाज उद्योग समूह से संबद्ध श्री राहुल बजाज गांधीजी के पांचवें पुत्र श्री जमनालाल बजाज के सुपौत्र और पूर्व सांसद स्वर्गीय श्री कमलनयन बजाज के पुत्र हैं। आपका जन्म 10 जून, 1938 को हुआ। आपने विधि स्नातक के साथ ही हार्वर्ड (इंगलैण्ड) से एम.बी.ए. किया। आप बजाज समूह की अनेक कम्पनियों के अध्यक्ष, प्रबन्ध निदेशक एवं निदेशक मंडलों के सदस्य हैं। आप फिक्की के अध्यक्ष रहने के साथ ही अनेक उद्योग, व्यावसायिक और सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी रह चुके हैं।

रेवतराम चौधरी— 1985 में चूरू जिले के डूंगरगढ विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित कांग्रेसी विधायक श्री रेवतराम चौधरी का जन्म 30 नवम्बर, 1937 को ग्राम दुलचासर में हुआ। श्री चौधरी ग्राम पंचायत दुलचासर के सरपंच तथा चूरू सैण्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। आपने 1977 में प्रथम बार कांग्रेसी उम्मीदवार के रूप में इसी निर्वाचन क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव लड़ा तथा पराजित रहे लेकिन 1980 के चुनाव में आप यहां से प्रथम बार विजयी हुए। आपका बम्बई में कपडे का व्यापार है।

रेवतीरमण शर्मा— युवा सृजन कर्मियों की संस्था ''पलाश'' के संस्थापक अध्यक्ष श्री रेवतीरमण शर्मा की रचनायें समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। उन्हें राजस्थान साहित्य अकादमी ने उनके काव्य संकलन ''कदाचित नहीं हूं मैं'' पर गत वर्ष पांच हजार रुपये के सुधीन्द्र पुरस्कार से सम्मानित किया है। आपका जन्म पांच अप्रेल, 1940 को अलवर जिले के मालाखेडा ग्राम में हुआ। आपने एम.काम., एलएल.बी. और डी.एल.एल. तक शिक्षा प्राप्त की है। सम्प्रति आप अलवर के कोषालय में कार्यरत हैं।

रेवाशंकर (शर्मा)— गांधीवादी पत्रकार, चिन्तक और विचारक श्री रेवाशंकर का जन्म 21 नवम्बर, 1921 को जयपुर जिले के वाटिका ग्राम में एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपने विधि स्नातक बनने के बाद कुछ अर्से तक वकालत और कुछ अर्से तक राज्य-सेवा की, लेकिन विचारों से मेल नहीं खाने के कारण निभा नहीं सके। बाद में वर्षों तक ''लोकवाणी'' और ''राजस्थान पत्रिका'' में पत्रकारिता की। राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के आप अध्यक्ष तथा श्री हिन्दू अनाथाश्रम जयपुर के संस्थापक अध्यक्ष रहे। वर्तमान में आप राज्य की अनेक रचनात्मक संस्थाओं और उनकी गतिविधियों में सक्रिय हैं।

रोहित आर. ब्रन्डन— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सहकारी विभाग में रजिस्ट्रार श्री ब्रन्डन का जन्म 29 जुलाई 1954 को अजमेर में हुआ। आपने एम.ए. (राजनीति विज्ञान) परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा 1977 से 79 तक राजस्थान विश्वविद्यालय में व्याख्याता और 1979 से 81 तक भारतीय राजस्व सेवा में आयकर अधिकारी के रूप में कार्य किया। 1981 में ही आपका वर्तमान सेवा में चयन हुआ और आप कोटा में उपखंड अधिकारी तथा नगर [illegible], क्षेत्रीय विकास विभाग में अतिरिक्त आयुक्त, सिरोही में जिला कलक्टर तथा राजस्थान राज्य बीज निगम में प्रबंध निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुके है।

आर.एन. सिंह (प्रो.)— जाने-माने प्रबंध अध्येता तथा सुखाड़िया वि.वि. उदयपुर के कुलपति श्री आर.एन. सिंह का जन्म सन 1936 में हुआ। आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की तथा 1958 में वहां से ही शिक्षण क्षेत्र में प्रवेश किया। बाद में राजस्थान वि. वि. से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त कर यहीं 1979 में प्रोफेसर नियुक्त हुए। वाणिज्य, प्रबन्ध और अर्थशास्त्र विषय पर आपने कई विदेशी वि. वि. में व्याख्यान दिये तथा इन विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित कीं। 1980 से 15 जुलाई, 1988 को वर्तमान नियुक्ति तक आप राजस्थान वि. वि. के अन्तर्गत चलने वाले पोद्दार प्रबन्ध संस्थान के निदेशक रहे।

ललित के. कूलवाल— भारतीय राजस्व सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान के आयकर आयुक्त (अपील) श्री एल.के. कूलवाल का जन्म 18 जनवरी 1942 को जयपुर के एक प्रतिष्ठित खण्डेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से बी.कॉम., एम.ए. (अर्थशास्त्र) तथा एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त की। 1966 में आप भारतीय राजस्व सेवा में चुने गये और बम्बई, बीकानेर, जोधपुर, जयपुर, अहमदाबाद तथा दिल्ली आदि नगरों में आयकर अधिकारी, उपनिदेशक तथा सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) आदि विभिन्न पदों पर रहे। जनवरी 1988 में आपकी वर्तमान पद पर पदोन्नति हुई।

ललित के. पंवार— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के निदेशक श्री एल.के. पंवार का जन्म ग्यारह जुलाई, 1955 को बालोतरा में हुआ। आप 1979 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में चुने गये तथा वर्तमान पदस्थापन से पूर्व उपजिलाधीश पाली, खाद्य एवं रसद विभाग में अतिरिक्त आयुक्त तथा पदेन शासन उपसचिव, अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) भरतपुर तथा जिला कलक्टर जैसलमेर आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

ललितकिशोर चतुर्वेदी— भारतीय जनता पार्टी के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष तथा भाजपा विधायक दल के उपनेता श्री ललितकिशोर चतुर्वेदी का जन्म दो अगस्त, 1932 को कोटा में हुआ। एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद कुछ अर्से तक आप कोटा कालेज में प्रोफेसर तथा उपाचार्य रहे। बाद में आपने सक्रिय राजनीति में भाग लेने के लिए त्यागपत्र देकर भारतीय जनसंघ की सदस्यता ग्रहण की। आपने प्रथम बार 1972 में डीगोद क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव लड़ा लेकिन सफल नहीं हुए। आपातकाल में आप जेल में रहे। 1977 में जनता पार्टी तथा 80 और 85 के चुनावों में भाजपा टिकिट पर आप कोटा क्षेत्र से निरन्तर विधायक चुने जाते रहे।

श्री चतुर्वेदी 27 जून, 1977 से 16 फरवरी, 1980 तक श्री भैरोसिंह शेखावत की जनता पार्टी की सरकार में शिक्षा, चिकित्सा, सिंचाई, ऊर्जा, आवासन तथा सार्वजनिक निर्माण आदि विभागों के मंत्री

रहे। आप प्रदेश जनसंघ तथा प्रदेश भाजपा के महामंत्री भी रहे तथा दिसम्बर 1987 में भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष चुने गये। 31 जुलाई, 1989 को आपने दल के नेताओं में उत्पन्न मतभेदों के कारण त्यागपत्र दे दिया।

ललित पी. कोठारी— भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में शासन विशिष्ट सचिव तथा पदेन सचिव, वाटर सप्लाई एण्ड सिवरेज मैनेजमेंट बोर्ड श्री एल.पी. कोठारी का जन्म पांच मई, 1952 को उदयपुर जिले में हुआ। आपका 1977 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ। वर्तमान पदस्थापना से पूर्व आप उपजिलाधीश दौसा, अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) अजमेर तथा जिला कलक्टर बूंदी, जैसलमेर एवं नागौर आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

ललित भाटी- एकीकृत ग्रामीण-विकास, विशिष्ट योजना संगठन, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, नगरीय विकास एवं आवासन तथा नगर आयोजना आदि विभागों के उपमंत्री श्री भाटी का जन्म 30 मई,1956 को हुआ। आप वाणिज्य एवं विधि में स्नातक हैं तथा व्यवसाय से बीड़ी निर्माता हैं। आप कांग्रेस (इ) संगठन में विभिन्न पदों पर काम करने के साथ ही खेलकूद की गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। मार्च 1985 में आप पहली बार अजमेर जिले के केकडी (सु.अ.) क्षेत्र से विधायक चुने गये और 8 जून, 1989 को माथुर मन्त्रिमंडल में उपमंत्री नियुक्त किये गये।

लक्ष्मणसिंह— राजस्थान के खनिज, भ्रष्टाचार-निरोधक, गृह-रक्षा दल एवं नागरिक-सुरक्षा आदि विभागों के पूर्व प्रभारी राज्य मंत्री श्री लक्ष्मणसिंह मेजर फतहसिंह के पुत्र हैं जो 1967 में ब्यावर क्षेत्र से स्वतंत्र पार्टी के और 1977 में भीम क्षेत्र से जनता पार्टी के टिकिट पर विधायक चुने गये थे। आपका जन्म 16 अक्टूबर, 1946 को नसीराबाद में हुआ। आपने एम.ए. और एलएल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की है तथा व्यवसाय से वकील हैं। 1985 के चुनाव में आप प्रथम बार कांग्रेस (इ) टिकिट पर भीम क्षेत्र से विधायक चुने गये तथा ग्यारह फरवरी, 1988 को माथुर सरकार में राज्य मंत्री बनाये गये। आठ जून, 1989 को आपने त्यागपत्र दिया।

लक्ष्मीकुमारी चूंडावत— उदयपुर जिले के भीम क्षेत्र से 1962,67 और 80 के चुनावों में कांग्रेस दल की विधायिका रही रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत का जन्म 24 जून, 1916 को हुआ। 1971 में आप प्रदेश कांग्रेस की अध्यक्ष मनोनीत की गई तथा 1972 में राज्यसभा की सदस्य चुनी गई।

श्रीमती चूंडावत हिन्दी और राजस्थानी की विख्यात साहित्यकार हैं जिनके अनेक ग्रन्थ अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। आपको 1965 में साहित्य पर सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार तथा राजस्थानी पुस्तक पर मारवाडी सम्मेलन का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। राजस्थान साहित्य अकादमी 1972-73 में आपको विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित कर चुकी है। आप विश्व के अनेक देशों का भ्रमण कर चुकी है।

लक्ष्मीचन्द गुप्त— भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री एल.सी. गुप्त का जन्म 15 मई, 1931 को कोटा जिले के अटवाडी ग्राम में एक सामान्य पोरवाल वैश्य परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा कोटा और पिलानी में हुई तथा आपने एम.कॉम. परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रारंभ में आप बिड़ला कालेज पिलानी में व्याख्याता नियुक्त हुए। 1955 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा शुरू होने पर आप प्रथम बैच में प्रथम स्थान पर चयनित हुए। बाद में आपने मुख्यमंत्री के सहायक सचिव तथा उप सचिव, जयपुर के उपजिलाधीश तथा अतिरिक्त जिलाधीश(न्यायिक एवं प्रशासन), सामुदायिक विकास एवं पंचायत विभाग में सहायक आयुक्त, राजस्व एवं उपनिवेशन विभाग

में शासन उप सचिव, राजस्थान राज्य भंडार व्यवस्था निगम में प्रबन्ध निदेशक, वाणिज्यिक कर विभाग में उपायुक्त (अपील) जोधपुर तथा परिवहन विभाग में अतिरिक्त आयुक्त आदि पदों पर कार्य किया।

श्री गुप्त 1976 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति के बाद जिलाधीश बांसवाड़ा तथा जयपुर, उपनिवेशन आयुक्त, श्रम आयुक्त, निदेशक नियोजन सेवा, राज्यपाल के सचिव, ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग में निदेशक एवं पदेन शासन विशिष्ट सचिव, राजस्व मंडल के सदस्य, विशिष्ट योजनाओं, एकीकृत ग्रामीण विकास एवं बीस सूत्री कार्यक्रम विभाग के शासन सचिव तथा राज्य सरकार द्वारा नव-स्थापित इन्दिरा गांधी पंचायतीराज प्रतिष्ठान के निदेशक व पदेन सचिव पंचायतीराज प्रशिक्षण आदि पदों पर रहे।

श्री गुप्त अपने समूचे सेवाकाल में अपने शासकीय कर्तव्यों और दायित्वों के प्रति समर्पित, कर्मठ तथा संवेदनशील अधिकारी के रूप में लोकप्रिय रहे। राज्य सेवा में अति व्यस्त रहते हुए भी जहां आप समाज-सेवा कार्यों में सदैव अग्रणी रहे वहां अब अवकाश प्राप्त करने के बाद तो यह आपका पूर्णकालिक कार्यक्रम बन गया है।

लक्ष्मीचन्द भंडारी—राजस्थान के प्रमुख सर्वोदयी नेता एवं राजस्थान समग्र सेवा संघ के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीचन्द भण्डारी का जन्म जनवरी 1934 में अजमेर जिले की मसूदा तहसील के फतहगढ़ ग्राम में हुआ। आप प्रारम्भ से ही खादी और रचनात्मक कार्यों से जुड़ गये। आपने नासिक से "कताई विशारद" का पाठ्यक्रम किया तथा 1954–55 में वर्धा में प्रयोग समिति में प्रयोग किया। इस दौरान भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद को अम्बर चर्खा चलाने का प्रशिक्षण देने का आपको सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपने राजस्थान में खादी-ग्रामोद्योगों के समग्र विकास हेतु तकनीकी प्रयोग किये। बुनाई के लिए नया कर्घा पेडलूम तैयार किया जिसे बाद में खादी-ग्रामोद्योग कमीशन ने भी मान्यता प्रदान की। आप सीकर जिला खादी-ग्रामोद्योग संघ के अध्यक्ष, अजमेर-मेरवाड़ा खादी समिति के उपाध्यक्ष, राजस्थान खादी संघ के महामंत्री, अलवर जिला खादी-ग्रामोद्योग संघ और लोकभारती शिवदासपुरा के सदस्य रह चुके हैं।

श्री भंडारी वर्तमान में खादी-ग्रामोद्योग सघन विकास समिति बस्सी (जयपुर) के मंत्री के रूप में पिछले बीस वर्षों से बस्सी प्रखंड के गांव-गांव और ढाणी-ढाणी में खादी-ग्रामोद्योगों के माध्यम से ग्रामीणों को रोजगार मुहैया कराने के कार्य में जुटे हुए हैं। यही कारण है कि समिति की गणना न केवल प्रदेश में अपितु देश की श्रेष्ठ संस्थाओं में होने लगी है।

लक्ष्मीनारायण गुप्ता—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में नीति-निर्धारण, संस्थागत वित्त तथा सूचना एवं जनसम्पर्क आदि विभागों के शासन सचिव सहित मुख्यमंत्री के सचिव श्री एल.एन. गुप्ता यद्यपि उ० प्र० के कुलीन जिले निवासी हैं लेकिन आपका जन्म 22 जनवरी, 1934 को कोटा (राजस्थान) में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय की बी.कॉम. और एम.कॉम. दोनों परीक्षाओं में सर्वोच्च अंकों के साथ स्वर्णपदक प्राप्त किए। 1958 में आपने सेवा में प्रवेश किया और उप जिलाधीश बाड़मेर, विकास अधिकारी जयपुर, प्रशासक नगर परिषद अजमेर, शासन उपसचिव उद्योग, अतिरिक्त आयुक्त खाद्य एवं रसद विभाग, जिलाधीश चूरू, गंगानगर तथा जयपुर, निदेशक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, शासन सचिव चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, उद्योग, खनिज, गृह एवं वित्त विभाग तथा पूर्व में भी दो बार सचिव मुख्यमंत्री के पद पर कार्य किया। जुलाई 1982 से फरवरी 1988 तक आप प्रतिनियुक्ति पर भारत सरकार के गृह मंत्रालय में पहले संयुक्त सचिव तथा बाद में पदोन्नत होकर अतिरिक्त सचिव रहे।

श्री गुप्ता ने 1968 में कोलम्बो योजना के अन्तर्गत कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (इंगलैण्ड) में प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा 1976 में होनोलूलू में "जन-संचार तथा विकास के लिए योजना" विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

लक्ष्मीनारायण भांभू—राजस्थान के बाढ़ एवं अकाल सहायता मंत्री के संसदीय सचिव श्री लक्ष्मीनारायण भांभू का जन्म एक नवम्बर, 1939 को गंगानगर जिले की नोहर तहसील के रामगढ़ ग्रा. में हुआ। आपने हायर सैकेण्डरी तक शिक्षा प्राप्त की है। आप 1980 और 85 के चुनावों में कांग्रेस (I) टिकिट पर नौहर क्षेत्र से विधायक चुने गये हैं।

लक्ष्मीनारायण शर्मा—'राजस्थान पत्रिका' प्रा. लिमिटेड के प्रबन्ध निदेशक श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा का जन्म 20 नवम्बर, 1938 को सांगानेर के निकटवर्ती अभयपुरा ग्राम में एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ। आपने 1956 में हाई स्कूल परीक्षा देने के साथ ही "राजस्थान पत्रिका" में अंशकालिक रूप में कार्य शुरू कर दिया था। बाद में आपने कामर्स कालेज जयपुर से बी.काम. परीक्षा उत्तीर्ण की।

"राजस्थान पत्रिका" के विकास की कहानी श्री शर्मा के उत्थान की कहानी भी है। वे इसके संस्थापक श्री कर्पूरचन्द्र कुलिश के साथ पिछले 32 वर्षों से सुख-दुख के क्षणों में समान रूप से भागीदार रहे। सही अर्थों में वे पत्रिका के समर्पित कार्यकर्ता हैं।

लक्ष्मीनिवास झुन्झुनवाला—प्रसिद्ध उद्योगपति तथा भीलवाड़ा की राजस्थान स्पीनिंग एवं वीविंग मिल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री झुन्झुनवाला का जन्म 18 अक्टूबर, 1928 को कलकत्ता में हुआ। आपने बी.ए. तक शिक्षा ग्रहण की। 1950 के दशक में आप जूट के प्रथम दस निर्यातकों में स्थान पा चुके हैं। भारत में शतरंज के प्रसार में आपकी विशेष रुचि है। आप सम्पूर्ण विश्व का भ्रमण कर चुके हैं।

लक्ष्मीमल्ल सिंघवी (डा०)—अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विधि एवं संविधान विशेषज्ञ तथा सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ एडवोकेट डा० एल.एम. सिंघवी का जन्म 9 नवम्बर, 1931 को जोधपुर में हुआ। आपने बी.ए. (इलाहाबाद वि.वि.), एलएल.बी. (राजस्थान वि.वि.), एलएल.एम. (हार्वर्ड वि.वि), एस.जे.डी. (कोर्नेल वि.वि) तथा साहित्यरत्न हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से किया। इसी के साथ गुरुकुल विश्वविद्यालय हरिद्वार ने 1968 में आपको "न्यायवाचस्पति" तथा जबलपुर और बनारस विश्वविद्यालयों ने 1983 और 1984 में "डाक्टर आफ ला" की मानद उपाधियों से विभूषित किया। आप 1956 में यूनेस्को की ओर से स्पेन में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय विधि सम्मेलन में भाग लेने वाले भारतीय प्रतिनिधिमंडल के चार में से एक सदस्य थे। 1957–58 में आप इंडियन लॉ इंस्टीट्यूट के संस्थापक सदस्य तथा प्रथम संगठन सचिव, 1958 से 61 तक राजस्थान राज्य अभिभाषक संघ के सदस्य तथा 1957–58 में भारतीय विद्या भवन के सदस्य रहे। अन्तर प्रांतीय कुमार साहित्य परिषद् जोधपुर के भी आप संस्थापकों में हैं तथा अध्यक्ष रह चुके हैं। 1962 में आप जोधपुर क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में लोकसभा सदस्य चुने गये और विधि सम्बन्धी तथा संवैधानिक मामलों में अपने महत्वपूर्णयोगदान किया। आप दिल्ली तथा आंध्र विश्वविद्यालय के मानद प्रोफेसर रहे तथा देश-विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों में व्याख्यान दे चुके हैं। आप राष्ट्रकुल संसदीय सम्मेलन तथा लागोस और हांगकांग में हुए क्रमशः छठे और सातवें विधि सम्मेलनों में भाग ले चुके हैं। सर्वोच्च न्यायालय अभिभाषक संघ के आप उपाध्यक्ष और अध्यक्ष रह चुके हैं।

डा० सिंघवी बैनेट कोलमेन एण्ड कम्पनी तथा पंजाब नेशनल बैंक के निदेशक मंडल के सदस्य रह चुके हैं तथा श्री स.ही. ओमा द्वारा स्थापित वत्सल निधि के आजीवन ट्रस्टी, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी मेमोरियल ट्रस्ट व डा० रामधारीसिंह दिनकर स्मारक समिति के अध्यक्ष प्रभा ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी,

भारतीय ज्ञानपीठ के संस्कृति प्रवर मंडल, ज्ञानभारती ट्रस्ट समाज भारती ट्रस्ट, भारतीय एकता एवं विकास प्रतिष्ठान के ट्रस्टी तथा गांधी विद्या मंदिर के कुलपति हैं।

डा. सिंघवी हाल ही में ब्रिटेन के मिडल टेम्पल के मास्टर एवं मानद बैंचर के रूप में चयनित किये गये हैं। यह सम्मान प्राप्त करने वाले आप प्रथम भारतीय न्यायविद हैं।

लक्ष्मीमोहन (माथुर)—भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान राज्य भंडार-व्यवस्था निगम के प्रबन्ध निदेशक श्री लक्ष्मीमोहन का जन्म 5 नवम्बर, 1931 को जयपुर में हुआ। आपने एम.काम की उपाधि प्राप्त की तथा राज्य के आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग में विभिन्न पदों पर कार्य किया। आपने कंप्यूटराइजेशन सरकारी राजस्व तथा परियोजना विषयक विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1981 में आपका भारतीय प्रशासनिक सेवा में विशेष चयन हुआ। उप जिलाधीश डूंगरपुर, आयोजना विभाग में शासन उपसचिव वित्त विभाग में विशेषाधिकारी (वित्त आयोग) तथा उपसचिव एवं अतिरिक्त आयुक्त क्षेत्रीय विकास (इंदिरा गांधी नहर परियोजना) बीकानेर आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

लक्ष्मीलाल जोशी—भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी तथा राजस्थान लोक सेवा आयोग व बोर्ड आफ सैकण्ड्री एज्यूकेशन राजस्थान के पूर्व अध्यक्ष श्री एल एल जोशी का जन्म 21 नवम्बर, 1901 को भीलवाड़ा जिले के मांडल कस्बे में हुआ। आपने एम ए और एलएल बी. की उपाधियां प्राप्त की तथा पूर्व उदयपुर रियासत में इण्टर कालेज के आचार्य न्यायिक और

के शासन सचिव रहे। 1957 में सेवा-निवृत्ति के बाद आप राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य नियुक्त किये गये जहां से 1961 में अध्यक्ष के पद से अवकाश ग्रहण किया। बाद में आप 1962 से 68 तक बोर्ड आफ सैकण्ड्री एज्यूकेशन राजस्थान के अध्यक्ष रहे। आपने हिन्दी में पुस्तकें भी लिखी हैं तथा राजस्थान साहित्य अकादमी की विभिन्न समितियों के सदस्य रह चुके हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी आपको 1986-87 में विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित कर चुकी है।

लालचन्द डूडी—पूर्व गृह राज्य मंत्री तथा वर्तमान में गंगानगर जिले के भादरा क्षेत्र से लोकदल टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री लालचन्द डूडी का जन्म 6 अप्रेल 1938 को भादरा में हुआ। आप हाई स्कूल तक शिक्षित हैं तथा 1977 में इसी क्षेत्र से जनता पार्टी के टिकिट पर विधायक चुने जाने पर फरवरी 1978 को श्री भैरोंसिंह शेखावत की सरकार में गृह विभाग के राज्य मंत्री नियुक्त किये गये थे। 8 जुलाई 1978 को आपने मंत्री पद से त्याग पत्र दिया। 1980 के विधान सभा चुनाव में भी आप जनता पार्टी (लोकदल) के टिकिट पर इसी क्षेत्र से चुनाव लड़ा लेकिन पराजित हो गये।

लालाराम केन—भरतपुर जिले के बयाना (सुरक्षित) क्षेत्र से दिसम्बर 1984 में चुने गये लोकसभा सदस्य श्री लालाराम केन प्रथम बार 1980 में इसी क्षेत्र से लोकसभा के उपचुनाव में विजयी हुए थे। यह स्थान आम चुनाव में विजयी श्री जगन्नाथ पहाड़िया द्वारा लोकसभा की सदस्यता से त्याग पत्र देकर जून 1980 में राज्य का मुख्यमंत्री बन जाने के कारण रिक्त हुआ था।

59 वर्षीय श्री केन इससे पूर्व जिला कांग्रेस (इ) के अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ के अध्यक्ष भरतपुर कांग्रेस के अध्यक्ष तथा 1960 से 75 तक जिला परिषद सभा के अध्यक्ष रह चुके हैं। [illegible] तथा व्यवसाय से वकील हैं।

विजयकुमार रस्तोगी—राजस्थान प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम केडर श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में परिवहन विभाग में अतिरिक्त आयुक्त श्री वी.के. रस्तोगी का जन्म 5 दिसम्बर, 1936 को सीकर जिले के फतहपुर कस्बे में हुआ। एम ए और एलएल.बी करने के बाद 1961 में आपका सेवा में चयन हुआ। आप अब तक मुख्य रूप से परिवहन विभाग में उपायुक्त, रीको में प्रबन्धक, जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी, वन, नगरीय-विकास एवं आवासन आदि विभागों में शासन उप सचिव रह चुके हैं। जून 1984 में आप जल वितरण एवं सिवरेज कार्यक्रम में प्रशिक्षण हेतु इंगलैण्ड की यात्रा कर चुके हैं।

विजयकुमार हंसूका—भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम केडर श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में पुलिस मुख्यालय में उप महानिरीक्षक (सतर्कता) श्री वी के हंसूका का जन्म 28 अक्टूबर 1944 को जयपुर में हुआ। प्रारंभ में आप 1965 से 71 तक भारतीय सेना में कमीशंड ऑफिसर रहे। 1971 में आपका भा० पु० सेवा में चयन हुआ तथा आप कमांडेंट आर ए सी मिजोरम एवं मणिपुर, सहायक पुलिस महानिरीक्षक (अपराधशाखा) जयपुर, जिला पुलिस अधीक्षक अजमेर, भीलवाड़ा, श्रीगंगानगर तथा अजमेर, उप महानिरीक्षक भ्रष्टाचार निरोधक विभाग, सी आई डी (इंटलीजेंस) राजस्थान तथा जोधपुर रेंज आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

विजयदान देथा—राजस्थानी लोक-संस्कृति की प्रमुख संरक्षक संस्था—रूपायन संस्थान बोरुंदा (जोधपुर) के सचिव तथा विख्यात साहित्यकार श्री विजयदान देथा, जिन्हें बिज्जी के उपनाम से अधिक जाना जाता है, का जन्म एक दिसम्बर 1926 को बोरुंदा में हुआ। आपने एम ए का पूर्वार्द्ध उत्तीर्ण किया है। आपकी राजस्थानी में चौदह खण्डों में प्रकाशित 'बातां-री-फुलवाड़ी' के दसम खण्ड को भारतीय राष्ट्रीय साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है जो कि किसी भी राजस्थानी कृति पर सर्वप्रथम पुरस्कार है। इसके साथ ही आपकी अन्य प्रकाशित कृतियों में राजस्थानी हिन्दी कहावत कोश, साहित्य और समाज, प्रेमचन्द के पात्र, दुविधा और अन्य कहानियाँ—उलझन, अलेखूं हिटलर तथा [illegible] प्रमुख हैं।

प्रारम्भ में 1953 से 55 तक आपने हिन्दी मासिक "प्रेरणा" का सम्पादन किया। बाद में हिन्दी त्रैमासिक "रूपम", राजस्थानी शोध पत्रिका "परम्परा" [illegible] लोकगीत सन 1800 से 1900 के बीच रचित ब्रिटिश विरोधी कविताओं के ऐतिहासिक मूल्यांकन पर आधारित [illegible] राजस्थान के प्रचलित प्रेमाख्यान का विवेचन "जेठवा रा सोरठा" तथा श्री कोमल कोठारी के साथ संयुक्त रूप से "वाणी" और "लोक संस्कृति" का सम्पादन किया। आपकी लिखी कहानियों पर [illegible] फिल्में बन चुकी हैं जिनमें मणि कौल द्वारा निर्देशित "दुविधा" पर अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। इसके अलावा 1986 में आपकी कथा पर प्रकाश झा द्वारा निर्देशित फिल्म "परिणति" काफी प्रशंसित हुई है। राजस्थान साहित्य अकादमी 1972-73 में आपको विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित कर चुकी है। आप [illegible] कर चुके हैं।

विजय भण्डारी—"राजस्थान पत्रिका" के सम्पादक श्री विजय भण्डारी का जन्म 14 जून 1931 को चित्तौड़गढ़ जिले के कपासन कस्बे में हुआ। आपने महाराणा भूपाल कॉलेज उदयपुर से 1955 में बी.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद लगभग एक वर्ष तक [illegible] का सम्पादन किया। 1956 में आपने राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर [illegible] के माध्यम से [illegible] देश, प्रदेश और नगर के दैनिक समाचारों का संकलन और [illegible]। सन् [illegible] में आप जयपुर आ गये और लगभग [illegible] वर्ष तक दैनिक "[illegible]" के [illegible]। [illegible] इसका प्रकाशन बन्द होने पर आप "राजस्थान पत्रिका" [illegible]।

1956 में अत्यन्त सीमित साधनों से शुरू होने वाली छोटे साइज की चौपन्नी सायंकालीन पत्रिका को वर्तमान राष्ट्रीय प्रमुख दैनिक के स्तर तक पहुंचाने की तीन दशक की कठोर यात्रा में आप श्री कर्पूरचन्द्र कुलिश के प्रमुख सहयोगी हैं। आप वर्षों तक पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक रहे तथा वर्तमान में सम्पादक के साथ ही राजस्थान पत्रिका प्रकाशन प्रा० लि० के निदेशक भी हैं। आप सोवियत रूस, बल्गारिया, नेपाल और मारीशस के बाद 1985 में प्रधानमन्त्री राजीव गांधी के साथ ओमान की भी यात्रा कर चुके हैं।

विजय वर्मा—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में प्रतिनियुक्ति पर गृह मंत्रालय में भारत के महापंजीयक जनगणना तथा पदेन जनगणना आयुक्त श्री विजय वर्मा का जन्म 5 अक्टूबर, 1935 को अजमेर में हुआ। आपको एम.ए. (इतिहास) परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के लिए कुलपति का मैडल प्रदान किया गया। 1960 में सेवा में आपका चयन हुआ और आप सिरोही के जिलाधीश, गृह विभाग में शासन उप सचिव, सामुदायिक विकास एवं पंचायत विभाग तथा हरिश्चन्द्र माथुर रा० लोक प्रशासन संस्थान के निदेशक, जनजाति क्षेत्र विकास आयुक्त, मरु-विकास आयुक्त तथा प्रतिनियुक्ति पर राजस्थान के जनगणना निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

श्री वर्मा संगीत, नृत्य, लोक कलाओं और साहित्य में विशेष रुचि रखते हैं और प्रदेश के जाने-माने कला-समीक्षक हैं। "सरोकारों के रंग" निबन्ध पर आपको 1987 में राजस्थान साहित्य अकादमी का "देवराज उपाध्याय पुरस्कार" प्राप्त हो चुका है।

विजयशंकर सिंह- भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में समाज-कल्याण विभाग के निदेशक श्री वी.एस. सिंह का जन्म 25 जुलाई, 1955 को उ.प्र. के गाजीपुर जिले के तेजपुरा ग्राम में हुआ। आपने एम.एससी. के बाद कुछ अर्से तक व्याख्याता के रूप में कार्य किया और 1978 में भा.प्र. सेवा में चुने गये। आप राजगढ़ (अलवर) में उपखंड अधिकारी, अलवर में नगर दंडनायक,उदयपुर में अतिरिक्त जिलाधीश (विकास), उद्योग एवं चिकित्सा विभाग में शासन उपसचिव, चूरू एवं सवाईमाधोपुर में जिला कलक्टर तथा अल्प-बचत विभाग के निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

विजयेन्द्रपालसिंह—भीलवाड़ा जिले के आसींद क्षेत्र से 1985 के चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में निर्वाचित विधायक श्री विजयेन्द्रपालसिंह 1977 में भी इसी क्षेत्र से जनता पार्टी के टिकिट पर विधायक चुने गये थे। आपका जन्म 12 मई, 1948 को बदनोर ग्राम में हुआ। शिक्षा की दृष्टि से आप स्नातक हैं तथा समाज-सेवा में विशेष रुचि रखते हैं।

विजेन्द्रनारायण काक—राजस्थान के जाने-माने प्रबन्धकर्त्ता श्री वी.एन. काक, जिन्हें अधिकांश लोग रामजी काक के नाम से सम्बोधित करते हैं, का जन्म 12 मार्च, 1919 को जोधपुर में हुआ। आपकी शिक्षा उदयपुर, अजमेर और बनारस में हुई। आप केन्द्रीय सरकार के प्रतिष्ठान इंस्ट्रूमेंटेशन लि० कोटा सहित राजस्थान पर्यटन-विकास निगम, राजस्थान राज्य खेल परिषद् तथा राजस्थान राज्य होटल्स निगम आदि के अध्यक्ष, राजस्थान फ्लाईंग क्लब के वर्षों तक सचिव, केन्द्र और राज्य सरकार के विभिन्न उपक्रमों के संचालक मंडलों तथा समितियों के सदस्य, गैर सरकारी संस्थाओं, स्वयंसेवी संगठनों, औद्योगिक और व्यावसायिक संघों के वर्षों तक पदाधिकारी तथा सदस्य रह चुके हैं।

विद्या पाठक (श्रीमती)—राजस्थान के पर्यटन एवं आयुर्वेद आदि विभागों की पूर्व प्रभारी राज्य मन्त्री श्रीमती विद्या पाठक 1977 में जनता पार्टी और 1980 तथा 85 के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी के टिकिट पर सांगानेर क्षेत्र से विधानसभा चुनाव में निरन्तर विजयी होती रही हैं। आपका जन्म तीन

फरवरी 1936 को जयपुर में हुआ। हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के साथ ही आप डा० आर. के पाठक के साथ विवाह सूत्र में बंध गई लेकिन अटूट लगन और दृढ़ संकल्प शक्ति के कारण बाद में गृहस्थी की जिम्मेदारियों के निर्वहन के साथ ही आपने हिन्दी और समाज शास्त्र में एम.ए. किया तथा इतिहास में एम.ए. का पूर्वार्द्ध उत्तीर्ण किया। 1960 के दशक में आप राजनीति से सक्रिय रूप से जुड़ीं तथा 1971 तक प्रदेश जनसंघ की कार्यसमिति की सदस्य के साथ ही महिला प्रकोष्ठ की संयोजक रहीं। आपात काल के दौरान जनवरी 1976 में आपने जयपुर में महिला सत्याग्रहियों के जत्थे का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तारी दी और लगभग तीन महीनों तक जेल में बंद रहीं। 27 जून,1977 को आप श्री भैरोंसिंह शेखावत के मंत्रिमंडल में राज्यमंत्री पद पर नियुक्त की गई और 16 फरवरी,1980 तक पद पर रहीं। आप दो बार विदेश यात्रा भी कर चुकी हैं।

विनय सोगाणी—अजमेर के प्रमुख समाज-सेवी एवं कर सलाहकार श्री विनय सोगाणी अजमेर के पूर्व विधायक एवं पूर्व अध्यक्ष नगर विकास न्यास श्री माणकचन्द सोगाणी के पुत्र हैं। आपका जन्म 26 सितम्बर 1937 को अजमेर हुआ। बी काम और एलएल बी की उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने अपने पैतृक व्यवसाय-कर सलाहकार का कार्य शुरु किया। समाज सेवा के कार्यों में प्रारम्भ से ही सक्रिय रुचि होने के कारण आप लायन्स क्लब के सदस्य बने। आप लायन्स डिस्ट्रिक्ट 323 के युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम के अध्यक्ष तथा 1974–75 में उप प्रतिपाल बनाये गये। श्री सोगाणी अजमेर नगर परिषद के 1962 से 67 तक पार्षद तथा इसकी वित्त समिति के अध्यक्ष भी रहे। नगर के अन्य अनेक धार्मिक और सांस्कृतिक संगठनों में आप पदाधिकारी हैं।

विनोदचन्द्र पाण्डे- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में प्रतिनियुक्ति पर भारत सरकार के ग्रामीण-विकास सचिव श्री वी.सी. पाण्डे का जन्म *16* फरवरी, 1932 को जम्मू में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से भौतिक शास्त्र में एम एससी. तथा अंग्रेजी साहित्य में एम ए की उपाधि प्राप्त की तथा आक्सफोर्ड में अर्थशास्त्र का अध्ययन किया। 1955 में सेवा में चयन के बाद जिलाधीश जैसलमेर वित्त विभाग में शासन उपसचिव, *विशिष्ट योजना* संगठन, समाज-कल्याण, संस्थागत वित्त, नियोजन तथा क्षेत्रीय आयोजना आदि विभागों के शासन सचिव और सदस्य राजस्व मंडल रहे। केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर वाणिज्य मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव तथा वर्तमान पदस्थापना से पूर्व आप वित्त सचिव (राजस्व) थे।

श्री पाण्डे हिन्दी के जाने-माने साहित्यकार भी हैं। आपके बसंत और पतझर, सफेद चिड़िया, ... फूलों की टहनी, कृष्ण पक्ष, विकल्प, सूर्यास्त तथा शिशिर पत्र आदि कविता संग्रह, ... मणिकर्णिघाट का स्वप्न कहानियां, एक मीनी गध, नव वर्ष की रात्रि, *पिशाचिनी, भ्रष्ट समय और ...* पद आदि उपन्यास तथा वैराग्य शतक, नीतिशतक और मेघदूत का पद्यानुवाद *प्रकाशित हो चुके* ...

विनोदशंकर दवे- राजस्थान उच्च न्यायालय के ...
न्यायालय के अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधीश श्री डी.एस ...
आपने बी.ए. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त ...
आप ...
1980 में ...

और श्री
... नीम-का-
... पद रह चुके हैं। 1985

(संपादित 1965), साहित्यकार नेहरू (संपादित 1966) तथा गांधी पुनर्मूल्यांकन (संपादित 1969) प्रकाशित ग्रंथ हैं।

विश्वम्भरनाथ उपाध्याय (डा०)—प्रमुख साहित्यकार तथा राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से सेवानिवृत्त प्रोफेसर डा० उपाध्याय का जन्म 7 जनवरी 1925 को हुआ। हिन्दी और संस्कृत में एम.ए. करने के बाद "संत वैष्णव काव्य पर तांत्रिक प्रभाव" और "भारतीय काव्य शास्त्र का द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के आलोक में अध्ययन" शोध प्रबन्धों पर क्रमशः पीएच.डी. और डी.लिट. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। आपके प्रकाशित ग्रंथों की संख्या एक दर्जन से अधिक है जिनमें तीन उत्तरप्रदेश शासन से पुरस्कृत हो चुके हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी ने 1985-86 का देवराज उपाध्याय पुरस्कार आपकी कृति "विम्ब प्रतिबिम्ब" पर प्रदान किया है।

विश्वासकुमार (शर्मा)—प्रदेश के जाने-माने पत्रकार तथा जयपुर से प्रकाशित सायंकालीन दैनिक "अम्बर" के सम्पादक श्री विश्वासकुमार का जन्म 20 मई 1949 को जयपुर में हुआ। आपने उच्च माध्यमिक परीक्षा नियमित और बी.ए. परीक्षा पत्रकारिता में प्रवेश के बाद स्वयंपाठी छात्र के रूप में उत्तीर्ण की। आपने 1968 में "राजस्थान पत्रिका" में प्रूफरीडर के रूप में पत्रकार जीवन शुरू किया। 1970 में आप "दैनिक नवज्योति" में रिपोर्टर नियुक्त हुए लेकिन 1972 में इसी पद पर पत्रिका परिवार में वापस आ गये। बाद में आप विशेष संवाददाता के रूप में पदोन्नत हुए। आपने अनेक विशेष और महत्वपूर्ण समाचारों के प्रकाशन से राज्य के पत्रकार-जगत में अपना विशिष्ट स्थान बनाया। 1988 में आपने पत्रिका से त्यागपत्र देकर इसी वर्ष 7 जुलाई से सायंकालीन दैनिक "अम्बर" का प्रकाशन प्रारंभ किया।

श्री विश्वासकुमार अक्टूबर 1985 से 1988 के अन्त तक राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के महामंत्री रहे। आप भारतीय श्रमजीवी पत्रकार महासंघ के प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप 1987 में चेकोस्लोवाकिया की यात्रा कर चुके हैं।

विष्णुचन्द्र पाठक (डा०)—राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी के अध्यक्ष डा० विष्णुचन्द्र पाठक का जन्म एक जुलाई, 1943 को भरतपुर में हुआ। आपने हिन्दी में एम.ए. और पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। हिन्दी की अनेक प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित होने के साथ ही कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी है।सम्प्रति आप लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय जयपुर में उपाचार्य है। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के अध्यक्ष पद पर आप 18 जून 1985 से कार्यरत हैं।

विष्णुदयाल पुरोहित—राजस्थान प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्व विभाग में शासन उप सचिव श्री वी.डी. पुरोहित का जन्म 23 जून 1936 को जयपुर में हुआ। आपने एम.ए. तथा एलएल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की। 1963 में आपका सेवा में चयन हुआ तथा आप स्थानीय निकाय विभाग में उप निदेशक, वाणिज्यिक कर अधिकारी जयपुर, महाप्रबन्धक राजस्थान लघु उद्योग निगम तथा सचिव राजस्थान आवासन मंडल आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

विष्णु मोदी—राजस्थान से 1984 में निर्वाचित लोकसभा सदस्यों में सबसे कम आयु के श्री विष्णु मोदी का जन्म और कार्यस्थल तो यद्यपि सीकर जिले का नीम-का-थाना क्षेत्र है तथापि वे प्रतिनिधित्व अजमेर क्षेत्र का करते हैं।

21 मार्च, 1950 को जन्मे श्री मोदी नीम-का-थाना के विख्यात मोदी परिवार से संबद्ध हैं और श्री श्रीकिशन मोदी के पुत्र हैं जो 1971 में सीकर क्षेत्र के सांसद रह चुके हैं। आप छात्र जीवन में नीम-का-थाना राजकीय महाविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष तथा वहीं की नगरपालिका के पार्षद रह चुके हैं। 1985 तक आप राजस्थान प्रदेश युवक कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष रहे हैं।

विनोद सोमानी ''हंस''—राजस्थान के जाने-माने लेखक और कवि श्री हंस का जन्म च नवम्बर 1938 को भीलवाडा जिले के महेन्द्रगढ ग्राम में हुआ। आपने एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की त गत तीन दशकों से हिन्दी मे निरन्तर लिख रहे हैं। आपकी रचनायें देश के अनेक पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशित होती रहती है। आपके प्रकाशनो में-एक था मत्री, शतरज का नायक, एक थी वन्दना व सुबह व मृता (सभी उपन्यास) सग्रह त्रिकोण, व्यंग्य-विनोद तथा अक्षत अर्चना के (कविता संग्रह) औ ''समपर्णहीं जीवन (कहानी संग्रह) आदि मुख्य हैं। सम्प्रति भारतीय जीवन बीमा निगम अजमेर में भाष महायक (राजभाषा कार्यान्वयन) के पद पर कार्यरत हैं।

विपिनचन्द्र शर्मा—भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृखला के अधिकारी तथ वर्तमान में डूंगरपुर के जिला कलेक्टर श्री विपिन शर्मा इसी सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी श्री मातादीन शर्मा के पुत्र है। आपका जन्म 25 मार्च, 1958 को अलवर जिले में हुआ। आपने इंजीनियरिंग में स्नातकीय उपाधि प्राप्त की और 1982 में सेवा में चुने गये। अब तक आप उप जिलाधीश अजमेर तथा जयपुर, शासन उप सचिव वित्त विभाग तथा सचिव नगर-विकास न्यास एवं पदेन निदेशक राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परियोजना अलवर आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

विपिनबिहारी लाल माथुर- राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव श्री वी.बी.एल. माथुर का जन्म 24 जनवरी,1934 को उत्तर प्रदेश के कानपुर शहर में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया और 1956 मे भारतीय प्रशासनिक सेवा में चुने गये। आप जिलाधीश जालौर, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर हिमाचल प्रदेश के रजिस्ट्रार सहकारी विभाग, उपभोक्ता सहकारी भंडारों के दिल्ली में निदेशक, सुपर बाजार दिल्ली के महाप्रबंधक तथा राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम के प्रबन्ध निदेशक आदि पदों पर रहे।

राज्य सरकार में कार्मिक विभाग में शासन विशिष्ट सचिव; दो बार अलग अवधि में राजकीय उपक्रम विभाग के आयुक्त तथा गंगानगर शुगर मिल के प्रभारी निदेशक, जयपुर-विकास प्राधिकरण में जयपुर-विकास आयुक्त, राजस्थान वित्त निगम के प्रबंध निदेशक, रीको के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक आदि पदों पर आप कार्य कर चुके हैं। वर्तमान मुख्य सचिव पद पर आप 10 मार्च, 1986 से कार्यरत हैं।

विश्वदेव शर्मा- जयपुर, अजमेर और अलवर से प्रकाशित दैनिक ''न्याय'' के प्रधान सम्पादक श्री विश्वदेव शर्मा का जन्म पांच नवम्बर, 1922 को अजमेर में वैदिक विद्वान् पं.विद्यानन्द विदेह के यहाँ हुआ। आपका हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं पर अच्छा अधिकार है। प्रारंभ में आपने ''वर्तमान'' व ''सविता'' का तथा बाद में साप्ताहिक ''न्याय'' का वर्षों तक सम्पादन किया। दो अक्टूबर, 1966 से आपने ''न्याय'' को साप्ताहिक से दैनिक का रूप दिया। आप राजस्थान समाचार पत्र-सम्पादक सम्मेलन के संस्थापकों में हैं तथा इसकी कार्यसमिति के सदस्य रह चुके है। अजमेर जिला पत्रकार संघ तथा प्रेस-मालिक संघ अजमेर के आप अध्यक्ष तथा राजस्थान एमेच्योर एथलेटिक एसोसियेशन के उपाध्यक्ष हैं।

विश्वनाथ (सचदेव)- दैनिक ''नवभारत टाइम्स'' के बम्बई संस्करण के स्थानीय सम्पादक श्री विश्वनाथ का जन्म सरगोधा (वर्तमान पाकिस्तान) जिले के भलोवाल नामक स्थान पर 2फरवरी,1942 को हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा यहां सिरोही में हुई तथा बी.ए. और एम.ए. (अंग्रेजी) आपने क्रमशः बीकानेर और जोधपुर से किया। बाद में आपने पत्रकारिता में भी स्नातक उपाधि प्राप्त की। आपके पत्रकारिता जीवन की शुरुआत जयपुर में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा प्रकाशित ''कांग्रेस पत्रिका'' के सहायक सम्पादक के रूप में हुई। आपकी कविताएं और कहानियां साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्मयुग, कादम्बिनी, भारती, ज्ञानोदय और सारिका में प्रकाशित हुई। हिन्दी साहित्य शिक्षा राजक

(संपादित 1965), साहित्यकार नेहरू (संपादित 1966) तथा गांधी पुनर्मूल्यांकन (संपादित 1969) प्रकाशित ग्रंथ हैं।

विश्वम्भरनाथ उपाध्याय (डा०)—प्रमुख साहित्यकार तथा राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से सेवानिवृत्त प्रोफेसर डा० उपाध्याय का जन्म 7 जनवरी, 1925 को हुआ। हिन्दी और संस्कृत में एम.ए. करने के बाद "संत वैष्णव काव्य पर तांत्रिक प्रभाव" और "भारतीय काव्य शास्त्र का द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के आलोक में अध्ययन" शोध प्रबन्धों पर क्रमशः पीएच.डी. और डी लिट् की उपाधियाँ प्राप्त की। आपके प्रकाशित ग्रंथों की संख्या एक दर्जन से अधिक है जिनमें तीन उत्तरप्रदेश शासन से पुरस्कृत हो चुके हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी ने 1985-86 का देवराज उपाध्याय पुरस्कार आपकी कृति "विम्ब प्रतिबिम्ब" पर प्रदान किया है।

विश्वासकुमार (शर्मा)—प्रदेश के जाने-माने पत्रकार तथा जयपुर से प्रकाशित सायंकालीन दैनिक "अम्बर" के सम्पादक श्री विश्वासकुमार का जन्म 20 मई 1949 को जयपुर में हुआ। आपने उच्च माध्यमिक परीक्षा नियमित और बी ए परीक्षा पत्रकारिता में प्रवेश के बाद स्वयंपाठी छात्र के रूप में उत्तीर्ण की। आपने 1968 में "राजस्थान पत्रिका" में प्रूफरीडर के रूप में पत्रकार जीवन शुरू किया। 1970 में आप "दैनिक नवज्योति" में रिपोर्टर नियुक्त हुए लेकिन 1972 में इसी पद पर पत्रिका परिवार में वापस आ गये। बाद में आप विशेष संवाददाता के रूप में पदोन्नत हुए। आपने अनेक विशेष और महत्वपूर्ण समाचारों के प्रकाशन से राज्य के पत्रकार-जगत में अपना विशिष्ट स्थान बनाया। 1988 में आपने पत्रिका से त्यागपत्र देकर इसी वर्ष 7 जुलाई से सायंकालीन दैनिक "अम्बर" का प्रकाशन प्रारंभ किया।

श्री विश्वासकुमार अक्टूबर 1985 से 1988 के अन्त तक राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के महामंत्री रहे। आप भारतीय श्रमजीवी पत्रकार महासंघ के प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप 1987 में चेकोस्लोवाकिया की यात्रा कर चुके हैं।

विष्णुचन्द्र पाठक (डा०)—राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी के अध्यक्ष डा० विष्णुचन्द्र पाठक का जन्म एक जुलाई, 1943 को भरतपुर में हुआ। आपने हिन्दी में एम ए और पीएच डी की उपाधि प्राप्त की है। हिन्दी की अनेक प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित होने के साथ ही कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। सम्प्रति आप लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय जयपुर में उपाचार्य हैं। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के अध्यक्ष पद पर आप 18 जून 1985 से कार्यरत हैं।

विष्णुदयाल पुरोहित—राजस्थान प्रशासनिक सेवा के [illegible] वर्तमान में राजस्व विभाग में शासन उप सचिव श्री वी डी. पुरोहित का जन्म 23 जून 1936 को जयपुर में हुआ। आपने एम ए तथा एलएल बी तक शिक्षा प्राप्त की। 1963 में आप राज्य सेवा में चयन हुआ तथा आप स्थानीय निकाय विभाग में उप निदेशक, [illegible] जयपुर, महाप्रबन्धक राजस्थान लघु उद्योग निगम तथा सचिव राजस्थान आवासन मंडल आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

विष्णु मोदी—राजस्थान से 1984 में निर्वाचित लोकसभा सदस्यों में सबसे कम आयु के श्री विष्णु मोदी का जन्म और कार्यस्थल [illegible] नीम-का-थाना [illegible] है [illegible] प्रतिनिधित्व अजमेर क्षेत्र का करते हैं।

21 मार्च, 1950 को जन्मे श्री मोदी नीम-का-थाना के [illegible] हैं और श्री [illegible]किशन मोदी के पुत्र हैं जो 1971 में सीकर क्षेत्र के सांसद रह चुके हैं। आप छात्र जीवन में नीम-का-थाना राजकीय महाविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष [illegible] रह चुके हैं। 1985 तक आप राजस्थान प्रदेश युवक कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष रहे हैं।

राजस्थान वार्षिकी

विनोद सोमानी "हंस"—राजस्थान के जाने-माने लेखक और कवि श्री हंस का जन्म चार नवम्बर 1938 को भीलवाड़ा जिले के महेन्द्रगढ ग्राम में हुआ। आपने एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की तथा गत तीन दशकों से हिन्दी में निरन्तर लिख रहे हैं। आपकी रचनायें देश के अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है। आपके प्रकाशनों में—एक था मन्त्री, शतरंज का नायक, एक थी वन्दना व सुबह का भूला (सभी उपन्यास) संग्रह त्रिकोण व्यंग्य-विनोद तथा अक्षत अर्चना के (कविता संग्रह) और "समर्पणही जीवन (कहानी संग्रह) आदि मुख्य हैं। सम्प्रति भारतीय जीवन बीमा निगम अजमेर में सहायक (राजभाषा कार्यान्वयन) के पद पर कार्यरत हैं।

विपिनचन्द्र शर्मा—भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में डूंगरपुर के जिला कलेक्टर श्री विपिन शर्मा इसी सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी श्री मातादीन शर्मा के पुत्र है। आपका जन्म 25 मार्च, 1958 को अलवर जिले में हुआ। आपने इंजीनियरिंग में स्नातकीय उपाधि प्राप्त की और 1982 में सेवा में चुने गये। अब तक आप उप जिलाधीश अजमेर तथा जयपुर शासन उप सचिव वित्त विभाग तथा सचिव नगर-विकास न्यास एवं पदेन निदेशक राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परियोजना अलवर आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

विपिनबिहारी लाल माथुर- राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव श्री वी.बी.एल. माथुर का जन्म 24 जनवरी, 1934 को उत्तर प्रदेश के कानपुर शहर में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया और 1956 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में चुने गये। आप जिलाधीश जालौर, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर हिमाचल प्रदेश के रजिस्ट्रार सहकारी विभाग, उपभोक्ता सहकारी भंडारों के दिल्ली में निदेशक, सुपर बाजार दिल्ली के महाप्रबंधक तथा राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम के प्रबन्ध निदेशक आदि पदों पर रहे।

राज्य सरकार में कार्मिक विभाग में शासन विशिष्ट सचिव; दो बार उद्योग आयोग में [illegible] उपक्रम विभाग के आयुक्त तथा गंगानगर शुगर मिल के प्रभारी निदेशक, जयपुर-विकास प्राधिकरण में जयपुर-विकास आयुक्त, राजस्थान वित्त निगम के प्रबंध निदेशक, रीको के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक आदि पदों पर आप कार्य कर चुके हैं। वर्तमान मुख्य सचिव पद पर आप 10 मार्च, 1986 से कार्यरत हैं।

विश्वदेव शर्मा- जयपुर, अजमेर और अलवर से प्रकाशित दैनिक "न्याय" के प्रधान सम्पादक श्री विश्वदेव शर्मा का जन्म पांच नवम्बर, 1922 को अजमेर में [illegible] के घर हुआ। आपका हिन्दी, उर्दू और संस्कृत भाषाओं पर अच्छा अधिकार है। प्रारम्भ में आपने "आभास" व "मोर्चा" का तथा बाद में साप्ताहिक "न्याय" का वर्षों तक सम्पादन किया। [illegible] अक्टूबर, 1966 से आपने "न्याय" का साप्ताहिक से दैनिक में [illegible] किया। आप राजस्थान समाचार पत्र-सम्पादक सम्मेलन के संस्थापकों में है तथा [illegible] के सदस्य रह चुके हैं। अजमेर जिला पत्रकार संघ व श्रमजीवी पत्रकार संघ अजमेर के आप अध्यक्ष रहे तथा राजस्थान [illegible] के उपाध्यक्ष हैं।

विश्वनाथ (सचदेव)- दैनिक "नवभारत टाइम्स" के बम्बई संस्करण के [illegible] श्री विश्वनाथ का जन्म [illegible] 1942 को हुआ। [illegible]

(संपादित 1965), साहित्यकार नेहरू (संपादित 1966) तथा गांधी पुनर्मूल्यांकन (संपादित 1969) प्रकाशित ग्रंथ है।

विश्वम्भरनाथ उपाध्याय (डा०)—प्रमुख साहित्यकार तथा राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से सेवानिवृत्त प्रोफेसर डा० उपाध्याय का जन्म 7 जनवरी, 1925 को हुआ। हिन्दी और संस्कृत में एम.ए. करने के बाद "संत वैष्णव काव्य पर तांत्रिक प्रभाव" और "भारतीय काव्य शास्त्र का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के आलोक में अध्ययन" शोध प्रबन्धों पर क्रमशः पीएच.डी. और डी.लिट्. की उपाधियाँ प्राप्त की। आपके प्रकाशित ग्रंथों की संख्या एक दर्जन से अधिक है जिनमें तीन उत्तरप्रदेश शासन से पुरस्कृत हो चुके है। राजस्थान साहित्य अकादमी ने 1985-86 का देवराज उपाध्याय पुरस्कार आपकी कृति "विम्ब प्रतिबिम्ब" पर प्रदान किया है।

विश्वासकुमार (शर्मा)—प्रदेश के जाने-माने पत्रकार तथा जयपुर से प्रकाशित सायंकालीन दैनिक "अम्बर" के सम्पादक श्री विश्वासकुमार का जन्म 20 मई 1949 को जयपुर में हुआ। आपने उच्च माध्यमिक परीक्षा नियमित और बी.ए. परीक्षा पत्रकारिता में प्रवेश के बाद स्वयंपाठी छात्र के रूप में उत्तीर्ण की। आपने 1968 में "राजस्थान पत्रिका" में प्रूफरीडर के रूप में पत्रकार जीवन शुरु किया। 1970 में आप "दैनिक नवज्योति" में रिपोर्टर नियुक्त हुए लेकिन 1972 में इसी पद पर पत्रिका परिवार में वापस आ गये। बाद में आप विशेष संवाददाता के रूप में पदोन्नत हुए। आपने अनेक विशेष और *महत्वपूर्ण समाचारों के प्रकाशन से राज्य के पत्रकार-जगत में अपना विशिष्ट स्थान बनाया।* 1988 में आपने पत्रिका से त्यागपत्र देकर इसी वर्ष 7 जुलाई से सायंकालीन दैनिक "अम्बर" का प्रकाशन प्रारंभ किया।

श्री विश्वासकुमार अक्टूबर 1985 से 1988 के अन्त तक राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के महामंत्री रहे। आप भारतीय श्रमजीवी पत्रकार महासंघ के प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप 1987 में चेकोस्लोवाकिया की यात्रा कर चुके है।

विष्णुचन्द्र पाठक (डा०)—राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी के अध्यक्ष डा० विष्णुचन्द्र पाठक का जन्म एक जुलाई, 1943 को भरतपुर में हुआ। आपने हिन्दी में एम.ए. और पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। हिन्दी की अनेक प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित होने के साथ ही कुछ पुस्तकें भी *प्रकाशित हो चुकी है। सम्प्रति आप लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय जयपुर में उपाचार्य है।* राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के अध्यक्ष पद पर आप 18 जून, 1985 से कार्यरत है।

विष्णुदयाल पुरोहित—राजस्थान प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्व विभाग में शासन उप सचिव श्री वी.डी. पुरोहित का जन्म 23 जून 1936 को जयपुर में हुआ। आपने एम.ए. तथा एलएल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की। 1963 में आपका सेवा में चयन हुआ तथा आप स्थानीय निकाय विभाग में उप निदेशक वाणिज्यिक कर अधिकारी जयपुर, महाप्रबन्धक राजस्थान लघु उद्योग निगम तथा सचिव राजस्थान आवासन मंडल आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

विष्णु मोदी—राजस्थान से 1984 में निर्वाचित लोकसभा सदस्यों में सबसे कम आयु के श्री विष्णु मोदी का जन्म और कार्यस्थल तो यद्यपि सीकर जिले का नीम-का-थाना क्षेत्र है तथापि वे प्रतिनिधित्व अजमेर क्षेत्र का करते हैं।

21 मार्च, 1950 को जन्मे श्री मोदी नीम-का-थाना के विख्यात मोदी परिवार से संबद्ध है और श्री श्रीकिशन मोदी के पुत्र है जो 1971 में सीकर क्षेत्र के सांसद रह चुके है। आप छात्र जीवन में नीम-का-थाना राजकीय महाविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष तथा वहीं की नगरपालिका के पार्षद रह चुके है। 1985 तक आप राजस्थान प्रदेश युवक कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष रहे हैं।

वीरेन्द्र सिन्हा—भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में पुलिस उप महानिरीक्षक श्री वीरेन्द्र सिन्हा भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी वर्तन बहुरन सिन्हा के पुत्र हैं। आपका जन्म 24 सितम्बर, 1935 को जयपुर में हुआ। आप प्रारंभ में राजस्थान पुलिस सेवा में चुने गये और 1974 में भारतीय पुलिस सेवा में पदोन्नत हुए। आप झालावाड़ और टोंक के जिला पुलिस अधीक्षक, सी.आई.डी. में अधीक्षक (सतर्कता) तथा केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर पुलिस रिसर्च एण्ड डवलपमेंट ब्यूरो नई दिल्ली में सहायक निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

वीरेन्द्रसिंह (डा०)—राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 1987-88 के निबन्ध समीक्षा विषयक पाँच हजार रुपये के डा० देवराज उपाध्याय पुरस्कार से सम्मानित डा० वीरेन्द्रसिंह राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में सह-आचार्य के रूप में कार्यरत हैं। आपका जन्म 11 नवम्बर 1933 को उत्तरप्रदेश के सीतापुर जिले के बिसवां ग्राम में हुआ। आपने प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. और डी.फिल. की उपाधियां प्राप्त की है। आपकी अब तक एक दर्जन से अधिक कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। पुरस्कृत कृति ''शब्दार्थों के गवाक्ष'' है।

वेदप्रकाश गोयल—राजस्थान प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में प्रशासनिक सुधार विभाग के शासन उपसचिव श्री वी.पी. गोयल का जन्म तीन मार्च 1938 को हरियाणा में करनाल जिले के कैमल ग्राम में एक प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में हुआ। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए. (आनर्स) तथा राजनीति विज्ञान में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। प्रारम्भ में आप दयालसिंह कालेज दिल्ली में एक वर्ष तक व्याख्याता रहे। 1963 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन के बाद आप जयपुर में अतिरिक्त नगर दण्डनायक, आमेर में उप जिलाधीश एवं प्रशासक नगरपालिका चौमू, अतिरिक्त जिला-विकास अधिकारी अजमेर, भू-प्रबन्ध अधिकारी टोंक, प्रशिक्षक परियोजना अधिकारी जयपुर तथा शासन उपसचिव सहकारिता, कृषि (विपणन) तथा पदेन प्रशासक कृषि-उपज मण्डी समिति (फल-सब्जी) आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

वेदप्रकाश भटनागर—भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर केन्द्रीय गुप्तचर ब्यूरो नई दिल्ली में उप निदेशक श्री वी.पी. भटनागर का जन्म 26 जनवरी 1936 को अजमेर में हुआ। शिक्षा समाप्ति के बाद प्रारंभ में आप अजमेर में व्याख्याता रहे और 1963 में भारतीय पुलिस सेवा में चुने गये। आप केन्द्रीय गृह मन्त्रालय में प्रतिनियुक्ति पर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो जयपुर में पुलिस अधीक्षक, जयपुर के जिला पुलिस अधीक्षक, भ्रष्टाचार-निरोधक विभाग तथा सी.आई.डी. (अपराध शाखा) में पुलिस अधीक्षक रहे। 1981 में उप महानिरीक्षक के रूप में पदोन्नति होने पर आप सी.आई.डी. में अपराध शाखा एवं रेलवे तथा इंटेलिजेंस के उप महानिरीक्षक रहे।

वेद व्यास—हिन्दी और राजस्थानी के जाने-माने साहित्यकार, राजस्थान प्रगतिशील [illegible] के मंत्री तथा राजस्थान भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर के अध्यक्ष श्री वेद व्यास का जन्म एक जुलाई 1942 को मीरपुर खास (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ। आपने बी.ए. और साहित्य रत्न की उपाधियां प्राप्त की तथा सम्प्रति आकाशवाणी जयपुर की सेवा में कार्यरत हैं।

श्री वेद व्यास ने [illegible] राजस्थानी में [illegible] परमवीर गाथा, धरती हेलो मारे, [illegible] राजस्थान [illegible] किया। इनके साथ आपके कुछ अन्य [illegible] भी प्रकाशित हो चुके हैं। [illegible]

को आपको तीन वर्ष के लिए राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति अकादमी का अध्यक्ष मनोनीत किया है।

वैकुण्ठनाथ चतुर्वेदी—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी श्री वी.एन. चतुर्वेदी का जन्म एक जनवरी, 1932 को कोटा में हुआ। आपने 1952 में हर्बर्ट कालेज कोटा से बी.ए. और 1954 में महाराणा भूपाल कालेज उदयपुर से इतिहास में एम.ए. किया। 1962 में आपने आई.पी.ए. देहली से लोक-प्रशासन में मास्टर डिप्लोमा प्राप्त किया।

1957 में रा० प्र० सेवा में चयन के बाद आप विकास अधिकारी शाहपुरा रहे। बाद में आपने दिल्ली में मजिस्ट्रेट, एस.डी.एम., दिल्ली-विकास प्राधिकरण में कार्यकारी अधिकारी, दिल्ली-प्रशासन में शिक्षा उप निदेशक तथा कार्यकारी पार्षद दिल्ली-प्रशासन के विशिष्ट सहायक आदि पदों पर कार्य किया। तत्पश्चात खनिज एवं भू-विज्ञान विभाग में संयुक्त निदेशक, सहायता विभाग में अतिरिक्त आयुक्त, जन-जाति उपयोजना में परियोजना निदेशक तथा दिल्ली-विद्युत प्राधिकरण में सतर्कता एवं जाँच अधिकारी आदि पदों पर कार्य किया। 1978 में भा० प्र० सेवा में पदोन्नति के बाद आप जालौर एवं सवाईमाधोपुर के जिलाधीश, भूमि एवं भवन कर विभाग के निदेशक, राजस्थान राज्य विद्युत मंडल के लेखा सदस्य, गृह, सहकारिता, कृषि और राजकीय उपक्रम आदि विभागों के शासन विशिष्ट सचिव तथा क्षेत्रीय-विकास आयुक्त (इंदिरा गांधी नहर परियोजना) बीकानेर आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

वी.एन. बहादुर—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर रक्षा मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्री बहादुर का जन्म 28 अक्टूबर, 1940 को दिल्ली में हुआ। 1965 में सेवा में प्रवेश के बाद आप वित्त विभाग में शासन उपसचिव, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर वित्त मंत्रालय के राजस्व एवं बैंकिंग विभाग में पहले उपसचिव और फिर आर्थिक मामलों के निदेशक, राज्य के वाणिज्यिक कर विभाग के आयुक्त तथा हरिश्चन्द्र माथुर राजकीय लोक-प्रशासन संस्थान के निदेशक आदि पदों पर रह चुके हैं।

वी.वी. जोन (प्रो०)— देश के विख्यात शिक्षाविद् तथा जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० वी.वी. जोन का जन्म 1910 में केरल के कोट्टायम नगर में एक क्रिश्चियन व्यापारी के यहां हुआ। आपने मद्रास विश्वविद्यालय से एम.ए. और आक्सफोर्ड से भाषा शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। प्रारंभ में आप उड़ीसा में व्याख्याता नियुक्त हुए और बाद में केन्द्रीय शिक्षा सेवा में चुन लिए गये। इसी दौरान अजमेर के राजकीय महाविद्यालय में 12 वर्षों तक लगातार प्राचार्य रहे। उस समय कालेज से पढ़कर विभिन्न क्षेत्रों में गये हजारों छात्र श्री जोन के व्यक्तित्व, योग्यता और सही मार्ग-दर्शन के लिए आज भी श्रद्धा से स्मरण करते हैं। बाद में अजमेर राज्य के राजस्थान में विलय के बाद आप कालेज शिक्षा के निदेशक बनाये गये। सातवें दशक के प्रारंभ में आप जोधपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति नियुक्त हुए लेकिन राजनेताओं के व्यवहार से क्षुब्ध हो कर 31 जुलाई, 1972 को आपने त्याग पत्र दे दिया। आप भारत सरकार द्वारा नियुक्त अल्प संख्यक आयोग सहित अन्य अनेक शिक्षा विषयक उच्चस्तरीय समितियों के सदस्य रहे हैं।

श्री जोन का जन्म भले केरल जैसे दूरस्थ प्रदेश में हुआ लेकिन उनके हृदय में राजस्थान के प्रति असीम लगाव है और यहां के निवासी बनकर आप सदैव गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

श्रीकृष्ण गोयल—उत्तरप्रदेश के विभिन्न मंत्रिमंडलों में विभिन्न विभागों के मंत्री रहे उत्तरप्रदेश राज्य (इ) के [illegible] श्री श्रीकृष्ण गोयल का जन्म [illegible] में हुआ। उत्तरप्रदेश के राजनीतिक जीवन में आपका महत्वपूर्ण स्थान है। आप अभी भी समय-समय पर [illegible] आते रहते हैं और यहां के विकास में [illegible] रुचि रखते हैं।

श्रीकिशन मोदी—नीम-का-थाना के विख्यात मोदी परिवार के सदस्य श्री श्रीकिशन मोदी प्रारम्भ से ही राजनीति और कांग्रेस की गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। 1971 के लोकसभा के मध्यावधि चुनाव में आप प्रथम बार सीकर क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर खड़े हुए और उस समय भारतीय जनसंघ तथा स्वतंत्र पार्टी के संयुक्त प्रत्याशी श्री सुरेन्द्र कुमार तापड़िया तथा भारतीय क्रांतिदल के प्रत्याशी श्री राधेश्याम रा. मोरारका आदि दिग्गजों को पराजित किया। 1977 और 1980 के लोकसभा चुनावों में आप सीकर क्षेत्र से ही पराजित हुए। आप अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के अध्यक्ष रह चुके हैं। व्यवसाय से आप उद्योगपति हैं।

श्रीनारायण थानवी—भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जिला कलक्टर भीलवाड़ा श्री एस.एन. थानवी का जन्म 10 जनवरी, 1953 को जोधपुर जिले में हुआ। 1980 में आपका सेवा में चयन हुआ तथा अब तक आप नगर दण्डनायक अजमेर, राजस्थान वित्त निगम के महाप्रबंधक तथा सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

श्रीराम गोटेवाला—राजस्थान आवासन मंडल के अध्यक्ष तथा स्वायत्त शासन, नगरीय-विकास एवं आवासन, सूचना एवं जन-सम्पर्क, पशुपालन तथा खादी-ग्रामोद्योग आदि विभागों के पूर्व प्रभारी राज्य मंत्री श्री श्रीराम गोटेवाला का जन्म 16 मार्च 1929 को सीकर जिले के खंडेला कस्बे में एक प्रतिष्ठित खंडेलवाल वैश्य परिवार में हुआ। आपकी औपचारिक रूप से कोई शिक्षा नहीं हुई तथा जो कुछ पढ़ा वह जन-जीवन की पाठशाला में ही पढ़ा और सीखा। बड़ी कम आयु में आप जयपुर आ गये और खंडेला के प्रसिद्ध गोटे का यहां व्यवसाय प्रारंभ किया।

प्रारंभ से ही सामाजिक और राजनीतिक कार्यों में रुचि होने के कारण आप कांग्रेस के सक्रिय सदस्य तथा पांचवें दशक के प्रारंभ में श्री खंडेलवाल वैश्य युवक मंडल जयपुर के मंत्री बने। अगस्त 1956 में आपने प्रथम बार कांग्रेस टिकिट पर पुरानी बस्ती से जयपुर नगरपरिषद का चुनाव लड़ा लेकिन सफल नहीं हुए। बाद में अक्टूबर 1970 में सदस्य चुने गये तथा नगर परिषद की स्वास्थ्य समिति के अध्यक्ष बनाये गये। मार्च 1972 में आप किशनपोल क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये और पुस्तकालय समिति के अध्यक्ष मनोनीत किये गये। 1977 की जनता हवा में आप किशनपोल क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव हार गये लेकिन 1980 के चुनाव में पुनः चुन लिए गये। जनवरी 1978 में हुए कांग्रेस विभाजन में आप कांग्रेस (इ) में रहे तथा जयपुर शहर जिला कमेटी के अध्यक्ष मनोनीत किये गये। 19 जुलाई, 1981 को आप माथुर मंत्रिमंडल में स्वायत्त शासन, नगरीय-विकास एवं आवासन, सूचना तथा जन सम्पर्क विभाग के प्रभारी राज्यमंत्री के रूप में शामिल किये गये। बाद में 17 अक्टूबर 1982 को आपका विभाग बदल कर पशुपालन तथा खादी-ग्रामोद्योग का स्वतंत्र दायित्व दिया गया। कुछ अर्से के लिए आप सहकारिता विभाग के प्रभारी मंत्री रहे। 1985 के चुनाव में आपने टिकिट से वंचित रहने के कारण भाग नहीं लिया। 15 सितम्बर, 1988 को राज्य सरकार ने आपको राजस्थान आवासन मंडल का अध्यक्ष मनोनीत किया है।

श्री गोटेवाला ने 1983 में जयपुर हार्ट हेल्थ एण्ड डवलपमेंट ट्रस्ट की स्थापना की जिसने जन-कल्याण में भांकरोटा के निकट कमापुरा ग्राम में 31 लाख रुपये की लागत से अस्पताल का निर्माण कराये जाने के साथ ही भांकरोटा, सांगानेर, चाकसू, फागी और दूदू पंचायत समिति क्षेत्रों में चलित औषधालय और स्वास्थ्य केन्द्र संचालित करने का कार्य हाथ में ले रखा है। इसी के साथ रामचन्द्रपुरा, मदाऊ, भांकरोटा तथा मालवीयनगर आदि ग्रामों में गरीबों के लिए 75 आवासीय मकानों के निर्माण का कार्य शुरू किया है। आप ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष हैं। आप [illegible] के अध्यक्ष हैं तथा तीन बार [illegible] की यात्रा कर चुके हैं।

श्रीशंकर व्यास—राजस्थान राज्य विद्युत मंडल के अध्यक्ष श्री एस.एस. व्यास का जन्म 2 अक्टूबर, 1929 को बूंदी में हुआ। आपने हाईस्कूल से लेकर बी.एससी. और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से बी.ई. तक सभी परीक्षायें प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आपने 1952 में सहायक अभियन्ता के रूप में कार्य प्रारंभ किया। 1960 में अधिशासी अभियन्ता, 1973 में अधीक्षण अभियन्ता, 1978 में उपमुख्य अभियन्ता, 1981 में मुख्य अभियन्ता तथा 1984 में विद्युत मंडल के तकनीकी सदस्य (प्रसारण एवं वितरण) के रूप में आपकी पदोन्नति हुई।

कनाडा में विद्युत वृहद उत्पादन सैटों पर विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले श्री व्यास का राणा प्रताप सागर और जवाहर सागर के विद्युत उत्पादन संयंत्रों के डिजायन और योजना तथा बाद में विद्युत गृह स्थापित करने में प्रमुख योगदान रहा। बहुउद्देश्यीय माही परियोजना पर विद्युत केन्द्र का प्रारंभिक कार्य आपने ही किया तथा कोटा क्षेत्र में चम्बल से उत्पादित विद्युत के उपयोग के लिए कोटा व लाखेरी में 132 के वी. ग्रिड सबस्टेशन आपकी ही देखरेख में बने। 9 अगस्त, 1989 को श्री आर.सी. दवे की सेवा निवृत्ति के बाद राज्य सरकार ने आपको विद्युत मंडल के अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया।

श्री व्यास इंस्टीट्यूट आफ इंजीनियर्स, इंस्टीट्यूट आफ इलेक्ट्रोनिक्स एण्ड इलेक्ट्रिकल्स इंजीनियर्स (अमरीका) तथा कनाडियन इंजीनियर्स एसोसियेशन के भी सदस्य हैं।

श्यामप्रतापसिंह राठौड—भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर गृह मंत्रालय में सीमा-सुरक्षाबल के पुलिस महानिरीक्षक श्री एस.पी. सिंह राठौड का जन्म पांच अगस्त, 1940 को उत्तर प्रदेश में हुआ। आप 1964 में भारतीय पुलिस सेवा में चुने गये तथा जालौर, अलवर, गंगानगर और जयपुर के जिला पुलिस अधीक्षक, अजमेर में रेलवे पुलिस और सी.आई.डी. जयपुर में अपराध शाखा के अधीक्षक रहे। राजस्थान पुलिस अकादमी के आप निदेशक तथा कम्प्यूटर सहित उदयपुर और जयपुर रेंज तथा पुलिस मुख्यालय में उप महानिरीक्षक भी रह चुके हैं।

श्यामसुन्दर आचार्य—राजस्थान के वरिष्ठ पत्रकार और "नवभारत टाइम्स" के जयपुर संस्करण के स्थानीय सम्पादक श्री श्यामसुन्दर आचार्य का जन्म एक फरवरी, 1938 को जैसलमेर में हुआ। आपकी शिक्षा नियमित नहीं हुई और पत्रकारिता में प्रवेश के बाद स्वयंपाठी छात्र के रूप में आपने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

श्री आचार्य ने 1957 में "हिन्दुस्थान समाचार" समिति के जयपुर ब्यूरो में रिपोर्टर के रूप में कार्य शुरू किया और अपनी अटूट लगन, कठोर परिश्रम और बहुमुखी प्रतिभा के कारण 1960 में कलकत्ता और 1964 में पटना के ब्यूरो प्रमुख बन गये। 1967 में पुनः जयपुर आये और 1981 तक राजस्थान ब्यूरो के प्रमुख रहे। 1968 में आपने युद्ध संवाददाता का प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1982 के प्रारंभ में आप हि.स. के उप महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नत होकर दिल्ली मुख्य कार्यालय में चले गये। 1983–84 में आपने "राष्ट्रदूत" का दिल्ली में प्रतिनिधित्व किया तथा 1984–85 में "जनसत्ता" के समाचार सम्पादक रहे। "राष्ट्रदूत" में प्रकाशित आपके एक विशेष समाचार पर आपको 1985 में पत्रकारिता का "माणक पुरस्कार" प्राप्त हुआ। मई 1986 में आप वर्तमान पद पर नियुक्त हुए।

श्यामसुन्दर व्यास—राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री व्यास का जन्म एक मई, 1928 को चित्तौडगढ़ जिले के छोटी सादड़ी कस्बे में हुआ। आपने विधि परीक्षा प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की।

5 दिसम्बर, 1956 को आपने मुंसिफ मजिस्ट्रेट के रूप में न्यायिक सेवा में प्रवेश किया। 28 जुलाई, 1967 को आपको सिविल न्यायाधीश, एक सितम्बर, 1968 को वरिष्ठ सिविल न्यायाधीश,

26 सितम्बर 1970 को अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश, 19 नवम्बर, 1973 को जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा 9 मई, 1983 को वर्तमान पद पर पदोन्नति हुई।

श्यामसुन्दर व्यास- स्वतंत्रता संग्राम में अपनी कलम और देह अंग्रेजों के विरुद्ध झोंकने वाले वरिष्ठ पत्रकार और साप्ताहिक "लोक जीवन" (जोधपुर) के सम्पादक श्री श्यामसुन्दर व्यास का जन्म 21 सितम्बर, 1921 को जोधपुर में एक सामान्य ब्राह्मण परिवार में हुआ। छात्र जीवन में ही आप क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़ गये। जोधपुर द्वितीय बमकांड के आप मुख्य अभियुक्तों में से थे जिन्हें 1943 में नागौर में पुलिस ने हाथों में हथकड़ियां और पैरों में बेड़ियां डालकर गिरफ्तार किया। इससे पूर्व 1938–42 में आपने मारवाड़ प्रजा मंडल की गतिविधियों में श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में सक्रिय भागीदारी की। 1943 से 47 तक कारावास में रहे। 1948 से आप "लोक जीवन" साप्ताहिक के माध्यम से जन-जीवन की समस्याओं और कठिनाइयों को वाणी दे रहे हैं।

श्याम एस. अग्रवाल— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में पाली के जिला कलक्टर श्री श्याम एस. अग्रवाल का जन्म 27 दिसम्बर 1956 को उड़ीसा में हुआ। 1980 में आपका सेवा में चयन हुआ तथा आप अब तक अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) जोधपुर, जिलाधीश बांसवाड़ा, निदेशक राजस्थान-ऊर्जा विकास अभिकरण तथा प्रबन्ध निदेशक राजस्थान अनुसूचित जाति वित्त निगम आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

श्योपतसिंह (मक्कासर)— राजस्थान विधान सभा में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के एक मात्र विधायक श्री श्योपतसिंह श्री हरिराम मक्कासर के पुत्र हैं जो 1977 में बीकानेर क्षेत्र से जनता पार्टी के सांसद रह चुके हैं। आपका जन्म 29 दिसम्बर 1929 को गंगानगर जिले के मक्कासर ग्राम में हुआ। आप व्यवसाय से कृषक हैं तथा वर्षों से कम्युनिस्ट पार्टी से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। आप प्रथम बार 1957 में निर्दलीय, 1962 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और 1977 तथा 1985 में मार्क्सवादी पार्टी के प्रत्याशी के रूप में हनुमानगढ़ क्षेत्र से विधायक चुने गये। 1972 और 1980 के चुनावों में आप इसी क्षेत्र से पराजित हुए।

शकुन्तला नायर—देश-विदेश में विख्यात नृत्यांगना शकुन्तला नायर श्री भगवानदास वर्मा की पुत्री हैं जो स्वयं जाने-माने कोरियोग्राफर हैं। आपका जन्म 1942 में उदयपुर में हुआ और शिक्षा जयपुर में। आप महाराजा गर्ल्स स्कूल जयपुर के उस प्रथम एवं अंतिम बैच में शामिल थीं जिसने माध्यमिक परीक्षा में कत्थक को एक वैकल्पिक विषय के रूप में चुना था। बाद में विश्वविद्यालय स्तर पर कत्थक के शिक्षण की व्यवस्था नहीं होने के कारण इन्होंने कत्थक केन्द्र दिल्ली में स्व० सुन्दरप्रसाद जी महाराज के सान्निध्य में विधिवत प्रशिक्षण लिया। आप प्रारंभ में कत्थक केन्द्र में ही शिक्षक और नृत्यांगना रहीं। बाद में भारतीय कला केन्द्र नई दिल्ली की प्रसिद्ध रामलीला में बैले का कार्य किया और 1972 में फिजी में राष्ट्रीय प्रोग्रामर बनकर चली गईं।

शकुन्तला ने भारतीय कला केन्द्र की सेवा में रहते हुए ही कत्थकली के सुप्रसिद्ध नर्तक और कोरियोग्राफर श्रीकृष्णन नायर को अपना जीवन साथी चुना और शकुन्तला वर्मा से शकुन्तला नायर बन गई। विवाहोपरान्त श्री नायर ने सिडनी में एशिया डांस एण्ड म्यूजिक सेन्टर आफ आस्ट्रेलिया की स्थापना की और नायर दम्पति ने स्थायी रूप से वहीं रहना शुरू कर दिया। शकुन्तला को न्यूजीलैण्ड, फिजी, आस्ट्रेलिया और अन्य विदेशी विश्वविद्यालयों में भाषण और नृत्य प्रदर्शनों के अनेक अवसर मिले हैं। आप कत्थक और ओडिसी शास्त्रीय शैलियों में निपुण हैं और राजस्थानी सहित अन्य प्रदेशों की लोक शैलियों में भी नाचती रहती हैं।

शकुन्तला श्रीवास्तव— आमेर क्षेत्र की पूर्व विधायक तथा झोटवाड़ा पंचायत समिति की दो बार प्रधान रहीं सुश्री शकुन्तला श्रीवास्तव का जन्म 22 नवम्बर, 1930 को जयपुर में हुआ। आपने बी.ए., साहित्यरत्न, हिन्दीरत्न और प्रभाकर आदि उपाधियां प्राप्त की तथा प्रारंभ से ही सार्वजनिक कार्यों में सक्रिय रुचि के कारण 1947 में ही कांग्रेस की सदस्य बन गई। बीच में 1953 से 55 तक राज्य सेवा में जयपुर की जेलर रही। इसके बाद कांग्रेस से पुनः जुड़ गई और 1965 में प्रथम बार झोटवाड़ा पंचायत समिति की प्रधान चुनी गई। 1967 में आपने आमेर क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधान सभा का चुनाव लड़ा लेकिन सफल नहीं हो सकी। बाद में 1972 में इसी क्षेत्र से विधायक चुनी गई। 1982 में पुनः झोटवाड़ा की प्रधान चुनी गई।

सुश्री श्रीवास्तव स्वयं यद्यपि अविवाहित हैं लेकिन उनको व्यक्तिगत लगन, कठोर परिश्रम और प्रयासों के फलस्वरूप अपनी पंचायत समिति क्षेत्र के सन्तान उत्पन्न करने योग्य लगभग 90 प्रतिशत जोड़ों की नसबंदी कराने में सफलता प्राप्त हुई है जो प्रदेश में एक कीर्तिमान है।

शंकरशरण— भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में पुलिस महानिरीक्षक (सी.आई.डी.) श्री शंकरशरण का जन्म सात अप्रेल, 1935 को उत्तरप्रदेश में हुआ। आप 1959 में भा० पु० सेवा में चुने गये तथा नागौर, बीकानेर, उदयपुर और अलवर जिलों के पुलिस अधीक्षक रहने के बाद जनताराज में विधि विभाग में तथ्यान्वेषण समिति में उप महानिरीक्षक, जोधपुर और कोटा रेंज के उप महानिरीक्षक, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन मंत्रालय में उपनिदेशक (सुरक्षा) एवं पदेन उप महानिदेशक नागरिक उड्डयन विभाग तथा राज्य में पुलिस महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

शंकर सरोलिया—भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में सहायक पुलिस महानिरीक्षक (यातायात) जयपुर श्री सरोलिया का जन्म 16 जुलाई, 1945 को चूरू जिले के सुजानगढ़ कस्बे में हुआ। आपने राजस्थान वि.वि. से अंग्रेजी साहित्य, लोक-प्रशासन और समाजशास्त्र आदि विषयों में एम.ए. किया जिनमें समाजशास्त्र और लोक-प्रशासन में स्वर्णपदक प्राप्त किये। 1970 में आपका रा० पु० सेवा में चयन हुआ और प्रारंभ में सवाईमाधोपुर, श्रीगंगानगर, बारां तथा जयपुर में उप अधीक्षक, पुलिस प्रशिक्षण स्कूल किशनगढ़ में कमांडेंट तथा टोंक और सी.आई.डी. (सुरक्षा) में अतिरिक्त अधीक्षक के रूप में नियुक्ति हुई।

श्री सरोलिया पुलिस सम्बन्धी विषयों के जाने-माने लेखक हैं। इसके लिए आपको सात विभिन्न वर्षों में प्रधानमंत्री रजत कप प्रदान कर सम्मानित किया जा चुका है। इसके साथ ही पुलिस-विज्ञान तथा लोक-प्रशासन के क्षेत्र में सम्पादित आपके शोध कार्यों को वर्ष 1981 तथा 1982 में क्रमशः पुलिस मेमोरियल निबन्ध प्रतियोगिता तथा भारतीय लोक-प्रशासन संस्थान (आई.आई.पी.ए.) की राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत किया जा चुका है। आपके द्वारा सम्पादित शोध कार्यों में "पुलिस ट्रेनिंग इन राजस्थान", "इंटर जनरेशनल मोबिलिटी" तथा "भारतीय पुलिस-सन्दर्भ एवं परिप्रेक्ष्य" पर आपको राज्य सरकार ने गणतंत्र दिवस 1989 पर तीन हजार रुपये नकद तथा योग्यता प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

शंकरसहाय सक्सेना—राजस्थान के प्रमुख शिक्षा शास्त्री और महाविद्यालयी शिक्षा विभाग राजस्थान के पूर्व निदेशक श्री शंकरसहाय सक्सेना का जन्म 8 अगस्त, 1904 को उत्तरप्रदेश के एटा नामक ग्राम में हुआ। आपने अर्थशास्त्र में एम.ए. किया। कई वर्षों तक महाराणा भूपाल कॉलेज उदयपुर के प्राचार्य तथा राज्य कॉलेज शिक्षा विभाग के निदेशक रहे। राज्य सेवा से अवकाश प्राप्त करने के बाद कृषि

वर्षों तक आप वनस्थली विद्यापीठ के भी आचार्य रहे। आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें विजयसिंह पथिक एवं माणिक्यलाल वर्मा की जीवनियां प्रमुख हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी 1985-86 में आपको विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित कर चुकी है।

शरद देवड़ा—प्रदेश के प्रमुख साहित्यकार और पत्रकार तथा दैनिक "अणिमा" के प्रधान सम्पादक श्री देवड़ा का जन्म सीकर जिले के फतहपुर कस्बे में दो अप्रेल 1934 को हुआ। कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कालेज से 1954 में अंग्रेजी (आनर्स) में बी.ए. और कलकत्ता विश्वविद्यालय से 1957 में हिन्दी में एम.ए. किया।

छात्र-जीवन से ही लेखन और पत्रकारिता की शुरुआत करने वाले श्री देवड़ा ने 1956 से 58 तक "सुप्रभात" मासिक, 1958 से 64 तक विख्यात मासिक "ज्ञानोदय" और 1965 से मासिक "अणिमा" का सम्पादन किया। वर्तमान में जयपुर से दैनिक "अणिमा" का प्रकाशन कर रहे हैं। आपकी प्रमुख कृतियों में पत्थर का लैम्प पोस्ट, कथान्तर, युग-चिन्तन, एक आलोचक की नोट बुक, टूटती इकाईयां तथा कांग्रेस स्ट्रीट के नये मसीहा आदि प्रमुख हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी 1986-87 में आपको विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित कर चुकी है।

शरद नेवटिया—"शक्ति" ब्रांड सीमेन्ट के निर्माता उदयपुर सीमेन्ट वर्क्स के मुख्य अधिशासी श्री शरद कुमार नेवटिया मूलतः सीकर जिले के फतहपुर कस्बे के निवासी हैं लेकिन आपका जन्म 28 अप्रेल, 1937 को बम्बई में हुआ। आपकी शिक्षा भी बम्बई में हुई। प्रारंभ में आप मुकुन्द आयरन एण्ड स्टील वर्क्स लि. में रहे। आप लायंस क्लब उदयपुर के अध्यक्ष तथा एम्पलायर्स एसोसियेशन आफ राजस्थान की कार्यकारिणी के सदस्य रह चुके हैं। वर्तमान में आप उदयपुर चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री के भी अध्यक्ष हैं।

शांतनुकुमार— भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में उप महानिरीक्षक आर.ए.सी. श्री शांतनुकुमार का जन्म आठ अप्रेल, 1943 का भरतपुर जिले में हुआ। आप 1966 में भा० पु० सेवा में चुने गये तथा अलवर, भीलवाड़ा, कोटा और जोधपुर के जिला पुलिस अधीक्षक, राजस्थान पुलिस अकादमी के प्राचार्य, सहायक महानिरीक्षक पुलिस (यातयात) जयपुर, उप महानिरीक्षक (मुख्यालय), उपमहानिरीक्षक जयपुर एवं कोटा रेंज तथा जयपुर में सी.आई.डी. (अपराध शाखा) आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

शान्ता भानावत (डा० श्रीमती)—श्री वीर बालिका महाविद्यालय जयपुर की प्राचार्य डा० श्रीमती शान्ता भानावत का जन्म 6 मार्च, 1939 को चित्तौड़गढ़ जिले के छोटी सादड़ी कस्बे में हुआ। आपने राजस्थान वि.वि. से एम.ए. और पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। आप जाने-माने साहित्यकर्मी डा० नरेन्द्र भानावत की सहधर्मिणी हैं। आपकी राजस्थानी भाषा में "महावीर-री-ओलखाण" और हिन्दी में "चरित्र निर्माण में नारी की भूमिका" पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कहानी-लेखन और सामाजिक कार्यों में आपकी विशेष रुचि है।

शान्ता व्यास (श्रीमती)— ...ा की अधिकारी तथा वर्तमान में ग्रामीण-... उप सचिव (तृतीय) श्रीमती ... स्वतंत्रीय ... समाज-शिक्षा ... पद के लिए ... में आपको

आर.ए.एस. की वरिष्ठ तथा जुलाई 1984 में चयन वेतन वेतन श्रृंखला प्रदान की गई। आप पूर्व में भी इस विभाग में उप विकास आयुक्त (जांच), राजस्थान समाज-कल्याण सलाहकार बोर्ड में सचिव, जयपुर-विकास प्राधिकरण में भूमि अवाप्ति अधिकारी तथा अतिरिक्त जिलाधीश (भूमि रूपान्तरण) आदि पदों पर कार्य कर चुकी हैं।

शांतिकुमार धारीवाल—कोटा क्षेत्र से दिसम्बर 1984 में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित लोकसभा सदस्य श्री शांतिकुमार धारीवाल का जन्म कोटा में 1943 में हुआ। आप राजस्थान के पूर्व उद्योग मंत्री श्री रिखबचन्द धारीवाल के पुत्र हैं तथा व्यवसाय से वकील हैं। आप 1962 में महाराजा कालेज जयपुर के छात्र संघ के महामंत्री, 1965 में राजकीय महाविद्यालय कोटा की छात्र संसद के अध्यक्ष, 1968 में राजस्थान यूथ कौंसिल के अध्यक्ष 1972 में प्रदेश कांग्रेस के सदस्य, 1975 में शहर जिला कांग्रेस कोटा के महामंत्री तथा 1980 में कोटा देहात जिला कांग्रेस (इ) के महामंत्री रहे। 1982 में आप कोटा के जिला प्रमुख निर्वाचित हुए।

शान्तिलाल भारद्वाज 'राकेश'—हाड़ौती अंचल के जाने-माने हिन्दी कवि श्री भारद्वाज का जन्म 24 जून, 1932 को कोटा जिले की किशनगंज तहसील के जलवाड़ा ग्राम में हुआ। आपने हिन्दी और राजनीति विज्ञान में एम.ए. तथा पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की। आप प्रारम्भ में जयपुर से प्रकाशित दैनिक "नवयुग" तथा "राष्ट्रदूत" में सह सम्पादक तथा मासिक "राष्ट्रभाषा" और राजस्थान-साहित्य अकादमी की पत्रिका "मधुमति" के सम्पादक रहे। कुछ अर्से तक आप अकादमी के निदेशक तथा माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय उदयपुर के उपाचार्य भी रहे।

श्री राकेश की प्रकाशित कृतियों में समय-की-धार (काव्य-संग्रह), अंधेरे-के-साथी (प्रेरक चरित्र), आधुनिक राजस्थानी साहित्य, परीक्षित (खण्ड-काव्य), सूर्यास्तु, प्रेम और जीवन (उपन्यास), शामिल हैं। इनके अलावा प्रकृति, मानव और विज्ञान, साहित्य गौरव, प्रतिनिधि कहानियां, कथा-कलश, कथा-की-कड़ियां तथा गद्य-पद्य सोपान आदि संपादित कृतियां हैं। "सूर्यास्तु" राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कृत हो चुकी है। सम्प्रति आप हाड़ौती शोध-संस्थान कोटा के निदेशक हैं।

शिवकुमार मानसिंगका—राजस्थान चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री, जयपुर के सन् 1980 से अध्यक्ष पद पर निरंतर कार्यरत श्री एस.के. मानसिंगका का जन्म 10 नवम्बर, 1940 को भीलवाड़ा में हुआ। आपने एम.काम. तक शिक्षा प्राप्त की है। आप मेवाड़ चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री के भी पहले उपाध्यक्ष और बाद में अध्यक्ष रह चुके हैं। इसी प्रकार आप फेडरेशन आफ इंडियन चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री (फिक्की), इण्टरनेशनल चेम्बर आफ कामर्स की भारतीय राष्ट्रीय समिति, राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल, राजस्थान सरकार की न्यूनतम वेतन सलाहकार समिति, भारतीय औद्योगिक वित्त निगम की स्थानीय समिति तथा हिन्दी साहित्य संस्थान विद्यापीठ उदयपुर की संचालिका सभा आदि संस्थाओं के सदस्य रह चुके हैं। दी बैंक आफ राजस्थान लि. के निदेशक मंडल के आप 1962 से निरन्तर सदस्य, मेवाड़ शुगर मिल्स लि० भूपाल सागर के निदेशक तथा पद्मावती इन्वेस्टमेंट प्रा० लि० भीलवाड़ा के प्रबन्ध निदेशक हैं। लायंस डिस्ट्रिक्ट 323 ई. के आप 1977-78 में डिप्टी गवर्नर रह चुके हैं।

शिव गौतम (डा०)—राजस्थान के जाने-माने मनोचिकित्सक तथा वर्तमान में सवाई मानसिंह मेडीकल कालेज में मनोचिकित्सा विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डा० शिव गौतम का जन्म सन 1952 की महाशिवरात्रि को झुंझुनूं जिले के चिराणा ग्राम में हुआ। आपने एम.बी.बी.एस. जनवरी 1973 में एस.एम.एस. मेडीकल कालेज जयपुर से तथा डी.पी.एम. और एम.डी. क्रमशः 1976 और 1978 में

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं स्नायु विज्ञान संस्थान बंगलौर से किया। आप 1972 से 74 तक मेडीकल छात्रों और 1980 से 86 तक शिक्षक प्रतिनिधि के रूप में राजस्थान वि.वि. की सीनेट के सदस्य रहे। आपको मानसिक रोगों पर किये गये शोध कार्यों तथा तत्सम्बन्धी शोध पत्रों के प्रकाशन पर 1986 में भगवत पुरस्कार, 1988 में पूना साइकेट्रिक सोसायटी पुरस्कार तथा 1989 में तिलक ओरसन अवार्ड प्राप्त हो चुका है। 1989 में ही आपका एक शोध पत्र अमेरिका, इंगलैण्ड और शिकागो से प्रकाशित होने वाली ''ईयर बुक आफ मैंटल हेल्थ'' में उद्धृत किया गया है जो कैंसर रोगियों के साथ चिकित्सकों के व्यावहारिक मनोविज्ञान के बारे में गत वर्ष एक ब्रिटिश जर्नल में प्रकाशित हुआ था। इस ईयर बुक में विश्वभर के वर्ष के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशित शोध पत्रों का चयन कर संकलन के रूप में प्रकाशित किया जाता है।

शिवचरण माथुर—राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री शिवचरण माथुर का जन्म 14 फरवरी 1926 को यद्यपि मध्यप्रदेश के गुना जिले के नाहीकानूगो ग्राम में हुआ, लेकिन शिक्षा और कार्यक्षेत्र प्रारम्भ से ही राजस्थान रहा। आपने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की है।

श्री माथुर ने छात्र जीवन से ही स्वतन्त्रता आंदोलन की गतिविधियों में सक्रिय भाग लिया। 1953 से 59 तक भीलवाड़ा स्थित भूपाल माइनिंग वर्क्स के व्यवस्थापक, 1958–59 में भीलवाड़ा नगरपालिका के अध्यक्ष और 1963 में भीलवाड़ा के जिला प्रमुख चुने गये। 1964 की मई में आप भीलवाड़ा क्षेत्र से लोकसभा के उपचुनाव में विजयी हुए और 1967 में मांडल तथा 1972, 1980 और 1985 के आम चुनावों में मांडलगढ़ क्षेत्र से विधानसभा सदस्य चुने गये। 1977 की जनता लहर में आप पराजित हो गये थे।

श्री माथुर प्रथम बार 5 सितम्बर 1967 को श्री मोहनलाल सुखाड़िया की सरकार में शिक्षा मन्त्री नियुक्त हुए लेकिन अगस्त 1968 में विधानसभा में विपक्षी दलों द्वारा लगाये गये एक आरोप से क्षुब्ध होकर त्यागपत्र दे दिया। नवम्बर 1968 में पुन: मन्त्री बनाये गये और 8 जुलाई 1971 को सुखाड़िया मंत्रिमंडल के त्यागपत्र तक पद पर रहे। लेकिन दूसरे ही दिन 9 जुलाई 1971 को आप बरकतुल्ला खां मंत्रिमंडल में पुन: शामिल कर लिए गये और 15 मार्च, 1972 को विधान सभा चुनावों के बाद नई सरकार के गठन तक कार्य किया। श्री बरकतुल्ला खां के निधन के बाद श्री हरिदेव जोशी के नेतृत्व में गठित मंत्रिमंडल में आप 25 अक्टूबर, 1973 को पुन: कृषि तथा पशुपालन मंत्री नियुक्त किये गये और 29 अप्रेल, 1977 को केन्द्र की नई जनता सरकार द्वारा बर्खास्त किए जाने तक पद पर रहे।

12 जुलाई, 1981 को श्री पहाड़िया की सरकार के त्यागपत्र दे देने के साथ ही श्री माथुर 14 जुलाई 1981 को राज्य के आठवें मुख्यमन्त्री बने। 22 फरवरी 1985 को डीग में पुलिस [illegible] राजा मानसिंह की मृत्यु के कारण उत्पन्न विवाद पर आपने कांग्रेस उच्च सत्ता के निर्देश पर त्यागपत्र दे दिया।

20 जनवरी, 1988 को श्री हरिदेव जोशी द्वारा कांग्रेस उच्च सत्ता के निर्देश पर त्यागपत्र दे देने के फलस्वरूप आप सर्वसम्मति से कांग्रेस (इ) विधायक दल के पुन: नेता चुने गये और [illegible] राज्य के ग्यारहवें मुख्यमन्त्री के रूप में शपथ ग्रहण की। इसी के साथ [illegible] कार्मिक [illegible] अभियोग निराकरण, सामान्य प्रशासन, राजनैतिक, मन्त्रिमण्डल सचिवालय, गृह विभाग [illegible] सहित), आयोजना (जनशक्ति), वित्त एवं कराधान, राज्य बीमा, राज्य लाटरी, [illegible] ऊर्जा एवं वैकल्पिक स्रोत, आर्थिक एवं सांख्यिकी तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी [illegible] सम्भाला। बाद में पुन 1989 में हुए मंत्रिमंडलीय फेरबदल के फलस्वरूप [illegible] लाटरी तथा राज्य बीमा और विभागों को हटाकर प्राथमिक शिक्षा [illegible] योजना संगठन और विभाग अपने पास रख लिए।

शिवचरणसिंह—राजस्थान के पूर्व मंत्री तथा वर्तमान में करौली क्षेत्र के भाजपा विधायक श्री शिवचरणसिंह का जन्म 13 मई, 1928 को करौली में हुआ। आप हाई स्कूल तक शिक्षित हैं। आरम्भ से ही राजनीति में सक्रिय श्री सिंह ने पहली बार 1962 में स्वतंत्र टिकिट पर मण्डरायल क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव लड़ा किन्तु पराजित हुए। लेकिन 1967 के चुनाव में विधायक चुन लिए गये और 5 सितम्बर, 1967 से 8 जुलाई, 1971 तक सुखाड़िया सरकार में उपमंत्री रहे। 1972 के चुनाव में करौली क्षेत्र से स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में पुनः पराजित हुए लेकिन 1977 में भरतपुर जिले के बयाना क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुन लिए गये। बाद में आप जनता पार्टी में शामिल हो गये और 20 दिसम्बर, 1979 से 16 फरवरी, 1980 तक शेखावत सरकार में परिवहन विभाग के कैबिनेट मंत्री रहे। 1980 में आपने चुनाव नहीं लड़ा और 1985 में भाजपा टिकिट पर करौली से पुनः विधायक निर्वाचित हुए।

शिवनन्दन जैन—भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भरतपुर रेंज के उप महानिरीक्षक श्री एस.एन. जैन का जन्म 6 नवम्बर, 1944 को पंजाब में हुआ। आपने 1969 में सेवा में प्रवेश किया और गंगानगर, नागौर, जोधपुर तथा दो बार कोटा के जिला पुलिस अधीक्षक, राजस्थान पुलिस अकादमी के प्राचार्य, अजमेर रेंज तथा सुरक्षा के उप महा निरीक्षक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

शिवनारायण (पाठक)—कोटा जिले के बारां क्षेत्र से 1985 के आम चुनाव में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री शिवनारायण 1972 में भी इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। 1967,77 और 80 के चुनावों में भी आपने कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में भाग्य आजमाया लेकिन सफल नहीं हो सके। आपका जन्म आश्विन कृष्णा 14, सम्वत् 1984 को क्षेत्र के फतहपुर ग्राम में हुआ। आपने मिडिल तक शिक्षा प्राप्त की है और 1965 से 72 तक बारां पंचायत समिति के प्रधान तथा राजस्थान राज्य कृषि-उद्योग निगम के निदेशक मण्डल के भी आप सदस्य रह चुके हैं।

शिवराम शर्मा—राजस्थान की राजधानी जयपुर के बनीपार्क क्षेत्र से 1980 और 85 के चुनावों में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री शिवराम शर्मा का जन्म 30 मार्च, 1940 को जयपुर में हुआ। आपने हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त की है। आप अखिल भारतीय हरियाणा ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष भी हैं।

शीशराम ओला—राजस्थान के सिंचाई, रावी-व्यास नदियों के सिस्टम से संबंधित कार्य, आबकारी तथा सैनिक-कल्याण आदि विभागों के मंत्री श्री शीशराम ओला का जन्म 30 जुलाई, 1927 को झुंझुनूं जिले के अरड़ावता ग्राम में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ। आपने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की और 1948 से 51 तक अरड़ावता ग्राम पंचायत के सरपंच तथा 1960 से 77 तक झुंझुनूं के जिला प्रमुख रहे। 1957 और 1962 के चुनावों में आप कांग्रेस टिकिट पर खेतड़ी क्षेत्र से विधायक चुने गये लेकिन 1967 में पराजित हो गये। बाद में 30 जून, 1969 को खेतड़ी क्षेत्र से ही उपचुनाव में पुनः विजयी हुए। 1972 और 1977 में आप पिलानी तथा 1990 तथा 1985 के चुनावों में झुंझुनूं क्षेत्र से विधायक चुने गये। 1980 में आपने झुंझुनूं क्षेत्र से लोकसभा का भी चुनाव लड़ा लेकिन सफल नहीं हो सके।

श्री ओला प्रथम बार 18 फरवरी, 1981 को पहाड़िया मंत्रिमंडल में और इसके बाद 20 जुलाई, 1981 को माथुर मंत्रिमंडल में ग्रामीण-विकास एवं पंचायती राज तथा सैनिक-कल्याण विभाग के प्रभारी राज्यमंत्री नियुक्त किये गये। 1985 के विधान सभा चुनाव के बाद जोशी मंत्रिमंडल में 11 मार्च को सहकारिता, वन, पर्यावरण और सैनिक कल्याण आदि विभागों के प्रभारी राज्यमंत्री बनाये गये और 16

अक्टूबर 85 को कैबिनेट मंत्री के रूप में पदोन्नत किये गये। अन्तिम मंत्रिमंडल में आप 6 फरवरी 88 को सम्मिलित किये गये और पुनः इन्हें सैनिक-कल्याण विभाग का दायित्व सौंपा गया। अन्ततः उनका 12 जून 1989 को निधन हो गया।

श्री ... को सैनिक-कल्याण कार्यों में विशिष्ट योगदान के लिए केन्द्र सरकार ने 1969 में "पद्मश्री" से अलंकृत किया था।

शेरसिंह (चिरंडोदा)— भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी श्री शेरसिंह का जन्म 21 जनवरी 1924 को जयपुर जिले के चिरंडोदा ग्राम में यहां के जागीरदार परिवार में हुआ। आपने एम.ए. और एलएल.बी. की उपाधियां प्राप्त की तथा जयपुर के पूर्व महाराजा के निजी सचिव नियुक्त हुए। बाद में राजस्थान का निर्माण होने पर आपको एक दिसम्बर 1951 को भा० प्र० सेवा में पदोन्नत किया गया। आपने जयपुर के अतिरिक्त जिलाधीश, बूंदी और भरतपुर के जिलाधीश, भू-प्रबन्ध अधिकारी रहे तथा बाद में राज्य के भू-प्रबन्ध आयुक्त, पुनर्वास आयुक्त, वाणिज्यिक कर आयुक्त, सार्वजनिक निर्माण, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, सिंचाई, खान एवं ग्रामोद्योग तथा सहकारिता आदि विभागों के आयुक्त तथा पदेन शासन सचिव, निर्वाचन आयुक्त एवं निर्वाचन सचिव तथा जयपुर नगर के पुनर्वास आयुक्त एवं शासन सचिव आदि पदों पर कार्य किया।

सगतसिंह (ब्रिगेडियर)—1971 के भारत-पाक युद्ध में बांग्ला देश को पाकिस्तान के आधिपत्य से मुक्ति दिलाने वाले भारतीय सेना के लेफ्टिनेंट जनरल (अवकाश प्राप्त) सगतसिंह का जन्म 70 वर्ष पूर्व बीकानेर जिले के कुसुमदेसर ग्राम में यहां के जागीरदार ठाकुर बृजलालसिंह के यहां हुआ। आपने बीकानेर की वाल्टर नोबल्स स्कूल तथा डूंगर कालेज में शिक्षा प्राप्त करने के बाद देहरादून स्थित इंडियन मिलिटरी अकादमी में प्रशिक्षण प्राप्त किया। अक्टूबर 1941 में आपको सेना में कमीशन मिला और 1941 से 45 तक द्वितीय विश्व युद्ध में आपने मध्य-पूर्व में कार्य किया। 1942 में हैफा और 1945 में क्वेटा के स्टाफ कालेज में प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा 1964 में नेशनल डिफेंस कालेज नई दिल्ली में ग्रेजुएशन किया। 1961 में आपने हेलीकॉप्टर पैराट्रूप ब्रिगेड की कमान संभाली थी और चार बड़ी नदियां तथा पर्वतीय क्षेत्र 48 घंटों की अल्पावधि में पार कर ढाका की राजधानी पर कब्जा किया। 1965 में सिक्किम में भारत पर चीनी आक्रमण और चुनौती के समय आप 17वें माउन्टेन डिवीजन के जी ओ सी थे। 1969 में अपनी विशिष्ट सेवा के लिए "परम विशिष्ट सेवा पदक" और 1971 के भारत-पाक युद्ध में अद्वितीय शौर्य और पराक्रम प्रदर्शित करने के लिए "पद्मभूषण" से अलंकृत किया गया। 1975 में सैन्य-सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद आप लगभग 6 वर्षों तक स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर के निदेशक मंडल के सदस्य रहे।

सच्चिदानन्द सिन्हा (प्रो०)—राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० एस एन सिन्हा (55 वर्ष) ने विशिष्ट योग्यता के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद लन्दन विश्व विद्यालय से विशेष योग्यता के साथ स्नातकोत्तर और केलिफोर्निया विश्वविद्यालय से पीएच डी. की उपाधि प्राप्त की। मनोविज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य के लिए प्रतिष्ठित "सिगमा पी.एस.आई" पुरस्कार भी आपको प्राप्त हो चुका है। अमरिका, ब्रिटेन, टोकियो, यूरोप और भारत में प्रकाशित होने वाली विभिन्न विज्ञान पत्रिकाओं में आपके एक सौ से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इसके साथ ही "डायनैमिक्स आफ पार्टीसनल बिहेवियर" पर आपके द्वारा लिखित और "एबनार्मल साइकोलोजी" पर सम्पादित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रो० सिन्हा राजस्थान वि.वि. में मनोविज्ञान विभाग के 1973 से संस्थापक अध्यक्ष के साथ ही अब तक अन्य कई पदों पर भी रह चुके हैं। 1975 से 77 तक मुख्य अनुशासक और छात्र-कल्याण के अधिष्ठाता, 1983 से 86 तक समाज-विज्ञान संकाय के डीन तथा 1987 से सिण्डीकेट के

सदस्य रहे हैं। इसी के साथ आप कैलिफोर्निया, बर्कले, यू.एस.ए. तथा लन्दन आदि विश्वविद्यालयों विजिटिंग प्रोफेसर, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विशेषज्ञ समिति तथा विजिटिंग टीम के सदस्य हे 13 दिसम्बर, 1988 को आपको राजस्थान वि.वि. का कुलपति मनोनीत किया गया।

सज्जनकुमार अग्रवाल—पोलर पंखों की निर्माता पोलर फैन इण्डस्ट्रीज के अध्यक्ष श्री सज्जनकुमार अग्रवाल मूलतः नागौर जिले के मकराना कस्बे के निकटवर्ती ग्राम बरनू के निवासी हैं। इनके पिता व्यवसाय के सिलसिले में पहले मदनगंज-किशनगढ़ और 1930 के लगभग बिहार में किशनगंज चले गये जहां उन्होंने चावल और पटसन का कारोबार किया। श्री अग्रवाल ने बनारस से हाई स्कूल और विद्यासागर कालेज कलकत्ता से स्नातक किया। आपने कलकत्ता में ही रहकर प्रारम्भ में ओरियण्टल और उषा पंखों के लिए कुछ पुर्जों के निर्माण का कार्य शुरु किया। बाद में श्री चुन्नीलाल कोठारी के सहयोग से पोलर कम्पनी को खरीद लिया। यह आपकी लगन, कठोर परिश्रम और विश्वसनीयता का ही परिणाम है कि प्रारम्भ में पांच हजार पंखे प्रतिमाह बनाने वाली कम्पनी आज प्रतिमाह एक लाख पंखों निर्माण कर रही है।

सज्जनराज सुराणा—प्रमुख वकील तथा जयपुर अभिभावक संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री सुराणा का जन्म 18 मार्च, 1931 को सुमेरपुर में हुआ। बी.काम. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने वकालत शुरु की। आपने जन-हित के अनेक प्रतिष्ठा के मुकदमों में विजय प्राप्त की है। वर्तमान में आप राजस्थान बार कौंसिल के भी निर्वाचित सदस्य हैं। सन् 1985 में आप इंगलेण्ड, जर्मनी, फ्रांस, इटली, आस्ट्रिया और हालैण्ड आदि देशों की यात्रा कर चुके हैं।

सत्यनारायण खण्डेलवाल—भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में शासन विशिष्ट सचिव श्री एस.एन. खंडेलवाल का जन्म 22 फरवरी, 1933 को सीकर जिले के राणौली ग्राम में हुआ। आपने जयपुर में अध्ययन कर एम.काम. तथा विशारद की उपाधियां प्राप्त की। 1956 में आपका रा० प्र० सेवा में चयन हुआ। आप उप जिलाधीश साम्भरलेक, नगर दंडनायक बीकानेर, उपायुक्त वाणिज्यिक कर विभाग (अपील) जयपुर तथा अतिरिक्त जिलाधीश नागौर रहे। 1980 में आपकी भा० प्र० सेवा में पदोन्नति हुई और आपने अब तक शासन उपसचिव जनजाति उपयोजना, कृषि (विशिष्ट योजनायें), सिंचायी तथा ऊर्जा, रजिस्ट्रार राजस्व मंडल तथा जिलाधीश टोंक आदि पदों पर कार्य किया। आप तिलक नगर विकास समिति जयपुर के अध्यक्ष भी हैं।

सत्यनारायण जैन—भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में कोटा नगर के पुलिस अधीक्षक श्री एस.एन. जैन का जन्म 17 मार्च, 1956 को हरियाणा में हुआ। 1980 में आपने सेवा में प्रवेश किया और प्रशिक्षण समाप्ति के बाद आप मुख्यमंत्री सचिवालय में पुलिस अधीक्षक (सतर्कता) तथा बाड़मेर, सवाईमाधोपुर और भीलवाडा के जिला पुलिस अधीक्षक रहे।

सत्यनारायणसिंह—भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में पशुपालन एवं मत्स्य विभाग के निदेशक श्री सत्यनारायणसिंह का जन्म 16 जुलाई, 1935 को जयपुर में हुआ। आपने एम.काम., एलएल.बी. और साहित्यरत्न की उपाधियां प्राप्त की तथा 1957 में रा.प्र. सेवा में चुने गये। आप लक्ष्मणगढ़ (अलवर) में उपजिलाधीश, अजमेर में वाणिज्यिक कर अधिकारी, नगर परिषद के आयुक्त तथा प्रशासक, स्थानीय निकाय निदेशक तथा राजस्थान लघु उद्योग निगम के प्रबन्ध निदेशक रहे। 1981 में आपकी भा. प्र. सेवा में पदोन्नति हुई तथा आपने जैसलमेर एवं सवाईमाधोपुर के जिलाधीश, अतिरिक्त आयुक्त क्षेत्रीय विकास इंदिरागांधी नहर परियोजना बीकानेर,

अतिरिक्त आयुक्त जनजाति क्षेत्रीय-विकास योजना उदयपुर तथा दो बार सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग के निदेशक पद पर कार्य किया।

सत्यप्रकाश बिश्नोई—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राज्य के विकास आयुक्त तथा शासन सचिव ग्रामीण-विकास एवं पंचायतीराज श्री एस.पी. बिश्नोई का जन्म 23 नवम्बर, 1934 को उ० प्र० के सहारनपुर नगर में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से गणित में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की और 1957 में सेवा में प्रवेश किया। आप सहकारी विभाग में अतिरिक्त पंजीयक, वित्त, शिक्षा, कार्मिक, सामान्य प्रशासन एवं मंत्रिमंडलीय सचिवालय में शासन उप सचिव कृषि विभाग के निदेशक, जिलाधीश जैसलमेर, प्रतिनियुक्ति पर भारतीय खाद्य निगम में क्षेत्रीय प्रबन्धक, खाद्य मंत्रालय में उप महानिदेशक (खाद्य), राजस्थान वित्त निगम के प्रबन्ध निदेशक, शिक्षा, खाद्य एवं नागरिक रसद, सहायता, पशुपालन, भेड़ एवं ऊन तथा दुग्ध-विकास आदि विभागों के शासन सचिव तथा पदेन आयुक्त, भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर ग्रामीण-विकास मंत्रालय में संयुक्त सचिव गृह मंत्रालय में कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग तथा मंत्रिमंडलीय सचिवालय में अतिरिक्त सचिव रह चुके हैं। 1971–72 में आपकी प्रतिनियुक्ति बांगलादेश में रही। वर्तमान पद-स्थापन से पूर्व आप राज्य के विभागीय जांच आयुक्त पद पर कार्यरत थे।

सत्यप्रिय गुप्ता—भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में वित्त विभाग के शासन विशिष्ट सचिव श्री एस.पी. गुप्ता का जन्म 5 जनवरी 1952 को अजमेर में एक प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में हुआ। 1975 में आप सेवा में चुने गये तथा अब तक नगर दण्डनायक कोटा, कृषि विभाग में शासन उपसचिव, सिरोही तथा भीलवाड़ा के जिलाधीश, खाद्य एवं नागरिक रसद तथा सहायता विभाग में शासन विशिष्ट सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

सतीशकुमार—सन् 1962 में नई दिल्ली स्थित महात्मा गांधी के समाधि-स्थल राजघाट से मास्को, पेरिस तथा लन्दन आदि आणविक देशों की राजधानियों से होता हुआ अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन तक पद-यात्रा कर उपरोक्त देशों की जनता और शासकों को युद्ध की निवृत्ति और शांति का सन्देश देने वाले युवक सतीशकुमार का जन्म 1936 में चूरू जिले के डूंगरगढ़ कस्बे में एक सामान्य ओसवाल जैन परिवार में हुआ। आपका पूर्व नाम भैरवदान है। आठ वर्ष की अबोध आयु में आप हठ करके जैन साधु के रूप में दीक्षित हुए और साधु जीवन के कठोर नियमों का पालन करते हुए शास्त्रों का अध्ययन किया। संस्कृत और प्राकृत के लगभग दस हजार श्लोकों को कंठस्थ किया। बाद में लगभग 16–17 वर्ष की आयु में साधु का वेष त्याग दिया।

1962 में 26 वर्ष की आयु में जब आपने पैदल विश्व-यात्रा शुरु की तो अपने साथ में एक भी पैसा नहीं लिया। वर्तमान में आप इंगलैण्ड के एक देहात में अपनी विदेशी पत्नी और बच्चों के साथ रह रहे हैं। आपकी "बिना पैसे दुनिया का पैदल सफर" हिन्दी में तथा "नो डेस्टीनेशन" अंग्रेजी में प्रकाशित हो चुकी है। इन दिनों आप इंगलैण्ड की विचार प्रधान द्विमासिक पत्रिका "रिसर्जेंस" का सम्पादन कर रहे हैं।

सतीशकुमार—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्व मंडल के सदस्य श्री सतीशकुमार का जन्म 18 जनवरी, 1937 को उत्तर प्रदेश में हुआ। 1961 में आपका सेवा में चयन हुआ तथा आप जिलाधीश बीकानेर, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशक, अन्त्योदय, विशिष्ट योजना संगठन, स्वायत्त शासन, नगरीय-विकास एवं आवासन आदि विभागों के शासन सचिव, 1982 में जयपुर-विकास प्राधिकरण बनने पर प्रथम जयपुर-विकास आयुक्त तथा केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर वित्त मंत्रालय में नाबार्ड की विकास वालंटियर वाहिनी के महानिदेशक आदि पदों पर रह चुके हैं।

सतीशचन्द्र अग्रवाल—पूर्व केन्द्रीय वित्त राज्य मन्त्री श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल का जन्म 27 सितम्बर, 1927 को भरतपुर जिले के थूण ग्राम में हुआ। आपने एम.काम. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त कर 1953 में जयपुर में वकालत प्रारम्भ की। आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में 1947 में शामिल हुए। 1951 में जयपुर नगर भारतीय जनसंघ के मन्त्री बने तथा अगस्त 1956 में जयपुर नगर परिषद् के सदस्य चुने गये। 1957, 62 और 67 के चुनावों में आप जयपुर के जौहरी बाजार क्षेत्र से भारतीय जनसंघ के टिकिट पर विधायक चुने गये और राज्य विधान सभा जनसंघ दल के विभिन्न पदों पर कार्य किया। 1972 में आपने स्वेच्छा से चुनाव नहीं लड़ा। आपात काल में आप पूरे 19 महीने जेल में रहे और 1977 के लोकसभा चुनाव में जनता पार्टी के प्रत्याशी के रूप में जयपुर क्षेत्र से लोकसभा सदस्य चुने गये। बाद में श्री मोरारजी देसाई के मन्त्रिमण्डल में वित्त मन्त्रालय में राज्य मंत्री रहे।

1980 के लोकसभा चुनाव में श्री अग्रवाल जयपुर क्षेत्र से ही जनता पार्टी के टिकिट पर पुनः चुने गये और संसद की लोक लेखा समिति के अध्यक्ष बनाये गये। 1984 के चुनाव में आप इसी क्षेत्र से पराजित हुए। श्री अग्रवाल ने पूर्व में भारतीय जनसंघ के प्रदेशाध्यक्ष सहित विभिन्न पदों पर कार्य किया। दिसम्बर 1987 तक आप प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष रहे। आप जयपुर की विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक और स्वयंसेवी संस्थाओं से वर्षों से सम्बद्ध हैं।

सतीशचन्द्र शर्मा—राजस्थान प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन शृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में विभागीय जांच विभाग के अतिरिक्त निदेशक श्री सतीशचन्द्र शर्मा राज्य के अवकाश प्राप्त पुलिस महानिरीक्षक श्री गोवर्धन शर्मा के पुत्र हैं। आपका जन्म 22 मई, 1936 को गंगानगर जिले के सूरतगढ़ कस्बे में हुआ। आपने राज० वि.वि. से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। 1962 में आपका रा० प्र० सेवा में चयन हुआ तथा आप उप जिलाधीश किशनगढ़ तथा आमेर, सहायक आयुक्त खाद्य एवं रसद, उपनिदेशक एन.सी.सी., राज्यपाल के उपसचिव, राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में दो बार उप सचिव तथा गृह विभाग में शासन उप सचिव (परिवहन) आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

सन्तोषकुमार चौधरी—भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन शृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में मुख्यमंत्री सचिवालय में पुलिस अधीक्षक (सतर्कता) श्री एस.के. चौधरी जयपुर के मूल निवासी हैं जिनका जन्म 26 जनवरी, 1932 को इन्दौर में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में एम.ए. तथा एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त की। प्रारम्भ में आप डेढ़ वर्ष तक राजकीय महाविद्यालय सिरोही में व्याख्याता रहे। 1957 में आपका रा० पु० सेवा में चयन हुआ और आप डूंगरपुर, नीम-का-थाना तथा केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति पर सी.बी.आई. में उप अधीक्षक, जयपुर नगर, राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल और भ्रष्टाचार निरोधक विभाग में अतिरिक्त अधीक्षक रहे। 1983 में आपकी भारतीय पुलिस सेवा में पदोन्नति हुई और आप सी.आई.डी. (इंटेलीजेंस) में पुलिस अधीक्षक तथा राजस्थान राज्य विद्युत मंडल में निदेशक (सतर्कता एवं सुरक्षा) आदि पदों पर रहे।

सन्तोषदास श्रीवास्तव—भारतीय प्रशासनिक सेवा की चयन वेतन शृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग में शासन विशिष्ट सचिव (प्रथम) श्री एस.डी. श्रीवास्तव का जन्म 17 फरवरी, 1935 को उत्तरप्रदेश में हुआ। आप प्रारंभ में रा० प्र० सेवा में चुने गये और उपजिलाधीश नोहर तथा अतिरिक्त जिलाधीश कोटा आदि पदों पर रहे। 1979 में आपकी भा० प्र० सेवा में पदोन्नति हुई और वर्तमान पद-स्थापन से पूर्व आपने जिलाधीश चित्तौड़गढ़ और जोधपुर तथा रीको में कार्यकारी निदेशक के पद पर कार्य किया।

सम्पतराम—राजस्थान में सुखाड़िया और शेखावत मन्त्रिमण्डलों में विभिन्न विभागों के मन्त्री श्री सम्पतराम का जन्म 19 जून, 1926 को अलवर जिले की बहरोड़ तहसील के हवागी ग्राम में हुआ।

आपने राजर्षि कालेज अलवर से बी.ए. की उपाधि प्राप्त की और सक्रिय राजनीति में भाग लेने के लिए कांग्रेस में शामिल हो गये। 1952 के प्रथम आम चुनाव में आप राजगढ़ (सु) क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर निर्विरोध विधायक चुने गये। तत्पश्चात् 1957 के चुनाव में तिजारा क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर पुनः विधायक बने। 1962 और 1967 के विधान सभा चुनावों में आप क्रमशः तिजारा और कठूमर क्षेत्रों से पराजित हुए जबकि 1972 में खेरथल (सु) क्षेत्र से कांग्रेस और 1977 में इसी क्षेत्र से जनता पार्टी के टिकिट पर विधायक चुने गये। 1980 के चुनाव में आप कांग्रेस (उर्स) के टिकिट पर पुनः खेरथल (सु) क्षेत्र विजयी हुए जबकि 1985 के विधान सभा चुनाव में आप इसी क्षेत्र से भाजपा के टिकिट पर पराजित हुए।

श्री सम्पतराम मुख्यमंत्री सुखाड़िया मंत्रिमंडल में 11 अप्रेल 1957 को राजस्व एवं सामुदायिक विकास विभाग के उपमंत्री बनाये गये। बाद में 10 फरवरी 1960 को वन एवं स्वायत्त शासन विभाग के कैबिनेट मंत्री के रूप में पदोन्नत किये गये। इसके बाद 27 जून 1977 को आप श्री भैरोंसिंह शेखावत की सरकार में पुनः कैबिनेट मंत्री नियुक्त किये गये। 8 नवम्बर 1978 को आपको गृह, नागरिक सुरक्षा, कारागार और पुनर्वास आदि विभागों का मंत्री बनाया गया।

सम्पतसिंह—भरतपुर जिले के नगर क्षेत्र से 1985 के विधान सभा चुनाव में लोकदल टिकिट पर निर्वाचित श्री सम्पतसिंह का जन्म 15 अगस्त 1948 को डीग तहसील के डिहवाली ग्राम में एक सामान्य गुर्जर परिवार में हुआ। आपने विधि-स्नातक बनने के बाद वकालत प्रारम्भ की। राजनीति में आपकी छात्र जीवन से ही सक्रिय रुचि रही इसलिए प्रारम्भ में आप युवक कांग्रेस में शामिल हुए और कांग्रेस विभाजन पर इंदिरा कांग्रेस में रहे लेकिन गांवों और किसानों की अनदेखी के कारण आप किसान यूनियन की ओर आकृष्ट हुए। 1978 में आपने अपने क्षेत्र की ग्राम पंचायत के सरपंच का चुनाव लड़ा। 1980 में आपने लोकदल के टिकिट पर विधान सभा का चुनाव लड़ा लेकिन उसमें सफल नहीं हो सके। आप डीग अभिभावक संघ के महामंत्री और डीग सहकारी क्रय-विक्रय समिति के संचालक मंडल के सदस्य भी रह चुके हैं।

समरवीर पंवार—भारतीय पुलिस सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर भारत-तिब्बत सीमा पुलिस, देहरादून में पुलिस उप महानिरीक्षक श्री एस बी पंवार का जन्म चार जून, 1941 को उत्तर प्रदेश में हुआ। आप 1969 में भारतीय पुलिस सेवा में चुने गये और कोटा तथा अजमेर में जिला पुलिस अधीक्षक तथा सी.आई.डी. की अपराध शाखा में जयपुर में पुलिस अधीक्षक (प्रथम) रह चुके हैं।

सरोज खेमका—राजस्थान के प्रमुख समाज-सेवी एवं युवा उद्यमी श्री सरोज खेमका का जन्म 24 जनवरी, 1947 को कलकत्ता में एक प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में हुआ। आपने बी काम. की उपाधि प्राप्त कर उद्योग और व्यवसाय के क्षेत्र में प्रवेश किया। आप श्री कंटेनर्स प्रा० लि० जयपुर के निदेशक और कमल मेटल इंडस्ट्रीज तथा हिन्द उद्योग कार्पोरेशन के भागीदार हैं। श्री खेमका राजस्थान क्रिकेट एसोसियेशन के उपाध्यक्ष तथा प्रसिद्ध कला संस्था "सुरसंगम" के मुख्य संरक्षक भी हैं।

सहदेव शर्मा—राजस्थान की द्वितीय, चतुर्थ और पंचम विधान सभाओं के सदस्य रहे श्री सहदेव शर्मा का जन्म एक अगस्त, 1930 को सियालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) में एक सम्पन्न और प्रतिष्ठित पालीवाल ब्राह्मण परिवार में हुआ। 1947 में भारत विभाजन के बाद आपका परिवार 1948 में स्थायी रूप से जयपुर आ गया। आपने महाराजा कालेज जयपुर से हिन्दी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। आपके पिता और अन्य परिजनों का आजादी के संघर्ष के दौरान पंजाब के अनेक क्रांतिकारियों से निकट का

सिद्धराज ढड्ढा—विख्यात सर्वोदयी नेता, चिन्तक, विचारक, जयप्रकाश नारायण के अनन्यतम सहयोगी और अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री सिद्धराज ढड्ढा का जन्म फरवरी, 1909 में जयपुर में एक सामान्य ओसवाल जैन परिवार में हुआ। आपने राजनीति शास्त्र में एम.ए. और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एलएल.बी. किया। यहीं आपने श्री सादिक अली के साथ विश्वविद्यालय के सीनेट हाल पर तिरंगा झण्डा फहराया और यहीं आप पं. नेहरू के निकट सम्पर्क में आये। बाद में आपने मैसूर तथा जयपुर के उच्च न्यायालयों में वकालत की लेकिन झूठ और फरेब से दूर रहने की आदतों के कारण उसे छोड़ बैठे। आप प्रथम मारवाड़ी थे जो कलकत्ता स्थित भारत चैम्बर आफ कामर्स के 1934 से 42 तक सचिव रहे। लेकिन 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में कूदने के लिए आपने एक हजार रुपये प्रतिमास की इस नौकरी को लात मार दी। आप गिरफ्तार किए गए और 1943 से 45 तक बनारस जेल में बंद रहे।

1946 में आपने श्री हीरालाल शास्त्री के सहयोग से दैनिक "लोकवाणी" का प्रकाशन प्रारंभ किया और 1949 तक आप इसके प्रधान सम्पादक रहे। 1947–48 में आप तत्कालीन राजपूताना प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के महामन्त्री रहे तथा 1948 में जयपुर में आयोजित कांग्रेस के 55 वें महाधिवेशन की स्वागत समिति के संयुक्त मंत्री बनाये गये। 1949 में वृहत् राजस्थान का निर्माण होने पर आप श्री हीरालाल शास्त्री के मंत्रिमंडल में उद्योग एवं व्यापार मंत्री रहे। 1951 से आपने सक्रिय राजनीति को तिलांजलि दे गांधीवाद और सर्वोदयवाद का मार्ग अपनाया। समग्र सेवा संघ के अध्यक्ष के रूप में आपने देश भर के रचनात्मक कार्यकर्ताओं को संगठित किया। जून 1975 में आपातकाल लागू होते ही आप पटना में गिरफ्तार कर लिए गये। बाद में जनवरी 1977 तक आप राज्य की विभिन्न जेलों में बंद रहे।

वर्तमान में आप साप्ताहिक "ग्रामराज" का सम्पादन करने के साथ ही देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी लेखनी के माध्यम से सरकार और समाज की अनीतियों के प्रति जन-जागरण का कार्य कर रहे हैं।

सीताराम खण्डेलवाल—प्रमुख उद्योगकर्मी तथा राजस्थान चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री के अतिरिक्त मंत्री श्री सीताराम खण्डेलवाल का जन्म 13 अगस्त 1939 को जयपुर जिले के चौंमू ग्राम में हुआ। आपने राजस्थान वि.वि. से बी.काम. और एलएल.बी. की उपाधियां प्राप्त करने के बाद 1962 में जयपुर में खंडेलवाल इंजीनियरिंग इंडस्ट्रीज की स्थापना की। आप रोटरी क्लब जयपुर के अध्यक्ष, राजस्थान लघु उद्योग महासंघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, केन्द्रीय सरकार के राष्ट्रीय लघु उद्योग बोर्ड, संभागीय रेलवे उपभोक्ता परामर्शदात्री समिति तथा राजस्थान बिक्रीकर सलाहकार समिति के सदस्य, बाल शिक्षा मंदिर जयपुर के सचिव तथा राजस्थान लघु उद्योग निगम के निदेशक मंडल के सदस्य हैं।

श्री खंडेलवाल पूर्व में केन्द्रीय सरकार की आयकर विभाग की क्षेत्रीय तथा लघु उद्योग सेवा संस्थान की परामर्शदात्री समितियों के सदस्य, राष्ट्रीय लघु उद्योग महासंघ के उपाध्यक्ष तथा पूर्व मंत्री, राजस्थान लघु उद्योग निगम के निदेशक मंडल के सदस्य रह चुके हैं।

सीताराम झालानी—राष्ट्रीय समाचार समिति "हिन्दुस्तान समाचार" के प्रादेशिक ब्यूरो के प्रमुख तथा राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम झालानी का जन्म 30 [illegible], 1934 को जयपुर जिले के बगरू कस्बे में हुआ। आपने इण्टरमीडियट और विशारद परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। छात्र जीवन में ही पत्रकारिता की ओर विशेष झुकाव होने के कारण आपने "बगरू संदेश" हस्तलिखित पत्रिका निकाली तथा बगरू में दैनिक "लोकवाणी", "राष्ट्रदूत", साप्ताहिक "अमर ज्योति" और "प्रजासेवक" के संवाददाता रहे। 1954 में आप राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मुख पत्र साप्ताहिक "कांग्रेस सन्देश" के सहायक सम्पादक तथा फरवरी 1955 में "नवयुग" दैनिक का प्रकाशन शुरू होने पर उप सम्पादक नियुक्त हुए। जुलाई 1966 में हि. स. के जयपुर स्थित प्रदेश ब्यूरो में उप सम्पादक

बनाये गये जहाँ बाद में वरिष्ठ उप सम्पादक, विशेष संवाददाता और ब्यूरो प्रमुख बने। राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ की गतिविधियों से आप 1956 से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं तथा अब तक कार्यकारिणी सदस्य, कोषाध्यक्ष, महामंत्री, उपाध्यक्ष और दो बार अध्यक्ष रह चुके हैं।

अपने पत्रकारिता सम्बन्धी दायित्वों के निर्वहन के साथ ही समाज-सेवा और सहकारिता क्षेत्र में भी आपकी सक्रिय रुचि रही है। आप 1964 से 73 तक जयपुर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के निदेशक मंडल के निर्वाचित सदस्य तथा जयपुर, चौमू, अचरोल, सांभरलेक, शाहपुरा और दौसा स्थित सहकारी क्रय-विक्रय समितियों तथा चौमू और जयपुर कृषि-उपज मंडी (अनाज) समितियों के संचालक मंडलों में जयपुर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के प्रतिनिधि के रूप में सदस्य रह चुके हैं। 1973 से 75 तक जयपुर टेलीफोन सलाहकार समिति के भी आप सदस्य रहे।

फरवरी 1978 में आप बगरू ग्राम पंचायत के सरपंच चुने गये। अगस्त 1980 में आपके कार्यकाल में राज्य सरकार ने ग्राम पंचायत को नगर पालिका के रूप में क्रमोन्नत किया और आप प्रथम अध्यक्ष चुने गये। बगरू के परम्परागत वस्त्र-छपायी उद्योग को आपने नई दिशा देकर "बगरू प्रिंट" को विश्व के मानचित्र पर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आप 1978 से 1980 तक राजस्थान लघु उद्योग निगम के निदेशक मंडल के सदस्य रहे। वर्तमान में आप श्री [illegible] मंदिर सेवा ट्रस्ट बगरू के अध्यक्ष भी हैं।

सुखदेवप्रसाद—राजस्थान के राज्यपाल श्री सुखदेव प्रसाद का जन्म 20 मार्च, 1921 को उ० प्र० के गोरखपुर जिले के पीपडगंजी ग्राम में हुआ। आपने इंटरमीडिएट, साहित्यरत्न, आचार्य (प्रथम भाग) तथा उर्दू में आला काबलियत तक शिक्षा ग्रहण की है। आप 1936 में छात्र-जीवन में ही कांग्रेस में जुड़ गये तथा 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। 1952 में आप पहली बार उत्तरप्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गये। बाद में आप हरिजन एवं समाज-कल्याण मंत्री नियुक्त किये गये।

श्री सुखदेव प्रसाद 1966, 72 और 80 में राज्य सभा के सदस्य चुने गये और 1973 से 77 तक केन्द्रीय मंत्रिमंडल में इस्पात एवं खनिज उप मंत्री रहे। फरवरी 1982 से 1985 तक आप उत्तर प्रदेश कांग्रेस (इ) कमेटी के अध्यक्ष रहे। आप गोरखपुर की अनेक शैक्षणिक और सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं तथा समाज-सेवा के कार्यों में गहरी रुचि रखते हैं। आप नेपाल, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] और [illegible] की यात्रा कर चुके हैं।

20 फरवरी, 1988 से आप राजस्थान के राज्यपाल पद पर आसीन हैं।

[illegible]- राजस्थान के [illegible] एवं [illegible] के [illegible] मंत्री श्री [illegible] का जन्म 26 अक्टूबर, 1930 को [illegible] के [illegible] ग्राम में हुआ। [illegible] 1940 और 65 के [illegible] 16 अक्टूबर, 19[illegible] [illegible] 6 [illegible], 19[illegible] [illegible] 20 [illegible] 19[illegible] [illegible] 19[illegible] [illegible]

सुधाकर शास्त्री- 'दैनिक लोकवाणी' के वर्षों तक सम्पादक रहे श्री सुधाकर शास्त्री राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री स्वर्गीय हीरालाल शास्त्री के पुत्र हैं। आपका जन्म 13 दिसम्बर, 1929 को रतलाम (मध्यप्रदेश) में हुआ। आपने आगरा विश्वविद्यालय से बी.ए., कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में एम.ए. और बी.एल. की उपाधियां प्राप्त की। छात्र जीवन में आप विद्यार्थी कांग्रेस की गतिविधियों में सक्रिय रहे तथा 1946 में जयपुर राज्य विद्यार्थी कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। ''राष्ट्र-प्रदीप'' हस्तलिखित पत्रिका का प्रकाशन भी किया। एक अगस्त, 1954 से आपने 'लोकवाणी' का प्रबन्ध संभाला। 1 जुलाई, 1955 को प्रबन्ध सम्पादक, 12 नवम्बर, 1956 को लोकवाणी सोसायटी के मंत्री तथा 1 जुलाई, 1957 से प्रधान सम्पादक का दायित्व संभाला। आप अखिल भारतीय समाचार पत्र सम्पादक सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य तथा राजस्थान समाचार पत्र सम्पादक सम्मेलन के अध्यक्ष भी चुने गये। वर्तमान में वनस्थली विद्यापीठ के संचालन में सहयोग कर रहे हैं।

सुधीन्द्र गेमावत— भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान अनुसूचित जाति विकास निगम के प्रबन्ध निदेशक श्री सुधीन्द्र गेमावत का जन्म 14 मई, 1934 को सिरोही में हुआ। आपने जोधपुर से एम.ए और जयपुर से एलएल बी किया। 1957 में रा० प्र० सेवा में चुने गये और अतिरिक्त जिलाधीश अजमेर, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में शासन उप सचिव आदि पदों पर रहे। 1983 में आपकी भा.प्र. सेवा में पदोन्नति हुई और आप जिलाधीश सीकर, खाद्य एवं नागरिक रसद विभाग में अतिरिक्त आयुक्त तथा निदेशक अल्प बचत एवं राज्य लाटरी विभाग आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं। आप सिरोही समाज जयपुर के अध्यक्ष भी हैं।

सुधीर भार्गव—भारतीय प्रशासनिक सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान लोक सेवा आयोग के सचिव श्री सुधीर भार्गव का जन्म 12 जनवरी, 1955 को कलकत्ता में हुआ। 1979 में आपने सेवा में प्रवेश किया तथा अब तक आप अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) अजमेर नगर-विकास न्यास अलवर के सचिव तथा पदेन निदेशक राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परियोजना जिलाधीश टोंक, उप जिलाधीश जयपुर तथा अतिरिक्त आयुक्त उपनिवेशन इंदिरागांधी नहर परियोजना बीकानेर आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

सुधीर वर्मा—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में समाज-कल्याण विभाग के शासन सचिव श्री वर्मा राजस्थान के जाने-माने शिक्षा शास्त्री श्री एस.पी वर्मा के पुत्र हैं। आपका जन्म एक जून, 1943 को मेरठ में हुआ। आपने एम एससी की उपाधि प्राप्त की तथा 1967 में सेवा में प्रवेश किया। आप भरतपुर, जैसलमेर और टोंक के जिलाधीश, सामान्य प्रशासन विभाग में शासन उपसचिव, श्रम आयुक्त, अल्पबचत एवं राज्य लाटरी विभाग के निदेशक, आर्थिक एवं प्रशासनिक सुधार, मंत्रिमंडलीय सचिवालय तथा सामान्य प्रशासन और विभागों के शासन विशिष्ट सचिव, पर्यटन, जनजाति क्षेत्रीय विकास तथा पूर्व में भी समाज-कल्याण विभाग के शासन सचिव, राजस्व मंडल के सदस्य तथा राजस्थान भूमि विकास निगम के प्रबन्ध निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

सुन्दरलाल—झुंझुनूं जिले के सूरजगढ़ (सु.) क्षेत्र से कांग्रेस (इ) विधायक श्री सुन्दरलाल का जन्म 22 अगस्त, 1933 को जिले के कैलाश ग्राम में हुआ। आपने निर्धारित तक शिक्षा प्राप्त की और 1961 से 64 तक कैलाश ग्राम पंचायत के सरपंच रहे। सूरजगढ़ क्षेत्र से आप 1972 में प्रथम बार कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में विधायक चुने गये। 1977 की जनता लहर में आप पराजित हुए तथा 1980 में निर्दलीय और 1985 में पुनः कांग्रेस (इ) टिकिट पर विजयी हुए। आप राजस्थान प्रदेश कांग्रेस (इ) के उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं।

बनाये गये जहाँ बाद में वरिष्ठ उप सम्पादक, विशेष संवाददाता और ब्यूरो प्रमुख बने। राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ की गतिविधियों से आप 1956 से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं तथा अब तक कार्यकारिणी सदस्य, कोषाध्यक्ष, महामंत्री, उपाध्यक्ष और दो बार अध्यक्ष रह चुके हैं।

अपने पत्रकारिता सम्बन्धी दायित्वों के निर्वहन के साथ ही समाज-सेवा और सहकारिता क्षेत्र में भी आपकी सक्रिय रुचि रही है। आप 1964 से 73 तक जयपुर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के निदेशक मंडल के निर्वाचित सदस्य तथा जयपुर, चौमू, अचरोल, सांभरलेक, शाहपुरा और दौसा स्थित सहकारी क्रय-विक्रय समितियों तथा चौमू और जयपुर कृषि-उपज मंडी (अनाज) समितियों के संचालक मंडलों में जयपुर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के प्रतिनिधि के रूप में सदस्य रह चुके हैं। 1973 से 75 तक जयपुर टेलीफोन सलाहकार समिति के भी आप सदस्य रहे।

फरवरी 1978 में आप बगरू ग्राम पंचायत के सरपंच चुने गये। अगस्त 1980 में आपके कार्यकाल में राज्य सरकार ने ग्राम पंचायत को नगर पालिका के रूप में क्रमोन्नत किया और आप प्रथम अध्यक्ष चुने गये। बगरू के परम्परागत वस्त्र-छपायी उद्योग को आपने नई दिशा देकर "बगरू प्रिंट" को विश्व के मानचित्र पर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आप 1978 से 1980 तक राजस्थान लघु उद्योग निगम के निदेशक मंडल के सदस्य रहे। वर्तमान में आप श्री जुगल मंदिर सेवा ट्रस्ट बगरू के अध्यक्ष भी हैं।

सुखदेवप्रसाद--राजस्थान के राज्यपाल श्री सुखदेव प्रसाद का जन्म 20 मार्च, 1921 को उ० प्र० के गोरखपुर जिले के पीपडजंती ग्राम में हुआ। आपने इंटरमीडिएट, साहित्यरत्न, आचार्य (प्रथम भाग) तथा उर्दू में आला काबलियत तक शिक्षा ग्रहण की है। आप 1936 में छात्र-जीवन में ही कांग्रेस से जुड़ गये तथा 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। 1952 में आप पहली बार उत्तरप्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गये। बाद में आप हरिजन एवं समाज-कल्याण मंत्री नियुक्त किये गये।

श्री सुखदेव प्रसाद 1966, 72 और 80 में राज्य सभा के सदस्य चुने गये और 1973 से 77 तक केन्द्रीय मंत्रिमंडल में इस्पात एवं खनिज उप मंत्री रहे। फरवरी 1982 से 1985 तक आप उत्तर प्रदेश कांग्रेस (इ) कमेटी के अध्यक्ष रहे। आप गोरखपुर की अनेक शैक्षणिक और समाजिक संस्थाओं से संबद्ध हैं तथा समाज-सेवा के कार्यों में गहरी रुचि रखते हैं। आप नेपाल, लेबनान, फ्रांस, इंगलैण्ड, अमेरिका, कनाडा, जापान हांगकांग और हवाई द्वीप की यात्रायें कर चुके हैं।

20फरवरी, 1988 से आप राजस्थान के राज्यपाल पद पर कार्यरत हैं।

सुजानसिंह यादव- राजस्थान के मत्स्य एवं राज्य लाटरी विभाग के प्रभारी राज्य मंत्री श्री सुजानसिंह यादव का जन्म 26 अक्टूबर, 1930 को अलवर जिले के रामसिंहपुर ग्राम में हुआ। स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त हैं तथा व्यवसाय से कृषक और व्यापारी हैं। 1980 और 85 के चुनावों में अलवर जिले के बहरोड़ क्षेत्र से कांग्रेस (इ) प्रत्याशी के रूप में विधायक चुने गये। 16 अक्टूबर, 19 को आप श्री हरिदेव जोशी के मंत्रिमंडल में राज्यमंत्री के रूप में शामिल किये गये। 8 अप्रेल, 198 आपको उपरोक्त तीनों विभागों का स्वतंत्र कार्यभार सौंपने के साथ ही गृह, भ्रष्टाचार-निरोधक, सू जन-सम्पर्क, जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी तथा भू-जल आदि विभागों का भी राज्य मंत्री बनाया ग जनवरी, 1988 को जोशी मंत्रिमंडल के त्यागपत्र के साथ ही
जून, 1989 को श्री शिवचरण माथुर के मंत्रिमंडल में पुन: राज्य

सुभाष अग्रवाल—इण्डियन स्टिल्चेस इन्वेस्टमेंट सोसायटी के निदेशक श्री सुभाष अग्रवाल का जन्म [illegible] परिवार में 2 फरवरी, 1945 को हुआ। आप [illegible] के पुत्र हैं। आपने राजस्थान कालेज जयपुर से बी.ए. तथा [illegible] विश्वविद्यालय से [illegible] की उपाधि प्राप्त की। प्रारम्भ में आपने श्री रामसिंह यादव (एडवोकेट) के साथ जयपुर में वकालत की। बाद में कुछ समय तक राज्य-सेवा में रहे और अन्ततः त्यागपत्र देकर [illegible] का व्यवसाय प्रारम्भ किया। आप पश्चिम जर्मनी के विभिन्न स्थानों पर आयोजित व्यापारिक मेलों में भाग लेने के साथ ही इंग्लैण्ड, अमेरिका, फ्रांस, स्विट्जरलैण्ड और अन्य यूरोपीय देशों की यात्रा कर चुके हैं।

सुभाषचन्द्र टंडन—भारतीय पुलिस सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य श्री एस सी टंडन का जन्म 7 नवम्बर 1929 को पंजाब में हुआ। एम ए की उपाधि प्राप्त करने के बाद 1952 में आपने सेवा में प्रवेश किया तथा जयपुर में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक और जयपुर में पुलिस अधीक्षक रहे। आपका अधिकांश सेवाकाल केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति में बीता [illegible] दिल्ली के पुलिस आयुक्त, गृह मंत्रालय में एस आई बी में तथा गुप्तचर ब्यूरो में संयुक्त निदेशक आदि पदों पर रहे। 27 जून 1985 को आप राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के अध्यक्ष नियुक्त किये गये जहां से 30 नवम्बर 1987 को सेवा-निवृत्त हुए। वर्तमान पद पर आप एक दिसम्बर, 1987 से कार्यरत हैं।

सुमहेन्द्र- प्रदेश के जाने-माने कलाकार और राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स के प्राचार्य श्री सुमहेन्द्र का जन्म पचास वर्ष पूर्व जयपुर जिले के [illegible] ग्राम में एक कृषक परिवार में हुआ। आपने 1964 में जयपुर के स्कूल आफ आर्ट से पेंटिंग में डिप्लोमा तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से एम ए (चित्रकला) में सर्वप्रथम रहकर स्वर्णपदक प्राप्त किया। बाद में विश्वविद्यालय में वातिक, ग्राफिक, क्लेमाडलिंग और चित्रकला शिक्षण का कार्य किया। आपने अपनी चित्रकला का विषय अतीत और वर्तमान के यथार्थवाद को चुना तथा सामाजिक विषमताओं, भौतिकता, पाश्चात्य अनुकरण की जटिलताओं में बद्ध जीवन तथा इन्द्रिय-जनित काम की क्षुधता से पीड़ित व्यक्तियों को चित्रित किया। आप आधुनिक कला को वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों के उपयुक्त नहीं समझते। आपकी रंग-संयोजना में सौन्दर्य और रेखाओं में गति है। आपके अनेक चित्र बनारस और दिल्ली की कला दीर्घाओं में लगे हुए हैं। आप राजस्थान ललित कला अकादमी के सचिव रह चुके हैं।

सुमित्रासिंह (श्रीमती)- राजस्थान विधान सभा की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती सुमित्रासिंह मार्च1985 में छठी बार निर्वाचित हुई हैं। इससे पूर्व आप 1957 में प्रथम बार पिलानी तथा बाद में 1962, 67, 72 और 77 के चुनावों में झुंझुनूं क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर निर्वाचित हुई जबकि वर्तमान में आप जनता दल से संबद्ध हैं। 1980 के लोकसभा और विधान सभा, दोनों चुनावों में झुंझुनूं क्षेत्र से कांग्रेस (अर्स) तथा 1984 के लोकसभा चुनाव में झुंझुनूं क्षेत्र से ही लोकदल टिकिट पर आप चुनाव हार चुकी हैं। आपका जन्म तीन मई, 1930 को जिले के किसारी ग्राम में एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ। आपने वनस्थली विद्यापीठ में एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की। आपका विवाह श्री नाहरसिंह के साथ हुआ जो सहकारी विभाग में संयुक्त रजिस्ट्रार पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। आप चार सितम्बर, 1967 से आठ जुलाई, 1971 तक सुखाड़िया मंत्रिमंडल में परिवार-नियोजन विभाग की प्रभारी राज्य मंत्री रह चुकी हैं।

सुमेरकुमार जैन—राजस्थान के प्रमुख समाज-सेवी तथा ट्रांसपोर्ट व्यवसायी श्री सुमेरकुमार जैन का जन्म 20 जून, 1937 को नागौर जिले के कुचामण सिटी में एक प्रतिष्ठित जैन परिवार में हुआ। आपने

सुन्दरलाल खुराणा—राजस्थान के पूर्व मुख्य सचिव तथा तमिलनाडु के पूर्व राज्यपाल श्री एस.एल. खुराणा राजस्थान केडर के अवकाश प्राप्त आई.ए.एस. अधिकारी हैं। आप टोंक के जिलाधीश, प्रतिनियुक्ति पर अफगानिस्तान में संयुक्त राष्ट्रसंघ के वरिष्ठ सलाहकार, सीमान्त जिलों के आयुक्त, राजस्थान राज्य विद्युत मंडल के अध्यक्ष, गृह विभाग के आयुक्त तथा शासन सचिव तथा 9 अगस्त, 1971 से 23 जून, 1975 तक राज्य के मुख्य सचिव रहे। बाद में आप आपातकाल के दौरान केन्द्रीय गृह सचिव रहे तथा मार्च 1977 में केन्द्र में जनता पार्टी के शासनारूढ़ होने पर वापस राजस्थान लौटे और राजस्थान राज्य कृषि-उद्योग निगम के अध्यक्ष पदस्थापित किये गये।

राज्य सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद "हिन्दुस्तान टाइम्स" प्रकाशन के अध्यक्ष तथा फरवरी 1980 से 5 जून, 1980 तक राज्य में राष्ट्रपति शासन के दौरान आप राज्यपाल के सलाहकार रहे। बाद में आप दिल्ली के उपराज्यपाल तथा तमिलनाडु के राज्यपाल मनोनीत किये गये। एक फरवरी, 1988 को आपने अवकाश ग्रहण किया।

सुन्दरलाल मेहता—राजस्थान उच्च न्यायिक सेवा के अधिकारी तथा वर्तमान में न्यायाधीश (परिवहन अपील न्यायाधिकरण) श्री एस.एल. मेहता का जन्म एक फरवरी, 1934 को उदयपुर जिले के मावली कस्बे में हुआ। एम.कॉम. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद प्रारम्भ में चार वर्षों तक आप माध्यमिक तथा नियोजन सेवा में रहे और 1962 में आपका राजस्थान न्यायिक सेवा में चयन हुआ। 31 मई 1969 को आपकी सिविल जज 19 नवम्बर 1973 को वरिष्ठ सिविल जज 2 अप्रैल, 1974 को मुख्य न्यायिक दण्डनायक 26 मई 1975 को अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा 1 जुलाई, 1977 को जिला एवं सत्र न्यायाधीश पद के लिए पदोन्नति हुई।

सुन्दरसिंह भण्डारी—राष्ट्र-हित और समाज-हित में स्वार्थों को तिलांजलि देकर जीवन का हर क्षण न्योछावर करने वाली परम्परा के नेताओं में राजस्थान के सुन्दरसिंह भण्डारी का नाम आता है जिनका जन्म 15 मई 1915 को उदयपुर में हुआ। कानपुर से एम.ए. और [illegible] करने के बाद कुछ दिनों तक आपने स्वर्गीय निरंजननाथ आचार्य के साथ [illegible] भी [illegible] भावनाओं ने आपके जीवन को दूसरी ओर मोड़ दिया। उदयपुर के [illegible] वर्ष तक अवैतनिक अध्यापक रहे। [illegible] है। उदयपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा खोलने और [illegible] प्रथम स्वयं सेवक श्री भण्डारी ने 1938 [illegible] कानपुर [illegible] लिया था। [illegible]

[illegible] 1960 में 72 [illegible]

[illegible]—[illegible]

सुभाष अग्रवाल—इण्डियन मिनिएचर्स डवलपमेंट सोसायटी के निदेशक श्री सुभाष अग्रवाल का जन्म अलवर जिले के तिजारा कस्बे में एक प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में 2 फरवरी, 1945 को हुआ। आप तिजारा क्षेत्र के पूर्व विधायक स्व० श्री घासीराम गुप्ता के पुत्र हैं। आपने राजस्थान कालेज जयपुर से बी.ए. तथा विधि महाविद्यालय से एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त की। प्रारम्भ में आपने श्री रामसिंह यादव (सांसद) के साथ अलवर में वकालत की। बाद में कुछ समय तक राज्य-सेवा में रहे और अन्ततः त्यागपत्र देकर स्वयं का जवाहरात और हस्तशिल्प का व्यवसाय प्रारम्भ किया। आप पश्चिम जर्मनी के विभिन्न स्थानों पर आयोजित व्यापारिक मेलों में भाग लेने के साथ ही इंगलैण्ड, अमेरिका, फ्रांस, स्विट्जरलेण्ड और अन्य यूरोपीय देशों की यात्राएं कर चुके हैं।

सुभाषचन्द्र टंडन—भारतीय पुलिस सेवा के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य श्री एस सी टंडन का जन्म 7 नवम्बर, 1929 को पंजाब में हुआ। एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद 1952 में आपने सेवा में प्रवेश किया तथा जयपुर में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक और जोधपुर में पुलिस अधीक्षक रहे। आपका अधिकांश सेवाकाल केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति में बीता जिसमें दिल्ली के पुलिस आयुक्त, गृह मंत्रालय में एस.आई.बी. में तथा गुप्तचर ब्यूरो में संयुक्त निदेशक आदि पदों पर रहे। 27 जून, 1985 को आप राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के अध्यक्ष नियुक्त किये गये जहां से 30 नवम्बर, 1987 को सेवा-निवृत्त हुए। वर्तमान पद पर आप एक दिसम्बर, 1987 से कार्यरत हैं।

सुमहेन्द्र- प्रदेश के जाने-माने कलाकार और राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स के प्राचार्य श्री सुमहेन्द्र का जन्म पचास वर्ष पूर्व जयपुर जिले के नायन ग्राम में एक कृषक परिवार में हुआ। आपने 1964 में जयपुर के स्कूल आफ आर्ट से पेंटिंग में डिप्लोमा तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से एम ए (चित्रकला) में सर्वप्रथम रहकर स्वर्णपदक प्राप्त किया। बाद में विश्वविद्यालय में वाटिक ग्राफिक, क्लेमाडलिंग और चित्रकला सिखाने का कार्य किया। आपने अपनी चित्रकला का विषय अतीत और वर्तमान के यथार्थवाद को चुना तथा सामाजिक विषमताओं, भौतिकता, पाश्चात्य अनुकरण की जटिलताओं में बद्ध जीवन तथा [illegible]

अकादमी के सचिव रह चुके हैं।

सुमित्रासिंह (श्रीमती)- राजस्थान विधान सभा की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती सुमित्रासिंह मार्च 1985 में छठी बार निर्वाचित हुई हैं। इससे पूर्व आप 1957 में प्रथम बार पिलानी तथा बाद में 1962, 67, 72 और 77 के चुनावों में झुंझुनूं क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर निर्वाचित हुई जबकि वर्तमान में आप जनता दल से सम्बद्ध हैं। 1980 के लोकसभा और विधान सभा, दोनों चुनावों में झुंझुनूं क्षेत्र से कांग्रेस (जग) तथा 1984 के लोकसभा चुनाव में झुंझुनूं क्षेत्र से ही लोकदल टिकिट पर आप चुनाव हार चुकी हैं। आपका जन्म तीन मई, 1930 को जिले के किसारी ग्राम में एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ। आपने वनस्थली विद्यापीठ में एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की। आपका विवाह श्री नाहरसिंह के साथ हुआ जो सहकारी विभाग में संयुक्त रजिस्ट्रार पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। आप चार सितम्बर, 1967 से आठ जुलाई, 1971 तक सुखाडिया मंत्रिमंडल में परिवार-नियोजन विभाग की प्रभारी राज्य मंत्री रह चुकी हैं।

सुमेरकुमार जैन—राजस्थान के प्रमुख समाज-सेवी तथा ट्रान्सपोर्ट व्यवसायी श्री सुमेरकुमार जैन का जन्म 20 जून 1937 को नागौर जिले के कुचामन सिटी में एक प्रतिष्ठित जैन परिवार में हुआ। आपने

बी.ए. की उपाधि प्राप्त कर 1960 में जयपुर में ट्रांसपोर्ट व्यवसाय प्रारंभ किया। 1964 में राष्ट्रीय स्तर की ट्रांसपोर्ट कम्पनी शांति रोड़वेज में भागीदार बने तथा मई, 1980 में सन्तोष रोड़वेज के नाम से स्वयं का प्रतिष्ठान चालू किया। आप जयपुर ट्रांसपोर्ट आपरेटर्स एसोसियेशन तथा राजस्थान ट्रांसपोर्ट एसोसियेशन के सचिव सहित विभिन्न पदों पर रह चुके हैं।

प्रारम्भ से ही सामाजिक और धार्मिक कार्यों में सक्रिय रुचि होने के कारण श्री जैन कुचामण के जैन वीर मण्डल तथा महावीर पुस्तकालय के संस्थापक सचिव रहे। राजस्थान जैन सभा की कार्यकारिणी के वर्षों तक सदस्य और बाद में उपाध्यक्ष भी रहे। वर्तमान में श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कमेटी पदमपुरा के सदस्य, श्री पार्श्वनाथ चूलगिरी क्षेत्र कमेटी के ट्रस्टी, श्री दिगम्बर जैन आदर्श महिला विद्यालय श्रीमहावीरजी के संयुक्त मंत्री तथा महावीर क्लब जयपुर के अध्यक्ष हैं। रोटरी क्लब जयपुर से आप वर्षों से संबद्ध हैं और अब तक कार्यकारिणी सदस्य, संयुक्त सचिव, सचिव, उपाध्यक्ष तथा 1979-80 में अध्यक्ष पद पर कार्य कर चुके हैं। आपके सचिव काल में भीलवा तथा अध्यक्ष काल में बगरू में क्लब की ओर से शल्य चिकित्सा के ऐतिहासिक शिविरों का आयोजन हुआ। आपके ही कार्यकाल में रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय के तत्कालीन अध्यक्ष श्री जे.एम. बोमर की प्रथम बार जयपुर-यात्रा हुई।

व्यावसायिक क्षेत्र में आप जयपुर चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री के 1981 से 84 तक दो बार के लिए सचिव तथा राजस्थान व्यापार-उद्योग मंडल (वर्तमान फोर्टी) के अतिरिक्त महासचिव रह चुके हैं। वर्तमान में आप कुचामण-विकास समिति के जयपुर संभाग के मंत्री पद पर भी कार्यरत हैं।

सुमेरसिंह भण्डारी—राजस्थान प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में बीकानेर में अतिरिक्त आयुक्त उपनिवेशन विभाग श्री एस.एस. भण्डारी का जन्म 20 अगस्त, 1936 को अजमेर जिले के अराई ग्राम में हुआ। आपकी शिक्षा जयपुर में हुई तथा आपने एम.ए. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त की। 1961 में रा० प्र० सेवा में चयन के बाद आप भीलवाड़ा में अतिरिक्त जिलाधीश, बीकानेर और अजमेर नगर-विकास न्यासों में सचिव, गुलाबपुरा सहकारी मिल में प्रबन्ध निदेशक, राजस्थान वित्त निगम में महाप्रबन्धक तथा जयपुर-विकास प्राधिकरण में उपायुक्त आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

सुरेन्द्र उपाध्याय- प्रसिद्ध कवि, कथाकार और आलोचक तथा वर्तमान में जोधपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा. उपाध्याय राजस्थान में ऐसे प्रथम विद्वान हैं जिन्हें बिना पीएच.डी. की उपाधि लिये ही मात्र लेखन के आधार पर राजस्थान विश्वविद्यालय ने डी.लिट. की उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया है। लगभग डेढ़ दर्जन ग्रंथों और दो सौ से अधिक निबंधों के रचयिता डा. उपाध्याय के निर्देशन में अब तक बीस से अधिक शोधार्थी पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं।

सुरेन्द्रकुमार—भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री सुरेन्द्र कुमार का जन्म 8 दिसम्बर, 1947 को उत्तर प्रदेश में हुआ। 1971 में आप्रसे सेवा में चयन हुआ तथा अब तक भरतपुर, चुरू और अलवर में जिलाधीश, केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति पर गृह मंत्रालय में उप सचिव, राजस्व मंडल राजस्थान के सदस्य तथा कोटा के सम्भागीय आयुक्त के रूप में कार्य कर चुके हैं।

सुरेन्द्रनाथ भार्गव- राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री [illegible] भार्गव का जन्म 11 फरवरी, 1934 को मथुरा में हुआ। [illegible] स्वर्गीय श्री मुकुट बिहारी [illegible] रहे हैं। [illegible] विश्वविद्यालय से, एम.एस्सी. (गणित) तथा [illegible]

1960 में आपने अजमेर में अपने पिताश्री के साथ वकालत शुरू की। 1970-71 में उच्च न्यायालय में राजकीय उप अधिवक्ता, 1982 के प्रारंभ में राजस्थान हाईकोर्ट बार एसोसियेशन के अध्यक्ष, एक अप्रैल, 1982 से उच्च न्यायालय में केन्द्रीय सरकार के स्थायी अधिवक्ता तथा 29 अक्टूबर, 1982 को वर्तमान पद पर नियुक्त हुए। सत्र 1984-85 में आप रोटरी क्लब जयपुर के अध्यक्ष तथा 25 फरवरी,89 को रोटरी डिस्ट्रिक्ट 305 के वर्ष 1990-91 के लिये प्रान्तपाल (गवर्नर) चुने गये।

सुरेन्द्रप्रकाश गुप्ता- राजस्थान सहकारिता सेवा के वरिष्ठ अधिकारी तथा वर्तमान में सहकारी विभाग में संयुक्त पंजीयक (बैंकिंग) श्री एस.पी. गुप्ता का जन्म चार नवम्बर, 1936 को बीकानेर में हुआ। आपने समाज-शास्त्र में एम.ए. किया और 31 अगस्त, 1963 को सहायक रजिस्ट्रार पद पर विभागीय सेवा में प्रवेश किया। आप बीकानेर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के प्रबन्धक, जयपुर जिला सहकारी भूमि विकास बैंक के प्रशासक, सहकारी विभाग में उप रजिस्ट्रार (प्रशासन), जिला ग्रामीण-विकास अभिकरण झुंझुनूं तथा सीकर में अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) एवं परियोजना निदेशक तथा राजस्थान राज्य सहकारी भूमि-विकास बैंक लि. जयपुर के प्रबंध निदेशक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

सुरेन्द्र शर्मा— भारतीय पुलिस सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान पुलिस अकादमी के प्राचार्य तथा उप निदेशक श्री सुरेन्द्र शर्मा का जन्म 31 जनवरी, 1934 को हुआ। प्रारंभ में आप रा० पु० सेवा में चुने गये तथा 1977 में आपकी भा.पु. सेवा में पदोन्नति हुई। आप बूंदी जिले सहित पुलिस मुख्यालय में (हरिजन अत्याचार), कम्प्यूटर, सी.आई.डी. में अपराध शाखा (फ्लुष) तथा भ्रष्टाचार- निरोधक विभाग (द्वितीय) में पुलिस अधीक्षक के पद पर कार्य कर चुके हैं।

सुरेन्द्र व्यास- राजस्थान के कालेज शिक्षा तथा जन-सम्पर्क विभाग के पूर्व प्रभारी राज्य मंत्री श्री सुरेन्द्र व्यास स्वर्गीय दामोदर व्यास के पुत्र हैं। आपका जन्म 23 सितम्बर, 1943 को टोंक जिले के मालपुरा कस्बे में हुआ। शिक्षा जयपुर में हुई तथा आपने बी.ए. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त की। व्यवसाय से वकील श्री व्यास ने छात्र-जीवन से ही कांग्रेस की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। 1968 में आप जयपुर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के संचालक मंडल के सदस्य चुने गये। 1970 में आप पहली बार टोंक क्षेत्र से उप चुनाव में कांग्रेस टिकिट पर विधायक चुने गये। 1972 के आम चुनाव में मालपुरा क्षेत्र से पुनः विधायक बने लेकिन 1977 में टोडारायसिंह क्षेत्र से पराजित हुए। 1980 के विधान सभा चुनाव में आप मालपुरा क्षेत्र से पुनः जीते हुए लेकिन 1985 में पुनः पराजित हो गये।

सुरेशचन्द्र जोशी- राजस्थान लेखा सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राज्य के कोष एवं लेखा विभाग के निदेशक श्री एस.सी. जोशी का जन्म एक जुलाई, 1934 को हुआ। आपने बी.एससी. और एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की। लेखा सेवा में सन् 1960 में आपका चयन हुआ और आपने अब तक विभिन्न विभागों में लेखाधिकारी, वित्त सलाहकार, वित्त विभाग में संयुक्त उपसचिव, राजस्थान औद्योगिक विकास एवं विनियोजन निगम (रीको) तथा जयपुर-विकास प्राधिकरण में निदेशक (वित्त) के रूप में कार्य किया।

सुरेश चौधरी— भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर इंटेलीजेंस ब्यूरो में सहायक निदेशक श्री सुरेश चौधरी का जन्म 26 दिसम्बर, 1953 को बीकानेर जिले में हुआ। 1979 में सेवा में चयनित होने के बाद आप उदयपुर में ए.डी.सी., सिरोही, धौलपुर और सवाईमाधोपुर जिलों के पुलिस अधीक्षक रह चुके हैं।

सौभाग्यसिंह- राजस्थानी भाषा के यत्र-तत्र बिखरे पडे साहित्य को प्रकाश में लाने के महत्वपूर्णकार्य में वर्षों से जुटे श्री सौभाग्यसिंह का जन्म 1924 में सीकर जिले के भगतपुरा ग्राम में हुआ। आपकी औपचारिक शिक्षा अधिक नहीं हुई लेकिन राजस्थानी साहित्य की सेवा करने की प्रारंभ से ही रुचि होने के कारण वह आपकी साहित्य-साधना में बाधक नहीं बन सकी। आपके राजस्थानी पुस्तकों के अनेक संग्रह राजस्थान साहित्य अकादमी, साहित्य संस्थान उदयपुर, हिन्दी पुस्तक मंदिर तथा प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर से प्रकाशित हो चुके हैं। राजस्थान के गांवों में विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले हजारों लोकगीतों का संग्रह "राजस्थानी वीर गीत संग्रह" के नाम से चार भागों में प्रकाशित हो चुका है। आपने डूंगजी-जवाहरजी के जीवन एवं कार्यों पर शोधपूर्ण विस्तृत लेख लिखकर जनभ्रांति में फैली इस धारणा को ठीक करने का प्रयास किया कि वे डाकू न होकर वास्तव में स्वाधीनता सैनिक थे। जाडा मेहडू ग्रन्थावली तथा डूंगरसी रत्नू ग्रंथावली जैसे अज्ञात कवियों को प्रकाश में लाने का श्रेय भी आपको है।

श्री सिंह को इस बात की गहरी पीड़ा है कि राजस्थानी अपने ही घर में उपेक्षा की शिकार है। इसीलिए अपने पूर्वजों का ऋण चुकाने के लिये आपने राजस्थानी के उत्थान को जीवन में सर्वोच्च प्राथमिकता दी है और लगातार 9 वर्षों तक राजस्थानी कवियों और लेखकों से सम्पर्क साधने तथा लोक कथाओं व गीतों के संग्रह के लिए गांव-गांव घूमे हैं।

सौभागमल जैन- "राजस्थान पत्रिका" के सहायक सम्पादक श्री सौभागमल जैन का जन्म 4 जनवरी,1934 को जयपुर जिले के भादवा ग्राम में एक प्रतिष्ठित जैन परिवार में हुआ। आपने बी.ए. और साहित्यरत्न तक शिक्षा प्राप्त की तथा 1951 में जयपुर से "राष्ट्रदूत" का प्रकाशन प्रारम्भ होने पर आप उसके उप सम्पादक नियुक्त हुए। 1955 में आप दैनिक "नवयुग" में मुख्य उप संपादक नियुक्त हुए तथा इसका प्रकाशन बंद होने पर वापस "राष्ट्रदूत" में चले गये। राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के स्थापना काल से ही आप इसकी गतिविधियों में सक्रिय रहे तथा वर्षों तक कार्यकारिणी सदस्य और मंत्री रहे।

एस.अडवियप्पा- राजस्थान लोक सेवा आयोग के अवकाश प्राप्त अध्यक्ष श्री अडवियप्पा का जन्म 27 मार्च,1923 को बंगलौर (कर्नाटक) के निकट एक ग्राम में हुआ। आपने मैसूर विश्वविद्यालय से 1945 में बी.ई. (सिविल) की उपाधि प्राप्त की तथा उसी वर्ष पूर्व जयपुर रियासत में सार्वजनिक निर्माण विभाग में सहायक अभियन्ता नियुक्त हुए। बाद में विभिन्न पदों पर कार्य करने के साथ ही आपने केन्द्रीय सरकार के प्रतिष्ठान खेतड़ी ताम्र परियोजना में वरिष्ठ सिविल अभियन्ता तथा इंस्ट्रूमेंटेशन लि. कोटा में परियोजना अभियन्ता, राजस्थान राज्य औद्योगिक एवं खनिज-विकास निगम में परियोजना सलाहकार, राजस्थान राज्य कृषि-उद्योग निगम में प्रबन्ध निदेशक, सार्वजनिक निर्माण विभाग (भवन एवं पथ) में मुख्य अभियन्ता तथा राजस्थान राज्य सेतु एवं निर्माण निगम में अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक के रूप में कार्य किया।

श्री अडवियप्पा राज्य सेवा से निवृत्त होने के बाद 1979 में राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य नियुक्त किये गये जहां से 26 मार्च,1985 को अध्यक्ष पद से अवकाश प्राप्त किया। आप 1975-76 में लायन्स इण्टरनेशनल के डिस्ट्रिक्ट 323-सी के प्रांतपाल चुने गये। इससे पूर्व आपने क्लब के उप प्रान्तपाल सहित अन्य अनेक पदों पर कार्य किया। आप श्री सत्यसाई सेवा संघ तथा दिव्य जीवन संघ के अध्यक्ष रह चुके हैं। वर्तमान में आप अधिकांश समय विपश्यना केन्द्र के कार्यों में दे रहे हैं।

हजारीलाल शर्मा- झुंझुनूं जिले के पिलानी क्षेत्र से 1962 में निर्दलीय और 1980 में जनता पार्टी के विधायक रहे श्री हजारीलाल शर्मा का जन्म 10 जून,1910 को चिड़ावा कस्बे में हुआ। आपने एम.काम. और एलएल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की है तथा व्यवसाय से वकील हैं। आरंभ से ही सार्वजनिक

जीवन में सक्रिय श्री शर्मा 1944 से 54 तक चिड़ावा नगरपालिका के अध्यक्ष रहे। विधान सभा का चुनाव आपने इसी क्षेत्र से 1957, 72, 77 और 85 में निर्दलीय तथा 1967 में कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में भी लड़ा लेकिन सफल नहीं हो सके।

हंसराज मिड्ढा- श्रीगंगानगर जिले के सूरतगढ़ विधान सभा क्षेत्र से 1985 के चुनाव में जनता पार्टी के टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री हंसराज मिड्ढा का जन्म आठ फरवरी, 1918 को जिले के बिचौलिया ग्राम में हुआ। आपने मिडिल पास कर खेती एवं व्यापार शुरू कर दिया। विजयनगर में आज भी आपकी कॉटन फैक्ट्री चल रही है। आप बाल्यकाल से ही आर एस एस की गतिविधियों में भाग लेते रहे हैं तथा विजयनगर मंदिर कमेटी, गौशाला कमेटी, अरोड़ा महासभा, न्याय पंचायत और विजयनगर व्यापार मंडल के अध्यक्ष रह चुके हैं।

हनुमान शर्मा- राजस्थान के अवकाश प्राप्त पुलिस महानिरीक्षक श्री हनुमान शर्मा का जन्म पाँच जनवरी, 1911 को अलवर जिले में हुआ। आप विधि स्नातक हैं। आपने पूर्व अलवर रियासत में थानेदार के रूप में पुलिस सेवा में प्रवेश किया और जनवरी 1969 में पुलिस महानिरीक्षक के पद से सेवा-निवृत्त हुए। वर्तमान में आप नगर की विभिन्न धार्मिक और स्वयंसेवी संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं।

हनुमानप्रसाद- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में पशुपालन, भेड़-ऊन, डेयरी-विकास तथा जनजाति क्षेत्र विकास आदि विभागों के शासन सचिव श्री हनुमानप्रसाद का जन्म एक अक्टूबर, 1935 को झुंझुनूं जिले के चिड़ावा कस्बे में हुआ। 1965 में सेवा में प्रवेश के बाद आप जालौर, नागौर और सवाई माधोपुर के जिलाधीश, सहकारी विभाग के पंजीयक, अल्प बचत एवं लाटरी विभाग के निदेशक, केन्द्रीय सरकार में प्रतिनियुक्ति पर भारतीय खाद्य निगम में राजस्थान क्षेत्र के प्रबंधक, राजस्थान राज्य खान एवं खनिज निगम लि. के प्रबन्ध निदेशक, राजस्व मंडल के सदस्य, राजकीय उपक्रम विभाग के आयुक्त तथा शासन सचिव एवं प्रबन्ध निदेशक गंगानगर शुगर मिल तथा कृषि उत्पादन एवं सहकारिता विभाग के शासन सचिव आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

हनुमानप्रसाद- भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में जयपुर में पुलिस अधीक्षक (कम्प्यूटर) श्री हनुमान प्रसाद का जन्म 15 नवम्बर 1932 को झुंझुनूं जिले में हुआ। प्रारंभ में आपका चयन राजस्थान पुलिस सेवा में हुआ और 1979 में आपकी भा.पु. सेवा में पदोन्नति हुई। आप डूंगरपुर और जालौर के पुलिस अधीक्षक, सी.आई.डी. (इंटेलिजेंस) में पुलिस अधीक्षक तथा राजस्थान सशस्त्र पुलिस की छठी बटालियन के धौलपुर में कमाण्डेंट रह चुके हैं।

हनुमानप्रसाद प्रभाकर- राजस्थान के पूर्व मंत्री श्री हनुमानप्रसाद प्रभाकर का जन्म आषाढ़ शुक्ला द्वितीया, सम्वत् 1979 को [illegible] जयपुर जिले के [illegible] ग्राम में हुआ लेकिन आपकी शिक्षा-दीक्षा और कार्यक्षेत्र उदयपुर जिला रहा। आपने साहित्यरत्न की उपाधि प्राप्त की है। आपने उदयपुर से "प्रतिउदय" मासिक तथा "उदयपुर-टाइम्स" साप्ताहिक का सम्पादन और प्रकाशन किया। आपने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में [illegible] के रूप में सक्रिय भाग लिया और गिरफ्तार हुए। आप प्रारंभ से ही उदयपुर जिला कांग्रेस कमेटी से जुड़े हुए हैं और अब तक [illegible] अध्यक्ष सहित विभिन्न पदों पर रह चुके हैं। आप केन्द्र सरकार के [illegible] और राजस्थान आवासन मंडल के सलाहकार मंडल के सदस्य तथा उदयपुर [illegible] रह चुके हैं।

जून 1980 के आम चुनावों में आप प्रथम बार मावली क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में विधायक चुने गये तथा पहाडिया मंत्रिमंडल में शिक्षा, खाद्य, परिवहन, पंचायती राज और स्वायत्त शासन आदि विभागों के मंत्री रहे। बाद में 17 जुलाई, 1982 को आप श्री शिवचरण माथुर की सरकार में मंत्री नियुक्त किये गये लेकिन कुछ असें बाद आपसी मतभेदों के कारण त्यागपत्र दे दिया। 1985 में मावली क्षेत्र से ही पुनः विधायक चुने गये और श्री माथुर के दूसरी बार मुख्यमंत्री बनने पर 26 जनवरी, 1988 को आप पुनः मंत्रिमंडल में शामिल किये गये। लेकिन आठ जून, 1989 को राजनीतिक कारणों से श्री माथुर ने आपसे त्यागपत्र ले लिया।

हमीदा बेगम (श्रीमती)- राजस्थान के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री से सम्बद्ध संसदीय सचिव श्रीमती हमीदा बेगम का जन्म तीन मार्च, 1952 को उदयपुर में हुआ। आपने एम.ए. और पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। कांग्रेस संगठन से आप छात्र जीवन से ही जुड़ी हुई हैं। 1985 के विधान सभा चुनाव में आप चूरू क्षेत्र से कांग्रेस (इ) टिकिट पर विजयी हुई। 6 फरवरी, 1988 को आप श्री शिवचरण माथुर के मंत्रिमंडल में संसदीय सचिव के रूप में शामिल की गई। आपको चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के साथ ही चुनाव, विधि एवं न्याय विभाग का कार्य भी दिया गया है।

हरगोविन्द खुराणा (डा.)- नोबेल पुरस्कार विजेता और विश्व के चोटी के जीव-रसायन शास्त्री डा. हरगोविन्द खुराणा अब यद्यपि अमरीकी नागरिक हैं लेकिन उनके प्रारंभिक अनेक वर्ष श्रीगंगानगर जिले के करणपुर कस्बे में बीते हैं और उनके पिता सहित सभी परिजन वर्षों से जयपुर के स्थायी निवासी रहे हैं।

डा. खुराणा का जन्म 9मई, 1922 को मुल्तान में हुआ। देश के विभाजन के बाद आपका परिवार करणपुर में आकर बस गया। आपके पिता श्री रामलाल खुराणा सिंचायी विभाग के अवकाश प्राप्त अधीक्षण अभियंता थे।श्री खुराणा ने देश-विभाजन के पूर्व 1944 में ही लाहौर विश्वविद्यालय से एम.एससी. की उपाधि प्राप्त की तथा बाद में भारत सरकार की छात्रवृत्ति पर इंगलैण्ड जाकर लीवरपूल से पीएच.डी. प्राप्त की। 1949 में आप करणपुर लौट आये लेकिन कुछ असें बाद वापस विदेश चले गये और 1952 में अपने परिजनों की अनुमति से स्विट्जरलैण्ड की ईस्टर से कोलंबिया में विवाह सूत्र में बंध गये। डा. खुराणा को जीवाणुओं में जीव के प्रतिरोपण सम्बंधी शोध कार्य के परिणामों पर 1968 में नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

हरिगोविन्दप्रसाद भटनागर- भारतीय पुलिस सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी एवं वर्तमान में सीमा-सुरक्षा बल के महानिदेशक श्री एच.पी. भटनागर का जन्म आठ जुलाई, 1933 को पंजाब में हुआ। 1956 में आपका सेवा में चयन हुआ। आप जयपुर सहित अनेक जिलों के पुलिस अधीक्षक, सीमा सुरक्षा बल दक्षिण बंगाल में उपमहानिरीक्षक, गृह मंत्रालय में सीमा-सुरक्षा बल के महानिदेशालय में उपमहानिदेशक, पुलिस मुख्यालय राजस्थान में विशिष्ट महानिरीक्षक तथा सीमा-सुरक्षा बल पंजाब के महानिरीक्षक पद पर कार्य कर चुके हैं।

हरजीराम बुरडक- नागौर जिले के लाडनूं क्षेत्र से मार्च 1985 के विधान सभा चुनाव में तीसरी बार निर्वाचित श्री हरजीराम बुरडक का जन्म मरणाया ग्राम में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ। 56 वर्षीय श्री बुरडक प्रथम बार 1967 के चुनाव में स्वतंत्र पार्टी के टिकिट पर तत्कालीन विधानसभाध्यक्ष श्री मिर्धा को पराजित कर जब विधायक बने तो सहसा लोगों का ध्यान आपकी तरफ गया। 1972 में भी आपने इसी क्षेत्र से स्वतंत्र पार्टी के प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा लेकिन सफल नहीं हो 1977 में आप जनता पार्टी के टिकिट पर पुनः विजयी हुए लेकिन 1980 के चुनाव में जनता

भाग- 7

पार्टी(चरणसिंह) के टिकिट पर पुनः पराजित हो गये। इस बार आप लोकदल के टिकिट पर विजयी हुए हैं। आपकी शिक्षा माध्यमिक तक है तथा व्यवसाय से आप कृषक हैं। आप 1959, 61 और 82 में लाडनूं पंचायत समिति के प्रधान तथा इससे पूर्व साडास ग्राम पंचायत के सरपंच रह चुके हैं। आप विधानसभा की राजकीय उपक्रम समिति के अध्यक्ष, नागौर जिला सहकारी संघ के अध्यक्ष, नागौर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के संचालक मंडल के सदस्य तथा अध्यक्ष और नागौर जिला सहकारी भूमि-विकास बैंक तथा राजस्थान स्टेट को-आपरेटिव बैंक के संचालक मंडल के सदस्य भी रह चुके हैं।

हरप्रसाद अग्रवाल- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में अजमेर के संभागीय आयुक्त श्री अग्रवाल का जन्म 8 जून, 1932 को लाहौर में हुआ। आपने एम.कॉम और एलएल.बी. की उपाधियों के साथ ही लोक-प्रशासन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। आपका 1956 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ और 1978 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति हुई। आप जिलाधीश बूंदी, श्रम आयुक्त, निदेशक नियोजन सेवा, निदेशक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा एवं कार्मिक विभागों में शासन उप सचिव, जयपुर विकास प्राधिकरण के सचिव, सामान्य प्रशासन एवं मंत्रिमंडल सचिवालय में विशिष्ट सचिव तथा राजस्व मंडल के सदस्य आदि पदों पर कार्यरत चुके हैं।

हरमिन्दरसिंह— *सार्वजनिक निर्माण विभाग में जयपुर क्षेत्र के अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्री* हरमिन्दरसिंह का जन्म 25 मई 1935 को हुआ। आपने चंडीगढ़ से सिविल अभियांत्रिकी में बी.ई. और एम.ई. तक शिक्षा प्राप्त की। 1955 में आपने सहायक अभियंता के रूप में सेवा में प्रवेश किया और 1962 में अधिशाषी अभियंता 1977 में अधीक्षण अभियंता और 26 सितम्बर, 1983 को अतिरिक्त मुख्य अभियंता के रूप में पदोन्नत हुए। वर्तमान पदस्थापना से पूर्व आप प्रतिनियुक्ति पर राजस्थान राज्य पुल एवं निर्माण निगम में महाप्रबन्धक एवं राष्ट्रीय उच्च मार्ग के अतिरिक्त मुख्य अभियंता पद पर भी कार्य कर चुके हैं।

हरमलसिंह- राजस्थान के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, पत्रकार और फिल्म निर्देशक श्री हरमलसिंह का जन्म 1924 में जोधपुर में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र में एम.ए. किया तथा 1946–47 में दैनिक ''राष्ट्रपताका'' जोधपुर में कार्य किया और 1949 में साप्ताहिक ''लोक जीवन'' का प्रकाशन प्रारंभ किया। 1951 से 53 तक ''राष्ट्रदूत'' जयपुर के उप सम्पादक रहे तथा 1954–55 में जोधपुर से ''लोक जीवन'' का पुनः प्रकाशन किया। 1956 में ''राजस्थान पत्रिका'' का जयपुर से प्रकाशन प्रारंभ होने पर आप इसके प्रबंध सम्पादक बनाये गये। बाद में आप फिल्मों का निर्देशन करने के लिए बम्बई चले गये। वर्तमान में आप ''राजस्थान पत्रिका'' के स्तंभ लेखक हैं।

श्री सिंह 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान प्रथम जोधपुर बम कांड के प्रमुख नेता थे जिन्हें तीन वर्ष का कठोर कारावास भुगतना पड़ा।

हरलालसिंह खर्रा- सीकर जिले के श्रीमाधोपुर क्षेत्र से मार्च 1985 के आम चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के टिकिट पर निर्वाचित *श्री हरलालसिंह खर्रा* इसी क्षेत्र से 1967 में भारतीय जनसंघ तथा1977 में जनता पार्टी के टिकिट पर विधायक रह चुके हैं। आपका जन्म 13 जनवरी, 1934 को श्रीमाधोपुर के निकटवर्ती भारणी ग्राम में एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ और आपने हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त की। आपका परिवार जागीर युग में जागीरी और लाग-बाग-बेगार का प्रबल विरोधी था और इस विरोध में उनके दो परिजन अपना बलिदान भी कर चुके थे। आप 1960 तक अपने गांव में सरपंच रहे और 1965 तक कांग्रेस की सेवा करते रहे। बाद में विधान सभा का चुनाव आपने इसी क्षेत्र से 1972

में भारतीय जनसंघ तथा 1980 में भारतीय जनता पार्टी के टिकिट पर भी लड़ा लेकिन दोनों बार पराजित हुए। इस काल में आप श्रीमाधोपुर पंचायत समिति के प्रधान चुन लिए गये।

हरसहाय मीणा- राजस्थान के पूर्व मंत्री श्री हरसहाय मीणा का जन्म तीन मार्च, 1940 को सवाई माधोपुर जिले के नागल सुमेरसिंह गांव में हुआ। आप हाई स्कूल तक शिक्षित हैं और व्यवसाय से कृषक हैं। 1960 से 66 तक आप राज्य सेवा में रहे तथा 1967 से कांग्रेस दल के माध्यम से सक्रिय राजनीति से जुडे हुए हैं।1977 के विधानसभा चुनाव में आपने किशनगंज (सु.अ.ज.) क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर प्रथम बार भाग्य आजमाया लेकिन सफल नहीं हो सके। 1980 में आप इसी क्षेत्र से निर्वाचित हुए और श्री जगन्नाथ पहाडिया के मन्त्रिमंडल में 18 फरवरी, 1981 को कैबिनेट मंत्री नियुक्त किये गये। 13 जुलाई, 1981 को पहाड़िया सरकार के पतन तक आप इस पद पर रहे। 1985 के आम चुनाव में आप किशनगंज क्षेत्र से तथा जुलाई 1988 में कोटा के जिला प्रमुख के चुनाव में पराजित हो गये।

हरिकृष्ण व्यास- भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के वरिष्ठ नेता तथा वरिष्ठ पत्रकार कामरेड एच.के. व्यास मूलतः जोधपुर के पुष्करणा ब्राह्मण हैं जिनका जन्म 1921 में जयपुर के चांदपोल बाहर स्थित पुराने पागलखाने में हुआ। आपके पिता स्व. मगन राज व्यास रियासती पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी थे। कुशाग्र बुद्धि के कारण आपने सरकारी छात्रवृति प्राप्त कर नागपुर विश्वविद्यालय से बी.एससी. की उपाधि प्राप्त की। नागपुर में ही आप वैज्ञानिक समाजवाद की विचारधारा की ओर आकृष्ट हुए तथा छात्रों को क्रांति के लिये तैयार करने के काम में जुट गये। 1939 में आप सी.पी. बरार प्रांतीय स्टूडेंट्स फैडरेशन के महासचिव चुने गये तथा 1940 में साम्यवादी दल की सदस्यता प्राप्त की। आज लगभग 50 वर्षों की लम्बी अवधि बीतने के बाद भी आपकी राजनीतिक विचारधारा में कोई अन्तर नहीं आया है। संघर्षों के इसी दौर में आपने रायपुर जेल में 56 दिन लम्बी भूख हड़ताल की जिससे घबराकर ब्रिटिश सरकार ने आपको रिहा कर दिया। लेकिन भूख हडताल के कारण आंतें चिपक जाने से आपका 14 इंच लम्बा पेट का आपरेशन हुआ और गाल ब्लेडर सदैव के लिये निकालना पड़ा। इसके बावजूद अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध जूझने तथा भूख हडतालों के क्रम में उनके कोई अन्तर नहीं आया।

कामरेड एच.के. ने सबसे पहले प्रदेश की जनता का ध्यान अपनी ओर 1952 में तब आकर्षित किया जब वे जोधपुर के पूर्व महाराजा श्री हणूतसिंह के वायुयान दुर्घटना में निधन के फलस्वरूप रिक्त हुए जोधपुर नगर क्षेत्र के उपचुनाव में कम्युनिस्ट पार्टी के टिकिट पर निर्वाचित घोषित होकर विधान सभा पर दस्तक देने पहुंचे। इस उपचुनाव से कुछ ही दिनों पूर्व हुए सामान्य चुनाव ने भी सारे देशवासियों का ध्यान अपनी ओर खींचा था क्योंकि इसमें पूर्व महाराजा के रूप में राजशाही और शेरे राजस्थान श्री जयनारायण व्यास के रूप में लोकशाही का सीधा मुकाबला था जिसमें श्री व्यास अपनी जमानत तक नहीं बचा सके थे। एच.के. की यह विजय न केवल जोधपुर नगर के मतदाताओं की जागरूकता की प्रतीक थी अपितु यह समस्त उत्तर भारत की विधानसभाओं में कम्युनिस्ट पार्टी का खाता खुलने की शुरूआत भी थी। अपनी इस विजय को श्री व्यास ने अपने कार्यकाल में सरकार की अकर्मण्यता, प्रशासनिक भ्रष्टाचार और लाल फीताशाही की करतूतों का निरन्तर भण्डाफोड कर सार्थक सिद्ध करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आपने इसके बाद भी विधान सभा के चुनाव तो कई बार लडे लेकिन सफलता उनसे निरन्तर दूर होती ही चली गई।

श्री व्यास राजनीतिक कर्मी के साथ ही सजग और प्रभावशाली पत्रकार भी हैं। आप जयपुर में "मिरर" और "न्यू एज" अंग्रेजी साप्ताहिकों के वर्षों तक सम्वाददाता और "नया राजस्थान" हिन्दी साप्ताहिक के सम्पादक रहे। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने जब नई दिल्ली से हिन्दी दैनिक "जनयुग" का प्रकाशन शुरू किया तो आप उसके प्रथम सम्पादक नियुक्त किये गये। आप कम्युनिस्ट पार्टी की [illegible] राष्ट्रीय कमेटी में विभिन्न पदों पर कार्य कर चुके हैं।

हरिकुमार औदिच्य- कोटा जिले के रामगंजमंडी क्षेत्र से 1985 के आम चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री हरिकुमार औदिच्य का जन्म 14 अगस्त, 1933 को कोटा में हुआ। प्रारम्भ में आप हाई स्कूल पास कर बैंक में बाबू बन गये लेकिन नौकरी छोड़कर काश्मीर बचाओ आन्दोलन में कूद पड़े और सत्याग्रह कर तीन माह तक पंजाब के फिरोजपुर नगर की जेल में बन्द रहे। 1952 में भारतीय जनसंघ की स्थापना होने पर आप कोटा नगर जनसंघ के मंत्री बनाये गये। कोटा क्षेत्र में पूर्व में जनसंघ और वर्तमान में भाजपा का जो प्रचार-प्रसार है- उसके पीछे श्री औदिच्य का कठोर परिश्रम है। 1955 में आपने वर्षों बाद पुन: कालेज में प्रवेश लिया और बी ए. तथा एलएल बी. की उपाधि प्राप्त की। इस दौरान आपने आन्दोलन कर कोटा के हर्बर्ट कालेज के नाम से हर्बर्ट का नाम हटवाया।

श्री औदिच्य 1959 से 72 तक कोटा नगर परिषद के निरन्तर सदस्य निर्वाचित हुए तथा नल-बिजली, पुस्तकालय और दशहरा मेला आदि समितियों के अध्यक्ष रहे। इस दौरान कोटा में विभिन्न जन-समस्याओं और राष्ट्रीय प्रश्नों को लेकर हुए आन्दोलनों में अधिकांश का आपने नेतृत्व किया। इनमें अनेक बार जेल यात्रा भी करनी पड़ी। आपातकाल में पूरे 19 माह जेल में बीते। जनता शासन के दौरान आप कोटा नगर-सुधार न्यास के अध्यक्ष मनोनीत किये गये। कोटा नगर के सौन्दर्यीकरण में आपका विशेष योगदान है।

हरिकेशव नाल्लुर श्रीनिवास रमणी- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राजस्थान विक्रय कर प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री एच एस. रमणी का जन्म 17 फरवरी, 1933 को मद्रास में हुआ। आपने अर्थशास्त्र में एम.ए और हिन्दी साहित्य में विशारद की उपाधि (दोनों स्वर्ण पदक सहित) प्राप्त की। 1956 में आपका सेवा में चयन हुआ। आप शासन उपसचिव चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, अतिरिक्त पंजीयक सहकारी विभाग, जिलाधीश अलवर, पाली, चित्तौड़गढ़ एवं जोधपुर, भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर महालक्ष्मी मिल्स ब्यावर तथा श्री भारती मिल्स पांडिचेरी के अधिकृत नियंत्रक, एन टी सी लि बंगलोर के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, राजस्थान राज्य सहकारी भूमि-विकास बैंक एवं राजस्थान स्टेट को-आपरेटिव बैंक (शीर्ष बैंक) के प्रशासक, राजस्थान राज्य कृषि-उद्योग निगम के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, राजस्व मंडल के सदस्य, सिंचायी, ऊर्जा, सार्वजनिक निर्माण, इंदिरा गांधी नहर मण्डल कला एवं संस्कृति, पर्यटन तथा खेल-कूद आदि विभागों के आयुक्त एवं शासन सचिव के रूप में कार्य कर चुके हैं। वर्तमान पदस्थापन से पूर्व आप राज्य के गृह एवं न्याय विभाग के आयुक्त एवं शासन सचिव पद पर कार्यरत थे।

हरिदत्त गुप्ता- राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री हरिदत्त गुप्ता का जन्म 10 जून 1921 के भरतपुर जिले के धूण ग्राम में एक प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में हुआ। आपने बी एससी . सी ई. (आनर्स) तथा एलएल.बी का केवल पूर्वार्द्ध उत्तीर्ण किया। आप सार्वजनिक निमार्ण विभाग (भवन एवं पथ) के मुख्य अभियंता पद से जून 1976 में सेवानिवृत्त होने के बाद राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य मनोनीत किये गये। 10 सितम्बर, 1980 को आपने अध्यक्ष पद का कार्यभार सम्भाला और 9 जून, 1983 को अवकाश ग्रहण किया।

हरिदेव जोशी -असम के राज्यपाल तथा राजस्थान के दो बार मुख्यमंत्री रहे(11 अक्टूबर, 1973 से 29 अप्रेल, 1977 तक तथा 10 मार्च, 1985 से 20 जनवरी,1988तक) श्री हरिदेव जोशी का जन्म 17 दिसम्बर, 1921 को बांसवाडा जिले के खांदू ग्राम में हुआ। आपने किसी कालेज अथवा विश्वविद्यालय में औपचारिक रूप से शिक्षा ग्रहण नहीं की अपितु जीवन में जो कुछ पढ़ा और सीखा वह

जन-विराट के विश्वविद्यालय में ही पढ़ा और सीखा है। आप आदिवासी नेता श्री भोगीलाल पंड्या एवं श्री गौरीशंकर उपाध्याय के साथ मात्र पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में राष्ट्रीय आन्दोलन के उस दौर में शामिल हुए जब सत्ता और कुर्सी नहीं बल्कि जेल और शारीरिक यातनायें ही देशभक्ति का पुरस्कार होती थीं। आपने अज्ञान, अविद्या और दरिद्रता में फंसे आदिवासियों की पीड़ा को निकट से देखा और उसमें शिक्षा प्रसार के साथ राजनीतिक जागृति लाने के लिए अथक परिश्रम किया। प्रारंभ में आपने सेवा संघ डूंगरपुर में कुछ अर्से के लिए अध्यापन किया। आप डूंगरपुर प्रजामंडल के संस्थापकों में से हैं। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया तथा 1942,45 और 47 में जेल-यात्राएँ कीं।

1949 में रियासतों की प्रजामंडल संस्थाओं का कांग्रेस में विलय होने के बाद श्री जोशी राजस्थान प्रदेश कांग्रेस और अखिल भारतीय कांग्रेस के सदस्य चुने गये। 1952 से 60 तक प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री तथा मई 1962 में अध्यक्ष बने। प्रदेश का शायद ही ऐसा कोई भाग होगा जहां के कांग्रेस कार्यकर्ता को श्री जोशी व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते हो। 1950 में जयपुर आने से पूर्व आप जयपुर के दैनिक ''लोकवाणी'' के डूंगरपुर-बांसवाड़ा क्षेत्र के संवाददाता रहे। बाद में आप प्रदेश कांग्रेस के मुखपत्र ''कांग्रेस संदेश'' साप्ताहिक के वर्षों तक सम्पादक तथा दैनिक ''नवयुग'' के प्रकाशक व प्रधान सम्पादक रहे।

श्री जोशी राज्य के एकमात्र ऐसे विधायक रहे जो 1952 के प्रथम आम चुनाव से 1985 के आठवें आम चुनाव तक निरंतर चुने जाते रहे। 1952 में आपने डूंगरपुर, 1957 और 62 में घाटोल तथा 1967 में बांसवाड़ा क्षेत्र का विधान सभा में प्रतिनिधित्व किया। 1957 से 63 तक आप विधानसभा कांग्रेस दल के मुख्य सचेतक तथा 1957 से 65 तक विधान सभा की लोक लेखा समिति के अध्यक्ष रहे। दो जून, 1965 को आप सुखाड़िया मंत्रिमंडल में प्रथम बार कैबिनेट मंत्री नियुक्त किये गये। तब से 11 अक्टूबर, 1973 को प्रथम बार मुख्यमंत्री बनने तक सुखाड़िया और बरकतुल्ला खां सरकारों में उद्योग, खनिज, सार्वजनिक निर्माण, परिवहन, सामुदायिक विकास एवं पंचायत, बिजली, सिंचायी, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य तथा जन-सम्पर्क आदि विभागों के मंत्री रहे।

अक्टूबर 1973 में श्री बरकतुल्ला खाँ के आकस्मिक निधन के बाद आप सीधे संघर्ष में श्री रामनिवास मिर्धा को पराजित कर कांग्रेस विधायक दल के नेता और मुख्यमंत्री चुने गये। मार्च 1977 में केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार स्थापित होने पर 29 अप्रेल, 1977 को आपकी सरकार को बर्खास्त किया गया। आठवी विधान सभा का चुनाव होने के बाद 10 मार्च, 1985 को आप दूसरी बार सर्वसम्मति से कांग्रेस (इ) विधायक दल के नेता तथा मुख्यमंत्री चुने गये। 20 जनवरी, 1988 को आप प्रधानमंत्री राजीव गांधी के निर्देश पर त्यागपत्र देकर सरकार से अलग हो गये। 9 मई, 1989 को आपने विधान सभा की सदस्यता से त्याग पत्र दिया तथा 10 मई को असम के राज्यपाल पद की शपथ ग्रहण की। प्रारंभ में आपने असम के साथ मेघालय के कार्यवाहक राज्यपाल के रूप में भी कार्य किया।

हरिप्रकाश कुच्छल—सार्वजनिक निर्माण विभाग में जोधपुर क्षेत्र के अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्री एच.पी. कुच्छल का जन्म एक मई, 1934 को जयपुर में हुआ। आपने सिविल अभियांत्रिकी में बी.ई. व और आवासन अभियांत्रिकी में डिप्लोमा परीक्षा उत्तीर्ण की। 1954 में आपने सहायक अभियंता के रूप में सेवा में प्रवेश किया और 1965 में अधिशासी अभियंता, 1977 में अधीक्षण अभियंता और 4 फरवरी, 1984 को अतिरिक्त मुख्य अभियंता के रूप में पदोन्नत हुए।

हरिप्रसाद शर्मा (डा०)- राजस्थान के पूर्व सांसद तथा पूर्व विधायक डा० हरिप्रसाद शर्मा आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के पीएच.डी. हैं और आपका कानपुर में खाद्य तेलों का बड़े पैमाने पर व्यवसाय है। प्रारंभ से कांग्रेस में सक्रिय डा. शर्मा 962 और 67 के चुनावों में अलवर जिले के मंडावर

क्षेत्र से कांग्रेस टिकिट पर विधायक रह चुके है। 1977 में आप अलवर के लोकसभा सदस्य चुने गए। बाद में आप राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। 26 जून, 1985 को आप श्री मोहम्मद उस्मान आरिफ के उत्तर प्रदेश के राज्यपाल नियुक्त होने पर त्यागपत्र के फलस्वरूप रिक्त स्थान पर उपचुनाव में पुनः राज्यसभा के सदस्य चुने गये।

हरिमोहन माथुर- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में शिक्षा विभाग के आयुक्त एवं शासन सचिव श्री एच.एम. माथुर का जन्म 15 जुलाई, 1937 को झालावाड जिले में हुआ। 1959 में आपने सेवा में प्रवेश किया तथा कोटा में जिलाधीश, निदेशक शिक्षा विभाग तथा हरिश्चंद्र माथुर राजकीय लोक-प्रशासन संस्थान, केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर गृह मंत्रालय में संयुक्त सचिव (कार्मिक तथा प्रशासनिक सुधार) तथा राज्यपाल राजस्थान के सचिव आदि पदों पर कार्य किया।

श्री माथुर की संयुक्त राष्ट्रसंघ में प्रतिनियुक्ति पर कुआलालम्पुर (मलेशिया) स्थित एशियन पैसिफिक डवलपमेन्ट सेन्टर में तथा कम्पाला (युगांडा) स्थित सीनियर मैनेजमेंट एण्ड ट्रेनिंग मैथोडोलोजिज में सलाहकार पद पर भी नियुक्ति रही। वर्तमान पदस्थापन से पूर्व आप राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति रहे।

हरिमोहन शर्मा- बूंदी क्षेत्र से 1985 के आमचुनाव में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री हरिमोहन शर्मा का जन्म 14 नवम्बर 1939 को बूंदी में हुआ। आपने एम.ए. और एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त की है तथा व्यवसाय से वकील और कृषक हैं। प्रारंभ में आप सरकारी सेवा में बाबू रहे लेकिन 1963 में त्यागपत्र देकर कांग्रेस संगठन के साथ जुडे। आपने बूंदी जिले में युवक कांग्रेस की गतिविधियों को गति दी और विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन कर युवकों को सक्रिय किया। बूंदी नगरपालिका के आप लगभग एक वर्ष तक अध्यक्ष रहे। इस दौरान बूंदी नगर के सौन्दर्यीकरण पर आपने विशेष ध्यान दिया। 1971 से 85 तक आप बूंदी जिला कांग्रेस के महामंत्री रहे। जनता शासन के दौरान गन्ना जलाने के खिलाफ तथा बूंदी अस्पताल की दशा सुधारने के लिए आन्दोलन चलाया।

हरिराम आचार्य - राजस्थान के जाने-माने हिन्दी कवि और गायक श्री आचार्य का जन्म 21 जून 1936 को गंगानगर जिले की भादरा तहसील में हुआ। आपने 1958 में जयपुर के महाराजा कॉलेज से संस्कृत में एम.ए. किया और जयपुर में ही संस्कृत के व्याख्याता नियुक्त हो गये। आपके गीत एवं रचनाएं प्रदेश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने के साथ ही दूरदर्शन व आकाशवाणी से भी प्रसारित होती रहती है। आपने 1964 में फिल्म के लिए गीत भी लिखे। आकाशवाणी से आपके अनेक नाटक भी प्रसारित हो चुके है। सम्प्रति राजस्थान विश्वविद्यालय में संस्कृत विभागाध्यक्ष है।

हरिशचन्द्र कुमावत - नागौर जिले के नावां क्षेत्र से 1985 के विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के टिकिट पर चुने गये श्री हरिशचन्द्र कुमावत का जन्म सम्वत् 2001 में कुचामन सिटी में हुआ। आपकी शिक्षा हाई स्कूल तक है। आप 1982 में कुचामन नगरपालिका के अध्यक्ष चुने गये थे।

हरिश्चन्द्र पल्लीवाल- सवाईमाधोपुर जिले के गंगापुर क्षेत्र से 1985 के आम चुनाव में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री हरिश्चन्द्र पल्लीवाल गंगापुर सिटी के प्रमुख व्यवसायी व स्व. रिद्धिचन्द पल्लीवाल के पुत्र है जो स्वयं 1952 में हिण्डौन और 1957 तथा 62 के चुनाव में गंगापुर क्षेत्र के विधायक रहे थे। श्री हरिश्चन्द्र इससे पूर्व 1972 के चुनाव में भी इसी क्षेत्र से [illegible] हुए थे जबकि 1977 के चुनाव में जनता पार्टी से पराजित हो गये थे। 1980 के चुनाव में आप [illegible] टिकिट प्राप्त करने में सफल नहीं हो सके। आपका जन्म 11 अगस्त 1942 को गंगापुर सिटी में हुआ।

आपने बी.काम. की उपाधि प्राप्त की। 1970 में आप गंगापुर सिटी नगरपालिका के सदस्य चुने गये तथा 1976–77 में गंगापुर नगर-विकास न्यास के सदस्य रहे।

हरिश्चन्द्र पाण्डे- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपरटाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में कला एवं संस्कृति विभाग के शासन सचिव श्री एच.सी. पाण्डे का जन्म एक जनवरी, 1937 को उत्तर प्रदेश के गौंडा जिले में हुआ। 1959 में आप भारतीय प्रशासनिक सेवा में चुने गये। आप जिलाधीश पाली, प्रिंटिंग एवं स्टेशनरी, निर्वाचन विभाग, मंत्रिमंडल तथा जवाहरलाल नेहरू जन्म शताब्दी समारोह समिति के शासन सचिव एवं राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी, राजस्थान वित्त निगम के प्रबन्ध निदेशक, राजस्व मंडल राजस्थान के सदस्य, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्राविधिक शिक्षा, नियोजन, वैकल्पिक ऊर्जास्रोत, राजस्व, उपनिवेशन, देवस्थान, वक्फ, सैनिक-कल्याण, खाद्य एवं नागरिक रसद आदि विभागों के शासन सचिव रह चुके हैं।

हरिश्चन्द्र मीणा -भारतीय पुलिस सेवा की चयन वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में पाली जिले के पुलिस अधीक्षक श्री एच.सी. मीणा का जन्म सवाईमाधोपुर जिले के बामणवास ग्राम में 5 सितम्बर, 1954 को एक सम्पन्न मीणा परिवार में हुआ। 1976 में आपने सेवा में प्रवेश किया तथा अब तक झालावाड़, जालौर, बाड़मेर,टोंक,नागौर और बांसवाडा जिलों के पुलिस अधीक्षक तथा पुलिस मुख्यालय में सहायक महानिरीक्षक आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं।

हरिशंकर भामड़ा -चूरू जिले के रतनगढ़ क्षेत्र से मार्च 1985 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टीके टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री हरिशंकर भामड़ा का जन्म 6 अगस्त, 1928 को नागौर जिले के डीडवाना कस्बे में एक प्रतिष्ठित दाधीच ब्राह्मण परिवार में हुआ। परिवार के साथ रहने से आपकी स्कूल शिक्षा नागपुर में हुई जहाँ 9 वीं श्रेणी में पढ़ते समय ही आपने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया। 1945 में आपने सैनिक बोर्ड में बाबू की नौकरी की, 1948 से 52 तक मिडिल स्कूल के प्रधानाध्यापक रहे और 1952 में विधि स्नातक बनने के बाद दार्जिलिंग के निकट एक चाय बागान में दो वर्ष तक मैनेजर रहे। 1948 में ही कुछ समय तक डीडवाना नमक व्यवसायी संघ के सचिव भी रहे।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से आप छात्र-जीवन से ही जुड़े हुए हैं। 1948 में संघ से प्रतिबंध हटाने की मांग को लेकर हुए सत्याग्रह में आप आठ महीने कारावास में रहे। बाद में आपातकाल में 12 जुलाई, 1975 से 26 जनवरी, 1977 तक आपने 18 महीने जेल में ही बिताये। भारतीय जनसंघ की प्रदेश इकाई के आप वर्षों कोषाध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष रहे। 1963 में डीडवाना नगरपालिका के अध्यक्ष और 1971 में सदस्य रहे। 1963 में समूचे प्रदेश में डीडवाना ही एक मात्र पालिका थी जिस पर विपक्ष का आधिपत्य था। सत्तारूढ़ दल ने इसे एक बार भंग कराया लेकिन आपने उच्च न्यायालय से विजयी होकर पुनः कार्य संभाला। डीडवाना में पुस्तकालय, बाल मंदिर, धर्मशालाओं और अन्य विभिन्न संस्थाओं से आप पदाधिकारी के नाते संबद्ध हैं। 1978 से 84 तक आप राज्य सभा के सक्रिय सदस्य रहे। प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के आप अध्यक्ष भी रह चुके हैं। आप इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, हालैण्ड, स्विट्जरलैण्ड, नार्वे, ग्रीस, कुवैत और बेल्जियम आदि देशों की यात्रायें कर चुके हैं।

हरिसिंह (डा.)-राजस्थान के विख्यात शल्य चिकित्सक (सर्जन), पूर्व परिवहन एवं जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री तथा जयपुर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के वर्तमान अध्यक्ष डा. हरिसिंह का जन्म 6 जुलाई, 1935 को झुंझुनूं जिले की [illegible] तहसील के [illegible] ग्राम में एक सम्पन्न [illegible] परिवार में हुआ। आपने 1958 में सवाई मानसिंह मेडिकल कालेज से एम.बी.बी.एस. [illegible] परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर विश्वविद्यालय में [illegible] स्थान प्राप्त किया। [illegible] 1962

में आप विशेष प्रशिक्षण हेतु अमेरिका चले गये। 1966 में आपने एडिनबर्ग (इंगलैण्ड) के विख्यात रायल कालेज आफ सर्जन्स से एफ.आर.सी.एस. की उपाधि प्राप्त की। 1967 में राजस्थान लौटकर आपने नवलगढ क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में विधान सभा का चुनाव लडा जिसमें पराजित हुए। 1968 में आप सवाई मानसिंह मेडीकल कालेज जयपुर में जनरल सर्जरी में व्याख्याता नियुक्त हुए। 1974 में आपकी रीडर पद पर पदोन्नति हुई।

डा. सिंह ने 1977 में राज्य-सेवा से त्याग पत्र देकर जयपुर जिले के फुलेरा क्षेत्र से जनता पार्टी के टिकिट पर विधान सभा का चुनाव लडा और विजयी हुए। 5 नवम्बर 1978 को आप श्री भैरोंसिंह शेखावत की सरकार में केबिनेट मंत्री नियुक्त हुए और दो अगस्त 1979 को त्यागपत्र देकर सरकार से अलग हो गये। 1980 में आपने कांग्रेस (इ) टिकिट पर फुलेरा क्षेत्र से ही पुनः विधान सभा का चुनाव लडा और विजयी रहे। लेकिन 1985 के चुनाव में इसी क्षेत्र से पराजित हो गये। मई 1987 में आप जयपुर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के अध्यक्ष चुने गये।

हरिसिंह यादव- राजस्थान के वन विभाग के पूर्व प्रभारी राज्य मंत्री श्री यादव का जन्म 2 मई 1937 को अलवर जिले के रामपुरा ग्राम में हुआ। आप एम.ए., एलएल बी तक शिक्षित और व्यवसाय से वकील हैं। आपने जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और जेल गये। 1972 से 76 तक विशाल हरियाणा पार्टी के कार्यकर्त्ता रहे और किसान आन्दोलन के सिलसिले में गिरफ्तार हुए। 1977 में जनता पार्टी के टिकिट पर बांसूर क्षेत्र से विधायक चुने गये और श्री भैरोंसिंह शेखावत की सरकार में 5 नवम्बर 1978 को राज्य मंत्री नियुक्त किये गये। 1980 में आपने चुनाव नहीं लडा और 1985 के चुनाव में बांसूर क्षेत्र से ही पराजित हो गये।

हरिसिंह रांका- राजस्थान के प्रमुख उद्योगपति और मॉडर्न उद्योग समूह के अध्यक्ष श्री एच एस रांका का जन्म तीन नवम्बर, 1939 को भीलवाडा जिले के गंगापुर कस्बे में हुआ। आपने बी कॉम परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की तथा राजस्थान विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। आपने आरम्भ में कुछ अर्से तक बाटा इण्डिया कलकत्ता और बिडला प्रतिष्ठान नागदा में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया और बाद में विदेशों में भ्रमण कर उद्योगों के संचालन की मूलभूत जानकारियां अर्जित की। 1959 से 62 तक जे के उद्योग कलकत्ता में प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा 1962 में राजस्थान स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि भीलवाडा की सेवा में प्रवेश किया जहां आप कार्यकारी निदेशक के पद तक पहुंचे। बाद में आपने अलग-अलग वर्षों में अजमेर में मॉडर्न सिन्टेक्स (इंडिया) लि., भीलवाडा में मॉडर्न [illegible] लि [illegible] के शिवरामपुर में मॉडर्न वूलन कार्पेट्स प्रा लि अजमेर में दूसरा यूनिट मॉडर्न [illegible] लि तथा भीलवाडा में सुनील टैक्सटाइल मिल्स प्रा लि की स्थापना की और प्रबन्ध निदेशक के रूप में इनके कार्य और विस्तार को गति प्रदान की।

श्री रांका राजस्थान चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री के उपाध्यक्ष [illegible] चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री तथा टेक्सटाइल एसोसिएशन (इंडिया) के अध्यक्ष, राजस्थान टेक्सटाइल मिल्स एसोसिएशन की कार्यकारिणी के सदस्य तथा रिजर्व बैंक की बैंकिंग एवं वित्तीय [illegible] के सदस्य रह चुके है। आप मेवाड टैक्सटाइल मिल्स लि भीलवाडा, रोहतक टेक्सटाइल मिल्स लि रोहतक (हरियाणा) [illegible] [illegible] कारपोरेशन और राजस्थान को-आपरेटिव स्पीनिंग मिल्स लि. गुलाबपुरा [illegible] के सदस्य रह चुके है तथा [illegible] के निदेशक मंडल में [illegible] में सदस्य है। 1973 में आप [illegible] आफ ट्रेड एण्ड इंडस्ट्रियल डवलपमेंट नई दिल्ली द्वारा [illegible] [illegible] उद्यमकर्त्ता के रूप में [illegible] उद्यमकर्ता श्री वी.वी. गिरी के हाथों पुरस्कृत हो चुके है।

हरीनाथ चतुर्वेदी- राज्य सरकार के खाद्य एवं नागरिक रसद विभाग के परिचालन परामर्शदाता श्री एच.एन. चतुर्वेदी का जन्म 17 अगस्त, 1925 को दिल्ली में हुआ। आपने राजर्षि कालेज अलवर से इंटरमीजिएट परीक्षा उत्तीर्ण की और रेलवे सेवा में प्रवेश किया। वर्षों तक विभिन्न स्थानों पर विभिन्न पदों पर कार्य करने के बाद 31 अगस्त, 1983 को आप वरिष्ठ संभागीय वाणिज्यिक अधीक्षक के पद से सेवा-निवृत्त हुए। आपके कार्यकाल की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में पिंकसिटी एक्सप्रेस, बीकानेर तथा मरुधर एक्सप्रेस आदि की शुरुआत है। श्री चतुर्वेदी की कार्यकुशलता और रेलवे संचालन के दीर्घकालीन अनुभव को दृष्टि में रखकर ही राज्य सरकार ने सेवा-निवृत्ति के बाद आपकी सेवाओं का उपयोग किया है। आप क्रिकेट, नाटक और ज्योतिष शास्त्र में सक्रिय रुचि रखते हैं।

हरीश नैयर- भारतीय प्रशासनिक सेवा की सुपर टाइम वेतन श्रृंखला के अधिकारी तथा वर्तमान में राज्य के राहत एवं पुनर्वास आदि विभागों के शासन सचिव एवं पदेन आयुक्त श्री हरीश नैयर का जन्म एक मई, 1945 को दिल्ली में हुआ। आपने 1967 में सेवा में प्रवेश किया तथा सहकारी विभाग में अतिरिक्त रजिस्ट्रार और जिलाधीश जालोर रहे। 1979 में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर ऊर्जा मंत्रालय में पहले उप सचिव और बाद में निदेशक रहे। 1985 में वापस लौटने पर राजस्व मंडल के सदस्य, मंत्रिमंडल सचिवालय, स्वतंत्रता की चालीसवीं वर्षगांठ तथा जवाहरलाल नेहरू जन्म शताब्दी समारोह और खाद्य एवं नागरिक रसद विभाग के शासन सचिव आदि पदों पर कार्य किया।

हरीशनारायण गुप्ता (डा.)- जयपुर के सवाई मानसिंह मेडीकल कालेज में शल्य चिकित्सा विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डा. एच.एन. गुप्ता का जन्म 22 अगस्त, 1945 को अलवर जिले के वासकृपाल नगर ग्राम में एक सामान्य महावर वैश्य परिवार में हुआ। आपने सवाई मानसिंह मेडीकल कालेज जयपुर से एम.बी.,बी.एस., सामान्य शल्य चिकित्सा में एम.एस. और मूत्र रोगों पर एम.सी.एच. का पाठ्यक्रम उत्तीर्ण किया। आप 1975 से 77 तक एस.एम.एस. मेडीकल कालेज जयपुर के मूत्र रोग विभाग में ट्यूटर, 1978 के पूर्वार्द्ध में ई.एस.आई. अस्पताल जयपुर में चिकित्सा अधिकारी तथा बाद में एक वर्ष तक सम्पूर्णानन्द मेडीकल कालेज जोधपुर में व्याख्याता पद पर रहे। नवम्बर 1986 में आपकी एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में पदोन्नति हुई और आपने पहले जवाहरलाल नेहरू मेडीकल कालेज अजमेर और बाद में कुछ अर्से तक सम्पूर्णानन्द मेडीकल कालेज जोधपुर में कार्य किया।

हरीश भादाणी- राजस्थान के वरिष्ठ हिन्दी कवि श्री भादाणी का जन्म 11 जून, 1933 को बीकानेर में हुआ। आपने डूंगर कालेज से बी.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद बीकानेर से "वातायन" का प्रकाशन किया। आपकी कवितायें पिछले लगभग 35 वर्षों से देश-प्रदेश की पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता से छपती रहती हैं। आपका पहला कविता संग्रह "अधूरे गीत" 1959 में प्रकाशित हुआ। 1966 में "उजली नजर की सुई" प्रकाशित हुई जिसे राजस्थान साहित्य अकादमी ने पुरस्कृत किया। 1975-76 में अकादमी ने आपको विशिष्ट साहित्यकार के रूप में समादृत किया। 1984 में "सन्नाटे के शिलाखंड" कविता संग्रह पर सुधीन्द्र पुरस्कार, 1986 में "एक अकेला सूरज खेले" पर सर्वोच्च मीरा पुरस्कार और 1988 में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी फैलोशिप प्रदान कर अकादमी ने आपको सम्मानित किया है। आपकी अब तक एक दर्जन से अधिक काव्यकृतियां प्रकाश में आ चुकी हैं।

हरीश शर्मा- झालावाड़ जिले के खानपुर क्षेत्र से 1985 के विधान सभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री हरीश शर्मा 1977 और 80 के चुनावों में कोटा जिले के ... क्षेत्र से क्रमशः जनता पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के टिकिट पर विधायक चुने जाते रहे हैं। जन्म 10 नवम्बर, 1948 को क्यावरी ग्राम में हुआ और आपने स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। आप व्यवसाय से कृषक हैं।

हस्तीमल (आचार्य)- जैन धर्म, दर्शन, साहित्य, इतिहास और शास्त्रों के प्रकांड विद्वान और व्याख्याकार आचार्य हस्तीमल जी का जन्म जोधपुर जिले के पीपाड कस्बे में सम्वत 1967 के पौष मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को श्री केवलचन्द बोथरा के यहां हुआ। आपके पिताश्री का देहावसान तभी हो गया जब आप गर्भस्थ थे। अतः आपका पालन-पोषण माता रूपा देवी ने किया। आपने सम्वत 1977 में मात्र दस वर्ष की आयु में जैनाचार्य श्री शोभाचन्द से अजमेर में जैनदीक्षा ग्रहण की और अपनी कुशाग्र बुद्धि, कठोर अनुशासन और आचार-व्यवहार की उत्कृष्टता के कारण सं 1987 में बीस वर्ष की आयु में आप चतुर्विध संघ के संघनायक के रूप में आचार्य पद पर प्रतिष्ठापित हो गये।

आचार्यश्री ने भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों विशेषकर सत्य, अहिंसा, प्रेम और सेवा को जन-जन में उतारने के लिये देश के विभिन्न भागों में लम्बी-लम्बी कष्टप्रद यात्रायें की हैं। आपके प्रवचनों से लोगों के जीवन और कार्यों में परिवर्तन आया है। आपके प्रवचनों का संग्रह "गजेन्द्र व्याख्यान माला" सात भागों में प्रकाशित हुआ है तथा "गजेन्द्र सूक्तिसुधा" में आत्मस्पर्शी सूक्तियों का संकलन है।

हीरालाल आर्य- कोटा जिले के पीपलदा (सु.) क्षेत्र से 1985 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री हीरालाल आर्य 1977 और 1980 के चुनावों में क्रमशः जनता पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के टिकिट पर इसी क्षेत्र से विजयी हो चुके हैं। आपका जन्म पांच जुलाई, 1945 को इटावा ग्राम में हुआ। आपने एम ए और बी एड की उपाधियां प्राप्त की तथा 1977 में चुनाव लड़ने से पूर्व शिक्षा विभाग में द्वितीय श्रेणी के अध्यापक थे।

हीरालाल इन्दोरा- राजस्थान के खनिज, राज्य बीमा तथा अल्प बचत आदि विभाग में प्रभारी राज्यमंत्री श्री हीरालाल इन्दोरा का जन्म श्रीगंगानगर जिले के केसरीसिंहपुर स्थित [illegible] मिल में मजदूरी करने वाले प्रभातीराम धानक के घर दो फरवरी, 1941 को हुआ। आपने उच्च माध्यमिक तक नियमित शिक्षा प्राप्त की और बाद में राजस्थान विश्वविद्यालय से लोक-प्रशासन में एम ए की परीक्षा स्वयंपाठी छात्र के रूप में उत्तीर्ण की। कांग्रेस संगठन से आप ग्यारहवीं श्रेणी में अध्ययन के दौरान ही जुड़ गये और 1964 से पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता हैं। आप प्रदेश के पहले ऐसे कार्यकर्ता हैं जिन्हें देश के विभिन्न भागों में कांग्रेस जनों को प्रशिक्षण देने हेतु भिजवाया गया। आप ग्यारह वर्षों तक प्रदेश कांग्रेस के प्रमुख सेवादल अधिकारी तथा प्रदेश कांग्रेस की कार्यकारिणी के सदस्य भी रहे। श्री [illegible] काल में आप प्रदेश कांग्रेस के महामंत्री बनाये गये।

श्री इन्दोरा 16 अक्टूबर, 1985 को जोशी मंत्रिमंडल में खनिज एवं समाज-कल्याण विभाग के प्रभारी राज्य मंत्री नियुक्त किये गये। 20 जनवरी 1988 को जोशी मंत्रिमंडल के त्यागपत्र के साथ ही आपका मंत्री पद स्वतः समाप्त हो गया। बाद में आठ जून, 1989 को [illegible] मंत्रिमंडल में [illegible] विभागों के पुनः राज्य मंत्री बनाये गये।

हीरालाल जैन- राजस्थान के विख्यात समाजवादी नेता, विचारक और [illegible] का जन्म 12 अगस्त, 1916 को कोटा में हुआ। जब आप [illegible] 1935 व 37 [illegible] सक्रिय रुचि लेने लगे और अध्ययन के साथ-साथ [illegible] वहां से [illegible] तक आपने टैगोर निकेतन में अध्ययन कर कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी ए (आनर्स) [illegible] आपका तत्कालीन राष्ट्रीय नेताओं से सम्पर्क हुआ।

मई 1938 में श्री जैन को तत्कालीन कोटा रियासत के [illegible] निर्वासित हुए लेकिन स्वतंत्र विचारों के धनी श्री जैन 6 माह बाद ही [illegible] आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। इस दौरान आप [illegible] समाजवादी दल में शामिल हुए। 1952 में [illegible] और 1964 में [illegible]

[illegible] गये। [illegible] पुनः 1975 में आप मंत्री बनाये गये और 28 जनवरी, 1977 को त्यागपत्र दिया। [illegible] [illegible] के दौरान [illegible] के सदस्य भी रहे।

हीरालाल देवपुरा- राजस्थान प्रदेश कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष, पूर्व मुख्यमंत्री तथा [illegible] [illegible] श्री हीरालाल देवपुरा का जन्म 15 अक्टूबर, 1925 को उदयपुर जिले के [illegible] में एक [illegible] परिवार में हुआ।

विद्यार्थी काल से ही देवपुरा [illegible] आन्दोलन की गतिविधियों में [illegible] और 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में [illegible] गये। 1952 में उदयपुर जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य व 1960 में अध्यक्ष 1959 में कुम्भलगढ़ पंचायत समिति के प्रधान तथा 1962 में उदयपुर जिला सहकारी भूमि-विकास बैंक के अध्यक्ष चुने गये। 1967 में आप प्रथम बार कुम्भलगढ़ क्षेत्र से विधायक चुने गये और [illegible] 1967 को सुखाड़िया सरकार में पर्यटन तथा [illegible] विभाग के राज्य मंत्री नियुक्त किये गये। 1972 में इसी क्षेत्र से पुनः विधायक चुने गये और श्री बरकतुल्ला खां की सरकार में 12 नवम्बर, 1973 को सार्वजनिक निर्माण, सिंचाई, ऊर्जा और [illegible] विभाग के कैबिनेट मंत्री बनाये गये। 1977 में जनता लहर में आप विधान सभा का चुनाव हार गये और 1978 में कांग्रेस का विभाजन होने पर आप श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस की राजस्थान प्रदेश शाखा के अध्यक्ष नियुक्त किये गये।

1980 के चुनाव में आप कुम्भलगढ़ से ही पुनः विधायक चुने गये तथा 18 फरवरी, 1981 को पहाड़िया मंत्रिमंडल में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री नियुक्त किये गये। बाद में 17 जुलाई, 1982 को आप माथुर मंत्रिमंडल में शामिल किये गये। 22 फरवरी, 1985 को आम चुनाव से पूर्व श्री माथुर के त्यागपत्र के पश्चात पर 23 फरवरी 85 को आपने राज्य के बारहवें मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। मार्च 85 में कुम्भलगढ़ से ही चौथी बार विधायक चुने जाने पर 20 मार्च को आप सर्व-सम्मति से विधानसभाध्यक्ष चुने गये। 16 अक्टूबर को इससे त्यागपत्र देकर इसी दिन जोशी मंत्रिमंडल में पुनः मंत्री नियुक्त हुए और 20 जनवरी 1988 तक पद पर रहे। 9 जून, 1989 को आप प्रदेश अध्यक्ष पद पर मनोनीत किये गये।

हीरालाल माहेश्वरी (डा.)- राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डा. हीरालाल माहेश्वरी का जन्म 20 जनवरी, 1931 को गंगानगर में हुआ। आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम.ए., एलएल.बी. और डी.फिल. तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से डी.लिट्. की उपाधि प्राप्त की। इनके साथ ही आपने साहित्यरत्न, साहित्यलंकार और विद्या विनोद परीक्षायें भी उत्तीर्ण की है। आपकी आधा दर्जन से अधिक महत्वपूर्ण कृतियां प्रकाशित हो चुकी है तथा कुछ अभी प्रकाशनाधीन है। आपको राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा 1961 और 1973, हिन्दी समिति उत्तर प्रदेश शासन द्वारा 1972, क्रिटिक्स सर्किल आफ इंडिया कलकत्ता द्वारा सन् 1983 का सी.सी.आई.अवार्ड तथा अन्य पुरस्कार प्राप्त हो चुके है। आप राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी तथा केन्द्रीय साहित्य अकादमी नई दिल्ली के 1978 से 82 तक तथा 1983 से 87 तक साधारण सभा के सदस्य रहे।

हीरालाल सहरिया- कोटा जिले के किशनगंज (सु.ज.ज.) क्षेत्र से 1985 के आम चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में निर्वाचित विधायक श्री हीरालाल सहरिया का जन्म दो अप्रैल, 1947 को फाल्डी रामपुरिया ग्राम में हुआ। आपकी औपचारिक रूप से कोई शिक्षा नहीं हुई और व्यवसाय से आप श्रमिक है।

हीरासिंह चौहान- पाली जिले के रायपुर क्षेत्र से 1985 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री हीरासिंह चौहान ने 1977 और 80 के विधान सभा चुनावों में भी क्रमशः निर्दलीय और भाजपा प्रत्याशी के रूप में इसी क्षेत्र से भाग्य आजमाया लेकिन उस समय आपको सफलता नहीं मिल सकी थी। आपका जन्म एक जुलाई, 1940 को पाली जिले के [illegible] ग्राम में हुआ जहां 1981 में आप निर्विरोध सरपंच चुने गये। इससे पूर्व 1974 से 77 तक आप जैतारण कृषि-उपज मंडी समिति के अध्यक्ष रहे। श्री सिंह ने एम.ए. और एलएल बी. तक शिक्षा ग्रहण की है और व्यवसाय से वकील है। 1970 तक आप राज्य सेवा में अध्यापक रह चुके है।

हेतु भारद्वाज- राजस्थान के जाने-माने साहित्यकार श्री हेतु भारद्वाज जिनका वास्तविक नाम होतीलाल भारद्वाज है, का जन्म 15 जनवरी, 1937 को हुआ। हिन्दी में एम ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद आप राज्य के कालेज शिक्षा विभाग में हिन्दी के व्याख्याता नियुक्त हुए और पिछले कई वर्षों से राजकीय महाविद्यालय नीम-का-थाना में पदस्थापित है। आपकी कहानियां हिन्दी की शीर्ष पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है। प्रथम कृति 1970 में "तीन कमरों का मकान" प्रकाशित हुई।

हेमाराम चौधरी- बाड़मेर जिले के गुढामलानी क्षेत्र से 1980 और 85 के चुनावों में कांग्रेस (इ) टिकिट पर निर्वाचित विधायक श्री हेमाराम चौधरी का जन्म 18 जनवरी, 1948 को [illegible] ग्राम में हुआ। आप विधि-स्नातक है तथा व्यवसाय से वकील और कृषक है।

क्षेत्रपाल शर्मा- विद्युत उपकरणों और मशीनरी व्यवसाय के अग्रणी भारतीय प्रतिष्ठान मैसर्स श्री नरसिंहसहाय मदनगोपाल प्रा.लि. की जयपुर शाखा के प्रबन्धक श्री के पी शर्मा का जन्म 6 दिसम्बर,1937 को मथुरा में हुआ। आपने बी.ए. (आनर्स) और बी एड की उपाधि प्राप्त की। आप मशीनरी एण्ड इलेक्ट्रिकल मर्चेन्ट्स एसोसियेशन जयपुर के विभिन्न पदों पर रहने के साथ ही [illegible] की अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं से भी जुड़े हुए है।

त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी (डा.)- प्रसिद्ध साहित्यकर्मी श्री त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी का जन्म 13 सितम्बर, 1928 को कोटा में हुआ। आपने एम ए. और पीएच डी तक शिक्षा प्राप्त की और राज्य [illegible] शिक्षा विभाग में व्याख्याता नियुक्त हुए। आपका प्रथम निबंध संग्रह 1960 में "[illegible]" प्रकाशित हुआ। बाद में 1967 में "ममता की समाधि" तथा 1968 में "[illegible]" प्रकाशित हुए।

त्रिलोकचन्द जैन- राजस्थान के जाने-माने [illegible] और [illegible] सहकारिता, खादी-ग्रामोद्योग, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य तथा [illegible] विभागों [illegible] त्रिलोकचन्द जैन का जन्म 9 जुलाई, 1927 को [illegible] शिक्षा आपकी केकड़ी में हुई और बाद में ट्यूशन से [illegible] एम ए. तथा साहित्यरत्न किया। इस दौरान मेवाड़ विद्यार्थी संघ के [illegible] के बाद 1949 से 51 तक महिला मंडल हाई स्कूल उदयपुर के [illegible] विचारधारा और उनके आदर्शों को जीवन में उतारने से [illegible] आपको जयपुर ले आये और आपके निर्देशन में गांधी अध्ययन [illegible] इस केन्द्र के निदेशक तथा 1954 से 59 तक राजस्थान [illegible] अवधि में आप [illegible] नियुक्त [illegible] [illegible] गांधी राष्ट्रीय स्मारक निधि के गांधी [illegible]
1959 में खादी ग्रामोद्योग विद्यालय शिवदासपुरा के [illegible]

नियुक्त किये गये। 1965 में प्रौढ़ शिक्षा पर डेनमार्क में यूनेस्को द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्री
आपने भारत का प्रतिनिधित्व किया।

आपातकाल में श्री जैन 9 माह तक कारावास में रहे। जून 1977 में हुए विधान
आपको जनता पार्टी ने बिना मांगे जहाजपुर क्षेत्र से टिकिट दिया। चुनाव में विजयी होने
भैरोसिंह शेखावत की सरकार में केबिनेट मंत्री नियुक्त किये गये। 1980 में आपने जहाज
विधान सभा का चुनाव पुनः लड़ा लेकिन सफल नहीं हो सके।

त्रिलोकीदास खण्डेलवाल- प्रमुख समाजसेवी श्री त्रिलोकीदास खण्डेलवाल जय
माने जौहरी स्व. दामोदरदास खण्डेलवाल के पुत्र हैं। आपका जन्म 20 जुलाई,1932 को ज
आपने महाराजा कालेज से बी.काम. परीक्षा राजस्थान विश्वविद्यालय से सर्वोच्च अंकों के सा
स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 1951–52 में आप महाराजा कालेज छात्र संघ के मंत्री चुने गये। उ
चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री के संयुक्त मंत्री, जयपुर चेम्बर आफ कामर्स एण्ड
राजस्थान आइरन ओर माइनिंग ऑनर्स एण्ड एक्सपोर्टर्स एसोसियेशन के मंत्री, राज
सलाहकार समिति, उत्तर क्षेत्रीय खनिज परामर्श बोर्ड तथा संभागीय रेलवे उपभोक्ता परामर्श
के सदस्य रह चुके हैं। वर्तमान में भी आप श्री राम-कृष्ण जन्म महोत्सव समिति जयपुर स
विभिन्न सामाजिक, व्यावसायिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी—बोफर्स तोपों की खरीद पर जुलाई, 1989 में आडिट रि
कर भारतीय संसद और देश की राजनीति में अनायास उबाल ला देने वाले भारत के निय
महालेखा परीक्षक श्री टी.एन. चतुर्वेदी भारतीय प्रशासनिक सेवा के राजस्थान काडर के अधि
आपका जन्म 18 जनवरी, 1928 को उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद जिले के तिरवा ग्राम में हुआ।
विश्वविद्यालय से आपने एम.ए. (अर्थशास्त्र), एलएल.बी. और हिन्दी साहित्य सम्मेलन से
उपाधि प्राप्त की 1950 में भा० प्र० सेवा में चयन से पूर्व कुछ अर्से तक आप व्याख्य

श्री चतुर्वेदी जयपुर के उप जिलाधीश तथा 2 अक्टूबर, 1952 को प्रारंभ राजस्था
विकास खंड बस्सी के खंड विकास अधिकारी नियुक्त हुए। नवम्बर 1954 में श्री मोहनलाल सु
मुख्यमंत्री बनने पर आप मुख्यमंत्री के सचिव नियुक्त हुए और इस पद पर अक्टूबर 1
कार्यकिया। बाद में विश्व बैंक की ओर से वाशिंगटन में प्रशिक्षणार्थ भेजे गये जहाँ से लौटने पर
में जिलाधीश अजमेर नियुक्त किये गये। इसी के साथ आपने नगर-विकास न्यास के अध्यक्ष
परिषद् के प्रशासक का कार्य भी किया। तत्पश्चात् आप पहले उद्योग विभाग के निदेशक और म
एवं खनिज विभाग के शासन सचिव रहे।

जुलाई 1967 में श्री चतुर्वेदी केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय
अकादमी मसूरी के संयुक्त निदेशक नियुक्त हुए। वहाँ से दिल्ली प्रशासन के मुख्य स
इन्वेस्टमेंट सेंटर के कार्यकारी निदेशक तथा 1976 में चण्डीगढ के चीफ कमिश्नर बनाये ग
केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बनने पर आप कुछ अर्से के लिए राजस्थान आ गये तथा
नियुक्त हुए। बाद में आप भारतीय लोक-प्रशासन संस्थान (आई.आई.पी.ए.) दिल्ली
केन्द्रीय सरकार के शिक्षा सचिव तथा फरवरी 1985 में वर्तमान मनोनयन से पूर्व गृ

श्री चतुर्वेदी ने विभिन्न प्रतिनिधि मंडलों के सदस्य तथा नेता के रूप में विश्व के वि
भ्रमण किया है। अध्ययन, चिन्तन, शास्त्रीय संगीत और सामाजिक ज्ञान में आपकी वि
आपको लोक-प्रशासन में योगदान के लिए फिलीपींस की राष्ट्रपति कोराजन एक्विनो
1987 को पूर्वी क्षेत्रीय संगठन की 12वीं जनरल एसेम्बली के उद्घाटन के अवसर प
सम्मानित किया।

ज्ञानचन्द सिंघवी—सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी हैदराबाद के पूर्व निदेशक और वर्तमान में सेन्ट्रल सिविल सर्विसेज अपीलेट ट्रिब्यूनल के सदस्य श्री जी सी सिंघवी का जन्म 10 नवम्बर, 1927 नागौर में हुआ। आपने आगरा विश्वविद्यालय से बी काम तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में एलएल.बी परीक्षा उत्तीर्ण की। 1951 में आपका भारतीय पुलिस सेवा में चयन हुआ और आप भरतपुर, सीकर, श्रीगंगानगर और कोटा आदि जिलों के पुलिस अधीक्षक तथा शिलांग में नेफा, जालंधर और जोधपुर में सीमा-सुरक्षा बल तथा अजमेर, उदयपुर और बीकानेर आदि के रेंज पुलिस उपमहानिरीक्षक रहे। 24 अक्टूबर 1977 को आपको भ्रष्टाचार-निरोधक विभाग में अतिरिक्त महानिरीक्षक पुलिस नियुक्त किया गया। बाद में 9 फरवरी, 1981 से 31 जनवरी 83 तक आपने राजस्थान पुलिस के महानिरीक्षक पद पर कार्य किया। एस वी.पी राष्ट्रीय पुलिस अकादमी के निदेशक पद पर आपकी नियुक्ति 20 जनवरी, 1983 को हुई जहां से आपने 30 नवम्बर 1985 को अवकाश ग्रहण किया। आपको उत्कृष्ट सेवाओं के लिए 1968 में "पुलिस पदक" तथा 1971 के भारत-पाक संघर्ष के दौरान असाधारण कार्यों के लिए "संग्राम पदक" और "पश्चिमी स्टार" से सम्मानित किया गया। 1972 में आपको राज्य सरकार ने आपके द्वारा पुलिस-प्रशासन के सम्बन्ध में लिखे गये 33 लेखों के लिए एक हजार रुपये और 1977 में लोक-प्रशासन एवं पुलिस के सम्बन्ध में प्रकाशित बीस लेखों के लिए तीन हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया।

ज्ञानप्रकाश पिलानिया (डा०)—राजस्थान के पुलिस महानिदेशक डा० पिलानिया का जन्म 18 फरवरी, 1932 को गंगानगर जिले में हुआ। आपने इतिहास में एम ए नागपुर से हिन्दी में एम ए भागलपुर से, एलएल बी दिल्ली से और पीएच.डी की उपाधि राजस्थान विश्वविद्यालय से प्राप्त की।

1955 में भारतीय पुलिस सेवा में चयन के बाद आप राज्य के विभिन्न जिलों के पुलिस अधीक्षक रहे और केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो में उप महानिरीक्षक और वाणिज्य मंत्रालय में सतर्कता निदेशक रहे। 1978-79 में आप ब्रिटेन चले गये जहाँ मैन्चेस्टर विश्वविद्यालय में विशेष अध्ययन किया। 1980 में आप जयपुर रेंज के उप महानिरीक्षक रहे और 1981 में आपकी पदोन्नति अतिरिक्त महानिरीक्षक के पद पर हुई और आपने पुलिस-कल्याण तथा पुलिस के आधुनिकीकरण के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। 12 जुलाई, 1984 को आपको राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का अध्यक्ष नियुक्त किया गया जहाँ आपने निगम को घाटे की स्थिति से उबारने और यात्रियों की सुविधा के लिए अनेक नये कदम उठाये। 27 जून, 1985 को आपको भ्रष्टाचार-निरोधक विभाग का निदेशक नियुक्त किया गया। 4 जुलाई, 1986 से 1 फरवरी, 1988 तक, वर्तमान पदस्थापना से पूर्व, आप नागरिक सुरक्षा के महानिदेशक एवं गृह रक्षा दल के महासमादेष्टा पद पर कार्यरत थे। यूरोप, अमेरिका और सुदूर पूर्व के देशों की आप यात्रा कर चुके हैं।

ज्ञान भारिल्ल—प्रदेश के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री ज्ञान भारिल्ल का जन्म 1926 में अजमेर जिले के ब्यावर नगर में हुआ। आपने एम.ए. और बी एड. किया तथा अजमेर के लिए ग्राम्य अंचल में रह कर अध्यापन किया। आपकी रचनाएं देश के प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में पिछले चार दशकों से प्रकाशित होती रही हैं। 1960 में आपकी प्रथम कृति 'उजाड़ कुसुम' प्रकाशित हुई। 'साथ-उतरी' काव्य संग्रह 1967 में, 'साक्षी शिला' और 'कोरे पुरुष कुम्भा' 1968 में प्रकाशित हुई। 'प्यार मरा हिरण' आपका उपन्यास साहित्य-जगत में वर्षों तक चर्चित रहा। राजस्थान साहित्य अकादमी के आप कुछ वर्ष तक सदस्य भी रहे।

ज्ञानचन्द मोदी—स्वतंत्रता सेनानी और जन-जन-सेवा के निष्ठावान समाज-सेवी मोदी परिवार के सबसे वरिष्ठ सदस्य श्री ज्ञानचन्द मोदी का जन्म 11 जनवरी 1903 को झालावाड़ में हुआ। [illegible] में आपने सक्रिय भाग लिया और उत्तम-उत्तम स्थानों पर चार-छः वर्ष तक [illegible] रहे। . .

नियुक्त किये गये। 1965 में प्रौढ़ शिक्षा पर डेनमार्क में यूनेस्को द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में आपने भारत का प्रतिनिधित्व किया।

आपातकाल में श्री जैन 9 माह तक कारावास में रहे। जून 1977 में हुए विधान सभा चुनाव में आपको जनता पार्टी ने बिना मांगे जहाजपुर क्षेत्र से टिकिट दिया। चुनाव में विजयी होने पर आप श्री भैरोसिंह शेखावत की सरकार में कैबिनेट मंत्री नियुक्त किये गये। 1980 में आपने जहाजपुर क्षेत्र से ही विधान सभा का चुनाव पुनः लड़ा लेकिन सफल नहीं हो सके।

त्रिलोकीदास खण्डेलवाल- प्रमुख समाजसेवी श्री त्रिलोकीदास खण्डेलवाल जयपुर के जाने-माने जौहरी स्व. दामोदरदास खण्डेलवाल के पुत्र हैं। आपका जन्म 20 जुलाई, 1932 को जयपुर में हुआ। आपने महाराजा कालेज से बी.कॉम. परीक्षा राजस्थान विश्वविद्यालय से सर्वोच्च अंकों के साथ उत्तीर्ण कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 1951–52 में आप महाराजा कालेज छात्र संघ के मंत्री चुने गये। आप राजस्थान चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री के संयुक्त मंत्री, जयपुर चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री तथा राजस्थान आइरन ओर माइनिंग ओनर्स एण्ड एक्सपोर्टर्स एसोसियेशन के मंत्री, राजस्थान खनिज सलाहकार समिति, उत्तर क्षेत्रीय खनिज परामर्श बोर्ड तथा संभागीय रेलवे उपभोक्ता परामर्शदात्री समिति के सदस्य रह चुके हैं। वर्तमान में भी आप श्री राम-कृष्ण जन्म महोत्सव समिति जयपुर सहित राज्य की विभिन्न सामाजिक, व्यावसायिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी—बोफर्स तोपों की खरीद पर जुलाई, 1989 में आडिट रिपोर्ट प्रस्तुत कर भारतीय संसद और देश की राजनीति में अनायास उबाल ला देने वाले भारत के नियन्त्रक एवम् महालेखा परीक्षक श्री टी.एन. चतुर्वेदी भारतीय प्रशासनिक सेवा के राजस्थान काडर के अधिकारी रहे हैं। आपका जन्म 18 जनवरी, 1928 को उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद जिले के तिरवा ग्राम में हुआ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से आपने एम.ए. (अर्थशास्त्र), एलएल.बी. और हिन्दी साहित्य सम्मेलन से विशारद की उपाधि प्राप्त की 1950 में भा० प्र० सेवा में चयन से पूर्व कुछ अर्से तक आप व्याख्याता रहे।

श्री चतुर्वेदी जयपुर के उप जिलाधीश तथा 2 अक्टूबर, 1952 को प्रारंभ राजस्थान के प्रथम विकास खंड बस्सी के खंड विकास अधिकारी नियुक्त हुए। नवम्बर 1954 में श्री मोहनलाल सुखाड़िया के मुख्यमंत्री बनने पर आप मुख्यमंत्री के सचिव नियुक्त हुए और इस पद पर अक्टूबर 1959 तक कार्य किया। बाद में विश्व बैंक की ओर से वाशिंगटन में प्रशिक्षणार्थ भेजे गये जहाँ से लौटने पर जून 1960 में जिलाधीश अजमेर नियुक्त किये गये। इसी के साथ आपने नगर-विकास न्यास के अध्यक्ष और नगर परिषद् के प्रशासक का कार्य भी किया। तत्पश्चात आप पहले उद्योग विभाग के निदेशक और बाद में उद्योग एवं खनिज विभाग के शासन सचिव रहे।

जुलाई 1967 में श्री चतुर्वेदी केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी मसूरी के संयुक्त निदेशक नियुक्त हुए। वहाँ से दिल्ली प्रशासन के मुख्य सचिव, इंडिया इन्वेस्टमेंट सेंटर के कार्यकारी निदेशक तथा 1976 में चण्डीगढ़ के चीफ कमिश्नर बनाये गये। 1977 में केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बनने पर आप कुछ अर्से के लिए राजस्थान आ गये तथा रीको के अध्यक्ष नियुक्त हुए। बाद में आप भारतीय लोक-प्रशासन संस्थान (आई.आई.पी.ए.) दिल्ली के निदेशक, केन्द्रीय सरकार के शिक्षा सचिव तथा फरवरी 1985 में वर्तमान मनोनयन से पूर्व गृह सचिव रहे।

श्री चतुर्वेदी ने विभिन्न प्रतिनिधि मंडलों के सदस्य तथा नेता के रूप में विश्व के विभिन्न देशों का भ्रमण किया है। अध्ययन, चिन्तन, शास्त्रीय संगीत और सामाजिक ज्ञान में आपकी विशेष रुचि है। आपको लोक-प्रशासन में योगदान के लिए फिलीपीन्स की राष्ट्रपति कोराजन एक्विनो ने 23 नवम्बर, 1987 को पूर्वी क्षेत्रीय संगठन की 12वीं जनरल एसेम्बली के उद्घाटन के अवसर पर पदक भेंट कर सम्मानित किया।

ज्ञानचन्द सिंघवी—सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी हैदराबाद के पूर्व निदेशक और वर्तमान में सेन्ट्रल सिविल सर्विसेज अपीलेट ट्रिब्यूनल के सदस्य श्री जी सी सिंघवी का जन्म 10 नवम्बर, 1927 नागौर में हुआ। आपने आगरा विश्वविद्यालय से बी कॉम तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में एलएल.बी परीक्षा उत्तीर्ण की। 1951 में आपका भारतीय पुलिस सेवा में चयन हुआ और आप भरतपुर सीकर, श्रीगंगानगर और कोटा आदि जिलों के पुलिस अधीक्षक तथा [illegible] में नसरा, अलवर और जोधपुर में सीमा-सुरक्षा बल तथा अजमेर उदयपुर और बीकानेर आदि के रेंज पुलिस उपमहानिरीक्षक रहे। 24 अक्टूबर 1977 को आपको भ्रष्टाचार-निरोधक विभाग में अतिरिक्त महानिरीक्षक पुलिस नियुक्त किया गया। बाद में 9 फरवरी *1981* से *31* जनवरी, *83* तक आपने राजस्थान पुलिस के महानिरीक्षक पद पर कार्य किया। एस वी.पी राष्ट्रीय पुलिस अकादमी के निदेशक पद पर आपकी नियुक्ति 20 जनवरी 1983 को हुई जहां से आपने 30 नवम्बर 1985 को अवकाश ग्रहण किया। आपको उत्कृष्ट सेवाओं के लिए 1968 में "पुलिस पदक" तथा 1971 के भारत-पाक संघर्ष के दौरान असाधारण कार्यों के लिए "संग्राम पदक" और "पश्चिमी स्टार" से सम्मानित किया गया। 1972 में आपको राज्य सरकार ने आपके द्वारा पुलिस-प्रशासन के सम्बन्ध में लिखे गये 33 लेखों के लिए एक हजार रुपये और 1977 में लोक-प्रशासन एवं पुलिस के सम्बन्ध में प्रकाशित बीस लेखों के लिए तीन हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया।

ज्ञानप्रकाश पिलानिया (डा०)—राजस्थान के पुलिस महानिदेशक डा० पिलानिया का जन्म 18 फरवरी, 1932 को गंगानगर जिले में हुआ। आपने इतिहास में एम.ए नागपुर से, हिन्दी में एम ए *भागलपुर से, एलएल.बी दिल्ली से और पीएच डी की उपाधि राजस्थान विश्वविद्यालय से प्राप्त की।*

1955 में भारतीय पुलिस सेवा में चयन के बाद आप राज्य के विभिन्न जिलों के पुलिस अधीक्षक रहे और केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो में उप महानिरीक्षक और वाणिज्य मंत्रालय में सतर्कता निदेशक रहे। 1978–79 में आप ब्रिटेन चले गये जहाँ मैन्चेस्टर विश्वविद्यालय में विशेष अध्ययन किया। 1980 में आप जयपुर रेंज के उप महानिरीक्षक रहे और 1981 में आपकी पदोन्नति अतिरिक्त महानिरीक्षक के पद पर हुई और आपने पुलिस-कल्याण तथा पुलिस के आधुनिकीकरण के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। 12 जुलाई, 1984 को आपको राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का अध्यक्ष नियुक्त किया गया जहाँ आपने निगम को घाटे की स्थिति से उबारने और यात्रियों की सुविधा के लिए अनेक नये कदम उठाये। 27 जून, 1985 को आपको भ्रष्टाचार-निरोधक विभाग का निदेशक नियुक्त किया गया। 4 जुलाई, 1986 से 1 फरवरी, 1988 तक, वर्तमान पदस्थापना से पूर्व, आप नागरिक सुरक्षा के महानिदेशक एवं गृह रक्षा दल के महासमादेष्टा पद पर कार्यरत थे। यूरोप, अमेरिका और सुदूर पूर्व के देशों की आप यात्रा कर चुके हैं।

ज्ञान भारिल्ल—प्रदेश के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री ज्ञान भारिल्ल का जन्म 1926 में अजमेर जिले के ब्यावर नगर में हुआ। आपने एम.ए. और बी.एड. किया तथा आजीविका के लिए राज्य सेवा में रह कर अध्यापन किया। आपकी रचनायें देश के प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में पिछले चार दशकों से प्रकाशित होती रही हैं। 1960 में आपकी प्रथम कृति 'अकाश कुसुम' प्रकाशित हुई। 'साँझ-उतरी' काव्य संग्रह 1967 में, 'साक्षी क्षिप्रा' और 'कीर्ति पुरुष कुम्भा' 1968 में प्रकाशित हुई। 'प्यासे स्वर्ण हिरण' आपका उपन्यास साहित्य-जगत में वर्षों तक चर्चित रहा। राजस्थान साहित्य अकादमी के आप कुछ वर्षों तक सचिव भी रहे।

ज्ञानचन्द मोदी—स्वतंत्रता सेनानी और नीम-का-थाना के विख्यात समाज-सेवी मोदी परिवार के सबसे वरिष्ठ सदस्य श्री ज्ञानचन्द मोदी का जन्म 11 अगस्त, 1908 को छावनी में हुआ। आजादी की लड़ाई में आपने सक्रिय भाग लिया और अलग-अलग स्थानों पर चार-पाँच बार जेल-यात्रायें की। प्रारम्भ

कार्यालय जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, झुंझुनूं

निरन्तर विकास की दिशा में अग्रसर

20 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के अन्तर्गत गरीबी की रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों को निम्न योजनाओं के माध्यम से लाभान्वित किये जाने का उद्देश्य:–

(अ) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र के परिवारों को संसाधन उपलब्ध कराने हेतु ऋण एवं अनुदान दिया जाकर अपने स्वयं का रोजगार चालू करने में सहायता उपलब्ध कराना।

(ब) ट्राईसम योजनान्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र के युवक-युवतियों को विभिन्न व्यासायिक प्रशिक्षण दिलवाया जाकर उन्हें संसाधन हेतु ऋण एवं अनुदान उपलब्ध करा कर लाभान्वित किया जाना।

(स) राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम/ग्रामीण भूमिहीन रोजगार गारण्टी कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक हित के पक्के लाभकारी निर्माण कार्यों पर ग्रामीण भूमिहीन एवं मजदूरों आदि को रोजगार उपलब्ध कराया जाना एवं साथ ही अनुसूचित जाति परिवारों को व्यक्तिगत लाभ की योजनाओं हेतु भी पूर्णअनुदान दिया जाकर लाभान्वित कराया जाना।

(द) मरु विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत वन, पशुपालन, भू संरक्षण, सिंचाई, पशु, पेयजल व्यवस्था आदि से सम्बन्धित विशिष्ठ कार्यक्रम चलाये जाकर ग्रामीणों का रोजगार के साथ-साथ क्षेत्र में विकास कार्य करवाया जाना।

(य) बन्धक श्रमिक मुक्ति एवं पुनर्वास कार्यक्रम के अन्तर्गत बन्धक मजदूरों को संसाधन उपलब्ध कराकर पुनर्वास कर लाभान्वित किया जाना।

(र) मैसिव/स्प्रिंकलर योजनान्तर्गत लघु सिंचाई कार्यों हेतु ऋण एवं अनुदान उपलब्ध कराकर कृषकों को लाभान्वित किया जाना।

(ल) ऊर्जा के वैकल्पिक स्त्रोत कार्यक्रम के अन्तर्गत बायोगैस संयन्त्रों का निर्माण, तकनीकी मार्गदर्शन एवं अनुदान सहायता उपलब्ध कराया जाना।

गुरुशरणसिंह
परियोजना निदेशक एवं
अतिरिक्त कलेक्टर (विकास)

पी.के.जैन
अध्यक्ष एवं जिला कलेक्टर

खण्ड-7

में आपका कार्य-क्षेत्र कलकत्ता रहा जहाँ 1930–31 में महात्मा गांधी के अनशन के अवसर पर कलकत्ता कांग्रेस द्वारा शुरु किये गये आन्दोलन में भाग लेने के कारण आप बंदी बनाये गये। बाद में आप टिहरी गढ़वाल में रहे जहां स्वर्गीय गोविन्दवल्लभ पंत और भक्त दर्शन के आन्दोलनों के दौरान आप प्रमुख सहयोगी थे। 1937 से 41 तक आप टिहरी गढ़वाल जिला कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष रहे। आपने 1942 में भरतपुर और जयपुर राज्य प्रजामण्डलों द्वारा किये गये आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया। स्वर्गीय जमनालाल बजाज के साथ आपकी काफी निकटता रही।

श्री मोदी 1945 से 56 तक नीम-का-थाना नगरपालिका के अध्यक्ष रहे। जून 1956 में नीम-का-थाना पंचायत समिति क्षेत्र में श्रमदान पखवाड़े के दौरान प्रदेश में सर्वश्रेष्ठ कार्य होने के कारण आपको 1958 में अखिल भारतीय टेबर शील्ड प्रदान की गई। 1956 में आप अपने अनुज श्री कपिलदेव अग्रवाल के आकस्मिक निधन के कारण हुए नीम-का-थाना क्षेत्र के उप चुनाव में विधायक चुने गये। 1957 और 62 के चुनावों में आप पुनः विधायक निर्वाचित हुए। 1967 के चुनाव के अवसर पर आपने स्वेच्छा से सक्रिय राजनीति से अवकाश लेने के लिये चुनाव में खड़े होने से मना कर दिया। 1957 से 62 तक आप सीकर जिला भारत सेवक समाज के संयोजक रहे। नीम-का-थाना ग्रामोद्योग समिति के आप संस्थापकों में हैं तथा 1963 में अध्यक्ष बने। आप जन्मजात गौ-भक्त और गौ-सेवक हैं तथा 1940 से तोरावाटी प्रान्तीय गौशाला के अध्यक्ष रहे। राजस्थान गौ-सेवा संघ में भी आपने वर्षों तक विभिन्न पदों पर कार्य किया। आपकी गौ-सेवाओं की मान्यता स्वरूप राजस्थान दिवस समारोह समिति ने गत 27 मार्च 1988 को आपको ताम्रपत्र और प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

राजस्थान
वार्षिकी

में आपका कार्य-क्षेत्र कलकत्ता रहा जहाँ 1930-31 में महात्मा गांधी के अनशन के अवसर पर कलकत्ता कांग्रेस द्वारा शुरू किये गये आन्दोलन में भाग लेने के कारण आप बंदी बनाये गये। बाद में आप टिहरी गढ़वाल में रहे जहाँ स्वर्गीय गोविन्दबल्लभ पंत और भक्त दर्शन के आन्दोलनों के दौरान आप प्रमुख सहयोगी थे। 1937 से 41 तक आप टिहरी गढ़वाल जिला कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष रहे। आपने 1942 में भरतपुर और जयपुर राज्य प्रजामण्डलों द्वारा किये गये आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया। स्वर्गीय जमनालाल बजाज के साथ आपकी काफी निकटता रही।

श्री मोदी 1945 से 56 तक नीम-का-थाना नगरपालिका के अध्यक्ष रहे। जून 1956 में नीम-का-थाना पंचायत समिति क्षेत्र में श्रमदान पखवाडे के दौरान प्रदेश में सर्वश्रेष्ठ कार्य होने के कारण आपको 1958 में अखिल भारतीय ढेबर शील्ड प्रदान की गई। 1956 में आप अपने अनुज श्री कपिलदेव अग्रवाल के आकस्मिक निधन के कारण हुए नीम-का-थाना क्षेत्र के उप चुनाव में विधायक चुने गये। 1957 और 62 के चुनावों में आप पुनः विधायक निर्वाचित हुए। 1967 के चुनाव के अवसर पर आपने स्वेच्छा से सक्रिय राजनीति से अवकाश लेने के लिये चुनाव में खडे होने से मना कर दिया। 1957 से 62 तक आप सीकर जिला भारत सेवक समाज के संयोजक रहे। नीम-का-थाना ग्रामोद्योग समिति के आप संस्थापकों में है तथा 1963 में अध्यक्ष बने। आप जन्मजात गौ-भक्त और गौ-सेवक है तथा 1940 से नारनौल प्रान्तीय गौशाला के अध्यक्ष रहे। राजस्थान गौ-सेवा संघ में भी आपने वर्षों तक विभिन्न पदों पर कार्य किया। आपकी गौ-सेवाओं की मान्यता स्वरूप राजस्थान दिवस समारोह समिति ने गत 27 मार्च, 1988 को आपको मानपत्र और प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

राजस्थान
वार्षिकी

किसान आन्दोलन

राजस्थान में सगठित जन-जागृति का इतिहास बिजोलिया के किसान आन्दोलन से शुरू होता है। 19 वीं शताब्दी के शुरू में अंग्रेजो से हुई संधि के फलस्वरूप राजस्थान के शासक बाह्य आक्रमणों एवं मराठों व पिंडारियों के आतंक से मुक्ति पाकर स्वच्छदता का जीवन बिताने लगे। अपने ऐशो-आराम के लिए ये महाराजा एव उनके स्वच्छन्द जागीरदार जनता पर दिनों-दिन विभिन्न प्रकार के कर और लाग-बाग का भार बढ़ाते रहे। इससे जनता में असन्तोष बढ़ता गया और उसका पहला विस्फोट हुआ सन् 1897 में मेवाड के जागीर क्षेत्र बिजोलिया में। इस जागीर में भारी लगान के अलावा 84 तरह की लागें ली जाती थीं। बैठ-बेगार का बोलबाला था। अमानुषी जुल्मों के विरुद्ध बिजोलिया के किसानों ने साधू सीतारामदास के नेतृत्व में 2-3 छुट-पुट आन्दोलन किये। अन्त में इस जनसेवक के निमत्रण पर सन् 1916 में श्री विजयसिंह पथिक ने आन्दोलन की बागडोर सम्भाली। उन्होंने साधु सीतारामदास और श्री माणिक्यलाल वर्मा के सहयोग से असहयोग आन्दोलन का शख-फूक दिया। जनता ने लगान, लाग-बाग, सभी प्रकार के टैक्स तथा बैठ-बेगार देना बद कर दिया। हजारों किसान दमन के शिकार हुए और जेल गये। नेता लोग निर्वासित कर दिये गये या जेल भेज दिये गये। इस आन्दोलन का पटाक्षेप सन् 1941 में किसानों की विजय में हुआ। भारत में यह पहला अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन था जो लगातार 44 वर्षों तक चला।

बिजोलिया के किसान आन्दोलन की लपटें मेवाड के अन्य भागों में तथा पडौसी रियासतों में भी फैल गई। बेगू के किसानों ने बैठ-बेगार और लाग-बाग के विरुद्ध एक सुसगठित आन्दोलन शुरू कर दिया। इस आन्दोलन में अनेक किसान स्त्रियों ने भी भाग लिया। इस आन्दोलन को दबाने के लिए सरकार को फौज का उपयोग करना पड़ा जिसकी गोलियों से रूपाजी और करमाजी नामक दो किसान शहीद हुए और अनेकों घायल हुए। अन्त में इस आन्दोलन में भी किसानों की विजय हुई। बूदी राज्य में भी बेगू-बिजोलिया का इतिहास दोहराया गया। इस आन्दोलन में नानक जी भील पुलिस की गोली के शिकार हुए जिनके बलिदान की गाथाएं आज भी बूदी और आसपास के इलाकों में गायी जाती है।

किसान आन्दोलनों की यह आग भोमट [मेवाड] और पडौसी रियासत सिरोही के भील इलाके में भी फैल गई। स्वर्गीय मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में इन इलाकों के किसानों ने बगावत का झडा फहराया। इन आन्दोलनों को कुचलने के लिए सेना ने जमकर गोलिया बरसाई जिसमें लगभग 2 हजार किसानों ने अपने प्राणों की आहुति दी। किसान आन्दोलन के इतिहास में शायद यह सबसे बडा बलिदान था।

किसानों का एक जबरदस्त आन्दोलन अलवर राज्य में भी हुआ। 24 मई, 1925 को राज्य के किसानों ने लगान-वृद्धि के विरोध में नीमूचाना गाव में सभा का आयोजन किया। राज्य की सेना ने गाव को घेर कर गोलिया चलाई, जिससे सैकडों स्त्री-पुरुष और बच्चे मारे गये। गाव में आग लगा दी गयी। इस घटना से सारे देश में सनसनी फैल गयी। महात्मा गाधी ने इस काण्ड को जलियावाला बाग काण्ड से भी अधिक वीभत्स बताया।

वर्तमान शताब्दी के तीसरे दशक में जयपुर राज्य के सीकर, तोरावाटी और उदयपुरवाटी के किसानों ने अपना एक सगठन बनाया जिसने श्री हरलालसिंह के नेतृत्व में जागीरदारों के जुल्मों के विरुद्ध आन्दोलन छेडा जिसमें कई किसान मारे गये और अनेक कार्यकर्ता गिरफ्तार हुए।

स्थानीय आन्दोलन

किसान आन्दोलन के अलावा राजस्थान के विभिन्न भागों में स्थानीय अथवा क्षेत्रीय समस्याओं को लेकर भी कई आन्दोलन हुए। सन् 1925 में "मारवाड हितकारिणी सभा" के दो प्रमुख कार्यकर्ता स्वर्गीय चांदमल सुराणा और प्रयागचन्द सोनी ने महाराज के विलायत प्रस्थान करते समय राज्य के प्रधानमंत्री सुखदेव प्रसाद को हटाने की मांग की। फलत: सभा के प्रमुख कार्यकर्ता सर्व श्री चांदमल सुराणा, प्रयागचन्द सोनी और शिवकरण जोशी को मारवाड़ से निर्वासित और जयनारायण व्यास आदि कई कार्यकर्ताओं को "10 नम्बरी" घोषित कर दिया गया। सन् 1929 में मारवाड हितकारिणी सभा ने "मारवाड़ लोक राज्य परिषद" का अधिवेशन बुलाने का निश्चय किया। "देश-द्रोह" के इस अपराध में परिषद के आयोजक श्री जयनारायण व्यास को 6 वर्ष की और श्री आनन्दराज सुराणा तथा श्री भंवरलाल सर्राफ आदि कार्यकर्ताओं को 5-5 वर्ष की सजा हुई। परन्तु इन्हें गांधी इर्विन समझौता होने पर मार्च 1931 में रिहा कर दिया गया। इस आन्दोलन में जयनारायण व्यास के रूप में मारवाड़ के क्षितिज पर एक ऐसे नक्षत्र का उदय हुआ जिसने न केवल राजस्थान का वरन सारे हिन्दुस्तान का मार्ग-दर्शन किया।

बूंदी के श्री नित्यानन्द बूंदी राज्य के सेवानिवृत्त [illegible] वे राष्ट्रीय भावनाओं के समर्थक थे और राष्ट्रीय [illegible] के अध्ययन में संलग्न [illegible] उनकी राष्ट्रीय गतिविधियां बूंदी राज्य को बर्दाश्त नहीं हुई अतः सन् 1929 में [illegible]

राजस्थान
वार्षिकी

बूंदी राज्य से निर्वासित कर दिया गया और उनकी समस्त सम्पत्ति जब्त कर ली गयी।

सन् 1932 में चूरू की एक सार्वजनिक सभा में बीकानेर की दमन नीति की आलोचना को लेकर बीकानेर राज्य ने सत्यनारायण सर्राफ, गोपालदास और चन्दनमल बहड आदि 7 व्यक्तियों पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया और उन्हें भिन्न-भिन्न सजाए दीं।

राजनीतिक संगठनों का जन्म

फरवरी 1938 में हरिपुरा काग्रेस ने देशी राज्यो के राजनैतिक आन्दोलन को एक नया मोड दिया। इस अधिवेशन ने देशी राज्यो को अपने-अपने सगठन स्थापित करने और स्वतत्रता आन्दोलन चलाने सबधी प्रस्ताव पर अपनी मुहर लगा दी। फलस्वरूप राजस्थान की विभिन्न रियासतो में प्रजामण्डल अथवा लोक परिषद आदि नामों से विशुद्ध राजनैतिक सस्थाओ के सगठन सम्बन्धी कार्य का श्रीगणेश हुआ।

अप्रेल 1938 में मेवाड में राजनीतिक जागृति के जनक और कई आन्दोलनो के सूत्रधार श्री माणिक्यलाल वर्मा ने अपने मुट्ठी भर साथियों के सहयोग से उदयपुर में मेवाड प्रजामण्डल की नींव डाली। सस्था के अध्यक्ष बने श्री बलवन्त सिंह मेहता। उपाध्यक्ष और महामत्री का भार उठाया क्रमश श्री भूरेलाल बया और श्री माणिक्यलाल वर्मा ने। मेवाड सरकार ने प्रजामण्डल पर पाबदी लगा दी और महामत्री श्री वर्मा को मेवाड से निर्वासित कर दिया। प्रजामण्डल ने सरकार से प्रजामण्डल से पाबदी हटाने की माग की। परन्तु सरकार टस से मस नहीं हुई। अन्त में 4 अक्टूबर 1938 को प्रजामण्डल ने सत्याग्रह आन्दोलन छेड दिया। विभिन्न नगरो में हडतालों और जुलूसों का आयोजन हुआ। लगभग 300 गिरफ्तारिया हुईं। महात्मा गाधी की सलाह से 3 मार्च 1939 को प्रजामण्डल ने सत्याग्रह स्थगित कर दिया। मेवाड सरकार ने सितम्बर 1941 मे प्रजामण्डल पर से पाबन्दी हटाई। उसी वर्ष उदयपुर मे श्री माणिक्यलाल वर्मा की अध्यक्षता में प्रजामण्डल का अधिवेशन हुआ जिसमें मेवाड में पहली बार आचार्य कृपलानी और विजयलक्ष्मी पंडित जैसे चोटी के काग्रेस नेताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर मेवाड के राजनैतिक क्षितिज पर श्री मोहनलाल सुखाडिया के रूप में एक नया नक्षत्र उभरा जिसने कालान्तर में 17 वर्ष तक राजस्थान के मुख्यमत्री पद पर रहकर एक अनूठा कीर्तिमान स्थापित किया।

जोधपुर में मारवाड लोक परिषद की स्थापना हुई मई 1938 में। मारवाड मे जन-जागृति के अग्रदूत श्री जयनारायण व्यास इस समय मारवाड से निर्वासित थे और ब्यावर गुरुकुल में सेवा करते हुए मारवाड की राजनैतिक गतिविधियों पर नजर रखे हुए थे। 1939 में जोधपुर-प्रशासन ने व्यासजी पर से प्रतिबध हटाया तब वे जोधपुर आये और मारवाड लोकपरिषद की बागडोर अपने हाथ में ली। इसी बीच द्वितीय महायुद्ध शुरू हो गया। लोक परिषद की बढती हुई लोकप्रियता से घबराकर राज्य सरकार ने युद्ध प्रयासो में विघ्न डालने के नाम पर सन् 1940 मे परिषद को गैर कानूनी घोषित कर दिया और नेताओ को गिरफ्तार कर लिया। पर कुछ ही महीनो बाद परिषद और सरकार के बीच समझौता हो गया जिसके फलस्वरूप नेता लोग रिहा हो गये। परिषद ने सामान्य तौर पर अपनी गतिविधियां जारी रखीं।

यों तो जयपुर राज्य मे प्रजामण्डल की स्थापना सन् 1931 मे ही हो गयी थी पर व्यावहारिक रूप से प्रजामण्डल ने 1938 के बाद ही अपनी गतिविधिया शुरू की जब सेठ जमनालाल बजाज इसके अध्यक्ष बने। जयपुर राज्य ने उनके जयपुर प्रवेश पर प्रतिबध लगा दिया। श्री बजाज ने इस प्रतिबध को तोड कर एक फरवरी 1939 को राज्य में प्रवेश किया। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और इसके साथ ही राज्य मे सत्याग्रह शुरू हो गया। प्रजामण्डल के नेताओं के अलावा चर्खा-सघ के भी अनेक कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिये गए। 18 मार्च 1939 तक यह सत्याग्रह चला जिसमें लगभग 600 गिरफ्तारिया हुईं। अगस्त 1939 मे एक समझौते के फलस्वरूप श्री बजाज एव अन्य कार्यकर्ता रिहा कर दिये गये।

भरतपुर में 1938 में प्रजामण्डल की स्थापना हुई। श्री गोपीलाल यादव सस्था के प्रधान, ठाकुर देशराज रेवतीशरण शर्मा तथा युगलकिशोर चतुर्वेदी उपप्रधान, श्री कृष्णदत्त प्रधानमंत्री और मास्टर आदित्येन्द्र को कोषाध्यक्ष चुना गया। मई 1939 मे प्रजामण्डल ने [illegible] माग को लेकर राज्य को एक ज्ञापन दिया और जगह जगह सभाओं का आयोजन किया। 11 मई 1939 को राज्य ने दमनचक्र शुरू किया। भरतपुर नगर में आयोजित सभा को पुलिस ने घेर लिया। कई नेता व कार्यकर्ता सभास्थल पर ही पकड़ लिये गये। यह सत्याग्रह 8 महीने तक चला जिसमें लगभग 500 सत्याग्रही गिरफ्तार किये गए। दिसम्बर 1939 में सभी राजनैतिक बंदी रिहा कर दिए गए।

सिरोही के प्रवासी लोगों ने 1936 में बम्बई में सिरोही प्रजामण्डल की स्थापना की पर सिरोही राज्य में प्रजामण्डल की गतिविधियों का श्रीगणेश श्री गोकुलभाई भट्ट के नेतृत्व में हुआ [illegible] 1939 में। 1940 में राज्य ने प्रजामण्डल को [illegible]

शाहपुरा में प्रजामण्डल की स्थापना 1938 मे, कोटा में 1935 में और अलवर में 1940 में हुई। इन राज्यों में प्रजामण्डलों की स्थापना को लेकर जनता को प्रशासन के दमन का शिकार नहीं होना पड़ा।

बीकानेर में इन दिनो महाराजा गगासिह का राज्य था जो देश-विदेश में दिन-रात प्रगतिशील होने का ढिंढोरा पीटा करते थे पर अपने राज्य में चिड़िया को भी नहीं चहकने देते थे। कतिपय साहसी युवकों ने 1936 और 1942 में प्रजामण्डल स्थापित करने के प्रयत्न किये पर वे राज्य की घोर निरकुश और दमनपूर्ण नीति के कारण असफल हो गये।

जैसलमेर में तो किसी राजनीतिक संस्था के जन्म का प्रश्न ही नहीं था। इस रियासत में अमर शहीद सागरमल गोपा पर ढाये गये जुल्मो का जब हम स्मरण करते हैं तो रौंगटे खडे हो जाते हैं। प. नेहरू के शब्दों में "गोपा या तो जेल में जिन्दा जला दिये गए या उन्होंने राज्य द्वारा दी गई अमानुषिक यातनाओं के कारण आत्महत्या कर ली।"

भारत छोड़ो आन्दोलन

8 अगस्त, 1942 को अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की बम्बई बैठक में महात्मा गाधी ने "भारत छोडो" आन्दोलन का ऐलान किया। उसी दिन एक अन्य बैठक मे महात्मा जी ने देशी राज्यो के प्रजामण्डलों के नेताओ को सलाह दी कि उन्हे अपने-अपने शासकों को पत्र भेज कर ब्रिटिश सार्वभौम सत्ता से सम्बन्ध तोडने की माग करनी चाहिए। इस समय तक मेवाड, मारवाड, जयपुर, अलवर, भरतपुर और कोटा आदि राज्यो में राजनीतिक संस्थाए व्यवस्थित रूप से अपने पैर जमा चुकी थीं।

मेवाड़ प्रजामण्डल के अध्यक्ष श्री माणिक्यलाल वर्मा ने 29 अगस्त, 1942 को एक पत्र द्वारा महाराणा से अंग्रेजी सत्ता से सम्बन्ध तोडने और राज्य में उत्तरदायी शासन स्थापित करने की माग की। उसी रात्रि को सर्वश्री माणिक्यलाल वर्मा, भूरेलाल बया, बलवत सिह मेहता, मोहनलाल सुखाडिया, नरेन्द्रपाल सिह चौधरी और मोतीलाल तेजावत आदि नेता गिरफ्तार कर लिये गये। श्री रमेशचन्द्र व्यास भारत सरकार के आदेशानुसार 1818 के बगाल रेगूलेशन एक्ट के अन्तर्गत पहले ही पकड़ लिए गए थे। इस आन्दोलन की लपटें मेवाड़ के सभी भागो में फैल गयी। शिक्षण सस्थाएं बद हो गयीं। कई दिनो तक हड़तालें व जुलूसों का दौर-दौरा रहा। लगभग 200 गिरफ्तारिया हुईं।

मारवाड़ लोक परिषद ने "भारत छोडो" आन्दोलन के शुरू होने से पूर्व ही मई 1942 में राज्य में उत्तरदायी शासन स्थापित करने के मांग को लेकर आन्दोलन का ऐलान कर दिया था। 26 मई को परिषद के सर्वोच्च नेता श्री जयनारायण व्यास गिरफ्तार कर लिये गये। सर्वश्री मथुरादास माथुर, अचलेश्वर प्रसाद शर्मा, अभयमल जैन, छगनलाल चौपासनीवाला, रणछोड़दास गट्टानी व बालमुकुन्द बिस्सा आदि कार्यकर्ता भी पकड लिये गये। इन नेताओं ने जेल में दुर्व्यवहार और दमन के विरुद्ध भूख-हडताल कर दी। इस प्रकरण में एक सत्याग्रही श्री बालमुकुन्द बिस्सा आजादी की बलि-वेदी पर चढ गये। इसी बीच देश में भारत छोड़ो आन्दोलन छिड गया। फलस्वरूप मारवाड में भी आन्दोलन में तेजी आयी। लोक परिषद के श्री द्वारकादास पुरोहित सहित शेष कार्यकर्ता भी गिरफ्तार हो गये। इस आन्दोलन में मारवाड़ में लगभग 400 गिरफ्तारिया हुईं। कुछ स्थानों पर बम विस्फोट की घटनाए भी हुईं।

"भारत छोडो" आन्दोलन में कोटा की जनता ने अपने ही ढंग का योग दिया। कोटा प्रजामण्डल के कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिये गये। जनता ने शहर के दरवाजों पर कब्जा कर पुलिस कोतवाली पर राष्ट्रीय झडा फहरा दिया। पुलिस को बैरकों में बद कर दिया। नगर में 3 दिन तक "जनता राज" रहा। अन्त में महाराव के दमन का सहारा न लेने के आश्वासन पर जनता ने शासन पुन महाराव को "सम्भलाया"। पर इसके पूर्व जनता ने फौज और पुलिस को राष्ट्रीय झडे को सलामी देने के लिए मजबूर कर दिया। महाराव ने अपने आश्वासन का पालन किया और सभी गिरफ्तार व्यक्तियों को रिहा कर दिया।

भरतपुर राज्य में सन् 1942 का आन्दोलन लगभग 3 माह चला जिसके दौरान हडतालें, जुलूस आदि के साथ ही रेल्वे स्टेशनों और डाकघरों पर आक्रमण तथा तार काटने की घटनाए भी हुईं। परिषद के नेता मा. आदित्येन्द्र श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी एव प. रेवतीशरण शर्मा आदि पकड लिये गये। परन्तु राज्य के साथ समझौता हो जाने के फलस्वरूप सभी लोग जल्दी ही रिहा कर दिये गये।

शाहपुरा एक छोटी रियासत थी। पर वह भी भारत छोड़ो आन्दोलन की लपटों से नहीं बची। स्थानीय प्रजामण्डल ने राजाधिराज को अंग्रेजी सत्ता से सम्बन्ध तोड़ने के लिए "अल्टीमेटम" दे दिया। इसके फलस्वरूप प्रजामण्डल के कार्यकर्ता सर्वश्री लादूराम जोशी, लक्ष्मीदत्त कांटिया और रमेशचन्द्र ओझा को गिरफ्तार कर अजमेर जेल में भेज दिया गया। शाहपुरा के श्री गोकुललाल असावा ब्रिटिश सरकार द्वारा पहले ही अजमेर जेल में बद कर दिये गये थे। इस समय उनका कार्य क्षेत्र अजमेर था।

"भारत छोड़ो" आन्दोलन में जयपुर प्रजामण्डल उदासीन रहा। इस समय जयपुर राज्य का प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल था जो एक कूटनीतिक व्यक्ति था। वह प्रजामण्डल के नेता श्री हीरालाल शास्त्री का दम आश्वस्त करने में

कामयाब हो गया कि जयपुर प्रजामण्डल के इस आन्दोलन में कूदने के लिए कोई औचित्य नहीं है। कहते हैं कि सर मिर्जा ने मौखिक रूप से प्रजामण्डल की कुछ मांगों को मान लिया था। परन्तु प्रजामण्डल में एक तबका ऐसा भी था जो किसी भी सूरत में जयपुर को इस देशव्यापी आन्दोलन से अलग रखने को तैयार नहीं था। बाबा हरिशचन्द्र ने जयपुर के प्रसिद्ध एडवोकेट श्री दौलतमल भण्डारी और श्री रामकरण जोशी के सहयोग से "आजाद मोर्चा" कायम किया। इस मोर्चे ने आन्दोलन का सचालन किया। आजाद मोर्चे के कार्यकर्ता पकड़े गये। चर्खा संघ के कार्यकर्ताओं ने भी आजाद मोर्चे का साथ दिया।

अलवर और सिरोही में भी "भारत छोड़ो" आन्दोलन के समय प्रदर्शन और हड़तालें हुईं। डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, बूंदी, टौंक और जैसलमेर आदि रियासतों में सन् 1942 तक राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना नहीं हो पाई थी।

विलय की ओर

सन् 1944 के अन्त तक राजस्थान की रियासतों में गिरफ्तार लगभग सभी नेता रिहा हो गये थे। जून सन् 1945 में पं नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना आजाद आदि कांग्रेस के शीर्ष नेता रिहा कर दिये गये। महात्मा गांधी अस्वस्थ होने के कारण सन् 1944 में ही रिहा कर दिये गये थे। युद्धोपरान्त चुनावों में इंगलैंड में मजदूर दल की विजय हुई। मजदूर सरकार भारतीय समस्या का हल ढूंढने के लिए कटिबद्ध थी। ऐसा लगने लगा था कि भारत की आजादी समीप है। इसके बावजूद राजस्थान की कई रियासतों में दमनपूर्ण कार्यवाहियां चलती रहीं। डूंगरपुर और बांसवाड़ा में सेवा संघ द्वारा चलायी गयी स्कूलों को बंद कर दिया गया। कार्यकर्ताओं पर अमानुषिक अत्याचार किये गये। राजस्थान के देश सेवी स्व. श्री भोगीलाल पंड्या, गौरीशंकर उपाध्याय और पूर्व मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी इन रियासतों में हुए संघर्ष की देन हैं। डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ में प्रजामण्डल की स्थापना सन् 1945 में हुई।

31 दिसम्बर, 1945 को उदयपुर में पं. जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में अ.भा. देशी राज्य लोक परिषद का अधिवेशन हुआ। इस अवसर पर परिषद की एक शाखा के रूप में राजपूताना प्रान्तीय सभा बनाने का निर्णय लिया गया। इस प्रकार राजपूताने की सभी रियासतों के राजनीतिक संगठनों को एक मंच पर एकत्रित होने का अवसर मिला। सन् 1946 में केन्द्र में पं. नेहरू की अध्यक्षता में अन्तरिम सरकार की स्थापना हुई। 15 अगस्त, 1947 को भारत आजाद हुआ। इसके साथ ही विभिन्न रियासतों में भी जनप्रतिनिधियों को प्रशासन में लाने के प्रयत्न शुरू हुए पर उनके लिए अभी दिल्ली दूर थी। जोधपुर में श्री जयनारायण व्यास की सरकार बनने के पूर्व डाबड़ा जैसा काण्ड हुआ, जिसमें कई किसान कार्यकर्ता शहीद हो गये। 5 अप्रेल, 1948 को मेवाड़ में लोकप्रिय सरकार स्थापित करने के सवाल को लेकर गोली चली जिसमें दो विद्यार्थी मारे गये और प्रजामण्डल के कई कार्यकर्ता घायल हो गये। 15 जनवरी, 1947 को वायसराय के आगमन के संबंध में बेगार के प्रश्न को लेकर भरतपुर में जबरदस्त आन्दोलन उठ खड़ा हुआ जिसमें प्रजा-परिषद के कई कार्यकर्ताओं को चोटें आयी और महीनों जेल में रहना पड़ा। अगस्त 1946 में अलवर प्रजामण्डल को लोकप्रिय सरकार की स्थापना हेतु आन्दोलन छेड़ना पड़ा जिसमें सैकड़ों कार्यकर्ताओं को जेल-यात्रा करनी पड़ी। राजस्थान में मात्र शाहपुरा ही एक ऐसी रियासत थी जहां के राजाधिराज सुदर्शन देव ने पूर्ण उत्तरदायी शासन स्थापित करना स्वीकार कर लिया और प्रो. गोकुललाल असावा को अन्तरिम सरकार का प्रधानमंत्री नियुक्त किया।

राजस्थान का निर्माण

इस बीच देश में घटनाचक्र इतनी तेजी से घूमा कि मात्र एक वर्ष की अल्पावधि में 23 रियासतों की सीमाएं समाप्त हो गई और सात विभिन्न चरणों में वर्तमान राजस्थान का स्वरूप विकसित हुआ। इस प्रकार कई युगों के संघर्ष के बाद राजस्थान की जनता ने निरंकुश शासकों के शासन से सदा-सर्वदा के लिए मुक्ति पाई।

[1] मत्स्य संघ - 18 मार्च, 1948

27 फरवरी, 1948 को अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली के तत्कालीन नरेशों के समक्ष दिल्ली में केन्द्रीय सरकार की ओर से चारों रियासतों के विलीनीकरण का प्रस्ताव रखा गया जिसे चारों ने स्वीकार कर लिया। इस नए राज्य संघ का नाम श्री कन्हैयालाल माणिक्यलाल मुंशी के सुझाव पर "मत्स्य संघ" रखा गया। इसका क्षेत्रफल 7,536 वर्गमील, जनसंख्या 18,38,000 तथा वार्षिक आय 18 करोड़ 30 लाख 80 हजार रुपए था। तत्कालीन केन्द्रीय खनिज एवं विद्युत मंत्री श्री काकासाहेब विष्णु गाडगिल ने इसका उद्घाटन किया।

भाग-2

अलवर मत्स्य प्रदेश की राजधानी, धौलपुर नरेश राजप्रमुख, अलवर नरेश उप राजप्रमुख तथा श्री शोभाराम प्रधानमंत्री बनाए गए। श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी और श्री गोपीलाल यादव [दोनो भरतपुर] उप प्रधानमंत्री तथा श्री मास्टर भोलानाथ [अलवर], डॉ मगलसिह [धौलपुर] और श्री चिरंजीलाल शर्मा [करौली] मंत्री नियुक्त किये गए।

[2] राजस्थान संघ - 25 मार्च, 1948

राजस्थान के एकीकरण का दूसरा महत्वपूर्ण चरण 25 मार्च, 1948 को पूरा हुआ जब कोटा, बूदी, झालावाड, बासवाडा, डूगरपुर, प्रतापगढ, किशनगढ, टोंक और शाहपुरा रियासतो के शासको ने मिलकर "राजस्थान संघ" का निर्माण किया। इसका उद्घाटन भी श्री गाडगिल के हाथो ही संपन्न हुआ। इसकी राजधानी कोटा को बनाया गया तथा कोटा के महाराव और डूगरपुर के महारावल क्रमश राजप्रमुख और उप राजप्रमुख बनाये गए। श्री गोकुललाल असावा ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। उनकी मंत्रि-परिषद के गठन की प्रक्रिया चल ही रही थी कि महाराणा उदयपुर ने भी तीन दिन बाद भारत सरकार के रियासती मंत्रालय को एक पत्र लिखकर इस नये राज्य मे शामिल होने की इच्छा प्रकट की। फलत शासन सचालन का काम पूर्ववत चलता रहा।

[3] संयुक्त राजस्थान - 18 अप्रेल, 1948

18 अप्रेल, 1948 को उदयपुर रियासत का राजस्थान संघ मे विलीनीकरण होने पर "संयुक्त राजस्थान" का निर्माण हुआ जिसका उद्घाटन इसी दिन उदयपुर मे भारत के प्रधानमंत्री प जवाहरलाल नेहरू ने किया। इसका क्षेत्रफल 29,977 वर्ग किलोमीटर, जनसख्या 42 लाख 60 हजार 918 तथा वार्षिक आय तीन करोड 16 लाख 67 हजार रुपए थी। उदयपुर को इस नये राज्य की राजधानी, वहा के महाराणा भूपालसिह को राजप्रमुख, कोटा महाराव भीमसिह को उप राजप्रमुख तथा श्री माणिक्यलाल वर्मा को प्रधानमंत्री बनाया गया। उनकी मंत्रिपरिषद मे श्री गोकुललाल असावा [शाहपुरा] उपप्रधानमंत्री तथा सर्वश्री अभिन्न हरि [कोटा], मोहनलाल सुखाडिया, भूरेलाल बया, प्रेमनारायण माथुर [तीनों उदयपुर] और बृजसुदर शर्मा [बूदी] मंत्री के रूप में शामिल किये गए।
वस्तुत वर्तमान राजस्थान का स्वरूप इसी समय बना और यहीं से इसके निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

[4] वृहद् राजस्थान - 30 मार्च, 1949

इस समय जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर और सिरोही की पाच रियासतें ही ऐसी बची थी जो एकीकरण मे शामिल नहीं हुई थीं। इनके अलावा 19 जुलाई, 1948 को केन्द्रीय सरकार के आदेश पर लावा चीफशिप को जयपुर राज्य में शामिल कर लिया गया जबकि कुशलगढ की चीफशिप पहले से ही बासवाडा रियासत का अग बन चुकी थी। उपरोक्त रियासतों मे जयपुर, जोधपुर और बीकानेर अपने को स्वतत्र रखना चाहती थी लेकिन एकीकरण की प्रक्रिया के तीव्र गति से चलने के कारण यह सभव नहीं हो पा रहा था। देश के उप प्रधानमंत्री और तत्कालीन रियासती मंत्रालय के अध्यक्ष सरदार वल्लभ भाई पटेल की कल्पना इन चारो रियासतो को भी संयुक्त राजस्थान मे विलीन कर वृहद् राजस्थान बनाने की थी। अत रियासती मंत्रालय के सचिव श्री वी पी मेनन को तत्सम्बन्धी बातचीत के लिए महाराजा मानसिह के पास जयपुर भेजा गया। इसी के साथ बीकानेर और जोधपुर के महाराजाओं के पास भी वृहद् राजस्थान के निर्माण का मसविदा भेज कर उसी दिन उनसे स्वीकृति मगवा ली गई। इसके परिणामस्वरूप 14 जनवरी, 1949 को उदयपुर की एक सार्वजनिक सभा मे सरदार पटेल ने जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर रियासतों के वृहद् राजस्थान में सैद्धान्तिक रूप से सम्मिलित होने की घोषणा की।
इस ऐतिहासिक निर्णय को मूर्त रूप दिया गया चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, बुधवार, संवत् 2006 तदनुसार 30 मार्च, 1949 को नव वर्ष की प्रभात वेला, रेवती नक्षत्र, इन्द्र योग में 10 40 बजे, जब सरदार पटेल ने जयपुर के ऐतिहासिक दरबार में आयोजित एक भव्य समारोह म राजस्थान का उद्घाटन किया। इस समारोह में जयपुर, जोधपुर, कोटा, झालावाड, बासवाडा, अलवर, धौलपुर और शाहपुरा के नरेश, टोंक के नवाब, कुशलगढ के राव हरेन्द्रसिह, सौराष्ट्र के राजप्रमुख जाम साहब नवानगर, भारत के प्रथम भारतीय प्रधान सेनापति जनरल करिअप्पा तथा एयर मार्शल एस. मुकर्जी, केन्द्रीय खनिज एव विद्युत मंत्री श्री एन वी गाडगिल, [illegible], रियासती मंत्रालय के सचिव श्री वी पी. मेनन और प्रतिनिधि श्री डी आर प्रधान, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री दो गोकुल भाई भट्ट, अजमेर के मुख्यमंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय, जोधपुर के श्री जयनारायण व्यास, मत्स्य के प्रधानमंत्री श्री शोभाराम, अन्य प्रमुख कांग्रेस नेता, उद्योगपति और गणमान्य नागरिक शामिल हुए

राजस्थान
वार्षिकी

इस समारोह में सरदार पटेल ने जयपुर महाराजा श्री मानसिंह को राजप्रमुख, कोटा महाराव श्री भीमसिंह को उप राजप्रमुख तथा श्री हीरालाल शास्त्री को नये राज्य के प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई।

श्री शास्त्री की मंत्रिपरिषद में सर्वश्री सिद्धराज ढड्ढा [जयपुर], प्रेमनारायण माथुर और भूरेलाल बया [दोनों उदयपुर], वेदपाल त्यागी [कोटा], फूलचंद बापणा, नृसिंह कछवाहा और राव राजा हणूतसिंह [तीनों जोधपुर] और रघुवर दयाल गोयल [बीकानेर] को मंत्रियों के रूप में शामिल किया गया।

[5] मत्स्य का विलय - 15 मई, 1949

वृहद् राजस्थान का निर्माण हो जाने के बावजूद मत्स्य संघ का अभी तक पृथक अस्तित्व था जिसने रियासतों के एकीकरण की दिशा में पहल की थी। इसका कारण यह था कि इसकी दो घटक रियासतें- अलवर और करौली तो एकमत से राजस्थान में शामिल होने के लिए तैयार थीं लेकिन धौलपुर और भरतपुर इस असमंजस में थीं कि वे उत्तरप्रदेश में शामिल हों अथवा राजस्थान में। श्री वी.पी. मेनन ने इनके नरेशों से बातचीत भी की लेकिन कोई निर्णय नहीं हो सका। फलत. श्री शंकर राव देव की अध्यक्षता में श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका और श्री आर.के. सिधवा की समिति गठित की गई जिसने गांव-गांव में घूमकर तथा सार्वजनिक संस्थाओं से साक्षियां एकत्रित कर रियासती मंत्रालय को राजस्थान के पक्ष में सिफारिश प्रस्तुत की। इस आधार पर एक मई, 1949 को भारत सरकार ने मत्स्य संघ को राजस्थान में मिलाने के लिए विज्ञप्ति जारी कर दी और 15 मई, 1949 को मत्स्य संघ राजस्थान का अंग बन गया। इस परिवर्तन के फलस्वरूप मत्स्य के प्रधानमंत्री श्री शोभाराम को शास्त्री मंत्रिमंडल में मंत्री के रूप में शामिल कर लिया गया।

[6] सिरोही का विलय - 7 फरवरी, 1950

मत्स्य की तरह सिरोही के विलय के प्रश्न पर भी राजस्थानी और गुजराती नेताओं के मध्य काफी मतभेद थे। अत जनवरी, 1950 में सिरोही का विभाजन करने और आबू व देलवाड़ा तहसीलों को बम्बई प्रांत और शेष भाग को राजस्थान में मिलाने का फैसला लिया गया। इसकी क्रियान्विति 7 फरवरी, 1950 को हुई। लेकिन आबू और देलवाड़ा को बम्बई प्रांत में मिलाने के कारण राजस्थान-वासियों में व्यापक प्रतिक्रिया हुई जिससे 6 वर्ष बाद राज्यों के पुनर्गठन के समय इन्हें वापस राजस्थान को देना पड़ा।

[7] अजमेर का विलय - 1 नवम्बर, 1956

भारत सरकार द्वारा श्री फज़ल अली की अध्यक्षता में गठित राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों के आधार पर एक नवम्बर, 1956 को तत्कालीन अजमेर मेरवाड़ा राज्य को भी राजस्थान में विलीन कर दिया गया जो अब तक केन्द्र शासित "सी" श्रेणी का राज्य था और जिसकी अपनी पृथक मंत्रिपरिषद और विधानसभा कार्यरत थी।

इसी के साथ मध्य भारत के मंदसौर जिले की मानपुरा तहसील का सुनेलटप्पा ग्राम राजस्थान में शामिल किया गया जबकि राजस्थान के झालावाड़ जिले का सिरोंज उप जिला नये मध्यप्रदेश को स्थानांतरित कर दिया गया।

इस प्रकार वर्तमान राजस्थान के निर्माण की प्रक्रिया सात चरणों में समाप्त हुई और 19 देशी रियासतों और तीन चीफशिप वाले क्षेत्रों की जनता एकतंत्र से मुक्त होकर लोकतंत्र की मुख्य-धारा में शामिल हुई।

वृहद् राजस्थान में विलीन रियासतों का विवरण

रियासतें	क्षेत्रफल [वर्गमील में]	जनसंख्या [1941 की जनगणना के अनुसार]	राजस्व [1945-46] [रुपयों में]	नरेशों का स्वीकृत वार्षिक प्रिवीपर्स [रुपयों में]
1. जयपुर	15,601	30,40,876	2,80,50,000	18,00,000
2 बीकानेर	23,317	19,92,938	2,39,51,333	10,00,000
3 जोधपुर	16,071	25,55,904	2,16,10,000	10,00,000
4 उदयपुर	12,941	19,26,698	1,30,00,000	10,00,000
5 अलवर	3,217	8,23,055	70,00,000	5,20,000
6 भरतपुर	1,972	5,75,625	64,98,020	5,02,000
7 कोटा	5,725	7,77,398	53,00,000	7,00,000
8 टौंक	2,553	3,59,933	34,49,432	2,78,000
9. बूंदी	2,220	2,49,374	33,00,000	2,81,000
10. डूंगरपुर	1,460	2,74,282	22,00,000	1,98,000
11. बांसवाड़ा	1,606	2,99,913	16,34,256	1,26,000
12. धौलपुर	1,293	2,86,901	15,53,000	2,64,000
13 सिरोही	1,994	2,33,870	15,44,600	2,12,000
14 किशनगढ़	858	1,04,155	14,54,690	1,36,000
15 झालावाड	813	1,22,299	10,00,000	1,36,000
16. प्रतापगढ़	889	91,767	9,80,000	1,02,000
17. करौली	1,227	1,52,413	7,00,000	1,05,000
18. जैसलमेर	16,062	93,246	5,40,000	1,80,000
19. शाहपुरा	405	61,176	4,18,000	90,000
चीफशिप्स				
1 कुशलगढ़	340	41,153	-	34,475
2 लावा	20	2,808	-	12,550
3 नीमराणा	-	-	-	15,000

राजस्थान

तृतीय खण्ड

संस्कृति और समाज

विद्वानों ने संस्कृति को किसी भी समाज की श्रेष्ठतम उपलब्धि बताया है। हमारी जीवन पद्धति में जो कुछ भी उच्चतम आदर्शों और शाश्वत मूल्यों से सम्बन्धित है वही हमारी संस्कृति कही जा सकती है। संस्कृति के आन्तरिक और बाह्य दो पक्ष होते हैं। दृश्य और श्रव्य कलाएं तथा शिल्प बाह्य संस्कृति के उपकरण मात्र हैं, जबकि हमारे चारित्रिक गुण आन्तरिक संस्कृति के। अभी तक राजस्थान की आन्तरिक संस्कृति को प्रकाश में लाने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया है क्योंकि इस कार्य के लिए हमारे इतिहास और प्राचीन साहित्य को बड़ी बारीकी से देखना पड़ेगा। फिर भी कुछ ऐसे प्रत्यक्ष दीखते उदाहरण हैं जो उस संस्कृति की महानता की बात कहते हैं। आंतरिक संस्कृति के कुछ अंग तो संपूर्ण भारतीय संस्कृति के अनुकूल ही हैं, पर राजस्थान की अपनी कुछ विशेषताएं भी रही हैं, जिन्हें भारतीय स्मृतियों और अन्यान्य ग्रंथों में खोजा जा सकता है।

शरणागत की रक्षा राजस्थान, विशेषतः क्षत्रिय समाज की विशेषता रही है। जिस प्रकार पौराणिक नरेश शिवि ने अपनी शरण में आए कबूतर की रक्षा के लिए अपने अंग का मांस तक दे दिया था उसी प्रकार रणथंभौर के राव हम्मीर ने दो शरणागत मुसलमानों की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व होम दिया था।

देवस्थानों की पवित्रता और अनेक अधिष्ठाता देवों की महानता को भी राजस्थान ने स्वीकार किया है। देवालय ही नहीं, धार्मिक गुरुओं के निवास स्थान तक (मठ, आश्रमादि) इसी प्रकार पूजनीय माने गए हैं। ऐसे अनेक दृष्टान्त हैं जिनमें स्थानीय नरेश का दोषी व्यक्ति भी यदि किसी देवालय की शरण में चला गया तो उसे वह नरेश भी पकड़ नहीं पाया।

अधिष्ठाता देवों को राज्य का असली स्वामी मानकर उनके दीवान की हैसियत से राज्य-कार्य चलाने की एक गौरवपूर्ण मान्यता चली आई है। जिस प्रकार उदयपुर के महाराणा एकलिंग के दीवान के रूप में कार्य करते थे उसी प्रकार अन्य कई राज्यों में भी इस प्रकार की प्रथा थी।

पातिव्रत धर्म की महत्ता भी यहां स्वीकार की गई जिसके अनुसार प्राचीन काल में स्त्रियां पति के मरणोपरान्त जीवित नहीं रहती थीं। जिस प्रकार अनेक आदर्श समय सापेक्ष न रहने से भ्रष्ट एवं पतित हो जाते हैं उसी प्रकार स्त्रियों से सम्बन्धित यह आदर्श भी एक कुप्रथा के रूप में रह गया।

अतिथि-सत्कार भी ऐसा ही एक आदर्श रहा है जिसमें अतिथि को भगवान के रूप में देखा गया है। व्यावसायिक ईमानदारी, पारस्परिक-सहयोग की भावना और गौ, ब्राह्मण तथा अबलाओं की रक्षा आदि अनेक अन्य सांस्कृतिक गुण भी रहे हैं। इन सबकी रक्षा, जहां तक संभव हो, करना ही हमारी सांस्कृतिक परंपराओं को बनाए रखने की दिशा में एक अच्छा प्रयत्न होगा।

बाह्य संस्कृति के उपादान बहुत विस्तृत हैं जिनमें चित्र, संगीत, नृत्य, वाद्य, स्थापत्य, मूर्ति-निर्माण आदि कलाएँ, लोकगीत तथा मुहावरे, पहेलियां, लोरियां, हरजस, चुटकले, ख्याल, पवाड़े आदि लोक साहित्य, कठपुतली, नाटक, सांग, रास-लीला आदि लोकानुरंजन, तीज, गणगौर, दशहरा, होली, दीवाली शरद पूर्णिमा आदि उत्सव, धार्मिक मेले और अन्य अनेक लोकजीवन को प्रेरित करने वाले विषय हैं। इन सबकी संक्षिप्त एवं सारगर्भित जानकारी

शौर्य में। यहां
की भक्ति एवं वाले उच्च

एवं भव्य प्रासाद गर्व से अपना सिर ऊंचा उठाये दीखते हैं वहां दूसरी ओर सुकुमारी चित्रकला लज्जावनत नवयौवना की भांति अपनी यौवन सुरभि स्त्री-सुलभ गुणों के प्रकाशन द्वारा बिखेरती हुई दिखाई पड़ती है। प्रथम का साम्राज्य पहाड़ियों के ऊपर तथा झीलों एवं जलाशयों के तटों पर स्थापित मिलता है, तो दूसरे का साम्राज्य क्षेत्र सामन्तों की हवेलियों एवं राज्यप्रासादों से लेकर दरिद्र की कुटिया तक पर है।

सामोद के भित्ति चित्र

जयपुर की एक हवेली के भित्ति चित्र

प्रायः राजस्थान भर के सभी गृह कहीं न कहीं चित्रों को स्थान देते हैं। ये चित्र या तो भित्तियों पर बने होते हैं या फिर चौक एवं द्वारपट पर। यहां के गावों की साधारण से साधारण स्त्री अपने जीवन में चित्रकला को विशेष महत्व देती है। हथेलियों पर 'मेहदी' द्वारा सुन्दर अलंकरण, चौकों में 'मांडणे' के विविध नमूने एवं शुभावसरों व त्यौहारों पर मंगल-चित्र राजस्थान की लोककला के विशेष स्वरूप हैं।

शुक, मयूर, कपोत, सारस आदि पक्षीगण यहां पर प्रचुर मात्रा में हैं। साथ ही सिर पर घड़े के ऊपर रखे हुये कुओं को जाती तथा वहां से लौटती कोमलांगी सुन्दरियों की पंक्तियां घूंघट के बीच से चमकती हुई खंजन पक्षियों की सी चंचल आंखें, पूर्ण सोने-चांदी के आभूषणों से लदी हुई नखशिख श्रृंगार की भावना से कार्यरूपेण ओत-प्रोत नारियां, शिखराकार पगड़ियां, झूलते हुए दुपट्टे तथा फहराते हुए जामे के साथ पुरुषों के समाज में विचरण, ये सब कलाकार को पर्याप्त मात्रा में कलात्मक सामग्री देने में समर्थ हैं।

राजस्थान में प्रादेशिक विशिष्टताओं के कारण प्रत्येक क्षेत्र की अपनी एक शैली मानी गयी है। यह शैली अपना एक निजी अस्तित्व रखती है। अपने विशेष गुणों के कारण ही ये पहचानी जाती हैं। यहां के चित्रों के विषय राधा-कृष्ण की क्रीड़ायें, राग-रागिनियां, बारहमासा रामायण नायक-नायिका, प्रेम-श्रृंगार आदि हैं। युद्धों का भी विवेचन तूलिका द्वारा हुआ है। इन चित्रों को बिहारी, सूरदास, केशवदास, पद्माकर आदि रसिक कवियों ने ही नहीं, वरन नागरीदास तथा मीरा के समान भक्त कवि एवं कवयित्रियों ने भी प्रभावित किया है। सूक्ष्म से सूक्ष्म भावनाओं का रेखाबद्ध विवेचन, महाभारत एवं रामायण की कथाओं का मूर्तिमय होकर चित्रों में समावेश, कल्पनामय उपाख्यानों से लेकर ऐतिहासिक तथ्यों तक का निरूपण इन चित्रों में बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है।

युद्ध का चित्रण

राजस्थानी शैली का उद्गम अपभ्रंश शैली से माना जाता है, जिसे जैन ग्रन्थों में सरलता से देखा जा सकता है। कानों तक पहुंचने वाली आंखें और तीखे नाक-नक्श इस शैली की विशेषताएं रही हैं। अपभ्रंश या जैन शैली प्रायः चौदहवीं-पन्द्रहवीं शताब्दी तक चलती रही और इसी से राजस्थानी शैली की राजपूत कलम का विकास माना जाता है। धीरे-धीरे मुस्लिम शासकों के प्रभाव के कारण इस शैली में सूक्ष्म परिवर्तन भी देखे जाने लगे। राजस्थानी चित्रकला की मेवाड़ी, मारवाड़ी, जयपुरी, किशनगढ़ी, नाथद्वारा, बीकानेरी, बूंदी, कोटा आदि अनेक शैलियां मानी जाती हैं। कलामर्मज्ञ लोग इन शैलियों की विशिष्टताएं खोजते रहे हैं और कई शैलियों के चित्रकारों का भी पता लगाने में सफल हुए हैं।

इन शैलियों का विस्तृत विवरण यहां दिया जा रहा है :-

मेवाड़ी शैली:-इस शैली का प्रारम्भ 17वीं शती के प्रारंभ में हुआ। महाराणा अमरसिंह के राज्यकाल में इसका रूप निर्धारित होकर विकसित होता गया। लाखों चित्रों का अंकन हुआ। इतनी मात्रा में चित्रों का अंकन किसी अन्य राजस्थानी शैली में नहीं हुआ। जितने विषयों पर इसमें चित्र बने उतने किसी अन्य शैली में नहीं बने। इसकी विशेषता-मीन नेत्र, लंबी नासिका, छोटी ठोडी, लाल एवं नीले रंग का अधिक प्रभाव, नायक के कान एवं चिबुक के नीचे गहरे रंग का प्रयोग। रागमाला बारहमासा रसिक-प्रिया महाभारत, रामायण, बिहारी सतसई, पृथ्वीराज रासो इत्यादि अनेक विषयों पर चित्र बने। इसके प्रमुख चित्रकार रहे हैं-साहिबदीन, मनोहर गंगाराम कृपाराम, भैरोराम शिवदत्त इत्यादि।

नाथद्वारा शैली

मारवाड़ी शैली:-इस शैली का प्रारम्भ 17वीं शती के पूर्वार्द्ध में हुआ, परन्तु इसका विकसित स्वरूप इस शती के उत्तरार्द्ध में ही स्थिर हुआ। कमल-नयनों का अंकन, जिनकी नीचे की कोर ऊपर की ओर बढ़ी हुई, जुल्फों का घुमाव, नीलाम्बर में गोल बादलों का अंकन इसकी अपनी विशेषताएं हैं। रागमाला, बारहमासा, ढोला-मारू इत्यादि चित्रों का अंकन पर्याप्त मात्रा में हुआ है। 18वीं शती के प्रारम्भ के बड़े आकार के चित्रों का दूसरी शैलियों के मुकाबले ज्यादा निर्माण हुआ है। इसके प्रमुख चित्रकार भाटी शिवदास, भाटी किशनदास, भाटी देवदास इत्यादि हुए हैं।

ढोला- मारू

जयपुरी शैली :–जयपुर शैली का प्रारम्भ 17वीं शती के उत्तरार्द्ध में हुआ। गोल चेहरा, मीन-नेत्र अंकन का ओजपूर्ण न होना, ठिगने सुडौल कद का अंकन आदि इसकी विशेषताएं है। कतिपय चित्रों में रंगों का प्रयोग अवश्य आकर्षक हुआ। अधिकांशतः रागमाला, बारहमासा, नायिकाभेद इत्यादि के चित्रों का अंकन हुआ है। इसके चित्रकार हुए हैं—साहिबराम, लालचंद, मुरली, गंगाबक्ष, मन्नालाल, सालिगराम इत्यादि।

किशनगढ़ शैली

किशनगढ़ शैली :–यह बड़ी ही मनोहारी शैली है। राधाकृष्ण की रीतिकालीन काव्यधारा की तरह इसमें बडी ही सरसता है। तोते की तरह सुंदर नासिका, ठोडी आगे की ओर आई हुई, अर्धचंद्राकार नेत्रों का अंकन, धनुष की तरह भौंहें, गुलाबी अदा, सुरम्य सरोवरों का अंकन इसकी अपनी अलौकिक विशेषताएं हैं। राजा नागरीदासजी के समय में यह शैली अपने सम्पूर्ण यौवन पर थी। इसका प्रारम्भ काल 18वीं शती का मध्य है। तूलिका का सुयोजित प्रयोग एवं रंगो की चटक-मटक बडी ओजपूर्ण है। इन रसमयी चित्र-कृतियों के चित्रकार छोटू, अमीरचन्द, निहालचन्द, धन्ना इत्यादि हुए हैं। गुलाबी एव हल्के रंगों का प्रयोग अति मनोहारी है। राधाकृष्ण की क्रीडाओं पर सुन्दर चित्रों का अंकन हुआ है। बणी-ठणी एव नायक-नायिका इन चित्रों के प्रिय विषय हैं।

बणी-ठणी (किशनगढ़ शैली)

बीकानेरी शैली:–इस शैली का वास्तविक स्वरूप महाराजा अनूपसिंहजी के समय में प्रस्फुटित हुआ। 1680 ई० से इसका संपूर्ण विकास प्रारम्भ हुआ है। इस पर मुगल शैली का प्रभाव ज्यादा है, यहां तक कि कतिपय चित्र तो मुगल ही प्रतीत होते हैं। रंगों का प्रयोग इत्यादि मुगल चित्रों की तरह ही हुआ है।

बूंदी शैली:–इस शैली का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसका प्रारम्भ भी 17वीं शती के शुरू में हुआ। इसके रंगों एवं विषयों की अपनी विशेषता है। नेत्रों की ऊपर एवं नीचे की रेखा दोनों समानान्तर रूप में आपस में मिलती है, जो इसकी विशेषता है। अट्टालिकाओं के बाहर की ओर उभरे हुए गवाक्ष में से झांकता हुआ नायक भी प्रायः इसकी अपनी विशेषता है। रागमाला, बारहमासा, रसिकप्रिया एवं आखेट के दृश्य इसके प्रमुख विषय हैं। इसके चित्रकार रहे हैं–सुरजन, अहमद अली, रामलाल, श्रीकृष्ण इत्यादि।

बूंदी शैली

स्थापत्य और मूर्तिकला

राजस्थान की स्थापत्य कला मूल रूप में तो भारतीय स्थापत्य से कोई विशेष भिन्नता नहीं। स्थानीय परिस्थितियों से इसमें स्थानीय विशिष्टताएं अवश्य समाहित की गई हैं। स्थापत्य में सबसे प्रमुख अंग भवन-निर्माण और मूर्तियों का तक्षण तथा भित्तियों के अलंकरण आदि हैं। महाराणा कुम्भा के समय मण्डन नामक सूत्रधार ने रूप और प्रासाद स्थापत्य के विषय में प्रामाणिक ग्रन्थ लिखे हैं। यद्यपि उनका आधार भी अग्निपुराण, बृहद-संहिता तथा अपराजित-पृच्छा जैसे ग्रन्थ ही हैं पर मण्डन के ग्रन्थ यह प्रमाणित करते हैं कि उनके द्वारा वर्णित प्रासाद आदि राजस्थान में परंपरागत रूप से चले आये हैं। भवनों के अलावा दुर्ग उद्यान आदि का निर्माण भी राजस्थान की अपनी विशेषता रही है। बावडियां तालाब और अन्य अनेक प्रकार के निर्माण भी विक्रम की प्रारम्भिक शताब्दियों से ही चले आये हैं।

जहां तक प्रासादों का सवाल है–यहां की गुर्जर प्रतिहार, मारू-गुर्जर तथा महामारू आदि शैलियां समस्त भारत में बहुत दूर-दूर तक फैली हुई थीं। जहां तक मन्दिर निर्माण का सवाल है–दर्रा (झालावाड) में प्राप्त गुप्तकालीन शिव मन्दिर, बैराठ की पहाडी पर प्राप्त गोलाकार बौद्ध मन्दिर और नगरी (चित्तौड) में प्राप्त नारायण-वाटिका कुछ उदाहरण हैं। इसके पश्चात सातवीं शताब्दी से लेकर मुगलकाल के पहले तक गुर्जर प्रतिहार शैली का प्राधान्य रहा। विविध राजवंशों तथा विदेशी प्रभावों के कारण समय-समय पर इनमें कुछ फेरबदल अवश्य होता रहा। मुगलकाल में कमानीदार दरवाजों और आवासों की बनावट का समावेश विशेष अध्ययन की वस्तु है।

प्राचीन मन्दिरों के निर्माण के विषय में चतुःशाला मन्दिरों का उल्लेख आता है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि आज के आवास-गृहों में बनाई जाने वाली सालें अथवा ओबरे विशुद्ध रूप से भारतीय स्थापत्य के अंग हैं। आज भी घरों में एक बरामदे या तिबारे में चार-चार सालें होती हैं। संवत् सात सौ के आसपास से मिलने वाले मन्दिरों के अध्ययन से प्रासाद-निर्माण कला की जानकारी बखूबी मिल जाती है।

बाडोली का शिव मंदिर

कल्याणपुर (उदयपुर), शंकरघट्टा (चित्तौड), झालरापाटन तथा कोटा में अनेक स्थानों पर ऐसे मन्दिर मिलते हैं। दसवीं शताब्दी से आगे तो पचासों की संख्या में ऐसे मन्दिरों के अवशेष हैं जो शिव, शक्ति, सूर्य तथा अन्य वैष्णव देवताओं के लिए बनाए गए थे। शिखरबंद मन्दिरों की यह परम्परा किसी न किसी रूप में अभी तक प्रचलित रही है। यद्यपि अब धीरे-धीरे पटावदार छतें ही काम में ली जाने लगी हैं।

आवास-गृहों के कई चौक भी हुआ करते थे और सात-सात चौकों की हवेलियां राजस्थान में अनेक स्थानों पर पाई गई हैं। चार चौक की हवेलियां तो साधारण रूप से अनेक स्थानों पर मिलती हैं। ऊंचाई की दृष्टि से नौखण्डे और सतखण्डे महलों का उल्लेख आता है और सात खणों की हवेलियां अब भी अनेक स्थानो पर हैं। राजस्थान के आवास गृहों की कुछ विशेषताएं ये रही है कि इनमें मर्दाना और जनाना कक्ष पृथक-पृथक हुआ करते हैं। इनके अतिरिक्त पालतू जानवरों, सवारियों, नौकर-चाकरों, भण्डार-गृहो, देवी-देवताओं, मेहमानों तथा नव-दम्पत्तियों के लिये पृथक-पृथक व्यवस्था होती है। नव-विवाहित
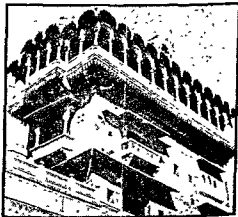
जैसलमेर की एक हवेली

दम्पत्ति प्राय: ऊपरी कक्षों में रहते हैं जिन्हें मैडी, चौबारा, रावटी आदि नामों से जाना जाता है। हवा और रोशनी के लिए किन्हीं क्षेत्रों में बहुत छोटे आकार की खिडकियां और कहीं-कही बडे गवाक्ष हुआ करते हैं। मकानो के बाहरी भाग में भीतों में टोडे, टोडियां लगाकर छज्जे निकाले जाते हैं जिन्हें खुला रखकर अथवा जालियों से ढककर उठने-बैठने और बाहरी मार्ग की तरफ देखने के काम में लिया जाता है। प्रायः हवेलियों के मुख्य द्वार को पोल या ड्योढी कहते हैं जहां धनिक लोगों के पहरेदार चबूतरों पर बने हुए गोखों पर बैठते हैं। पत्थर या लकडी की बनी हुई मजबूत और खूबसूरत अलंकृत चौखटों से लगे लकडी के खुदाईदार किवाड आवास के स्वामी की धनाढ्यता का बखान करते हैं। राजमहलों में जनानी ड्योढियां भी होती है और वहां भी पुरुषों-स्त्रियों का कडा पहरा रहता आया है। प्राय: सभी आवास-कक्षों के सामने बारादरियां बनी होती हे जिससे मौसम की कठोरता का प्रभाव नही पड़ता। ऊपरी छतों पर शरद और ग्रीष्म ऋतुओं में सोने के लिए चांदनियों का प्रयोग किया जाता है। जिन क्षेत्रों में पीने का पानी खारा होता है उनमें हवेलियों से सटे पक्के कुण्ड भी बनाए जाते हैं जिनमे वर्षा का पानी एकत्रित किया जाता है। ये कुण्ड प्राय: बन्द रखे जाते हैं जिससे पानी के मूल्य का आभास होता है। सम्पन्न घरों में भी आवासों में कुए नहीं बनाये जाते और पर्याप्त पानी का भण्डार करने के लिए बाहरी कुओं से पानी लाने वाली पनिहारिनें और पुरुष पनिहारे लगाये जाते हैं। हाथियों, घोडों, रथों, बहलियों, पालकियों, ऊंटों और गाय-भैसों के लिए तथा उनके चारे-पानी के लिए पृथक से अच्छी व्यवस्था की जाती थी। शासकों के ऐसे अस्तबलों में अब दुकानें और आवास आदि बनाये जा रहे हैं।

धनिकों के घरों में फर्श और दीवारें आरायश की हुई और चित्रित होती थी। संगमरमर का पत्थर जनता के मकानों में प्राय: नहीं लगाया जाता था और यह देव-मंदिरों और राजमहलों के लिए ही विहित समझा जाता था। धनिक-गृहों में चित्रशाला और दीवानखाना अलग से हुआ करते थे। घरों के भीतरी और बाहरी भागों को प्रचुरता से चित्रित करने की प्रथा थी और इन चित्रों में महाभारत, रामायण, सामन्ती जीवन और सम-सामयिक संस्कृति के परिचायक चित्र तथा उत्कीरण हुआ करते थे। शेखावाटी क्षेत्र की

दीवारों पर अंकन (बीकानेर) — फतहपुर के 150 वर्ष पुराने सुनहरे भित्ति चित्र

हवेलियां इस दिशा में बहुत चर्चित हैं। जो काम घरों में चित्रों से लिया जाता था वही मन्दिरों और विशेष समर्थ घरों में बेल-बूटेदार पाषाणों से लिया जाता था। प्राचीन समय में स्तंभों पर अंकित घट-पल्लव शैली बड़ी आकर्षक थी। इन वल्लियों और पुष्पों के अलंकरणों के अनेक प्रकार थे। इसी प्रकार परिचारिकायें पहरेदार, यक्ष-यक्षिणियां, रास-मंडलियां, वाद्य-वादक वृन्द तथा लौकिक कथायें भी पाषाणों में अंकित की जाती थी। इनके अतिरिक्त अनेक तरह के तोरण, रंग-मंडप आदि से भी घरों और मन्दिरों को अलंकृत किया जाता था। मन्दिरों के गर्भ-गृहों, बाहरी-कक्षों, प्रदक्षिणाओं, सभा-मंडपों तथा बाहरी भित्तियों के अनेक स्तरों और शिखरों तक को विविध प्रकार की नर, गंधर्व, किन्नर और देव-मूर्तियों से सजाया जाता था। देवताओं के अवतारों और पौराणिक कथाओं के अलंकरण भी पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं।

आमेर का किला

चित्तौड़ का किला

रक्षार्थ बनाये गये स्थलीय, पर्वतीय और जलीय दुर्गों में समरांगण सूत्रधार जैसे ग्रन्थों में वर्णित प्राकार, परिखाओं, द्वार, कपि-शीर्षक, सुरंग, गुप्त मार्ग आदि के प्रयोग किए जाते थे। राजस्थान में चित्तौड़, रणथम्भौर, कुम्भलगढ़, जोधपुर, आमेर, जैसलमेर, हनुमानगढ़, बूंदी, गागरोन, नाहरगढ़ आदि अनेक दुर्ग इनके साक्षी हैं। दुर्गों में बड़ी-बड़ी बावड़ियों और जलाशयों का प्रबन्ध भी रहता था। ये दुर्ग इतने विशाल रहे हैं कि समस्त प्रजाजन भी उनमें सुरक्षापूर्वक रह सकते थे। इनमें चित्तौड़, रणथम्भौर और जैसलमेर के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

राजस्थान

बावड़ियों की निर्माण कला एक पृथक विशिष्टता रखती है। अनेक बावड़ियां अनेक खण्डों और अनेक कक्षों वाली होती हैं और उनमें मूर्तियों आदि के अलंकरण भी पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। प्राय बावड़ियां सटे हुए कुओं से मिली रहती हैं ताकि हर मौसम में उनमें जल उपलब्ध हो सके। प्राचीन युग में यही बावड़ियां साधु-सन्तों, अतिथियों के ठहरने, गोष्ठियों का आयोजन करने और स्नान-ध्यान आदि के लिए भी काम में आती थीं। यह एक प्रकार से सम्बन्धित नगर का सार्वजनिक मिलन-स्थल होता था।

प्राय सभी स्थानों के बाहरी भागों में उद्यान, छतरियां, वाटिकायें आदि होती थीं। छतरियों की प्रथा किसी विशिष्ट मृतक व्यक्ति के ऊपर बनाने की रही है। कुछ छतरियां तो इतनी विशाल होती हैं कि उनमें बड़ी-बड़ी बारातें ठहर जाया करती थीं और आज वहां पाठशालायें चल रही हैं। इन छतरियों की बनावट और चित्रालंकरण बहुत कमनीय होते हैं।

जहां तक साधारण जन का सवाल है इनके घर प्राय कच्ची ईंटों और गारे के बने हुए होते हैं जो चौकोर, आयताकार अथवा गोलाई में बनाये जाकर घास-फूस के छप्परों से ढके रहते हैं। पुरुष वर्ग के बैठने-उठने, पालतू पशुओं के बांधने और चारा-लकड़ी आदि के संग्रह के लिए मूल छप्परों का प्रयोग किया जाता है। अनाज रखने की कोठियां गोबर-मिट्टी की बनी हुई होती हैं जिनका मुख बन्द करके समय-समय पर अन्न निकालने के लिये नीचे के भाग में एक छेद रख लिया जाता है। ग्रामीण घरों में भी जहां तक सम्भव हो बाहरी भाग में फलसे या बड़े दरवाजे वाली एक पोल बनाई जाती है जिसमें ढोरों और पुरुषों के बैठने का स्थान रहता है। घर के मेहमान प्राय वहीं ठहराये जाते हैं।

स्थापत्य का सुन्दरतम रूप मूर्ति-कला में देखा जा सकता है जो हजारों की संख्या में मन्दिरों और उनके खण्डहरों में अब भी मिलती है। पुराणों में वर्णित देवी-देवताओं के स्वरूपों का दिग्दर्शन कराने वाली मूर्तियों के अतिरिक्त मिथुनाकृतियों और जानवरों आदि का अंकन तथा नायिकाओं की अंग-भंगिमायें बड़ी प्रभावोत्पादक हैं। पांव से कांटा निकालती हुई नायिका, सद्यस्नाता के केशों से झरते हुए जल-बिन्दुओं को मोती समझकर चोंच में लेते हुए हंस और मयूर, डालियों पर बैठे हुए तोते और अन्य विहग, सवारियों के जुलूस, वादकों की टोलियां और ऐसे ही अन्य अनेक अलंकरण, गुर्जर प्रतिहार काल की ही देन हैं। ये गुर्जर प्रतिहार राजस्थान में जालौर के मूल निवासी थे और बाद में उत्तरी भारत के सम्राट

माउण्ट आबू की मूर्तियां

बनकर तथा कन्नौज में अपनी राजधानी बनाकर राज्य करते रहे थे। [illegible] समस्त भूखण्ड में और अन्तर्वेद की बहुत बड़ी भूमि पर भी इस शैली के [illegible] हुए हैं।

प्रस्तर मूर्ति कला का ह्रास मुगल काल से ही शुरू हो गया था और [illegible] के पत्थर की देवमूर्तियों में ही सिमटकर रह गया है। [illegible] उत्कर्ष अब दर्शन की वस्तु बन गये हैं और [illegible] है।

हस्तशिल्प

[illegible] से ही राजस्थानी हस्तशिल्प के उत्कृष्ट नमूने [illegible] को प्रदर्शित करते रहे हैं। [illegible]

केवल कुछ लोगों के मन बहलाव अथवा वैभव के प्रतीक न बनकर जन-जन तक पहुंचने के साधन भी बने हुए है।

राजस्थानी हस्तशिल्पों में जयपुर के मूल्यवान व अर्द्धमूल्यवान रत्न, मीनाकारी व नक्काशी की वस्तुए, प्रस्तर प्रतिमाए, मिट्टी के खिलौने, ब्ल्यू पॉटरी, लाख की चूडियां, सांगानेरी व बगरू की हाथ की छपाई, हाथी दाँत का काम, आकर्षक लहरिये व चूनडियां, नागरा जूतियां, जोधपुर की कशीदाकारी की जूतियां, बटुए, मोठडे, बादले व बधेज की ओढनियां, ऊंट की खाल से बनी कलात्मक सजावटी वस्तुएं, उदयपुर के चन्दन व लकडी के खिलौने, नाथद्वारा की फड पेन्टिंग्स, मीनाकारी, सलमा-सितारों व गोटे किनारी के काम से युक्त परिधान, सवाईमाधोपुर के लकडी के खिलौने व खस के बने पानदान, डिब्बियां व पखियां, कोटा की मसूरिया-डोरिया की साडियां तथा प्रतापगढ की सोने पर थेवा कला आदि देश-विदेश मे *विख्यात है। इनमे से प्रमुख हस्तशिल्पों का विस्तृत विवरण यहां दिया जा रहा है :–*

मीनाकारी –मीनाकारी का कार्य मूल्यवान व अर्द्धमूल्यवान रत्नों तथा सोने व चाँदी के आभूषणों पर किया जाता है। मीनाकारी में दो प्रकार के रंगों का प्रयोग किया जाता है–एक तो पाश्चात्य मीने के रंगों का दूसरा देशी रगो का। मीनाकारी में फूल, पत्ती, मोर, शुगी इत्यादि का अंकन प्राय. किया जाता है। मुगलकाल से चली आ रही शैली अब भी अपने रूप में विद्यमान है। जयपुर में सोने के आभूषणों और
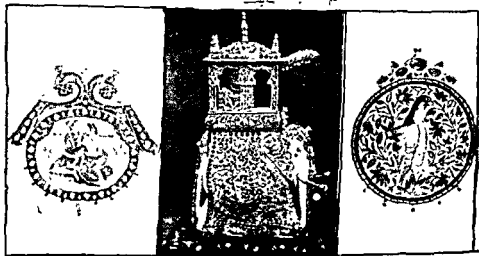
मीनाकारी

खिलौनों पर बडी सुंदर मीनाकारी की जाती है। मीनाकार पहले हल्की-हल्की खुदाई करते हैं, जिसे 'टचाई' कहते हैं। इसके पश्चात अलग-अलग रंगों को भरा जाता है। फिर उसे आग की भट्टी में पकाया जाता है। पकने के बाद इस पर हल्की-हल्की रगडाई करके पालिश की जाती है। लाल रंग ही श्रेष्ठ माना जाता है। सोने के आभूषणों के अतिरिक्त चांदी के खिलौनों व आभूषणों पर भी मीनाकारी की जाती है। नाथद्वारा भी मीनाकारी का अच्छा केन्द्र है। मीनाकारी के कलाकार सरदार कुदरतसिंह को इस वर्ष 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया है।

मीनाकारी दो प्रकार की शैली है-एक पक्की और दूसरी कच्ची। उपरोक्त मीनाकारी, जो भट्टी में पकाई जाती है, पक्की मीनाकारी कहलाती है। *कच्ची मीनाकारी* जयपुर में पीतल के बर्तनों एवं खिलौनों पर की जाती है। इसमें बर्तनों व खिलौनों पर टचाई करके रंग भर दिया जाता है। इसे भट्टी पर पकाया

प्रतापगढ़ (चित्तौड़गढ़) की प्रसिद्ध 'थेवा कला' भी मीनाकारी का ही एक रूप है। शीशे पर सोना मढ़कर उस पर कलात्मक [illegible] का नाम [illegible] तैयार करता है जिसे अब तक पांच बार राष्ट्रपति पुरस्कार मिल चुका है।

बीकानेर के स्व० हिसामुद्दीन उस्ता ऊँट की खाल से बनी विभिन्न वस्तुओं को सोने की बारीक नक्काशी और मनौती करके आकर्षक स्वरूप प्रदान करने के जिन्हें 1986 में 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया था।

ब्ल्यू पॉटरी :–चीनी मिट्टी के बर्तनों पर रंगीन और आकर्षक चित्रकारी का नाम है–ब्ल्यू पॉटरी। यद्यपि इस कला का जन्म ईरान में हुआ माना जाता है, लेकिन आजकल जयपुर की ब्ल्यू पॉटरी देश-विदेश में प्रसिद्ध है। बड़े-बड़े होटलों और घरों के 'ड्राइंग-रूम' में ये 'शो-पीस' के रूप में रखे जाते हैं। इस कला में नीले रंग की चित्रकारी को विशेष महत्व दिया जाता है। वैसे आजकल इसमें पीला, हरा, हल्का भूरा और गहरा भूरा आदि रंग भी काम में लिये जा रहे हैं, जिससे इसमें विविधता आ गई है। जयपुर के श्री कृपालसिंह शेखावत को इस कला के लिए 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया है।

ब्ल्यू पॉटरी

वस्त्रों पर छपाई :–हाथ से की जाने वाली यह छपाई जयपुर, जोधपुर, बाड़मेर तथा उदयपुर जिलों के कुछ भागों में की जाती है। यह छपाई लकड़ी के ठप्पों से की जाती है। इसमें रंगों को बनाने के लिए परम्परागत तरीके ही अपनाये जाते हैं। बगरू, सांगानेर और बाड़मेर के छपे वस्त्रों की देश-विदेश में बहुत मांग रहती है। छपाई करने वाले कारीगरों को छीपे कहा जाता है।
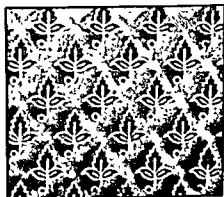
लकड़ी का ठप्पा

बन्धेज :–राजस्थान का बन्धेज का काम भी बहुत प्रसिद्ध है। जयपुर, जोधपुर, सीकर और झुंझुनूं जिलों में यह काम होता है। चूंदडी और लहरिया पर यह काम विशेषतः होता है। इसमें डिजायन के अनुसार महिलाएं धागे से वस्त्रों पर घुंडियां बांधती हैं। इसके बाद इस कपड़े को अलग-अलग रंगों में डुबोकर रंग लिया जाता है और सूखने के बाद में कपड़े को खींचकर इस्त्री कर दी जाती है।

बन्धेज

हाथीदाँत का काम : --जयपुर के हाथी दाँत के काम की भी बहुत साख है। जीवित या मृत हाथी के काटे हुए दाँतों से कलाकृतियाँ बनाई जाती है। क्रीम रंग की लकडी की तरह रेशेदार और कम प्राप्त होने के कारण यह कीमती एवं दुर्लभ होता है तथा काम करने के बाद इसमें आब व चमक अच्छी आती है। मूर्तियों, खिलौनों, नक्काशीदार प्लेटों के साथ ही इसकी चूडियाँ भी बनाई जाती है।

राजस्थान के राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त शिल्पी

भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय के अधीन विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) तथा विकास आयुक्त (हाथकर्घा) कार्यालयों द्वारा देश के परम्परागत सिद्धहस्त हस्तशिल्पियों तथा बुनकरों को उनकी उत्कृष्ट शिल्पकला तथा हस्तशिल्प और हाथकर्घा के लिए वर्ष 1965 से प्रतिवर्ष राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत किया जाता है। प्रत्येक पुरस्कार में दस हजार रुपये नकद, ताम्रपत्र तथा अंगवस्त्र प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य चयनित शिल्पियों को एक हजार रुपये नकद और श्रेष्ठता प्रमाण-पत्र दिया जाता है। इस प्रकार पिछले 23 वर्षों में जिन 423 सिद्धहस्त शिल्पियों और बुनकरों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए है उनमें राजस्थान से पुरस्कृत लोगों की संख्या 47 है। यह संख्या उत्तर प्रदेश के बाद समूचे देश में सर्वाधिक है।

इस क्रम में वर्ष 1987 के लिए 41 सिद्धहस्त शिल्पियों और बुनकरों को 10 अप्रैल, 1989 को विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत किया गया। इनमें राजस्थान से पुरस्कृत शिल्पियों की संख्या पांच है जिनमें दो शिल्पी एक ही स्थान, जयपुर जिले के बगरू कस्बे के है और इन दोनों को हाथ से निर्मित वनस्पति रंगों से छपाई के लिए पुरस्कृत किया गया है।

राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हस्तशिल्पियों की वर्षवार सूची इस प्रकार है-

क्रम सं	हस्तशिल्पी	स्थान	कला क्षेत्र	वर्ष
1	2	3	4	5
1–	श्री श्रवणलाल मिश्र	जयपुर	तारकशी	1966
2–	श्री रामप्रसाद सोनी	प्रतापगढ़	थेवा कार्य	1966
3–	श्री कुंवरलसिंह	जयपुर	मीनाकारी	1966
4–	श्री हिसामुद्दीन उस्ता	बीकानेर	केमल हाइड	1967
5–	श्री कृपालसिंह शेखावत	जयपुर	ब्ल्यू पॉटरी	1967
6–	श्री अब्दुल गफूर खाँ	जयपुर	पीतल पर खुदाई	1967
7–	श्री उस्ताद इम्तियाज अली	जयपुर	पीतल पर खुदाई	1968
8–	श्री दीनदयाल मीनाकार	जयपुर	मीनाकारी	1968
9–	श्री गोवर्द्धन	जयपुर	लकडी पर पीतल का काम	1969
10–	श्री दुर्गेशकुमार जोशी	भीलवाड़ा	फड पेन्टिग	1969
11–	श्री अब्दुल करीम	जयपुर	इनेमिल वर्क	1969
12–	श्री अय्याज मोहम्मद	जयपुर	लाख का काम	1970
13–	श्री काशीनाथ वर्मा	जयपुर	इनेमिल वर्क	1970
14–	श्री शंकरलाल राजसोनी	प्रतापगढ़	थेवा कार्य	1970
15–	श्री मालचंद जांगीड़	चूरू	चंदन की लकडी पर खुदाई	1970
16–	श्री बेनीराम सोनी	प्रतापगढ़	थेवा कार्य	1972
17–	श्री चौथमल जांगीड	चूरू	चंदन की लकडी पर खुदाई	1973

1	2	3	4	5
18-	श्री मदनलाल शर्मा	जयपुर	तारकशी	1973
19-	श्री मुन्नालाल मीनाकार	जयपुर	मीनाकारी	1974-75
20-	श्री रामविलास सोनी	प्रतापगढ़	थेवा कार्य	1974-75
21-	श्री जगदीशलाल सोनी	प्रतापगढ़	थेवा कार्य	1977
22-	श्री अब्दुल रजाक कुरेशी	जयपुर	पीतल पर खुदाई	1977-78
23-	श्री बसन्तीलाल सोनी	प्रतापगढ़	थेवा कार्य	1978-79
24-	श्री नरोत्तम नारायण शर्मा	नाथद्वारा	पिछवाई पेन्टिंग	1981
25-	श्री रामनिवास सोनी	प्रतापगढ़	थेवा कार्य	1981
26-	श्री खेमराज कुम्हार	नाथद्वारा	मूर्तिकला	1981
27-	श्री तिलक गिताई	जयपुर	आइवरी पेन्टिंग	1982
28-	श्री मोहनलाल सोनी	जयपुर	चमड़े पर पेन्टिंग	1982
29-	श्री विट्ठलदास	नाथद्वारा	पिछवाई पेन्टिंग	1982
30-	श्री बी.जी. शर्मा	उदयपुर	आइवरी पेन्टिंग	1983
31-	श्री गोपाललाल बी. लुहार	उदयपुर	धातु पच्चीकारी	1983
32-	श्री श्रीलाल जोशी	भीलवाड़ा	फड़ पेन्टिंग	1984
33-	श्री वेदपाल शर्मा	जयपुर	मिनिएचर पेन्टिंग	1984
34-	श्री घनश्याम शर्मा	उदयपुर	आइवरी पेन्टिंग	1984
35-	श्री द्वारकालाल जांगीड़	नाथद्वारा	पिछवाई पेन्टिंग	1984
36-	श्री भंवरलाल अगीरा	उदयपुर	मार्बल पर इनले	1985
37-	श्री राधामोहन उदयवाल	सांगानेर	वस्त्र पर हाथ की छपाई	1985
38-	श्री प्रदीप मुकर्जी	जयपुर	फॉक पेन्टिंग	1985
39-	श्री ईश्वरसिंह भाटी	जैसलमेर	ऊंट की कमरबंध	1986
40-	श्री हरिशंकर शर्मा	जयपुर	तारकशी	1986
41-	श्री बद्रीलाल चित्रकार	भीलवाड़ा	मिनिएचर पेन्टिंग	1986
42-	श्री महावीर स्वामी	बीकानेर	परम्परागत चित्रकारी	1986
43-	श्री इकरामुद्दीन नीलगर	जयपुर	लहरिया बंधनी कार्य	1987
44-	श्री रामगुलाम छीपा	बगरू	वस्त्र पर हाथ की छपाई	1987
45-	श्री रामकिशोर छीपा	बगरू	वस्त्र पर हाथ की छपाई	1987
46-	श्री लालसिंह भाटी	जोधपुर	चमड़े पर सुनहरी नक्काशी	1987
47-	श्री श्याम शर्मा	उदयपुर	शीशे पर चित्रकारी	1987

श्रेष्ठता प्रमाण पत्र प्राप्तकर्ता

राष्ट्रीय पुरस्कार के साथ ही वर्ष 1987 के लिए जिन 21 शिल्पियों को एक हजार रुपये नकद और श्रेष्ठता प्रमाण पत्र दिए गए हैं उनमें राजस्थान के तीन व्यक्ति शामिल हैं। इनके नाम हैं-

1.	श्री चिरंजीलाल बोहरा	जयपुर	पच्चीकारी
2.	श्री एस.एन. भारद्वाज	उदयपुर	चमड़ी हाथ पर नक्काशी
3.	श्री बादशाह मियां	जयपुर	बिछावन

राज्य स्तरीय पुरस्कार

राष्ट्रीय स्तर की तरह ही राज्य स्तर पर भी उत्कृष्ट हस्तशिल्प एवं कलाकृतियों के लिए राजस्थान सरकार ने वर्ष 1983–84 से शिल्पियों एवं कलाकारों को पुरस्कृत करना प्रारंभ किया है। राज्य स्तरीय पुरस्कार में पांच हजार रुपये नकद, ताम्र-पत्र तथा अंग वस्त्र और दक्षता प्रमाण पत्र वालों को प्रमाण पत्र के साथ ही अंग वस्त्र और एक हजार रुपये नकद दिए जाते है। इस योजना के अन्तर्गत पिछले पांच वर्षों में 64 व्यक्तियों को राज्य स्तरीय पुरस्कार तथा 57 को दक्षता प्रमाण पत्र दिए जा चुके हैं। इनका विवरण इस प्रकार है:–

1.	श्री अल्लाहबख्श	जयपुर	पीतल पर खुदायी	1983–84
2.	श्री जहूर मोहम्मद	जयपुर	पीतल पर खुदायी	1983–84
3.	श्री जसराज ठठेरा	जोधपुर	एल्यूमीनियम कला	1983–84
4.	श्री जौहरी लाल	जयपुर	हाथीदांत पर खुदाई	1983–84
5.	श्री कैलाशचंद सोनी	जयपुर	सोने पर मीनाकारी	1983–84
6.	श्री महादेव छींपा	बगरू	कपड़े पर बगरू प्रिंट की छपायी	1983–84
7.	श्री महेश कुमार सोनी	प्रतापगढ	थेवाकला	1983–84
8.	श्री मोहन लाल कुम्हार	नाथद्वारा	टैराकोटा (मोलेला की मिट्टी की मूर्तियाँ)	1983–84
9.	श्री नेमीचन्द खत्री	बाड़मेर	कपडे पर हाथ की छपायी	1983–84
10.	श्री रमेश चन्दन वाला	जयपुर	चन्दन की लकड़ी पर खुदायी	1983–84
11.	श्री रामस्वरूपशर्मा	जयपुर	लकड़ी पर तारकशी	1983–84
12.	श्री गब्बू जी रंगवाला	जयपुर	पीतल पर तारकशी	1983–84
13.	श्री यासीन रंगरेज	जयपुर	बंधेज का काम	1983–84
14.	श्री गोपाल लाल सुथार	बीकानेर	लकड़ी पर खुदायी	1984–85
15.	श्री सूरजमल शर्मा	जयपुर	धातु पर कारीगरी	1984–85
16.	श्री लक्ष्मी नारायण सोनी	प्रतापगढ	थेवाकला	1984–85
17.	श्री चतुर्भुज कुम्हार	मोलेला (नाथद्वारा)	टैराकोटा	1984–85
18.	श्री घेवरचंद जीनगर	जोधपुर	राजस्थानी मोजरियां	1984–85
19.	श्री जहूरुद्दीन उस्ता	बीकानेर	पत्थर पर खुदायी	1984–85
20.	श्री मोहम्मद हनीफ	जयपुर	जयपुर रजाई	1984–85
21.	श्री राधामोहन उदयवाल	सांगानेर	कपड़े पर हाथ की छपाई	1984–85
22.	श्रीमती जमनादेवी	बाड़मेर	बाड़मेरी कांच कशीदाकारी	1984–85
23.	श्री गोपाल महाराज	जयपुर	पीतल पर खुदायी	1984–85
24.	श्री शंकरलाल शर्मा	जयपुर	पीतल पर घिसायी	1984–85
25.	श्री बाबूलाल कुमावत	जयपुर	हाथी दांत पर खुदायी	1984–85
26	श्री धनश्याम शर्मा	उदयपुर	हाथी दांत पर पेंटिंग	1984–85
27.	श्री शांतिलाल जोशी	शाहपुरा (भीलवाड़ा)	फड़ पेंटिंग	1984–85
28.	श्री चिरंजीलाल बोहरा	जयपुर	लकड़ी पर स्प्रे पेंटिंग	1984–85
29.	श्री सत्यनारायण भारद्वाज	उदयपुर	समुद्री झाग की कलाकृति	1985–86
30.	श्री मोहम्मद असगर उस्ता	बीकानेर	कैमिल-हाईड	1985–86
31.	श्री निर्मल राज सोनी	प्रतापगढ़	थेवाकला	1985–86

32.	श्री हेमन्त कुमार	नाथद्वारा	हाथी दांत पर पेंटिंग	1985-86
33.	श्री सत्यनारायण शर्मा	जयपुर	पीतल की कलाकृति	1985-86
34.	श्री विनोद कुमार जांगीड़	चूरू	चन्दन की लकड़ी पर खुदायी	1985-86
35.	श्री रामदयाल शर्मा	जयपुर	तारकशी	1985-86
36.	श्री मुकेश शर्मा	उदयपुर	हाथी दांत पर पेंटिंग	1985-86
37.	श्रीमती लक्ष्मी देवी	चौहटन	कांच कशीदाकारी	1985-86
38.	श्री रामप्रमोद साध	सांगानेर	कपड़े पर हाथ की छपायी	1985-86
39.	श्री उदयलाल कुम्हार	मोलेला (नाथद्वारा)	टैराकोटा	1985-86
40.	श्री प्रभुदयाल यादव	जयपुर	ब्ल्यू पॉटरी	1985-86
41.	श्री गोपाल लाल छीपा	बगरू	कपड़े पर हाथ की छपायी	1985-86
42.	श्रीमती मीनाक्षी राठौड़	जयपुर	ब्ल्यू पॉटरी	1985-86
43.	श्री संजय जैन	जयपुर	पत्थरों पर परंपरागत उत्खनन	1985-86
44.	श्री मोहम्मद सद्दीक	जयपुर	बंधेज का काम	1986-87
45.	श्री रामलाल शर्मा	जोधपुर	सिल्क पर पेंटिंग	1986-87
46.	श्री ओमप्रकाश टिकर	जयपुर	पीतल पर जाली का काम	1986-87
47.	श्री भगवान शर्मा	जोधपुर	लकड़ी पर चित्रकारी	1986-87
48.	श्री अर्जुनराम बुनकर	चौहटन	ऊनी पट्टू पर कशीदाकारी	1986-87
49.	श्री आनन्दीलाल कुमावत	जयपुर	पत्थर पर खुदायी	1986-87
50.	श्री नौरतमल जांगीड़	चूरू	हाथी दांत पर खुदायी	1986-87
51.	श्री मोहन लाल शर्मा	जयपुर	तारकशी	1986-87
52.	श्री मोहम्मद खलील	जोधपुर	राजस्थानी मोजरियाँ	1986-87
53.	श्री पृथ्वीराज कुमावत	जयपुर	लकड़ी पर खुदायी	1986-87
54.	श्री महेश चन्द्र जांगीड़	चूरू	चंदन पर खुदायी	1986-87
55.	श्रीमती राधा देवी	अकोला (चित्तौड़गढ़)	बंधेज (अकोला डिजाइन)	1986-87
56.	श्री हरिशंकर शर्मा	जयपुर	तारकशी	1986-87
57.	श्री हर्ष छाजेड़	उदयपुर	समुद्री झाग की कृति	1986-87
58.	श्री गफ्फूर अहमद	जयपुर	लकड़ी के छापे	1986-87
59.	श्री अब्दुलगनी	जयपुर	लकड़ी के छापे	1986-87
60.	श्री राम बिहारी पांडे	सांगानेर	कपड़े पर सांगानेरी-छपाई	1986-87
61.	श्री मोहम्मद रमजान	जयपुर	पीतल पर खुदायी	1986-87
62.	श्री अब्दुल मजीद	जयपुर	लकड़ी के ठप्पे पर खुदायी	1986-87
63.	श्री रेवाशंकर शर्मा	नाथद्वारा	आइवरी पेंटिंग	1986-87
64	श्री श्याम शर्मा	उदयपुर	आइवरी पर सुनहरी पेंटिंग	1986-87

दक्षता प्रमाण पत्र

वर्ष 1987-88 में निम्नलिखित व्यक्तियों को दक्षता प्रमाण पत्र प्रदान किये गये हैं -

1.	श्रीमती पार्वती देवी जोशी	अजमेर	पड़चित्र
2.	श्री अयाज मोहम्मद	जयपुर	लाख पर मूर्ति पेन्ट
3.	श्री मोहन लाल शर्मा	जयपुर	तारकशी
4.	श्री नासिर अहमद	जयपुर	कुन्दन कला

स्वरूप का दिग्दर्शन नहीं हो पाता क्योंकि इनमें प्रायः अन्तरे का अभाव होता है। ख्यालों की लावणी भी एक प्रकार से लोक-संगीत का ही अंग है और इनका प्रचलन भी बहुत अधिक रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि मराठा युग में, जब से राजस्थान में ख्याल का प्रचलन भी बहुत अधिक हुआ है, महाराष्ट्र की लावणी की तरह ही राजस्थान में भी लावणियों का प्रचलन प्रारंभ हुआ।

लोक संगीत ही भारतीय संगीत का मूल-आधार बताया गया है। भारतीय संगीत शास्त्र की कोई चार सौ के लगभग जो रागें उल्लिखित हैं उनके विकास क्रम पर विचार करने से ही इस विषय की सूक्ष्म विशेषताओं का पता लग सकता है।

वैदिक ऋचाओं के गायन की जो पद्धति सामवेद आदि में वर्णित है, उसका आभास जन-जातियों के सामूहिक गीतों के स्वर-संचालन में देखा जा सकता है। आज भी वेद-पाठी लोग जिस प्रकार स्वर संचालित करते हैं, वह भीलों आदि के लोक-गीतों में देखा जा सकता है।

लोक धुनों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए यह कहा गया है कि प्रायः लोक-धुनें चार-पांच स्वरों तक ही सीमित रहती हैं। इनकी लयबद्धता के साथ प्रायः कोई वाद्य नहीं बजाया जाता, इसलिये स्वरों से ही लय का आकार स्पष्ट होता है। लोक-धुनों में भी शास्त्रीय संगीत की तरह समय के अनुरूप स्वरों का व्यवहार पाया गया है। एक ही लोकगीत में शास्त्रीय संगीत की तरह अनेक रागों का सम्मिश्रण भी देखा गया है। इस सम्मिश्रण को विद्वानों ने शास्त्रीय रागों के सम्मिश्रण से अधिक सुन्दर माना है। प्रसंग के अनुरूप लोक-धुनों का निर्माण भी एक कौशल की वस्तु है। तीज, गणगौर, हरजस, विवाह आदि के लोकगीतों में इस प्रसंगानुकूलता का पता सरलता से लग जाता है। संक्षेप में लोक-धुनें सरल, मधुर और आडम्बरहीन होती हैं। इनकी भाषा भी लोक के समझने लायक ही रहती है।

नृत्य-कला

नृत्य कला का भी राजस्थान एक प्रमुख केन्द्र रहा है। कत्थक शैली का जन्म भी राजस्थान में ही हुआ। वर्तमान में कत्थक की दो ही प्रमुख शैलियां हैं–एक जयपुर शैली और दूसरी लखनऊ शैली। राजस्थान में नृत्य कला भी दो तरफ से पनपी–एक तो शास्त्रीय स्वरूप में और दूसरी लोक की सम्पत्ति के रूप में। शास्त्रीय कला प्रायः राज्याश्रित थी। यहां की रियासतों में बड़े-बड़े नृत्यकारों ने आश्रय पाया और नई-नई शैलियों का निर्माण कर राजाओं व साधारण जन का मनोरंजन किया।

लोक-नृत्य

राजस्थान का जीवन नृत्यमय रहा है। लोक-नृत्यों में शास्त्रीय नृत्य की तरह ताल, लय आदि की कड़ाई नहीं रहती है। ये नृत्य समय-समय पर प्रसंग विशेष के अनुसार जनता द्वारा स्वयं ही रच लिये जाते हैं। प्रायः लोक-नृत्यों में अंग भंगिमाओं तथा गति की विविधता होते हुए भी वे परिणाम रूप में एकरसमय और एकरूपमय होते हैं। चूंकि लोक-नृत्य सरल और सर्वसुलभ हैं इसलिए इनको सीखने के लिए किसी विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती।

राजस्थान में लोक-नृत्यों को छः भागों में विभक्त किया जा सकता है :–

1. गृहस्थों के नृत्य :–गृहस्थों के अधिकतर नृत्य उत्सवों, त्यौहारों तथा ऋतुओं से सम्बन्ध रखते हैं। इनमें तीज-गणगौर एवं विवाहादि पर युवतियों द्वारा नाचे गाये जाने वाले नृत्य, महिलाओं द्वारा विवाह के अवसर पर कुम्हार के यहां 'चाक' पूजते समय का नृत्य, बारात रवाना होने के बाद दूल्हे के घर

की स्त्रियों द्वारा किये जाने वाले टूँटिया नृत्य, मेहँदी नृत्य, होली के समय किये जाने वाले लूहर और घूमर नृत्य, पणिहारी का नाच आदि सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त युवकों द्वारा होली के अवसर पर डफ के साथ किए जाने वाला गीन्दड़ नृत्य, नगाड़े की ध्वनि के साथ एक दूसरे के साथ डण्डे भिड़ाकर व घेरा बांधकर किए जाने वाले नृत्य आदि भी इसी श्रेणी में सम्मिलित हैं।

2. धार्मिक सम्प्रदायों के नृत्य :-इनमें सांपों के देवता गोगाजी के भोपा द्वारा किए जाने वाले नृत्य, जसनाथी सम्प्रदाय के लोगों द्वारा धधकते अंगारों पर किया जाने वाला अग्नि-नृत्य, भैरूजी के भोपे का नृत्य, नाथपंथ कालबेलियों का पूंगी नृत्य, घोरियों का फड़-नृत्य आदि सम्मिलित हैं।

अग्नि-नृत्य

3. पेशेवर जातियों के नृत्य :-पातर, वेश्या, नट, ढाली, भवाई, भांड, राव, कामड़ और रावल मण्डली के लोगों द्वारा किए जाने वाले नृत्य इस श्रेणी में आते हैं। पातरें राजदरबारों के रनिवासों में रहा करती थीं। नटों के नृत्य शारीरिक कलाबाजियों से सम्बन्धित होते हैं। भांड लोग प्रायः नकल करते हैं। ढोली पुत्र-जन्म के अवसर पर ढोलक बजाकर नाचते हैं।

लोक नर्तकों के वर्ग में भवाई का अपना विशेष स्थान है। जाति बहिष्कृत रहकर भी यह सम्प्रदाय विविध नृत्यों की रचना में बड़ा निपुण है। यजमान वृत्ति पर जीवन-यापन करते हुए भी ये बड़े स्वाभिमानी होते हैं। इनके प्रमुख नृत्य-नाट्यों में सूरदास, डोकरी, शंकरिया, बीकाजी आदि हैं। फुटकर नाचों में सात रंग की पगड़ियों का कमल बनाना, सात मटकों का नाच, [illegible] का नाच [illegible] का नाच है।

4. भिखमंगों के नृत्य :-भांडी और कंजर लोग भीख मांगते समय [illegible] नृत्य करते हैं।

गिरासियों का नाच [illegible]

5. खानाबदोशों और आदिवासियों के नृत्य :—बावरी, माहट्या, गंवारिया और गाडी लुहार आदि खानाबदोश जातियों के लोग अपने निजी नृत्य करते हैं। आदिवासियों में भील, मीणे, गिरासिया, गवन और मगन लोग अपने विशेष नृत्य करते हैं। भीलों के गवरी नृत्य और युद्ध-नृत्य तथा गिरासियों की वालर बहुत प्रसिद्ध है।

कच्छी घोड़ी तेरहताली

6. अन्य फुटकर नृत्यों में कच्छी घोड़ी का नृत्य, जालोर का ढोल-झालर नृत्य मारवाड़ का तेरा-ताली, मिरासी, चित्तौड़ का तुर्रा-कलगी तथा कच्छी घोड़ी के नृत्य आदि प्रसिद्ध है।

घूमर

राजस्थान का घूमर नृत्य, नृत्यों का सिरमौर माना जाता है। मलमल के झीने तारों का लम्बा घूंघट डाले, पल्लू को लहंगे की तह में भली प्रकार दाबे, कंचुकी के कन्धों को कसकर, पायल की ठुमक और झनक के साथ, नीचे झुक-झुककर अंगों को लचकाती हुई और दोनों हाथों से आह्लाद की मुद्रा को चुटकियों से व्यक्त करती हुई कोई तरुणी जब हमजोलियों की टोली में अपने अंग-सौष्ठव का प्रदर्शन करती हुई थिरकती है, तो राजस्थानी घूमर का रूप प्रत्यक्ष हो उठता है।

घूमर-नृत्य,

डांडिया

यह पुरुषों का नृत्य है जिसका अधिक प्रचलन जोधपुर, बीकानेर और शेखावाटी क्षेत्र में है। होली के दिनों में, फागुन की शीतल रातों में से दुग्ध-धवल मैदान में एक नगाड़ा लेकर वादक बैठ हुए युवक घूमते

है। घूमर की भांति उन्हें भी थोड़ा अंग-संचालन करना पड़ता है। पुरुषों की पोशाक में बागा तथा पगड़ी होती है। बागे का घेर घूमते समय फैल कर नृत्य की शोभा बढ़ाता है। कई पुरुष स्त्रियों का वेष बनाकर घूंघट काढ़े नाचते हैं जिससे प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में यह स्त्री-पुरुषों का सामूहिक नृत्य था। आगे चलकर स्त्रियों को इसमें सम्मिलित करना बंद कर दिया गया और अब स्त्रियों का स्वांग भर रह गया। कुछ भी हो पर यह नृत्य अपने ढंग का एक है और राजस्थान का राष्ट्रीय नृत्य कहलाने योग्य है।

डांडिया-गैर नृत्य

लोकगीत

हरेक देश, प्रदेश, जाति और समाज के लोक साहित्य में गीतों का ही प्राधान्य रहा है। गीत मानवीय हर्ष-विषाद की भावनाओं के स्वाभाविक उद्वेग रहे हैं। सिद्धांततः कोई भी रचना मूल रूप में व्यक्ति विशेष की ही होती है, पर धीरे-धीरे प्रचार पाकर वह लोक की संपत्ति बन जाती है और मूल रचयिता का नाम सदा-सदा के लिए विस्मृत कर दिया जाता है। राजस्थान के लोकगीतों को भी, यहां के इतिहास की भांति ही, प्राकृतिक परिस्थितियों ने बड़ा प्रभावित किया है। रेगिस्तानी क्षेत्र (पश्चिमी एवं उत्तरी राजस्थान) में एक-दूसरे से पर्याप्त दूरी पर बसे छोटे-छोटे गांव, अन्न-जल का निरंतर अभाव, मनोरंजन के साधनों की विरलता, और तथाकथित सभ्य समाज के प्रभाव-क्षेत्र से अलग-थलग पड़े लोगों के ये गीत उनके हृदय की पीड़ा के परिचायक हैं। लंबी-तीखी रागों में गाये जाने वाले ये गीत उसी दर्द की बात कहते हैं। प्रायः गर्मी की ऋतु में रात को ऊंटों की कतारों के साथ चलने वाले कतारिये भी अपनी व्यथा और एकाकीपन को ऐसी ही रागों में गाये गये गीतों से उजागर करते हैं। जैसे चमकीले रंगों की वेशभूषा से राजस्थान के लोग अपनी धरती की नीरसता को मिटाते हैं, वैसे ही अपने हृदय के सूनेपन को इन गीतों से। यही राजस्थानी लोकगीतों का मूल स्वर है। इनमें वैभव की जो कल्पना, मधुर सम्बन्धों की जो आकांक्षा और विवशताओं का जो विषाद घुला रहता है वह यहां के समाज की मनः स्थिति को बतलाता है।

जन-जीवन पर गीतों के गहरे और व्यापक प्रभाव को देखकर ही धर्म प्रचारक तथा जन-जन तक पहुंचाने वाले समाज सुधारक और नेता भी इनका आश्रय लेते आये हैं। गीतों की धुनों को 'ढाल' की संज्ञा से अभिहित कर जैनाचार्यों ने हजारों-हजारों ढालों में अपने काव्य का सृजन किया है। ढालसागर नामक ग्रन्थ भी बने हैं।

लोकगीतों के प्रमुख प्रकार हैं–

(1) गृहस्थों के गीत (स्त्रियों द्वारा गाये गए), (2) पुरुष वर्ग के गीत, (3) महफिलों के गीत, (4) पेशेवर गायकों के गीत, (5) अज्ञात कर्तृक,- हरजस, भजन आदि (6) जनजातियों के गीत।

इनमें सबसे प्रधान वर्ग गृहस्थ स्त्रियों के गीतों का है। मानव जीवन की सभी अवस्थाओं के गीत इनमें शामिल हैं। षोडश संस्कारों के इन गीतों में जच्चा, पुत्र-जन्म, लोरी, देवी-देवताओं की मनौती, जातरा, देवी-देवताओं के गीत, रातजगा, तीज, गणगौर, दाम्पत्य, प्रेम, बना-बनी, विवाह, विदा, ससुराल का कष्ट, पीहर की याद, बहन-भाई के गीत आदि आते हैं।

पुरुषों के गीत–पुरुष वर्ग के गीतों में प्रायः होली की धमारें, तेजा, गोगा, पाबू, रामदेव आदि लोक देवताओं के गीत खेती के गीत तथा रतजगों के भजन आदि सम्मिलित हैं।

महफिलों के गीत–ये गीत प्रायः सामन्तों, राज-दरबारों और अन्य समृद्ध लोगों द्वारा आयोजित महफिलों में गाए जाते हैं। इनको पेशेवर गायकों ने गद-गीत की संज्ञा भी दी है। इन गीतों की विशेषता यह है कि गीत की प्रमुख धुन के बोलों को बीच-बीच में दुहरे गा-गा कर पर्याप्त विस्तार दे दिया जाता है जिसमें प्रायः मद्यपान की गोष्ठियों में बहुत समय तक एक ही गीत चलता रह सकता है। ऐसे गीतों में प्रमुख रूप से रतन राणो, जला, पणिहारी, बायरियो, घूंसो, राणो सूमरो मूमल, झालो पंखियो आदि हैं। इन गीतों की विषय-वस्तु सामन्ती जीवन से ही अधिक सम्बन्धित रही है। इन्हें गाने वाले प्रायः ढोली, दमामी आदि जातियों के पेशेवर गायक ही रहते आये हैं। इनके अतिरिक्त मुसलमान तवायफें और हिन्दु पातरें भी ये गीत गाती हैं। राजाओं तथा बड़े ठाकुरों के यहां गायणों के समूह के समूह रहा करते थे और किसी भी अच्छा गाने वाली को गायणों की जमात में शामिल कर लिया जाता था। जयपुर के गुणीजन खाने में भी ऐसी पातरों को प्रशिक्षित किया जाता था।

पेशेवर गायकों के गीत–पेशेवर गायक भी दो प्रकार के होते थे, जिनमें एक तो ऊपर वर्णित ढोली आदि विशिष्ट गायकों की जातियां थीं और दूसरे में गांव-गांव, गली-गली फिरकर गायन करने वाले अथवा विशेष रूप से आयोजित गाथा विशेष को गाने वाले गायक होते थे। घूम-घूम कर गाने वाली ये जातियां पश्चिमी राजस्थान के लंघा, मांगणियार भोपे तथा सभी क्षेत्रों में मिलने वाले गाथा-गायक और जोगी आदि जातियों के लोग हैं। इनमें बहुत से लोग तो परम्परागत लोकगीतों के साथ ही आजकल प्रचलित अन्य धुनों में भी अपनी सारंगियों और रावण-हत्थों आदि पर फिर-फिरकर गाते रहते हैं। पर विशिष्ट आयोजनों के गायक प्रायः गाथाओं का वाचन-गायन ही करते हैं। पाबूजी आदि लोक-देवताओं के पट-चित्र के सामने रात भर दीपक जलाकर भोपा और भोपी नाचते-गाते हैं, जबकि अन्य बगड़ावत, निहालदे, तेजा, नरसी जी का मायरा, रुक्मणी मंगल, हर पार्वती विवाह, गोपीचन्द डूंगजी-जवारजी रामदला, भर्तृहरि आदि कथाओं का वाचन-गायन करते हैं।

अज्ञात कर्तृक, भजन, हरजस आदि–ऐसी भक्ति-रचनाओं की संख्या इतनी अधिक है कि उनका संकलन करना भी बड़ा मुश्किल है। चन्द्रसखी के भजनों, मीरा के पदों, अनेक निर्गुणी संतों के पदों, श्यामजी, सती माता, देवी आदि के निमित्त बनाये गये भजनों और बहुसंख्यक हरजसों जो राम कृष्ण आदि से सम्बन्धित हैं तथा प्रातः-सायं प्रायः प्रौढ़ाओं और वृद्धाओं के द्वारा गाये जाते हैं लोक-गीतों में अपना विशिष्ट महत्व रखते हैं। इनमें अधिकांश तो अज्ञात कर्तृक हैं ही पर मीरा और चन्द्रसखी आदि के नाम से भी जो पद उपलब्ध हैं उनके लोक प्रचलित रूप लोक द्वारा ही तैयार किए गए हैं। बुन्देलखण्ड के रहने वाले चन्द्रसखी नामक महात्मा के पदों का जो राजस्थानी रूप मिलता है वह स्वयं ही इसका उदाहरण है।

आजकल लोकगीतों को विशेष प्रकार के वाद्यों के साथ लयबद्ध और तालबद्ध करके संगीत में बांधने के प्रयत्न चल रहे हैं। ऐसा करने से उनकी सांगीतिकता में तो वृद्धि हुई है पर लोक के गायन की पद्धति धीरे-धीरे भुलाई जा रही है। महिलाएं लय के स्वाभाविक उतार-चढ़ाव में बिना किसी प्रकार के वाद्य के, जो गायन करती हैं उसका अपना विशेष महत्व है। स्त्रियों की वह गायन-पद्धति ही सम्बन्धित लोक-धुन का आधार है, जिसे भुलाया नहीं जाना चाहिए। आज भी आधुनिक सभ्यता से दूर रह गये और परम्परागत जीवन जीने वाले घरों में ऐसी लोक-धुनों की स्वाभाविकता और उनका माधुर्य देखा जा सकता है।

निर्धन परिवारों को निर्धनता की रेखा से ऊपर उठाने के क्रम में जिला ग्रामीण विकास अभिकरण-सीकर का योगदान

जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, सीकर गरीबी की रेखा से नीचे जीवन व्यतीत करने वाले परिवारों के आर्थिक सुधार द्वारा जीवन स्तर सुधारने की दिशा में विभिन्न कार्यक्रमों को क्रियान्वित कर रहा है। सर्व प्रथम निर्धन परिवारों को आर्थिक उद्यमों हेतु ऋण एवं अनुदान उपलब्ध कराता है, निर्धन परिवारों के युवकों/युवतियों को निशुल्क विभिन्न उद्यमों का प्रशिक्षण प्रदान कराकर उनको अमुक प्रकार के उद्यमों हेतु संसाधन उपलब्ध कराता है। ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक उपयोग/महत्व के निर्माण कार्यों को चालू कराकर रोजगार उपलब्ध कराता है। वनों के ह्रास को रोकने की दृष्टि से बायो-गैस संयंत्रों को स्थापित कराकर खाना पकाने एवं रोशनी की सुविधाएं उपलब्ध कराना भी अभिकरण के दायित्वों में से ही है। इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है मरू विकास कार्यक्रम जिसके द्वारा वृक्षारोपण, वाटर शेड, एनीकट, खडीन एवं सिचाई के निर्माण कार्य सम्पन्न कराता है। उपरोक्त ग्रामीण क्षेत्रीय कार्यों के अतिरिक्त शहरी क्षेत्र में भी अनु. जाति के निर्धन परिवारों के आर्थिक उद्यमों को चालू कराने हेतु ऋण/अनुदान उपलब्ध कराने का श्रेय भी अभिकरण कार्यालय को ही प्राप्त है। निम्न पंक्तियों में वर्ष 1987–88 के अन्तर्गत अर्जित एवं वर्ष 1988–89 के निर्धारित लक्ष्यों का विवरण दिया गया है—

	कार्यक्रम/योजना	इकाई	भौतिक प्राप्ति 1987–88	वर्ष 1988–89 हेतु निर्धा-	अन्य विवरण
(1)	मरू विकास कार्यक्रम				
	1. वाटर शेड खडीन और एनीकट	संख्या/ह	8/578	27/3646	5 चालू कार्य पूर्ण किये जाने हैं।
	2 सिचाई कार्य		2/250	4/651	3 चालू कार्य पूर्ण किये जाने हैं।
	3. वन अन्तर्गत वृक्षारोपण	हेक्टेयर्स	670	1374	
	शेल्टर बेल्ट प्लान्टेशन	रो/कि मी.	475		
	सेन्ड ड्यून्स स्टेबिलाईजेशन	हेक्टेयर्स	100		
	4 पशु पेयजल खेल कोठा निर्माण		50	68	
(2)	एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम				
	I प्रथम संसाधन द्वारा लाभान्वित	परिवार	5946	4880	
	2. द्वितीय संसाधन द्वारा "	"	2358	1900	
	ट्राइसम—प्रशिक्षित	युवक	370	480	
	—स्वनियोजित	"	161	480	
(3)	बायो-गैस संयंत्र निर्मित किये गये	संख्या	207	200	
(4)	राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्य क्रम				
	पूर्ण कार्य	संख्या	992	276	
	मानव दिवस अर्जित	लाखों में	7.32	2.65	
(5)	ग्रामीण भूमिहीन रोजगार गारंटी कार्यक्रम				
	कार्य पूर्ण	कार्य	165	311	
	अर्जित मानव दिवस	लाखों में	1.61		
(6)	अनु. जाति कम्पोनेंट प्लान				
	1. पोप योजना अन्तर्गत लाभान्वित (शहरी)	परिवार	405	370	
	2. स्वईट योजना (शहरी) प्रशिक्षित	युवक	275	180	
	3. मद्दी दरों पर अनुदान प्राप्त (ग्रामीण)	परिवार	3206	1910	
(7)	वृहद कार्यक्रम अन्तर्गत सिचाई साधन	संख्या	185	458	

शेष-3

लोकगीतों के वैसे तो अनेक संग्रह निकल चुके हैं, पर वे प्राय. किताबों से ही तैयार किये गये हैं। पृथक-पृथक क्षेत्रों अथवा सांस्कृतिक इकाईयों के ऐसे कोई सर्वेक्षण अभी तक नहीं हो पाए हैं जिनमें जातियों, जन-जातियों तथा विभिन्न क्षेत्रों के गीत प्रकाश में आए हों। इस दिशा में समय रहते प्रयत्न नहीं किए गए तो सैकड़ों वर्षों से चले आते हुए ये गीत आधुनिक सभ्यता और शिक्षा के प्रवाह में सदा के लिए समाप्त हो जाएंगे। एक जैन विद्वान ने लगभग तीन हजार ऐसी लोक-गीतों की धुनों का संकलन किया था जो आज से कोई तीन सौ-साढ़े तीन सौ वर्ष पहले गाई जाती थी, पर आज न तो उन धुनों का पता है और न उनमें से अधिकांश गीतों का।

लोकगीतों की ठेठ धुनों और प्रामाणिक पाठों के साथ भी आज के सांस्कृतिक आयोजनों में प्राय अन्याय किया जाता है। धुनों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करना, उनमें नाटकीयता लाने का प्रयत्न करना और आज के सिनेमा-संगीत की तर्ज पर उन्हें ढालने का प्रयत्न करना लोक-गीतों के लिए बड़ा घातक है। यही बात उनके प्रामाणिक पाठों के विषय में भी कही जा सकती है। समय रहते ऐसी लोक-धुनों को उनके प्रामाणिक पाठों सहित ध्वन्यंकित नहीं किया गया तो इनकी भी समाप्ति हो जायेगी।

लोक-वाद्य

शास्त्रीय हों या लोक, वाद्यों की चार श्रेणियां ही मानी गई हैं-(1) तत-अर्थात जिनमें तार लगे होते हैं, (2) घन-अर्थात जो धातु आदि से निर्मित हों (3) शुषिर-अर्थात जो फूंक से बजे, (4) अनवद्ध-अर्थात जो चमड़े आदि से ढके हों। ये सभी वाद्य अनेक रूपों में विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त होते हैं। अभी तक की गई गवेषणा एवं सर्वेक्षण के आधार पर निम्नलिखित लोक-वाद्यों की जानकारी मिली है जिन्हें प्रदेश की संगीत-नाटक अकादमी ने संग्रहीत किया है-

(1) तत्-इकतारा, दोतारा, चौतारा (वीणा निशान, तंदूरा) जंतर रवाब, राक्णहत्था चिकारा (मेव व गिरासियों का), जोगी-सारंगी, गुजराती सारंगी, धानी सारंगी कमायचा सुरिंदा अरण दुकाया सारंगी आदि।

(2) घन-हांडिया, घंटा, घंटी, थाली, तासली, टिकोर ताल झांझ चींपिया चूड़ियां करताल, रमझोळ, लेजिम, घोडलियो, झालर, श्रीमंडल भैरूंजी का घुघरू घुंघरू टंकी आदि।

(3) शुषिर-अलूजा या अलगोजा, पेली तोटो नड़ सतारा पुंगी मुरली मशक शंख सिंगी बरगू, तुरही, भूंगळ, शहनाई, करणा, बांकिया नागफणी आदि।

(4) अनवद्ध-चंग, डफ, खंजरी, ढोलक धेरा, मादळ नरों की ढोलक नगाड़ा निशान डफ या ढाक, डमरू, धौंसा, दमामा, कुंडी, तासा, बम्मट, मटकी पशुओं के मरट आदि।

यद्यपि लोक में ये वाद्य कमोबेश रूप में आज भी प्रचलित हैं पर लोकगायक तथा [illegible] प्राय. हारमोनियम एवं तबले का प्रयोग करने लगा है।

लोक-नाट्य

राजस्थानी लोक-नाट्यों का कोई विशेष रंगमंच नहीं होता। किसी भी खुले स्थान, चौक आदि या तख्तों पर नाट्य होता है, जिसका आनंद प्रायः सभी ओर बैठे दर्शक उठा सकते हैं। हाँ, ख्याल या गवरी-नृत्य तो धरती पर ही हो जाता है। रंगमंच की व्यवस्था के लिए सभी आवश्यक सामान [illegible] कर व गांव के व्यापारियों तथा अन्य लोगों से प्राप्त हो जाता है। गांव के ठीक-ठाक [illegible] भी नाट्य [illegible]

में शामिल हो जाते हैं। थोड़ी बहुत इतर जरूरते हैं जो तुर्रा-कलंगी आदि ख्यालों में की जाती हैं। प्रकाश व्यवस्था के लिए पहले मशालें जलती थीं पर अब लालटेन, पैट्रोमेक्स आदि काम में लिए जाते हैं और उपलब्ध होने पर बिजली भी।

नाट्यों में दर्शक और अभिनेता के बीच दूरियां नहीं रखी जाती हैं। मूंछ वाले स्त्री पात्र भी घूंघट डालकर स्त्रियों का अभिनय कर लेते हैं। शेखावटी में दूल्हा ख्याल की गायकी का एक विशेष नाम रहा है। ठंडी रातों में तार स्वर में उसका गायन मीलों तक सुनता था। प्रतीकात्मक साज-सज्जा से ही पात्रों की पहचान हो जाती है। लाठी लिये सिपाही, कलंगी लगाए राजा आदि पात्र ऐसे ही हैं।

राजस्थानी लोक-नाट्यों में गीतों एवं नृत्य की प्रधानता रहती है। यदि गायक अच्छा हो तो पूर्वाभ्यास की भी आवश्यकता नहीं होती क्योंकि सभी पात्रों को बोल कंठस्थ होते हैं। सभी नाट्य कथानक प्रधान होते हैं, जिनमें ढोला-मारू, हीर-रांझा, गोपीचंद, सुलतान-निहालदे, अमरसिंह राठौड़ आदि प्रमुख हैं।

गीतों के वर्गीकरण में भवाई, तुर्रा-कलंगी, शेखावाटी ख्याल, कुचामणी ख्याल, मेवाड़ी ख्याल तथा भीलों के गवरी नृत्य जैसे मूक नाट्य सम्मिलित हैं। ख्यालों में प्रायः काव्यात्मकता विशेष होती है। भवाई कला प्रधान नाट्य है, तो कठपुतली में नचाने वाला ही संवाद बोलता है। गवरी नाट्य दिन में ही कर लिया जाता है। *ख्याल, नौटंकी, रम्मत, तमाशा, खेल, सांग और सांगी–सभी प्रायः एक ही अर्थ के द्योतक हैं।* इनमें नगारा-नगारी ही प्रधान वाद्य होते हैं। शेखावाटी की गायकी में सोहनी, खमाज, विहाग, आसावरी, भैरवी, भोपाली, मांड, सौरठ, काफी, देश, सारंग आदि प्रधान रागें हैं। लावणी और चौबोलों का प्रयोग कथोपकथन में होता है। कुचामण (नागौर) के लच्छीरामजी के ख्यालों की रंगत पृथक ही है। रावल लोग भी अपने हास्य प्रधान खेलों से रूठे हुए स्वजनों का भी मेल करा देते थे। भरतपुर की नौटंकियां और बीकानेर की रम्मतें प्रसिद्ध रही हैं। रासधारी ख्यालों का प्रचार वल्लभाचार्य द्वारा किया हुआ माना जाता है। इनके कथानक राम और कृष्ण से ही प्रायः सम्बद्ध होते हैं। इनका प्रचार राजस्थान में दूर-दूर तक है। भवाई भी सुन्दर नृत्य करते हैं जिन्हें देखकर स्तब्ध रहना पड़ता है। ये लोग बीकाजी, बाघाजी, ढोला-मारू आदि के ख्याल करते हैं। तुर्रा-कलंगी या माच हिन्दु-मुसलमानों का सम्मिलित आविष्कार है। रासलीला की भांति रामलीला के नाट्य भी बहुत प्रचलित रहे हैं। यद्यपि नाट्य विद्या किसी न किसी रूप में अब भी है पर पारसी नाटकों ने और तत्पश्चात चल-चित्रों ने इनका प्रचलन बन्द सा कर दिया है। इनके संरक्षण की आवश्यकता अनुभव की जाती रही है।

लोकानुरंजन

वैसे तो लोकानुरंजन में गीत, नृत्य, नाट्य आदि अनेक प्रकार की कलाएं सम्मिलित हैं, पर इनके अतिरिक्त भी ऐसी पेशेवर जातियां हैं जो अपने-अपने करतबों द्वारा लोगों का मनोरंजन करते हैं। अनुसूचित जातियों के लोकानुरंजनों में मीणा और भीलों की घूमर, गैर और विशेष उत्सवों की घूमर बड़ी आकर्षक होती है। इनके विवाह-नृत्य, मेजा गाड़कर किया जाने वाला स्त्रियों और पुरुषों का सम्मिलित होलिका खेल और भीलों का गवरी नृत्य आदि भी मनोरंजनात्मक नृत्य हैं। एक अन्य घुमन्तु जाति कलात्मक वेशभूषा में ढोलक, थाली और कटोरियों के साथ प्रायः गणगौर के पर्व पर नृत्य और नटनियों के करतब भी इसी श्रेणी के हैं जिनमें नृत्य के स्थान पर कलाबाजी अधिक के सहारे कलाबाजी दिखाना, रस्से पर चलना आदि कई अद्भुत कृत्य ढोल और गायन के साथ किये जाते हैं। ये लोग प्रायः घूमते रहते हैं और सैकड़ों वर्षों से जनता का मनोरंजन करते। इन नटों की अनेक जातियां हैं और ये भीख मांगने का धन्धा भी करते हैं।

नट के पत्तों की छड़ आदि बनाने वाले बणजारा लोगों की स्त्रियां भी त्यौहारों पर गृहस्थों के यहां नाचकर भीख मांगती हैं। एक और पहाड़ी जाति गरासिया गणगौर के अवसर पर घूमर के ढंग का वालर नृत्य करते हैं। होली की गैर और भाग पर भी इनके नृत्य होते हैं। सांपों को दिखाकर जीवन-यापन करने वाले कालबेलिया पूंगी बजाकर विभिन्न लोकगीतों की धुनों में मनोरंजन करते आये हैं। इनकी स्त्रियां भी नाच में भाग लेती हैं और खंजरी बजाकर मोरिया, पणिहारी और इन्डाणी आदि गीतों की धुन पर नृत्य करती हैं। मटकी नामक नृत्य शैली अनेक प्रकार की होती है-जिनमें बाहरा-बोहरी, सूरदास, लोहड़ी-बड़ी डाकणी, बीछुड़ो, बायाजी, दाना-माक आदि नृत्यों के साथ मटकों, टोकलों और तलवारों पर भी नृत्य करते हैं। एक और अन्य महत्त्वपूर्ण मनोरंजन रामधारी नाटकों का है और दूसरा चित्तौड़ के तुर्रा-किलंगियों का।

रेगिस्तानी क्षेत्र में बीकानेर के अग्निनर्तक सिद्ध, जालौर के ढोल नर्तक, डीडवाणा और पोकरण की तेरा-ताली, जैसलमेर के मिरासी और लंगा, मारवाड़ की कच्छी घोड़ी और कठपुतली तथा पाबूजी की पड़ और कान्ह गूजरी का पवाड़ा प्रसिद्ध है। मारवाड़ में भी रासधारी होते हैं। इनके अतिरिक्त कुचामणी ख्याल तथा भाव विशेष उल्लेखनीय हैं जो पाबू, गोगा, रामदेव, माताजी तथा भैरू आदि से सम्बन्धित हैं। बीकानेर में रम्मतों की भरमार है जिनके अनेक प्रकार हैं। शेखावाटी क्षेत्र में गींदड़ और ढप के नृत्य, भोमियों, कंजरों, नायकों, चमारों, महतरों और भांगियों के नाच भी होते हैं। यहां की कच्छी घोड़ी का नाच भी प्रसिद्ध है। गणेश-चौथ के अवसर पर पाठशालाओं के बालक चौक-चांदणी नामक नृत्य करते हैं। भांडों के स्वांग और शेखावाटी क्षेत्र के ख्याल भी उल्लेखनीय हैं। बारात के विदा होने पर वर के घर पर विवाह-रात्रि को किया जाने वाला 'टूंटिया' नामक नृत्य और अभिनय का मनोविनोद भी एक प्रमुख मनोरंजन है।

खेल-कूद भी प्रधान लोकानुरंजन रहे हैं जिनके दो प्रकार हैं-(1) बैठे-बैठे के खेल और (2) भाग-दौड़ के खेल। पहली तरह के खेलों में चौपड़, शतरंज, गंजीफा, चौसर, चर-भर आदि खेल उल्लेखनीय हैं। बालिकाओं द्वारा गट्टे खेलना और वर्षा में गीली मिट्टी से घर, मन्दिर आदि बनाना भी प्रसिद्ध रहे हैं। उछल-कूद के खेलों में लुका-छिपी, मारदड़ी, कोट कांगरा, हरदड़ा, सूरज कुंडाला, कच्छी घोड़ी, टीढाल्यो-पाढाल्यो, लूण-क्यार, कुरकाई आदि कुछ खेल हैं। राजपरिवारों में चौगान का खेल कभी बड़ा प्रसिद्ध रहा था। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में अनेकानेक नामों से प्रचलित रहे हुए ये देशी खेलकूद अब लुप्त प्रायः हो गए हैं। अब इनका स्थान आधुनिक खेल लेते जा रहे हैं।

लोक साहित्य

लोक गीतों के अतिरिक्त कथायें, मुहावरे, कहावतें, पहेलियां, लोरियां, सबद, गजल, हरजस, प्रवाद, चुटकले, ख्याल, गाथायें, पवाड़े आदि भी लोक साहित्य के विशिष्ट अंग हैं। लोक-कथायें लोक के सम्मिलित अनुभव, ज्ञान और कल्पना का निचोड़ हैं। इन कथाओं में समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए पृथक-पृथक कथायें हैं। बालोपयोगी कथाओं की मनोवैज्ञानिक प्रस्तुति प्रशंसनीय कही जा सकती है। इनमें परियों की कहानियां, बाल-कल्पना को जागृत करने के लिए रची गई विलक्षण कथायें, पचतंत्र और हितोपदेश के अनुकरण पर लिखी हुई पशु-पक्षियों की नीति-संबंधी कथायें और इसी प्रकार की बालकों के कोमल मानस को सही दिशा में प्रेरित और प्रवाहित करने वाली कथायें आती हैं। प्रौढ़ों के लिए नीति, भूत-प्रेत, चोरी-धाड़ा, हास्य-व्यंग्य, विभिन्न जातियों के गुण-दोष आदि विभिन्न प्रकार की कथाओं के अतिरिक्त ऐतिहासिक और रूमानी कथायें भी प्रचुर परिमाण में उपलब्ध हैं। ऐतिहासिक कथाओं का प्रचलन, जो बहुत कुछ प्रवादात्मक होती हैं, समाज के बड़े-बूढ़ों द्वारा कहे-सुने जाने से होता है। वास्तव में समाज का कार्य-कलाप और गतिविधियां जितनी विविधता लिये हुये हैं वही लोक-कथाओं में भी प्रतिबिम्बित होती हैं।

प्रथम खण्ड

लोक-कथाओं के कहने का अपना एक विशिष्ट ढंग होता है और कई लोग इस कला में बड़े प्रवीण होते है। पेशेवर बात-पोस कथाओं को ऐसे मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत करते हैं कि श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। ऐसी कथायें एक बार में पूरी न की जाकर अनेक बार में सम्पूर्ण होती है। बात कहने वाले बातों के बीच-बीच में दोहों, गीतों आदि की भरती करने के अतिरिक्त उनमें नाटकीयता का प्रयोग भी करते है। पात्रानुकूल बोली-चाली आदि का प्रयोग कर बात कहने वाला अकेला ही अनेक पात्रों का अभिनय कर कथा में आकर्षण उत्पन्न करता है और विदूषक का सा अभिनय करते हुए सुनने वालों का मनोरंजन भी। प्रायः बातपोस भाट, चारण, रावत, ढोली, ढाढी आदि जातियों के पेशेवर लोग होते हैं। पर यह कला किसी की बपौती नहीं है और कोई भी वाक्-पटु तथा सभाचतुर व्यक्ति यह कार्य कर सकता है। बात का सारा आनन्द उसकी भाषा और प्रस्तुति में ही निहित है। इसलिए बात कहने वाले लोक-प्रचलित कहावतों, मुहावरों और पद्यों का खुलकर प्रयोग करते है। लोक प्रचलित कथायें लिखित रूप में भी मिलती हैं जिन्हें साहित्यकारों ने बात की संज्ञा दी है। लिखी गई और कही-सुनी जाने वाली बातों में बड़ा अंतर है। लिखी गई बातें अधिक साहित्यिकता लिये होती हैं, जबकि मौखिक बातों में इच्छानुकूल परिवर्तन किया जा सकता है।

प्रवाद:-यह भी एक प्रकार की ऐतिहासिक कथा होती है जो आकार में अपेक्षाकृत छोटी और घटना विशेष पर ही कही जाती है। प्रवाद ऐतिहासिक और काल्पनिक, दोनों ही प्रकार के होते हैं। अनेक प्रवादों की कहावतें भी प्रचलित है और उन कहावतों में उनके भीतर के कथा-सूत्र का संकेत भी रहता है। प्रवादों की यह परम्परा सैकड़ों वर्षों से चली आई है और ऐसी कहावतों के माध्यम से ही ये प्रवाद जीवित रह पाये हैं। प्रवादों में भी कथाओं की ही तरह इतिहास, रीति-नीति, व्यंग्य-विनोद आदि की विविधता रहती है। लोक-कथाओं की ही तरह प्रवाद भी सैकड़ों की संख्या में प्रकाशित किये जा चुके है। प्रवादों को वातालार्थ कहकर भी प्रकाशित किया गया है। प्रवादात्मक गाथाओं की परम्परा ऐतरेय शतपथ आदि ब्राह्मण-ग्रन्थों में और महाभारत, बौद्ध-जातक, जैन-ग्रन्थों तथा कथासरित्सागर आदि ग्रन्थों में प्रमुखता से मिलती है।

कहावतें व मुहावरे:-कहावतें तथा मुहावरे लोक-भाषा के अभिन्न अंग समझे जाते है। मुहावरेदार भाषा से पारस्परिक बातचीत को अधिक सक्षम और आकर्षक बनाया जा सकता है। मुहावरों से भाषा में जो एक जीवन्तता और विलक्षणता आती है वह उसे और आगे बढ़ने को प्रेरित करती है। मुहावरों का प्रयोग भाषा को एक वक्रता और व्यंजना-शक्ति प्रदान करता है। हजारों मुहावरों के कुछ कोश प्रकाशित किये जा चुके है। मुहावरों की तरह ही कहावतें भी लोक के अनवरत ज्ञान से प्रसूत होती है। इनसे कथन के मर्म को भली-भांति समझा जा सकता है। कहावतें भी अनादि काल से चली आई है और इनमें विषयगत विविधताएं भी बहुत है। कहावतें गद्य और पद्य दोनों ही रूपों में मिलती है। पद्यात्मक कहावतें अधिक प्रचलित हो पाई है। कहावतों के विविध रूपों की व्याख्या करते हुए विद्वानों ने समस्त कहावतों को घटनात्मक, लोक-न्यायात्मक, शिक्षात्मक तथा चरम वाक्यात्मक प्रकारों में वर्गित किया है। लौकिक न्याय और मूल अभिप्रायों से सम्बन्धित कहावतें विद्वानों की चर्चा का विषय रही है। कहावतों का वर्गीकरण करते हुए कहावती समाज में जातियों, व्यक्तियों, स्त्रियों, धन-धान्य [illegible] लोक-विश्वास, जीवन-दर्शन, शगुन, कृषि और वर्षा-सम्बन्धी कहावतें प्रमुख रूप से वर्णित की गई है। कहावतों की व्याख्या और संग्रह के भी अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है।

पहेलियाँ:-इन्हें गूढ़ [illegible] उपदेशात्मक [illegible] से भी जाना जाता है। [illegible] [illegible] से विनोद की गोष्ठी और ज्ञान-परीक्षा के क्रम में [illegible] रही है। [illegible] और [illegible]

पहेलियों के मर्म तक पहुंचने के लिए विशिष्ट प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता होती है। प्रायः बच्चों के मनोरंजन और युवा प्रेमियों तथा सखी-सहेलियों के हास-परिहास के रूप में भी इनका प्रयोग किया जाता है। ससुराल में दूल्हे को पूछी जाने वाली पहेलियां उसकी बुद्धि-परीक्षा के लिए ही प्रयुक्त होती हैं। पहेलियों का प्रचलन भी वैदिक काल से होता हुआ महाभारत पुराण तथा अन्य कथा-ग्रंथों और काव्यों में होता आया है। पहेलियों को सांकेतिक भाषा के रूप में भी काम में लेने की प्रथा रही है। पहेलियों का ऐसा कोई प्रामाणिक संग्रह अभी नहीं निकल पाया है। पर वर्गीकरण की दृष्टि से इनमें पर्याप्त सामग्री है। जहां आध्यात्मिक पहेलियां ज्ञान की चरम सीमा को छूती हैं, वहीं 'भूंगर के धेसले' जैसी पहेलियां अपनी विलक्षणता और हर्षात्मकता लिए हुए हैं। लोक मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धन भी पहेलियों का प्रधान क्षेत्र रहा है।

लोरियां:—लोक प्रचलित वास्तविक लोरियां बहुत कम मात्रा में मिलती हैं और जो प्राप्य हैं उन्हें भी स्त्रियां जच्चा के गीतों में ही परिगणित करती हैं। लोरियों का उपयोग रोते हुए बच्चों को सुलाने और रिझाने के काम में ही प्रधानतः किया जाता रहा है। इनमें कल्पना का अपेक्षाकृत अभाव रहता है और तुके जोड़कर बनाई हुई थोड़ी बहुत लोरियां ही अभी तक प्रकाश में आई है। साहित्यकारों ने भी इस विधा को विशेष रूप से नहीं अपनाया है और दो-चार वीररसात्मक लोरियां ही रची गई है।

गजल :—यह विधा आधुनिक गजल से भिन्न है और अनेक बार इनके लेखकों के नामों का पता न लगने पर भी इन्हें लोक की ही सम्पति माना जाना चाहिए। प्रायः गजलें शहरों, कस्बों तथा विशिष्ट अवसरों के वर्णनों से सम्बन्धित रहती हैं और उन्हें एक या अनेक व्यक्ति विशिष्ट लय में गाते हैं।

हरजस —भगवान के गुणगान से सम्बन्धित भक्ति-भावना-पूर्ण पद हरजस कहलाते हैं। इन्हें प्रायः बड़ी-बूढ़ी स्त्रियां प्रभातकाल में चक्कियों पर आटा पीसते तथा अन्य दैनिक कार्य करते हुए अथवा विश्राम के क्षणों में गाती हैं। मन्दिरों में आते-जाते, आंगन की तुलसी की पूजा करते और कार्तिक स्नान करते समय हरजस विशेष रूप से गाये जाते हैं। हरजसों के गाने का समय प्रायः सुबह और शाम का ही होता है। मीरा, चन्द्रसखी, कबीर सूरदास, निर्गुणी भक्तों तथा अन्य स्थानीय अथवा प्रसिद्ध कवियों, लेखकों द्वारा लिखे गये पद भी हरजसों के रूप में गाये जाते हैं।

चुटकले:—हल्के-फुल्के क्षणों में मन को गुदगुदाने वाले छोटे-छोटे हास्य-व्यंग्यात्मक प्रसंग ही चुटकले कहे जाते हैं। राजस्थान में जातियों से सम्बन्धित चुटकले बड़ी तादाद में मिलते हैं। जीवन में हास्य की अनिवार्यता अनादि काल से अनुभव की जाती रही है और इसी निमित्त राजाओं के यहां विदूषकों के पद भी रहते थे। हास्य उत्पन्न करने का एक प्रकार स्वांग भी होता था पर चुटकले मौखिक होने के कारण सहज ही में प्रयुक्त हो सकते थे।

राजस्थान में शेखचिल्ली के प्रसंग और अकबर-बीरबल के विनोद भी पर्याप्त प्रचलित रहे हैं। इन्हीं में लोक ने अपने चुटकले भी प्रक्षिप्त रूप से सम्मिलित कर दिये हैं। जातिगत विशेषताओं को प्रकट करने वाले हजारों चुटकलों के होते हुए भी उनसे कभी जातिगत वैमनस्य नहीं उत्पन्न हुआ क्योंकि ये बिना किसी भेदभाव के सभी जातियों के लिए बने हुए हैं। चुटकलों की विविधता भी लोक-जीवन का संचित ज्ञान कहा जा सकता है और इनमें अंतर्निहित सत्य भी सराहने योग्य है। काफी चुटकले प्रकाशित होने पर भी ग्राम्य-जीवन में प्रचलित बहुत बड़ी संख्या में चुटकले और खोजे जा सकते हैं।

ख्याल :-यह नृत्य-गीत से समन्वित लोकानुरंजन है जो खुले में बैठक के नुक्कड़ों या चबूतरों आदि पर अभिनीत किये जाते हैं। सभी पात्र अपनी-अपनी वेशभूषा में वाद्य-वादकों के साथ मंच पर ही बैठे रहते हैं। तीनों अथवा चारों ओर दर्शकों से घिरे हुए यह मनोरंजन लोक-नाट्य के नाम से भी जाने गये हैं। अन्य स्थानों पर इन्हें नौटंकी, रम्मत, सांग, खेल आदि नामों से भी जाना जाता है। ये प्रायः ऐतिहासिक और प्रेम कथानक होते हैं। शेखावाटी, कुचामणी, मारवाड़ी, मेवाड़ी, जैसलमेरी, अलवरी (तुर्रा-कलंगी) तथा अलीबख्शी ख्याल अधिक प्रसिद्ध रहे हैं। ख्यालों का प्रचलन अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी में प्रारम्भ हुआ माना जाता है और इनकी अपनी विशिष्ट गायकी भी होती है। ख्यालों की बनावट में लावनी, चौबोला, कवित्त आदि छन्दों का प्रयोग अधिक होता है जिन्हें विशेष लय में गाया जाता है। ऐसे सैकड़ों ख्याल प्रकाशित हो चुके हैं और बहुत बड़ी संख्या में अप्रकाशित भी मिलते हैं। ख्यालों से सम्बन्धित प्रसिद्ध नामों में दूलिया, वजीरा, नानू, राणा आदि अनेक प्रसिद्ध नाम शेखावाटी क्षेत्र से सम्बन्धित हैं। ख्यालों का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने उनकी अनेक बारीकियों का वर्णन किया है।

गाथायें :-लोक-गाथायें वीरता, प्रेम, रोमांच, पौराणिक, निर्वेद, धर्म, संस्कृति आदि से सम्बन्धित मानी गई हैं। इनमें संगीतात्मकता का प्रधान गुण माना गया है। वीर कथात्मक लोक-गाथाओं में बगड़ावत, पाबू, गोगा, तेजा, डूंगजी-जवारजी, गजालेंग आदि के नाम गिनाये जाते हैं। प्रेम-गाथाओं में ढोला-मारू, जमाल-बूबना, नागजी-नागवन्ती, सोरठ आदि मानी गई हैं। [illegible] पौराणिक गाथाओं में लोक महाभारत, आख्यानों, ध्रुव और शिव-पार्वती सम्बन्धी [illegible] हैं। निर्वेद [illegible] में गोपीचन्द और भर्तृहरि अग्रणी समझे जाते हैं। बगड़ावत और पाबू की गाथायें प्रकाश में आ चुकी हैं जबकि अन्य गाथाओं के गीतात्मक रूप भी ज्ञात हो चुके हैं।

पवाड़े :-इन्हें भी लोग प्रवादों से उत्पन्न मानते हैं। [illegible] प्रचलित हैं। प्रायः किसी विशिष्ट वीर कृत्य को पवाड़ा कहते हैं। पर इस [illegible] निन्दनीय कृत्यों को भी पवाड़ा कहा जाने लगा है। इनका एक अन्य नाम [illegible] है। [illegible] विशेष रूप से प्रचलित हैं और इनमें से कुछ प्रकाशित भी हो चुके हैं। [illegible] प्रसिद्ध रचना मानी गई है।

लोकोत्सव

वैसे तो होली, दीपावली, रक्षा-बन्धन, रामनवमी, [illegible] और [illegible] पूरे प्रदेश में बड़े उमंग और उत्साह के साथ मनाये जाते हैं। लेकिन फिर भी कुछ [illegible] राजस्थान के अपने कहे जा सकते हैं। इनका वर्णन यहाँ किया जा रहा है-

तीज :-श्रृंगार की भावनाओं का यह त्यौहार सावन-भादों की मनोरम [illegible] श्रावण मास के शुक्लपक्ष की तीज को पड़ता है। इस समय सावन की [illegible] जाते हैं और नए अंकुरण से धरती हरियाली चादर ओढ़ लेती है। यह त्यौहार [illegible] त्यौहारों की कड़ी का पहला त्यौहार है। इसीलिए कहा गया है-"[illegible] [illegible]" अर्थात तीज त्यौहारों को लेकर आती है [illegible]

इस त्यौहार के दिन [illegible] [illegible] उत्साह के साथ [illegible] है। [illegible]

है जहां बालक-बालिकाएं तथा स्त्री समुदाय एकत्रित होकर झूले झूलते हैं, कोडियां खेलते हैं और विविध प्रकार के नृत्य-गीतों द्वारा मनोरंजन करते हैं।

गणगौर :–राजस्थान में यह पर्व वासन्ती पर्वों की समापन बेला का पर्व होता है। अविवाहित युवतियां मनोवांछित वर प्राप्त करने के लिए तथा सौभाग्यवती महिलाएं अपने सुहाग की दीर्घायु के लिए गणगौर पूजन करती हैं। गणगौर शब्द में 'गण' महादेव और 'गौर' (गौरी या पार्वती) का प्रतीक है।

होलिका-दहन के दूसरे दिन से यह उत्सव प्रारम्भ होता है। इस दिन कुंवारी कन्याएं तथा विवाहित महिलाएं होली की राख की 'पींडियां' बनाकर लाती हैं और उन्हें परम्परागत स्थानों पर प्रतिष्ठित करती हैं। सोलह दिन तक कुंकुम और मेंहदी से दीवार पर एक-एक स्वास्तिक और सोलह-सोलह बिन्दियां लगाकर गणगौर की पूजा करती हैं। नवविवाहिताएं, विवाह के पश्चात की पहली गणगौर-पूजा अपने पीहर में रहकर करती हैं। सोलह दिन बाद गणगौर के दिन सायंकाल ये महिलाएं गीत गाती हुई 'ईसर और गौर' को किसी नदी या सरोवर में विसर्जित कर आती हैं।

शीतलाष्टमी :–चैत्र कृष्णा अष्टमी को होली के आठवें दिन यह त्यौहार पड़ता है। इस दिन पिछले दिन तैयार किये हुए भोजन का शीतला माता को भोग लगाकर ठण्डा भोजन ही किया जाता है। यह माता चेचक, खेदरी आदि की देवी के रूप में पूजी जाती है। जयपुर जिले के चाकसू कस्बे के पास स्थित शीतला मन्दिर में इस दिन बड़ा मेला लगता है।

अक्षय तृतीया :–रेगिस्तानी क्षेत्र में अक्षय तृतीया या आखातीज त्यौहार बड़े चाव से मनाया जाता है। इस दिन बाजरा, गेहूं, चना, तिल, जौ इत्यादि सात अन्नों की पूजा की जाती है और अच्छी वर्षा की कामना की जाती है। इस दिन शाम को हवा का रुख देखकर लोग "शगुन" लेते हैं। वैशाख शुक्ल तृतीया को मनाये जाने वाले इस त्यौहार के दिन रेगिस्तानी क्षेत्र में गेहूं का खीच तैयार किया जाता है और अतिथियों को भोजन के लिए आमंत्रित किया जाता है। इस क्षेत्र में इस दिन [illegible]।

यह पर्व मूल रूप से एक कृषि-पर्व ही है। इस समय [illegible] इस समय वह अत्यंत उल्लासित होता है अतः वह अपने लड़के-लड़कियों के विवाह अवसर इस मुहूर्त पर करता है।

सांस्कृतिक मेलों में निम्नलिखित क्षेत्रों के धार्मिक और पशु मेले विशेष [illegible] स्थानीय महत्व के मेले अनेक हैं, पर कुछ ऐसे हैं जो समस्त राजस्थान में विख्यात हैं।

1 पुष्कर का मेला- पुष्कर तीर्थ स्थान अजमेर से 18 किमी. [illegible] पौराणिक सरोवर तथा विश्व प्रसिद्ध ब्रह्माजी का मन्दिर है। पुष्कर में अनेक मन्दिर हैं। [illegible] राजस्थान में प्रमुख तीर्थ स्थान है [illegible] सबसे बड़ा [illegible] है। [illegible] कार्तिक पूर्णिमा का विशाल मेला भरता है। इस अवसर पर [illegible] सरोवर में स्नान करते हैं और ब्रह्माजी व अन्य मन्दिरों के दर्शन करते हैं। [illegible]

[illegible]

2 महावीर जी का मेला- सवाई माधोपुर जिले के हिण्डौन कस्बे के निकट महावीरजी स्थान जैन सम्प्रदाय का महत्वपूर्ण केन्द्र है। यहां पर अनेकों जैन मन्दिर हैं। महावीर जी न केवल राजस्थान के जैनियों के लिए, बल्कि सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैन मतानुयायियों के लिए प्रमुख तीर्थ स्थल है। प्रति वर्ष यहाँ मेला भरता है, जिसमें लाखों जैन श्रावक, श्राविकाएं, साधू, साध्वियां, श्रमण, श्रमणियां, मुनि एवं अन्य जन एकत्रित होते है। जैन धर्मावलंबी इस मेले में आकर अपने धार्मिक मुनियों के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। मेले में जैन मतावलम्बियों के अतिरिक्त अन्य जातियों के मतावलम्बी तथा स्थानीय गूजर, मीणा आदि जातियों के लोग भी उत्साह से भाग लेते है।

3. कैला देवी का मेला- सवाई माधोपुर जिले में ही करौली से 18 किमी. उत्तर में कैलादेवी के मन्दिर मे चैत्र माह में मेला भरता है जो कई दिन तक चलता है। लाखों लोग कैलादेवी के दर्शनार्थ आते हैं, इसलिए इसे 'लक्खी मेला' भी कहते हैं। इस अवसर पर पशु-मेले का भी आयोजन किया जाता है, जिसमें विभिन्न नस्लों के लाखों पशुओं की खरीद-फरोख्त की जाती है तथा श्रेष्ठ नस्ल के मवेशियों की प्रतियोगिता आयोजित कर पुरस्कृत भी किया जाता है।

4. गणेश मेला- सवाई माधोपुर जिले मे रणथम्भौर नामक ऐतिहासिक दुर्ग है, जिसमें गणेशजी का प्रसिद्ध मन्दिर है। गणेश चतुर्थी के अवसर पर गणेशजी के मन्दिर में मेला भरता है, जिसमे देश-प्रदेश के लाखो लोग गणेशजी के दर्शन करने आते है तथा मेले में भाग लेते है।

5 राणी सती का मेला- शेखावाटी क्षेत्र के झुंझुनू जिले के झुन्झुनूं मुख्यालय में राणी सती का प्रसिद्ध मन्दिर है। यहाँ भादवा मास में मेला भरता है, जिसमें लाखों लोग राणी सती के मन्दिर में दर्शनार्थ आते हैं। मार्च 1988 मे भारत सरकार द्वारा सती (निवारण) अधिनियम पारित कर देने के पश्चात इस मेले पर भी रोक लगा दी गई है।

6 रामदेवजी का मेला- राजस्थान के रेगिस्तानी अंचल के जैसलमेर जिले के पोकरण कस्बे के निकट भाद्र पद मास मे रामदेवजी का मेला भरता है, जिसमें स्थानीय सत रामदेव की पूजा की जाती है। रामदेवजी के मेले मे लाखों स्थानीय लोग भाग लेते हैं तथा अपनी मनौतियो की पूर्ति हेतु कामना करते हैं। इस अवसर पर पशु मेला भी आयोजित किया जाता है, जिसमें विभिन्न नस्लो के मवेशियों का क्रय-विक्रय होता है। यह रेगिस्तानी क्षेत्र का महत्वपूर्ण धार्मिक सास्कृतिक मेला है।

7 कपिल मुनि का मेला- बीकानेर जिले मे कोलायत नामक स्थान पर कपिल मुनि का तीर्थ व झील है। यहाँ प्रतिवर्ष कपिल मुनि की स्मृति मे कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता है। इस अवसर पर लाखो लोग झील में आकर स्नान करते है।

8 उर्स- अजमेर म प्रसिद्ध सूफी सन्त ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है। दरगाह मुसलमानो का पवित्र धार्मिक तीर्थ है। उर्स के अवसर पर देश-विदेश के लाखो मुसलमान जायरीन यहा नमाज अदा करते है तथा भाग लेते है। हिन्दू भी दरगाह पर जाते हैं। यह मुसलमानों का भारत का सबसे बडा मेला है जहां साम्प्रदायिक सद्भाव का नमूना देखने को मिलता है।

9 सीताल डूंगरी मेला- जयपुर जिले मे चाकसू के निकट चैत्र मास मे सीतल डूंगरी का मेला भरता

है। मेले में स्थानीय लोग काफी संख्या में उत्साह से भाग लेते हैं तथा शीतला माता की पूजा की जाती है तथा रोगों से बचाव के लिए कामना की जाती है।

10 **बेणेश्वर**- राजस्थान के डूंगरपुर जिले में बेणेश्वर आदिवासियों का प्रमुख तीर्थ स्थल है। माघ माह में यहाँ मेला भरता है, जिसमें इस क्षेत्र के लाखों आदिवासी परम्परागत उत्साह व उमंग से भाग लेते हैं। मेले में आदिवासी संस्कृति का नमूना देखने को मिलता है। पर्यटन विभाग आदिवासियों को मेले में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।

11. **चारभुजा मेला**- उदयपुर में चारभुजा नामक धार्मिक स्थान पर भादवा मास में चारभुजा जी मन्दिर में यह भरता है, जिसमें सैकड़ों की संख्या में स्थानीय लोग भाग लेते हैं।

12. **जाम्भेश्वर मेला**- बीकानेर के नोखा नामक स्थान पर फागुन मास में व आसोज माह में मेला भरता है जिसमें हजारों की संख्या में विश्नोई सम्प्रदाय के अनुयायी भाग लेते हैं।

13. **गोगामेड़ी का मेला**- बीकानेर में भादवा मास में गोगामेड़ी का मेला भरता है जिसमें स्थानीय जनता हजारों की संख्या में भाग लेती है।

14. **करणी माता का मेला**- बीकानेर जिले में देशनोक नामक स्थान पर करणी माता के प्रसिद्ध मन्दिर में चैत्र मास में यह मेला भरता है, जिसमें हजारों श्रद्धालु भाग लेते हैं तथा करणी माता के दर्शन करते हैं।

15. **गलियाकोट में उर्स**- डूंगरपुर जिले में गलियाकोट नामक स्थान पर दाऊदी बोहरा मुसलमानों का प्रमुख धार्मिक स्थल है, जहाँ उर्स में लाखों बोहरा सम्प्रदाय के अनुयायी भाग लेते हैं।

16. **अन्य मेले**- इन मेलों के अतिरिक्त परबतसर, अलवर, भरतपुर, धौलपुर के मेले प्रसिद्ध हैं। बैराठ (जयपुर) में बैशाख मास में प्रसिद्ध मेला भरता है। सीतावाड़ी (कोटा) में भी बैशाख में मेला भरता है। मण्डोर (जोधपुर) में वीरपुरी का मेला श्रावण में भरता है। इस दिन वीरों की पूजा होती है। मण्डोर में वीरों की साल बनी हुई है, जिसमें मारवाड़ के प्रसिद्ध वीरों (मल्लिनाथ, पाबूजी, हड़भूजी, गोगाजी, रामदेवजी,) व हिन्दुओं देवी-देवताओं रामकृष्ण, गणेश, भैरव, चामुण्डा, कंकाली की बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ बनी हुई हैं। इन मेलों में विभिन्न स्थानों व राज्यों के आदमी इकट्ठे होते हैं तथा सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ाते हैं।

सामाजिक जीवन

घनी और गहरी तंग घाटियों से सुशोभित राजस्थान का सामाजिक जीवन [illegible] के मधुर उतार-चढ़ाव का चिन्ह है। राजस्थान का समाज और उसकी संस्कृति सदा से ही स्पन्दनशील रही है। यहाँ के समाज में शौर्य, त्याग, बलिदान व देश-भक्ति की उच्च-भावना बनी रही है। राजस्थान का इतिहास इसके गौरवमय कृत्यों का जीवित रूप है। आदिम युग से वर्तमान युग और इसके बाद आज तक राजस्थान का सामाजिक जीवन अपनी प्रेरणा और उत्थान के कारण [illegible] जीवन को प्रदर्शित करता रहा है। [illegible] और [illegible] के इस भू-प्रदेश विभिन्न प्रकार की परम्पराओं के बीच पनपते हुए भी

राजस्थान
वार्षिकी

जीवन-दायिनी शक्ति का स्रोत रहा है तथा यहां का रहन-सहन, रीति-रिवाज एक-दूसरे के इतने निकट रहे हैं कि सदा से ही यह भू-खण्ड विविध रूपों में विभाजित होने पर भी सामाजिक और सांस्कृतिक रूप में एक रहा है।

राजस्थान में रहने वाली आर्य सन्तति तथा आदिम वासियों की सांस्कृतिक परम्पराएं समानान्तर हैं। कदाचित इसका कारण इस भू-प्रदेश के आदिम वासियों और आर्यों में परस्पर समन्वय की भावना रही हो और प्रारम्भ से ही एक-दूसरे के निकट आने के लिए, एक दूसरे को अपने प्रभाव में रंगने के लिए प्रयत्नशील रहे हों। सामाजिक जीवन में भी इनका स्तर समान रहा है। आर्य सन्तति ने अपने बौद्धिक स्तर से इस भू-प्रदेश पर अधिकार किया और उनमें अनेक कबीलों ने अपना राज्य स्थापित किया। राजस्थान में जन-पदीय युग की समाप्ति के बाद इन्हीं लोगों ने सामन्ती परम्परा की स्थापना की। सामन्तवादी परम्परा ने राजस्थान के सामाजिक जीवन पर प्रभाव डाले। इस समय राजस्थान का जीवन दो प्रकार के समाजों में विभाजित हुआ, किन्तु भाषा-बोली, रहन-सहन, आचार और व्यवहार में एक ही रहा। सामन्त के दुर्ग और किसान की झोंपड़ी की भाषा में कभी अन्तर नहीं पड़ा। फलतः शासक और शासित होते हुए भी सामाजिक जीवन में दोनों एक-दूसरे के पूरक रहे।

समाज व्यवस्था

राजस्थान का समाज परम्परागत रूप से हिन्दूबहुल समाज रहा है। इसकी संरचना भारतीय स्मृतियों में वर्णित वर्णाश्रम-धर्म के अनुसार चली आई है। मुस्लिम काल में कट्टरपंथी मुसलमान शासकों ने बलात् धर्म-परिवर्तन कराकर लाखों की संख्या में मुसलमान बना लिये थे। इसी प्रकार इसाईयों के समय में पुर्तगालियों और अंग्रेजों ने नौकरियों आदि के लालच तथा अन्य सुविधाएं देकर प्रायः पहाड़ी लोगों तथा अनुसूचित जातियों एवं जन-जातियों को इसाई बना लिया था। यह बात नहीं है कि मुसलमानों से पहले आने वाले आक्रमकों ने धार्मिक विषय में दखल न दिया। पर एक तो उनके प्रयत्न छोटे पैमाने पर रहे और दूसरे विशाल हिन्दू धर्म ने उन सभी को पचाकर आत्मसात कर लिया।

हिन्दू धर्म वास्तव में संकुचित अर्थों में कोई धर्म नहीं है। यह एक जीवन-पद्धति है जिसके कुछ मूलभूत सिद्धांत हैं। इसमें शाकाहारी और मांसाहारी, आस्तिक और नास्तिक तथा विविध आचार-व्यवहार और मान्यताओं के लोग शामिल रहे हैं। आत्मा की नश्वरता और पुनर्जन्म सम्बन्धी मान्यता इसके महत्वपूर्ण पहलू रहे हैं।

वर्णाश्रम धर्म के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र–यही चार वर्ग हिन्दू समाज में चले आए हैं। जिन दिनों कर्म से वर्ण का निर्धारण होता था, उन दिनों क्षत्रिय का कार्य रक्षा करना, ब्राह्मण का कार्य पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना-कराना और दान देना-लेना, वैश्य का कार्य खेती और पशुपालन और बाद की सदियों में व्यापार-व्यवसाय करना तथा शेष सभी वर्गों के कार्य, जो शूद्र की संज्ञा से अभिहित होते थे, प्रथम तीन वर्गों की सेवा करना था। धीरे-धीरे कर्म से वर्ण-निर्धारण की यह प्रक्रिया समाप्त होती गई और जन्म से ही वर्णों का निर्धारण रह गया। फिर भी इस उथल-पुथल में भी पेशों के अनुकूल जातियां बनती गईं और कमोबेश रूप में वर्णाश्रम व्यवस्था चलती रही। आज के युग में यह व्यवस्था भी छिन्न-भिन्न हो गई और हर व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार कार्य करने की पूरी स्वतंत्रता है। इसी के परिणामस्वरूप अनेक याचक और पेशेवर जातियों के लोग ऊपर के वर्णों के व्यवसायों–यथा अध्यापन, वाणिज्य, सेना की चाकरी आदि कर्मों में लगे हुए हैं। मोटे तौर पर पेशों के हिसाब से देखा जाए तो क्षत्रियों के लिए न तो यह आवश्यक ही रह गया है कि वे रक्षा-व्यवस्था में भाग लें और न उन्हें इसमें कोई प्राथमिकता ही दी जाती है। जन क्षत्रिय

लोग भी खेती, व्यवसाय, छुटपुट नौकरियां आदि धन्धों में लग गए हैं। रियासतों के एकीकरण के पूर्व तक क्षत्रियों को पुलिस, सेना, प्रशासन आदि में जो अवसर प्रदान किए जाते थे वे सब समाप्त हो गए हैं। क्षत्रियों से ही उत्पन्न दरोगा नामक जाति के वर्ण-संकर लोग भी अब निराश्रित होकर आजीविका के अन्य साधन खोज रहे हैं।

जहां तक वैश्य वर्ग का सवाल है ये लोग कृषि-उपज तथा अन्य तैयार माल का भंडारण और विक्रय करते हैं। देश के बड़े-बड़े उद्योग-धन्धे प्रायः इसी वर्ग द्वारा संचालित हो रहे हैं। यद्यपि ब्याज का कार्य इनके हाथ से निकल कर बहुत कुछ राष्ट्रीयकृत बैंकों के पास चला गया है पर इस वर्ग की जड़ें गांवों में बहुत दूर-दूर तक होने के कारण अब भी अधिकृत अथवा अनधिकृत रूप में ब्याज का धन्धा भी ये लोग करते हैं। सहकारिता आन्दोलन, जो कृषकों को बीज खाद और ऋणादि उपलब्ध कराने में खास भूमिका निभा रहा है, अभी इतना समर्थ नहीं हो पाया है और न इतना सरल ही कि वह छोटे-छोटे कृषकों की आवश्यकता की पूर्ति कर सके। इसके अतिरिक्त हर आदमी की घर-गृहस्थी की जरूरत की वस्तुएं भी गांव में बैठा छोटा दुकानदार ही पूरी करता है। इस प्रकार समाज की आर्थिक व्यवस्था में वैश्य वर्ग का बहुत बड़ा हाथ है। यही कारण है कि समाज की अधिकांश पूंजी का केन्द्रीकरण भी इसी वर्ग के पास हो गया है। वैसे अन्य वर्गों के लोग भी इस प्रकार के धन्धे करते है पर वैश्यों की संगठित शक्ति के आगे उनके प्रयत्न विशेष महत्वपूर्ण नहीं हैं। राजस्थान में वैश्य वर्ग प्रधानत. तीन-चार जातियों में बंटा हुआ है, जिनमें अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग वर्गों की प्रधानता है। जैनों में तेरापंथी और बाईस टोला, श्वेताम्बरी तथा दिगम्बरी और सरावगी आदि अनेक वर्ग हैं। ऐसा विश्वास कियाजाता है कि मूल रूप से ओसवाल जैन राजपूतों से ही निकले हैं, क्योंकि उनका रहन-सहन, वेशभूषा और बोलचाल आदि प्रायः उच्चकुलीन राजपूतों से मिलते हैं। पर अन्य वर्णों के लोग भी बहुतायत से जैन धर्म स्वीकार कर चुके हैं। जैनों के अतिरिक्त अग्रवाल और खण्डेलवाल दो बड़े वैष्णव सम्प्रदाय के वैश्य है जिन्होने व्यापार-व्यवस्था में बडा नाम कमाया है। राजस्थान के पश्चिमी और उत्तरी क्षेत्रों में अग्रवाल अधिक है तो पूर्वी क्षेत्र में खण्डेलवालों का बाहुल्य है। दोनों वर्गों में कोई मूलभूत अंतर नहीं हैं पर इनमे विवाह-सम्बन्ध आदि आपस में नही होते हैं। ब्राह्मणों में अध्यापन, यजमान-वृत्ति, छोटी-मोटी नौकरियां, भोजनालय आदि चलाने का काम और पौरोहित्य तथा राजकीय सेवा आदि के कार्य किए जाते है। पर यह वर्ग परम्परागत विद्याओं का जानकार होकर भी अध पतन की ओर जा रहा है। धीरे-धीरे यजमान-वृत्ति और पौरोहित्य कार्य छोडकर ये लोग भी अन्य व्यवसाय अपनाने लगे हैं पर परम्परागत पूंजी के अभाव मे व्यापार-व्यवसाय मे ये सफल नहीं हो पा रहे है। इनमें भी अन्य जातियों की तरह गौड, सारस्वत, खण्डेलवाल, गुर्जरगौड, सनाढ्य, कन्नौजिया आदि अनेक उपजातिया बनी हुई है जिनके विवाह-सम्बन्ध भी आपस में ही होते हैं।

जातियों और उपजातियो की दृष्टि से शूद्र वर्ग सबसे बडा माना जा सकता है। इनमे प्रधानत कृषक, पेशेवर लोग, कारीगर, याचक आदि श्रेणियों के लोग आते हैं। कृषकों की संख्या सर्वाधिक है और जाट, गुर्जर, माली तथा ऐसी ही अनेक जातियो के लोग इस धन्धे मे लगे हुए है। गावों की समूची अर्थ-व्यवस्था कृषि पर ही आधारित होने के कारण अन्य व्यवसाय भी इन्हीं के इर्द-गिर्द पाए जाते है। किसानों के लिए लोहे के हल बनाना और कुदाली कुल्हाडे तथा घर-गृहस्थी की अन्य चीजें बनाने का कार्य गाडिया लुहार जाति के लोग करते है जो एक गांव से दूसरे गांव गाडियो पर अपना सामान लादे फिरते रहते है। हल आदि बनाने के लिए हर गांव मे एक खाती भी होता है जो गाव की आवश्यकता की पूर्ति करता है। मरे हुए पशुओ की खाल से पानी निकालने का चड़स और खाल की बनी दूसरी वस्तुए तैयार करने के लिए चमार भी गांवो में रहते है और इनके साथ ही मोची भी जो जूतिया आदि बनाते है। खेती का ही एक सहयोगी धन्धा पशुपालन है और प्राय. हर कृषक थोड़ी-बहुत भेडें, बकरिया और गाय-भैंसें अवश्य रखता है। गायों से दूध के अतिरिक्त वह बैल भी प्राप्त करता है जो खेती के साथ ही गाड़ी जोतने के काम भी आते

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र योजनान्तर्गत
प्रगति की ओर अग्रसर होता हुआ

अलवर शहर

अलवर शहर में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र योजना के प्रथम चरण में 534.80 लाख रुपये की लागत से 13 आवासीय एवं चार व्यावसायिक योजनाओं का विकास पूर्ण किया जा चुका है। जिनमें 4500 आवासीय एवं 440 व्यावसायिक भूखण्डों का आवंटन किया जा चुका है।

शहर सौन्दर्यकरण के अन्तर्गत समस्त मुख्य मार्गों पर पेवर फिनिशर से सड़कों की रिकार्पेटिंग एवं आधुनिक विद्युतीकरण की व्यवस्था कर 80.50 लाख रुपये का व्यय किया जा चुका है।

शहर के उत्तरी भाग में 29.40 लाख रुपये की लागत से एक व्यावसायिक केन्द्र 136 दुकानों का निर्माण करा कर उपलब्ध करा दिया गया है।

शहर के दक्षिण भाग में एक सुन्दर एवं आधुनिक स्टेडियम का निर्माण लागत का स्वीकृत हो चुका है। निर्माण कार्य प्रगति पर चल रहा है न्यास द्वारा अब तक इस योजना पर 95.00 लाख रुपये व्यय किए जा चुके हैं।

नगर विकास न्यास, अलवर द्वारा शहर के मध्ये में एक आधुनिक बाजार का निर्माण कराने के दृष्टिकोण से एक आर्किटेक्ट प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें विभिन्न सुन्दर-सुन्दर डिजाईनों में से सर्वोत्तम डिजाईन का चयन कर लिया गया है तथा शीघ्र ही उक्त व्यावसायिक कम्पलैक्स का निर्माण प्रारम्भ कराया जा रहा है।

न्यास द्वारा ट्रांसपोर्ट नगर की स्थापना हेतु एक परियोजना 85 लाख रुपये की एन.सी.आर. प्लानिंग बोर्ड से स्वीकृत कराई जा चुकी है, जिसका क्रियान्वयन शीघ्र ही प्रारम्भ किया जा रहा है।

आईए-आप भी इस आकर्षक शहर में निवास हेतु न्यास की योजनाओं में भूखण्ड प्राप्त कर अपनी आवास समस्या का समाधान करें।

रतनसिंह सिंधी	**सीताराम**
जिला कलेक्टर एवं अध्यक्ष	निदेशक
नगर विकास न्यास,	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परियोजना एवं सचिव,
अलवर।	नगर विकास न्यास, अलवर।

है। यही बात ऊंटों के बारे में भी लागू होती है। गांवों की उपज को मण्डियों तक ले जाने और दूसरे गांव की यात्रा करने आदि में भी ये दोनों पशु सहायक होते हैं। चूंकि खेती प्रायः वर्षा पर ही अवलम्बित रहती आई है इसलिए अवकाश के दिनों में भेड़ों के ऊन और बकरियों और ऊंटों के बालों से विविध प्रकार के उपयोगी सामान बनाने का कार्य किया जाता है। गांव के बड़े-बूढ़े रस्सियां भी इन्हीं दिनों बटते हैं। जहां जंगलों की बहुतायत है वहां जंगल की पैदावार एकत्रित करने के ठेके भी गांव वाले लेते हैं और शहरों में ले जाकर ईंधन, घास आदि बेचने का कार्य भी किया जाता है। सामन्ती युग में गांव की रक्षा का भार प्रायः मीणा जाति के लोगों को दिया जाता था जिन्हें गांव की उपज में से निश्चित मात्रा में हिस्सा देने के अतिरिक्त शादी, गमी आदि अवसरों पर भी कुछ दिए जाने की प्रथा थी। ये लोग चोरी होने पर जवाबदारी वहन करते थे और या तो चोरों को पकड़ते थे अथवा क्षतिपूर्ति करते थे।

कुछ ऐसे पेशे भी थे जो शहरों में अधिक पाए जाते थे। इनमें सुनार, रंगरेज, नाई, धोबी, महतर, वैद्य, तेली आदि ऐसे ही लोग थे जिनका कार्य कस्बों और शहरों तक विशेष रूप से सीमित था।

इस सामाजिक संरचना के मोटे ढांचे में सभी जातियां अपनी-अपनी परम्परागत प्रथाओं को मानती आई हैं जिनमें भी भारतीय षोडश संस्कारों की प्रधानता रही है। इनमें पुत्र-जन्म, देवी-देवताओं की मनौतियां, यात्रा, अन्न-प्राशन, यज्ञोपवीत अथवा अध्ययन, सगाई-विवाह, अन्तिम संस्कार आदि सम्मिलित हैं। ऐसे संस्कारों में भी सभी जातियों में एक मूलभूत समानता पाई जाती है। सभी जातियों के अपने-अपने पुरोहित होते हैं जो धर्म और परम्परा को ध्यान में रखते हुए सारा कार्य निष्पन्न करते हैं।

कस्बों और शहरों में भी वैश्य वर्ग की ही प्रधानता है और समस्त अर्थ-चक्र इन्हीं के घुमाये घूमता है। मंडियों में इनकी प्रधानता, फुटकर व्यवसाय में इनका प्रभुत्व, उद्योग-धन्धों में इनका महत्त्व, पूंजी पर इनका एकाधिपत्य और परिणामस्वरूप सभी वर्गों और प्रशासन-तंत्र पर इनका दबदबा रहा आया है। ये लोग व्यवहार-कुशल और समय के अनुसार आचरण करने वाले होते हैं। यही कारण है कि इनके खानदानों में पीढ़ियों तक धन-धान्य की संपन्नता रहती आई है।

राजस्थान में याचक जातियों की भी बड़ी बहुलता रही है। [illegible] रहती आई है। इनमें चारण, भाट, राव, रावल, ढाढी, ढोली, मिरासी आदि [illegible] मनोरंजन के साथ-साथ दान लेने का कार्य भी करती है। समय के [illegible] में [illegible] कुछ स्वावलम्बी होने लगे हैं।

इन सबके अतिरिक्त जनजातियां और घुमन्तु जातियां भी हैं। [illegible] मीणा, भील, भील-मीणा, गिरासिया, सहरिया आदि प्रमुख जनजातियां हैं। [illegible] परम्परागत ढंग से रहते आए हैं और रहन-सहन में किसी प्रकार का हस्तक्षेप सहन नहीं करते। [illegible] इनका जीवन कृषि, शिकार तथा वन्य प्रदेश की उपज पर ही अवलम्बित है [illegible] लूट-खसोट एवं चोरी-डकैती आदि [illegible] भी नहीं चूकते। [illegible] रास्तों पर [illegible] अब भी छुट-पुट [illegible] है।

इनके साथ ही कंजर, सांसी, बावरी आदि कई छोटी घुमन्तु जातियां भी हैं [illegible] चोरी-डकैती आदि का कार्य [illegible] है। [illegible] माने जाते हैं और समूचे देश में दूर-दूर तक [illegible] है।

राजस्थान में [illegible] के कारण [illegible] और [illegible] कारण जनसंख्या [illegible] [illegible] राजस्थान की [illegible]

जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, चूरू

द्वारा

वर्ष 1987–88 में की गई उपलब्धियां

(1) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम (आई. आर. डी. पी.) के तहत 6746 परिवारों को विभिन्न आर्थिक कार्यक्रमों से लाभान्वित करवाया गया। इसके लिये 91.41 लाख रुपयों का अनुदान एवं 134.24 लाख रुपये का बैंक ऋण उपलब्ध करवाया गया।

(2) ट्राईसेम योजना के तहत 497 युवक/युवतियों को प्रशिक्षण दिया गया। इसमें से 272 युवक/युवतियों को स्वरोजगार/दूसरों के यहां रोजगार पर लगाया गया।

(3) बायोगैस योजना के तहत 175 संयंत्रों का निर्माण करवाया गया।

(4) राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम (एन. आर. ई. पी.) के तहत 5.36 लाख मानव दिवसों का सृजन किया गया।

(5) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम (आई. आर. डी. पी.) के तहत 3096 अनुसूचित जाति के परिवारों को, 47 अनुसूचित जन जाति के परिवारों को, 520 महिलाओं को एवं 93 अल्प संख्यक परिवारों को लाभान्वित करवाया गया।

(6) मरू विकास कार्यक्रम (डी. डी. पी.) के तहत 273.27 लाख रुपये का व्यय किया गया।

उमर दराज
अति. कलक्टर (विकास)
एवं परियोजना निदेशक, जिला
ग्रामीण विकास अभिकरण,
चूरू (राज)

अनिरुद्ध कृष्णा
जिला कलक्टर एवं अध्यक्ष,
जिला ग्रामीण विकास अभिकरण,
चूरू (राज)

छोड़कर देशान्तर में बसने वाले हजारों-लाखों राजस्थान वासियों ने भारत के सुदूर कोनों में भी जाकर अपने व्यवसाय में पर्याप्त द्रव्य अर्जित किया जिसके परिणामस्वरूप आज आसाम से लेकर महाराष्ट्र तक और कश्मीर से कन्याकुमारी के विशाल भू-भाग में ये जिन्दादिल कौम अपना वर्चस्व बनाए हुए है। इस सबके पीछे निरन्तर जूझते रहने वाली इनकी पीढ़ियों की यह संघर्षमय विरासत है जिसने इस वीरान प्रदेश में भी अपनी सफलता के स्तंभ खड़े किए। जहां सामन्तों ने दुर्गम पर्वत शिखरों पर विकट दुर्गों का निर्माण किया वहीं व्यवसायियों और कलाकारों ने अद्भुत पच्चीकारी के विशाल देवालय और प्रभूत दानशीलता के उदाहरणों के रूप में धर्मशालाएं बावड़ियां तालाब कुओं आदि का निर्माण किया।

रीति-रिवाज

राजस्थान के रीति-रिवाज आचार-व्यवहार, वेशभूषा तथा भाषा इसके समृद्ध अतीत की गौरवपूर्ण परम्परा के अवशेष है। भारत के अन्य क्षेत्रों की भांति यहां भी विनाश की घड़ियां आई और परम्परागत रीति-रिवाज, वेश-भूषा तथा भाषा को समाप्त कर देने के प्रयत्न हुए। इस संघर्ष में भारत ने बहुत कुछ खोया और अपने को परिवर्तित भी किया। राजस्थान पर भी इन बीते हुए युगों की छाप पड़ी किन्तु जाति की प्रेरणा और उसका पथ परिवर्तित नहीं किया जा सका। राजस्थान की सजग सजीवता तूफानों के बीच भी आक्रान्त नहीं हुई।

राजस्थान एक बीते हुए युग का भग्नावशेष है, पर उसके अवशेषों में महत्वपूर्ण सामग्री है। हर प्रसंग के लिए निश्चित रिवाजों में जो सरसता और उपयोगिता है, वह इसके सामाजिक जीवन की उच्च भावना के सूचक हैं। राजस्थान रियासती प्रदेश रहा है। सामन्तों के राज्य ने यहां के सामाजिक जीवन को प्रभावित किया है। युद्ध यहां का अनिवार्य अंग रहा है। फलतः रीति-रिवाजों में भी युद्धकालीन स्थितियों की झांकी है। जन्म, विवाह एवं अन्य अवसरों पर जो रिवाज प्रचलित हैं वे सिद्ध करते हैं कि इस प्रांत का जीवन संघर्षमय रहा है और हर अवसर पर युद्ध की आशंका बनी रही होगी। आज भी जच्चा-गृह में तलवार रखी जाती है। यह तलवार या तो सुरक्षा की दृष्टि से रखी जाती होगी, या प्रारम्भिक जीवन से ही बालक में वीरता के संस्कार जागृत करने के हेतु इन उपादानों का उपयोग किया जाता होगा। इन अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों में भी संघर्षों का उल्लेख होता है तथा बालक से आशा की जाती है कि वह युवावस्था में शत्रुओं से लोहा ले उसमें विजयी हो और अपने वंश को गौरवान्वित करे। बालक के जन्म के आठवें दिन बहन-बेटियां आमन्त्रित की जाती हैं। इस दिन बहिन 'आरत्या' करती है तथा साथिया भेंट करती है। साथिये मांगलिक चिन्ह हैं तथा राज्य-तन्त्र के प्रतीक हैं। साथिये को विजय का सूचक माना गया है।

राजस्थान के रीति-रिवाजों की सबसे बड़ी विशेषता उनका सादा और सरल होना है। पुत्र के जन्मोत्सव पर राज-महलों में भी थाली बजाकर ही उस शुभ समाचार की घोषणा की जाती है तो साधारण किसान भी थाली ही बजाता है। उसी प्रकार जन्मोत्सव के आठवें दिन जब कि जच्चा को स्नान कराया जाता है, एक विशेष प्रकार का खाद्य पदार्थ बनता है जिसमें गुड़ या गुड़िया शक्कर होती है। यह पदार्थ इतना सादा होता है कि हर स्थिति का व्यक्ति इसे बना कर सम्बन्धियों में वितरित कर सकता है। इस प्रकार समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा को सुरक्षित रखने हेतु समाज में ऐसे रिवाज प्रचलित किये गये कि किसी अवसर पर किसी की आन्तरिक स्थिति प्रगट न हो सके और वह सरलता से अपना व्यवहार निभा सके।

राजस्थान में विवाह के अवसर पर प्रचलित परम्पराएं अपनी विशेषता रखती हैं। बीते हुए युग में विवाह भी एक युद्ध था। आज भी इन युद्धों के अवशेष स्मृति के रूप में जीवित हैं। विवाह से पूर्व सगाई के लिए कन्या पक्ष वालों के यहां नाई व व्यास का जाना और उनका स्वागत होना, राजस्थान का विशेष रिवाज

है। विवाह के प्रथम दिन गणेश-पूजन होता है, इसी दिन बिन्दायक बैठता है। कन्या पर इसी दिन तेल चढ़ाया जाता है। दूसरे दिन मात, माहेरा व निकासी होती है। निकासी विजय-यात्रा के लिए प्रस्थान करने वाले जुलूस को कहा जाता है, जिसमें पूरा लवाजमा होता है। वर हाथी या घोड़े पर होता है। कन्या के घर के द्वार पर तोरण मारने का स्पष्ट अर्थ यही है कि युद्ध अन्तिम मंजिल पर पहुंच चुका है और विजय प्राप्त की जा चुकी है। विजय-यात्रा के उपरान्त फेरे होते हैं जिसमें अग्नि को साक्षी मानकर एक-दूसरे के प्रति उत्तरदायी रहने की प्रतिज्ञाएं ली जाती हैं। दूसरे दिन सामूहिक प्रीति-भोज होता है, जिसमें वर व कन्यापक्ष के सम्बन्धी कन्या के घर आमन्त्रित होते हैं। इस भोज को "बढ़ार" कहा जाता है। इसी दिन या इसके बाद पहरावणी (वस्तु श्रृंगार) होकर बरात को विदाई दी जाती है। विवाह से पूर्व साधारणतः बिन्दोरी निकाली जाती है जिसमें भी लवाजमा होता है। यह विजय यात्रा के लिए विदायी की सूचक है। विवाह के अवसर पर महिलाएं सम्मिलित गीत गाती हैं। गीतों में समधियों को व्यंग्यात्मक गालियों का दिया जाना राजस्थान की विशेषता है। ये गीत सरस और भाव-पूर्ण होते हैं।

सामन्ती व्यवस्था होने से राजस्थान के रीति-रिवाजों पर भी इनकी छाप रही है। इसी व्यवस्था के प्रभाव से यहां बाल-विवाह, वृद्ध विवाह व अनमेल विवाह का भी प्रचलन रहा है। राजपूतों में कन्या के साथ डावडियां भी दहेज में दिये जाने की परम्परा रही है। ये डावड़ियां ठिकानों में रहने वाले दरोगाओं की कन्याएं होती थीं जो राजपूत कन्या के साथ अन्य वस्तुओं की भांति भेंट की जाती थीं। डावडियां देने की परम्परा कब प्रचलित हुई, इसका अलग इतिहास है, पर यह प्रथा अवश्य ही अशोभनीय मानी जाने लग गई है और अब प्रायः यह समाप्त हो गई है। राजस्थान में मृतक-भोज का रिवाज भी एक बुराई के रूप में था। वर्तमान में यह रिवाज भी प्रायः समाप्त-सा हो गया है। अफीम तथा शराब का भी इस प्रांत में काफी प्रचलन है। वैश्य और ब्राह्मणों के अतिरिक्त सभी जातियों में शराब पीना सामाजिक बना हुआ है। इस प्रकार राजस्थान के रिवाजों को सामन्ती युग ने जीवित रखा तथा उन्हें विकसित किया, वहां इनमें कुछ बुराईयां भी हैं।

राजस्थान भारत की गौरव-पूर्ण इकाई है। यहां के रीति-रिवाज भी गौरवपूर्ण परम्परा के प्रतीक हैं। यहां के रिवाजों में ऊंच-नीच के भेदभावों को भुलाया जाकर एक समान परम्परा स्थापित करने का उल्लेखनीय कार्य है। यही कारण है कि राजस्थान का सामाजिक जीवन सदा से ही उच्च एवं विशिष्ट रहा है। युगों की विनाशकारी काली घटाएं इस प्रांत के अस्तित्व को इसी कारण समाप्त नहीं कर सकीं कि राजस्थान की परम्पराएं किसी वर्ग विशेष की न होकर जनता की थीं। जन-जीवन में व्यापक होना ही यहां परम्पराओं के जीवन दायिनी शक्ति के स्रोत होने का प्रमाण है।

बाल-विवाह

महिलाओं द्वारा हथेली पर मेहंदी के मांड़ने विशेष आकर्षक हैं। मेहंदी को राजस्थान में सुहाग का चिन्ह माना जाता है, इसी प्रकार रखडी और बोरला भी सुहाग का चिन्ह है। मेहंदी राजस्थान की नारियों के हथेली का विशेष श्रृंगार है। त्यौहार-पर्व व हर हर्ष के समारोह पर मेहंदी के मांडने माडे जाते हैं जो काफी आकर्षक और प्रिय होते हैं।

मेहंदी

वेशभूषा

हमारी वेशभूषा में जो कलात्मक पक्ष है वह हमारे जीवन के अभावों की पूर्ति हमारी कामनाओं का प्रतीक और हमारे जीवन की ललक को प्रगट करती है। प्रकृति ने राजस्थान को जो नीरसता प्रदान की है वही चटक रंगों में हमारी वेशभूषा में पूरी हुई है। स्त्रियों के वेशों में विविध रंगों की ओढनियां घाघरे और कांचलियां प्रकृति के अभाव को पूरा करने के प्रयत्न है। इनके कसूमल हरे और नीले रंगों में बादलों की छटा, जलाशयों की सरसता, वनों की हरीतिमा और फूलों की लालिमा एकत्रित हो गई है। इसी प्रकार हमारे अलंकरण, जो नख से लेकर शिख तक के प्रचुर शृंगार में झलकते हैं हमारे अभावग्रस्त जीवन को समृद्धि प्रदान करने के संकेत हैं। इसी प्रकार हमारी बोल-चाल उठ-बैठ आदि में जो एक शालीनता और वैभव की झलक है वह भी हमारे चिंतन की इस मूल धारा से हटकर नहीं है।

राजस्थान की वेशभूषा में अनेक भेद और प्रकार होते हुए भी सामूहिक रूप से यह एक ही दृष्टिकोण पर आश्रित है। वर्तमान युग में क्षेत्रीय विशेषताएं मर्यादित सी हो गई हैं किन्तु फिर भी राजस्थान प्राचीन काल से ही अपने प्रत्येक सांस्कृतिक क्षेत्र में एक निरन्तरता रखता चला आया है जो आज भी विद्यमान है। राजस्थान का जीवन संघर्षमय रहा है, फलत यहां की वेशभूषा पर भी युद्धकालीन परिस्थितियां प्रतिबिम्बित है। हर क्षेत्र में यहां के लोगों ने अपनी रुचि अपनी मौलिकता का प्रदर्शन किया है जिससे इस एक ही प्रांत में इतनी विविधता परिलक्षित होती है कि यह प्रांत मानवीय रुचि के विकास का संग्रहालय सा लगता है।

जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर कोटा बूंदी अलवर, भरतपुर धौलपुर आदि राजस्थान के प्रमुख भागों की अपनी-अपनी अलग वेशभूषा है। यद्यपि ये क्षेत्र एक-दूसरे से बहुत दूर नहीं हैं किन्तु फिर भी वेशभूषा में इनमें जिस प्रकार का अन्तर है वह राजस्थान की तत्कालीन परिस्थितियों तथा यहां की मनोवैज्ञानिक स्थिति का परिचायक है। आज नवीनता ने प्राचीनता की जादूगरी झिलमिल को भले ही उतारकर फेंक दिया हो, फिर भी उसके प्रत्येक अंग मे वही पुरातनकाल की झलक दिखाई देती है। नगरों में अधिकांश शिक्षित लोगों ने अपनी संस्कृति को त्याग दिया किन्तु पुराने लोग उसी वेशभूषा में देख जा सकते हैं।

राजस्थान के हर क्षेत्र की वेशभूषा में अन्तर होने से तत्काल ही क्षेत्र का निर्णय किया जा सकता है। वेशभूषा स्वयं ही व्यक्ति के अस्तित्व का परिचय दे देती है। साधारणतया राजस्थान के पुरुषों की पगडियां शिखराकार, आगे को उठी हुई, घुटने के नीचे तक अंगरखिया तथा कंधे पर दुपट्टा यहां के नागरिक की सभ्य वेशभूषा मानी जाती है। कानों में मुरकियां, लोंग, झाले छैलकड़ी हाथों में बाजूबन्द गले में

भील युवक | जाट | युवक

है। विवाह के प्रथम दिन गणेश-पूजन होता है, इसी दिन बिन्दायक बैठता है। कन्या पर इसी दिन तेल चढ़ाया जाता है। दूसरे दिन भात, माहेरा व निकासी होती है। निकासी विजय-यात्रा के लिए प्रस्थान करने वाले जुलूस को कहा जाता है, जिसमें पूरा लवाजमा होता है। वर हाथी या घोड़े पर होता है। कन्या के घर के द्वार पर तोरण मारने का स्पष्ट अर्थ यही है कि युद्ध अन्तिम मंजिल पर पहुंच चुका है और विजय प्राप्त की जा चुकी है। विजय-यात्रा के उपरान्त फेरे होते हैं जिसमें अग्नि को साक्षी मानकर एक-दूसरे के प्रति उत्तरदायी रहने की प्रतिज्ञाएं ली जाती हैं। दूसरे दिन सामूहिक प्रीति-भोज होता है, जिसमें वर व कन्यापक्ष के सम्बन्धी कन्या के घर आमन्त्रित होते हैं। इस भोज को ''बढ़ार'' कहा जाता है। इसी दिन या इसके बाद पहरावणी (वस्त्र श्रृंगार) होकर बरात को विदाई दी जाती है। विवाह से पूर्व साधारणतः बिन्दोरी निकाली जाती है जिसमें भी लवाजमा होता है। यह विजय यात्रा के लिए विदायी की सूचक है। विवाह के अवसर पर महिलाएं सम्मिलित गीत गाती हैं। गीतों में समधियों को व्यंग्यात्मक गालियों का दिया जाना राजस्थान की विशेषता है। ये गीत सरस और भाव-पूर्ण होते हैं।

सामन्ती व्यवस्था होने से राजस्थान के रीति-रिवाजों पर भी इनकी छाप रही है। इसी व्यवस्था के प्रभाव से यहां बाल-विवाह, वृद्ध विवाह व अनमेल विवाह का भी प्रचलन रहा है। राजपूतों में कन्या के साथ डावड़ियां भी दहेज में दिये जाने की परम्परा रही है। ये डावड़ियां ठिकानों में रहने वाले दरोगाओं की कन्याएं होती थीं जो राजपूत कन्या के साथ अन्य वस्तुओं की भांति भेंट की जाती थीं। डावड़ियां देने की परम्परा कब प्रचलित हुई, इसका अलग इतिहास है, पर यह प्रथा अवश्य ही अशोभनीय मानी जाने लग गई है और अब प्रायः यह समाप्त हो गई है। राजस्थान में मृतक-भोज का रिवाज भी एक बुराई के रूप में था। वर्तमान में यह रिवाज भी प्रायः समाप्त-सा हो गया है। अफीम तथा शराब का भी इस प्रांत में काफी प्रचलन है। वैश्य और ब्राह्मणों के अतिरिक्त सभी जातियों में शराब पीना सामाजिक बना हुआ है। इस प्रकार राजस्थान के रिवाजों को सामन्ती युग ने जीवित रखा तथा उन्हें विकसित किया, वहां इनमें कुछ बुराईयां भी हैं।

राजस्थान भारत की गौरव-पूर्ण इकाई है। यहां के रीति-रिवाज भी गौरवपूर्ण परम्परा के प्रतीक हैं। यहां के रिवाजों में ऊंच-नीच के भेदभावों को भुलाया जाकर एक समान परम्परा स्थापित करने का उल्लेखनीय कार्य है। यही कारण है कि राजस्थान का सामाजिक जीवन सदा से ही उच्च एवं विशिष्ट रहा है। युगों की विनाशकारी काली घटाएं इस प्रांत के अस्तित्व को इसी कारण समाप्त नहीं कर सकीं कि राजस्थान की परम्पराएं किसी वर्ग विशेष की न होकर जनता की थीं। जन-जीवन में व्यापक होना ही यहां परम्पराओं के जीवन दायिनी शक्ति के स्रोत होने का प्रमाण है।

बाल-विवाह

महिलाओं द्वारा हथेली पर मेहंदी के मांडने विशेष आकर्षक हैं। मेहंदी को राजस्थान में सुहाग का चिन्ह माना जाता है, इसी प्रकार रखडी और बोरला भी सुहाग का चिन्ह है। मेहंदी राजस्थान की नारियों के हथेली का विशेष श्रृंगार है। त्यौहार-पर्व व हर हर्ष के समारोह पर मेहदी के मांडने माडे जाते हैं जो काफी आकर्षक और प्रिय होते हैं।

मेहंदी

वेशभूषा

हमारी वेशभूषा में जो कलात्मक पक्ष है वह हमारे जीवन के अभावों की पूर्ति हमारी कामनाओं का प्रतीक और हमारे जीवन की ललक को प्रगट करती है। प्रकृति ने राजस्थान को जो नीरसता प्रदान की है वही चटक रंगों में हमारी वेशभूषा में पूर्ण हुई है। स्त्रियों के वेशों में विविध रंगों की ओढनियां घाघरे और कांचलियां प्रकृति के अभाव को पूरा करने के प्रयत्न हैं। इनके कसूमल हरे और नीले रंगों में बादलों की छटा, जलाशयों की सरसता, वनों की हरीतिमा और फूलों की लालिमा एकत्रित हो गई है। इसी प्रकार हमारे अलंकरण, जो नख से लेकर शिख तक के प्रचुर श्रृंगार में झलकते हैं हमारे अभावग्रस्त जीवन को समृद्धि प्रदान करने के संकेत हैं। इसी प्रकार हमारी बोल-चाल उठ-बैठ आदि में जो एक शालीनता और वैभव की झलक है वह भी हमारे चिंतन की इस मूल धारा से हटकर नहीं है।

राजस्थान की वेशभूषा में अनेक भेद और प्रकार होते हुए भी सामूहिक रूप से यह एक ही दृष्टिकोण पर आश्रित है। वर्तमान युग में क्षेत्रीय विशेषताएं मर्यादित सी हो गई है किन्तु फिर भी राजस्थान प्राचीन काल से ही अपने प्रत्येक सांस्कृतिक क्षेत्र में एक निरालापन रखता चला आया है जो आज भी विद्यमान है। राजस्थान का जीवन संघर्षमय रहा है, फलत. यहां की वेशभूषा पर भी युद्धकालीन परिस्थितियां प्रतिबिम्बित है। हर क्षेत्र में यहां के लोगों ने अपनी रुचि अपनी मौलिकता का प्रदर्शन किया है, जिससे इस एक ही प्रांत में इतनी विविधता परिलक्षित होती है कि यह प्रांत मानवीय रुचि के विकास का संग्रहालय सा लगता है।

जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर कोटा बूंदी अलवर भरतपुर धौलपुर आदि राजस्थान के प्रमुख भागों की अपनी-अपनी अलग वेशभूषा है। यद्यपि ये क्षेत्र एक-दूसरे से बहुत दूर नहीं है किन्तु फिर भी वेशभूषा में इनमें जिस प्रकार का अन्तर है वह राजस्थान की तत्कालीन परिस्थितियों तथा यहां की मनोवैज्ञानिक स्थिति का परिचायक है। आज नवीनता ने प्राचीनता की जादूगरी झिलमिल को भले ही उतारकर फेंक दिया हो, फिर भी उसके प्रत्येक अंग में वही पुरातनकाल की झलक दिखाई देती है। नगरों में अधिकांश शिक्षित लोगों ने अपनी संस्कृति को त्याग दिया किन्तु पुराने लोग उसी वेशभूषा में देखे जा सकते हैं।

राजस्थान के हर क्षेत्र की वेशभूषा में अन्तर होने से तत्काल ही क्षेत्र का निर्णय किया जा सकता है। वेशभूषा स्वयं ही व्यक्ति के अस्तित्व का परिचय दे देती है। साधारणतया राजस्थान के पुरुषों की पगड़ियां शिखराकार, आगे को उठी हुई, घुटने के नीचे तक अंगरखिया तथा कंधे पर दुपट्टा यहां के नागरिक की सभ्य वेशभूषा मानी जाती है। कानों में मुरकियां लोग झाले छैलकड़ी हाथों में बाजूबन्द गले में

भील युवक | जाट युवक | राजपूत युवक

अल्प बचत की नई योजना

किसान विकास पत्र

कृषि प्रधान देश है हमारा भारत। किसान हमारा अन्नदाता है। वह जमींदार तो नहीं है किन्तु श्रम के शिव शंकर के सिर से पसीने की गंगा लाने वाला भागीरथ जरूर है। ऐसे श्रमसीकर का भविष्य सुनहरा हो, वह विकास के द्वार पर दस्तक दे और उसके लिए सुख-समृद्धि के द्वार खुलें—उसे विकास के अवसर मुहैया हो—यही सब सोचकर देश की अल्प बचत योजनाओं में एक नई योजना और प्रारम्भ की गयी है—"किसान विकास पत्र"।

"किसान विकास पत्र" अर्थात लगाया गया धन 5½ वर्षों में दुगुना तिस पर 2½ वर्ष के बाद भुगतान की सुविधा। इस योजना के अन्तर्गत एक हजार, पांच हजार और दस हजार रुपये अंकित मूल्यों के किसान विकास पत्र उपलब्ध है। यही नहीं, योजना के लाभ के लिए व्यक्तियों के अलावा कम्पनियों, निगमों साझेदारी फर्मों, संस्थाओं और निकायों को भी खरीदने की छूट दी गयी है। आकर्षक ब्याज के साथ-साथ पूर्णतया सुरक्षित विनियोजन की इस योजना की दूसरी विशेषताएं भी हैं। यथा, पहचान पत्र के आधार पर किसी भी डाकघर से भुगतान प्राप्त करने की सुविधा, पत्र खोने या नष्ट होने की स्थिति में डुप्लीकेट पत्र प्राप्त करने की सुविधा और कितने भी पत्र किसी डाकघर से खरीदने की सुविधा।

याद रखिए, जमीन से जुड़े लोग भी आकाश के तारे तोड सकते है, बशर्ते वे अल्प बचत की "किसान विकास पत्र" योजना का लाभ उठाएं।

मनोहरसिंह
निदेशक
अल्प बचत,
555, गली नं. 6, राजापार्क,
जयपुर

अल्प बचत निदेशालय, राजस्थान द्वारा प्रसारित

बलेवड़ा, हाथ में कड़ा तथा अंगुलियों में अंगूठी आदि पुरुषों के आभूषणों में प्रमुख हैं। हाथों में सोने की एक-एक चूड़ी और कमर में करधनी भी यहां के निवासियों की रुचि के अनुकूल है। इन आभूषणों का यद्यपि इस युग में अभाव हो चुका है तब भी ग्रामीणों में ये आभूषण प्रचलित हैं। जयपुर में पगड़ियां में बलदार लपेटे होते हैं तो हाड़ौती में सादा पेचों की पगड़ियां पहिनी जाती हैं। उदयपुर की पगड़ी भी सादा पेचों की होती है पर उसका शिखर कुछ उठा हुआ होता है। धोतियां घुटनों से कुछ नीचे तक तथा दो या तीन लांग की होती हैं। इसके नीचे कुरता या अन्य कोई वस्त्र नहीं होता। मूंछें नीचे की ओर झुकी तथा कभी-कभी गालों के ऊपर गलमुच्छों के रूप में देखी जाती हैं। उदयपुर में अभी तक दाढ़ी रखे जाने का रिवाज है। दाढ़ियों को दोनों ओर कानों की ओर चढ़ाकर उनको साज-संवार कर रखने की परम्परा देखी जाती है।

विविध रूप और रंगों के भांति-भांति के बधेज के वस्त्रों से सजे यहां के नर-नारी उस राजस्थानी संस्कृति के प्रतीक हैं जिसके मूल में कला का पुट प्राचीन काल से लगा हुआ है। रंगों का विक्रम तथा उनके समुचित ज्ञान का जितना प्रचार राजस्थान में है उतना अन्यत्र नहीं है। राजस्थान की वेशभूषा एक ऐसा विषय है जिस पर हर क्षेत्र को लेकर बहुत कुछ व्यक्त किया जा सकता है। प्राचीन सचित्र ग्रंथ तथा आज के जागृत मानस का अध्ययन करने पर लगता है कि राजस्थान की वेशभूषा में ऐसी मौलिकता है जो यहां के गौरव को व्यक्त करती है। पगड़ियां, जामे पटके और पाजामे राजस्थानी परिधान के ही प्रतीक हैं। इसी वेशभूषा को मुगल संस्कृति ने एक नवीन रूप देकर अपना लिया था। [illegible] भ्रान्ति [illegible] है कि राजस्थान की वेशभूषा मुगलों से प्रभावित है। यदि वस्तुतः ऐसा होता तो [illegible] सम्भव था कि उसका अंकन ईरानी चित्रों में न किया जाता। ईरानी पगड़ियां, कबा, पाजामे आदि सभी राजस्थानी [illegible] से सर्वथा भिन्न हैं। तब ऐसा कोई आधार नहीं रहता जिससे राजस्थानी वेशभूषा को ईरानी वेशभूषा का परिवर्तित रूप समझा जाय। राजस्थान के राजाओं के सम्पर्क में आने पर सम्भव है कि मुगलों ने इस परिधान को उस युग की परिस्थिति के अनुकूल समझा और उसे राजसी परिधान [illegible]। वस्तुतः राजस्थानी वेशभूषा वह भूषा है जिसे भारतीय संस्कृति की प्रमुख [illegible] है।

राजस्थान की स्त्रियों की वेश-भूषा बड़ी रंगीन और कलात्मक होती है। [illegible] और उस पर लूगड़ी या ओढ़नी ओढ़ती है। लहंगा और चूंदड़ियां [illegible] मोहक होती है। शरीर पर आंगिया पहिनी जाती है जिसके [illegible] बाहों को ढकती है। लहंगा, ओढ़निया आंगिया तथा [illegible] है। मुसलमान स्त्रियों की पोशाक चूड़ीदार पाजामा और कुरती है। कुछ [illegible] पर 'तिलक' नामक एक [illegible] पहिनती हैं और ऊपर से ओढ़नी [illegible] है।

[illegible]

[illegible]

राजस्थान की स्त्रियों की वेशभूषा में परिवर्तित युग का प्रभाव अवश्य पड़ा है किन्तु अधिकांश में वही पुरानी परम्परा विद्यमान है। परिस्थिति आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर स्त्रियों ने अपने वेश को अधिक सजीदा और सुन्दर बनाने का प्रयत्न किया है। घेर-घुमावदार घाघरों की जगह साधारण लहंगा या ओढनी का प्रचलन हो गया है। राजस्थान में नगरों की स्त्रियों की वेशभूषा में साड़ियों व सलवार-कमीज का प्रचलन भी बहुत बढ़ गया है।

राजस्थान की वेश-भूषा में ही इतनी सामर्थ्य है कि जिसमें सोलह शृंगार से सज्जित होकर नख-शिख पर्यन्त आभूषण धारण किये जा सकते हैं। आभूषणों में बंगड़ी, हथफूल, बोरला, रखडी, मरहठी गोखरू सिरफूल, पीपल-पत्ते, बाजूबन्द, करधुरी, तिमन्या, पचमण्या, कड़े आदि प्रमुख हैं। राजस्थान की स्त्रियां सिर पर रखडी व बोरले को सुहाग का प्रतीक मानती हैं। पैरों में एक-एक कड़ा यहां का विशेष आभूषण है। लाख की चूड़ियां भी सुहाग की प्रतीक मानी जाने से विशेष रूप से प्रचलित हैं। विधवाएं नारियल की चूड़ियां पहिनती हैं।

आभूषण धारण किये हुए राजस्थानी युवतियां

भाषा

राजस्थान और राजस्थानी अपेक्षाकृत नए नाम हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में कर्नल जेम्स टाड ने अपने प्रसिद्ध इतिहास ग्रंथ–''एनाल्स एण्ड एण्टीक्विटीज आफ राजस्थान'' में सर्वप्रथम राजस्थान शब्द का प्रयोग किया था। इससे पूर्व 'रायथान' और 'राजस्थान' जैसे शब्द राजधानी के रूप में प्रयुक्त होते थे। रियासतों के सामूहिक नाम के रूप में राजवाड़ा और राजपूताना जैसे शब्द काम में लिये जाते थे। कर्नल टाड के अनुकरण पर ही सन 1912 में डा. सर जार्ज ग्रियर्सन ने अपने भाषा सर्वेक्षण ग्रन्थ में राजस्थानी शब्द का प्रयोग किया था। तत्पश्चात डा. एल.पी. तैस्सीतोरी तथा अन्य देशी-विदेशी विद्वानों ने इसका प्रयोग प्रारम्भ किया।

अभी तक ग्रियर्सन द्वारा किया हुआ वर्गीकरण ही मान्य है। ग्रियर्सन ने राजस्थानी बोलियों के समूहों को गुजराती से भिन्न बताते हुए हिन्दी से भी पृथक वर्णित किया है। उन्होंने राजस्थानी की प्रधान बोलियों में–मारवाड़ी, ढूढाड़ी, मेवाती, बागड़ी, भीली और मालवी को बताया है। इनमें मारवाड़ी का क्षेत्र विस्तार सर्वाधिक है जिसमें जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, सिरोही, नागौर, पाली, अजमेर, सीकर, झुंझुनूं, चूरू, गंगानगर, बीकानेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ और उदयपुर जिले गिनाए गए हैं। ढूढाड़ी में जयपुर, टोंक, सवाईमाधोपुर और इसी की उप-भाषा हाड़ौती में कोटा, झालावाड़ और बूंदी जिले हैं। बागड़ी में डूंगरपुर और बांसवाड़ा तथा मेवाती में अलवर का क्षेत्र आता है। भरतपुर, धौलपुर, सवाईमाधोपुर का करौली तथा जयपुर का धुर पूर्वी भाग ब्रज का क्षेत्र गिना जाता है। इस प्रकार मारवाड़ी सर्वाधिक विस्तार वाली भाषा है जिसमें मेवाड़ी, शेखावाटी, बीकानेरी, गंगानगरी, थाटी, गोड़वाड़ी आदि अनेक बोलियां समाहित हैं। जैसा कि प्रायः सभी भाषाओं के साथ होता है–राजस्थानी में भी एक सौ से ऊपर बोलियां गिनाई गई हैं।

राजस्थान का प्राकृतिक स्वरूप जैसा आज दृष्टिगोचर होता है, वैसा सुदूर अतीत में नहीं रहा है। आज राजस्थान का पश्चिमी भाग जो अरावली पर्वतों के पश्चिम में है, अपार बालुका राशि से आच्छादित है, किन्तु एक समय था जब

[illegible]

के लिए चुनौती का विषय है।

यह अरावली पर्वत भी, जिसने राजस्थान को स्पष्टतया दो प्राकृतिक भागों में विभाजित कर दिया है करोड़ो वर्ष पूर्व ऐसा नहीं था। यह पर्वत न केवल भारत के, अपितु विश्व के सबसे पुराने पर्वतों में से एक है- वह भी अवशेष के रूप में। हाल ही में वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि हिमालय पर्वत, जो स्वय एक सागर की तलहटी में जमी मिट्टी- कांच से ऊपर उठा है, लगभग 22 करोड़ वर्ष पुराना है। पहले हिमालय की आयु दस लाख वर्ष मानी जाती थी। लेकिन हमारा अरावली पर्वत तो इससे भी कहीं अधिक प्राचीन है। इस अरावली ने हिमालय को घुटनों चलते देखा है। एक समय था जब एशिया में हिमालय का कहीं कोई अता-पता नहीं था। वहा एक छिछला सागर हिलौरें लेता था। उन दिनों भी अरावली पर्वत गर्व से सीना ताने खड़ा था। इसकी चोटियां आसमान से बातें करती थीं और सदा बर्फ से ढकी रहती थीं। उन दिनों अरावली पर्वत की ऊंचाई लगभग दस हजार फुट से भी अधिक थी। उससे बड़े-बड़े ग्लेशियर नीचे की ओर सरकते थे। अरावली पर्वत से बहुत दूर जैसलमेर तक इन ग्लेशियरो के साथ बहकर गए हुए विशाल शिलाखण्ड आज भी देखे जा सकते हैं।

प्रकृति के क्षरण अथवा लम्रीकरण के कार्यकर्ताओं तथा पृथ्वी की आन्तरिक शक्तियों ने हिमालय को ऊपर उठाने और अरावली को काटने-छांटने का कार्य शुरू कर दिया। परिणामत हिमालय ऊपर उठता गया और अरावली का क्षरण प्रारम्भ हो गया। उन दिनों अरावली पर्वत से टूट-टूटकर विशाल प्रस्तर खण्ड दूर-दूर तक जा बिखरे। आज भी जैसलमेर तक ये प्रस्तरखण्ड पाये जाते हैं।

जैसलमेर का क्षेत्र भी तब इस तरह सूखा नहीं था। आज तो जैसलमेर के बारे में यह दोहा प्रचलित है -

पग पूगल, धड़ कोटड़े, उदरज बीकानेर।
भूलो चूको जोधपुर, ठावो जैसलमेर।।

[अकाल कहता है- मेरे पैर पूगल [बीकानेर में एक स्थान] में हैं। धड या सिर कोटडा [मारवाड का एक स्थान] में है और मेरा उदर या पेट है बीकानेर में। मैं कभी-कभी जोधपुर में भी मिल जाता हू लेकिन मेरा स्थायी निवास तो जैसलमेर ही है]।

लेकिन पुरा काल में जैसलमेर वनाच्छादित था। यह वन सम्पदा धीरे-धीरे बालुका राशि के नीचे दब गई। यही वन सम्पदा दबाव और गर्मी के प्रभाव से अजस्र मिट्टी के तेल या पैट्रोलियम के रूप में आज भी वहा दबी पडी है। इस पैट्रोलियम को ही खोज निकालने के लिए सरकार करोड़ों की योजनाएं बनाकर कार्यशील है।

उपर्युक्त पृष्ठभूमि में वर्तमान राजनीतिक राजस्थान के भौगोलिक स्वरूप का अध्ययन निम्नलिखित शीर्षकों में किया जा सकता है -

[1] स्थिति व विस्तार
[2] प्राकृतिक विभाग
[3] भौगोलिक प्रदेश
[4] जलवायु
[5] मिट्टियां
[6] वनस्पति
[7] जनसंख्या
[8] पशुधन

स्थिति व विस्तार

देश के उत्तर-पश्चिम में स्थित राजस्थान एक सीमावर्ती प्रदेश है। इसकी पश्चिमी एवं उत्तर-पश्चिमी सीमा पाकिस्तान से अन्तर्राष्ट्रीय सीमा-रेखा का निर्धारण करती है। राजस्थान के उत्तर में पंजाब, पूर्व में हरियाणा, उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश हैं तथा देशान्तरों के अनुसार यह 23° 3 उत्तर अक्षांश से 30° 12 उत्तरी अक्षांश तथा 60° 30 पूर्वी देशान्तर से 78° 12 पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। कर्क रेखा राजस्थान के धुर दक्षिणी भाग के पास से गुजर जाती है। इस तरह राजस्थान यद्यपि उष्णकटिबन्ध के बाहर स्थित है, किन्तु इसकी जलवायु उष्ण या विषम है जिसका अध्ययन आगे किया जाएगा। यद्यपि राजस्थान एक रेगिस्तानी प्रदेश है किन्तु यह उत्तर एवं उत्तर-पूर्व में सतलज-व्यास के

राजस्थानी की पड़ौसी भाषाओं में पूर्व में ब्रज, दक्षिण में निमाड़ी और बुंदेलखण्डी, पश्चिम में गुजराती, सौराठी और कच्छी तथा उत्तर में सिन्धी, लहंदा तथा पंजाबी बोलियां हैं। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि मालवी क्षेत्र को मिलाकर तथा प्रवास में रहने वाले लाखों राजस्थानियों को सम्मिलित करते हुए राजस्थानी बोलने वाले लोग कोई 8 करोड़ से ऊपर होंगे। इस विषय में यह ध्यान देने योग्य है कि राजस्थान की जनगणना के आंकड़े बड़े भ्रामक हैं क्योंकि इनमें अनपढ़ राजस्थानी बोलने वालों की भाषा मनमाने ढंग से हिन्दी लिख दी गई है।

राजस्थानी भाषा का उद्गम संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के विकास क्रम से ही हुआ है। विभिन्न धारणाओं के अनुसार नागर अपभ्रंश, शौरसेनी अपभ्रंश तथा आभीरी अपभ्रंश से माना गया है। नागर और उपनागर का सम्बन्ध अधिकतर गुजरात से और शौरसेनी का मथुरा के इर्द-गिर्द के शूरसेन प्रदेश से होने के कारण आभीरी को ही इसकी जन्मदात्री माना जाना चाहिए। आभीर लोग रामायण के समय से ही पश्चिमी राजस्थान में बसे हुए हैं और धीरे-धीरे समूचे गुजरात व आंध्र प्रदेश तक इनका विस्तार हो गया था। आभीरी का एक श्लोक कालिदास के विक्रमोर्वशीयम नाटक में प्राप्त है जो बारहवीं-तेरहवीं शताब्दी की राजस्थानी से अधिक भिन्न नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार आभीरी की जड़ें गुप्त युग में चौथी शताब्दी तक खोजी जा सकती हैं। विद्वानों ने महाराष्ट्री प्राकृत को भी राजस्थानी से जोड़ा है और इसके प्रमाण के रूप में प्राकृत में लिखे हुए जैन विद्वानों के ग्रंथों का हवाला दिया है जो आठवीं-नवीं तथा इससे भी पूर्व की शताब्दियों में राजस्थान में लिखे गए।

राजस्थानी के प्रसव की कहानी अभी तक लिखी नहीं गई है पर मोटे तौर पर विद्वानों ने बारहवीं शताब्दी ई. के अन्तिम चरण को राजस्थानी का उत्पत्ति-काल माना है। भरतेश्वर बाहुबली घोर तथा 'भरतेश्वर बाहुबली रास' नामक जैन रचनाएं इसी समय की लिखी हुई मिली हैं। इसके बाद तो अनेकानेक राजस्थानी रचनाएं मिलती हैं। उपर्युक्त दोनों कृतियों के देखने से ऐसा आभास होता है कि इनके पीछे कोई पुष्ट परम्परा रही है। पर उन कृतियों के दुर्भाग्यवश न मिलने के कारण इन्हीं को राजस्थानी की प्राचीनतम रचनाएं माना जाता है। 'सत्यपुरीय महावीर उत्साह' नामक रचना प्रसिद्ध संस्कृत लेखक कवि धनपाल ने दसवीं शताब्दी ई. के अन्तिम चरण में लिखी थी। इस रचना में राजस्थानी शब्दों के जो व्याकरणगत रूप मिलते हैं उनसे यह प्रमाणित किया जा सकता है कि राजस्थानी की रचनाएं इससे भी पहले होने लगी थीं। नवीं शताब्दी में हुए मुरारी नामक कवि ने अपने सुभाषित संग्रह में एक श्लोक दिया है जिसके अनुसार उस समय भी चारणों की गीत और ख्यात नामक रचनाएं होने लगी थीं। महाकवि बाणभट्ट ने सातवीं शताब्दी में लिखे अपने ग्रन्थ हर्ष-चरित में राजस्थान, सिन्ध और गुजरात आदि के चारणों द्वारा राज्यश्री के विवाह में गाये जाने वाले गीतों का उल्लेख किया है। इन सब उल्लेखों को शृंखलाबद्ध करते हुए भाषा की उत्पत्ति का विवरण प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

डा. एल.पी. तैस्सीतोरी ने प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी अथवा जूना गुजराती नाम से जिस भाषा का उल्लेख किया है उसे पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी तक गुजरात और राजस्थान की सम्मिलित भाषा माना है। प्राचीन जैन ग्रन्थों की भाषा को देखते हुए यह बात काफी ठीक लगती है कि राजस्थान और गुजरात-दोनों ही भ्रमणशील चारण कवियों के क्षेत्र रहे हैं। ईसरदास, प्रेमानन्द सरीखे हुए और अनेक ऐसे चारण हुए हैं जो गुजरात और राजस्थान में समान रूप से लोकप्रिय हुए। इस सम्मिलित भाषा का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण 'कान्हड़दे प्रबंध' नामक काव्य है जो जालौर के राव कान्हड़दे और अलाउद्दीन खिलजी के बीच हुए युद्ध से सम्बन्धित है। इसका रचयिता पद्मनाभ नामक [illegible] था जो सम्भवतः भीनमाल में रहता था। उस समय भीनमाल जालौर के चौहानों के अधीन था। यह ग्रन्थ ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दी के अंत में लिखा गया था और इसका प्रचार-प्रसार गुजरात में बहुत अधिक रहा है।
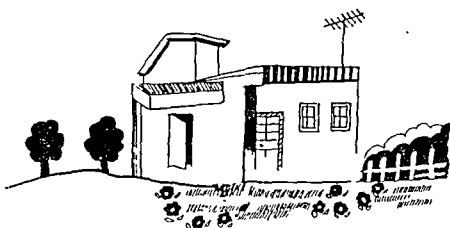
भाषा की बनावट की दृष्टि से गुजराती और राजस्थानी में कोई विशेष अन्तर नहीं है। राजस्थानी की 'रा' और 'रो' विभक्तियों के स्थान पर गुजरात में 'ना' विभक्ति का प्रचार है जो बागडी और भीली में भी है। भविष्यत् क्रिया में 'सी' का प्रयोग किया जाता है जो ढूंढाडी और हाडौती में तो है ही पर कभी समूची राजस्थानी में प्रचलित था। वस्तुतः छोटे-मोटे परिवर्तन राजस्थान की सभी बोलियों में पाए जाते हैं और गुजरात में भी यही क्रम है। यह एक भाषावैज्ञानिक प्रक्रिया है और सभी भाषाओं के लिए स्वाभाविक भी। शायद ही ऐसी कोई बड़ी भाषा हो जिसकी अनेक बोलियों में ऐसा परिवर्तन न पाया जाए।

पन्द्रहवीं शताब्दी के बाद राजस्थान में जो साहित्यिक शैलियां मिलती हैं उनमें जैन शैली तो प्राचीन है ही पर लौकिक शैली के साथ-साथ डिंगल नामक एक और शैली का जन्म हुआ जो प्रधानतः चारण कवियों द्वारा आविष्कृत हुई। इस शैली में शब्दों के मनचाहे अनगढ रूप अपनाए गए और निरन्तर प्रयोग के कारण इनमें एक अद्भुत ओज और माधुर्य की सृष्टि हुई। वैसे इस शैली के प्राचीन उदाहरण भी ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दियों से मिलने लगे हैं। प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य हेमचन्द्र ने ऐसे कुछ दोहों का सङ्कलन प्रस्तुत किया है। वास्तव में देखा जाए तो डिंगल ही राजस्थानी की सर्वप्रमुख साहित्यिक शैली रही है और इसी में हजारों की संख्या में दोहे, गीत, कवित्त आदि अनेक छन्द और सुनियोजित काव्यग्रन्थ लिखे गये हैं।

डिंगल के समानान्तर ही एक और शैली राजस्थान में पनपी जिसे पिंगल के नाम से पुकारा गया। इसके अधिवक्ता भाट लोग थे जिन्हें राव, भट्ट, ब्रह्म, बरदाई आदि अनेक नामों से अभिहित किया गया। चारणों की उत्पत्ति के विषय में तो अभी तक प्रमाणित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता पर भाट लोग अपनी उत्पत्ति ब्राह्मणों से मानते आये हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रशस्ति-गायक लोग भी भट्ट कहलाने लगे जो कभी ब्राह्मण पंडितों की एक सम्माननीय उपाधि रही थी। यही भट्ट लोग राजद्वार पर खड़े होकर प्रशस्ति-गायन करते थे जिससे इन्हें द्वारभट्ट कहा जाने लगा। इस द्वारभट्ट शब्द का अपभ्रंश रूप ही बारहठ बना जिसे चारण लोग बड़े गर्व से अपने नाम के आगे लगाते हैं और इसकी उत्पत्ति के विषय में मनगढन्त बातें करते हैं।

साहित्य

साहित्य एक अनवरत प्रवाह है। भाषाएं बदलती हैं लेकिन साहित्य का प्रवाह कभी नहीं रुकता। दुर्भाग्य से संस्कृतज्ञों ने देववाणी से इतर प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं को कभी विशेष महत्त्व नहीं दिया। इन भाषाओं को लोक-भाषा अथवा देश भाषा के नाम से अभिहित किया गया। सातवीं शताब्दी में स्वयं बाणभट्ट ने लोक-भाषा के एक प्रसिद्ध कवि को अपना अभिन्न मित्र बताया है। इससे प्रमाणित होता है कि लोक भाषाओं का साहित्य संस्कृत के साथ-साथ ही रचा जाता रहा है। उस साहित्य को चूंकि राजकीय प्रश्रय नहीं मिला और न ही विद्वानों ने उसे समान स्तर पर माना अतः वह सुरक्षित नहीं रह सका। प्रारम्भ में प्राकृत को नियमबद्ध करने के प्रयास किए गये पर जैन धर्म गुरुओं के अतिरिक्त इसे कोई विशेष मान्यता नहीं मिल पाई। प्राकृत के बाद अपभ्रंश ने उसका साथ दिया। पर वह भी देश भाषाओं के बढ़ते प्रभाव में टिक नहीं पाई। राजस्थानी भी उन्हीं भाषाओं में एक है।

साहित्य के इतिहासकारों ने राजस्थानी को तीन भागों में विभक्त किया है- पहला तो एक हजार पचास ई. से चौदह सौ पचास ई. तक, दूसरा चौदह सौ पचास ई. से अठारह सौ पचास ई. तक और तीसरा अठारह सौ पचास ई. से अब तक। इस तीसरे भाग को भी सरलता की दृष्टि से अठारह सौ पचास से उन्नीस सौ पचास और उन्नीस सौ पचास से अब तक के दो भागों में बांटा जा सकता है। इस समूचे साहित्य को नौ प्रकार की विधाओं में बांटा गया है-

जैन, लौकिक प्रेम-काव्य, ऐतिहासिक, वीर रसात्मक, पौराणिक, धार्मिक और नीति काव्य सहित चारण काव्य, आख्यान काव्य, साम्प्रदायिक और स्वतंत्र चेता संत कवियों का काव्य; छन्द-अलंकार-कोश, गद्य साहित्य, लोक-साहित्य तथा आधुनिक विधाओं का साहित्य। 1050 से 1450 ई. तक की भाषा को मारू गुर्जर कहा गया है। सन् 1450 से पहले का साहित्य प्रायः जैन धार्मिक रचनाओं में ही सीमित है जो बहुतायत से मिलती है। इनमे चरचरी, रास, घोर, षटपदी, चौपई, संज्ञक रचनाओं की प्रधानता है।

सन् 1450 के बाद मध्यकाल में जैन, लौकिक और डिंगल रचनाओं की धाराएं प्रमुख रूप से बहती आई हैं। जैन लोग तो बंधे-बंधाये ढंग से पुरानी रीति से ही रचनाएं करते रहे थे। इन लोगों ने लोकगीतों की प्रसिद्ध तर्जों पर प्रचारात्मक सामग्री से भरे अपने गीतों की रचनाएं कीं। पर लौकिक प्रेम काव्यों, आख्यान काव्यों और आध्यात्मिक रचनाओं में कुछ नयापन देखने को मिला। इस अवधि की विशिष्ट रचनाओं में सन् 1650 तक ढोला-मारू रा दूहा, भीम कवि की रचना सदैवन्त सावलिंगा प्रबन्ध, गाडण शिवदास की अचलदास खींची री वचनिका, कथा अहमनी, ढाढी बहादर की वीरमायण, कवि पदमनाभ का कान्हडदे प्रबन्ध, बसंत विलास, रणमल्ल छंद, बीसलदेव रास, विद्या विलास पवाड़ा, मैण कुतूहल, मेघ माल, मड़इगी आदि प्रसिद्ध रचनाएं है।

1650 तक की विशिष्ट रचनाओं में डिंगल काव्यों की प्रधानता रही है-हम्मीरायण, राव जैतसी रो छन्द, जैतसी रासो, ईसरदास कृत हरिरस, हालां झालां रा कुण्डलिया और अन्य रचनाएं, बारहठ आसानन्द का काव्य, बारहठ सादण का गोगाजी रो छन्द, रंगरेला वीठू का जैसलमेर रो जस, माढू माला का काव्य, दुरसा आढा का काव्य, माढू रामा का काव्य, केशवदास गाडण का निमार्गविवेक वार, गजगुण रूपक आदि। अन्य फुटकर कवियों में बारहठ ऐजन, चनरा मोतीसर, आढा किसना, गिरधर आसिया, किशोरदास राव, आदि के नाम आते है। इस काल की पौराणिक और धार्मिक रचनाओं में पृथ्वीराज कृत वेलि कृष्ण-रुक्मणि री, सायां झूला कृत नागदमण, अलूजी कविया कृत कवित, कुशललाभ कृत दुर्गा सातसी, आढा किसना कृत महादेव-पार्वती री वेलि, माधोदास कृत राम रासो, सुरजन दास पूनिया कृत छप्पै, गुण गोविन्द कल्याण दास राव कृत, महेशदास राव कृत रघुनाथ चरित, विठ्ठलदास कृत रुक्मणि हरण, केसरीसिंह ऊँकावत कृत पंखी पुराण आदि प्रमुख है। एक और प्रसिद्ध रचना मेहोजी कृत रामायण भी है। विश्नोई सम्प्रदाय के अनेक कवियों ने अन्य प्रसिद्ध रचनाएं की है। लौकिक प्रेम-काव्यों में गणपति कायस्थ कृत माधवानल काम कंदला प्रबन्ध जैसी रचनाएं प्राप्त होती है। गद्य ग्रन्थों में दलपत विलास नामक रचना में सम्राट अकबर का समकालीन वृत्तान्त है।

सन 1650 से 1850 तक राजस्थानी का स्वर्णयुग कहा जा सकता है। इसमें जाम्भो जी, दादू, [illegible] अनेक सन्तों द्वारा प्रवर्तित भक्ति सम्प्रदायों के अतिरिक्त निम्बार्क कृष्ण-भक्ति, राम-भक्ति, राम-सनेही आदि सम्प्रदायों का उदय और विकास हुआ। इसके साथ ही डिंगल, लौकिक, पौराणिक, जैन और लोक-साहित्य की धाराएं भी बहती रहीं। डिंगल काव्यों में [illegible] [illegible] गया। इनमें [illegible] [illegible] [illegible] आसिया [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

[illegible] [illegible] है। [illegible]

सम्प्रदाय के केशोदास गोदारा आदि ने भी आख्यान लिखे। पृथ्वीनाथ, महाराजा मानसिंह, बाणनाथ आदि ने नाथ सम्प्रदाय का साहित्य रचा तो रामावत बैरागी और अग्रदास ने राम-भक्ति के काव्य रचे। अन्य भक्ति सम्प्रदायों में भी कवियों ने अपने-अपने आराध्य देवों की प्रशंसा में रचनाएं की जिनमें अलखिया सम्प्रदाय, आई पंथ, काजी महमूद का निर्गुणी साहित्य, मीरा बाई के पद तथा सन्त माधवजी, दीन दरवेश और गवरी बाई के नाम प्रसिद्ध है।

जैन रचनाकारों में कुशललाभ, समय सुन्दर हेमरतन सूरि जिनराज सूरि जिनहर्ष धर्मवर्द्धन दौलत विजय, उदयचन्द, भीमल ज्ञानसार आदि नाम चर्चित रहे है।

इसी अवधि में ढोला-मारू, जेठवा, लखमन सेन पदमावती बींझा-सोरठ रतना-हमीर जलाल-बूबना आदि प्रेमकथाएं प्रसिद्ध रहीं। छन्दों और कोशों में जोगीदास का हरि पिंगल प्रबन्ध हमीरदान रत्नू का हमीर नाम माला, आढ़ा किसना का रघुवर जस प्रकाश तथा उदयराम गूंगा का कविकुल बोध रचे गए।

गद्य साहित्य मे ख्यात, बात, पिगत वंशावली हाल हकीकत, वचनिका और दुवावैत नामक रचनाएं लिखी गई। मुहता नैणसी, की ख्यात जोधपुर राज्य की ख्यात बांकीदास की ख्यात आदि के अतिरिक्त सैकड़ों की संख्या में ऐतिहासिक और अन्य इतिवृत लिखे गये। वाक्‌विलास वर्णक समुच्चय और बात बणाव आदि रचनाएं भी इसी युग की देन है। इस अवधि में लिखी गई बातों के प्रकार अनेक भांति के हैं। कई बातें इतनी लम्बी है कि उन्हे लघु उपन्यास भी कहा जा सकता है। अनेक प्रसिद्ध ग्रन्थों के अनुवाद भी इस समय हुए जिनमे भागवत भाषा वेताल पच्चीसी सिंहासन बत्तीसी और अखलाक उलमों हसनी' जैसे ग्रन्थ गिनाए जा सकते है।

लोक साहित्य में पाबूजी रा पवाड़ा सुलतान निहालदे नरसीजी रो मायरो पदम भगत रो ब्यावलो आदि के नाम उल्लेखनीय है। इसी समय लोक ख्यालों का प्रचलन भी हुआ। जैन-गुर्जर कविओ नामक जैन साहित्य के इतिहास के प्रणेता श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई ने अपने ग्रन्थ में परशिष्ट रूप में लोकगीतों की प्रथम पंक्तियों की जो सूची दी है उससे पता लगता है कि आज से 3-4 सौ वर्ष पहले भी ये लोकगीत गाए जाते थे जो किसी न किसी रूप में आज भी मौजूद हैं।

आधुनिक काल का प्रारंभ साहित्य के इतिहासकारों ने 1857 से माना है। पर इसका कोई तर्क-संगत स्पष्ट कारण नहीं बताया गया है। राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेज विरोधी भावनाएं जिस प्रकार स्वतंत्रता संग्राम का एक प्रधान कारण बनी वैसी जन-विरोध की भावनाएं राजस्थान में नहीं देखी गई। नसीराबाद की छावनी में सैनिकों का जो विद्रोह उत्पन्न हुआ वह भारत की अन्य अनेक छावनियों के विद्रोहों की श्रृंखला मे ही एक कड़ी के रूप में था। उन सैनिकों को किसी भी प्रकार की सार्थक सहायता देने की स्थिति में न तो यहां का जनसाधारण था और न उसका मानस ही वैसा बना हुआ था इसलिए उन्हे प्रश्रय एवं सहायता देने की स्थिति मे केवल वही जागीरदार थे जो किन्हीं कारणोंवश रियासत के प्रमुख से नाराज थे। मारवाड़ में आउवा और अन्य अनेक छोटे-छोटे जागीरदारों ने उन सैनिकों को आसरा दिया जिसके फलस्वरूप आउवा के ठाकुर को भागकर मेवाड़ में सलूम्बर आदि के जागीरदारों के यहां शरण लेनी पड़ी। ऐसे जागीरदारों के गीत भी चारण कवियों ने उसी ढंग से गाए जिस ढंग से मुगल विरोधी राजपूतों के गाया करते थे। वैचारिक स्तर पर उनमें कोई नई बात नहीं थी। बांकीदास जैसे कुछ कवियों ने तो बहुत पहले ही अंग्रेज विरोधी गीत लिखकर हिन्दू-मुसलमानों को एक होकर मुकाबला करने की राय दी थी। उनके इस प्रसिद्ध गीत की पंक्तियां निम्न प्रकार है-

"आयो इंग्रेज मुलक रै ऊपर, आहंस-लीधा खैंच धणियां मरे न दीधी धरती, धणियां ऊभां गई धरा। महि जातां चीचातां महिलां ऐ दुय मरण तणा अवसाण, राखो रे कैहिक रजपूती मरद हिन्दू क मुसलमाण।" पर ये स्वर विरले ही थे और कवियों और उनके आश्रय दाताओं तक ही सीमित थे। यह एक

प्रकार से राजपूत शासकों द्वारा अपने समाप्त हुए वर्चस्व को पुनर्प्रतिष्ठापित करने का ही प्रयत्न था। बीकानेर के शंकरदान सामोर जैसे कवि अवश्य समयानुकूल चिन्तन करते थे और उन्होंने न केवल तात्या टोपे जैसे राष्ट्रीय वीरों की प्रशंसा में गीत लिखे अपितु अंग्रेजों की चालों का पर्दाफाश भी किया। इस प्रकार 1857 से प्रायः 1900 तक का यह समय विशुद्ध रूप से आधुनिक नहीं कहा जा सकता। आधुनिकता के जो उपादान हैं उनकी इस अवधि के काव्य में कमी रही है।

सन् 1900 से आधुनिकता की एक और लहर उन प्रवासी राजस्थानियों से शुरू हुई जो महाराष्ट्र, बंगाल आदि में व्यवसाय करते थे अथवा वहीं बस गये थे। उन्होंने ब्रिटिश सत्ता के अधीन रहते हुए महाराष्ट्र, बंगाल आदि के लोगों में जो जन-भावना देखी और पश्चिम के प्रभाव से साहित्य की जो नई विधाएं उनके सामने आईं उससे उन्हें पिछड़े हुए राजस्थानी समाज पर नाटक, उपन्यास आदि लिखने की प्रेरणा हुई। इनमें सबसे प्रमुख नाम श्री शिवचन्द्र भरतिया का है जिनके नाटक 'केसर विलास' का प्रकाशन सन् 1900 में हुआ। इसके बाद 1910 के लगभग उनका 'कनक सुन्दर' नामक उपन्यास तथा 'बुढ़ापा की सगाई फाटका जंजाल' नामक नाटकों का प्रकाशन हुआ। इस समय के अन्य लेखक श्री भगवती प्रसाद दारूका, श्री गंगाराम तथा श्री लक्ष्मणदास शालग्राम हैं। इसी समय 'वैश्योपकारक', 'मारवाड़ी मास्कर' और 'मारवाड़ी' नामक पत्रों का प्रकाशन भी हुआ। राजस्थान में भी पंडित रामकरण आसोपा जोधपुर ने मारवाड़ी व्याकरण और मारवाड़ी पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करवाईं।

पर प्रवासी राजस्थानियों के इन प्रयत्नों का राजस्थान के साहित्यकारों पर कोई सीधा प्रभाव नहीं पड़ पाया। इस बीच भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नींव रखी गई और 1914 का प्रथम विश्वयुद्ध भी हुआ। महात्मा गांधी का सन 1920-21 का असहयोग आन्दोलन भी अपना प्रभाव राजस्थान के जन-जीवन पर छोड़ चुका था। इस नैतिक हलचल के समानान्तर मारवाड़ी प्रवासी अपने समाज की बुराइयों को हटाने तक ही सीमित रहे पर राजस्थान में सन् 1900 से 1915 तक श्री रासबिहारी बोस जैसे क्रांतिकारी के नेतृत्व में कुछ लोगों ने बड़ा अच्छा काम किया। इनमें सर्वप्रमुख शाहपुरा के ठाकुर केसरीसिंह बारहठ, उनके भाई श्री जोरावरसिंह और पुत्र श्री प्रतापसिंह ने प्रमुख भाग लिया। प्रतापसिंह तो जेल में ही यातना सहते हुए मर गए जबकि जोरावरसिंह भूमिगत हो गए और केसरीसिंह को भी अनेक यातनाएं सहनी पड़ीं। इनके साथ ही खरवा के राव गोपालसिंह, ब्यावर के सेठ दामोदरदास राठी, भूपसिंह उर्फ विजयसिंह पथिक और अर्जुनलाल सेठी ने भी बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया। सन् 1903 में उदयपुर के महाराणा फतहसिंह को दिल्ली दरबार में जाने से रोकने के लिए केसरीसिंह ने "चेतावनी रा चूंगटिया" नामक रचना उनको प्रस्तुत की।

सशस्त्र क्रांति से अलग मेवाड़ के बिजोलिया एवं बेगूं के किसानों में जनजागृति पैदा करने का कार्य श्री विजयसिंह पथिक और उनके साथियों-साधु सीतारामदास और माणिक्यलाल वर्मा ने किया। उन्होंने मेवाड़ी भाषा में 'कुंवरमाट को रुपैयो' नामक एक हस्तलिखित पत्रिका भी निकाली। [illegible] विद्रोह की यह लहर पड़ौस में बूंदी, कोटा के राज्यों में भी फैल गई। [illegible] ने क्रांति के बीज बोए। इस समय 'राजस्थान केसरी', 'तरुण राजस्थान', 'राजस्थान संदेश' और 'त्यागभूमि' जैसे पत्रों का प्रकाशन भी हुआ।

इन राजनैतिक आन्दोलनों से भी [illegible]

हुए काव्य-सृजन किया। इन्होंने ही 'छपना रो छन्द' नामक काव्य लिखकर साहित्य को जनमानस से जोड़ने का स्तुत्य प्रयत्न किया। इस समय के अग्रगण्य नेताओं में से अनेक ने स्वतंत्रता एवं समाज-सुधार सम्बन्धी काव्य-सृजन किया जिनमें सर्वश्री जयनारायण व्यास, 'उस्ताद' जैसे प्रसिद्ध कवि थे। जयनारायण व्यास ने तो राजस्थानी का सबसे पहला अखबार 'आगीवाण' नाम से निकाला। प्रवासी राजस्थानियों में भी उनकी अपनी शैली पर नाटक और उपन्यासादि लिखे जाते रहे।

इसके तुरन्त बाद दो प्रकार के प्रयत्न और हुए। एक तो वह था जिसमें देश-विदेश के शोध विद्वानों ने राजस्थान के प्राचीन ग्रन्थागारों का अवलोकन किया और उनके सूचीपत्र निकालने के साथ-साथ प्राचीन ग्रन्थों का प्रकाशन भी किया। इनमें डा. राजेन्द्र प्रसाद मैत्रा, पं. हरप्रसाद शास्त्री डा. एल पी. तैस्सीतोरी और पं. रामकरण आसोपा के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें सर्वप्रमुख काम डा. एल पी. तैस्सीतोरी का था जिन्होंने "एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल" की सेवा में कार्य करते हुए जोधपुर और बीकानेर के राजकीय पोथीखानों के तीन सूचीपत्र निकाले और बीकानेर से तीन प्राचीन ग्रन्थों का प्रकाशन भी किया। डा. रामकरण आसोपा ने भी प्राचीन ग्रन्थ प्रकाशन की अपनी योजना को लगनपूर्वक [illegible]। डा. तैस्सीतोरी ने राजस्थानी की ऐतिहासिक व्याकरण सम्बन्धी कुछ टिप्पणियां भी लिखी जो हिन्दी अनुवाद के रूप में अब प्रकाशित हुई है। तैस्सीतोरी से पूर्व डा. सर जार्ज ग्रियर्सन नामक विश्वप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक ने भारतीय भाषा सर्वेक्षण नामक अपने ग्रन्थ में राजस्थानी बोलियों का सर्वप्रथम सांगोपांग व्याकरण प्रस्तुत किया और इस प्रकार राजस्थानी को एक स्वतंत्र भाषा के रूप में स्थापित भी किया।

इन्हीं पाश्चात्य विद्वानों के अनुकरण पर बीकानेर के पं. सूर्यकरण पारीक, ठाकुर रामसिंह और नरोत्तमदास स्वामी ने 'ढोला-मारू रा दूहा' तथा 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' नामक ग्रन्थों के सुसम्पादित संस्करण निकाले। इन तीनों ने ही मिलकर 'राजस्थान के लोकगीत' नाम से [illegible]। पं. सूर्यकरण पारीक ने बोलावण नामक एक एकांकी नाटक का प्रकाशन भी किया। इस प्रकार इन [illegible] प्रयत्नों से राजस्थान में राजस्थानी भाषा के पुनर्जागरण की एक लहर सी उठ खड़ी हुई। [illegible] मोतीलाल मेनारिया और जोधपुर के श्री सुदयराज [illegible] ने भी इसमें [illegible]

इन सब प्रयत्नों के परिणामस्वरूप राजस्थानी रचनाएं प्रारम्भ हुई और बीकानेर [illegible] व्यास, श्रीचन्द माथुर और चन्द्रसिंह ने नियमित रूप से गद्य-पद्य की रचनाएं प्रारम्भ कीं। सन् [illegible] 40 तक ऐसी रचनाएं बीकानेर में होने वाली नियमित गोष्ठियों में सुनाई जाती थीं। [illegible] होने वाले राजस्थानी सम्मेलन में बीकानेर के श्री मेघराज मुकुल ने 'सैनाणी' नामक [illegible] सस्वर पाठ किया जो श्रोताओं द्वारा बहुत पसन्द किया गया। इस कविता से [illegible] राजस्थानी को एक मंच मिला और राजस्थानी रचनाएं मंच पर सुनी-सुनाई [illegible] लेखन पर अन्य अनेक पद्य-कथाएं भी लिखी गईं।

आधुनिक राजस्थानी में सर्वप्रथम पुस्तक श्री चन्द्रसिंह की 'बादळी' नामक [illegible] राजस्थान तथा बाहर भी बड़ी प्रसिद्धि मिली। [illegible] बाद तो राजस्थानी, राजस्थान भारती, मारवाड़ी तथा [illegible] हुए और यह क्रम प्रायः 1950 तक [illegible] गद्य-पद्य [illegible] रही।

सन् 1950 में एकीकृत राजस्थान के निर्माण के बाद [illegible] और [illegible] ने प्रदेश और उनकी संस्कृति व [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] देखने का [illegible] [illegible]। पर धीरे-धीरे [illegible] और [illegible]

फलस्वरूप श्री रेवत दान कल्पित का 'चेत मानखा' और गजानन वर्मा के 'धरती री धुन' तथा 'सोनो निपजे रेत में' जैसे ग्रन्थ प्रकाशित हुए। श्री चन्द्रसिंह का 'बादळी' एक विशुद्ध ऋतुकाव्य था जिसकी तर्ज पर नानूराम संस्कर्ता की 'कल्लायण', सुमेरसिंह शेखावत की 'मेघमाळ' और नारायणसिंह भाटी की 'सांझ' जैसी रचनाएं सामने आई। प्रसिद्ध कथाओं और पात्रों के विषय की पुस्तकें प्रकाशित हुईं–इनमे गिरधारीसिंह पडिहार का 'मानखो', श्रीमंतकुमार व्यास का 'रामदूत' और कान्ह महर्षि का 'मरुमयंक' नामक काव्य प्रमुख है। श्री बनवारीलाल सुमन का 'देळ्यां को दिवलो' महाराणा प्रताप के जीवन से सम्बन्धित प्रबन्ध काव्य है। डा. मनोहर शर्मा ने अनेक छोटी-छोटी प्रबन्धकाव्यात्मक कृतियां प्रकाशित की है।

लोकगीत शैली के बाद गीत काव्यों की एक धारा चली पर वह भी कमोबेश लोक गीतों की शब्दावली और उन्हीं की नजों पर लिखी गई थी। इनका भी प्रधान स्वर रोमांस ही कहा जा सकता है। ऐसे कवियों में *सत्यप्रकाश जोशी, गजानन वर्मा कल्याणसिंह राजावत, लक्ष्मणसिंह रसवंत, आदि हैं जिनके संग्रह भी* प्रकाशित हो गए हैं। इन गीतो मे विरह और श्रृंगार आदि सभी प्रकार के गीत हैं।

प्रगतिशील काव्य लेखकों में सुमनेश जोशी, गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद', रेवतदान चारण आदि के नाम लिये जा सकते है।

इनके साथ ही वीरों के प्रशस्ति-काव्य भी लिखे गये जिनमें कवि राव मोहनसिंह की 'वीर चरित्र सतसई' नाथूदान महीयारिया की 'वीर सतसई', रावल नरेन्द्रसिंह कृत 'वीर पूजा सतसई' *रामेश्वरदयाल श्रीमाली की 'हाडी राणी', मुकन्दसिंह की अनेक 'बेलियां', हणुवंतसिंह का 'सूरा दीवा* देसरा' और नारायणसिंह भाटी की 'परमवीर' रचनाएं गिनी जा सकती है। स्फुट रचनाओं में भी *पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उदयराज उज्ज्वल की राष्ट्रवीरों सम्बन्धी कविताएं और* पीरु प्रकाश, शैतान सुजस और गान्धी गाथा शीर्षक पुस्तकें प्राप्त होती हैं।

हास्य रचनाएं विशेषकर व्यंग्य रचनाएं राजस्थानी में नहीं के बराबर है। इस विषय में सबसे प्रसिद्ध नामों में श्री विमलेश, बुद्धिप्रकाश पारीक, मोहन 'आलोक', सत्यनारायण अमन तथा श्री नागराज शर्मा और रामनिरंजन शर्मा 'ठिमाऊ' के नाम उल्लेखनीय हैं।

पारम्परिक भक्ति काव्य भी अपने क्रम से लिखा जाता रहा जिनमें धार्मिक सम्प्रदायों और जैनाचार्यों के गीतों की प्रधानता रही। श्री हिंगुलाजदान कविया की मेहाई महिमा नामक रचना नि.संदेह बहुत उच्चस्तरीय है। नीति काव्यों में श्री चन्द्रशेखर का सोरठा, श्री भीमराज गम्भीर का 'मूंघा मोती', श्री सांगीलाल चतुर्वेदी का 'मरु भारती' और श्री कन्हैयालाल सेठिया का 'रमणिये रा सोरठा' उल्लेखनीय है।

नई कविता की दौड मे हिन्दी की नकल पर राजस्थानी रचनाकार भी गुजर रहे है। इनमें उपमेयों और उपमानों की नवीनता बात को प्रस्तुत करने का अपना विशेष ढंग और एक विशेष दृष्टिकोण की प्रतिबद्धता खास तौर पर देखी जा सकती है। इनकी कविताएं छन्द रहित और प्रायः लय, गति आदि रहित भी होती है। इनमे बहुत कम ऐसे कवि हैं जिनको काव्य-रचना की आन्तरिक लय का ज्ञान हो। जहां-जहां ये कवि अपनी धरती से जुडे हुए उपमेयों और उपमानों की बातें करते है और अपने निजी ढंग से कथ्य को उजागर करते है वहां-वहां उनका तकनीक उधार का होने पर भी वे अपने प्रयत्नों में सफल हुए हैं, पर उनकी कथनी और करनी में भी आकाश-पाताल का अन्तर है। वे जिन अभाव-अभियोगों, प्रताडनाओं और जन-साधारण के दुख-दर्दों की बात करते है उनका अंशमात्र पालन भी अपने जीवन में नहीं कर पाते। जो कुण्ठाएं इनके काव्य में प्रदर्शित होती है उनका इनके निजी जीवन में कोई तालमेल नहीं बैठता, अपितु कई तो ऐसे है जो अपने निजी जीवन में अपने स्वार्थ के लोभन में उल्टा आचरण करते है, इसलिए इनके काव्य के प्रति कोई श्रद्धा नहीं हो पाती। मुखमर्ग में जीते रहने की बात करने वाला तथा आम आदमी के दर्द से

प्रशंसा होने का दम्भ करने वाले इन लोगों ने कभी आम आदमी के बीच बैठकर उसके दर्द को जाना पहचाना भी नहीं है और लेखन के जरिये क्रांति लाने का उनका दावा एक निरा दिवा-स्वप्न मात्र है। फिर भी कुछ सचमुच अच्छे लेखक इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, जिनमें सर्व श्री नन्द भारद्वाज, तेजसिंह जोधा, गोरधनसिंह शेखावत, पारस अरोड़ा, चन्द्रप्रकाश देवल, पुरुषोत्तम छंगाणी, मणि मधुकर आदि के नाम लिये जा सकते हैं।

यद्यपि सर्वाधिक रूप से पद्य की रचनाएं ही प्रमुख रही हैं पर कहानियां, उपन्यास, एकांकी, नाटक और निबन्ध भी थोड़ी-बहुत मात्रा में लिखे जाते रहे हैं। प्रसिद्ध कहानीकारों में सर्वश्री मुरलीधर व्यास, श्रीलाल नथमल जोशी, नृसिंह राजपुरोहित, शिवराज छंगाणी ,नानूराम संस्कर्ता, किशोर कल्पनाकांत, रामेश्वरदयाल श्रीमाली, मूलचन्द प्राणेश, सांवर दैया, मनोहर शर्मा, बैजनाथ पंवार तथा श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत आदि प्रमुख हैं। उपन्यासकारों में सर्व श्री रामनिवास शर्मा, अन्नाराम 'सुदामा' श्रीलाल नथमल जोशी, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' करणीदान बारहठ आदि प्रमुख नाम हैं जबकि प्रमुख नाटककारों में सर्व श्री राधाकृष्ण व्यास, डा. मनोहर शर्मा, अन्नाराम सुदामा और एकांकी लेखकों में मनोहर शर्मा, गोविन्दलाल माथुर, दामोदरप्रसाद नागराज शर्मा निरंजननाथ आचार्य, आज्ञाचन्द भंडारी सुरेन्द्र अंचल मुरलीधर व्यास आदि के नाम लिये जा सकते हैं। निबन्धों के मात्र दो संग्रह ही प्रकाशित हुए हैं जिनमें स्फुट रूप से एक-एक निबन्ध शामिल किये गये हैं जो अनेक प्रकार की भावभूमि और विषयों से सम्बन्धित हैं।

इस प्रकार आधुनिक राजस्थानी साहित्य की यह एक अति स्थूल रूपरेखा मात्र है। वैसे प्राचीन राजस्थानी काव्यों का प्रकाशन, उनके इतिवृत्तों की पोथियां, बहुसंख्यक आधुनिक साहित्य का प्रकाशन आदि कार्य पूरे वेग से किये जा रहे हैं और प्रतिवर्ष 30-40 ग्रन्थ प्रकाश में आ रहे हैं। राजस्थान के विश्वविद्यालयों में तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में राजस्थानी विषय पढ़ाया जाने के कारण राजस्थानी साहित्य की मांग दिन-प्रतिदिन, बढ़ती जा रही है। दिल्ली की साहित्य अकादमी और जयपुर की राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी भी प्रशंसनीय कार्य कर रही है। इस समय त्रैमासिक आदि पत्रों के अतिरिक्त 'जागती जोत' और 'माणक' नामक दो मासिक पत्र भी नियमित रूप से प्रकाशित हो रहे हैं। राजस्थानी के क्षेत्र मे कार्य करने वाली अनेक संस्थायें भी राजस्थानी की परीक्षाओं के संचालन आदि का कार्य कर रही हैं। इन सबको देखकर यह आशा बंधती है कि राजस्थानी साहित्य का भविष्य बहुत उज्ज्वल है और शीघ्र ही इसे अपने प्रदेश में एक सम्माननीय स्थान मिलेगा।

पर्यावरण सुधार विकास में आवश्यक

संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वावधान में 1972 में सम्पन्न सम्मेलन के सन्देश पर आइये, हम सब मिल कर एक स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण का निर्माण करें।

प्रदूषण नियंत्रण एवं निवारण समस्त मानव जाति के कल्याण का पुनीत कार्य है, इसमें समाज के सभी वर्ग, सरकार के साथ वांछित सहयोग दें, इसके लिए:–

1. सरकार द्वारा लागू जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम- 1974, जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) उपकर अधिनियम-1977, वायु (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम-1981 एवं पर्यावरण संरक्षण अधिनियम-1986 के प्रावधानों का पालन करें। इन अधिनियमों के प्रावधानों की अवहेलना करने पर दोषी व्यक्तियों/उद्योगों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जा सकती है।

   उक्त अधिनियमों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने हेतु मण्डल के मुख्यालय अथवा क्षेत्रीय कार्यालयों (जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, कोटा, अलवर) से संपर्क किया जा सकता है।
2. नये लगने वाले उद्योगों के लिए आवश्यक है कि वह उपरोक्त अधिनियमों की विभिन्न धाराओं में प्रदत्त निर्देशों के अनुसार मण्डल से पूर्वानुमति ले जिसके अभाव में उन्हें भारी कठिनाईयों का सामना करना पड सकता है।
3. औद्योगिक इकाईयां अपनी चिमनियों से निकलने वाले धुएं और गैसों को समुचित तौर पर उपचारित कर ही निस्त्रावित करें।
4. उद्योग अपनी उत्पादन प्रक्रिया को इस प्रकार संशोधित करें कि निस्त्रावित व्यर्थपदार्थों में उत्पादक पदार्थों की मात्रा कम से कम जावे।
5. व्यर्थ पदार्थों को पुनः उपयोग करें, इन्हें व्यर्थ न जाने दें।
6. विभिन्न उद्योग अपनी इकाईयों में दूषित जल के उपचार संयंत्र स्थापित कर, इसका समुचित उपचार कर ही निस्तारण करें।
7. सम्बन्धित विभागों तथा नगरपालिकाओं द्वारा नगर में मल-जल शोध संयंत्र स्थापित करने के कार्य को प्राथमिकता दी जावे और नालियों की सफाई रखी जावे।
8. नगर नियोजन संस्थायें, औद्योगिक संस्थायें एवं अल्प विकास संस्थायें अपने विकास कार्यक्रमों की संरचना और स्थान निर्धारण इस प्रकार करें कि पर्यावरण सन्तुलन न बिगडे।

आपका वांछित सहयोग:–

1. सफाई का विशेष ध्यान रखा जावे।
2. अपने घरों के मल-जल को इस प्रकार निस्त्रावित करें ताकि पर्यावरण की स्वच्छता बनी रहे।
3. जल स्त्रोतों कुएं, तालाब, नदी, नाले, झीलों आदि को दूषित होने से बचावें।
4. खेती-बाडी में कीटनाशक दवाओं एवं कृत्रिम खाद का अनावश्यक उपयोग न करें।
5. वृक्षारोपण कर पर्यावरण की सुन्दरता को बढायें।

जनहित में: राजस्थान प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण मण्डल, जे-2/35, महावीर मार्ग, 'सी' स्कीम, जयपुर द्वारा प्रकाशित

राज्ड-3

मैदानी क्षेत्र, पूरब में गगा-यमुना के उपजाऊ क्षेत्र, दक्षिण व दक्षिण-पश्चिम में गुजरात के सरसब्ज इलाके और माल
के पठार से घिरा है।

विस्तारः मानचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि राजस्थान की आकृति विषमकोण चतुर्भुज के सदृश है। इस
उत्तर-दक्षिण में अधिक से अधिक लम्बाई 820 किलोमीटर तथा पूर्व-पश्चिम में इसकी अधिकतम लम्बाई 8
किलोमीटर है। राजस्थान की स्थलीय सीमा अर्थात पूरा घेरा लगभग 5,920 किलोमीटर है। इसमें से पाकिस्तान
साथ लगने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा 1,070 किलोमीटर है। इस अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के इस पार राजस्थान के श्रीगंगानग
बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर जिले हैं जबकि उस पार पाकिस्तान के बहावलपुर, रहीमयार और मीरपुर जिले
भारत सरकार के प्रकाशनों के अनुसार राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3 लाख 42 हजार 239 वर्ग किलोमीटर है। भा
का कुल क्षेत्रफल 32 लाख 68 हजार 90 वर्ग किलोमीटर है। इस तरह राजस्थान का क्षेत्र देश के क्षेत्रफल
लगभग दसवा भाग है।

क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान देश का दूसरा बड़ा राज्य है- प्रथम स्थान मध्य प्रदेश का है, जिसका क्षेत्रफल
लाख 43 हजार 459 वर्ग किलोमीटर है। फिर भी राजस्थान के क्षेत्रफल का महत्व इस तथ्य से स्पष्ट हो जाता है
भारत में क्षेत्रफल के आधार पर यह दूसरे स्थान पर आता है, किन्तु विश्व के अनेक समुन्नत देशो की अपेक्षा यह ब
है। उदाहरण के तौर पर राजस्थान का क्षेत्रफल ग्रेटब्रिटेन, इटली, बेल्जियम, स्विट्जरलैण्ड, यूगोस्लाविया, ईरान, इरा
इस्रायल, श्रीलका आदि से अधिक है। जापान से इसका क्षेत्रफल कुछ ही कम है- महज 27 हजार 434 व
किलोमीटर। राजस्थान के विस्तार का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि यह पड़ौसी देश श्रीलंका से पा
गुना से अधिक बड़ा तथा मध्यपूर्व मे स्थित और विश्व मे बहुचर्चित इस्रायल से 17 गुना से भी अधिक बडा है
ग्रेटब्रिटेन से यह दुगुना बडा है।

अन्य देशों के साथ राजस्थान के क्षेत्रफल पर तुलनात्मक दृष्टि

देश	क्षेत्रफल [वर्ग किलोमीटर]	देश	क्षेत्रफल [वर्ग किलोमीटर]
इस्रायल	20,700	जर्मन गणतंत्र	2,48,553
बेल्जियम	30,513	यूगोस्लाविया	2,55,804
श्रीलंका	65,610	इटली	3,01,225
पुर्तगाल	91,971	पोलैण्ड	3,12,520
चैकोस्लोवाकिया	1,27,870	जापान	3,69,663
ग्रेट ब्रिटेन	1,51,120	राजस्थान	3,42,239

निम्नलिखित सारिणी राजस्थान के विस्तार को देश के अन्य राज्यों की तुलना में स्पष्ट करती है-

राज्य	क्षेत्रफल [वर्ग किलोमीटर]	राज्य	क्षेत्रफल [वर्ग किलोमीटर]
असम	78,523	पंजाब	50,362
आंध्र प्रदेश	2,76,814	प बंगाल	87,853
उड़ीसा	1,55,782	बिहार	1,73,876
उत्तर प्रदेश	2,94,413	मणिपुर	22,356
	1,91,773	मध्यप्रदेश	4,43,459
	38,864	महाराष्ट्र	3,07,762
	1,95,984	मेघालय	22,489
	2,22,236	राजस्थान	3,42,239
	1,30,069	सिक्किम	7,299
	10,477	हरियाणा	44,222
	16 527	हिमाचल प्रदेश	55,673

चतुर्थ खण्ड

राजस्थान
वार्षिकी

विधायिका

भारतीय संविधान के अन्तर्गत राजस्थान में भी अन्य राज्यों की तरह त्रि-स्तरीय शासन व्यवस्था है (i) विधायिका शक्ति राज्य विधान सभा में निहित है, (ii) कार्यपालिका के अन्तर्गत निर्वाचित जनप्रतिनिधि प्रशासन तंत्र का संचालन करते हैं तथा (iii) न्याय-पालिका विभिन्न न्यायालयों के माध्यम से जन-साधारण को न्याय सुलभ कराती है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 168 के अनुसार देश के अन्य राज्यों की तरह राजस्थान में भी शासन-संचालन के लिए विधान मंडल स्थापित है जो राज्यपाल और एक सदन से मिलकर बना है। अनुच्छेद 174 के अन्तर्गत राज्यपाल को समय-समय पर विधान सभा का अधिवेशन आहूत करने सत्रावसन करने तथा उसका विघटन करने की शक्तियां प्राप्त हैं। अनुच्छे 200 के अनुसार विधानसभा द्वारा समय-समय पर पारित विधेयकों को राज्यपाल अनुमति प्रदान करते हैं। उन्हें यह भी शक्ति प्राप्त है कि वे किसी विधेयक पर अनुमति रोक लें अथवा राष्ट्रपति को विचारार्थ भिजवा दें।

राजप्रमुख

राजस्थान में राज्यपाल का पद एक नवम्बर, 1956 को राज्यों के पुनर्गठन के बाद सृजित हुआ। राजस्थान का निर्माण 22 रियासतों के एकीकरण के फलस्वरूप हुआ था इसलिए राजा-महाराजाओं के साथ हुई केन्द्रीय सरकार की संधि के उपबन्धों के अधीन प्रारंभ में यहां उदयपुर के तत्कालीन महाराणा श्री भूपालसिंह को आजीवन महाराज प्रमुख, जयपुर के तत्कालीन महाराजा श्री मानसिंह को राजप्रमुख तथा कोटा के महाराव श्री भीमसिंह को उप राजप्रमुख बनाया गया था। अतः एक नवम्बर, 1956 से पूर्व राज्य के संवैधानिक प्रमुख जयपुर महाराजा श्री मानसिंह रहे जिन्होंने 7 अप्रेल, 1949 को अपना पद ग्रहण किया। वे *31 अक्टूबर, 1956 को राज्य पुनर्गठन आयोग कानून लागू होने तक इस पद पर रहे।*

राज्यपाल

राजस्थान के प्रथम राज्यपाल तत्कालीन दिल्ली राज्य के निवर्तमान मुख्यमंत्री सरदार गुरमुखनिहालसिंह मनोनीत हुए जिन्होंने एक नवम्बर, 1956 को कार्यभार संभाला और 15 अप्रेल, 1962 तक इस पद पर रहे।

राजस्थान के द्वितीय राज्यपाल उत्तरप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री डा. सम्पूर्णानन्द बनाये गये जिन्होंने 16 अप्रेल, 1962 को शपथ ग्रहण की और 15 अप्रेल, 1967 तक कार्यरत रहे। उनके कार्यकाल में 13 मार्च, 1967 से 26 अप्रेल, 1967 तक राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू रहा और विधान सभा निलंबित रही।

राजस्थान के तीसरे राज्यपाल सरदार हुकुमसिंह बने जो लोकसभा के अध्यक्ष रह चुके थे। उन्होंने 16 अप्रेल, 1967 को पद ग्रहण किया तथा 30 जून, 1972 तक पदासीन रहे।

राजस्थान के चौथे राज्यपाल सरदार जोगेन्द्रसिंह नियुक्त हुए जो उत्तरप्रदेश से राज्यसभा के सदस्य और 20 सितम्बर, 1971 से 30 जून, 1972 तक उड़ीसा के राज्यपाल रह चुके थे। उन्होंने 1 जुलाई, 1972 को पद ग्रहण किया और 14 फरवरी, 1977 को उत्तरप्रदेश से लोकसभा का चुनाव लड़ने के लिए अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।

राजस्थान के पांचवें राज्यपाल श्री रघुकुल तिलक मनोनीत हुए जो काशी विद्यापीठ के उपकुलप तथा राजस्थान लोकसेवा आयोग के सदस्य रह चुके थे। उन्होंने 12 मई, 1977 को कार्यभार संभाला त 8 अगस्त, 1981 को पदमुक्त हुए। इनकी नियुक्ति से पूर्व 30 अप्रैल, 1977 से राज्य में राष्ट्रप शासन लागू था जो 21 जून, 1977 तक जारी रहा।

राजस्थान के छठे राज्यपाल श्री ओमप्रकाश मेहरा मनोनीत हुए जो महाराष्ट्र के राज्यपाल पद स्थानांतरित होकर यहां आये। वे अवकाश प्राप्त वायु सेनाध्यक्ष हैं। उन्होंने 6 मार्च, 1982 को कार्यभ ग्रहण किया तथा 3 नवम्बर, 1985 तक इस पद पर रहे।

राजस्थान के सातवें राज्यपाल श्री वसन्तराव पाटिल मनोनीत हुए जो महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमं थे। उन्होंने 20 नवम्बर, 1985 को शपथ ग्रहण की तथा 10 नवम्बर, 1987 को निजी कारणों त्यागपत्र देकर पद मुक्त हुए।

राजस्थान के आठवें और वर्तमान राज्यपाल श्री सुखदेवप्रसाद ने 20 फरवरी, 1988 को अपने प की शपथ ग्रहण की है। वे उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल में मंत्री तथा केन्द्र में उपमंत्री रह चुके हैं।

विधानसभा : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

राजस्थान के वर्तमान स्वरूप के अस्तित्व में आने से पूर्व इसकी घटक रियासतों में स्वाधीनत आन्दोलन के दौरान उत्तरदायी शासन की मांग निरन्तर जोर पकडती रही। अनेक रियासतों में तो वहाँ के प्रजामंडल अथवा प्रजापरिषद् ने समय-समय पर आन्दोलन भी चलाये। इस मामले में सर्वप्रथम पहल की बीकानेर के तत्कालीन महाराजा गंगासिंह ने, जिन्होंने 1912 में प्रतिनिधि सभा (रिप्रजेंटेटिव एसेम्बली) के गठन की घोषणा की और अक्टूबर 1913 में इसके प्रथम अधिवेशन का उद्घाटन किया। लेकिन यह सभा 1947 तक राज्य में कोई प्रभावशाली वैधानिक सुधार नहीं कर पाई। फरवरी 1939 में बांसवाड़ा में राज्य परिषद् और 1941 में उदयपुर तथा टोंक में क्रमशः मेवाड राज्य परिषद् तथा मजलिस-ए-आम कायम की गई।

जयपुर रियासत में सितम्बर 1945 में दो सदनों वाले विधान मंडल का गठन किया गया जिसका एक सदन धारा सभा और दूसरा सदन प्रतिनिधि सभा कहलाता था। इसके सदस्य आंशिक रूप से निर्वाचित और आंशिक रूप से मनोनीत होते थे। इसके अधिवेशन राजस्थान विधान सभा के वर्तमान भवन सवाई मानसिंह टाउनहाल में होते थे। इन सदनों के अधिकार सीमित विषयों में ही थे जिन पर ये विचार-विमर्श करते थे। जोधपुर रियासत में मई 1941 में परामर्श समिति के रूप में प्रतिनिधि सभा का गठन किया गया जिसे बहुत सीमित मात्रा में अधिकार थे। 1944 में वहाँ व्यवस्थापक सभा की घोषणा की गई लेकिन वहाँ की जनता ने इसका बहिष्कार कर दिया।

भरतपुर में अक्टूबर 1943 में बृज प्रतिनिधि सभा समिति स्थापित की गई तो झालावाड में 1947 में विधान निर्मात्री परिषद् गठित की गई। इस मामले में शाहपुरा जैसी छोटी रियासत ने उल्लेखनीय कार्य किया जिसके युवा शासक राजाधिराज सुदर्शनदेव ने जन-प्रतिनिधियों को सर्वाधिकार सम्पन्न सत्ता सौंप दी और रियासत के संविधान निर्माण के लिए एक परिषद् का गठन कर दिया।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत की अन्य रियासतों की तरह राजस्थान की भी अनेक रियासतों में लोकप्रिय मंत्रिमंडलों का गठन हो गया जिससे इस प्रकार की संस्थाओं का महत्व स्वतः समाप्त हो गया।

हीरालाल शास्त्री मन्त्रिमंडल

यद्यपि राजस्थान का एकीकरण 30 मार्च, 1949 को हो गया था तथापि यहां राज्य विधान सभा का निर्माण मार्च 1952 में ही संभव हुआ। इस अवधि में यहां प्रदेश कांग्रेस का अंतरिम शासन रहा जिसे दिशा-निर्देश भारत सरकार का तत्कालीन रियासती मंत्रालय देता था और जिसके अध्यक्ष भारत के तत्कालीन उप प्रधान और गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल थे। राजस्थान की प्रथम लोकप्रिय सरकार श्री हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व में गठित हुई जिसे सात अप्रैल, 1949 को राजप्रमुख महाराजा मानसिंह ने शपथ दिलाई। शास्त्री मन्त्रिमंडल में सर्व श्री सिद्धराज ढड्ढा, प्रेमनारायण माथुर, भूरेलाल बया, फूलचन्द बापणा, वेदपाल त्यागी, रावराजा हणूतसिंह, रघुवरदयाल गोयल और नृसिंह कछवाहा शामिल किये गये। 15 मई, 1949 को मत्स्य संघ का राजस्थान में विलय होने पर मत्स्य के प्रधानमंत्री श्री शोभाराम भी मंत्रिमंडल में शामिल कर लिये गये।

केन्द्रीय सरकार द्वारा श्री सी.एस. वैंकटाचारी को राजप्रमुख का तथा श्री भोलानाथ झा और श्री डी आर. प्रधान को राज्य सरकार का परामर्शदाता नियुक्त किया गया। श्री के राधाकृष्णन राज्य के प्रमुख सचिव बनाये गये। ये सभी आई. सी. एस. अधिकारी थे।

राजस्थान निर्माण के साथ ही शासन-सत्ता को लेकर प्रदेश के कांग्रेस नेताओं में तीव्र मतभेद हो गये। एक गुट तत्कालीन प्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष श्री गोकुल भाई दौ भट्ट और मुख्यमंत्री श्री हीरालाल शास्त्री का तो दूसरा श्री जयनारायण व्यास और श्री माणिक्यलाल वर्मा का बन गया। दोनों गुट एक दूसरे के प्रबल विरोधी बन गये और सत्ता को लेकर निरन्तर खींचतान चलती रही। स्थिति यहां तक पहुच गई कि 11 जून, 1949 को प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने श्री शास्त्री के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव तक पारित कर दिया। अन्त में 5 जनवरी, 1951 को शास्त्री मन्त्रिमंडल को त्याग पत्र देना पड़ा।

सी. एस. वैंकटाचारी सरकार

इस स्थिति में केन्द्र ने 5 जनवरी, 1951 को ही आई सी एस अधिकारी श्री सी एस वैंकटाचारी के मुख्यमन्त्रित्व में मंत्रिमंडल का गठन कर दिया जिसके दूसरे सदस्य श्री भोलानाथ झा आई सी. एस. थे। कुछ अर्से बाद श्री झा के स्थान पर श्री हरि शर्मा आई सी एस मंत्री बनाये गये। इस सरकार ने 26 अप्रैल, 1951 तक कार्य किया।

जयनारायण व्यास मंत्रिमंडल

26 अप्रैल, 1951 को श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में पुन: कांग्रेस मंत्रिमंडल का गठन हुआ जिसमें सर्व श्री टीकाराम पालीवाल, युगलकिशोर चतुर्वेदी बलवंतसिंह मेहता मोहनलाल सुखाड़िया मथुरादास माथुर, बृजसुन्दर शर्मा, कुम्भाराम आर्य, जसवंत सिंह और नाथूलाल जोशी मंत्री तथा श्री अमृतलाल यादव उप मंत्री के रूप में शामिल किये गये। इस मंत्रिमंडल ने राज्य में विधान सभा की स्थापना होने तथा प्रथम आम चुनावोपरांत बहुमत प्राप्त कांग्रेस दल के नेता का चयन होने अर्थात् तीन मार्च, 1952 तक कार्य किया।

प्रथम विधान सभा [1952-1957]

प्रथम राजस्थान विधान सभा का गठन 29 फरवरी, 1952 को हुआ जिसके 160 सदस्यों के निर्वाचन हेतु चार से 24 जनवरी तक की अवधि में वयस्क मताधिकार के आधार पर 11 दिनों तक

मतदान हुआ। इन 160 सदस्यों में 139 सामान्य, 16 अनुसूचित जातियों के तथा पांच अनुसूचित जनजातियों के शामिल थे। इनमें बांसवाड़ा जिले का बागीडोरा क्षेत्र जहां केवल अनुसूचित जनजातियों के व्यक्तियों के चुनाव लड़ने हेतु सुरक्षित था वहां डूंगरपुर, प्रतापगढ़-निम्बाहेड़ा, सायरा तथा सराड़ा-सलूम्बर आदि चार क्षेत्र द्वि-सदस्यीय बनाये गये थे जिनमें एक सामान्य के साथ एक-एक जनजाति के प्रत्याशी के लिए सुरक्षित था। इसी प्रकार हिण्डौन, लक्ष्मणगढ़-राजगढ़, वैर, बाड़ी, खेतड़ी, लक्ष्मणगढ़ (सीकर), टोंक, जयपुर-चाकसू, लालसोट-दौसा, बड़ी सादड़ी-कपासन, शाहपुरा-बनेड़ा, रेलमगरा, लाडपुरा, झालरापाटन, चूरू और रायसिंहनगर-करणपुर आदि 16 द्वि सदस्यीय क्षेत्रों में एक-एक सीट सामान्य और एक-एक सीट अनुसूचित जातियों के प्रत्याशियों के लिए सुरक्षित थी।

अजमेर-मेरवाड़ा में, जो इस समय तक राजस्थान का अंग नहीं बना था, तीस सदस्यीय पृथक विधान सभा थी। इसके 6 क्षेत्र, अजमेर प्रथम (दक्षिण-पश्चिम), अजमेर द्वितीय (पूरब), जेठाणा, नसीराबाद, केकड़ी तथा मसूदा द्वि-सदस्यीय थे। ये सभी क्षेत्र सामान्य और अनुसूचित जातियों के लिये थे। यहां अनुसूचित जन जातियों के लिये एक भी क्षेत्र सुरक्षित नहीं था।

निर्विरोध निर्वाचन

प्रथम आम चुनाव में कांग्रेस दल के सात प्रत्याशी सर्व श्री दीनबन्धु परमार (सायरा सुर. जन जाति), लक्ष्मण हिरात (सराड़ा-सलूम्बर सुर. जनजाति), हरिराम निनामा (बागीडोरा सुर. जनजाति), जयचन्द मोहिल (बड़ी सादड़ी-कपासन सुर. अनु. जाति), सम्पतराम (लक्ष्मणगढ़-राजगढ़ सुर. अनु. जाति), हजारीलाल शर्मा (कोटपूतली) तथा घासीराम यादव (मंडावर) विधान सभा के लिए निर्विरोध चुन लिए गये। अतः मतदान 153 सीटों के लिए ही हुआ।

मतदान विश्लेषण

इस चुनाव में कुल मतदाताओं की संख्या 76 लाख 76 हजार 419 थी जिनमें 7 सीटों का निर्विरोध चुनाव हो जाने के कारण 75 लाख 2500 मतदाताओं को ही मतदान करना था। चुनाव में कुल 33 लाख 36 हजार 850 मतदाताओं ने मतदान किया जो कुल मतदाताओं का 36.69 प्रतिशत रहा। इनमें 32 लाख 61 हजार 442 मत वैध तथा 75 हजार 408 मत अवैध करार दिए गये। इनका प्रतिशत 2.31 रहा।

प्रथम आम चुनाव में कुल 1147 प्रत्याशियों ने नामांकन पत्र प्रस्तुत किये जिनमें 148 जांच के दौरान निरस्त हो गये, 376 ने अपने नाम वापस ले लिए और सात निर्विरोध चुन लिए गये। इस प्रकार कुल 616 प्रत्याशियों ने अपना भाग्य आजमाया। चुनाव में कांग्रेस के 156 प्रत्याशियों ने 12 लाख 86 हजार 953 मत प्राप्त कर 82, भारतीय जनसंघ के 50 प्रत्याशियों ने 1 लाख 93 हजार 532 मत प्राप्त कर 8, समाजवादी दल के 52 प्रत्याशियों ने 1 लाख 36 हजार 464 मत प्राप्त कर एक, रामराज्य परिषद के 59 प्रत्याशियों ने तीन लाख 99 हजार 958 मत प्राप्त कर 24, हिन्दू महासभा के 6 प्रत्याशियों ने 28 हजार 183 मत प्राप्त कर 2, कृषक-मजदूर प्रजा पार्टी के 6 प्रत्याशियों ने 16 हजार 411 मत प्राप्त कर एक, कृषिकार लोक पार्टी के 46 प्रत्याशियों ने दो लाख 70 हजार 807 मत प्राप्त कर 7 तथा 229 निर्दलीयों ने 8 लाख 96 हजार 178 मत प्राप्त कर 35 स्थानों पर कब्जा कर लिया था। इसके [illegible] कम्युनिस्ट पार्टी के ग्यारह प्रत्याशियों ने 17 हजार 131, [illegible] के 1 प्रत्याशी ने 7250 [illegible] के 6 प्रत्याशियों ने 7164 तथा [illegible] के 1 प्रत्याशी ने 1331 मत प्राप्त कर [illegible] स्थान प्राप्त नहीं किये।

अध्यक्ष : उपाध्यक्ष

श्री नरोत्तमलाल जोशी, जो झुंझुनूं क्षेत्र से कांग्रेस दल के टिकिट पर विधायक चुने गये थे 31 मार्च1952 को सर्व सम्मति से विधान सभा के अध्यक्ष चुने गये। आप इस पद पर 24 मार्च,1957 तक रहे।

इसी प्रकार गिरवा क्षेत्र से भारतीय जनसंघ के टिकिट पर निर्वाचित श्री लाल सिंह शक्तावत उपाध्यक्ष चुने गये।

प्रतिपक्ष : नेता-उपनेता

प्रथम विधानसभा के समस्त गैर कांग्रेसी दलों ने मिलकर संयुक्त विधायक दल का गठन किया जिसके नेता बीकानेर तहसील क्षेत्र से निर्वाचित निर्दल सदस्य कुंवर जसवंतसिंह तथा जोधपुर 'ए' क्षेत्र से निर्वाचित निर्दल सदस्य श्री इन्द्रनाथ मोदी उपनेता चुने गये।

टीकाराम पालीवाल मंत्रिमंडल—प्रथम लोकतांत्रिक सरकार

प्रथम विधान सभा चुनाव के उपरांत श्री टीकाराम पालीवाल बहुमत प्राप्त कांग्रेस विधायक दल के सर्व-सम्मति से नेता चुने गये और उन्होंने 3 मार्च, 1952 को मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की। आम चुनाव में निवर्तमान मुख्यमंत्री श्री जयनारायण व्यास ने जोधपुर-बी और जालौर-ए दो क्षेत्रों से चुनाव लड़ा लेकिन दोनों में ही पराजित हो गये। इसके विपरीत श्री पालीवाल ने महुआ और मलारना चौड दो क्षेत्रों से चुनाव लड़ा और दोनों में ही विजयी रहे।

पालीवाल मंत्रिमंडल में सर्व श्री रामकिशोर व्यास, रामकरण जोशी, नाथूराम मिर्धा, मोहनलाल सुखाडिया भोगीलाल पंड्या, मास्टर भोलानाथ तथा श्री अमृतलाल यादव मंत्री नियुक्त किये गये।

जयनारायण व्यास पुनः मुख्यमंत्री

श्री जयनारायण व्यास अक्टूबर 1952 में अजमेर जिले के किशनगढ़ क्षेत्र से उपचुनाव में विजयी होकर विधायक बन गये। इसके लिये वहां से आम चुनाव में निर्वाचित कांग्रेस विधायक श्री चांदमल मेहता ने त्याग पत्र देकर स्थान रिक्त किया था। श्री पालीवाल ने 31 अक्टूबर 1952 को अपने मंत्रिमंडल का त्यागपत्र प्रस्तुत कर दिया जिसके फलस्वरूप श्री जयनारायण व्यास दल के नेता चुन लिए गये और एक नवम्बर, 1952 को उनके मंत्रिमंडल ने शपथ ग्रहण की।

व्यास मंत्रिमंडल में श्री टीकाराम पालीवाल उप मुख्यमंत्री तथा सर्व श्री मोहनलाल सुखाडिया रामकिशोर व्यास, भोगीलाल पंड्या, रामकरण जोशी, मास्टर भोलानाथ, नाथूराम मिर्धा और अमृतलाल यादव मंत्री नियुक्त किये गये।

15 अप्रैल, 1953 को श्री टीकाराम पालीवाल, श्री नाथूराम मिर्धा और श्री रामकिशोर व्यास ने मुख्यमंत्री के साथ मतभेदों के कारण मंत्रिमंडल से त्याग पत्र दे दिए। इसके दूसरे दिन 16 अप्रैल को श्री कुम्भाराम आर्य मंत्रिमंडल में शामिल किये गये। 22 अप्रैल, 1953 को श्री चन्दनमल बेद और श्री नृसिंह कछवाहा को उपमंत्री नियुक्त किया गया। श्री कछवाहा पूर्व में शास्त्री सरकार में मंत्री रह चुके थे।

8 जनवरी, 1954 को श्री टीकाराम पालीवाल मंत्रिमंडल में पुनः शामिल कर लिये गये।

नेता पद के लिए देश में प्रथम मुकाबला

प्रथम आम चुनाव में श्री हीरालाल शास्त्री ने भाग नहीं लिया। श्री गोकुल भाई भट्ट पराजित होकर राजनीति से सर्वोदय की ओर मुड़ गये। श्री माणिक्यलाल वर्मा चित्तौड़गढ़ लोकसभा क्षेत्र से आम चुनाव में पराजित होने के तत्काल बाद टोंक क्षेत्र से उपचुनाव में विजयी होकर लोकसभा में पहुंच गये तथा श्री जयनारायण व्यास आम चुनाव में दो-दो क्षेत्रों से विधानसभा का चुनाव हारने के बाद किशनगढ़ से उपचुनाव लड़कर पुनः मुख्यमंत्री बन गए। उन्होंने 1954 में विपक्ष के 22 विधायकों को कांग्रेस में शामिल कर लिया। इनमें अधिकांश रामराज्य परिषद् के और खासकर राजपूत जाति के थे। श्री पालीवाल मुख्यमंत्री पद से हटने के बाद यद्यपि मंत्री पद पर आसीन थे लेकिन फिर भी निराशा के शिकार थे। उधर श्री व्यास पर श्री रामकरण जोशी का अधिक प्रभाव था जो उनके मन्त्रिमंडल में मंत्री थे। उनकी बढ़ी हुई शक्ति से श्री मोहनलाल सुखाडिया, श्री कुम्भाराम आर्य और श्री मथुरादास माथुर अपने को अपेक्षाकृत कमजोर अनुभव करने लगे थे। ऐसी स्थिति में उन्होंने श्री माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व में बगावत का बिगुल बजा दिया। श्री व्यास के विरुद्ध दल और विधानसभा में बढ़ते हुए असन्तोष को देखकर कांग्रेस उच्च सत्ता ने श्री व्यास को विधायक दल का विश्वास प्राप्त करने का निर्देश दिया। 6 नवम्बर, 1954 को सारे देश की निगाहें जयपुर की ओर थी जहां न केवल प्रदेश की राजनीति अपितु समस्त देश के तब तक के जनतंत्रीय इतिहास में प्रथम बार मुख्यमंत्री पद को लेकर एक वरिष्ठ और प्रतिष्ठित नेता का एक अपेक्षाकृत युवा और नये नेता मोहनलाल सुखाडिया से खुला मुकाबला हो रहा था। इस मुकाबले में श्री सुखाडिया, आठ मतों के अन्तर से श्री व्यास को पराजित करने में सफल रहे, जो स्वयं उनके मन्त्रिमंडल में राजस्व मन्त्री थे।

नेता पद पर निर्वाचित होने के बाद श्री सुखाडिया ने 13 नवम्बर, 1954 को अपने मन्त्रिमंडल का गठन किया जिसमें सर्व श्री रामकिशोर व्यास, दामोदर व्यास, बद्री प्रसाद गुप्ता, भोगीलाल पंड्या, बृजसुन्दर शर्मा, कुम्भाराम आर्य, रामनिवास मिर्धा और अमृतलाल यादव को मंत्री तथा श्री शाह अलीमुद्दीन, सम्पतराम और श्रीमती कमला बेनीवाल को उपमंत्री के रूप में शामिल किया। बाद में हुए परिवर्तनों में श्री रामचन्द्र चौधरी और श्री रामकरण जोशी को मंत्री तथा श्री खेलसिंह राठौड को उपमंत्री बनाया गया। फरवरी 1956 में श्री कुम्भाराम आर्य ने त्याग पत्र दे दिया।

अजमेर के विलय का प्रभाव

राज्यों के पुनर्गठन के फलस्वरूप एक नवम्बर, 1956 को अजमेर का राजस्थान में विलय हुआ जो अब तक राज्य के बीच में एक टापू के समान छोटा सा स्वतंत्र राज्य था। अजमेर में तीस विधायकों की अपनी विधान सभा थी और श्री हरिभाऊ उपाध्याय के मुख्यमन्त्रित्व में श्री बालकृष्ण कौल और श्री बृजमोहन शर्मा का तीन सदस्यीय मन्त्रिमंडल वहां का शासन संचालन करता था। विलीनीकरण की प्रक्रिया में उक्त विधान सभा को भी राजस्थान विधान सभा में विलीन कर दिया गया जिससे द्वितीय विधान सभा के चुनाव तक इसकी सदस्य संख्या 190 हो गई। अजमेर विधान सभा में कांग्रेस सदस्यों की संख्या 20, भारतीय जनसंघ की तीन, निर्दलियों की चार तथा पुरुषार्थी पंचायत के सदस्यों की तीन थी।

अजमेर के विलय के बाद कांग्रेस के विधायक दल के नेता का फिर से चुनाव होना आवश्यक हो गया। अब की बार सर्व श्री जयनारायण व्यास, टीकाराम पालीवाल, रामकरण जोशी और मास्टर भोलानाथ आदि ने मिलकर अजमेर के निवर्तमान मुख्यमंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय को नेता पद के लिए आगे किया। एक बार उनका श्री सुखाडिया के मुकाबले चुनाव लड़ना तय भी हो गया। दोनों ओर से विधायकों की

घोषणा भी हो गई लेकिन 17 अक्टूबर 1956 को विधान सभा भवन में जब बैठक शुरु हुई तो श्री उपाध्याय ने चुनाव लड़ने से मना कर दिया। अतः श्री सुखाड़िया एकीकृत राजस्थान की विधान सभा के पुनः सर्वसम्मत नेता हो गये। बाद में उन्होंने अपने मंत्रिमंडल में अजमेर से प्रतिनिधि के रूप में ब्यावर के श्री बृजमोहन शर्मा को शामिल किया।

उप चुनाव

प्रथम विधान सभा (1952–1957) की कार्यावधि में सर्वाधिक 17 क्षेत्रों का उप चुनाव हुआ जो अब तक का कीर्तिमान है। इनका विवरण इस प्रकार है-

क्रमांक	तिथि	क्षेत्र	निर्वाचित सदस्यमय संबद्ध दल	उपचुनाव का कारण
1	मई -1952	मालपुरा टोड	श्री वीरेन्द्रसिंह चौहान (कांग्रेस)	श्री टीकारामपालीवाल (कांग्रेस) का दो स्थानों से एक साथ निर्वाचित होने के कारण त्याग पत्र
2.	मई -1952	जोधपुर "बी"	श्री एच. के व्यास (साम्यवादी)	महाराजा जोधपुर श्री हनुवंतसिंह (निर्दलीय) का निधन हो जाने से
3.	अगस्त- 1952	किशनगढ़	श्री जयनारायण व्यास (कांग्रेस)	श्री चांदमल मेहता (कांग्रेस) के त्याग पत्र देने से
4.	मई -1953	नीम-का-थाना "ए"	श्री लादूराम चौधरी (कांग्रेस)	स्वयं श्री चौधरी का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से
5	मई -1953	जोधपुर- "ए"	श्री द्वारकादास पुरोहित (कांग्रेस)	श्री इन्द्रनाथ मोदी (निर्दलीय) द्वारा त्यागपत्र देने से
6.	सितम्बर- 1953	कोटपूतली	श्री हजारीलाल शर्मा (कांग्रेस)	स्वयं श्री शर्मा का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से
7	अक्टूबर-1953	नागौर (पूर्व)	श्री रामनिवास मिर्धा (कांग्रेस)	श्री गंगासिंह (रामराज्य परिषद) का चुनाव न्यायालयसे अवैध हो जाने से
8	नवम्बर-1953	सांचौर	श्री मोहम्मद अब्दुलहादी (कांग्रेस)	श्री किशोरसिंह (निर्दलीय) का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से
9.	नवम्बर-1953	आसींद	श्री जयसिंह राणावत (कांग्रेस)	श्री गोपालसिंह (निर्दलीय) का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से

2- प्राकृतिक विभाग

प्राकृतिक विभाग से तात्पर्य है कि राजस्थान की भूमि भिन्न-भिन्न प्राकृतिक स्वरूपों यथा पहाड़ी, पठारी, मैदानी-रेतीली में विभक्त है। इस आधार पर जब हम राजस्थान के धरातल का अध्ययन करते है तो यह स्पष्ट दिखाई देता है कि राज्य की प्राकृतिक बनावट सर्वत्र एक समान नहीं है। कहीं पहाड़ हैं, तो कहीं मैदान, कहीं विशाल रेगिस्तान है जहा हरियाली का नामोनिशान नहीं, तो कहीं फसलों से लहलहाते मैदान। राजस्थान ही सम्पूर्ण भारत में एक ऐसा प्रदेश है जो पहाड़ों, मैदानों, रेतीली बजर भूमियों, नदी-घाटी के बीहड़ों, प्राकृतिक एवं कृत्रिम झीलों तथा बारहमासी से लेकर बरसाती नदी-नालों से भरा-पूरा है। इसीलिए राजस्थान को प्रकृति की कला का नमूना कहा गया है, जहा का धरातल विभिन्न प्राकृतिक स्वरूपों में मिलता है।

राजस्थान की प्राकृतिक दशा में अरावली पर्वत श्रृंखला का प्रमुख स्थान है। वस्तुत यह श्रृंखला दिल्ली के कुछ उत्तर से गुजरात तक लगभग 692 किलोमीटर लम्बी है जो राजस्थान में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व तक लगभग 550 किलोमीटर में फैली है। इस पर्वत श्रृंखला ने राजस्थान को दो स्पष्ट प्राकृतिक भागो में विभक्त कर दिया है- [1] उत्तर-पश्चिमी भाग और [2] दक्षिण-पूर्वी भाग। राजस्थान का लगभग 58 प्रतिशत भाग उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में है तथा शेष 42 प्रतिशत भाग दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में आता है।

अरावली पर्वत के पश्चिमी भाग में बारह जिले है - श्रीगगानगर बीकानेर चूरू सीकर झुझुनू, नागौर जोधपुर पाली, जैसलमेर, जालौर, बाड़मेर तथा सिरोही। इस पर्वत श्रेणी के पूर्व में पन्द्रह जिले स्थित है- उदयपुर चित्तौड़गढ़ डूगरपुर, बासवाड़ा, भीलवाड़ा, बूदी, कोटा, झालावाड अजमेर जयपुर सवाईमाधोपुर टोंक अलवर भरतपुर और धौलपुर।

इनमें जैसलमेर सबसे बड़ा जिला है, जिसका क्षेत्रफल 38 हजार 401 वर्ग किलोमीटर है जबकि धौलपुर सबसे छोटा जिला है जिसका क्षेत्रफल मात्र 2,950 वर्ग किलोमीटर है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि उत्तर-पश्चिमी भाग, दक्षिण-पूर्वी भाग से लगभग ड्योढ़ा है। इन आधारों पर राजस्थान को मुख्यतया निम्नांकित चार प्राकृतिक विभागों में विभाजित कर सकते है -

[1] उत्तर-पश्चिम का रेतीला भाग
[2] मध्य स्थित अरावली का पर्वतीय भाग
[3] पूर्वी-मैदानी भाग, और

नवम्बर- 1953	सिरोही	श्री बृजसुन्दर शर्मा (कांग्रेस)	श्री प्यारेलाल (हिन्दू महासभा) का चुनाव अवैध घोषित होने से
नवम्बर-1953	[illegible]	श्री चांदमल मेहता (कांग्रेस)	श्री मदनमोहन (रा०रा० परिषद) का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से
नवम्बर-1953	बांसवाड़ा	श्रीमती यशोदा देवी (प्रजा समाजवादी)	श्री भेराजी भाई (समाजवादी) का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से
जून-1954	आमेर-''ए''	श्रीमती कमला बेनीवाल (कांग्रेस)	श्री तेजसिंह (रा रा. परिषद) का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से
जून-1954	आमेर ''बी''	वैद्य अंगदराम शर्मा (कांग्रेस)	महारावल संग्रामसिंह (निर्दलीय) द्वारा त्याग पत्र दे देने से
नवम्बर-1955	रतनगढ़	श्री गौरीशंकर आचार्य (कांग्रेस)	श्री महादेव प्रसाद एन पंडित (निर्दलीय) का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से
अप्रेल-1956	नीम-का-थाना''सी''	श्री ज्ञानचंद मोदी (कांग्रेस)	श्री कपिलदेव अग्रवाल (कांग्रेस) का निधन हो जाने से
जुलाई- 1956	बीकानेर तहसील	श्री रामरतन कोचर (कांग्रेस)	कुं जसवंतसिंह (निर्दलीय) द्वारा त्यागपत्र दे देने से

द्वितीय विधान सभा (1957–1962)

थम विधान सभा की सदस्य संख्या 160 थी लेकिन एक नवम्बर 1956 को राज्यों के पुनर्गठन
अजमेर राज्य के राजस्थान में विलीन हो जाने से तत्कालीन अजमेर विधान सभा के तीस सदस्यों
राजस्थान विधान सभा में शामिल कर लिया गया। अत 1957 के आम चुनाव तक राजस्थान
सभा की सदस्य संख्या 190 रही। लेकिन बाद में विधान सभा क्षेत्रों का पुनर्सीमन किया गया
फलस्वरूप यह संख्या घट कर 176 रह गयी। इनमें खेतड़ी, नीम-का-थाना आमेर दौसा
मगढ़, तिजारा, लक्ष्मणगढ़, वैर बयाना, करौली, सवाईमाधोपुर, टोंक, बारां छबड़ा डग
, वल्लभनगर, शाहपुरा, केकड़ी, खारची, सिरोही, जालौर, बालोतरा, फलौदी नोखा नोहर और
दि 27 द्वि-सदस्यीय ऐसे क्षेत्र शामिल थे जिनमें एक-एक सामान्य और एक-एक अनुसूचित जाति
के चुना गया। इसी प्रकार लालसोट, दौसा, राजगढ़, महुआ गंगापुर हिण्डौनी पीपलदा

अकलेरा प्रतापगढ सलूम्बर, बाली और माडल आदि 12 द्वि-सदस्यीय ऐसे चुनाव क्षेत्र थे जिनसे एक-एक सामान्य और एक-एक जनजाति का प्रतिनिधि चुना गया। इनके अतिरिक्त बांसवाडा, बागीडोरा, कुशलगढ, सागवाडा, डूंगरपुर, सराडा, फलासिया और गोगूदा आदि आठ आदिवासी बहुल ऐसे क्षेत्र शामिल थे जो केवल जन जातियों के व्यक्तियो के चुनाव लडने के लिए ही सुरक्षित थे। द्वितीय विधान सभा के लिए 25 फरवरी से 12 मार्च 1957 की अवधि में 14 दिनों तक मतदान हुआ।

मतदान का विश्लेषण

1951 की जनगणना के आधार पर 1957 में राज्य की अनुमानित जनसंख्या एक करोड 83 लाख 10 हजार तथा मतदाता संख्या 87 लाख 45 हजार 726 थी। चूंकि इस चुनाव में 176 में से पांच सीटों पर कांग्रेस प्रत्याशी सर्व श्री दामोदर व्यास (मालपुरा) भीखाभाई (सागवाडा), घन्नालाल हारीत (छबडा), हरिकिशन (राजगढ) तथा चुन्नीलाल (रायसिंह नगर) निर्विरोध निर्वाचित हो गये। इसलिए चुनाव केवल 171 सीटों का ही हुआ जिनके लिए 85 लाख 69 हजार 248 मतदाता थे। इनमें पुरुष और महिला मतदाताओं की संख्या क्रमश: 44लाख 97 हजार 985 और 40 लाख 71 हजार 263 थी। मतदाताओं की संख्या में 1952 की तुलना में 9.25 प्रतिशत वृद्वि हुई। चुनाव में कुल 49 लाख 43 हजार 444 मतदाताओं ने मतदान किया जो मतदाताओं की कुल संख्या का 40.29 प्रतिशत था। इनमें 47 लाख 46 हजार 461 मत वैध तथा एक लाख 96 हजार 983 मत अवैध करार दिए गये। अवैध मतों का प्रतिशत 4.15 रहा जबकि 1952 के चुनाव में यह 2.29 प्रतिशत था। इस चुनाव में अनुमानत 51 लाख 36 हजार 326 रुपये सरकार के खर्च हुए जो प्रति मत औसत 50 पैसा होता है। इसी प्रकार चुनाव में कुल 9949 मतदान केन्द्रों की व्यवस्था थी जिनमें प्रत्येक पर औसत 515 रुपये खर्च हुए।

इस चुनाव में कुल 1414 नामांकन पत्र प्रस्तुत किये गये जिनमें 42 जांच के दौरान निरस्त कर दिए गये पांच निर्विरोध चुन लिए गये तथा 719 नामांकन वापस ले लिए गये। इस प्रकार कुल 648 प्रत्याशियों ने चुनाव में अपना भाग्य आजमाया। इनमें कांग्रेस के 176 प्रत्याशियों ने 21 लाख 41 हजार 924 अर्थात 45.13 प्रतिशत मत प्राप्त कर 119, भारतीय जनसंघ के 47 प्रत्याशियों ने दो लाख 63 हजार 443 अर्थात 5 55 प्रतिशत मत प्राप्त कर 6, प्रजा-समाजवादी दल के 25 प्रत्याशियों ने एक लाख 17 हजार 532 अर्थात 2.48 प्रतिशत मत प्राप्त कर केवल एक, राम-राज्य परिषद के 57 प्रत्याशियों ने चार लाख 69 हजार 540 अर्थात 9.89 प्रतिशत मत प्राप्त कर 17, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के 23 प्रत्याशियों ने एक लाख 43 हजार 547 अर्थात 3.02 प्रतिशत मत प्राप्त कर केवल एक तथा 325 निर्दलियों ने 16 लाख 10 हजार 475 अर्थात 33 93 प्रतिशत मत प्राप्त कर 32 स्थानों पर विजय प्राप्त की।

अध्यक्ष-उपाध्यक्ष

पूर्व मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा (कांग्रेस) 25 मार्च 1957 को द्वितीय विधान सभा के सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये और पूरे कार्यकाल तक पदासीन रहे।

कांग्रेस के ही श्री निरंजननाथ आचार्य उपाध्यक्ष चुने गये और पूरी अवधि तक पद पर रहे।

सुखाडिया पुन: नेता निर्वाचित

चुनाव परिणामों की घोषणा के बाद कांग्रेस विधायक दल के नेता पद के लिए 4 अप्रैल 1957 को निवर्तमान मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया और पूर्व मुख्यमंत्री श्री टीकाराम पालीवाल में मुकाबला

हुआ जिसमें श्री सुखाड़िया विजयी घोषित हुए। उन्होंने 11 अप्रैल 1957 को अपना मंत्रिमंडल बनाया जिसमें सर्वश्री हरिभाऊ उपाध्याय, रामकिशोर व्यास, दामोदर व्यास, नाथूराम मिर्धा तथा बद्रीप्रसाद गुप्ता को मंत्री और सर्वश्री पूनमचन्द बिश्नोई, भैरूभाई, दौलतराम सारण, सम्पतराम और रिखमचन्द धारीवाल को उपमंत्री के रूप में शामिल किया।

10 फरवरी 1960 को श्री सुखाड़िया ने अपने मंत्रिमंडल का विस्तार किया जिसमें श्री हरिश्चन्द्र (झालावाड़) और श्री रामचन्द्र चौधरी को नये मंत्रियों के रूप में शामिल किया गया तथा पुराने उप मंत्रियों सर्व श्री सम्पतराम, रिखमचन्द धारीवाल और भीखाभाई को मंत्री के रूप में पदोन्नत किया गया। श्री बरकतुल्ला खां नये उप मंत्री नियुक्त किये गये।

यह मंत्रिमंडल नया चुनाव होने और 11 मार्च 1962 को नयी सरकार का गठन होने तक कार्यरत रहा।

उपचुनाव

द्वितीय विधानसभा (1957-1962) की अवधि में कुल 6 उप चुनाव हुए जिनमें सवाईमाधोपुर जिले के महुआ क्षेत्र में हुए दो उपचुनाव भी शामिल है। इनका विवरण इस प्रकार है-

क्रमांक	तिथि	क्षेत्र	निर्वाचित सदस्य मय संबद्ध दल	उप चुनाव का कारण
1.	24 जून-1958	महुआ	श्री मौरा (भारतीय जनसंघ)	श्री टीकाराम पालीवाल (कांग्रेस) के राज्यसभा सदस्य चुने जाने पर त्यागपत्र देने से
2	25 अगस्त-1958	हनुमानगढ़	श्री रामचन्द्र चौधरी (कांग्रेस)	श्री श्योपतसिंह (साम्यवादी) का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से
3.	27 अक्टूबर-1958	जालोर (सु)	श्री अमृतलाल यादव (कांग्रेस)	श्री हासिया (राम – राज्य परिषद) के त्याग पत्र देने से
4.	30 नवम्बर-1959	महुआ	श्री कैप्टन छुट्टनलाल (कांग्रेस)	श्री मौरा (भारतीय जन संघ) का निधन हो जाने से
5.	29 अगस्त-1960	नोखा	श्री रावतमलपारीक (कांग्रेस)	श्री गिरधारी लाल भोबिया (निर्दलीय) का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित होने से
6.	19 मार्च-1961	बूंदी	श्री बृजसुन्दर शर्मा (कांग्रेस)	श्री सज्जनसिंह (कांग्रेस) का निधन हो जाने से

तृतीय विधान सभा (1962-1967)

तृतीय विधान सभा का गठन 13 मार्च, 1962 को हुआ। इसके लिए राज्य में 19 से 25 फरवरी 1962 की अवधि में सात दिनों में मतदान सम्पन्न हुआ। 1961 की जनगणना के आधार पर इस

अर्थात् राज्य की अनुमानित जनसंख्या दो करोड 6 लाख 50 हजार तथा मतदाता संख्या एक करोड तीन लाख 27 हजार 596 थी। इस चुनाव में विधान सभा की 1957 के चुनाव की तरह 176 सीटें थी जिनमें सवाईमाधोपुर जिले के बामणवास (सु० अ० जनजाति) क्षेत्र से कांग्रेस के श्री भरतलाल मीणा निर्विरोध निर्वाचित हो गये। अत: कुल 175 सीटों के लिए चुनाव हुआ जिनके लिए कुल मतदाताओं की संख्या एक करोड दो लाख 67 हजार 6 थी। इनमें पुरुष और महिला मतदाताओं की संख्या क्रमश: 53 लाख 42 हजार 334 और 49 लाख 24 हजार 672 थी। गत चुनाव की तुलना में मतदाताओं की संख्या में 18.09 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

विधान सभा की 176 सीटों में 128 सामान्य 28 अनुसूचित जातियों और 20 अनुसूचित जनजातियों के लिए सुरक्षित थीं। इनके लिए 1557 प्रत्याशियों ने अपने नामांकन पत्र प्रस्तुत किये जिनमें 20 जांच के दौरान निरस्त कर दिए गये, एक निर्विरोध निर्वाचित हो गया तथा 647 ने अपने नामांकन वापस ले लिये। अत: चुनाव मैदान में 889 प्रत्याशी शेष रह गये। इन्हें 54 लाख 6217 मत प्राप्त हुए जो कुल मतों के 52.66 प्रतिशत थे। इन मतों मे 51 लाख 32 हजार 963 मत वैध थे तथा दो लाख 73 हजार 254 मत अवैध होने से निरस्त कर दिए गये। अवैध मत 5.32 प्रतिशत थे जबकि 1957 में यह 4.15 प्रतिशत था। इस चुनाव में राजकोष से प्रति मत औसत 46 पैसे खर्च हुए। चुनाव में इस बार कुल 11 हजार 580 मतदान केन्द्र बनाये गये थे जिन पर प्रति केन्द्र 405 रुपये औसत रूप से खर्च हुए।

इस चुनाव में कांग्रेस दल के 176 प्रत्याशियों ने 20 लाख 52 हजार 383 अर्थात् 39.98 प्रतिशत मत प्राप्त कर 88, भारतीय जनसंघ के 94 प्रत्याशियों ने चार लाख 69 हजार 497 अर्थात 9 14 प्रतिशत मत प्राप्त कर 15, प्रजा-समाजवादी दल के 22 प्रत्याशियों ने 74 हजार 858 अर्थात 1 46 प्रतिशत मत प्राप्त कर दो, राम-राज्य परिषद के 23 प्रत्याशियों ने एक लाख 2988 मत अर्थात 2 01 प्रतिशत मत प्राप्त कर तीन, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के 45 प्रत्याशियों ने दो लाख 27 हजार 972 अर्थात् 5.40 प्रतिशत मत प्राप्त कर पाँच, निर्दलीय 390 प्रत्याशियों ने दस लाख 71 हजार 581 अर्थात 20 88 प्रतिशत मत प्राप्त कर 22, स्वतंत्र पार्टी के 93 प्रत्याशियों ने आठ लाख 78 हजार 56 अर्थात 17.11 प्रतिशत मत प्राप्त कर 36, समाजवादी दल के 40 प्रत्याशियों ने एक लाख 89 हजार 147 अर्थात 3 68 प्रतिशत मत प्राप्त कर पांच स्थानों पर विजय प्राप्त की जबकि हिन्दू महासभा के सात प्रत्याशी 17 हजार 481 अर्थात् 0 34 प्रतिशत मत प्राप्त करके एक भी स्थान पर विजयी नहीं हो सके।

अध्यक्ष-उपाध्यक्ष

विधान सभाध्यक्ष पद पर श्री रामनिवास मिर्धा यथावत बने रहे। वे दो मई 1967 तक इस पद पर रहे। राव नारायणसिंह मसूदा (कांग्रेस) ने पूरी अवधि में उपाध्यक्ष पद पर कार्य किया।

सरकार का गठन

श्री मोहनलाल सुखाडिया चुनावोपरान्त विधान सभा कांग्रेस दल के सर्व-सम्मति से पुन: नेता चुने गये और 12 मार्च, 1962 को उनके नेतृत्व में नये मंत्रिमण्डल की शपथ ग्रहण हुई। सर्व श्री हरिभाऊ उपाध्याय, मथुरादास माथुर, नाथूराम मिर्धा, हरिश्चन्द्र (झालावाड), बलकृष्ण कौल भीखाभाई तथा बरकतुल्ला खां आदि मंत्री, श्रीमती कमला बेनीवाल, श्रीमती प्रभा मिश्रा और सर्व श्री परसराम मदेरणा कैलाशनाम माण, भवानीशंकर नंदवाना, रामप्रसाद लड्ढा, चन्दनमल बैद दिनेशराय डागी और निरंजननाथ आचार्य उपमंत्री के रूप में मंत्रिमण्डल में शामिल किये गये।

श्री कुम्भाराम आर्य, जो अभी राज्य सभा के सदस्य थे, 19 अक्टूबर, 1964 को हनुमानगढ़ क्षेत्र से उप चुनाव में विधायक निर्वाचित हुए और 14 नवम्बर, 1964 को राज्य मंत्रिमंडल में मंत्री नियुक्त किये गये।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने अपनी अस्वस्थता के कारण 25 फरवरी, 1965 को मंत्री पद से त्याग पत्र दे दिया।

इसी प्रकार श्री दामोदर व्यास, जो 1962 के आम चुनाव में मालपुरा क्षेत्र में पराजित हो चुके थे, 10 मई,1965 को राजाखेड़ा क्षेत्र के उप चुनाव में विधायक निर्वाचित होने पर दो जून, 1965 को सर्व श्री बृजसुन्दर शर्मा, अमृतलाल यादव और हरिदेव जोशी के साथ राज्य मंत्रिमण्डल में शामिल किये गये। श्री भवानीशंकर नंदवाना उप मंत्री का 19 दिसम्बर, 1965 को देहावसान हो गया।

सुखाडिया मंत्रिमण्डल में चौथा परिवर्तन और परिवर्द्धन 30 अप्रैल, 1966 को हुआ जब सर्वश्री परसराम मदेरणा, रामप्रसाद लढ्ढा, चन्दनमल बैद और निरंजननाथ आचार्य को उपमंत्री से मन्त्री पद पर पदोन्नत किया गया तथा सर्व श्री भीमसिंह मंडावा, घासीराम यादव, रामदेवसिंह और मनफूलसिंह चौधरी को उपमन्त्री नियुक्त किया गया।

चौथे आम चुनाव से पूर्व दिसम्बर 1966 में श्री कुम्भाराम आर्य ने श्री रामकिशोर व्यास से प्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष पद के चुनाव में पराजित हो जाने तथा मुख्यमंत्री श्री सुखाडिया के साथ तीव्र मतभेद हो जाने के कारण श्री हरिश्चन्द्र भालावाड़, श्री भीमसिंह मंडावा, श्रीमती कमला बेनीवाल और श्री दौलतराम सारण के साथ न केवल राज्य मंत्रिमंडल से त्याग पत्र दे दिया बल्कि पांचों नेताओं ने कांग्रेस दल से भी सम्बन्ध विच्छेद कर लिया।

यह मंत्रिमंडल चतुर्थ आम चुनाव के बाद 13 मार्च, 1967 को राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू होने तक कार्यरत रहा।

उप चुनाव

तृतीय विधान सभा (1962–1967) की अवधि के दौरान कुल पांच उप चुनाव हुए। इनका विवरण इस प्रकार है-

क्रमांक	तिथि	क्षेत्र	निर्वाचित सदस्य मय संबद्ध दल	उप चुनाव का कारण
1.	10 फरवरी-1964	महुआ	श्री मानधातासिंह (स्वतंत्र)	श्री शिवराम (भारतीय जनसंघ) का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से
2.	19 अक्टूबर-1964	हनुमानगढ	श्री कुंभाराम आर्य (कांग्रेस)	श्री श्योपतसिंह (साम्यवादी) का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से
3	22 फरवरी-1965	बासूर	श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता (कांग्रेस)	श्री सतीश कुमार शर्मा (निर्दलीय) का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से
4.	10 मई-1965	राजाखेडा	श्री दामोदर व्यास (कांग्रेस)	श्री प्रतापसिंह सेठ (कांग्रेस) का निधन हो जाने से
	14 जून- 1965	नोहर	श्री दयाराम (निर्दलीय)	श्री हरदत्तसिंह (निर्दलीय) का निधन हो जाने से

पर्यराज्य की अनुमानित जनसंख्या दो करोड़ 6 लाख 50 हजार तथा मतदाता संख्या एक करोड़ तीन लाख 27 हजार 596 थी। इस चुनाव में विधान सभा की 1957 के चुनाव की तरह 176 सीटें थी जिनमें सवाईमाधोपुर जिले के बामणवास (सु० अ० जनजाति) क्षेत्र से कांग्रेस के श्री भरतलाल मीणा निर्विरोध निर्वाचित हो गये। अत: कुल 175 सीटों के लिए चुनाव हुआ जिनके लिए कुल मतदाताओं की संख्या एक करोड दो लाख 67 हजार 6 थी। इनमें पुरुष और महिला मतदाताओं की संख्या क्रमश. 53 लाख 42 हजार 334 और 49 लाख 24 हजार 672 थी। गत चुनाव की तुलना में मतदाताओं की संख्या मे 18.09 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

विधान सभा की 176 सीटों में 128 सामान्य, 28 अनुसूचित जातियों और 20 अनुसूचित जनजातियों के लिए सुरक्षित थीं। इनके लिए 1557 प्रत्याशियों ने अपने नामांकन पत्र प्रस्तुत किये जिनमें 20 जांच के दौरान निरस्त कर दिए गये, एक निर्विरोध निर्वाचित हो गया तथा 647 ने अपने नामांकन वापस ले लिये। अतः चुनाव मैदान में 889 प्रत्याशी शेष रह गये। इन्हें 54 लाख 6217 मत प्राप्त हुए जो कुल मतों के 52.66 प्रतिशत थे। इन मतों में 51 लाख 32 हजार 963 मत वैध थे तथा दो लाख 73 हजार 254 मत अवैध होने से निरस्त कर दिए गये। अवैध मत 5.32 प्रतिशत थे जबकि 1957 में यह 4.15 प्रतिशत था। इस चुनाव में राजकोष से प्रति मत औसत 46 पैसे खर्च हुए। चुनाव में इस बार कुल 11 हजार 580 मतदान केन्द्र बनाये गये थे जिन पर प्रति केन्द्र 405 रुपये औसत रूप से खर्च हुए।

इस चुनाव में कांग्रेस दल के 176 प्रत्याशियों ने 20 लाख 52 हजार 383 अर्थात 39.98 प्रतिशत मत प्राप्त कर 88, भारतीय जनसंघ के 94 प्रत्याशियों ने चार लाख 69 हजार 497 अर्थात 9 14 प्रतिशत मत प्राप्त कर 15, प्रजा-समाजवादी दल के 22 प्रत्याशियों ने 74 हजार 858 अर्थात 1 46 प्रतिशत मत प्राप्त कर दो, राम-राज्य परिषद के 23 प्रत्याशियों ने एक लाख 2988 मत अर्थात 2.01 प्रतिशत मत प्राप्त कर तीन, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के 45 प्रत्याशियों ने दो लाख 27 हजार 972 अर्थात 5 40 प्रतिशत मत प्राप्त कर पाँच, निर्दलीय 390 प्रत्याशियों ने दस लाख 71 हजार 581 अर्थात 20.88 प्रतिशत मत प्राप्त कर 22, स्वतंत्र पार्टी के 93 प्रत्याशियों ने आठ लाख 78 हजार 56 अर्थात 17.11 प्रतिशत मत प्राप्त कर 36 समाजवादी दल के 40 प्रत्याशियों ने एक लाख 89 हजार 147 अर्थात 3.68 प्रतिशत मत प्राप्त कर पांच स्थानों पर विजय प्राप्त की जबकि हिन्दू महासभा के सात प्रत्याशी 17 हजार 481 अर्थात 0.34 प्रतिशत मत प्राप्त करके एक भी स्थान पर विजयी नहीं हो सके।

अध्यक्ष-उपाध्यक्ष

विधान सभाध्यक्ष पद पर श्री रामनिवास मिर्धा यथावत बने रहे। वे दो मई, 1967 तक इस पद पर रहे। राव नारायणसिंह मसुदा (कांग्रेस) ने पूरी अवधि में उपाध्यक्ष पद पर कार्य किया।

सरकार का गठन

श्री मोहनलाल सुखाड़िया चुनावोपरान्त विधान सभा कांग्रेस दल के सर्व-सम्मति से पुन: नेता चुने गये और 12 मार्च, 1962 को उनके नेतृत्व में नये मंत्रिमण्डल की शपथ ग्रहण हुई। सर्व श्री हरिभाऊ उपाध्याय, मथुरादास माथुर, नाथूराम मिर्धा, हरिश्चन्द्र (झालावाड), बालकृष्ण कौल, भीखाभाई तथा बरकतुल्ला खां आदि मंत्री, श्रीमती कमला बेनीवाल, श्रीमती प्रभा मिश्रा और सर्व श्री परसराम मदेरणा दौलतराम सारण भवानीशंकर नंदवाना, रामप्रसाद लड्ढा, चन्दनमल बैद, दिनेशराय डांगी और निरंजननाथ आचार्य उपमंत्री के रूप में मंत्रिमण्डल में शामिल किये गये।

श्री कुम्भाराम आर्य, जो अभी राज्य सभा के सदस्य थे, 19 अक्टूबर, 1964 को हनुमानगढ़ क्षेत्र से उप चुनाव में विधायक निर्वाचित हुए और 14 नवम्बर, 1964 को राज्य मंत्रिमंडल में मंत्री नियुक्त किये गये।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने अपनी अस्वस्थता के कारण 25 फरवरी, 1965 को मंत्री पद से त्याग पत्र दे दिया।

इसी प्रकार श्री दामोदर व्यास, जो 1962 के आम चुनाव में मालपुरा क्षेत्र में पराजित हो चुके थे, 10 मई,1965 को राजाखेड़ा क्षेत्र के उप चुनाव में विधायक निर्वाचित होने पर दो जून, 1965 को सर्व श्री रामसुन्दर शर्मा, अमृतलाल यादव और हरिदेव जोशी के साथ राज्य मंत्रिमण्डल में शामिल किये गये। श्री भवानीशंकर नंदवाना उप मंत्री का 19 दिसम्बर, 1965 को देहावसान हो गया।

सुखाड़िया मंत्रिमण्डल में चौथा परिवर्तन और परिवर्द्धन 30 अप्रैल, 1966 को हुआ जब सर्वश्री परसराम मदेरणा, रामप्रसाद लढ्ढा, चन्दनमल बैद और निरंजननाथ आचार्य को उपमंत्री से मन्त्री पद पर पदोन्नत किया गया तथा सर्व श्री भीमसिंह मंडावा, घासीराम यादव, रामदेवसिंह और मनफूलसिंह चौधरी को उपमन्त्री नियुक्त किया गया।

चौथे आम चुनाव से पूर्व दिसम्बर 1966 में श्री कुम्भाराम आर्य ने श्री रामकिशोर व्यास से प्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष पद के चुनाव में पराजित हो जाने तथा मुख्यमंत्री श्री सुखाड़िया के साथ तीव्र मतभेद हो जाने के कारण श्री हरिश्चन्द्र भरतावाड, श्री भीमसिंह मंडावा, श्रीमती कमला बेनीवाल और श्री दौलतराम सारण के साथ न केवल राज्य मंत्रिमंडल से त्याग पत्र दे दिया बल्कि पांचों नेताओं ने कांग्रेस दल से भी सम्बन्ध विच्छेद कर लिया।

यह मंत्रिमंडल चतुर्थ आम चुनाव के बाद 13 मार्च, 1967 को राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू होने तक कार्यरत रहा।

उप चुनाव

तृतीय विधान सभा (1962–1967) की अवधि के दौरान कुल पांच उप चुनाव हुए। इनका विवरण इस प्रकार है-

क्रमांक	तिथि	क्षेत्र	निर्वाचित सदस्य मय संबद्ध दल	उप चुनाव का कारण
1.	10 फरवरी-1964	महुआ	श्री मानधातासिंह (स्वतंत्र)	श्री शिवराम (भारतीय जनसंघ) का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से
2.	19 अक्टूबर-1964	हनुमानगढ़	श्री कुंभाराम आर्य (कांग्रेस)	श्री श्योपतसिंह (साम्यवादी) का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से
3.	22 फरवरी-1965	बांसूर	श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता (कांग्रेस)	श्री मनीश कुमार शर्मा (निर्दलीय) का चुनाव न्यायालय से अवैध घोषित हो जाने से
4.	10 मई-1965	राजाखेड़ा	श्री दामोदर व्यास (कांग्रेस)	श्री इन्द्रसिंह सेठ (कांग्रेस) का निधन हो जाने से
.	14 जून- 1965	नोहर	श्री दयाराम (निर्दलीय)	श्री हरदत्तसिंह (निर्दलीय) का निधन हो जाने से

दिन चारों संसदीय सचिवों सर्व श्री मूत्र प्रकाश गोयल, समर्थ लाल, जसराज और मुल्कराज विंद को भी पदोन्नत कर उप मंत्री के रूप में शपथ दिलाई गयी।

श्री शिवचरण माथुर ने राज्य विधान सभा में अपने ऊपर लगे भूमि सम्बन्धी एक आरोप को लेकर 30 अगस्त, 1968 को मंत्रिमंडल से त्याग पत्र दे दिया। लेकिन 22 नवम्बर, 1968 को श्री सुखाडिया ने उन्हें मंत्रिमंडल में पुनः शामिल कर लिया।

इसी दिन श्री गुरदीपसिंह को उप मंत्री पद की शपथ दिलायी गयी।

मार्च 1971 में लोकसभा के मध्यावधि चुनाव के बाद तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के निर्देश पर 8 जुलाई, 1971 को श्री सुखाडिया ने अपने मंत्रिमण्डल का त्याग पत्र दे दिया।

बरकतुल्ला खाँ मंत्रिमंडल

श्री मोहनलाल सुखाडिया के त्यागपत्र के बाद श्री बरकतुल्ला खां सर्व सम्मति से कांग्रेस विधायक दल के नेता चुने गये तथा 9 जुलाई, 1971 को उनके मंत्रिमंडल ने शपथ ग्रहण की। सर्व श्री हरिदेव जोशी, रामकिशोर व्यास, शोभाराम, परसराम मदेरणा, शिवचरण माथुर, नारायण सिंह मसूदा, भीखाभाई और पूनमचन्द विश्नोई मंत्री बनाये गये।

4 सितम्बर, 1971 को श्री ओंकार लाल चौहान मंत्रिमंडल में शामिल किये गये गये। चूंकि वे विधान सभा के सदस्य नहीं थे इसलिये 6 माह बाद 3 मार्च, 1972 को उन्हें हटना पड़ा।

बरकतुल्ला खाँ सरकार ने पांचवी विधान सभा का चुनाव होने तथा नयी सरकार का गठन होने तक अर्थात 15 मार्च, 1972 तक कार्य किया।

उपचुनाव

चतुर्थ विधान सभा (1967–1972) की अवधि में कुल 6 क्षेत्रों में उप चुनाव हुए जिनका विवरण इस प्रकार है-

क्रमांक	क्षेत्र	तिथि	निर्वाचित सदस्य मय संबद्ध दल	उपचुनाव का कारण
1.	खानपुर	3 जुलाई, 1967	महारानी शिवकुमारी (भारतीय जनसंघ)	श्री हरिश्चन्द्र सिंह झालावाड़ (भारतीय जनसंघ) के निधन से
2.	चौमू	29 अप्रेल, 1968	श्री रामकिशोर व्यास (कांग्रेस)	श्री राजराजेश्वर सिंह (स्वतंत्रपार्टी) द्वारा त्याग पत्र देने से
3.	जालौर (सु०)	4 नवम्बर 1968	श्री विरदाराम फुलवारिया (कांग्रेस)	श्री जेपाराम (स्वतंत्रत पार्टी) के निधन से
4.	खेतड़ी	30 जून, 1969	श्री शीशराम ओला (कांग्रेस)	श्री रघुवीरसिंह (स्वतंत्र पार्टी) के त्याग पत्र देने से
5.	टोंक	27, अप्रेल 1970	श्री सुरेन्द्र व्यास (कांग्रेस)	श्री दामोदर व्यास के 1967 में दो स्थानों से विजयी होने के कारण त्याग पत्र देने से
6.	नसीराबाद	27 अप्रेल 1970	श्री शंकरसिंह रावत (कांग्रेस)	श्री विजयसिंह रावत (स्वतंत्रपार्टी) के निधन से

11 अक्टूबर, 1973 को श्री बरकतुल्ला खाँ का आकस्मिक निधन हो जाने पर श्री हरिदेव जोशी को उसी दिन मुख्यमंत्री के रूप में शपथ दिलायी गयी। उनके साथ सर्व श्री परसराम मदेरणा, नाथूसिंह मकुरा, चन्दनमल बैद, रामचन्द्र चौधरी और ओंकारलाल चौहान को मंत्री पद तथा श्री जुझारसिंह और श्री मूलचन्द मीणा को राज्य मंत्री पद की शपथ दिलायी गयी।

हरिदेव जोशी मंत्रिमंडल

श्री बरकतुल्ला खाँ के निधन के तुरन्त बाद वरिष्ठता की दृष्टि से यद्यपि श्री हरिदेव जोशी को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलायी गयी तथापि 23 अक्टूबर, 1973 को कांग्रेस विधायक दल की बैठक में श्री जोशी और तत्कालीन केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा में नेता पद के लिए खुली प्रतिस्पर्धा हुई जिसमें श्री जोशी बहुमत से नेता चुने गये और उन्होंने 25 अक्टूबर, 1973 को पुनः शपथ ग्रहण की। उनके साथ श्री चन्दनमल बैद और श्री शिवचरण माथुर को मंत्री पद तथा सर्व श्री भुरीलाल महावर, मूलचन्द मीणा, फारुक हसन और जुझारसिंह को राज्य मंत्री पद की शपथ दिलायी गई।

12 नवम्बर, 1973 को श्री जोशी ने अपने मंत्रिमंडल का विस्तार किया जिसमें सर्व श्री परसराम मदेरणा, हीरालाल देवपुरा, खेतसिंह राठौड़, मोहन छंगाणी और रामनारायण चौधरी को मंत्री के रूप में तथा श्रीमती कमला, गुलाबसिंह शक्तावत और श्री बनवारीलाल बैरवा को राज्य मंत्री के रूप में शामिल किया गया।

29 अप्रैल 1977 को श्री जोशी की सरकार को केन्द्र की जनता सरकार ने बर्खास्त करते हुए विधान सभा को भंग कर राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया।

उप चुनाव

पंचम विधान सभा (1972–1977) की अवधि में कुल पांच क्षेत्रों में उप चुनाव हुए जिनका विवरण इस प्रकार है-

क्रमांक	तिथि	क्षेत्र	निर्वाचित सदस्य मय संबद्ध दल	उप चुनाव का कारण
1.	—	सादूलपुर	श्री मोहरसिंह (माकपा)	श्री शीशराम पूनिया (कांग्रेस) का निधन होने से
2.	21 जनवरी 1974	भरतपुर	श्री रामकिशन शर्मा (संसोपा)	भरतपुर महाराजा श्री बृजेन्द्र सिंह (भारतीय जनसंघ) द्वारा त्याग पत्र देने से
3.	21 जनवरी 1974	आसींद	श्री गिरधारी लाल व्यास (कांग्रेस)	श्री किशनसिंह चूंडावत (निर्दलीय) का चुनाव अवैध घोषित हो जाने से
4.	26 मई 1974	सलूम्बर	श्री किशोरीलाल शर्मा (कांग्रेस)	श्री रोशनलाल शर्मा (कांग्रेस) का निधन होने से
5.	27 मई 1974	तिजारा	श्री रतिराम (माकपा)	श्री बरकतुल्ला खाँ (कांग्रेस) का निधन होने से

वर्षा की कमी व गर्मी की अधिकता के कारण इस भाग में प्राकृतिक वनस्पति नगण्य है। भूमि नग्न पड़ी हुई है। घास या वन-प्रदेश नहीं हैं। केवल मरुस्थली वनस्पति कहीं-कहीं दिखाई देती है। जहां नमी मिल जाती है वहा बबूल के वृक्ष मिलते हैं। बबूल के अतिरिक्त यहा ऐसे वृक्ष मिलते हैं, जिनकी पत्तिया मोटी तथा छोटी होती हैं अथवा जिनमें कांटे होते हैं जिनसे वाष्पीकरण अधिक नहीं होता है। फोग, बबूल, खेजड़ा, बेर, कैर व इसी प्रकार की वनस्पति यहा दिखाई पडती है।

इस क्षेत्र मे जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगगानगर, बाडमेर, पाली, नागौर आदि जिले पडते हैं।

[2] मध्य में स्थित अरावली का पर्वतीय भाग- राजस्थान के लगभग मध्य में, दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूरब की ओर अरावली पर्वत श्रृखला फैली हुई है। अरावली पर्वत एक लगातार पर्वत-श्रृखला नहीं है, किन्तु बीच-बीच में टूट गई है। दक्षिण-पश्चिम मे सिरोही से आरम्भ होकर उत्तर-पूरब में खेतड़ी तक तो यह प्राय. श्रृखलाबद्ध है किन्तु छोटी छोटी श्रृखलाओ मे दिल्ली तक विस्तृत है। अरावली पर्वत भारत की सबसे प्राचीन पर्वत-श्रेणी है। जिस समय हिमालय पर्वत का जन्म भी नहीं हुआ था, उससे भी पहले अरावली पर्वत विद्यमान थे। गुजरात के समीप अरब सागर के भीतर डूबी हुई अनेक चट्टानें अरावली पर्वत से मिलती जुलती हैं अत यह सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि यह पर्वत श्रृखला बहुत लम्बी थी किन्तु भौगर्भिक हलचलो एव प्राकृतिक परिवर्तनों के कारण इसमे अनेक परिवर्तन हुए हैं। अत वर्तमान अरावली पर्वत-श्रृखला वास्तव मे प्राचीन महान् पर्वत के अवशेष-मात्र ही है। राजस्थान के सिरोही, उदयपुर, चित्तौडगढ, डूगरपुर व बासवाडा जिले मुख्यत इसी भाग में हैं।

अरावली पर्वतमाला की दिशा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूरब की ओर है। इस पर्वतमाला की लम्बाई झुझुनू जिले मे सिघाना से सिरोही तक लगभग 550 किलोमीटर है। औसत ऊचाई लगभग 915 मीटर है। विस्तार की दृष्टि से राजस्थान के प्राकृतिक भागो मे यह सबसे छोटा भाग है क्योंकि इस भाग मे राज्य की लगभग 9 3 प्रतिशत भूमि है। इस प्रदेश म राज्य की लगभग 14 प्रतिशत जनसख्या निवास करती है।

अरावली पर्वत की प्रमुख श्रृखला को दो भागो में विभक्त किया जा सकता है- [I] उत्तरी अरावली, और [II] दक्षिणी अरावली।

उत्तरी अरावली श्रृखला साभर झील से उत्तर-पूरब की ओर सिघाना तक गई है। यह श्रृखला अपेक्षाकृत कम ऊची, कम चौडी और अधिक टूटी हुई है। इस श्रृखला से नदिया भी बहुत कम निकलती हैं, क्योंकि इधर वर्षा कम होती है। इस पर्वत श्रृखला में तीन ऊची चोटिया है- रघुनाथगढ [1070 मीटर], हर्ष मालकेतु और लोहार्गल। सिघाना से श्रृखला दक्षिण की ओर अलवर जिले मे चली गई है।

दक्षिणी अरावली श्रृखला सिरोही से साभर झील तक फैली हुई है। यह श्रृखला अधिक ऊची व चौडी है। साभर झील से दक्षिण की ओर बढने पर अरावली की ऊचाई और चौडाई बढती जाती है। इस पर्वत श्रृखला मे अनेक ऊची चोटिया है जिनमे प्रमुख हैं गुरुशिखर अथवा आबू [1727 मीटर], कुम्भलगढ [उदयपुर] [1224 मीटर], गौरम [936 मीटर], तारागढ [873 मीटर] अजमेर म और जरगा [उदयपुर] [1310 मीटर] जो माउण्ट आबू से कुछ मीटर ही कम ऊची है। इस श्रृखला मे अनेक प्राकृतिक दर्रे है जिनको नाल कहते है। इनमें से देसूरी नाल और हाथी दर्रा नाल मुख्य है।

अरावली पर्वत की कुछ अन्य चोटिया हैं साड माता [930 मीटर], खो [920 मीटर], भराच [792 मीटर] तथा बाबाई [780 मीटर]।

उत्तर मे हिमालय पर्वत और दक्षिण भारत में नीलगिरि पर्वत के मध्य आबू पर्वत ही सबसे ऊचा पर्वत है। अरावली राजस्थान का जल-विभाजक भी है। इसके पश्चिम की ओर प्रवाहित होने वाली नदियों मे साबरमती, लूणी और माही तथा पूरब की ओर प्रवाहित होने वाली नदियो मे बनास प्रमुख है।

इस प्रदेश मे गर्मियो का औसत तापमान लगभग 26 डिग्री से और सर्दियो में 12 डिग्री से रहता है। वर्षा की औसत मात्रा 50 से मी से 100 से मी तक रहती है। वर्षा गर्मियो मे होती है। वर्षा की मात्रा दक्षिण से उत्तर की ओर कम होती जाती है। ग्रीष्मकाल मे भी आबू पर्वत काफी ठडा रहता है।

इस क्षेत्र के अधिक वर्षा वाले भागो मे अधिक घने वन है। आवला, खैर, सालर, बास, गूलर, धावडा, नीम आदि वृक्ष प्रमुखता म पाये जाते है।

इस प्रदेश म कृषि मुख्य व्यवसाय है। पहाडी भागो मे भील, मीणा, गरासिया आदि रहते हैं जो बहुत ही पिछडे हुए है। इस भाग मे अनेक खनिज पदार्थ पाये जाते है, जिनमे सीसा, जस्ता, अभ्रक, एस्बेस्टस आदि प्रमुख हैं किन्तु इनका पूर्णत [illegible] नहीं हो पाया है। कृषि के लिए उपजाऊ भूमि कम है। गेहू, मक्का, ज्वार, जौ, चना, गन्ना और तिलहन प्रमुख [illegible] फसल है।

षष्ठ विधान सभा [1977–1980]

आपातकाल की समाप्ति के बाद मार्च, 1977 में केन्द्र में बनी प्रथम गैर कांग्रेसी जनता सरकार ने 29 अप्रेल, 1977 को राज्य की हरिदेव जोशी सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया जो विधान सभा के नये चुनाव होने तथा 21 जून, 1977 को नयी सरकार के अस्तित्व में आने तक जारी रहा।

इस चुनाव से पूर्व विधान सभा क्षेत्रों का परिसीमन किया गया जिसके फलस्वरूप इनकी संख्या 184 से बढ़कर दो सौ हो गई। ये 16 नये क्षेत्र-टीबी, पीलीबंगा तारानगर, धोद, जयपुर ग्रामीण, सांगानेर, लक्ष्मणगढ़, नगर रूपबास, नैनवा, लाडपुरा, दानपुर, उदयपुर ग्रामीण रायपुर, सूरसागर तथा मूंडवा हैं। इनमें 144 क्षेत्र सामान्य 32 क्षेत्र अनुसूचित जातियों तथा 24 क्षेत्र अनुसूचित जनजातियों के लिए सुरक्षित हैं। 1977 में राज्य की अनुमानित जनसंख्या तीन करोड़ 92 हजार तथा मतदाता संख्या एक करोड़ 55 लाख 33 हजार 28 थी। चुनाव-प्रचार के दौरान 27 मई, 1977 को जोधपुर जिले के फलौदी क्षेत्र के एक निर्दलीय प्रत्याशी श्री दीपचन्द छंगाणी की मृत्यु हो जाने से 199 स्थानों के लिए ही चुनाव हुआ। अतः आम चुनाव में फलौदी क्षेत्र की मतदाता संख्या कम हो जाने से कुल मतदाता संख्या एक करोड़ 54 लाख 43 हजार 137 रह गई जिनमें पुरुषों और महिलाओं की संख्या क्रमशः 79 लाख 80 हजार 750 तथा 74 लाख 62 हजार 387 थी। मतदाताओं की संख्या में 1972 की तुलना में 11 78 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

इस चुनाव में कुल 2894 नामांकन पत्र भरे गये जिनमें जांच के दौरान 46 निरस्त हो गये तथा 1702 ने अपने नाम वापस ले लिये। अतः शेष 1146 प्रत्याशियों ने चुनाव में अपना भाग्य आजमाया। चुनाव में कुल 83 लाख 85 हजार 564 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया जो कुल मतों का 54 30 प्रतिशत था। इनमें 82 लाख 9306 मत वैध तथा 1 लाख 76 हजार 258 मत अवैध करार दिए गये जो कुल मतदान का 2.10 प्रतिशत था। चुनाव में अनुमानित रूप से सवा करोड़ रुपया राजकोष से व्यय हुआ जो प्रति मतदाता औसत 81 पैसा पड़ा। चुनाव में कुल 18 हजार 947 मतदान केन्द्र बनाये गये थे जो 1972 की तुलना में 2.33 प्रतिशत अधिक थे। इन पर प्रति मतदान केन्द्र औसत 658 रुपये खर्च हुए।

इस चुनाव में जनता पार्टी ने सभी 199 स्थानों के लिए अपने प्रत्याशी खड़े किये जिन्होंने 41 लाख 38 हजार 296 मत अर्थात् कुल मतदान का 50 41 प्रतिशत भाग प्राप्त कर 150 स्थानों पर, कांग्रेस के 185 प्रत्याशियों ने 25 लाख 78 हजार 702 अर्थात् 31.41 प्रतिशत मत प्राप्त कर 41 स्थानों पर, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के दस प्रत्याशियों ने 91 हजार 640 अर्थात् 1.12 प्रतिशत मत प्राप्त कर एक, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के 14 प्रत्याशियों ने 61 हजार 682 अर्थात् 0.75 प्रतिशत मत प्राप्त कर एक और 723 निर्दलियों ने 13 लाख 7163 अर्थात 15.92 प्रतिशत मत प्राप्त कर 6 स्थानों पर विजय प्राप्त की। इनके साथ ही मुस्लिम लीग, विशाल हरियाणा पार्टी और राम-राज्य परिषद के भी क्रमशः दस चार और एक प्रत्याशी चुनाव मैदान में थे, जिन्होंने क्रमशः 22 हजार 583, 8920 और 320 अर्थात कुल मतदान का क्रमशः 0.28, 0.11 और 0.00 प्रतिशत मत प्राप्त किये लेकिन इनमें सफलता का खाता किसी ने नहीं खोला।

आम चुनाव के बाद फलौदी क्षेत्र के चुनाव में भी जनता पार्टी का प्रत्याशी विजयी हुआ इसलिए उसकी शक्ति 150 से बढ़कर 151 हो गई।

अध्यक्ष-उपाध्यक्ष

जनता पार्टी के महारावल लक्ष्मणसिंह तथा श्री रामचन्द्र जाट क्रमश: 18 जुलाई, 1977 और सितम्बर 1977 को सर्वसम्मति से क्रमश: विधान सभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष चुने गये।

महारावल लक्ष्मणसिंह ने मुख्यमंत्री के साथ अपने मतभेदों के कारण 24 सितम्बर 1979 को त्याग पत्र दे दिया। तत्पश्चात 25 सितम्बर, 1979 को श्री गोपालसिंह आहोर अध्यक्ष चुने गये जिन्होंने जून 1980 में नया चुनाव होने तक इस पद पर कार्य किया।

भैरोंसिंह शेखावत मंत्रिमंडल

1977 के चुनाव में जनता पार्टी की भारी सफलता के बाद नेता पद के चुनाव में श्री भैरोंसिंह शेखावत और श्री मास्टर आदित्येन्द्र में मुकाबला हुआ जिसमें श्री शेखावत विजय हुए और 22 जून, 1977 को उन्होंने राज्य के प्रथम गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण की। श्री शेखावत इस समय मध्यप्रदेश से राज्य सभा के सदस्य थे जिन्होंने 18 अक्टूबर, 1977 को कोटा जिले के छाबड़ा क्षेत्र से उप चुनाव में विजयी होकर विधान सभा की सदस्यता प्राप्त की।

शेखावत सरकार में प्रथम चरण में सर्व श्री मास्टर आदित्येन्द्र, प्रो. केदारनाथ, ललितकिशोर चतुर्वेदी, सम्पतराम और त्रिलोकचन्द जैन कैबिनेट तथा सर्व श्री कैलाश मेघवाल, विज्ञान मोदी, महबूब अली और श्रीमती विद्या पाठक राज्य मंत्री के रूप में शामिल किये गये।

द्वितीय चरण में सात फरवरी, 1978 को सर्व श्री सूर्यनारायण चौधरी, भंवरलाल शर्मा, उपनारायण पूनिया, दिग्विजयसिंह, पुरुषोत्तम मंत्री को तथा राज्य मंत्री श्री कैलाश मेघवाल को पदोन्नत कर कैबिनेट मंत्री बनाया गया। इसी समय श्री लालचन्द डूडी और श्री नन्दलाल मीणा राज्य मंत्री नियुक्त किये गये।

जनता पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व में हुए मतभेदों के कारण चौधरी चरणसिंह और श्री राजनारायण के समर्थक श्री लालचन्द डूडी और श्री विज्ञान मोदी ने 8 जुलाई, 1978 को मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिए।

श्री शेखावत ने तीसरे चरण में पांच नवम्बर, 1978 को सर्व श्री माणकचन्द सुराणा, कल्याणसिंह कालवी, डा. हरिसिंह और बिरदमल सिंघवी को कैबिनेट मंत्री तथा हरिसिंह यादव और श्री भैरुलाल कालाबादल को राज्यमंत्री के रूप में शामिल किया।

1979 के मध्य में हुए जनता पार्टी के विभाजन तथा प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शेखावत के साथ उत्पन्न विवादों के फलस्वरूप 18 मई, 1979 को मास्टर आदित्येन्द्र, 21 जुलाई को प्रो. केदारनाथ और 2 अगस्त को डा. हरिसिंह ने मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया।

20 दिसम्बर, 1979 को श्री शिवचरण सिंह गुर्जर को कैबिनेट मंत्री के रूप में सरकार में शामिल किया गया।

जनवरी 1980 में लोक सभा के मध्यावधि चुनावों के पश्चात केन्द्र में पुन: सत्तारूढ़ होने वाली कांग्रेस (इ) सरकार ने 16 फरवरी, 1980 को श्री शेखावत की सरकार को बर्खास्त कर विधान सभा भंग कर दी तथा प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया।

उपचुनाव

छठी विधानसभा [1977–1980] की अवधि में प्रदेश में तीन उपचुनाव हुए, जिनका विवरण इस प्रकार है–

क्रमांक	तिथि	क्षेत्र	निर्वाचित सदस्य मय संबद्ध दल	उप चुनाव का कारण
1	18 अक्टूबर, 1977	छबड़ा	श्री भैरोंसिंह शेखावत (जनता पार्टी)	मुख्यमंत्री श्री शेखावत को विधान सभा सदस्य बनाने हेतु श्री प्रेमसिंह सिंघवी (जनता पार्टी) द्वारा दिए गये त्यागपत्र के कारण
2	22 मई, 1978	बनेड़ा	श्री कल्याण सिंह कालवी (जनतापार्टी)	श्री उमरावसिंह ढाबरिया (जनतापार्टी) के निधन से
3	18 दिसम्बर, 1978	रूपवास (सु)	श्री दाताराम (जनतापार्टी)	श्री ताराचन्द (जनतापार्टी) के निधन से

सप्तम विधान सभा [1980–1985]

छठी विधान सभा भंग हो जाने के फलस्वरूप प्रथम बार राज्य विधान सभा का मध्यावधि चुनाव हुआ। इस चुनाव में जनता पार्टी का भारतीय जनसंघ घटक भारतीय जनता पार्टी के रूप में, सोशलिस्ट घटक जनता पार्टी (जे. पी.), लोकदल घटक जनता पार्टी (चरण सिंह) तथा राजनारायण समर्थक जनता पार्टी (एस. राजनारायण) के रूप में विघटित होकर मैदान में उतरे।

सातवीं राजस्थान विधान सभा का चुनाव 28 से 31 मई 1980 के बीच हुआ। इस चुनाव के समय राज्य की अनुमानित जनसंख्या तीन करोड 34 लाख 52 हजार तथा कुल मतदाता संख्या 1 करोड 80 लाख 62 हजार 12 थी जिनमें 93 लाख 18 हजार 42 पुरुष तथा 87 लाख 43 हजार 970 महिला मतदाता शामिल थीं। 1977 के चुनाव के मतदाताओं की तुलना में 1980 में 4 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस चुनाव में कुल दो सौ स्थानों के लिए 3517 व्यक्तियों ने नामांकन पत्र प्रस्तुत किये जिनमें 69 जांच के दौरान निरस्त हो गये तथा 2042 ने अपने नाम वापस ले लिये। अतः शेष 1406 प्रत्याशियों ने अपना भाग्य आजमाया। इस प्रकार प्रति स्थान प्रतिस्पर्धियों का औसत 7 03 रहा। चुनाव के लिए कुल 21 हजार 750 मतदान केन्द्र बनाये गये जो गत 1977 के चुनाव की तुलना में 14.79 प्रतिशत अधिक थे।

चुनाव में 94 लाख 21 हजार 870 मतदाताओं ने मतदान में भाग लिया जो मतदाताओं की संख्या का 52.16 प्रतिशत था। इनमें 92 लाख 52 हजार 664 मत वैध तथा एक लाख 69 हजार 210 मत अवैध करार दिए गये जो कुल मतदान का 1.83 प्रतिशत था। चुनाव व्यय के रूप में राजकोष पर अनुमानतः तीन करोड 12 लाख 50 हजार 330 रुपये खर्च हुए जो प्रति मत औसत 1 रुपया 73 पैसा होता है। इसी प्रकार प्रति मतदान केन्द्र औसत 1437 रुपये खर्च हुए।

सातवीं विधान सभा के 200 स्थानों के लिए, जिनमें 143 सामान्य क्षेत्र, 33 अनुसूचित जातियों तथा 24 क्षेत्र अनुसूचित जनजातियों के लिए सुरक्षित थे, कांग्रेस (इ) के 199 प्रत्याशियों ने 39 लाख 75 हजार 215 अर्थात 42.96 प्रतिशत मत प्राप्त कर 133 स्थानों पर, कांग्रेस (उर्स) के 69 प्रत्याशियों ने 5

लाख 16 हजार 887 अर्थात 5.59 प्र. श. मत प्राप्त कर 6 स्थानों पर, भारतीय जनता पार्टी के 123 प्रत्याशियों ने 17 लाख 21 हजार 321 अर्थात 18.60 प्रतिशत मत प्राप्त कर 32 स्थानों पर, जनता पार्टी (जे. पी.) के 76 प्रत्याशियों ने 6 लाख 79 हजार 193 अर्थात 7.34 प्रतिशत मत प्राप्त कर 8 स्थानों पर, जनता पार्टी (एस चरण सिंह)) के 104 प्रत्याशियों ने 9 लाख 9340 अर्थात 9.83 प्रतिशत मत प्राप्त कर 7 स्थानों पर, जनतापार्टी (एस राजनारायण) के39 प्रत्याशियों ने 37 हजार 907 अर्थात 0.41 प्रतिशत मत प्राप्त कर एक भी स्थान पर नहीं, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के 25 प्रत्याशियों ने 89 हजार 382 अर्थात 0.97 प्रतिशत मत प्राप्त कर एक स्थान पर, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के 16 प्रत्याशियों ने 1 लाख 11 हजार 476 अर्थात 1.20 प्रतिशत मत प्राप्त कर 1 स्थान पर तथा 755 निर्दलियों ने 12 लाख 11 हजार 943 अर्थात 13.10 प्रतिशत मत प्राप्त कर 12 स्थानों पर विजय प्राप्त की।

कांग्रेस (इ) ने इस चुनाव में नागौर जिले के लाडनूं क्षेत्र में निर्दलीय प्रत्याशी श्री रामधन को अपना समर्थन देकर विजयी बनाया क्योंकि उसके अधिकृत प्रत्याशी के बारे में निर्वाचनाधिकारी के पास निर्धारित समय तक सूचना नहीं पहुंच सकी थी।

श्री पूनमचन्द विश्नोई सातवीं विधान सभा के सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये और पूरे कार्यकाल तक रहे। उपाध्यक्ष का स्थान रिक्त रहा।

जगन्नाथ पहाड़िया मंत्रिमंडल

पांच जून, 1980 को नई दिल्ली के राजस्थान हाउस में आयोजित कांग्रेस (इ) विधायक दल की बैठक में श्री जगन्नाथ पहाडिया सर्वसम्मति से नेता चुने गये और 6 जून, 1980 को उन्होंने जयपुर में मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की। श्री पहाडिया इस समय विधान सभा के सदस्य न होकर भरतपुर जिले के बयाना क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य और केन्द्रीय मंत्रिमंडल में वित्त राज्य मंत्री पद पर कार्यरत थे। बाद में 23नवम्बर 1980 को भरतपुर जिले के वैर (सु.) क्षेत्र से उपचुनाव में वे विधायक चुने गये।

पहाड़िया मंत्रिमंडल की पहली खेप ने 18 जून, 1980 को शपथ ग्रहण की जिसमें श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता, श्री हनुमान प्रभाकर और श्रीमती कमला को मंत्री तथा सर्वश्री अब्दुल रहमान चौधरी, नरेन्द्रसिंह भाटी, रामपाल उपाध्याय, मांगीलाल आर्य और श्रीमती भगवती देवी को उप मन्त्री के रूप में शामिल किया गया।

9 फरवरी, 1981 को श्री रामकिशन वर्मा और श्री घासीराम यादव राज्य मंत्री तथा श्री ईश्वरलाल सैनी उपमंत्री नियुक्त किये गये।

पहाड़िया मंत्रिमंडल का तीसरा विस्तार 18 फरवरी, 1981 को किया गया जिसमें सर्व श्री चन्दनमल बैद, हीरालाल देवपुरा, हरसहाय मीणा और दुलाराम मंत्री तथा सर्व श्री बनवारीलाल शर्मा, प्रद्युम्नसिंह, शीशराम ओला, दिनेशराय डांगी और नानालाल खटीक राज्य मंत्री के रूप में शामिल किये गये।

सत्तारूढ दल के आन्तरिक विरोध और खींचतान के कारण कांग्रेस (इ) उच्च सत्ता के निर्देश पर पहाडिया मंत्रिमंडल ने 12 जुलाई, 1981 को त्याग पत्र दे दिया जो 13 जुलाई, 1981 को स्वीकार किया गया।

शिवचरण माथुर मंत्रिमंडल

14 जुलाई, 1981 को कांग्रेस (इ) विधायक दल की बैठक में श्री शिवचरण माथुर नये नेता चुने गये और इसी दिन उन्होंने मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की। बाद में 19 जुलाई को सर्व श्री परसराम

मदेरणा, चन्दनमल बैद, बृजसुन्दर शर्मा, छोगालाल कंवरिया और श्रीमती कमला मंत्री; सर्व श्री जयकृष्ण शर्मा, प्रद्युम्नसिंह, दिनेशराय डांगी, घासीराम यादव, रामपाल उपाध्याय, चेतराम मीणा, गोविन्दसिंह गुर्जर और श्रीराम गोटेवाला राज्य मंत्री तथा श्री बुलाकीदास कल्ला, गोविन्द अमालिया और श्रीमती कमला भील उप मंत्री के रूप में मंत्रिमंडल में शामिल की गई।

इसी क्रम में श्री नरेन्द्रसिंह भाटी और श्री शीशराम ओला ने 20 जुलाई, 1981 को राज्य मंत्री पद की शपथ ली।

17 अक्टूबर, 1982 को माथुर मंत्रिमंडल का तीसरी बार विस्तार हुआ जिसमें सर्व श्री हीरालाल देवपुरा, खेतसिंह राठौड़ अहमद बख्श सिन्धी, हनुमान प्रभाकर और दुलाराम मंत्री, सर्व श्री रामकिशन वर्मा, देवेन्द्रसिंह, सुरेन्द्र व्यास और बुलाकीदास कल्ला राज्य मंत्री तथा छोगाराम बाकोलिया और जगतारसिंह कंग उप मंत्री के रूप में शामिल किये गये।

बाद में मुख्यमंत्री ने आपसी मतभेदों के कारण सर्व श्री रामपाल उपाध्याय, हनुमानप्रसाद प्रभाकर, सुरेन्द्र व्यास, नरेन्द्रसिंह भाटी और गोविन्द अमालिया से समय-समय पर त्यागपत्र ले लिये।

यह मंत्रिमंडल 1985 के चुनावों तक कार्य करता रहा लेकिन 21 फरवरी, 85 को डीग में चुनाव प्रचार के दौरान निर्दलीय प्रत्याशी राजा मानसिंह की हत्या के कारण उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए कांग्रेस उच्च सत्ता के निर्देश पर श्री माथुर ने अपने मंत्रिमंडल सहित 23 फरवरी को त्यागपत्र दे दिया।

हीरालाल देवपुरा मंत्रिमंडल

श्री माथुर के त्याग पत्र के फलस्वरूप श्री हीरालाल देवपुरा को मुख्यमंत्री नियुक्त किया गया तथा 23 फरवरी को उन्हें पद की शपथ दिलायी गयी। सर्व श्री परसराम मदेरणा ने मंत्री पद तथा श्री रामकिशन वर्मा ने राज्य मंत्री पद की शपथ भी उनके साथ ग्रहण की। दूसरे दिन 24 फरवरी को श्री चन्दनमल बैद और श्रीमती कमला ने मंत्री पद, श्री गोविन्दसिंह गुर्जर और श्री बुलाकीदास कल्ला ने राज्य मंत्री पद तथा श्रीमती कमला भील, छोगाराम बाकोलिया और श्री जगतारसिंह ने उप मंत्री पद की शपथ ली। इस मंत्रिमंडल ने 10 मार्च, 1985 को चुनाव घोषित होने तथा नयी सरकार के अस्तित्व में आने तक कार्य किया।

उपचुनाव

सातवीं विधान सभा (1980–1985) की अवधि में प्रदेश में चार उप चुनाव हुए जिनका विवरण इस प्रकार है :—

क्रमांक	तिथि	क्षेत्र	निर्वाचित सदस्य मय संबद्ध दल	उपचुनाव का कारण
1.	23 नवम्बर, 1980	वैर (सु)	श्री जगन्नाथ पहाड़िया (कांग्रेस)	मुख्यमंत्री श्री पहाड़िया को विधान सभा सदस्य बनाने हेतु श्रीमती शांति पहाड़िया (कांग्रेस) द्वारा त्याग पत्र देने से
2	5 जून, 1983	पिण्डवाड़ा (सु)	श्री सूरमाराम (कांग्रेस)	श्री मूलाराम (कांग्रेस) के निधन से रिक्त।
3.	23 दिसम्बर, 1983	मंडावा	श्री रामनारायण चौधरी (कांग्रेस)	श्री लच्छूराम (जनता—चरण सिंह) के निधन से रिक्त
4.	20 मई, 1984	थानागाजी	श्री घूर्णीलाल गुप्ता (कांग्रेस)	श्री शोभाराम (कांग्रेस) के निधन से रिक्त

लाख 16 हजार 887 अर्थात 5.59 प्र. श. मत प्राप्त कर 6 स्थानों पर, भारतीय जनता पार्टी के 12 प्रत्याशियों ने 17 लाख 21 हजार 321 अर्थात 18.60 प्रतिशत मत प्राप्त कर 32 स्थानों पर, जन पार्टी (जे. पी.) के 76 प्रत्याशियों ने 6 लाख 79 हजार 193 अर्थात 7.34 प्रतिशत मत प्राप्त कर 8 स्था पर, जनता पार्टी (एस चरण सिंह)) के 104 प्रत्याशियों ने 9 लाख 9340 अर्थात 9.83 प्रतिशत मत प्रा कर 7 स्थानों पर, जनतापार्टी (एस राजनारायण) के39 प्रत्याशियों ने 37 हजार 907 अर्थात 0.4 प्रतिशत मत प्राप्त कर एक भी स्थान पर नहीं, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के 25 प्रत्याशियों ने 89 हज 382 अर्थात 0.97 प्रतिशत मत प्राप्त कर एक स्थान पर, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के 16 प्रत्याशि ने 1 लाख 11 हजार 476 अर्थात 1.20 प्रतिशत मत प्राप्त कर 1 स्थान पर तथा 755 निर्दलियों ने 1 लाख 11 हजार 943 अर्थात 13.10 प्रतिशत मत प्राप्त कर 12 स्थानों पर विजय प्राप्त की।

कांग्रेस (इ) ने इस चुनाव में नागौर जिले के लाडनूं क्षेत्र में निर्दलीय प्रत्याशी श्री रामधन को अपन समर्थन देकर विजयी बनाया क्योंकि उसके अधिकृत प्रत्याशी के बारे में निर्वाचनाधिकारी के पास निर्धारित समय तक सूचना नहीं पहुंच सकी थी।

श्री पूनमचन्द विश्नोई सातवीं विधान सभा के सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये और पूरे कार्यकाल तक रहे। उपाध्यक्ष का स्थान रिक्त रहा।

जगन्नाथ पहाड़िया मंत्रिमंडल

पांच जून, 1980 को नई दिल्ली के राजस्थान हाउस में आयोजित कांग्रेस (इ) विधायक दल की बैठक में श्री जगन्नाथ पहाडिया सर्वसम्मति से नेता चुने गये और 6 जून, 1980 को उन्होंने जयपुर में मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की। श्री पहाडिया इस समय विधान सभा के सदस्य न होकर भरतपुर जिले के बयाना क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य और केन्द्रीय मंत्रिमंडल में वित्त राज्य मंत्री पद पर कार्यरत थे। बाद में 23नवम्बर 1980 को भरतपुर जिले के वैर (सु.) क्षेत्र से उपचुनाव में वे विधायक चुने गये।

पहाड़िया मंत्रिमंडल की पहली खेप ने 18 जून, 1980 को शपथ ग्रहण की जिसमें श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता, श्री हनुमान प्रभाकर और श्रीमती कमला को मंत्री तथा सर्वश्री अब्दुल रहमान चौधरी, नरेन्द्रसिंह भाटी, रामपाल उपाध्याय, मांगीलाल आर्य और श्रीमती भगवती देवी को उप मन्त्री के रूप में शामिल किया गया।

9 फरवरी, 1981 को श्री रामकिशन वर्मा और श्री घासीराम यादव राज्य मंत्री तथा श्री ईश्वरलाल सैनी उपमंत्री नियुक्त किये गये।

पहाड़िया मंत्रिमंडल का तीसरा विस्तार 18 फरवरी, 1981 को किया गया जिसमें सर्व श्री चन्दनमल बैद, हीरालाल देवपुरा, हरसहाय मीणा और दुलाराम मंत्री तथा सर्व श्री बनवारीलाल शर्मा, प्रद्युम्नसिंह, शीशराम ओला, दिनेशराय डांगी और नानालाल खटीक राज्य मंत्री के रूप में शामिल किये गये।

सत्तारूढ़ दल के आन्तरिक विरोध और खींचतान के कारण कांग्रेस (इ) उच्च सत्ता के निर्देश पर पहाड़िया मंत्रिमंडल ने 12 जुलाई, 1981 को त्याग पत्र दे दिया जो 13 जुलाई, 1981 को स्वीकार किया गया।

शिवचरण माथुर मंत्रिमंडल

14 जुलाई, 1981 को कांग्रेस (इ) विधायक दल की बैठक में श्री शिवचरण माथुर नये नेता चुने गये और इसी दिन उन्होंने मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की। बाद में 19 जुलाई को नये श्री परसराम

मदेरणा, चन्दनमल बैद, भूरामुन्दर शर्मा, छोगालाल कंवरिया और श्रीमती कमला मंत्री; सर्व श्री जयकृष्ण शर्मा, प्रद्युम्नसिंह, दिनेशराय डागी, घासीराम यादव, रामपाल उपाध्याय, चेतराम मीणा, गोविन्दसिंह गुर्जर और श्रीराम गोटेवाला राज्य मंत्री तथा श्री बुलाकीदास कल्ला, गोविन्द अमालिया और श्रीमती कमला भील उप मंत्री के रूप में मंत्रिमंडल में शामिल की गई।

इसी क्रम में श्री नरेन्द्रसिंह भाटी और श्री शीशराम ओला ने 20 जुलाई, 1981 को राज्य मंत्री पद की शपथ ली।

17 अक्टूबर, 1982 को माथुर मंत्रिमंडल का तीसरी बार विस्तार हुआ जिसमें सर्व श्री हीरालाल देवपुरा, खेतसिंह राठौड़ अहमद बख्श सिन्धी, हनुमान प्रभाकर और दुलाराम मंत्री, सर्व श्री रामकिशन वर्मा, देवेन्द्रसिंह, सुरेन्द्र व्यास और बुलाकीदास कल्ला राज्य मंत्री तथा छोगाराम बाकोलिया और जगतारसिंह कंग उप मंत्री के रूप में शामिल किये गये।

बाद में मुख्यमंत्री ने आपसी मतभेदों के कारण सर्व श्री रामपाल उपाध्याय, हनुमानप्रसाद प्रभाकर, सुरेन्द्र व्यास, नरेन्द्रसिंह भाटी और गोविन्द अमालिया से समय-समय पर त्यागपत्र ले लिये।

यह मंत्रिमंडल 1985 के चुनावों तक कार्य करता रहा लेकिन 21 फरवरी, 85 को डीग में चुनाव प्रचार के दौरान निर्दलीय प्रत्याशी राजा मानसिंह की हत्या के कारण उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए कांग्रेस उच्च सत्ता के निर्देश पर श्री माथुर ने अपने मंत्रिमंडल सहित 23 फरवरी को त्यागपत्र दे दिया।

हीरालाल देवपुरा मंत्रिमंडल

श्री माथुर के त्याग पत्र के फलस्वरूप श्री हीरालाल देवपुरा को मुख्यमंत्री नियुक्त किया गया तथा 23 फरवरी को उन्हें पद की शपथ दिलायी गयी। सर्व श्री परसराम मदेरणा ने मंत्री पद तथा श्री रामकिशन वर्मा ने राज्य मंत्री पद की शपथ भी उनके साथ ग्रहण की। दूसरे दिन 24 फरवरी को श्री चन्दनमल बैद और श्रीमती कमला ने मंत्री पद, श्री गोविन्दसिंह गुर्जर और श्री बुलाकीदास कल्ला ने राज्य मंत्री पद तथा श्रीमती कमला भील, छोगाराम बाकोलिया और श्री जगतारसिंह ने उप मंत्री पद की शपथ ली। इस मंत्रिमंडल ने 10 मार्च, 1985 को चुनाव घोषित होने तथा नयी सरकार के अस्तित्व में आने तक कार्य किया।

उपचुनाव

सातवीं विधान सभा (1980–1985) की अवधि में प्रदेश में चार उप चुनाव हुए जिनका विवरण इस प्रकार है :—

क्रमांक	तिथि	क्षेत्र	निर्वाचित सदस्य मय संबद्ध दल	उपचुनाव का कारण
1.	23 नवम्बर, 1980	वैर (सु.)	श्री जगन्नाथ पहाड़िया (कांग्रेस)	मुख्यमंत्री श्री पहाड़िया को विधान सभा सदस्य बनाने हेतु श्रीमती शांति पहाड़िया (कांग्रेस) द्वारा त्याग पत्र देने से
2	5 जून, 1983	पिण्डवाड़ा (सु.)	श्री सूरमाराम (कांग्रेस)	श्री मूलाराम (कांग्रेस) के निधन से रिक्त।
3.	23 दिसम्बर, 1983	मंडावा	श्री रामनारायण चौधरी (कांग्रेस)	श्री लच्छूराम (जनता—चरण सिंह) के निधन से रिक्त
4.	20 मई, 1984	धानागाजी	श्री धूणीलाल गुप्ता (कांग्रेस)	श्री शोभाराम (कांग्रेस) के निधन से रिक्त

आठवीं विधान सभा : 1985

आठवीं राजस्थान विधान सभा के लिए 31 जनवरी, 1985 को मतदाता सूची का अंतिम रूप से प्रकाशन हुआ, एक फरवरी से आठ फरवरी, 1985 तक नामांकन पत्र लिये गये, 9 फरवरी को इनकी जांच हुई, 11 फरवरी तक नाम वापस लिये गये, 5 मार्च को मतदान हुआ तथा 6 मार्च को मतगणना होकर रात्रि तक परिणामों की घोषणा की गई। श्री हरिदेव जोशी बहुमत प्राप्त कांग्रेस (इ) विधायक दल के सर्व-सम्मति से नेता चुने गये। 10 मार्च को उन्होंने मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की। 11 मार्च, 1985 को उनके मंत्रिमंडल ने शपथ ग्रहण की।

इस चुनाव के दौरान मतदान से पूर्व अजमेर जिले के किशनगढ़ क्षेत्र के कांग्रेस (इ) प्रत्याशी श्री केसरीचन्द चौधरी तथा भरतपुर जिले के डीग क्षेत्र के निर्दलीय प्रत्याशी राजा मानसिंह की मृत्यु हो गई जिससे कुल दो सौ में से, जिनमें 143 सामान्य, 33 अनुसूचित जातियों तथा 24 अनुसूचित जन जातियों के लिए सुरक्षित हैं—198 स्थानों के लिए ही चुनाव हुआ। इसके लिए कुल 4223 प्रत्याशियों ने अपने नामांकन पत्र प्रस्तुत किये, जिनमें 108 जांच के दौरान निरस्त हो गये और 2630 ने अपने नामांकन वापस ले लिये। अतः शेष 1485 ने चुनाव में अपना भाग्य आजमाया। 1981 की जनगणना के अनुसार राज्य की कुल जनसंख्या तीन करोड 43 लाख 64 हजार थी जिसके आधार पर 1985 में लगभग तीन करोड 77 लाख 12 हजार जनसंख्या थी। इस चुनाव में कुल मतदाताओं की संख्या दो करोड 11 लाख 44 हजार 190 थी जिसमें से किशनगढ और डीग क्षेत्र के एक लाख 42 हजार 641 मतदाताओं को छोड़कर शेष मतदाताओं की संख्या दो करोड़ 10 लाख 13 हजार 549 रही। इनमें एक करोड 9 लाख 79 हजार 217 पुरुष और एक करोड़ 34 हजार 332 महिला मतदाता शामिल थीं। इस चुनाव में कुल एक करोड 15 लाख 50 हजार 507 मतदाताओं ने भाग लिया। इससे मतदान का प्रतिशत 1985 के चुनाव में 1980 के 52.16 की तुलना में 54.97 प्रतिशत रहा। इनमें एक करोड़ 13 लाख 65 हजार 612 मत वैध तथा एक लाख 84 हजार 895 मत अवैध करार दिए गये। अवैध मतों का प्रतिशत 1985 में 1980 के चुनाव के 1.83 की तुलना में 1.60 प्रतिशत रहा।

इस चुनाव के लिए कुल 26 हजार 214 मतदान केन्द्र बनाये गये थे जो 1980 के चुनाव की तुलना में 20.52 प्रतिशत अधिक थे। चुनाव में राज कोष से लगभग पांच करोड रुपये खर्च हुए जो प्रति मत औसत 2.38 रुपया तथा प्रति मतदान केन्द्र औसत 1907 रुपया होता है।

मतदान-विश्लेषण

आठवीं विधान सभा के 198 स्थानों के लिए कांग्रेस (इ) दल के 198 प्रत्याशियों ने 53 लाख 18 हजार 26 अर्थात कुल मतों के 46.79 प्रतिशत मत प्राप्त कर 113 स्थानों पर विजय प्राप्त की। भारतीय जनता पार्टी के 117 प्रत्याशियों ने 24 लाख 5389 अर्थात 21.16 प्रतिशत मत प्राप्त कर 38 स्थान, लोकदल के 61 प्रत्याशियों ने 13 लाख 61 हजार 139 अर्थात 11.98 प्रतिशत मत प्राप्त कर 27 स्थान, जनता पार्टी के 31 प्रत्याशियों ने 6 लाख 75 हजार 103 अर्थात 5.94 प्रतिशत मत प्राप्त कर 10 स्थान, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के 17 प्रत्याशियों ने एक लाख 5724 अर्थात 0.93 प्रतिशत मत प्राप्त कर एक स्थान तथा 977 निर्दलीय प्रत्याशियों ने 13 लाख 14 हजार 903 अर्थात 11.57 प्रतिशत मत प्राप्त कर 9 स्थानों पर विजय प्राप्त की। इस चुनाव में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के 47 प्रत्याशियों ने एक लाख 1147 अर्थात 0.81 प्रतिशत, कांग्रेस (एस) के 15 प्रत्याशियों ने 9731 अर्थात 0.09 प्रतिशत तथा कांग्रेस (ज) के 22 प्रत्याशियों ने 4 हजार 450 अर्थात 0.05 प्रतिशत मत प्राप्त किए लेकिन इनका एक भी प्रत्याशी सफल नहीं हो सका।

(भरतपुर), विजय सिंह (रूपवास सु. अ.), नृपेन्द्रसिंह (बयाना), दलजीतसिंह (बाडी), ऋषिकेश मीणा (सपोटरा सु. ज.), रामगोपाल सिसोदिया (खंडार सु. अ.), भरतलाल मीणा (बामनवास सु. ज.), हरिश्चन्द्र पल्लीवाल (गंगापुर), उम्मेदी लाल (हिण्डौन सु. ज.), मूलचन्द मीणा (टोडाभीम सु. ज.), श्रीमती जकिया इनाम (टोंक), राजकुमार जयपाल (अजमेर पूर्व सु. अ.), किशन मोटवानी (अजमेर पश्चिम), गोविन्दसिंह गुर्जर (नसीराबाद), माणकचन्द डाणी (ब्यावर), सोहनसिंह (मसूदा), श्रीमती नीलिमा शर्मा (भिनाय), ललित भाटी (केकडी सु. अ.), हरिमोहन शर्मा (बूंदी), रामकिशन वर्मा (लाडपुरा), शिवनारायण (बारां), मदन महाराज (अटरू सु. अ.) ज्वालाप्रसाद शर्मा (झालरापाटन), इकबाल अहमद (पिडावा), दीपचन्द राठोड (डग सु. अ.), पंकज पंचोली (बेगूं), अमरचन्द (गंगरार सु. अ.), दीनबन्धु वर्मा (कपासन), उदयराम धाकड़ (बड़ी सादड़ी), धनराज मीणा (प्रतापगढ़ सु. ज.), परसिंह (कुशलगढ़ सु. ज.), पन्नालाल (बागीडोरा सु. ज.), श्रीमती कमला भील (सागवाड़ा सु. ज.) शंकरलाल (चौरासी सु. ज.), नाथूराम अहारी (डूंगरपुर सु. ज.), महेन्द्रकुमार भील (आसपुर सु. ज.), कमलाभाई (लसाडिया सु. ज.), गुलाबसिंह शक्तावत (वल्लभनगर), हनुमान प्रसाद प्रभाकर (मावली), मदनलाल (राजसमंद सु. अ.), सी. पी. जोशी (नाथद्वारा), सुश्री गिरिजा व्यास (उदयपुर), खेमराज कटारा (उदयपुर ग्रामीण सु. ज.), थानसिंह (सलूम्बर सु. ज.), भैरूलाल मीणा (सराड़ा सु. ज.), कुबेरसिंह (फलासिया सु. ज.), देवेन्द्रकुमार मीणा (गोगूंदा सु. ज.), हीरालाल देवपुरा (कुम्भलगढ़) लक्ष्मणसिंह (भीम), रामपाल उपाध्याय (सहाड़ा), प्रणवीर व्यास (भीलवाडा) शिवचरण माथुर (मांडलगढ) रतनलाल ताम्बी (जहाजपुर), देवीलाल (शाहपुरा सु. अ.), कर्नल प्रतापसिंह (जैतारण), माधवसिंह दीवान (सोजत), पोकरलाल परिहार (देसूरी सु. अ.), श्रीमती बीना काक (सुमेरपुर), रघुनाथ परिहार (बाली), रामलाल (सिरोही), सूरमाराम (पिंडवाड़ा सु. ज.), छोगाराम बाकोलिया (रेवदर सु. अ.), रघुनाथ विश्नोई (सांचोर), सूरजपालसिंह (भीनमाल), मांगीलाल आर्य (जालोर सु. अ.), मोटाराम (सिवाणा सु. अ.), हेमाराम चौधरी (गुढ़ामलानी), मानसिंह देवड़ा (सरदारपुरा), नरपतराम बरवड (सुरसागर सु अ.), रामसिंह विश्नोई (लूणी), राजेन्द्र चौधरी (बिलाड़ा), नरेन्द्रसिंह भाटी (ओसियां), दामोदरदास आचार्य (नागोर) तथा भंवराराम सूपका (डीडवाना).

योग -112

भारतीय जनता पार्टी

सर्व श्री चुन्नीलाल मेघवाल (सुजानगढ़ सु. अ.), हरिशंकर भामड़ा (रतनगढ), घनश्याम तिवाड़ी (सीकर), हरलालसिंह खर्रा (श्रीमाधोपुर), फूलचन्द गुर्जर (नीम-का-थाना), श्रीमती उजला अरोड़ा (जयपुर ग्रामीण), भंवरलाल शर्मा (हवामहल), कालीचरण सर्राफ (जोहरी बाजार), गिरधारीलाल भार्गव किशनपोल), श्रीमती विद्या पाठक (सांगानेर), रघुवरदयाल गोयल (रामगढ), श्रीमती वसुन्धरा राजे (धोलपुर), शिवचरण सिंह गुर्जर (करौली), डा. किरोडीलाल मीणा (महुआ), ग्यारसीलाल (निवाई सु. अ.), नाथूसिंह (टोडारायसिंह), रमजान खाँ (पुष्कर), जगजीतसिंह (किशनगढ़), गणेशलाल बैरागी (हिंडोली), प्रभुदयाल (नैनवा), मांगीलाल (पाटन सु. अ.), ललितकिशोर चतुर्वेदी (कोटा), दाऊदयाल जोशी (डिगोद), हीरालाल आर्य (पीपलदा सु. अ.), प्रतापसिंह सिंघवी (छबड़ा), हरिकुमार औदिच्य (रामगंज मंडी), हरीश शर्मा (खानपुर), जगन्नाथ (मनोहर थाना), भैरोंसिंह शेखावत (निम्बाहेड़ा) नवनीतलाल निनामा (घाटोल सु. ज.), हीरासिंह चौहान (रायपुर), खंगारसिंह चौधरी (खारची), कुमारी पुष्पा जैन (पाली), चम्पालाल भाटिया (पचपदरा), श्रीमती रतन कंवर (शेरगढ) बिरदमल सिंघवी (जोधपुर), तथा हरिश्चन्द्र कुमावत (नावां)

योग (37)

राजस्थान
वार्षिकी
1988-89

अरावली पर्वत अनेक दृष्टियों से उपयोगी है। इससे अनेक नदियां निकलती हैं। अरावली-पर्वत की ढालों पर अनेक भागों में वन हैं। इन वनों में गोंद, औषधियां, चमड़ा, रंगने के पदार्थ, लाख व लकड़ियां प्राप्त होती हैं। समुद्र से आने वाली हवाओं को थोड़ी बहुत रोकने के लिए यही एक पर्वत श्रेणी राजस्थान में है। पर्वत के ढालों एवं नीचे की भूमि पर चरागाह हैं। इन चरागाहों में भेड़, बकरियां, गायें व अन्य पशु चरते हैं। यह क्षेत्र खनिजों से भरा है।

[3] पूर्व का मैदानी भाग- अरावली पर्वत के पूर्व में राजस्थान का मैदानी भाग है। यही मैदान आगे यमुना व गंगा के मैदान में विलीन हो गया है। सम्पूर्ण राज्य के लगभग एक-चौथाई [23.3 प्रतिशत] भाग में यह मैदानी भाग विस्तृत है। इस भाग में राजस्थान की लगभग 2/5 [43 प्रतिशत] जनसंख्या निवास करती है। इस प्रदेश की पूर्वी सीमा अरावली पर्वत शृंखला के पूर्वी ढाल है तथा दक्षिणी सीमा उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश की सीमाएं है। इस भाग में जयपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, सवाईमाधोपुर, अलवर व टोंक आदि के जिले सम्मिलित किये जा सकते हैं।

बनावट में यह मैदान प्रायः समतल है। इस मैदान में अनेक प्रकार की मिट्टियां पाई जाती हैं। दुमट, लाल व पीली मिट्टियां अजमेर के अधिकांश भाग में, काली मिट्टी, मिश्रित लाल मिट्टी भीलवाड़ा के पूर्वी भाग में व टोंक में मिलती हैं। राजस्थान का यह भाग अधिकांशतः समतल है। इस मैदान में बहने वाली मुख्य नदियां चम्बल व उसकी सहायक नदियां, बनास व बाणगंगा हैं। मिट्टी उपजाऊ है।

इस भाग की जलवायु भी कठोर है किन्तु पश्चिमी राजस्थान जितनी नहीं। गर्मी व सर्दी में उग्रता तो पाई जाती है किन्तु अत्यन्त कठोरता नहीं। इस भाग में अपेक्षाकृत अधिक वर्षा होती है। औसत वार्षिक वर्षा 50 से 100 से.मी. तक होती है। वर्षा में पूर्व से पश्चिम की ओर तथा दक्षिण से उत्तर की ओर कम होने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

राजस्थान का यह भाग सबसे अधिक घना बसा हुआ है। इस भाग की प्रमुख फसलें गेहूं, मक्का, चना, दालें व तिलहन हैं। सिंचाई वाले क्षेत्रों में गन्ना व कपास की प्रमुख उपज है। भरतपुर व अलवर जिला में कृषि योग्य भूमि के लगभग 75 प्रतिशत भाग में, जयपुर व सवाईमाधोपुर जिलों में लगभग 50 प्रतिशत भाग में तथा अजमेर, बूंदी व भीलवाड़ा जिलों में लगभग 30 प्रतिशत भाग में कृषि होती है।

[4] दक्षिण-पूर्वी पठारी भाग - यह हाड़ौती के पठार के नाम से विख्यात है। आगे चलकर यह मालवा के पठार से मिल जाता है। इस भाग में कोटा, बूंदी, झालावाड़ और चित्तौड़ के जिले एवं भीलवाड़ा व उदयपुर जिलों के कुछ भाग सम्मिलित हैं। इस भाग में राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 10 प्रतिशत भाग है जिसमें लगभग 15 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।

सम्पूर्ण पठार अत्यन्त प्राचीन चट्टानों का बना है। यह पठार दक्षिण-भारत के पठार का उत्तरी भाग ही है जो संसार के सर्वाधिक प्राचीन पठारों में से एक है। अरावली पर्वत से निकलने वाली नदियों ने इसको काट-काट कर चौड़ी व उपजाऊ घाटियों का निर्माण कर दिया है। इस प्रदेश में लाल, काली और कछारी मिट्टियां पाई जाती हैं। चम्बल, बनास व बाणगंगा इस क्षेत्र की प्रमुख नदियां हैं।

इस पठारी भाग में गर्मी का औसत तापमान लगभग 32 डिग्री से. रहता है। सर्दियों में 6 से 10 डिग्री से. तापमान रहता है। वर्षा गर्मियों में होती है। औसत वार्षिक वर्षा 100 से.मी. से 125 से.मी. तक होती है।

इस भाग में लम्बी घास, झाड़ियां, बांस, खैर, गूलर, सालर, धौक, ढाक सागवान आदि प्रमुख प्राकृतिक वनस्पतियां हैं। इन वनों से गोंद, लाख, दवाइयां, बांस, इमारती लकड़ियां आदि प्राप्त होती हैं। गेहूं, मक्का, जौ, ज्वार, तिलहन, दालें, तबाकू, कपास व गन्ना इस भाग की प्रमुख फसलें हैं। इसी क्षेत्र में बूंदी, चित्तौड़गढ़ तथा इनसे लगे भागों में अफीम की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है।

विशेष

राजस्थान के प्राकृतिक विभाग अनेक भूगोलविदों ने अपने अपने ढंग से किये हैं। इनमें डा. वी.सी. मिश्र का विभाजन विशेष महत्व का माना गया है, जो इस प्रकार है

[1] पश्चिमी बालुका मैदान

[क] बालूमय शुष्क मैदान [मरुस्थलीय]

[ख] अर्द्धशुष्क मैदान [राजस्थान बागर]

(1) लूनी बेसिन [गोड़वाड़ क्षेत्र]

(11)शेखावाटी प्रदेश [अन्तःस्थलीय प्रवाह क्षेत्र]

(111) उत्तरी घग्घर मैदान।

2- अरावली श्रेणी और पहाड़ी प्रदेश

[क] अरावली श्रेणी तथा भोरत पठार

[ख] उत्तर-पूर्वी पहाड़ी प्रदेश।

जनता दल

सर्व श्री लालचन्द डूडी (मादरा), डूंगरराम (टीबी), चुन्नीलाल इंदलिया (नोखा सु. ज.), भंवरलाल शर्मा (सरदारशहर), श्रीमती सुमित्रासिंह (पिलानी), नवरंगसिंह (नवलगढ़), केसरदेव (लक्ष्मणगढ़ सु. ज.), रामेश्वरदयाल यादव (चौमू), लक्ष्मीनारायण किसान (फुलेरा), जगतसिंह दायमा (बांसूर), महेन्द्र शास्त्री (मंडावर), जगमाल सिंह यादव (तिजारा), सम्पतसिंह (नगर), नत्थीसिंह (नदबई), मोहनप्रकाश (राजाखेड़ा), बहादुरसिंह (दानपुर सु. ज.), भगराज चौधरी (आहोर), गंगाराम चौधरी (बाड़मेर), अब्दुल हादी (चौहटन), नारायणराम बेड़ा (भोपालगढ़), मोहनलाल (बायतु सु. ज.), हरजीराम बुरडक (लाडनूं), मोहनलाल (परबतसर सु. ज.), नाथूराम मिर्धा (मेड़ता), रामदेव चौधरी (मूंडवा), यदुनाथसिंह (नदबई), प्रो. केदारनाथ (गंगानगर), हंसराज (सूरतगढ़), माणकचन्द सुराणा (लूणकरणसर), देवीसिंह भाटी (कोलायत), जयनारायण पूनिया (तारानगर), दिग्विजयसिंह (उणियारा), नारायणसिंह डिग्गी (मालपुरा), रामचन्द्र जाट (बनेड़ा), उम्मेदसिंह (शिव) तथा कल्याण सिंह कालवी (डेगाना)

योग (36)

माकपा

श्री श्योपतसिंह (हनुमानगढ़)।

निर्दलीय

सर्व श्री मुक्तिलाल मोदी (कोटपूतली), मोतीलाल मीणा (सवाईमाधोपुर) हीरालाल (किशनगढ़ सु. ज.), दयाराम परमार (खेरवाड़ा सु. ज.), विजयेन्द्रसिंह (आसींद) अर्जुनसिंह देवड़ा (रानीवाड़ा) मुल्तानाराम (जैसलमेर), मोहन छंगाणी (फलौदी) तथा श्रीमती कृष्णेन्द्र कौर (डीग)

योग (9)

लोकदल

श्री अब्दुल अजीज अहमद (मकराना) ने जनता दल में शामिल होने के शपथ-पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किये हैं और वे लोकदल के सदस्य बने हुए हैं।

अध्यक्ष-उपाध्यक्ष

आठवीं विधानसभा का प्रथम अधिवेशन 19 मार्च, 1985 को आहूत किया गया तथा 20 मार्च को पूर्व मंत्री कांग्रेस (इ) के श्री हीरालाल देवपुरा सर्वसम्मति से अध्यक्ष तथा 29 मार्च को कांग्रेस (इ) के श्री गिरिराज प्रसाद तिवाड़ी सर्वसम्मति से उपाध्यक्ष चुने गये।

श्री देवपुरा 16 अक्टूबर, 1985 को अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देकर मंत्रिमंडल में शामिल हो गये। इस पर उपाध्यक्ष श्री गिरिराज प्रसाद तिवाड़ी 31 जनवरी, 1986 को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुन लिए गये। बाद में उपाध्यक्ष पद पर कांग्रेस (इ) के श्री किशन मोटवानी चुने गये।

हरिदेव जोशी मन्त्रिमंडल

श्री हरिदेव जोशी 9 मार्च, 1985 को कांग्रेस (इ) विधायक दल के सर्वसम्मति से नेता चुने गये तथा 10 मार्च, 1985 को उन्होंने दूसरी बार राज्य की बागडोर संभाली। वे इससे पूर्व 11 अक्टूबर 1973 से 29 अप्रैल, 1977 तक भी राज्य के मुख्यमंत्री रह चुके थे।

श्री जोशी के मंत्रिमंडल ने 11 मार्च, 1985 को शपथ ग्रहण की जिसमें सर्व श्री रामपाल उपाध्याय, रामदेवसिंह, गुलाबसिंह शक्तावत, नरेन्द्रसिंह भाटी और श्रीमती कमला कैबिनेट मंत्री तथा श्री शीशराम ओला और श्री छोगाराम बाकोलिया राज्य मंत्री के रूप में शामिल किये गये।

15 मार्च, 1985 को कांग्रेस (इ) विधायक दल के नेता ने श्री बुलाकीदास कल्ला को शासक दल का मुख्य सचेतक तथा 17 अक्टूबर, 1985 को श्री अश्कअली टाक को उप मुख्य सचेतक नियुक्त किया।

23 जून, 1985 को श्री चन्द्रशेखर शर्मा को संसदीय सचिव के रूप में शपथ दिलाई गई।

16 अक्टूबर, 1985 को श्री हीरालाल देवपुरा मंत्रिमंडल में शामिल किये गये। इसी दिन राज्य मंत्री श्री शीशराम ओला तथा श्री छोगाराम बाकोलिया को पदोन्नत कर कैबिनेट मंत्री, सर्व श्री रामसिंह विश्नोई, हीरालाल इंदौरा, दामोदरदास आचार्य, मूलचन्द मीणा, महेन्द्रकुमार भील, रामकिशन वर्मा, सुजानसिंह यादव और डा. श्रीमती जकिया इनाम को राज्य मंत्री तथा श्रीमती बीना काक को उप मंत्री के रूप में शपथ दिलायी गयी।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी मंत्री और श्री रामसिंह विश्नोई राज्य मंत्री सात फरवरी, 1986 को मन्त्रिमंडल से त्याग पत्र देकर पृथक हो गये। इसी प्रकार श्री रामपाल उपाध्याय ने तीन सितम्बर, 1986 को मंत्री पद से त्याग पत्र दिया।

18 जनवरी, 1988 को कांग्रेस (इ) उच्च सत्ता के निर्देश पर श्री हरिदेव जोशी ने अपने मंत्रिमंडल का त्यागपत्र राज्यपाल को दे दिया जो 20 जनवरी, 1988 को स्वीकृत किया गया।

शिवचरण माथुर मंत्रिमंडल

जोशी मंत्रिमंडल के त्यागपत्र के फलस्वरूप श्री शिवचरण माथुर 20 जनवरी, 1988 को कांग्रेस (इ) विधायक दल के नेता चुने गये तथा इसी दिन उन्होंने मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की। 26 जनवरी को माथुर मंत्रिमंडल में सर्व श्री हनुमान प्रभाकर, गोविन्दसिंह गुर्जर, बुलाकीदास कल्ला और माधवसिंह दीवान कैबिनेट मंत्री तथा वैद्य भैरूंलाल भारद्वाज, श्री अश्कअली टाक और श्रीमती कमला भील राज्य मंत्री के रूप में शामिल किये गये।

6 फरवरी, 1988 को शपथ ग्रहण की दूसरी किश्त में सर्व श्री नरपतराम बरवड़, नारायणसिंह, रघुनाथ विश्नोई, रामकिशन वर्मा और शीशराम ओला को कैबिनेट मंत्री; श्रीमती बीना काक, सुश्री गिरिजा व्यास, चन्द्रशेखर शर्मा, लक्ष्मणसिंह, मांगीलाल आर्य, राजेन्द्र चौधरी और सूरजपालसिंह को राज्य मंत्री तथा श्री खेमराज कटारा को उपमंत्री के रूप में शपथ दिलायी गई। इसी दिन श्री लक्ष्मीनारायण मांभू, श्री जयनारायण बैरवा और श्रीमती हमीदा बेगम को मुख्यमंत्री ने संसदीय सचिव पद की शपथ दिलायी।

8 फरवरी को श्री भरतलाल मीणा उप मंत्री के रूप में मंत्रिमंडल में शामिल किये गये।

इसी दिन राजस्थान कांग्रेस (इ) दल के नेता ने श्री रघुनाथ परिहार और श्री दीपचन्द राठौड़ को शासक दल का क्रमशः मुख्य सचेतक और उप मुख्य सचेतक मनोनीत किया।

परिवर्तन एवं परिवर्द्धन

श्री माथुर की सरकार के गठन के साथ ही कांग्रेस (इ) विधायक दल में असन्तोष उत्पन्न हो गया जो समय पाकर धीरे-धीरे बढ़ता चला गया। पूर्व मुख्यमंत्री द्वय—श्री हरिदेव जोशी और श्री हीरालाल देवपुरा

तथा सांसद श्री नवलकिशोर शर्मा के नेतृत्व में असन्तुष्ट विधायकों और कतिपय सांसदों ने श्री माथुर और प्रदेश कांग्रेस (इ) अध्यक्ष श्री अशोक गहलोत को अपने-अपने पदों से हटाने के लिए एक लम्बा अभियान चलाया। इसी दौरान विधानसभा का बजट सत्र आरंभ हो गया, जिससे असन्तुष्टों को अपनी शक्ति प्रदर्शित करने का अवसर मिल गया। इस स्थिति में कांग्रेस (इ) उच्च सत्ता ने मुख्यमंत्री को यह निदेश दिया कि वे फिलहाल अप्रेल से जुलाई तक का चार माह का लेखानुदान पारित करवाकर विधानसभा का सत्रावसान करा दें। सत्र के दौरान एक अभूतपूर्व घटना यह हुई कि सत्तारूढ़ दल के असन्तुष्ट विधायकों ने नेतृत्व परिवर्तन हेतु अपना दबाव बढ़ाने के लिए 17 मार्च, 1989 को विधान सभा का बहिष्कार किया।

लम्बे संघर्ष और काफी कशमकश के बाद कांग्रेस (इ) उच्च सत्ता ने समस्या के हल के रूप में पूर्व मुख्यमंत्री द्वय श्री जगन्नाथ पहाड़िया और श्री हरिदेव जोशी को क्रमशः 19 फरवरी और 28 अप्रेल को क्रमशः बिहार और असम व मेघालय का राज्यपाल मनोनीत कर दिया तथा 7 जून, 1989 को श्री अशोक गहलोत के स्थान पर श्री हीरालाल देवपुरा को प्रदेश कांग्रेस (इ) अध्यक्ष नियुक्त कर दिया।

इसी के साथ राज्य मंत्रिमंडल में परिवर्तन एवं परिवर्द्धन करने के लिए मुख्यमंत्री को निर्देश दिया गया जिसके फलस्वरूप 8 जून, 1989 को (1) श्री अशोक गहलोत, (2) श्रीमती कमला, (3) श्री गुलाबसिंह शक्तावत और (4) श्री रामसिंह विश्नोई को कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ दिलाई गई। इसी दिन सर्वश्री (1) सुजानसिंह यादव, (2) हीरालाल इन्दौरा, (3) महेन्द्रकुमार परमार, (4) भैरूंलाल मीणा, (5) भरतलाल मीणा और (6) दीपचंद राठौड़ को राज्य मंत्री तथा श्री ललित भाटी को उपमंत्री पद की शपथ दिलाई गई।

इनमें श्री भरतलाल मीणा अभी तक उप मंत्री थे जिन्हें इस परिवर्तन में पदोन्नति दी गई। इसी प्रकार श्री दीपचंद राठौड़ अभी तक कांग्रेस (इ) विधायक दल के उप मुख्य सचेतक थे जिन्हें राज्य मंत्री बनाया गया।

इसी दिन मुख्यमंत्री ने कैबिनेट मंत्री श्री हनुमान प्रभाकर और राज्य मंत्री श्री लक्ष्मणसिंह का त्यागपत्र राज्यपाल के पास स्वीकृति हेतु भिजवा दिया।

श्री दामोदरदास आचार्य और श्री धनराज मीणा को 8 जून को जयपुर न पहुँचने के कारण 11 जून को क्रमशः राज्य मंत्री और उप मंत्री पद की शपथ दिलाई गई। इस परिवर्तन और परिवर्द्धन के परिणामस्वरूप राज्य मंत्रिमंडल के सदस्यों की संख्या 35 (मुख्यमंत्री सहित) तक पहुंच गई जिसमें 13 कैबिनेट मंत्री, 16 राज्य मंत्री, 3 उपमंत्री और 3 संसदीय सचिव शामिल हैं।

मंत्रिमंडल में हुए इस परिवर्द्धन एवं परिवर्तन के फलस्वरूप होने वाला विभागीय परिवर्तन निम्न प्रकार है—

मंत्रीगण

श्री शिवचरण माथुर, मुख्यमंत्री

कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग, जन-अभियोग निराकरण विभाग, सामान्य प्रशासन विभाग, राजनीतिक विभाग, मंत्रिमंडल सचिवालय, आयोजना विभाग, आयोजना (जनशक्ति विभाग), वित्त एवं कराधान विभाग, उद्योग विभाग, ऊर्जा विभाग, ऊर्जा के वैकल्पिक साधन, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, प्राथमिक शिक्षा विभाग, एकीकृत ग्रामीण विकास विभाग तथा विशिष्ठ योजना संगठन

श्री अशोक गहलोत, गृहमंत्री

गृह विभाग, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग तथा इन्दिरा गांधी नहर परियोजना क्षेत्र की जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग से सम्बन्धित समस्त योजनाएं एवं कार्य

श्री माधवसिंह दीवान, चिकित्सा मंत्री

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग

श्री गोविन्दसिंह गुर्जर, वन मंत्री

वन (बंजर भूमि विकास कार्य सहित) विभाग, पर्यावरण विभाग, भ्रष्टाचार निरोधक विभाग तथा गृह रक्षा दल एवं नागरिक सुरक्षा विभाग

श्री बुलाकीदास कल्ला, मंत्री, सार्वजनिक निर्माण विभाग

सार्वजनिक निर्माण विभाग, इन्दिरा गांधी नहर परियोजना, उपनिवेशन विभाग तथा सिंचित क्षेत्रीय विकास विभाग

श्री शीशराम ओला, सिंचाई मंत्री

सिंचाई विभाग, रावी-व्यास नदियों के सिस्टम से सम्बन्धित कार्य, आबकारी विभाग तथा सैनिक कल्याण विभाग

श्री नरपतराम बरवड़, राजस्व मंत्री

राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग तथा मरू-विकास विभाग

श्री नारायण सिंह, खाद्य मंत्री

खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग तथा बाढ़ एवं अकाल सहायता विभाग

श्री रामकिशन वर्मा, यातायात मंत्री

यातायात विभाग, मोटर गैरेज विभाग तथा राजकीय उपक्रम विभाग

श्री रघुनाथ विश्नोई, विधि मंत्री

विधि एवं न्याय विभाग, संसदीय मामलात विभाग तथा चुनाव विभाग

श्रीमती कमला, कृषि मंत्री

कृषि विभाग तथा संस्कृत शिक्षा विभाग

श्री गुलाबसिंह शक्तावत, स्वायत्त शासन मंत्री

स्वायत्त शासन विभाग, आवासन एवं नगरीय विकास विभाग, नगर आयोजना विभाग तथा श्रम एवं नियोजन विभाग

श्री रामसिंह विश्नोई, सहकारिता मंत्री

सहकारिता विभाग

राज्य मंत्रीगण

श्री दामोदर दास आचार्य

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों से सम्बन्धित शिक्षा (स्वतंत्रचार्ज), कृषि तथा संस्कृत शिक्षा

श्री मांगीलाल आर्य

आयुर्वेद विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), भेड़ एवं ऊन विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

श्रीमती कमला भील

समाज कल्याण विभाग (स्वतन्त्र चार्ज) तथा सार्वजनिक निर्माण विभाग।

श्रीमती बीना काक

परिवार कल्याण विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), कला, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), आयोजना विभाग तथा आयोजना (जनशक्ति) विभाग

श्री चन्द्रशेखर

खेल-कूद विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), कारागृह विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), स्वायत शासन विभाग, नगर आयोजन विभाग तथा नगरीय विकास एवं आवासन विभाग

श्री अश्क अली टाक

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), भाषायी अल्पसंख्यक विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), इन्दिरा गांधी नहर परियोजना, उपनिवेशन विभाग तथा सिंचित क्षेत्रीय विकास विभाग

वैद्य भैरूलाल भारद्वाज

ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग (स्वतन्त्र चार्ज) तथा जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग

डा. गिरिजा व्यास

पर्यटन (स्वतन्त्र चार्ज), महिला, शिशु एवं पोषाहार विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), भाषा विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), वित्त एवं करारोपण विभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग तथा प्राविधिक शिक्षा विभाग

श्री सूरजपाल सिंह

पशुपालन एवं दुग्ध विकास विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), बाढ़ एवं अकाल सहायता विभाग तथा खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग

श्री राजेन्द्र चौधरी

देवस्थान विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), वक्फ विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), उद्योग विभाग, ऊर्जा विभाग तथा ऊर्जा के वैकल्पिक साधन

श्री सुजानसिंह यादव

मत्स्य विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), राज्य लॉटरी विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), एकीकृत ग्रामीण विकास विभाग, विशिष्ठ योजना संगठन विभाग तथा आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग

श्री हीरालाल इन्दोरा

खान विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), राज्य बीमा विभाग (स्वतन्त्र चार्ज), अल्प बचत विभाग (स्वतन्त्र चार्ज) तथा सिंचाई विभाग

द्वितीय लोकसभा [1957–1962]

द्वितीय लोकसभा में भी राजस्थान के लिए 22 स्थान निर्धारित थे जिनमें कोटा, बीकानेर, उदयपुर और सवाईमाधोपुर द्वि-सदस्यीय तथा बांसवाड़ा क्षेत्र अनुसूचित जनजातियों के लिये सुरक्षित था। यह चुनाव भी राज्य विधान सभा चुनावों के साथ 25 फरवरी से 12 मार्च 1957 के मध्य हुआ जिसमें कांग्रेस को 19 और निर्दलियों को तीन स्थान प्राप्त हुए।

निर्वाचित सदस्यों के नाम, सम्बद्ध दल और क्षेत्र इस प्रकार हैं—

कांग्रेस—सर्व श्री भोगजी (बांसवाड़ा सुर. जनजाति), दीनबन्धु (उदयपुर सुर. जनजाति), माणिक्यलाल वर्मा (उदयपुर सामान्य), गजाधर सोमाणी (दौसा), हरिश्चन्द्र माथुर (पाली), हीरालाल शास्त्री (सवाईमाधोपुर सामान्य), जगन्नाथ पहाड़िया (सवाईमाधोपुर सुर. अ. जाति) जसवंतराज मेहता (जोधपुर), मथुरादास माथुर (नागौर), मुकुटबिहारी भार्गव (अजमेर), नेमीचन्द कासलीवाल (कोटा-सामान्य), ओंकारलाल बैरवा (कोटा सुर. अ. जा.), पन्नालाल बारूपाल (बीकानेर सुर. अ. जा.), राजबहादुर (भरतपुर), राधेश्याम रा. मोरारका (झुन्झुनूं), रमेशचन्द्र व्यास (भीलवाड़ा), रामेश्वर टांटिया (सीकर), शोभाराम (अलवर) तथा सूरजरतन दम्माणी (जालौर)।

निर्दलीय—सर्व श्री हरिश्चन्द्र शर्मा (जयपुर), डा. करणीसिंह (बीकानेर) तथा रघुनाथसिंह (बाड़मेर)।

उपचुनाव

इस अवधि में नागौर क्षेत्र के सांसद श्री मथुरादास माथुर ने प्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष पद पर निर्वाचित हो जाने के कारण लोकसभा से त्यागपत्र दे दिया। इस पर 1960 में हुए उपचुनाव में कांग्रेस के ही श्री नरेन्द्रकुमार साधी चुने गये।

तृतीय लोकसभा [1962–1967]

तृतीय लोकसभा में भी राजस्थान की सदस्य संख्या 22 यथावत रही लेकिन इसमें द्वि-सदस्यीय चुनाव क्षेत्र समाप्त कर दिए गए। यह चुनाव भी राज्य विधान सभा चुनावों के साथ 19 से 25 फरवरी 1962 की अवधि में सम्पन्न हुआ। इस चुनाव में कांग्रेस को 14, स्वतन्त्र पार्टी तथा निर्दलियों को तीन-तीन तथा भारतीय जनसंघ और राम-राज्य परिषद् को एक-एक स्थान पर सफलता मिली।

निर्वाचित सदस्यों की सूची मय संबद्ध दल और क्षेत्र इस प्रकार है- कांग्रेस के सर्व श्री बृजराजसिंह (झालावाड़), घूलेश्वर मीणा (उदयपुर सुर० जनजाति), हरिश्चन्द्र माथुर (जालौर), जसवंतराज मेहता (पाली), डा० कालूलाल श्रीमाली (भीलवाड़ा), माणिक्यलाल वर्मा (चित्तौड़गढ़), मुकुटबिहारी भार्गव (अजमेर), पन्नालाल बारूपाल (गंगानगर सुर० अ० जा०), राजबहादुर (भरतपुर), राधेश्याम रा० मोरारका (झुंझुनूं), रामेश्वर टांटिया (सीकर), रतनलाल (बांसवाड़ा सु० जनजाति), टीकाराम पालीवाल (हिण्डौन) तथा सुरेन्द्र कुमार डे (नागौर)।

स्वतंत्र पार्टी के सर्व श्री महाराज कुमार पृथ्वीराज (दौसा), केसरलाल कवि (सवाईमाधोपुर सुर० अ० जा०) तथा महारानी गायत्री देवी (जयपुर)।

भारतीय जनसंघ के श्री ओंकारलाल बैरवा (कोटा सुर० अ० जा०)

रामराज्य परिषद् के श्री तनसिंह (बाड़मेर)

निर्दलीय सर्व श्री डा० करणीसिंह (बीकानेर), लाला काशीराम गुप्ता (अलवर) तथा डा० लक्ष्मी-मल्ल सिंघवी (जोधपुर)।

उपचुनाव-भीलवाड़ा से निर्वाचित डा० कालूलाल श्रीमाली केन्द्र में शिक्षा मंत्री बनाए गए थे। 1963 में कामराज योजना के अन्तर्गत उन्होंने मन्त्री पद से और बाद में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त होने पर लोकसभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। इस पर 27 मई 1964 को हुए उपचुनाव में श्री शिवचरण माथुर चुने गये।

चतुर्थ लोकसभा (1967-1971)

चतुर्थ लोकसभा में राजस्थान के सदस्यों की संख्या 22 से बढ़कर 23 हो गई। इनमें 16 सामान्य चार अनुसूचित जातियों तथा तीन स्थान अनुसूचित जनजातियों के लिए सुरक्षित थे। यह चुनाव भी राज्य विधान सभा चुनावों के साथ 15,18 और 20 फरवरी 1967 को सम्पन्न हुआ जिसमें कांग्रेस को दस स्वतन्त्र पार्टी को आठ, भारतीय जनसंघ को तीन तथा निर्दलियों को दो स्थान प्राप्त हुए। निर्वाचित सदस्यों की सूची, दल तथा क्षेत्र इस प्रकार है-

कांग्रेस के सर्व श्री अमृत नाहटा (बाड़मेर), मास्टर भोलानाथ (अलवर) विश्वेश्वरनाथ भार्गव (अजमेर), हीरजी (बांसवाड़ा सुर० जनजाति), जगन्नाथ पहाड़िया (हिण्डौन सुर अ जा) नरेन्द्र कुमार सांघी (जोधपुर), ओंकारलाल बोहरा (चित्तौड़गढ़) पन्नालाल बारूपाल (गंगानगर सु अ जा) रमेशचन्द्र व्यास (भीलवाड़ा), तथा धूलेश्वर मीणा (उदयपुर सु० जनजाति)

स्वतंत्र पार्टी के सर्व श्री पृथ्वीराज (दौसा) देवकीनन्दन पाटोदिया (जालोर) [illegible] (टोंक सुर. अ.जा.), मीठालाल मीणा (सवाईमाधोपुर सु जनजाति) नन्दकुमार [illegible] (नागौर) [illegible] बिड़ला (झुन्झुनूं), सुरेन्द्रकुमार तापड़िया (पाली) तथा राजमाता गायत्री देवी (जयपुर)।

भारतीय जनसंघ के सर्व श्री बृजराजसिंह (झालावाड़) [illegible] बैरवा (कोटा सु अ जा) तथा श्रीगोपाल साबू (सीकर)।

निर्दलीय डा. करणीसिंह (बीकानेर) तथा बृजेन्द्रसिंह (भरतपुर)।

उपचुनाव

इस अवधि में दौसा क्षेत्र से सांसद श्री पृथ्वीराज का निधन हो गया। [illegible] 1968 में हुए उपचुनाव में कांग्रेस के श्री नवलकिशोर शर्मा चुने गये।

पंचम लोकसभा (1971-1977)

चतुर्थ लोकसभा की अवधि यद्यपि मार्च 1972 तक निर्धारित थी, [illegible] 1969 में [illegible] कांग्रेस के विभाजन तथा तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों के कारण यह दिसम्बर 1970 में भंग कर दी गई। पंचम लोकसभा के चुनाव मध्यावधि के रूप में हुए। इसमें राजस्थान के 23 [illegible] जिनमें 16 सामान्य चार अनुसूचित जातियों तथा तीन अनुसूचित जनजातियों के लिए सुरक्षित थे। इसके लिए 1,4 और 6 मार्च 1971 को मतदान हुआ तथा 10 और 11 मार्च को मतगणना हुई।

इस चुनाव में [illegible] 32 [illegible] 44 हजार 550 [illegible] 71 लाख 58 हजार 72 ने उनके मताधिकार का उपयोग किया। [illegible] 54.5 [illegible]। चुनाव में कुल 129 उम्मीदवारों ने [illegible] 23 [illegible]

भारतीय जनसंघ के 7, संयुक्त समाजवादी दल के दो, विशाल हरियाणा पार्टी और भारतीय साम्यवादी दल का एक-एक, भारतीय क्रांति दल के 9, कांग्रेस (एन) के 4, मार्क्सवादी साम्यवादी दल के तीन तथा निर्दलीय 71 शामिल थे।

चुनाव में कांग्रेस (ज) को 14, भारतीय जनसंघ को 4, स्वतंत्र पार्टी को 3 तथा निर्दलीयों को दो स्थान प्राप्त हुए। निर्वाचित सदस्यों के नाम संबद्ध दल तथा चुनाव क्षेत्र इस प्रकार हैं-

कांग्रेस (जगजीवनराम)

सर्व श्री अमृत नाहटा (बाड़मेर), विश्वेश्वरनाथ भार्गव (अजमेर), कप्तान छुट्टनलाल (सवाईमाधोपुर सु. ज. जा.), डा. हरिप्रसाद शर्मा (अलवर), हीरालाल (बांसवाड़ा सुर. जनजाति), जगन्नाथ पहाड़िया (हिण्डौन सु. अ. जा.), मूलचन्द डागा (पाली), नरेन्द्र कुमार सांघी (जालौर), नाथूराम मिर्धा (नागौर), नवलकिशोर शर्मा (दौसा), पन्नालाल बारूपाल (गंगानगर सु. अ.जा.), शिवनाथसिंह (झुन्झुनूं), श्रीकिशन मोदी (सीकर) तथा राजबहादुर (भरतपुर)।

भारतीय जनसंघ

सर्व श्री विश्वनाथ झुन्झुनवाला(चित्तौड़गढ), हेमेन्द्रसिंह बनेड़ा (भीलवाड़ा),बृजराजसिंह (झालावाड़) तथा ओंकारलाल बैरवा (कोटा)।

स्वतंत्र पार्टी

सर्व श्री रामकंवार बैरवा (टोंक सु. अ.जा.), लालिया भाई (उदयपुर सु. जनजाति) तथा राजमाता गायत्री देवी (जयपुर)।

निर्दलीय

डॉ० करणीसिंह (बीकानेर) तथा राजमाता कृष्णाकुमारी (जोधपुर)।

उप चुनाव इस अवधि में कोई नहीं हुआ।

छठी लोकसभा (1977–1980)

पंचम लोकसभा यद्यपि पांच वर्ष तक के लिए ही चुनी गई थी। इसलिए उसकी अवधि मार्च 1976 में ही समाप्त होने को थी लेकिन आपात काल में संविधान में संशोधन कर लोकसभा की अवधि बढ़ा ली गई। अतः छठी लोकसभा का चुनाव आपात काल की समाप्ति के बाद 16 और 19 मार्च 1977 को हुआ तथा मतगणना 20 मार्च को हुई।

इस चुनाव में राजस्थान से निर्वाचित होने वाले सदस्यों की संख्या 23 से बढ़कर 25 हो गई लेकिन अनुसूचित जातियों और जनजातियों की सीटें क्रमशः चार और तीन यथावत रहीं। इस बार मतदाताओं की कुल संख्या एक करोड़ 52 लाख 40 हजार 432 थी जिसमें 86 लाख 72 हजार 451 ने अर्थात 56.90 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। इनमें 2 लाख 68 हजार 993 अर्थात 3.10 प्रतिशत मत अवैध तथा 86 लाख 4426 मत वैध करार दिए गये।

छठे लोकसभा चुनाव में आपात काल की समाप्ति के बाद नवगठित जनता पार्टी ने सत्तारूढ़ कांग्रेस दल को जबरदस्त चुनौती दी जिसमें कांग्रेस केवल एक सीट नागौर में श्री नाथूराम मिर्धा की जीत पाई शेष सभी 24 स्थानों पर जनता पार्टी के प्रत्याशी, जिन्होंने स्वयं का कोई चुनाव चिन्ह नहीं मिलने पर पृथक

लोकदल के चिन्ह "हलधर" पर चुनाव लड़ा था, विजयी रहे। निर्वाचितों की सूची क्षेत्र वार इस प्रकार है-

सर्व श्री अमृत नाहटा (पाली), बेगाराम (गंगानगर सु. अ. जा.), भानुकुमार शास्त्री (उदयपुर), दौलतराम सारण (चूरू), हरिराम चौधरी (बीकानेर), हीरामाई (बांसवाड़ा सु. जनजाति), हुकमाराम डांगी (जालोर सु. अ. जा.), जगदीशप्रसाद माथुर (सीकर), कन्हैयालाल (झुंझुनू), कृष्णकुमार गोयल (कोटा) लालिया भाई (सलूम्बर सु. जनजाति), मीठालाल मीणा (सवाईमाधोपुर सु. जनजाति) रामकंवार बैरवा (टोंक सु. अ.जा.), रामजीलाल यादव (अलवर), पं. रामकिशन शर्मा (भरतपुर), रणछोड़दास गट्टाणी (जोधपुर), रूपलाल सोमानी (भीलवाड़ा), सतीशचन्द्र अग्रवाल (जयपुर), श्यामसुन्दर सोमानी (चित्तौड़गढ़), श्यामसुन्दरलाल जाटव (बयाना सु. अ. जा.), तनसिंह (बाड़मेर) श्रीकृष्ण शारदा (अजमेर), नाथूसिंह (दौसा) तथा चतुर्भुज धाकड़ (झालावाड़)।

उप चुनाव इस अवधि में कोई नहीं हुआ।

सप्तम लोकसभा (1980-1984)

सातवीं लोकसभा का चुनाव यद्यपि मार्च 1982 में होना था लेकिन केन्द्र में सत्तारूढ़ जनता पार्टी के आपसी झगड़ों और खींचतान के कारण लोकसभा अगस्त 1979 में ही भंग कर दी गई तथा जनवरी 1980 में मध्यावधि चुनाव करा दिए गये। इस चुनाव में राजस्थान से निर्वाचित होने वाले लोकसभा सदस्यों की संख्या 25 यथावत रही और अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के प्रतिनिधियों की संख्या भी क्रमशः चार और तीन यथावत रही।

राजस्थान में 3 और 6 जनवरी को सम्पन्न इस चुनाव में मतदाताओं की कुल संख्या एक करोड़ 77 लाख 63 हजार 621 थी, जिसमें 97 लाख 9580 अर्थात 54.66 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। इनमें 2 लाख 34 हजार 601 अर्थात 2.42 प्रतिशत मत अवैध तथा 94 लाख 74 हजार 979 मत वैध करार दिये गये।

चुनाव परिणाम

चुनाव में कांग्रेस (इ) दल को सर्वाधिक 18, जनता एस (लोकदल) को दो, जनता पार्टी को चार तथा कांग्रेस (अर्स) को केवल एक स्थान प्राप्त हुआ। निर्वाचित सदस्यों के नाम इस प्रकार है-

कांग्रेस (इ)- सर्व श्री आचार्य भगवान देव (अजमेर), अशोक गहलोत (जोधपुर) बनवारी लाल बैरवा (टोंक-सु. अ. जाति), भीखा भाई (बांसवाड़ा-सु. अ. जनजाति) गिरधारीलाल व्यास (भीलवाड़ा) जगन्नाथ पहाड़िया (बयाना-सु. अ जाति), जयनारायण रोत (सलूम्बर सु. अ. जनजाति) मनफूलसिंह भादू (बीकानेर), मोहनलाल सुखाड़िया (उदयपुर), मूलचन्द डागा (पाली), नवल किशोर शर्मा (दौसा) राजेश पायलट (भरतपुर), रामकुमार मीणा (सवाईमाधोपुर-सु. अ. जनजाति), रामसिंह यादव (अलवर) बीरबल (गंगानगर-सु. अ. जाति), विरधाराम फुलवारिया (जालोर- सु. अ. जाति) वृद्धिचन्द जैन (बाड़मेर) तथा श्रीमती निर्मला कुमारी शक्तावत (चित्तौड़गढ़)।

जनता पार्टी- सर्व श्री भीमसिंह मंडावा (झुंझुनूं), चतुर्भुज धाकड़ (झालावाड़) कृष्णकुमार गोयल (कोटा) तथा सतीशचन्द्र अग्रवाल (जयपुर)।

जनता- एस (लोकदल) - श्री कुम्भाराम आर्य (सीकर) तथा श्री दौलतराम सारण (चूरू)

कांग्रेस (अर्स)- श्री नाथूराम मिर्धा (नागौर)

उपचुनाव

इस चुनाव में बयाना (सु० अ० जाति) से निर्वाचित कांग्रेस (इ) सदस्य श्री जगन्नाथ पहाड़िया

ने राज्य कांग्रेस (इ) विधायक दल का नेता चुन जाने के कारण लोकसभा से त्यागपत्र दे दिया। इसरे 1980 में ही उप चुनाव हुआ जिसमें कांग्रेस (इ) के श्री लालाराम के न चुने गये

दूसरा उप चुनाव उदयपुर क्षेत्र से आम चुनाव में निर्वाचित श्री मोहन लाल सुखाडिया का 2 फरवरी, 1982 को निधन हो जाने के कारण हुआ। 1982 में ही हुए इस उप चुनाव में कांग्रेस (इ) के श्री दीनबन्धु वर्मा चुन गये।

आठवीं लोकसभा (1984)

आठवीं लोकसभा के चुनाव राजस्थान में 24 दिसम्बर, 1984 को हुए तथा 28 दिसम्बर को चुनाव-परिणाम घोषित हुए। इस चुनाव में भी सदस्य सख्या 25 तथा अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए सुरक्षित क्षेत्रों की संख्या क्रमशः चार और तीन यथावत रही। मतदाताओं की कुल सख्या 2 करोड 1 लाख 16 हजार 152 थी जिनमें एक करोड 14 लाख 64 हजार 851 अर्थात 56.99 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। इसमें 2 लाख 76 हजार 594 मत अर्थात 2.41 प्रतिशत अवैध तथा शेष एक करोड 11 लाख 88 हजार 257 वैध करार दिए गये।

इस चुनाव में राज्य की सभी 25 सीटें पर कांग्रेस (इ) ने कब्जा कर लिया जिसे कुल 58 लाख 98 हजार 116 अर्थात कुल वैध मतों के 52.27 प्रतिशत मत प्राप्त हुए। किसी दल को प्राप्त शत-प्रतिशत सफलता राजस्थान के संसदीय इतिहास की प्रथम घटना है।

शेष दलों में भारतीय जनता पार्टी को 26 लाख 50 हजार 381 अर्थात 23.69 प्रतिशत, लोकदल को 12 लाख 56 हजार 261 अर्थात 11.23 प्र० श०, जनता पार्टी को 4 लाख 32 हजार 700 अर्थात 3.87 प्रतिशत, माकपा को 20 हजार 138 अर्थात 0.18 प्रतिशत भाकपा को 37 हजार 260 अर्थात 0.33 प्र० श०, कांग्रेस (जे०) को एक लाख 24 हजार 186 अर्थात 1.11 प्र० श०, कांग्रेस (एस) को 7094 अर्थात 0 06 प्र० श० तथा निर्दलियो को 7 लाख 62 हजार 121 अर्थात 6 81 प्रतिशत मत प्राप्त हुए लेकिन इनमे लोकसभा में अपना खाता कोई दल नही खोल सका।

निर्वाचित लोकसभा सदस्यों की सूची में सर्व श्री अलखाराम (सलूम्बर सु. जन जाति), अशोक गहलोत (जोधपुर), बलराम जाखड (सीकर), बनवारीलाल बैरवा (टोंक सु. अ जाति), बीरबल (गंगानगर सु. अ. जाति), बूटासिंह (जालौर सु.अ.जाति), गिरधारीलाल व्यास (भीलवाडा), जुझारसिंह (झालावाड), श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया (उदयपुर), कुंवर नटवरसिंह (भरतपुर), लालाराम केन (बयाना सु. अ. जाति), मनफूलसिंह भादू (बीकानेर), मोहरसिंह राठौड (चूरू), मोहम्मद अय्यूब खाँ (झुन्झुनू), मूलचन्द डागा (पाली), नवलकिशोर शर्मा (जयपुर), श्रीमती निर्मला कुमारी शक्तावत (चित्तौड़गढ), प्रभुलाल रावत (बासवाडा सु. जनजाति), राजेश पायलट (दौसा), रामकुमार मीणा (सवाईमाधोपुर सु. जनजाति), रामसिंह यादव (अलवर), शांतिकुमार धारीवाल (कोटा), वृद्धिचन्द जैन (बाडमेर), रामनिवास मिर्धा (नागौर) तथा विष्णु मोदी (अजमेर) शामिल हैं।

उप चुनाव

1985 में चूरू क्षेत्र के सांसद श्री मोहरसिंह राठौड का निधन हो गया। इस पर 16 दिसम्बर, 1985 को हुए उपचुनाव में कांग्रेस (इ) के श्री नरेन्द्रकुमार बुडानिया चुने गये।

इसी प्रकार 1987 की जनवरी में पाली क्षेत्र के सांसद श्री मूलचन्द डागा का निधन हो जाने से 17 जून, 1988 को उप चुनाव हुआ जिसमें कांग्रेस के श्री शंकरलाल चुने गये।

राज्य सभा

राजस्थान विधान सभा क्षेत्र से 1952 से 1959 तक राज्य सभा के लिए 9 स्थान र्धारित थे जो 1960 में बढ़कर 10 हो गये। इनके अलावा एक नवम्बर, 1956 को राजस्थान में लीन होने से पूर्व अजमेर राज्य की पृथक विधान सभा कार्यरत थी जहाँ से राज्य सभा के लिए एक सदस्य ना जाता था।

1952 से अप्रेल 1988 तक राजस्थान से कुल 56 व्यक्ति राज्य सभा के सदस्य चुने गये है जिनमें छ सदस्य द्वितीय और तृतीय अवधि के लिए निर्वाचित भी शामिल है।

1952 में राज्य सभा की स्थापना होने पर राजस्थान से 9 तथा अजमेर से एक सदस्य का चुनाव आ। इनमें एक-तिहाई अर्थात तीन सदस्यों ने 1954 में और तीन ने 1956 में अवकाश ग्रहण किया। ष संदस्यों ने 1958 में पूरी अवधि समाप्त होने पर अवकाश प्राप्त किया।

1952 से 1964 तक राज्य सभा के द्वि-वार्षिक और उप चुनावों में निर्वाचित सदस्यों की सूची स प्रकार है-

1.	श्री रामनाथ पोद्दार	(1952–54)	कांग्रेस
2.	श्री महेन्द्रसिंह राणावत	(1952–54)	निर्दलीय
3.	श्री बरकतुल्ला खाँ	(1952–57)	कांग्रेस
4.	श्री डा० कालूलाल श्रीमाली	(1952–62)	कांग्रेस
5.	श्रीमती शारदा भार्गव	(1952–62 तथा 1964–65)	कांग्रेस
6.	श्री स्वामी केशवानन्द	(1952–64)	कांग्रेस
7.	मो० अब्दुल शकूर (1952–68)	(प्रारंभ में अजमेर क्षेत्र से)	कांग्रेस
8.	श्री हरिश्चन्द्र माथुर	(1952–57)	निर्दलीय
9.	श्री महारावल लक्ष्मणसिंह	(1952–62)	निर्दलीय
0.	श्री राजाधिराज सरदारसिंह खेतड़ी	(1952)	निर्दलीय
1.	श्री मास्टर आदित्येन्द्र	(1954–60)	कांग्रेस
2.	श्री विजयसिंह सिरियारी	(1954–64)	कांग्रेस
3.	श्री जयनारायण व्यास	(1956–63)	कांग्रेस
4.	श्री टीकाराम पालीवाल	(1958–62)	कांग्रेस
15.	श्री कुम्भाराम आर्य	(1960–64)	कांग्रेस
.6.	कु० जसवंतसिंह	(1956–62)	निर्दलीय
17.	श्री नेमीचन्द कासलीवाल	(1960–64)	
18.	श्री पी.एन. काटजू	(1962–68)	
19.	श्री सवाई मानसिंह (जयपुर)	(1962–65)	

1965

20 . श्री जगन्नाथ ..

1.

1967–उपचुनाव

4.	श्री रामनिवास मिर्धा	कांग्रेस
5.	हरिश्चन्द्र माथुर (दूसरी बार)	कांग्रेस

1968 से 1974

1.	श्री महेन्द्रकुमार मोहता	स्वतंत्र पार्टी
2.	श्री कुम्भाराम आर्य	भारतीय क्रांति दल
3.	श्री रामनिवास मिर्धा (दूसरी बार)	कांग्रेस
4.	श्री हरिश्चन्द्र माथुर (निधन 1968)	कांग्रेस

सितम्बर, 1968 उपचुनाव

1.	श्री बालकृष्ण कौल	कांग्रेस

1970 से 1976

1.	श्री मोहम्मदउस्मान आरिफ	कांग्रेस
2.	श्री जगदीश प्रसाद माथुर	भारतीय जनसंघ
3.	श्रीमती नारायणी देवी वर्मा	कांग्रेस

1972 से 1978

1.	रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत	कांग्रेस
2.	श्री जमुनालाल बैरवा	कांग्रेस
3.	श्री गणेशलाल माली	कांग्रेस

1974 से 1980

1.	श्री नत्थीसिंह	कांग्रेस
2.	श्री मास्टर किशनलाल शर्मा	कांग्रेस
3.	श्री ऋषिकुमार मिश्र	कांग्रेस
4.	श्री रामनिवास मिर्धा (तीसरी बार)	कांग्रेस

1976 से 1982

1.	श्री दिनेशचन्द्र स्वामी	कांग्रेस
2.	श्री मोहम्मदउस्मान आरिफ (द्वितीय अवधि)	कांग्रेस
3.	श्रीमती ऊषी खान	कांग्रेस

1978 से 1984

1.	श्री राधेश्याम रा० मोरारका	जनता पार्टी
2.	श्री हरिशंकर भामडा	जनता पार्टी
3.	श्री भीमराज चौधरी	कांग्रेस (इ)

1980 से 1986

1.	मौलाना असरुल हक	कांग्रेस (इ)
2.	श्री धुलेश्वर मीणा	कांग्रेस (इ)
3.	श्री जसवंतसिंह	जनता पार्टी
4.	श्री रामनिवास मिर्धा (चौथी बार)	कांग्रेस (इ)

1982 से 1988

1.	श्री भुवनेश चतुर्वेदी	कांग्रेस (इ)
2.	श्री नत्थीसिंह	कांग्रेस (इ)
3.	श्री मोहम्मदउस्मान आरिफ (तृतीय अवधि)	कांग्रेस (इ)

1984 से 1990

1. श्री भीमराज चौधरी (द्वितीय अवधि) — कांग्रेस (इ)
2. श्रीमती शांति पहाडिया — कांग्रेस (इ)
3. श्री कृष्णाकुमार बिडला — निर्दलीय [कांग्रेस (इ) समर्थित]

1985 (उपचुनाव)

1. श्री डा० हरिप्रसाद शर्मा — कांग्रेस (इ)
   (श्री मोहम्मदउस्मान आरिफ के उत्तरप्रदेश के राज्यपाल नियुक्त होने पर त्यागपत्र के फलस्वरूप रिक्त स्थान पर)
2. श्री भंवरलाल पंवार — कांग्रेस (इ)
   (श्री रामनिवास मिर्धा के दिसम्बर 1984 में लोकसभा सदस्य निर्वाचित होने पर त्यागपत्र के फलस्वरूप रिक्त स्थान पर)

1986 से 1992

1. श्री सन्तोषकुमार बागड़ोदिया — कांग्रेस (इ)
2. श्री धूलेश्वर मीणा (द्वितीय अवधि) — कांग्रेस (इ)
3. श्री भंवरलाल पंवार — कांग्रेस (इ)
4. श्री जसवंतसिंह (द्वितीय अवधि) — भाजपा

1988 से 1994

1. श्री भुवनेश चतुर्वेदी (द्वितीय अवधि) — कांग्रेस (इ)
2. डा० अबरार अहमद — कांग्रेस (इ)
3. श्री कमल मोरारका — जनता पार्टी

राजस्थान
वार्षिकी

कार्यपालिका

लोक-प्रशासन का दूसरा महत्वपूर्ण अंग कार्यपालिका है जिसका संचालन शासन सचिवालय से होता है। इसका मुख्यालय राज्य की राजधानी जयपुर में है। सचिवालय संविधान की राज्य सूची में वर्णित विषयों के प्रशासन के लिए उत्तरदायी है। यह राज्य मंत्रिमंडल को नीतियों के निर्धारण और उनके क्रियान्वयन की प्रगति का जायजा लेने में आवश्यक सहायता देता है तथा विभिन्न कार्यकारी विभागों से निर्धारित नीतियों की अनुपालना और क्रियान्विति कराता है।

मुख्य सचिव

जिस प्रकार राज्य मंत्रिमंडल का मुखिया मुख्यमंत्री होता है उसी प्रकार प्रशासन तन्त्र का मुखिया मुख्य सचिव होता है जो अन्य शासन सचिवों के माध्यम से प्रशासन का संचालन और नियन्त्रण करता है। मुख्य सचिव भारतीय प्रशासनिक सेवा का वरिष्ठ अधिकारी होता है जिसका चयन मुख्यमंत्री द्वारा उसकी वरीयता, सेवाभिलेख, योग्यता कार्य-निष्पादन क्षमता और मुख्यमंत्री का उसमें विश्वास आदि के आधार पर किया जाता है।

मुख्य सचिव के शासन सचिवालय का केन्द्र बिन्दु होने से राज्य-प्रशासन में उसकी महत्ती और प्रभावी भूमिका है। राज्य मंत्रिमंडल का सचिव होने के नाते वह राज्य मंत्रिमंडल की बैठकों के लिए विषय सूची तैयार करता है, बैठकों में भाग लेता है विचारार्थ मामले प्रस्तुत करता है, चाहे वे किसी भी विभाग से संबद्ध हों, तथा बैठकों का कार्यवाही विवरण रखता है। वह प्रशासनिक विषयों में मुख्यमंत्री सहित मंत्रिमंडल को परामर्श देता है शासन सचिवों के कार्य में समन्वय स्थापित करता है उनकी बैठकों की अध्यक्षता करता है, तथा समूचे प्रशासन तंत्र का नेतृत्व करता है। राज्य के सामान्य प्रशासन तथा कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार आदि विभागों का शासन सचिव भी मुख्य सचिव ही होता है।

अब तक के मुख्य सचिव

राजस्थान में 1958 से पूर्व मुख्य सचिव और पुलिस महानिरीक्षक की नियुक्ति केन्द्रीय सरकार करती थी। तब तक मुख्य सचिव आई सी एस हुआ करते थे। श्री भगवतसिंह मेहता राज्य के पहले मुख्य सचिव थे, जो राजस्थान संवर्ग के भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी थे तथा जिनकी नियुक्ति राज्य सरकार द्वारा की गई थी। वे राजस्थान के ही निवासी भी थे। उनका कार्यकाल भी अब तक के मुख्य सचिवों में सर्वाधिक रहा।

1. श्री भगवतसिंह मेहता—9 मई, 1958 से 29 अक्टूबर, 1966 तक।
2. श्री के. पी. यू मेनन—29अक्टूबर, 1966 से 22 अक्टूबर, 1968 तक।
3. श्री आर. डी. माथुर—22 अक्टूबर, 1968 से 17 मई, 1969 तक।
4. श्री जोरावरसिंह झाला—17 मई, 1969 से 9 अगस्त, 1971 तक।
5. श्री सुन्दरलाल खुराणा—9 अगस्त, 1971 से 23 जून, 1975 तक।
6. श्री मोहन मुखर्जी—7 जुलाई, 1975 से 1 नवम्बर, 1977 तक।
7. श्री गोपालकृष्ण भनोत—28 नवम्बर, 1977 से 29 दिसम्बर, 1980 तक।
8. श्री मनमोहन कृष्ण वली—29 दिसम्बर, 1980 से 21 फरवरी 1984 तक।

	3. सांभरलेक	1. फुलेरा (मुख्यालय सांभर) 2. (मुख्यालय मौजमाबाद) 3. फ
	4. जयपुर	1. जयपुर 2. सांगानेर 3. बस्सी 4. चाकसू
	5. कोटपूतली	1. कोटपूतली 2. विराटनगर 3. शाह
2. अजमेर	1. अजमेर	1. अजमेर 2. नसीराबाद
	2. ब्यावर	1. ब्यावर
	3. केकड़ी	1.केकड़ी 2. सरवाड़
	4. किशनगढ़	1. किशनगढ़
3. अलवर	1. अलवर	1. अलवर 2. रामगढ़
	2. बहरोड़	1. बहरोड़ 2. मांसूर
	3. राजगढ़ (मुख्यालय अलवर)	1. राजगढ़ 2. लक्ष्मणगढ़
	4. तिजारा (मुख्यालय किशनगढ़बास)	1. किशनगढ़बास 2. मंडावर 3. तिज 4. थानागाजी
4. बांसवाड़ा	1. बांसवाड़ा	1. बांसवाड़ा 2. गढ़ी
	2. कुशलगढ़	1. कुशलगढ़ 2. बागीडोरा 3. घाटोल
5 बाड़मेर	1 बाड़मेर	1. बाड़मेर 2. चौहटन 3. शिव 4. गुढ़ामलानी
	2 बालोतरा	1.पचपदरा 2. सिवाणा
6 भरतपुर	1. भरतपुर	1. भरतपुर 2. नदबई 3. कुम्हेर
	2. बयाना	1. बयाना 2. रूपवास 3 वैर
	3 डीग	1. डीग 2. कामां 3. नगर
7 डूंगरपुर	1. डूंगरपुर	1. डूंगरपुर 2. आसपुर 3. सीमलवाड़ा (मुख्यालय धम्बोला)
	2. सागवाड़ा	1. सागवाड़ा
8 गंगानगर	1. गंगानगर	1. गंगानगर
	2. हनुमानगढ़	1. हनुमानगढ़ 2. सादुलशहर 3. टीबी 4. संगरिया
	3. करणपुर	1. करणपुर 2. पदमपुर
	4. नोहर	1. नोहर 2.भादरा 3. रावतसर 4. घड़साना
	5. रायसिंहनगर	1. रायसिंहनगर 2. अनूपगढ़ 3. विजयनगर
	6. सूरतगढ़	1. सूरतगढ़ 2. पीलीबंगा
9 जैसलमेर	1. जैसलमेर	1. जैसलमेर
	2. पोकरण	1 पोकरण

10. जालौर	1. जालौर	1. जालौर 2. आहोर
	2. भीनमाल	1. भीनमाल 2. सांचौर 3. रानीवाड़ा
11. झालावाड़	1. झालावाड़	1. झालरापाटन 2. पिड़ावा
	2. अकलेरा	1. अकलेरा 2. खानपुर
	3. भवानीमंडी	1. पचपहाड़ 2 गंगधार
12. झुंझुनूं	1. झुंझुनूं	1. झुंझुनूं 2 चिड़ावा
	2. खेतड़ी	1. खेतड़ी
	3. नवलगढ़	1. नवलगढ़ 2. उदयपुरवाटी
13. जोधपुर	1. जोधपुर	1. जोधपुर 2 बिलाड़ा 3. शेरगढ़
	2 फलौदी	1. फलौदी 2 ओसियाँ 3 भोपालगढ़
14. भीलवाड़ा	1. भीलवाड़ा	1 भीलवाड़ा 2 मांडल 3 बनेड़ा
	2. गुलाबपुरा	1 आसींद 2 हुरड़ा
	3 मांडलगढ़	1 मांडलगढ़ 2 कोटड़ी
	4 शाहपुरा	1 शाहपुरा 2 जहाजपुर
	5. गंगापुर	1 गंगापुर 2. सहाड़ा
15. बीकानेर	1. बीकानेर (उत्तर)	1 बीकानेर 2. लूणकरणसर
	2. बीकानेर (दक्षिण)	1 कोलायत 2. नोखा
16. बूंदी	1. बूंदी	1 बूंदी 2 केशोरायपाटन
	2. नैनवा	1 नैनवा 2. हिंडोली
17. चित्तौड़गढ़	1. चित्तौड़गढ़	1 चित्तौड़गढ़ 2 गंगरार
	2. बेगूं	1.बेगूं
	3. कपासन	1. कपासन 2 राशमी
	4. निम्बाहेड़ा	1. निम्बाहेड़ा 2.बड़ीसादड़ी 3. छोटीसादड़ी 4. भदेसर 5 डूंगला
	5. प्रतापगढ़	1 प्रतापगढ़ 2 अरनोद
18. चूरू	1. चूरू	1. चूरू 2 सरदारशहर
	2. राजगढ़	1. राजगढ़ 2. तारानगर
	3. रतनगढ़	1. रतनगढ़ 2. डूंगरगढ़ 3. सुजानगढ़
19. कोटा	1. कोटा	1. लाडपुरा 2. दीगोद 3. पीपलदा
	2. बारां	1. बारां 2. मांगरोल
	3. शाहबाद	1. शाहबाद 2. किशनगंज
	4. छबड़ा	1. छबड़ा 2. अटरू 3. छीपाबड़ौद
	5. रामगंज मंडी	1. रामगंजमंडी 2. सांगोद

	3. सांभरलेक	1. फुलेरा (मुख्यालय सांभर) 2. (मुख्यालय मौजमाबाद) 3. फागी
	4. जयपुर	1. जयपुर 2. सांगानेर 3. बस्सी 4. चाकसू
	5 कोटपूतली	1. कोटपूतली 2. विराटनगर 3. शाहपु
2 अजमेर	1 अजमेर	1. अजमेर 2. नसीराबाद
	2. ब्यावर	1. ब्यावर
	3. केकड़ी	1. केकड़ी 2. सरपाड़
	4. किशनगढ़	1. किशनगढ़
3. अलवर	1. अलवर	1. अलवर 2. रामगढ़
	2. बहरोड़	1. बहरोड़ 2. भासूर
	3. राजगढ़ (मुख्यालय अलवर)	1. राजगढ़ 2. लक्ष्मणगढ़
	4. तिजारा (मुख्यालय किशनगढ़बास)	1. किशनगढ़बास 2. मंढावर 3. तिजारा 4. थानागाजी
4. बांसवाड़ा	1. बांसवाड़ा	1. बांसवाड़ा 2. गढ़ी
	2. कुशलगढ़	1. कुशलगढ़ 2. बागीदोरा 3. घाटोल
5. बाड़मेर	1. बाड़मेर	1. बाड़मेर 2. चौहटन 3. शिव 4 गुढ़ामालानी
	2. बालोतरा	1. पचपदरा 2. सिवाणा
6 भरतपुर	1 भरतपुर	1. भरतपुर 2. नदबई 3. कुम्हेर
	2. बयाना	1. बयाना 2. रूपवास 3 वैर
	3 डीग	1 डीग 2. कामां 3. नगर
7 डूंगरपुर	1. डूंगरपुर	1. डूंगरपुर 2. आसपुर 3. सीमलवाड़ा (मुख्यालय धम्बोला)
	2 सागवाड़ा	1. सागवाड़ा
8. गंगानगर	1. गंगानगर	1. गंगानगर
	2 हनुमानगढ़	1. हनुमानगढ़ 2. सादूलशहर 3. टीबी 4. संगरिया
	3. करणपुर	1. करणपुर 2. पदमपुर
	4 नोहर	1. नोहर 2. भादरा 3. रावतसर 4. घड़साना
	5. रायसिंहनगर	1. रायसिंहनगर 2. अनूपगढ़ 3. विजयनगर
	6. सूरतगढ़	1. सूरतगढ़ 2. पीलीबंगा
9. जैसलमेर	1. जैसलमेर	1. जैसलमेर
	2. पोकरण	1 पोकरण

3- पूरबी मैदान
[क] बनास बेसिन
[ख] छप्पन बेसिन
4- दक्षिण-पूरबी पठार
[क] विन्ध्यन कगार
[ख] दक्कन लावा पठार

इनमे से अधिकाश का वर्णन ऊपर किया जा चुका हैं। सक्षेपत इस वर्गीकरण का विवरण इस प्रकार है

[1] पश्चिमी बालुका मैदान को अरावली पहाडियो और,बीकानेर-जैसलमेर-बाडमेर के चट्टानी क्षेत्र के आधार पर चार भागो मे बाटा गया है, जो इस प्रकार है -

(i) महान मरुस्थल- गुजरात से पजाब तक अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के सहारे है।

(ii) चट्टानी प्रदेश- बीकानेर- जैसलमेर- बाडमेर के चट्टानी क्षेत्र इसमे आते हे जो बालू रेत से युक्त हैं। भूगर्भशास्त्रियो के अनुसार ये चट्टाने ज्यूरेसिक तथा इयोसिल काल की हें।

(iii) लघु मरुस्थल- जो चट्टानी क्षेत्र के पूरब मे कच्छ से बीकानेर तक फैला है।

(iv) अर्द्धशुष्क प्रदेश- यह रेतीला भाग अर्द्ध शुष्क मरुस्थल और अरावली के बीच स्थित है।

2- अरावली श्रेणी और पहाडी प्रदेश दो भागो मे विभाजित हैं

(i) अरावली श्रेणी तथा भोरत पठार- यह क्षेत्र सिरोही, सम्पूर्ण डूगरपुर तथा उदयपुर के अधिकाश भागो में विस्तृत हे। इसका सर्वाधिक ऊचा क्षेत्र भारत का पठार है जो गोगुन्दा से कुम्भलगढ के बीच है। इसकी औसत ऊचाई 1050 मीटर है। यह भाग मुख्य अरावली पर्वतमाला से अलग प्रकार का है।

(ii) उत्तरी-पूरबी पहाड़ी प्रदेश- यह क्षेत्र दिल्ली के समीप से भोरत पठार के उत्तर तक विस्तृत है। इसकी श्रृखलाए अजमेर, सीकर, जयपुर, अलवर तथा उदयपुर जिलो मे हे। इस पहाडी प्रदेश की सर्वाधिक ऊचाई कुम्भलगढ के समीप लगभग 670 मीटर है जो क्रमश कम होते होते अलवर के पास 550 मीटर और दिल्ली के दक्षिण मे 60-70 मीटर ही रह जाती है।

3- पूरबी मैदान- राजस्थान का यह उपजाऊ मैदान अरावली के उत्तर, उत्तर-पूरब तथा दक्षिण-पूरब के विस्तृत भूभाग पर फैला है। इसके अन्तर्गत उदयपुर व डूगरपुर जिलो के कुछ भाग, बासवाडा, भीलवाडा, बूदी, टौंक, चित्तौडगढ जिले तथा जयपुर, भरतपुर तथा धौलपुर जिलो का अधिकाश भाग सम्मिलित है। इसके दो भाग हैं-

(i) बनास बेसिन- इसमे मेवाड मैदान, पश्चिमी चित्तौडगढ, भीलवाडा, उदयपुर का पूर्वी भाग, टोंक, जयपुर, सवाईमाधोपुर व अलवर के दक्षिणी भाग सम्मिलित हे। इस मैदान मे मिट्टी कही पतली व कहीं पथरीली है।

(ii) छप्पन बेसिन- यह क्षेत्र बासवाडा, चित्तौडगढ व उदयपुर जिलो के कुछ भागो मे फैला है। इसी क्षेत्र मे माही व उसकी सहायक नदिया बहती है।

4- दक्षिण-पूरबी पठार- इसे हाडौती का पठार भी कहते हैं जो कोटा, झालावाड, बूदी, सवाईमाधोपुर, धौलपुर, भीलवाडा, चित्तौडगढ व बासवाडा के कुछ भागो मे फैला है। इसमे चम्बल व उसकी सहायक नदिया बहती हैं। यह पठार दो भागो मे विभक्त है।

(i) विन्ध्यन कगार- यह क्षेत्र बनास और चम्बल नदियो के बीच फैलते हुए बुन्देलखण्ड तक चला गया है। इस पठार का धरातल चट्टानो से अलग हुए बालुका पत्थरो [सेण्डस्टोन] से बना है। इसकी औसत ऊचाई ५50 से 580 मीटर है।

ii [illegible]

क्षत्र है।

नदियां एव झीलें

किसी भी क्षेत्र की नदिया ढलान का अनुसरण करती हे। राजस्थान के बीच मे दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूरब की ओर अरावली पर्वत विस्तृत हे। परिणामस्वरूप राज्य की नदिया भी इसके दोनो ओर बहती हैं। पश्चिमी भाग की नदिया या तो खम्भात की खाडी मे गिरती हे या फिर बालुका राशि मे ही विलीन हो जाती हैं। दक्षिणी-पूर्वी भाग की नदिया अतत यमुना नदी मे जा मिलती है जो इन सबका जल लेते हुए बगाल की खाडी में जा गिरती हैं।

नदिया मुख्यत दो प्रकार की होती हैं। [1] नियतवाही या वे नदिया जिनमें वर्ष पर्यन्त जल बहता है और [2] अस्थायी प्रवाह की, जिनमें बरसात का पानी बहता है और वर्ष के अधिकाश या कुछ महीनों में वे सूखी रहती है।

जहा तक राजस्थान का सबध है, इसकी प्रमुख नदिया हैं- [1] चम्बल तथा इसकी सहायक बनास, बेड़च, गभीरी, कोठारी, खारी, मैनाल, मानसी, बाडी, मोरेल, कालीसिंध, निवाज, परबन, आहू तथा पार्वती, [2] लूणी तथा इसकी सहायक सूकडी, लीलडी, जोजर, जवाई, बाडी, मीठडी व सगाई, [3] माही तथा इसकी सहायक सोम व जाखम, [4] साबरमती [5] पश्चिमी बनास [6] घग्घर [7] काकनेय [8] काटली [9] साबी [10] बाणगगा [11] मन्था तथा [12] सरस्वती।

इनमें से प्रमुख नदियों का सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

1. चम्बल: राजस्थान की यह नियतवाही या बारहमासी नदी है जो मध्यप्रदेश में विध्याचल पर्वत की उत्तरी ढाल मे मरू नामक स्थान से निकलती है और लगभग 325 किलोमीटर मध्यप्रदेश में बहने के पश्चात चौरासीगढ के पास से राजस्थान मे प्रवेश करती है। यह नदी राज्य के कोटा, बूदी, सवाई माधोपुर व धौलपुर जिलो मे बहती हुई उत्तर प्रदेश में इटावा नगर के पास यमुना में जा मिलती है। यह राजस्थान और मध्यप्रदेश के बीच 241 कि मी लम्बी सीमा भी बनाती है।

राजस्थान के लिए यह नदी बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसी नदी पर गाधीसागर, राणाप्रताप सागर, जवाहरसागर तथा कोटा बैराज के बाध बने हैं। ये बाध सिचाई तथा विद्युत ऊर्जा के साधन हैं जिनका राज्य के ि मास मे प्रमुख योगदान है। इस नदी पर भैसरोडगढ के समीप प्रसिद्ध चूलिया प्रपात है।

2. बनास: यह उदयपुर जिले में कुभलगढ के समीप खमनौर की पहाडियो से निकलती है और अजमेर, भीलवाडा, चित्तौडगढ, सवाई माधोपुर व टौंक जिलो में लगभग 480 कि मी बहने के पश्चात सवाई माधोपुर जिले मे दक्षिण की ओर मुडकर चम्बल मे जा मिलती है। दीगोद और माडलगढ के बीच इसमें बेडच और मेनाल नदिया और आ मिलती हैं। इस स्थान को त्रिवेणी कहा जाता है। बनास भी वर्ष भर प्रवाहित रहने वाली नदी है। इसकी अन्य सहायक नदिया मानसी, बाडी व मोरेल हैं।

3. बेड़च: यह नदी गोगुन्दा की पहाडियों से निकलती है। उदयसागर झील तक इसे "आहड" नदी के नाम से जाना जाता है। माडलगढ के निकट यह त्रिवेणी सगम पर बनास में मिल जाती है।

4. गभीरी: यह नदी मुख्यतया चित्तौडगढ जिले म बहती है और अपना जल बेडच को सौप देती है।

5. कोठारी: यह नदी उदयपुर जिले के देवार नामक स्थान से निकलती है। अन्तत यह भीलवाडा के पूर्व म बनास में जा मिलती है। इसी नदी पर बने बाध से भीलवाडा नगर को पेयजल दिया जाता है।

6. खारी: यह भी उदयपुर जिले में अरावली पर्वत से देवगढ के समीप से निकलती है। गुलाबपुरा-विजयनगर के पास से गुजरती हुई यह देवली के पास बनास में मिल जाती है।

7. काली सिन्ध: यह नदी भी मध्यप्रदेश से निकलती है। राजस्थान के कोटा व झालावाड जिलो मे बहती हुई नौनेरा के निकट यह चम्बल में मिल जाती है। इसकी प्रमुख सहायक नदिया हैं- निवाज, परबन और आहू।

8. पार्वती: यह भी मध्यप्रदेश मे विध्याचल पर्वत से निकलती है। यह करयाहट के समीप राजस्थान मे प्रवेश करती है और बूदी जिले में बहती हुई चम्बल मे मिल जाती है। ऊपरमाल के पठार से निकलने वाली कुराल नदी भी बूदी जिले में बहती हुई चम्बल में जा मिलती है।

9. लूणी. यह नदी अजमेर के आनासागर से निकलकर जोधपुर, बाडमेर और जालौर जिलो म लगभग 350 कि मी. बहती हुई कच्छ के रन मे एक झील की तरह फैलकर सूख जाती है। यह पूर्णत मौसमी नदी है। बालोतरा तक इसका जल मीठा रहता है, लेकिन आगे चलकर खारा होता जाता है। इस नदी पर बिलाडा के निकट का बाध सिचाई के लिए महत्वपूर्ण है।

मरुस्थलीय क्षेत्र की यह एक महत्वपूर्ण नदी है। इसकी अनेक सहायक नदिया है जिनम सूकडी, लीलडी, जोजडी, जवाई, बाडी, सरस्वती, मीठडी व सगाई प्रमुख है।

10. माही. यह मालवा के पठार से ग्वालियर के समीप निकलती है। यह नदी बासवाडा और डूगरपुर जिलो की सीमारेखा भी बनाती है। मेवाड़ के दक्षिण-पश्चिम म इसमे सोम व जाखम नदिया मिल जाती है। इसी नदी पर माही डैम बनाया जा रहा है। वर्षा के दिनो मे यह तबाही ला देती है। विशेषकर गलियाकोट तो हर साल इसम तबाह हो उठता है। अत इस नगर को बचाने के लिए एक बाध बना दिया गया है।

11. जाखम. यह छोटी सादडी के समीप से निकलती है और चित्तौड जिले मे बहती हुई सोम म मिल जाती है।

12. सोम: उदयपुर जिले म पंजनेडा स्थान के निकट से निकलती है। डूगरपुर की पूर्वी सीमा पर बहती हुई अन्तत माही नदी में मिल जाती है।

13. साबरमती: उदयपुर जिले में अरावली पर्वतों से निकल कर यह नदी खम्भात की खाडी में जा गिरती है।

14. पश्चिमी बनास: यह भी उदयपुर जिले में अरावली पर्वत से निकल कर गुजरात में बहती हुई खम्भात की खाडी में गिर जाती है।

15. घग्घर. यह शिवालिक की पहाडियों से कालका के पास निकलती है। पजाब और हरियाणा में बहती हुई यह हनुमानगढ के पास राजस्थान में प्रवेश करती है। श्रीगगानगर जिले में बहती हुई यह पाकिस्तान की ओर चली जाती है और बालू के टीबो मे विलीन हो जाती है।

16. काकनेय· यह जैसलमेर जिले मे कोठरी गाव से अपनी यात्रा प्रारभ करती है। इसकी कुल लम्बाई 44 किलोमीटर है। अन्तत यह "बुझ झील" का रूप ले लेती है।

17. काटली. पूर्णतया बरसाती नदी है। झुझुनू को दो भागों में बाटती हुई यह भी रेतीले टीलों मे विलीन हो जाती है।

18 साबी. यह शाहपुरा [जयपुर जिला] के निकट से अपनी यात्रा शुरू करती है। तत्पश्चात् अलवर जिले में बहती हुई हरियाणा में प्रवेश करती है और पटौदी के ग्राम के उत्तर में विलीन हो जाती है।

19. बाणगगा: यह भी जयपुर जिले के विराटनगर की पहाडियो से निकलती है। तत्पश्चात् भरतपुर जिले में बहती हुई उत्तरप्रदेश के फतेहाबाद नामक स्थान के निकट यमुना में जा मिलती है।

20 मन्था: यह मनोहरपुर [जयपुर जिला] के पास से शुरू होकर अन्तत साभर झील में जा मिलती है।

जिलेवार नदियां इस प्रकार है

1. अजमेर- साबरमती, सरस्वती, खारी, डाइ और बनास।
2. अलवर- साबी, रूपारेल, काली, गौरी, सोटा।
3. कोटा- चम्बल, काली सिन्ध, पार्वती, आऊ, परवन और निवाज।
4. उदयपुर- बनास, बेडच, वाकल, सोम, जाखम, साबरमती, गौमती।
5. चित्तौड़गढ़- बनास, बेडच, वामणी, गभीरी, बागली, औराई, सीवान, जाखम, माही।
6. जयपुर- बाणगगा, बाडी, ढूढ, मोरेल, साबी, सोटा, डाई, मासी।
7. जालोर- लूणी, बाडी, जवाई, सूकडी।
8. जैसलमेर- काकनेय, लाठी, चाचण, धउना, धोगडी।
9. जोधपुर- लूणी, मीठडी, जोजरी।
10. श्रीगगानगर- घग्घर।
11. झालावाड़- कालीसिध, पार्वती, निवाज, छोटी कालीसिध।
12. झुझुनूं- काटली।
13. टोक- बनास, मासी, बाडी।
14. डूगरपुर- सोम, सोनी, माही।
15. बासवाड़ा- माही, अनास, चैनी।
16. नागौर- लूणी।
17. पाली- लीलडी, सूकडी, जवाई, बाडी।
18. बाड़मेर- सूकड़ी, लूणी।
19. बूदी- कुराल।
20. भरतपुर- चम्बल, बाणगगा, पार्वती, गभीरी, वराह।
21. धौलपुर- चम्बल।
22. भीलवाड़ा- बनास, बेड़च, कोठारी, मानसी, खारी, मनाली।
23 सवाई माधोपुर- चम्बल, बनास, मारेल।
24. सिरोही- पश्चिमी बनास, सूकडी, खारी, भूला, अरा, मुखरा, पालालिया, किशनावती।
25. सीकर- काटली, मन्था, पावटा, कान्टर।

बीकानेर एव चूरू जिलो म कोई नदी नहीं है।

10685
26.4.90

राजस्थान
वार्षिकी

13. साबरमती: उदयपुर जिले में अरावली पर्वतो से निकल कर यह नदी खम्भात की खाडी में जा गिरती है।

14. पश्चिमी बनास: यह भी उदयपुर जिले में अरावली पर्वत से निकल कर गुजरात में बहती हुई खम्भात की खाडी में गिर जाती है।

15. घग्घर. यह शिवालिक की पहाडियो से कालका के पास निकलती है। पजाब और हरियाणा में बहती हुई यह हनुमानगढ के पास राजस्थान मे प्रवेश करती है। श्रीगगानगर जिले में बहती हुई यह पाकिस्तान की ओर चली जाती है और बालू के टीबा मे विलीन हो जाती है।

16. काकनेय: यह जैसलमेर जिले में कोहरो गाव से अपनी यात्रा प्रारभ करती है। इसकी कुल लम्बाई 44 किलोमीटर है। अन्तत यह "बुझ झील" का रूप ले लेती है।

17. कांटली: पूर्णतया बरसाती नदी है। झुझुनू को दो भागों में बाटती हुई यह भी रेतीले टीलों मे विलीन हो जाती है।

18. साबी: यह शाहपुरा [जयपुर जिला] के निकट से अपनी यात्रा शुरू करती है। तत्पश्चात् अलवर जिले में बहती हुई हरियाणा में प्रवेश करती है और पटौदी के ग्राम के उत्तर में विलीन हो जाती है।

19. बाणगगा: यह भी जयपुर जिले के विराटनगर की पहाडियो से निकलती है। तत्पश्चात् भरतपुर जिले में बहती हुई उत्तरप्रदेश के फतेहाबाद नामक स्थान के निकट यमुना मे जा मिलती है।

20. मन्था: यह मनोहरपुर [जयपुर जिला] के पास से शुरू होकर अन्तत साभर झील में जा मिलती है।

जिलेवार नदियां इस प्रकार है

1. अजमेर- साबरमती, सरस्वती, खारी, डाइ और बनास।
2. अलवर- साबी, रूपारेल, काली, गौरी, सोटा।
3. कोटा- चम्बल, काली सिन्ध, पार्वती, आऊ, परबन और निवाज।
4. उदयपुर- बनास, बेडच, वाकल, सोम, जाखम, साबरमती, गौमती।
5. चित्तौड़गढ़- बनास, बेड़च, बामणी, गभीरी, बागली, औराई, सीवान, जाखम, माही।
6. जयपुर- बाणगगा, बाडी, ढूढ, मोरेल, साबी, सोटा, डाई, मासी।
7. जालोर- लूणी, बाडी, जवाई, सूकडी।
8. जैसलमेर- काकनेय, लाठी, चाचण, घउना, धोगडी।
9. जोधपुर- लूणी, मीठडी, जोजरी।
10. श्रीगगानगर- घग्घर।
11. झालावाड़- कालीसिध, पार्वती, निवाज, छोटी कालीसिध।
12. झुझुनू- कांटली।
13. टोंक- बनास, मासी, बाडी।
14. डूगरपुर- सोम, सोनी, माही।
15. बासवाड़ा- माही, अनास, चैनी।
16. नागौर- लूणी।
17. पाली- लीलडी, सूकडी, जवाई, बाडी।
18. बाड़मेर- सूकडी, लूणी।
19. बूदी- कुराल।
20. भरतपुर- चम्बल, बाणगगा, पार्वती, गभीरी, ककुंद।
21. धौलपुर- चम्बल।
22. भीलवाड़ा- बनास, बेड़च, कोठारी, मानसी, खारी, मन्शली।
23. सवाई माधोपुर- चम्बल, बनास, मोरल।
24. सिरोही- पश्चिमी बनास, सूकडी, खारी, भूला, आरा, सुकडा पासलिया, किशनवती।
25. सीकर- कांटली, मन्था, पावटा, कावट।

बीकानेर एव चूरू जिला म कोई नदी नहीं है।

13 साबरमती उदयपुर जिले में अरावली पर्वतों से निकल कर यह नदी खम्भात की खाड़ी में जा गिरती है।

14. पश्चिमी बनास: यह भी उदयपुर जिले में अरावली पर्वत से निकल कर गुजरात में बहती हुई खम्भात की खाड़ी में गिर जाती है।

15. घग्घर: यह शिवालिक की पहाड़ियों से कालका के पास निकलती है। पंजाब और हरियाणा में बहती हुई यह हनुमानगढ़ के पास राजस्थान मे प्रवेश करती है। श्रीगंगानगर जिले में बहती हुई यह पाकिस्तान की ओर चली जाती है और बालू के टीबों मे विलीन हो जाती है।

16. काकनेय: यह जैसलमेर जिले मे कोहरी गाव से अपनी यात्रा प्रारंभ करती है। इसकी कुल लम्बाई 44 किलोमीटर है। अन्तत यह "बुझ झील" का रूप ले लेती है।

17. काटली. पूर्णतया बरसाती नदी है। झुंझुनू को दो भागों में बांटती हुई यह भी रेतीले टीलों में विलीन हो जाती है।

18. साबी. यह शाहपुरा [जयपुर जिला] के निकट से अपनी यात्रा शुरू करती है। तत्पश्चात् अलवर जिले में बहती हुई हरियाणा में प्रवेश करती है और पटौदी के ग्राम के उत्तर में विलीन हो जाती है।

19. बाणगंगा यह भी जयपुर जिले के विराटनगर की पहाड़ियों से निकलती है। तत्पश्चात् भरतपुर जिले में बहती हुई उत्तरप्रदेश के फतेहाबाद नामक स्थान के निकट यमुना मे जा मिलती है।

20. मन्था: यह मनोहरपुर [जयपुर जिला] के पास से शुरू होकर अन्तत साभर झील में जा मिलती है।

जिलेवार नदियां इस प्रकार है

10685
26.4.90

1. अजमेर- साबरमती, सरस्वती, खारी, डाइ और बनास।
2. अलवर- साबी, रूपारेल, काली, गौरी, सोटा।
3 कोटा- चम्बल, काली सिन्ध, पार्वती, आऊ, परबन और निवाज।
4. उदयपुर- बनास, बेडच, वाकल, सोम, जाखम, साबरमती, गौमती।
5. चित्तौड़गढ़- बनास, बेडच, वामणी, गम्भीरी, बागली, औराई, सीवान, जाखम, माही।
6 जयपुर- बाणगंगा, बाडी, ढूढ, मोरेल, साबी, सोटा, डाई, मासी।
7. जालोर- लूणी, बाडी, जवाई, सूकडी।
8. जैसलमेर- काकनेय, लाठी, चावण, धउना, धोगडी।
9. जोधपुर- लूणी, मीठडी, जोजरी।
10 श्रीगंगानगर- घग्घर।
11. झालावाड़- कालीसिंध, पार्वती, निवाज, छोटी कालीसिंध।
12. झुंझुनू- काटली।
13 टौंक- बनास, मासी, बाडी।
14. डूंगरपुर- सोम, सोनी, माही।
15. बासवाड़ा- माही, अन्नास, चेनी।
16. नागौर- लूणी।
17. पाली- लीलडी, सूकडी, जवाई, बाडी।
18. बाड़मेर- सूकडी, लूणी।
19. बूंदी- कुराल।
20. भरतपुर- चम्बल, बाणगंगा, पार्वती, गम्भीरी, वगह।
21. धौलपुर- चम्बल।
22. भीलवाड़ा- बनास, बेड़च कोठारी, मानसी, खारी मेनाली।
23 सवाई माधोपुर- चम्बल, बनास, मोरेल।
24. सिरोही- पश्चिमी बनास, सूकडी खारी, भुला, अेरा, सुकडा पोसलिया, किशनवती।
25. सीकर- काटली, मन्था, पावटा, कावट।

बीकानेर एवं चूरू जिलो मे कोई नदी नहीं है।

झीलें

ये दो प्रकार की होती हैं- मीठे पानी की तथा खारे पानी की।
राजस्थान में दोनो प्रकार की प्रमुख झीले इस प्रकार हैं -

[अ] खारे पानी की झीले: खारे पानी की झीले पश्चिमी राजस्थान मे हैं जो मुख्यत मरुस्थलीय हैं। यह क्षेत्र अन्तरप्रवाह का है, अर्थात इस क्षेत्र का पानी बाहर नहीं जाता। वैसे तो राजस्थान में खारा पानी जगह-जगह मिलता है किन्तु खारे पानी की झीलें–मुख्यत निम्न हैं -

सांभर झील में नमक की खेती

1. **सांभर झील:** देश में खारे पानी की सबसे बडी यह झील जयपुर से लगभग 65 किलोमीटर दूर फुलेरा रेलमार्ग के समीप स्थित है। दक्षिण-पूरब से उत्तर-पश्चिम में इसकी लम्बाई तीस किलोमीटर तथा चौड़ाई चार से तेरह किलोमीटर है। इसका अपवाह क्षेत्र लगभग 480 वर्ग किलोमीटर है।

2. **पचभद्रा या पचपदरा:** यह झील बाड़मेर जिले में बालोतरा के पास स्थित है। इस झील में पानी वर्षा का तो आता ही है, भूमिगत स्रोतों से भी प्राप्त होता रहता है। इस झील के पानी से अपेक्षाकृत उच्च कोटि का नमक प्राप्त किया जाता है।

3. **फलौदी झील:** यह जोधपुर जिले मे स्थित है। यहा भी नमक की खेती होती है।

4. **डीडवाना झील:** नागौर जिले के डीडवाना व कुचामन के पास स्थित इस झील के नीचे खारे जल का विपुल भूमिगत भण्डार है। यहा से सोडियम सल्फेट प्राप्त किया जाता है। इससे प्राप्त सोडियम का उपयोग कागज बनाने में किया जाता है।

5. **लूणकरणसर झील:** बीकानेर जिले के लूणकरणसर नामक स्थान पर यह स्थित है। यहा भी थोड़ा बहुत नमक तैयार किया जाता है।

6. **कावोद:** नमक खारे पानी की झील जैसलमेर में स्थित है।

[ब] मीठे पानी की झीलें. राज्य में वर्तमान मीठे पानी की झीलों को इस प्रकार उल्लेखित किया जा सकता है।

1. **नक्की झील:** आबू पर्वत पर स्थित यह झील राजस्थान की सभी झीलों से अधिक ऊंचाई पर स्थित है. यह एक प्राकृतिक झील है जो ज्वालामुखी के मुख में वर्षा का जल एकत्र होने से बनी बताई जाती है.

2. **पिछोला झील:** उदयपुर में स्थित इस कृत्रिम झील का [illegible] (1382-1421 ई.) में किसी बन्जारे ने बनवाया था। यह झील [illegible]

पिछोला झील, उदयपुर

कोटा बैराज, कोटा

3. फतहसागर यह झील भी उदयपुर में है। इसे 1678 ई. में महाराणा फतहसिंह ने बनवाया था। यह एक नहर द्वारा पिछोला झील से जुड़ी हुई है।

4. जयसमन्द झील उदयपुर से लगभग पचास किलोमीटर दूर दक्षिण-पूर्व में स्थित इस झील को मानव निर्मित झीलों में दूसरा स्थान मिला है। इसे महाराणा जयसिंह ने गोमती नदी के बहाव को रोककर सन् 1691 में बनवाया। यह झील लगभग 21 वर्गमील में फैली है।

5. राजसमन्द झील. उदयपुर जिले में कांकरोली के समीप यह झील महाराणा राजसिंह द्वारा बनवाई गई थी। इसी झील के किनारे पत्थर की पट्टियों पर "राजप्रशस्ति" नामक शिलालेख संस्कृत में खुदा है जो अब तक प्राप्त शिलालेखों में सबसे लम्बा है।

6. पुष्कर. अजमेर से 11 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित पुष्कर झील हिन्दुओं के अत्यन्त पवित्र सरोवरों में से एक है। झील के चारों ओर स्नान करने के लिए 60 घाट बने हैं। भारत में पुष्कर ही एक ऐसा तीर्थ है जहां ब्रह्माजी एवं उनकी पत्नी सावित्री के मंदिर हैं। यह एक प्राकृतिक झील है जिसमें वर्षा का जल एवं भूमिगत जल एकत्र होता है।

जिलेवार राज्य की छोटी बड़ी झीलें व बांध इस प्रकार हैं।

नवलखा सागर, बूंदी

रामगढ़ झील, जयपुर

उदयपुर- जयसमन्द, राजसमन्द, उदयसागर, फतेहसागर, स्वरूपसागर और पिछौला।
चित्तौड़गढ़- भूपालसागर, राणाप्रतापसागर।
बांसवाड़ा- बजाजसागर बांध, कड़ाणा बांध।
भीलवाड़ा- मेजाबांध, सरेरी बांध, उम्मेदसागर, माण्डलताल, अखड़बांध, खारीबांध, जैतपुरा बांध।
डूंगरपुर- गैबसागर।
बूंदी- नवलखासागर।
अजमेर- आनासागर, पुष्कर, फाईसागर, नारायणसागर बांध।

झीले

ये दो प्रकार की होती हैं- मीठे पानी की तथा खारे पानी की।

राजस्थान में दोनों प्रकार की प्रमुख झीले इस प्रकार है -

[अ] खारे पानी की झीलें: खारे पानी की झीलें पश्चिमी राजस्थान में हैं जो मुख्यत मरुस्थलीय हैं। यह क्षेत्र अन्तरप्रवाह का है, अर्थात इस क्षेत्र का पानी बाहर नहीं जाता। वैसे तो राजस्थान में खारा पानी जगह-जगह मिलता है किन्तु खारे पानी की झीलें-मुख्यत निम्न है -
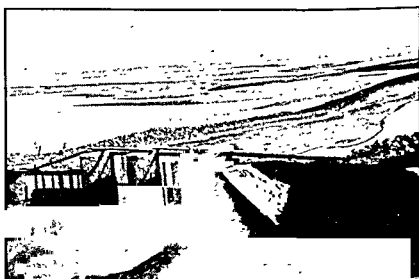
सांभर झील में नमक की खेती

1. सांभर झील. देश में खारे पानी की सबसे बडी यह झील जयपुर से लगभग 65 किलोमीटर दूर फुलेरा रेलमार्ग के समीप स्थित है। दक्षिण-पूरब से उत्तर-पश्चिम मे इसकी लम्बाई तीस किलोमीटर तथा चौडाई चार से तेरह किलोमीटर है। इसका अप्रवाह क्षेत्र लगभग 480 वर्ग किलोमीटर है।

2. पचभदरा या पचपदरा: यह झील बाडमेर जिले मे बालोतरा के पास स्थित है। इस झील मे पानी वर्षा का तो आता ही है, भूमिगत स्रोतों से भी प्राप्त होता रहता है। इस झील के पानी से अपेक्षाकृत उच्च कोटि का नमक प्राप्त किया जाता है।

3. फलौदी झील: यह जोधपुर जिले मे स्थित है। यहा भी नमक की खेती होती है।

4. डीडवाना झील: नागौर जिले के डीडवाना व कुचामन के पास स्थित इस झील के नीचे खारे जल का विपुल भूमिगत भडार है। यहा से सोडियम सल्फेट प्राप्त किया जाता है। इससे प्राप्त सोडियम का उपयोग कागज बनाने में किया जाता है।

5. लूणकरणसर झील. बीकानेर जिले के लूणकरणसर नामक स्थान पर यह स्थित है। यहा भी थोडा बहुत नमक तैयार किया जाता है।

6. कावोद: नामक खारे पानी की झील जैसलमेर में स्थित है।

[ब] मीठे पानी की झीलें: राज्य मे कतिपय मीठे पानी की झीलो को इस प्रकार उल्लेखित किया जा सकता है।

1. नक्की झील: आबू पर्वत पर स्थित यह झील राजस्थान की सभी झीलों से अधिक ऊचाई पर स्थित है। यह एक प्राकृतिक झील है जो ज्वालामुखी के मुख में वर्षा का जल एकत्र होने से बनी बताई जाती है।

2. पिछौला झील: उदयपुर मे स्थित इस कृत्रिम झील को महाराणा लाखा के शासन काल [1382-1421 ई.] में किसी बणजारे ने बनवाया था। यह झील तीन मील लम्बी, दो मील चौडी तथा औसतन पच्चीस फुट गहरी है।

पिछोला झील, उदयपुर	कोटा बैराज, कोटा

3. फतहसागर. यह झील भी उदयपुर में है। इसे 1678 ई. में महाराणा फतहसिंह ने बनवाया था। यह एक नहर द्वारा पिछोला झील से जुड़ी हुई है।

4. जयसमन्द झील. उदयपुर से लगभग पचास किलोमीटर दूर दक्षिण-पूरब में स्थित इस झील को मानव निर्मित झीलों में दूसरा स्थान मिला है। इसे महाराणा जयसिंह ने गोमती नदी के बहाव को रोककर सन् 1691 में बनवाया। यह झील लगभग 21 वर्गमील में फैली है।

5. राजसमन्द झील. उदयपुर जिले में कांकरोली के समीप यह झील महाराणा राजसिंह द्वारा बनवाई गई थी। इसी झील के किनारे पत्थर की पट्टियों पर "राजप्रशस्ति" नामक शिलालेख संस्कृत में खुदा है जो अब तक प्राप्त शिलालेखों में सबसे लम्बा है।

6. पुष्कर: अजमेर से 11 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित पुष्कर झील हिन्दुओं के अत्यन्त पवित्र सरोवरों में से एक है। झील के चारों ओर स्नान करने के लिए 60 घाट बने हैं। भारत में पुष्कर ही एक ऐसा तीर्थ है जहां ब्रह्माजी एवं उनकी पत्नी सावित्री के मंदिर हैं। यह एक प्राकृतिक झील है जिसमें वर्षा का जल एवं भूमिगत जल एकत्र होता है।

जिलेवार राज्य की छोटी बड़ी झीलें व बांध इस प्रकार हैं।

नवलखा सागर, बूंदी	रामगढ़ झील, जयपुर

उदयपुर- जयसमन्द, राजसमन्द, उदयसागर, फतेहसागर, स्वरूपसागर और पिछोला।
चित्तौड़गढ़- भूपालसागर, राणाप्रतापसागर।
बांसवाड़ा- बजाजसागर बांध, कडाणा बांध।
भीलवाड़ा- मेजाबांध, सरेरी बांध, उम्मेदसागर, माण्डलताल, अगूचबांध, खारीबांध, जैतपुरा बांध।
डूंगरपुर- गैबसागर।
बूंदी- नवलखासागर।
अजमेर- आनासागर, पुष्कर, फाईसागर,

भरतपुर- शाही बाध, बारेणबाध।
जयपुर- गलता, रामगढ़ बाध, छापरवाडा।
जैसलमेर- गढ़ीसर, अमरसागर, बुझझील।
जोधपुर- पिचियाक बाध, बीसलपुर बाध, बालसमन्द, प्रतापसागर, उम्मेदसागर, कायलाना, तखतसागर।
पाली- सरदारसमन्द, हेमावास बाध, जवाई बाध, बाकली।
बीकानेर- गजनेर, अनूपसागर, सूरसागर, कोलायतजी।
अलवर- राजसमन्द, सिलीसेढ़।
कोटा- जवाहर सागर, कोटा बाध।
चूरू- छापरताल।
सिरोही- नक्की झील [आबू पर्वत]।

3. भौगोलिक प्रदेश

राजस्थान का निर्माण एक राजनैतिक इकाई के रूप में किया गया अतः इसकी सीमाएं भी राजनैतिक योजना से ही निर्धारित की गई। स्वयं राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में भौतिक सांस्कृतिक व आर्थिक विषमताएं स्पष्ट दिखलाई पडती हैं। भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान को एक इकाई स्वीकार कर इसका अध्ययन करना अत्यन्त ही कठिन है। अतः राजस्थान के भौगोलिक अध्ययन के लिए इसे विभिन्न इकाइयों में विभक्त करना आवश्यक है। राजस्थान को भौगोलिक प्रदेशों में विभक्त करते समय जिन तत्वों या कारकों का ध्यान रखा जाता है, उनमें भौतिक, जलवायु, मिट्टी, वनस्पति, उद्योग व खनिज आदि प्रमुख हैं। दो अलग भौगोलिक प्रदेशों में क्षेत्रीय भिन्नताएं होती हैं जबकि एक ही प्रदेश में कई समानताएं मिलती हैं। यह समानताएं ही भौगोलिक प्रदेश की विशेषताएं मानी जाती है।

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित भौगोलिक कारकों का विवेचन-विश्लेषण कर इसे निम्न भौगोलिक प्रदेशों में बाटा गया है :-

(1) पश्चिमी शुष्क प्रदेश
(2) अर्द्धशुष्क प्रदेश
(3) नहरी प्रदेश
(4) अरावली प्रदेश
(5) पूरबी कृषि-औद्योगिक प्रदेश
(6) दक्षिण-पूरबी कृषि प्रदेश
(7) चम्बल बीहड प्रदेश

(1) पश्चिमी शुष्क प्रदेश :-यह भौगोलिक प्रदेश राज्य के पश्चिम में है। इस प्रदेश की पूरबी सीमा 25 से.मी. वर्षा रेखा, उत्तरी सीमा नहरी सिंचित क्षेत्र द्वारा तथा पश्चिमी सीमा पाकिस्तान के साथ देश की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा द्वारा निर्धारित होती है। इस शुष्क प्रदेश के अन्तर्गत पूरा जैसलमेर जिला, बाडमेर का अधिकाश भाग, जोधपुर, नागौर व चूरू का पश्चिमी व बीकानेर का दक्षिणी भाग सम्मिलित है। इस भौगोलिक प्रदेश का अधिकांश भाग रेत से ढका है। रेत या बालू का जमाव इस प्रदेश पर बालूका स्तूपो (टीलों) के रूप मे है। यह स्तूप 60 से 100 मीटर तक की ऊंचाई लिये हैं। शुष्क प्रदेश के जैसलमेर बीकानेर क्षेत्र पर चट्टानों का दृश्य दिखाई देता है। इस प्रदेश का ढाल पूरब से पश्चिम की ओर है। इस शुष्क प्रदेश की ऊंचाई औसत समुद्र तल से 150 से 300 मीटर तक है।

इस प्रदेश के अधिकांश भाग पर रेतीली मिट्टी पायी जाती है। मिट्टी का इस भाग में अभाव है। 3–4 प्रतिशत क्षेत्र पर मृतिका है किन्तु उसमें उपजाऊ वनस्पति कणों) की कमी

है। शुष्क प्रदेश में पानी की कमी तथा अनुपजाऊ मिट्टियों के कारण बहुत कम वनस्पति मिलती है। इस प्रदेश के पश्चिमी भाग में वर्षा ऋतु में कटीली झाड़ियां तथा चौहटन व जैसलमेर क्षेत्र में घास उग जाती है। पूर्वी भागों में बबूल, कीकर तथा खेजड़ा व कटीली झाड़ियां मिलती हैं। इस शुष्क भाग में जलवायु की कठोर दशाएं हैं। यहां गर्मी की ऋतु में अधिक गर्मी तथा शीत ऋतु में अधिक ठण्ड पड़ती है। गर्मी की ऋतु में तापमान 34° से 48° सेन्टीग्रेड तक पहुंच जाता है। मई-जून के उच्चतम तापमान 45° सेन्टीग्रेड तक रहते हैं। इस समय तेज धूलभरी आंधियां चलती हैं। इस शुष्क प्रदेश में वर्षा गर्मी की ऋतु में होती है। यहां वर्षा न केवल कम है बल्कि अनियमित व अनिश्चित भी है। सामान्यतः जून के अंतिम सप्ताह से अगस्त महीने की समाप्ति तक यहां वर्षा होती है। इस शुष्क भाग में वर्षा 20 से.मी. से भी कम होती है। इस प्रदेश के पूर्वी भागों पर 15-20 से.मी. वर्षा होती है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के समीप के क्षेत्रों में यह औसत 5-10 से.मी. ही है। इस मरुस्थलीय शुष्क भाग में पानी की कमी है तथापि यहां जैसलमेर के समीप भूमिगत जल के विशाल भण्डार हैं। शुष्क प्रदेश के कई भागों में भूमिगत जल स्तर 100 से 130 मीटर गहरा है। बहुत से क्षेत्रों में कुओं का जल खारा है।

राजस्थान के इस शुष्क प्रदेश में कम वर्षा, रेतीली मिट्टी व कठोर जलवायु के कारण कृषि बहुत पिछड़ी हुई है। यहां पर जोतों का आकार देश के अन्य सभी क्षेत्रों से बड़ा है। यहां की कृषि भरण-पोषण व पशुओं के चारे तक ही सीमित है। व्यावसायिक फसलों का अभाव है। इस प्रदेश में कृषकों की सबसे प्रिय फसल बाजरा है। प्रदेश के कुछ पूर्वी भागों में दालें एवं तिलहन का भी उत्पादन किया जाता है। कृषि के साथ ही पशुपालन भी यहां का प्रमुख व्यवसाय है। इस भाग में राज्य के पालतू पशुओं की कई प्रसिद्ध नस्लें हैं। इस प्रदेश में जिप्सम, मुल्तानी मिट्टी, लिग्नाइट व इमारती पत्थर महत्वपूर्ण खनिज हैं। इस प्रदेश के जिप्सम जमाव महत्वपूर्ण हैं। यह खनिज जैसलमेर, बाड़मेर व बीकानेर में मिलता है जहां राज्य के प्रसिद्ध जिप्सम जमाव हैं। मरुस्थलीय प्रदेश का दूसरा महत्वपूर्ण खनिज लिग्नाइट है जो बीकानेर के समीप पलाना में मिलता है। पिछले कुछ वर्षों से इस प्रदेश में खनिज तेल की खोज का कार्य चल रहा है तथा लगभग 10 करोड़ टन भण्डारों की संभावना है।

जलवायु की प्रतिकूल दशाओं, अविकसित कृषि, औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े तथा बहुत कम यातायात साधनों वाले इस भौगोलिक प्रदेश में कम जनसंख्या रहती है। इस प्रदेश का जनसंख्या घनत्व 20 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. से कम है। जैसलमेर-बाड़मेर के पश्चिमी भागों में जन-घनत्व 7 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. से भी कम है जो कि कश्मीर के लद्दाख को छोड़कर देश का सबसे कम जन घनत्व है। इस प्रदेश की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है जो गांवों व ढाणियों में रहती है। दो बस्तियों के बीच की दूरी बहुत अधिक है। राजस्थान के इस मरुस्थलीय प्रदेश का प्रमुख नगर बीकानेर है। इसकी जनसंख्या 2.49 लाख है। यह नगर इस प्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित है। इस प्रदेश का दूसरा बड़ा शहर बाड़मेर है। 55 हजार जनसंख्या वाला यह व्यापारिक नगर शुष्क प्रदेश के दक्षिणी भाग में स्थित है। मरु प्रदेश के पश्चिमी भाग में स्थित जैसलमेर अन्य प्रमुख नगर है। यह तीनों नगर रेल व सड़क द्वारा राज्य के अन्य नगरों से जुड़े हैं। बाप, फलौदी, नोखा, पोकरण, चौहटन व शिव यहां के अन्य महत्वपूर्ण केन्द्र हैं। यह प्रदेश अपनी विशिष्ट संस्कृति, इतिहास, चित्रकला, दुर्ग व भवन निर्माण कला के कारण पिछले कुछ वर्षों से देश के पर्यटन मानचित्र पर अपनी विशेष पहचान बनाए हुए हैं। इंदिरा गांधी नहर परियोजना के पूर्ण होने पर इस भौगोलिक प्रदेश की काया ही पलट जायेगी, ऐसी संभावना है।

(2) **अर्द्ध शुष्क प्रदेश** :—यह भौगोलिक प्रदेश पश्चिमी शुष्क प्रदेश तथा अरावली श्रृंखला के मध्य में विस्तृत है। इसकी उत्तरी सीमा नहरी प्रदेश एवं दक्षिण-पूरब की सीमा अरावली प्रदेश द्वारा निर्धारित है इस प्रदेश के अन्तर्गत नागौर, जालौर, सीकर, झुंझुनूं जिले एवं जोधपुर, पाली, सिरोही के अधिकांश भाग तथा बाड़मेर का पूर्वी भाग सम्मिलित है। इस प्रदेश के सीकर, चूरू, झुंझुनूं जिलों का धरातल रेत से ढका

है। इस क्षेत्र पर बालुका स्तूप भी दृष्टिगोचर होते हैं। यह भाग अन्त:स्थलीय प्रवाह का क्षेत्र है। प्रदेश के नागौर क्षेत्र पर निम्न गर्त है जिसमें कुचामन, डीडवाना, सांभर व डेगाना मुख्य हैं। प्रदेश के दक्षिणी भाग में लूनी बेसिन है। शुष्क प्रदेश के इस भाग में तीव्र ढाल वाली पहाड़ियां हैं। इस क्षेत्र में कांपीय मैदान भी है। जोधपुर व बाड़मेर जिलों में कुछ छुटपुट पहाड़ियों के अतिरिक्त धरातल समतल है। शुष्क प्रदेश के उत्तरी अन्त:स्थलीय प्रवाह क्षेत्र को छोड़कर समस्त प्रदेश का ढाल उत्तर-पूर्व से दक्षिण व दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर है। इस भौगोलिक प्रदेश में अर्द्ध शुष्क प्रकार की जलवायु है। प्रदेश में गर्मी के उच्चतम तापमान 40^0 सेन्टीग्रेड के लगभग रहते हैं। जून के तापमान 46^0 व 47^0 तक भी पहुंच जाते हैं। इस प्रदेश में वर्षा गर्मी की ऋतु में होती है, तथा समस्त प्रदेश में वर्षा का औसत 25 से 50 से.मी. तक है। अरावली के समीपवर्ती भागों में वर्षा का औसत 50 से.मी. है जो पश्चिम की ओर क्रमश: कम होता है। इस भौगोलिक प्रदेश की सीमा के पश्चिम में सीमांकन का आधार 25 से मी. वर्षा रेखा ही है। सर्दी की ऋतु इस भाग में दिसम्बर से फरवरी तक होती है। जनवरी में न्यूनतम तापमान 5^0 सेन्टीग्रेड के लगभग रहते हैं। इस मौसम में चक्रवातों द्वारा कुछ वर्षा भी हो जाती है।

अर्द्धशुष्क प्रदेश की मिट्टियां रेतीली या बलुई हैं। इनमें केवल 10-12 प्रतिशत अंश ही मृत्तिका का है। जोधपुर, बाड़मेर, नागौर व चुरू के अधिकांश भागों में रेतीली मिट्टियां हैं। प्रदेश के जालौर जिले में लाल-पीली मिट्टी मिलती है। इस मिट्टी में रेतीली मिट्टियों की अपेक्षा उपजाऊ तत्व अधिक है। इस प्रदेश का लूनी बेसिन ही ऐसा क्षेत्र है जहां उपजाऊ कांप मिट्टी मिलती है। अर्द्धशुष्क प्रदेश में शुष्क प्रदेश की तुलना में वनस्पति भी अधिक है। प्रदेश के पश्चिमी भाग में खेजड़ा, कैर, बेर, बबूल, कंटीली झाड़िया व कुछ किस्म की घास पाई जाती है। अरावली के समीपवर्ती भाग में 50 से.मी. वर्षा होने से यहां शुष्क व आर्द्र प्रदेशों की मिश्रित वनस्पति दिखाई देती है। नीम इस भाग का लोकप्रिय वृक्ष है।

इस प्रदेश में 25 से 50 से मी. वार्षिक वर्षा होने के कारण लगभग 40 प्रतिशत क्षेत्र पर कृषि की जाती है। यहां मोटे अनाज-बाजरा व ज्वार प्रमुख फसलें हैं। उपजाऊ मिट्टी वाले भागों में दालों व तिलहन का उत्पादन भी होता है। लूनी बेसिन में गेहूं तथा कपास की कृषि भी की जाती है। प्रदेश के दक्षिणी क्षेत्र मे कुओं, द्वारा सिंचाई की जाती है। इस प्रदेश में कृषि के साथ पशुपालन व्यवसाय भी प्रसिद्ध है।

इस भौगोलिक क्षेत्र में जिप्सम, तांबा, इमारती पत्थर तथा संगमरमर खनिज मिलते है। प्रदेश के खेतड़ी में देश की प्रसिद्ध तांबा खान है। इमारती पत्थर जोधपुर तथा उसके आस-पास के क्षेत्र व संगमरमर मकराना में प्राप्त होता है। इस प्रदेश में जनसंख्या का जमाव सामान्य है। यहां का प्रमुख नगरीय केन्द्र जोधपुर है। इसकी जनसंख्या 5.06 लाख है। यह नगर राज्य का दूसरा सबसे बड़ा नगर है। इस प्रदेश के अन्य प्रमुख केन्द्र सीकर 1.02 लाख, पाली 90 हजार, नागौर 48 हजार झुंझुनूं 47 हजार व मकराना 40 हजार जनसंख्या वाले हैं।

(3) **नहरी प्रदेश** :–यह प्रदेश राज्य के उत्तर में गंगानगर जिले जैसलमेर के उत्तरी भाग तथा बीकानेर के दक्षिण-पश्चिम के क्षेत्रों पर विस्तृत है। वास्तव में यह प्रदेश शुष्क व अर्द्ध शुष्क जलवायु वाला है। इस प्रदेश में मानव के निरन्तर परिश्रम के फलस्वरूप सिंचाई साधनों का विस्तार हुआ तथा इसका स्वरूप ही भिन्न हो गया। इस भाग में सर्वप्रथम आने वाली नहर गंगनहर थी जिसे बीकानेर के महाराजा गंगासिंह जी ने बनवाया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इस भाग में राजस्थान फीडर, इन्दिरा गांधी मुख्य नहर (राजस्थान नहर) व भाखड़ा-नांगल परियोजना की नहरों द्वारा सिंचाई की जाने लगी। इंदिरा गांधी मुख्य नहर पूरी हो चुकी है किन्तु समस्त परियोजना को पूरा होने में समय लगेगा। इस परियोजना के सम्पूर्ण होने पर शुष्क भौगोलिक प्रदेश का बहुत बड़ा उत्तरी क्षेत्र नहरी प्रदेश के अन्तर्गत सम्मिलित हो जायेगा। नहरी प्रदेश में पानी आने के साथ-साथ यहां बोई जाने वाली फसलें बदलती गयी। पहले यहां बाजरा के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल था किन्तु अब बहुत कम क्षेत्र है। नहरी प्रदेश अब राज्य का प्रमुख

कपास, गेहूं, गन्ना व चना उत्पादक क्षेत्र है। कृषि विकास के साथ इस प्रदेश में अधिक जनसंख्या आकर्षित हुई है। यहां के प्रमुख केन्द्र गंगानगर (जनसंख्या 1.21 लाख), हनुमानगढ़ (60 हजार), रावतसर (26 हजार), सूरतगढ़ (30 हजार), नोहर (23 हजार) व भादरा (23 हजार) हैं।

(4) अरावली प्रदेश :–यह भौगोलिक प्रदेश उदयपुर के अधिकांश भागों, डूंगरपुर के पश्चिमी एवं पाली व सिरोही जिलों के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्रों पर फैला है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है यह समस्त प्रदेश पहाड़ी है। यहां पर अरावली की पहाड़ियां फैली हैं। इस प्रदेश में पर्वतमाला की चौड़ाई 50 से 80 कि मी है। प्रदेश का सबसे ऊंचा भाग उदयपुर के उत्तर में भोराट या भोरत पठार है। इसकी ऊंचाई औसत समुद्रतल से 1225 मीटर है। यह पठार कुम्भलगढ़ व गोगुन्दा के मध्य में विस्तृत है। अरावली पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी गुरुशिखर इसी प्रदेश में है। इसकी ऊंचाई 1727 मीटर है। इस पहाड़ी प्रदेश में मिट्टी का बहुत कम विकास हुआ है। इस भाग में मिट्टी गहरी भी कम है। इस प्रदेश के उत्तर-पश्चिमी व दक्षिण-पूर्वी भाग में कुछ मिट्टियां मिलती हैं, इनमें लाल लौहमय व लाल पीली मिट्टी मुख्य है। पहाड़ी प्रदेश होने के बावजूद यहां का केवल 10 प्रतिशत क्षेत्र ही वनों के अन्तर्गत है। इस प्रदेश में मिश्रित पतझड़ वन है। माउण्ट आबू पर सदाबहार वन भी दिखाई देते हैं। यहां के मुख्य वृक्षों में [illegible] आम [illegible] गूलर व खैर है। माउण्ट आबू में अम्बरतरी वृक्ष भी मिलता है।

अरावली प्रदेश में वार्षिक वर्षा का औसत 50 से 100 से मी है। [illegible] कृषि व खनिज उत्पादन मुख्य व्यवसाय है। इस प्रदेश में प्रमुख फसलें मक्का [illegible] है। खनिजों की दृष्टि से यह राज्य का सबसे धनी प्रदेश है। यहां के मुख्य खनिज [illegible] सीसा पत्थर, एस्बेस्टस व फेल्सपार है। प्रदेश का प्रमुख नगर उदयपुर (जनसंख्या 2.[illegible] लाख) है। इस क्षेत्र के अन्य केन्द्रों में नाथद्वारा (25 हजार) [illegible] (27 हजार) व [illegible] (2[illegible] हजार) है।

(5) कृषि-औद्योगिक प्रदेश :–यह भौगोलिक प्रदेश राज्य के पूर्वी [illegible] विस्तृत है। इस प्रदेश की पश्चिमी सीमा 50 से मी वर्षा रेखा [illegible] सीमा पड़ोसी राज्यों-हरियाणा व उत्तर प्रदेश तथा दक्षिणी सीमा दक्षिण-पूर्वी कृषि प्रदेश [illegible] है। इस प्रदेश के अन्तर्गत अलवर, भरतपुर, जयपुर [illegible] जिलों के कुछ भाग सम्मिलित है। 50 से 100 से मी औसत वार्षिक वर्षा [illegible] की मिट्टियां है। सबसे उपजाऊ [illegible] मिट्टी अलवर-भरतपुर में मिलती है। [illegible] एवं मिश्रित लाल, मध्य भाग अर्थात अजमेर-जयपुर में [illegible] है।

इस प्रदेश में उपजाऊ मिट्टी तथा जल आपूर्ति सुविधा के कारण कृषि [illegible] 40 प्रतिशत जनसंख्या कृषक है। प्रदेश के उत्तरी भाग में कृषि के अन्तर्गत 60 से 70 [illegible] तथा दक्षिणी भाग में 40 से 50 प्रतिशत क्षेत्र पर कृषि की जाती है। इस प्रदेश में [illegible] चने व सरसों की फसलें [illegible] है। इस भौगोलिक प्रदेश में [illegible] का राज्य में सबसे अधिक विकास हुआ है। [illegible] के उद्योगों का विकास हुआ है। प्रदेश के प्रमुख औद्योगिक केन्द्र [illegible] जयपुर (जनसंख्या 9.77 लाख) [illegible] (3.[illegible] लाख) [illegible] 1.22 [illegible] (1.0[illegible] लाख) व [illegible] (3.58 लाख) है।

(6) दक्षिण-पूर्वी कृषि प्रदेश –[illegible]

[illegible]
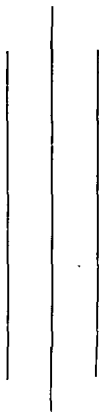
राजस्थान वार्षिकी 1988–89

राजस्थान विषयक सम्पूर्ण सन्दर्भ ग्रन्थ

सम्पादक

सीताराम झालानी

प्रबन्ध सम्पादक

नवनीत झालानी

प्रकाशक

पंचगंगा प्रकाशन

ए-28 शास्त्री नगर
जयपुर- 302016
दूरभाष : 73328

......

राजस्थान राज्य विद्युत मंडल

विद्युत उपभोक्ताओं के लिए महत्वपूर्ण सूचना

राजस्थान राज्य विद्युत मंडल के समस्त उपभोक्ताओं एवं जन साधारण को सूचित किया जाता है कि भारत सरकार ने भारतीय विद्युत अधिनियम, 1910 की धारा 39 और 44 में महत्वपूर्ण परिवर्तन कर बिजली की चोरी करने वालों के विरुद्ध कानून को सख्त बना दिया है। इसके अलावा एक नई धारा 39 ए और जोडकर बिजली की चोरी करने मे मदद करने वाले और उकसाने वाले व्यक्ति को भी दण्डित करने का प्रावधान है।

संशोधित धारा 39 के अनुसार यह प्रावधान किया गया है कि जो भी व्यक्ति बेईमानी से बिजली की चोरी करता है उसको 3 साल की सजा और कम से कम 1000/- रु. तक जुर्माने की सजा दी जा सकती है। यह भी प्रावधान कर दिया गया है कि बिजली की चोरी करने के लिए कोई भी साधन मौके पर उपलब्ध है तो कानूनन यह माना जायेगा कि बेईमानी से बिजली की चोरी की गई है।

धारा 44 में संशोधन कर यह प्रावधान कर दिया गया है कि यदि कोई व्यक्ति विद्युत मंडल के अधिकारियों द्वारा काटे गये विद्युत कनेक्शन को जोड लेता है तो 3 साल तक की जेल और 5000/- रु. जुर्माने तक की सजा दी जा सकती है। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति बदनियती से बिजली के मीटर और बिजली की खपत नापने के उपकरणों को नुकसान पहुचाता है तो उसे अदालत द्वारा 3 साल की कैद और 5000/- रु. जुर्माने तक की सजा दी जा सकती है।

अत: जन साधारण एव उपभोक्ताओं से निवेदन है कि बिजली के मीटर तथा उपकरणों से किसी तरह की छेड़छाड नहीं करें।

जन सम्पर्क अनुभाग, राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल द्वारा जनहित में प्रसारित
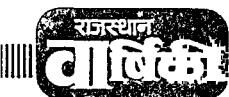
राजस्थान
वाणिज्य

है। कोटा-झालावाड़ में चम्बल व उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में कांप मिट्टी भी मिलती है। उपजाऊ मिट्टी व समान्य वर्षा के कारण इस प्रदेश में कृषि कार्य अधिक होता है। प्रदेश के 40 से 45 प्रतिशत क्षेत्र पर कृषि की जाती है। यहां की मुख्य फसलें मक्का, ज्वार, चना, गेहूं, कपास व तिलहन हैं। इस कृषि प्रदेश के मुख्य केन्द्रों में बांसवाड़ा (जनसंख्या 48 हजार), डूंगरपुर (28 हजार), झालावाड (30 हजार) चित्तौड़गढ़ (45 हजार) व निम्बाहेड़ा (28 हजार) है।

\ चम्बल के बीहड़

(7) **चम्बल बीहड़ प्रदेश** :–यह प्रदेश वास्तव में चम्बल के निम्न बेसिन का एक भाग है। चम्बल बीहड़ प्रदेश पूरवी कृषि औद्योगिक प्रदेश के पूरब सेमध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश की सीमा तक विस्तृत है। यह प्रदेश 20 से 25 किलोमीटर चौड़ी पट्टी है। इसके अन्तर्गत धौलपुर व सवाई माधोपुर जिलों के क्षेत्र आते हैं। इस भाग में चम्बल की बाढ़ के समय भूमिक्षरण द्वारा बीहडों का निर्माण होता रहा है। भूमिक्षरण के इस कार्य में यहां का कम वनस्पति वाला धरातल भी सहायक सिद्ध हुआ है। बीहडों के कारण यह प्रदेश कृषि के लिए उपयुक्त नहीं है। यह बीहड अपनी विषमता के कारण डाकुओं का शरण स्थल बने हुए हैं। यद्यपि आज डाकू समस्या अधिक गम्भीर नहीं है किन्तु पूर्व में सभी कुख्यात दस्युओं ने इन बीहडों की शरण अवश्य ही ली। इस प्रदेश का समीपवर्ती नगर धौलपुर है। इसकी जनसंख्या 44 हजार है।

राज्य के जिलों की औसत वार्षिक वर्षा

जिला	औसत वर्षा [से.मी. में]	जिला	औसत वर्षा [से.मी. में]
1 झालावाड	100 47	15 जयपुर	54 82
2 बासवाड़ा	92.24	16 अजमेर	52.73
3 कोटा	88 56	17. पाली	49 04
4 चित्तौड़गढ़	85 21	18 सीकर	46 61
5 बूंदी	76 71	19 झुंझुनू	44 45
6 डूंगरपुर	76 17	20. जालौर	42.16
7 धौलपुर	75 12	21. नागौर	38 86
8 भीलवाड़ा	69 90	22. चूरू	32.55
9 सवाईमाधोपुर	68 92	23. जोधपुर	31 87
10 भरतपुर	67.15	24. बाड़मेर	27.75
11 सिरोही	63 84	25. बीकानेर	26.37
12 उदयपुर	62 45	26. श्रीगंगानगर	25.37
13 टोंक	61 36	27. जैसलमेर	16 40
14 अलवर	61 16		

कतिपय प्रमुख नगरों के अधिकतम-न्यूनतम तापमान

नगर	[सेण्टीग्रेड में] अधिकतम	न्यूनतम	नगर	[सेण्टीग्रेड में] अधिकतम	न्यूनतम
अजमेर	44	2	जयपुर	44	3
अलवर	45	8	जैसलमेर	46	2
बासवाड़ा	44	8	झालावाड	45	3
बाड़मेर	45	5	जोधपुर	45	5
धौलपुर	47	3	कोटा	45	9
भीलवाड़ा	44	5	नागौर	47	0
बीकानेर	48	6	सीकर	45	3
चित्तौड़गढ	44	6	आबू पर्वत	35	0
चूरू	47	4	उदयपुर	41	3
श्रीगंगानगर	47	3	सवाईमाधोपुर	45	2

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि राजस्थान की जलवायु "मानसूनी" है। इसका तात्पर्य है कि यहा एक विशेष मौसम में ही वर्षा होती है- गर्मियों के बाद। भारत की तरह राजस्थान को भी यह गौरव मिला है कि वर्षभर में ऋतुओं का जो चक्र यहा चलता है, वैसा विश्व में कहीं नहीं है। अन्य देशों में कहीं साल भर रोज वर्षा होती है, तो कहीं वर्षों गुजर जाते हैं बादलों के दर्शन तक नहीं होते। कहीं सालभर तापमान इतना नीचे [शून्य से भी कम] रहता है कि वहा सदा बर्फ जमी रहती है तो कहीं इतनी अधिक गर्मी पड़ती है कि दिन में बाहर नहीं निकल सकते। परन्तु हमारे यहा ऋतुओं का एक निश्चित क्रम है और सभी ऋतुएं क्रमानुसार यहा अपनी छटा दिखाती हैं। वैसे तो यहा 6 ऋतुएं निर्धारित की गई हैं किन्तु जहा तक भौगोलिक दृष्टि से जलवायु का सम्बन्ध है, तीन प्रमुख ऋतुएं हैं.
[अ] गर्मी की ऋतु या ग्रीष्म ऋतु- मार्च से मध्य जून तक
[ब] सर्दी की ऋतु या शीत ऋतु- अक्टूबर से फरवरी तक
[स] वर्षा ऋतु- मध्य जून से 15 सितम्बर तक।

किसी भी स्थान की जलवायु पर उसकी स्थिति [अक्षांशो में], धरातल की बनावट, ऊंचाई और समुद्र से दूरी का प्रभाव पड़ता है। इन सबके आधार पर उस स्थान की जलवायु निश्चित की जाती है। यहां की जलवायु की निम्नलिखित विशेषताएं है -

1- लगभग सारी वर्षा गर्मियों में मानसूनी हवाओ से होती है। सर्दियों में बहुत कम वर्षा- वह भी उत्तरी-पश्चिमी राजस्थान मे होती है।

2- वर्षा की मात्रा व समय अनिश्चित है। अमूमन 15 से 30 जून के बीच भाप भरी हवाएं आ जाती है, लेकिन आये साल वर्षा के अभाव में अकाल पड़ते रहते है। मात्रा भी अनिश्चित है। कभी कम तो कभी अधिक। सन् 1981 मे जयपुर में बाढ का प्रलय उपस्थित हो गया था तो सन् 1987 ऐसा बीता कि पीने को भी पानी नहीं मिला।

3- वर्षा का वितरण भी एक समान नहीं है। दक्षिण-पूर्वी भाग में अधिक किन्तु उत्तरी-पश्चिमी भाग म बहुत कम होती है।

4- पूरब से पश्चिम की ओर वर्षा की मात्रा क्रमश कम होती जाती है।

[अ] ग्रीष्म ऋतु

राजस्थान में गर्मी के मौसम में बहुत कठोर गर्मी पड़ती है। इसके अतिरिक्त गर्मी का मौसम अन्य मौसमो से बड़ा भी होता है। गर्मियो में, केवल ऊंचे पहाड़ी भागो के अतिरिक्त, शेष राजस्थान में गर्मी अत्यन्त कठोर होती है। गर्मी का मौसम साधारणत मार्च से आरम्भ हो जाता है। इस समय साधारण गर्मी पड़नी आरम्भ हो जाती है। यह अगस्त-सितम्बर तक पड़ती रहती है किन्तु मई व जून बहुत गरम महीने होते हैं।

मार्च के महीने मे सूर्य की किरण उत्तर की ओर सीधी पड़ने लगती है, जिसके फलस्वरूप तापमान म वृद्धि, पहले दक्षिण के पठार पर और फिर क्रमश भारत के उत्तरी उत्तर-पश्चिमी और पश्चिमी भागो मे होने लगती है। राजस्थान मे मार्च के महीने मे जो तापमान में वृद्धि होती है, वह सर्वत्र समान ही होती है। अप्रेल मे हवाएं पश्चिम से पूरब की ओर चलने लगती है, जो थार के रेगिस्तान के ऊपर से आने के कारण शुष्क व गरम होती है। अप्रेल व मई म सूर्य सिर के ऊपर आ जाता है और गर्मी बहुत पड़ती है, दिन बहुत ही गरम हो जाते है। राजस्थान के पश्चिमी भाग म मुख्यत बीकानेर, जैसलमर, जोधपुर और बाड़मेर म दैनिक उच्चतम तापमान 40 सेंटीग्रेड से 45 सेंटीग्रेड तक हो जाता है। दोपहर को झुलसाने वाली गर्मी पड़ती है तथा बाहर निकलना कठिन हो जाता है।

थार का रेगिस्तान भारत मे सबसे अधिक गर्म भाग है। दिन मे बहुत गर्मी और चमक होती है। वायु मे नमी एक प्रतिशत से भी कम रहती है। सुबह के पश्चात, दिन बढ़ने के साथ ही साथ गर्मी भी बढ़ती जाती है। दोपहर तक तापमान 30 डिग्री सेंटीग्रेड और 2-3 बजे तक 49 डिग्री सेंटीग्रेड तक हो जाता है।

सम्पूर्ण राजस्थान म दोपहर म गरम-हवाएं [लू] व रेत की आंधियां चलती है, किन्तु पश्चिमी व उत्तरी-पश्चिमी राजस्थान के रेगिस्तानी भागो म ये आंधियां अत्यन्त भयंकर होती है। ये प्राय तीसरे पहर आती है और कभी-कभी तो दिन म ही रात्रि के समान अंधेरा हो जाता है। राजस्थान की काली-पीली आंधी विख्यात है जो गर्मियो में ही चलती है।

वातावरण की शुष्कता, मिट्टी की प्रकृति और प्राकृतिक वनस्पति के अभाव के फलस्वरूप रात्रि म तापमान अचानक गिर जाता है। दिन की बड़ी गर्मी के पश्चात राजस्थान का मरु प्रदेश रात म शीतल हो जाता है क्योंकि धूप से तप्त बालू रेत रात होते ही ठंडी होने लगती है, जिसके परिणामस्वरूप वायु भी शीतल हो जाती है। इस प्रकार इस भाग म गर्मी के मौसम मे भी राते शीतल एवं सुहावनी होती है। गर्मियो म भी दिन और रात के तापमान मे इतनी विषमता होती है कि दिन की गर्मी स तप्त पहाड़ी चट्टाने रात को सिकुड़ कर तेज आवाज के साथ टूट जाती है।

[ब] शीत ऋतु

जाड़े का मौसम यद्यपि यहां कठोर होता है किन्तु सर्वत्र अत्यन्त कठोर नहीं होता। रात्रियां बहुत ही सर्द होती है किन्तु दिन म उतनी अधिक सर्दी नहीं पड़ती। राजस्थान के उत्तरी एवं पश्चिमी रेतीले भाग मे ठंड बहुत अधिक पड़ती है। जैसलमर, बाड़मेर, जोधपुर, गंगानगर, चूरू व बीकानेर के निकटवर्ती भागो मे कभी-कभी रात म पाला भी पड़ जाता है। राज्य के आन्तरिक भागो के दिन व रात के तापमानो म अचानक और अधिक परिवर्तन होता है। सम्पूर्ण राजस्थान म अक्टूबर के महीने म लगभग एक सा तापमान रहता है अधिकतम 33 डिग्री से से 36 डिग्री से तक और न्यूनतम 17 से 21 डि.ग्री से तक। नवम्बर के महीने म अपेक्षाकृत अधिक सर्दी पड़ने लग जाती है। आबू पर्वत पर ऊंचाई के कारण अधिक सर्दी पड़ती है।

दिसम्बर व जनवरी कठोर सर्दी के महीने होते है। राज्य के उत्तरी भाग मे जनवरी का औसत तापमान उत्तर म 12

डिग्री से से दक्षिण में 16 डिग्री से तक चलता है। इस प्रकार राजस्थान के उत्तरी भागों में दक्षिणी भागों की अपेक्षा अधिक सर्दी पडती है। दक्षिण से उत्तर की ओर प्राय. एक डिग्री अक्षाश पर एक डिग्री सेंटीग्रेड तापमान कम हो जाता है। राजस्थान लगभग 23 डिग्री उत्तरी अक्षाश से 30 डिग्री उत्तरी अक्षाश तक विस्तृत है, अतः दक्षिण और उत्तर के तापमान में लगभग 7 डिग्री का अन्तर रहता है। कश्मीर, हिमाचल प्रदेश आदि क्षेत्रों में हिमपात के कारण शीत लहर आने पर सर्दी बहुत बढ जाती है।

जनवरी के आरंभिक अथवा मध्य भाग में प्राय थोडी मात्रा में वर्षा हो जाती है। इसे मावठ कहते हैं यह वर्षा यूरोप के दक्षिण व अफ्रीका के उत्तर में स्थित भू-मध्य सागर से आने वाले चक्रवातों से होती है। ये चक्रवात तूफान के रूप में पश्चिमी पाकिस्तान होते हुए आते हैं। ये वर्षा करते हैं व कभी-कभी ओले भी पड़ जाते हैं। इन चक्रवातों से 5 से 10 से.मी. तक वर्षा हो जाती है। दक्षिणी राजस्थान को तो इस वर्षा का उतना अंश प्राप्त नहीं होता जितना की उत्तरी तथा पश्चिमी राजस्थान को प्राप्त होता है। सर्दी के मौसम में वर्षा की यह मात्रा यद्यपि कम होती है किन्तु कृषि के लिए इसका विशेष महत्व है। रबी की फसल के लिए यह अत्यन्त लाभप्रद होती है। इस समय गेहूं, जौ, चना, सरसों, तारामीरा आदि खेतों में सिचाई द्वारा तैयार किये जा रहे होते हैं।

[स] वर्षा ऋतु

वैसे राजस्थान में वर्षा ऋतु मध्य जून से मध्य सितम्बर तक है, किन्तु पश्चिमी राजस्थान की गणना एशिया के उन क्षेत्रों में की जा सकती है, जहा वर्षा नहीं होती है। वास्तव में यह प्रदेश एशिया के वर्षा रहित भागों के निकट ही है। इस भाग में बगाल की खाड़ी से आने वाली दक्षिणी-पश्चिमी मानसूनी हवाओं से कठिनता से औसत वर्षा 12 से 15 से मी. हो जाती है। इसका कारण यह है कि इन हवाओं की अधिकाश आर्द्रता मरु भूमि को पार करते समय नष्ट हो जाती है। पश्चिमी भाग में केवल आबू में सबसे अधिक वर्षा होती है। सन् 1875, 1881, 1892 और 1893 में आबू मे प्रत्येक वर्ष 250 से.मी. से अधिक वर्षा हुई थी। अरब सागर से उठने वाला मानसून मालवा के पठार तक ही वर्षा कर पाता है। इसके बाद यह अरावली पर्वत के समानान्तर उत्तर की ओर बढ़ जाता है।

दक्षिणी राजस्थान वर्षा करने वाली हवाओं के रुख में है जिसके कारण इस भाग में पर्याप्त वर्षा हो जाती है। दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में पूर्वी व पशिचमी, दोनों ही हवाओं से अच्छी वर्षा हो जाती है। इस प्रकार दक्षिणी राजस्थान में बासवाडा से झालावाड़ तथा कोटा तक के भागो में वर्षा केवल अरब सागर से आने वाली हवाओं- जो नर्मदा व माही नदियों की घाटियों में होती हुई मालवा पार करके आती है- से ही नहीं होती, वरन् बगाल की खाड़ी से आने वाली हवाओं से भी होती है, जो कभी-कभी मेवाड़ तक पहुच जाती है। इस भाग में यदि दक्षिणी-पश्चिमी मानसून शीघ्र समाप्त हो जाते हैं तो दक्षिणी-पूर्वी मानसून से वर्षा हो जाती है। राजस्थान में अधिकाश वर्षा बगाल की खाड़ी से आने वाली भाप भरी हवाओं से ही होती है। ये हवायें पहले असम क्षेत्र में वर्षा कर हिमालय के साथ पश्चिम की ओर बढती हैं।

मेवाड के पहाड़ी-क्षेत्र में, हाड़ौती के पठार पर और अरावली पहाड़ के पूर्वी ढालों पर अच्छी वर्षा होती है। डूगरपुर, बासवाडा आदि मे पश्चिमी हवाओं से अच्छी वर्षा हो जाती है।

हवाए व आधियां— दक्षिण-पश्चिम और पश्चिम की ओर से प्राय हवाए व आधिया चला करती हैं। ये जून के महीने मे सबसे तेज व नवम्बर के महीने में सबसे हल्की होती है। जयपुर व कोटा की अपेक्षा राजस्थान के जोधपुर, बीकानेर, गगानगर, जैसलमेर व बाडमेर के शुष्क व अर्द्ध-शुष्क भागों में वायु की गति अधिक तीव्र होती है। राजस्थान में वायु की अधिकतम गति लगभग 140 किलोमीटर प्रति घटा है। गर्मियों में सम्पूर्ण राजस्थान में गरम हवाए चलती हैं, किन्तु रेगिस्तानी क्षेत्र से आने वाली हवाए भयकर होती हैं। वे अपने साथ रेत लाती हैं। ये रेत की आधिया प्राय. तीसरे पहर आया करती हैं। इन आधियों का रग प्राय पीला होता है किन्तु कभी-कभी ये काली भी होती हैं। कभी-कभी तो इन आधियों से दिन में ही घोर अधेरा छा जाता है। इन आधियों को काली-पीली आधी कहते हैं, जो कभी-कभी हो चलती है।

औसत रूप में वर्ष भर में धूल भरी आधिया गगानगर में 27 दिन, बीकानेर में 18 दिन, जोधपुर में 8 दिन, जयपुर में 6 दिन, कोटा में 5 दिन तथा अजमेर मे 3 दिन चला करती हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि धूल की आधिया पश्चिमी शुष्क भागों में अधिक आती हैं, और अर्द्ध-शुष्क उपजाऊ मैदानों व अधिक वर्षा वाले भागों में क्रमश. कम होती जाती हैं। महीनों के अनुसार उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र मे सबसे अधिक आधियां जून के महीने में आती है, जबकि दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्र में मई के महीने मे।

तूफान एवं ओलावृष्टि: राज्य के पश्चिमी भाग में जिन महीनों में आंधियों का प्रकोप रहता है, लगभग उन्हीं महीनों में तूफान आते हैं, अर्थात तेज हवाओं के साथ पानी बरसता है। ये तूफान स्थानीय भी होते हैं और व्यापक भी। तूफान मई से सितम्बर तक आते हैं। जून-जुलाई में अधिक तूफान आते हैं। राज्य के पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वी भागों में इन तूफानों की संख्या अधिक होती है और ज्यों-ज्यों पश्चिम की ओर बढ़ते हैं, इनकी संख्या कम होती जाती है। औसतन वर्ष में जयपुर व झालावाड़ में 40 से 50, अजमेर व कोटा में 30 से 35, जोधपुर में 20 तथा बाड़मेर क्षेत्र में 10 तूफान आते हैं।

ओलावृष्टि भी यहां की जलवायु का एक लक्षण है। ओले कभी-कभी गर्मियों में और अधिकतर सर्दी में गिरते हैं। अब तक के रेकार्ड के अनुसार जयपुर में दो वर्ष में तीन बार तथा बीकानेर, बाड़मेर, अजमेर, जोधपुर व नागौर में तीन वर्षों में एक बार एवं गंगानगर में चार वर्षों में एक बार भारी ओलावृष्टि होती है।

जलवायु के प्रदेश— जलवायु के प्रदेशों का वर्गीकरण वर्षा, तापमान व वनस्पति के आधार पर किया जाता है। जिस क्षेत्र में जलवायु के इन तीनों आधारों में समानता पाई जाती है वह क्षेत्र एक ही जलवायु का प्रदेश कहा जाता है। इनके आधार पर राजस्थान को पांच जलवायु प्रदेशों में विभक्त किया गया है -

1. शुष्क जलवायु प्रदेश
2. अर्द्धशुष्क जलवायु प्रदेश
3 उपआर्द्र जलवायु प्रदेश
4 आर्द्र जलवायु प्रदेश
5 अति आर्द्र जलवायु प्रदेश

1. शुष्क जलवायु प्रदेश: इस प्रदेश के अन्तर्गत सम्पूर्ण जैसलमेर जिला तथा जोधपुर, बाड़मेर, बीकानेर व गंगानगर आदि जिलों के कुछ भाग आते हैं। इसी जलवायु प्रदेश में भारतीय मरुस्थल [थार के रेगिस्तान का भारतीय भाग] सम्मिलित है। इस क्षेत्र की जलवायु कठोर है, अर्थात दिन व रात के तापमान में भारी अन्तर पाया जाता है। इस प्रकार गर्मी और सर्दी के तापमान में भी बहुत अन्तर रहता है। इस क्षेत्र में वर्षा का 90 प्रतिशत भाग गर्मियों में प्राप्त होता है। यहां गर्मी का औसत तापमान 35 डिग्री से तथा सर्दी का औसत तापमान 10 से 20 डिग्री से रहता है। तापमान की विषमता पश्चिम से पूरब की ओर कम होती जाती है। इस क्षेत्र में प्राकृतिक वनस्पति का अभाव है। क्षेत्र के कुछ भागों में वर्षा ऋतु के दिनों में विशेष प्रकार की घास उग आती है।

2. अर्द्धशुष्क जलवायु प्रदेश: इस प्रदेश में चूरू व सीकर पूरे जिले, जोधपुर, बाड़मेर व बीकानेर के शुष्क पश्चिमी क्षेत्र तथा समस्त पूर्वी भाग, पाली, नागौर व जालौर आदि जिलों के अधिकांश पश्चिमी भाग तथा झुंझुनू जिले का आधा पश्चिमी भाग सम्मिलित है। वार्षिक वर्षा का औसत 20 से 40 सेंटीमीटर है। गर्मी का औसत तापमान 32 से 35 डिग्री सेंटीग्रेड व सर्दी का 10 से 15 डिग्री सेंटीग्रेड रहता है। इस क्षेत्र में कांटेदार झाड़ियां, बबूल व खेजड़े के पेड़ पाये जाते हैं।

3. उपआर्द्र जलवायु प्रदेश: इसके अन्तर्गत अजमेर, जयपुर व अलवर जिले, झुंझुनू, जालौर व पाली जिलों के पूर्वी भाग एवं टोंक, भीलवाड़ा व सिरोही के कुछ भाग सम्मिलित हैं। वर्षा का वार्षिक औसत 40 से 60 से मी. है। गर्मी का औसत तापमान 28 से 34 डिग्री सेंटीग्रेड तथा सर्दियों में 12 से 18 डिग्री सेंटीग्रेड पाया जाता है। इस प्रदेश में थोड़ी बहुत प्राकृतिक वनस्पति भी पाई जाती है।

[illegible]

कुछ वर्षा सर्दियों में भी होती है। यहां प्राकृतिक वनस्पतियां बहुतायत से पाई जाती हैं।

5. अति आर्द्र जलवायु प्रदेश: इस प्रदेश में झालावाड़ व बांसवाड़ा जिले, सिरोही का माउण्ट आबू क्षेत्र तथा कोटा व उदयपुर के दक्षिणी भाग सम्मिलित हैं। इस क्षेत्र में वार्षिक वर्षा का औसत 80 से 100 सेंटीमीटर है। माउण्ट आबू में तो 150 सेंटीमीटर तक वर्षा होती है। गर्मी का औसत तापमान [माउण्ट आबू को छोड़कर] 30 से 34 डिग्री सेंटीग्रेड तथा सर्दी का 12 से 18 डिग्री सेंटीग्रेड रहता है। प्राकृतिक वनस्पति की दृष्टि से यह भाग राज्य का सर्वाधिक घनी क्षेत्र है।

अकाल

राजस्थान के साथ अकाल का नाम जुड-सा गया है। यहा एक कहावत है कि "तीजो कुरियो, आठवों काल" अर्थात हर तीसरे साल यहा "कुरिया" [अर्द्ध-अकाल] तथा हर आठवे साल भयकर अकाल अवश्य पड़ता है। "कुरियो" या "करवरौ" आधे अकाल की स्थिति का सूचक है। इसमे थोड़ा-बहुत अन्न व चारा उत्पन्न हो जाता है।

अकाल भी कई प्रकार के माने गए है [1] अन्नकाल- जिसमे कृषि उपज [अन्न] नहीं होती, [2] जलकाल- जिसमे जल का सकट उत्पन्न हो जाता है। [3] तृणकाल- जिसमे पशुओ के लिए चारे व घास का अभाव हो जाता है और [4] त्रिकाल- जिसमें अन्न, चारे व पानी तीनों का भयकर अभाव हो जाता है। सन् 1987 मे प्रदेश में ऐसा ही त्रिकाल पडा था।

राजस्थान के विख्यात इतिहासकार जेम्स टाड ने 11वी सदी मे पडने वाले एक भीषण अकाल का वर्णन किया है, जिसमे लगातार 12 वर्षों तक पानी नहीं बरसा। टाड के अनुसार चूरू जिले के रिणी तथा फोगपत्तल इसी अकाल में उजाड हुए। विक्रमी सवत 1348 मे यहा फिर एक भीषण अकाल पडा। लोगो ने भूख से तडप-तडप कर मरने की अपेक्षा यमुना नदी मे डूब मरना अच्छा समझा। किवदन्ती तो यहा तक है कि यमुना मे इतने लोगों ने प्राणोत्सर्ग किया कि कुछ समय के लिए नदी मे लाशों का एक बाध बन गया और यमुना की धारा मे अवरोध उत्पन्न हो गया।

इसी तरह कहा जाता है कि वि स 1392 के अकाल मे लोगों ने अपने ही पशुओ का मास तो खाया ही, मनुष्यो का मास भी उन्हे खाना पडा था।

इसी तरह के भीषण अकाल वि स 1542, 1634, 1635, 1670, 1751, 1752, 1753, 1760, 1853 व 1868 मे तत्कालीन राजपूताने के विभिन्न भागो मे पडे। वि स 1900 व 1901 मे पडे विनाशकारी अकाल को "सहसा-भद्सा" अकाल के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

वैसे तो वि स. 1905, 1908, 1917, 1925, 1934, 1948 व 1952 में भी भीषण अकाल पडे। सम्वत् 1925 के अकाल में तो लोगो ने दो-तीन रुपयो मे अपने बच्चो तक को बेच दिया।

लेकिन इन सभी अकालो से कहीं विनाशकारी अकाल विक्रमी सम्वत् 1956 मे पडा था जो "त्रिकाल" था और आज भी वह "छपन्ना काल" के नाम से आतंकित करता है। यह अकाल वैसे तो सारे राजपूताने मे पड़ा था लेकिन जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, मेवाड़, टोंक तथा हाडौती के क्षेत्र इससे विशेषतया प्रभावित हुए थे। इसकी चपेट में जयपुर तथा अजमेर भी आए थे। कहते हे कि इस "छपने अकाल" मे राजस्थान के दस लाख व्यक्ति भूख के मारे मोत के शिकार हुए, जानवरो की तो बात ही क्या। उन दिनो अनेक देशी रियासतो के होने तथा यातायात के साधनो के अभाव मे "छपने अकाल" की भीषणता और भी बढ गई थी।

5. मिट्टियां

साधारणतया जिसे हम मिट्टी कहते है, वह चट्टानों का चूरा है। ये चट्टाने मुख्यतया तीन प्रकार की होती है . स्तरीकृत, आग्नेय और परिवर्तित। क्षरण या नग्नीकरण के कार्यकर्ताओं–तापमान, वर्षा, हवा, हिमानी बर्फ नदियों–द्वारा ये चट्टाने टुकडो-टुकडों में विभाजित होती जाती हैं, जो अन्ततः हमें मिट्टी के रूप में दिखाई देती है। मिट्टी बनते समय चट्टानों के टुकडे कई स्तरों से गुजरते हैं। आकार के अनुसार इनको निम्न प्रकार विभाजित किया जा सकता है :-

1. बोल्डर–जो 256 मिलीमीटर या इससे अधिक व्यास के होते हैं,
2. कब्बल–व्यास 64 से 256 मि मी .
3. पेब्ल–व्यास 4 से 64 मि.मी .
4. ग्रेन्यूल–व्यास 2 से 4 मि.मी..
5. रेत–व्यास 1/16 से 2 मि मी.
6. सिल्ट–व्यास 1/256 से 1/16 मि.मी.. तथा
7. क्ले या चिकनी मिट्टी–जिसके कणों का व्यास 1/256 मि मी. से भी कम होता है।

इन मिट्टियों में अधिकतर सिलिकन, अल्यूमिनियम और मैगनेशियम का अंश होता है। जब इन मिट्टियों में वनस्पति कण मिलते हैं तो इनकी उर्वरता बढ़ जाती है। व्यावहारिक दृष्टि से मिट्टियों को तीन भागों में बांटा जाता है-काली, दोमट और रेतीली मिट्टी। कुछ लोग पथरीली मिट्टी का एक चौथा वर्ग भी मानते हैं।

अवस्थिति, उपयोगिता तथा अन्य विशेषताओं के आधार पर वैज्ञानिक दृष्टि से राजस्थान की मिट्टियों का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है :-

1. रेतीली या मरुस्थलीय मिट्टी–जिसमें बालू, लाल रेतीली, पीली-भूरी रेतीली और खारी मिट्टी शामिल है।

2. लाल-लोम या दोमट मिट्टी।

3. कछारी या जलोढ़ मिट्टी।

4. काली मिट्टी।

5. मिश्रित लाल व पीली मिट्टी।

6. मिश्रित लाल और काली मिट्टी।

7. लेटेराइट मिट्टी।

1. रेतीली या मरुस्थलीय मिट्टी –ऐसी मिट्टी राजस्थान के अधिकांश भागों में पाई जाती है : जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर श्रीगंगानगर, सीकर चूरू और नागौर तथा झुंझुनूं जिलों की अधिकांश मिट्टियां इसी श्रेणी की हैं। इसे ही बलुई मिट्टी या बालूरेत भी कहते हैं। इस मिट्टी का कण मोटा होता है और प्रत्येक कण अलग-अलग होता है। इस मिट्टी में घुलने वाले लवण का उच्च प्रतिशत होता है। इस मिट्टी में पानी की नमी रोक रखने की शक्ति बहुत ही कम होती है। कृषि के लिए यह मिट्टी अच्छी नहीं मानी जाती है। इस क्षेत्र में पानी प्राय: 100 फुट की गहराई पर मिलता है। कहीं-कहीं पर पानी का स्तर और भी अधिक नीचा है। राजस्थान के लगभग 38 प्रतिशत भू-भाग में यह मिट्टी पाई जाती है।

2. लाल मिट्टी .–यह मिट्टी उदयपुर जिले के मध्यवर्ती व दक्षिणी भागों में और सम्पूर्ण डूंगरपुर जिले में पाई जाती है। लौह-कण के सम्मिश्रण के कारण यह लाल दिखाई देती है। इसकी बनावट में स्थानीय विभिन्नताएं पाई जाती हैं। जिन मूल चट्टानों से इस मिट्टी का निर्माण हुआ है, उनकी भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं में अंतर है। विभिन्न स्थानों पर इसकी गहराई भी अलग-अलग पाई जाती है। इस मिट्टी में पोटाश व चूने का अंश पर्याप्त मात्रा में होता है किन्तु नाइट्रोजन व फास्फोरस की कमी है। यद्यपि यह मिट्टी बारीक व गहरी होती है और साधारण उपजाऊ होती है। इस मिट्टी में मुख्यत: मक्का उत्पन्न की जाती है।

3. काली मिट्टी.– यह मिट्टी उदयपुर संभाग के कुछ भागों-डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़ प्रतापगढ़ तथा पूरब में कोटा व झालावाड़ क्षेत्रों में पाई जाती है। इस मिट्टी के बड़े-बड़े मैदान नहीं हैं, परन्तु छोटे मैदान ही हैं। भीगने पर यह फूल जाती है और चिपचिपी हो जाती है किन्तु सूखने पर यह सिकुड़ जाती है तथा कठोर हो जाती है। इसमें मोटी दरारें पड़ जाती हैं। इस मिट्टी में नमी को रोके रखने का विशेष गुण होता है। साथ ही यह मिट्टी उपजाऊ भी खूब होती है। इस मिट्टी के क्षेत्र में 50 से 75 से.मी. तक वर्षा होती है, अतः अनेक प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं।

4. मिश्रित लाल व काली मिट्टी .–यह मिट्टी उदयपुर के पूर्वी भाग में, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा और भीलवाड़ा जिले के पूर्वी भाग में पाई जाती है। इस मिट्टी में फास्फेट, नाइट्रोजन का अभाव है। यह मिट्टी साधारण उपजाऊ है। इन भागों में मक्का व कपास का उत्पादन मुख्यतः किया जाता है। इन भागों में [illegible] फुट की गहराई पर पानी मिल जाता है।

राजस्थान वार्षिकी
1988-89

द्वितीय अंक

मूल्य- एक सौ बीस रुपये

5. मिश्रित लाल व पीली मिट्टी :–इस प्रकार की मिट्टी उदयपुर जिले के पश्चिमी भाग, भीलवाड़ा के पश्चिमी भाग तथा सवाईमाधोपुर, अजमेर व सिरोही जिलों में पाई जाती है। गहराई के बढ़ने के साथ-साथ इस मिट्टी में पीले, लाल व काले रंग की पिचकारी सी दिखाई देती है। इसमें लौह-अंश होने के कारण इसका रंग लाल व पीला है। कहीं-कहीं पर इस मिट्टी का रंग हल्के पीले से लेकर गहरा भूरा तक भी देखने को मिलता है। इस मिट्टी पर स्थानीय दशाओं व जलवायु का भी प्रभाव पड़ा है। कहीं-कहीं पर इस मिट्टी के कण अपेक्षाकृत मोटे हैं। इन क्षेत्रों में 30 से 40 फुट की गहराई पर पानी मिल जाता है।

6. लेटेराइट मिट्टी –इस प्रकार की मिट्टी बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ व कुशलगढ़ के कुछ क्षेत्रों में पाई जाती है। इस मिट्टी में चूने, नाइट्रेट व ह्यूमस (वनस्पति अंश) की कमी होती है अत. वनस्पति उगाने के लिए उपयुक्त नहीं है, किन्तु रासायनिक खादों की सहायता से यह उपजाऊ बनाई जा सकती है।

7. जलोढ़ अथवा कछारी मिट्टी:–यह मिट्टी राजस्थान के पूरबी भाग में मुख्यत: पाई जाती है। इसका थोड़ा सा क्षेत्र उत्तरी राजस्थान में भी है। अलवर, भरतपुर, जयपुर और सवाईमाधोपुर जिलों में तथा गंगानगर जिले के मध्यवर्ती भाग में यह मिट्टी पाई जाती है। इस मिट्टी के क्षेत्र भी बहुत बड़े नहीं हैं। इस मिट्टी में नाइट्रोजन की तो कमी होती है किन्तु चूना, पोटाश, फासफोरस, लोहा आदि अनेक पदार्थों की अधिकता होती है। यह मिट्टी बहुत उपजाऊ होती है। इस मिट्टी में अनेक प्रकार की फसलें उत्पन्न की जा सकती हैं। गेहूं, चावल, कपास और तम्बाकू के लिए यह मिट्टी बहुत उपयुक्त होती है।

6. वनस्पति

किसी भी स्थान की वनस्पति वहां की मिट्टी की उर्वरता और जलवायु की देन होती है। वनस्पतियों को मुख्यतया तीन वर्गों में बांटा गया है–वन, झाड़ियां और घास।

जलवायु के अनुसार वन भी तीन प्रकार के होते हैं सदाबहार वन, शीतोष्ण कटिबन्धीय वन और मानसूनी वन। मानसूनी वनों की पहचान है कि तेज गर्मी से बचाव के लिए बसन्त ऋतु में ही इनके पत्ते गिर जाते हैं। सदाबहार वनों में पतझड़ नहीं होता तथा शीतोष्ण कटिबन्धीय वन गिने चुने होते हैं।

इन वनों में तरह-तरह के जंगली पशु पाये जाते हैं। राजस्थान के जंगलों में शेर, बघेरा, भालू, सांभर, चीतल, चिंकारा, चौसिंगा, काला हिरण, नीलगाय, जरख, सूअर, लोमड़ी, सेही, नेवला, खरगोश, तरह-तरह की छिपकलियां, गिलहरी, बिच्छू, पाटागोह तथा चूहे प्रमुखता से पाये जाते हैं।

रणथम्भौर तथा सरिस्का में जंगली जानवरों के अभयारण्य बने हैं। पक्षियों के लिए घना (भरतपुर) का पक्षी अभयारण्य विख्यात है। अन्य वन्यजीव अभयारण्य हैं: तालछापर (चूरू), दर्रा (कोटा), नाहरगढ़ (जयपुर), राष्ट्रीय मरु उद्यान (जैसलमेर), जयसमन्द (उदयपुर), रामसागर (भरतपुर), वन-विहार (धौलपुर), रणकपुर (पाली), कुम्भलगढ़ (उदयपुर), आबू संरक्षण स्थल (सिरोही), टाडगढ़ रावली (अजमेर), सीतामाता (बांसवाड़ा), फुलवाड़ी की नाल (उदयपुर) तथा बरेठा (भरतपुर)।

राज्य में मोर बहुतायत से पाये जाते हैं। इसे राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया है जिसे सरकार ने संरक्षित कर रखा है। राजस्थान सरकार ने गोडावण पक्षी को राज्य-पक्षी घोषित कर इसे लुप्त होने से बचाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

इनके अतिरिक्त राज्य के जंगली क्षेत्रों में तीतर, चील, बाज, कबूतर, सारस, जंगली मुर्गा, काला कौवा, तोता, मैना के अतिरिक्त बगुले, मगरमच्छ और अनेक जीव भी पाए जाते हैं। छोटे से जंगली-पंछी सवेरे कांव-कांव करते ही रहते हैं।

राजस्थान में वनों की विशेष कमी है। भारत के अन्य राज्यों के वन-क्षेत्रों से राजस्थान के वन-क्षेत्र की तुलना करने पर ज्ञात होगा कि हमारे राज्य का बहुत कम भाग वनों से आच्छादित है। सबसे अधिक वन-क्षेत्र असम राज्य (42 प्रतिशत) में है और सबसे कम वन-क्षेत्र पंजाब राज्य (2.5 प्रतिशत) में। राजस्थान में कुल क्षेत्रफल का लगभग 3.3 प्रतिशत भाग ही वनों से ढका हुआ है। भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग 10 प्रतिशत क्षेत्र राजस्थान में है, जबकि वन-क्षेत्र भारत के कुल वन-क्षेत्र का लगभग 1.8 प्रतिशत ही है।

पर्यावरण में संतुलन बनाये रखने के लिए क्षेत्रफल के 33 प्रतिशत भाग में वन होने चाहिए। राजस्थान के कुल वनों का लगभग 32 प्रतिशत भाग सुरक्षित वन, 44 प्रतिशत रक्षित-वन और शेष 24 प्रतिशत अवर्गीकृत वन हैं।

वनों का क्षेत्रीय वितरण

राज्य के अधिकांश भाग में शुष्क जलवायु है जो वनों के विकास के लिए अनुकूल नहीं है। वनों के वितरण में जलवायु का ही प्रमुख महत्व होता है।

राजस्थान के वन-क्षेत्र प्रधानतः 50 से मी. की वर्षा-रेखा के पूरब में ही पाये जाते हैं। यह वर्षा रेखा उत्तर-पूरब से दक्षिण-पश्चिम की ओर जाती है। इस रेखा के पूरब में अधिक वर्षा होने के कारण वन अपेक्षाकृत अधिक हैं और पश्चिम मे वर्षा कम है, अत. वन भी कम हैं।

राजस्थान के वन-क्षेत्र साधारणतया पूरबी और दक्षिणी-पूरबी भागों में और अरावली पर्वत के पूरबी-ढालों पर पाये जाते है। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि अरावली पर्वत के उत्तर और पश्चिम के भाग वर्षा की उचित मात्रा के अभाव मे रेगिस्तानी अथवा अर्द्ध-रेगिस्तानी हैं। जोधपुर जिले मे औसत वार्षिक वर्षा 25 से.मी. है, अत. वहा के क्षेत्र के लगभग एक प्रतिशत भाग में वन हैं, दूसरी ओर बांसवाडा में, जहां वार्षिक वर्षा लगभग 100 से.मी. है, 35 प्रतिशत क्षेत्र मे वन है। जैसलमेर, बाडमेर, बीकानेर, गंगानगर, जोधपुर, चूरू आदि जिलों में वर्षा कम होने के कारण वन-क्षेत्र भी कम है। यह सम्पूर्ण क्षेत्र बालू-रेत के महासागर की भांति है। इस क्षेत्र में वनस्पति नगण्य है और काफी दूर-दूर है। इसके अतिरिक्त कंटीली झाडियां व बिना पत्तियों की झाडियां भी दूर-दूर देखने को मिलती हैं।

अपेक्षाकृत घने वन उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौडगढ, कोटा, बूंदी, झालावाड, बांसवाडा, अलवर, भरतपुर और सवाईमाधोपुर जिलों में पाये जाते है। जोधपुर, जयपुर, टोंक और अजमेर जिलों में वन बिखरे हुए हैं और मुख्यतः पहाडी भागों पर पाये जाते हैं। बीकानेर, जोधपुर, सीकर, झुंझुनूं, चूरू और जयपुर जिलों में घास के बीड पाये जाते हैं।

राजस्थान मे निम्नांकित प्रकारो के वन देखने को मिलते है :–

1. **सागवान व अन्य लकडी के वन** –राजस्थान के दक्षिणी भाग मे कीमती लकडी के वन पाये जाते हैं। इन वनों का क्षेत्रफल लगभग 5,200 वर्ग किलोमीटर है। ये वन मुख्यतः बांसवाडा, डूंगरपुर, चित्तौडगढ और उदयपुर जिलों में पाये जाते है। इन वनों में सागवान के वृक्ष हैं, जिसकी लकडी मूल्यवान होती है। इसके साथ ही सफेद धोक, आवल, तेन्दू, खैर, सालर आदि के वृक्ष भी काफी मात्रा में पाये जाते है। बांस व विभिन्न प्रकार की घासें भी मिलती हैं।

2. **धोंक के वन** :–ये वन उदयपुर, कोटा, बूंदी, चित्तौडगढ झालावाड और सिरोही जिलों में है। धोक के वृक्षों के साथ ही अन्य प्रकार के वन भी पाये जाते है जिनमें खैर, गूलर, महुवा, बहेडा व अन्य प्रकार के वृक्ष है। इन वनों में कोयला तैयार किया जाता है। ईंधन के लिए लकडी प्राप्त की जाती है।

3. सालर के वन :-ये वन अलवर, जयपुर, कोटा, बूंदी, सवाईमाधोपुर, करौली, अजमेर व जोधपुर में, विशेषत: अरावली की पर्वत श्रेणियों में पाये जाते हैं। इन वनों में सालर, गोंद, बहेड़ा, सेमल, तेंदू व पलाश आदि के वृक्ष पाये जाते हैं। कुछ भागों में बांस भी पाया जाता है।

4. कांटेदार झाड़ियां-कांटेदार झाड़ियां व वृक्ष शुष्क भागों में पाये जाते हैं। इनकी पत्तियां अपेक्षाकृत मोटी व खुरदरी होती हैं। टहनियां व कांटों की अधिकता होती है। कांटे होने के कारण इन झाड़ियों व वृक्षों की रक्षा दो प्रकार से होती है। प्रथम वृक्षों की नमी सरलता से नहीं उड़ पाती है और द्वितीय पशु इनको नहीं खा पाते हैं। इस प्रकार की वनस्पति राजस्थान के शुष्क भागों- जैसे जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, पाली, बीकानेर, चूरू, नागौर, सीकर तथा झुंझुनूं आदि जिलों में पाई जाती है।

जाल वृक्ष

प्रशासनिक दृष्टि से राज्य के वनों को तीन वर्गों में बांटा गया है

1. रक्षित वन :-ये वन सरकारी नियंत्रण में हैं और इन वनों में [illegible] अनुमति निर्धारित नियमों के अनुसार दी जाती है। ऐसे वन राज्य के [illegible] वन क्षेत्र के 42 [illegible] 15 हजार 492 वर्ग किलोमीटर में विस्तृत है।

2. सुरक्षित वन :-कुल वन-क्षेत्र के 37 प्रतिशत भाग में 12 हजार [illegible] फैले हुए हैं। इन वनों में लकड़ी काटने और पशु चराने पर पूर्ण प्रतिबन्ध है। [illegible] सम्पत्ति है।

3. अवर्गीकृत वन - राज्य के शेष वन-क्षेत्र अर्थात 21 [illegible] किलोमीटर में फैले हैं। इन वनों में लकड़ी काटने या पशु चराने पर [illegible] नहीं है।

वनों से लाभ :-राज्य के वन लगभग 30 हजार [illegible] में वनों से अनेक पदार्थ प्राप्त होते हैं जिनमें से प्रमुख [illegible] हैं

1. जलाने की लकड़ी व कोयला :-राजस्थान में वन [illegible] लकड़ी के वन हैं। वन-क्षेत्र के लगभग 60 प्रतिशत [illegible] लकड़ी जलाने व कोयला बनाने के काम आती है। [illegible] तैयार किया जाता है। राजस्थान में [illegible] लकड़ी [illegible] लकड़ी व [illegible] तैयार किया [illegible] 3 [illegible]

2. इमारती लकड़ी :-राजस्थान के [illegible] 12 [illegible]

होती है। अनुमान है कि राजस्थान के वनों से प्रतिवर्ष लगभग 25 लाख घनफुट इमारती लकड़ी प्राप्त होती है। इन वनों में पुराने व अवैज्ञानिक ढंग से लकड़ी काटी जाती है, अतः बहुत सी नष्ट हो जाती है। राजस्थान सरकार को चाहिए कि लकड़ी काटने के वैज्ञानिक यंत्र खरीदने के लिए सम्बद्ध व्यक्तियों को ऋण देने की व्यवस्था करे।

3. **बांस व घास** :–बांसवाड़ा, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, सिरोही व भरतपुर जिलों में बांस होता है। बांस के अनेक उपयोग होते हैं–जैसे टोकरी बनाने, चारपाई बनाने, झोपड़ी बनाने आदि के लिए। बांस से कागज भी बनाया जाता है किन्तु राजस्थान में बांस इतनी मात्रा में नहीं होता कि कागज बनाने का कारखाना स्थापित किया जा सके। इसके अतिरिक्त राज्य में अनेक प्रकार की घासें होती हैं। अधिकांश घास पशुओं के चारे के रूप में काम में आ जाती है। मूंज से रस्सियां, बाण व झाडू बनाई जाती है।

4. **कत्था** :–कत्थे का उत्पादन उदयपुर, चित्तौड़गढ़, झालावाड़, बूंदी, भरतपुर व जयपुर जिलों में होता है। कत्थे का राजस्थान में वार्षिक उत्पादन लगभग 375 टन होता है। खैर के वृक्षों के तने के आंतरिक भाग को काटकर छोटे-छोटे टुकड़े कर लिये जाते हैं, फिर उन्हें उबाल कर कत्था तैयार किया जाता है। राज्य में कत्थे को "हांडी प्रणाली" से तैयार किया जाता है। इस प्रणाली से कत्था कम प्राप्त होता है। यदि "कारखाना प्रणाली" से कत्था तैयार किया जाय तो उत्पादन में वृद्धि हो सकती है। किन्तु कत्था-उत्पादकों की आर्थिक-स्थिति अच्छी न होने के कारण मशीनों का प्रयोग नहीं हो पा रहा है।

5. **गोंद** :–गोंद अनेक प्रकार के वृक्षों–जैसे खेजड़ा, बबूल, ढाक, नीम, पीपल आदि से प्राप्त होता है। इन अनेक वृक्षों में से चिपचिपा रस निकलता है जो वृक्ष के तने पर जम जाता है। सूख जाने पर यह गोंद का रूप ले लेता है। बहुत सा गोंद बम्बई भेज दिया जाता है।

6. **आवल या झाबुई** :–आवल की छोटी-छोटी झाड़ियां होती हैं जिनकी पत्तियां सदैव हरी रहती हैं। इनमें पीले फूल आते रहते हैं। इन झाड़ियों के पत्ते पशु नहीं चरते। आवल की झाड़ियां जोधपुर, पाली, सिरोही, उदयपुर और बांसवाड़ा जिलों में बहुतायत से पाई जाती हैं। इसकी छाल चमड़ा साफ करने के लिए बहुत उत्तम पदार्थ है। राजस्थान में चमड़ा उद्योग अविकसित होने के कारण इस छाल का बहुत कम उपयोग हो पाता है। अधिकांश छाल को कानपुर, मद्रास, बम्बई, अहमदाबाद आदि स्थानों को भेज दिया जाता है जहां चमड़ा साफ करने का उद्योग विकसित है।

7. **तेन्दू**:–तेंदू की पत्तियों से बीड़ियां बनाई जाती हैं। तेंदू के वृक्ष मुख्यतः उदयपुर, चित्तौड़गढ़ झालावाड़, बांसवाड़ा, बारां, और टोंक क्षेत्र में पाये जाते हैं। पत्तियों का लगभग आधा उत्पादन तो राजस्थान के बीड़ी निर्माण केन्द्रों जैसे टोंक, जयपुर, अजमेर, ब्यावर, कोटा, नसीराबाद, भीलवाड़ा,पाली आदि क्षेत्रों में उपयोग कर लिया जाता है और शेष भाग अहमदाबाद को भेज दिया जाता है।

8. **खस** :–खस एक प्रकार की घास है जिसकी जड़ों से सुगन्धित तेल-पदार्थ निकाला जाता है। खस के इत्र व अन्य सुवासित पदार्थ तैयार किये जाते हैं। खस का उपयोग गर्मियों में कमरों को शीतल करने हेतु टाटें व पर्दे बनाने के लिए, हाथ के पंखे बनाने के लिए,पान रखने की डिब्बियां बनाने और शर्बत आदि बनाने में किया जाता है। सवाईमाधोपुर, भरतपुर व टोंक जिले प्रमुख खस उत्पादक जिले हैं।

9. **महुआ** :–महुआ के वृक्ष से फल प्राप्त होते हैं जिनका उपयोग खाने व देशी शराब बनाने में किया जाता है। यह वृक्ष मुख्यतः डूंगरपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, झालावाड़ और सिरोही जिलों में होता है। आदिवासी व भील इसकी शराब घरों में ही बना लेते हैं।

10. **शहद व मोम** :–शहद की मक्खियां वृक्षों व झाड़ियों पर अपने छत्ते बना लेती हैं। इन छत्तों से शहद व मोम प्राप्त किया जाता है। अलवर, भरतपुर, सिरोही, जोधपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़ और बांसवाड़ा आदि जिलों में यह विशेष रूप से प्राप्त किया जाता है।

जनसंख्या

सन् 1981 की जनगणना के अनुसार 3 लाख 42 हजार 239 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले राजस्थान का क्षेत्रफल देश के कुल क्षेत्रफल का 10.43 प्रतिशत है तथा देश के अन्य राज्यों की अपेक्षा इसको दूसरा स्थान प्राप्त है। एक मार्च, 1981 को राजस्थान की जनसंख्या 3 करोड़ 42 लाख 61 हजार 862 थी। इससे स्पष्ट है कि देश की कुल जनसंख्या का पांच प्रतिशत भाग राजस्थान में निवास करता है और जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान का देश में नवम् स्थान है। जबकि 1961 और 1971 की जनगणना के समय इसका दसवां स्थान था। 1971 में राजस्थान की जनसंख्या दो करोड़ 57 लाख 65 हजार 806 थी। इस प्रकार 1971-81 के दशक में राज्य की जनसंख्या में लगभग 85 लाख वृद्धि हुई है। यह वृद्धि दर गत दशक में 32.36 प्र.श. रही जबकि 1961-71 के दशक में यह वृद्धि दर 27.83 प्रतिशत थी।

राज्य में जनसंख्या वृद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ष	कुल आबादी (लाख में)	पुरुष	स्त्रियां	न्यूनाधिक प्रतिशत
1911	110	58	52	+ 6 7
1921	103	54	49	− 6 3
1931	118	62	56	+ 14 1
1941	139	73	60	+ 18 0
1951	160	83	77	+ 15.2
1961	202	106	96	+ 26 2
1971	258	135	123	+ 27 8
1981	343	179	164	+ 33 0

1981 की जनसंख्या तीन करोड़ 42 लाख 61 हजार 862 में पुरुषों और महिलाओं की संख्या क्रमश. एक करोड़ 78 लाख 54 हजार 154 और एक करोड़ 64 लाख 7708 है। इस जनसंख्या में ग्रामीण क्षेत्रों की दो करोड़ 70 लाख 51 हजार 354 है, जिसमें पुरुषों और महिलाओं की सं० क्रमश एक करोड़ 40 लाख 13 हजार 454 और एक करोड़ तीस लाख सैंतीस हजार नौ सौ शामिल है तथा नगरीय क्षेत्रों की 72 लाख 10 हजार 508 है जिसमें पुरुषों और महिलाओं की क्रमश 38 लाख 40 हजार 700 और 33 लाख 69 हजार 808 शामिल है। इस जनसंख्या में पुरुषों और महिलाओं का अनुपात एक हजार पुरुषों पर 919 स्त्रियां है। इनमें ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में प्रति हजार पुरुष पर क्रमश 930 और 877 स्त्रियां है।

1981 की जनगणना के अनुसार राज्य की जनसंख्या में अनुसूचित जातियों का प्रतिशत 17 04 तथा अनुसूचित जनजातियों का 12.21 अर्थात क्रमश 58 लाख 38 हजार 879 और 41 लाख 83 हजार 124 है।

जनगणना

राजस्थान में 1981 में साक्षरता का प्रतिशत 24.38 रहा जिसमें पुरुषों का 36.30 तथा महिलाओं का 11.42 प्रतिशत है। इसमें ग्रामीण जनसंख्या का साक्षरता प्रतिशत 17.99 प्रतिशत है

1981 में राज्य में नगरों और कस्बों की संख्या 201 थी जबकि ग्रामों की 37 हजार 124। इनमें आबाद और गैर आबाद ग्राम क्रमशः 34 हजार 968 और 2156 है।

जिसमें पुरुषों की 29.65 तथा महिलाओं की 5.46 प्रतिशत है।इसी प्रकार नगरीय क्षेत्रों की साक्षरता 48.35 प्रतिशत है जिसमें पुरुषों और महिलाओं की क्रमशः 60.55 तथा 34.45 प्रतिशत है।

जहां तक राज्य की जनसंख्या के घनत्व का प्रश्न है यह प्रति किलोमीटर एक सौ व्यक्ति है। सर्वाधिक घनत्व जयपुर जिले का 242 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जबकि सबसे कम जैसलमेर जिले में प्रति वर्ग किलोमीटर मात्र 6 व्यक्ति है।

व्यावसायिक दृष्टि से राज्य की जनसंख्या का 61.59 भाग कृषि कार्यों पर निर्भर है जिनमें पुरुषों और महिलाओं का प्रतिशत क्रमशः 60.70 और 66.75 है। 7.32 प्रतिशत व्यक्ति कृषि-श्रमिक हैं जिनमें 5.89 प्रतिशत पुरुष और 15.67 प्रतिशत महिलायें हैं। कुटीर उद्योगों में 3.26 प्रतिशत लोग लगे हुए हैं जिनमें 3.33 प्रतिशत पुरुष और 2.82 प्रतिशत महिलायें हैं। अन्य कार्यों में 27.83 प्रतिशत लोग हैं जिनमें पुरुष 30.08 तथा महिलायें 14.76 प्रतिशत हैं।

राजस्थान का जिलेवार जनसंख्या विवरण

(1981 की जनगणना के अनुसार)

क्रम संख्या	क्षेत्र	क्षेत्रफल (कि० मी०)	जनसंख्या	नगरीय	ग्रामीण	अनुसूचित जातियां	अनु. जन जातियां	जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग कि.मी.	राज्य की कुल जन सं. का प्र.श.	राज्य में स्थान
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
	राजस्थान	3,42,239	34,261,862	7,210,508	27,051,354	5,838,879	4,183,124	100		
1.	जिला जयपुर	14,068	3,420,574	1,250,532	2,170,042	556,190	380,199	242	9.99	प्रथम
2.	जिला उदयपुर	17,279	2,356,959	355,119	2,001,840	193,465	809,156	136	6.89	दूसरा
3.	जिला गंगानगर	20,634	2,029,968	418,299	1,611,669	589,661	5,095	98	5.91	तीसरा
4.	जिला अलवर	8,380	1,771,173	196,201	1,574,972	312,389	143,858	210	5.16	चौथा
5.	जिला जोधपुर	22,850	1,667,791	579,845	1,087,946	258,743	40,088	72	4.84	पांचवा
6.	जिला नागौर	17,718	1,628,669	237,077	1,391,592	312,336	2,984	92	4.76	छठा
7.	जिला कोटा	12,436	1,559,784	498,094	1,061,690	293,421	231,316	124	4.52	सातवां
8.	" सवाईमाधोपुर	10,527	1,535,870	206,090	1,329,780	328,147	348,130	146	4.49	आठवां

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
9.	जिला अजमेर	8,481	1,440,366	616,406	823,960	264,801	32,183	169	4.20	नवां
10.	जिला सीकर	7,732	1,337,245	278,936	1,098,309	189,434	36,552	178	4 02	दसवां
11.	जिला भीलवाड़ा	10,455	1,310,379	188,563	1,121,816	222,842	121,664	125	3.84	ग्यारहवां
12.	जिला भरतपुर	–	1,299,073	232,565	1,066,508	—	—	259	—	बारहवां
13.	जिला पाली	12,387	1,274,504	234,765	1,039,739	225,912	69,694	103	3.73	तेरहवां
14.	जिला चित्तौड़गढ़	10,856	1,232,494	162,421	1,070,073	178,380	223,864	113	3.61	चौदहवां
15.	जिला झुन्झुनूं	5,928	1,211,583	251,267	960,316	180,681	23,077	201	3.50	पन्द्रहवां
16.	जिला चूरू	16,830	1,179,466	344,659	834,807	230,534	5,619	70	3.45	सोलहवां
17.	जिला बाड़मेर	28,387	1,118,892	98,229	1,020,663	174,908	57,038	39	3.27	सत्रहवां
18.	जिला जालौर	10,640	903,073	72,790	830,283	153,624	72,361	85	2 65	अठारहवां
19.	जिला बांसवाड़ा	5,037	886,600	55,187	831,413	41,811	643,966	176	2.60	उन्नीसवां
20.	जिला बीकानेर	27,244	848,749	335,085	513,664	155,767	1,496	31	2.46	बीसवां
21.	जिला झालावाड़	6,219	784,998	91,516	693,482	134,253	91,610	126	2.30	इक्कीसवां
22.	जिला टोंक	7,194	783,635	143,844	639,791	161,685	92,477	109	2.30	बाईसवां
23.	जिला डूंगरपुर	3,770	682,845	44,126	638,719	30,828	440,026	181	2.00	तेईसवां
24.	जिला बूंदी	5,550	586,982	99,829	487,153	110,977	118,030	106	1.72	चौबीसवां
25.	जिला [illegible]	–	585,059	89,135	495,924	—	—	196	—	पच्चीसवां
26.	जिला सिरोही	5,136	542,049	97,001	445,048	101,581	125,245	105	1.58	छब्बीसवां
27.	जिला जैसलमेर	38,401	243,082	32,927	210,155	35,284	10,680	6	0.20	सत्ताईसवां

8. पशुधन

पशुधन की दृष्टि से राजस्थान देश का एक प्रमुख राज्य है। राजस्थान में भारत का 11 प्रतिशत पशुधन है। राज्य में लगभग 4.95 करोड़ पशु है। 1988-89 तक राज्य में पशुधन लगभग 5.60 करोड़ हो जाने की आशा है। राजस्थान में प्रमुख पशु गाय, बैल, भैंस, बकरी तथा ऊंट है। राज्य में 1 करोड़ 35 लाख गायें व बैल, 1 करोड़ 34 लाख भेड़ें, 60 लाख भैंसे, 1 करोड़ 54 लाख बकरियां, 7 लाख 52 हजार ऊंट तथा शेष 4 लाख 42 हजार अन्य पशु है। प्रदेश की प्रति हजार जनसंख्या पर लगभग 1210 पशु है। क्षेत्रफल की दृष्टि से पशुओं का औसत घनत्व 120 पशु प्रति वर्ग किलोमीटर है। यह भारत के औसत घनत्व 112 पशु प्रति वर्ग किलोमीटर से अधिक है। राज्य का पशुधन यहां की अर्थव्यवस्था [illegible] की [illegible] कहा जा सकता है।

पशुधन का वितरण

पशुधन की दृष्टि से राजस्थान एक धनी प्रदेश है। यहां भी पशुधन के वितरण पर भौगोलिक [illegible] का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगत होता है। अरावली के पूरब व पश्चिम के भागों में धरातलीय व जलवायु सम्बन्धी पर्याप्त भिन्नताएं है जिन्होंने पशुओं के वितरण को प्रभावित किया है। पश्चिम के शुष्क भागों में पशुपालन प्रमुख व्यवसाय है जबकि पूरबी राजस्थान के जिलों में पशुपालन कृषि के साथ-साथ [illegible] है राजस्थान में पशुधन के दो स्पष्ट क्षेत्र है :–

(1) पश्चिमी क्षेत्र

(2) पूरबी क्षेत्र

(1) पश्चिमी क्षेत्र–यह क्षेत्र अरावली श्रृंखला के पश्चिम व उत्तर-पश्चिम [illegible] 58 प्रतिशत क्षेत्र पर विस्तृत है। इस भू-भाग पर रेतीली मिट्टी, उच्च तापमान [illegible] वार्षिक वर्षा 30 सेन्टीमीटर के आसपास है। वर्षा के समय कुछ क्षेत्रों में घास [illegible] उग आती है जो यहां के पशुओं के लिए बहुत अच्छा आहार है। वर्षा ऋतु में [illegible] क्षेत्र में सेवण घास उग आती है। यह घास पशुओं का न केवल पौष्टिक [illegible] का प्रमुख 'चारा' भी है। इस क्षेत्र में पशुओं की कई प्रसिद्ध नस्लें है। [illegible] थारपारकर नस्ल की गायें देशभर में प्रसिद्ध है। मरुस्थलीय भागों में घुमक्कड़ पशुपालन [illegible] है। एक परिवार के पास 100 से 200 तक गायें होना सामान्य बात है। [illegible] है। बाड़मेरी व जैसलमेरी भी बहुत अधिक लोकप्रिय है। इस क्षेत्र में [illegible] लोकप्रिय है। भेड़ों की प्रमुख नस्लें जैसलमेरी, मारवाड़ी व बीकानेरी इसी क्षेत्र [illegible] है। [illegible] शुष्क व अर्द्धशुष्क प्रदेश है और ऊंट यहां का लोकप्रिय पशु है। [illegible] ऊंट इसी क्षेत्र में है। नाचना, केर, जैसलमेरी व बीकानेरी ऊंट [illegible] का ऊंट प्रजनन केन्द्र इसी क्षेत्र के बीकानेर में स्थित है। [illegible] अन्य प्रमुख पशु है।

(2) पूरबी क्षेत्र–यह क्षेत्र अरावली के पूरब व दक्षिण-पूरब में [illegible] है। [illegible] धरातलीय स्वरूप तथा मिट्टियों के विकास सम्बन्धी [illegible] है। [illegible] प्रमुख नदियों व उनकी सहायक नदियों ने उपजाऊ मैदानों की रचना की है। [illegible] सेन्टीमीटर तक है [illegible] जनसंख्या की [illegible] की मुख्य नस्लें मेवाती, हरियाणवी [illegible]

[illegible]

[illegible]

1. सांचोरी या कांकरेजी
2. उत्तरी नहरी सिंचित क्षेत्र
3. राठी क्षेत्र
4. थारपारकर क्षेत्र
5. नागौरी क्षेत्र
6. हरियाणा क्षेत्र
7. मेवात क्षेत्र
8. रथ क्षेत्र
9. मालवी क्षेत्र
10. गिर क्षेत्र

(1) सांचोरी या कांकरेजी- यह क्षेत्र पश्चिमी राजस्थान के जालौर, सिरोही, पाली तथा बाड़मेर के कुछ भागों में विस्तृत है। इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था पशु सम्पदा पर केन्द्रित है। इस क्षेत्र के अनेक लोगों की आय गाय-बैल भेड़-बकरी व ऊंट के क्रय-विक्रय तथा इन पशुओं के उत्पादों पर आधारित है। इस क्षेत्र के बैल देश भर में प्रसिद्ध हैं। ये डील-डौल वाले तथा शक्तिशाली होते हैं। अन्य किसी बैल की तुलना में कांकरेजी बैल अधिक बोझा ढो सकता है। इस क्षेत्र से ऊन, घी, खालें तथा चमड़े का व्यापार आस-पडौस के बड़े शहरों तथा राजस्थान के पडौसी राज्यों के साथ होता है। कांकरेजी पशुओं को बड़े-बड़े पशु मेलों में बेचना या खरीदना आम बात है। सांचोरी पशु सौराष्ट्र, गुजरात तथा मध्यप्रदेश के व्यापारियों में बहुत लोकप्रिय हैं।

कांकरेजी गाय

(2) उत्तरी नहरी सिंचित क्षेत्र-यह क्षेत्र राज्य के उत्तरी सिंचित क्षेत्र में फैला है। यह भू-भाग शुष्क व रेतीला है। इस भाग में वर्षा कम होती है किन्तु सिंचाई सुविधा के कारण यहां गहन कृषि की जाती है। इस क्षेत्र में कृषि फसलों के साथ चारा भी उगाया जाता है। यहां पशुपालन व कृषि एक-दूसरे पर निर्भर हैं। यहां पंजाबी भैंस तथा हरियाणवी गाय मिलती हैं। इस क्षेत्र में बीकानेरी व जैसलमेरी ऊंट भी पाये जाते

राजस्थान
वार्षिकी

अंजन, धावल व विम्बल नामक उत्तम घास पाई जाती है। यहां एक कृषक के पास औसतन 10 से 20 तक गायें होती हैं। इस भाग के बैलों को समीपस्थ उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में भेजा जाता है। हरियाणवी क्षेत्र में जमनापुरी, अलवरी तथा बड़वारी बकरियां भी दूध के लिए प्रसिद्ध हैं। भेड़ें मुख्यतः चौकला तथा नाली नस्ल की हैं जो सीकर व चुरू में अधिक हैं।

(7) मेवात क्षेत्र–इस क्षेत्र के अन्तर्गत दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश से लगे पूर्वी भाग हैं। यहां मेवाती नस्ल की प्रसिद्ध गायें हैं जो प्रतिदिन 5 से 8 किलोलीटर दूध देती हैं। मेवाती बैल भी मजबूत माने जाते हैं व समीप के उत्तर प्रदेश राज्य में इनकी काफी मांग रहती है। इस क्षेत्र में मुर्राह भैंस व अलवरी बकरियां भी पाई जाती हैं। सिंचाई के साधन उपलब्ध होने के कारण कृषि अधिक लोकप्रिय व पशुपालन सहायक व्यवसाय मात्र है।

(8) रथ क्षेत्र–यह क्षेत्र उत्तरी-पूर्वी राजस्थान में है। यहां की गाय व बैल प्रसिद्ध हैं। ये गाय छोटे कद की होती है। प्रतिदिन 5 से 7 किलोलीटर दूध देती है। राज्य के इस भाग में छोटे-छोटे खेत होते हैं जिन्हें स्थानीय बैलों से जोता जाता है। यहां मुर्राह नस्ल की भैंस भी पाई जाती है।

(9) मालवी क्षेत्र–यह क्षेत्र मध्य प्रदेश सीमा से लगे हुए जिलों में विस्तृत है। इस क्षेत्र की गाय व बैल काफी प्रसिद्ध हैं। इस प्रदेश की पथरीली भूमि पर हल चलाने के लिए शक्तिशाली मालवी बैल उपयुक्त हैं। यह शक्तिशाली मालवी बैल बोझा ढोने के लिए भी अच्छे माने जाते हैं। इस भाग में भैंस भी पाली जाती है। मालवी भैंस मुर्राह नस्ल की भैंस से कम दूध देती है किन्तु मालवी भैंस के दूध में मुर्राह के दूध की तुलना में चर्बी की मात्रा काफी अधिक होती है। मालवी क्षेत्र में 30 लाख बकरियां 10 लाख भेड़ तथा 30 हजार ऊंट हैं। इस क्षेत्र में पशु साधारणतः समूहों में दिखाई देते हैं।

(10) गिर क्षेत्र–इस क्षेत्र में अजमेर जिले की अजमेर व किशनगढ़ तहसीलें, भीलवाड़ा तथा बूंदी जिले, चित्तौड़गढ़ व उदयपुर जिलों के उत्तरी भाग तथा पाली जिले का उत्तरी-पूर्वी भाग [illegible] माने जाते हैं। यहां की गायें दुधारू मानी जाती हैं। ये गायें अच्छा चारा मिलने पर काफी मात्रा में दूध देती हैं। गिर नस्ल के बैल भारवाही पशु के रूप में जाने जाते हैं। यह बैल बोझा ढोने के साथ हल व [illegible] कुओं से पानी निकालने के लिए भी भरोसे योग्य माने जाते हैं। इस भाग में भैंस निरन्तर अधिक [illegible] की जा रही है तथा उसकी संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। स्थानीय लोग गिर भैंस को मुर्राह की तुलना में अधिक पसन्द करते हैं। गिर क्षेत्र में अधिकांश भेड़ मारवाड़ी नस्ल की हैं [illegible] बकरियां भी पाई जाती हैं। बकरियों के 100 से 300 तक के समूह इस क्षेत्र में [illegible] हैं। इस क्षेत्र में भार ढोने के लिए पश्चिमी राजस्थान के ऊंट को अच्छा माना जाता है [illegible] ऊंट पश्चिमी राजस्थान की नस्लों के हैं।

राजस्थान में गाय व बैल

गाय व बैल साधारणतः सम्पूर्ण राजस्थान में पाये जाते हैं। 1983 में राज्य की पशुगणना के अनुसार उस समय 1 करोड़ 35 लाख गाय-बैल थे। इनके [illegible] उदयपुर [illegible] 14 लाख गाय-बैल हैं। गाय-बैल की कुछ सर्वोत्तम नस्लें राजस्थान में [illegible] हैं। [illegible] (मालवी), राठी, हरियाणवी, नागौरी, [illegible] राजस्थान में [illegible] गाय-बैल की [illegible] नस्लें हैं। गायों में राठी व थारपारकर गाय [illegible] राजस्थान में [illegible] हैं। [illegible] किन्तु यह दूध अधिक देती है। थारपारकर गाय भी अधिक दूध [illegible]

जिले जैसलमेर में अधिक हैं। थरपारकर नस्ल का क्षेत्र भारतीय सीमा के पास पाकिस्तान का क्षेत्र भी है। उत्तरी जिले गंगानगर में हरियाणवी गायें अधिक है। यह शारीरिक दृष्टि से गठीली होती है व प्रतिदिन 6 से 9 किलोलीटर दूध देती है। राजस्थान के कांकरेज व नागौरी बैल अधिक प्रसिद्ध है। इन दोनों नस्लों के बैल अधिक शक्तिशाली होते हैं व खेती सम्बन्धी कार्यों के साथ ही बोझा ढोने की दृष्टि से भी बहुत अच्छे माने जाते हैं।

नागौरी बैल

भैंस

भैंस पालन की दृष्टि से राजस्थान देश का एक प्रमुख राज्य है। भैंस पालन कृषि की दृष्टि से विकसित क्षेत्र में अधिक किया जाता है। अलवर, गंगानगर व भरतपुर में अधिक संख्या में भैंसें हैं। पश्चिमी शुष्क भाग में भैंसों की संख्या बहुत ही कम है। राजस्थान में लगभग 60 लाख भैंसें है। मुर्राह यहां की भैस की एक प्रमुख नस्ल है। मुर्राह भैस का शरीर सुसगठित तथा भारी होता है। एक मुर्राह भैंस प्रतिदिन 20 से 25 किलोलीटर दूध देती है। इसके दूध मे वसा की मात्रा अधिक होती है। अधिक मात्रा मे दूध देने के कारण देश के अन्य भागो मे भी इस भैंस की बहुत माग है।

मुर्राह भैस

भेंड

भेड की दृष्टि से राजस्थान भारत का अग्रणी प्रदेश है। राज्य में लगभग 1 करोड 34 लाख भेडें हैं। राजस्थान की कुल भेडें देश की 22 प्रतिशत है। राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में, विशेषकर कमजोर वर्ग के लोगों के लिए, भेडपालन एक प्रमुख व्यवसाय है। प्रदेश में भेडों के वितरण पर जलवायु का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। पश्चिम के शुष्क व अर्द्धशुष्क जिलों में राज्य की लगभग 65 प्रतिशत भेडें हैं। इस भाग में जैसलमेर, जोधपुर, बाडमेर, नागौर जालौर तथा बीकानेर जिलों में भेडपालन अधिक प्रचलित है। अकेले

नागौर जिले में 12 लाख भेड़ें है जो राज्य की कुल भेड़ों का लगभग 10 प्रतिशत है। पूर्वी क्षेत्र के भीलवाड़ा, उदयपुर व अजमेर जिलों में भी भेड़ों की अच्छी संख्या है। भेड़ों से दूध, ऊन प्राप्त किये जाते है किन्तु ऊन उत्पादन लगभग 3.5 करोड़ किलोग्राम है। यह उत्पादन देश के ऊन उत्पादन का 45 प्रतिशत है। राज्य की ऊन खुरदरी है व भेड़पालक ऊन की कटाई वैज्ञानिक ढंग से नहीं करते अतः राज्य की ऊन का दाम कुछ कम मिलता है। स्थानीय रूप से ऊन का उपयोग कालीन, कम्बल तथा मोटा कपड़ा बनाने के लिए किया जाता है। राजस्थान की ऊन देश के अन्य राज्यों में भी पर्याप्त मात्रा में भेजी जाती है। राज्य से दिल्ली, अहमदाबाद, बम्बई, मद्रास तथा विदेशों में लगभग 20 लाख भेड़ें प्रतिवर्ष मांस के लिए भेजी जाती है। राजस्थान में भेड़ों की प्रमुख निम्न नस्लें मिलती हैं-

(1) **चोखला**-यह नस्ल शेखावाटी क्षेत्र में अधिक पाई जाती है। इस भेड़ के चेहरे पर गहरे भूरे व काले धब्बे होते हैं। यह भेड़ एक वर्ष में लगभग दो किलोग्राम ऊन देती है। राज्य में चोखला नस्ल की भेड़ों की संख्या लगभग 17 लाख है।

(2) **मारवाड़ी**-इस नस्ल की भेड़ें जोधपुर, पाली, नागौर व बाड़मेर जिलों में अधिक हैं। राजस्थान की लगभग 50 प्रतिशत भेड़ें इसी नस्ल की हैं। मारवाड़ी भेड़ के कान लम्बे मुंह काला तथा स्वास्थ्य अच्छा होता है। शुष्क क्षेत्र की यह भेड़ें कम पानी तथा कंटीली झाड़ियों से ही हृष्ट-पुष्ट बनी रहती है।

मारवाड़ी भेड़ — जैसलमेरी भेड़

(3) **जैसलमेरी**- जैसा की नाम से स्पष्ट है इस नस्ल की भेड़ जैसलमेर में [illegible] है। इस भेड़ के कान लम्बे तथा शरीर पुष्ट होता है। राजस्थान की सभी भेड़ नस्लों में सर्वाधिक ऊन देने वाली [illegible] की एक भेड़ वर्ष में 4 किलोग्राम ऊन देती है।

(4) **मगरा**-बाड़मेर व जैसलमेर में पाई जाने वाली इस नस्ल की लगभग 5 लाख भेड़ें [illegible] में है। मगरा भेड़ का औसत वजन 35 किलोग्राम, शारीरिक बनावट सुन्दर व मजबूत होती है। यह भेड़ वर्ष में 2-3 किलोग्राम ऊन दे देती है।

(5) **मालपुरी**-हल्के भूरे मुँह तथा छोटे कानों वाली इस नस्ल की भेड़ें जयपुर तथा टोंक-जिले में अधिक है। एक भेड़ से वर्ष में लगभग 1.5 किलोग्राम ऊन प्राप्त की जा सकती है। राज्य में मालपुरी भेड़ों की संख्या लगभग 15 लाख है।

(6) **सोनाड़ी**–दक्षिणी-पूर्वी भाग में पाई जाने वाली इस नस्ल की भेड़ें राज्य में लगभग 10 लाख हैं। सोनाड़ी भेड़ का वजन 50 से 60 किलोग्राम तक होता है जो अन्य नस्लों की अपेक्षा अधिक है। एक भेड़ से वर्ष में लगभग 1.50 किलोग्राम ऊन प्राप्त की जा सकती है।

(7) नाली–इस नस्ल की भेड़ें राज्य में लगभग 3 5 लाख हैं। नाली नस्ल अधिकांशत राज्य के उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्रों में मिलती है। लगभग 30 किलोग्राम वजन वाली एक नाली भेड़ से वर्ष में 3 से 3 5 किलोग्राम तक ऊन प्राप्त की जा सकती है।

(8) पूगल–बीकानेर, जैसलमेर तथा नागौर के कुछ भागों में पाई जाने वाली पूंगल नस्ल की भेड़ों की संख्या राज्य में लगभग 3 लाख है। इस नस्ल की शारीरिक बनावट मजबूत है तथा एक भेड़ वर्ष में लगभग 2.5 किलोग्राम ऊन दे देती है।

बकरे-बकरियां

राजस्थान में लगभग 1 करोड़ 54 लाख बकरे-बकरियां हैं जो देश का कुल 17 प्रतिशत है। राज्य में इनका पालन मांस तथा दूध के लिए किया जाता है। स्थानीय निवासियों में सबसे अधिक लोकप्रिय मांस बकरे का ही है। राज्य के बाहर भी काफी अधिक संख्या में बकरे भेजे जाते हैं। प्रतिवर्ष लगभग 15 लाख बकरे अन्य प्रांतों की मांस सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए राज्य से बाहर भेजे जाते हैं। प्रदेश में
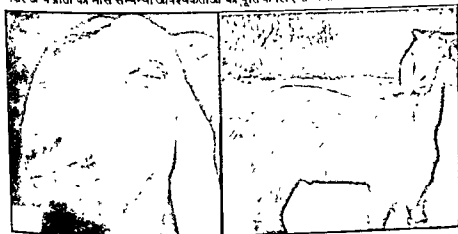
जमनापारी बकरी सिन्धी बकरी

सिरोही, लोही, अलवरी, बडवारी तथा जमनापुरी प्रमुख नस्लें हैं। राज्य के 60 प्रतिशत से भी अधिक बकरा-बकरी पश्चिम के शुष्क क्षेत्रों में हैं जहां की छोटी-छोटी कंटीली झाडियां इनका प्रिय भोजन है। बाड़मेर में 13 लाख व जोधपुर में 8 लाख बकरा-बकरी हैं। राज्य के पूर्वी भाग में उदयपुर व भीलवाड़ा सर्वाधिक बकरे-बकरियों वाले जिले हैं।

ऊंट

ऊंटों की दृष्टि से राजस्थान का देश में प्रथम स्थान है। राज्य में लगभग 7.52 लाख ऊंट हैं जो देश के कुल ऊंटों का 65 प्रतिशत है। भेड़ों व बकरियों की तरह ऊंट भी राज्य के पश्चिमी भाग का पशु है।

मोटी चमड़ी वाला यह पशु कम पानी व थोड़े चारे से भी अपनी उदरपूर्ति कर लेता है। ऊंटनी का दूध भी स्थानीय निवासियों में काफी लोकप्रिय है। इस पशु की भौहें तथा नाक पर स्थित बाल आंख व नाक में बालू जाने से रोकते है। मोटी चमड़ी के कारण पानी पसीने के रूप में बाहर नहीं निकल पाता। ऊंट के पांव का तला अधिक चौड़ा होने से यह रेतीली भूमि में नहीं धंसता। अपनी शारीरिक बनावट सम्बन्धी इन विशेषताओं के कारण ऊंट रेतीले टीबों को भी आसानी से पार कर लेता है। मरुस्थल में ऊंट को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है। राजस्थानी भाषा की एक पुस्तक 'राजस्थानी संस्कृति रा चितराम' में ऊंट के 110 पर्याय 150 मुहावरे व ऊंट की चाल आदि से सम्बन्धित 250 शब्द मरु संस्कृति में ऊंट की

बीकानेरी ऊंट

जैसलमेरी ऊंट

उपयोगिता व लोकप्रियता के प्रमाण है। जैसलमेर के पास स्थित नाचना का ऊंट सबसे अच्छा माना जाता है। नाचना का ऊंट दिखने में सुन्दर, बहुत हिम्मती व तेज दौड़ने वाला होता है, अतः सवारी के लिए सबसे अधिक पसन्द किया जाता है। फलौदी के निकट गोमठ का ऊंट भी सवारी की दृष्टि से अच्छा माना जाता है। गुढ़ा, अलवर, [illegible] और [illegible] के ऊंट भी अपने विशेष गुणों के कारण काफी लोकप्रिय है। बीकानेरी, [illegible] व जालौरी ऊंट ताकतवर होते है व बोझा ढोने के लिए अधिक उपयुक्त है। [illegible] व मेवाड़ी ऊंट कम कीमत वाले है क्योंकि वे न तो अधिक बोझा ढो सकते है और न ही सवारी के लिए उपयुक्त माने जाते है।

घोड़े व टट्टू

राज्य में घोड़े का उपयोग [illegible] के लिए किया जाता है। राजस्थान में लगभग 35 हजार घोड़े व टट्टू है। बाड़मेर, [illegible] व जोधपुर में राज्य के सर्वाधिक घोड़े है। [illegible] है। [illegible]

[illegible] (बालोतरा) का घोड़ा

क्रमशः

मुर्गी व मछली पालन

राजस्थान में कई कुक्कुट शालाऐं है जिनमे प्रतिवर्ष लगभग 14 करोड अण्डे प्राप्त होते हैं। 4 करोड अण्डे अन्य प्रान्तों में भेजे जाते है। मुर्गी पालन मांस प्राप्त करने की दृष्टि से भी निरन्तर लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है।

राजस्थान के विभिन्न भागों में कई बांध, झीलें व तालाब हैं जिनमें मछली पालन किया जाता है। राज्य में प्रतिवर्ष 14000 टन मछली पकड़ी जाती है। मछली पकडने के ठेके देने से सरकार को काफी आय होती है।

वन्य-जीव

राजस्थान के विस्तार और विभिन्नता के अनुसार यहां कई प्रकार के वन्य जीव पाए जाते हैं। वर्ष के ज्यादातर समय में सुखद जलवायु, पतझड वन तथा सूखे घास के क्षेत्र वन्य जीवों के लिए बहुत ही उपयुक्त है। राजस्थान के प्रमुख वन्य पशु हैं–बाघ, रीछ, सांभर, चीतल नीलगाय, सैला सूअर, लोमड़ी, नेवला, झाऊ चूहा आदि। पक्षियों में राष्ट्रीय पक्षी मोर के अलावा तोते, फाक्ता हंस बतख गुरगाबी, बाज, तीतर, जंगली मुर्गी, गोडावण आदि। वास्तव में राजस्थान के वन्य जीवों को दो भागों में बांटा जा सकता है। एक पश्चिमी रेगिस्तानी क्षेत्र के वन्य जीव व दूसरे पूर्वी मैदानों तथा पहाडी क्षेत्र के

रेगिस्तानी हिरण

वन्य जीव। रेगिस्तानी क्षेत्र के जीवों में हिरण, चिंकारा, भेड़िया, सियार, लक्कडबग्घा गीदड मोर खरगोश, नीलगाय, तीतर, गोडावण आदि प्रमुख है। पाली, जालौर तथा सीकर जिलों में नीलगाय चिंकारा, चीता, सूअर, खरगोश आदि ज्यादा मिलते है। जोधपुर के आस-पास बन्दर बहुत हैं।

वन्य पशु मानव के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। कृषि के लिए इनका काफी महत्व है। यह कीट पतंगों को नष्ट करते है तथा फसलों को नष्ट करने वाले जानवरों की संख्या को ज्यादा नहीं बढ़ने देते। राजस्थान में वन्य प्राणियों की रक्षा के प्रयत्न भी अति प्राचीन काल से होते रहे है। धार्मिक स्थलों के साथ जुड़े 'ओरण' सदैव ही वन्य पशुओं के शरण स्थल रहे है। सन् 1951 में राजस्थान वन्य जन्तु व पक्षी संरक्षण अधिनियम से अनेक पशुओं की रक्षा हो गई। वन्य पशुओं की सुरक्षा के लिए तथा उनके शिकार पर रोक व उनकी नस्ल को बचाने के लिए राज्य के विभिन्न भागों में वन्य [illegible] स्थल बनाए गए हैं।

जिलेवार पशुधन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
जिले	ढोर	भैंसे	भेड़ें	बकरियां	घोड़े-टट्टू	सूअर	ऊंट	गधे	कुल पशुधन	मुर्गे-मुर्गियां
अजमेर	497504	171430	774672	522513	572	11369	3536	4188	1986384	251317
अलवर	411807	461893	152759	583390	1274	15245	17262	10380	1654010	149175
बांसवाड़ा	533862	145689	27691	305711	896	64	2779	8727	1025419	286078
बाड़मेर	491468	40919	1157295	1335322	2199	794	109089	47376	3184462	5837
भरतपुर	261397	370153	101144	224936	1296	21694	3346	8437	992403	75370
भीलवाड़ा	719133	233919	955225	749618	1074	8129	11858	5985	2684941	40800
बीकानेर	455736	57110	1079973	395687	303	52	58752	8544	2056157	5913
बूंदी	336342	127709	123560	362268	1236	5740	4169	1489	962513	34572
चित्तौड़गढ़	818034	254983	206761	547854	2249	3750	5708	6384	1845723	103767
चूरू	285381	149954	693455	799917	267	256	107734	6259	2043223	7012
धौलपुर	150897	152128	15268	122664	1437	4640	1602	3210	451904	6792
डूंगरपुर	424103	147369	228358	303843	673	294	2049	3976	111065	192912
श्री गंगानगर	623083	417959	613834	413324	1851	5568	115944	7016	2198579	154214
जयपुर	872530	669028	521351	993202	2057	22442	25098	9343	3115051	70462
जैसलमेर	260230	1082	874527	405457	691	—	51749	22073	1615789	3847
जालौर	373702	138998	533636	402800	1327	3500	15402	6114	1475479	14936
झालावाड़	508622	165904	25887	280243	3042	4615	1408	3085	992806	80332

राजस्थान
वार्षिकी

काजरी (केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान) जोधपुर

देश के कुल क्षेत्रफल का 12 प्रतिशत भाग रेगिस्तानी है जिसमें 13.2 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में शुष्क तथा 70 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में ठण्डा रेगिस्तान है। शुष्क रेगिस्तान में सर्वाधिक 61 प्रतिशत भाग राजस्थान में स्थित है। शेष में 20 प्रतिशत गुजरात, 9 प्रतिशत पंजाब हरियाणा तथा 10 प्रतिशत आंध्र और कर्नाटक में फैला हुआ है। ठंडा रेगिस्तान जम्मू-कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र में है।

राजस्थान के कुल 27 में से 11 जिले बाड़मेर, जैसलमेर, जालौर, जोधपुर, नागौर, पाली, बीकानेर, गंगानगर, चूरू, सीकर और झूंझनूं मरुस्थलीय है जिनकी जनसंख्या 1981 की जनगणना के अनुसार एक करोड़ 34 लाख और पशुसंख्या 1983 की पशुगणना के अनुसार दो करोड़ 30 लाख है।

मरुस्थल की गंभीर समस्या को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने सर्वप्रथम अक्टूबर 1952 में जोधपुर में 'डेजर्ट एफोरेस्टेशन रिसर्च स्टेशन' (मरुस्थल वनारोपण शोध केन्द्र) की स्थापना की। 1957 में मृदा-संरक्षण कार्यक्रम को शामिल कर इस केन्द्र को "डेजर्ट एफोरेस्टेशन एण्ड सोइल कन्जर्वेशन स्टेशन" नाम दिया गया। लेकिन इसके बाद शुष्क क्षेत्र की गंभीर समस्याओं के समाधान के लिए समग्र शोध संस्थान की आवश्यकता निरन्तर अनुभव की जाती रही। परिणामत: 1959 में इस केन्द्र को "सेन्ट्रल एरिड जोन रिसर्च इंस्टीट्यूट" (काजरी) के रूप में पुनर्गठित किया गया। वर्ष 1966 में इस संस्थान का प्रशासनिक और तकनीकी नियंत्रण खाद्य एवं कृषि मंत्रालय से हटाकर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को स्थानांतरित कर दिया गया। यूनेस्को तथा आस्ट्रेलिया सरकार ने संस्थान के विकास हेतु धन, उपकरण, पुस्तकें, तथा पत्रिकायें प्रदान करने के साथ ही वैज्ञानिकों के प्रशिक्षण आदि की सुविधायें उपलब्ध कराई हैं।

काजरी के मुख्य उद्देश्य

1. शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में संसाधन के रूप में उपलब्ध पेड-पौधों, चारागाह, भूमि, मृदा तथा पानी संबंधी अध्ययन करना।
2. वर्षा, बाद और भूमि पर तथा भूमिगत बहने वाले जल के सम्बन्ध में प्राप्त मात्रा और उसके उपयोग के लिए व्यवस्था करना।
3. क्षेत्रीय पर्यावरण की गतिशीलता के सम्बन्ध में अध्ययन करना और उसमें परिवर्तन की प्रवृति के कारणों तथा भौगोलिक दशाओं में परिवर्तन या मानव एवं पशु के द्वारा परिवर्तन और इसमें हस्तक्षेप व नियंत्रण करने का कार्य।
4. उपयोगी पेड़ों, झाडियों और वनस्पतियों का क्षेत्रों मे संबंधित महत्व के साथ विभिन्न परिस्थितियों में उपयोग को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक वनस्पति का सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करना।
5. पानी और जमीन का श्रेष्ठ उपयोग निम्न संदर्भों में-

   जंगल और चारागाह, सिंचित फसलों तथा पशु-उत्पादन के मध्य आपसी संतुलन उपरोक्त के लिए विशिष्ट व्यावहारिक कदम उठाना।

   विभिन्न तरह की परिस्थितिकी में जमीन के उपजाऊपन का लक्ष्य प्राप्त करना और इसे बनाये रखना

   मानवीय समुदाय के लिए अनुकूल तथा उपयोगी विशिष्ट किस्म और गुणवत्ता वाले उत्पादक तथा काम धंधे और आय स्त्रोतों के श्रेष्ठ समूहीकरण की समीक्षा।

द्वितीय खण्ड

राजस्थान

ऐतिहासिक परिचय

यह कहानी है उस राजस्थान की जिसका नाम लेते ही खड़कते खांडे बिजलियों की तरह कौंध उठते हैं और घाटियों पहाड़ों को गुंजाती हुई घोड़ों की टापें मेघ गर्जन सा करने लगती है। धधकती अग्नि ज्वालाओं में सर्वस्व का होम करने वाली अखण्ड सौभाग्यवती पद्मिनियां और केसरिया वस्त्र परिधानों वाले गले में तुलसी माला तथा शीश पर शालग्राम धारण किए, मातृभूमि की रक्षा में प्राणोत्सर्ग करते हुए जुझार साक्षात प्रतीत होते हैं। यही भूमि है उन सतियों-जुझारों की, धन-कुबेरों लक्ष्मीपतियों की, पण्डितों-तपस्वियों की तथा उन करोड़ों भूमिपुत्रों की जिन्होंने इस माटी को चन्दन का स्पर्श दिया और सुनहरी बालू के कण-कण को ओज-ऊर्जा-श्रम और त्याग का प्रतीक बना दिया।

परिभाषा की परिवर्तनशील प्रकृति में हर युग अपना नया अर्थ ग्रहण करता है। 'राजथान' या 'राज्यस्थान' शब्द कभी राजधानी के रूप में प्रयुक्त होता था, जिसे राजस्थान के नए महाभारत के प्रणेता जेम्स टॉड ने अपने " एनाल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान" नामक विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ में प्रदेशवाची बनाकर प्रस्तुत किया। टॉड का आशय रजवाड़ों की भूमि से ही था जिसमें अजमेर को छोड़कर सर्वत्र देशी रियासतों का ही राज्य था। आज हम उस परिभाषा को थोड़ा और प्रगतिशील बनाते हुए 'स्थानों का राजा' अर्थात् श्रेष्ठ स्थान के रूप में 'राजस्थान' पर गर्व करते हैं। ऐसा करते हुए हम अपनी परम्परा को भी अक्षुण्ण बनाए हुए हैं और नए अर्थ को भी जन्म दे रहे हैं।

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों को प्राचीन ग्रंथों तथा शिलालेखों में अनेक नामों से अभिहित किया गया है। कई नाम इसकी भौगोलिक विशेषताओं के कारण हैं जबकि अनेक उन जातियों के नाम से जाने गए जिन्होंने समय-समय पर उन पर आधिपत्य जमाया। सर्वाधिक प्राचीन नामों में मरु, धन्व, जांगल, मत्स्य, शूरसेन और साल्व हैं जिनका वर्णन ठेठ ऋग्वेद से प्राप्त होने लगता है। मरु और धन्व प्राय समानार्थक शब्द हैं जो जोधपुर संभाग के लिए विशेष तौर पर काम में लिये जाते हैं। 'जांगल' वह क्षेत्र था, जिसमें खुले आकाश के नीचे शमी, कैर, पीलू जैसे वृक्ष हों। आधुनिक बीकानेर का क्षेत्र इस नाम से जाना जाता था जहां "जांगलू" नामक प्राचीन समृद्ध नगर है और जहां के शासकों को "जांगलधर बादशाह" कहा जाता था। ऐसा अनुमानित है कि यह प्रदेश कौरवों के पैतृक राज्य का ही एक अंग था। मत्स्य की राजधानी महाभारत कालीन विराटनगर थी। राजा विराट इसके शासक थे और इसका क्षेत्र आधुनिक जयपुर, *अलवर तथा भरतपुर के भागों में रहा था। अलवर तथा भरतपुर के ब्रज से सटे क्षेत्र में ही शूरसेन रहते थे। साल्वों का* क्षेत्र बीकानेर व नागौर का है, यद्यपि अलवर को भी साल्वपुर का अपभ्रंश माना जाता है। साल्वों की अनेक शाखाएं- साल्वावयव, उदुम्बर, तिलखल, युगन्धर, भद्रकार, भूलिंग तथा शरदण्ड थीं। इनका विस्तार अंबाला के पास जगाधरी और गंगानगर में "भादरा" तक था। यूनानियों द्वारा पंजाब से खदेड़े जाने पर शिवि लोग चित्तौड़ के पास "नगरी" में आकर बसे। भादानकों का स्थान भरतपुर में बयाना था। मालव भी पंजाब से खदेड़े जाकर जयपुर में उनियारा के पास कर्कोटक नगर में जमे और फिर मालवा में जा बसे थे जो उन्हीं के नाम से ज्ञात है। इन्होंने शकों को पराजित किया तथा कृत संवत् भी प्रारंभ किया। यौधेय हरियाणा में थे, पर बीकानेर के पंजाब से लगते भाग में फैले मुसलमान "जोइए" उन्हीं के वंशज हैं। गुर्जरों की राजधानी "भीनमाल" जालौर जिले में है, पर गुर्जर क्षेत्र जोधपुर तथा जयपुर *मण्डलों में भी था। डीडवाना कस्बा "गुर्जरत्रा" में ही था। मेदपाट, जो आधुनिक मेवाड़ है, कभी "मेद" या "मेड"* जाति के नाम से जाना जाता था। "वल्ल", "त्रवणी" और "माड" जैसलमेर के आसपास की भूमि है। "माड" के नाम से ही "माड" रागिनी चली। "मड" नामक जाति को अरब आक्रामकों ने सिंध के समुद्र तट से मरुभूमि की ओर धकेल दिया था। उसी जाति ने जैसलमेर को "माड" नाम दिया। वर्तमान डूंगरपुर-बांसवाड़ा जिलों का क्षेत्र वागड़ कहलाता था। सीकर से लेकर सांभर तक का क्षेत्र कभी "अनंत" या "अनंतगोचर" कहलाता था और सांभर-नागौर आदि का चौहान शासित प्रदेश "सवालख"। गांवों की संख्या के अनुसार क्षेत्रों के नाम रखने की परम्परा चलती थी। चौरासी, छप्पन, [मेवाड़ के पहाड़], नवसहस्र [मारवाड़], दस सहस्र [मेवाड़], सप्तशत [नाडोल] आदि ऐसे ही नाम हैं जो बदलते रहे हैं। स्कंदपुराण, पद्मपुराणादि में राजस्थान के ऐसे प्राचीन नामों का वर्णन किया गया है।

पुरातात्विक उत्खनन- राजस्थान के इतिहास का क्रम मानव सभ्यता के इतिहास की कहानी से ही जुड़ा है। कोई पांच लाख वर्ष पहले प्रारंभ हुए उस क्रम की एक कड़ी बनास, गंभीरी, बेड़च आदि नदियों के किनारे पर प्राय एक लाख वर्ष पहले रहने वाले उन मानवों की है जो प्रस्तर युग के आयुधों द्वारा शिकार करते थे तथा जीवनोपयोगी कार्यों में उनका उपयोग करते थे। प्रस्तर सभ्यता के चिह्न चंबल तथा अन्य नदियों के आस-पास से भी प्राप्त हुए हैं जो दो लाख वर्ष पुराने माने गए हैं। जयपुर-अलवर के क्षेत्रों में भी ऐसे स्थल प्राप्त हुए हैं। हड़प्पा के समकालीन संस्कृति के अवशेष कालीबंगा [गंगानगर] में मिले हैं जिनमें ईंटों के घरों वाले नगर, अलंकृत मिट्टी के बर्तन, मुद्राएं, खिलौने, ताम्बे के औजार, कांच के मणिये आदि हैं। आहाड़ [उदयपुर] से भी मुद्राएं, बर्तन तथा अन्न भण्डारों और सामूहिक रसोवड़ों की जानकारी मिली है। मध्य पाषाण युग के सामलेकरस एवं स्फटिक के उपकरण, ताम्बे की कुल्हाड़ियां,

अग्निकुल के न बताकर, पौराणिक वंशावलियों से ही जोड़ा गया है। उपलब्ध ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर अब यह प्रमाणित किया गया है कि प्रतिहार, गुहिल तथा चौहान कुलों का उद्‌गम ब्राह्मणों से हुआ है। सिंध से लेकर पश्चिमी मारवाड़ [पाली-नाडोल] तथा मेवाड़ के चित्तौड़-उदयपुर संभाग के बड़े भूभाग पर कभी ब्राह्मण राजा दाहिर, सिकन्दरकालीन ब्राह्मणावाद के ब्राह्मणजन, आठवीं-नवीं शताब्दी के हरिश्चन्द्र प्रतिहार की क्षत्रिया रानी के पुत्र तथा गुह एवं *बाप्पा रावल सम्बन्धी उल्लेख इस धारणा को बल प्रदान करते हैं। वे सभी मूल में ब्राह्मण थे तथा क्षत्रिय का* दायित्व ग्रहण करने से क्षत्रिय कहलाये। चीनी यात्री ह्वेन-त्सांग के अनुसार विराटनगर में एक वैश्य राजा भी शासन करता था जो बहुत समृद्ध था। ब्राह्मण वंशों द्वारा शस्त्र-ग्रहण का यह समय अरब आक्रमणकारी जुनैद के हमलों का था, जो मारवाड़ से होता हुआ मालवा तथा भड़ौंच तक जा पहुंचा जिससे कन्नौज एवं कश्मीर तक के राज्य भयग्रस्त हो गए। ऐसे ही समय में चालुक्यों, गुर्जरों तथा प्रतिहारों ने न केवल उसका प्रतिरोध किया बल्कि उसके पुनराक्रमण की संभावना ही मिटा दी। सिंध से भागे हुए राजपूतों तथा अन्य अनेक जातियों को मरु प्रदेश तथा दूसरे क्षेत्रों में शरण भी दी गई। ऐसे ही समय में गुहिलों, चौहानों, प्रतिहारों आदि का उदय हुआ।

गुहिल

हूणों के पश्चात् राजस्थान में राजपूत वंशों ने अपना प्रभाव जमाया। इनमें गुहिलवंशीय राजपूत प्रमुख थे। इस वंश में गुहिल महाप्रतापी हुआ अतः इस वंश के राजपूत जहां-जहां भी गए, अपने को इन्होंने गुहिलवंशीय लिखा। ऐसा अनुमानित है कि प्रारंभ में ये मेवाड़ में शक्तिशाली बने और फिर अन्य स्थानों पर जाकर फैल गए। कर्नल टॉड ने गुहिलों की 24 शाखाओं को माना है। इनमें चाटसू के गुहिल, मारवाड़ के गुहिल, धोड के गुहिल तथा मेवाड़ के गुहिल प्रसिद्ध हैं।

चाटसू के गुहिल, मेवाड़ के गुहिलों से भिन्न, क्षात्र एवं ब्राह्म गुणों से युक्त भर्तृभट्ट नामक प्रथम पुरुष द्वारा स्थापित इस वंश के दो शिलालेख चाटसू [जयपुर] तथा नगर [टोंक] में मिले हैं। भर्तृभट्ट के उत्तराधिकारियों ईशानभट्ट, उपेन्द्र भट्ट तथा गुहिल प्रथम के विषय में कोई जानकारी नहीं है, पर गुहिल के पुत्र धनिक ने 684 ई. में नगर में एक बावड़ी बनवाई थी। उसके बाद क्रमशः आउक, कृष्णराज तथा शंकरगण हुए। शंकरगण ने नागभट्ट द्वितीय के साथ गौड़ धर्मपाल को हराया था। प्रतिहार सम्राट की कन्या "यज्ञा" से उसका विवाह हुआ था जिससे रामभद्र तथा भोज प्रथम का समकालीन उसका पुत्र हर्ष हुआ। हर्ष ने उत्तर भारत के [illegible] "श्रीवंश" के अश्व भेंट किये [illegible]

[illegible]

धोड के गुहिल [illegible]

[illegible]

मेवाड़ के गुहिल [illegible]

[illegible]

[illegible]

अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड : भौगोलिक

द्वितीय खण्ड : ऐतिहासिक

राजस्थान में जन-आन्दोलन

राजस्थान का निर्माण

तृतीय खण्ड : कला, संस्कृति एवं साहित्य

[illegible] है। [illegible] कुछ लोग यह मानते हैं कि प्रतिहार गुर्जर जाति के थे। पर ऐसा कहते हुए वे गुर्जर जाति के उद्भव के विषय में कोई प्रकाश नहीं डालते। इसके विपरीत अनेक प्रतिष्ठित विद्वानों की यह धारणा है कि उस समय राजस्थान या राजपूताना नाम की कोई राजनीतिक इकाई भी विद्यमान थी नहीं तथा सम्पूर्ण प्रदेश "गुर्जरत्रा" या "गुर्जर" के नाम से जाना जाता था अतः प्रतिहार "गुर्जर" नाम से जाने गए प्रदेश के स्वामी होने के कारण ही गुर्जर कहलाए। गुर्जर जाति से उनका कोई सम्बन्ध नहीं था। उनकी राजधानी भीनमाल [जालौर] थी जो आधुनिक गुजरात के समीप ही पड़ती है। अरब तथा चीनी यात्रियों के विवरणों में भी गुर्जरों का एक क्षेत्र विशेष ही माना है। "उपमितिभवप्रपंचकथा" तथा "कुवलयमाला" जैन समकालीन जैन ग्रंथों के आधार पर भी यही बात प्रमाणित होती है। प्रतिहारों के पूर्व चावड़ा भी गुर्जर कहलाए। अतः यह एक सुनिश्चित तथ्य है कि प्रतिहार गुर्जर जाति के न होकर गुर्जर नामक क्षेत्र के नरेश या निवासी थे। गुर्जर गौड़ आदि ब्राह्मण जातियाँ आज भी इसी कारण ऐसे नाम से पुकारी जाती हैं। गौड़ प्रदेश के रहने के कारण ही ब्राह्मण गौड़ कहलाने लगे थे। राजस्थान में प्रतिहारों की दो शाखाओं की जानकारी उपलब्ध होती है- एक तो मंडोर शाखा तथा दूसरी भीनमाल [जालौर] शाखा।

जालौर शाखा के प्रतिहार- इस शाखा का संस्थापक नागभट्ट प्रथम [807 वि.] था जिसका एक भाई भी था। नागभट्ट प्रथम के पूर्वजों के विषय में यद्यपि कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं प्राप्त हुई है पर यह एक विचारणीय प्रश्न अवश्य है कि ये ग्वालियर प्रशस्ति वाले हरिश्चन्द्र ब्राह्मण की क्षत्राणी पत्नी भद्रा से उत्पन्न प्रतिहारों में से हों या नहीं थे जिनकी एक शाखा मंडोर पर शासन करती थी। प्रतिहार नाम सूचक इस शब्द के अतिरिक्त उनमें कोई साम्य प्रतीत नहीं होता। इन जालौर के प्रतिहार सम्राटों के शासक रूप में मंडोर के प्रतिहारों का युद्ध करना कई शिलालेखों में वर्णित है। नागभट्ट प्रथम ने सम्भवतः भीनमाल के चावड़ा शासकों के अधीन रहते हुए अरबों से युद्ध किया था। म्लेच्छों को पराजित करने वाले राजा के रूप में उसकी प्रशंसा ग्वालियर के अभिलेख में मिलती है। नागभट्ट ने अपनी राजधानी जालौर में स्थापित की। उसका आधिपत्य लाट [गुजरात] पर भी था। उज्जैन में हुए हिरण्यगर्भदान समारोह में वह प्रतिहारी के रूप में था। अधिकांश विद्वानों की यह धारणा है कि नागभट्ट का मूल निवास मालवा में था पर इसके विपरीत अन्य विद्वानों ने पुष्ट प्रमाणों के आधार पर राजस्थान को ही उसका मूल स्थान बताया है। उसका अधिकार-क्षेत्र भीनमाल, जालौर, गुजरात, आबू, राजस्थान एवं मध्यभारत के कई क्षेत्रों पर था। इस नागभट्ट के दो पुत्रों- ककुक तथा देवराज में से देवराज का पुत्र वत्सराज [778-781 ई.] बड़ा प्रतापी हुआ। इसका पुत्र नागभट्ट द्वितीय [815-833 ई.] भी बड़ा यशस्वी था। इसके बाद इसके पुत्र रामभद्र ने प्रायः तीन वर्ष राज्य किया जिसके बाद उसके पुत्र भोज प्रथम [836-882 ई.] ने सम्भवतः सर्वाधिक यशार्जन किया। यह आदिवराह, प्रभास, मिहिर आदि विरुदों से भी प्रसिद्ध था। उसके बाद महेन्द्रपाल तथा महीपाल कार्तिकेय [914-922], भोज द्वितीय और विनायकपाल [935-942 ई.] हुए। विनायकपाल का पुत्र महेन्द्रपाल द्वितीय 946 ई. में वर्तमान था। विजयपाल [959 ई.] की संतति ने भी कुछ पीढ़िया तक राज्य किया। उसका पुत्र राज्यपाल 1018 ई. में, पौत्र त्रिलोचनपाल 1019-1027 ई. में तथा प्रपौत्र यशपाल 1036 ई. में था। उसके बाद इन प्रतिहार सम्राटों का कोई महत्वपूर्ण उल्लेख नहीं मिलता।

प्रारंभिक प्रतिहारों की जानकारी के लिए भोज प्रतिहार की ग्वालियर प्रशस्ति, जालौर में रचित जैन ग्रंथ "कुवलयमाला" तथा "पुरातन प्रबंध संग्रह" एवं "हरिवंश पुराण" के उल्लेख प्रमुख हैं। कतिपय शिलालेख एवं ताम्रपत्र भी सहायक हुए हैं।

नागभट्ट से आगे उसके पुत्रों- ककुक तथा देवराज का शासन महत्वपूर्ण नहीं रहा। देवराज को तो अपने सामंतों से ही संघर्ष में लगे रहना पड़ा। देवराज का पुत्र वत्सराज बड़ा प्रतापी हुआ। उसे 'रणहस्तिन्' कहा गया है। उसके सिक्के कन्नौज, उत्तरप्रदेश के अन्य स्थानों, राजस्थान तथा सौराष्ट्र से प्राप्त हुए हैं जो उसके प्रभाव क्षेत्र के द्योतक हैं। दौलतपुरा [नागौर] तथा ओसिया [जोधपुर] में उसके दान-पत्र एवं शिलालेख मिले हैं। उसने कन्नौज के इन्द्रपाल तथा गौड़ के धर्मपाल आदि को परास्त किया। चौहान दुर्लभराज उसका सामंत था। राष्ट्रकूट धारावर्ष ने बंगाल से लौटते हुए वत्सराज को पराजित किया। 794 ई. में उसका देहान्त हुआ। अपने पिता का बदला लेने में वत्सराज का पुत्र नागभट द्वितीय समर्थ प्रमाणित हुआ। उसने आन्ध्र, सिंधु, विदर्भ तथा कलिंग के शासकों पर विजय प्राप्त की। कन्नौज एवं गौड़ नरेशों को भी परास्त किया और आनर्त, मालवा, मत्स्य, किरात, तुरुष्क तथा वत्स के पर्वतीय दुर्गों पर

उसके पुत्र रामभद्र [833-835 ई.] का शासन नगण्य रहा तथा उसे सम्भवतः उसके पुत्र भोज ने ही मार डाला जैसा कि जैन ग्रंथों में वर्णित है। रामभद्र का एक दान-पत्र बधाल [जयपुर] में मिला है। उसका पुत्र भोज प्रथम बड़ा प्रतापी

हुआ। उसका विरुद 'आदिवराह' था। उसके दिए हुए अनेक दानपत्र राजस्थान तथा भारत के अन्य अनेक स्थानो मे मिले है। उत्तरप्रदेश, दिल्ली, पजाब, राजस्थान, मालवा, गुजरात एव बगाल के भू-भागो तक उसके साम्राज्य का विस्तार था। उसने अपने कुल-बैरी राष्ट्रकूटो का भी पराभव किया। वह परम भगवती भक्त था। ग्वालियर तथा सागरताल अभिलेखो मे उसकी प्रशस्तियो एव विजयो के उल्लेख है। भोज का युवराज तो नागभट तृतीय था पर महेन्द्रपाल प्रथम गद्दी पर बेठा जो पिता की तरह ही प्रतापी था। उसका साम्राज्य सौराष्ट्र म 'जूना' मे लेकर बगाल म 'पहाडपुर' तक तथा उत्तर मे नेपाल की तराई से लेकर मध्यभारत मे 'नेरही' तक फेला हुआ था। उसके अनेक सामत बडे प्रबल थे। राजशेखर नामक कवि नाटककार उसका गुरु था। उसके 'कर्पूरमजरी' तथा 'बालरामायण' आदि नाटको मे महेन्द्रपाल को 'निर्भयनरेश' कहा गया है। महेन्द्रपाल की मत्यु के बाद महीपाल का सौतेला भाई भोज द्वितीय गद्दी पर बेठा। पर शीघ्र ही महीपाल ने शासन पर अधिकार कर लिया। इससे पूर्व राष्ट्रकूट इन्द्र ने उसे पराम कर भोज को सिहासनासीन किया जिसे उसने हर्ष चन्देल की सहायता मे हरा दिया था। वह साहित्य का सरक्षक था। दक्षिण मे भी उसने विजय-अभियान किए थे। तत्कालीन विदेशी इतिहासकारो ने उसे उस समय का सबसे बड़ा सम्राट माना है। उसका अधिकार काबुल के शाहियो पर भी था। उसकी सेना मे 800 हाथी थे। राजस्थान के राजोरगढ के लेख मे क्षितिपाल नाम से सम्राट के रूप मे उसका उल्लेख मिलता है। भोज द्वितीय महीपाल के बाद पुन गद्दी पर बेठा पर शीघ्र ही विनायकपाल नामक उसका वेमातृक भाई सम्राट बना। ग्वालियर के 942 ई के लेख मे उसके द्वारा ओड नदी पर 96 करोड की लागत से एक बाध बनाये जाने का उल्लेख है। 937 से 940 ई तक के इसके राज्यकाल मे कृष्ण राष्ट्रकूट ने कलिंजर और चित्तौड नामक दुर्ग [illegible]

स्थापित करली थी। मालवा के परमार उसके हाथ से नही निकल पाए। वह एक सक्षम शासक था। उसकी मुद्राए उत्तरप्रदेश आदि कई स्थानो मे मिली है तथा ठक्कर फेरू ने भी विनायकी मुद्राओ का वर्णन किया है। 943 ई मे उसका अन्त हो गया।

महेन्द्रपाल द्वितीय का 946 ई का एक लेख प्रतापगढ [चित्तौड] से मिला है जिसमे घोण्टावर्षिका नामक स्थान पर देवी वटयक्षिणी को खर्परपद्रक नामक गाव उसके द्वारा दिया जाना वर्णित है। उसके राज्य म प्रतिहारो का वर्चस्व क्षीण होता गया जिसका एक कारण तो उनके सामन्तो का प्रबल होना तथा दूसरा अरबो के स्थान पर अधिक नृशस खुरासानी शासकों द्वारा आक्रमण करना था। उसके पुत्र देवपाल [949 ई] के राज्यकाल में भी यही क्रम जारी रहा। कलिंजर, ग्वालियर, गुजरात- एक-एक कर प्रतिहारों के हाथ से निकल गए। मान्यखेट के राष्ट्रकूटो का सगा पाकर गुहिल अल्लट ने सभवत देवपाल को मार डाला। देवपाल का भाई विजयपाल [970 ई] राष्ट्रकूटो द्वारा पराम हुआ। शाकभरी का चौहान विग्रहराज तृतीय तथा नाडोल का लक्ष्मण चौहान भी स्वतत्र हो गए तथा राजोरगढ का गुर्जर प्रतिहार भी भक्त न रहा। इसके बाद राज्यपाल और भी दुर्भाग्यशाली रहा। उसके समय काबुल के हिन्दु शाहियो का हराना हुआ महमूद गजनवी कन्नौज पर चढ आया और उसने बुरी तरह लूट मचाई। महमूद के लौटन पर विद्याधर चन्देल के साथ हुए युद्ध मे राज्यपाल मारा गया। उसके पुत्र त्रिलोचनपाल ने महमूद के हमलों से डरकर कन्नौज से छोडकर "बाडी" को अपनी राजधानी बनाया। वह 1019 से 1027 ई तक जीवित रहा। उसके एक दानपत्र [इलाहाबाद] मे यशपालदेव का नाम मिला है जो सभवत त्रिलोचनपाल का उत्तराधिकारी रहा हो। यह अवधि [illegible] साम्राज्य के छिन्न-भिन्न होने की थी। राष्ट्रकूट, गाहडवाल, चंदेल, पाल, चौलुक्य आदि नई शक्तियाँ के रूप मे उभर रहे थे और ऐसे ही परमार, तवर, गुहिल तथा चौहान भी। मुस्लिम आक्रमणो के निरतर दबाव म भी [illegible] पर अमर पद। राजस्थान के राजपूतो की एकता-भावना समाप्त हो रही थी। फिर भी एक लम्बे अर्से तक प्रतिहारो ने न केवल [illegible] आक्रमको को रोका बल्कि वर्द्धन म भी अच्छा [illegible] दिया। साहित्य, कला, स्थापत्य, धार्मिक भावना, सम्प्रदाय और [illegible] म उनका योगदान अत्यधिक [illegible] रहा। [illegible] के लिए [illegible] उनके उदार [illegible] तथा [illegible] के साक्षी है।

मंडोर शाखा- [illegible]

देकर तपस्वी जीवन बिताने लगा। भोज के बाद क्रमशः यशोवर्धन, चाहुक, शीलुक, झोट, भिल्लादित्य तथा कक्क हुए। शिलालेखों का सम्बन्ध इसी कक्क की संतान से है। इसके बाद इस वंश का कोई उल्लेखनीय प्रसंग नहीं मिलता। इन शासकों में से नागभट्ट ने मेड़ता [मेडन्तक] को राजधानी बनाया तथा शीलुक ने भटीराज देवराज को हराकर वल्ल तथा त्रवणी की सीमाएं निर्धारित की। शीलुक ने धार्मिक प्रवृति के कारण एक नगर बसाया तथा 'त्रोता' नामक स्थान पर सिद्धेश्वर महादेव का मंदिर भी बनाया। उसके पुत्र झोट ने धार्मिक भावना से आत्मघात किया। तत्पश्चात् भिल्लादित्य ने अपने पुत्र कक्क को राज्य सौंपा जिसने मुंगेर में कन्नौज के प्रतिहारों की ओर से लड़ते हुए गौड़ों को हराया। वह छन्द, व्याकरण, तर्क ज्योतिष आदि अनेक विद्याओं में पारंगत तथा विविध भाषाओं का जानकार एवं कवि था। उसको भट्टिवंश की रानी पद्मिनी से बाउक उत्पन्न हुआ। उसके समय में मयूर नामक शासक ने मंडोर पर हमला किया था। बाउक ने 'भाउकूप' नामक स्थान पर उसे हराया। कक्क की रानी दुर्लभदेवी से कक्कुक का जन्म हुआ जिसके पांच शिलालेख अकेले घटियाला में ही प्राप्त हुए है। उसने त्रवणी, वल्ल मढ़ आर्य गुर्जर लाट तथा पर्वत प्रदेशों में ख्याति अर्जित की। वह भोज प्रथम का समकालीन था। मंडोर तथा रोहिन्सकूप में उसके दो स्तम्भ है।

मौर्य- कणसवा [कोटा] के 738 ई. के लेख में ब्राह्मण राजा शिवगण ने स्वयं को धवल मौर्य का मित्र बताया है। मौर्य प्रतिहारों से भी पहिले दक्षिण-पूर्वी राजस्थान पर राज्य करते थे। चित्तौड़ से सम्बन्धित चित्रांगद मोरी और मान मोरी के विवरण भी इस धारणा की पुष्टि करते है। मान मोरी का संवत् 770 बताया जाता है सो सही नहीं है क्योंकि वहां धरणीवराह नामक राजा संवत् 831 तक राज्य करता था। जैन ग्रंथों के अनुसार शाकंभरी के चौहान राजा ने जो कन्नौज के प्रतिहार सम्राट का सामंत था, चित्रांगद मौर्य को मारा था।

तोमर- भूतपूर्व जयपुर राज्य में तोरावाटी नामक इलाका था जिसमें "पाटन" नामक एक ठीकाई ठिकाना भी तोमरों [तवरों] का था जो "राव" कहलाते थे। तोमरों का दिल्ली पर राज्य था जिसको याद की यह कहावत प्रचलित है- "जद कद दिल्ली तवरां"। चाहमानों से पराजित होने के बाद संभवत ये जयपुर के आसपास आकर बस गए।

कछवाहा- आमेर के कछवाहा, ग्वालियर तथा नरवर के कच्छपघातों से अपना संबंध जोड़ते है। मुहता नैणसी ने भी अपनी "ख्यात" में भाट राजपाण द्वारा लिखाई गई वंशावली में यह बात कही है। ख्यातों के अनुसार ग्यारहवीं शताब्दी में सोढदेव का पुत्र दूलहदेव दौसा में आया जहां चौहानों तथा बड़गूजरों का सम्मिलित राज्य था। अपने ससुराल पक्ष के चौहानों से मिलकर उसने दौसा पर अधिकार किया। 1137 ई. में इसने ढूंढाड नामक राज्य की स्थापना की तथा बाद में आस-पास के मीणा मुखियाओं को धीरे-धीरे परास्त करते हुए रामगढ़ [माची] खोह, आमेर, गेटोर, झोटवाड़ा आदि स्थानों पर अधिकार कर लिया। इसी वंश के काकिलदेव ने 1207 ई. में मीणों से आमेर छीनकर वहां अपनी राजधानी बनाई। उसके वंशजों में पजूण का संबंध पृथ्वीराज तृतीय के काका कन्ह की लड़की से विवाह होने के कारण चौहानों से हुआ। पृथ्वीराज रासो में पजूण की वीरता और युद्ध में मारे जाने का वर्णन किया गया है। कुंतल कछावा पर दिल्ली के सुलतान ने अजमेर की दरगाह शरीफ से लौटते समय हमला किया था। एक कछवाहा शासक रणथंभोर के चौहान राजा के हाथों मारा गया था। कान्हडदे प्रबंध नामक पन्द्रहवीं शताब्दी के ग्रंथ के अनुसार कान्हडदेव के भाई मालदेव ने आमेर के कछावों के यहां रहते हुए मेवात में अलाउद्दीन की सेना से युद्ध किया था। चन्द्रसेन, पृथ्वीराज, पूर्णमल आदि राजा भी मुसलमानों से युद्ध करते हुए मारे गए थे। पृथ्वीराज ने राणा सांगा के साथ बाबर से तथा पूर्णमल ने शेखावतों की ओर से हिंदाल से युद्ध किया था। राजा भारमल के द्वारा अकबर से विवाह-संबंध स्थापित कर लेने के बाद ही कछवाहों की अभिवृद्धि प्रारंभ हुई।

राठौड़- राठौड़ राजपूतों का राज्य वर्तमान राजस्थान के उत्तरी तथा पश्चिमी भागों में था। नैणसी ने मारवाड़ के राठौड़ों को कन्नौज से आने वाली शाखा बताया है, जबकि कर्नल टॉड इन्हें सूर्यवंशी मानते है। 1596 ई. में लिखे गए "राष्ट्रौढ़ वंश महाकाव्य" में इनकी उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई गई है। प्रारंभ में ये दक्षिण में शक्तिशाली थे। मध्य भारत में इनके अभ्युदय का उल्लेख सातवीं शताब्दी से मिलता है। राजस्थान में इनकी चार शाखाएं मिलती है। ये हैं- हस्तिकुण्डी के राठौड़, धनोप के राठौड़, वागड़ के राठौड़, जोधपुर के राठौड़ और बीकानेर के राठौड़। हस्तिकुण्डी, धनोप तथा वागड के राठौड़ संभवत दक्षिण के राठौड़ों के वंशज थे। जोधपुर के राठौड़ों के बारे में टॉड सहित अधिकांश विद्वानों का मत है कि ये कन्नौज के राजा जयचन्द्र के वंशज थे। इस शाखा का मूल पुरुष राव सीहा था।

भाटी- भाटी लोग संभवत वि. सं. 800 के लगभग पंजाब से आकर [illegible] राजस्थान के [illegible] गए तथा धीरे-धीरे इन्होंने तनोट, देरावल, लोद्रवा तथा जैसलमेर आदि में अपना [illegible] स्थापित किया। [illegible] वर्तमान ईसवीं विजयराज के समय से मिलता है जो लगभग 1165 ई. के [illegible] भोज भी अल्पकाल तक शासक रहा। भोज के पुत्र जैसल ने जैसलमेर में नई राजधानी का [illegible]

लेकिन इसकी मृत्यु शीघ्र ही हो जाने के कारण इसके पुत्र शालिवाहन ने इसका निर्माण पूरा करवाया। शालिवाहन एक वीर योद्धा था जिसने दूर-दूर के इलाके जीते। शालिवाहन के बाद उसका पुत्र वेजल शासक बना, जो एक दुश्चरित्र व्यक्ति था। वैजल के बाद केल्हण और उसके बाद चाचकदेव, कर्णसिंह, लावण्यदेव, जैतसिंह आदि महाराजा हुए।

अन्य राजपूत वंश: बसंतगढ़ [सिरोही] से प्राप्त 925 ई. के एक लेख में अर्बुद देश के अधिपति राजिल्ल को वर्मलात का सामंत बताया गया है। भीनमाल के विख्यात कवि "माघ" के दादा सुप्रभदेव भी वर्मलात के सर्वाधिकारी थे। 928 ई. में ब्रह्मगुप्त ने अपना "ब्रह्मस्फुट सिद्धांत" रचा जिसके अनुसार भिल्लमाल "चाप" वंश के व्याघ्रमुख के अधीन था। संभवतः इसी का वर्णन चीनी यात्री युवान च्वांग ने किया है। इन चापों [चापोत्कटों- चावड़ों] को अरब आक्रमक जुनैद ने परास्त किया था जिसे बाद में प्रतिहारों ने जीता।

अलवर की ओर कन्नौज के प्रतिहारों के सामंत महाराजाधिराज सावट और उनके पुत्र मथनदेव राजोरगढ़ में राज्य करते थे। ये बड़गूजर कहलाते थे।

परमार- परमारों का मूल स्थान मालवा था। मुंज परमार ने 997 ई. में मेवाड़ के गुहिल शक्तिकुमार को हराकर आहड़ तथा चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया था। उसने नाडोल के चौहानों को भी परास्त किया। चन्द्रावती [आबू] जालौर, किराडू [जोधपुर] तथा अर्थूणा [बांसवाड़ा] भी उसके अधीन थे। आबू का सिंधुराज परमार परमारों के मरुमण्डल का महाराज कहलाया। उसके बाद उत्पलराज, अरण्यराज तथा अद्भुत कृष्णराज हुए। कृष्णराज के पुत्र धरणीवराह के विषय में यह मान्यता रही है कि उसने नौ कोट अपने संबंधियों को दिये थे। पर यह मूलराज सोलंकी तथा नाडोल के चौहानों से ही हार गया था। धरणीवराह के दो पुत्रों धूर्भट तथा महीपाल में से महीपाल 1002 ई. में राजा बना। उसका पुत्र धन्धुक दुर्लभराज सोलंकी का सामंत था। जालौर में 1109 ई. में विशाल नामक राजा था जो वाक्पति से सातवीं पीढ़ी पर था। संभवतः यह आबू के परमारों की ही एक शाखा थी। अर्थूणा में नवीं शताब्दी में मालवा के उपेन्द्र का पुत्र था जिसके बाद धनिक, चच्च, कन्हदेव तथा सत्यराम हुए।

चौहान: एक मान्यता के अनुसार वशिष्ठ ने प्रतिहार, चौलुक्य, परमार तथा चौहान राजकुलों को अग्नि से उत्पन्न किया। विदेशी इतिहासवेत्ता इसका आशय विदेशी जातियों को, शुद्धि का अग्नि-संस्कार कर, हिन्दू बनाए जाने से लेते हैं। इसके विपरीत देशी विद्वान् इन्हें सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंशी ही मानते हैं। इसका उल्लेख इन वंशों के प्राचीन लेखों-पुस्तकों आदि में भी प्राप्त है। पर अधिक पुष्ट प्रमाणों के आधार पर इन्हें वत्सगोत्री ब्राह्मण ही माना गया है तथा गुहिल, प्रतिहार आदि की तरह इनकी उत्पत्ति ब्राह्मणों से मानी गई है। इनका मूल स्थान जांगल देश तथा सपादलक्ष माना गया है। हर्ष [सीकर] के लेख में इनके क्षेत्र को 'अनंत' कहा गया है। इनकी अन्य शाखाएं गुजरात, मेवाड़, उत्तरप्रदेश, धौलपुर आदि में मिली हैं। सांभरिया चौहानों का मूल पुरुष वासुदेव 551 ई. के आसपास हुआ था। इसी वंश का अनंत क्षेत्रीय ब्राह्मण सामंत था जो अहिच्छत्रपुर [नागौर] में राज्य करता था। चूंकि वह प्रतिहार नागभट्ट द्वितीय [सं. 812] के समकालीन रहे चौहान गुवक से छः पीढ़ी पहिले हुआ था, उसका काल संवत् 725 के आसपास संभव है। चौहानों की बाद की पीढ़ियां हर्ष के शिलालेख में दी हैं। ये लोग पहिले प्रतिहारों के सामंत थे और उनकी ओर से अनेक युद्धों में लड़े थे। चौहान माहेश्वर थे और पुष्कर, बिजौलिया, मेनाल आदि अनेक स्थानों पर इनके बनवाये शिव मंदिर विद्यमान हैं। चौहान वाक्पतिराज के पुत्र लक्ष्मण ने पाली जिले में नाडोल शाखा की स्थापना की थी। प्रतिहारों की शक्ति क्षीण होने पर चौहान स्वतंत्र बन गये और स्वयं को महाराजाधिराज कहलाने लगे। विग्रहराज [illegible]

तृतीय वीसल के नाम से विख्यात है। उसका विवाह मालवा की राजकुमारी से हुआ था। कर्ण सोलंकी को हराकर उसने परमार उदयादित्य की मदद की थी। उसका पुत्र पृथ्वीराज प्रथम "परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर" कहलाया। यह उल्लेख सं. 1162 के जीणमाता [सीकर] के लेख में आता है। वह परम धार्मिक था। उसने मुसलमानों से युद्ध किया, ब्राह्मणों की सम्पत्ति छीन लेने वाले 700 सोलंकियों को मार डाला तथा सोमनाथ जाने वाले यात्रियों के लिए मुफ्त खाद्य-वितरण करवाया।

पृथ्वीराज के पुत्र अजयराज ने मालवा के परमारों तथा नागौर के मुसलमानों से युद्ध किए। 'अजमेर' नगर की स्थापना उसी ने की। दिगम्बरों तथा श्वेताम्बरों के विवाद का मध्यस्थ भी वह बना। उसके द्वारा जारी किए गए सिक्के अजयप्रियद्रम्म कहलाए जिन पर उसकी रानी सोमल्लदेवी का नाम भी अंकित था। उसने अपने पुत्र अर्णोराज को राज्य सौंप कर पुष्कर में सन्यस्त जीवन बिताया। अर्णोराज ने अजमेर के निकट मुसलमानों को हराकर वहां उनके रक्त से

अपवित्र भूमि पर आनासागर तालाब बनवाया। मालवा, हरियाणा, सिन्धु, सरस्वती आदि के प्रदेशों पर आक्रमणों मे सफल होने पर भी कुमारपाल चौलुक्य के हाथों उसे दो बार परास्त होना पड़ा। वह अपनी मारवाड़ी रानी सुधवा के पुत्र जगदेव द्वारा मार डाला गया। उसके बाद विग्रहराज चतुर्थ ने सवत् 1219-24 के आसपास तक राज्य किया। वह अत्यन्त पराक्रमी हुआ। हिमालय से विध्याचल तक उसने विजय-पताका फहराई। उसने अर्णोराज की पराजय का बदला ही नहीं लिया बल्कि राजस्थान तथा उससे बाहर के अनेक प्रदेशों को भी अपने अधिकार मे किया। चित्तौड़, नाडोल, पाली, भादानक, मरु, टक, दिल्ली, मालवा और मेवाड़ मे उसने विजय प्राप्त की। बव्वेरा [झुझुनू] के निकट उसने यवनो को परास्त किया। वह साहित्य और सस्कृति का उपासक था। बनास नदी पर उसने बीसलपुर नगर बसाया तथा बीसलसर नामक तालाब भी खुदवाया। उसका लिखा 'हरकेलि' नाटक है तथा ढाई दिन के झोंपडे के नाम से ज्ञात सस्कृत पाठशाला भी उसी को बनवाई हुई है। उसके राज्य कवि सोमेश्वर ने 'ललित विग्रहराज' नाटक लिखा। वह

स. 1224 से 1226

बडा दानी, धार्मिक

से 1239 तक राज्य

किया। वह सोलकियों से पराजित हुआ। उसकी रानी कर्पूरदेवी से पृथ्वीराज तृतीय तथा हरिराज उत्पन्न हुए। सोमेश्वर के सिक्के भी मिले हैं।

पृथ्वीराज तृतीय- पृथ्वीराज तृतीय का जन्म संवत् 1223 मे हुआ तथा यह स. 1234 मे अपने पिता की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठा। उसकी माँ कर्पूरदेवी तथा उसके पिता के विश्वस्त मत्री कदम्बवास ने उसकी बाल्यावस्था मे राज-काज चलाया। स 1236 के बाद युद्धो मे सलग्न होकर उसने अपरगागेय के भाई नागार्जुन को हराया तथा उसके सहयोगियो के मुण्डो की माला द्वार पर लटकाई। गुड़पुर, भादानक, जेजाक-मुक्ति तथा गाहडवालो पर उसने विजय प्राप्त की। गुजरात के भीमदेव सोलकी व आबू के धारावर्ष परमार पर भी उसने आक्रमण किए। जयचन्द्र की पुत्री सयोगिता का हरण करते समय उसके अनेक श्रेष्ठ सामत वीरगति को प्राप्त हुए। मौहम्मद गौरी द्वारा गुजरात पर आक्रमण किए जाते समय उसने अपने मत्री कैमास की राय से सोलकियो की कोई मदद नहीं की। इसलिए सोलकियो ने भी पन्द्रह वर्ष बाद जब गौरी पृथ्वीराज पर चढकर आया तो वही रुख अपनाया। तराइन के पहिले युद्ध मे तो मुहम्मद गौरी बुरी तरह परास्त हुआ पर दूसरी बार उसने चौहानो को ध्वस्त कर दिया। पृथ्वीराज स्वय पकडा गया और अजमेर ले जाकर मार डाला गया। पृथ्वीराज मे राजनैतिक सूझ-बूझ की तो कमी अवश्य थी, पर उसकी वीरता, शौर्य, वदान्यता, विद्वाओ को प्रश्रय आदि गुण सदैव अभिनन्दनीय रहेंगे। उत्तर भारत के अन्तिम हिन्दू सम्राट के रूप में उसका स्मरण किया जाता है। उसके वीर कृत्यो तथा प्रेम प्रसगो के अनेक काव्यमय वर्णन किए गए है।

चौहान राज्य का विघटन- पृथ्वीराज के पुत्र गोविंदराज ने विपुल धनराशि देकर अजमेर का शासन लिया पर शीघ्र ही उसके काका हरिराज ने उसे वहा से भगा दिया। हरिराज ने मुसलमानो का डटकर मुकाबला किया और रणथभौर पर भी अधिकार करने का प्रयत्न किया पर शीघ्र ही मुसलमानो के आतक से उसने अग्नि मे कूदकर प्राणात कर लिया।

मुसलमानों से सम्बन्ध [पूर्व मुगल काल]- भारत के उत्तर से आने वाले विदेशियो का पहला और सशक्त प्रहार राजस्थान को ही झेलना पड़ा था। उस समय राजस्थान की सीमायें सिध और पजाब को अन्दर तक छूती थी। एक बार सिध पर अधिकार कर लेने के बाद कच्छ के रास्ते सौराष्ट्र, गुजरात तथा उससे सलग्न क्षेत्रो तथा माड [जैसलमेर] और मारवाड के रास्ते शेष राजस्थान पर हमले किये जाते थे। जैसलमेर के भाटी यादवों को इसीलिए

की थी। उसके पुत्र आनन्दपाल की सहायता भी महमूद के खिलाफ की गई। चौहानों ने महमूद के डर से भागकर आये अन्य नरेशो को भी शरण दी थी।

सोमनाथ पर चढ़ाई- वि. सवत् 1082 मे महमूद सोमनाथ पर आक्रमण करने जाते समय मारवाड़ के रेगिस्तान से होकर गुजरा तथा यहा से तीस हजार ऊटो पर अन्न एव खाद्य सामग्री लादकर ले गया। वह लोद्रवा, नाडोल, साचोर होता हुआ अणहिलवाड़ा गया। इस रास्ते में लूटपाट करने पर उस पर छुटपुट आक्रमण भी किये गये। मार्ग में उसने चौहानो के नराणा आदि ठिकानों में भी लूट की और उन्हें भयभीत किया। इसका प्रतिकार करने के लिए चौहानों

यहां पर लूट-खसोट की। रावल जैतसिंह, मूलराज तथा रतनसिंह इन युद्धों में काम आये। गयासुद्दीन तथा मुहम्मद बिन तुगलक ने भी सम्भवतः दूदा के समय जैसलमेर पर आक्रमण किया था। पर रावल घड़सी (घटसिंह) ने संवत् 1418 के पूर्व ही जैसलमेर पुनः प्राप्त कर लिया था। मुहम्मद बिन तुगलक ने अजमेर स्थित दरगाह शरीफ के दर्शन कर दिल्ली लौटते समय कछवाहा कुन्तल पर भी आक्रमण किया था। राठौड़ आस्थान ने भी "खेड़" से आकर पाली में जलालुद्दीन खिलजी से युद्ध किया था और संवत् 1348 में वहीं प्राण दिये थे। जलालुद्दीन ने मंडोर पर आक्रमण कर उसे अधीन किया था और वहां संवत् 1350 में एक मस्जिद बनाई थी।

फिरोज तुगलक के समय ददरेवा (चूरू) को चौहान शाखा के एक बालक को मुसलमान बनाकर [illegible] नाम शेखावाटी रखा। पहिले यह बागड़ कहलाता था। शेखावतों का मूल पुरुष राव शेखा था जो आमेर के कछवाहों के छुट-भाइयों की सन्तान था। क्यामखानियों की तरह मेवात के मेवों और खानजादों की उत्पत्ति भी राजपूतों, मीणों आदि से मानी जाती है।

तुगलक सल्तनत के समय ही मुसलमानों की शक्ति क्षीण हो गई थी जिससे हिन्दुओं ने पुनः अपने राज्यों पर अधिकार कर लिया। उस समय मेवातियों के उपद्रव भी बढ़ गए। फिरोज के पुत्र तुगलकशाह (मुहम्मद) के समय में मालवा में उसका हाकिम दिलावर खां गौरी सुलतान बन बैठा। उसने मेवाड़ के क्षेत्रसिंह पर आक्रमण किया पर बुरी तरह हार कर अपना खजाना छोड़कर ही भाग खड़ा हुआ। महाराणा कुम्भा, रायमल तथा सांगा ने भी माडू के सुलतानों से अनेक युद्ध किये। इसी प्रकार गुजरात का हाकिम भी स्वतंत्र हो गया और उसने नागौर पर भी अपने रिश्तेदार को बैठा दिया। मेवाड़ के महाराणाओं ने गुजरात तथा नागौर दोनों ही के सुलतानों से युद्ध किया। सवत् 1455 में अमीर तैमूर के हमले से तुगलक और भी कमजोर हो गए और सैयदों ने सल्तनत पर अधिकार कर लिया। तदनन्तर लोदी पठान वहा गए। बहलोल तथा सिकन्दर लोदी ने राजस्थान पर आक्रमण किये पर उनका कोई असर नहीं हुआ। अततः इब्राहिम लोदी से बाबर ने सत्ता छीन ली। उसने महाराणा सांगा को भी खानवा के युद्ध में सवत् 1585 में हरा दिया। बाबर का पुत्र हुमायू गद्दी पर बैठा पर उसे पठान शेरशाह सूरी ने हरा दिया। शेरशाह की एक उल्लेखनीय चढ़ाई मारवाड़ के राव मालदेव पर हुई जिसमें उसने छलपूर्वक विजय प्राप्त की। मालदेव ने मारवाड़, जैसलमेर होकर सिंध में अमरकोट जाते हुए हुमायू की कोई सहायता नहीं की। अमरकोट में ही सवत् 1599 में अकबर का जन्म हुआ। मुस्लिम तवारीखों में लिखा है कि नागौर में इस्लाम धर्म का अपमान करने के कारण शेरशाह ने मालदेव पर चढ़ाई की। पर राजस्थानी ख्यातों में इसके राजनैतिक कारण बताए गए हैं। मालदेव ने बीकानेर के राव कल्याणमल तथा मेड़ता के वीरमदेव को, जो उसके अपने वशधर थे, पदच्युत कर उन दोनों स्थानों पर अपना अधिकार कर लिया था। कल्याणमल तथा वीरमदेव ने शेरशाह से सहायता की याचना की जिसके कारण युद्ध हुआ। शेरशाह का पिता हुसैनशाह बीकानेर के राव कल्याणमल के पास विपत्ति के समय आकर रहा भी बताते हैं। शेरशाह के कहने पर भी मालदेव ने हुमायू को पकड़ने में रुचि नहीं दिखाई, यह भी एक कारण हो सकता है। शेरशाह ने बीकानेर तथा मेड़ता पर कल्याणमल एव वीरमदेव को पुन स्थापित किया तथा रणथम्भौर और नागौर पर अधिकार किया। उसने वीरमदेव को उसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर अजमेर के परगने का कुछ भाग भी दिया। मालदेव के द्वारा अपदस्थ किये गए बूंदी के राव सुरताण को भी उसने पुनः राज्याधिकार दिया। फलौदी एव पोकरण के परगने भी, जो मालदेव ने जैसलमेर से छीन लिये थे, राव लूणकर्ण को लौटा दिये गए। मेवाड़ के उदयसिंह ने चित्तौड़, कुभलमेर आदि सभी शेरशाह को समर्पित कर दिये जिससे उसे नहीं छेड़ा गया। कछवाहा भारमल ने अजमेर के प्रशासक हाजीखा पठान से अपनी पुत्री ब्याह कर पठानों की अधीनता स्वीकार कर ली थी। शेरशाह के पुत्र इस्लामशाह ने खवास खां के भाग जाने पर मेवात खां को अजमेर, नागौर तथा जोधपुर का प्रशासक नियुक्त किया था। हाजीखा ने मोटा राजा उदयसिंह की बहिन से भी विवाह किया था जिसके कारण उसे कुछ जागीर दी गई। तब तक मालदेव अपने क्षेत्र पर अधिकार करने में असफल रहा था।

मुगलकाल-मेवाड़

इस्लामशाह के बाद आदिलशाह की नासमझी से सवत् 1612 में उसके नौकर हेमू बकाल के हाथों में दिल्ली की सल्तनत चली गई और वह विक्रमादित्य के नाम से गद्दी पर बैठा। अकबर ने उसे मारकर बादशाहत प्राप्त की। अकबर की बाद की सफलता का मुख्य कारण राजपूत राजाओं के साथ उसके वैवाहिक सबध थे जो उसकी राजनीति के अग थे। सर्वप्रथम आमेर के राजा भारमल ने उसे अपनी लड़की दी। भारमल मेवातियों, अजमेर के हाजी खा

पठान तथा स्थानीय मीणों से तंग आ रहा था। अकबर की सहायता से उसने न केवल अपनी तकलीफें मिटाई बल्कि अपने भाइयों, पुत्रों, पौत्रों आदि सभी को बादशाही सेवा में भर्ती करवाकर अपने परिवार की आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति भी मजबूत की। उसने दूसरे राजाओं को भी अकबर की अधीनता स्वीकार करने के लिए राजी किया। फलत बीकानेर तथा जैसलमेर के राजाओं ने भी अकबर को अपनी लड़किया दी। उस समय राजस्थान में उदयपुर, डूंगरपुर, बासवाड़ा, प्रतापगढ़, जोधपुर, बीकानेर, अजमेर, बूदी, सिरोही, करौली तथा जैसलमेर के राज्य थे। अन्य सभी ने तो अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली, पर मेवाड़ के राणाओं ने अपनी स्वतंत्र सत्ता बनाये रखने के प्रयत्न किये। अकबर से लेकर अन्तिम मुगल सम्राट तक इन राजपूत राज्यों की गतिविधियों का ब्यौरा यहा दिया जा रहा है -

अकबर ने सवत् 1624 में मेवाड़ पर आक्रमण कर चित्तौड़ को घेर लिया, पर राणा उदयसिह ने अधीनता स्वीकार नहीं की और प्राचीन आघाटपुर के पास उदयपुर नामक अपनी राजधानी बसाकर वहा चले गये। उनके बाद महाराणा प्रताप ने भी युद्ध जारी रखा और अधीनता नहीं मानी। उनका हल्दीघाटी का युद्ध इतिहास प्रसिद्ध है। इस युद्ध के बाद प्रताप की युद्ध-नीति छापामार लड़ाई की रही। अकबर ने कुम्भलमेर दुर्ग से भी प्रताप को खदेड़ दिया तथा अपने सेनानायकों द्वारा मेवाड़ पर अनेक आक्रमण करवाये। पर अनेक कष्ट सहकर भी प्रताप ने अधीनता स्वीकार नहीं की। अंत में स. 1642 के बाद अकबर का ध्यान दूसरे कामों में लगे रहने के कारण प्रताप ने अपने स्थानों पर फिर अधिकार कर लिया। स. 1654 में चावड में उसकी मृत्यु हो गई।

प्रताप के बाद उसके पुत्र अमरसिह ने भी उसी प्रकार वीरतापूर्वक मुगलों का प्रतिरोध किया। पर अन्त में उसने शाहजादा खुर्रम के द्वारा सम्राट जहांगीर से सधि कर ली। उसने अपने राजकुमार को मुगल दरबार में भेज दिया, पर स्वय महाराणा ने, अन्य राजाओं की तरह, दरबार में जाना स्वीकार नहीं किया। महाराणा सवत् 1677 में मृत्यु को प्राप्त हुआ। महाराणा कर्णसिंह ने कभी शाहजादे खुर्रम को पीछोला झील में बने जगमन्दिर नामक महल में रखा था। महाराणा का भाई भीम शाहजादे की सेवा में रहा था जिसे उसने बादशाह बनने के बाद टोडा [टोडाभीम] को जागीर दी। खुर्रम को लाखेरी के गोपालदास गौड़ ने भी मदद दी थी जिसके बदले में उसके पुत्र विट्ठलदास पर कृपा की गई। महाराणा जगतसिह ने अपने सरदारों को बादशाही दरबार में भेजा और दक्षिण के अभियान में सैनिक सहायता भी दी।

[illegible]

टीकादौड़ के बहाने न केवल मेवाड़ के पुर, माडल, बदनौर आदि को लूटा अपितु मालपुरा टोडा, चाटसू, साभर लालसोट, टोंक, सावर, केकड़ी, आदि पर भी हमला किया और लूटपाट की। उसने वहां के अनेक भूमियों से बड़ी-बड़ी रकमें भी कर के रूप में ली। महाराणा ने दारा का पक्ष न लेकर औरगजेब का लिया और उत्तराधिकार के युद्ध में उसकी विजय पर बधाई दी। किशनगढ़ की राजकुमारी चारुमती, जिसका विवाह औरगजेब के साथ होना था, को भगाकर ले जाने से आपसी रंजिश भी हुई। ऐसा ही जसवतसिह के नवजात पुत्र अजीत सिंह को शरण देने के कारण भी हुआ। राजसिह ने अपने लड़के जयसिह को भी मुगल दरबार में भेजा। औरगजेब द्वारा हिन्दुओं पर लगाय [illegible]

[illegible]

जयपुर के नरेशों को मेवाड़ी राजकुमारियां देकर राज्य प्राप्ति में उनकी सहायता की। महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय का काल उपद्रवों से ग्रस्त रहा। उसके पुत्र जगतसिह द्वितीय के समय हुरड़ा सम्मेलन हुआ पर जगतसिंह [illegible] के लिए सक्षम नहीं था। उसने मराठों को घूस देकर सहायता प्राप्त की जिससे मेवाड़ पर मराठों का पजा [illegible] और महाराणाओं को बड़ी रकमें देकर उन्हें प्रसन्न करना पड़ा।

बीकानेर के राव कल्याणमल ने अपने कुल की कन्याएं अकबर को देकर अपने पुत्र रायसिंह को बादशाही सेवा में [illegible] दिया था। रायसिंह ने नागौर, जोधपुर आदि पर भी शासन किया और युद्धों में बड़ा [illegible]। वह बड़ा दानवीर था। उसका भाई पृथ्वीराज प्रसिद्ध कवि तथा "वेलिक्रिसन रुक्मणी री" नामक काव्य का रचयिता हुआ। एक अन्य भाई अमरसिह बागी होकर बादशाही खजाना लूटता था। अरबखां नामक मुगल [illegible] वह मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसके पुत्रों सूरसिह तथा दलपत सिंह में अनबन रहती थी। जहांगीर ने दलपत सिंह को टीका दिया था पर बाद में अप्रसन्न होकर उसे एक सामन्त द्वारा धोखे से पकड़ जाने पर कैद कर लिया गया तथा [illegible] दी गई। सूरसिह का पुत्र कर्णसिंह करण भूरटिया कहलाया। उसने राजपूत राजाओं का उस समय [illegible]

अटक पार नहीं जाना चाहते थे। इस पर उसे "जय जंगलधर बादशाह" का खिताब मिला। बादशाह ने नाराज होकर उसके पुत्र अनूपसिंह को अधिकार दे दिया। अनूपसिंह विद्या-रसिक तथा विद्वानों का संरक्षक था। उसके भाई पदमसिंह तथा केसरीसिंह बादशाह के प्रिय तथा उत्कृष्ट वीर थे। अनूपसिंह के बाद क्रमशः स्वरूपसिंह तथा सुजानसिंह राजा बने। सुजानसिंह के समय में जोधपुर के अजीतसिंह तथा नागौर के बख्तसिंह ने बीकानेर पर हमले किये पर वे असफल हुए। महाराजा जोरावार सिंह के समय मारवाड़ के अभयसिंह ने फिर आक्रमण किया, जिस पर जयपुर के सवाई जयसिंह ने मदद कर जोधपुर पर आक्रमण कर दिया।

उधर जोधपुर में राव मालदेव का पुत्र चन्द्रसेन अकबर का विरोधी बनकर जीवन भर भटकता रहा। दूसरे पुत्र उदयसिंह ने जहांगीर को अपनी लड़की मानीबाई देकर मेल-जोल किया। यही मानी बाई जोधाबाई कहलाई जिसे जहांगीर ने जगत गुसाइन की उपाधि दी। खुर्रम [शाहजहां] इसी का पुत्र था। महाराजा गजसिंह शाहजहां का कृपापात्र था। उसने अनारा बेगम नामक किसी नवाब की स्त्री को रनिवास में रख लिया था। उसी के कहने से अपने बड़े पुत्र अमरसिंह को निर्वासित कर दिया जिसे शाहजहां ने नागौर की जागीर दी। अमरसिंह बड़ा स्वाभिमानी था। उसने शाइस्ता-खां नामक अधिकारी को भरे दरबार में कटार से मार डाला था। उसका छोटा भाई जसवंत सिंह जोधपुर का स्वामी बना। वह बड़ा नीतिज्ञ था। धरमत के युद्ध में सात हजार सेनानायक होते हुए भी वह भाग आया था, जिससे अपयश का भागी बना। औरंगजेब इससे आतंकित रहता था पर उसने उसे कभी जोधपुर में नहीं आने दिया। यह साहित्य तथा धर्म का बड़ा संरक्षक था। उसने नैणसी मुहता नामक प्रसिद्ध इतिहासज्ञ पर एक लाख रुपए का जुर्माना कर दिया था जिसे न देकर उसने आत्महत्या करली थी। जसवंतसिंह की जमरूद में मृत्यु के बाद पैदा हुए उसके पुत्र अजीतसिंह को बादशाह की इच्छा के विपरीत दुर्गादास राठौड़ दिल्ली से ले आया तथा उसका पालन-पोषण गुप्त रीति से करता रहा। दुर्गादास ने महाराणा तथा शिवाजी के पुत्र से भी मेल-जोल बढ़ाया। औरंगजेब के विरुद्ध रहते हुए इसने शाहजादे अकबर तथा उसके परिवार को अपने संरक्षण में छिपाये रखा। अजीतसिंह ने बादशाह बहादुरशाह के विरोध के बावजूद जोधपुर से खालसा हटाकर अपने अधिकार में किया। उसने अपनी बहिन का विवाह बादशाह फर्रुखशियर से कर अपना प्रभाव मुगल दरबार में बनाया। फर्रुखशियर के बनाये बाद वह अपनी बहिन को धर्म-परिवर्तन कराकर जोधपुर ले आया। यह अपने ढंग का पहला ही उदाहरण था। अभयसिंह, बख्तसिंह तथा विजयसिंह भी पराक्रमी राजा हुए। महाराजा मानसिंह अपने ढंग का एक ही नरेश था। वह विद्या, संगीत तथा नाथ-सम्प्रदाय का संरक्षक था।

कछवाहा

राजा भारमल अकबर को अपनी लड़की देकर अपने भाई-बेटों एवं पोतों सहित शाही सेना में दाखिल हो गया। उसे जयपुर के आसपास के परगने इनायत किये गए। उसके पुत्र भगवन्तदास ने अनेक युद्धों में भाग लिया जिसमें उसे पांच हजारी मनसब मिला। उसका भाई भगवानदास भी विशिष्ट वीरता के कारण "बांका" कहलाया। मानसिंह को अकबर ने अपने हाथ से आमेर का टीका कर गद्दी दी। वह अकबर का प्रिय और विश्वस्त सेनानायक था। उसने भारत में तथा देश के बाहर भी लगभग 67 बड़े युद्ध जीते। सरहदी इलाकों पर उसकी विजय सराहनीय रही। इन युद्धों की लूट में मिली प्रचुर धन-सम्पत्ति से उसने आमेर का खजाना भरा। बंगाल, बिहार, उड़ीसा आदि में मुगल शासन को जमाने में उसने मदद की। वह बड़ा धर्मपरायण तथा दानी था। पटना के पास बैकुण्ठपुर उसने [illegible]

[illegible]

किशनसिंह का पुत्र बिसनसिंह राजा बना। उसने जाटों को दबाने में सराहनीय योगदान किया। उसकी मृत्यु भी काबुल में हुई। विजयसिंह और जयसिंह नामक उसके दोनों पुत्रों में मनभेद हुआ। जयसिंह [सवाई] सूझबूझ में बढ़ा-चढ़ा था, इसलिए उसने विजयसिंह को अपने रास्ते से सदा के लिए हटा दिया। दक्षिण में कई छुटपुट युद्धों में भाग लेने के बाद वह मालवा का सूबेदार बनने में सफल हुआ। जब बादशाह ने आमेर पर खालसा बैठाया तो उसने उसे बलात् पुन: ले लिया। जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, बूंदी आदि के सभी राजा तथा बादशाह के बड़े अमीर-उमराव उसका वर्चस्व मानते थे। उसने जयपुर नगर को बसाया तथा जयपुर सहित दिल्ली, उज्जैन, बनारस, मथुरा आदि स्थानों पर वेधशालाएं बनाई। अश्वमेध यज्ञ भी उसने किया। वह विद्याओं और कलाओं का संरक्षक, धार्मिक कार्यों में अग्रणी संस्कृत का पोषक तथा प्रतापी राजा था। बादशाही इलाकों को इजारे पर लेने की नीति अपनाकर उसने अपने राज्य का विस्तार किया। शेखावतों और जाटों की भी उसने मदद की। बीकानेर की मदद के लिए उसने जोधपुर पर चढ़ाई की थी। संवत् 1800 में इस यशस्वी राजा का देहान्त हुआ।

उसके पुत्रों, ईश्वरीसिंह तथा माधोसिंह में उत्तराधिकार का झगड़ा हुआ। यद्यपि ईश्वरीसिंह बड़ा था, पर मेवाड़ से हुए समझौते के अनुसार मेवाड़ी रानी से उत्पन्न माधोसिंह को ही गद्दी दी जानी चाहिए थी। मराठों के हमलों से तंग आकर ईश्वरीसिंह ने आत्महत्या करली। माधोसिंह भी लगातार मराठों से जूझता रहा। उसने रणथम्भौर का किला बादशाह से प्राप्त किया पर उससे संलग्न कोटा की बारह कोटड़ियों के प्रश्न पर कोटा से मात खाई। मावड़ा के युद्ध में जाटों को परास्त करने के बाद वह जल्दी ही मर गया। तुरन्त ही माचाड़ी के नरूका राव प्रतापसिंह ने तत्कालीन अव्यवस्था का लाभ उठाकर मेवात तथा भरतपुर के कुछ भागों को दबाकर अलवर राज्य की नींव डाली और बादशाह से स्वीकृति भी प्राप्त कर ली। माधोसिंह का पुत्र पृथ्वीसिंह भी पूर्ण युवक होने के पूर्व ही चल बसा जिससे उसका भाई प्रतापसिंह गद्दी पर बैठा। उसने तुंगा के युद्ध में जोधपुर के सहयोग से सिंधिया से अच्छी टक्कर ली, पर पाटण के युद्ध में सिंधिया ने दोनों को ही बुरी तरह हराया। अवध के नवाब को शरण देकर भी अंग्रेजों के हवाले कर देने से उसकी बड़ी अपकीर्ति हुई। जीवन भर वह मराठों को द्रव्य दे-देकर उन्हें शांत करने के प्रयत्न करता रहा जिससे जयपुर के राज्य-कोष पर भी विपरीत असर पड़ा। प्रतापसिंह गोविन्ददेव का भक्त, अच्छा कवि, संगीत नृत्यादि कलाओं का संरक्षक, साहित्यकारों का आश्रयदाता तथा स्थापत्य का शौकीन था। जयपुर का हवामहल उसकी देन है। उसने अंग्रेजों से सन्धि करनी चाही थी पर उसकी मृत्यु के कारण उसी वर्ष सन् 1803 में उसके पुत्र जगतसिंह ने उस पर हस्ताक्षर किये।

शेखावाटी

कछवा नरेश उदयकर्ण के पुत्र बालाजी के मोकलजी नामक पुत्र के कोई सन्तान नहीं होने के कारण [illegible] [जयपुर] के शेख बुरहान नामक फकीर के आशीर्वाद से संवत् 1490 में शेखा का जन्म हुआ। उसी के नाम से यह प्रदेश कालान्तर में शेखावाटी कहलाया। शेख फकीर को दिये गए धार्मिक वचनों का पालन शेखावत [illegible] करते आये हैं। कछवा नरेश चन्द्रसेन से शेखा की मुठभेड़ हुई थी। शेखा ने अपने भुजबल से अपने क्षेत्र का [illegible] विस्तार किया। उसके पुत्र रायमल के बेटे सूजा ने अमरसर में राज किया। दूसरा पुत्र रायसल अकबर के दरबार में रायसल दरबारी कहलाया। वह शाही मनसबदार, वीर तथा बादशाह का विश्वस्त व्यक्ति था। उसे शाही [illegible] बनाया गया तथा खण्डेला की जागीर दी गई। मनोहरपुर-शाहपुरा के राव लोकाई थे। राव मनोहर अकबर [illegible] दोनों का ही प्रिय और उत्कृष्ट शायर था। मनोहरपुर का कस्बा अकबर ने ही बसाकर उसे दिया था। [illegible] समय शेखावतों ने हुमायूं के भाई हिंदाल से युद्ध किया था। शेखावतों में पुत्रों में बराबर बंटवारे की प्रथा [illegible] कारण कालान्तर में अनेक छोटे-बड़े ठिकाने खड़े हो गए जिनमें सीकर तथा खेतड़ी ये दो सबसे बड़े ठिकाने थे। [illegible] में खण्डेला [दो पाने], बिसाऊ, डूंडलोद, नवलगढ़, मुकन्दगढ़, मंडावा, महनसर, अलसीसर, मलसीसर, [illegible] दांता आदि कुछ प्रमुख ठिकाने हैं। शेखावतों ने अपने बाहुबल से मुसलमानों से फतेहपुर, झुन्झुनूं, [illegible] सिंघाणा आदि अनेक स्थान छीने और तंवरावाटी, बागड़ तथा [illegible] पर अधिकार किया। सवाई जयसिंह ने भी नवाबी इलाकों का इजारा दिलाकर इन्हें क्षेत्र विस्तार में मदद दी थी। [illegible] समस खां, फदन खां आदि अनेक कायमखानी नवाबों ने राज्य किया था। [illegible] धार्मिक समन्वय, स्थापत्य, व्यापार, व्यवसाय आदि का चरम उत्कर्ष हुआ [illegible] कायमखां ने कोई सत्तर ग्रन्थों की रचना की थी [illegible] है।

शेखावत बड़े दुर्धर्ष और स्वाभिमानी रहे जिससे जयपुर का दरबार उनसे सदैव [illegible] इन्होंने सदैव जयपुर राज्य का साथ दिया और उनके अधीन ही बने रहे। इस क्षेत्र के वैभव का [illegible]

राजस्थान
वार्षिकी

राजस्थान
वार्षिकी

है जिसने समूचे भारत में धन और यश अर्जित किया। इन्हीं की बनवाई हुई हवेलियां, पाठशालाएं, धर्मशालाएं, कुएं, बावड़ियां, तालाब छतरियां, चिकित्सालय गौ-शालाएं, मंदिर आदि से यह समूचा क्षेत्र सुशोभित है।

भाटी

हरराज भाटी विद्याप्रेमी था। इसका गुरु कुशललाभ नामक जैन यति था जिसने अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे। राव भीम ने नौरोज बंद करवाया तथा मनोहरदास ने भी तत्कालीन राजनीति में अच्छा योगदान किया। जहांगीर को कन्या देकर भाटियों ने भी मुगल दरबार में अपना प्रभाव बढ़ाया। राठौड़ प्रिथीराज की भटियानी रानी भी बड़ी विदुषी थी। मालदेव की प्रसिद्ध रूठी रानी उमादे और अपने समय की श्रेष्ठ सुन्दरी भारमली भी जैसलमेर की ही थी। जोधपुर तथा सिंध के शासकों से भाटियों का कदीमी बैर बने रहने के बावजूद जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, मेवाड़ आदि से वैवाहिक संबंध भी निरन्तर बने रहे। जोधपुर ने फलौदी-पोकरण के क्षेत्र भाटियों से छीने थे। बीकानेर से भी इनका विग्रह रहा था। भाटी कभी भटिंडा, भटनेर, पूगल तक प्रभावशाली थे, पर धीरे-धीरे राठौड़ों के विस्तार से इनका क्षेत्र संकुचित होता गया और उनकी भूमिका महत्वपूर्ण नहीं बन पाई। भाटी अच्छे वीर हुए हैं और इस क्षेत्र की स्त्रियां सौन्दर्य, देह-यष्टि तथा कौशल में अग्रणी रही हैं।

हाड़ौती के चौहान

नाडोल शाखा के चौहानों का एक वंशधर मेवाड़ के भैंसरोडगढ़ से थोड़ी दूर बम्बावदा नामक स्थल पर किला बनाकर रहने लगा। उसकी संतानों में हुए देवीसिंह हाडा ने चौदहवीं शताब्दी में मीणों को हराकर बूंदा मीणा के नाम से बसे बूंदी पर अधिकार किया। चंबल के एक ओर भीलों का अधिकार था और अकेलगढ़ उनकी राजधानी थी। देवीसिंह के पौत्र जैत्रसिंह ने भील राजा को मारकर कोटिया भील के नाम पर कोटा नगर बसाया। तब से कोटा की जागीर बूंदी राव के छोटे भाई को दी जाने लगी। बूंदी का राव रतन जहांगीर का कृपापात्र रहा। राव शत्रुशाल भी मुगल सेवा में था। बूंदी वालों ने अपनी कन्या बादशाह को न देने की शर्त रखी थी। राव रतन के छोटे भाई माधोसिंह को उसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर 1624 ई. में कोटा का स्वतंत्र शासक बना दिया गया। राव रतन शत्रुशाल तथा अनिरुद्ध के बाद बुधसिंह जब बूंदी का शासक था तो उसे सवाई जयसिंह की सौतेली बहिन आनन्द कुंवरी ब्याही गई। किसी कारणवश जयसिंह की नाराजगी होने से बुधसिंह को बूंदी छोड़नी पड़ी और दलेलसिंह को गद्दी दी गई। जयसिंह ने दलेलसिंह से अपनी कन्या का विवाह भी कर दिया। बुधसिंह बेगूं [मेवाड़] में जा रहा और बूंदी नहीं लौटा। वह विद्या-प्रेमी तो था पर अंतिम अवस्था में कुसंस्कारों में पड़ गया बताया। दलेलसिंह को गद्दी से हटाकर बुधसिंह का पुत्र उम्मेदसिंह गद्दी पर बैठ गया था। कोटा राज्य धीरे-धीरे बूंदी से अधिक बड़ा और प्रभावशाली बन गया था। महाराव किशोरसिंह ने मुगलों की सेवा में दक्षिण में रहते हुए बड़ा प्रशंसनीय योगदान किया था। धरमत के युद्ध में भी कोटा के रावों ने अच्छी वीरता दिखाई थी।

मराठाकाल- चौहान

[illegible] में कोटा राज्य में सन 1682 में ही मराठों का प्रवेश हो गया था। उस समय वे राज्य की सेवा में थे, [illegible] के रूप में कोटा के महाराव ने औरंगजेब की मृत्यु के [illegible] मराठों से मदद ली थी। सन् 1726 में मुकुन्दरा से होकर [illegible] मराठा [illegible] कोटा में लूटपाट करने लगे। सन 1733 में एक बड़ा आक्रमण हुआ [illegible] दुर्जनसाल महाराव ने [illegible] मराठों को दिये। बूंदी में [illegible] [illegible] मराठों की मदद से पुनः अधिकार कर लिया [illegible]

उन्हें बुरी तरह परास्त होना पड़ा। उसी समय मराठों ने कोटा के रास्ते जाकर साभर को लूटा था। कोटा के महाराव ने एक और भूल भोपाल में मराठो के विरुद्ध मुगलों के पक्ष में लड़कर की थी जिससे सन् 1738 में मराठों ने कोटा को करद राज्य ही बना लिया। महाराव दुर्जनसाल की मृत्यु के बाद झाला हिम्मतसिह की राय से अजीतसिह को गोद लेने मे मराठो की पूर्व स्वीकृति नहीं लेने पर भी मराठो ने आक्रमण की विचारी थी। पर कोटा की माजी ने सिंधिया के पास राखी भेजकर उसकी भावना का लाभ उठाया और कुछ लाख रुपए देकर समझौता कर लिया।

जयपुर-कोटा के बीच रणथम्भौर जिले से सम्बद्ध कोटा की बारह कोटडियों को लेकर झगड़ा हुआ तो मराठों ने युद्धस्थल पर निष्पक्ष रूप से खडे होते हुए भी कोटा के पक्ष में होने का भ्रम दिलाया और हारी हुई जयपुर सेना के डेरों को लूटा। भटवाडा के इस युद्ध मे कोटा को भी अच्छी खासी वस्तुएं मिली।

कोटा का फौजदार जालिमसिह झाला बडा नीतिज्ञ था। महाराव गुमानसिह की असमर्थता के कारण वही शासक समझा जाता था। एक बार निष्कासित किया जाने पर वह मेवाड़ की सेवा में चला गया जहाँ मराठों से लड़ते समय बदी बना लिया गया। अम्बाजी इगले की पत्नी, जो उसकी राखीबध बहिन थी, ने उसे छुडवाया। उसने मराठों तथा पिंडारियो को येन-केन प्रकारेण शात करते हुए कोटा के हितो की रक्षा की। ताराबाई नामक एक मराठा सरदार, जो कोटा पर हमला करती रहती थी, जालिमसिह के व्यक्तित्व से प्रसन्न होकर उसकी मित्र बन गई और उसने कोटा पर हमले बद कर दिये। मराठों के आतरिक कलह का लाभ भी उसने उठाया। पर कोटा तथा बूदी होते हुए मराठे जब-जब पूर्वी तथा पश्चिमी राजस्थान जाते तो शोषण व लूटपाट के अतिरिक्त मेहमान- नवाजी पर भी बहुत व्यय करना होता था। मराठो ने कोटा पर आधिपत्य के समय वहा अपनी शासन-पद्धति भी लागू की और अनेक मराठा सरदारों को जागीर दी। सन् 1818 मे अंग्रेजों से सन्धि होने के पूर्व तक मराठों के लगातार आक्रमणों से कोटा क्षत-विक्षत हो चुका था।

मराठे और मेवाड़ के गुहिल

जगतसिह द्वितीय की मृत्यु के बाद प्रतापसिह द्वितीय तथा राजसिह द्वितीय के काल में फैली अव्यवस्था से सन् 1751 मे 25 लाख रुपया सालाना देने की सधि मराठों के आक्रमणों को रोकने के लिए करनी पड़ी। 1755 में मल्हारराव तथा रघुनाथराव ने लावा को लूटा तथा जनकोजी ने शाहपुरा से चार लाख रुपए वसूल किये। 1757 में जनकोजी के साथ सधि पर धन नहीं दिया जा सका। 1760 में राजपूत सरदारों ने मराठों का सामना किया। 1761 ई में राजसिह की मृत्यु हुई। फिर राजसिह के बाद अरिसिह तथा रतनसिह के झगडे में सरदारों ने मराठों को एक करोड बीस लाख रुपए के वायदे पर रतनसिह के पक्ष में फैसला किया। सन् 1759 मे शिप्रा के तट पर युद्ध हुआ जिसमें अरिसिह हार गया। उसने तुकोजी होल्कर को लालच देकर अपनी ओर मिलाया। बाद में सिंधिया को भी कुछ प्रलोभन देकर मिला लिया। रतनसिह ने कुम्भलगढ जाकर लूटपाट मचाई तो मारवाड के विजयसिंह को गोडवाड़ का इलाका देने का वचन देकर रतनसिंह को दबाया। कालान्तर में मेवाड के [illegible] तथा चूंडावतों में सघर्ष हुआ। तुंगा (जयपुर) के युद्ध में हारे हुए मराठों को शक्तिहीन समझकर मेवाड ने हर्डी[illegible] के मैदान में उनसे युद्ध किया। पर मराठे ही जीते। फलत: मेवाड़ में व्यापक लूटखसोट हुई। [illegible] ने महादजी सिंधिया से फिर मदद मांगी। 1770-71 में जयपुर की मेवाड़ी रानी ने 15000 नागा फौज मेवाड़ में लूटपाट करने के लिए भेजी। मराठों ने [illegible] के [illegible] से चित्तौड़ खाली करवाकर अम्बाजी इगले को मेवाड़ में अपना प्रतिनिधि बना भेजा। उसकी मदद के लिए आठ लाख के वादे पर मराठा सेना भी रखी गई। अम्बाजी ने डूगरपुर-बांसवाड़ा [illegible] पर भी आक्रमण किये और द्रव्य वसूल किया। मराठों को दबाकर [illegible] के हाथ मजबूत किये। सन् 1790 में पेशवा ने [illegible] को राजस्थान का [illegible] जसवन्तराव होल्कर ने भी लूटपाट मचाई और उसके बाद सिंधिया के [illegible] ने भी सन् 1802 मे [illegible] वसूल किये। अंग्रेजों से सधि होने तक [illegible] मेवाड़ को तग करते ही रहे।

मराठे और जयपुर के कछवाहा

[illegible]

ने जय अप्पा सिंधिया की मदद ली। फलत: राजमहल [देवली] के युद्ध में ईश्वरीसिंह जीत गया। उसने भीलवाड़ा पर भी अधिकार कर लिया और महाराणा को संधि के लिए विवश कर दिया। महाराणा ने पेशवा की मदद ली तो उसने जयपुर पर आक्रमण कर उसे बड़ी हानि पहुंचाई, जब माधोसिंह को और परगने देना तय हुआ। माधोसिंह ने राजा साहू को दस लाख नजर देकर फिर आक्रमण करवाया। बगरू के निकट युद्ध हुआ तो ईश्वरीसिंह ने फिर बड़ी रकम देकर मराठों से संधि की। पर इसी ग्लानि से उसने आत्महत्या कर ली। माधोसिंह के गद्दी पर बैठते ही सिंधिया चौथ वसूल करने आया और मना करने पर हुए संघर्ष में काफी मरहठे मारे गए। दो लाख रुपए देकर उन्हें शान्त किया गया। रणथम्भौर का किला माधोसिंह को मिलने पर भी मराठों ने विरोध किया पर वे नहीं जीत पाये। मावंडा के युद्ध के बाद माधोसिंह की मृत्यु के उपरांत उसके अल्पवयस्क पुत्र पृथ्वीसिंह के समय मराठों ने बड़ी अव्यवस्था फैलाई। माचेड़ी का जागीरदार प्रतापसिंह मेवात तथा भरतपुर का कुछ क्षेत्र दबाकर अलवर के नये राज्य का संस्थापक बन गया। सन् 1776 में पृथ्वीसिंह की मृत्यु के बाद प्रतापसिंह के गद्दी पर बैठते ही बादशाह ने टीके की रकम वसूल करने के लिए एक बड़ी सेना भेजी। महादजी सिंधिया के मुगल बादशाह के वकील इमुतालिक बनने के बाद मराठों की चौथ के साथ थोड़ी बहुत रकम वसूल हो पाई। उस समय जोधपुर की मदद से प्रतापसिंह ने तुंगा के मैदान में सिंधिया को डीग की ओर धकेल दिया। इसमें मराठों की शक्ति क्षीण हुई। 1788 ई. में पुन: आकर महादजी ने दिल्ली पर अधिकार किया तथा पाटण के युद्ध में जयपुर-जोधपुर की सम्मिलित सेना को परास्त किया। सांभर, परबतसर, रूपनगर होता हुआ वह अजमेर जा पहुंचा। मेड़ता के पास डांगावास में राजपूतों ने उसका डटकर मुकाबला किया पर उन्हें हराकर 1791 में मारवाड़ के विजयसिंह को संधि के लिए विवश किया गया। तदनन्तर जयपुर तथा उदयपुर भी सिंधिया के वशवर्ती हुए। 1792 में प्रतापसिंह ने तुकोजी से समझौता किया ही था कि 1793 में सिंधिया ने तुकोजी को हराकर जोधपुर पर कब्जा कर लिया। मरहठों की सहायता से प्रतापसिंह ने अलवर तथा शेखावाटी को भी खूब दबाया। पर वार्षिक कर नहीं देने से सिंधिया के अधिकारी लकवा दादा ने फिर हमला किया। जोधपुर के भीमसिंह ने भी प्रतापसिंह की मदद की पर वे हार गए और नौ लाख के वायदे पर संधि हुई। इस पर विवश होकर प्रतापसिंह ने अंग्रेजों से संधि की याचना की पर शीघ्र ही उसकी मृत्यु के कारण उसके पुत्र जगतसिंह ने ही सन् 1803 में संधि पर हस्ताक्षर किये।

मारवाड़ के राठौड़ और मराठे

जोधपुर के अभयसिंह ने गुजरात की सूबेदारी के समय मराठों से समझौता करना चाहा था पर वह सफल नहीं हो सका। बख्तसिंह के पुत्र विजयसिंह के गद्दी पर बैठते ही अभयसिंह का पुत्र रामसिंह मराठों को चढ़ा लाया जिन्होंने मेड़ता व अजमेर पर अधिकार कर लिया। विजयसिंह को नागौर के किले में शरण लेनी पड़ी। विजयसिंह ने ताऊसर गांव के निकट जयप्पा सिंधिया को धोखे से मरवा डाला, पर मराठों को रोकना आसान नहीं था। बाध्य होकर सन् 1758 में संधि करनी पड़ी जिसमें अजमेर मरहठों को तथा जालौर एवं आधा मारवाड़ रामसिंह को देना तय हुआ। विजयसिंह मरहठों से सदैव आतंकित रहता था। उसकी मृत्यु के बाद भीमसिंह तथा मानसिंह में उत्तराधिकार का विवाद हुआ। भीमसिंह को मरहठों की मदद नहीं मिल सकी, पर मानसिंह ने उनकी मदद से सन् 1800 में मालपुरा में भीमसिंह व जयपुर की सम्मिलित सेना को परास्त किया। 1793 से 1803 ई. तक भीमसिंह शांतिपूर्वक राज नहीं कर पाया। भीमसिंह के बाद मानसिंह ने भी कृष्णाकुमारी प्रसंग में जयपुर से हुए झगड़े में अमीरखां पठान से काफी धन देकर सहायता ली। पोकरण के ठाकुर की अगुवाई में हुए विरोध को समाप्त करने तथा जयपुर के जगतसिंह से निपटने के लिए उसने अमीरखां से मित्रता की। वह साहित्य का संरक्षक और कवि तथा नाथपंथ का प्रबल समर्थक भी था।

भरतपुर के जाट

जाट जमींदारों की महत्वाकांक्षा ने जाट राज्य की स्थापना की। चूड़ामन जाट को [illegible] की मदद से [illegible] मिले थे। खेमकरण को भी जागीर मिली। सन् 1720-21 में चूड़ामन की मृत्यु के बाद बदनसिंह, मुहकमसिंह तथा [illegible], जुलकरण के दोनों पुत्रों ने जयपुर-जोधपुर की सहायता ली। सवाई जयसिंह ने बदनसिंह को चूड़ामन की गद्दी दिलवाई। अवध के नवाब ने भी जाटों की मदद की तथा 1749 ई. में राजा का खिताब देकर सूरजमल को मथुरा का फौजदार बना दिया। मराठों को आगरा का सूबा दिये जाने पर उन्होंने जाट क्षेत्र से चौथ वसूल करनी चाही। कुम्हेर पर आक्रमण के समय जाटों ने सिंधिया से संधि कर ली। सूरजमल ने [illegible] तथा [illegible] के [illegible] और [illegible] तथा राजपूतों से भी संधि की। उसका इरादा दिल्ली पर अधिकार कर [illegible] का [illegible] था। उसके पुत्र जवाहर सिंह ने भी उसी नीति का अनुसरण किया पर उसने जयपुर से वैमनस्य कर [illegible] का [illegible]। फलस्वरूप मांवड़ा के युद्ध में धन-जन की बड़ी हानि उसे उठानी पड़ी। जवाहरसिंह ने एक बार [illegible] को [illegible]

राजस्थान
वार्षिकी

धौलपुर पर भी कब्जा किया। सूरजमल के समय तक सारे निर्णय कौमी मजलिस में होते थे पर जवाहरसिंह ने यह रीति छोड़ दी। इसी से उसकी मृत्यु के बाद जाटों में झगड़े हुए और नजफखां की मदद से 1777 ई. में रणजीतसिंह को हकदार माना गया। उसने मराठों तथा अंग्रेजों दोनों को ही प्रसन्न करने की चेष्टा की। सन् 1805 के घेरे में उसने अंग्रेजों को हराया भी, पर समझौता भी करना पड़ा। 1805 से 1825 ई. तक अंग्रेजों के आतंक के नीचे जाट किसी तरह काम चलाते रहे और 1826 में अंग्रेजों ने बलवन्त सिंह को हकदार मानकर भरतपुर को अपने अधीन कर लिया।

धौलपुर

पानीपत की लड़ाई के बाद ई. 1791 में लोकेन्द्रसिंह ने स्वयं को गोहद का स्वतंत्र शासक घोषित किया। मराठों ने भी 1797 ई. में उसकी स्वतंत्रता स्वीकार की। उसने अंग्रेजों से भी संधि कर ली। माधवराव सिंधिया ने गोहद तथा ग्वालियर उससे छीन लिये। अंग्रेजों ने 1804 ई. में महाराजा कीरत सिंह से संधि कर गोहद उसे पुनः सौंप दिया।

राजस्थान में जन-आन्दोलन

18वीं शताब्दी के अन्त में मुगल साम्राज्य के पतन और मराठा शक्ति के उदय होने के साथ ही राजस्थान के राजाओं की तलवार को जंग खा गया। जिन राजपूत राजवंशों ने दिल्ली के सुल्तानों को एक से अधिक बार नाकों चने चबवाये और जिन राजपूत शासकों के बलबूते पर मुगल साम्राज्य सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा, वे ही राजपूत शासक मराठों और पिण्डारियों के आक्रमणों के सामने अपने को निर्बल और असहाय महसूस करने लगे। उन्होंने मराठों की धौंस में आकर अपने खजाने खाली कर दिये और उनके आक्रमणों एवं लूट-खसोट से घबराकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सामने आत्म-समर्पण कर दिया। हैस्टिंग्ज की "अधिनस्थ पार्थक्य की नीति" (Policy of Subordinate Isolation) का पहला शिकार सन् 1817 के नवम्बर में करौली का शासक हुआ। सन् 1818 के अन्त तक मात्र 18 माह से भी कम की अवधि में राजस्थान के छोटे-बड़े सभी शासक पके फल की तरह अंग्रेजों की गोद में टपक पड़े।

1857 की क्रान्ति

भारत में अंग्रेजी राज्य को पहली बार चुनौती मिली सन् 1857 में, जब देश में भारतीय सेना ने विद्रोह कर दिया। मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर और मराठों का अंग्रेजों को भारत से बाहर निकाल फैंकने का यह अन्तिम प्रयत्न था। दुर्भाग्य से राजस्थान के राजाओं ने आमतौर से विद्रोहियों का साथ न देकर अंग्रेजों की मदद की। बीकानेर के महाराजा सरदारसिंह तो अंग्रेजों की सहायता हेतु अपनी सेना लेकर पंजाब पहुंच गये और हिसार और हांसी जिलों से विद्रोहियों को बेदखल कर दिया। अपनी इस सेवा के उपलक्ष में अंग्रेजों ने सरदारसिंह को टीबी इलाके के 41 गांव प्रदान किये। इसी तरह इस कठिन समय में सैनिक व अन्य सहायता देने के उपलक्ष में अंग्रेजों ने जयपुर को कोटकासिम का परगना स्थायी रूप से दे दिया। मेवाड़ ने भी निम्बाहेड़ा में विद्रोहियों को परास्त करने में अंग्रेजों की सहायता की पर इसके बदले में यहां के महाराणा को अंग्रेजों द्वारा दिये गये एक प्रशंसा पत्र से ही संतोष करना पड़ा।

राजस्थान में सन् 1957 की घटनाओं की एक और तस्वीर भी थी। 21 अगस्त, 1857 को जोधपुर राज्य में स्थित एरिनपुरा- छावनी में ब्रिटिश फौज के भारतीय दस्तों ने बगावत का झण्डा खड़ा कर दिया। बागी सैनिकों ने "चलो दिल्ली- मारो फिरंगी" के नारे लगाते हुए दिल्ली की ओर कूच किया। राह में उन्होंने मारवाड़ के एक बड़े ठिकाने आउवा पर मुकाम किया। यहां के ठाकुर कुशालसिंह चम्पावत ने बागी सेना का नेतृत्व करना स्वीकार कर लिया। आसोप, गूलर और आलनियावास के ठाकुर भी अपने दल सहित विद्रोहियों से आ मिले। इस प्रकार विद्रोहियों की सैन्य शक्ति लगभग 6 हजार हो गयी।

अजमेर के चीफ कमिश्नर सर पैट्रिक लारेन्स की सलाह पर जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह ने अपने किलेदार ओनाड़सिंह पवार के नेतृत्व में 10 हजार फौज और 12 तोपें विद्रोहियों को कुचलने के लिए भेजी पर विद्रोहियों के सामने राज्य की सेना नहीं टिक सकी। इसकी तोपें, झंडे, सामान सब विद्रोहियों के हाथ में पड़ गया। जोधपुर की सेना के सेनापति पवार इसमें काम आये। अब सर पैट्रिक लारेन्स और जोधपुर का पोलिटिकल एजेंट मेसन सहित आउवा पहुंचे। 18 सितम्बर को दोनों पक्षों में घमासान युद्ध हुआ। अंग्रेज सेना हार गयी। मेसन मारा गया। विद्रोहियों ने उसका सिर काट कर आउवा के दरवाजे पर टांग दिया। लारेन्स अजमेर की ओर भाग गया।

	3. सांभरलेक	1. फुलेरा (मुख्यालय सांभर) 2. [illegible] (मुख्यालय मौजमाबाद) 3. फागी
	4. जयपुर	1. जयपुर 2. सांगानेर 3. बस्सी 4. चाकसू
	5. कोटपूतली	1. कोटपूतली 2. विराटनगर 3. शाहपुरा
2. अजमेर	1. अजमेर	1. अजमेर 2. नसीराबाद
	2. ब्यावर	1. ब्यावर
	3. केकड़ी	1.केकड़ी 2. सरवाड़
	4. किशनगढ़	1. किशनगढ़
3. अलवर	1. अलवर	1. अलवर 2. रामगढ़
	2. बहरोड़	1. बहरोड़ 2. बांसूर
	3 राजगढ़ (मुख्यालय अलवर)	1. राजगढ़ 2. लक्ष्मणगढ़
	4. तिजारा (मुख्यालय किशनगढ़बास)	1. किशनगढ़बास 2. मंडावर 3. तिजारा 4. थानागाजी
4. बांसवाड़ा	1. बांसवाड़ा	1. बांसवाड़ा 2. गढ़ी
	2. कुशलगढ़	1. कुशलगढ़ 2. बागीडोरा 3. घाटोल
5. बाड़मेर	1. बाड़मेर	1. बाड़मेर 2. चौहटन 3. शिव 4. गुढामालानी
	2. बालोतरा	1.पचपदरा 2. सिवाणा
6 भरतपुर	1. भरतपुर	1. भरतपुर 2. नदबई 3. कुम्हेर
	2. बयाना	1. बयाना 2. रूपवास 3 वैर
	3 डीग	1 डीग 2. कामां 3. नगर
7 डूंगरपुर	1 डूंगरपुर	1. डूंगरपुर 2 आसपुर 3. सीमलवाड़ा (मुख्यालय धम्बोला)
	2. सागवाड़ा	1 सागवाड़ा
८. गंगानगर	1. गंगानगर	1. गंगानगर
	2 हनुमानगढ़	1. हनुमानगढ़ 2. सादुलशहर 3. टीबी 4. संगरिया
	3. करणपुर	1. करणपुर 2. पदमपुर
	4. नोहर	1. नोहर 2.भादरा 3. रावतसर 4. घड़साना
	5. रायसिंहनगर	1. रायसिंहनगर 2. अनूपगढ़ 3. विजयनगर
	6. सूरतगढ़	1. सूरतगढ़ 2. पीलीबंगा
9 जैसलमेर	1. जैसलमेर	1. जैसलमेर
	2. पोकरण	1 पोकरण

20. टोंक	1. टोंक	1. टोंक 2. निवाई 3. उणियारा 4. देवली
	2. मालपुरा	1. मालपुरा 2. टोडारायसिंह
21. नागौर	1. नागौर	1. नागौर 2. जायल
	2. डीडवाना	1. डीडवाना 2. लाडनूं
	3. मेडता	1. मेडता 2. डेगाना
	4. परबतसर	1. परबतसर 2. नावां
22. पाली	1. पाली	1. पाली
	2. सोजत	1. सोजत 2. मारवाड़-जंक्शन
	3. बाली	1. बाली 3. देसूरी
	4. जैतारण	1. जैतारण 2. रायपुर
23. सवाईमाधोपुर	1. सवाईमाधोपुर	1. सवाईमाधोपुर 2. बौंली (मलारना) 3. खंडार
	2. गंगापुर	1. गंगापुर सिटी 2. बामनवास 3. नादौती
	3. हिण्डौन	1. हिण्डौन 2. महुआ 3. टोडाभीम
	4. करौली	1. करौली 2. सपोटरा
24. सीकर	1. सीकर	1. सीकर 2. दांतारामगढ
	2. फतेहपुर	1. फतेहपुर 2. लक्ष्मणगढ
	3. नीम-का-थाना	1. नीम-का-थाना 2. श्रीमाधोपुर
25. सिरोही	1. सिरोही	1. सिरोही 2. शिवगंज 3. रेवदर
	2. माउंटआबू	1. आबूरोड 2. पिंडवाडा
26. उदयपुर	1. उदयपुर	1. गिरवा (मुख्यालय उदयपुर) 2. गोगूंदा
	2. नाथद्वारा	1. नाथद्वारा 2. रेलमगरा
	3. भीम	1. भीम 2. देवगढ
	4 झाडोल	1. झाडोल 2. कोटडा
	5 राजसमंद	1. राजसमंद 2. कुंभलगढ 3. आमेट
	6. सलूम्बर	1. सलूम्बर 2. खेरवाडा 3. सराडा
	7. वल्लभनगर	1. वल्लभनगर 2. मावली 3. लसाडिया (मुख्यावास धरियावाद)
27. धौलपुर	1 धौलपुर	1. धौलपुर 2. राजाखेडा
	2. बाडी	1. बाडी 2. बसेडी
योग 27	90	211

विभागीय व्यवस्था

भारतीय संविधान की राज्य सूची में वर्णित विषयों के निष्पादन के लिए राज्य में विभिन्न विभाग कार्यरत हैं, जिनके अधिकांश विभागाध्यक्ष आई ए.एस अधिकारी होते हैं। कुछ विभागों के अध्यक्ष आर.ए.एस, तकनीकी अथवा संबद्ध विषय के विशेषज्ञ होते हैं। इन विभागों की सूची तथा विभागाध्यक्षों के नाम इस प्रकार हैं:—

विभाग	विभागाध्यक्ष	पदनाम	मुख्यालय
1. अभियोजन	श्री आर.सी सूद आर एच जे एस	निदेशक	जयपुर
2. अल्पबचत	,, मनोहरसिंह आई ए एस		
3 आर्थिक एवं सांख्यिकी	एस के भार्गव		
4 आयुर्वेद	रिक्त		अजमेर
5.उद्योग	श्री रवि माथुर आई ए एस		जयपुर
6.कृषि	सी एस राजन आई ए एस		
7. कारागार	,, डी पी एन सिंह आई पी एस	महानिदेशक	
8. चिकित्सा एवं स्वास्थ्य	, होलाराम	निदेशक	
9. सूचना एवं जनसम्पर्क	, डा मनोहर प्रभाकर		
10. पर्यटन, कला एवं संस्कृति	कु नीलिमा जौहरी आई ए एस		
11. पशुपालन	श्री सत्यनारायणसिंह आई ए एस		
12. मत्स्य पालन	,,		
13. पुरातत्व एवं संग्रहालय	,मणिलाल चक्रवर्ती		
14. नियोजन सेवा	, राजेश्वर तिवाड़ी आई ए एस		
15. भूमि एवं भवनकर	,, प्रेमकृष्ण गर्ग आई ए एस		
16. राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि	,,रामकुमारसिंह आई ए एस		
17. संस्कृत शिक्षा	,, भागीरथ शर्मा आई.ए.एस. (अतिरिक्त कार्यभार)		
18. स्थानीय निकाय	,, के के. चौधरी आर ए.एस	,,	
19. समाज-कल्याण	,, बी.एस सिंह आई ए एस,		
20. ग्रामीण-विकास एवं पंचायतीराज	,, सुरेशचन्द्र पर्गोरिया आई.ए.एस		
21. कालेज शिक्षा	श्रीमती सत्यरानी शर्मा		

51 अभिलेखागार	.. जे.के. जैन आई ए एस.	निदेशक	बीकानेर
52 उपनिवेशन	—	आयुक्त	
53. आबकारी	.. परमेशचन्द्र आई ए एस.	.	उदयपुर
54 खनिज एवं भूगर्भ	कृष्णवीर सिंह	निदेशक	
55. देवस्थान	डी सी. शर्मा आर.ए.एस.	आयुक्त	..
56. पंजीयन एवं मुद्रांक	.. आर के मीणा आई ए एस.	महानिरीक्षक	अजमेर
57. भूमि-रूपान्तरण	, पुखराज मारोठिया आर.ए.एस	निदेशक	जयपुर
58 गजेटियर्स	कु. सावित्री गुप्ता	निदेशक	.
59. भ्रष्टाचार निरोधक	श्री राजेन्द्र शेखर आई पी एस.	महानिदेशक	

बोर्ड एवं निगम

उपरोक्त विभागों के साथ ही राज्य में कतिपय विशिष्ट कार्यों के लिए स्वायत्तशासी बोर्ड और निगम भी कार्यरत हैं जिनके अध्यक्ष सरकारी और गैर सरकारी दोनों प्रकार के होते हैं।

राज्य सरकार के बोर्डों एवं निगमों की सूची इस प्रकार है —

नाम संस्थान	नाम अधिकारी	पदनाम	मुख्यालय
1. राजस्थान वित्त निगम	श्री कृपाशंकर रस्तोगी आई ए एस	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	जयपुर
2. राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम	श्री डी आर पुरी आई पी एस	अध्यक्ष	..
	श्री आर एन मीणा आई ए एस	प्रबंध निदेशक	
3 राजस्थान राज्य भंडार व्यवस्था निगम	श्री एम एल. मेहता आई ए एस	अध्यक्ष	..
	श्री लक्ष्मीमोहन आई ए एस	प्रबन्ध निदेशक	
4. राजस्थान राज्य बीज निगम	श्री एम एल मेहता आई.ए एस.	अध्यक्ष	..
	श्री जे.एन जौहरी	प्रबन्ध निदेशक	
5. राजस्थान राज्य कृषि-उद्योग निगम	श्री भगवान राम आई ए.एस.	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक	..
6. राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड	श्री ताराप्रकाश जोशी आई.ए.एस.	प्रशासक	..
	श्री एम.एल.शर्मा	सचिव	
7. राजस्थान भूमि-विकास निगम	श्री आर.वी.सोनटके आई.ए एस.	अध्यक्ष	..
	श्री आर.के. अग्रवाल आई.ए.एस.	प्रबन्ध निदेशक	

क्र.	संस्था	नाम	पद	स्थान
8.	राजस्थान लघु उद्योग निगम	श्री जनार्दनसिंह गहलोत	अध्यक्ष	जयपुर
		श्रीमती मीनाक्षी हूजा आई.ए.एस.	प्रबन्ध निदेशक	
9.	राजस्थान राज्य औद्योगिक एवं विनियोजन निगम (रीको)	श्री आनन्दीलाल रूंगटा आई.ए.एस.	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक	..
10.	राजस्थान पर्यटन विकास निगम	श्री सुरेन्द्र कुमार आई.ए.एस	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक	..
11.	राजस्थान राज्य खान एवं खनिज विकास निगम	श्री वी.बी.एलमाथुर आई.ए.एस.	अध्यक्ष	उदयपुर
		श्री अनिल वैश्य आई.ए.एस.	प्रबन्ध निदेशक	
12.	राजस्थान राज्य विद्युत मंडल	श्री एस.एस.व्यास	अध्यक्ष	जयपुर
		श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन आई ए एस	सचिव	
13.	राजस्थान राज्य खनिज-विकास निगम	श्री आर के सक्सेना आई.ए.एस.	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक	.
14.	राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मंडल	श्रीमती आशासिंह आई.ए.एस	अध्यक्ष	..
		श्री प्रेमशरण सिन्हा	सचिव	
15	गंगानगर शुगर मिल	श्री पी बी. माथुर आई ए एस	प्रभारी निदेशक	..
16	राजस्व मंडल	श्री तेजकुमार आई ए एस	अध्यक्ष	अजमेर
		श्री डी.डी. [illegible] आई ए एस	रजिस्ट्रार	
17	राजस्थान राज्य हथकरघा विकास निगम	श्री [illegible] माथुर आई.ए.एस	अध्यक्ष	जयपुर
		श्री [illegible] आई.ए.एस.	प्रबन्ध निदेशक	
18.	राजस्थान राज्य [illegible] [illegible] फैडरेशन लि.	श्री [illegible] आई ए एस.	अध्यक्ष	
		श्री [illegible] आई ए एस	प्रबन्ध निदेशक	
19	राजस्थान राज्य [illegible] फैडरेशन लि	श्री [illegible] आई ए एस.	अध्यक्ष	
		श्री [illegible] आई ए एस	प्रबन्ध निदेशक	.
20.	राजस्थान राज्य [illegible] [illegible]	श्री [illegible] आई ए एस	अध्यक्ष	
		श्री [illegible]	[illegible]	

21. राजस्थान राज्य प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण मंडल	श्री पी.एस. राजवंशी श्री डी.एल. माथुर	अध्यक्ष सचिव	जयपुर
22. राजस्थान राज्य वाटर सप्लाई एवं सीवरेज मैनेजमेंट बोर्ड	श्री आर.जे. मजीठिया आई.ए.एस.	प्रशासक	,,
23. राजस्थान राज्य बुनकर सहकारी संघ लि.	श्री एम.एल.गोयल श्री सी.एल जैन आई.ए.एस.	अध्यक्ष प्रबन्ध निदेशक	,,
24. राजस्थान उर्जा विकास अभिकरण	मुख्यमंत्री राजस्थान श्री आर.एस. गुप्ता आई.ए.एस.	अध्यक्ष निदेशक	,,
25. राजस्थान खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड	श्री बनवारीलाल गौड श्री जी.के गोस्वामी आर.ए.एस.	अध्यक्ष सचिव	,,
26. राजस्थान राज्य सेतु एवं निर्माण निगम	श्री महेशचन्द्र शर्मा	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक	,,
27. इंदिरा गांधी नहर मंडल	डा डी.एन प्रसाद आई.ए एस श्री जे.पी आचार्य	अध्यक्ष एवं प्रशासक सचिव	,,

पुलिस प्रशासन

पुलिस प्रशासन में मुख्यालय स्तर पर सर्वोच्च अधिकारी महानिदेशक होते हैं तथा उनकी सहायतार्थ विशेष महानिरीक्षक, उप महानिरीक्षक, सहायक महानिरीक्षक, पुलिस अधीक्षक एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक होते हैं। क्षेत्रीय दृष्टिकोण से पुलिस प्रशासन को निम्न स्तरों पर विभाजित किया गया है :—

(1) रेन्ज स्तर (2) जिला-स्तर (3) वृत्त स्तर (4) थाना एवं चौकी स्तर

पुलिस रेन्ज कुछ जिलों का एक समूह होती है। वर्तमान में राजस्थान को सात पुलिस रेन्ज में विभाजित किया गया है। ये हैं—जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, अजमेर, उदयपुर, कोटा, और भरतपुर। रेन्ज स्तर पर प्रभारी अधिकारी उप महानिरीक्षक होते हैं जो जिला पुलिस अधीक्षकों का मार्गदर्शन कर उनमें समन्वय स्थापित करते हैं।

राज्य में पुलिस प्रशासन प्रमुख रूप से जिले पर आधारित है। वर्तमान में यहां 29 पुलिस जिले (रेलवे को छोड़कर) हैं। जिला स्तर पर सर्वोच्च अधिकारी जिला पुलिस अधीक्षक होता है। यह अपने जिले का प्रमुख अपराध अनुसन्धान अधिकारी होने के साथ-साथ पुलिस बल का नियन्त्रक अधिकारी भी होता है।

पुलिस अधीक्षक के अधीन कुछ वृत्त अधिकारी कार्यरत होते हैं। ये अधिकारी उप अधीक्षक स्तर के होते हैं। पुलिस वृत्त कुछ थानों एवं इकाईयों का समूह होता है। वृत्त अधिकारी थानाधिकारियों के कार्यों का पर्यवेक्षण, नियन्त्रण एवं मार्गदर्शन करते हैं।

वृत्त स्तर से नीचे की इकाई थाना कहलाती है। पुलिस थाना अपराध पंजीकरण, अपराध अनुसन्धान, अपराध निवारण एवं रोकथाम की प्राथमिक इकाई माना जाता है। थाने का प्रभारी थानेदार होता है। थाने के कार्यों के निष्पादनार्थ इसके अन्तर्गत पुलिस चौकियाँ स्थापित की जाती हैं।

पंचायती राज

पंचायत परम्परा भारतीय संस्कृति की मूल अवधारणाओं में एक है जो वैदिक काल से चली आ रही है। मौर्य काल और गुप्त सम्राटों के शासन काल में पंचायतों अथवा ग्राम परिषदों को प्रशासन और न्याय के बड़े अधिकार दिये गये थे। बड़े-बड़े राजनैतिक परिवर्तनों के बावजूद पंचायतों ने भारतीय जनता के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन में लोकतांत्रिक परम्परा को जीवित रखा। मुगल काल में भी पंचायतों का मूल स्वरूप कायम रहा तथा प्रशासनिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास की दृष्टि से ग्राम को ही इकाई माना गया। किन्तु अंग्रेजी शासकों ने जनता के मन को कमजोर करने, समाज के सुदृढ़ ढांचे को तोड़ने तथा सभी अधिकारों को अपने हाथों में केन्द्रीभूत कर अधिक से अधिक शोषण करने की नीयत से पंचायतों के लोकहित साधक परम्परागत अधिकार छीन लिये, ग्राम समाज की सुविधाएं गौण कर दी गयीं। जन-समाजों का महत्व गिर गया तथा आर्थिक व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट हो गयी।

कालांतर में—1907 में 'रायल कमीशन आन डिसेन्ट्रलाइजेशन' नियुक्त किया गया। 1919–20 में देश के कुछ राज्यों में स्वायत्त शासन को बढ़ावा देने सम्बन्धी अधिनियम बनाया गया, किन्तु विशेष प्रगति नहीं हुई। 1935 में "गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट" लागू होने के साथ-साथ कई प्रान्तों में विशद् पंचायत अधिनियम बने। राजस्थान की विभिन्न रियासतों में भी इसी प्रकार के कानून पास किये गये।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान के 40वें अनुच्छेद में स्पष्ट घोषणा की गयी कि—

"राज्य ग्राम पंचायतों का संगठन करने के लिए अग्रसर होगा तथा उनको ऐसी शक्तियां और अधिकार प्रदान करेगा जो उन्हें स्वायत्त-शासन की इकाइयों के रूप में कार्य करने योग्य बनाने के लिए आवश्यक हों।"

इस उद्देश्य से 22 सितम्बर, 1951 को केन्द्र में अलग से पंचायत विभाग स्थापित किया गया।

इधर राजस्थान में संयुक्त राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री माणिक्यलाल वर्मा के प्रयासों से 1948 में राजस्थान पंचायत राज्य अध्यादेश बनाया गया, जिसके अन्तर्गत जनसंख्या के आधार पर एक ग्राम समूह की शक्तिशाली पंचायत बनाई गयी तथा पंचों, सरपंचों के चुनाव की प्रथा प्रारम्भ हुई।

सन् 1949 में वृहद राजस्थान बना। राजस्थान की प्रथम विधान सभा द्वारा "राजस्थान पंचायत अधिनियम-1953" पारित किया गया जिसके अन्तर्गत पहली बार तहसील पंचायतों का गठन हुआ और ग्रामीणों को स्वशासन सम्बन्धी व्यापक अधिकार दिये गये।

सन् 1957 में केन्द्रीय सरकार द्वारा गठित बलवंतराय मेहता कमेटी ने लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण तथा ग्रामीण क्षेत्रों के सर्वांगीण विकास हेतु ग्राम, खण्ड और जिला स्तर पर प्रजातांत्रिक संस्थाएं गठित करने का सुझाव दिया। तदनुरूप राजस्थान राज्य के समग्र जन-कल्याण के विराट लक्ष्य को सम्मुख रख 2 अक्टूबर, सन् 1959 को हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्री स्वर्गीय पं. जवाहर लाल नेहरू ने नागौर में 'पंचायती राज' का शुभारम्भ कर न केवल राजस्थान में अपितु सम्पूर्ण भारत में एक स्वर्णिम अध्याय की शुरूआत की।

ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत, खण्ड स्तर पर पंचायत समिति तथा जिला स्तर पर जिला परिषद् के त्रिस्तरीय ढांचे को स्वीकार कर राजस्थान में पंचायती राज की सुव्यवस्थित व्यवस्था प्रारम्भ हो गयी।

वर्तमान में राज्य में ग्राम स्तर पर 7353 ग्राम पंचायतें, खण्ड स्तर पर 237 पंचायत समितियाँ तथा जिला स्तर पर 27 जिला परिषदें कार्यरत हैं।

चुनाव- राज्य में पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव 1959 और 1965 में हुए। इसके बाद 1978 के फरवरी माह में केवल ग्राम पंचायतों के चुनाव कराये गए- जिला परिषदों और पंचायत समितियों के चुनाव नहीं कराये जा सके। बाद में 10 दिसम्बर, 1981 से 10 जनवरी, 1982 की अवधि में इन संस्थाओं के पूरे चुनाव कराये गए। वर्तमान संस्थाओं के चुनाव एक जून, 1988 से 31 जुलाई, 1988 की अवधि में विभिन्न चरणों में कराये गए।

पंचायतीराज का जिलेवार स्वरूप

क्रम संख्या	जिला	पंचायत समिति संख्या	ग्राम पंचायत संख्या	ग्राम संख्या	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	ग्रामीण जनसंख्या 1981	अनुसूचित जाति जनसंख्या 1981	अनुसूचित जनजाति जनसंख्या 1981
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	अजमेर	8	265	939	794666	823960	145382	26471
2.	अलवर	14	437	1947	863614	1574972	283815	139708
3.	बांसवाड़ा	8	196	1463	503346	831413	38343	637912
4.	बाड़मेर	8	253	864	2831410	1020663	160359	54558
5.	भरतपुर	9	300	1442	491011	1066508	226475	28458
6.	भीलवाड़ा	11	343	1569	1009912	1121816	193984	115110
7.	बीकानेर	4	122	673	27078	513664	119129	458
8.	बूंदी	4	143	737	55500	487153	93895	114763
9.	चित्तौड़गढ़	14	307	ꞈ360	1023359	1070073	157369	219505
10.	चूरू	7	201	900	1649990	834807	189651	3946
11.	धौलपुर	4	150	553	295411	495924	107944	26098
12.	डूंगरपुर	5	173	837	379349	638719	27268	432877
13.	गंगानगर	10	387	4516	2107663	1611669	504816	2633
14.	जयपुर	17	584	2810	1335218	2170042	398929	345786
15.	जैसलमेर	3	93	515	3814523	210155	32025	9851
16.	जालौर	7	215	612	1040430	830283	141933	68386
17.	झालावाड़	6	209	1589	619546	693482	122680	88040
18.	झुन्झुनूं	8	246	692	573619	960316	143728	21356
19.	जोधपुर	9	245	706	2208965	1087946	185946	29707
20.	कोटा	12	289	2141	1207145	1061690	218914	216826
21.	नागौर	11	358	1249	1743560	1391592	282932	2786
22.	पाली	10	289	836	1189466	1039739	191837	64520
23.	स.माधोपुर	11	389	1657	1040632	1329780	286983	341822
24.	सीकर	8	287	837	767820	1098309	157236	34092
25.	सिरोही	5	130	446	50898	445048	84634	117057
26.	टोंक	6	192	1089	858745	639791	136223	91520
27.	उदयपुर	18	550	3145	1589162	2001840	158074	792922
	योग	237	7353	37124		135447905044027168		

जिला प्रमुख-उप प्रमुख

जुलाई, 1988 में हुए पंचायतीराज संस्थाओं के चुनावों में निर्वाचित राज्य के जिला प्रमुखों एवं उप प्रमुखों की सूची इस प्रकार है-

क्र.सं.	जिला	प्रमुख	उप प्रमुख
1.	अजमेर	श्री सत्यकिशोर सक्सेना	श्री ललित भाटी
2.	अलवर	श्री जयकृष्ण शर्मा	श्री बाबूलाल बैरवा
3.	बांसवाड़ा	श्री जीथिंग भाई	श्री मानजी भाई
4.	बाड़मेर	श्री भवानी सिंह	श्री तगाराम चौधरी
5.	भरतपुर	श्री विश्वेन्द्रसिंह	श्री नृपेन्द्रसिंह
6.	भीलवाड़ा	श्री हाफिज मोहम्मद	श्री सोहनलाल
7.	बीकानेर	श्री भवानीशंकर शर्मा	श्री रघुनाथसिंह
8.	बूंदी	श्री भंवरलाल शर्मा	श्री श्रीनाथसिंह
9.	चित्तौड़गढ़	श्री सुरेन्द्रसिंह जाडावत	श्रीमती निर्मलाकुमारी
10.	चूरू	श्री विचित्रकुमार	श्री नन्दलाल पूनिया
11.	धौलपुर	श्री प्रद्युम्नसिंह	श्री दलजीतसिंह
12.	डूंगरपुर	श्री नवनीतलाल	श्री महेन्द्रकुमार परमार
13.	गंगानगर	श्री आत्माराम	श्रीमती इकबाल कौर
14.	जयपुर	श्री भगवानसहाय शर्मा	श्री छोटेलाल मीणा
15.	जैसलमेर	श्री भोपालसिंह	श्री फतेह मोहम्मद
16.	जालोर	श्री गणपतसिंह सिवाणा	श्री नरेन्द्र कुमार
17.	झालावाड़	श्री मानसिंह	श्री भैरूलाल
18.	झुंझुनूं	श्री विजेन्द्रसिंह खेला	श्रीमती सुधा देवी
19.	जोधपुर	श्री महिपाल मदेरणा	श्री दुर्गादास खेजड़ला
20.	कोटा	श्री हीरालाल मीणा	श्री प्रहलाद पटेल
21.	नागौर	श्री हरेन्द्र मिर्धा	श्री रामधन चौधरी
22.	पाली	श्री धर्मीचन्द जैन	श्री मानवेन्द्रसिंह
23.	सवाईमाधोपुर	श्री नत्थूसिंह	श्री केशवदेव शर्मा
24.	सीकर	श्री सांवरमल मोर	श्री घासीलाल सैनी
25.	टोंक	श्री द्वारका प्रसाद बैरवा	श्री रामप्रसाद
26.	सिरोही	श्री विजयसिंह	श्री धर्मदत्त बोहरा
27.	उदयपुर	श्री भैरूलाल सरसेत	श्री रघुवीरसिंह

पंचायत समितियों के प्रधान-उप प्रधान

जुलाई, 1988 में निर्वाचित राज्य की पंचायत समितियों के प्रधानों- उप प्रधानों की सूची प्रकार है-

क्र.सं.	जिला एवं पंचायत समिति	प्रधान	उप प्रधान
1	2	3	4
1.	जिला-बीकानेर		
I	नोखा	श्री गंगाराम विश्नोई	श्री हीरालाल
II	लूणकरणसर	श्री धानाराम गोदारा	श्री रूपाराम
III	कोलायत	श्री रघुनाथ सिंह	श्री दलवीरसिंह
IV	बीकानेर	श्री तुलसीराम मूड	श्री शिवकुमार व्यास
2.	जिला-चूरू		
I	रतनगढ़	श्री तारासिंह सारण	श्री पूर्णसिंह
II	सरदारशहर	श्री हरजीराम सारण	श्री भीमनाथ सिद्ध
III	राजगढ़	श्री नन्दलाल पूनिया	श्री जयलालपूनिया
IV	तारानगर	श्री शिवनारायण	श्री जगदीश प्रसाद
V	चूरू	श्री गोपसिंह	श्री लिछमाराम
VI	सुजानगढ	श्री रामदेव	श्री देवकीनन्दन शर्मा
VII	डूंगरगढ़	श्री सूरजमल	श्री भंवरसिंह
3	जिला-गंगानगर		
I	रायसिंह नगर	श्री प्यारासिंह	श्री पृथ्वीराज
II	करणपुर	श्री गुरुदत्तासिंह	श्री ज्ञानचन्द
III	सादुलशहर	श्री गुरचन्टसिंह	श्री खेमाराम जाखड़
IV	श्रीगंगानगर	श्री सुरेन्द्रसिंह राठौड़	श्री दर्शनसिंह
V	हनुमानगढ़	श्री विनोदकुमार चौधरी	श्री दलवीरसिंह
VI	नोहर	श्री बहादुरसिंह	श्री सुखदेवप्रसाद
VII	सूरतगढ़	श्री वीरदत्तसिंह भादु	श्री हरचन्दराम
VIII	पदमपुर	श्री गुरमीत सिंह	श्री रामकृष्ण
IX	भादरा	श्री यशवन्तसिंह	श्री कासीराम
X	अनूपगढ़	श्री खानाराम	श्री देवीसिंह
4	जिला-अलवर		
I	किशनगढ़बास	श्री दीपचन्द खेरिया	श्री शेरसिंह यादव
II	कोटकासिम	श्री मातादीन यादव	श्री रामलुराम यादव
III	राजगढ़	श्री बनवारीलाल धाकड़	श्री रामेश्वर मीणा
IV	उमरेण	श्री रामफल	श्री शिवकुमार सिंह
V	लक्ष्मणगढ़	श्री अशोकसिंह	श्री मांगीलाल मीणा
VI	तिजारा	श्री चिरन्जीलाल	श्री मंगेती

II	भिलाड़ा	श्री दुर्गादास खेजरडा	श्री हजारीराम
III	भोपालगढ़	श्री रामनारायण डूडी	श्री जोरसिंह
IV	मण्डोर	श्री खेताराम चौधरी	श्री किशोरसिंह माली
V	लूणी	श्री मानसिंह पाल	श्री दौलाराम
VI	शेरगढ़	श्री कल्याणसिंह	श्री आनन्दसिंह
VII	बालेसर	श्री कर्नल अनूपसिंह	श्री धर्मचन्द
VIII	फलौदी	श्री अर्से मोहम्मद	श्री पूनमचन्द
IX	बाप	श्री शोभराज विश्नोई	श्री आसूलाल
18	जिला-सिरोही		
I	पिन्डवाड़ा	श्री नैनमल रावल	श्री तेजसिंह
II	शिवगंज	श्री हनुवन्तसिंह	श्री दलपतसिंह
III	रेवदर	श्री दलपतसिंह	श्री मूलसिंह
IV	आबूरोड	श्री धर्मदत्त	श्री लालाराम
V	सिरोही	श्री राजेन्द्र सिंह	श्री बाबूलाल
19	जिला-नागौर		
I	डीडवाना	श्री चेनाराम	श्री फूलेखाँ
II	लाडनूं	श्री रामधनराम	श्री जगदीश सिंह
III	कुचामनसिटी	श्री रामेश्वरलाल चौधरी	श्री बजरंग सिंह
IV	नागौर	श्री अखाराम	श्री कुशलचन्द
V	मूण्डवा	श्री गणेशाराम	श्री गुमानसिंह
VI	जायल	श्री हिम्मतसिंह	श्री नरसिंहराम
VII	मकराना	श्री श्रीराम	श्री कल्याणसिंह
VIII	परबतसर	श्री बन्नाराम	श्री मोजराज सिंह
IX	डेगाना	श्री रामरघुनाथ चौधरी	श्री हरिराम पूनिया
X	मेड़ता	श्री रामनिवास	श्री रमजीराम
XI	रियाबड़ी	श्री रामकरण	श्री अमानसिंह
20	जिला-भीलवाड़ा		
I	माण्डलगढ़	श्री कन्हैयालाल जाट	श्री रमेशचन्द्र
II	शाहपुरा	श्री सम्पतसिंह	श्री गजराजसिंह
III	सुवाना	श्री नारायण लाल	श्री शिवसिंह
IV	माण्डल	श्री सोहन लाल	श्री गोवर्धनसिंह
V	आसीन्द	श्री दिलीप कुमार व्यास	श्री तेजमल
VI	हुरड़ा	श्री महावीर सिंह	श्री भंवर लाल
VII	बनेड़ा	श्री गोपाल लाल	रिक्त
VIII	जहाजपुर	श्री कल्याणमल	श्री रतनलाल
IX	रायपुर	श्री कैलाशचन्द्र त्रिवेदी	श्रीमति कमला देवी
X	कोटडी	श्री जमना लाल	श्री जीवनलाल
XI	सहाड़ा	श्री भैरूलाल	श्री अजीतसिंह
21	जिला-चित्तौड़गढ़		
I	बेगूं	श्री नानालाल	श्री लालसिंह
II	चित्तौड़गढ़	श्री नरेन्द्रसिंह	श्री उदयराम

नगर परिषदों/नगर पालिकाओं की सूची इस प्रकार है-

नगर परिषदें

जिला	क्रम संख्या	नगर परिषदें/ नगरपालिका	स्थापना वर्ष	जनसंख्या (1981 की जनगणना के अनुसार)	प्रशासक नियुक्ति तिथि
1	2	3	4	5	6
अजमेर	1	अजमेर	1866	3,75,593	11 दिसम्बर, 1973
अजमेर	2	ब्यावर	1867	89,998	निर्वाचित मण्डल
अजमेर	3	किशनगढ़	1945	62,032	11 दिसम्बर, 1973
अलवर	4	अलवर	1934	1,45,795	11 दिसम्बर, 1973
बाड़मेर	5	बाड़मेर	1932	55,554	16 फरवरी,1986
बीकानेर	6	बीकानेर	1926	2,94,647	11 दिसम्बर 1973
भीलवाड़ा	7	भीलवाड़ा	1938	1,22,625	20अक्टूबर,1975
चूरू	8	चूरू	1923	61,811	निर्वाचित मंडल
गंगानगर	9	गंगानगर	1930	1,23,692	निर्वाचित मंडल
गंगानगर	10	हनुमानगढ़	1917	60,071	16 फरवरी 1986
जयपुर	11	जयपुर	1869	9,77,165	11 दिसम्बर 1973
जोधपुर	12	जोधपुर	1884	5,06,345	17 फरवरी,1986
भरतपुर	13	भरतपुर	1901	1,05,274	11 दिसम्बर 1973
कोटा	14	कोटा	1895	3,58,241	11 दिसम्बर, 1973
पाली	15	पाली	1908	91,568	निर्वाचित मण्डल
सवाईमाधोपुर	16	सवाईमाधोपुर	1945	59,083	11 दिसम्बर, 1973
सीकर	17	सीकर	1944	1,02,970	11 दिसम्बर, 1973
टोंक	18	टोंक	1885	77,653	11 दिसम्बर 1973
उदयपुर	19	उदयपुर	1945	2,32,588	11 दिसम्बर 1973
योग	19			39,02,705	

द्वितीय श्रेणी नगर पालिकाएं

जिला	क्रम संख्या	नगर पालिका	स्थापना वर्ष	जनसंख्या	प्रशासक नियुक्ति तिथि
कोटा	20	बारां	1916	42,000	16 फरवरी 1986
नागौर	21	नागौर	1917	48,005	.. .. ..
नागौर	22	लाडनूं	1933	35,972	.. .. ..
नागौर	23	मेड़ता सिटी	1946	22,120	.. .. ..
सवाईमाधोपुर	24	हिण्डौन	1933	42,706	.. .. ..
सवाईमाधोपुर	25	गंगापुर सिटी	1944	40,407	.. .. ..
सवाईमाधोपुर	26	करौली	1884	37,954	.. .. ..
सीकर	27	फतहपुर	1944	51,084	.. .. ..

1	2	3	4	5	6
सिरोही	28	सिरोही	1921	23,903	..
सिरोही	29	आबूगढ़	1923	31,280	
सिरोही	30	आबूपर्वत	1864	12,713	
बाड़मेर	31	बालोतरा	1914	28,070	.. .
बांसवाड़ा	32	बांसवाड़ा	1904	46,749	..
बून्दी	33	बून्दी	1928	47,736	
चित्तौड़गढ़	34	चित्तौड़गढ़	1934	42,332	6 अगस्त 1977
चित्तौड़गढ़	35	प्रतापगढ़	1901	22,903	16 फरवरी 1986
चूरू	36	रतनगढ़	1917	43,366	
चूरू	37	सुजानगढ़	1911	55,546	.
चूरू	38	सरदारशहर	1896	55,473	5 अगस्त 1977
धौलपुर	39	धौलपुर	1904	44,375	16 फरवरी 1986
डूंगरपुर	40	डूंगरपुर	1901	27,556	.
गंगानगर	41	रायसिंहनगर	1930	17,069	. .
जालौर	42	जालौर	1932	24,100	.. . .
झालावाड़	43	झालावाड़	1883	29,257	.. ..
झुन्झुनूं	44	झुन्झुनूं	1931	47,177	17 दिसम्बर 1973
झुन्झुनूं	45	नवलगढ़	1945	38,727	16 फरवरी 1986
योग	26			9,58,580	

तृतीय श्रेणी नगर पालिकाएं

अजमेर	46	केकड़ी	1879	20,393	21 अक्टूबर 1977
अजमेर	47	सरवाड़	1911	9,215	3 अक्टूबर 1977
अजमेर	48	विजयनगर	1934	15,191	5 अगस्त 1977
अलवर	49	खैरथल	1969	15,962	5 अक्टूबर 1977
अलवर	50	खेरली	1944	8,046	16 फरवरी 1986
अलवर	51	राजगढ़	1934	14,199	.. . ..
बांसवाड़ा	52	कुशलगढ़	1903	7,117	.. .. .
भीलवाड़ा	53	शाहपुरा	1938	19,329	.. . .
भरतपुर	54	बयाना	1907	20,673	.. .. ..
भरतपुर	55	डीग	1904	28,085	.. ..
भरतपुर	56	कामां	1907	19,451	. .. .
भरतपुर	57	नदबई	1936	11,610	. .. ..
बून्दी	58	लाखेरी	1937	20,060	. .. ..
बून्दी	59	केशोरायपाटन	1934	11,448	.. . .
चित्तौड़गढ़	60	निम्बाहेड़ा	1906	27,763	.. .. ..

कार्यालय जिला ग्रामीण विकास अभिकरण

बीकानेर

''ट्राईसम व स्काईट योजना में प्रशिक्षण''

विज्ञाप्ति

ग्रामीण परिवार जिनकी वार्षिक आय 4800/- रु से कम है, को ट्राईसम योजना के अन्तर्गत और शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जाति के परिवार जिनकी वार्षिक आय 7300/- रु. से कम है, को स्काईट योजना के अन्तर्गत टी. वी., रेडियो, ट्राजिस्टर, मोपेड रिपेयर, हाउस वायरिंग, वेल्डिंग, मोटर बाइन्डिंग, जनरल मैकेनिक, बहुमूल्य रत्न तराशने, साईकिल रिपेयर, घडी मरम्मत, शीघ्र लिपिक, टंकण, फोटोग्राफी आदि व्यवसायों, जो कि भारत सरकार व राजस्थान सरकार द्वारा मान्य हैं, में प्रशिक्षण की सुविधाऐं उपलब्ध हैं। प्रशिक्षण आई. टी. आई. बीकानेर, सरकारी, अर्द्ध सरकारी, निजी संस्थाओं तथा कुशल कारीगरों के माध्यम से दिया जायेगा। प्रशिक्षण काल में प्रशिक्षणार्थियों को 100/- रु से 250/- रु तक नियमानुसार स्टाईपेण्ड देय होगा।

प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् स्वरोजगार हेतु बैंक से ऋण की सुविधायें भी उपलब्ध हैं। जिसमें स्वीकृत ऋण का $33\frac{1}{3}$ प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक अनुदान राशि देय होगी। ट्राईसम योजना में प्रशिक्षण के संबध में विस्तृत जानकारी के लिए जिला ग्रामीण विकास अभिकरण बीकानेर, संबंधित पंचायत समिति अथवा ग्राम सेवक से सम्पर्क करें तथा स्काईट योजना के संबंध में सहायक निदेशक समाज कल्याण विभाग बीकानेर अथवा जिला ग्रामीण विकास अभिकरण से सम्पर्क करें।

मदन लाल गुप्ता
कलक्टर एवं अध्यक्ष
जिला ग्रामीण विकास अभिकरण,
बीकानेर

1	2	3	4	5	6		
चूरू	61	डूंगरगढ़	1917	29,076	..	..	..
चूरू	62	राजगढ़	1917	30,379	..	..	..
धौलपुर	63	बाड़ी	1910	27,399	..	..	..
गंगानगर	64	नोहर	1917	22,680	..	..	..
गंगानगर	65	अनूपगढ़	1942	12,997	..	..	..
गंगानगर	66	भादरा	1911	22,568	..	..	..
गंगानगर	67	गजसिंहपुर	1942	6,573	..	.	..
गंगानगर	68	पदमपुर	1973	10,734		.	..
गंगानगर	69	केसरीसिंहपुर	1923	9,738	..	..	..
गंगानगर	70	संगरिया	1917	19,002	..	..	..
गंगानगर	71	सादुलशहर	1970	12,668	..	..	..
गंगानगर	72	श्रीकरणपुर	1931	12,252	..	..	..
गंगानगर	73	सूरतगढ़	1917	29,815	..	..	..
गंगानगर	74	विजयनगर	1973	11,674	..	..	..
गंगानगर	75	पीलीबंगा	1974	17,852	..	..	..
जयपुर	76	दौसा	1945	27,212	..	..	..
जयपुर	77	सांभरलेक	1925	17,633	..	..	..
जयपुर	78	चौमूं	1944	28,822	5 अगस्त 1977		
जयपुर	79	बांदीकुई	1954	10,510	16 फरवरी 1986		
जयपुर	80	चाकसू	1954	14,213	..	..	..
जयपुर	81	कोटपूतली	1892	21,716	..	..	..
जालौर	82	भीनमाल	1920	24,339	..	..	..
झालावाड़	83	भवानीमंडी	1960	22,937	..	..	..
झालावाड़	84	झालरापाटन	1892	16,805	16 फरवरी, 1986		
झालावाड़	85	सुनेल	1918	9,759	..	..	..
जोधपुर	86	फलौदी	1915	28,539	..	..	..
जोधपुर	87	पीपाड़सिटी	1961	20,955	..	..	..
जोधपुर	88	बिलाड़ा	1974	24,006	..	..	..
झुंझुनूं	89	चिड़ावा	1925	20,841	..	..	..
कोटा	90	रामगंजमंडी	1934	15,530	..	..	..
नागौर	91	कुचामनसिटी	1955	26,973	..	..	..
नागौर	92	डीडवाना	1920	29,937	..	..	..
नागौर	93	परबतसर	1955	7,376	..	..	..
नागौर	94	मकराना	1954	40,663	..	..	..
पाली	95	सोजत	1951	24,292	..	..	..
सीकर	96	लक्ष्मणगढ़	1944	29,215	5 अगस्त 1977		
सीकर	97	रामगढ़	1944	19,570	16 फरवरी 1986		

1	2	3	4	5	6
सीकर	98	श्रीमाधोपुर	1944	18,461	5 अगस्त, 1977
टोंक	99	निवाई	1944	11,961	,, ,, ,,
टोंक	100	देवली	1933	11,159	,, ,, ,,
उदयपुर	101	राजसमंद	1946	27,492	,, ,, ,,
उदयपुर	102	फतहनगर	1971	13,210	,, ,, ,,
उदयपुर	103	आमेट	1973	10,698	,, ,, ,,
योग	58				

चतुर्थ श्रेणी नगर पालिकायें

अलवर	104	निजाग	1973	12,199	16 फरवरी, 1986
अलवर	105	बहरोड	1981	9,716	7 जनवरी, 1982
बाडमेर	106	सिवाना	1975	14,605	16 फरवरी, 1986
बाडमेर	107	समदडी	1983	11,929	उच्च न्यायालय के स्थगनादेश के कारण सरपंच ही अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।
बीकानेर	108	देशनोक	1957	10,995	16 फरवरी, 1986
बीकानेर	109	नोखा	1943	14,119	,, ,, ,,
भीलवाडा	110	गंगापुर	1914	11,434	,, ,, ,,
भीलवाडा	111	जहाजपुर	1970	12,328	,, ,, ,,
भीलवाडा	112	मांडल	1974	13,386	5 अगस्त, 1977
भीलवाडा	113	आसींद	1976	9,461	16 फरवरी, 1986
भीलवाडा	114	मांडलगढ	1982	11,933	13 सितम्बर, 1985
भीलवाडा	115	गुलाबपुरा	1982	11,586	,, ,, ,,
भरतपुर	116	वैर	1907	12,178	16 फरवरी, 1986
भरतपुर	117	कुम्हेर	1974	12,784	,, ,, ,,
भरतपुर	118	मुसावर	1975	11,064	,, ,, ,,
भरतपुर	119	नगर	1975	11,450	,, ,, ,,
बूंदी	120	नैनवा	1933	9,998	,, ,, ,,
बूंदी	121	कापरेन	1979	10,296	,, ,, ,,
चित्तौडगढ	122	छोटी सादडी	1952	12,146	,, ,, ,,
चित्तौडगढ	123	बडी सादडी	1958	11,721	,, ,, ,,
चित्तौडगढ	124	कपासन	1945	13,858	,, ,, ,,
चित्तौडगढ	125	बेगूं	1983	12,680	उच्च न्यायालय के स्थगनादेश के कारण सरपंच ही अध्यक्ष पद पर कार्यरत है।

क्रमश:-4